साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

र्ष २५ अक ८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार ३१ दिसम्बर से ६ जनवरी २००२ तक

ूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

आर्यसमाज रानीबाग में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों का अभिनन्दन

आर्यसमाज के उत्सवों को विशेष पर्वों के रूप में सोल्लास आयोजित किया जाए

आर्यसमाज रानी बाग के तत्वावधान मे सार्वदेशिक आर्य ़तिनिधि सभा के नव निर्वाचित ़धिकारियों का सम्मान समारोह आयोजित ़्या गया। सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न ़ार्य के नेतृत्व मे रात्रि मे एक विशेष ़भा यात्रा भी निकाली गई।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सोहन ़ाल पथिक ने अभिनन्दन गीत के ़रा सभा के अधिकारियो का स्वागत ़्या। माता प्रेमलता शास्त्री ने अपने ़गत सन्देश मे कहा कि सभा के ़ अधिकारियो से समूचे विश्व की ़र्यजनता को बहुत बडी उम्मीदे लगी ़ दयानन्द सेवा श्रम सघ की ़तिविधियो की ओर भी आपको विशेष ़न देना होगा।

आर्य तपस्वी श्री सुखदेव ने कहा इस स्वागत समारोह के माध्यम से ़भा के अधिकारियो को यह आशीर्वाद ़ा चाहता हू कि उनकी आत्मा मे ़त्रता त्याग तपस्या और देशभक्ति ़भावनाए सदैव बलवती होती रहे।

़क्षेत्र के पूर्व विधायक श्री गौरी ़र भारद्वाज ने कहा कि पिछले ़ समय से ऐसा कुछ महसूस हो ़ था कि आर्यसमाज मे कुछ ़चारी लोग प्रवेश कर गए है परन्तु ़त बदलाव ने यह साबित कर ़ा है कि आर्यसमाज मे अब भी कदाचारियो का प्रवेश निषेध है। श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि प्रधान वही होता है जो प्रशसनीय हो। उन्होने आशा व्यक्त की कि कैप्टन देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे यह सभा अब प्रशसनीय कार्य ही सम्पन्न करेगी।

आर्यसमाज रानीबाग के प्रधान श्री चमनलाल महेन्द्रू ने कहा कि बहुत लम्बे लम्बे लक्ष्य निर्धारित करने उनकी प्राप्ति भी कठिन होती है और निराशा भी होती है। अत छोटे छोटे परन्तु प्रभावशाली लक्ष्यो को निर्धारित करके उनकी प्राप्ति के प्रयास किए जाने चाहिए।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री कृष्णलाल जी ने सस्कृत के पठन पाठन पर जोर देते हुए सार्वदेशिक सभा से अपेक्षा व्यक्त की कि युवावस्था तक विद्यालयो मे सस्कृत का पठन–पाठन आवश्यक कराने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। सरल सस्कृत पढाने के लिए कुछ विशेष कार्यक्रम भी प्रारम्भ करने पर विचार किया जाए।

सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा कि इस स्वागत के पीछे जहा कही भी आर्यजन की भावनाए व आशाए हमारे प्रति हो वे सभी आर्यजन हमारे वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे हर प्रकार का सहयोग दे। ऐसा हाने पर हम आपका स्वागत करेगे। उन्होने कहा कि आर्यसमाज एक ऐसी फैक्टरी है जिसमे बुरा व्यक्ति भी डालो तो अच्छा और ईमानदार व्यक्ति ही निकलता है। यदि कोई व्यक्ति या सिद्धान्त इस मशीन को उल्टा चलाने का प्रयास करेगा तो स्वाभाविक है कि हम सभी आर्यजन उस सिद्धान्त और व्यक्ति का विरोध करेगे।

कै० देवरत्न आर्य न कहा कि आर्यसमाज के पर्वो को भी हमे विशेष हर्षोल्लास ओर नए सकेतो के साथ मनाना चाहिए।

जिससे दुनिया मे आर्यसमाज के प्रति एक नया आकर्षण उत्पन्न होगा। **बोधोत्सव को ज्योतिपर्व के रूप मे निर्वाणोत्सव को क्षमा पर्व के रूप मे होली को मिलन पर्व के रूप मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस को बलिदान पर्व के रूप मे मनाया जाना चाहिए।**

उन्होने इस नई दिशा का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि ज्योति पर्व पर समूचे समाज मे वैदिक धर्म प्रचार प्रसार की नई योजनाए नया साहित्य नए ट्रेक्ट इत्यादि प्रस्तुत किए जाए।

– शेष भाग पृष्ठ ६ पर



सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य तथा अन्य पदाधिकारियो का अभिनन्दन समारोह आर्यसमाज रानी बाग दिल्ली मे आयोजित किया गया।

पुरोहित प्रशिक्षण शिविरों की नई शुरुआत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के ़शो को सर्वप्रथम क्रियात्मक स्वरूप ़स्तुत करते हुए दिल्ली आर्य ़धि सभा की प्रेरणा पर पूर्वी दिल्ली ़क विशेष पुरोहित प्रशिक्षण शिविर ़आयोजन कर दिखाया। लगभग २० ़समाजो के पुरोहितो का यह प्रशिक्षण ़र आर्यसमाज मन्दिर प्रीतविहार ़ी मे आयोजित किया गया। जिसमे ़रत्न आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री तथा ़क विद्वान श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने आर्य पुरोहितो का मार्ग दर्शन किया। इन विद्वानो के विशेष दिशा निर्देशो दृष्टिकोणो तथा यज्ञ पद्धति के प्रचार प्रसार के पीछे एकरूपता के सिद्धान्त की मूलभावना थी।

प्रीतविहार मे आयोजित इस प्रशिक्षण शिविर का सचालन श्री सुरेन्द्र कुमार रैली ने किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा के निर्देश पर पश्चिमी दिल्ली की आर्यसमाजो के पुरोहितो के लिए भी दूसरा लघु प्रशिक्षण शिविर **१३ और १४ जनवरी** को **आर्यसमाज राजौरी गार्डन** मे आयोजित किया जाएगा। दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य इस शिविर के सयोजक होगे। इस शिविर मे भी वैदिक विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री तथा श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय पुरोहितवर्ग का मार्गदर्शन करेगे।

इस शिविर के अन्त मे एक विशेष सत्र मे सगठन चर्चा भी आयोजित की जाएगी। जिसे वैदिक विद्वान आर्यनेता सम्बोधित करेगे।

श्री वेदव्रत शर्मा के अनुसार इस प्रकार के शिविर दिल्ली के अन्य भागो मे भी आयोजित किए जाएगे और इन लघु शिविरो के बाद राज्य स्तरीय शिविर भी आयोजित किया जाएगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने देश की अन्य प्रान्तीय सभाओ से भी अपेक्षा की है कि वे भी जिला स्तर पर ऐसे शिविरो का आयोजन करे। इस प्रकार के शिविर आर्यसमाज की गतिविधियो मे विशेष सहायक सिद्ध होगे।

महर्षि को संखिया महाविष दिया गया था, न कि कांच

विष देने वाला शाहपुरा का धूला जोशी था न कि जगन्नाथ

महर्षि के विष प्रकरण के तथ्यों पर एक नई दृष्टि

– सोहनलाल शारदा

दूध मे काच मिलाकर पिला दिया।' यह वाक्याश भूचाल टाइम्स के ८ नवम्बर सन २००१ के अक मे प० सुखदेव जी शास्त्री रोहतक के लेख मे प्रकाशित है। इस लेख का शीर्षक है **'युग पुरुष स्वामी'** पूरा वाक्य यह है –

'महर्षि ने दुष्ट जगन्नाथ को क्षमा कर दिया, जिसने स्वामीजी को दूध मे काच मिलाकर पिला दिया।'

इस सृष्टि के नियमविरुद्ध असम्भव बात पर थोडा सा भी विचार करने पर ज्ञात हो जाता है कि काच जिसे शीशा दर्पण आरसी इत्यादि नामो से जाना जाता है कभी भी दूध गरम करने की गर्मी से पिघलने वाला नही है। यह पदार्थ **'न भूतो न भविष्यति'** प्राकृत नियमानुसार न पहले घुलनशील पदार्थ था और न आगे भी होगा।

यह तो कई गुना अधिक तेज अग्नि के ससर्ग से चूडी वगैरा कई पदार्थ बनते है जो ज्यो ही वायु का ससर्ग प्राप्त हुआ तत्काल अपनी पूर्व स्थिति मे आ जात है। यह कभी भी पेय पदार्थ घुलनशील नही हा सकता।

यहा सत्य यही है जिसे स्वय महर्षि ने कहा जा आर्य मुसाफिर श्री प० लेखरामकृत उर्दू जीवन चरित मे विद्यमान है। इसका आर्यभाषानुवाद नया बास दिल्ली आर्यसमाज प्रथम सस्करण पृष्ठ ६२२ पर विद्यमान है।

यह ही प्रकृति नियमो से भी सिद्ध है। यहा वर्णन है कि जब अजमेरस्थ आर्यजनो ने यह राजस्थान गजट मे पढा कि **स्वामीजी जोधपुर मे** रुग्ण है तो यहा से श्री जेठमल सोढा को खबर लेने के लिए भेजा। उसने वहा से तार किया और स्वय भी आकर समाचार कहे। उस समय का वर्णन करते हुए अजमेर के तत्कालीन हकीम श्री इमाम अली जी ने प० आर्य मुसाफिर लेखराम जी को निम्न सूचना दी है –

जब आर्यसमाज अजमेर प० कमल नयन शर्मा के मेरे पास आकर कहा कि – **मुझे प्रथम तार द्वारा व पुन आदमी द्वारा विशेष तौर पर कह लाया है कि 'मुझे सख्या दिया गया है।'** इसका उपचार हो। इस पर श्री हकीम ने कहा कि आप सर्वजन निश्चय करो कि **पूज्य स्वामी जी को आबू नहीं ले जाओ। यहा ले आओ। हम सख्या निकाल देगे।'**

श्री हकीम ने तत्समय जो उपचार दिया उसके विषय मे बतलाते हुए कहा कि **मैने तात्कालिक उपचार हेतु बस लोचन, शर्बते अनार, कुछ साबुत अनार एक औषध साथ मे देकर इसके उपयोग की विधि बतलाते हुए कहा कि –**

'प्रथम बसलोचन को खरल मे घुटवाकर थोडा सा यह शर्बत अनार मिला पावभर पानी बनाकर जब भी खुश्की हो प्यास हो चम्मच भर पिला देने से प्यास व खुश्की का शमन हो शान्ति लाभ अवश्य मिलेगा।

अत प्रमाणो मे **'सख्या'** घुलनशील पदार्थ महाविष है निश्चय से प्रमाणो से। यही मानना सत्य है।

आगे जो दुग्धपान कराने वालो मे जगन्नाथ नाम लिखा यह भी विश्वसनीय नही है। सत्य यह है जो महर्षि के स्वर्गारोहण पश्चात एक वर्ष के भीतर ही प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक का नाम है। **'दयानन्द दिग्विजयार्क'**

इसकी विशेषता यह है कि इसके दो भाग तो महर्षि के समय मे ही प्रकाशित थे। तीसरा भी शीघ्र ही प्रकाशित हो गया।

इस ग्रन्थ के **अनिष्टोत्थान'** मे प्रकरण मे वर्णन है कि – आश्विन कृष्ण एकादशी को श्री स्वामीजी महाराज को जुकाम हो गया। वह शमन नही हो रहा था सभी और वृद्धि हो रही तभी मिति आश्विन कृष्ण चतुर्दशी को रात्रि समय **'धूड मिश्र'** पाकाध्यक्ष शाहपुरा से दूध पीकर सोए। **पीछे महाराज को रात्रिभर तीन वमन हुए।**

यहा से ही यह घातक घटना का श्री गणेश हुआ। इसी कथानक से श्री प० लेखराम जी कृत उर्दूचरित मे लिखा लेकिन आर्यभाषानुवाद मे धूड के बजाय **धौल मिश्र** कर दिया। इसे ही भेड चाल के अनुसार देवेन्द्र बाबू व भारतीय जी ने नवजागरण पुरोधा मे लिखा लिया। लेकिन वर्तमान मे भी चारो वर्षो मे धूला नाम तो है लेकिन धौल नाम कही नहीं है। माता पिता अपने पुत्र पुत्रियो का नाम धूला रखते है अन्ध परम्परानुसार। ऐस नाम आज भी विद्यमान है।

सर्वप्रथम सम्भव है वहा (ल) यह अक्षर नही होने स (ड) यह अक्षर लगा दिया होगा। यह धूला जाति का ब्राह्मण जोशी सम्प्रदाय का था। वर्तमान मे उसके पारिवारिक जन उदयपुर मे रहते हैं धूला जोशी मिश्र।

मिश्र उपाधि है जो दोनो कार्य यानी भोजन बना दे और पुरुस्कारी भी करे ऐसे जनो को, रसोई विभाग मे मिश्र कहते है।

इस धूला जोशी का बयान महर्षि के एक राजनैतिक शिष्य श्री शाहपुदेश ने मथुरा जन्म शताब्दी पश्चात पूज्य श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की सेवा में भेज दिया। बयान लेने वाले थे श्री भगवान स्वरूप श्री न्यायभूषण जो आजीवन वैदिक यत्रालय परोकारी सभा व राजस्थान प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ अधिकारी रहे। उनका बयान गुरुकुल कागडी स्नातक मण्डल के मुख्यपत्र अल्कार के दो अकों मे प्रकाशित हुआ।

इस बयान की समीक्षा श्रद्धेय भारतीय जी ने नव जागरण के पुरोधा के पृष्ठ सख्या ५३४ पर की। यहा वर्णन है – जब उससे पूछा गया कि वहा रसोई गृह मे कितने जन कार्यरत थे। उत्तर मे उसने कहा कि –

'वहा मेरे सिवाय अन्य कोई भी नौकर नहीं था।'

अत दूध उसी ने ही पिलाया था। अन्य कोई था ही नहीं। अत यह प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध है। वह इसके भी एक या दो वर्ष जीवित रहा। वह बयान ४२ वर्ष पश्चात लिए गया। तब तक यह बहुत वृद्ध हो चुका था।

इन सर्व प्रमाणो से यही सिद्ध होता है – **"दूध मे काच होना सम्भव नहीं। दूध पिलाने वाला शाहपुरा का धूला जोशी था। जगन्नाथ नाम का जन कोई भी वहा नहीं था।**

यही सत्य है। सत्य का ग्रहण करना ही हमारा धर्म है।

– शाहपुरा भीलवाडा (राजस्थान)

बोध कथा

शिक्षा के क्षेत्र में नई चेतना–नई क्रान्ति

उन दिनो शिक्षा की व्यवस्था सोलह आने सरकार के हाथ मे थी। नीचे से ऊपर तक शिक्षा का कारखाना सरकारी मशीन को बनाने और अग्रेजी माल के ग्राहक बनाने के लिए चले रहा था। भारतीय जनता मे राष्ट्रीय भावना की जागृति हुई और आत्म सम्मान जागा तो ऐसे शिक्षणालय मे स्थापित हुए जो सरकार की बनाई शिक्षा विषयक चारदीवारी से बिल्कुल बाहर थे ऐसे शिक्षाणालयो मे सरकारी साचे से बाहर शिक्षा देने का यत्न किया गया। हरिद्वार के गुरुकुल कागडी और बोलपुर के शान्ति निकेतन ऐसे ही शिक्षणालय थे।

गुरुकुल कागडी की स्थापना सन १९०० मे हुई थी। उसके सस्थापक महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द जी) थे। शान्ति निकेतन मे ललित कलाओ को प्रमुख स्थान दिया गया तो गुरुकुल कागडी मे प्राचीन सस्कृति के साथ-साथ पाश्चात्य विज्ञान आदि विद्याओ मे अध्यापन पर अधिक बल दिया गया। हिमालय की उपासक मे गगा के किनारे गुरु-शिष्य परम्परा के बल पर प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली पुनर्जीवित की गई। यद्यपि सस्कृति वाडमय को महत्ता दी गई थी परन्तु सभी प्राचीन अर्वाचीन विषयो का माध्यम हिन्दी को बनाया गया।

सस्था का प्रारम्भ फूस की झोपडियो मे चार श्रेणियो मे किया गया था परन्तु १९१६ मे उसने विश्वविद्यालय का रूप धारण कर लिया। उस समय वैदिक और अर्वाचीन सस्कृत भारतीय वाडमय की शिक्षा के साथ अर्वाचीन विज्ञान इतिहास कृषिशास्त्र आदि की शिक्षा दी जाती थी। प्राय सभी क्षेत्रो मे गुरुकुल के स्नातक सरकारी शिक्षणालयो से निकले डिग्रीधारी ग्रेजुएटो की तुलना मे भारतीय सस्कृति के प्रतीक बन गए। फलत प्राय सभी अशो मे गुरुकुल उस समय की प्रचलित शिक्षा प्रणाली मे विरुद्ध एक सफल प्रतिवाद था। जल्दी ही गुरुकुल कागडी की शैली पर गुरु शिष्य परम्परा के अनुसार वृन्दावन सूपा कुरुक्षेत्र मुल्तान आदि अनेक स्थानो पर गुरुकुलो और ऋषिकुलो की स्थापना हुई ये सभी सरकारी नियन्त्रण से सर्वथा मुक्त थे।

– नरेन्द

श्रद्धा की महत्ता : प्रभु श्रद्धा-बुद्धि दें

श्रद्धया अग्नि समिध्यते, श्रद्धया हूयते हवि ।
ऋ० १०/१५१/१

श्रद्धा से अग्नि प्रदीप्त करो उसमे श्रद्धा से आहुति दो

स मे श्रद्धा च मेधा च जातवेदा प्रयच्छतु।।
अथर्व १९/६४/१

प्रभु मुझे श्रद्धा और बुद्धि प्रदान करे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

आतंकवाद का उन्मूलन : पूरी निष्ठा, एकता और दृढता से

विचित्र परिस्थिति से राष्ट्र को जूझना पड रहा है नए व्यावहारिक वर्ष की शुरुआत ऐसे समय हो रही है जब भारतीय राष्ट्र को आतकवाद से जूझना पड रहा है। ११ सितम्बर को आतकवादी विमानो ने ससार के सर्वाधिक धनी राष्ट्र सयुक्त राज्य अमेरिका के न्यूयार्क स्थित वर्ल्ड ट्रेड सैण्ट और वाशिगटन स्थिति सैनिक मुख्यालय पेटागन पर हमला कर विध्वस किया था तो १३ दिसम्बर के दिन विदेशी आतकवादियो ने भारतीय ससद पर सीधा आक्रमण किया था। भारतीय सुरक्षा बलो की सतर्कता और दृढता से यद्यपि आतकवादी कोई क्षति नहीं पहुच सके परन्तु उन्होने भारतीय राष्ट्र और उसकी जनता की प्रतीक ससद भवन को ठीक अधिवेशन के समय सीधी चुनौती देकर स्पष्ट कर दिया कि आज आतकवाद किसी भी देश की गरिमा सत्ता को ललकार सकता है। इन घटनाओ के दुस्साहस से यह स्पष्ट है कि आतकवाद के तत्व किसी भी शक्तिशाली तथा कोटि कोटि जनता के प्रतिनिधित्व को भी सीधी चुनौती दे सकते हैं। यह सन्तोष की बात है कि दक्षिणी एशिया मे अशान्ति फैलाने और लोकतन्त्र पर हमले के लिए सयुक्त राज्य अमेरिका ने जैश ए मोहम्मद और लश्कर ए तोइबा को विदेशी आतकी सगठन घोषित किया है। इन दोनो सगठनो ने भारतीय ससद और जम्मू कश्मीर कश्मीर विधान सभा पर हमला कर न केवल लोकतन्त्र को चुनौती दी प्रत्युत दक्षिणी एशिया की शान्ति को भग करने का भी अपराध किया है। भारतीय खुफिया एजेन्सी को यह सूचना भी मिली है कि मोहम्मद जमान उर्फ मोहम्मद सुलेमान की नेतागिरी मे जैश ए मोहम्मद और लश्कर तोइबा के ६सदस्यीय दस्ते मे अहमदाबाद लखनऊ के अतिरिक्त दिल्ली मे भी अपनी जडे जमाई हुई है। इस दस्ते मे कराची मे रहने वाला एक अफगान नागरिक भी शामिल है। सूचना मिली है कि इन्दिरा गाधी हवाई अडडा रेलवे स्टेशन और जनता पार्टी के नेता इस दस्ते के निशाने पर हैं।

इसी के साथ जम्मू कश्मीर मे आतकवादी हमलो मे आई पुन तेजी इस बात की परिचायक है कि उस राज्य मे सक्रिय आतकवादी सगठनो के दुस्साहस मे कही कोई कमी नही आ रही है। यह ठीक है कि आतकवादियो के विरुद्ध सुरक्षाबलो की कार्रवाई जारी है लेकिन उसके बावजूद जिस तरह निर्दोष और निहत्थे प्रजाजनो का सहार जारी है वह एक गम्भीर चिन्ता की बात है। कभी कभी ऐसा लगता है कि अफगानिस्तान मे इस्लामी आतकवाद के विरुद्ध जो कार्रवाई प्रचलित है और जिसे भारत सहित अनेक राष्ट्र समर्थन दे रहे है उसका जम्मू कश्मीर मे सक्रिय आतकवादियो पर कोई भी असर नहीं पडा है। यह भी कोई उपेक्षा की बात नही है कि इस राज्य मे पाकिस्तान प्रशिक्षित सक्रिय आतकवादी एक के बाद एक नरसहार करने मे सफल होते चले जा रहे है। जम्मू कश्मीर मे प्रचलित आतकवाद मे कोई स्पष्ट कमी न आने का मुख्य कारण जहा एक ओर इन आतकवादी सगठनो को पाकिस्तान द्वारा दिया जाने वाला खुला समर्थन है वहीं दूसरी ओर आतकवाद के विरुद्ध अमेरिका का रवैया भी है। एक ओर पाकिस्तान अपने को आतकवाद का विरोधी कहता हे दूसरी ओर वह जम्मू कश्मीर मे प्रचलित आतकवाद का वह निर्लज्ज समर्थन भी कर रहा हे। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल परवज मुशर्रफ एक बार नही अनेक बार घोषित कर चुके हैं कि जम्मू कश्मीर मे जो आतकवाद है वह वहा की आजादी की लडाइ है। इस राज्य मे परवेज मुशर्रफ जैसा खुला समर्थन सक्रिय आतकवादी सगठनो का कर रहे है वह किसी से छिपा नही है। परन्तु विडम्बना यह है कि अमेरिकी प्रशासन और विश्व का लाकमत इस बारे मे जागरुक नहीं है।

यह भी अचम्भे की बात हे कि पाकिस्तान तो अमेरिकी प्रशासन की आखो मे धूल झोक रहा है लेकिन अमेरिकी प्रशासन भी यह दिखावा करता रहा है कि मानो पाकिस्तान सरीखा आतकवाद विरोधी कोई है ही नहीं। यह भी तथ्य है कि अफगानिस्तान मे तालिबान विरोधी अमेरिकी सैन्य कार्रवाई मे करीब ८००० पाक लडाके मारे गए ओर हजारो की सख्या मे उत्तरी गठबन्धन की सेना के बन्दी हो गए। इस सारी स्थिति को जानकर भी आश्चर्य की बात है कि अमेरिका पाक को एक शरीफ और सुधरे हुए देश का दर्जा देता रहा है। आतकवाद को खास तौर से इस्लामी आतकवाद को पाकिस्तान ने जो सहयोग समर्थन और सरक्षण की जो भूमिका प्रस्तुत की है उसकी अमेरिका अनदेखी करता रहा है। ऐसे मे भारत का दायित्व है कि वह अपने पश्चिमोत्तर क्षेत्र मे जम्मू कश्मीर मे प्रचलित आतकवाद के उन्मूलन के बार मे अपना दायित्व समझे। वैसे अब यह पूरी तरह स्पष्ट हो गया है कि आखिर मे भारत सरकार को अपने ही बलबूते पर जम्मू कश्मीर से आतकवाद का उन्मूलन करना होगा। यह ठीक है कि पिछले दिनो भारत सरकार की ओर से बार बार सूचना दी जाती रही है कि वह इस राज्य मे प्रचलित आतकवाद से स्वत निपटेगी परन्तु जिज्ञासा यह है कि आखिर ऐसी घडी कब आएगी और उसके लिए क्या रणनीति अपनाई जाएगी। अच्छा होगा यदि आज की परिस्थिति मे पश्चिमोत्तर क्षेत्र मे व्याप्त आतकवाद के उन्मूलन के लिए भारत सरकार राज्यो की

चिट्ठी-पत्री

आतंकवाद का प्रेत

सारी दुनिया मे आतकवाद से सर्वाधिक पीडित देश कौन सा है ? इस जिज्ञासा के उत्तर मे सिफ भारत का ही नाम लिया जा सकता है। इसी तरह आतकवाद के विरुद्ध कोई भी कानून न रखने वाला देश कौन है ? इस प्रश्न का भी उत्तर है भारत। दुर्भाग्य यह है कि गालबजोऊ नेता और आरामकुर्सी के शौकीन बुद्धिजीवी भी इसी के नसीब मे लिखे हैं। ११ सितम्बर की घटना से पहले अमेरिका मे कुल तीन उल्लेखनीय हमले हुए थे। शिकागो मे दूसरा न्यूयार्क मे वर्ल्ड ट्रेड सैण्टर और तीसरा ओकला हामा मे। उनमे केवल १२ जानें गई परन्तु अमेरिका ने आतकवादी विरोधी मृत्युदण्ड कानून बनाकर आतकवादियो को अपनी स्पष्ट तत्परता सकेत दे दिया। तीनो काण्डो के अभियुक्तो को प्राणदण्ड दिया गया। २८ सितम्बर को एक प्रस्ताव स्वीकृत कर सभी सदस्य देशो के लिए आतकवादी विरोधी कानून बनाना अनिवार्य कर दिया। जापान भी एक सख्त कानून लागू कर चुका है। अमेरिका के दोनो सदनो के बिना बहस के कानून पारित कर दिया। इस कानून के अन्तर्गत आतकवादियों के मुकदमे सैनिक अदालते सुनेंगी। इस कानून के अन्तर्गत आतकवादियो को नकदी लेन देन करने वाले पाकिस्तानी बैंको पर भी रोक लगा दी गई। फलत नेशनल बैंक आफ पाकिस्तान और हबीब बैंक की न्यूयार्क शाखाए बन्द कर दी गई पर भारत मे ये कार्यरत हैं। आतकवाद विरोधी पोटो कानून मे इसका प्रावधान है पर हमारे वोट लोलुप राजनीतिज्ञ यह कानून स्वीकृत करने के विरुद्ध हैं।

– अजय मित्तल, खादक, मेरठ

आतकवादियों का इलाज

अगर भारत सरकार वास्तव मे पाकिस्तान तथा आतकवादियो का इलाज करना चाहती है तो उसे सर्वप्रथम पाकिस्तान से सभी प्रकार के सम्बन्ध समाप्त कर देने चाहिए साथ ही पाकिस्तानी नागरिको को भारतीय वीजा देना भी बन्द कर देना चाहिए जिससे आई०एस०आई० के एजेण्ट यहा आकर सरलता से अपनी गतिविधिया न चला सके। भारत मे निवास कर रहे पाकिस्तानपरस्त आतकवादियो के मददगार लोगो को ढूढकर उन्हे कठोर दण्ड देते हुए उनकी सम्पत्तिया जब्त कर लेनी चाहिए। हमे पहले अपनी आन्तरिक स्थिति सुधारनी होगी तभी हम आतकवाद के समर्थक पाकिस्तान से जूझ सकेगे।

– विजय घामा वसुन्धरा, गाजियाबाद (उ०प्र०)

विपश्यना सप्तकम्

वेद से विपश्यना का प्रादुर्भाव

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) विपश्यना का साधक समदर्शी और सरक्षक बनता है

यो विश्वाभि विपश्यति भुवना स च पश्यति। स न पूषाविता भुवत।। ऋ० ३ ६२ ६

गाथिनो विश्वा मित्र । पूषा। गायत्री।

अर्थ – (य) सबके साथ मैत्री का इच्छुक जो साधक (स्तोता) सर्वपोषक परमात्मा की तरह (विश्वा भुवना) विश्व के सब प्रदेशो और प्राणियो को (विपश्यति) विशिष्ट रूप से देखता है – विपश्यना करता है (च स पश्यति) और उन्हे समान रूप से देखता है (स पूषा न अविता भुवत) ऐसा सर्वपोषक व्यक्ति ही हमारा रक्षक होने योग्य है।

विशेष – परमात्मा जैसे सर्वपोषक और सर्वरक्षक होते हुए सर्वज्ञ होने से सबके कर्मो का द्रष्टा और फलप्रदाता है वैसे ही जो सबके साथ सम व्यवहार=पूर्ण न्याय करता हो वही विश्वसघ का सरक्षक बनाया जाना चाहिए। यह पूर्ण न्याय की भावना विपश्यना विधि से ही प्राप्त की जा सकती है।

ऋग्वेद मन्त्र १०–१८७–४ का तृतीय पाद–इस मन्त्र से पृथक **स न पर्षदति द्विष ।** है। जो विपश्यना द्वारा पूर्णन्यायकर्ता बन जाता है वही हमारे द्वेषभाव को तथा हमारे द्वेषी दुश्मनो को समाप्त कर सकता है हमे उनको लघाकर पार करा सकता है।

(२) विपश्यना का कर्ता शान्ति का उपभोक्त बन जाता है

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति य प्राणिति य ई श्रृणोत्युक्तम।

अमन्तवो मा त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिव ते वदामि।। ऋ० १० १२५ ४

बागाम्भृणी। आत्मा। त्रिष्टुप।

अर्थ – हे (श्रुत) विश्रुत सखे ! (श्रद्धिव ते वदामि) श्रद्धा द्वारा प्राप्य ब्रह्म के सम्बन्ध मे तुझे बता रहा हू (श्रुधि) अत ध्यानपूर्वक सुन (अमन्त्व मा ते उपक्षियन्ति) जो मुझे नही मानते या मेरी बात को ध्यान से नहीं सुनते वे क्षीण होकर नष्ट हो जाते है। (य ईं श्रृणोति उक्तम्) और जो मेरे वचन को सुनता है (य प्राणिति य विपश्यति) और जो प्राण के आवागमन को देखता है या विपश्यना करता है (स म या अन्नमत्ति) वह मेरे साथ शान्ति का भोग करता है।

अर्थपोषण – शान्तिर्वा अन्नम। अन्नेन हीमा प्रजा विपश्यन्ति। जै० २–६४

(३) विपश्यना करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का मुझे प्रिय बना दे

प्रिय मा दर्भ कृणु ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च।

यस्मै च कामयामहे सर्वस्मै व विपश्यते।। अथर्व १६ ३२ ८

ऋगु । दर्भ । पुरस्ताद् बृहती।

अर्थ – हे (दर्भ) काम क्रोध लोभादि विदारिक परमेश्वर ! (मा) मुझे (ब्रह्म राजन्याभ्याम) ज्ञानकर्म मे रत ब्राह्मणो के लिए और शासनकर्म मे रत क्षत्रियो के लिए (शूद्राय च) और सेवा कार्य मे लगे सेवको के लिए (अर्याय च) तथा वैश्य कर्म (कृषि तथा व्यापार) मे लगे व्यक्तियो के लिए (यस्मै च कामयामहे) और जिनकी हमे कामना है उनके लिए तथा (सर्वस्मै च विपश्यते) विपश्यना करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए (प्रिय कृणु) प्रिय बना दे। वे मुझे अपना हितैषी समझे और मै उन सबका हित करने की कामना करता रहू।

विशेष – विपश्यना करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए – चाहे वह कुछ भी करता हो कही भी रहता हो मुझे प्रिय बना दे।

(४) विपश्यनाकर्ता, वार्धक्य मे उत्तम आनन्द का भोग करे

प्र पदोऽव नेनेग्धि दुश्चरित यच्चचार शुद्धै शफै राक्रमता प्रजानन।

तीर्त्वा तमासि बहुधा विपश्यन्नजो नाकमाक्रमता तृतीयम।। अथर्व ६ ५ ३

भृगु। अज पञ्चौदन । चतुष्पदा पुरोऽति शक्वरी जगती।

अर्थ – सर्वविद्याविशारद पुरोहित अपने यजमान के लिए प्रार्थना करता है कि – हे प्रभो ! आप इस यज्ञमान के द्वारा (अवपद यत दुश्चरित चचार) अज्ञानवश किए हुए दुराचरण को (प्रनेनेग्धि) प्रकृष्ट रूप से धो डालिए ताकि भविष्य मे (प्रजानन शुद्धै शफै आक्रमताम्) प्रकृष्ट चेतनायुक्त होकर शुद्ध आचरणो के साथ कार्यो मे प्रवृत्त हो और (बहुधा विपश्यन तमासि तीर्त्वा) प्राय विपश्यना करता हुआ अज्ञानान्धकारो को तैरकर (अज) यह जीव (तृतीय नाक आक्रमताम) तृतीय सवन (वार्धक्य) मे पहुचकर सहस्रार चक्र मे सुख दु ख वाले द्वन्द्वात्मक सुख से छूटकर आनन्दस्वरूप परमात्मा मे विचारने वाला बन जाए।

विशेष – प्रकृति जड होने से दु ख रहित प्रथम नाक है जीव सुख दु ख दोनो से विद्ध होने के कारण द्वितीय नाक है परमात्मा केवल आनन्दस्वरूप होने स तृतीय नाक है। २४+४४+४८ वर्ष के सवनो मे तृतीय सवन काल की दृष्टि से तृतीय नाक है। स्थान की दृष्टि से द्युलोक (मस्तिष्क) का तृतीय चक्र सहस्रार चक्र तृतीय नाक है।

(५) (क) सखा विष्णु के कर्मो का अवलोकन सूक्ष्म दृष्टि (विपश्यना) प्रदान करता है

विष्णो कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।

इन्द्रस्य युज्य सखा।। ऋ०१ २२ १६

मेधातिथि काण्व । विष्णु । गायत्री।

अर्थ – (विष्णु) सर्वव्यापक परमात्मा (इन्द्रस्य युज्य सखा) जितेन्द्रिय जीवात्मा के साथ सदा जुडा रहने वाला मित्र है। वह (यत व्रतानि पस्पशे) क्योकि अपने स्वाभाविक कर्मो को बडी बारीकी से देखता है इसलिए हे साधको ! तुम (विष्णो कर्माणि पश्यत) उस सर्वव्यापक विष्णु का अनुकरण करते हुए उसके कर्मो को विशेष रूप से बारीकी से देखो। यह बारीकी से देखना ही विपश्यना है

(ख) विपश्यना द्वारा विशिष्ट दृष्टि प्राप्त करने वाले सब कुछ हृदय मे जान लेते है

आदित्यास शुचयो धारपूता अवृजिना अनवद्या अरिष्टा । त आदित्यास उरवो गभीरा अदब्धा सो दिप्सन्तो भूर्यक्षा ।

अन्त पश्यन्ति बृजिनोत साधु सर्व राजभ्य परमाचिदन्ति।। ऋ० २ २७ ३

कूर्मो गार्त्समद । आदित्या । त्रिष्टुप।

अर्थ – (आदित्यास) आदित्य ब्रह्मचारियो के सदृश दीप्त (शुचय) पवित्र (धारपूता) वेदज्ञो के सदृश पवित्र वाणी वाले (अवृजिना) वर्जनीय कामो से अस्पृष्ट (अनवद्या अरिष्टा) प्रशसनीय तथा किसी को दु ख न देने वाले (उरव गभीरा) विशाल हृदय और गम्भीर (अदब्धास दिप्सन्त) किसी के रौब मे न आने वाले अपितु दूसरो को रौब मे लेने वाले और (भूर्यक्षा) अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि वाले बनकर (राजभ्य परमाचिद) राजाओ के लिए भी अतिदूर अगम्य अज्ञेय विषयो को (अन्ति) समीपवत (सर्व साधु उत वृजिना अन्त पश्यन्ति) सब कुछ अच्छा और बुरा – अपने अन्त करण मे देख लेते है।

निष्कर्ष विपश्यना करने वाले को अन्तर्दृष्टि प्राप्त हो जती है

(ग) आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योति पश्यन्ति वासरम।

परो यदिध्यते दिवि।। ऋ० ८ ६ ३०

इन्द्र । गायत्री।

अर्थ – (आदित्) अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने के बाद (प्रत्नस्य रेतस) सनातन जगदबीज परमात्मा की (वासर ज्योति) राग द्वेष निवारक अणिमादि योग सिद्धियो की निवासक ज्ञान ज्योति को (यत दिवि पर इध्यते) जो धुलोक के ऊपर सहस्राभ प्रदीप्त होती है (रेतस पश्यन्ति) ऊर्ध्वरेता जितेन्द्रिय जन साक्षात करते है।

(६) विपश्यना से प्राप्त अन्तर्दृष्टि मनुष्य को त्रिकालज्ञ बना देती है

अतो विश्वीन्यद्भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति।

कृतानि या व कर्त्वा।। ऋ० १ २५ ११

आजीगर्ति शुन शेप स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरत । वरुण । गायत्री।

अर्थ – (अत) इसके बाद (चिकित्वान वरुण) दोषो का निवारणकर्ता ज्ञानी पुरुष (विश्वानि अद्भुता कृतानि या च कर्त्वा) उन सब अद्भुत घटनाओ वस्तुओ और स्वकर्मों को जो भूतकाल मे हुए है या भविष्य मे होगे अथवा किए जाएगे (अभि पश्यति) विपश्यना को सिद्ध करके स्पष्ट रूप में देख लेता है।

निष्कर्ष – साधक विपश्यना को सिद्ध करके त्रिकालज्ञ बन जाता है।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

हिमालय और गंगा को बचाने की लड़ाई

– सुन्दरलाल बहुगुणा

गत् माह मैं और श्री वेदव्रत शर्मा जी किसी कार्यवश ससद भवन गए थे तो बाहर निकलते हुए स्वागत कक्ष में एक सीधे और सरल व्यक्तित्व को देखकर हमारा मन खिल उठा, वह व्यक्तित्व था प्रसिद्ध पर्यावरणविद् श्री सुन्दरलाल बहुगुणा का। तुरन्त उत्सुकतावश उनसे शिष्टाचार भेट करने के बाद बातचीत का ऐसा सिलसिला प्रारम्भ हुआ कि लगभग एक घण्टे से ऊपर चलने वाला उनका साथ हमारी आत्मा को आनन्दित कर गया। इस एक घण्टे की वार्ता मे सब कुछ देश और आर्यसमाज की परिस्थितियों को ही समर्पित था। श्री सुन्दरलाल बहुगुणा ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी बढ चढ कर हिस्सा लिया और विगत् काफी लम्बे समय से वे हिमालय में टिहरी बाघ के विरोध मे स्वय बाध बनकर खडे हैं। कुछ वर्ष पहले तो उन्होंने इसी विरोध मे बहुत लम्बा उपवास भी रखा था। टिहरी बाध के विरोध में वैज्ञानिक कारणों का समावेश करते हुए उन्होने एक लेख भी हमे दिया, जिसे यहा प्रकाशित किया जा रहा है।

– विमल वधावन

अब मैं अपने सामने उत्तर की ओर देखता हू तो भीषण गर्मी के इन दिनो मे भी आध जलराशि को लेकर बहने वाली भागीरथी को देखकर मेरे मन मे प्रश्न उठने लगता है कि क्या यह पानी निरन्तर इसी तरह बहता रहेगा ? विंध्य सतपुडा पूर्वी और पश्चिमी घाट से निकलने वाली नदियो में जैसे जैसे गर्मी बढने लगती है जलस्तर घटने लगता है। कुछ नदिया तो सूख ही जाती हैं। इन नदियो पर बने हुए बाधो का जलस्तर बहुत नीचे चला जाता है और फिर ऐसे समय पर जब सिचाई के लिए पानी की सर्वाधिक आवश्यकता होती है अधिक पानी छोडने के लिए चिल्लाहट मचने लगती है पर यहा तो आलम ही दूसरा है। जैसे जैसे गर्मी बढने लगती है गगा और हिमालय से निकलने वाली नादियो का जलस्तर बढने लगता है और जुलाई के बाद जब इनके उद्गम क्षेत्रो मे सर्वाधिक गर्मी पडती है और बर्फानी क्षेत्रो के नीचे के पर्वतीय जलग्रहण क्षेत्र मे मानसून की वर्षा होती है जलस्तर शिखर पर पहुच जाता है।

यही कारण है कि अब भारत के हिमालय मे ३६ विशालकाय बाधो को बनाने की योजना है। इन बाधो मे १६ पूर्वी हिमालय मे १० मध्य हिमालय मे और १० पश्चिमी हिमालय मे हैं। इनमे कुछ भाखडा पोग और चमेरा तो बन भी चुके हैं। मैं स्वय एशिया के सबसे ऊचे २६०५ मीटर ऊचे निर्माणाधीन टिहरी बाध के निकट बैठा हू। मेरे दक्षिण की ओर केवल २५० मीटर की दूरी पर भीमकाय मशीने रात दिन काफर बाध का निर्माण कार्य तेजी से कर रही है। मैं देश के विकास के लिए महत्वाकाक्षी प्रचारित की जाने वाली इस परियोजना की समीक्षा और भ्रष्टाचार की उच्चस्तरीय जाच के लिए पिछले २१ दिनो मे प्रार्थनामय उपवास कर रहा हू। इस उपवास के ग्यारह दिन जेल की सींखचो के पीछे बीते। अब बाध निर्माण कार्य को जारी रखने के लिए सारा टिहरी नगर ही एक जेल मे बदल दिया गया है। यहा पर भारी सख्या मे सशस्त्र पुलिस तैनात है। भय और आतक कायम कर सगीनो के साथ मे देश की महत्वाकाक्षी विकास परियोजना पर काम हो रहा है। जहा इतने दिनो मे मेरे बेटे के शब्दो मे कहीं दो कुत्ते भी लडते हुए नहीं दिखाई दिए शाति कायम रखने के लिए दफा–१४४ के अन्तर्गत निषेधाता लागू है। लोगो को सूचना पाने के मौलिक अधिकार से वचित रखने के लिए टिहरी के जिलाधिकारी ने २६ जून तक विश्व में ख्याति प्राप्त मानवाधिकारो और वैकल्पिक विकास के लिए सघर्षरत नेत्री सुश्री मेधा पाटेकर और उनके साथियो के टिहरी गढवाल जिले मे प्रवेश पर ही पाबन्दी लगा दी है।

मुझे इसके बाद अब अधिक कहने की आवश्यकता नहीं हैं कि दो दो सरकारी विशेषज्ञ कमेटियों द्वारा सन् १६८६ और १६६० मे टिहरी बाध परियोजना को त्यागने की सिफारिशों के बावजूद भी इसे आगे बढाने के लिए पुलिस के इतने कडे पहरे के बीच इसका काम क्यो चलाया जा रहा है ? क्यो इससे सम्बन्धित सारे गोपनीय दस्तावेजो को एक श्वेत पत्र प्रकाशित कर जैसी सासद मेजर जनरल अवकाश प्राप्त भुवनचन्द्र खडुरी ने ससद मे माग की थी जनता के सामने नहीं जा रहा है ? यह सब सत्य को छिपाने के लिए है। टिहरी बाध की ओर निर्माण सामग्री ले जाने वाली वाहनो को रोकने के लिए जिस स्थान पर हम धरना दे रहे थे वहा पर एक अस्थाई पुलिस चौकी कायम की गई है। उससे कुछ ही दूरी पर गुराडु की डोखरी के नाम से एक खेत था जहा पर टिहरी की सामन्ती रियासत के शासनकाल मे हत्या के अपराधियो को सरेआम फासी दी जाती थी। इस दृश्य को देखने के लिए सबको वहा बुलाया जाता था जिससे लोगो को हत्या जैसा जघन्य अपराध करने का साहस न हो। इसे देखने के लिए हमारे स्कूल की छुटटी हो जाती थी। बाल्यावस्था मे मैंने भी यह देखा था। अब 'सत्यमेव जयते के राज चिन्ह वाले हमारे गणतत्र मे भी ६ १० मई की रात को वहा पर एक फासी दी गई है लेकिन इसमे मैं दर्शक नहीं था। मैं और मेरे चुने हुए पाच साथी इसके पात्र थे। हमे रात १२ बजकर ४० मिनट पर एक अतिरिक्त जिलाधिकारी के नेतृत्व मे आधा दर्जन थानेदार दर्जनो सशस्त्र और सादी पुलिस के साथ वहा से गिरफ्तार करके ले गए क्योकि हम टिहरी बाध की तह मे छिपे हुए झूठ को सतह पर लाने के बैठे हुए थे। अत मध्य रात्रि मे विश्वभर मे मानवाधिकारो की रक्षा का ढिढोरा पीटने वालो ने सत्य को फासी दे दी। हमे दूर सहारनपुर जेलखाने मे ले गए।

यह सारा प्रसग टिहरी बाध और गगा मे पानी की मात्रा के साथ जुडा हुआ है। टिहरी मे भागीरथी और मिलगना के सगम के नीचे जहा भीमकाय बाध बनेगा एक वर्ष मे इतना दिखया गया है जिससे पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे २७ लाख हैक्टेयर नई भूमि की सिचाई होगी और ६ २ लाख हैक्टेयर सिचित भूमि को सिचाई के लिए अतिरिक्त पानी मिलेगा। यह तो प्रारम्भिक आकलन था। उसके बाद जब बाध का विरोध प्रारम्भ हुआ तो दिल्ली का समर्थन प्राप्त करने के लिए दिल्ली को प्रतिदिन ३०० क्यूबिक (१६२ लाख गैलन पानी) देने की और अब उ०प्र० के नगरो को २०० क्यूबिक (१०० लाख गैलन पानी) देने की घोषणा की गई है। यह आश्चर्यजनक है कि निरन्तर पानी की उपलब्धि कैसे बढती जा रही है ? दूसरी और सोवियत पर्यावरण मन्त्रालय ने टिहरी बाध क्षेत्र के जल और वर्षा के आकडो के अध्ययन के बाद यह पाया कि जितना पानी एक वर्ष मे उपलब्ध होना बताया गया है बाध जलाशय भरने के लिए तीन साल मे एक बार उतना पानी होगा। हमारी सभी परियोजनाओ का औचित्य सिद्ध करने के लिए प्रारम्भ मे गलत आकडे प्रस्तुत किए जाते हैं फलत उनसे अपेक्षित लाभ हो ही नहीं पाता। राष्ट्र को लाभ के बजाए हानि होती है।

यू जानकार नदी के बहते हुए पानी को देखते हैं लेकिन उसके उद्गम से कोई सरोकार नहीं रखते। मई १६७८ मे मैंने पहली बार गोमुख की यात्रा की थी। गगोत्री से साढे तीन किलोमीटर नीचे भोजवासा मे हम रुके थे। वहा पर लाल बाबा नाम के एक बाबा ने यात्रियो के लिए खिचडी और विश्राम की व्यवस्था की थी। मेरे सहयात्री श्री कमलेश कुमार पाण्डा ने जो इसी क्षेत्र के निवासी हैं और तीस साल से गोमुख जाते रहे बताया – 'पहले यहा पर भोज का सघन वन था पर अब तो वहा भोज के पेड तो क्या ठूठ भी नहीं दिखाई देते। ये भोज के पेड कहा गए ? बाबा के भक्तो के लिए पकने वाली खिचडी के चूल्हो मे जल गए हा ! उनके आश्रम के आसपास आलू की खेती अवश्य होनी लगी है। रास्ते मे बडे-बडे शिलाखण्ड थे जो पहले ग्लेशियर के नीचे ढके रहे होगे। रेत बहकर नदी मे चल गई।

हम गोमुख से एक किलोमीटर पीछे थे। इस स्थान पर पर्वतारोहियो का आधार शिविर था। पर्वतारोहण के लिए आने जाने वाले यहा पर कई दिनो तक डेरा डाले बैठे रहते हैं। कमलेशजी ने बताया – जब वे पहली बार आए थे तो गोमुख वहा पर था अब खिसककर पीछे चला गया। प्रतिवर्ष भागीरथी के उद्गम तक पहुचने के लिए कुछ मीटर और चलना पडता है। हम गोमुख पहुचे तो एक भयावह दृश्य सामने आया। निरन्तर पत्थर और रेत नीचे गिर रही थी और बर्फ की तह लुप्त हो रही थी। मैंने स्नान कर सकल्प लिया **मेरा जीवन गगा और हिमालय की रक्षा के लिए समर्पित।'**

यह कोई भावुक फैसला नहीं था। कुछ समय पहले मैंने भारतीय हिमनद सर्वेक्षण विभाग की एक रिपोर्ट पढी थी। उसके हिसाब से गगोत्री ग्लेशियर औसतन १८ मीटर प्रतिवर्ष की दर से पीछे हट रहा था। इस हिसाब से पानी १४०० वर्ष मे इस ग्लेशियर की आयु समाप्त हो जाती। लेकिन जवाहरलाल नेहरू विश्व विद्यालय के पर्यावरण विज्ञानियो के दल के नेता श्री सैयद इकबाल हसनन के ताजा अध्ययन के अनुसार जिसकी रिपोर्ट २७ मई ६५ के 'टाइम्स ऑफ' इण्डिया मे प्रकाशित हुई है। पिछले चार वर्षो मे गगोत्री ग्लेशियर लगभग ८०० मीटर पीछे हट गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह ग्लेशियर केवल १२५ वर्षों मे समाप्त हो जाएगा। इससे भी पहले हो सकता है क्योकि पीछे हटने की दर निरन्तर बढ रही है। १६ वीं शताब्दी मे यह कुल ७३ ५ मीटर पीटे हटा था जबकि इस शताब्दी मे सन १६३५ और १६७५ के बीच ४० वर्षो मे ही ७५० मीटर पीछे हट गया है। हाल के वर्षो मे इसकी गति अत्यधिक तीव्र होने के मुख्य कारण तो ठेठ गोमुख मे ही पर्यटको की सुविधा के लिए खुले सात ढाबों में प्रतिदिन जलने वाला २०० लीटर मिटटी का तेल था। इसका प्रभाव ग्लेशियर पर पडता है। पर्यटन बढाने के सरकार के ताबड तोड प्रचार का यह परिणाम है कि आज गोमुख में भी चाय नाश्ता और भोजन करने वाले पर्यटको की सख्या बढने लगी है। ये उपवास रखकर या चने-चबेला सत पर गुजारा करने वाले श्रद्धालु तीर्थयात्री नहीं हैं। हो सकता है कि भोजवासा की आधुनिक सुख सुविधाओ से सुसज्जित एक सरकारी होटल खुल जाए या हिमालय के प्रति एडमडहिलेरी के नेतृत्व मे प्रेम प्रकट करने के लिए सगठित दिल्ली के होटल मालिको का सगठन यह सेवा प्रारम्भ कर दे। पर्यावरण रक्षा का प्रोजेक्ट लेकर वे पहले ही वहा पहुच गए हैं।

डॉ० हुसनन को विज्ञान और प्रौद्योगिक विभाग ने ग्लेशियर के अध्ययन का कार्यभार सौंपा है। उनका अध्ययन जारी है लेकिन गोमुख की चौंकाने वाली स्थिति को देखकर उन्होने तत्काल वहा पर खुले ढाबो को बद करने की सिफारिश की है। जब तक इस सिफारिश पर अमल होता है तब तक मौजूदा दर से गगोत्री ग्लेशियर की उम्र ८ १० वर्ष कम हो गई होगी।

गलेशियर के अलावा गगा मे पानी के बहाव को निरन्तर बनाए रखने मे इसके पर्वतीय जलग्रहण क्षेत्र के छोटे नदी नालो का बडा भारी योगदान है। इनका उद्गम वनो मे है। वनो की हजामत का काम डेढ सौ वर्ष पूर्व प्रारम्भ हो गया था। आजादी के बाद इसकी गति तीव्र हो गई। चिपको आन्दोलन ने कुछ वर्षों के लिए इस पर विराम लगाया था लेकिन उत्तर प्रदेश मे मुलायम सरकार के सत्तारूढ होने के बाद यह बूढे पेडो को हटाने के नाम पर उठ गया। इस प्रकार कुल्हाडी वालों को भागीरथी की प्रमुख सहायक नदी मिलगना के उदगम के निकट गगा के कुवारे जगल मे प्रवेश का मौका मिला और उसका सफाया हो गया। ठेकदारो और सरकार दोनो को धन मिला। लेकिन देश को जीवन के स्थाई आधार जल के सदा सदा के लिए वचित होना पडा। नैनीताल स्थित मध्य हिमालय पर्यावरण सघ द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार पिछले २५ वर्षों मे पानी के स्रोतो मे २५ से लेकर ७५ प्रतिशत तक जल कम हुआ है। इस सबका सीधा प्रभाव गगा पर पडेगा।

मैं व्यवस्था द्वारा रचे हुए चक्रव्यूह के बीच फसा हुआ हू। गगा और हिमालय को बचाने के अपने मिशन की सफलता की अन्तिम लडाई लड रहा हू। इसमे मेरा साथ देने वालो को भय से आतकित किया गया है। मेरे निकट पहुचने से पहले वे अपने को उत्पीडन के लिए तैयार रखें इसका अहसास कराने के लिए कुछ ही कदम पीछे सशस्त्र पुलिस खडी है। अहिंसा के सिपाही का अन्तिम शस्त्र उपवास होता है। इसका उपयोग मैं इसलिए भी आवश्यक समझता हू कि इस देश ने सत्याग्रह का रास्ता छोड दिया है। यदि आजादी के तुरन्त बाद ही यह अपना लिया गया होता तो हम आज हमारे सामने आतकवाद का नग्न नृत्य न होता। हमे अपने हको की माग करने वाले को दबाने के लिए भारी पुलिस बल न रखना पडता। मेरे लिए अपनी बात सुनाने के सब रास्ते बन्द हो चुके हैं इसलिए मैं लोकतन्त्र के चौथे स्तम्भ के द्वारा अपना अन्तर्नाद देशवासियो तक पहुचा रहा हू।

पृष्ठ १ का शेष भाग

आर्यसमाज के उत्सवों को विशेष पर्वों के रूप में ......

क्षमा पर्व पर सभी आर्यजन एक दूसरे की भूलो को क्षमा करते हुए परस्पर सहयोग का सकल्प ले।

होली को मिलन पर्व के रूप मे मनाया जाए और विशेष रूप से दलितो और पिछडे वर्ग के लोगो मे प्रवचन उपदेश आदि आयोजित किए जाए।

सामाजिक एकता स्थापित करने मे इस पर्व का विशेष महत्व होगा। बलिदान पर्व पर न केवल स्वामी श्रद्धानन्द को अपितु देश के समस्त बलिदानी महानुभावो का स्मरण करते हुए उन्हे श्रद्धाजलि दी जाए। इस रूप मे बलिदान पर्व मनाने से आर्यसमाज की एक विशेष छवि देश की जनता के सामने उपस्थित होगी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने मच सचालन करते हुए कहा कि आर्यसमाज रानी बाग के अधिकारियो और सदस्यो का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की हर प्रकार की गतिविधियो मे विशेष सहयोग होता है। यहा के सदस्यो मे आपसी प्रेम और श्रद्धा अतुलनीय है। उन्होने कहा कि स्वागत शब्द की धारा दोनो तरफ बहती है। यह स्वागत समारोह भी उसी दोमुही धारा की तरह है जिसमे आर्यसमाज के अधिकारीगण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाके निर्देशो और मार्गदर्शन की कामना रखते हैं और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी उन निर्देशो के उचित क्रियान्वयन की अपेक्षा करते है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि रानीबाग आर्यसमाज के समस्त अधिकारी और सदस्य अपने विशेष प्रयासो के लिए साधुवाद के पात्र हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य तथा पुस्काध्यक्ष श्री सोमदत्त महाजन ने भी आर्यजनो को सम्बोधित किया।

समाज के मन्त्री श्री जोगिन्द्र खटटर कोषाध्यक्ष श्री रामलाल आहूजा श्री कृष्ण कुमार साहनी श्री भूषण कुकरेजा श्री यज्ञदत्त आर्य श्री राहुल आर्य श्रीमती शकुन्तला श्रीमती दमयन्ती तथा श्रीमती ज्ञान आर्या आदि ने भी इस स्वागत समारोह मे भाग लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो को ओ३म की एक सुसज्जित शील्ड भी प्रदान की गई।

गुजरावाला टाऊन मे वेद प्रवचन

दिल्ली। उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल ने ५ जनवरी शनिवार को प्रात साढे सात से ११ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर गुजरावाला टाऊन पार्ट-।। मे आचार्य जैमनी शास्त्री व आचार्य प्रेमपाल शास्त्री के वेद प्रवचनो का आयोजन किया है।

इस अवसर पर कर्मयोगी वेद प्रचार के लिए समर्पित महाशय कृष्ण के शिष्य समाजसेवी महाशय रामविलास खुराना को उनके ८०वे जन्मोत्सव पर मण्डल की ओर से वैदिक साहित्य व आर्य श्रेष्ठी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। यहा "विश्व कल्याण" यज्ञ भी आचार्य अभयदेव शास्त्री जी के सान्निध्य मे होगा।

– **चन्द्रमोहन आर्य**, प्रचार मन्त्री

कैप्टन देवरत्न आर्य फिजी हिन्दी साहित्य सभा द्वारा सम्मानित

फिजी हिन्दी साहित्य सभा का एक विशेष प्रतिनिधि मण्डल डॉ० नेतराम शर्मा के नेतृत्व मे भारत भ्रमण पर है। इस सस्था के द्वारा दिल्ली स्थित इण्डिया इण्टरनेशनल सैण्टर में एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस समारोह मे प्रख्यात कानूनविद् डॉ० लक्ष्मीमल सिधवी मुख्य अतिथि थे। सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन तथा सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा भी इस समारोह मे उपस्थित थे।

इस समारोह मे कई अन्य हिन्दी लेखकों और विद्वानो को भी सम्मानित किया गया।

राष्ट्रोत्थान में आर्यसमाज का योगदान

आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली मे शनिवार दिनाक २६–१२ २००१ को प्रात ११ बजे भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा एव कर्मठ मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने की। इस प्रतियोगिता मे विभिन्न स्कूलो के बच्चो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। भाषण प्रतियोगिता का विषय **राष्ट्रोत्थान मे आर्यसमाज का योगदान** था। प्रतियोगिता मे भाग लेने आए बच्चो के अभिभावक स्कूलो की अध्यापिकाए उपस्थित थे। प्रतियोगिता के सयोजक श्री जगननाथ ढीगरा ने मच सचालन किया। प्रत्येक प्रतियोगी को ४ मिनट का समय दिया गया।

५ वर्षीय बालक आनन्द उपाध्याय ने गायत्री मन्त्र के उच्चारण से अपना भाषण प्रारम्भ किया। राष्ट्र के उत्थान मे आर्यसमाज की भूमिका पर बालक ने कहा कि महर्षि दयानन्द की कृपा से ही आज हम दलित ससद भवन तक पहुचे है। बालक आनन्द ने श्री राम प्रसाद बिसिमल के जीवन चरित्र के सस्मण बताए।

सचदेवा पब्लिक स्कूल के छात्र सौरभ खुराना ने अपने भाषण में कहा कि आर्यसमाज ने हिन्दू जाति मे जागृति पैदा की। आर्यसमाज ने स्त्रियो की शिक्षा तथा शुद्धि आन्दोलन चलाया।

डी०ए०वी० स्कूल पुष्पाजलि के छात्र आशुष गुप्ता ने आर्यसमाज की शिक्षा के क्षेत्र मे भूमिका पर प्रकाश डाला।

कुलाची हसराज माडल स्कूल की छात्रा अग्रिम महाजन ने कहा कि आर्यसमाज ने भारत मे ही नही बल्कि पूरे विश्व मे वेद वाणी पहुचाई।

सर्वोदय विद्यालय की छात्रा शुभा चोपडा ने अपने भाषण मे कहा कि जब देश गुलाम था देश मे कुरीतिया थी उस समय आर्यसमाज की स्थापना हुई आर्यसमाज के नियम किसी विशेष धर्म या देश को ध्यान मे रखकर नहीं बताए गए थे बल्कि मानव के कल्याण के लिए बनाए गए थे। महर्षि दयानन्द ने नारी को बराबरी का अधिकारी दिलाया।

माऊट आबू स्कूल रोहिणी क छात्रो राहुल विकास मीनाक्षी ने कहा कि आर्यसमाज के योगदान को शब्दो की सीमा मे नही बाधा जा सकता।

सी०आर०पी०एफ० स्कूल की छात्रा सुमन गौहर ने अपने भाषण मे लाला हसराज प० गुरुदत्त लाला लाजपत राय द्वारा किए गए कार्यो पर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय भाषण मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने बच्चो की प्रशसा की और आह्वान किया कि वे आर्य समाज की मुख्य धारा से जुडे उन्होने आर्यसमाज के पदाधिकारियो को इस प्रकार की प्रतियोगिता के आयोजन के लिए बधाई दी। श्री नरेन्द्र आर्य ने कहा कि आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने विशेष प्रस्ताव पारित करके सरकार को चेतावनी दी है कि मनगढन्त झूठी और निराधार बातो को इतिहास से हटाया जाए। आर्यो को आक्रमणकारी और विदेशी कहने वाली बातो को भी हटाया जाए।

इस अवसर पर स्वामी आनन्द वेश जी भी उपस्थित थे। स्वामीजी ने सभी प्रतियोगियो को साधुवाद दिया। प्रतियोगिता के अन्त मे आर्यसमाज सरस्वती विहार के प्रधान श्री भजन प्रकाश आर्य ने श्री नरेन्द्र आर्य तथा अन्य उपस्थित लोगो का धन्यवाद किया।

दयानन्द वचनामृत

- आत्मस्थ होकर परमात्मा मे चित्त जिसने लगाया है उसको जो परमात्मा के योग का सुख होता है वह वाणी से कहा नहीं जा सकता।
- जो पुरुष विद्वान ज्ञानी धार्मिक सत्पुरुषों का सगी योगी पुरुषार्थी जितेन्द्रिय और सुशील होता है वही धर्म अर्थ काम व मोक्ष को प्राप्त होकर इस जन्म और पर जन्म मे सदा आनन्द मे रहता है।
- जब क्षत्रियादि विद्वान होते है तब ब्राह्मण भी अधिक विद्याभ्यास और धर्मपथ पर चलते हैं।
- जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नहीं रहते तब अन्ध परम्परा चलती है।
- यह ससार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य पुरुषार्थ हीनता ईर्ष्या द्वेष विषयासक्ति और प्रमाद बढता है।
- मनुष्य उसी को कहना कि जो मननशील होकर अन्यों कि सुख दुख और हानि लाभ को अपना समझे।
- जो वास्तविक विद्वान होता है वह सत्य की परीक्षा करके सत्य ग्रहण और असत्य को त्याग देता है।
- परमात्मा की सृष्टि मे अभिमानी अन्यायकारी और अविद्वान लोगो का राज्य बहुत दिन नहीं चलता।
- जिस कर्म मे आत्मा प्रसन्न रहे अर्थात जिससे भय शका और लज्जा हो उन कर्मो का सेवन उचित है।
- जैसे पुरुषो को व्याकरण धर्म और व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढनी चाहिए वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण धर्म वैधक गणित शिल्प विद्या अवश्य ही सीखनी चाहिए।

प्रेमशील महेन्द्र ६३६/२८ फरीदाबाद (हरियाणा)

ऐसा वैदिक गीत गाओ

सुभाष चन्द्रगुप्त

आर्यो ! जागो जगाओ वेद की वीणा बजाओ।
हर हृदय झकृत हो जाए ऐसा वैदिक गीत गाओ।।

दस नियम का पाठ करते सगठन का सूक्त पढते
जय दयानन्द राम कृष्ण महान ऋषियो की है करते।
ऋषियो के मार्ग पे चलकर जगत को चलना सिखाओ
हर हृदय झकृत हो जाए ऐसा वैदिक गीत गाओ।।

एक हो वाणी हमारी एक सबका विचार हो
लक्ष्य जब है एक ही क्यो व्यर्थ का तकरार हो।
भेद भावो को मिटाओ जय ऋषि की करते जाओ
हर हृदय झकृत हो जाए ऐसा वैदिक गीत गाओ।।

खोला गुरुकुल श्रद्धानन्द ने रक्षा करने सस्कृति की
हसराज ने भी जूलाई ज्योति वैदिक सस्कृति की।
वेद पथ पर बढते जाओ सफल जीवन को बनाओ
हर हृदय झकृत हो जाए ऐसा वैदिक गीत गाओ।।

याद कर लो वो जमाना जब बढे थे एक होकर
सुभाष सुनकर तर्क सबने जय बुलाई सिर झुकाकर।
हो निडर फिर लेखराम सी दुन्दुभि लेकर बजाओ।
हर हृदय झकृत हो जाए ऐसा वैदिक गीत गाओ।।

१५६ ए०जी०सी० आर० एन्कलेव दिल्ली ११००६२

स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलि

(श्रीमती शान्ति देवी उर्फ असगरी बेगम)

वैदिक धर्म का डका स्वामी बजा गए हैं।
मुर्दादिलों को स्वामी जिन्दा बना गए हैं।।

तर्जे अमल हमारा हमको बता गए हैं।
कर्त्तव्य अपना पालन करना सिखा गए हैं।।

सारी उम्र गुजारी थी खिदमते धर्म मे
सेवा यह आखरी भी स्वामी निभा गए हैं।।

बाग धर्म को सींचा अपने लहु से आखिर
कुर्बानियों का करना हमको सिखा गए हैं।

खुद हो गए अमर वो जाति में डाल दी जा।
वैदिक धर्म की खिदमत करना बता गए हैं।।

हा रायगा न हरगिज जाएगा खून उनका
वो जा नशीन अपना हमको बना गए हैं।

हस हस के जान देना सीखेंगे इस तरह से
अपना लहु बहाकर हमको दिखा गए हैं।

इस्लाम के जुल्म की ताईद में मुसलमा
स्वामी का खू बहाकर मोहरे लगा गए हैं।

कुर्बान वेद पर होकर पाएगे शान्ति हम
यह आखरी सबक वो हमको पढा गए हैं।

– सग्रहकर्ता देवराज आर्यमित्र
आर्यसमाज कृष्णानगर दिल्ली ५१

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज धुर्वा राची

प्रधान – श्री राजकपूर चौधरी
मन्त्री – श्री अनिल माझी
कोषाध्यक्ष – श्री बबन प्रसाद

इस पत्र में प्रकाशित लेखों और विज्ञापनों के सम्बन्ध में

आर्यसन्देश साप्ताहिक मे छपे लेखो तथा विचा ो से सम्पादक मण्डल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है यह साप्ताहिक पूर्णत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नीतिगत एव सैद्धान्तिक पक्ष को ही उजागर करता है। परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियो मे वैदिक विद्वानों के विचारार्थ प्रस्तुत करने के लिए अन्य सामग्री भी प्रकाशित की जा सकती है। आर्यसन्देश साप्ताहिक मे प्रकाशित दान आदि की अपीलो को दिल्ली ० प्रतिनिधि सभा का निवेदन या निर्देश न समझा जाए।

सम्पादक

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 3 4/01/2002 दिनाक ३१ दिसम्बर से ६ जनवरी २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 3 4/01/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

घंटा-शंख द्वारा प्रदूषण में कमी

भारत धर्मप्राण देश है। भारत की शिक्षा दीक्षा प्रणाली मे छोटी छोटी सज्ञा के महत्व को जीवनोपयोगी ढग से देखा जाता था। छोटी छोटी जीवनोपयोगिता की शिक्षा दीक्षा के माध्यम से आश्रमो और घरो मे बालक बालिकाओ को दी जाती थी।

ससारभर मे भारत ही एक ऐसा देश है जहा मन्दिरो की सख्या अधिक मात्रा मे है। मन्दिरो मे घन्टियो की ध्वनी का अधिक महत्व रहता है।

भारत की नदियो मे गगा नदी अधिक जीवनोपयोगी और महत्वपूर्ण है। गगा तीरे साधुओ की सख्या अधिक पाई जाती है। प्रत्येक साधु के पास शख अवश्य रहता है।

विदेशी पर्यटको का अकसर प्रश्न रहता है कि इस देश मे लोग अधिक सख्या मे घन्टिया बजा बजकर ध्वनि प्रदूषण बढा रहे हैं ? भारत के बच्चे नवयुवक नवयुवतिया भी इसी प्रकार के प्रश्नो की बौछार करते रहते है पर उन्हे उत्तर नहीं मिलता अगर मिलता भी है तो असन्तोषजनक। कारण यह है कि आज की शिक्षा मे दीक्षा की कमी। आज की शिक्षा दीक्षा से अलग हो चुकी है। शिक्षा के सागर मे दीक्षा का सूरज डूब चुका है।

भारतीय जनश्रुति बताती है कि प्रत्येक मनुष्य मन्दिरों मे इसलिए घन्टिया बजाता है कि वह ईश्वर को अपनी उपस्थिति का ज्ञात कराता है। शख का विचार बस विचार बनकर ही रह गया।

भारत भ्रमण से विदेशो मे घटा और शख ध्वनि पर शोध जरूर हुआ। विशेषकर जर्मनी की राजधानी बर्लिन विश्वविद्यालय मे सन १९२८ के शोध द्वारा यह पता चला कि घटा और शख की ध्वनि से सक्रामक रोग के कीटाणुओ को नाश होता है। प्रति सैकेण्ड २७ घनफुट वायुशक्ति के जोर से बजाए शख की ध्वनि से १२०० फुट दूरी तक के कीटाणु नष्ट हो जाते है और २६०० फुट के जन्तु मूर्छित हो जाते हैं। शख ध्वनि से बुखार हैजा आदि का इलाज सम्भव है। मिर्गी मूर्छा कठमाला कोढ आदि का इलाज होता है। शिकागो के डा० डी० ब्राइनेन ने शख ध्वनि से बहरेपन का भी इलाज किया है।

घटा ध्वनि भारत के प्रत्येक ग्राम शहर के मन्दिरो मे सुनाई देती है। मनोवैज्ञानिक विचारो से पता चलता है कि घन्टियो की ध्वनि से हमारे शरीर मे बसे सक्रामक रोग के कीटाणुओ का नाश हो जाता है। हम ताजगी का अनुभव करते हैं। हम अपना दैनिक कार्य उमग से पुन करते है।

अफ्रीका के निवासी साप काटे मनुष्य का इलाज घटा ध्वनि के द्वारा करते हैं। शायद ससारभर के गिरजाघरो, मन्दिरो मे जो घटे लगे है उसका यही कारण है। जो ध्वनि प्रदूषण मे कमी लाता है। जिससे का विकास होता है। यही ध्वनि केन्दु का केन्द्र बिन्दू हैं।

आज जो स्कूलो मे घटी है वह जीवन विकास क्रम का द्योतक है।

हमे सप्ताह मे एक दिन और एक घटा मन्दिर जाना चाहिए जिससे हम स्वस्थ और रोगमुक्त हो सके। आज स्त्रियो को साधु शख ध्वनि का श्रवण करना या मन्दिर मे जाकर घटी ध्वनि का श्रवण आवश्यक है जो सुबुद्धि प्रदान करता है।

– गिरिधारी लाल पाराशर
४ २ २७३ सुल्तान बाजार हैदराबाद

पृष्ठ ४ का शेष भाग

(७)यह अमृत ब्रह्म का द्रष्टा आप्तकाम होकर भी क्रियावान् बना रहता है

अभि व हिनरमर्त्य सप्त पश्यति वावहि । क्रिविर्देवीरतर्पयत।।

ऋ० ६ ६ ६

काश्यपोऽसितो देवलोवा। पवमान सोम । गायत्री।

अर्थ – (अमर्त्य वहिन) जीवन यज्ञ का अमर वहनकर्ता जीव (वावहि) योग क्रियाओ का निरन्तर निर्वहन कर्ता बनकर (सप्त अभि पश्यति) शरीर के अन्दर कल्पित सातो चक्रो को स्पष्ट रूप मे अनुभव द्वारा देख लेता है। (क्रिवि) निरन्तर क्रियाशील साधक (देवी अतर्पयत्) इन्द्रियो के इन दिव्य प्रवाहो (विषयो) को तृप्त कर देता है और स्वय आप्त काम हो जाता है। इसके मन मे कोई कामना शेष नहीं रहती। य एष क्रियावान् स वै ब्रह्मविदा वरिष्ठ ।

विपश्यना

विपश्यना का अर्थ विशिष्ट दर्शन है। यह प्राणायाम की एक क्रिया है। इसमे प्राण को अन्दर आते और बाहर जाते हुए अनुभव करके देखा जाता है। बाह्य आखो से नही देखा जाता। इसलिए ऋग्वेद १० १७७ १ मे कहा है कि – पर ब्रह्म सम्बन्धी प्रज्ञा (माया) से क्रान्तदर्शी विशिष्ट विद्वान सहस्र सूर्यों की दीप्ति से भी अनुपमेय परमात्मा को अपने हृदय समुद्र के अन्त करण मे मन की आखो से देखते हैं। उसे इन बाह्य चक्षुओ से नहीं देखा जा सकता है।

प्रथम तीन मन्त्रो मे प्रयुक्त विपश्यना की मूल क्रिया 'विपश्यति इसी रूप मे पदानुक्रम कोष मे दी गई है। शेष मन्त्रो मे अभि पश्यति अन्त पश्यन्ति या पश्यति रूप मे प्रयोग आया है।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन खारी बावली, दिल्ली ६

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति तेजपाल मलिक

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२
(दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक ९ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार ७ जनवरी से १३ जनवरी २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

ईश्वर भक्ति की प्रेरणाओं से भरपूर भजन-सन्ध्या

आर्यजनता को ईश्वर भक्ति के रग मे रगने के लिए पश्चिमी दिल्ली के कर्मठ युवा आर्य कार्यकर्ताओ द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य के कुशल नेतृत्व प्रेरणा और मार्गदर्शन मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य के सगीतमय सचालन को देखकर ऐसा लगने लगा जैसे हर उपस्थित व्यक्ति ईश्वर की भक्ति मे भाव विभोर हो गया है। तनाव से मुक्ति की ओर ले जाने वाला यह भव्य दृश्य उस भजन सन्ध्या का था जिसका आयोजन ५ जनवरी २००२ को सायकालीन शीत वातावरण मे राजौरी गार्डन क्षेत्र के गिल हाउस मे आयोजित किया गया था।

राज्य सभा के सदस्य तथा पूर्व पुलिस महानिदेशक श्री बी०पी० सिघल तथा सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य तथा प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति एव समाजसेवी श्री महाशय धर्मपाल आदि भी विशेष रूप से उपस्थित थे।

अन्य समस्त कार्यक्रमो से भिन्न यह कार्यक्रम वाणी का जादू प्रस्तुत कर रहा था जिसमे एक तरफ सगीत विशेषज्ञ महानुभाव थे तो दूसरी तरफ आर्यसमाजो मे भजन प्रस्तुत करते करते अभ्यस्त हुए ऐसे कलाकार थे जो समय के साथ साथ सगीतरत्न बनने की ओर अग्रसर हैं। इनमे प्रमुख थे – सचालक श्री नरेन्द्र आर्य बहन शशिप्रभा आर्या तथा उनकी १० वर्षीय आकाक्षा पोती। सगीताचार्य श्री अरविन्द जी के साथ उनकी पूरी मण्डली ने सगीत और भजन की उत्तम व्यवस्था से श्रोताओं का मन मोह लिया।

भजन सध्या के आरम्भिक दौर मे ही सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास पर आधारित भजन स्वय श्री नरेन्द्र आर्य ने प्रस्तुत किया।

ओम का सिमरन किया करो।
प्रभु के सहारे जिया करो।।
वो दुनिया का मालिक है।
नाम उसी का लिया करो।।

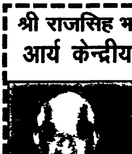
ओ३म जाप की प्रेरणा के बाद डा० साधना परमाल ने जीवात्मा को अभिमान से दूर रहकर ईश्वर से मार्गदर्शन की प्रेरणा देते हुए कहा

शेष भाग पृष्ठ ६ पर



भजन सन्ध्या में मन-मोहक भजन प्रस्तुत करते हुए श्री अरविन्द डॉ० साधना श्रीमती शशिप्रभा आर्या श्री नरेन्द्र आर्य बेटी आकाक्षा। भजनों का आनन्द लेते राज्य सभा सदस्य श्री बी०पी० सिघल सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल श्री महाशय धर्मपाल श्री विमल वधावन श्री राजीव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा

श्री राजसिह भल्ला चुनाव अधिकारी की देखरेख में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का चुनाव सम्पन्न



श्री राजसिह भल्ला

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का वार्षिक निर्वाचन वैदिक विद्वान तथा आर्यसमाज के वयोवृद्ध आर्यनेता श्री राजसिह भल्ला जी की देखरेख एव मार्गदर्शन मे सम्पन्न हुआ। इस चुनाव मे श्री धर्मपाल आर्य नया बास को भारी बहुमत से प्रधान चुना गया। श्री राजसिह भल्ला को आर्य केन्द्रीय सभा की साधारण सभा ने ३० सितम्बर को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया था। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली चार मुख्य समारोहो के लिए आयोजित हुई थी। चुनाव से पूर्व दो कार्यक्रमो के सचालन के लिए श्री भल्ला जी ने अपनी अध्यक्षता मे एक तदर्थ समिति नियुक्त की थी जिसके सयोजक पूर्व प्रधान डा० शिवकुमार शास्त्री थे श्री राजसिह भल्ला की सूझबूझ से यह चुनाव पूर्ण लोकतान्त्रिक तरीके से ६ जनवरी को सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री धर्मपाल आर्य को शेष कार्यकारिणी के गठन का अधिकार दिया गया। नवनिर्वाचित प्रधान ने सूचित किया है कि उन्होने श्री सुरेन्द्र कुमार रैली को मन्त्री तथा श्री अरुण प्रकाश वर्मा को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया है।

तथाकथित अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन मे हमारा कोई सहयोग नहीं

आर्यमित्र दिनाक २३ से ३० दिसम्बर मे यह पढकर बडा आश्चर्य हुआ कि किसी तथाकथित अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन मे २० जनवरी को एक रैली का आयोजन किया जा रहा है जिसमे हमारा नाम इस कार्यक्रम के सयोजक के रूप मे प्रकाशित है। यह कार्यक्रम न तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और न दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा या आर्य केन्द्रीय सभा अथवा किसी भी आर्यसमाज द्वारा आयोजित नहीं है। हमने ऐसे किसी कार्यक्रम मे कभी किसी प्रकार की स्वीकृति नहीं दी। आर्यजन ऐसे झूठे और मनगढन्त दुष्प्रचार के झासे मे न आए।

– सुरेन्द्र रैली धर्मपाल आर्य अभिमन्यु चावला सुरेन्द्र गम्भीर शिव शकर गुप्ता

ऋग्वेद से - नाभानेदिष्ठर्षि सप्तकम् (पूर्वार्द्ध)

परमेश्वर के अन्तरंग भक्त की कामना

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) परमेश्वर का अन्तरग भक्त, उसके प्रतिनिधि विश्वेदेवों से मानवमात्र के लिए कल्याण मागता है

ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता इन्द्रस्य सक्यममृतत्व मानश।
तेभ्यो भद्रमगिसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानव सुमेधस ।।

ऋ० १०/६२/१

नाभानेदिष्ठो मानव । विश्वेदेवा , अगिसो वा। जगती।

इस सूक्त का ऋषि (कान्तद्रष्टा) (नाभानेदिष्ठ मानव) ब्रह्माण्ड के केन्द्र अथवा ब्रह्माण्ड के नियन्त्रक परमेश्वर के अत्यन्त समीप रहने वाला अथवा परमेश्वर के गुणो को अपने आचरण मे लाने से उसके समान कीर्ति वाला (सखा) बना मननशील मानव है। वह प्राणीमात्र के अग अग मे अमृतरस का सचार करने वाले अगिरस देवो से निवेदन कर रहा है कि – हे देवो ! आप अपने समान मननशील मानव की साधना को स्वीकार करो और उसे कल्याण व सुख प्रदान करने वाले पदार्थ व भाव दीर्घायुष्य और उत्तम सन्तान प्रदान करो।

अर्थ – (ये) जो साधक (यज्ञेन दक्षिणया समक्ता) दक्षिणा और दक्षतापूर्ण यज्ञ से अलकृत होकर (इन्द्रस्य सख्य अमृत त्व आनशे) परमेश्वर के समान ख्याति और अमरता को प्राप्त कर लेते है – हे (सुमेधस अगिरस) मेधावी अगिरस देवो ! (त प्रतिगृभ्णीत) उन्हे अपनाओ – उन पर कृपादृष्टि रखो और (तेभ्य व भद्र अस्तु) उनको अपने कल्याणप्रद भाव और विचार तथा सुखप्रद पदार्थ और स्थितिया प्राप्त कराओ।

अर्थपोषण – नाभानेदिष्ठ – नाभि – शरीर को बधन (नियन्त्रण) मे रखने वाला केन्द्र। यहा ब्रह्माण्ड को नियन्त्रण मे रखने वाला परमेश्वर नाभि है। उसके अत्यन्त निकट रहने वाला=नेदिष्ठ साधक ही नाभानेदिष्ठ है।

अगिरस – अगो के रसभूत प्राणाख्य परमेश्वर को जानने वाले (स्वामी दयानन्द भू०) अथवा अग अग मे जीवनरस का सचार करने वाले देवगण।

भद्रम – भदि कल्याणे सुखे च – भद्र कल्याण सुख वा राति ददातीतितम भाव पदार्थ वा।

समक्ता – अलकृता – सम+अञ्जू व्यक्तिम्रक्षण कान्ति गतिषु।

निष्कर्ष – परमेश्वर का अन्तरग भक्त और गुरु समस्त प्रजा अथवा शिष्यो के लिए अगिरा भगवान से कल्याणकर भाव और सुखकर पदार्थ प्रदान करने की प्रार्थना करता है – यथा

'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव्।
यद्भद्र तन्न आसुव।' ऋ० ५/८२/५

(२) ज्ञानार्जन और गव्य पदार्थो के सेवन से मानव दीर्घायु होता है

ये उदाजन् पितरो गोमय वस्वतेनाभिन्दन्परिवत्सरे वलम्।
दीर्घायुत्वमगिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानव सुमेधस ।।

ऋ० १०/६२/२

नाभानेदिष्ठो मानव । विश्वेदेवा , आगिरसो वा। जगती।

अर्थ – (ये पितर) समाज के पालन पोषण करने मे लगे हुए वृद्धजन (गोमय वसु उदाजन्) वाणी से ओत प्रोत धन=ज्ञान तथा गाय से निसृत धन दुग्ध घृतादि उत्पादन करते हैं और (परिवत्सरे ऋतेन वल अभिन्दन्) सवत्सर पर्यन्त (आमरण) अपने सत्याचरण द्वारा अज्ञान के आवरण तथा अन्नाभाव का निवारण करते हैं – हे मेधावी अगिरस देवो ! उन्हे (तेभ्य व दीर्घायुत्व अस्तु) आप अपना दीर्घायुष्य प्रदान करो = अपने समान दीर्घजीवी बनाओ।

अर्थपोषण – परिवत्सरे=सवत्सर पर्यन्त – सवत्सरो मृत्यु। जै० २/३५०

निष्कर्ष – जो परमेश्वर के सच्चे अन्तरग भक्त होते है वे जीवनपर्यन्त समाज से ज्ञान के आवरक अज्ञान को और अन्न के अभाव को दूर करते रहते है। परिणामत मेधावी अगिरस देव उनके जीवन को दीर्घतर बनाते हैं।

(३) सदाचारी, आदित्य ब्रह्मचारी की सन्तति और प्रजा भी सदाचारी होती है

ये ऋतेन सूर्यमारोहयन्दिविप्रथयन्पृथिवी मातर वि।
सुप्रजास्त्वमगिरसो वो अस्तु प्रतिगृभ्णीत मानव सुमेधस ।।

ऋ० १०/६२/३

नाभानेदिष्ठो मानव । विश्वेदेवा , अगिरसो वा। जगती।

अर्थ – परमेश्वर का अन्तरग भक्त मानव मेधावी अगिरसो से प्रार्थना करता है कि – (ये) जो प्रजाजन (ऋतेन) अपने सत्याचरण सपृक्त मतदान द्वारा (सूर्य दिवि आरोहयन्) सूर्यसम तेजस्वी आदित्य ब्रह्मचारी को (दिवि) राष्ट्र के सर्वोच्च पद पर (आरोहयन्) पहुचाकर स्थापित करते हैं और इस प्रकार (मातर पृथिवीं वि अप्रथयन्) अपनी मातृभूमि को विविध क्षेत्रो मे विख्यात करते हैं (त मानव प्रतिगृभ्णीत) इस प्रकार के श्रेष्ठ मानवो को स्वीकार करो–अपनाओ और उन्हे (व सुप्रजास्त्व अस्तु) अपने समान यशस्वी तेजस्वी राष्ट्रभक्त सन्तान प्रदान करो।

निष्कर्ष – जो प्रजाजन सत्यमत को प्रकट करने मे लोभ और भय से विचलित नहीं होते उन्हे परमेश्वर के प्रतिनिधि अग अग मे जीवनरस प्रदान करने वाले देव उत्तम (सत्सकल्पयुक्त) सन्तान प्रदान करते हैं जिससे अगली पीढी भी सत्यवादी और सदाचारी बने।

(४) द्विविधा के क्षणो में अन्त.स्थ ईश्वर की वाणी सुनो, ब्रह्म-संकल्प जागेगा

अय नामा वदति वल्गु वो गृहे देवपुत्रा ऋषयस्तच्छृणोतन।
सुब्रह्मण्यमगिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानव सुमेधस ।।

ऋ० १०/६२/४

मानवो नाभानेदिष्ठ । विश्वेदेव अगिरसो वा। जगती।

अर्थ – हे (सुमेधस अगिरस ऋषय देवपुत्रा) मेधा सम्पन्न मननशील अग अग मे जीवनरस का सचय करने वाले क्रान्तदर्शी दिव्यजनो ! (अय नाभि) यह ब्रह्माण्ड को अपने नियन्त्रण मे बाधकर रखने वाला अन्तरग परमात्मा (व गृहे यत वल्गु वदति तत श्रृणोतन) आपके शरीर गृह की अन्तर्गुहा मे बैठा हुआ रुचिर स्वीकार्य सत्प्रेरणा देता है उसे सुनो उस प्रेरणा को (मानव प्रतिगृभ्णीत) जनहितकर मानकर स्वीकारो जिससे (व सुब्रह्मण्य अस्तु) आपमे ब्रह्म से सम्बन्ध रखने वाला तेज यश और सकल्प सदा दृढ हो। सदा सत्पथ के यात्री बने रहो।

निष्कर्ष – द्विविधा के क्षणो मे दिव्यगुण का भी और जीवनरस का सचय करने वाले दीर्घदर्शी प्रत्येक समझदार व्यक्ति को अपने हृदय स्थित परमेश्वर द्वारा सकेत किए जाने वाले सत्यपथ को स्वीकार करके उस पर दृढतापूर्वक चलना चाहिए। इससे ब्रह्मवर्चस की वृद्धि होती है।

(५) प्रत्येक क्षेत्र का गम्भीर कार्यकर्ता परमेश्वर को पुत्रवत् प्रिय होता है

विरूपास इदृषयस्त इद्गम्भीर वेपस ।
ते अगिरस सूनवस्ते अग्ने परि जज्ञिरे।।

ऋ० १०/६२/५

मानवो नाभानेदिष्ठ । विश्वेदेवा , अगिरसो वा। अनुष्टुप्।

अर्थ – (ऋषय विरूपास) क्रान्तदर्शी विचार रखने वाले विविध क्षेत्रो मे विविध दृष्टिकोण रखते हैं (इत गभीर वे पस) किन्तु उनमे एक बात समान होती है कि वे सब अपने दृष्टिकोण को गम्भीर रूप से कार्यरूप मे परिवर्तित करना चाहते हैं इसीलिए उपनिषद कहती है– **"क्रियावानेष य ब्रह्मविदा वरिष्ठ ।"** मुण्डक० ३/१/४

वे (अगिरस सूनव) अग अग मे जीवनरस से युक्त पिता के पुत्र अथवा अपने प्रत्येक अग से जीवनरस को सचित करने की प्रेरणा देते हैं क्योकि (ते) वे (अग्ने परिजज्ञिरे) अग्नितत्व प्रधान पिता से जन्म प्राप्त करते है। वे पस – वेप – कर्मनामसु। नि० २/१

निष्कर्ष – अपने विचारो को गम्भीरतापूर्वक क्रिया मे परिवर्तित करने वाला प्रत्येक व्यक्ति वह चाहे जिस क्षेत्र मे कार्यरत हो ऋषि पद का अधिकारी है। ऋषि केवल भूतकाल मे ही हुए हो ऐसा नहीं है। वे आजकल भी हो सकते हैं।

(अपूर्ण)

–श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली ६

श्री रामविलास खुराना का ८०वां जन्मोत्सव मनाया गया

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान समाजसेवी महाशय राम विलास खुराना के ८० वे जन्मोत्सव को आर्यसमाज गुजरावाला टाऊन २ मे 'समाज सेवा दिवस के रूप मे मनाया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री वेदव्रत शर्मा ने कहा – खुराना जी युवको व लग्नशील छात्रो के प्रतिभा विकास व रचनात्मक सामाजिक कार्यो मे सदैव प्रेरणास्रोत रहे हैं। वैदिक धर्म प्रचार मे वे बढ चढकर भाग लेते है।

इस अवसर पर राष्ट्र कल्याण यज्ञ व वैदिक विद्वानो के प्रवचन भी हुए ! दिल्ली के विभिन्न भागो से आर्य प्रतिनिधि पधारे।

– चन्द्रमोहन आर्य, प्रेस सचिव

सफल विद्यार्थी बनें – आदर्श ग्रहण करें

– डॉ० कर्णदेव शास्त्री

विद्यार्जन विद्यार्थी का प्रथम कर्तव्य है वह विद्या का उपासक होता है। एक बार एक विद्यार्थी से पूछा गया कि तुम किसकी उपासना करते हो ? उसका उत्तर था– "मैं तो ज्ञानदात्री सरस्वती की उपासना करता हू।" उससे जिज्ञासा की गई सरस्वती की उपासना कैसे करते हो ? छात्र का उत्तर था सामने चित्र रखकर धूपबत्ती जलाकर आराधना करता हू। उस समय कोमल हृदय वाले जिज्ञासु बालक को गुरु ने समझाया – " देखो जिस सरस्वती के चित्र की उपासना करते हो वैसे उस सरस्वती का कोई चित्र नहीं। यदि कल्पना को मानकर चलतें हो तो उससे शिक्षा ग्रहण करो। उससे आदर्श ग्रहण करो। चिन्तन परम्परा से यदि सरस्वती का वाहन हस है तो जिज्ञासु विद्यार्थी को अपनी आत्मा हस के समान बनानी चाहिए। कहते हैं कि हस मानसरोवर में रहता है। विद्यार्थी की हस रूपी आत्मा का मानसरोवर उसका अन्तकरण है। हस कमलों में विचरण करे। कहते हैं कि हस नीर-क्षीर-क्षीर दूध-पानी पृथक करता है तो विद्यार्थी की आत्मा सत्यासत्य का विवेकपूर्वक निर्णय करे।

हसरूपी आत्मा पर सरस्वती विराजमान है। सरस्वती के चार हाथों की कल्पना की गई है एक हाथ में पुस्तक है, सरस्वती का उपासक ज्ञानवर्द्धक पुस्तको से ज्ञानार्जन करे। सरस्वती के दूसरे हाथ मे वीणा दिखाई जाती है। विद्यार्थी अपनी वाणी को वीणा के तारों की तरह मधुर ध्वनि की तरह वेदवीणा हृदयगम करे। सरस्वती के तीसरे हाथ मे माला है। उपासक माला हाथ में फेरते रहते हैं। इसी प्रकार ज्ञानवर्द्धक ग्रन्थों शास्त्रों और उनकी शिक्षाओं का चिन्तन अनुशीलन करता रहे। हाथ में कमल है विद्यार्जन करने वाला इस ससार सागर में 'पदमपत्रमिवाम्भसा इस उक्ति के अनुसार जैसे कमल पुष्प पर पानी का प्रभाव नहीं पडता उसी प्रकार विद्यार्थी बाहरी दुष्प्रभावों से बचे। आदर्श दर्पण भी कहलाता है। दर्पण देखकर व्यक्ति अपनी छवि ठीक करता है। आदर्श जीवन में दोषों को दूर रखें।

आदर्श सचित करे

विद्यार्थी प्रथम जीवन-काल में ब्रह्मचर्याश्रम में रहते हुए सग्रही बने गुणों का, धन का नहीं। जैसे गणितशास्त्र में छोटा बालक सर्वप्रथम सकलन (जोड़) सीखता है ऐसे ही विद्यार्थी अपने जीवन के श्रेष्ठतम आदर्श सकलित करें। पूर्ण ब्रह्मचर्य के साथ विद्योपार्जन के पश्चात् गृहस्थ में वे आदर्श घटाए। और जो शेष है उसे वानप्रस्थ के माध्यम से योग द्वारा आध्यात्मिक शक्ति से द्विगुणित करें और ससार से पाई शक्तियों का समाज के उपयोगी भाजनों (पात्रों) विभाजन करें।

सब विद्याओं का नवनीत ग्रहण करें

भौंरा जिस प्रकार विभिन्न पुष्पों से सार लेता है ब्रह्मचारी विद्यार्थी भी समस्त प्राणियों से गुरुजनों से विद्यारूपी सार ग्रहण करे क्योंकि इस असार-ससार में विद्या ही सार है और वह विद्या प्रभु भक्ति ब्रह्मचर्य पालन एव गुरुकृपा से प्राप्त होगी। व्यावहारिक दृष्टि से विद्यार्थी में निम्न पाच बातें श्रेयस्कर हैं –

काकचेष्टा वको ध्यान श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पञ्च लक्षवान्।।

अर्थात् विद्यार्थी के अन्दर कौए जैसी चेष्टा (इच्छा) शुभगुणो के लिए बगुले जैसा ध्यान सार ग्रहण करने के लिए कुत्ते जैसी नींद प्रत्येक आदर्श के विषय मे जागरुक रहने के लिए अल्प (थोडा) भोजन आलस्य त्याग करने के लिए और गृहत्याग विद्यानुराग के लिए हो। जब ये आदर्श गुण विद्यार्थी में होंगे तो निश्चय ही प्रत्येक क्षेत्र में सफल होगा।

सुख और विद्या में परस्पर विरोध है जो विद्यार्थी-काल मे सुख सजोता है वह जीवन के अन्य कालों में दु ख के बीज बोता है। कहा है – **सुखार्थिन कुतो विद्या विद्यार्थिन कुतो सुखम्।** सुख की कामना करने वाले को विद्या कहा और विद्या चाहने वाले को सुख कैसे ?

आदर्श विद्यार्थी गुणों से अनुराग, दुर्गुणों से विराग

आदर्श विद्यार्थी में त्याग तप-सयम अनुराग ब्रह्मचर्य पालन आदि अच्छे गुणों के प्रति हो और विराग दुर्गुणों के प्रति हो। ठीक आहार-विहार जागरण वेषभूषा हो। स्वार्थ का त्याग परार्थ का ग्रहण ये गुण हों।

विद्यार्थी अपने जीवन में तीन मे से किसी एक का चयन अवश्य करे। प्रथम अविद्या से सघर्ष द्वितीय अन्याय से सघर्ष तथा तृतीय अभाव से सघर्ष। हमारी प्राचीन पद्धति अर्थात् गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में इन तीनो से सघर्ष का पाठ पढाया जाता था। नागरिक जीवन में अविद्या से सघर्ष करने वाले को ब्राह्मण अन्याय से सघर्ष करने वाले को क्षत्रिय अभाव से सघर्ष करने वाले को वैश्य मानते थे। इन तीनों का निर्णय तो विद्यार्थी जीवन मे हो जाता था।

विद्यापिपासु ऋषियो के बताए पथ का अनुसरण करे बडो का सम्मान माता-पिता-गुरु की आज्ञा का पालन करे तो निश्चय ही सर्वप्रिय हो यश प्राप्त करेगा। विद्यार्जन करने वाला अपने जीवन मे आदर्शों को ग्रहण कर जीवन सफल बनाए।

पृष्ठ २ का शेष

राष्ट्रीय सुरक्षा, अनुशासन एवं शान्ति का मूल मन्त्र - धर्मदण्ड

प्रबुद्ध पाठक यह भलीभाति जानते हैं कि विश्व के उस राष्ट्र मे न्यून अपराध होते है जहा दण्ड कठोरतम है जैसे – साऊदी अरब। अमेरिका का राष्ट्रपति जब साऊदी अरब के सम्राट से मिला तो उसने वहा की शासन व्यवस्था की जानकारी ली। जब अपराध विषयक चर्चा चली तब वे यह जानकर आश्चर्यचकित हुए कि आखिर इस देश मे कम अपराध होने का कारण क्या है ? सम्राट ने उसे बताया कि हम चोरो के हाथ काटते हैं। गद्दारो के गले काटते हैं। पापी-अपराधियो को जमीन मे गाड़ देत हैं। पर दूसरी ओर विश्व के धनाढय और प्रबुद्ध देश अमेरिका मे प्रत्येक मिनट में अनेक चोरिया बलात्कार एव हत्याओं जैसे अपराध होते हैं क्योकि वहा दण्ड अल्प है।

बताया जाता है कि बगदाद में बहुत शराब पी जाती थी वहा के सम्राट ने घोषणा की कि शराब पीने वाले को कोडों से पीटकर मौत के घाट उतार दिया जाए। कुछ शराबियों ने इस राजनियम को ढीला करने के लिए सम्राट के पुत्र को शराब पिला दी। जब सम्राट को ज्ञात हुआ तो उसने बिना किसी नानुनच के समान्य जनता की अपेक्षा अपने पुत्र को दुगने कोडे मारकर मौत के घाट उतार दिया। इस घटना को देखकर एव सुनकर सारे शराबी बगदाद से भाग गए।

देव दयानन्द एक महाराज भरत की कथा लिखते हैं कि जिसने स्वय अपने हाथो से अपने अनुशासन हीन पुत्र का वध कर दिया था क्योंकि वह किसी की शिक्षा को मानने के लिए तैयार नहीं था। यदि आज पुन वैदिक धर्मानुसार महर्षि मनु एव दयानन्द की बात मानकर सर्वप्रथम सामान्य जनों की अपेक्षा विशिष्ट अधिकारियों को हजार गुणा अधिक दण्ड दिया जाए तो सामान्य जनता स्वत ही अपराधवृत्ति छोड़ दे।

भारत की प्राचीन सस्कृति वैदिक धर्म में अहिंसा का अर्थ छोड देना-क्षमा करना या न मारना न होकर न्याय करना लिखा गया है। जिसको महर्षि दयानन्द ने '*यथायोग्य व्यवहार*' की सज्ञा दी। अत श्रेष्ठ का सत्कार करना जहा धर्म एव अहिंसा है। अर्थात् न्यायोचित कर्म है वहा दुष्ट को यथायोग्य दण्ड देना भी परमधर्म एव अत्यन्त न्यायोचित कर्म है।

– उदगीथ साधना स्थली,
ग्रा० - डोहर, डा० - फागू, तह० - राजगढ़,
जिला सिरमौर (हि०प्र०)

हम देव तभी बन पाते हैं

– देवनारायण भारद्वाज

एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्य सुत ।
हरि पवित्रे अर्षति।। *साम० ७५८*

हम देव तभी बन पाते हैं।
जब देव हमें अपनाते हैं।।
कितने जन्म हमारे बीते।
हम रहे भटकते भयभीते।
ईश्वर की कर्म-परीक्षा से
हम योनि मनुज पाते हैं।।
जैसे अग्नि अग्नि से जलती।
नव ज्वाला ऊपर को चलती।
सग माता-पिता-गुरुदेव मान्य
हम मे देवत्व जगाते हैं।।
मन इन्द्रिय पर करें नियन्त्रण।
देते देव तभी सरक्षण।
छोड़ वासना पकड़ साधना
जग-रीति पुनीत बनाते हैं।।
हम देव तभी बन पाते हैं।
जब देव हमें अपनाते हैं।।

– वरेण्यम् एम०आई०जी० ४५, अवन्तिका कालोनी, रामघाट रोड, अलिगढ़ (उ०प्र०)

पृष्ठ १ का शेष

ईश्वर भक्ति की प्रेरणाओं से .....

पग पग मुझे गिराता आया
ये मेरा अभिमान
जीवन पथ पर भटक रहा हू
राह दिखा भगवान
मुझको राह दिखा

सगीताचार्य श्री अरविन्द ने आध्यात्मिक और सामाजिक कार्यों का किया जिसके बीच बीच मे दर्जनो बार ऋषि दयानन्द की जय जयकार से पडाल गूज उठा।

जिसके पुण्य प्रताप से
जाग उठा ससार
बोलो ऋषि दयानन्द की
सब मिलकर जय जयकार

कार्यक्रमो मे विद्वता रूपी उद्बोधन तो स्वाध्यायशील महानुभावो को गम्भीर चिन्तन और मार्गदर्शन प्रस्तुत करते ही है परन्तु ऐसे सगीतमय कार्यक्रमो के द्वारा सरल शब्दो मे भक्ति की भावनाओ का सचार व्यक्ति की आत्मा और शरीर दोनो को आनन्दित कर देता है।

उनके राष्ट्रवादी लेखो के कारण सम्मानित किया गया। श्री मिश्र ने हाल ही में एक लेख के द्वारा दैनिक जागरण की प्रथम पक्तियो द्वारा राष्ट्र का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया कि भारत मे चल रहे मदरसे आतकवादी बनाने की फैक्टरियो के रूप मे कार्य कर रहे है।



भजन सध्या का सचालन करते हुए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन एव नरेन्द्र आर्य दैनिक जागरण के पत्रकार श्री योगेश मिश्र को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा श्री नवनीत अग्रवाल श्री जगदीश आर्य तथा अन्य।

सगम करते हुए कहा –

ऐसी कमाई कर लो,
जो सग जा सके।
मुश्किल पडे तो राह मे
कुछ काम आ सके।
चिन्ता की कोई बात नहीं
चिन्तन से काम लो।
सम्भव है पथिक आपके
बन्धन छुडा सके
ऐसी कमाई

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की सुपुत्री बहन शशिप्रभा आर्या ने ईश्वर का द्वार खटकाने की भावनाओ को पारम्परिक सगीत शैली मे एक मन भावन लय मे प्रस्तुत करते हुए कहा –

खोलो दया का द्वार प्रभु जी,
अब खोलो दया का द्वार
कई जन्मो से भटक रहा हू,
मत करना इन्कार।।
प्रभु जी

बहन शशिप्रभा आर्या तथा उनके पति श्री जगदीश आर्य ने अपने परिवार को ही ईश्वर भक्ति के मार्ग पर चलाने का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। जब उनकी लगभग १० वर्षीय पोती आकाक्षा ने दो मधुर भजनो के द्वारा समूची आर्यजनता का मन मोह लिया। **"अखिया प्रभु दर्शन की प्यासी"** भजन को मधुर लय मे प्रस्तुत करके आर्यजनता इतनी मग्न हो गई कि भजन के बाद एक और और के स्वर गूजने लगे।

सचालक नरेन्द्र आर्य ने **"ओम बोल मेरी रसना घडी घडी"** के भजन मे एक उत्तम सकीर्तन प्रस्तुत करके ईश्वर भक्ति की लहर को पराकाष्ठा पर पहुचा दिया। इसी लहर के बाद एक और लहराता भजन बहन शशिप्रभा ने प्रस्तुत



बेटी आकांक्षा

जयकारा मै बी ला लया
वेदा वाले दा।
जयकारा मै बी ला लया
ऋषि दयानन्द दा।
घोर अन्धेरा जग मे छाया,
नजर नहीं कुछ आता था।
मानव मानव की ठोकर से,
जब ठुकराया जाता था।।

इस अन्तिम भजन मे ऋषि दयानन्द के कार्यो और सिद्धान्तों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया था। इस अन्तिम भजन को सुनकर तो जनता झूम उठी।

सगीत एव भजन कार्यक्रम के अन्त मे आगन्तुक महानुभावो का परिचय प्रस्तुत करने के लिए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन को सचालन के लिए आमन्त्रित किया गया।

श्री वधावन ने कहा कि "ईशावास्य इदम सर्व यत किम च जगत्याम जगत" का साक्षात प्रस्तुतिकरण ऐसे कार्यक्रमों मे दिखाई देता है। उन्होने कहा कि अन्य

उन्होने कहा कि जो व्यक्ति पराक्रम का प्रदर्शन करते है उनकी कीर्ति बढती है और जो दानवीर होते हैं उनका यश बढता है। आज के इस समारोह मे हम पराक्रम और दान की भावना को ही सम्मानित करने वाले हैं।

सर्वप्रथम राज्य सभा के सदस्य श्री बी पी सिघल को आमन्त्रित किया गया जो पूर्व पुलिस महानिदेशक थे। उत्तर प्रदेश में सरकार को जहा कहीं भी डाकूग्रस्त क्षेत्र देखने को मिलता था वहा पर लक्ष्यबद्ध और समयबद्ध कार्यक्रम के तहत श्री सिघल जी की नियुक्ति होती थी और इन्होंने जीवन में सदैव हर लक्ष्य को समय से पूर्व ही प्राप्त करके दिखाया। असख्य डाकुओं को मौत के घाट उतारने वाले इन पराक्रमी पुरुष को सम्मानित करना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। श्री सिघल को शाल ओढाकर सम्मानित किया गया।

श्री विमल वधावन ने कहा कि भाजपा द्वारा श्री सिघल को ससद मे राज्य सभा का सदस्य बनाकर भी कहीं उसी सिद्धान्त का प्रतीक तो नहीं कि जहा पर भी डाकुओ के होने की सभावना हो वहा श्री सिघल को नियुक्त किया जाए।

सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल के परिचय मे श्री वधावन ने कहा कि एक राष्ट्रवादी चिन्तक होने के नाते श्री बसल सदैव अपनी योग्यता और अनुभव के बल पर पवित्रता ईमानदारी और राष्ट्रभक्ति के सिद्धान्तो की रक्षा मे लगे रहे हैं। आर्यसमाज के इस सक्रमण काल से उबारने मे भी श्री बसल के अथक प्रयास जारी हैं।

दैनिक जागरण के यशस्वी और पराक्रमी पत्रकार श्री योगेश मिश्र को

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने श्री योगेश मिश्र को सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास पर आधारित एक स्मृति चिन्ह भेट किया जिसमे ईश्वर की कई शक्तियो को ही ईश्वर के विभिन्न नाम बताते हुए ईश्वर को सदैव स्मरण रखने की प्रेरणा है।

दानवीर महाशय धर्मपाल जी को उनके इस अवसर पर किए गए सहयोग के लिए सम्मानित किया गया। जब कभी भी सार्वदेशिक सभा द्वारा किसी सहायता कार्यक्रम के आयोजन की घोषणा होती है महाशय जी का हर [illegible] सहयोग सदैव प्राप्त होता है।

कार्यक्रम के अन्त मे रजौरी गार्डन आर्यसमाज के प्रधान श्री सदानन्द मदान ने सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन का शाल और स्मृति चिन्ह प्रदान करके अभिनन्दन किया तथा आर्यसमाज के दायित्व निर्वहन की ईश्वरीय शक्ति का आशीर्वाद दिया।

इस भजन सध्या के आयोजन मे सहयोगी सर्वश्री जगदीश आर्य नवनीत अग्रवाल रवीन्द्र आर्य योगेन्द्र डाबर सुरेश आलूवालिया अतुल आर्य विवेक चावला भुवनेश आर्य विवेक चडडा नरेश विग विनय मदान वीरेन्द्र कुमार अरुण सचदेवा हेमन्त सचदेवा सजीव सेठी रवि घई तथा समस्त उपस्थित आर्य सज्जनो माताओ तथा बच्चो का भी सचालक श्री नरेन्द्र आर्य द्वारा धन्यवाद किया गया।

कार्यक्रम के उपरान्त स्वादिष्ट भोजन का आयोजन आर्यजनो के सहयोग से किया गया।

युवा व्यक्तित्व विकास एवं प्रशिक्षण का अद्भुत शिविर

सोमवार ३० दिसम्बर २००१ की प्रातःकाल की ठिठुरती हुई सर्दी मे आर्यसमाज के लगभग ४०० लोगो ने आर्यसमाज प्रीत विहार के साथ जुडे स्वामी दयानन्द उद्यान मे कुहरे से लिपटी हुई सुबह मे एक अद्भुत दृश्य देखा जिसमे १२ वर्ष से १८ वर्ष की आयु के



युवा निर्माण मे ध्यानपूर्वक मार्ग दर्शन प्राप्त करते हुए बच्चे

बीच १५० किशोरो व युवको ने एक के बाद एक ३० सैकण्ड से १ मिनट मे अपनी बात रखी। ये उनके लिए एक ऐसा मार्मिक दृश्य था जो किसी भी आधुनिक युग के टी०वी० कार्यक्रम से ज्यादा मधुर और उत्तेजना भरा था। सभी दर्शक हैरान थे कि कैसे ये किशोर/युवा अपनी बातो को प्रभावशाली ढग से रखने मे समर्थ हैं। जहा एक किशोर समय की उपयोगिता को ध्यान मे रखते हुए ये शब्द कह रहा था – 'जिसने जाना मूल्य समय का वो आगे बढ पाया है। अलसा कर जो बेठ गया वो जीवन भर पछताया है।। तो दूसरा किशोर वक्ता अपने २४ घण्टो को किस प्रकार से २६ और २७ घण्टो मे बदले जाने की कला को सीखा है उसका तर्कपूर्ण विवरण प्रस्तुत कर रहा था।

प्रत्येक युवा/किशोर वक्ता आर्यसमाज को एक नया और स्थाई मित्र मिल जाने की घोषणा कर रहा था और दूसरी ओर एक के बाद एक किशोर वक्ता सन्ध्या यज्ञ व ध्यान की उपयोगिता का वर्णन करते नहीं थकता था। एक छोटे से मच से इतने ज्यादा १५० वक्ताओ को सुनने मे श्रोताओ को कोई बोरियत नहीं अपितु आनन्द ही आनन्द मिल रहा था क्योकि प्रत्येक किशोर वक्ता कोई न कोई जीवन उपयोगी बात अपने ढग से रखे जा रहा था।

जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण रखने मे यदि एक वक्ता ये बता रहा था कि हमे दूसरो की आलोचना नहीं करनी चाहिए तो दूसरा युवा वक्ता समझाते हुए बता रहा था कि किसी की आलोचना करके आप किसी का भी दिल नहीं जीत सकते।

एक किशोर वक्ता ने जब ये कहा कि मेरे एक लाख शब्द भी किसी को इतना प्रभावित नहीं कर सकते जितना मेरी एक मुस्कराहट मे दूसरो को रिझाने का दम है तो सभी श्रोताओ मे प्रत्येक चेहरा मुस्करा कर खिल गया।

इन किशोरो और युवाओ का कायाकल्प आर्यसमाज प्रीत विहार मे लगे आर्यवीर दल के उस शिविर मे हुआ जो ४८ घण्टे के लिए लगाया गया था। आर्यसमाज प्रीत विहार के प्रधान व जाने माने शिक्षाविद् श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने इस आवासीय शिविर मे २२ घण्टे के चार सत्रो मे यह आश्चर्यजनक काम कर दिखा या जिसमे उन्होने प्रेरणा व व्यावहारिकता को ध्यान मे रखते हुए इनको प्रशिक्षण दिया। शिविर के आरम्भ मे ही उन्होने बच्चो को बता दिया कि वह शिक्षा नहीं बल्कि प्रशिक्षण देगे। वैसा प्रशिक्षण जैसा साइकिल चलाने तैराकी सिखाने इत्यादि मे दिया जाता है।

इस कार्यशाला का उद्घाटन युवा विद्वान डा० आचार्य वागीश कुमार जी (प्रधानाचार्य आर्ष गुरुकुल एटा एव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित प्रथम आर्यसमाज काकडवाडी मुम्बई से सम्बद्ध) ने किया तथा श्री आचार्य जी ने ही बच्चो को मन तथा बुद्धि का भेद समझाया। जिसकी विस्तृत चर्चा श्री रैली जी ने व्यक्तित्व विकास एव जीवन मे सफलता पाने के लिए शिविर सत्रो मे की।

इस शिविर का सचालन सुव्यवस्थित ढग से श्री विनय आर्य सचालक आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश एव उनके साथियो ने किया तथा शिविर मे रहने खाने पीने व भोजन आदि की सम्पूर्ण सुव्यवस्था आर्यसमाज प्रीत विहार के सरक्षक श्री गुरुचरण सिघल जी उपप्रधान श्री बुद्धदेव आर्य जी कोषाध्यक्ष श्री आर०एस०शर्मा जी एव मन्त्री श्री श्रीकृष्ण कुमार ढींगरा जी ने तहे दिल से की।

इस भव्य समारोह के समापन अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री कैप्टन देवरत्न आर्य उप प्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा दिल्ली नगर निगम मे विपक्ष के नेता श्री रामबाबू शर्मा क्षेत्र के विधायक श्री नसीब सिह पार्षद एव पूर्व महापौर श्री योगध्यान आहूजा एव आर्यसमाज के लिए दिन रात एक कर देने वाले आर्य नेता सर्वश्री पतराम त्यागी श्री रविबहल श्री सेतिया जी श्री राजेन्द्र कुमार दुर्गा श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री श्री रोशनलाल गुप्ता श्री धर्मपाल आर्य श्री तेजपाल मलिक प्रिसीपल चन्द्रदेव एव स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी सम्पूर्ण कार्यक्रम के साक्षी थे। तथा सभी आर्य नेताओ ने अपने अपने वक्तव्यो मे इस कार्यशाला की भूरि भूरि प्रशसा की तथा बताया कि इस प्रकार की कार्यशालाए सभी आर्यसमाजो मे लगे तो समाज व राष्ट्र का कायाकल्प हो सकता है।

पूर्वी दिल्ली आर्यसमाज के इतिहास मे प्रथम बार अद्वितीय आर्य पुरोहित कार्यशाला सम्पन्न

जन सामान्य मे सस्कारो की कमी को देखते हुए आयसमाज द्वारा एक धर्माचार्य कार्यशाला आर्यसमाज प्रीत विहार मे २६ व २७ दिसम्बर २००१ तक आयोजित गई। वास्तव मे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा वर्णित १६ (सोलह) सस्कारो का



सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य विद्वानो को वैदिक साहित्य भेट करते हुए मच पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा।

प्रचार व प्रसार मुख्यतया पुरोहितो द्वारा ही सभव है।

धर्माचार्यो की कार्यशाला का विधिवत उदघाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान माननीय श्री वेदव्रत शर्मा जी एव क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने किया। उदघाटन भाषण मे श्री वेदव्रत शर्मा जी ने कहा कि सस्कारो मे एकरूपता लाने के लिए काफी समय से धमाचार्य शिविर की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। यदि हम पुरोहितो के शिविर को सही रूप प्रदान कर सके तो यह सगठन की नींव को मजबूत करने का एक सफल प्रयास होगा। आदरणीय आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र जी एव श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी के नेतृत्व मे सस्कारो को विधिवत समझते हुए हमारे धर्माचार्य इस धर्मकार्य को आगे बढाएगे ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। श्री रैली जी ने बताया कि हमारे सभी धर्माचार्य बहुत पढे लिखे है लेकिन फिर भी व्यक्ति को जीवन की अन्तिम सास तक कुछ न कुछ सीखते ही रहना चाहिए क्योकि कोई भी व्यक्ति अपने आप मे ज्ञान के क्षेत्र मे पूर्ण नहीं है। विद्या तो अनन्त होती है और सीखने की प्रक्रिया आयुपर्यन्त चलनी चाहिए। अत यहा एकत्रित पुरोहितगण अवश्य ही इस कार्यशाला से लाभान्वित होगे।

कार्यशाला मे कर्मकाण्ड के महान विद्वान् आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र जी एव आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी की उपस्थिति ने इसकी शोभा को द्विगुणित कर दिया। इस कार्यशाला मे उपस्थित विद्वान पुरोहितो ने सस्कार विधि के सामान्य प्रकरण से प्रारम्भ कर १६ सस्कार पर्यन्त अपनी अपनी शकाओ का समाधान किया। यह दो दिवसीय कार्यशाला दो दो सत्रो मे विभाजित थी। प्रथम सत्र प्रात ११ बजे से दोपहर ५ बजे तक चला।

धर्माचार्य कार्यशाला मे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के सस्कार विधि मे लिखित एक एक शब्द तथा वाक्य को प्रमाणित सिद्ध किया गया कार्यशाला के सचालक आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र जी एव आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी ने बडे युक्ति और प्रमाण से पुरोहितो की सस्कार सम्बन्धी समस्याओ का निदान किया। शकाओ का समाधान मिलने पर समस्त पुरोहितो का हृदय प्रसन्नता से भर गया। आचार्यो ने पुरोहितो को यह भी समझाया कि वे किस प्रकार से वर्तमान समय मे सस्कारो को आकर्षक एव व्यवहारिक बना सकते हैं। अन्त में श्री आचार्य जी के निर्देशानुसार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री कैप्टन देवरत्न आर्य जी ने पुरोहितो को वेदार्थ कल्पद्रुम (तीनो भाग) (रचयिता आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र) अपने कर कमलो से भेट किए।

इस कार्यशाला मे भाग लेने वाले विद्वानो मे सर्वश्री यशपाल शास्त्री श्री पुष्पेन्द्र शास्त्री श्री रामनिवास शास्त्री श्री प० दिनेश कुमार शास्त्री श्री रामगोपाल आर्य श्री प० शत्रुघ्न श्री रामचन्द्र श्री हेमचन्द्र भारद्वाज श्री नागेन्द्र कुमार आर्य श्री चन्द्रदेव शास्त्री श्री विद्याराम मिश्र श्री प० कपिल कुमार शर्मा श्री म० आर्यमुनि श्री डा० नरेन्द्र वेदालकार श्री डा० धर्मवीर श्री डा० ओमप्रकाश श्री रमेशचन्द्र आर्य श्री वेदप्रकाश आर्य श्री विद्यामुनि श्री कष्ण मित्र कौशल श्री देवराज आर्यमित्र श्री केशव कुमार शर्मा श्री राधेश्याम गुप्त श्रीमती डा० वन्दना भटनागर श्रीमती शान्तिदेवी भटनागर आदि सम्मिलित रहे।

कार्यशाला की व्यवस्था मे आर्यसमाज प्री विहार के पदाधिकारियो का विशेष योगदान रहा विशेषकर सर्वश्री गुरुचरण सिघल जी श्री बुद्धदेव आर्य जी श्री आर० एस० शर्मा जी एव श्रीमती सरला गुप्ता जी ने कार्यशाला मे प्रशसनीय योगदान दिया।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 10 11/01/2002 दिनांक ७ जनवरी से १३ जनवरी, २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002, 10 11/01/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

सुरक्षा सम्मेलन का आयोजन

आर्यसमाज करौलबाग के वार्षिकोत्सव के राष्ट्रीय सुरक्षा सम्मेलन मे सुरक्षा सम्बन्धी विषयो के विशेषज्ञो तथा आर्यजगत के विशिष्ट नेताओ ने अपने विचार प्रकट किए। आर्य समाज के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा ने वय तुभ्य बलिहत स्याम मत्र का उद्घोष करते हुए मातृभूमि की रक्षा के लिए हसते हसते प्राणो को न्योछावर करने का सकल्प करवाया। उन्होने कहा राष्ट्रवाद तो तलवार की धार पर चलने से चमकता है तभी एकता व अखण्डता की रक्षा हो पाती है। तभी एकता व अखण्डता की रक्षा हो पाती है। राष्ट्रवाद के पुरोधा समझोते की नौकाओ पर सवार न होकर तलवार की धार पर चलने का साहस जुटाये तभी भारत की एकता अखण्डता व आजादी की सुरक्षा की गारण्टी मिलेगी।

राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख श्री इन्द्रेश जी ने धारा ३७० की समाप्ति आतकवादियो के प्रशिक्षण शिविरों को नष्ट करना व पाकिस्तान का विघटन तथा इसके लिए आवश्यकता होने पर युद्ध करना तथा कश्मीर राज्य पुनर्गठन करके बीमारी को सीमित करते हुए उसका इलाज करना। उन्होने बताया १९४७ मे जम्मू व कशमीर का क्षेत्रफल २२२२३६ वर्ग कि०मी० था। पाकिस्तान ने ७८११४ वर्ग कि०मी० पर कब्जा जमाया तथा चीन ने ४२७३५ वर्ग किलोमीटर पर वर्तमान मे भारत के पास १०१३८७ वर्ग किलोमीटर शेष बचा है। १५८५३ वर्ग किलोमीटर कशमीर घाटी २६२९३ वर्ग किलोमीटर जम्मु तथा ५९२४१ वर्ग किलोमीटर लद्दाख का क्षेत्रफल है।



सुरक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने वेदो मे राष्ट्र सुरक्षा का वर्णन करते हुए कई मत्र उधत किए। हिन्दुओ के पूर्वजो ने मातृभूमि की रक्षा और स्वराज्य प्राप्ति के लिए वेदो की आज्ञाओ से सदैव महान प्रेरणा ली है। आज जब हमारा राष्ट्र आन्तरिक एव बाहय षडयन्त्रो का शिकार है शत्रुओ की राष्ट्र विरोधी गतिविधियो की अनदेखी की जा रही है मुझे विश्वास है कि इस सकट की घडी मे राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति कटिबद्ध युवक युवतिया प्रबुद्ध नेता अध्यापकगण राष्ट्रभक्त नागरिक इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि धापयाम अर्थात हम आत्मशक्ति के कवच से राष्ट्र को ढकते हुए ऐसी शपथ लेते हैं।

सम्मेनन के अध्यक्ष सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल ने उपस्थित आर्यजनों से भारत राष्ट्र को परम वैभवशाली राष्ट्र बनाने का आहवान किया।

डॉ० जयपाल विद्यालकार आचार्य महेन्द्र शास्त्री आचार्य हरिदेव एव श्री अजय भल्ला पूर्व सम्पादक नव भारत टाइम्स ने भी अपने विचार प्रकट करते हुए इस बात पर जोर दिया कि आज की स्थिति में भारत सरकार को सीमा पार कर आतकवादियो के शिविरो को नष्ट [illegible] चाहिए इसके लिए चाहे कितनी भी कीमत चुकानी पडे वरना आने वाली पीढी वर्तमान नेतृत्व एव जनमानस को कभी क्षमा नहीं करेगी। अत मे स वो मनासी सव्रता अर्थात राष्ट्र रक्षा के लिए सभी का मन कर्म और सकल्प समन्वित हो की प्रतिज्ञा के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज सी-ब्लाक, बाली नगर, नई दिल्ली-१५

प्रधान	–	श्री कुलजस राय बख्शी
व० उप-प्रधान	–	श्री सत्यदेव दीवान
उपप्रधान	–	श्री बनवारी लाल
महामन्त्री	–	श्री रामभज आर्य
मन्त्री	–	श्री प्रेम प्रकाश सहगल
कोषाध्यक्ष	–	श्री दिलीप सिह सैनी
सह कोषाध्यक्ष	–	श्री ईश्वर चन्द खन्ना
पुस्तकाध्यक्ष	–	श्री देवेन्द्र दीवान
प्रचार मन्त्री	–	श्री प्रेमनाथ बजाज
वस्तु भण्डाराध्यक्ष	–	श्री शिव कुमार खन्ना

आर्यसमाज विवेक विहार के डॉ० रूप कथूरिया को पितृशोक

आर्यसमाज विवेक विहार दिल्ली के पूर्व प्रधान डॉ० रूप कथूरिया के पूज्य पिताश्री वयोवृद्ध श्री मेघराज कथूरिया का ६१ वर्ष की आयु मे शुक्रवार ४ जनवरी २००२ को देहावसान हो गया। श्री मेघराज कथूरिया १९८८ मे सोनीपत (हरियाणा) से अपने छोटे बेटे श्री रत्नलाल कथूरिया के पास लाजपतनगर दिल्ली मे आ गए और कई वर्षों तक आर्यसमाज अमर कालोनी के उप प्रधान रहे। उनका दीर्घ जीवन अत्यन्त सात्विक परोपकारी एव मिलनसार याज्ञिक जीवन था। ५ जनवरी को उनके बडे सुपुत्र डॉ० रूप कथूरिया ने मुखाग्नि प्रस्तुत कर दाह सस्कार पूर्ण किया।

७ जनवरी सोमवार को आर्यसमाज मन्दिर अमर कालोनी दिल्ली मे रस्म पगडी एव शोक सभा आयोजित हुई। श्री दिनेश दत्त आर्य के मधुर भजनो के उपरान्त बन्धु बाधवो के अतिरिक्त अपार जन समूह ने भाव भीनी श्रद्धाजलियो का ताता बाध दिया। मुख्य वक्ताओ मे आर्यसमाज अमर कालोनी के विद्वान पुरोहित श्री प० भवानी प्रसाद त्रिपाठी सर्वश्री राजू वैज्ञानिक वेदपाल आर्य मन्त्री श्री डाबर जी क्षेत्रीय विधायक श्री सुशील चौधरी आर्यसमाज विवेक विहार के विद्वान प्रधान महामन्त्री विद्वान पुरोहित श्री विश्व बन्धु चावला वैदिक यज्ञ समिति सोनीपत के श्री विश्वनाथ कोहली श्री रामचन्द्र आदि ने पूज्य मास्टर मेघराज जी को एक आदर्श और मुकम्मल इन्सान और आर्यसमाज का पुरोधा बताया। सोनीपत और दिल्ली की अनेक आर्यसमाजो से प्राप्त शोक प्रस्तावो की सूचना दी गई। पुरोहित श्री त्रिपाठी जी ने दाह सस्कार मुख्य आध्यात्मिक उद्बोधन एव शोक सभा सयोजक का दायित्व कुशलता से निभाया।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, तेजपाल मलिक

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक १० सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार १४ जनवरी से २० जनवरी २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

गुरुकुल कांगड़ी के सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन की घोषणा

२५, २६, २७ और २८ अप्रैल, २००२ को हरिद्वार चलो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा पुस्तकाध्यक्ष श्री सोमदत्त महाजन १६ जनवरी २००२ को प्रात जालधर पहुचे स्टेशन पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के वरिष्ठ अधिकारियो सर्वश्री देवेन्द्र शर्मा सुदर्शन शर्मा श्रीमती राजेश शर्मा प्रेम भारद्वाज सरदारी लाल आर्य तथा कई अन्य महानुभावो ने सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो का स्वागत किया। जालधर पहुचने के तत्काल बाद पजाब सभा के प्रधान श्री हरवश लाल शर्मा तथा अन्य आर्य नेताओ के साथ एक अत्यावश्यक बैठक प्रारम्भ हुई जिसमे यह निर्णय किया गया कि आगामी २५, २६ २७ एव २८ अप्रैल २००२ की तिथियो मे विशाल स्तर पर गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन का आयोजन हरिद्वार की पुण्य भूमि पर किया जाए। सौ वर्ष पूर्व इस भूमि पर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने अथक प्रयासों और विद्वता के बल पर गुरुकुल कागडी की स्थापना की थी। यह गुरुकुल अपने प्रारम्भिक काल से ही देश भक्त पैदा करने की एक फैक्ट्री के रूप मे प्रसिद्ध रहा। इस महान सस्था का जो पौधा स्वामीजी ने लगाया था वह आज एक वट वृक्ष के रूप मे स्थापित है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के तत्काल बाद इस सस्था को केन्द्र सरकार ने विश्वविद्यालय के समान मान्यता प्रदान की। परन्तु दुर्भाग्य से तथा कुछ स्वार्थी तत्वो के कारण इस विशाल सस्था की कुछ बहुमूल्य भूमि बेचने का दुष्कर्म आज समूची आर्यजनता की पीडा का कारण है। इस महान सस्था के गौरव को पुन उसके मूलरूप मे स्थापित करने के उद्देश्य से ही गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के आयोजन का निश्चय किया गया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा ने कहा कि यह महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे होगा तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय और इससे जुडी सभी सस्थाए और भारतवर्ष की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाए इस महासम्मेलन मे सहयोग करेगी तो समूचे आर्यसमाज को एक नई शक्ति प्रेरणा और उज्ज्वल भविष्य का आश्वासन मिलेगा।

इस बैठक मे सार्वदेशिक सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा अन्य महानुभावो ने भी अपने विचार रखे तथा महासम्मेलन के सत्रो और आयोजन के तरीको पर गहन विचार विमर्श किया। यह महासम्मेलन इतिहास के मार्ग पर सौ वर्षीय मील का पत्थर साबित होगा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि डी०ए०वी० तथा अन्य आर्य शिक्षण सस्थाए बेशक बडा सराहनीय और प्रशसनीय कार्य कर रही हैं। इन शिक्षण सस्थाओ के माध्यम से बच्चो को आर्य नागरिक बनाने मे काफी सहायता मिलती है परन्तु आर्यसमाज और वैदिक सिद्धान्तों के देश देशान्तर में प्रचार प्रसार की योजना केवल गुरुकुलो जैसी सस्थाओ मे ही सम्भव है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि इस महासम्मेलन मे एक लाख की सख्या तक आर्यजनो के विशाल समागम की योजना बनाई जा रही है। इस महासम्मेलन मे आयोजित होने वाले सत्रो और विद्वान वक्ताओ का निर्धारण भी इस उद्देश्य से किया जाएगा कि ऐसे विचार और सकल्प विश्व की आर्य जनता के सामने प्रस्तुत किए जाए जिससे त्याग तपस्या और बलिदान की भावनाओ के आधार पर भविष्य का निर्माण हो। विगत वर्ष मुम्बई मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन से जो श्रद्धा और अनुशासन की शुरुआत हुई है उसे बनाए रखने के लिए अब आर्यजनता को क्रियान्वयन के मार्ग पर ले चलने की नितान्त आवश्यकता है।

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने स्वतन्त्रता आन्दोलन मे आर्यसमाज और विशेष रूप से गुरुकुल के योगदान का विस्तृत उल्लेख किया। उन्होने आशा व्यक्त की कि महासम्मेलन से हम पुराने गौरवशाली इतिहास को दोहराने के सकल्प और उसके क्रियान्वयन के तरीको पर विचार करेगे।

श्री सोमदत्त महाजन श्री देवेन्द्र शर्मा तथा श्रीमती राजेश शर्मा ने भी इस महासम्मेलन को सही समय पर एक सही शुरुआत बताया।

शेष भाग पृष्ठ ४ पर

वैद्य इन्द्रदेव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री नियुक्त



श्री वैद्य इन्द्रदेव जी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अतरग बैठक दिनाक १२ जनवरी २००२ मे गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय मे गैर कानूनी रूप से १४४ बीघा भूमि बेचने पर गम्भीर चर्चा होती रही। दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री तेजपाल सिह मलिक इस चर्चा के जवाब मे सन्तोष जनक उत्तर नही दे पाए। परिणामत उन्हे महामन्त्री पद से त्यागपत्र देना पडा। अतरग सभा ने सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव के द्वारा उनके त्यागपत्र को स्वीकार किया और कर्मठ आर्यनेता श्री वैद्य इन्द्रदेव जी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का महामन्त्री नियुक्त किया।

१५ जनवरी को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कुछ विशेष अधिकारियो की बैठक बुलाई और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में प्रचार प्रसार को गति प्रदान करने की योजनाओं पर चर्चा की गई।

चरित्र-निर्माण चाहिए भवन-निर्माण नहीं

– डॉ० श्यामसिह शशि

अंग्रेजी मे एक कहावत है फूल्स बिल्ड हाउसेज एड वाइज मैन लिव अथात मूर्ख व्यक्ति मकान बनाते हैं और बुद्धिमान उनमे रहते है। सम्पत्ति के बारे मे एक अन्य उक्ति है एक पीढी सम्पत्ति बनाती है दूसरी पीढी उसे भोगती है और तीसरी उसका नाश करती है। इन सूक्तियो मे अपवाद भी हैं। आप कहेगे तिनका तिनका चुनकर चिडिया घोसला बनाती है। सौ सौ बार गिरते पडते मकडी जाला बनाती है। बया नीड बनाता है पर बन्दर कुछ नही सीखता यदि बैया उसे नीड निर्माण की सीख दे तो वह उसका घर उजाडता है। तो क्या अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सैन्टर को भी इसी सीख का परिणाम था ? इजीनियर बिन लादेन है। वह भवन निर्माण करे तो फिर उसने क्यो ध्वस्त कर दिया विश्व का सबसे बडा भवन ?

इतिहास दर्शाता है कि अहकारी रावण की सोने की लका जल गई। प्राकृतिक आपदाए भूचाल मे गगनचुम्बी अटटालिकाए धराशायी करती है। बडे बडे राजमहल खण्डहर बन जाते हैं। पूजा स्थल टूटते है। आदमी जानता है फिर भी वह महत्वाकाक्षाओ की कुतुबमीनार खडी करता है।

घर बनाइए, मकान नहीं

इन कथ्यो मे तथ्य है कि आदमी घर नही बल्कि मकान बनाता है। घर सस्कृति का प्रतीक था उसका विक्रय पाप था। महानगरो मे मकान बन रहे हैं पर घर टूट रहे है। वृद्ध गृह पश्चिम की देन है। भारत मे कभी वानप्रस्थ आश्रम थे लेकिन उनकी जीवन शैली भिन्न थी। वे धर्म अर्थ काम मोक्ष एव पुरुषार्थ केन्द्र थे।

आज घर बाहर सर्वत्र अर्थकरी विद्या की होड है। विद्या अब केवल अर्थ प्राप्ति के लक्ष्य तक सीमित है। चरित्र निर्माण की बात दकियानूसी चालाकी तथा धूर्तता से धनार्जन करने वाला भी सम्मान का अधिकारी है। आइए चरित्र निर्माण करे चरित्र जो मानव को मानव बनाता है तथा व्यक्ति को आदर्श दिशा देता है। लेकिन क्या चरित्र निर्माण के लिए केवल प्रवचन व्याख्यान अथवा भाषण पर्याप्त हैं ? उनकी आवश्यकता तो रहेगी किन्तु जब तक चरित्र निर्माण के लिए मानव मूल्यो पर आधारित साहित्य नही बनेगा सब प्रयास अधूरे हैं।

मैंने अच्छे बच्चे कितने सच्चे शीषक से लिखी एक निजी प्रकाशक ने पुस्तक के कई सस्करण छापे और महर्षि का सन्देश सहस्रो पाठको तक पहुचाय तथा धर्नाजन भी किया।

आइए, चरित्र निर्माण करे

आइए भवन निर्माण की अपेक्षा चरित्र निर्माण पर ध्यान दे बच्चो के लिए श्रेष्ठ साहित्य बनाए। आर्य सस्थाओ मे महर्षि दयानन्द श्रद्धानन्द तथा महात्मा हसराज की शिक्षा पद्धतिया साकार रूप ले। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शाति निकेतन जैसी विश्वविख्यात शिक्षा सस्थान को कलकत्ता से कोसो दूर ग्रामीण क्षेत्र मे बनाया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कागडी जैसी महती सस्था गगा के पार वनाच्छादित कागडी क्षेत्र मे बनाई थी जहा भवन निर्माण की अपेक्षा चरित्र निर्माण पर अधिक ध्यान था। वहा के ब्रह्मचारी विभिन्न क्षेत्रो मे आदर्श व्यक्तित्व के रूप प्रतिष्ठित हुए किन्तु आज वैदिक शिक्षा का राग अलापने वाली शिक्षण सस्थाओ को देखकर लगता है कि वहा के शैक्षणिक प्रबधन मे परिवर्तन हो। आर्यजन केवल हवन भजन के लिए साप्ताहिक सत्सगो तक सीमित न रहेगे अपना चरित्र इदन्नमम के साथ जोडेगे कृण्वन्तो विश्वमार्यम होगा। आज आवश्यकता है भवन निर्माण की अपेक्षा चरित्र निर्माण की।

– अनुसधान बी ४/२४५ सफदरजग एन्क्लेव नई दिल्ली २६

गायन्त्री मन्त्र का चमत्कार अकबर कालीन एक ब्राह्मण की कहानी

– आचार्य रामसुफल शास्त्री

पतित पावनी गायत्री मन्त्र के श्रद्धापूर्वक जाप करने से विशेष प्रभाव हाता है। गायत्री मन्त्र का बहुत सीधा सरल अथ ह जा गाए सा तर जाए। दरिद्र स दरिद्र व्यक्ति भी श्रीमान बन सकता है पतित से पावन हो जाता है। गायत्री मन्त्र का जाप तीन प्रकार से किया जाता है १ वाचक २ उपाशु ३ मानस।

प्रथम प्रकार मे उच्च स्वर से गायन करके दूसरा प्रकार है कि जिसमे केवल होठ हिले आवाज नही निकले और तीसरा प्रकार होठ भी नही हिले केवल मन ही मन मे जाप करे किन्तु यह सबसे कठिन जाप है और सबसे अधिक लाभकारी भी है क्योकि मानस जाप मे पूर्ण रूप से मन एकाग्र होता है। मन की एकाग्रता ही लक्ष्यप्राप्ति का मूल मन्त्र है।

इस सन्दर्भ म प्राचीन काल का प्रसग हे एक अनपढ गरीब ब्राह्मण भिक्षा मागकर अपने परिवार का पालन पोषण करता था। एक दिन बादशाह अकबर ने मन्त्री बीरबल पर व्यग्य कसा कि तुम तो ब्राह्मणो की आदरणीय उत्तम बुद्धिमान कहकर प्रशसा करते हो यही है तुम्हारे ब्राह्मण ? दरवाजे दरवाजे पर भिक्षा के लिए धक्के खाते है।

बीरबल को यह बात तीर की भाति चुभी। बीरबल ने गरीब ब्राह्मण को बुलाकर कहा कि तुम भिक्षा मागना बन्द कर दो और जो तुम्हारे परिवार पोषण के लिए धन की आवश्यकता होगी वह मुझसे ले लिया करो। गरीब ब्राह्मण ने भिक्षाटन बन्द कर दिया और हर रोज बीरबल से ५० पैसे परिवार पालन के लिए लेने लगा।

एक दिन ब्राह्मण न बीरबल स कहा कि मन्त्री जी आप मेरे परिवार के भरण पोषण के लिए हर रोज ५० पैसे देते है किन्तु मुझसे कोई काम नही लेते। बीरबल ने कहा 'यदि तुम काम ही करना चाहते हो तो हर रोज मेरे लिए सुबह शाम एक एक माला गायत्री मन्त्र का जाप करो। ब्राह्मण ने श्रद्धापूर्वक गायत्री मन्त्र का जाप शुरू किया। द धीरे धीरे मन्त्र का प्रभाव हुआ और ब्राह्मण को आनन्द आने लगा साथ ही बुद्धि भी तीव्र हुई। अन्तत गरीब ब्राह्मण की ख्याति चारो ओर फैल गई। एक दिन अकबर बादशाह के कानो तक भी ब्राह्मण के यश की चर्चा पहुची कई लोग ब्राह्मण के पास जाते तो कुछ न कुछ चढावा लेकर जाते थे। अकबर ने भी सोचा कि ब्राह्मण के दर्शन करने जाना चाहिए लेकिन ब्राह्मण ने एक निश्चय कर लिया था कि जो कुछ भेट सबसे पहले कोई भक्त दर्शक लाएगा वही स्वीकार करूगा। अकबर बादशाह बहुत सारे पदार्थ लेकर ब्राह्मण देवता की सेवा मे उपस्थित हुआ लेकिन ब्राह्मण ने भेट स्वीकार नही की। दूसरे दिन भी जब अकबर अपने मन्त्री के साथ ब्राह्मण के पास पहुचे तो यह कहकर भेट अस्वीकार कर दी कि मैं एक व्यक्ति की ही भेट एक दिन मे लेता हू। आखिर तीसरे दिन बहुत जल्दी सुबह अकबर अपने मन्त्री व सेवको के साथ पहुचा और सुन्दर पदार्थ भेट कर ब्राह्मण के दर्शन किए। अकबर ने ब्राह्मण को देखते ही पहचान लिया और आश्चर्यचकित होकर बीरबल से पूछने लगा कि यह क्या माजरा है तो बीरबल ने गर्व से कहा यह गायत्री मन्त्र का चमत्कार ईश्वर की कृपा और सच्चे ब्राह्मणत्व कर्म का फल है। 'वस्तुत गायत्री मन्त्र का अर्थपूर्वक जाप प्रभावशाली एव लाभकारी है।

– लाल सडक हासी (हिसार)

बोध कथा

सम्पूर्ण सृष्टि को सन्देश !
'द' अक्षर के माध्यम से

प्रजापति के तीन पुत्र थे – देव मानव और राक्षस। तीनो ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करते हुए पिताजी के पास रहते थे। अध्ययन पूरा होने पर देवता बोले 'गुरुजी हमे दीक्षा दीजिए। प्रजापति ने दीक्षा मे कहा – द। फिर पूछा – कुछ मतलब समझे ? देवताओ का उत्तर था – हम समझ गए हम इन्द्रियलोलुप हैं। आपने हमे इन्द्रियो के नियन्त्रण का उपदेश दिया है। प्रजापति ने स्वीकार किया – तुम हमारा ठीक सन्देश समझे हो।

इसी प्रकार मनुष्य बोले – हमे भी दीक्षा दीजिए। प्रजापति ने उन्हे भी द अक्षर की दीक्षा दी और पूछा – इस द अक्षर का मतलब समझे। मनुष्यो का उत्तर था – हा गुरुदेव। हम समझ गए हैं। आपने हमे दान देने की दीक्षा दी है क्योकि हम लोभी लालची हैं। प्रजापति ने स्वीकार किया कि मनुष्यो ने उनका ठीक सन्देश सुना है।

अन्त मे असुरो ने दीक्षा मागी तो प्रजापति ने उन्हे भी द अक्षर का सन्देश दिया और पूछा – क्या तुम हमारा मतलब समझ गए? असुरो ने उत्तर दिया गुरुदेव हम क्रूर अत्याचारी हैं। आपने हमे इन्द्रिय का दमन और दया की दीक्षा दी। प्रजापति की हमे दीक्षा है इन्द्रियो का नियन्त्रण करो दान करो कमी लोभ मत करो।

विश्व भर मे विद्युत बिजली आज भी गरज गरज कर कौंधकर प्रजापति का यह अमर सन्देश दे रही है – द द द दमन करो दान करो और दया करो।

– नरेन्द्

मातृभूमि के लिए आहुति

जागरुक हो पृथ्वी के छह आधार

वय तुभ्य बलिह्रता स्याम। *अथर्व० १२/१/६२*
मातृभूमि के लिए हम आहुति दे।
वय राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता । यजु० ८/२३
हम याज्ञिक राष्ट्र के लिए जागरूक हो।
सत्य बृहत् ऋतमुग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति।
अथर्व १२/१/१
महान सत्य उग्र अनुशासन दीक्षा तप वेदज्ञान और यज्ञ – ये ६ पृथ्वी के आधार है।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

विश्व से आतंकवाद का उच्छेद : जन सहमति : यथायोग्य विधि से

११ सितम्बर २००१ को न्यूयार्क वर्ल्ड ट्रेड सैन्टर और वाशिगटन मे अमेरिकी प्रधान सैन्य शिविर पर और १३ दिसम्बर को भारतीय ससद पर विदेशी आतकवादियो ने आक्रमण कर विश्व मे व्याप्त आतकवाद की ओर ससार का ध्यान खीचा है। उन्होने विश्व के सर्वाधिक सम्पन्न राष्ट्र मे विध्वस से अपने भयावह लक्ष्य को उजागर कर दिया। यद्यपि भारतीय सुरक्षाकर्मियो की सावधानता और समय पर कार्रवाई से भारत की राजधानी एव देश की ससद की मान मर्यादा सुरक्षित रह गई परन्तु दोनो आतकी हमलो से विश्व मे आतकवाद की शक्ति और घृणित इरादो की ओर विश्व जनमत का ध्यान केन्द्रित हो गया। इन आक्रमणो से स्पष्ट हो गया कि आतकवाद के कितने घृणित मसूबे है। एक ओर उन्होने विश्व के सर्वाधिक धनी और साधन सम्पन्न राष्ट्र को अपना लक्ष्य बनाया तो दूसरी ओर उनका लक्ष्य था विश्व की एक अरब जनता की शक्ति और गरिमा का केन्द्र बिन्दु – भारतीय ससद भवन। यह ठीक है कि सुरक्षाकर्मियो की सतर्कता और तत्काल कार्रवाई से राष्ट्र की गरिमा और शक्ति का केन्द्र ससद भवन सुरक्षित ही बच गया परन्तु यदि आतकियो को भारत की ससद के मार्गो और सुरक्षा की कुछ और प्रामाणिक जानकारी होती तो वे विध्वस की पराकाष्ठा कर सकते थे भविष्य मे कोई भी अवाछनीय आतकवादी या कोई भी राष्ट्रविरोधी तत्व अपना कोई भी घृणित अराष्ट्रीय इरादा पूरा न कर सके इसके लिए आज भारत और अमेरिका को ही नही प्रत्युत विश्व मे समस्त राष्ट्रो को विश्व से आतकवाद के पूर्ण उच्छेद एव खात्मे के लिए विश्वव्यापिनी सहमति बनानी होगी और उस व्यापक सहमति का लाभ उठाकर विश्व से आतकवाद का उन्मूलन करना होगा। यह एक व्यावहारिक चेतावनी है। विश्व की सयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् ने पाकिस्तान का वह आग्रह ठुकरा दिया है जिसमे भारत पाकिस्तान के बीच तनाव को समाप्त करने के लिए हस्तक्षेप का अनुरोध किया गया था। सुरक्षा परिषद् ने इस्लामाबाद से कश्मीर मे अपने नापाक इरादो को अजाम देने वाले आतकवादियो के विरुद्ध कठोर कदम उठाने के लिए कहा है। परिषद् के विश्वस्त राजनयिको की सूचना के अनुसार पन्द्रह सदस्यो वाली परिषद मे एक ने भी पाकिस्तान की अपील का समर्थन नही किया। परिषद कि सभी सदस्यो की सम्मति थी कि यह दोनो के बीच का मुद्दा है फलत इसका समाधान भारत और पाक को अपनी सीधी बातचीत से ही करना चाहिए।

सयुक्त राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद मे पाकिस्तान के राजदूत शमशाद अहमद खान ने सयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् से भारत पाक तनाव कम करने के लिए हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया था। उन्होने जनवरी २००२ माह के लिए परिषद् की अध्यक्षता कर रहे मारीशस के राजदूत जगदीश कुजाल धर्मचन्द से यह अनुरोध किया था। परिषद के राजनीयको की सूचना के अनुसार सदस्यो ने इस मुद्दे पर कोई विशेष दिलचस्पी नही दिखाई। भारत के ससदीय मामलो के मन्त्री श्री प्रमोद महाजन ने एक टी०वी० कार्यक्रम मे घोषित किया कि इस बारे मे कोई निर्धारित समय सीमा नही दी जा सकती। उन्होने कहा कि यह कोई क्रिकेट मैच नही है। अमेरिकी द्वारा दी इस सलाह पर कि पाकिस्तान को और समय दिया जाना चाहिए के सन्दर्भ मे केन्द्रीय मन्त्री प्रमोद महाजन ने उक्त राय अभिव्यक्त की थी। भारत के गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने १० जनवरी के दिन स्पष्ट कडे शब्दो मे घोषित किया – 'यदि पाक तनाव कम करने के मुद्दे पर वास्तव मे सुधार चाहता है तो उसे भारत की चार सूत्री मागो पर तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए उसी समय भारत उस पर भरोसा कर सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने आडवाणी को सूचना दी कि उन्हे उम्मीद है कि पाकिस्तान एक नीति के रूप मे आतकवाद से अपने आप को पृथक कर लेगा जैसा कि अफगानिस्तान से तालिबान को उखाड फेकने के लिए उसने किया था। एक निजी टी०वी० चैनल पर साक्षात्कार क दौरान श्री आडवाणी ने घोषित किया कि बुश ने उनहे आश्वस्त किया है कि मुशर्रफ एक सप्ताह के भीतर आतकवादियो के विरुद्ध कार्रवाई करेगे। गृहमन्त्री श्री आडवाणी ने पाक को चेतावनी देते हुए घोषित किया कि इस बार भारत कोई विश्वासघात सहन नही करेगा।

श्री आडवाणी ने सूचना दी कि १० जनवरी के दिन भारत ने चार सूत्री वैध माग पत्र दिया है उस पर पाकिस्तान की सकारात्मक प्रतिक्रिया ही आतकवाद के प्रति उसकी गम्भीरता सिद्ध करेगी। भारत की चार मागो ये है – १ पाकिस्तान उन २० आतकवादियो को भारत को सौपे जिनके नाम और अपराधा के सबूत भारत ने पाक को सौपे हे। २ पाकिस्तान और उसकी अधिकृत भूमि पर दी जा रही अप्रत्यक्ष सुविधा धन उपलब्ध कराना और प्रशिक्षण शिविरो और शस्त्रात्रो की आपूत्ति बन्द की जाए। ३ भारत मे जम्मू–कश्मीर समेत अन्य स्थानो पर आतकवादियो को हथियारो की घुसपैठ बन्द की जाए। ४ पाकिस्तान आतकवाद के उद्देश्यो को नजरन्दाज न करे और वह उसके सभी प्रकारो की निन्दा करे। यह भी ठीक हुआ कि भारतीय रिजर्व बैक ने सार्वजनिक और दूसरे बैको के मुख्य कार्याधिकारियो को उन २३ सगठनो के लेन देन के प्रति सचेत किया है जिनकी पहचान सरकार ने आतकवादी सगठनो के रूप मे की है। उल्लेखनीय है कि केन्द्रीय सूची मे पाक परस्त आतकी सगठन लश्करे तोइबा जैश ए मोहम्मद हरकत उल मुजाहिदीन पूर्वोत्तर के उग्रवादी सगठन यूनाइटेड लिबरेशन फ्रण्ट ऑफ असम (उल्फा) प्रतिबन्धित सगठन इस्लामी मूवमेन्ट ऑफ इण्डिया सिमी लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (लिटटे) और दीनदान अजुमन सम्मिलित है। रिजर्व बैक द्वारा प्रसारित एक प्रपत्र के अनुसार यह निश्चय किया गया कि व्यावसायिक बैक इन सगठनो के लेन देन के प्रति कडी नजर रखेगे और यदि पाया गया कि वहा आतकवाद निरोधक अध्यादेश के प्रावधानो के विरुद्ध कार्य किया जा रहा है तो उसकी सूचना तुरन्त सम्बन्धित अधिकारियो को दी जाएगी। इस सारे विवरण से स्पष्ट है कि आतकवाद के सकट से भारत सरकार रिजर्व बैक और सम्बन्धित अधिकारी पूरी तरह सजग हैं और उसके उच्छेद खात्मे के लिए जन सहमति से यथायोग्य विधि से निपट रहे है।

चिट्ठी-पत्री

जोश के साथ होश की जरुरत

१३ दिसम्बर के दिन भारतीय ससद पर हुए आतकी हमले के बाद यह लिखते और कहते पाया गया – 'चाहे कुछ भी हो इस बार तो हमारे देश को पाकिस्तान की १९७१ जैसी दुर्गति करनी ही चाहिए। इसमे कोई सन्देह नहीं कि हमारी ससद पर पाक आतकवादियो ने हमला हमारी ससद पर नहीं बल्कि विश्व के सबसे बडे लोकतन्त्र पर किया है जिसकी पीडा हम ही जानते हैं। ऐसे समय मे हमे स्व० श्रीमती इन्दिरा गाधी का रणचण्डी वाला रूप याद आ जाता है। किन्तु हर बार वही रूप दिखाया जाए शायद न तो सम्भव है और न ही उचित। हम सभी इसका कारण जानते हैं कि पाकिस्तान का कल तक का सरक्षक अमेरिका जिसने विश्व के आतकवाद के खात्मे का बीडा उठा रखा है खुल कर पाकिस्तान को लताडने से कतरा रहा था लेकिन अमेरिका ही नहीं रूस लीबिया ईरान फ्रास और अन्य अनेक देश न केवल पाक को आतकवादियो का पोषण खत्म करने की चेतावनी दे रहे हैं बल्कि यह माग भी कर रहे हैं कि वह इन आतकी सगठनो के विरुद्ध शीघ्र उचित कार्रवाई करे। वैसे अच्छा हो कि यह भयानक उलझी हुई समस्या शान्तिपूर्वक सुलझा ली जाए। उल्लेखनीय है कि १३ दिसम्बर से हमारे राष्ट्रनेता यही कर रहे है। यह ठीक है कि जोश के साथ होश खोना बुद्धिमत्ता नहीं हैं।

– ताराचन्द देव गाडेगावालिया, करौलबाग, नई दिल्ली

एक तीर दो निशाने

११ सितम्बर के दिन अपने पर हुए आतकवादी हमले के जवाब मे अमेरिका ने तालिबान प्रशासन और उसके समर्थक अल कायदा के आतकवादियो के विरुद्ध तुरन्त फौजी कार्रवाई से विश्व के सबसे निर्मम आतकवादियो के सहार के साथ ही उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी चीन पर निकट से निगरानी रखने के लिए पाकिस्तान और अफगानिस्तान के आधारशिविर भी हासिल कर लिए हैं। भारत मे ससद पर हुए हमले के लिए भारत द्वारा पाकिस्तान के खिलाफ कडी कार्रवाई की धमकी पर अमेरिका द्वारा सयम रखने की सलाह ठीक नहीं वह अपने आतकवाद के विरुद्ध कडी कार्रवाई करता है पर भारत को उसकी सयम की सलाह पक्षपातपूर्ण है।

– अक्षित तिलकराज गुप्त, साठौरा, हरियाणा

ऋग्वेद से - नाभानेदिष्ठर्षि सप्तकम् (उत्तरार्द्ध)

अन्तरंग भक्त की कामना

– प० मनोहर विद्यालकार

(६) गम्भीर कार्यकर्ताओं में भी दीर्घकाल तक सेवा करने वाले पूजनीय होते है

ये अग्ने परि जज्ञिरे विरूपासो दिवस्परि।
नवग्वो नु दशग्वो अगिरस्तम सचा देवेषु महते।।

ऋ० १०/६२/६

मानवो नाभानेदिष्ठ । विश्वेदेवा अगिरसो वा। बृहती।

अर्थ – (ये विरूपास) विविध दृष्टिकोण रखने और कार्यो को करने के कारण ये क्रान्तदर्शी लोग (दिव अग्ने परिजज्ञिरे) दिव्य अग्नि को लेकर उत्पन्न होते है इसलिए अगिरस प्रत्येक अग से जीवनरस का सचार करने के कारण अगिरा-अगिरस् कहलाते है। उन मे से जो व्यक्ति (नवग्व) नौ दशक तक अपने दृष्टिकोण का प्रसार करता है वह नवग्व और जो दस दशक तक अपने दृष्टिकोण का प्रसार करता है वह दशग्व कहलाता है। ये नवग्व और दशग्व अगिरसो मे उत्तम माने जाते है और (देवेषु सचा महते) प्रजा और शासन दोनो के दिव्यजनो के साथ बैठाए जाते है तथा पूजित किए जाते है।

निष्कर्ष – जिनमे किसी विशिष्ट कार्य को सम्पन्न करने की आग जल रही होती है उन्हे अगिरस्तम कहा जाता है। वे सर्वत्र सबके लिए महत्वपूर्ण और पूजनीय होते है। आधुनिक काल मे स्वामी दयानन्द श्री अरविन्द महाकवि रवीन्द्र और महात्मा गाधी को इस कोटि मे गिना जा सकता है। महते – पूजने आख्यातानु क्रमण।

अर्थपोषण – नग्रव – नवदशकान् गच्छतीति – नब्बे वर्ष तक समाज-सेवा करते हुए अधीन होकर जीवित रहने वाला। हरिशराण सिद्धान्त।

इसी प्रकार १०० वर्ष तक समाज सेवा करते हुए जीवित रहने वाला व्यक्ति दशग्व कहलाता है। आधुनिक काल मे श्री मुरारजी देसाई को दशग्व कहा जा सकता है। सायण आदि प्राचीन भाष्यकारो ने नवग्व दशग्व का अर्थ नौ मास तथा दस मास तक यज्ञकर्ता किया है। नि स्वार्थ भाव से समाजसेवा का प्रत्येक कार्य यज्ञ होता है इसलिए यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म कहा गया है। इस प्रकार के दक्षतापूर्ण यज्ञ द्वारा ही परमेश्वर का सख्य=साहचर्य तथा अमृतत्व प्राप्ति होता है – **यज्ञेन दक्षिणया समक्ता इन्द्रस्य सख्यममृतत्वमानशु ।**

(७) लम्बे कानो वाले श्रुत पर मनन करने वाले यशस्वी होते हैं

इन्द्रेण युजा नि सृजन्त वाघतो व्रज गोमन्तमश्विनम्।
सहस्र मे ददतो अष्टकर्ण्य श्रवो देवेष्वक्रत।।

ऋ० १०-६२-७

मानवो नाभानेदिष्ठः। विश्वेदेवा। सतोबृहती विराट् पक्तिर्वा।

अर्थ – (वाघात) मेधावी विद्वान् (इन्द्रेण युजा) परमेश्वर के सहयोग से (गोमन्त अश्विन व्रजम्) इन्द्रिय सम्बन्धी तथा मन सम्बन्धी ज्ञान को (नि सृजन्त) निश्चय ही सृजनशील बना लेते है। (मे सहस्र ददत) मेरे लिए नाना प्रकार के पदार्थ और सुविधाए प्रदान करने वाले (अष्टकर्ण्य) बडे कानो वाले अथवा व्यापक श्रवण पर मनन सामर्थ्य वाले सभी विद्वान (विश्वे देवा) (देवेषु श्रव अक्रत) दिव्यजनो मे अपने और हमारे यश को स्थापित कर देते हैं।

अर्थपोषण – नि – निश्चय से, यास्क। वाघत – मेघावीनामसु। नि० ३–१८ व्रजम्–ज्ञानम स्वा० दया० ऋक १–१०–७। गाव – इन्द्रियाणि। अश्व – मन प्रो० विश्वनाथ श्वेताश्वतर मे। इन्द्रेण – इन्द्र परमेश्वर – इदि परमैश्वर्य। अष्टकर्ण्य – व्याप्त कर्णवन्त अशूड व्याप्तौ (१) जिनके कान बडे बडे हैं (२) जिनका श्रवण सामर्थ्य दूतादि के कारण अत्यन्त विस्तृत है। (३)– षढकर्णो भिथद्यते मन्त्र के सन्दर्भ से आठ कानो मे गई हुई बात जगल की आग की तरह से फैल जाती है। उनका यश भी खूब फैलता है। बडे कानो वाला व्यक्ति दीर्घकाल तक अत्यन्त यशस्वी होता है – यथा वर्तमान मे महात्मा गाधी।

(वैदिक वाडमय के अनुसार)

इन्द्र (राजा) को अष्टगतिक (आठकर्तव्यो वाला) कहा है। हरिशरण सिद्धान्त

निष्कर्ष – परमेश्वर तो सबके हृदय मे बैठा हुआ सत्-प्रेरणा करता रहता है जो उसे स्वीकार करके उस पर आचरण करते है वे नए-नए वर्गो या कुलो का सृजन करते है। परमेश्वर की व्यवस्था को चलाने वाले विश्वेदेव प्राणीमात्र को हजारो पदार्थ और सुविधाए प्रदान करने के कारण अपना और परमेश्वर की प्रेरणा को सुनकर उस पर आचरण करने वालो का यश देवलोक तक पहुचाकर उसे चिरन्तन (अमर) बना देते है।

–श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

पृष्ठ १ का शेष भाग

गुरुकुल कांगड़ी के सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

इस बैठक के बाद एक पत्रकार सम्मेलन को भी सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो ने सम्बोधित किया जिसमे इस महासम्मेलन की योजना के अतिरिक्त अन्य कई सामयिक विषयों जैसे इतिहास सशोधन आर्यो को आक्रमणकारी कहने वाले सिद्धान्त के विरुद्ध तथा आर्यसमाज के सगठनात्मक पहलुओ पर भी पत्रकारो के प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर दिया गया।

पत्रकार वार्ता के दौरान अग्निवेश द्वारा गठित और घोषित गैर कानूनी और अनधिकृत पदाधिकारियो की सूची पर टिप्पणी करते हुए सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि अग्निवेश पूरी तरह से वैदिक सिद्धान्तो के समर्थक नहीं है बल्कि इसके विपरीत कई बार कम्युनिस्ट विचारधाराओ का समर्थन करते हैं। सगठन के अनुशासन को खराब करने के लिए वे कई वर्षों से कार्य करते रहे हैं। १९९३ में भी एक बोगस सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों की घोषणा अनधिकृत रूप से अग्निवेश तथा कैलाशनाथ सिह आदि ने की।

भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर भी आर्यसमाज के सगठन को खराब करने का प्रयास किया गया। सार्वदेशिक सभा द्वारा कई बार इन्हे अपने इन कार्यो से विमुख करने की प्रेरणा की गई परन्तु इन्होने अनुशासन बनाए रखने के लिए कोई ठोस कार्य नहीं किया। ३ और ४ नवम्बर, २००१ का त्रैवार्षिक चुनाव अधिवेशन अदालत के आदेशानुसार सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल जी की देखरेख मे सम्पन्न हुआ था। अत इन परिस्थितियों मे किसी अन्य व्यक्ति को चुनाव प्रक्रिया मे दखल या कोई घोषणा करने का कोई कानूनी अधिकार नही हैं। आर्यजनता अग्निवेश इन्द्रवेश तथा कैलाश नाथ सिह आदि के दुष्प्रचार अभियान से सावधान रहे।

इन बैठको के बाद सार्वदेशिक सभा के अधिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के कार्यालय गए।

सार्वदेशिक सभा समूचे आर्यजगत को इस प्रथम सूचना के आधार पर यह आह्वान करती है कि अधिक से अधिक सख्या में २५,२६ २७ २८ अप्रैल २००२ को आयोजित इस गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए हरिद्वार पहुचने हेतु आर्यजनता को प्रेरित करें। इन तिथियों में स्थानीय या प्रान्तीय स्तर का कोई कार्यक्रम न रखा जाए। यदि कुछ कार्यक्रम पूर्व घोषित हो तो उन्हे स्थगित करके आगे की तिथियों मे रखा जाए।

वैदिक धर्म प्रचार

खगडिया गौशाला (विहार) के वार्षिकोत्सव पर दिनाक २३ २४ एव २५ नवम्बर, २००१ को स्वामी अग्निव्रत जी के द्वारा वैदिक धर्म प्रचार का आयोजन किया गया।

शोक सभा

२५ नवम्बर २००१ को आर्यसमाज मदिर खगडिया (विहार) के प्रागण में स्थानीय आर्य समाज के आजीवन सदस्य स्व० वीर प्रकाश जी की स्मृति में हवन यज्ञ के पश्चात स्वामी अग्निव्रत जी की अध्यक्षता में एक शोक सभा का आयोजन तथा दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए सामूहिक प्रार्थना की गई। यह आयोजन स्थानीय आर्य समाज के प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार मुकल तथा मत्री श्री केशरीनन्दन आर्य ने किया।

सरकार की दोहरी नीति

हिन्दी और भारतीय भाषाओं के विकास में बाधक

— डॉ० परमानन्द पाचाल

कितने आश्चर्य की बात है कि स्वतन्त्र भारत मे जिस अग्रेजी की दल-दल से उबारने के लिए भारतीय भाषाओ के विकास का प्रावधान हमारे सविधान मे किया गया है हम उसके उल्टे ही चल रहे है। हमारा ध्यान आज भी भारतीय भाषाओ विशेषकर राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रोत्साहन देने की बजाए अग्रेजी को प्रोत्साहन देने की ओर ही दिखाई देता है।

सविधान की आठवीं अनुसूची मे जिन १८ भारतीय भाषाओ का उल्लेख है उनमे अग्रेजी का कोई स्थान नहीं है। सविधान के अनुच्छेद ३४३ के अनुसार सघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी किन्तु साथ ही यह भी कहा गया है कि अग्रेजी का प्रयोग अगले १५ वर्षों तक चलता रहेगा।

हिन्दी भाषा के विकास के लिए अनुच्छद ३५१ मे विशेष निर्देश दिए गए है जबकि सविधान मे अग्रेजी भाषा के विकास सम्बन्धी कोई भी निर्देश नहीं है। ये निदेश निम्न प्रकार हैं —

"सघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामाजिक सस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति मे हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विर्निदिष्ट भारत की अन्य भाषाओ के प्रयुक्त रूप शैली और पदो को आत्मसात करते हुए और जहा आवश्यक या वाछनीय हो उनके शब्द भण्डार के लिए मुख्यत सस्कृत से और गौणत अन्य भाषाओं के शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।"

सविधान के अनुच्छेद १२० २१० तथा ३४३ से ३५१ तक मे सरकारी भाषा सम्बन्धी प्रावधान हैं किन्तु कहीं भी अग्रेजी को बढावा देने की बात नही कही गई है।

राजभाषा अधिनियम १९६३ (यथा सशोधित १९६७) द्वारा सविधान के अनुच्छेद ३४३ मे निर्दिष्ट अग्रेजी के प्रयोग की १५ वर्ष की अवधि को बढा दिया गया। किन्तु साथ ही हिन्दी के निरन्तर अधिक से अधिक प्रयोग की भी व्यवस्था की गई। अग्रेजी को प्रोत्साहन देने की बात इस अधिनियम मे भी नहीं है।

ससद के दोनो सदनो द्वारा १९६८ मे पारित सकल्प मे भी कहा गया है कि 'जब कि सविधान की आठवीं अनुसूची मे हिन्दी के अतिरिक्त भारत की १४ मुख्य भाषाओ का उल्लेख किया गया है और देश की शैक्षणिक एव सास्कृतिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि इन भाषाओ के पूर्ण विकास के हेतु सामूहिक उपाय किए जाने चाहिए। हिन्दी के साथ-साथ इन भाषाओ के समन्वित विकास के लिए भारत द्वारा राज्य सरकारो के सहयोग से एक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा ताकि वे शीघ्र समृद्ध हो और आधुनिक ज्ञान के सचार का प्रभावी माध्यम बनें।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयो मे राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढावा देने का दायित्व गृह मन्त्रालय के राजभाषा विभाग का है। वहा अग्रेजी को प्रोत्साहन देने की कोई योजना नहीं है। फिर अग्रेजी को प्रोत्साहन देने की जिम्मेवारी किस मन्त्रालय की है ?

भारत सरकार के कार्य आवंटन नियम

जहा तक हिन्दी और भारतीय भाषाओ के उन्नयन और सवर्द्धन का प्रश्न है यह कार्य मानव ससाधन विकास मन्त्रालय का है। पहले सस्कृति विभाग भी इसी के साथ था। भारत सरकार के कार्य आवटन नियम १९६१ (यथा सशोधित) जिन्हे मन्त्रिमण्डल सचिवालय द्वारा प्रकाशित किया गया है मे मानव ससाधन विकास मन्त्रालय को सौपे गए कार्यों का उल्लेख है। उनके अनुसार निम्न मदो मे हिन्दी और अन्य भाषाओ से सम्बन्धित कार्यो का विवरण है —

मद १७ — हिन्दी के शिक्षण और सवर्द्धन के लिए वित्तीय सहायता देना।

मद १८ — सस्कृत का प्रचार और विकास।

मद ५१ — आधुनिक भारतीय भाषाओ के सम्बर्द्धन के लिए स्वैच्छिक सगठनो को वित्तीय सहायता देना।

भाषा प्रभाग ने भारतीय भाषाओ मे प्रकाशन क लिए वित्तीय सहायता देने हेतु एक योजना परिचालित की है। किन्तु खेद है कि इस योजना को अब अग्रेजी भाष के प्रोत्साहन के लिए भी लागू कर दिया गया है। ऐसा क्यो ? क्या अग्रेजी भाषा का विकास करना भी भारत का कर्त्तव्य है अग्रेजी मे सृजनात्मक साहित्य रचना के लिए पुरस्कार और प्रोत्साहन देना क्या हमारा कार्य है ?

निश्चय है इस निर्णय पर गम्भीरता स विचार किया जाना चाहिए। यह ठीक है कि यह योजना हिन्दी (उसकी बोलियो सहित) सस्कृत सिधी उर्दू तथा आठवी अनसूची की सभी भाषाओ के विकास के लिए है किन्तु समझ मे नही आता कि अग्रेजी के लिए जो भारतीय भाषा नही है और जिसका स्थान शनै शनै हिन्दी लेती जा रही है क्यो इस योजना मे शामिल किया गया है ? लगता है कि हम अग्रेजी का मोह नही छोड पा रहे है और राजभाषा हिन्दी को नेक नियती से हम लागू करना नहीं चाहते हैं। नहीं तो हम अग्रेजी के विकास के लिए जो हमारी राष्ट्रीय नीति के अनुकूल नहीं है प्रोत्साहन योजना क्यों लागू करते।

यही नहीं सस्कृति मन्त्रालय की एक साहित्यिक सस्था साहित्य अकादेमी भी इसी प्रकार से अग्रेजी के सृजनात्मक साहित्य को प्रोत्साहन देने के लिए दिल खोलकर लगी है।

साहित्य अकादेमी की १० सितम्बर को १९६७ को हुई सामान्य परिषद् की बैठक मे प्रकाशन नीति के सम्बन्ध मे कहा गया था कि 'साहित्य अकादेमी मूलत और प्रधानत भारतीय लेखको का एक ऐसा सघ है जो भारतीय भाषाओ मे साहित्यिक कार्यों को प्रोत्साहन देने और उनमे समन्वय स्थापित करने का कार्य करती है।'

यह अच्छी बात है कि साहित्य अकादेमी भारतीय भाषाओ मे उत्कृष्ट रचनाओ के लेखको को प्रति वर्ष पुरस्कार प्रदान करती है। अकादेमी ने अब अपने कार्य क्षेत्र को बढाकर भारत की कई उप-भाषाओ जैसे मैथिली डोगरी तथा राजस्थानी के साथ-साथ अग्रेजी को भी शामिल कर लिया है और अब प्रति वर्ष अग्रेजी लेखको को पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। जबकि यह पैसा भारतीय भाषाओ के विकास पर ही होना चाहिए। अग्रेजी तो भारतीय भाषा है ही नहीं। फिर अग्रेजी लेखको को पुरस्कार देने का क्या औचित्य है ? एक ओर तो हम अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी और भारतीय भाषाओ को लाना चाहते हैं दूसरी और अग्रेजी के लिए पुरस्कार देकर उसे प्रोत्साहन दे रहे है। ऐसा क्यो है ? कौन बताए ?

लगता है भारतीय भाषाओ के विकास के लिए सरकार और ससद कोई भी कानून बनाती रहे किन्तु अग्रेजी की घुसपैठ अवश्य रहेगी। बात हम कुछ भी कहे किन्तु पतनाला यहीं पडेगा वाली कहावत आज हमारी भाषा नीति की परिचायक बन गई है। भारतीय शासन तन्त्र मे आज भी निहित स्वार्थ वाला एक ऐसा वर्ग बैठा है जो किसी न किसी आड मे अग्रेजी को हटने नही दे रहा है और भारतीय भाषाओ को उनका उचित स्थान दिलाने मे अडगे लगा रहा है।

आज गाव गाव और गली गली म अग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलो की जो बाढ आ रही है उसका दुष्परिणाम क्या होने वाला है जरा सोचिए। आज से दस पन्द्रह वर्षों के बाद जब ये ही छात्र कार्यालयो मे पहुचेगे तो ये स्वय ही हिन्दी को नकार देगे क्योकि हिन्दी मे इनकी गति नहीं के बराबर होगी। इसमे हमारे उच्चस्तरीय भर्ती अभिकरणो का भी कम यागदान नही है जहा से अग्रेजी का दबदबा हटने वाला नही है।

कितने आश्चर्य की बात है कि स्वतन्त्र भारत मे जिस अग्रेजी की दल-दल से उबारने के लिए भारतीय भाषाओ के विकास का प्रावधान हमारे सविधान में किया गया है, हम उसके उल्टे ही चल रहे हैं। हमारा ध्यान आज भी भारतीय भाषाओ, विशेषकर राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रोत्साहन देने की बजाए अग्रेजी को प्रोत्साहन देने की ओर ही दिखाई देता है।

आज गाव-गाव और गली-गली मे अग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलो की जो बाढ आ रही है उसका दुष्परिणाम क्या होने वाला है, जरा सोचिए। आज से दस पन्द्रह वर्षो के बाद जब ये ही छात्र कार्यालयो मे पहुचेगे तो ये स्वय ही हिन्दी को नकार देंगें क्योंकि हिन्दी में इनकी गति नहीं के बराबर होगी। इसमे हमारे उच्चस्तरीय भर्ती अभिकरणों का भी कम योगदान नहीं है, जहा से अग्रेजी का दबदबा हटने वाला नहीं है।

अन्त मे इग्लैण्ड के प्रसिद्ध कवि स्वर्गीय स्पेडर के उन शब्दो को उद्धत करना अप्रासगिक न होगा जो उसने भोपाल मे आयोजित विश्व कविता समारोह मे कहे थे। उसने कहा था कि भारत एक ऐसा अकेला देश है जो ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा था पर वास्तविक अर्थों मे अब भी उससे बाहर नहीं आ पाया है। यह देश इतने दिनो के बाद भी अग्रेजी की गुलामी से नहीं उतरा है। भारतीय लोग अग्रेजी भाषा के प्रेम मे पड गए हैं। यह प्यार एक त्रासदिक प्यार है।

यहा यह स्मरण दिलाना भी अप्रासगिक न होगा कि कवीन्द्र रवीन्द्र को नोबेल पुरस्कार उनकी किसी अग्रेजी रचना पर नही बल्कि बगला भाषा मे रचित उनकी कालजयी कृति 'गीताजली पर मिला था। इग्लैण्ड के अग्रेजी साहित्य मे आज भी भारतीय अग्रेजी लेखको का कोई स्थान नहीं है। वे अग्रेजी साहित्य के अग नहीं बन सकते। फिर सरकारी ६ ान का अपव्यय क्यो ? एक ओर तो सरकार ठिठोरा पीटती है कि हम अग्रेजी के स्थान पर हिन्दी और भारतीय भाषाओ को लाना चाहते है दूसरी और अग्रेजी मे कविता कहानी उपन्यास और नाटक लिखने वाले साहित्यकारो को पुरस्कार देकर अग्रेजी को बढावा दे रही है। इस दोहरी नीति के चलते क्या भारतीय भ[illegible]ओ का विकास हो सकेगा ? क्या हिन्दी राजभाषा के रूप मे अग्रेजी का स्थान ले सकेगी ? जरा सोचिए।

— २३२ ए, पॉकेट-१, मयूर विहार, फेज-१, दिल्ली-११००९१

वैदिक मर्यादा और परम्परा की प्रतिष्ठा करने वाले राष्ट्र पुरुषों से प्रेरणा लें

बन्दा वैरागी जयन्ती पर आर्य नेताओं द्वारा भारतीय जनता का आह्वान

वीर बन्दा वैरागी समिति दिल्ली की ओर से वीर बन्दा बैरागी का जन्म दिवस समारोह मानसरोवर गार्डन रमेश नगर दिल्ली मे मनाया गया। इस समारोह मे दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने वीर बन्दा बैरागी को श्रद्धाजलि भेट करते हुए कहा वीर बन्दा वैरागी एक ऐसे राष्ट्रनायक थे जिन्होने देश को विदेशी आक्रमणकारियो से स्वतन्त्र कराके भारत के उत्तरी भाग मे अपनी राजधानी अम्बाला लोहगढ स्थापित करके अपना ध्वज एव सिक्का चलाया। ऐसे महानायक एव राष्ट्र पुरुष का जीवन प्रेरणस्रोत है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने वीर बन्दा वैरागी के प्रति श्रद्धाजलि भेट करते हुए कहा कि ऐसे वैरागी के जन्म दिवस पर उन्हे याद करके उनके जीवन से हम प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। जिन्होने वैदिक मर्यादाओ और सनातन परम्पराओ को पुर्नजीवित किया। ऐसे महापुरुष का जीवन इतिहास की पुस्तको मे भी हो जिससे आने वाली पीढी भी उनसे प्रेरणा ले।



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री हरबस लाल कपूर डी०ए०वी० मैनेजिग कमेटी के सदस्य श्री मोहन लाल वीर बन्दा बैरागी समिति महामन्त्री श्री सुन्दर दास आदि महानुभाव।

प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री हरबस लाल कपूर ने श्रद्धाजलि भेट करते हुए कहा कि वीर बन्दा वैरागी स्वतन्त्रता का युद्ध लडते हुए चादनी चौक मे शहीद हुए। उनका जीवन प्रेरणा स्त्रोत है ऐसे महान राष्ट्रनायक की जीवनगाथा इतिहास मे शामिल की जाए।

डी०ए०वी० मैनेजिग कमेटी के मन्त्री श्री मोहनलाल ने श्रद्धासुमन भेट करते हुए कहा कि वीर बन्दा वैरागी सन्यासी होते हुए भी देश को स्वतन्त्र कराने के लिए सेनापति बने और अत मे शहीद हुए।

वीर बन्दा वैरागी समिति के महामन्त्री श्री सुन्दर दास ने इस महानायक के प्रति श्रद्धासुमन प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम ऐसे राष्ट्रनायक परोपकारी वैरागी राष्ट्रप्रेम से प्रेरणा ले। यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

इस अवसर पर एक प्रस्ताव द्वारा मानव ससाधन विकास मन्त्री श्री मुरली मनोहर जोशी से माग की गई कि वीर बन्दा वैरागी का नाम इतिहास मे जोडकर उन्हे देश को स्वतन्त्र कराने वालो के इतिहास मे उचित स्थान दे।

इस प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत आदि ने किया।

इसी अवसर पर एक अन्य प्रस्ताव द्वारा केन्द्रीय गृहमन्त्री से लालकृष्ण आडवाणी से यह माग की गई की वीर बन्दा बैरागी का चित्र ससद मे लगाए क्योकि वह ऐसे महापुरुष है जिन्होने देश को स्वतन्त्र कराने हेतु बलिदान दिया ऐसे प्रेरक महापुरुष से राष्ट्र को सदा प्रेरणा मिलती है।

आर्यसमाज घाटकोपर मुम्बई त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

देश के विभाजन के लिए राजनेता उत्तरदायी

आर्यसमाज घाटकोपर मुम्बई का त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव बडे हर्ष और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिनमे आए हुए वैदिक विद्वानो ने अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रथम दिवस गौरक्षा सम्मेलन पर विचार प्रस्तुत हुए और द्वितीय दिवस पर महिला सम्मेलन तथा तृतीय दिवस मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन पर मुख्य ओजस्वी वक्ता ब्र० धर्मबन्धु जी महाराज उपदेशक महाविद्यालय टकारा ने देश के विभिन्न विषयो पर बडे सरल तरीके से अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होने देश की रक्षा हेतु चिन्ता व्यक्त करते हुए बताया कि आज भारत जिस प्रकार भ्रष्टाचार अराजकता अनैतिकता भुखमरी भूकम्प लडाई झगडे पशु हत्या मे बढोतरी हो रही है इसका मूल कारण हम और हमारे देश के राजनेता है। उन्होने सी०बी०आई० रिपोर्टो के आधार पर जानकारी देते हुए कहा कि हमारे देश मे हमारे देश के लगभग सभी राजनैतिक दलो के राजनेता भ्रष्टाचार और अराजकता फैलाने के दोषी है। उन्होने यह भी कहा कि १५ अगस्त १९४७ से और अब तक तेरह बार देश का विभाजन इन्ही राजनेताओ ने करके खैरात रूप मे लुटा दिया। जिन महान क्रातिकारी राणा प्रताप शिवाजी ने मुगलो मे इस देश को सुरक्षित रखा जिस देश को भगत सिह चन्द्रशेखर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आदि वीरो ने अपना बलिदान देकर सुरक्षित रखा। आज इसके ही रक्षको ने इस देश को टुकडे टुकडे मे नीलाम किया उन्होने आज देश मे बढ रहे आतकवाद के लिए कुरान मे आए सिद्धान्तो पर टिप्पणी करते हुए कहा जब तक कुरान मे लिखी २४ आयतो का खात्मा नही किया जाएगा तब तक भारत मे या विश्व मे शान्ति नही हो सकती और कहा कि इन्ही आयतो के कारण इस्लाम को मानने वाले मजहब के नाम पर भाईचारा समाप्त करके विश्वासघात लडाई झगडे कर रहे है। ऐसे रूढीवादी इस्लामी लोग कभी भी राष्ट्रभक्त नही हो सकते इन सभी बातो पर विचार देते हुए उन्होने रक्षा के उपायो पर भी विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य व्यवस्था का सुधार शिक्षा पद्धति का सुधार ईमानदार सज्जनो का सगठित और सक्रिय होना और दुर्जनो को निष्क्रिय करना मुख्य रूप से बताया और कहा कि आज देश को उन्नति के शिखर पर पहुचाने के लिए पार्टिवाद को खत्म करके राष्ट्रवाद की भावना पैदा करनी होगी और नवयुवको और किशोरो सम्पूर्ण समस्याओ का समाधान का चरित्र अच्छा बनाना होगा तथा देश के शासन की बागडोर ईमानदार शासको को सौपनी पडेगी इस प्रकार से उन्होने उपाय बताते हुए विदेश नीतियो का स्पष्टीकरण करना आदि बताया तथा इसी कडी मे डॉ० सोमदेव शास्त्री ने देश की उन्नति के विषय मे महर्षि दयानन्द जी की सोच तथा वेदोक्त प्रमाण देकर अपने विचार व्यक्त किए तथा कहा कि यदि राष्ट्र का नौजवान जागत है तो देश उन्नत है। यदि नौजवान सोता रहे और उद्यमी न हो तो देश अवनति के कगार पर पहुच जाता है। इसी कडी से कडी जोडते हुए डॉ० सत्यपाल ने कहा कि राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए राष्ट्र की आर्थिक स्थिति का बेहतर होना और साथ ही राष्ट्र के रक्षक सैनिक बल का पूरा सक्रिय होना राष्ट्र भक्ति होना बहुत आवश्यक है। आज देश मे धर्म के नाम पर आतकवाद और सत्ता के नाम पर आतकवाद कहीं घोटाले कहीं हडप नीतिया जो चल रही है। उनका सम्पूर्ण और जड से नष्ट करने के लिए ईमानदार लोगो को सामने आना होगा और देश को बचाना होगा। इस समारोह मे अन्य आर्यसमाजो के प्रधान उपप्रधान जैसे वाशी मुलुन्ड काकडवाडी चेम्बूर सान्ताक्रुज और अन्य दूर दूर के लोगो ने कार्यक्रम मे भाग लिया।

महान् क्रान्तिकारी पं० रामप्रसाद बिस्मिल का 75वां बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज नोएडा मे १६ दिसम्बर के दिन महान क्रान्तिकारी प० रामप्रसाद बिस्मिल का ७५वा बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक आयोजित किया गया। आर्ष गुरुकुल के खचाखच भरे **बिस्मिल सभागार** वें अमर बलिदानी को याद किए गए जिन्होने १६ दिसम्बर १६२७ को **सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है देखना है जोर कितना बाजुए कातिल मे है** का उद्घोष करते हुए एक साथ एक ही समय प्रात साढे छह बजे तीन अलग अलग जेलो मे फासी का फन्दा चूमते हुए मृत्यु का वरण किया था। क्रान्तिकारी आन्दोलन के सूत्रधार प० रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल मे उनके अनन्य मित्र अशफाक उल्ला खा को फैजाबाद जेल मे और आर्यसमाज के ओजस्वी तेजपुञ्ज ठाकुर रोशन सिह को इलाहाबाद स्थित नैनी जेल मे अग्रेज सरकार द्वारा फासी दे गई थी। ये तीनो ही महापुरुष शाहजहापुर (उ०प्र०) के निवसी थे जिन्होने उस समय क्रान्तिकारी के आन्दोलन का नेतृत्व अपने हाथ मे लिया था जब महात्मा गाधी सरीखे काग्रेसी नेताओ ने नोआखली के हत्याकाण्ड से घबरा कर अग्रजो के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन वापस ले लिया था। यह देश १५ अगस्त १६४७ को आजाद नहीं होता अगर रामप्रसाद सरीखे नवजवान इस यज्ञ मे अपनी आहुति न देते। बिस्मिल के सम्पूर्ण साहित्य उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर खोजपूर्ण कृति सरफरोशी की तमन्ना के लेखक डा० मदनलाल वर्मा क्रान्त ने इस अवसर पर बोलते हुए तथ्य उदघाटित किए तथा आज के हालात का वर्णन इस प्रकार किया बडे चिकने घडे है

कुछ कहो अन्तर नहीं पडना
जो बेपेदी के लोटे है
उन्हे सागर नहीं बनना
सभी कोशिश मे है
कैसे बने मन्दिर का कगूरा
कोई भी चाहता
अब नीव का पत्थर नहीं बनना।

कार्यक्रम के अध्यक्ष कवि प्रो० राजवीर सिह क्रान्तिकारी ने इन पक्तियो से बिस्मिल के बलिदान दिवस का तिलक किया – **अब की जग छिडी तो सुन लो नाम निशान नहीं होगा काश्मीर तो होगा लेकिन पाकिस्तान नहीं होगा।**

रोज रोज की नापाक हरकतो से अजिज देश की ओर से एक सन्देश देते हुए कवि ने कहा **उठो अटल जी! मौका आया अब गाण्डीव उठाने का सोमनाथ से आज तलक के सारे कर्ज चुकाने का।**

कार्यक्रम की शुरुआज गुरुकुल के छात्रो द्वारा बिस्मिल की प्रार्थना **वह शक्ति हमे दो दयानिधे! कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाए। जिस देश जाति मे जन्म लिया बलिदान उसी पर हो जाए।** से हुई। इस अवसर पर अन्य कवियो मे डा० देवेन्द्र आर्य प्रमोद मिश्र निर्मल प्रवीण आर्य तथा अशोक आनन्द ने भी अपनी सशक्त कविताए प्रस्तुत की।

गुरुकुल नोएडा के प्राचार्य डा० जयेन्द्र कुमार ने बिस्मिल द्वारा रचित रचनाओ का सस्वर पाठ किया ओर आर्यसमाज की ओर स घोषणा की कि ११ जून २००२ को बिस्मिल जी का जन्मदिवस नोएडा मे एक यादगार सम्मेलन के रूप मे मनाएगे।

अमर रहे गणतन्त्र हमारा

प० नन्दलाल निर्भय

आओ! हम गणतन्त्र मनाए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए॥
अमर रहे गणतन्त्र हमारा।
जब तक गगा यमुना की धारा॥
मिलकर इसकी शान बढाए।
प्रेम प्यार का रीति चलाए॥
महापर्व गणतन्त्र निराला।
इस मानता अदना आला॥
जग को इसका महत्व बताए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए॥
जागा! भारत वीरो जागा।
द्वेष इर्ष्या घृणा त्यागा॥
बिछुडा को हम गले लगाए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए॥
उग्रवाद बढ गया देश मे।
पाप शीश चढ गया देश म॥
मिलकर आतकवाद मिटाए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए॥
दुनिया भर क मानव सार।
ईश्वर के सब सुत है प्यारे॥
छुआ छूत का रोग मिटाए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए॥
भारत वीरो! कदम बढाओ।
आर्य बनो दुनिया को बनाओ।
निर्भय वैदिक नाद बजाए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए॥

ग्राम बहीन
जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

गुजरात मे आए भीषण भूकम्प मे मृतको की प्रथम पुण्य तिथि पर १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित

गुजरात कई वर्षो से दैवीय आपदाओ से पीडित रहा है। अकाल एव भूकम्प ने बुरी तरह से इस श्रद्धा भूमि को अपनी चपेट मे लिया था। २६ जनवरी २००१ को आए विनाशकारी भूकम्प से पूरा विश्व परिचित है। इस विनाशकारी भूकम्प ने कई व्यक्तियो को मृत्यु के घाट उतारा जिसमें नर नारी एव छोटे बच्चे भी थे। इस सन्दर्भ में श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के तत्वावधान मे ट्रस्ट परिवार मे शनिवार दिनाक २६ १ २००२ को प्रात ८ बजे से १२ बजे तक श्री आचार्य विद्यादेव के ब्रह्मत्व मे १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन एव दोपहर २ बजे से ६ बजे तक भजन एव प्रवचनो का आयोजन किया जाएगा।

गुजरात की इस दैवीय आपदा के समय सभी आर्यजनो ने प्रभावित लोगो के दुख दर्द को बाटने का प्रयत्न किया है। ऋषि जन्म भूमि मे आधार शिविर स्थापित कर गावो के पुर्ननिर्माण एव हताहत हुए परिवारो को सहयोग सामग्री वितरित की। पूरे वर्ष भिन्न भिन्न गावो मे जाकर शान्ति यहा का आयोजन उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियो द्वारा किया गया। इस समय भी सेवा चल रही है। एक वर्ष पूरा होने पर २६ जनवरी २००२ को समस्त सौराष्ट्र एव कच्छ की शान्ति एव समृद्धि के लिए ट्रस्ट १०८ कुण्डिय गायत्री महायज्ञ का आयोजन करने जा रहा है। इस महायज्ञ मे ४३२ यजमान दम्पति भाग ले सकेगे। यजमान बनने के लिए आचार्य विद्यादेव जी को श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा राजकोट ३६३६५० (गुजरात) के पते पर अथवा दूरभाष न० ०२८२२-८७७५६ पर सम्पर्क करे। आप इस अवसर पर सादर आमन्त्रित है।

गांगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार

इस वर्ष १६६६ तथा २००० वर्ष का गगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार सर्वश्री डॉ० सत्यव्रत राजेश गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के 'महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य मे समाज के स्वरूप तथा डॉ० राजेन्द्र जिज्ञासु पजाब को 'गगा ज्ञानसागर नामक ग्रन्थ पर प्रयाग मे दिए जाएगे।

आर्यजगत के दार्शनिक लेखक प० गगा प्रसाद उपाध्याय की स्मृति मे दिया जाने वाला यह पुरस्कार सर्वश्री ब्रह्ममुनि विद्या मार्तण्ड वीरसेन वेदश्रमी महात्मा आनन्द स्वामी भवानी लाल भारतीय सत्यव्रत सिद्धान्तालकार प० युधिष्ठर मीमासक विश्वनाथ विद्यालकार डॉ० मुशीराम शर्मा सोम ज्वलन्त कुमार शास्त्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती आदि को दिया जा चुका है।

आर्यसमाज भिलाई नगर मे ऋग्वेद महायज्ञ एव वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज भिलाई नगर जिला दुर्ग (छत्तीसगढ) का ४२वा वार्षिक महोत्सव २० से २३ दिसम्बर २००१ तक बडे हर्षोल्लास के वातावरण मे मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान आचार्य डॉ० सजय देवजी (इन्दौर) के ब्रह्मत्व मे ऋग्वेद महायज्ञ भी हुआ। महायज्ञ मे गुरुकुल आमसेना के विद्यार्थियो ने वेद पाठ किया। प्रतिदिन प्रात साय आचार्य डॉ० सजय देव (इन्दौर) प० वीरपाल विद्यालकार (दिल्ली) एव प० सूर्यप्रकाश मिश्र (भिलाई) के प्रवचन तथा प० दिनेशदत्त शर्मा (दिल्ली) और प० सेवकराम (दुर्ग) के भजनोपदेश हुए। स्वामी धर्मानन्दजी स्वामी व्रतानन्दजी तथा श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव मे उत्सव मे भाग लिया। २२ दिसम्बर को रात्रि कक्षा ६ वीं से १२वीं तक के बच्चो की अन्तरशालिय वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता हुई। २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया तथा महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई।

आर्य सन्देश - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१; दूरभाष : ३३६०१५०

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 17 18/01/2002 दिनांक १४ जनवरी से २० जनवरी, २००२ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 17-18/01/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

स्वास्थ्य समाचार

बहुउपयोगी है चकुंदर

- डॉ० नागेन्द्र कुमार नीरज

इसका वानस्पतिक नाम बीटा बुलगारीस है चुकदर की दो प्रमुख किस्मे है। प्रथम सब्जी वाल चुकदर तथा दूसरा शर्करा वाला चुकदर। शर्करा चुकदर से सिर्फ शर्करा ही बनाया जाता है। सब्जी नहीं बनती है। चुकदर के मूल कद कई प्रकार के होते हैं। ये लाल पीले सफेद गोल व लम्बे होते है। आजार मे प्राय लाल चुकदर मिलता है। सामान्य आकार के गोल लाल चुकदर सब्जी की दृष्टि से श्रेष्ठ होते है। कद मूल सब्जियो मे चुकदर एक उत्तम टॉनिक आहार है। इसमे प्रचुर मात्रा मे श्रेष्ठ किस्म की शर्करा ६३ ६ प्रतिशत होती है।

इसके शर्करा का मुख्य भाग सुक्रोज होता है परन्तु डस्ट्रोज तथा फल शर्करा भी इसमे पाए जाते हैं। ये शर्करा मे शीघ्र अवचूषित होकर शक्ति ऊर्जा एव उष्मा प्रदान करते हैं तथा स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं। इसका पचाग अर्थात सभी भाग सब्जी के रूप मे प्रयुक्त होते है। यह क्षारीय तत्वो विशेषकर कैल्शियम तथा लोहा का उत्तम स्रोत है। चुकदर को आग मे भूनकर उबालकर व वाष्प द्वारा बनाया जाता है। यह प्रबल रोचक तथा मूत्रल है। चुकदर का रसखनिज तथा विटामिन की दृष्टि से अति उपयोगी होता है। यह पोषण ऊर्जा रोग निवारण तथा स्वास्थ्य सरक्षण की दृष्टि से श्रेष्ठ पेय है। चुकदर को उबालने से पानी लाल हो जाता है। पानी का लाल होना यह सूचित करता है इसमे घुलनशील विटामिन रजक द्रव्य आदि घुला है। प्रयोग द्वारा देखा गया है कि इस लाल पानी मे विटामिन ए पाच प्रतिशत विटामिन सी दस प्रतिशत विटामिन बी (विशेषकर रिबोफ्लोबिन) पद्रह प्रतिशत घुला हुआ है।

उबालते समय बर्तन का ठक्कन नहीं होने से इन विटामिनो के नष्ट होने का डर बढ जाता है। पैंतीस प्रतिशत तक विटामिन सी तथा नायासिन नष्ट हो जाते हैं। चुकदर का अवशोषण आतो द्वारा होता है जिससे मल लाल हो जाता है किन्तु किसी किसी को चुकदर अलर्जिक प्रतिक्रिया करता है। फलत उसका लाल रग रक्त मे प्रवेश करके पेशाब का रग चमकीला लाल बना देता है। विदेशो मे चुकदर को बनाते समय इसे अच्छी तरह पद्रह मिनट तक ढक कर उबालते हैं। फिर इसमे नींबू का रस मिला[illegible] साथ खाते हैं। चुकद[illegible] की अच्छी तरह सफाइ [illegible]

इसमे पोटेशियम सोडियम कैल्शियम मेग्नीशियम तथा लोहा प्रचुर मात्रा मे होता है। इसका रस तीव्र रक्तशोधक है। यह लाल रक्त कणो के निर्माण मे भाग लेता है।

पथरी वाले लोग इसके पत्ते का शाक नहीं खाए। चुकदर मे विशेष तत्व विटिन होता है। चुकदर का ताजा रस दिन मे ३–३ घटे के अतराल पर एक एक गिलास पीने से पेशाब की जलन लिग के अदर की जलन यूरिन इन्फैक्शन पथरी खून की कमी कम तथा अनियमित माहवारी पित्त वमन हैजा अतिसार हीन रोग प्रतिरोधक क्षमता नाखून का मद्दापन मानसिक व स्नायुविक दौर्बल्य मधुमेह आमाशयिक व्रण हाइपो ग्लूसेमिया व हाइपर ग्लूसोमय यकृत प्रदाह यक्ष्मा आर्द्र एव शुष्क बेरी बेरी हृदय रोग [illegible] यक्ष्मा [illegible] गीय व कमजोरी तथा [illegible] ठीक होते हैं।

लाल चुकदर गर्भाशय सम्बन्धी रोग मे तथा सफेद चुकदर यकृत दोष मे लाभदायक होता है। चुकदर के मूल यकृत दोष मे लाभदायक होता है। चुकदर के मूल कद तथा पत्तियो की सब्जी, रस सूप तथा सलाद के रूप मे खाया जाता है। चुकदर के रस को नाक मे डालने से सिर दर्द ठीक होता है।

कद को उबालकर तथा कच्चा काटकर सलाद बनाया जाता है। इसका मनलुभावन रग भोजन को स्वादिष्ट एव रगीला बना देता है। इसके पत्तो का रस तथा सब्जी रक्तहीनता दृष्टिमदता कोष्ठबद्धता रिकेटस तथा आस्टियो मलेसिया तथा स्नायुविक कमजोरी को दूर करता है।

दहेज रहित सामूहिक विवाह

गिल्ड ऑफ सर्विस नामक सस्था ने गत दिनो नौ जोडो की शादी सस्था प्रागण के सामूहिक विवाह मण्डप में धूमधाम एव बडे ही उल्लासपूर्ण माहौल मे कराई। सस्था के पदाधिकारियो ने मा–बाप की भूमिका निभाते हुए पूर्ण दायित्व के साथ नव दम्पतियो को आशीर्वाद व उपहार प्रदान किए और यहा तक कि दूल्हा दुल्हनो को वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित भावी जीवन की सफलताओ के लिए सन्देश भी जारी किए गए। सामूहिक विवाह हालाकि दहेज रहित कराए गए मगर सस्था ने नवदम्पतियों को वैवाहिक जीवन शुरू करने के लिए रसोई गैस से लेकर कम्बल मशीन व अन्य आवश्यक उपहार दिए। यह सामूहिक विवाह महासचिव डायना खम्बाटा मीरा खन्ना आदि की देखरेख में कराया गया। कन्यादान प्रसिद्ध समाज सेविका गाजियाबाद की श्रीमती शान्ती चौहान ने किया। इस मौके पर दिल्ली महिला आयोग की सदस्य रिनी जैकब आर्य कन्या सदन के अधिष्ठाता एच०एस० रघुवशी सहित अन्य अनेकों सामाजिक सस्थाओं के प्रतिनिधि तथा शहर के गणमान्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

समाज सेवा एव मानव कल्याण के अग्रणी श्रीमती मोहिनी गिरि की अध्यक्षता में गिल्ड ऑफ सर्विस नामक यह सस्था प्रतिवर्ष अनेको सामूहिक विवाह कराती आ रही है जिनमे कि भारत की प्रथम महिला श्री ऊषा नारायणन सहित अन्य अनेक गणमान्य व्यक्ति सस्था प्रागण मे उपस्थित होकर नव दम्पतियों को आशीर्वाद देते आ रहे है।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक ११ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, २१ जनवरी से २७ जनवरी २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११)

२६, २७, २८ फरवरी २००२ को सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के उपलक्ष्य में 'उदयपुर चलो'

अपने-अपने वर्गो के उदयपुर पहुचने की पूर्व सूचना स्वामी तत्वबोध सरस्वती, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) को अवश्य दे।

आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिस पवित्र और ऐतिहासिक स्थल पर बैठकर सत्यार्थ प्रकाश का बहुत बडा अश लिखा वह स्थल था – नवलखा महल उदयपुर जिसे कुछ ही वर्ष पूर्व राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री भैरो सिह शेखावत ने आर्य जनता को समर्पित किया। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस महल को एक स्मारक के रूप मे विकसित करने के लिए श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास का गठन किया। स्वामी तत्वबोध सरस्वती जी इस न्यास के आजीवन अध्यक्ष है तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य इस न्यास के उपाध्यक्ष हैं।

स्वामी तत्वबोध सरस्वती (पूर्व नाम श्री हनुमान प्रसाद चौधरी) ने अपने जीवन की सारी कमाई (लगभग १ करोड रुपये से भी अधिक की राशि) लगाकर इस नवलखा महल को एक विशाल और ऐतिहासिक स्मारक के रूप मे विकसित कर दिया है। जहा प्रतिवर्ष की भाति इस बार भी **२६ २७, और २८ फरवरी, २००२ (मगलवार, बुधवार एव बृहस्पतिवार)** को सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस महोत्सव मे भाग लेकर प्रत्येक आर्य बन्धु को महर्षि दयानन्द सरस्वती के इस भव्य स्मारक के दर्शन करके प्रेरणा के पुज उस कक्ष को निहारने का विशेष लाभ मिलेगा जिस कक्ष मे साढे छ महीने अपने आवास के दौरान महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश की बहुतायत रचना सम्पन्न की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के हाल ही मे सम्पन्न हुए चुनावो मे कै० देवरत्न आर्य के प्रधान तथा उनके साथ अन्य सुशिक्षित कर्मठ एव पवित्र भावनाओ वाले पदाधिकारियो के चुने जाने के बाद आर्यजगत मे एक नई शक्ति के सचार की आशा बधी है। इस सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव मे कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे इस नव गठित कार्यकारिणी एव अन्तरग के सदस्यो को विशेष रूप से आमन्त्रित किया जा रहा है। जहा देश के इन आर्यनेताओ का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाएगा।

महल की भव्य यज्ञशाला तथा **सगीतमय फव्वारा पूरे महल का अलौकिक निर्माण पुस्तकालय** तथा **महर्षि दयानन्द जी के जीवन कार्यों को चित्रो मे प्रदर्शित करती हुई दीर्घा** और **वेदप्रचार वाहन** के द्वारा किस प्रकार स्थानीय क्षेत्रो मे घूम घूमकर व्यापक प्रचार किया जाता है इन सबका दर्शन करके आपके मन और आत्मा मे एक नई स्फूर्ति पैदा होना अत्यन्त स्वाभाविक है।

हिमाचल प्रदेश से आध्यात्मिक सन्त स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती तथा वैदिक विद्वान सन्त महात्मा गोपाल स्वामी जी को दिल्ली से आमन्त्रित किया गया है।

आर्यजन देश के विभिन्न हिस्सो से अधिक से अधिक सख्या मे इस सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव मे भाग लेने के लिए अभी से यात्रा की तैयारिया तथा रेल आरक्षण आदि करवाना प्रारम्भ कर दे।

सभा कार्यालय सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी की एक अत्यावश्यक बैठक मगलवार २२ जनवरी को सभा कार्यालय मे हुई जिसमे सभा के कार्य को गति देने के लिए तथा आर्यसमाजो के पदाधिकारियो से सम्पर्क एव सहयोग बढाने के लिए निर्णय लिया गया कि निम्न दिनो मे **साय ५ ०० से ६ ३० बजे** तक सभा के मन्त्री परिषद् के सदस्य सभा कार्यालय मे उपस्थित रहेगे –

वैद्य इन्द्रदेव	सभा महामन्त्री	**मगलवार, बृहस्पतिवार एव शनिवार**
श्री पतराम त्यागी **श्री रोशन लाल गुप्त**	सभा मन्त्री	**सोमवार एव बुधवार**
श्री नरेन्द्र आर्य **श्रीमती शशि प्रभा आर्य**	सभा मन्त्री	**शुक्रवार एव शनिवार**

इनके निर्धारित दिवसो के अतिरिक्त सभा महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी अन्य दिवसो मे भी आवश्यकतानुसार सभा कार्यालय मे उपलब्ध रहेगे।

आर्यसमाजो के पदाधिकारियो से प्रार्थना है कि वे मन्त्री परिषद् की सेवाओ का लाभ उठाने के लिए उनसे सभा कार्यालय मे सम्पर्क करे।

महर्षि दयानन्दकृत सस्कार विधि को अपूर्ण और अवैदिक बताने वाले तथाकथित वेदालोक समाज को खुली चुनौती

आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के पदाधिकारियो का नाम अनधिकृत रूप से प्रकाशित करते हुए एक मनगढन्त बेबुनियाद झूठा षडयन्त्रकारी और अवैदिक सिद्धान्तो से परिपूर्ण पर्चा छापा गया है **जिसमे कहा गया है कि स्वामी दयानन्दकृत सस्कार विधि सम्पूर्ण और वैदिक नहीं।**

इस सम्बन्ध मे मैंने तत्काल आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के अधिकारियो से सम्पर्क किया। आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के प्रवक्ता एव वैदिक विद्वान श्री चान्दरत्न दम्माणी ने बताया कि यह षडयन्त्रकारी पर्चा महर्षि दयानन्द की मान्यताओ पर हमला है। इससे आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के किसी भी पदाधिकारी का तो क्या किसी सदस्य का भी कोई दूर तक का सम्बन्ध नहीं है।

सार्वदेशिक सभा द्वारा एक पत्र इस तथाकथित वेदालोक समाज को उनके पते जगतपुर पोस्ट गोरागनगर कोलकाता ७०००५६ पर भेजा गया है। जिसमे उन्हे कोलकाता मे शास्त्रार्थ की चुनौती दी गई है।

यह तथाकथित वेदालोक समाज स्वामी दयानन्दकृत सस्कार विधि को चुनौती देना ही चाहता है तो वह खुलकर अपने नाम से इस पर्चे को प्रकाशित करता चोरो की तरह आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के अधिकारियों का नाम छापकर सगठनात्मक अव्यवस्था उत्पन्न करने के प्रयास को किसी भी सूरत मे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य ने भी इस तथाकथित सन्यासी को वैदिक विद्वानो से शास्त्रार्थ की खुली चुनौती दी है जो स्वय को वेदालोक समाज का सस्थापक और चित्र सहित अपना नाम श्री १००८ वेदाश्रयी स्वामी चेतनानन्द महाराज उक्त पर्चे मे प्रकाशित करते हैं। इस तथाकथित सन्यासी का कहना है कि उनके द्वारा तैयार वेदालोक सस्कार दर्पण ही पूर्ण और वैदिक है।

प्रत्येक वैदिक विद्वान आर्य महानुभाव और आर्य सस्थाओ के पदाधिकारी तथा सदस्य इस तथाकथित श्री १००८ के इस षडयन्त्र के विरुद्ध उपरोक्त पते पर विरोध पत्र अवश्य भेजे। ऐसे व्यक्तियो को देश के कोने कोने से चुनौतीपूर्ण पत्र जाने चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जनसामान्य को पाखण्डो से मुक्ति दिलाने के लिए सत्य सनातन वैदिक धर्म का दर्शन प्रस्तुत किया और यह पाखण्डी तथाकथित सन्यासी अपने पाखण्ड की रक्षा करने के लिए स्वामी दयानन्द के विचारो और ग्रन्थो का खण्डन करने के लिए सामने आए है। परन्तु इनकी भीरुवृत्ति और षडयन्त्र इस पर्चे से स्पष्ट होता है जिसमे इन्होंने निवेदको मे आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के प्रतिष्ठित और महर्षि दयानन्द के प्रति समर्पित महानुभावों का नाम प्रकाशित करने का दुस्साहस किया है।

– विमल वधावन
वरिष्ठ उप प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली

आतंकवादी देश में ही हैं, पहले उनका उन्मूलन होना चाहिए

– सीताराम आर्य

विगत १३ दिसम्बर को ससद पर हुए हमले ने पर्दाफाश कर दिया कि चोर हमारे ही घर मे बैठे है। दिल्ली के जाकिर हुसैन कालेज का प्रोफेसर सैय्यद अब्दुल रहमान गिलानी और उसके सभी गिरफ्तार साथी इसी देश के तो है रहने वाले जिन्होने दिल्ली मे ही बैठकर साजिश रची और देश के सर्वोच्च विधान मन्दिर ससद भवन पर निन्दनीय हमला कराया। देश के अन्दर ऐसे अब्दुल रहमानो की अन्तहीन कतार है। दरअसल चोर जब साहूकार बना घर मे ही बैठा हो तो उसे पकडना मुश्किल होता है और प्रजातन्त्र मे पकडकर दण्ड देना ओर भी मुश्किल है।

कश्मीर मे दशको से कत्लेआम और खून खराबा हो रहा है। वहा सरेआम भारतीय झण्डा जलाया जाता है और पाकिस्तानी झण्डा फहराया जाता है। दिल्ली की जामा मस्जिद का इमाम अब्दुल्ला बुखारी भारत सरकार को चुनौती देकर वर्षों से देश विरोधी गतिविधिया चला रहा है और राष्ट्र के विरुद्ध दिन रात जहर उगल रहा है। इस्लाम के नाम पर मदरसो मे राष्ट्र विरोधी तत्व पैदा हो रहे हैं और उन्हे सरकारी खजाने से करोडो रुपये प्रतिवर्ष दिया जा रहा है। मसूद अजहर जैसे हजारो दुर्दान्त आतकवादी मेहमानी करके छोड दिए जाते है। यह है हमारे देश की कानून व्यवस्था और राजनेताओ की बुद्धि का नमूना।

इन देश के दुश्मन आतकवादियो को यदि तत्काल फैसला करके फासी पर लटका दिया जाता तो क्या विमान अपहरण होता ? लालकिला और कश्मीर विधानसभा तथा ससद भवन पर हमले होते ? इस प्रकार के अनेक अनुत्तरित प्रश्न है जिसने भारतीय जनमानस अत्यन्त व्यथित एव उद्वेलित है।

पाकिस्तान आतकवाद और मुस्लिम कट्टरपथी ये सब एक ही चीज के पर्यायवाची नाम हैं। पाकिस्तान किसी धरती का नाम नहीं अपितु उस विकृत मनोदशा का नाम है जिसने नफरत के बीज बोकर जहर फैलाया और देश के टुकडे कराए। वह पाकिस्तान केवल सीमा के उस पार ही नहीं इस पार भी है। पाकिस्तानियो के अधिकाश रिश्तेदार अजीज और दोस्त भारत मे रहते हैं। यही कारण है कि यहा आतकवाद खूब फूला और फला। अगर ऐसा नहीं होता तो पाक का परिन्दा भी हमारी सीमा के अन्दर घुस नहीं पाता। यह तथ्य कोई माने या न माने लेकिन हकीकत यही है।

देश विभाजन के समय ६५ प्रतिशत मुसलमानो ने देश का बटवारा कराकर पाकिस्तान बनाने के पक्ष मे अपने मत दिए थे इसलिए देश के गणमान्य नागरिको स्वातन्त्र्यवीर सावरकर डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी डॉ० भीमराव अम्बेदकर आदि कई महानुभावो ने जोर देकर कहा था कि जब हिन्दू और मुसलमान के नाम पर देश का बटवारा किया गया तो हिन्दू मुस्लिम जनता की पूर्णरूप से अदला बदली कर लेनी चाहिए। क्योकि मुसलमानो के हिस्से की जमीन पाकिस्तान और बगलादेश मे है और हिन्दू का हिस्सा हिन्दुस्थान मे है। अन्यथा बटवारे का फिर अर्थ ही क्या रह जाता है। सरदार वल्लभ भाई पटेल भी यही चाहते थे किन्तु देश के तात्कालिक कर्णधारो ने दुभाग्य से इस महत्वपूर्ण और न्यायोचित प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

विषैले बीजो का फल

न होता बास न बजती बासुरी। जो विषैले बीज बोए गए उसी के फल आज देश के सामने है। पाक परस्त देश द्रोहियो ने देश के अन्दर हर जगह नफरत के बीज बोकर नगर नगर और गाव गाव तक जहर फेला दिया। देश क कान कान म राष्ट्रविरोधी तत्व सक्रिय ह ओर खून खराबा कर रहे है। वोट बैंक और तुष्टिकरण की राजनीति करने वालो ने जब आस्तीन मे ही साप पाल रखे हो तो उन विषधरो के फन को कुचलना मुश्किल ही है। अगर इसी तरह की राजनीति चलती रही और आस्तीनो मे ही साप पाले जाते रहे तो देश को बचाना कठिन होगा। पाकिस्तान हो चाहे कोई और हमे बाहर से किसी का कोई डर नहीं लेकिन खतरा अन्दर से अधिक है। मैं यह नहीं कहता कि सभी मुसलमान पाकपरस्त और राष्ट्रद्रोही हैं। अनेक मुसलमान देशभक्त हुए हैं और आज भी हैं। रहीम रसखान और अशफाक उल्ला जैसे देशभक्तो को कौन भूल सकता है किन्तु इस समय देश की आन्तरिक स्थिति अत्यन्त विस्फोटक एव सवेदनशील है ऐसी स्थिति देश की पहले कभी नहीं रही।

याद रहे लाहौर की वर्ल्ड मुस्लिम कान्फ्रेस मे सभी मुसलमान पाकिस्तान की अगुवाई मे ऐलान कर चुके हैं कि हसके लिया है पाकिस्तान लडकर लेगे हिन्दुस्थान। हमे मुगालते मे नहीं रहना चाहिए वह लडाई अब हमारे दरवाजे तक आ पहुची है। मजहब के उन्मादी मुस्लिम कट्टरपथी सारी दुनिया को दारूलहरब से दारुल इस्लाम मे बदलना चाहते हैं। उनका ख्वाब सारे ससार मे इस्लामिक झण्डा फहराने का है। मुस्लिम आतकवादियो की लडाई केवल कश्मीर तक ही सीमित नहीं है पूरा भारत उनके निशाने पर है। अगर हम कश्मीर को नहीं बचा सके तो भारत को कभी नहीं बचा सकेगे। कश्मीर लेकर भी क्या पाकिस्तान शान्ति से बैठेगा ? यह तय है दुनिया के नक्शे पर जब तक पाकिस्तान का नाम रहेगा तब तक भारत चैन से नहीं रह सकता।

चिन्तनशील विद्वानो का मानना है कि पाकिस्तान से युद्ध टाला तो जा सकता है परन्तु रोका नहीं जा सकता क्योकि लातो के भूत बातो से कहा मानते हैं ? श्रीराम ने रावण को बहुतेरा समझाया और श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को बहुत मनाया परन्तु अन्तत युद्ध होकर ही रहे। पाकिस्तान को भी जरूरत से कुछ ज्यादा ही समझाया जा चुका है लेकिन क्या वह मानने वाला है। रावण की जब मौत आई तो श्रीराम से आ टकराया और मा सीता का अपहरण कर ले गया। कस की मौत आई तो श्रीकृष्ण के पीछे ही पड गया। इसी तरह तालिबान की मौत आई तो अमेरिका से जा टकराया। अगर पाकिसतान की भी यही नियति है तो उसे कौन रोक सकता है।

जब युद्ध के बादल सिर पर आकर मडराने लगे और दुश्मन हमारे घर मे ही आकर मरने लगे तो फिर सिवाय युद्ध के चारा ही क्या रह जाता है। युद्ध की रणभेरी तो बजानी ही होगी । माना कि युद्ध जन धन के लिए विनाशकारी होते हैं और यह भी माना कि शत्रु के पास अणु बम हैं लेकिन अणु बम का डर सिर्फ हमे है पाकिस्तान को नहीं ? इतना तो सोचना ही चाहिए कि भारत तो बहुत कुछ बचेगा लेकिन पाकिस्तान का तो दुनिया से नामोनिशा ही मिट जाएगा।

शठे शाठयं समाचरेत्

अत अब समय आ गया है **निश्चरहीन करौंमहि भुज उठाय प्रण कीन्ह।** हमारे भारतीय शास्त्रो मे स्पष्ट निर्देश है कि एक हाथ मे शास्त्र हो तो दूसरे मे शस्त्र भी होना अनिवार्य है। यदि शास्त्र से काम न चले तो शस्त्र का उपयोग करना आवश्यक है। अभी तक हमने शास्त्र का ही उपयोग किया परन्तु पानी जब सिर के ऊपर से बहने लगा हो तब शस्त्र उठाने के अतिरिक्त दूसरा कोई विकल्प नहीं। शास्त्रो मे कहा गया है **शठे शाठय समाचरेत्** – अर्थात् शठ के साथ शठता का व्यवहार करना लाजमी हो जाता है।

– **दयानन्दपुर, विदिशा (म०प्र०)**

बोध कथा

सच्ची गुरु-दक्षिणा

शिवरात्रि के जागरण के लिए ११ वर्षीय बालक मूलशकर अपने पिता के साथ एक मन्दिर गए। जहा अन्य लोग निद्रावश सो गए तब भक्त मूलशकर जागता रहा उसी समय एक चूहा आया और शिवजी की मूर्ति पर घूमने लगा। यह देखकर मूलशकर के मन मे शका हुई कि यह मूर्ति वास्तविक शिव परमेश्वर नहीं है वह ईश्वर का सच्चा स्वरूप जानने के लिए वर्षों तक पर्वतो नदियो तीर्थो मे भ्रमण करके मथुरा मे दण्डी स्वामी विरजानन्द के पास गए। मथुरा मे गुरुजी के पास प्राचीन शास्त्रो का गूढ रहस्य समझा वैदिक ज्ञान के माध्यम से उनकी अन्त ज्योति प्रस्फुटित हुई।

विदाई के समय गुरु के पास वह आध सेर लौंग लेकर गए। गुरुजी को लौंग बहुत प्रिय थे और श्रद्धा से निवेदन किया– **"गुरुवर, मैं मिथ्याज्ञान के अन्धकार मे था, आपने सत्यज्ञान देकर मेरा अन्धकार दूर किया। मैं आपका ऋण कभी नहीं चुका सकता, मेरी यह तुच्छ भेंट (आध सेर लौंग) स्वीकार करें और मुझे आशीर्वाद दे जिससे अपना जीवन सफल बनाऊ।"**

त्यागमूर्ति गुरु विरजानन्द ने आदेश दिया– **'तुम्हारे जैसे विनीत शिष्य की प्राप्ति से मैं गौरव अनुभव करता हू। सच्ची ज्ञान पिपासा पूर्ण करने के लिए तुमने पैतृक वैभव त्यागा, ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन बिताया, हिमाच्छादित पर्वतो, हिंसक जन्तुओ से भरे वनो मे जीवन जीया। आज तुम्हारा उद्देश्य पूर्ण हुआ, तुम्हारी तपस्या पूर्ण हुई, तुमसे मुझे दक्षिणा मे लौंग के अतिरिक्त कुछ और चाहिए।'** शिष्य ने नतमस्तक होकर कहा – **"गुरुवर, मेरे पास जो कुछ है, वह सब आपका है। यह शरीर समर्पित है, जो कार्य आप इससे लेना चाहे लीजिए।'**

गुरुजी बोले – **"दयानन्द, मै तुमसे एक ही दक्षिणा चाहता हू। ऋषिकृत ग्रन्थो के आधार पर जो सत्यज्ञान दिया है, भ्रान्तिपूर्ण ग्रन्थो का अध्ययन कर अन्धकार मे भटकते प्राणियों का अधकार दूर करो। सत्यज्ञान देकर ज्ञान पिपासुओ का कल्याण करो, यही मेरा आदेश है, यही मेरी गुरु दक्षिणा है।"**

गुरु के समक्ष सकल्पकर वह गुरु की सच्ची गुरु दक्षिणा देने के लिए भारत राष्ट्र के सच्चे अभ्युदय के लिए जीवन भर समर्पित रहे।

– **नरेन्द्र**

जागरण कल्याण के लिए राष्ट्र बढाओ-धन बढाओ

भूत्यै जागरणम्। *यजु० ३०/१७*
जागना कल्याण के लिए है।

राष्ट्र रोह द्रविण रोह। *अथर्व० १३/१/३*
राष्ट्र बढाओ धन बढाओ।

वय तुभ्य बलिहृता स्याम। *अथर्व० १२/१/६२*
हम मातृभूमि के लिए उत्सर्ग दे।

सेवा धर्म परम गहनो योगिनामप्यगम्य।
सेवा धर्म गहन है योगियो के लिए भी कठिन है।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

सभी राष्ट्रीय क्षेत्रों में स्वाबलम्बन : अभावों से मुक्ति

राष्ट्रीय स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे कुछ आत्मनिरीक्षण करने राष्ट्र की प्रगति और उसके अवरोधो का मूल्याकन किया जा सकता है। विदेशी शासक भारत छोडते समय उसके दोना पार्श्व भूखण्डो एक पृथक हुए राष्ट्र के रूप मे काट गए थे। १९७१ मे यह पृथक राष्ट्र दो अलग देशो मे बट गया। भारत द्वारा मैत्री एव सामान्य सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयत्नो के बावजूद उसका विरोध प्रचलित रहा। १९७१ के युद्ध मे निर्णायक विजय प्राप्त कर ७१ हजार सैनिको को बन्दी बनाने के बावजूद हमारे राष्ट्रनेताओ ने उससे सौमनस्य रखा। उसी समय बगलादेश का पृथक निमाण हुआ था। यदि उस समय प्रयत्न किया जाता तो कश्मीर समस्या के स्थाई समाधान के साथ नवोदित बगलादेश से व्यापार वैदेशिक सम्बन्धो एव आवागमन सम्बन्धी एकता के सूत्र प्रतिष्ठित किए जा सकते थे। अतीत की वह बीती घडी तो वापस नही आ सकती परन्तु पिछली आधी शती से अधिक समय के सिहावलोकन से राष्ट्र की व्यवस्थित प्रगति के लिए उसे शिक्षा उद्योग व्यापार परिवहन विज्ञान एव सभी आधुनिक राष्ट्रीय क्षेत्रो मे पूर्ण स्वाबलम्बन का लक्ष्य प्राप्त करने के साथ सभी विकासशील विद्याओ मे अपनी स्थिति प्राप्त करे वहा हमे कोटि कोटि प्रजाजनो की स्थिति सवारनी चाहिए भारत के किसी भी प्रजाजन को किसी भी प्रकार के अभाव का सामना न करना पडे। यह लक्ष्य छोटा नहीं है इसकी पूर्ति के लिए भारतीय गणतन्त्र के सूत्र सचालको को एक व्यवस्थित राष्ट्रनीति निर्धारित कर उसे व्यावहारिक स्वरूप देना होगा वहा इन लक्ष्यो को प्राप्त करने के लिए सभी सवेदनशील राष्ट्रीय दलो और भारत के सभी विचारशील राष्ट्रजनो को अपना वैचारिक और व्यावहारिक समर्थन देना चाहिए। इन क्षणो मे हमे १३ दिसम्बर २००१ के दिन विदेशी आतकवादियो द्वारा ससद पर किए आक्रमण की घटना भी स्मरण करनी चाहिए। हम भूल नहीं सकते कि ११ सितम्बर २००१ के दिन विदेशी आतकवादियो ने विश्व के सबसे धनी देश सयुक्त राज्य अमेरिका क न्यूयार्क स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर और वाशिगटन मे सैनिक मुख्यालय पैटागन पर आक्रमण किया था तो अमेरिका ने तुरन्त इन आतकियो के अफगानिस्तान स्थित तालिबान के अड्डो पर हमलाकर उनका सहार कर दिया था। भारतीय ससद भवन पर हुए विदेशी आतकवादियो के हमले से अब भारतीय राष्ट्र सभी प्रमुख राजनैतिक दलो और राष्ट्र के प्रबुद्ध नागरिको को अधिक जागरुक और दृढप्रतिज्ञ होना पडेगा। भारतराष्ट्र को जहा सभी क्षेत्रो मे स्वाबलम्बलन और प्रत्येक क्षेत्र म प्रगतिकर जनता को सभी अभावो कष्टो से मुक्ति दिलानी चाहिए वहा राष्ट्र की गरिमा ओर उसकी सुरक्षा पर किसी भी सम्भावित आक्रमण को होने ही नही दे। यदि ऐसी परीक्षा की घडी आए तो ऐसे आतकवादी तत्वो को तुरन्तु उपयुक्त जवाब दिया जाए।

राजनीतिक स्वाधीनता के इस ५५वे वर्ष मे इस चिन्ता की ओर अधिक जागरुक होकर निरन्तर सावधान और सयुक्त होकर सक्रिय होने के क्षण आ गए है। यह भी चिन्ता और कठिन परीक्षा की स्थिति है कि हमारा पश्चिमी पडोसी जा स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व इसी राष्ट्र का भूभाग था अब स्थाई विरोध पर उतर आया है। सीधे सघर्षो म विफलता के बाद उसने भारतीय ससद पर आतकी हमले जैसी घटना को सहारा दिया। यह भारत राष्ट्र और उसकी कोटि कोटि जनता के सम्मुख कठिन परीक्षा की घडी आ गई है। हमारे प्रमुख राष्ट्रीयदल और सामान्य भारतीय जनता नही चाहती कि इन दोनो पडोसी राष्ट्रो मे सीधा या अप्रत्यक्ष सघर्ष हो परन्तु यदि राष्ट्र के सूत्र सचालको और कोटि कोटि जनता की सदभावना के बावजूद हमारा पडोसी यदि राष्ट्र के विरुद्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सघर्ष पर उतर आए तो वैसी गम्भीर स्थिति मे शासन राष्ट्रीय दलो और जनता को प्रत्येक स्थिति से जूझने के लिए सन्नद्द होना चाहिए। सघर्ष और युद्ध की स्थिति कोई नहीं चाहता ऐसे मे राष्ट्र और दलो एव जनता को भी निरन्तर सजग और सन्नद्ध होकर सघर्ष और विपत्ति से बचना चाहिए परन्तु यदि जनता और देश की सद्भावना के बावजूद राष्ट्र को काई चुनौती मिले तो उसका समुचित उत्तर देने के लिए राष्ट्र ओर जनता को निरन्तर सजग और सन्नद्ध होकर जूझने के लिए अपनी स्थाई स्थिति सवारनी होगी। इसी दृष्टि से राष्ट्र के सभी क्षेत्रो मे पूर्ण स्वाबलम्बन प्राप्त कर जीवन की सभी विधाओ मे प्रगति और सभी अभावो से मुक्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहना होगा। यह ठीक है कि हमारा राष्ट्र प्रमुख राष्ट्रीय दल और सामान्य जनता कोई नहीं चाहता कि हमारा पडोसी से सघर्ष हो परन्तु यदि राष्ट्र और जनता की सदिच्छाओ के बावजूद वह प्रत्यक्ष या आतकी हमलो से हमारे आस्तित्व को चुनौती देने पर तुला हो तो उसका यथायोग्य उत्तर देना राष्ट्र और जनता का प्रमुख दायित्व है। इस कठिन दायित्व को निभाने के लिए राष्ट्र सभी रष्ट्रीय दलो और जनता का लम्बे समय तक सजग और सन्नद्ध रहना होगा।

राष्ट्र और जनता की इस स्थाइ ओर तात्कालिक सतर्कता के लिए राष्ट्र और जनता को कठिन परिस्थितियो से जूझते हुए वर्तमान कठिन परिस्थिति म और दीर्घकालीन भविष्य को व्यवस्थित करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। इसी दृष्टि से आवश्यक है कि हमारा राष्ट्र जहा शिक्षा उद्योग व्यापार परिवहन विज्ञान कषि सभी प्रचलित और नवीन राष्ट्रीय क्षेत्रो मे स्वाबलम्बी और समुन्नत हो वहा उस सभी विकासशील विद्याओ के प्रति सजग होकर उन्हे अपनाना हागा। जिसस हमारे राष्ट्रजना का वर्तमान और भविष्य निरन्तर प्रगतिपथ पर रहे। इसी के साथ कोटि कोटि जनता को और अभावग्रस्त जनता को किसी प्रकार के सघष का समाना न करना पडे यह देखना शासन और जनता की जिम्मेदारी है। ये तात्कालिक और स्थाइ कार्य सरल नही है। राष्ट्र को कभी भी सीधे आक्रमण या आतकवादिया द्वारा किए गए आकस्मिक आक्रमण से जूझना पड सकता है। यह कठिन कार्य केवल शासन और शासकीय कमचारिया की सतकता स ही पूर्ण हो सकेगा इसके लिए स्थाई और तात्कालिक समाधान क लिए वतमान मे और दीर्घकालीन समय के लिए जनता दलो और शासन सबको अपना गम्भीर उत्तरदायित्व निभाना होगा। आज आतकवाद सारे विश्व क लिए समस्या बन गया है। खेद है कि हमारा पडोसी पाकिस्तान भी इसे खत्म करने के स्थान पर निरन्तर भडकाता रहा है। ससद भवन पर हुए आतकी हमले म जिस प्रकार ५ पाक आतकवादी उसमे मारे गए उससे इस समस्या के अस्थाई और स्थाई सकट की विकरालता की अनुभूति होती है। भारत राष्ट्र और उसकी शान्तिप्रिय जनता सभी पडोसियो से सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध की इच्छुक है और उसके लिए प्रयत्नशील भी है। परन्तु हमारी इच्छाओ के विरुद्ध यदि राष्ट्र के विरुद्ध सीधा या अप्रत्यक्ष हमला किया जाए तो उसके स्थाई समाधान के लिए राष्ट्र राजनैतिक दलो और जनता को अपना नैतिक समर्थन देना चाहिए वहा आतकवाद से सघर्ष कर उसके उन्मूलन के लिए समस्त जनता जनार्दन को अपना दायित्व समझाना चाहिए। यदि छोटा बडा प्रत्येक राष्ट्रविरोधी आतकवाद गतिविधि देखे तो समय पर पास पडोस सब को सर्तक सन्नद्ध कर दे तो इस प्रकार की राष्ट्र विरोधी आतकवादी गतिविधियो के उन्मूलन का कठिन कार्य स्वाभाविक ढग से किया जा सकता है। इस आतकवाद मे उन्मूलन के राष्ट्र जनता जनार्दन दलो और प्रत्येक व्यक्ति का भाग है। आशा है कि स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए शासन जनता सभी दल और प्रत्येक छोटा बडा राष्ट्रजन अपना दायित्व पूरी तरह निभाएगा। गणतन्त्र दिवस की पूर्व सध्या मे इस प्रकार का दायित्व समझकर उसे पूर्ण करने से ही जन जन का कल्याण सम्भव है।

चिट्ठी-पत्री

इस्लामी उग्रवाद

इस्लामी उग्रवाद कोई नई बात नहीं क्योकि इस्लामी मान्यता के अनुसार जो इस्लाम नहीं स्वीकारते वे काफिर हैं तथा उन्हे नरक मे धकेल देना चाहिए। भारत की धर्मनिपेक्षता के फलस्वरूप जामा मस्जिद का इमाम इस्लामी उग्रवादी जेहाद का पक्षधर रहा है तो अयोध्या के राम मन्दिर के गर्भगृह मे पूजा करना साम्प्रदायिकता। चिन्ता की बात है कि विपक्षी दल इमाम के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं बोलते परन्तु विश्व हिन्दू परिषद की पूजा अर्चना को साम्प्रदायिकता कहकर विरोध करते हैं। हमारी इस ना समझी के कारण देश मे विदेशी हकूमत हो गई।

दुर्भाग्य है कि हमारे वर्तमान राजनेता मुस्लिम वोटबैंक के लालच मे देश को मुस्लिम उग्रवाद के चुगल मे डूबी सस्कृति मे सभी कुछ भगवान और भाग्य के भरोसे छोडकर अपनी सुरक्षा को भूल जाते हैं। यदि यही चलता रहा तो यह देश शायद ही धर्मनिरपेक्ष रह सके। मुस्लिम तुष्टिकरण के हेतु सविधान की भी अनदेखी की जा रही है क्योकि मुस्लिम परिवार नियोजन पर अमल नहीं करते यद्यपि यह समाज कल्याण की नीति के विरुद्ध है।

यदि इस देश में तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी नेताओ ने सत्ता स्वार्थ का मोह नहीं छोडा तो आने वाले समय मे मुस्लिम उग्रवाद का मुख्य शिकार होगा।

– के० के० गुप्ता जयपुर (राजस्थान)

सामवेद से - परमेश्वरार्चन सप्तकम् (१) (पूर्वार्द्ध)

परमेश्वर की सच्ची अर्चना अत्यन्त लाभप्रद तथा परमावश्क है

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) साधक जनों ! अधिकाधिक समय परमेश्वर को स्मरण किया करो

बृहद् वयो हिभानवेऽर्चा देवायाग्नये।
य मित्र न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुर ।

साम० ८८

पुरुरात्रेय । अग्नि । अनुष्टुप्।

वेद मे प्रत्यक्ष रूप से अर्थात् मध्यम् पुरुष क्रिया द्वारा 'ऐसा कर' कहकर आदेश या उपदेश बहुत कम है। जो थोडे से उपदेश दिए गए हैं उनमे स्तुति या गायन की बहुतायत है। वेद सामान्यत अग्नि इन्द्र इत्यादि देवो के गुण-कर्म-स्वभाव का वर्णन करके उनका पालन अनुकरण करने का सकेत करता है कि वेद का स्वाध्याय करने वाले अपने आराध्य देव के समान बनकर उसके सखा बनने को प्रयत्न करे। यहा प्रत्यक्ष आदेशो मे से कुछ की चर्चा की गई है।

अर्थ – (मर्तास) विशिष्ट कर्म करने की कामना करने वाले मनुष्य (यम्) जिस मार्गदर्शक आदिपुरुष के गुण-कर्म-स्वभाव को (प्रशस्तये) प्रशसायुक्त प्रसिद्धि के लिए (मित्र न) सखा की तरह (पुर दधिरे) अपने सम्मुख रखते हैं वैसे ही (आत्रेय पुरु) काम क्रोध लोभ को तरने वाले गुरु अत्रि का शिष्य बनकर अपना पूरण करने वाला साधक ! सूर्य को अपने सम्मुख करके (भान वे देवाय अग्नेय) आदित्यवत देदीप्यमान दिव्यदाता सबके मार्गदर्शक अग्नि प्रभु के प्रति (बृहद् वय) अपनी आयु का अधिक भाग (अर्च) अर्चना स्तुति व गायन रूप मे समर्पित किया कर।

निष्कर्ष – प्रशस्ति कामी पुरुष अपना पर्याप्त समय मार्गदर्शक गुरुओ की स्तुति व उपासना में व्यतीत करे।

(२) इन्द्र की सच्ची अर्चना करनी है तो सत्य के प्रेरक व रक्षक बनो

अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे।
सूनु सत्यस्य सत्पतिम्।। *साम०* १६८

आगिरस प्रियमेध । इन्द्र । गायत्री।

अर्थ – हे सर्वांग समर्थ और मेधावी बनने के इच्छुक साधक ! (यथाविदे) यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के लिए (सत्यस्य सूनुम् सत्पतिम्) सत्य के प्रेरक तथा रक्षक (गोपतिम्) समस्त भूमण्डल और ज्ञान के स्वामी (इन्द्रम्) सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञ परमेश्वर की (अभि) सदा और सम्पूर्ण भाव से (गिरा प्र अर्च) वाणी से प्रकृष्ट स्तुति तथा तदनुरूप बनने का सकल्प करो। सूनुम् – षू प्रेरणे।

निष्कर्ष – केवल वाणी से स्तुति का विशेष लाभ नहीं जब तक प्रकृष्ट अर्चना अर्थात् तदनुरूप बनने का सकल्प और प्रयत्न न किया जाए।

(३) इन्द्र का स्व-स्वीकृत रूप जीवन में अपनाकर उसकी अर्चना करो

अभि प्र व सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरुवसु सहस्रेणेव शिक्षति।।

साम० २३५

बालखिल्याः, अन्यत्र सर्वत्र प्रस्कण्व । इन्द्रः। बृहति।

अर्थ – (य) जो सर्वज्ञ और सर्वव्यापक परमेश्वर (मघवा) अधशून्य पवित्र ज्ञान का स्वामी और (पुरुवसु) विविध धनो का अधिपति होने के कारण (जरितृभ्य) अपने स्तोता साधकों को (सहस्रेणेव शिक्षति) हजारों प्रकार से शिक्षित करते हैं तथा हजारों प्रकार के पदार्थ भोग के लिए प्रदान करते है (व सुराधसम्) तुम्हारी आराधना को सुगमता से सिद्ध (पूर्ण) करने वाले (इन्द्रम्) उस परमेश्वर की (यथा विदे) यथार्थ ज्ञान तथा धन की प्राप्ति के लिए बालभाव से ज्ञानकणो को बीनकर प्रकृष्ट मेधावी बनने के इच्छुक साधक ! (अभि) सदा (प्र अर्च) प्रकृष्ट आराधना-स्तुति किया करो।

निष्कर्ष – बालाभाव (सरलता) से की जाने वाली स्तुति को परमेश्वर जल्दी सुनता है और सहर्ष पूरी करता है।

अर्थ पोषण – बालरिवल्या – खिल उञ्छे अवशेषे च बाल्य काल मे बाल भाव से ज्ञान कणो को बीनने वाले भविष्य मे प्रस्कणव बनने के लिए दीर्घ काल तक अवशिष्ट (जीवित) रहते है। कण्व मेघावी नि०३-१५/ शिक्षाति दानकर्मा ३-२०

(४) दृष्ट अदृष्ट वृत्र विनाशक परमेश्वर की स्तुति आवश्यक

प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत।
वृत्र हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा।।

साम० २५७

नृमेध पुरुमेधौ। इन्द्र । बृहती।

अर्थ – हे (मरुत) मितभाषी तथा प्राणसाधक उपासको (ब बृहते इन्द्राय) अपने महान् परमेश्वर के प्रति (ब्रह्म प्र अर्चत) वेद मन्त्रो व साम गान के द्वारा प्रकृष्ट स्तुति किया करो अर्थात् स्तुति के अनुरूप बनने का सकल्प तथा प्रयत्न भी किया करो क्योंकि वह (शतक्रतु वृत्रहा) नाना सकल्पों को कर्म मे परिवर्तित करने वाला तथा दुष्ट जनों और दुष्टभावनाओं को नष्ट करने वाला (शतपर्वणा वज्रेण) नाना प्रकार के आयुधों द्वारा दुष्टजनो को और नाना प्रकार के मन्त्र रूप वज्र द्वारा दुष्टभावनाओ को (हनति) नष्ट कर देता है या दूर कर देता है।

अर्थपोषण – हनति – हन हिंसागत्यो नष्ट करना तथा दूर करना।

व्रजेण – व्रजम् – आयुधम्। नामानुक्र० वजगतौ गतेस्त्रयोऽर्था ज्ञान गमन प्राप्तिश्च।

मरुत – मितराविण निरु० ११/२/१३

मरुत – मर्ता – मनुष्या । मरुत प्राणा ।

निष्कर्ष – परमेश्वर की अर्चना सदा करनी चाहिए। वह ब्रह्मणो की वाणी द्वारा दुष्ट भावनाओ को क्षत्रियों के आयुधो द्वारा दुष्टजनों को नष्ट कर देता है।

(५) शरीर के शोधन की तरह परमेश्वर का अर्चन भी नित्य करें

अर्चता प्रार्चता नर प्रियमेधासो अर्चत।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद् धृष्ण्वर्चत।।

साम० ३६२

प्रिय मेघ । इन्द्र । अनुष्टुप्।

अर्थ – हे (नर प्रिय मेधास) उपासना यज्ञ के प्रेमी जनो ! (अर्चता) स्तुति किया करो (प्र अर्चत) केवल स्तुति नहीं प्रकृष्ट स्तुति अर्थात तदनुरूप बनने का सकल्प तथा प्रयत्न भी करो। इतना ही पर्याप्त नहीं (उत पुत्रका अर्चन्तु) इसके साथ तुम्हारे पुत्र-पुत्रिया भी परमेश्वर की उपासना करके वैसा बनने का प्रयत्न करें। (पुर इत् अर्चत) जैसे तुम अपने शरीर की देखभाल करते हो – उसके साथ यथायोग्य व्यवहार करते हो वैसे ही (धृष्णु अर्चत) सब दुर्भावना रुपी अन्त शत्रुओं का धर्षण करने वाले परमेश्वर का भी अर्चन=यथायोग्य व्यवहार किया करो। अर्थात् न तो अश्रद्धा के कारण नास्तिक बनो और न ही अन्धश्रद्धा के कारण मूर्तिपूजक अथवा औलिया पीर की मनौतिया मानने वाले बनो।

अर्थपोषण – (१) इत् का अर्थ इव के समान करने का कारण यह है कि यह मन्त्र ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में भी आया है वहा इत् के स्थान मे इववाची न है। अर्चत का अर्थ यथायोग्य व्यवहार करने का कारण यह है कि मन्त्र मे पुर=शरीर की अर्चना का आदेश है जो केवल वाणी द्वारा अथवा धूप दीप नैवेद्य को दिखाकर नहीं की जा सकती।

निष्कर्ष – केवल स्वय प्रभु के उपासक बनना पर्याप्त नहीं अपने पुत्र-पौत्र आदि सन्तान को भी पभूपासक बनाना अभीष्ट है।

(अपूर्ण)

– श्याम सुन्दर राधेश्याम, ५२२, कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

ऐसा हो गणतंत्र हमारा

– राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

जनहित के प्रति रहे समर्पित,
शासन तथा प्रशासन सारा।
खुशियों से हो भरा राष्ट्र यह,
गुंजित हो 'जय हिन्द' सुनारा।
बढ़े सुपथ पर, मिल कर सारे
राष्ट्र बने प्राणो से प्यारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा।।

देश भक्ति की धार सुपावन,
जन जन में हो पुन प्रवाहित।
युवक हमारे निकलें निर्भय,
प्राण हथेली पर ले, परहित।
आतको के, उग्रवाद के
तभी सारे कसे किनारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा।।

भ्रष्टाचार रहित हो शासन,
कर्मी सारे बनें हितैषी।
जगे हमारे अन्तर्मन में,
निश्छलता से भाव स्वदेशी।
कभी न मानव बने यहा का
मानवता का ही हत्यारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा।।

समता समरसता समृद्धि का,
हो कण कण में नव सचारण।
सभी समस्याओं का हो फिर,
आज राष्ट्र की शीघ्र निवारण।
निर्बलतम जो भारत जन हैं -
उनको भी अब मिले सहारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा।।

भीष्म भीम व पार्थ सदृश हों,
वीर जयी सेनानी सारे।
अपराजित हो सैन्य वाहिनी,
विश्व विजय के हित हुकारे।
वसुन्धरा को मार्ग बताए-
जय ध्वज वाहक भारत न्यारा।
ऐसा हो गणतन्त्र हमारा।।

– मुसाफिरखाना सुल्तानपुर (पजाब)

जन्म दिवस २८ जनवरी पर विशेष

देशव्यापी क्रान्ति के अभिलाषी : लाला लाजपत राय

– स्वर्गीय ब्रह्मदत्त स्नातक

"मैं एक देशव्यापी क्रान्ति देखने का अभिलाषी हू। ऐसी क्रान्ति जो राष्ट्रजीवन के प्रवाह को उसकी नीति को देश के इतिहास को पलटकर देश को बन्धनमुक्त कर दे जहा से वह शताब्दियो के पश्चात् पुन मानव जाति को जीवन ज्योति से आलोकित कर सके।"

इन शब्दो मे वर्षों पूर्व लाला लाजपतराय ने देश की जनता का पुनर्निर्माण के लिए आह्वान किया था और भावी भारत के स्वरूप की अपनी कामना और कल्पना जनता जनार्दन के सम्मुख प्रस्तुत की थी। इसी ध्येय के लिए वे आजीवन कार्यरत और सघर्षरत रहे।



महर्षि दयानन्द गौसवर्धन केन्द्र गाजीपुर में भूसागृह के निर्माणार्थ दिल्ली सभा की उप प्रधाना माता ईश्वरी देवी धवन ने यज्ञ सम्पन्न करने के उपरान्त ३० ०००/ रुपये की राशि सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य को प्रदान की।

(१) यज्ञ में सभा प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा भी शामिल हुए। (२) सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को दान राशि भेट करते हुए माता ईश्वरी देवी धवन साथ मे है श्रीमती सुशीला गम्भीर दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा गुरुकुल कागडी के कुलपति आचार्य प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री कुल सचिव डॉ० महावीर प्रो० श्रवण कुमार श्री सुबोध स्वामी केवलानन्द सरस्वती।

१३२ साल पहले जन्मे लाला लाजपत राय की प्रासगिकता आज के युग मे कितनी है इसका लेखा जोखा राष्ट्र व समाज की वर्तमान समस्याओ के तलस्पर्शी विवेचन के क्षणो मे उपयोगी हैं। आज यहा एक ओर राजनैतिक दावानल और देश के अनेक भागो मे हिसा व आतकवाद का ताण्डव नृत्य चल रहा है तथा साम्प्रदायिक व विभाजन शक्तिया विदेशी तत्वो से शह पाकर सम्पूर्ण विश्व को विनाश की ओर ले जा रही है वहा देश के दूसरी ओर विचारक लोग किकर्त्तव्यविमूढ होकर बैठ गए हैं। और दलगत राजनीति व्यक्तियो पर केन्द्रित हो स्वार्थ की धुरी पर घूम रही है। यदि शहीदो की चिताओ से और शहीद जन्म लेते हैं तो भगतसिह राजगुरु सुखदेव और यतीन्द्रनाथ दास की शहादत उसका उदाहरण मौजूद हैं।

अपने जीवन मे लाला लाजपत राय पजाब केसरी कहलाए परन्तु वस्तुत यह उनके जीवन का एकागी चित्रण है। वे समग्र राष्ट्र के आदर्श प्रेरणापुज न केवल जीवनकाल मे अपितु आज के काल क्षणो मे भी उनका जीवन युवाओ और कार्यकर्ताओ के लिए प्रकाश स्तम्भ का काम दे रहा है। लाला लाजपतराय मे जनमानस मे पैठने और उसको आकर्षित करने की गजब की चुम्बकीय शक्ति थी। वे एक सामान्य घर मे पैदा हुए यद्यपि पजाब ने राष्ट्र को उनके रूप मे एक ऐसा वीर पुरुष दिया जिसने आने वाली पीढी को एक अमूल्य सन्देश और प्रेरणा दी। आजादी मिलने से पूर्व सकट के क्षणो मे सदैव राष्ट्र ने उनकी ओर नेतृत्व के लिए निहारा। वे गरम दल नरम दल तथा आम आदमी सभी के श्रद्धास्पद रहे। सच पूछे तो पजाब के अखिल भारतीय स्तर का कोई दूसरा नेता उनके बाद हुआ ही नहीं। राष्ट्रीय महासभा ने दो बार उन क्षणो मे लालाजी को अध्यक्ष बनाया जबकि राजनैतिक चेतना देश मे धूमिल हो चुकी थी। और दिशा शून्यता चारो ओर व्याप्त थी। वे एक उत्कृष्ट समाज सेवक राष्ट्रभक्त समाज कल्याण कार्य के शिल्पी होने के अलावा चोटी के पत्रकार सम्पादक एव धुरन्धर वक्ता थे।

कार्यकर्ताओ के जनक

अपने त्यागपूर्ण एव प्रेरक जीवन के द्वारा उन्होने स्व० लाल बहादुर शास्त्री स्व० बलवन्त मेहता (गुजरात) स्व० राधानाथ रथ व श्री विश्वनाथ दास (उडिसा) स्व० पुरुषोत्तम दास टडन को कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर कर देश कार्य मे लगाया।

अपनी योग्यता लेखन शक्ति और वक्तृत्व के द्वारा लाला जी ने जहा राजनीति में उच्च प्रचारात्मक कार्य किया वहा भारतीय सस्कृति एव वैदिक आध्यात्मवाद का सन्देश सुदूर अमेरिका जैसे स्थानो पर पहुचा कर सच्चे अर्थों मे अपने गुरु का अनुयायी बनकर ऋषि तर्पण किया। 'फादर इण्डिया' के द्वारा जहा उन्होने मिस मेयो की "मदर इण्डिया" के भारत विरोध का पर्दाफाश किया वहा श्रीकृष्ण चरित्र जैसी पुस्तके लिखकर वेदो का सन्देश सर्वसाधारण तक पहुचाया। राजनीति मे उनकी तुलना इग्लैंड के प्रधानमन्त्री प्रिट से भी अधिक थी उन्हे कुशल वक्ता तथा पार्लिआमेण्टेरियन होने का गौरव प्राप्त था।

डी०ए०वी० सस्थापकों मे

पजाब मे जब पहले डी०ए०वी० कालेज की स्थापना हुई तो उसके प्रमुख सस्थापको और सचालको मे लालाजी थे। सस्था के जन्म के साथ उसके नाम पर मतभेद शुरु हो गए थे।

एक वर्ग का कहना था कि आर्य समाज के विस्तार के उद्देश्य से स्थापित इस सस्था में दयानन्द के नाम के साथ वैदिक शब्द न जोडकर एग्लो वैदिक विशेषण देने से वेद अथवा सस्कृत को पीछे धकेल दिया गया है। ऐसे लोगो की आपत्तियो को बढता देखकर बाद मे मिडिल कक्षा तथा सस्कृत व्याकरण की अष्टाध्यायी अनिवार्य कर दी गई। इस विवाद मे लालाजी ने सस्कृत की जोरदार पैरवी की थी। दयानन्द एग्लो वैदिक कालेज मे तालीम सस्कत पर एक मुख्तसिर नजर नामक एक उर्दू के ट्रैक्ट मे लाला जी ने तब लिखा था –

उहान (स्वामी दयानन्द ने) सब कुछ महज सस्कृत के तुफेल (कृपा) से हासिल किया था। उनकी फाजिलाना (विद्वतापूर्ण) तहरीरो और तकरीको (लेख और भाषणो) से जाहिर हो चुका था कि सस्कृत के जाखीरों (खजाने) मे किसी किस्म की विद्या की कमी नहीं है फिर बावजूद इसके इस वाकफियत के उसकी यादगार मे एग्लो वैदिक कालेज के नाम से क्यो नामजद किया गया ? इसकी वाजूहात साफ थी। अब्बल यह कि स्वामी जी की मशा को उन लोगो ने पहचाना था जिनकी आखे अग्रेजी तालीम की रोशनी ने खोल दी थी। सस्कृत के बहुत से फाजिल मुल्क मे मौजूद थे मगर बहुतो ने स्वामी जी के फतवे की कदर नहीं की और न कोई उनका मातकिद (विश्वासी) हुआ बल्कि उन लोगो के हाक्र मे उनको ये दिक्कते और मखालिफत उठानी पडी जो हिन्दुस्तान की मजहबी तावारीख (इतिहास) मे अपने आप ही यादगार रहेगी। (देखे इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत आर्यसमाज का इतिहास पृष्ठ २०५ भाग दो)

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए महात्मा पार्टी के दूसरे वर्ग ने गुरुकुलो की स्थापना की थी जहा सस्कृत और हिन्दी को प्रमुखता दी गई।

सन् १६०० मे उर्दू मे लिखी योगीराज श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र नाम पुस्तक की प्रस्तावना मे लालाजी ने स्पष्ट लिखा है कि भगवद्गीता के श्लोको के लिए मिसेज एनी बेसेन्ट के भाष्य से (अग्रेजी मे) मै लाभ उठाया है परन्तु हर एक श्लोक के भाष्य को असल (मूल) पुस्तक से मिलाया है। यहा यह स्पष्ट नहीं है कि लालाजी ने मूल पुस्तक का यथार्थ स्वय कैसे पाया ?

– सी ४ ३३२ बी जनकपुरी दिल्ली ५८

जन्म दिवस २३ जनवरी पर विशेष

मोही के निर्मोही सन्त थे गुरु देव मेरे

– स्वामी सर्वानन्द

यह भारत राष्ट्र प्राचीन काल से ऋषि–मुनियो वीरो वीरागनाओ साधु महात्माओ त्यागी तपस्वियो की भूमि रही है। इस देश का पुराना नाम आर्यावर्त था। और यहा के निवासियो को आर्य कहा जाता था। हम लोग आर्य थे। और सम्प्रति भी हम लोग आर्य ही है। अर्य धातु से निष्पन्न होकर आर्य शब्द बना। आर्य श्रेष्ठ को कहते हैं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द एक सच्च आर्य थे। उनमे आर्यत्व के गुण विद्यमान थे। वे अद्वितीय सन्यासी थे। उन्हे लौह पुरुष कहा गया। क्योकि के अत्यन्त निर्भीक यति थे। वे किसी के आगे झुकना कायर समझते थे।

जन्म स्थान

स्वामी जी का जन्म पजाब राज्य के लुधियाना शहर से कुछ दूर मोही नामक एक छोटे से गाव मे सन १६७७ पौष मास की पूर्णिमा सम्वत १६३४ मे हुआ।

माता एव पिता के नाम

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द की माता का नाम श्रीमती समा कौर एव पिता का नाम श्री भगवान सिह था। स्वामी जी के बचपन का नाम केहर सिह थ"। केहर सिह का अर्थ होता है शैरो के शेर। वास्तव मे उनका जैसा नाम था वैसा काम भी था। वे किसी के सामने झुकना नहीं जानते थे। वे बचपन से ही विनोदी स्वभाव के बालक थे। वे अत्यन्त निर्भक तेज चचल आदि प्रकृति के बालक थे।

बाल्यकाल की शिक्षा

जब केहर सिह (स्वामी) स्वतन्त्रानन्द) माता जी की मृत्यु हो गई। तब वे बहुत रोय। बचपन मे उनकी माता जी उन्हे (केहर सिह) को छोडकर सदा के लिए चली गई। स्वामी जी अपने बाल्यकाल मे मोही से अपने ननिहाल लताला भी पढने के लिए आते जाते थे। लताला मे उदासी महात्माओ का एक प्रसिद्ध डेरा था। उस समय डेरा के महत श्री प० विशनदास सस्कृतज्ञ एव सुयोग्य चिकित्सक थे। श्री प० विशनदास जी आर्यसमाज के प्रभाव मे आकर वैदिक धर्मी के हो गए। इन्हीं प० विशनदास जी के सम्पर्क मे आकर केहर सिह जी पर वैदिक धर्म की छाप पडी। स्वामी जी बाल्यकाल से किशोरावस्था मे प्रवेश करते ही स्वामी पूर्णानन्द से सन्यास की दीक्षा ले ली। उनका नाम प्राणपुरी रखा गया। वे घूम घूम कर इतस्तत स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के प्रचार प्रसार करने लगे। वे स्वतन्त्र पूर्वक धर्मोपदेश करते रहे। बाद में वे स्वामी स्वतन्त्रानन्द हो गए।

सर्वप्रथम गुरु के दर्शन

स्वामी स्वतन्त्रानन्द (मेरे गुरु जी) से मेरी पहली मुलाकत महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी समारोह १६२५ मे मथुरा मे हुई। उस समारोह मे बहुत से महात्मा साधू सत एव आर्यसमाज के नेतागण आए हुए थे। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के प्रथम दर्शन यहीं पर हुए।

सन्यास की दीक्षा

केहर सिह की मृत्यु हो जाने के पश्चात उनके पिता भगवान सिह ने उनके लिए सेना मे जमादार के पद पर उनकी नियुक्ति का प्रयास किया। परन्तु यह पछी अ कहा फसने वाला था। एक दिन वे घर से चुपचाप निकल पडे और गृह त्याग दिए। विक्रम सम्वत १६५८ मे गृह त्याग किया। तीन वर्षो तक इधर उधर भ्रमण करते रहे। १६५७ विक्रमी को फीरोजपुर जिला के परवरनड नामक ग्राम मे सन्यास की दीक्षा ली। सन्यास के गुरु थे श्री स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज। बाद मे वे स्वामी स्वतन्त्रानन्द से प्रसिद्ध हुए।

दयानन्द मठ दीनानगर मे नजर बद स्वामी जी

दीनानगर मे नजरबद किया गया। स्वामी जी सुन जाता है कि उनकी हाथो मे थाने की हथकडी छोटी पड गई। तब स्वामी जी ने हसते हुए कहा – अब हमारा राष्ट्र स्वतन्त्र होकर रहेगा। क्योकि अग्रेज अधिकारियो की हथकडियो छोटी पडने लगी है।



– स्वामी स्वतन्त्रानन्द

कार्य क्षेत्र

सन १६३८–३६ मे स्वामी जी एव उनके साथ अनेक आर्यसमाज के नेतागण धार्मिक एव सास्कृतिक अधिकारो की रक्षार्थ निजाम हैदराबाद गए। स्वामी जी हैदराबाद सत्याग्रह के सूत्रधार एव फील्ड मार्शल थे। महात्मा नारायण स्वामी जी के नेतृत्व मे सत्याग्रह आरम्भ हुआ। आर्य हैदराबाद के सत्याग्रह मे विजयी हुए।

सन १ अप्रैल १६४० ई० को लोहार कस्बे मे आर्यसमाज की स्थापना की गई।

इसका प्रथम वार्षिक उत्सव २८–३० मार्च सन १६४१ ई० को रखा गया। इस जलसे मे स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी को आमन्त्रित किया गया। २८ मार्च को सायकाल नगर कीर्तन के समान लोहे पुरुष स्वामी जी के ऊपर एव आर्यजनो के ऊपर नवाव की पुलिस के कारिन्दो एव अन्य भाडे के दरिन्दो ने जुलूस पर पीछे बर्छियो व कुल्हाडियो से आक्रमण कर दिया। सवामी जी के ऊपर भी कुल्हाडियो की चोटे पडने लगी। स्वामी जी को किसी तरह बचाने की कोशिश की गई। फूलसिह आदि लोग गिर पडे। पर स्वामी जी अन्त तक भूमि पर नहीं गिरे।

किसी कवि ने लिखा है –

स्वामी का अद्भुत बलिदान धरती हो गई लहूलुहान गूजे धरती और वितान वीरो की कैसी है शान कविवर प्रणव शास्त्री ने स्वामी जी के बारे मे लिखा है –

मातृभूमि की आंखों के उज्ज्वल प्रिय तारे।
नर-नायक पर दीन हीन के अतिशय प्यारे।।
नीति नियन्ता आर्य जाति के दृढ़तर नेता।
यतिवर सयम ध्यान, धारणा के नचिकेता।
श्रीवर बुधि स्वाध्याय उदधि के मजुल मोती
स्वभिमान की लहर सदा थी जिसको धोती
मीत शत्रु ने सदा एक सा जिनको देखा।
स्वत्व सारण की न रही मस्तक में रेखा।
तभी राग झनकार स्नेह के तार मिलाते।
गाता त्रस्त जनों को थे पीयूष पिलाते।।

स्वामी सधे हुए योगी थे। स्वामी जी प्रतिकूल से प्रतिकूल परिस्थितियो के सागर को बडे धैर्यता के साथ सहज स्वभाव से पारकर जाया करते थे। स्वामी जी भक्त एव आर्यसमाज के प्रसिद्ध दार्शनिक लेखक आचार्य चमूपति जी ने विक्रय सम्वत १६६० (१६३४) मे झण्डे का गीत एक कविता लिखी थी। स्वामी जी के इस मनोबल को देखकर उसके निम्न पद अनायास स्मरण हो आते है। ऐसा समझना चाहिए कि स्वामी जी जैसे कर्म योगी के अन्त करण विपदाओ की इस वेला से भी यह विचित्र ध्वनि निकल रही थी –

वीरो की उठती तरग बन।
सागर की मचलाती उमग बन।।
अमर फाग का दिव्य रग बन।
लहरा लहरा ध्वजा ओम की।
हम सब तुझ पर प्राण वार दे।
सुख सम्पत सम्मान वार दे।
यह वर दे जा ध्वज ओम की।

स्वामी जी का व्यक्तित्व महान था। उन के चेहरा सूर्य के भाति चमकता था। वे परोपकारी दीनहितैषी दयानन्द के सच्चे अनुयायी पुनीत ह्रदय वाले कर्मठ त्यागी मधुर भाषी स्वाभिमानी धार्मिक ईश्वरोपासक चिन्तनशील। मननशील सन्त प्रेमी समाज सुधारक वेद्वोद्धारक राष्ट्र प्रेमी देश भक्त वैदिक धर्मी एक सच्चे इन्सान एक सच्चे साधु, महात्मा हसमुख सन्यासी थे।

सन १६३२ ई० की बात हैं। शेख अब्दुल्ला की मुस्लिम काफ्रेस ने कश्मीर मे दगे किए। अनेको हिन्दू मारे गए। स्वामी जी उपदेशक महाविद्यालयो के विद्यार्थियो से बोले मुझे ऐसे युवको की आवश्यकता है। जो कश्मीर राज्य मे जाकर अपने मरे हुए हिन्दू भाईयो की लाश को पता लगावे –एव वे कहा मारे गए। वहा जाकर पता लगावे। यह कार्य उसी नौजवान से हो सकता है। जिसके मृत्योपरान्त उनके परिवार शोक न सके। स्वामी जी की बातो पर दस पन्द्रह नौजवान तैयार हो गए। स्वामी जी के साथ दस पन्दहो नौजवान चल पडे। कश्मीर की पहाडियो पर। प० ईश्वर जी दर्शनाचार्य भी स्वामी जी के साथ थे। पहाडियो पर चढते–चढते स्वामी के पैरो मे मोच आ गई। किसी तरह उनके लिए खच्चर की व्यवस्था की गई। स्वामी कुछ दूर जाने के बाद खच्चर से उतर गए। स्वामी पुन पैदल ही पहाडियो पर चढते चले गए। स्वामी जी अपने प्राणो की बाजी लगाकर सब हिन्दू भाईयो को गावेषार्थ निकल पडे। इससे यह सिद्ध होता है कि वास्तव मे स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी (मेरे गुरु जी) मोही के निमोही सन्त थे। वे धैर्यशाली एव निर्भीक सन्यासी थे।



स्वामी सर्वानन्द जी

किसी कवि ने स्वामी जी के बारे मे लिखा है –

हैदराबाद सत्याग्रह सिन्धु में, नवाव से टकराये।
विशालकाय महामान को देख नवाब घबराये।।
खाकर सिर पर कुल्हाडे मुह सत्य से न मोड़ा।
प्राण दिया बलिदानी ने पर आन को न छोड़ा।।
तेरा ही कृपा से आज हम गाते हैं वेद ज्ञान।
निराला ऐसे स्वामी को बार बार प्रणाम।।

अन्तिम आदेश

स्वामी स्वतन्त्रानन्द (मेरे गुरु जी) की मृत्यु के पश्चात कुछ दिन बाद मैने रिफार्मर मे एक लेख लिखा हुआ देखा और पढा। उसमे यह लिखा हुआ था कि जब तुमने अपने गुरु से पूछा है तो तुम मेरे आदेश का पालन करना उन्होने यह लिखा था देखो रामचन्द ' मैं बहुत सस्थाओ का प्रधान हू। किन्तु तू किसी सस्था का प्रधान आदि बनने की कोशीश मत करना। यदि कोई बना दे तो बन जाना। स्वय बनने की कोशीश मत करना। मेरे गुरु स्वामी स्वतन्त्रान्द जी के अन्तिम आदेश यही था।

मृत्यु

स्वामी स्वतन्त्रानन्द कैंसर रोग से पीडित रहे। बहुत समय तक वैद्य डाक्टर इस रोग पीलिया समझते रहे। चिकित्सा' के लिए उन्हे बम्बई ले जाया गया' । वहा सेठ प्रताप सिह भूर जी चिकित्सा पर हजारो रुपये खर्च किए। उदर का आप्रेशन भी किया गया। किन्तु अवस्था नहीं सुधर वार्ड। अन्त मे सम्वत २०१२ वि० चैत्र शुक्ल एकादशी (३ अप्रैल सन १६५५ ई०) को प्रात ६ बजे स्वामी जी हम लोगो को सदा के लिए छोडकर चले गए। उस समय रामचन्द्र (स्वामी सर्वानन्द जी वहीं पर थे।स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने मृत्यु से पूर्व रामचन्द्र से कहा था कि रामचन्द्र। अब तुम अपने कपडे रग लेना। और मेरी शरीर की अन्त्येष्टि यहीं बम्बई मे ही कर देना। और मेरे पार्थिव शरीर की भस्म को मठ की पुष्प वाटिका में खाद के स्थान डाल देना।

इत्थम् स्वामी जी ने कुल ६८ वर्ष २ महीने और २५ दिन जिन्दा रहे। सम्प्रति स्वामी जी हम लोगो के मध्य विद्यमान नहीं है। परन्तु कीर्ति रूपी शरीर से वे आज भी हमारे बीच विद्यमान है। जब तक सूरज चाद और पृथ्वी रहेगी। तब तक स्वामी जी का नाम सदा अमर रहेगा।

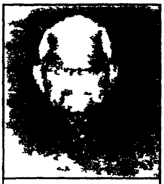
उपसहार

स्वामी जी विनम्रशील एक सच्चे आर्यसमाजी वेदो के दीवाने परोपकारी गरीबो का रक्षक दीनहितैषी क्रान्तिकारी सन्यासी निर्भीक लौह पुरुष विद्वान् साहसी राष्ट्र भक्त आदि थे।

– दयानन्द मठ, दीनानगर (पजाब

पूर्णिमा स्मृति न्यास की ओर से श्री राजसिंह भल्ला का अभिनन्दन

आर्यसमाज अशोक विहार फेस ३ के तत्वावधान मे लोहडी एव मकर सक्रान्ति पर्व का आयोजन १३ जनवरी २००२ को किया गया। यज्ञ के उपरान्त वैदिक विद्वान तथा कर्मठ आर्यनेता श्री राजसिह भल्ला का पूर्णिमा स्मृति न्यास की ओर से शाल ओढाकर तथा स्मृति चिन्ह और नारियल भेट करके अभिनन्दन किया गया। पूर्णिमा स्मृति न्यास स्व० श्रीमती पूनम वधावन की स्मृति मे वैदिक विद्वानो का अभिनन्दन करने के लिए तथा अन्य धार्मिक और राष्ट्रसेवा के कार्य करने के लिए गठित किया गया है।



श्री राजसिह भल्ला

आर्यसमाज मन्दिर की ओर से भी श्री राजसिह भल्ला का शाल ओढाकर स्वागत किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन तथा श्री धर्मवीर जी का भी उनकी विशिष्ट सेवाओ के लिए अभिनन्दन किया गया।

श्री राजसिह भल्ला तथा श्री विमल वधावन ने लोहडी तथा मकर सक्रान्ति के पर्व पर आगन्तुक महानुभावो को इन पर्वो का महत्व बताते हुए शुभकामनाए दीं।

आर्यसमाज कानपुर के १२३वें वार्षिकोत्सव का आयोजन

आर्यसमाज कानपुर (मेस्टन रोड) का १२३वा वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के पावन पर्व पर शनिवार ६ मार्च से मगलवार १२ मार्च २००२ तक आर्यसमाज मन्दिर व श्रद्धानन्द पार्क मे मनाया जाएगा।

नगर कीर्तन (शोभायात्रा) शनिवार ६ मार्च को साय ४ बजे होगा।

वेदपारायण यज्ञ शनिवार ६ मार्च से सोमवार ११ मार्च तक प्रात साय तथा पूर्णाहुति मगलवार १२ मार्च को होगी।

महर्षि बोधोत्सव मगलवार १२ मार्च को प्रात १० से १२ बजे तक तदनन्तर विशिष्ट आर्यो का अभिनन्दन एव शका समाधान १ बजे तक किया जाएगा।

बाहर से आने वाले आर्यजनो के लिए अवास जलपान भोजन आदि की सुविधा नि शुल्क रहेगी। समयानुकूल बिस्तर साथ मे लाए।

— डॉ० विजय पाल शास्त्री

आर्यसमाज नोएडा मे गायत्री महायज्ञ का आयोजन

गायत्री महामन्त्र एक ऐसा अद्भुत मन्त्र है जिसके द्वारा यज्ञ करने से बुद्धि निर्मल होती है तथा वातावरण शान्त होता है। इसलिए महर्षि दयानन्द ने यज्ञो का विधान करते हुए गायत्री मन्त्र के विषय मे लिखा है कि जब इच्छा हो व्यक्ति गायत्री मन्त्र का पाठ व इसके अर्थों का चिन्तन करते हुए यज्ञ में आहुति [illegible] मन्त्र मे सार्वभौमिक सार्वकालिक सामाजिक एव आत्मिक कल्याण की बहुत सुन्दर प्रार्थना है।

आतकवाद से ग्रस्त इस धरती पर अशान्ति भय और अराजकता के क्षणो मे आर्यसमाज नोएडा ने २६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस के महान राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर राष्ट्रीय एव विश्व शान्ति और मानवता का सन्देश देने हेतु गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया है।

कार्यक्रम

स्थान	आर्यसमाज नोएडा
यज्ञ भजन प्रवचन	प्रात ८ ३० से ११ ०० बजे एव साय ४ ०० से ६ ३० बजे
यज्ञ के ब्रह्मा	आचार्य जयेन्द्र कुमार
मुख्य ऋत्विक	श्रीमती गायत्री मीना
ऋत्विक	आचार्य मोहन प्रसार एव आचार्य सोमनाथ शास्त्री
सस्वर गायत्री पाठ	आर्ष गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारियो द्वारा
पूर्णाहुति	२७ जनवरी प्रात ८ ३० से ११ ०० बजे
प्रसाद वितरण	प्रसिद्ध उद्योगपति श्री राजेन्द्र कुमार सिघल के सौजन्य से।

आर्यसमाज मन्दिर, वाई ब्लॉक, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली मे धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह एव बसन्तोत्सव

गत वर्षों की भाति इस वर्ष भी धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस रविवार १७ फरवरी २००२ को आर्यसमाज मन्दिर वाई ब्लॉक सरोजिनी नगर नई दिल्ली मे प्रात ८ ३० बजे से दोपहर १ ३० बजे तक बडे समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। प्रात ८ ३० बजे से ६ ३० बजे तक बृहद यज्ञ ६ ३० से १० ०० बजे तक भजन १० ०० बजे से १२ ०० तक रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चो का विशेष कार्यक्रम व हकीकत राय का ड्रामा एव अन्य स्कूल के बच्चो के भाषण व कविता आदि होंगे। १२०० बजे से १.३० बजे तक श्रद्धाजलि सभा आयोजित होगी जिसमे उच्च कोटि के विद्वान व आर्यनेता पधारकर अपने विचार रखेगे। दोपहर १३० बजे ऋषि लगर का सुन्दर प्रबन्ध होगा।

१६ फरवरी को प्रात १० बजे से दोपहर १२ बजे तक गत वर्ष की भाति इस वर्ष भी ५वीं से लेकर १२वी कक्षा के बच्चो की प्रतियोगिता होगी जिसमे बच्चे धर्मवीर हकीकत राय के बलिदान सम्बन्धी कविता व भाषण प्रस्तुत करेगे। ५वी से ८वीं तथा ६वीं से १२वीं तक के बच्चो की अलग अलग प्रतियोगिता तथा अलग अलग ईनाम होगे। कविता एव भाषण के अलग अलग ईनाम होगे।

सभी से प्रार्थना है कि अपने बच्चो के नाम शीघ्र **महामन्त्री अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति आर्यासमाज सरोजिनी नगर नई दिल्ली २३ दूरभाष** ४६७७०६३ के पते पर दे।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा पुरस्कार समारोह-२००२ की घोषणा

आर्यसमाज सा ताक्रुज (प०) मुम्बई ५४ द्वारा पुरस्कार समारोह का आयोजन रविवार १० फरवरी २००२ को प्रात १० बजे से १२ ३० बजे तक आयोजित किया गया है। वर्ष २००२ मे **वेद वेदाग पुरस्कार** से प० राजवीर जी शास्त्री (सम्पादक दयानन्द सन्देश) को **वेदापदेशक पुरस्कार** से श्री उत्तमचन्द शरर (पानीपत) को एव श्रीमती लीलावती महाशय **आर्य महिला पुरस्कार** से सुश्री कमला जी आर्या (अलीगढ उ०प्र०) को सम्मानित किया जाएगा।

सम्मान के रूप मे उक्त विद्वानो को क्रमश २५००१/— १५००१/— ११००१/— की राशि शाल ट्राफी व श्रीफल से अभिनन्दन किया जाएगा। इसी प्रकार श्रमती शिवराजवती आर्या **बाल पुरस्कार** के अन्तर्गत श्रीमद्द दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा की होनहार छात्रा सुश्री सुनेश को तथा श्री नि शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद के छात्र ब्र० ऋषि कुमार शुक्ल को सम्मान के रूप मे ५०००/ ५०००/— रुपयो से सम्मानित किया जाएगा।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान डॉ० सोमदेव शास्त्री व महामन्त्री श्री यशप्रिय आर्य एव पुरस्कार समिति के सयोजक कै० देवरत्न आर्य के सयोजन मे आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा मनोनीत सात सदस्यीय समिति द्वारा उपरोक्त विद्वानो को सम्मानित करने का प्र[illegible] आर्यसमाज सान्ताक्रुज की अ[illegible]या है। ने सर्व सम्मति से [illegible] मे आर्यजगत के उपरोक्त [illegible] प्रख्यात विद्वानो एव सुप्रसि[illegible] प्रतिष्ठित सन्यासियो को आमन्त्रित किया जा रहा है।

[illegible] जमुई के ईटासागर ग्राम में स्वामी अग्निव्रत जी का वेद-प्रचार पराक्रम

वेद प्रचार अभियान ३१ दिसम्बर २००१ को जमुई बिहार स्थित ईंटासागर ग्राम मे एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए स्वामी अग्निव्रत जी ने वैदिक शिक्षा पद्धति के बारे मे स्थानीय ग्रामीणो को जानकारी दी। गाव के पास ही पहाडी के किनारे १०० एकड जमीन गुरुकुल के निर्माण के लिए ग्रामीणो ने उपलब्ध कराने की घोषणा की। ३१ दिसम्बर साय को स्थानीय गाव दिघौत मे एक जनसभा के बीच स्वामीजी का प्रवचन वैदिक सिद्धान्तों पर हुआ। यहा भी ग्राम वासियो ने १३ एकड भूमि गुरुकुल निमित्त प्रदान करने की घोषणा की।

१ जनवरी २००२ को स्थानीय गाव चारण मे एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए वैदिक धर्म की महानता पर प्रकाश डाला। चारण निवासियो ने ४० एकड भूमि गुरुकुल के लिए देने का वचन दिया।

स्थानीय गाव शिवडोह स्थित स्वामी विवेकानन्द आश्रम मे ३१ दिसम्बर एव १ जनवरी को रात्रिकाल मे विशाल सभा मे स्वामीजी के प्रवचन उपदेश तथा २ जनवरी को प्रात काल हवनयज्ञ का कार्यक्रम स्वामी के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। यजमान के स्थान पर आश्रम के सचालक स्वामी माध्वानन्द जी विराजमान थे। उपरोक्त त्रिदिवसीय कार्यक्रम जमुई जिला स्थित इटा सागर ग्राम के निवासी श्री रामाशोष सिह के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

R N No 32387/77 Posted at N D P.S.O on 24 25/01/2002 दिनांक २१ जनवरी से २७ जनवरी, २००२ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002, 24-25/01/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

अधिक से अधिक संख्या में दिल्ली के आर्यजन
उदयपुर चलें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने दिल्ली की आर्य जनता को अधिक से अधिक सख्या मे सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव-२००२ मे भाग लेने के लिए उदयपुर चलने का आह्वान किया है। दिल्ली से उदयपुर की यात्रा २५ फरवरी दोपहर बाद २ बजे से चेतक एक्सप्रेस से प्रारम्भ होगी और २६ फरवरी की प्रात वेला मे यह रेलगाडी उदयपुर पहुचेगी। २६ २७ एव २८ फरवरी २००२ के पूरे कार्यक्रमो का भरपूर आनन्द तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणाओं से ओत-प्रोत होकर आर्यजन २८ फरवरी सायकाल चेतक एक्सप्रेस से ही दिल्ली वापस लौटेगे जो अगले दिन दोपहर लगभग १ बजे यहा पहुचेगी। यह रेलगाडी सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशन से ही प्रारम्भ होती है और इसी स्टेशन पर समाप्त होती है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन को इस यात्रा का सयोजक बनाया गया है। जो आर्य महानुभाव अकेले या समूह के रूप मे उदयपुर जाना चाहते हैं वे पूर्ण जानकारी के लिए श्री महाजन से सम्पर्क करे। यात्रा का व्यय लगभग ८००/– रुपये प्रति व्यक्ति आएगा इसमे ६५ वर्ष से अधिक आयु के पुरुषो तथा ६० वर्ष से अधिक आयु की महिलाओ को लगभग १००/– रुपये की छूट होगी (क्योकि उनका रेल किराया कम लगता है)।

– सयोजक –
श्री सोमदत्त महाजन
आर्यसमाज सी ३, जनकपुरी, नई दिल्ली-५८,
फोन – ५५४४४८६, निवास – ५५५१५८७,
कार्यालय – ५५०५५४३

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज पश्चिमपुरी, नई दिल्ली-६३

प्रधान	–	श्री लाजपत राय आर्य
कार्यकर्ता प्रधान	–	श्री वेद प्रकाश मल्होत्रा
उप प्रधान	–	श्री राजेन्द्र दुर्गा
		श्री ओम प्रकाश भाटिया
		श्री चन्द्रकुमार खन्ना
		श्री पृथ्वी खन्ना तथा
		श्री राजीव भाटिया
मन्त्री	–	श्री सतीश आर्य
सहमन्त्री	–	श्री सुभाष गधीर
प्रचार मन्त्री	–	श्री विश्वनाथ नारग
कोषाध्यक्ष	–	श्री हरिचन्द्र डुडेजा
पुस्तकाध्यक्ष	–	श्री यशपाल

स्त्री आर्यसमाज पश्चिम पुरी

प्रधाना	–	श्रीमती यशवन्ती
मन्त्रिणी	–	श्रीमती चाद रानी वर्मा

आर्यसमाज शकरपुर, दिल्ली-९२

प्रधान	–	श्री मिश्री लाल गुप्ता
उप प्रधान	–	श्री पतराम त्यागी
मन्त्री	–	श्री ओमप्रकाश रुहिल
उपमन्त्री	–	श्री मनोहर लाल छाबडा
कोषाध्यक्ष	–	श्री राकेश शर्मा

केरल मे प्रचार कार्यो के लिए श्री नरेन्द्र भूषण सम्मानित

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री नरेन्द्र भूषण का केरल मे एक लाख से अधिक राशि तथा सम्मान पत्र के साथ अन्तर्राष्ट्रीय अभिनन्दन किया गया। श्री नरेन्द्र भूषण विगत कई दशको से केरल मे धर्मान्तरण रूपी ईसाचक्र का वैदिक प्रचार के माध्यम से मुकाबला कर रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारियो ने केरल के इस विद्वान सत के प्रति अपनी शुभकामनाए व्यक्त की हैं।

स्वामी सर्वानन्द जी के आशीर्वचन

दयानन्द मठ दीनानगर के द्वितीय आचार्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विगत ३ नवम्बर २००१ के चुनावो मे निर्वाचित कै० देवरत्न आर्य के प्रधान तथा ... साथ श्री विमल वधावन कार्यकारी प्रधान एव श्री वेदव्रत शर्मा ... तथा अन्य समस्त साफ सुथरी छवि वाले महानुभावो द्वारा सभा के स... का दायित्व सम्भालने पर अपार प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आश्रम...यो तथा आगन्तुको के समक्ष उस प्रसन्नता को खुले शब्दो मे व्यक्त किया। स्वामीजी ने आशा व्यक्त की है कि कै० देवरत्न आर्य तथा उनके साथी आर्यसमाज की डगमगाती नाव को सकुशल चलाने मे सफल होगे। उन्होने नव-निर्वाचित पदाधिकारियो ... आशीर्वाद भी दिया है।

हाल ही मे अजमेर मे सम्पन्न हुई परोपकारिणी सभा की बैठक मे भी स्वामी सर्वानन्द जी ने कै० देवरत्न आर्य को आशीर्वाद दिया और जनसभा मे सम्बोधित करते हुए कहा कि परोपकारिणी सभा ऋषि की बनाई अपनी सभा है। जिन लोगो ने गुरुकुल कागडी मे घोटाले और सार्वदेशिक सभा मे धक्काशाही करने वाले लोगो का जमघट बनाने का प्रयास किया है। अगर ऐसा कोई प्रयास भविष्य मे किया गया तो इन लोगों के शरीर में कीडे पडेंगे। स्वामी जी ने बडे प्रेम और श्रद्धा के साथ आर्यसमाज के कार्यो को सम्पन्न करने के लिए आर्यजनता का मार्गदर्शन किया।

– स्वामी सदानन्द सरस्वती, तृतीय आचार्य,
दयानन्द मठ, दीनानगर (पजाब)

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक १२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, २८ जनवरी से ३फरवरी २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

देश भक्ति की भावनाएं बच्चों में उत्पन्न करें - वेदव्रत शर्मा

राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों, वैदिक संस्कारों एव उच्च प्रेरणाओं के प्रचार-प्रसार से ही सफल गणतन्त्र स्थापित हो सकता है

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के अन्तर्गत सचालित महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल मे गणतन्त्र दिवस समारोह बडी धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री चन्द्रदेव मन्त्रिणी श्रीमती शशिप्रभा आर्या तथा मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य उपस्थित थे।

श्री विमल वधावन ने कहा कि भारत गणतन्त्र की रक्षा जिस प्रकार देश के अनुशासित सिपाही शस्त्रो के द्वारा करते हैं उसी प्रकार देश की रक्षा शास्त्र अर्थात बुद्धिबल के द्वारा कलम के प्रयोग से भी की जा सकती है। इस राष्ट्र कार्य मे प्रत्येक व्यक्ति अपना योगदान दे सकता है।

उन्होने विद्यालय के बच्चो अभिभावको और शिक्षको से अनुरोध किया कि देश के प्रति अपने कर्त्तव्यो पर ध्यान देने के लिए स्वय भी तैयार रहे और दूसरो को भी तैयार रखे। अधिकारवाद झगडे और कलह का कारण है जबकि कर्त्तव्य पालन की भावना त्याग तथा तपस्या की प्रतीक है और इससे समाज मे शान्तिपूर्ण वातावरण बनाने मे सहायता मिलती है। विडम्बना है कि भारतीय सविधान मे नागरिको के मूल कर्त्तव्यो को प्रथम सत्ताईस वर्ष तक कोई स्थान नहीं दिया गया। १९७७ मे अनुच्छेद ५१ (क) को जोडकर नागरिको के मूल कर्त्तव्य लिखे गए परन्तु आज तक भी उनके क्रियान्वयन कर कोई मार्ग निर्धारित नहीं किया गया। भारतीय सविधान मे वर्णित मूल कर्त्तव्य काफी बारीकी से आर्यसमाज की मान्यताओ का ही दूसरा रूप हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने इस प्रकार के भव्य आयोजनो द्वारा देशभक्ति की भावनाए बच्चो मे उत्पन्न करने के लिए आयोजको को धन्यवाद दिया। उन्होने बच्चो और अभिभावको को यह विश्वास दिलाया कि आर्यसमाज के विद्यालयो मे शिक्षा ग्रहण करके कोई भी व्यक्ति धार्मिकता से अछूता नही रह सकता और समाज की बुराइया उसे छू भी नहीं सकतीं।

डॉ० महेश विद्यालकार ने उपस्थित जनता को प्रेरित करते हुए कहा कि आर्यसमाज के विद्यालय बच्चो को सस्कारवान बनाने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। सच्चाई ईमानदारी चरित्र निर्माण और सामाजिक भावनाए आर्यसमाज की शिक्षण सस्थाओ के प्रमुख प्रेरणादायक विचार है जिनके आधार पर शिक्षा योजनाए बनाई जाती हैं। उन्होने बच्चो को माता पिता की सेवा उनकी आज्ञा पालन और जीवन मे अनुशासन तथा सयम धारण करने के लिए प्रेरित किया।

इस समारोह मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री चन्द्रदेव जी का शाल ओढाकर विशेष सम्मान किया गया। श्री चन्द्रदेव ने कहा कि दिल्ली की सभी शिक्षण सस्थाओ मे मुझे समन्वय करना पडता है और इस दायित्व का निर्वहन करते समय मैं यही प्रयास करता हू कि ऐसी योजनाए बने जिनसे शिक्षा के साथ साथ बच्चो का सामान्य ज्ञान तथा शारीरिक गतिविधियो के कार्यक्रम भी अवश्य चलते रहे।

इस गणतन्त्र दिवस समारोह का सचालन विद्यालय के चेयरमैन तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य तथा विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती विभा पुरी ने किया। विभिन्न आर्यसमाजो के पदाधिकारियो के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध आर्य उद्योगपति श्री मुशी राम सेठी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त मे विशेष श्रेणियो मे उत्तीर्ण होने वाले छात्रो को छात्रवृत्तिया भी प्रदान की गईं। ये छात्रवृत्तिया दिवगत आर्यजनो की स्मृति मे उनके परिजनो द्वारा प्रदान की गई।



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री चन्द्रदेव जी २५ जनवरी को महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन मे राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए। (बाए से दाए हैं) दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य वैदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य श्री चन्द्रदेव सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन तथा विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती विभापुरी। दूसरी तरफ विद्यालय के नन्हे मुन्ने बच्चे राष्ट्रीय गान गाते हुए।

रमेश नगर विद्यालय में गणतन्त्र दिवस समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज रमेश नगर द्वारा सचालित बाल विद्यालय मे गणतन्त्र दिवस धूम धाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज के प्रधान एव दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। बच्चो द्वारा राष्ट्रभक्ति और वैदिक विचारो के गीत तथा अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री चन्द्रदेव तथा स्थानीय आर्यसमाजो के कई पदाधिकारी इस समारोह मे सम्मिलित हुए।

धर्म-प्रचार हेतु यज्ञ एवं सत्संग नियमित करें

– सोहनलाल शारदा

हमारी नवगठित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने वैदिक धर्म प्रचार हेतु एक विज्ञप्ति निकाली है – 'सब आर्यजन वैदिक धर्म प्रचार व आर्यसमाजो के पुनर्जागरण हेतु अपने व्यावहारिक सुझाव भेजे। वे यहा यह भी कहते हैं कि इन सुझावो को क्रियान्वित करने मे किस प्रकार वह स्वय कार्य कर रहे है। उसमे क्या सफलता मिली है।

इसके लिए ही निश्चय से इस आर्यराज्य शाहपुरा मे महर्षि के एकमात्र राजनैतिक शिष्य सर महाराजाधिराज नाहर सिह वर्मा के सी०आई०ई० ने महर्षि के आदेशानुसार ही महर्षि कृत ग्रन्थो का पठन पाठन राजकीय विद्यालयो मे अनिवार्य कर दिया।

यहा सबसे पहले प्रथम कक्षा मे आर्यसमाज के दस नियम कण्ठस्थ कराते थे द्वितीय कक्षा मे सन्ध्या के मन्त्र महर्षिकृत ग्रन्थो से कण्ठस्थ कराकर सूक्ष्म व्याख्या विधि के साथ शिक्षा दी जाती थी। नियमो का रहस्य भी पढाने के बाद पुन=पाठ सुनने की प्रथा भी थी।

आगे तीसरी कक्षा मे दैनिक यज्ञ विधि सस्कार विधि मे वर्णित गृहाश्रम सस्कार पढाया जाता था। सामान्य प्रकरण के आठ मन्त्र कठस्थ कराते हुए आगे चतुर्थ कक्षा मे पूर्ण सामान्य प्रकरण महर्षि की सक्षिप्त जीवनी आर्योद्देश्यरत्नमाला कण्ठस्थ करनी होती थी। पाचवीं छठी कक्षाओ मे व्यवहारभानु एव महर्षि प्रदत्त पोप लीला की पुस्तक जो महर्षि के समय भक्त श्री लाला जगन्नाथ द्वारा लिखी गई थी जिसका नाम यहा सत्यासत्यनिणय रखा था पूरी कण्ठस्थ कराते थे। आर साथ म सत्यार्थ प्रकाश भी पढाया जाता था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात इसे अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु तत्कालीन राजाधिराज सुदर्शन देव ने अपना राजकीय महल का बहुत बडा भूभाग आर्यसमाज को समर्पित कर यह धर्मशिक्षा चालू रखी।

कालान्तर मे शनै शनै यह विद्यालय भी अशिक्षितो के हाथ मे आ जाने से इसकी पढाई मे कुछ न्यूनता आई तभी हमने निजी तौर पर वैदिक धर्म प्रचार हेतु पुन राजाधिराज और गुरुवर प० हरिश्चन्द्र जी तथा अन्य स्वाध्यायी जनो ने मिलकर महर्षिकृत सर्व ग्रन्थो से सकलनकर नित्य सन्ध्या यज्ञोपासना विधि तथा बृहद यज्ञ हेतु वैदिक सत्सग विधि का प्रकाशन केवल महर्षि के शब्दो से ही सकलन से निर्माण कर पढाना आरम्भ किया। साथ मे ये अनुष्ठान स्वय घर पर भी करने लगे।

यह इसलिए भी किया गया जैसाकि महर्षि ने स्वय मुरादाबाद अवस्थित समय श्री रामजी लाल यदुवशी को आदेश दिया था – सबके शरीर मरणधर्मा हैं हमारा यह शरीर भी सदा नहीं रहेगा। तुम जब तक जीवित रहो हमारी पुस्तकों से शिक्षा लेते रहना और दूसरे लोगो को भी यह शिक्षा देते रहना।

(।। प० लेखराम कृत का आर्यभाषानुवाद नया बास दिल्ली आर्यसमाज द्वारा पृ० ४७३।।)

अत केवल महर्षिकृत ग्रन्थो से पढाने पर ही हमे बहुत अच्छी सफलता मिली। इसका लाभ जैसा सप्तम समुल्लास मे वर्णन है – जैसे जगली मनुष्य सृष्टि को देखकर भी विद्वान नही होते और जब उन्हे कोई उच्चतम शिक्षक मिल जाए तो वे भी विद्वान हो जाते हैं। अब भी और आगे भी पढाए बिना कोई भी विद्वान् नहीं होगा। जैसे किसी के बालक को जन्म से ही एकान्त देश अविद्वानो वा पशुओ के सग में रख दे तो वह जैसा सग है वैसा ही हो जाएगा। इसका दृष्टान्त जगली भील आदि हैं।

'ऐसे ही परमात्मा की सृष्टि मे विद्या शिक्षा की प्राप्ति से उत्तरोत्तर काल मे विद्वान् होते आए हैं।'

महर्षि के इन वचनो के अनुसार ही हमने एक शूद्र कुलोत्पन्न विद्यार्थी को गोद लेकर पढाना शुरू किया। थोडे ही दिनो मे उसे दस नियम एव सन्ध्या यज्ञ के मन्त्र कण्ठस्थ हो गए। तब हमने जो महर्षि द्वारा प्रज्वलित यज्ञाग्नि राजकीय महलो आर्य नरेश महर्षि भक्त राजाधिराज से चालू हुई थी उनके पुत्र पौत्र ने उस नित्य एकागिन को चिरस्थाई रखा। वह यज्ञशाला की यज्ञाग्नि पौत्र महाराजधिराज सुदर्शन देव जी के स्वर्गारोहण पश्चात बन्द हो गई थी कुछ वर्षो तक बन्द रहने पश्चात नूतन वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत २०५८ को पुन चालू की गई।

उसे आगे बृहद यज्ञ विधि सस्कार विधि का सामान्य प्रकरण से भी पढाया गया। अत शुद्ध उच्चारण विधि का ज्ञान हो जाने से अब वह यथाविधि उचित समय यज्ञ करने मे समर्थ हो गया।

इस प्रकार समर्पण भाव से काम करने पर ही नई पीढी का तैयार होना सम्भव है। वह तभी सम्भव है जब हम प्रथम केवल महर्षिकृत ग्रन्थो से ही पठन पाठन करे। कुछ भी न्यूनाधिक नहीं करे।

हमारे मार्ग मे कठिनाई यही है इन आल्पज्ञानी पडितो ने महर्षिकृत अनेक विधियो को छोडकर नूतन विधि चालू कर दी। फल यह हो रहा है कि कहीं भी एकरूपता नही है और हो रही है – मन्त्रो की भरमार विधि की न्यूनता अशुद्ध उच्चारण हमे निरन्तर अध पतन की ओर खींचता चला आ रहा है।

अत हमारा यही कर्त्तव्य है कि हम प्रथम स्वय सस्कार विधि गृहस्थाश्रम सस्कारनुसार ४ बजे उठे। प्रथम प्रात कालीन मन्त्र पाठ अर्थविचार पूर्वक करते हुए शौच स्नान से निवृत हो सन्ध्या यज्ञ नित्य करने बैठे। स्थान आसन शुद्धि हेतु ध्यान रखते हुए प्रथम मे महर्षिकृत ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के अनुसार इसमे वर्णित न्यूनाधिक नहीं कर उसी के अनुसार ही सृष्टि सम्वत का उच्चारण तिथि पञ्चागो से देखकर करे। गृहश्रमास्थ अमृतोपस्तरणमसि मन्त्रो से तीन आचमन कर पणाव का जाप प्राणायाम से जो साधारण विधि सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास मे है से करे।

जाप के पश्चात पचमहाविधिनुसार गायत्री से शिखा बन्धन शन्नो से आचमन आगे इन्द्रिय स्पर्श मार्जन पश्चात समन्त्रक प्राणायाम अघमर्षण पश्चात पचमहायज्ञ विधिस्थ शन्नोदवी प्रनशा चामेत विधि को यथावत जानकर करते हुए मनसापरिक्रमा व उपास्थान को सशोधित गृहाश्रम प्रकरणास्थ से अर्थज्ञान कर सगति मिलाकर करे। गायत्री जाप करके समर्पण मन्त्र से नमस्कार कर शन्नोदवी से आचमन कर नित्य यज्ञ प्रारम्भ करे। इसी प्रकरण मे वर्णित विधि के अनुसार करता है। तभी हम नई पीढी को यथाविधि सिखाते हुए राष्ट्र समाजो के उत्थान मे सहायक हो सकेगे। इसी दृढ निश्चय से हम पढा भी रहे हैं।

पूरी सफलता मिल रही है। शिविर भी पास मे ही विजय नगर फतहनगर सुनेल आदि कुछ स्थानो पर लगाकर पढाया है व्यक्तिगत रूप से आज भी बराबर नित्य कर्म इसी से कर रहे है आगे भी पूर्ण सफलता मिलेगी।

– शाहपुरा, भीलवाडा, (राजस्थान)

बोध कथा

दो स्मरणीय प्रसंग

एक बार हरिद्वार के सामने हिमालय की उपत्यका मे कागडी गाव के समीप बने गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे दिल्ली से हकीम अजमल खा डॉ० असारी आदि कुछ मुसलमान मित्र स्वामी श्रद्धानन्द जी से मिलने पहुचे।

गुरुकुल मे बडी यज्ञशाला थी उसमे उस समय सन्ध्या वन्दन और हवन आदि हो रहा था। मुस्लिम मित्र यज्ञशाला के पास खडे कुतूहल से हवन देखते रहे। हवन समाप्त हुआ स्वामीजी बडे प्रेम से अपने इन अतिथियो से मिले। अतिथियो ने कहा – हमारा भी नमाज का समय हो रहा है कोई स्थान बताइए हम नमाज पढ सके। स्वामीजी ने कहा – हमारा तो हवन समाप्त हो चुका है यह यज्ञशाला खाली है आप यहा नमाज पढ सकते हैं। हकीम अजमल खा और डॉ० असारी को इसकी आशा नहीं थी परन्तु स्वामीजी के मन मे यह बात थी कि इन लोगो को भी ईश्वर की उपासना करनी है यज्ञशाला और है किसलिए ? इसलिए उन्होने यज्ञशाला मे नमाज पढ लेने को कहा। मुसलमान अतिथियो ने बडे प्रेम से यज्ञशाला मे नमाज पढी उसके बाद गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के साथ भोजन किया आत्मीयता की भावना से।

हृदय की इस उदारता का ही परिणाम था। उन दिनो अग्रेज शासको के दमन से हिन्दुओ मुसलमानो का खून बह रहा था उन दिनो वीर आर्य सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने मजहब धर्म जाति पाति का विचार किए बिना दिल्ली के नागरिको की सेवा की थी सारी जनता उन्हे अपना बादशाह मान रही थी। ४ अप्रैल १९१९ को दिल्ली मे मुसलमानो ने वीर स्वामी श्रद्धानन्दजी को अपना रहनुमा नेता मानकर उन्हे भारत की सबसे बडी मस्जिद जामा मस्जिद दिल्ली के मिम्बर पर बैठाकर उनसे कुछ उपदेश देने के लिए कहा।

वीर सन्यासी श्रद्धानन्द ने इन्सान के ही नही प्राणी मात्र के प्रभु की बन्दगी करते हुए कहा –

त्व हि न पिता वसो वि माता शतक्रतो बभविथ। अथाते सुम्नसीमहे।। ऋग्वेद ८/१८/११

हे प्राणीमात्र के त्राता रखवाले ! आप ही हम सबके पालक आप ही हमारी माता निर्मात्री हो इसलिए हम आपसे ही सुखो की इच्छा करते हैं।

ओ३म् शान्ति शान्ति आमीन

स्वामीजी के उद्‌बोधन का सन्देश था –

हे सारी सृष्टि के आधार तुम्ही हमारे रक्षक पिता हो तुम्ही मान दिलाने वाली माता हो इसलिए आपका हम इस पवित्र यज्ञ मे आह्वान करते है।

हे शासको के शासक सबके सहायक जगदाधार हम सब आपके पुत्र पुत्रिया सब मिलकर दृढ न्याय प्रेम का फैलाव प्रसार करे।

– नरेन्द्र

परमेश्वर एक है ! तेजस्वी है, मातृभूमि के लिए उत्सर्ग करें

एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।

एक प्रभु को ज्ञानीजन अनेक नाम से पुकारते हैं।

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। *अथर्व० ७/८६/४*

हे प्रभु आप तेजस्वी है मुझे भी तेजस्वी बनाइए।

वय तुभ्य बलिहृता स्याम। *अथर्व० १२/१/६२*

हम मातृभूमि के लिए बलि देने के लिए प्रस्तुत हों।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

समस्याएं अनेक : समाधान सच्ची एकता, दृढता एवं उत्सर्ग से

भारत को विदेशी शासन से मुक्त हुए यह ५५वा वर्ष चल रहा है विदेशी शासक भारत छोडते समय इसे दो देशो मे बाट गए थे अब वे ही तीन देशो के रूप मे बटे हुए है। हिमालय से लेकर समुद्र तक और पश्चिमी और पूर्वी समुद्रो के मध्य विस्तीर्ण भूखण्ड सहस्राब्दियो से भारत भूखण्ड के रूप मे अपनी ऐतिहासिक सास्कृतिक स्थिति बनाए हुए था विश्व इतिहास मे उसकी गरिमा और महत्ता रही है वह भारत राष्ट्र पुन प्रतिष्ठित हो सकेगा यह हिमालय से समुद्र तक और पश्चिमी और पूर्वी समुद्रो मे प्रतिष्ठित देशो की जनता के आपसी सद्भाव स्नेह और आदान प्रदान पर ही आश्रित है। सघर्ष या दमन से प्रतिष्ठित एकता स्थिर नही हो सकेगी परन्तु पारस्परिक स्नेह सम्बन्धो से वर्तमान और भविष्य को अतीत की एकता और समन्वय की उदात्त भावना से एकता का सूत्र बाधा जा सकता है इसमे सन्देह नही। विश्व मे इन दिनो आतकवाद ने मानवता को सीधी टक्कर दी है। ११ सितम्बर २००१ के दिन न्यूयार्क स्थित विश्व ट्रेड सैण्टर और सेना के मुख्यालय पेटागन पर सीधे आक्रमण कर विध्वस और विनाश का घिनौना काण्ड किया गया। १३ दिसम्बर २००१ के दिन भारत राष्ट्र के ससद भवन पर आक्रमण करने का दुस्साहस किया गया। भवन के प्रहरियो और सुरक्षा कर्मियो के समय पर सन्नद्ध हो जाने और इन आक्रमणकारियो की सामयिक रोकथाम से ससद की गरिमा राष्ट्र नेताओ और राष्ट्र प्रतिनिधियो की सुरक्षा हो गई यदि आक्रमणकारियो को ससद भवन के मार्गो सुरक्षा तथा सम्बन्धित बातो की अधिक जानकारी होती तो उस दिन वे भस्मासुर बन सकते थे। तीसरा हादसा इस २००२ के वर्ष मे कोलकाता के अमेरिकी सैण्टर पर आतकवादी हमले के रूप मे हुआ। यहा भी पर्याप्त जानकारी न होने से आतकवादी विशेष विध्वस नही कर सके परन्तु उन्होने इस महानगर मे विश्व के सर्वाधिक सम्पन्न राष्ट्र की प्रभुता को जैसी चुनौती दी उससे स्पष्ट है कि सीमित साधनो और शक्ति के बावजूद आतकवादी विनाश और विध्वस की लीला खेलने मे कभी सकोच नहीं करेंगे। आज आतकवाद की समस्या अकेले भारत की नहीं है यह छोटे बडे सभी राष्ट्रो को मिल जुलकर अपने सामूहिक प्रयत्नो से सुलझानी होगी। वैसे विश्व इतिहास मे भारत राष्ट्र की गरिमा और महत्ता रही है अपनी भौगोलिक स्थिति राष्ट्र मे उपलब्ध प्राकृतिक भू सम्पदा और शत कोटि मानव शक्ति का यदि बौद्धिक वैज्ञानिक औद्योगिक आदि क्षेत्रो मे प्रगति और समुन्नति का व्यवस्थित प्रयत्न किया जाए तो वैचारिक वैज्ञानिक व्यावसायिक औद्योगिक कृषि आदि अनेक क्षेत्रो मे राष्ट्र को उत्कर्ष के उन्नत शिखर पर पहुचाया जा सकता है। राष्ट्र की इस प्रकार की प्रगति और उत्कर्ष किसी राष्ट्र या समूह से प्रतिस्पर्द्धा के लिए न होकर भारत राष्ट्र के सर्वांगीण व्यवस्थित अभ्युदय के लिए हो जिसमे राष्ट्र और राष्ट्रजन जीवन की सभी विद्याओ विधाओ कलाओ एव क्षेत्रो मे अग्रणी हो राष्ट्र मे न कोई पीडित हो न कोई दु खी और हताश हो जन जन प्रत्येक राष्ट्रजन उन्नति समानता और अभ्युदय के शिखर पर पहुचने मे सक्षम हो।

हमारा स्वाधीन भारत – गणतन्त्री राष्ट्र अपने भौगोलिक प्राकृतिक ससाधनो वैज्ञानिक प्रतिभा और ऊची सास्कृतिक और सामाजिक परम्परा समृद्ध विरासत का व्यवस्थित प्रयोग करे तो इसमे सन्देह नहीं कि भारत न केवल कृषि उद्योगो वाणिज्य विज्ञान आदि क्षेत्रो मे प्रत्युत जीवन की सभी विधाओ और क्षेत्रो मे उन्नति के ऊचे मापदण्ड प्रस्तुत कर सकता है। राष्ट्र मे नीति निर्धारको और राष्ट्रीय सूत्र सचालको को राष्ट्र के अपूर्ण भौगोलिक प्राकृतिक ससाधनो सम्पदा और राष्ट्रजनो की प्रतिभा क्षमता मानवशक्ति का व्यवस्थित सर्वांगीण अभ्युदय करना चाहिए फलत राष्ट्र जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे पूर्ण स्वावलम्बी समुन्नत और शीर्ष स्थान पर पहुच सके। राष्ट्र की सभी क्षेत्रो मे व्यवस्थित प्रगति और समुन्नति के साथ यह भी ख्याल रखना होगा कि राष्ट्र मे कोई भी अभावग्रस्त पीडित और दु खी न हो। जन जन एव राष्ट्रजन की प्राथमिक आवश्यकताए पूर्ण करने के साथ राष्ट्र के सूत्र सचालको और राष्ट्र नेताओ का यह व्यवस्थित आकलन करना चाहिए कि जीवन की किसी विद्या क्षेत्र साधनो प्रतिभा मे राष्ट्रजन पिछडे या अव्यवस्थित तो नही है फलत हमे अपने अभावो अपूर्णताओ और अक्षमता की पूर्ति के लिए विश्व के दूसरे राष्ट्रो का अवलम्बन करना पडता हो। इक्कीसवी शताब्दी और सहस्त्राब्दी मे भारत राष्ट्र को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र विधा उन्नति और प्रतिस्पर्द्धा के क्षेत्र मे अपनी प्रतिभा क्षमता ससाधनो का व्यवस्थित सदुपयोग करना होगा। ये सब कार्य सरल और बाधाहीन नही है। हा यदि हमारे राष्ट्र के नीति निर्धारक और सूत्रसचालक भारत राष्ट्र के भौगोलिक प्राकृतिक ससाधनो और कोटि कोटि मानव शक्ति का व्यवस्थित सदुपयोग करे तो इसमे सन्देह नही है कि देश की जनता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे स्वाबलम्बी सुखी और व्यवस्थित हो सकेगी राष्ट्र मे कोई भी राष्ट्रजन अभाव कष्ट रोग व्यथा से पीडित न होगा। **सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया मा कश्चिद् दु ख भाग्भवेत** सभी प्राणी मात्र सुखी हो किसी को कोई कष्ट न हो ओर कोई दु खी न हो। ये लक्ष्य ऊचे और कठिन प्रतीत हो सकते है भारत मे कभी ऐसा सुखी जन जन का कल्याणकारी रामराज्य अवस्थित था यदि आज राष्ट्र और राष्ट्रजन मिलकर सामूहिक प्रयत्न करे तो असम्भव कुछ नही।

प्राचीन श्रेष्ठ चिन्तको की सम्मति है कि मानव के लिए असम्भव कुछ नही। जीवन के प्रत्येक लक्ष्य एव मानव की उन्नति के सभी उदात्त ऊचे गरिमा भरे लक्ष्य सामूहिक राष्ट्रीय अध्यवसाय और उद्योग से हस्तगत किए जा सकते है। हा उसके राष्ट्र के नीति निर्धारणो को राष्ट्र के सर्वांगीण अभ्युदय और प्रगति की व्यवस्थित योजना बनानी होगी। योजना की पूर्ति के लिए पचवर्षीय कार्यक्रम बनाए जा सकते है। इसी के साथ भारत के नीति निर्धारक विश्व मानवता की उन्नति अभ्युदय और उसके भारतीय जीवन दर्शन एव चिन्तन के परिप्रेक्ष्य मे श्रीराम श्रीकृष्ण महर्षि दयानन्द आदि सन्तो और महापुरुषो के मार्गदर्शन के आधार पर भारतीय सस्कृति और जीवन दर्शन का शान्ति अहिसा और पारस्परिक सदभाव का अमर सन्देश हर देश महाद्वीप सम्पूर्ण सृष्टि एव मानवता मे व्याप्त करने का सकल्प करना चाहिए। अतीत मे श्रीराम श्रीकृष्ण महात्मा बुद्ध वाल्मीकि वेदव्यास तुलसी और महर्षि दयानन्द सरीखे सन्तो और महापुरुषो ने जो मानवता को अमर सन्देश दिया उसे गद्य पद्य के प्रेरक साहित्य मे सग्रहीत प्रस्तुत कर उसे रोचक आकर्षक और बोधागम्य साहित्य के रूप मे हर देश और महाद्वीप के सभी तत्वदर्शियो और मानव धर्म के प्रेमियो तक न केवल पहुचाना चाहिए प्रत्युत उसे विश्व की सभी भाषाओ और साहित्य मे मानवता के लिए उदबोधक प्रेरक साहित्य के रूप मे पहुचाने का भगीरथ प्रयत्न करना चाहिए। इक्कीसवीं शताब्दी और इस सहस्राब्दी मे यदि भारत राष्ट्र और उसकी कोटि कोटि जनता की ओर से यदि ऐसा व्यवस्थित अभियान किया जाए तो श्रीराम श्रीकृष्ण महात्मा बुद्ध महावीर गाधी और महर्षि दयानन्द के चिन्तन और सन्देश को विश्व मानवता और राष्ट्र राष्ट्र तक पहुचाने का अभियान कठिन होने के बावजूद व्यावहारिक हो सकेगा।

चिट्ठी-पत्री

जयचन्दों की भरमार

देश मे अभी जयचन्दो की भरमार है। उदाहरण है हाल ही मे पाकिस्तानी दूतावास के एक कर्मचारी को गोपनीय दस्तावेज सौपते हुए रगे हाथ पकडे गए लोकसभा के कर्मचारी के रूप मे देखा जा सकता है। कितना शर्मनाक है कि लोक सभा के गरिमा भरे पद पर बैठा व्यक्ति देश के साथ गद्दारी करने से नही चूका। वह भूल गया कि यदि पाकिस्तान देश का नुकसान करेगा तो उसका भी नुकसान होगा। जासूसी का यह कोई पहला मामला नहीं है। पहले भी अनेक ऐसे मामले प्रकाश मे आ चुके हैं। लेकिन अपराधियो को छोड दिया जाना या सालो साल तक मामलो के लटके रहने से ये अपराध बढते हैं। ऐसे मामलो की गम्भीरता देखते हुए विशेष जजो द्वारा ऐसे मामलो की सुनवाई पन्द्रह दिनो के भीतर पूरी करनी चाहिए।

– इन्द्रसिह धिगान किंग्जवे कैम्प, दिल्ली

हिन्दी अपनाओ-देश बचाओ

सामवेद से - परमेश्वरार्चन सप्तकम् (१) (उत्तरार्द्ध)

परमेश्वर की सच्ची अर्चना अत्यन्त लाभप्रद तथा परमावश्क है

– प० मनोहर विद्यालकार

(६) श्रेष्ठ आनन्दवर्षी तथा सर्वभोगप्रद परमेश्वर की स्तुति आवश्यक है

अभि त्य मेष पुरुहूतमृग्मियमिन्द्र गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम्।
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत।।

साम० ३७६

सव्य आगिरस । इन्द्र । जगती।

अर्थ – (सव्य आगिरस) यज्ञभावना से ओत प्रोत होने के कारण शक्तिशाली बना गुरु अपने शिष्यो और भक्तो को उपदेश करता है –

"हे साधको ! तुम (त्य इन्द्रम) उस प्ररमेश्वर को जो (मेषम) सुखप्रद पदार्थों और भावो की वर्षा करने वाला (पुरुहूतम) नाना नामो द्वारा पुकारा जाने वाला (ऋग्मियम) ऋचाओ का निर्माता व उनमे रमा होने से अर्चनीय और पूजनीय तथा (वस्व अर्णवम्) विश्व की सम्पदाओ का सागर है उसका (गीर्भि मदत) वेदवाणियो स्तुतियो द्वारा प्रसन्न किया करो। (यस्य मानुष महिष्ठम्) जिसके मानव हितकारी तथा अत्यन्त प्रशस्त दान कर्म व पदार्थ (द्याव न भुजे विचरन्ति) सूर्य की किरणो की तरह सर्वत्र सबके पालन के लिए विचर रहे है – व्याप्त है (वि प्र त अर्चत) विशेष रूप से कमियो को पूरण करने वाले उस पूर्ण प्रभु की सगति से तुम्हे भी लाभ मिल।

अर्थपोषण – सव्य – सव यज्ञ। नि० ३/१७ मेषम – मिषु सेचने।

ऋग्मियम – ऋचाओ के निर्माता तथा उनमे रमे हुए विश्व० अर्चनीय तथा पूजनीय हरि०। भुजे –भुज पालनाभ्यव हारयो। महिष्ठम – महते दानकर्मा। नि० ३/२० + तमपका इष्ठन।

निष्कर्ष – परमेश्वर मनुष्य के लिए उपयोगी सब पदार्थ प्रदान करके उसके पालन–पोषण के साथ प्राकृतिक दृश्यो की मनोरमता द्वारा आनन्द की भी वर्षा करता है इसलिए धन्यवाद रूप मे परमेश्वर की स्तुति और आराधना करना मनुष्य का अनिवार्य कर्त्तव्य है। यदि वह ऐसा न करे तो निश्चय ही कृतघ्न हो जाएगा।

(७) निरन्तर शान्त रहने के लिए सोम प्रभु का निरन्तर स्तवन करो

बभ्रवे नु स्तवसेऽरुणाय दिविस्पृशे।
सोमाय गाथमर्चत।। *साम० १४४*

असित काश्यपो देवलो वा। पवमान सोम। गायत्री।

अर्थ – (असित देवल वा) दिव्यतर को प्राप्त करके बन्धनमुक्ति की कामना वाले उपासको ! (स्वतवसे) स्वत सर्वशक्ति सम्पन्न (सोमाय) सर्वोत्पादक (बभ्रवे) सबके भरण पोषण कर्ता (अरुणाय) पूर्णतया आरोचमान (दिविस्पृशे) साधको मे दिव्यता का स्पर्श कराने वाले (सोमाय) आनन्द और शान्तिधाम प्रभु के लिए (गाथ अर्चत) स्त्रोतो का गान करो और उन गुणो की उपासना से उन्हे अपने मे धारण करने का प्रयत्न करो अवश्य तुम्हारी कामना पूर्ण होगी क्योकि वह तो साधक मे दिव्यता का स्पर्श कराने के लिए स्वय उत्सुक है।

अर्थपोषण – स्वतवसे – स्वाभाविकी यस्य ज्ञान बलक्रिया च। अरुण – आरोचन। निरु० ५/४/२१

(८) परमेश्वर की स्तुति से उत्साह और सहनशीलता की वृद्धि होती है

इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि च ब्रवीतन।
सुता अमत्सुरिन्दवो जेष्ठम नमस्यता सह ।।

साम ६५१

गोतमो राहूगण । इन्द्र । अनुष्टुप्।

अर्थ – (इन्द्राय नून अर्चत) परमेश्वर की आराधना अवश्य किया करो (च) और (उक्थानि ब्रवीतन) उसके निमित्त कथाओ का प्रवचन किया करो। (सुता इन्द्रव अमत्सु) इन कथा प्रवचनो मे उत्पन्न हुए चन्द्रसम अह्लादक सोम (भक्ति) रस वक्ता और श्रोताओ दोनो को हर्षाविभोर करते है। वह परमेश्वर (ज्येष्ठ सह) सहनशीलता और उत्साह दान का सर्वश्रेष्ठ और ज्येष्ठ मूर्तिमन्त स्वरूप है उसके समीप बैठने (उपासना) मात्र से साधक मे उन गुणो का सचार होता है। अत उपासको ! उसे प्रतिदिन प्रतिक्षण (नमस्यत) मन ही मन नमन करते रहो।

अर्थपोषण – अमत्सु – मदी हर्षे। इन्द्रव – इदि परमैश्वर्य – अमानवीय ऐश्वर्य प्रदान करके आहलादित करने वाले सोमरस।

निष्कर्ष – परमेश्वर की आराधना और उसके गुणो का कथन और स्तुति मनुष्य को हर्षातिरेक से आनन्दित करती है इसलिए उसकी स्तुति प्रार्थना उपासना अवश्य करे। इससे मनुष्य का जीवन कृतार्थ होता है।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली ६

जागो ! अटल बिहारी

– प० नन्दलाल 'निर्भय'

कान खोलकर आज ध्यान से सुन लो बात हमारी।
भारत का सम्मान बचाओ जागो ! अटल बिहारी।।

पाकिस्तान पडोसी दुश्मन करता नित शैतानी।
भारत से लडने की उसने अपने दिल मे ठानी।।
समझाने से नही मानता महा नीच अभिमानी।
दगाबाज पर प्यार दिखाना है भारी नादानी।।

बिना दण्ड के ना छोडेगा करनी खल मक्कारी।
भारत का सम्मान बचाओ जागो ! अटल बिहारी।।

दुष्ट मुशर्रफ को तुमने क्यो माना अपना भाई ?
दिल्ली से लाहौर आपन बस अरु रेल चलाई।।
कश्मीर मे भेजे उसने लाखो आतकवादी।
निर्दोषो को मरवाया की भारत की बर्बादी।।

हुए शहीद कारगिल मे, इस भारत के बलधारी।
भारत का सम्मान बचाओ, जागो ! अटल बिहारी।।

कुछ दिन पहले दुष्ट मुशर्रफ तुमने यहा बुलाया।
स्वागत किया दुष्ट का भारी काफी खर्च उठाया।।
सबसे पहले राष्ट्रपति वह तुमने ही बतलाया।
दिल्ली और आगरे मे वह पापी खूब घुमाया।।

फिर भी अपना नहीं बना वह जालिम अत्याचारी।
भारत का सम्मान बचाओ, जागो ! अटल बिहारी।।

याद रखो ! कपटी कामी ना धर्म का मर्म जानते।
लातो के जो यार कभी बातो से नहीं मानते।।
गाधी नेहरु ने भी था जिन्ना को भाई माना।
उसकी गलत नीतियो को ना ठीक तरह पहचाना।।

आधा कश्मीर खो बैठे, भूल गए कर भारी।
भारत का सम्मान बचाओ, जागो ! अटल बिहारी।।

अमरीका इग्लैण्ड चीन से नेता मत दहलाओ।
लाल बहादुर इन्दिरा गाधी से नेता बन जाओ।।
वीर साहसी बलवानो के गाता गीत जमाना।
वल्लभ भाई पटेल भारती नेता था मर्दाना।।

नन्दलाल 'निर्भय' लडने की, कर लो अब तैयारी।
भारत का सम्मान बचाओ, जागो ! अटल बिहारी।।

– ग्राम डाकघर बहीन जनपद फरीदाबाद (हरियाणा)

डॉ० भगवती प्रसाद दिवगत

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री के बहनोई डॉ० भगवती प्रसाद होम्योपैथ प्रसिद्ध चिकित्सक का दिनाक ३१२००२ को दो मास की बीमारी के बाद देहावसान हो गया। वह ८० वर्ष के थे।

वह आर्य कन्या विद्यालय के अधिकारी रहे एव आर्यसमाज के सजग कार्यकर्ता थे। पागलो की चिकित्सा का सफल उपचार करते थे। इसके वह प्रसिद्ध डाक्टर थे।

पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्तिम सस्कार किया गया तथा शान्ति यज्ञ के बाद क्रिया सम्पन्न हुई। आर्यसमाज को दान देकर आत्मा की सदगति के लिए प्राथना की गई। उनके वियोग मे आत्मीयजनो व पारिवारिक जनो को कष्ट सहन करने की शक्ति की कामना परमपिता परमात्मा से की गई।

श्री अमरदत्त आर्य को पुत्र शोक

आचलिक गढवाल आर्यसमाज दिल्ली के उप प्रधान श्री अमरदत्त आर्य के पुत्र श्री अभयदत्त आर्य का २३ वर्ष की अल्पायु मे ६ जनवरी २००२ को अस्वस्थता से अकस्मात निधन हो गया। अन्तिम क्षणो मे उसने गायत्री मत्र का लगातार जप किया और परिवार को भी जप करने को कहा। १३ जनवरी २००२ को उनके निवास स्थान जैड ५५४ प्रेमनगर किराडी नागलोई दिल्ली मे शुद्धि शान्ति यज्ञ एव शोक सभा आयोजित की गई जिसमे सर्वश्री मोहनलाल जिज्ञासु, धर्मसिह शास्त्री गोपाल आर्य रवीन्द्र कुमार मनोहरलाल आर्य सादीराम आदि सभासदो तथा अन्य आर्यबन्धुओ एव ईष्टमित्रो के समूह ने श्रद्धाजलि दी। पुरोहित श्री शास्त्री जी ने आध्यात्मिक उद्बोधन एव शोक सभा का सचालन दायित्व निभाया। शोक सभा मे सवेदनाए व्यक्त करते हुए २ मिनट का मौन रखा गया जिसमे परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवगत आत्मा को शान्ति सदगति प्राप्त हो और श्री अमरदत्त आर्य परिवार को इस गहरे दुख को सहन करने की अपार शक्ति देवें।

राष्ट्रवादी विचारों पर रोक लगाने की दृष्टि से ही आर्यों को आक्रमणकारी और विदेशी कहा गया

कोलकाता में संगोष्ठी तथा कार्यकर्ता सम्मेलन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान मे १६ जनवरी को शिक्षायतन सभागार मे एक विशेष सगोष्ठी आयोजित की गई। जिसका विषय था – "आर्यो का आदि देश"। इस सगोष्ठी का सचालन बगाल सभा के प्रवक्ता एव वैदिक विद्वान श्री चान्दरतन दम्माणी ने किया। गोष्ठी की अध्यक्षता बगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मोहनलाल जी ने की। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा उपमन्त्री श्री भूपनारायण शास्त्री ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि ब्रिटिश राज्य के दौरान ५ एम इतिहास पर छाए रहे। जिन्होंने भारतवर्ष के इतिहास के साथ खिलवाड करने का हर सम्भव प्रयास किया। ये 5 M थे – MERCHANT (व्यापारी) MILITARY (सेना) MISSIONARY (ईसाई प्रचारक) MACAULAY (ब्रिटिश शिक्षा योजना का जन्मदाता) MAXMU LLAR (वेदो का तथाकथित ज्ञाता)। इन पाचो के बल पर भारत की प्राचीन परम्पराओ को ही नहीं बल्कि इतिहास को भी तोडने-मरोडने का हर सम्भव प्रयास किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ने कहा कि जो लोग आर्यो को आक्रमणकारी और विदेशी कहने के समर्थक हैं वे पहले ये बताए कि यदि आर्य विदेशी थे तो उनका निश्चित उत्पत्ति स्थान क्यो नहीं आज तक ये तथाकथित इतिहासज्ञ पता लगा पाए। उन्होंने कहा कि पारसी मुसलमान और अग्रेज सबके साथ उनके उत्पत्ति स्थानो का इतिहास जुडा है जबकि आर्यो के साथ ऐसा कोई इतिहास नहीं है। दूसरी तरफ न ही कोई ऐसा देश है जो इस बात की पुष्टि करता हो कि भारत के आर्य उनके देश के निवासी हैं।

कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि इतिहास लेखन **"ऐसा हुआ होगा" "ऐसा हो सकता है"** या **"शायद"** जैसे शब्दों पर नहीं टिक सकता। सारा विश्व जानता है कि फूट डालकर राज करो की प्रमुख नीति पर चल रहे थे अग्रेज शासक और इसी नीति के तहत उन्होने १९०५ मे बगाल का विभाजन भी कर डाला। जबकि छ वर्ष बाद ही उस विभाजन को उन्हें भारतीय जनता के जवाबी दबाव में रद्द करना पड़ा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि बगाल की इस पवित्र भूमि में बकिमचन्द्र चटर्जी गुरु रविन्द्र नाथ टैगोर केशवचन्द्र सेन तथा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और कई अन्य महान राष्ट्र पुरुषो का जन्म हुआ। बगाल से पनप रही राष्ट्रवादी विचारधारा के उत्तर मे ही अग्रेजो ने भारत की राजधानी कलकत्ता से हटाकर दिल्ली स्थानान्तरित कर दी थी। परन्तु इसके बावजूद भी बगाल से उत्पन्न राष्ट्रवाद रुका नहीं। आर्यो को विदेशी और आक्रमणकारी कहने का सर्वाधिक प्रचार बेशक मैक्समूलर और मैकाले ने किया परन्तु इस तथाकथित इतिहास के पीछे विलियम जोन्स की विचारधारा थी जो १७८३ मे भारत के सर्वोच्च न्यायालय का जज बनकर कलकत्ता आया था। उसे महसूस हुआ कि सस्कृत यूरोपीय भाषाओ की भी जननी लगती है। अत उसने आर्य शब्द को इण्डो यूरोपियन भाषा बोलने वाले लोगो के रूप मे प्रचारित करने का प्रयास किया। इसी सिद्धान्त के आधार पर कभी आर्य शब्द से भाषायी वर्ग समझाया गया तो कभी आर्य शब्द को जातिवादी शब्द के रूप मे प्रचारित किया गया। यह सारे कार्य और सिद्धान्त आर्यों में भेदभाव डालने की दृष्टि से और भारत के नागरिको की राष्ट्रवादी भावनाओ के जवाब मे प्रचारित किए गए।

श्री विमल वधावन ने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एक बार फिर इस विषय पर जन जागृति अभियान का शुभारम्भ उसी ऐतिहासिक बगभूमि से हो रहा है जो राष्ट्र के लिए बडे-बडे युग पुरुषो को उत्पन्न करती रही है। उन्होने कहा कि अधिक से अधिक जन जागृति अभियान ही सरकार को इतिहास मे सशोधन के लिए बाध्य कर सकता है।

इस सगोष्ठी मे केन्द्रीय मन्त्री श्री सत्यव्रत मुखर्जी वैदिक विद्वान् प्रो० उमाकान्त उपाध्याय तथा सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री दयानन्द आर्य तथा बगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने अपने विचार रखे।

रविवार २० जनवरी २००२ को आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के भवन मे एक सुव्यवस्थित कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमे बगाल के विभिन्न हिस्सो से आर्यसमाज के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कार्यकर्ता सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कार्यकर्ताओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज की गतिविधियो का मूल आधार वेद का प्रचार है। वेद के नाम पर कुछ मिलावटी और अशुद्ध उपदेश भी दुनिया के सामने हैं परन्तु हम शुद्ध और बिना मिलावट वाले वैदिक धर्म के लिए जी रहे हैं और उसी के लिए मरेगे।

यह तभी सम्भव है जब आर्यसमाज की बागडोर और नेतृत्व भी शुद्ध पवित्र और त्यागी तपस्वी महानुभावो के हाथ मे रहे। इस समय आर्यसमाज के सगठन मे कई सिद्धान्तहीन और राजनीतिक इच्छाओं और महत्वाकाक्षाओ वाले लोग प्रवेश करके आर्यसमाज की शक्ति का शोषण अपने निजी स्वार्थों के लिए करना चाहते हैं। इनके जाल निस्सन्देह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक फैले हैं और सन्यासी वेश मे ये लोग आर्यसमाज की वैदिक धर्मी जनता को गुमराह कर रहे हैं। इनके पीछे बडे स्पष्ट रूप से कुछ अवैदिक और भारत की राष्ट्रद्रोही ताकतो का इन्हे खुला समर्थन मिलता है। आर्यसमाज का कोई बडे से बडा नेता भी ईसाइयो के अन्तर्राष्ट्रीय गुरु पोप जॉन पाल से यह आशा नहीं कर सकता कि वह किसी आर्य नेता को हवाई जहाज का टिकट भेजकर वैटिकन शहर मे बुलवाएगा और उस आर्यनेता के साथ पोप वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार की योजनाए तो क्या ईसाई धर्मान्तरण को बन्द करने का आश्वासन देने जैसी कोई बात करेगा। अग्निवेश जैसे भगवाधारी तथाकथित सन्यासी को पोप हवाई जहाज का टिकट भेजकर यदि वैटिकन शहर बुलाता है तो स्पष्ट है कि उससे ईसाई धर्म के प्रचार प्रसार और धर्मान्तरण मे सहयोग करने जैसी बातो पर सहयोग मागेगा और मागता है। यह षडयन्त्र अग्निवेश के उन दर्जनो वक्तव्यो से स्पष्ट होता है जिसमे ये धर्मान्तरण को कभी व्यापार के रूप मे मान्यता देता है तो कभी धर्मान्तरण को ईसाइयो के सेवाकार्यो का फल बताकर उनकी पीठ ठोकी जाती है। कभी अफगानिस्तान मे बौद्ध प्रतिमाए तोडने पर हिन्दुओ के इतिहास को कलकित करने का प्रयास किया जाता है तो कभी ईसामसीह और मुहम्मद के जन्म दिवस पर लोगो को ईसाइयत और इस्लाम नामक पथो को विश्वशान्ति का प्रतीक बताया जाता है। ऐसे वक्तव्यों की आशा स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपत राय जैसे युगपुरुषो से तो दूर किसी साधारण सच्चे आर्य से भी नहीं की जा सकती। इस वैदिक धर्म विरोधी और राष्ट्रद्रोही जाल में आर्यसमाज को किसी कीमत पर फसने से रोकना होगा। सामाजिक बुराइयो और धार्मिक पाखण्ड के साथ साथ इन अन्दरूनी सगठन विरोधी ताकतों के सामने भी प्रत्येक आर्य को बाध की तरह खडे रहना चाहिए। प्रत्येक आर्यजन बाध की ईंट और ककरीट के समान है जिसे बाध बनाने वाले कारीगर जहा चाहे स्थापित करदे और आर्यसमाज के लिए इस बाध को बनाने वाले मुख्य कारीगर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि आर्यसमाज एक सैद्धान्तिक और अनुशासनबद्ध सस्था है। इस सस्था के सदस्य बनने से लेकर सभासद और प्रतिनिधि बनने तक के निर्धारित नियम हैं। यदि कोई व्यक्ति इन नियमो पर चले बिना अपने साथ २५ ५० शरीरो का जमघट इकटठा करके सडक पर बैठकर दावा करे कि हम आर्यसमाज के प्रतिनिधि सभा के प्रान्तीय सभा के या सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारी हैं तो क्या आर्यजनता इसे बर्दाश्त कर पाएगी।

श्री शर्मा ने कहा कि आर्यसमाज की सस्थाए केवल वही मानीं जाती हैं जो स्थानीय समाज के नियन्त्रण और निर्देशन मे चलती हैं। आर्यसमाज वही माना जाता है जो प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ सम्बद्ध होता है। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा वही मानी जाती है जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ सम्बद्ध होती है और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा वही मानी जाती है जिसका गठन प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ द्वारा विधिवत भेजे गए प्रतिनिधियो से होता है। सडक छाप अनधिकृत प्रतिनिधि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नही बना सकते। आर्यजनता इन्हे किसी भी तरह से स्वीकार करने को तैयार नहीं।

कार्यकर्ता सम्मेलन के अध्यक्ष कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि १९९८ मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव जब विधिवत हो रहे थे तब भी एक अनधिकृत सभा का गठन करके एक मुकदमा कर दिया गया। अदालत मे ३ वर्ष पूर्ण होने पर यह प्रार्थना की गई कि अदालत द्वारा नियुक्त व्यक्ति चुनाव करवाए। ३ नवम्बर २००१ को विधिवत चुनाव हुआ और अग्निवेश कैलाशनाथ सिह यादव आदि कुछ लोग बाहर सडक पर बैठकर बैठक करने लगे क्योकि ये किसी प्रान्त से विधिवत भेजे गए प्रतिनिधि नहीं थे। इन दोनों को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से कई वर्ष पूर्व निष्कासित किया जा चुका था और यह निष्कासन अब तक भी जारी है। ये लोग अपने अपने घरो से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर पत्र व्यवहार करके आर्यजनता को गुमराह कर रहे है।

कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि मध्यप्रदेश मे विधिवत प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा चल रही है जिसके प्रधान श्री गौरीशकर कौशल जी हैं। कुछ दिन पूर्व अग्निवेश ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नकली पैड छपवाकर एक फरमान जारी किया है जिसमे तदर्थ समिति के गठन की बात कही गई है। अग्निवेश के पास इस बात का कोई जवाब नहीं होगा कि जो स्वय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से निष्कासित हो वह इस प्रकार के झूठे पत्र कैसे जारी कर सकता है। अफगानिस्तान मे बौद्ध प्रतिमाए तालिबानी आतकवादियो द्वारा तोडे जाने का दोष भी अग्निवेश ने एक लेख के माध्यम से हिन्दुओ पर लगाया।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

स्वास्थ्य समाचार

किशोरावस्था के विकार : त्रुटिपूर्ण लालन-पालन

– डॉ० रजना कटियार

किशोरावस्था हमारी उम्र का एक अत्यन्त नाजुक दौर होता है। इस दौरान वय सन्धि की दहलीज पर कदम रखते किशोर व किशोरियो के शरीर मे बढे हुए विभिन्न हॉरमोन उनके शारीरिक विकास मे ही नहीं अपितु सोच-विचार की प्रक्रिया मे भी हलचल मचाते हैं। अत उन्हे अपने अभिभावको के प्यार सहानुभूति व उचित मार्ग दर्शन की विशेष आवश्यकता होती है। सही वातावरण मे हुआ उचित लालन-पालन किशोरो को स्वस्थ वयस्कावस्था की ओर प्रेरित करता है। इसके विपरीत लालन-पालन अगर गलत तरीके से हो जाए तो किशोरावस्था मे विभिन्न मानसिक विकार जन्म लेते हैं।

प्रस्तुत हैं इनसे सम्बधित कुछ प्रश्नो के उत्तर –

माता-पिता द्वारा अपनी किशोर उम्र की सतानो के लालन–पालन मे किन-किन प्रकार के गलत तरीको को अपनाया जा सकता है ?

माता-पिता द्वारा अपनी सतान (किशोर अथवा किशोरी) के लालन-पालन मे जिन गलत अर्थात त्रुटिपूर्ण तरीको को अपनाया जा सकता है वे इस प्रकार है – दण्ड देने वाला (दण्डात्मक) लालन-पालन। बहिष्कृत (अस्वीकृत) महसूस कराने वाला लालन–पालन। अत्यधिक बाध्य करने वाला लालन-पालन। अत्याधिक आसक्ति वाला लालन-पालन। अत्यधिक तिरस्कार या उपेक्षापूर्ण लालन-पालन। अत्यधिक आदर्शपूर्ण लालन-पालन।

दण्डात्मक लालन-पालन क्या है?

दण्डात्मक अर्थात माता-पिता द्वारा अपनी किशोर सतान को बात-बात पर दण्ड (सजा) देने वाला लालन-पालन। यह तीन प्रकार का हैं – अभिभावक द्वारा किशोर के ऊपर आक्रामक रुख अपनाना। अभिवक द्वारा किशोर मे अपराध-भावना प्रत्यारोपित करना। अभिभावक द्वारा किशोर पर अविश्वास प्रकट करना।

अभिभावक द्वारा किशोर पर दण्ड स्वरूप आक्रमण

इसके अन्तगर्त किशोर अथवा किशोरी से उसके माता-पिता अपशब्दो व गाली-गालौज का अत्यधिक प्रयोग करते हुए अपमानजनक व्यवहार करते हैं। अक्सर अभिभावक बच्चे पर हाथ भी उठाते हैं।

अभिभावक द्वारा किशोर में दण्डस्वरूप अपराध भावना का प्रत्यारोपण

इसके अन्तर्गत माता-पिता अपनी किशोर सतान को अपराध-बोध से ग्रस्त कर देते हैं। वे उसे दर्शाते रहते हैं कि किशोर अपने गलत व्यवहार व कमजोरियो के कारण किसी भी कार्य अथवा जिम्मेदारी के लिए अयोग्य हैं। अभिभावक किशोर को अपनी पारिवारिक मुश्किलो के लिए जिम्मेदार ठहराते रहते है। उदाहरण के तौर पर वैवाहिक विघटन अथवा पारिवारिक विघटन के लिए। माता-पिता किशोर के नैतिक आचरण पर अत्यधिक पाबदिया लगाकर किशोर अथवा किशोरी को गलत करार दे देते हैं।

अभिभावक द्वारा किशोर पर अविश्वास

इस प्रकार के लालन-पालन मे अभिभावक हर वक्त किशोर सतानो को ऐसी खतरनाक परिस्थितियो से बचने की सीख देते है जिनसे घोर अनर्थ हो सकता है। जैसे कि अविवाहित पुत्री को हर वक्त अनचाहा गर्भ ठहरने की स्थिति से बचने की हिदायत देते रहना या किशोर पुत्र को मादक पदार्थो के नशे से बचने की अत्यधिक व अनावश्यक सलाह। अपने पुत्र या पुत्रो पर अत्यधिक अविश्वास रखने की वजह से वे उसके पूर्ण रूप से निर्दोष होने पर भी उसे इन खतरनाक कार्यो मे लिप्त होने का दोषी ठहराते रहते हैं।

दण्डात्मक लालन-पालन में किशोर पुत्र या पुत्री की विकारयुक्त प्रतिक्रिया

प्रथम दोनो प्रकार अर्थात अभिभावक द्वारा दण्डात्मक आक्रमण व दण्डात्मक अपराध-भावना का प्रत्यारोपण इसमे सतान की विकासयुक्त प्रतिक्रिया निम्न मे से कोई हो सकती है (एक या एक से अधिक) – आक्रामक व्यवहार। बदले की भावना। अभिभावको को जवाब देना। स्वय को दण्ड देने की प्रवृत्ति। अत्यधिक अपराध बोध की भावना से ग्रस्त होना। सबका समर्थन पाने का प्रयत्न करना। पीडित होने की भूमिका। डर-सहमकर अभिभावक की आज्ञा का पालन करना। दण्डात्मक अविश्वास-युक्त लालन-पालन करना। किशोर व किशोरी की विकारयुक्त प्रतिक्रिया। इसमे हल्के-फुल्के निरर्थक उल्लघन हो जाने पर बच्चा खुद को दोषी ठहराता रहता है। इस कारण से वह अपराध-भावना से भी भर जाता है व स्वय से नफरत करता है।

किशोर सतान को अत्यधिक बाध्य करने वाला लालन-पालन

ऐसे अभिभावक चिन्तित मुद्रा मे हर वक्त अपने किशोर बच्चे के पीछे हाथ धोकर पडे रहते हैं कि ऐसा करो वैसा करो। माता-पिता उसकी हर गतिविधि पर नियन्त्रण रखते हैं जिससे किशोर को अपनी रूचि के कार्यों को करने का कोई मौका नहीं मिलता। इस प्रकार के लालन-पालन मे कमी कभी अभिभावक अपनी सतान के प्रति अत्याधिक सत्तावादी रुख भी अपनाते हैं। वे अपने बच्चो पर नियन्त्रण रखते हैं। बिना किशोर की राय लिए वे उसकी इच्छाओ का दमन करते हैं। व अपनी इच्छाओ के आगे सतान को पूर्ण समर्पण के लिए बाध्य करते हैं। ऐसे अभिभावक का मानना होता है कि सतान सम्बन्धी सभी निर्णय अभिभावक ही ले। किशोर महत्वपूर्ण निर्णय लेने मे अक्षम है। अधिकार अभिभावाको का है बच्चो का नहीं।

ऐसे लालन-पालन में किशोर पुत्र या पुत्री की विकारयुक्त प्रतिक्रिया

अत्यधिक बाध्य करने वाले लालन पालन मे किशोर पुत्र या पुत्री की निम्न मे से कोई भी एक प्रतिक्रिया हो सकती है। अभिभावको की हर आज्ञा का पालन करना व हर कार्य मे बडो से निर्देश पाने की अत्यधिक जरूरत महसूस करना। अपने बल पर किसी भी कार्य को करने मे कठिनाई महसूस करना। किशोरो द्वारा अभिभावको का सक्रिय विरोध । वह सीधी अवज्ञा करता है। उदाहरण के तौर पर अगर स्कूल मे अच्छे अक हासिल न कर पाने के लिए बच्चे को निरन्तर कोचा जाए व उसे अत्याधिक समय पढाई करने पर मजबूर किया जाए तो ऐसा बच्चा जान-बूझकर विद्रोह करने के लिए और कम नम्बर लेकर आता है। किशोर द्वारा अभिभावको का निष्क्रिय विरोध व उनकी गुप्त रूप से अवज्ञा। उदाहरण के तौर पर बच्चा माता-पिता की बात की अवहेलना करने के लिए या तो समय गवाता है या विचारो मे खोया रहता है या कहे गए कार्य टालता रहता है। धीरे-धीरे बच्चे की यह प्रतिक्रिया उसके स्कूल के वातावरण पर भी लागू होती है।

किशोर सतान पर अत्यधिक आसक्ति वाला लालन-पालन है

इसमे अभिभावको की कोशिश रहती है कि अपने-अपने बच्चो को ऐसा सब कुछ दे जिसकी उसे जरा सी भी जरूरत हो या चाह हो। वे इस बात पर कदापि गौर नहीं करते हैं कि बच्चे की उम्र के मुताबिक उन्हे उससे क्या उम्मीद रखनी चाहिए। अक्सर ऐसे अभिभावकों का अपना लालन-पालन भी इसी प्रकार हुआ होता है। कभी-कभी कुछ अभिवाको की अपनी परवरिश गरीबी व कठिनायो मे हुई होती है। उनकी कोशिश रहती है कि वे अपने बच्चो को सब सुविधाए दें जो कि खुद के बाल्यकाल मे न भोग सके। कभी-कभी माता-पिता इसलिए भी आसक्त रहते हैं क्योकि सतान उनके लिए काफी कीमती होती है वह या तो इकलौता पुत्र अथवा पुत्री होती है या काफी इन्तजार या मन्नतो के बाद पैदा हुआ होता है या कई पुत्रियों के बाद पैदा हुआ पुत्र होता है। अक्सर माता पिता को भ्रम रहता है कि सतान की सारी इच्छाओ की पूर्ति ही प्यार दर्शाने का एकमात्र तरीका है।

ऐसे लालन-पालन में किशोर का विकारयुक्त व्यवहार

ऐसे बच्चे ऊबते हैं या अकर्मण्य हो जाते हैं उनकी रुचि मे कमी आ जाती है तथा वे घण्टो निष्क्रिय बैठते हैं। उनमे धारणा बैठ जाती है कि परिवार के अलावा अन्य लोगो को भी उसकी सारी इच्छाए हर हाल मे पूरी करनी है। अपनी जिम्मेदारियो से बचते हैं।

उपेक्षापूर्ण लालन-पालन

इसके अन्तर्गत अभिभावक अपनी किशोर सतान की जरूरतो पर पर्याप्त ध्यान न देकर उसकी उपेक्षा कर देते हैं इसके कारण निम्न हैं – अभिभावक इतने व्यस्त हो कि उनके पास किशोर को पर्याप्त ध्यान व सहानुभूतिपूर्ण सहारा देने के लिए समय ही नहीं होता। माता-पिता मे से किसी एक की लम्बी अस्वस्थता अथवा मृत्यु।

ऐसे लालन-पालन मे किशोर का विकारयुक्त व्यवहार जब उपेक्षा लगातार व अत्यधिक हो तो सतान पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। उसके व्यवहार मे निम्न मे से कुछ बदलाव आते हैं। सामाजिक प्रवीणता की कमी। लोगो से नजदीकी सम्बन्ध बनाने में अक्षमता। क्योकि वह इसमे दिलचस्पी लेना छोडता हैं। अन्य लोगो से उनके व्यवहार के प्रति वास्तविकता से हटकर उम्मीद लगाना। उपेक्षा करने वाले माता-पिता के प्रति क्रोध पर बदले की भावना। अनुपस्थित अभिभावक को लेकर अत्याधिक विचार मग्नता। अन्य लोगो का फायदा उठाने की प्रवृत्ति। सफलता प्राप्त करने के लिए अत्यधिक प्रयास व सघर्ष की प्रवृत्ति ।

– मानसिक रोग विशेषज्ञ

प्रज्ञा ही आत्मबल उत्पन्न करती है

– श्रीराम शर्मा आचार्य

चौराहे पर खड़ा मनुष्य यदि अपने विवेक बुद्धि को जगा सके और उसकी सहायता से दूरदर्शी निर्णय कर सके तो जीवन सम्पदा के दिव्य अनुदान का लाभ मिलता है और आनन्द उल्लास भी। इसके विपरीत यदि लोक प्रवाह मे तिनके की तरह बहने की सरलता अपनाई गई तो फिर क्रमश अधिक ढलान मे उतरते उतरते खारे समुद्र मे जा गिरता है जिसका एक चुल्लू भी किसी की प्यास बुझाने के काम नही आता।

किसे छोडे किसे अपनाए ? यह निर्णय करने की स्वतन्त्र चेतना मनुष्य को मिली है। वह उत्थान या पतन मे से किसी का भी चयन कर सकता है। कौशल की परीक्षा का केन्द्र बिन्दु यही है। इसी कसौटी पर बुद्धिमत्ता की परख होती है तदनुरूप प्रतिष्ठा अप्रतिष्ठा भी मिलती है। भविष्य की सभावना भी होती है। स्वर्ग और नरक में से कौन किस पथ पर चल पडा उसी मे उसकी प्रतिभा का प्रमाण मिलता है। आमतौर पर सामान्य व्यक्ति लोक प्रवाह मे बहते और पतन के दुर्दिन देखते हैं। कम ही हैं जो वस्तुस्थिति समझ योग्य विवेक से अन्धकार से विमुख हो प्रकाश की ओर चलते हैं।

सामान्य जन आत्म निर्धारण के प्रसगो पर कभी गम्भीरतापूर्वक विचार नही करते। बालको की तरह वे खेल खिलवाड मे मस्त रहते है। इतने मस्त कि घर विद्यालय तक की याद न आए। असामान्य जन आत्मचिन्तन और आत्म विकास की महत्ता समझते है। वयस्को की तरह उत्तरदायित्व का निर्वाह और भविष्य का निर्माण ये दो कार्य प्रमुख लगते हैं फलत वे किसी का अनुकरण नही करते। किसी का परामर्श भी नहीं लेते है। अपनी दिशाधारा का निर्धारण उच्चस्तरीय दूरदर्शिता से करते है जिसे 'ऋतम्भरा प्रज्ञा' कहा गया है। परिवर्तित नवयुग मे जन जन को सतयुग के देव मानवो की तरह प्रज्ञा का वरण करना होगा। परिष्कृत दृष्टिकोण उपलब्ध होते ही किसी के भी सामने भी यह असमजस न रहेगा कि श्रेष्ठता का मार्गदर्शन किया जाए अथवा असुरता के नागपाश मे फसे। आज दिग्भ्रान्त मनुष्य इस कसौटी पर खोटा सिद्ध हो रहा है। पर कल की प्रतिभाए अपना स्वतन्त्र विवेक इस स्तर तक विकसित कर चुकेगी कि उन्हे उत्कृष्टता अपनाने मे किसी असमजस का सामना न करना पडे। बुद्धि की सरचना तो है ही ऐसी कि वह सदा उथले स्वार्थो का ही समर्थन करती और लालीमन को सहयोग देती रहती है। मात्र प्रज्ञा ही अदूरदर्शिता और आदर्शवादिता का समन्वय रहने से विवेकयुक्त निर्णय करती और उन्हे साहसपूर्वक अपनाने योग्य आत्मबल उत्पन्न करती है। इस प्रेरणा का उदय हो ने पर जो कार्य सुविधा सम्पन्न नही कर पाते उसे अभावग्रस्त और कठिनाइयो मे उलझे लोग कर गुजरते हैं। परन्तु ढर्रे का जीवन जी रहे जन सामान्य को देखकर अनायास ही यह प्रश्न उठता है कि नवयुग की स्वर्गीय परिस्थितिया विनिर्मित करने वाले देव मानव आखिर आएगे कहा से ? वे क्या सोचेगे ? क्या करेगे ? आज के प्रचलित ढर्रे मे हेरफेर करना उनके लिए किस प्रकार सम्भव होगा ? यह जानने की सहज जिज्ञासा उठती है। क्योकि सोचा यह जाता है कि "स्वार्थपरता सुविधापरस्ती और महत्वाकाक्षाओ की गुलामी छोडना किसी के लिए सम्भव नही है। बातो का जमा खर्च करना पढना लिखना एक बात है और आदर्शो को जीवन मे उतारना दूसरी। कल्पना की उडाने तो कोई भी भरता रह सकता है।"

भारत को 'भारत' कहिए 'इण्डिया' नहीं

भारतीय सस्कृति मे शब्द ब्रह्म कहा गया है। शब्द की अपनी शक्ति होती है उसकी आत्मा होती है हम जिस चेतना सम्पन्न नाम को पुकारते हैं उसका प्रभाव मन पर होता है जैसे "सज्जन" कहते ही भले पुरुष की कल्पना साकार होती है।

"भारत" का शाब्दिक अर्थ **ज्ञान से युक्त अथवा ज्ञान की खोज करने वाला देश।** भारत शब्द उस महत्ती सस्कृति का चित्र हमारे मानस पटल पर उभरता है जो अतिसमृद्ध थी प्रत्येक दृष्टि से सम्पन्न और आदर्शो पर आधारित थी वह विश्वभर मे ज्ञान विज्ञान मे शिखर पर थी। वह सस्कृति दर्शन आध्यात्मिकता से पूर्ण सार्वभौम चेतना आशा से पूर्ण मानवता सत्यनिष्ठा समन्वय और एकता की सन्देश वाहिका थी।

यह सस्कृति आत्मा परमात्मा की एकता के साथ आनन्द देती थी उसके चिन्तन से गौरव की अनुभूति होती है उसके सम्मुख विश्व सिर झुकाता था। उसके वन्दनीय साहित्य से विश्व के अनके देशो ने अपनी ज्ञान पिपासा शान्त की उस पर शोधकर उसे हृदय और मस्तिष्क से शिरोधार्य किया।

दूसरी ओर "इण्डिया" शब्द मे कई शताब्दियो की दासता राष्ट्र के इतिहास के काले पृष्ठों मे वर्णित पीडा और शोषण के साथ राष्ट्र की महत्ती सस्कृति को खाओ पीयो और मौज करो की विचारधारा और 'फूट डालो और राज करो की नीति भौतिक होड और राष्ट्रप्रेम से विमुख हो वन्दनीया मातृभूमि से टूटने की प्रक्रिया हमारी निर्बलता और स्वार्थ को उभारकर हमे निराशा और पतन के रास्ते पर ले जा रहा है। क्या हम इसी अधोमुखी गति पर चले ?

नहीं अब समय आ गया है हम जागे और सोई खोई शक्ति पहचाने। फलत उज्ज्वल पथ पर चलकर "भारत" शब्द अपनाए। अपना पक्ष पहचान कर ही "भारत" के प्रयोग से विज्ञान के क्षेत्र मे अग्रणी विश्वगुरु हो शस्त्र और शास्त्र मे आत्मनिर्भर स्वाभिमानी अपूर्वदानी शक्तिशाली दायावान और महाप्रतापी बने।

"इण्डिया" शब्द **नकारात्मक चेतना का प्रतीक है,** वह हमारी निर्बलता अवगुणो निराशा धूर्तता को उभारता है। फलत हम उस सस्कृति से जुडे और उसे विकसित करे जो भारत आत्मनिर्भर मनसा स्वाधीनकर पुन विश्वगुरु बनाने मे समर्थ है। यह निर्विवादित तथ्य है कि भारत मे किसी वस्तु का अभाव नहीं है अभाव है तो अपने अतीत से जुडने और अपनी महत्ती सस्कृति को अपनाकर उन सभी तत्वो के परित्याग की जो हमे निष्ठावान सच्चा सात्विक मानव बनने मे बाधक है।

अत अपनी भारतभूमि को "भारत" कहिए "इण्डिया" नहीं।

योगमजरी से साभार

आर्यसमाज, लल्लापुरा, वाराणसी का ६५वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज लल्लापुर का ६५वा वार्षिकोत्सव बडे ही धूमधाम से भव्य रूप मे २० दिसम्बर से २३ दिसम्बर २००१ तक बिक्रीकर कार्यालय का प्रागण चेतगज मे मनाया गया। काशी की प्रख्यात विदुषी डॉ० माधुरी रानी प्रवक्ता नित्यानन्द वेद महाविद्यालय वाराणसी के पौरोहित्य मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। देश के विभिन्न अचलो से आए वैदिक विद्वानो एव भजनोपदेशको ने सत्सग की जो गगा बहायी उसमे स्नान करके आर्यजन बहुत ही धन्य हुए। प० महावीर मुमुक्षु, दर्शनाचार्य मुरादाबाद ने वैदिक सिद्धान्तो को बडे ही सरल शब्दो मे प्रस्तुत करके जन मानस को आकर्षित किया। आचार्य डॉ० धर्मपाल गुरुकुल महाविद्यालय पूठ गाजियाबाद का प्रेरणादायी ओजस्वी प्रवचन बहुत ही प्रभावशाली रहा। डॉ० ज्वलन्तकुमार शास्त्री अमेठी ने अपने ज्ञानवर्धक शोधपरक प्रवचन से वैदिक महोत्सव मे नये सन्दर्भों पर विचार व्यक्त किए। श्री ओमप्रकाश वर्मा रेडियो सिगर यमुनानगर हरियाणा श्री सत्यप्रकाश आर्य अदलहाट मिर्जापुर श्री लालमणि सिह सोनभद्र द्वारा भजनोपदेश से श्रोतागण मन्त्रमुग्ध से हो गए। श्री रामाधार शास्त्री मिर्जापुर का प्रवचन बडा ज्ञानवर्धक रहा।

हम उत्सव पर आयोजित महिला सम्मेलन अति विशिष्ट कार्यक्रम रहा। आचार्या सरस्वती देवी वाराणसी की अध्यक्षता मे यह महत्वपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसकी सयोजिका डॉ० माधुरी रानी रही। श्रीमती विद्यातमा प्रकाश काशी हिन्दू विश्वविद्यालय श्रीमती उर्मिला आर्या के प्रवचन एव विचार महिलाओ के लिए अति प्रेरणादायी रहे। महर्षि दयानन्द बाल विद्यालय भोजूबीर की छात्राओ के विशेष सास्कृतिक कार्यक्रम को महिलाओ एव बच्चो ने खूब सराहा। आकाशवाणी वाराणसी ने अपने केन्द्र से इसे प्रसारित किया। आचार्या सरस्वती देवी ने कहा कि नारी का मुख्य कर्त्तव्य है परिवार को जोडकर रखना। सम्मेलन की सयोजिका डॉ० माधुरी रानी ने कहा नारी परिवार की धुरी है और उसी पर सारा परिवार टिका है।

इस वैदिक महोत्सव का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम रहा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस। प० महावीर मुमुक्षु की अध्यक्षता मे यह कार्यक्रम प्रभावशाली ढग से मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री आर०के० सिह आयकर आयुक्त वाराणसी ने स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को एक इतिहास की बडी घटना बताया तथ आर्यों को उनके जीवन से प्रेरणा लेने को कहा। श्री राजेन्द्र सिह शास्त्री काशी हिन्दू विश्वविद्यालय महात्मा गाधी काशी विद्यापीठ कर्मकाण्ड विभाग के विभागाध्यक्ष श्री जयप्रकाश पाण्डेय ने आर्यों के मास खाने के इतिहासकारो के विचारो का खण्डन करते हुए कहा कि ऐसा कहीं भी वेदो मे नहीं है। देश के प्रख्यात नवगीतकार प० श्रीकृष्ण तिवारी ने कहा आर्यसमाज **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** का सिद्धान्त कायम किया। श्री ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी ने कहा कि स्वामी दयानन्द के सूत्र स्वरूप विचारो को लेकर स्वामी श्रद्धानन्द जी आगे बढे। उन्होने अछूतोद्वार के लिए काग्रेस पार्टी से त्यागपत्र देकर शुद्धि आन्दोलन चलाया। इससे अनेक मुसलमान हिन्दू बन गए।

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी का यह ६५वा वार्षिकोत्सव वाराणसी नगरी मे छाया रहा। समाचारपत्रो मे आर्यसमाज के समाचार को पर्याप्त स्थान दिया।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on ३१ जनवरी/१ फरवरी/ २००२ दिनांक २७ जनवरी से ३ फरवरी २००२ Lice... without prepayment Licence No. U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 ३१ जनवरी/१ फरवरी/ २००२ पूर्व भुगतान किए ... लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

पृष्ठ ५ का शेष भाग

राष्ट्रवादी विचारों पर रोक लगाने ....

धर्मान्तरण कार्यों मे लिप्त स्टीफन का वध होने के उपरान्त अग्निवेश देश के कई हिस्सो मे ईसाइयो द्वारा आयोजित शोकसभाओं में भाषण देने के लिए पहुचता रहा। इसके कुछ भाषणो को तो मुम्बई के कुछ ईसाई सगठनो ने कैसेट बनवाकर हजारों की सख्या में बटवाया। क्योंकि उसमे ईसाइयों का समर्थन था और हिन्दुओ का घोर विरोध था।

कै० देवरत्न आर्य ने कुछ वर्ष पूर्व उदयपुर के नवलखा महल मे आयोजित सम्मेलन का उल्लेख करते हुए कहा कि अग्निवेश ने इस सम्मेलन में आर्यसमाजियों से आह्वान किया कि वे अपनी बेटियो का निकाह मुसलमानों से करवाए। विश्व विख्यात वैदिक विद्वान प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु ने उसी समय मच से अग्निवेश को ललकारते हुए कहा कि वैदिक धर्म की वेदी से ऐसे समाज विरोधी वक्तव्य देना घोर निन्दनीय है। आर्यजनता ने भी अग्निवेश के इन विचारों का घोर विरोध किया।

कैप्टन आर्य ने हैदराबाद के एक सम्मेलन का भी उल्लेख किया जो निजाम की क्रूरताओं और वैदिक धर्मियों के आर्य सत्याग्रह की स्मृति मे आयोजित किया गया था। वहा पर भी अग्निवेश दो मुसलमान मौलवियो को लेकर मच पर आ गया और कहा कि जब मैं दुबई गया तो जामा मस्जिद के इमाम ने दुबई के मौलवियो को फोन करके मेरी आवभगत करने को कहा। इस प्रकार आज जब मैं हैदराबाद आया तो ये दोनो मौलवी मुझे हवाई अड्डे पर लेने पहुचे क्योकि इन्हे जामा मस्जिद के इमाम के निर्देश मिले थे। इस प्रकार के कई भाषण अग्निवेश कई समारोहों में अक्सर व्यक्त करता है।

विदेशो के आर्यवेत्ता ईसाइयत और इस्लाम के इस षडयन्त्रकारी जाल को समझ चुके हैं। आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यकर्ता को वैदिक धर्म विरोधी और राष्ट्रद्रोही षडयन्त्रों से सावधान रहना चाहिए। आर्यसमाज के नाम पर इन षडयन्त्रो को कदापि बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

कै० आर्य ने कहा कि आर्यसमाज की स्थापना के पीछे चरित्र निर्माण और राष्ट्रसेवा के सकल्प प्रमुख थे। आर्यो पर लोग हर दृष्टि से विश्वास किया करते थे। वह एक स्वर्णिम युग था। हमे उसी स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए। हमारी छवि ऐसी होनी चाहिए जिसमें किसी प्रकार के खोट की सम्भावना न हो।

उन्होने कहा कि राष्ट्रीय एकता के लिए हमे ऐसे गम्भीर प्रयास करने चाहिए जिससे हमारी पिछडी जातियों के लोग भी आर्य होने पर गौरव महसूस करे। भारत मे लगभग ८ करोड पिछडी जाति के लोग हैं। उन्हें साथ लेकर चलने के लिए हमे विशेष कार्यक्रम बनाने चाहिए। ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्यो का पालन करके ही हम सच्चे आर्य ...य भी बन सकते हैं और आर्यों के निर्माण मे भी सहायक हो सकते हैं।

कार्यकर्त्ता सम्मेलन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य द्वारा बगाल के विभिन्न क्षेत्रो से आए आर्यसमाज के अधिकारियो को सम्मानित किया गया।

इस समारोह को आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के प्रधान श्री मोहनलाल तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री भूपनारायण शास्त्री ने भी इस सम्मेलन को सम्बोधित किया।

इस समारोह का कुशल सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के मन्त्री एव सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने किया।

इस पत्र में प्रकाशित लेखों और विज्ञापनों के सम्बन्ध में

साप्ताहिक आर्यसन्देश में छपे लेखों तथा विचारो से सम्पादक मण्डल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है। यह साप्ताहिक पूर्णत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नीतिगत एव सैद्धान्तिक पक्ष को ही उजागर करता है। परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों में वैदिक विद्वानो के विचारार्थ प्रस्तुत करने के लिए अन्य सामग्री भी प्रकाशित की जा सकती है। साप्ताहिक आर्यसन्देश में प्रकाशित दान आदि की अपीलों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का निवेदन या निर्देश न समझा जाए।

— सम्पादक



प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित **सार्वदेशिक प्रेस,** १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५, अक १३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, ४ फरवरी से १० फरवरी २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

ऋषि पर्व (महर्षि दयानन्द जयन्ती) एवं ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव) पर विशेष कार्यक्रमों की अपील

समस्त आर्य बन्धुओ से सूचनार्थ निवेदन है कि इस **ऋषि पर्व** अर्थात **आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी** का **जन्म दिवस फाल्गुन बदी दशमी, विक्रमी सम्वत २०५८** तदनुसार **८ मार्च, २००२ (शुक्रवार)** एव **ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव)** अर्थात **महाशिवरात्रि फाल्गुन बदी १४ सम्वत् २०५८** तदनुसार **१२ मार्च २००२ (मगलवार)** को है। अत इन पावन पर्वो **(ऋषि पर्व एव ज्योति पर्व)** को बडी धूमधाम से समारोहपूर्वक अपने अपने क्षेत्र मे मनाए।

हमारा जीवन आज यदि समाज के अन्य लोगो की अपेक्षा श्रेष्ठ है तो वह केवल स्वामी दयानन्द जी के उच्च विचारो के मार्गदर्शन के ही कारण है। स्वामीजी ने यह ज्ञान हम तक पहुचाया है इसके लिए हम सदैव उनके ऋणी रहेगे। इस ऋण को उतारने का एक ही उपाय है कि हम आजीवन उस महान ऋषि के विचारो को अधिकाधिक जनता तक पहुचाकर अन्य बन्धुओ को भी सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयासरत रहे। आर्यसमाज की सदस्य सख्या बढाना हमारा लक्ष्य नहीं। हमारा एकमात्र उद्देश्य है अधिक से अधिक लोगो और अन्तत समूचे विश्व को **आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाना – कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।**

ऋषि पर्व (जन्मदिवस समारोह) एव ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव) पर स्थानीय परिस्थितियो के अनुसार एक या अधिक निम्न गतिविधियो का समावेश किया जा सकता है –

१ **बृहद यज्ञो का आयोजन** – (यदि सम्भव हो तो पार्को अथवा अन्य सावजनिक स्थलो पर) जिसमे आर्य सदस्यो आदि के अतिरिक्त जनसामान्य को भी प्रेमपूर्वक आमन्त्रित किया जाए। सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त **ऋषि लगर जलपान, प्रसाद** आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगो मे करे।

२ **प्रवचनो की व्यवस्था** – यज्ञ के दौरान तथा बाद मे आर्य उपदेशको तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावो के प्रवचन अवश्य आयोजित करे जिससे जन सामान्य को **वैदिक, आध्यात्मिक** तथा **आर्य (श्रेष्ठ) विचारो** से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।



३ **गोष्ठियो का आयोजन** – अपने अपने क्षेत्र के अलग अलग वर्गो जैसे युवाओ महिलाओ वृद्धो बच्चो आदि के लिए अलग अलग **विचार विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम गोष्ठियो या लघु सम्मेलनो** अथवा **कार्यशालाओ** के रूप मे आयोजित करे। **'सुखी परिवार कैसे रहे'** इस विषय पर यदि गोष्टिया आयोजित की जाए तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

४ **सत्यार्थ प्रकाश कथा** – इस कथा का भी आयोजन करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश जैसे अनुपम ग्रन्थ के विचारो का लाभ लोगो को **धार्मिक, सामाजिक पारिवारिक, राष्ट्रीय** तथा **राजनैतिक** उत्थान के लिए मिल सके।

५ **दीपमाला अथवा रोशनी** – आर्यसमाज भवनो पर **विशेष रोशनी का प्रबन्ध** सम्भव हो तो **ऋषि पर्व** से **ज्योति पर्व तक** सभी आर्यजन **अपने अपने घरो** को भी **दीपावली** की तरह सजाए।

६ **प्रभात फेरी** – ऋषि पर्व से एक सप्ताह पूर्व **प्रभात फेरियो** के द्वारा **दयानन्द** एव **प्रभु भक्ति** के भजन गाते हुए भी प्रचार करे।

७ **वाक एव भाषण प्रतियोगिताए** – अपने अपने क्षेत्र मे **वाक/भाषण** या **चित्रकला प्रतियोगिताए** आयोजित करके बच्चो मे **सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार की तरह वितरित करें।** आर्य शिक्षण सस्थाओ को इस प्रकार के आयोजन अपने विद्यालय के बच्चों के मध्य अवश्य आयोजित करने चाहिए।

८ **आर्ष साहित्य** – क्षेत्रीय जनता को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारा से परिचित कराने हेतु **अल्पमूल्य का लघु साहित्य स्वामी दयानन्द के चित्रो सहित कलेण्डर** आदि भी स्थानीय जनता मे मुफ्त वितरित करे।

९ **आत्मावलोकन** – आर्यसमाज के समस्त सदस्यो की एक विशेष बैठक आयोजित करके **'आत्मावलोकन'** अवश्य करे कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधिया सन्तोषजनक हैं ? क्या उससे और अधिक कुछ किया जा सकता है ?

१० **शुभकामना सन्देश** – ऋषि पर्व एव ज्योति पर्व पर अपने अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित नागरिको राजनीतिक एव धार्मिक नेताओ तथा आपस मे शुभकामना सन्देश भी भेजे। इससे सम्बन्धित दीवार पोस्टर भी अपने अपने क्षेत्र मे चिपकवाए

उपरोक्त के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार का कोई आयोजन आपके मस्तिष्क मे उठे तो उसे हमे भी लिखकर भेजे। जिससे विश्व के अन्य आर्यो को भी उससे अवगत कराया जा सके।

कृपया अपने आयोजनों की विस्तृत रिपोर्ट स्थानीय पत्र पत्रिकाओ तथा हमे अवश्य भेजें।

– निवेदक –

वेदव्रत शर्मा **वैद्य इन्द्रदेव**
सभा प्रधान सभा महामन्त्री

गुरुकुल कांगडी हरिद्वार के स्नातक बन्धुओं से विनम्र निवेदन

पर्याप्त समय से यह आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के स्नातक बन्धु आपस मे मिलकर बैठे। गुरुकुल एव अन्य ज्वलन्त समस्याओ के विषय मे विचार-विमर्श किया जाए। उसके लिए शीघ्र ही बैठक बुलाने का विचार है। स्थान और समय की सूचना बाद मे दी जाएगी।

अत दिल्लीवासी सभी स्नातक बन्धुओ से निवेदन है कि वे अपने **निवास का पता** तथा **दूरभाष नम्बर** निम्न पते पर देने का कष्ट करे। बैठक के लिए कोई सुझाव भी दे सके तो अच्छा रहेगा।

– निवेदक –

डॉ० रघुवीर वेदालकार
बी० २६६,
सरस्वती विहार, दिल्ली,
दूरभाष ७०११३१७

डॉ० महेश विद्यालकार
बी०/जे०-२६,
पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली
दूरभाष ७४६७४४६

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अत्यावश्यक बैठक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की एक **अत्यावश्यक अन्तरग बैठक रविवार १० फरवरी दोपहर ३ बजे से आर्यसमाज मन्दिर १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली** पर आयोजित की गई है। समस्त अन्तरग सदस्यो को आमन्त्रण भेज दिए गए हैं।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा जी ने कहा है कि इस बैठक मे विशेष रूप से ८ और ६ **मार्च** को दिल्ली मे आयोजित होने वाले कार्यक्रमो तथा उनसे भी विशेष **अप्रैल माह मे अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन** के आयोजन की रूपरेखाओ पर विचार विमर्श किया जाएगा। अत दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो के सक्रिय नेता एव कार्यकर्ता इस बैठक मे सादर आमन्त्रित हैं।

इनके अतिरिक्त दिल्ली सभा के साथ सम्बद्ध सभी समितियो के सयोजक पदाधिकारी और सदस्यगण तथा दिल्ली सभा के अन्तर्गत अथवा आर्यसमाजों द्वारा सचालित शिक्षण सस्थाओं के प्रमुख अधिकारी भी इस बैठक में विशेष रूप से आमन्त्रित हैं।

कृपया समय से बैठक में उपस्थित होकर अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त कर कृतार्थ करें।

– **वैद्य इन्द्रदेव**, महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

वेदों में वेदाध्ययन का फल

– स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती

वेद किसी व्यक्ति विशेष की सम्पत्ति नही वेद तो सार्वभौम और मानवमात्र के लिए है। प्रभु उपदेश देते है कि इस वेदरूपी कोश को सकुचित मत करो अपितु जैसे मै मनुष्य मात्र के लिए इसका उपदेश देता हू इसी प्रकार तुम भी मनुष्य मात्र के लिए इसका उपदश करो। ब्राह्मण और क्षत्रिय वश्य और शूद्र मित्र और शत्रु अपना और पराया कोई भी वद ज्ञान से वचित नही रहे। जो मनुष्य वेद का प्रचार करते है वे विद्वानो के प्रिय है दानशील मनुष्यो के प्रिय है और उनकी सभी कामनाए पूर्ण होती ह। वद की शिक्षाए अत्यन्त गहन गम्भीर और उदात्त ह। वदध्ययन करने वाले का जीवन वेद के अनुकूल हो। कैसा हो वह जीवन ? १ वदाध्ययन करने वाले किसी की हिसा नही करते। मन वचन और कर्म से किसी भी प्राणी के प्रति वैर की भावना नहीं रखते। २ वैदिकधर्मी फूट नही डालते और न ही किसी व्यक्ति को मोहित कर प्रलाभनो मे फसाते है। ३ वेदभक्त मन्त्रो के अनुसार वदिक शिक्षाओ के अनुसार अपना जीवन बनाते है। वेद की विधि और निषेधो का पालन करते है। ४ वदभक्त सहायको के साथ भी प्रेम और समता का व्यवहार करते है। ५ वेदिकधर्मी आलसी नही होता अपितु वह सदा उद्योग करना है। वेद का आदेश है हमारे पुत्र वेद सुने –

उप न सूनवो गिर शृण्वन्त्वमृतस्य ये।

सुमृळीका भवन्तु न ।। *(यजु० ३३। ७७)*

अर्थ – (ये) जो (न) हमारे (सूनव) पुत्र है वे (अमृतस्य) अमर अखण्ड अविनाशी प्रभु की (गिर) वेदवाणिया (श्रृण्वन्तु) सुने और उन्हे सुनकर (न) हमार लिए (सुमृळीका) उत्तम सुखकारी (भवन्तु) हो।

शिक्षा यह ह कि प्रत्येक घर म प्रतिदिन वेद पाठ हो। जब हमारे घरो मे यज्ञ और हवन होग स्वाहा ओर स्वधाकार की ध्वनि उठेगी वदो का उदघोष होगा तभी हमारे पुत्र वेद ज्ञान को सुनेग। वेद सभी ज्ञान ओर विज्ञान का मूल है और अखिल शिक्षाओ का भण्डार है। जब हमारे पुत्र वेद क इस प्रकार के मन्त्रो सुनेगे

अनुव्रत पितु पुत्रो मात्रा भवतु सम्मना ।
(अथर्व० ३। ३०। २)

पुत्र पिता के अनुकूल चले ओर माता के साथ समान मनवाला हो। तो यह शिक्षा उनके जीवन मे आएगी। इन वेदिक शिक्षाओ पर आचरण करते हुए वे अपने माता पिता के लिए परिवार समाज ओर राष्ट्र के लिए सुख शान्ति मगल और कल्याण दे सकेगे।

वेदाध्ययन का फल –

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभि सभृत रसम
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीर सर्पिर्मधूदकम।।
(ऋग्वेद ९। ६७। ३२)

अर्थ – (य) जो व्यक्ति उपासक (ऋषिभि) ऋषियो द्वारा (सम भृतम) धारण की गई (पावमानी) अन्त करण को पवित्र करने वाली (रसम) वेद की ज्ञानमयी ऋचाए (अध्येति) अध्ययन करता है (सरस्वती) वेदवाणी (तस्मै) उस मनुष्य के लिए (क्षीरम) दूध (सर्पि) घी (मधु उदकम) मधुर जल आदि (दुहे) देती ह।

वेदाध्ययन का फल मन्त्र मे वेदाध्ययन से मिलने वाले फला का वर्णन ह। वेद का अध्ययन और उसके अनुकल आचरण करने से मनुष्य को जीवन निवाह क लिए सभी उपयागी वस्तुए मिलती है। जो व्यक्ति वेद का स्वाध्याय करते हैं उन्हे दूध और घी आदि शरीर के पोषक तत्वो की कमी नही रहती। वेदिक विद्वान जहा जात है वही घी दुग्ध ओर शर्बत आदि से उनका स्वागत ओर सत्कार हाता है। जीवन की आवश्यकताओ के लिए प्रत्येक व्यक्ति वेद का अध्ययन करे

वेद मन्त्रो पर आचरण करे

मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्य इव ततन ।
गाय गायत्रमुक्थ्यम।। *(ऋग्वेद १। ३८। १४)*

अर्थ – हे विद्वन ! तू (श्लोकम) वेदवाणी (आस्ये) अपने मुख मे (मिमीहि) भर ले फिर वह वेदवाणी (पर्जन्य इव ततन) मघ बादल क समान गर्जता हुआ दूर दूर तक विस्तीर्ण कर उसका सर्वत्र उपदेश कर (गायत्रम) प्राणो की रक्षा करने वाल (उक्थ्यम) वेद मन्त्र (गाय) स्वय गाओ स्वय पढो और दूसरो को पढाओ।

प्रस्तुत मन्त्र मे मनुष्यमात्र के लिए अनक सुन्दर शिक्षाए है। १ प्रत्येक मनुष्य वेद मन्त्रो से अपना जीवन सुधारे। मन्त्रो को पढ पढकर उन्ह कण्ठस्थ करे। २ वेद पढकर जो ज्ञानामृत मिले उसे अपने तक ही सीमित न रखे। अपितु जेसे बादल समुद्र जल लेकर उसे गम्भीर गजन क साथ सर्वत्र बरसा है उसी प्रकार मनुष्य भी वेदरूपी समुद्र के रत्न और मोतियो का लखन ओर वाणी से प्रचार करे। ३ वेद म आयुवृद्धि स्वास्थ्यरक्षा और प्राणशक्ति बनाने के सहस्रो मन्त्र है शरीर रक्षा क एसे मन्त्र स्वय पढ और दूसरो को पढाए।

महर्षि दयानन्द न इसी मन्त्र के आधार पर आर्यसमाज के तृतीय नियम की प्रस्तुति इस प्रकार की है – **वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परमधर्म है।**

– आर्ष गुरुकुल कालवा जिला जीन्द (हरियाणा)

बोध कथा

असह्य वेदना में भी प्रभु के प्रति सच्ची निष्ठा

२९ सितम्बर १८८३ को स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने रसोइए से दूध लेकर पिया और सो गए। अर्द्धरात्रि को तीव्र उदर पीडा हुई। तीन बार उल्टिया हुई। महाराज की निद्रा भग हो गई। ३० सितम्बर को वह विलम्ब स उठे। उठते ही उन्हे उल्टी हुई। उन्ह सन्देह हो गया कि किसी ने दूध मे विष मिलाकर दिया है। विष मिला दूध पिलाने वाला रसोइया धौल मिश्र या जगन्नाथ – इस बारे मे कई सम्मतिया है। प्रचलित धारणा है कि उनके रसोइए जगन्नाथ ने वेश्या नन्ही जान द्वारा प्रलोभन दिए जाने पर स्वामीजी को दूध मे विष मिलाकर दिया। प० नानूराम और जोधपुर के इतिहासवेत्ता देवीदास की मान्यता हे नन्ही जान ने माली को प्रलोभन दिया और माली ने स्वामीजी के रसाइए कलिया से विष दिलवाया। कहते है ज्ञात होन पर महाराज ने उसे क्षमा कर कुछ रुपये देकर जोधपुर राज्य की सीमापार नेपाल जाने का आदेश दिया। पापी ने अपना पापकर्म नही छोडा परन्तु सन्यासी ने विष देकर मारने वाले को भी दया का पात्र समझ जीवन दान दिया। तीव्र शूल अतिसार के कारण महाराज के गले जीभ तालू ओर मुख मे छाले पड गए शूल मे कमी नही हुइ अवस्था गम्भीर हो गई। अनेक चिकित्सको ने चिकित्सा की पर लाभ नहीं हुआ। पहले उन्हे आबू रोड ले जाया गया लाभ न देखकर २१ अक्तूबर को उन्हे अजमेर ले जाया गया। स्वास्थ्य मे उतराव चढाव देखकर सभी चिन्तित हो गए। दीपमालिका के दिन दशा गम्भीर हो गइ। भक्त ने पूछा **आप कहा है ?** महाराज का उत्तर था – **ईश्वरेच्छा मे।**

स्वामीजी ने भक्त आत्मानन्द ने पूछा – **तुम क्या चाहते हो ?** आत्मानन्द ने कहा – **ईश्वर से प्रार्थना है कि आप अच्छे हो जाए।** महाराज ने कहा – **यह देह पाचभौतिक है इसका क्या अच्छा होगा।** महाराज ने कहा – **भक्त पुरुषो साहस रखो यह शरीर नाशवान है।** महाराज की जिज्ञासा पर भक्त ने सूचना दी कार्तिक मास की अमावस्या है। महाराज ने वेदमन्त्रो का पाठ किया ईश्वर स्तुति की और ओ३म का उच्चारण कर कहा – **हे दयामय ईश्वर तेरी यही इच्छा है तेरी इच्छा पूर्ण हो अदभुत तेरी लीला है** और दीपमालिका की सन्ध्या को ज्योतिर्मय प्रभु की शरण म चल गए।

भक्तजन देखते रह गए। पाश्चात्य विज्ञान के विद्यार्थी प० गुरुदत्त को इस समय तक ईश्वर मे विश्वास कम था भक्तजनो के साथ योगी को असह्य वेदना और अर्न्तदाह मे भी प्रभु भक्ति मे न्योछावर दखकर वह ईश्वर विश्वासी हो बन गए। सभी भक्तो की आखे आसुओ से भर गई परन्तु यागी की वेदनापूर्ण विदाई मे भी उनकी परमेश्वर मे आस्था देखकर सभी के हृदयो मे अदभुत ज्योति का प्रवेश हुआ। यद्यपि सबके घरो मे उस समय तक अन्धकार था पर सबके हृदय म महर्षि ने दीपावली और प्रभु की उज्ज्वल ज्योति प्रदीप्त कर दी थी।

– नरेन्द्र

दुरित दूर करे मातृभूमि के साथ हम भी बढे राक्षसो को भस्म कर दे

दुरितानि परासुव । *यजु० ३० ३*

हे देव दुरितो दुर्गुणो – पाप ताप दूर करे।

सा नो भूमि र्वर्धयद् वर्धमाना। *अथर्व० १२/१/१३*

मातृभूमि समुन्नत हो हम भी प्रगति करे।

प्रतिदह यातुधानान्। *अथर्व० १/२८/२*

राक्षसो को भस्म कर दे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

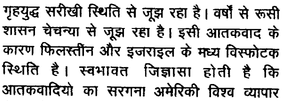
सम्पादकीय अग्रलेख

आतंकवाद-अराजकता-निष्क्रियता का अन्त कर : सच्चा राष्ट्र निर्माण करें

भारत राष्ट्र को स्वाधीन हुए ५५ वर्ष व्यतीत हो चुके है राष्ट्र मे गणतन्त्री व्यवस्था स्थापित हुए पाच चार दशक से अधिक समय व्यतीत हो चुका है। पिछले वर्ष विदेशी आतकवादियो ने विश्व के सबसे साधन सम्पन्न अमेरिकी राष्ट्र के न्यूयार्क स्थित मुख्य व्यापार केन्द्र और वहा की राजधानी मे सेना के मुख्यालय पर सीधा आक्रमण कर क्षति और ध्वस का वीभत्स काण्ड रचा था। पिछले ही वर्ष आतकवादियो ने भारतीय राष्ट्र की गरिमा और शक्ति के स्त्रोत ससद पर सीधा आक्रमण करने का दुस्साहस किया था। यह ठीक है कि भवन के रक्षको के सतर्कता से कार्य करने से शासन और राष्ट्र प्रतिनिधि सुरक्षित बच गए। मोका मिलते ही इन आतकवादियो ने अमरिकी सचार केन्द्र पर भी हमला किया है। आज आतकवाद ने विश्व के अनक क्षेत्रो को अपना लक्ष्य बनाया है। हमारे दक्षिण मे श्रीलका इसी आतकवाद के कारण गृहयुद्ध सरीखी स्थिति से जूझ रहा है। वर्षो से रूसी शासन चेचन्या से जूझ रहा है। इसी आतकवाद के कारण फिलस्तीन और इजराइल के मध्य विस्फोटक स्थिति है। स्वभावत जिज्ञासा होती है कि आतकवादियो का सरगना अमेरिकी विश्व व्यापार केन्द्र और पेटागन सरीखे सरीखे सैनिक मुख्यालय पर हमला करने पर भी अमेरिकी वैमानिक हमले के बावजूद पकडा नही जा सका है। आज आतकवाद विश्व के अनेक भागो मे पनप रहा है। गहरी छानबीन से यह कटु तथ्य भी उभरा है कि जहा आतकवाद विश्व के लिए भीषण सकट है वहा विश्व के अनेक देशो मे व्याप्त अराजकता भी कम घातक नही है। प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपयी ने पिछले दिनो स्वीकार किया है कि अराजकता आतकवाद से कम घातक नही है। उनके चुनाव क्षेत्र लखनऊ मे हत्याए लूटमार दूसरे जघन्य अपराध कश्मीर की राजधानी श्रीनगर के मुकाबले कम नही है। इसी तरह मुम्बई कानपुर आदि नगरो मे स्थिति कुछ अच्छी नही है। बिहार पूर्वी उत्तर प्रदश आदि म गुण्डाराज का ही बोलबाला हे। वहा जातियो पर आधारित सेनाए एक दूसरे का सहार कर रही हैं। आन्ध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रो मे पीपुल्स वार ग्रुप का दबदबा है। अनेक प्रयासो क बावजूद कर्नाटक तमिलनाडु और केन्द्र की सरकारे मिलकर वीरप्पन को पकडने मे विफल रही है। देश के अनेक भागो मे नक्सलवाद का विस्तार हुआ है। अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रो मे जिसकी लाठी उसकी भस की स्थिति है। इस प्रकार जहा देश को बाह्य और आन्तरिक आतकवाद से खतरा है वहा उसे अराजकता और निष्क्रियता से भी कम खतरा नही हे। अभी इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने शासन की तीखी आलोचना की है। उसने कहा है कि कोई भी धन रखने वाला मजबूत स्थिति वाला व्यक्ति अपराध करके भी कानून से बच जाता है। उत्तर प्रदेश शासन की रपट मे कहा गया है कि चुनाव मे उम्मीदवार अपराधी सगठनो से आ रहे है वे अपने अपराधी भूमिका के बावजूद विधान सभाओ और ससद के लिए चुन गए है।

एक हत्या के मामले मे एक प्रार्थी ने न्यायिक हस्तक्षेप की माग की थी कि सारा मामला पुलिस ने रफा दफा कर दिया है। न्यायालय ने अपने निणय मे कहा है कि पुलिस द्वारा की सोद्देश्य निष्क्रियता का वह मौन प्रेक्षक नही रह सकता। उसमे शासन की तीखी आलोचना की है। यह चिन्ता ओर दु ख की बात है कि देश के अनेक भाग जहा आतकवाद और अराजकता से पीडित है वहा वे शासन की सोद्देश्य निष्क्रियता के भी शिकार हैं। ऐसे मे सभी देशवासियो प्रमुख राष्ट्र नेताओ और जन प्रतिनिधियो का यह गम्भीर उत्तरदायित्व हे कि वे सब मिलकर और अपनी निजी स्थिति मे देश मे व्याप्त आतकवाद अराजकता और शासन एव जनता की निष्क्रियता का अन्त कर सच्चे राष्ट्र निर्माण मे अपनी सच्ची भूमिका प्रस्तुत कर सके। साधनो धन एव किसी भी भौतिक समर्थन के अभाव मे भी विदेशी शासन के विरुद्ध स्वाधीनता सग्राम का उदघोष कर उसमे सफलता पाई गई थी तो केवल सत्य अहिसा और जन जन के सामूहिक सच्चे प्रयत्नो और सामूहिक सगठित्त प्रयास से। यह ठीक है कि ये देशभक्त सत्याग्रही विदेशी शासन के किसी भी प्रलोभन और शक्ति के सम्मुख कभी झुके नही। आज देश के अनेक भाग जिस प्रकार आतकवाद अराजकता और निष्क्रियता की कारण अन्याय और उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं उस स्थिति की उपेक्षा से देश के विघटन का सकट हो सकता है। ऐसे मे प्रत्येक जागरूक देशवासी को बिगडती हुई राष्ट्रीय स्थिति को सुधारने मे अपना व्यक्तिगत दायित्व समझना चाहिए। राष्ट्र मे बदला हुआ आतकवाद और अराजकता जहा सारे राष्ट्र के लिए विघातक है वहा उससे देश क छोटे बडे प्रत्येक देशवासी का भी अहित है। यह ठीक है कि विदेशी शासक देश छोडते समय उसके पश्चिमी और पूर्वी बाजू एक पृथक राष्ट्र के रूप मे विभक्त कर गए थे। १९७१ मे सघर्ष मे विजय के बावजूद एकता के सूत्र नहीं जोडे जा सके परन्तु अतीत की भूलो से हम अधिक सतर्क और सक्रिय होना पडेगा। हमारा राष्ट्र आतकवाद और अराजकता की चपेट मे न आए यह देखना शासन और जन जन का उत्तरदायित्व है वहा दश मे बदली हुई अराजकता से हमारा राष्ट्र और हिस्सो न बटे यह देखना शासन ओर प्रत्येक देशवासी का पुनीत उत्तरदायित्व हे।

प्रत्येक देशवासी को स्मरण रखना चाहिए कि हिमालय से लेकर दक्षिण मे सागर तक आर पूर्व पश्चिम म समुद्रो के मध्य अवस्थित वर्तमान भारतीय राष्ट्र अपनी प्राकृतिक सम्पदा भौगोलिक ससाधनो और एक अरब के लगभग देशवासियो के कारण आज भी विश्व के राष्ट्रो की तुलना मे अपनी राष्ट्रीय स्थिति के कारण अपना वर्तमान और भविष्य व्यवस्थित कर एक ऊची श्रेष्ठ भूमिका प्रस्तुत कर सकता है। यह सम्भव हे परन्तु उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रत्येक देशवासी और प्रत्येक क्षेत्र को अपने दुरितो दुर्गुणो और न्यूनताओ का यत्नपूर्वक अन्तकर अपना प्रदेश प्रदेश और राष्ट्र का सगठन सुदृढ करना होगा। हा उसके लिए जहा हमे विदेशी बाह्य शक्तियो के लक्ष्यो से यत्नपूवक बचना होगा वहा हमे अपने आन्तरिक दुर्गुणो अभावो विषमताआ का अन्तकर सभी आन्तरिक मतभेदो बुराइयो और अभावो का नाश करना होगा। पराधीनता का अन्तकर देश के स्वाधीनता सग्राम मे जिस प्रकार छोटे बडे सब देशवासी प्रत्येक बालक स्त्री पुरुष सगठित हुए थे आज आवश्यकता है हम देश से आतकवाद अराजकता और निष्क्रियता का अन्त करने के लिए छोटा बडा प्रत्येक राष्ट्रजन हरेक बच्चा नर नारी जागरूक हो। प्रत्येक को समझना होगा कि राष्ट्र ऐसी निष्क्रियता की स्थिति मे जूझ रहा है जब आतकवाद अराजकता और स्वार्थ के तत्व भारत को पुन विभाजित और पराधीन कर सकते है। ऐसे मे देश मे बढ रहे सकट और कठिन स्थिति का मुकाबला करने के लिए प्रत्येक राष्ट्रजन को जागरूक होना पडेगा। इस समय यदि देशवासी निष्क्रिय और उदासीन हुए तो सीमापार का आतकवाद प्रदेश मे बढती अराजकता और निष्क्रियता से देश के पुन विभाजित और पराधीन होने का सकट भी मण्डरा सकता है। ऐसी दु खद स्थिति कभी न आए उसके निर्धारण के लिए छोटे बडे प्रत्येक देशवासी को राष्ट्र के प्रति अपनी उपेक्षा निष्क्रियता का अन्तकर सच्चे सुदृढ भारत राष्ट्र के निर्माण मे अपना व्यक्तिगत और समूहिक उत्तरदायित्व प्रस्तुत करना होगा।



नैतिकता की लगाम

चक्का जाम हडताल तोड फोड और व्यर्थ के हो हुल्लड मे जिस प्रकार युवाशक्ति का दुरुप्रयोग हो रहा है वह चिन्ता का विषय है। इतिहास साक्षी है कि सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण का कठिन कार्य युवा शक्ति के माध्यम से ही सम्भव हुआ है। जब युवाशक्ति पर नैतिकता की लगाम होती है तब यह शक्ति राष्ट्र निर्माण करती है जब कि अमर्यादित भीषण विनाश का सृजन करती है। ११ सितम्बर और १३ दिसम्बर को अमेरिका मे ट्रेड सैण्टर पैंटागन और नई दिल्ली के ससद भवन पर हुए आक्रमण उसके नए प्रमाण हैं। आतकवादी कारनामे युवा शक्ति की निम्नतम स्थिति के उदाहरण है। युवाशक्ति का दुरुपयोग या सदुपयोग उसके प्रेरणास्रोतो पर निर्भर है। जहा उचित दिशा मिले वहा युवाशक्ति उसका सदुपयोग करती है दिशाहीन प्रयोग से समाज और मानवता को क्षति पहुचती है। समुचित शिक्षा प्रणाली से ही युवा शक्ति का समुचित दिशा निर्देश सम्भव है। शिक्षा के माध्यम से जब युवाशक्ति उच्च आदर्श प्राप्त करने का प्रयोग करती है तभी इस शक्ति का उचित दिशा मे प्रयोग सम्भव है।

– अवधेश तिवारी बादा उत्तर प्रदेश

फटे-पुराने नोट

रिजर्व बैक ने दस पाच रुपयो के नए नोट प्रसारित किए है दूसरी ओर नए सिक्को की कमी के कारण एक दो और पाच के सडे गले अधफटे नोट भी लाखो की सख्या मे बाजार मे प्रचलित है। धर्मस्थानो की दान पेटिया ऐसे ही नोटो से भर रही है। बैंक ऐसे नोट स्वीकार नहीं करते फलत विषम स्थिति हो गई है। इस बारे मे सरकार कोई दिशा निर्देश प्रचलित करे जिससे इन सडे गले नोटो से धार्मिक सस्थाओ को राहत मिल सके। ऐसे सडे गले नोट जो चलने योग्य नहीं है उन्हे सरकार वापस लेकर नए नोट वापस करे जिससे बाजार मे उनका प्रयोग न हो।

– सुरेन्द्र पाण्डेय रामायणी विरहाना रोड कानपुर

सामवेद से - परमेश्वर गुणगान (आदेश) सप्तकम् (२)

परमेश्वर का गुणगान साधक को आनन्द-विभोर कर देता है

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) सामूहिक गुणगान के साथ, उससे पूर्व अन्त करण का ध्यान आवश्यक है

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत।
सखाय स्तोमवाहस ।। *साम० १६४*
मधुच्छन्दा । इन्द्र । गायत्री।

अर्थ – प्राणीमात्र का कल्याण चाहने वाला मधुच्छन्दा ऋषि अपने शिष्यो और सहकर्मियो को कह रहा है कि (स्तोम वाहस सखाय) स्तुति के मर्म को जानकर स्तुति करते हुए इन्द्र के सदृश बनना चाहने वाले मित्रो ! (आ तु एत) आप अवश्य आओ और (निषीदत) सहस्रारचक्र में ध्यान लगाकर बैठो तदनन्तर (इन्द्रम अभि प्रगायत) परमैश्वर्य सम्पन्न इन्द्र के गुणों का गायन करो और उसके समाख्यान बनकर उसके सखा बन जाओ।

गायत – गा स्तुतौ गाङ गतौ – अपनी स्तुति के अनुरूप कर्म करो। विनिग्रहार्थीय । नि Within श्री अरविन्द=अपने अन्तरतम मे।

निष्कर्ष – परमेश्वर के गुणो का सामूहिक गुणगाण भी करना चाहिए क्योकि वह अधिक प्रभावशाली और श्रोताओं को आकर्षित करने वाला है।

(२) सोमपान व प्रत्याहार के साथ प्रभु गुणगान से जीवन में मस्ती आ जाती है

प्र व इन्द्राय मादन हर्यश्वाय गायत।
सखाय सोमपाव्ने।। *साम० १५६*
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ । इन्द्र । गायत्री।

अर्थ – (सखाय) प्राण साधना करने वाले मित्रो ! (सोमपाव्ने) भक्ति रस का पान करके वीर्य रक्षा द्वारा शान्ति प्रदान करने वाले (हर्यश्वाय) इन्द्रिय रूपी घोडो का प्रत्याहार (विषयों से वापसी) कराने वाले (इन्द्राय) परमेशर के लिए (प्रगायत) उसके नाम का गान इस प्रकार किया करो कि वह हमारे जीवनो मे (मादननम्) मस्ती=हर्षातिरेक को भर दे।

अर्थपोषण – इन्द्रियाणि हयानाहु । कठो० १/३/४ । हर्यश्वाय – अश्वान प्रत्याहरति । विषयेभ्य इतितस्मै। मादनम्– मदी हर्षे।

निष्कर्ष – प्राण साधक गुरु के शिष्य जब प्राणसाधना के साथ परमेश्वर का स्तुतिगान करते हैं तब वह उनसे प्रसन्न होकर उनको वीर्य रक्षा की तथा इन्द्रियों को वश मे करने की प्रेरणा देते हैं। विषय-भोगत्याग के बाद प्रभु भक्ति से साधक मे एक प्रकार की मस्ती उत्पन्न होती है तब वह पार्थिव सुख और प्रशस्ति को बिल्कुल तुच्छ समझने लगता है।

(३) सविता काल में प्रभु गुणगान से दोष क्षीण होने लगते हैं

दोषो आगाद् बृहद्गाय द्यु मद्गामन्नाथर्वण।
स्तुहि देव सवितारम्।। *साम० १७७*
दध्यङ् आथर्वण । इन्द्र । गायत्री।

अर्थ – हे (द्युमद्गामन् आथर्वण) प्रकाशप्रद सन्मार्ग पर चलने वाले दृढव्रती और आत्मनिरीक्षण करने वाले साधक ! (दोष आगात्) यदि तुझमें कोई दोष आ गया है तो (इन्द्र बृहतगाय) परमेश्वर के गुणो का खूब गायन कर। अन्यथा (दोष आगात्) रात्रि का प्रारम्भ होने पर नित्य से परमेश्वर का (बृहत् गाय) प्रचुरमात्रा मे गुणगान किया कर। तथा (देव सवितार स्तुहि) उषाकाल से पूर्व क्योकि सविता का काल उषा के रहने तक माना गया है दिव्यताओं के प्रेरक परमेश्वर और उसके प्रतिनिधि सूर्य का स्तवन तथा सेवन किया कर।

अर्थपोषण – आथर्वण – अथ अर्वाड पश्यति – अन्त करण मे निरीक्षण करने वाला तथा थर्वतिश्चरतिकर्मा न थर्वतीति– अथर्वा अथर्वण पुत्र शिष्यो वा आथर्वण=स्थित प्रज्ञ तथा दृढव्रती।

दोष – प्रदोषोरात्रिमुखम् तथा दोष=कमी या बुराई।

सवितु कालो यदा द्यौरपहततमस्काकीर्ण रश्मिर्भवति। *निरुक्त १२/१२*

निष्कर्ष – रात्रि के प्रारम्भ और अन्त मे नित्य परमेश्वर के गुणगान (स्तवन) करने वाला निर्दोष हो जाता है। फिर भी यदि कोई दोष या अपराध हो जाए तो उसे प्रचुरमात्रा मे प्रायश्चित रूप मे निराश हुए बिना स्तवन करना चाहिए। दोष अवश्य दूर हो जाएगा।

(४) सर्वज्ञ व सर्व समर्थ इन्द्र के गुणगान के साथ तथैव आचरण भी आवश्यक

अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम्।
इन्द्र नाम श्रुत्य शाकिव वचो यथा ।। *साम० २६५*
वत्स । इन्द्र । बृहती।

अर्थ – हे (वत्स व) परमेश्वर का नामोच्चारण करने वाले प्रिय साधको ! (अन्धस मदेषु) आध्यातव्य आध्यात्मिक अन्न = ध्यान द्वारा प्रादुर्भूत होने हर्षातिरेक के क्षणों में (वीर शाकिनम्) पराक्रमी तथा सर्वशक्तिमान् (महाविचेतसम्) महती चेतना युक्त सर्वज्ञ (श्रुत्य नाम) वेद श्रुतियो मे प्रसिद्ध तथा ज्ञान प्रदान करने वालो मे सर्वश्रेष्ठ (इन्द्र गिरा अभि गाय) परमेश्वर का व्यक्त वाणी मे सम्पूर्ण हृदय से गुण गान किया करो और (यथावच) जिन गुणो का कथन करते हो (तथाकर) उन गुणो का जीवन मे प्रयोग किया करो।

अर्थपोषण – अन्ध आध्यातव्य अन्नम। नि० ४/२ आध्यात्मिक अन्न=ध्यान।

महाविचेतसम– स पूर्वेषामपि गुरु कालेनानुच्छेदात्। योगदर्शन १/२६। वत्स – गुणान् वदतीति अत एव वत्स प्रिय।

निष्कर्ष – परमेश्वर के श्रुति प्रतिपादित जिस नाम का गान या जाप करो उस नाम मे वर्णित गुण को अपने अन्दर भी धारण करो। ऐसा करने से जो प्रसाद प्राप्त होता है उससे सब दु खी विलीन हो जाते हैं।

प्रसादे सर्वदु खाना हानिस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धि पर्यवतिष्ठते। *गीता २/६५*

(५) अग्नित जनों से स्तुत परमेश्वर का गान करो, और उसकी महिमा की आराधना करो

तमभि प्रगायत पुरुहूत पुरुष्टुतम्।
इन्द्र गीर्भि स्तविषमाविवासत।। *साम० ३८२*
गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ। इन्द्र । उष्णिक्।

अर्थ – इस मन्त्र के ऋषि (गोषुक्ति) ज्ञानेन्द्रियो से उसके गुणो को जानकर (अश्वसूक्ति) कर्मेन्द्रियों से उन गुणो पर आचरण करने वाला साधक एक ही है। दो गुणो के कारण ऋषि का नाम द्विवचन मे है। यह सकेत करता है कि साधक की कथनी और करनी एक सी होनी चाहिए। इसी तरह क्रियाए भी दो दी हैं – (प्रगायत) ज्ञानेन्द्रियो के द्वारा उसके गुणो को जानकर वाणी द्वारा उनका गायन करो (अविवासत) कर्मन्द्रियो द्वारा उन गुणो का उपासना द्वारा सेवन करके उन गुणों का धारण करो और फिर उन गुणो द्वारा जनता की सेवा करो।

शब्दार्थ – वचन और कर्म से समान बने साधको ! (पुरुहूतम् पुरुष्टुतम्) अनगिनत नामो द्वारा अनगिनत लोगो से विपत्ति में पुकारे जाने वाले तथा अनन्त काल से स्तुति किए जाने वाले (त उ इन्द्र प्रगायत) उस अद्वितीय परमेश्वर का गुणगान किया करो। (त विष त गीर्भि आविवासत) बलस्वरूप उस महान् परमेश्वर की उपासना या सेवन वैसे ही किया करो जैसे सूर्योदय से पूर्व जागकर सूर्य के सेवन द्वारा उसकी उपासना की जाती है। तदनन्तर इन गुणो से सुसज्जित होकर जनता की सेवा किया करो।

त विष – महन्नाम। नि० ३/३
तविषी बलनाम। नि० २/६।

निष्कर्ष – प्रभु का विस्मरण होते ही अभिमान आ दबोचता है उससे ग्रस्त होते ही मनुष्य का पतन प्रारम्भ हो जाता है।

(६) सब सुखों के दाता व सबके नेता प्रभु के लिए धन्यवाद के गीत गाया करो

प्र महिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे।
उपस्तुतासो अग्नये।। *साम० ८७८*
सोभरि काण्व । अग्नि । काकुभ प्रगाथ (ककुप् उष्णिक)।

अर्थ – (उपस्तुतास) अपनी-अपनी विद्या में स्तुत गुरुजनो के समीप बैठकर अभ्यास करने वाले साधको ! (महिष्ठाय) सर्वविध भोग्य पदार्थों के श्रेष्ठ दानी (ऋताव्ने) ऋत नियमों के विधाता तथा सत्य परायण रक्षक (बृहते) महान् (शुक्रशोचिते) शुभ्र दीप्ति वाले (अग्नये) मार्गदर्शन करने वाले आदि गुरु प्रभु की (प्रगायत) प्रकृष्ट रूप से महिमा का गान किया करो।

निष्कर्ष – जो व्यक्ति कण-कण करके अपनी साधना को सदा कायम रखता है वह अपना उत्तम भरण करके मानव-मात्र के भरण-पोषण करने की योग्यता प्राप्त करके 'सोभरि काण्व बन जाता है।

– शेष पृष्ठ ८ पर

आइए, सभी पूर्ण सुखी-स्वस्थ हों !

– सोहनलाल शारदा

ऐसी प्रार्थना कभी भी न करे जिसे परमात्मा कभी भी स्वीकार नहीं कर सकता। जो मनुष्य जिस किसी उद्देश्य से प्रार्थना करे उसे चाहिए कि वह उसे कार्यरूप में परिणत भी करता रहे। जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की जो प्रार्थना करता है उसे इसकी प्राप्ति हेतु जितना भी बन सके प्रयास करना चाहिए। वह अपने पुरुषार्थ से विशेष भी करे और जो केवल भाड के सदृश केवल परमेश्वर के गुण कीर्तन तो करे और अपना चरित्र नहीं सुधारता। ऐसे जनो की स्तुति प्रार्थना व्यर्थ है।

(सत्यार्थ प्रकाश सप्तम् समुल्लास)

लेकिन वर्तमान मे प्रकाशित सन्ध्या-यज्ञादि की पुस्तको में प्रकाशको द्वारा यज्ञ-समापन पश्चात् **'सर्वे भवन्तु सुखिन'** का पूरा श्लोक लिखा दृष्टिगोचर होता है। इस पर विचार करे कि 'यह कहीं महर्षिकृत ग्रन्थो व वेद मे कहीं उल्लेख है या नहीं। लेकिन वेद मे मन्त्र आता है –

विजानी ह्यार्यान् ये च दस्य वो बर्हिष्मते रन्धया शासद व्रतान्। शाकीभव यजमानस्य चोदिता विश्वेता ते सधमादेषु चाकन।।

ऋ० १/५१/८

भावार्थ – इस ससार मे दो ही प्रकार के मानव हैं उनमें एक तो हैं आर्यजन जो विद्या धर्मादि उत्कृष्ट स्वभावाचरण युक्त हैं और दूसरे हैं दस्यु जो परपीडा पहुचाने वाले दुष्ट स्वभावी हिंसा आदि दोषों से युक्त। उत्तमोत्तम कर्मो मे विघ्न करता स्वार्थी। स्वार्थ साधना मे तत्पर सर्वोपकारक यज्ञ के विध्वसक इत्यादि निकृष्ट गुणयुक्त दुष्ट दस्युओ को (रधया) समुलान विनाशाय अर्थात मूल सहित नष्ट कर दें। *(महर्षिकृत भाष्य)*

ऐसे जनों पर आर्यजन जो विद्या धर्मादि उत्कृष्ट स्वभावाचरणयुक्त हैं वे ऐसे (दस्यु) दुष्टजनो पर शासन कर दण्ड निपात न करो, कि जिससे वे भी शिक्षायुक्त होकर शिष्ट बन जाए। हमारे अधीन रहे और यदि वे जन अपना स्वभावाचरण नहीं बदले तो ऐसे जनों की पूर्ण जानकारी कर प्राणान्त भी कर दें।

(आर्याभिविनय से)

इस प्रकार की वेदाज्ञा पर हम विचार करें कि ईश्वर न्यायकारी ही है जो अवश्यमेव ही उपनिषद् वाक्यानुसार कि – **'अवश्यमेव भोक्तव्यत् कर्तु कर्म शुभाशुभम्'** के अनुसार 'दस्यु' जनों को दण्ड अवश्य देगा। अत सर्वे भवन्तु सुखिन का पाठ वाले हम कहते हैं कि सबको सुखी करो भगवान दुखिया न रहे कोय।

यह वेदाज्ञानुरूप कहा तक उचित है। हम भेडचाल नहीं चलें। हम तो इस प्रकार वेदमन्त्र से प्रार्थना करते हैं कि –

सुमित्रिया न आप ओषधय सन्तु।
दुर्मित्रिया स्तस्मै सन्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि य च वयम् द्विष्म्।।

यजु० ३६/२३ एव ३८/२३

पदार्थ – हे सर्वमित्र सम्पादक प्रभो ! आप (आप) प्राण वा जलादि पदार्थ और (ओषधय) सोमलता जिसे गिलोय आदि सभी ओषधिया (न) हमारे लिए (सुमित्रिया) सुन्दर मित्रों के तुल्य जो हमारी भलाई ही चाहते हैं ऐसो के लिए सुखदायिनी (सन्तु) हों। और जो (य) पक्षपाती अधर्मी (अस्मान्) हम धर्मात्माओं से (द्वेष्टि) द्वेष करे वा रखें और (च) हम भी इसी कारण से उनसे किञ्चित द्वेष (तस्मै) ऐसे जनों के लिए में सभी जल प्राणवायु, ओषधिया वगैरा सभी (दुर्मित्रिया) दुष्ट मित्रों के लिए दुखदायी (सन्तु) हों।

अत हम यह देखें कि यह पाठ जो हम **सर्वे भवन्तु** का उच्चारण करते हैं वह वैदिक है या अवैदिक। सत्य जो भी है हम ग्रहण करें। परमपिता परमात्मा तो दण्ड देता ही है अपनी न्याय व्यवस्थानुसार और हमें भी वेद का आदेश है –

स्थिरा व सन्त्वा युधा पराणुदे वीलू उत प्रतिष्क भे। युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिन ।।

ऋ० १/३९/२

पदार्थ – हे धार्मिक आर्य पुरुषो ! (य) तुम्हारे जो (आयुधा) आग्नेय परमाणु आदि अस्त्र एव तलवार धनुष-बाण बन्दूक जिसे भुसडी तथा तोप (शतघ्नी) आदि शस्त्र (पराणुदे) दुष्ट शत्रुओं को व्यथा पहुचाने वाले अथवा नष्ट कर देने वाले एव उन पर विजय पाने हेतु युद्धों मे (युत) और (प्रतिष्कभे) उन्हें रोकने गिरफ्तार करने हेतु ये हमारे पर्व प्रकार के अस्त्र शस्त्र (स्थिरा) दृढ स्थाई (वीलू) उत्तमोत्तम हमारे बल दृढाग युक्त (तविषी) सैन्यदल (पनीयसी) अतिशय स्तुति करने योग्य और व्यवहार सिद्ध करने वाले हो (अस्तु) और ये ही पदार्थ जो दुष्टाचारी (मायिन) अधर्माचरण युक्त हैं ऐसे जनो (मर्त्यस्य) दुष्ट आत्मा वालो के (मा) कभी भी नहीं हो। (महर्षिकृत भाष्य)

इसी मन्त्र का भावार्थ है –

धार्मिक जन ही परमपिता परमात्मा की कृपादृष्टि से सदा विजय को प्राप्त हों और दुष्टात्मा दुराचरण वाले कभी नहीं। ईश्वर सदा धार्मिक पुरुषो को ही अपना आशीर्वाद देते हैं। पापियो को कभी नही। अत पुण्यात्मा धार्मिक जनों को उचित है कि उत्तमोत्तम अणु-परमाणु अस्त्रादि व शस्त्र भी रचे और उनके चलाने का अभ्यास करे। सेना को उत्तमता से शिक्षितकर दुष्ट शत्रुओं का विरोध पराजय करके न्याय से मनुष्यो की निरन्तर रक्षा करे।

इस प्रकार वेदाज्ञानुसार कर्त्तव्य कर्म करके ही निर्भय होकर विचरण करें कि

अभयम् मित्रा दभयम मित्रा दभयम् ज्ञाता दभयम् परोक्षात्। अभयम् नक्त मभयम् दिवा न: सर्वा आशा मम मित्रम् भवन्तु।।

अथर्व० १९/१५/६

अर्थ – हे प्रभो ! आप हमारे ऊपर ऐसी महत्ती कृपा करें कि हम मित्र अमित्र ज्ञात अज्ञात आदि सभी से रात-दिन चारों ओर से हमारे मित्रवत् व्यवहार करें कि जिससे हम निर्भय बनें शक्तिसम्पन्न हों।

इसी निमित्त छठे समुल्लास में वर्णन है कि हम आर्य यानी श्रेष्ठ धार्मिक जनो का शारीरिक और आत्मिक बल बढाए।

"जो आत्मा का बल तो बढ़ता जाए और ज्ञान में कुछ भी न्यूनता न हो लेकिन वह शारीरिक बल नहीं बढ़ाए तो एक ही बलवान पुरुष सैकड़ों ज्ञानी विद्वज्जनों को जीत सकता है।"

इस प्रकार महर्षि की वाणी का प्रत्यक्ष उदाहरण तब दृष्टिगोचर हुआ जब हमारी ससद पर सिर्फ पाच जनो का आक्रमण हुआ। तब यहा उस समय अन्दर दो सौ के करीब सासद वाक शूर गलत परम्परा से कुर्सिया-पेपरवेट फैंकने अपशब्द बोलने मे पास ऐसे दुबके रहे कि कैसे भी यहा से भागे। ज्योंही कुछ राहत देखी सभी तत्काल स्वस्थानों के लिए प्रस्थान गए। इसलिए ही विशेष रूप से यहा कहा कि विशेष क्षत्रिय जनो को ऐसा दृढाग बलयुक्त होना चाहिए । अत हमारी प्रार्थना **सर्वे भवन्तु सुखिन , अनार्या भवन्तु दु खिन** ऐसा पाठ ही वेदानुकूल उचित है। फिर भी विद्वज्जन विचार करे।

– शाहपुरा, भीलवाडा (राजस्थान)

धर्म की हकीकत, हकीकत ने जानी

– सुभाष चन्द्र गुप्त

हकीकत का बलिदान कहता है हम से,
धर्म को न भूलो, धर्म ऊचा सबसे।

धर्म से ही बनता है जीवन हमारा
धर्म ही बनाता है ईश्वर का प्यारा।
धर्म से चमकता मनुज का सितारा
धर्म सच्चा साथी जगत् मे न्यारा।

धर्म है सिखाता, करो प्रेम सबसे।
धर्म को न भूलो, धर्म ऊचा सबसे।।

धर्महीन मानव को समझो पशु है
दयाहीन कपटी वह बनता रिपु है।
वह परदोष द्रोह द्वेष में जलता रहता
अशान्ति की दलदल मे ही गलता रहता।।

धर्म ही बचाता है, हमे पतन से।
धर्म को न भूलो, धर्म ऊचा सबसे।।

धर्म की हकीकत हकीकत ने जानी
अल्पायु मे ही बना वह ज्ञानी।
ससार के सारे सुख उसने छोडे
ममता के बन्धन सभी उसने तोडे।

धर्म-रक्षा हेतु, डरा न वह यम से,
धर्म को न भूलो, धर्म ऊचा सबसे।।

जल्लाद तलवार जब लेके आया
हकीकत ने गर्दन को नीचे झुकाया।
बोला– अरे काटो मत देर करना
धर्म हेतु मुझको है बेखौफ मरना।

जल्दी मे रुह, मिलाओ प्रभु से,
धर्म को न भूलो, धर्म ऊचा सबसे।।

जल्लाद ने देखा, जब नन्हा बालक
तो बोला खुदा से – करो रहम मालिक।
मिटाओ जुल्म भारी जो हो रहा है
हजारों का दिल देखकर रो रहा है।

कापा व तडपा, वह जल्लाद मन से,
धर्म को न भूलो, धर्म ऊचा सबसे।।

कभी धर्म-पथ से न तुम डगमगाओ
न सत्सग-स्वाध्याय से जी चुराओ।
प्रभु भक्ति की मस्ती मे झूम जाओ
हकीकत का सन्देश दिल मे बिठाओ।

होगा सफल जीवन, 'सुभाष' इक धर्म से।
धर्म को न भूलो, धर्म ऊचा सबसे।।

– १५६, ए०जी०सी०आर० एन्कलेव,
दिल्ली- ११००९२

आंवलों का खाने में प्रयोग करें : श्रेष्ठ फल से स्वास्थ्य सुधारें

– देवेन्द्र कुमार बक्षी

आंवलो का मौसम है। रस से भरे बडे बडे ताजे आवले सर्वत्र उपलब्ध हैं। इसके छोटे आकार और कसैले स्वाद पर न जाए इसमे अनेक गुण हैं।

यौवन और सौन्दर्य के लिए अद्वितीय इस फल का हम कितना प्रयोग करत हैं ? अधिकतर आचार मुरब्बे चटनी मे इसका उपयोग होता है। यह ठीक है परन्तु उतरे हुए चिन्तित चेहरे दुलकते हुए शरीर फूले हुए पेट तथा नित नई दवाओ और टानिको की खोज मे भटकते लोग इसकी शरण मे जाते हैं।

हर मौसम मे प्रकृति जीवन से भरपूर तरह तरह के टानिक फल सब्जिया देती है और उन सबमे आवला अग्रणी है। प्रोटीन वसा खनिज लवण कैलशियम कारबोज फासफोरस रेशे लौह तत्व के अतिरिक्त आवले मे अनेक जीवनोपयोगी गुण है। इतना ही नहीं उसमे लबालब भरा हुआ विटामिन सी अन्य फलो से उत्तम है। इसका कारण है इसका टैनिन एस्कार्बिक अम्ल तथा पैक्टिन के साथ मिलना। आवले मे सतरे के रस से बीस गुना अधिक विटामिन सी हाता है। शरीर को शक्ति प्रदान करने मे चार सतरो आठ टमाटरो चार केलो तथा दो बडी नारगियो की बराबरी अकेला एक आवला करता है। एक आवले मे एक अण्डे के बराबर शक्ति होती है और वह भी सात्विकता से भरपूर।

पोषण विशेषज्ञो के आकलन के अनुसार एक औसत व्यक्ति को प्रतिदिन ७५ मिलीग्राम विटामिन सी चाहिए परन्तु प्रचलित खान पान से इसका बहुत थोडा अश हमे मिलता है। रोगो एव सक्रमणो का प्रतिरोध करने मे यह अद्वितीय है। इसके अभाव मे पहले तो हमारे दात और मसूडे कमजोर होते हैं तथा बाद मे कई बीमारिया हो जाती हैं। आवले के प्रयोग का तीव्र असर होता है। सबसे पहले यह कब्ज दूर करता है तथा दातो के रोगो के साथ ही कई रोगो पर अपना असर दिखाता है यदि हम इसके दूरगामी एव स्थाई प्रभावो का पूरा लाभ ले। यह देखा गया है कि दीर्घकाल तक आवले का उपयोग करने से शरीर की पाचक प्रणाली मे स्फूर्ति आती है तथा खाद्य प्रणाली के सभी रोग शान्त हो जाते हैं चाहे वे कितने ही पुराने क्यो न हो। अत बेहतर है कि चिकित्सक की शरण से पहले आवले का प्रयोग शुरू करे इसे एक धार्मिक कार्य मानकर अपनी दिनचर्या मे समावेश करे तथा चाय से भी अधिक इसका प्रयोग करे।

वैद्यक ग्रथो मे आवला अमृतफल पुकारा गया है। शास्त्रो मे शतायु बनने के इच्छुको को आवले के प्रयोग का परामर्श है। वर्षो की खोजबीन के बाद वैज्ञानिको ने स्वीकार किया है कि आवला सचमुच ही सर्वोत्तम बलदायक खाद्य है। आवले को सस्कृत मे आमलक बगला मे आमलकी मराठी मे आवला गुजराती मे अमली सिहली तमिल व कन्नड मे नेलिल व नेन्किायि बर्मी मे शब्जु अरबी या फारसी मे आमलज अग्रेजी मे एम्बिलक मिरोबलन जर्मनी मे जिब्रोक्लिशर आमालावाम तथा लेटिन मे कैलेन्थस एम्ब्लिका कहते है।

आवले का ताजा रस दूषित रक्त शुद्ध करता है रक्त वाहनियो के विकार नष्ट कर रक्त सचार करता है बढे हुए सीरम केलोस्ट्रोल को कम करता है पेशाब और पखाना साफ लाता है पाचन शक्ति बढाता है शरीर मे आरोग्य बढाकर शक्ति देता है दात और मसूडे मजबूत करता है तथा दातो को मातिया जैसा चमकता है। यह नेत्र ज्योति बढाता है हृदय एव मस्तिष्क को शक्ति देता है मस्तिष्क मे तरावट लाता है मानसिक गर्मी एव खुश्की दूर करता है तथा रज और वीर्य पुष्ट करता है। यह जीभ पतली कर आवाज साफ करता है। इसके प्रयोग से उदर के कृमि शीघ्र नष्ट होते हैं हड्डिया मजबूत होती हैं तथा टूटी हड्डी जल्दी जुड्ती हैं।

यह बालो की जडो को मजबूत करता है बालो को सफेद होने से रोकता है बाल लम्बे करता है तथा बालो को प्राकृतिक चमक देता है। कई बार इसके प्रयोग से नए बाल उगते तथा सफेद बाल काले होते देखे गए हैं। यह चेहरे की झुर्रिया दूर करता है यकत तिल्ली एव आमाशय को शक्ति देता है पेट बढने से रोकता है तथा मोटापा घटाता है।

अनेक व्याधियो मे उपयोगी

पेट विकार अपचन अफारा कब्ज भूख न लगने खाने मे अरुचि खटटी डकारो मुह के कडवेपन छाती में जलन रक्त की कमी शारीरिक दुर्बलता पिण्डलियो मे दर्द हाथो व पैरो मे पसीना आने या जलन होने हृदय रोग हृदय की बेचैनी धडकन रक्तचाप गठिया दाद खाज खुजली एग्जिमा जुकाम खासी धातु रोग स्वप्नदोष शीघ्रपतन मधुमेह प्रमेह अतिसार आव लू लगना मूत्र रोग बार बार मूत्र आने मूत्रकृच्छ अर्श वमन नकसीर पेट के कीडे बाल गिरने पुराना सिर दर्द सिर मे जलन चक्कर आना अनिन्द्रा क्षय रोग श्वास रोग पीलिया हकलाने तुतलाने अनियमित मासिक धर्म रक्तप्रदर श्वेत प्रदर योनि मे खुजली जलन शीतपित चेहरे की झुरियो आखो के रोग पानी बहने कम दीखने आख आना कीचड निकलने कुष्ठ कैसर इत्यादि रोगो मे लाभप्रद है।

सुश्रुत के अनुसार आवले में पाचो रस मधुर अम्ल कटु तिक्त व काषाय मौजूद है। इसके खटटेपन से वात का मधुरता व शीतलता से पित्त का तथा कटु तिक्त काषाय व रुक्षता से कफ का नाश होता है।

आवले का प्रयोग अनेक प्रकार किया जा सकता है परन्तु इससे शीघ्र तथा पूरा लाभ उठाने के लिए ताजे आवलो का रस पीना सर्वोतम है और यह तरीका सुलभ सरल एव सुरक्षित है।

प्रात खाली पेट दो बडे आवले कूटकर रस निकाले और तुरन्त पी ले। इसी प्रकार दिन मे एक बार और रस पीए। इसमे शहद मिला सकते हैं तथा जो कमजोर हो वे इसमे गर्म पानी भी मिला ले या ऊपर से पी ले। आवश्यकता होने पर इसे अधिक मात्रा मे तथा अधिक बार भी लिया जा सकता है। जो बचे उसे पानी मे डाल कर छाने। यह पानी आखो पर छीटे मारने बाल धोने या नहाने के काम मे लाए।

क्या सोच रहे हैं ? आवले के लाभ न गिने। थक जाएगे। प्रयोग मे केवल दो मिनट लगेगे। नया जीवन नई उमग चेहरे पर लालिमा और इसके साथ ही यदि आप कातिमान तेजस्वी व्यक्तित्व चाहते हैं तो आइए आवले की शरण मे। इसे दवा का नही भोजन का अग बनाए। आवले की चटनी आचार मुरब्बे आदि का आनन्द ले परन्तु मौसम मे नित नियम से इसका रस पीए।

डी० २८९ए सेक्टर २६ नोएडा (उ०प्र०)

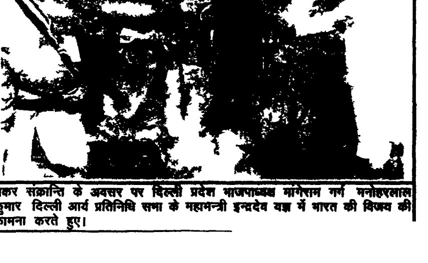
पकिस्तान बाज नहीं आया तो उसका नाम दुनिया के नक्शे से मिट जाएगा

आतकवाद के पोषक पाकिस्तान की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। वह दिन अब दूर नही जब पाकिस्तान का हश्र भी तालिबान जैसा होगा। भारत के शान्ति सन्देशो को कायरता समझने वाले आतकवादियो के दिन अब गिने चुन रह गए हैं। भारत शान्तिप्रिय देश है इसे कायरता समझने वाले बडी भूल कर रहे हैं।

उक्त विचार आज डिप्टीगज स्टेनलैस स्टील यूटनसिल्स ट्रेडर्स ऐसोसिएशन द्वारा मकर सक्रान्ति पर आयोजित आतकवाद मुक्ति रक्षा सकल्प यज्ञ मे दिल्ली प्रदेश भाजपा के प्रधान श्री मागे राम गर्ग श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मनोहर लाल कुमार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एव ऐसोसिएशन के सरक्षक वैद्य इन्द्रदेव आदि ने व्यक्त किए।

सैकडो लोगो ने यजमान बनकर आतकवाद के विनाश तथा राष्ट्र की रक्षा की कामना को लेकर आहुतिया डाली।

इस अवसर पर वक्ताओ ने कहा कि प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व मे भारत की विश्व मच पर विशेष पहचान बनी है जबकि पाकिस्तान को लोग आतकवाद के पोषक के रूप मे जानने लगे हैं। यदि पाकिस्तान बाज नहीं आया तो उसका नाम दुनिया के नक्शे से मिट जाएगा।



मकर संक्रान्ति के अवसर पर दिल्ली प्रदेश भाजपाध्यक्ष मांगेराम गर्ग मनोहरलाल कुमार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री इन्द्रदेव यज्ञ में भारत की विजय की कामना करते हुए।

कन्या, वैचारिक क्रान्ति की प्रणेता
माता प्रेमलता शास्त्री द्वारा हाथरस की संस्थाओं का व्यापक दौरा

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के अतर्गत सचालित **"मातृ छाया साधना केन्द्र"** गुरुकुल आश्रम आगरा रोड हाथरस मे दिनाक १३-१-२००२ व १४-१-२००२ को "मकर सक्रान्ति" के पावन पर्व पर आसाम अरुणाचल मध्य प्रदेश मिजोरम बिहार के नन्हे नन्हे ब्रह्मचारियों द्वारा अत्यन्त मनोहर एव आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। सुश्री कमला जी अधिष्ठात्री – "दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस" के ब्रह्मत्व मे बृहद यज्ञ के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की अध्यक्षा श्रीमती प्रेमलता खन्ना एव श्रीमती ईश्वर देवी मन्त्री रहीं। कार्यक्रम की सयोजिका कुमारी रश्मि आर्या थी तथा मच सचालन कुमारी वर्षा आर्या ने किया।

विभिन्न प्रान्तों से आए ब्रह्मचारियो द्वारा देश भक्ति और भारतीय सस्कृति एव ईश्वर भक्ति के गीतो एव नाटको द्वारा समा बाध दिया गया। माता प्रेमलता बच्चो के कार्यक्रमो को देखकर अति प्रसन्न हुई और बच्चों को पारितोषिक दिए गए। प्रसन्न भी क्यो न होतीं ये सब उन्हीं की मेहनत एव पुरुषार्थ का फल है। माता जी के आने का समाचार सुनकर बच्चे विशेषकर मध्य प्रदेश आसाम और नागालैण्ड के बहुत प्रसन्न थे और माताजी को मिलने की तैयारिया कर रहे थे। मातृछाया की प्रधानाचार्या श्रीमती सतोष शर्मा ने बताया कि ये विभिन्न प्रान्तो के बच्चे जो हिन्दी बिल्कुल नहीं जानते थे वे आज सध्या एव वेदपाठ करते हैं। हमे इन बच्चो पर गर्व है। मातृछाया के सचालक श्री नवल सिह चौधरी जो दिन रात बच्चों को सस्कारित करने मे जुटे हुए हैं उनकी कल्पना है कि इन बच्चो को भारतीय सस्कृति के प्रहरी बनाकर इनके प्रान्तों मे वापिस भेजूगा।

अन्त मे माता प्रेमलता ने उन बच्चो का परिचय देते हुए वहा की जनता को बताया कि ये बच्चे उन प्रान्तो से आए हैं जहा हिन्दी पढना तो क्या सस्कृति की बात करना भी पाप समझा जाता है। यहा के सचालक धन्यवाद के पात्र है जो प्रान्त प्रान्त के फूल इकटठे कर भारतीय सस्कृति का गुलदस्ता बनाना चाहते हैं। माता प्रेमलता ने बच्चा को आशीर्वाद देते हुए अपने सकल्प की भी घोषणा की और कहा कि सरकार ने **'नारी वर्ष'** मना लिया है अब अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ, **महिला क्रान्ति वर्ष** मना रहा है। इस घोषणा को सुनकर गुरुकुल की आचार्या कमला जी ने माताजी को अपने गुरुकुल मे आने का निमन्त्रण दिया। साढे पाच सौ कन्याओ के मध्य जब माता जी ने अपने क्रान्तिकारी विचार प्रस्तुत किए और कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी उत्थान के लिए बहुत प्रयास किए थे परन्तु इस भाषा की दृष्टि से गुलाम देश मे पाश्चात्य सभ्यता की गरिमा अधिक दिखाई देने लगी है। कही कहीं ऐसे गुरुकुल दिखाई देते है जहा वैदिक सस्कृति सास लेती दिखाई देती है। इस महिला क्रान्ति वर्ष के मनाने का मुख्य उददेश्य नारी जाति एव कन्याओ मे वैदिक सस्कृति के लिए जागृति पैदा करना है। माताजी के जोशीले विचारो को सुनकर सब कन्याए बडी भावुक हो उठीं। माताजी ने कहा कि अब मैं बूढी हो गई हू, मेरा साथ सभी को देना होगा। सभी कन्याओ ने हाथ खडे करके माता जी के सकल्प को दोहराया और साथ देने का वचन दिया।

ततपश्चात दयानन्द कन्या विद्यालय सासनी के आचार्य माता जी को अपने स्कूल ले गए। वहा ३०० कन्याए थीं। वहा कन्याओ को सबोधित करते हुए माताजी ने कहा कि इस पुरुष प्रधान देश मे कन्याए अपनी रक्षा स्वय करना सीखे और कई प्रेरणादायक कहानिया और कविताए सुनाकर कन्याओ को उत्साहित किया और नारी की शक्ति का दिग्दर्शन कराया। इससे कन्याओ का मनोबल बढा और वे बहुत प्रसन्न हुई।

मातृछाया के सस्थापक प० प्रेम नारायण वैद्य जी हाथरस के सुजान ग्राम मे माताजी को ले गए जहा २५ मुस्लिम परिवारो को प० प्रेमनारायण द्वारा शुद्ध कर वैदिक धर्म मे परिवर्तित किया गया था। माताजी ने वहा यज्ञ करवाया उपदेश दिया तथा इस साहसिक कार्य के लिए इन परिवारो को सच्चे देशभक्त एव कर्मवीर की उपाधि प्रदान करते हुए कहा कि सदा अपने देश ओर सस्कृति की रक्षा करते हुए और भी परिवार जो हमसे बिछुड गए है उन्हे फिर से अपना अग बनाने का प्रयास करते रहे। मातृछाया के मत्री श्री नवल सिह चौधरी ने माता जी को स्कूलो और कालेजो मे विचार देने के लिए पुन आने का निमन्त्रण दिया। माता जी ने साधन न होने के कारण असमर्थता व्यक्त की। मत्री जी ने कहा कि आपको लेने और छोडने का प्रबध हम स्वय करेगे।

माताजी का जब वापिस दिल्ली जाने का समय आया तो बच्चे बहुत उदास हो गए। माताजी ने जीप मे बैठे बैठे बच्चो से कहा कि प्रसन्न होकर मेरे साथ गाओ –

सारे जहा से अच्छा गुरुकुल है ये हमारा हम बुलबुले हैं इसके, ये गुलिस्ता हमारा।

इस प्रकार जयघोष करते हुए गुरुकुल वासियो एव अधिकारिया ने माताजी एव सभी अतिथियो को बिदाइ दी।

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित

नई दिल्ली दिनाक ६ जनवरी को वैदिक विद्वान श्री चन्द्रशेखर शास्त्री को अर्जुन अपार्टमेट मैत्री सगठन एव आर्यसमाज ग्रुप हाउसिग विकासपुरी के सयुक्त तत्ववाधान मे आयोजित शान्ति सदभावना बृहद यज्ञ के पावन अवसर पर शाल ओढाकर सम्मानित किया गया।

द्वारकानाथ सहगल बौद्धिक विकास केन्द्र की ओर से समाजसेवी श्रीमती वेष्णो सहगल ने आचार्य को शाल प्रशस्ति पत्र एव ग्यारह सौ रुपये की सम्मान राशि प्रदान की।

कार्यक्रम के सयोजक श्री अशोक सहगल ने कहा कि आचार्य श्री चन्द्रशेखर जी ने जिस निष्ठा तप त्याग से आर्यसमाज की सेवा की है तथा वैदिक सस्कृति के प्रचार प्रसार एव मानव सेवा के पुनीत कार्य मे सलग्न है यह सभी आर्यजनो के लिए आदर्श एव प्रेरणाप्रद है। ऐसे विद्वान को हम अपने बीच पाकर गौरवान्वित है।

ध्यान योग शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज पीपाड शहर मे ७ जनवरी से १३ जनवरी २००२ तक सात दिवसीय ध्यान योग साधना शिविर योगधाम आश्रम हरिद्वार के अध्यक्ष स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती के सानिध्य मे सम्पन्न हुआ जिसमे प्रतिदिन प्रात साय के कार्यक्रमो मे लगभग ७५ साधक साधिकाओ ने भाग लिया। शिविर मे योग साधना के अतिरिक्त ब्रह्मचारी जितेन्द्र द्वारा आसन प्राणायाम का अभ्यास भी कराया जाता था। इस शिविर की विशेषता यह थी कि महिलाओ मे प्रशिक्षण का दायित्व सुषमा यति जी नई दिल्ली के नेतृत्व मे सम्पन्न हुआ इस शिविर के अवसर पर सुषमा यति जी द्वारा एक महिला सगठन का गठन किया गया। जिसके द्वारा यह क्रिया अनवरत चलती रहे।

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव
के अवसर पर
मुख्य समारोह
८ मार्च, २००२ (शुक्रवार) फाल्गुन वदी दशमी २०५८

अध्यक्षता – **कैप्टन देवरत्न आर्य** प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

स्थान : महर्षि दयानन्द गौ संवर्धन केन्द्र गाजीपुर, नई दिल्ली

प्रात ६ ०० बजे	**यज्ञ**
प्रात १० ०० बजे से	**जयन्ती समारोह**

विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम
एक निवेदन

इस समारोह मे महर्षि जन्मोत्सव को आर्यजनता अपनी अपनी आर्यसमाजो एव अन्य सस्थाओ मे समारोह पूर्वक मनाने के साथ साथ अपने अपने घरो मे परिजनो और बच्चो के बीच भी मनाए। यज्ञ करके प्रसाद रूप मे हलवा या अन्य मिष्ठान तथा विशेष पकवान बनाए जाए। परिजनो मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से सम्बन्धित दृष्टातो एव सिद्धान्तो पर चर्चा अवश्य की जाए। समाजो एव सस्थाओ द्वारा यह प्रयास किया जाए कि क्षेत्र के अधिक से अधिक लोगो को जोडकर सार्वजनिक स्थलो पर यज्ञ एव प्रसाद वितरण हो। विशिष्ट प्रशासनिक अथवा पुलिस अधिकारियो को आमन्त्रित किया जाए तथा उन्हे अधिकाधिक आर्य साहित्य वितरित कियो जाए। मन्दिरो पर रोशनी का प्रबन्ध किया जाए। टेपरिकार्ड एव लाऊडस्पीकर से ऋषि गाथा का प्रसार हो। महर्षि के जन्म दिवस समारोह को स्वय अपने जन्मदिवस की तरह धूमधाम से मनाए।

नोट : कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लंगर अवश्य ग्रहण करें।

निवेदक

वेदव्रत शर्मा, मन्त्री — **विमल वधावन**, वरिष्ठ उप प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

R N No 32387/77 Posted at N D.P.S O on ०७ ०८/०२/२००२ दिनांक ४ फरवरी से १० फरवरी, २००२ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 07 08/02/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस न० यू० (सी०) १३९

पृष्ठ ४ का शेष

परमेश्वर का गुणगान साधक ....

(७) भद्र प्रेरणाओ द्वारा आनन्द-वर्षी प्रभु के गीत सदा गाया करो

पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत। सुष्वाणं देववीतये।।

साम० ११८८

असित काश्यपोदेवलो वा। पवमान सोम । गायत्री।

अर्थ – (अवस्यव) अपनी रक्षा प्रगति और तृप्ति चाहने वाले उपासको! (देव वीतये) दिव्यता विशिष्टता की प्राप्ति के लिए (सुष्वाणम) निरन्तर भद्र की प्रेरणा द्वारा आनन्दरस को अभिषुत करने वाले (विप्रम्) विशेष रूप कमियो का पूरण करके तृप्ति देने (पवमानम्) सब तरह के दोषो को दूर करके पवित्र बनाने वाले – शान्ति और आनन्द के देवता सोम के गुणो का (प्रगायत) प्रकृष्ट रूप मे गायन किया करो।

निष्कर्ष – जो साधक प्रभु गुणगान करते हुए वाणी द्वारा उक्त और कानो द्वारा श्रुत गुणो को अपनी क्रियाओ से जोड लेता है और तदनुसार आचरण करता है उसमे दिव्यता आ जाती है तथा सुख दुख राग द्वेष आदि द्वन्द्वो से मुक्त होकर देवल अथवा असित ऋषि बन जाता है।

उक्त और श्रुत को क्रिया से जोडने का उपदेश करने वाला वेद वाक्य है **सोमपा गिरामुप श्रुति चर।** ऋ० ९/१०/३ सोम की रक्षा करने वाले साधक श्रुत पर आचरण किया कर। उप – उपजन – समीप्य – क्रिया योगेषु। वेदाग प्रकाश का अव्ययार्थ प्रकरण।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन खारी बावली दिल्ली ६

हिन्दी भाषा अपनाओ

सत्यार्थ-प्रक... ...ान पर हुई ?

उदयपुर चलें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने दिल्ली की आर्य जनता को अधिक से अधिक सख्या मे **सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २००२** मे भाग लेने के लिए उदयपुर चलने का आह्वान किया है। दिल्ली से उदयपुर की यात्रा २५ फरवरी दोपहर बाद २ बजे से चेतक एक्सप्रेस से प्रारम्भ होगी और २६ फरवरी की प्रात वेला मे यह रेलगाडी उदयपुर पहुचेगी। २६ २७ एव २८ फरवरी २००२ के पूरे कार्यक्रमों का भरपूर आनन्द तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणाओ से ओत प्रोत होकर आर्यजन २८ फरवरी सायकाल चेतक एक्सप्रेस से ही दिल्ली वापस लौटेगे जो अगले दिन दोपहर लगभग १ बजे यहा पहुचेगी। यह रेलगाडी सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशन से ही प्रारम्भ होती है और इसी स्टेशन पर समाप्त होती है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन को इस यात्रा का सयोजक बनाया गया है। जो आर्य महानुभाव अकेले या समूह के रूप मे उदयपुर जाना चाहते हैं वे पूर्ण जानकारी के लिए श्री महाजन से सम्पर्क करे। यात्रा का व्यय लगभग ८००/– रुपये प्रति व्यक्ति आएगा इसमे ६५ वर्ष से अधिक आयु के पुरुषो तथा ६० वर्ष से अधिक आयु की महिलाओ को लगभग १००/– रुपये की छूट होगी (क्योकि उनका रेल किराया कम लगता है)।

– सयोजक –

श्री सोमदत्त महाजन
आर्यसमाज सी-३ जनकपुरी, नई दिल्ली-५८
दूरभाष – ५५४४४८६ (आ०स०) ५५५१५८७ (नि०) ५५०५५४३ (का०)



प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित **सार्वदेशिक प्रेस** १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव **फैक्स** ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष** ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५, अक १४ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार, ११ फरवरी से १७ फरवरी, २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

श्रद्धा, अनुशासन और कर्त्तव्य पालन की प्रेरणाओं से ओत-प्रोत होगा

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी महासम्मेलन

विभिन्न समितियां गठित करने तथा सत्रों के निर्धारण की प्रक्रिया का शुभारम्भ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कागडी शताब्दी महासम्मेलन हरिद्वार मे चैत्र शुक्ल १३ से वैशाख कृष्ण २ २०५६ तदनुसार २५, २६ २७ और २८ अप्रैल २००२ को आयोजित किए जाने की घोषणा के बाद हरिद्वार और दिल्ली मे कार्यकर्ता बैठके आयोजित करके महासम्मेलन की तैयारियों का सिलसिला प्रारम्भ हो गया है। यह विशाल महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य की अध्यक्षता में होगा। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा इस महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष होंगे। सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रमुख पदाधिकारियों और विशिष्ट आर्य सस्थाओ के प्रमुख पदाधिकारियो सहित एक स्वागत समिति का गठन किया जा रहा है। हरिद्वार सम्मेलन अपने आप में एक विशाल सम्मेलन होगा जो आर्यसमाज की सगठनात्मक एकता और वैदिक सस्कृति को उजागर करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

विगत् २६ और २७ जनवरी को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय गुरुकुल विभाग तथा गुरुकुल फार्मेसी के अतिरिक्त दिल्ली हरयाणा और पजाब की प्रतिनिधि सभाओ के प्रमुख अधिकारियों ने भी इस विचार विमर्श बैठकों में भाग लिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने इस महासम्मेलन की विस्तृत जानकारी सदस्यों को दी और भोजन आवास पण्डाल मच तथा कार्यक्रमों के बारे में सभी उपस्थित सदस्यों की शकाओं का समाधान किया। बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि किसी मार्ग पर चलते हुए समस्याए छोटी हो या बडी परन्तु जब इच्छाशक्ति प्रबल होती है तो कोई भी समस्या टिक नहीं पाती और मजिल तक पहुचने का मार्ग प्रशस्त होता है। हाल ही मे गुरुकुल कागडी के भूमि विक्रय प्रकरण से जो क्षति हुई है उसकी भरपाई करने के लिए ही सार्वदेशिक सभा ने इस महासम्मेलन को हरिद्वार मे गुरुकुल के प्रागण मे ही करने का निश्चय किया है। इस महासम्मेलन के माध्यम से एक विशेष सन्देश दुनिया के सामने प्रस्तुत किया जाएगा कि आर्यजन अपने कर्त्तव्यों के प्रति अब भी जागरूक हैं और दान मे मिली सम्पत्ति की किसी भी कीमत पर रक्षा करना भी जानते हैं।

उन्होंने कहा कि मुम्बई महासम्मेलन को श्रद्धा और अनुशासन का पर्व कहा गया था। आज इस हरिद्वार महासम्मेलन के माध्यम से उसी श्रद्धा और अनुशासन के आधार पर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के प्रति हमारे कर्त्तव्यों का क्रियान्वयन प्रारम्भ होगा।

श्री विमल वधावन ने इस महासम्मेलन में होने वाले कार्यक्रमो और विभिन्न सत्रों की सक्षिप्त जानकारी उपस्थित सदस्यों को दी। सत्रों तथा वक्ताओ और अतिथियो के निर्धारण के लिए सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य की अध्यक्षता में एक समिति भी गठित की गई है।

उन्होंने बताया कि निम्न प्रमुख विषयों पर विभिन्न सत्रों के आयोजन पर विचार किया जाएगा।

१ **गुरुकुल सस्कृति सत्र**
२ **नारी से मानव निर्माण**
३ **अधिकार बनाम कर्त्तव्य**
४ **आधुनिक युग में धर्म का वैज्ञानिक स्वरूप**
५ **समाज की मूल ईकाई आर्य परिवार**
६ **राष्ट्र सेवा सत्र**
७ **इतिहास पुनर्लेखन**
८ **गृह वापसी**

हरिद्वार महासम्मेलन के अवसर पर सभी पुराने स्नातको का पुनर्मिलन समारोह भी आयोजित होगा जो विगत् सौ वर्षो मे इस गुरुकुल से दीक्षित होकर निकले है। इस कार्य के लिए भी गुरुकुल के वर्तमान अधिकारियो तथा कई पूर्व स्नातकों सहित एक उपसमिति का गठन किया गया है जो डॉ० महेश विद्यालकार के सयोजकत्व मे कार्यक्रम का निर्धारण करेगी।

हरिद्वार महासम्मेलन के शुभावसर पर शोभायात्रा भी अपने आप मे अनूठी एव विहगम होगी। इस शोभा यात्रा को वेद की अनन्त यात्रा नाम दिया गया है। इस वेद यात्रा मे विभिन्न प्रान्तो से पधारे आर्य सगठनों तथा हरिद्वार की आर्य सस्थाओ के अतिरिक्त हरिद्वार की अन्य हिन्दू धार्मिक सस्थाओं की झाकिया भी शामिल की जाएगी क्योंकि विगत् कुछ समय से वेदों में गोमास तथा अन्य अनर्गल बातों का प्रलाप किया जा रहा है। उनका जवाब केवल महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्य ही है। अत समस्त हिन्दू सस्थाओं आदि से भी सम्पर्क करके इस वेद यात्रा में शामिल होने का आग्रह किया जाएगा।

इस अवसर पर एक सुन्दर स्मारिका का भी प्रकाशन किया जाएगा जिसमें सारे देश में चल रहे विभिन्न गुरुकुलो तथा अन्य शिक्षण सस्थाओ की भी सूचना प्रतिनिधि सभाओ के माध्यम से हो जाएगी। इस स्मारिका मे प्रान्तीय सभाओ का सक्षिप्त इतिहास भी प्रकाशित किया जाएगा। स्मारिका मे विज्ञापन उपलब्ध कराने हेतु भी प्रान्तीय सभाओ और आर्यजनो का सहयोग अपेक्षित होगा।

यज्ञ-प्रबन्ध आवास धन-सग्रह जल प्रबन्ध पण्डाल-प्रबन्ध स्वच्छता सत्रो के प्रस्ताव निर्धारण विक्रय केन्द्र प्रबन्ध जन सम्पर्क पुलिस एव सुरक्षा व्यवस्था चिकित्सा प्रतिनिधि पजीकरण यात्रा प्रबन्ध परिवहन स्मारिका भोजन पुनर्मिलन समारोह आदि विभिन्न कार्यो के लिए अलग-अलग उपसमितिया भी गठित की जा रहीं हैं जिनकी सूचना यथा समय सार्वदेशिक साप्ताहिक के माध्यम से ही प्रकाशित की जाती रहेंगी।

अगली बैठक सार्वदेशिक सभा कार्यालय में १ फरवरी को सम्पन्न हुई जिसमें हरिद्वार से लगभग १५-२० विशेष पदाधिकारी तथा प्राध्यापक आदि शामिल हुए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की एक अन्तरग बैठक में भी १० फरवरी को इस हरिद्वार महासम्मेलन को विशेष उत्साह के साथ विशाल स्तर पर सम्पन्न करने के लिए हर सम्भव सहयोग के सकल्प पारित किए गए। बैठक की अध्यक्षता करते हुए दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने हरिद्वार महासम्मेलन के अवसर पर दिल्ली की ओर से दिल्ली के आर्य परिवारो की एक आर्य गौरव गाथा निकालने की भी विस्तृत योजना प्रस्तुत की जिसे सुनकर आर्यजनता में विशेष उत्साह का सचार हुआ।

मार्च और अप्रैल माह में आयोजन को गति प्रदान करने के लिए इन उपसमितियों की बैठकों का दिल्ली और हरिद्वार में विशेष दौर प्रारम्भ होगा।

जनता के दरबार

– डॉ० रघुवीर वेदालकार

जनता को जनार्दन भी कहा गया है। जनार्दन=परमेश्वर। 'पञ्च परमेश्वर' भी सुप्रसिद्ध शब्द है। जहा सभी शक्तिया अशक्त या भ्रष्ट हो जाती है वहा जनता ही ठीक निर्णय देती है उचित प्रतिकार करती है तथा दोषियों को दण्ड भी दे देती है। व्यक्तिगत तो नहीं अपितु सामाजिक एव राष्ट्रीय सस्थाओ एव सम्पत्तियो की ओर जनता जनार्दन का ध्यान आकृष्ट होना ही चाहिए क्योंकि उक्त सस्थाए जनता के लाभार्थ ही तो है। भले ही समय पाकर कुछ स्वार्थी लोग ऐसी सस्थाओ पर अपना आधिपत्य जमाने तथा अपने स्वार्थवश उनका दोहन करें तब भी जनता को ऐसी सस्थाओं के प्रति आत्मीयता बनाए रखनी चाहिए तथा उनकी रक्षा में सन्नद्ध हो जाना चाहिए।

कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा गुरुकुल कागडी की भूमि बेचने का दुष्कृत्य समाचार पत्रो के माध्यम से समस्त आर्यजनता को विदित हो चुका है पुनरपि इसके विरोध मे जो स्वर उभरने चाहिए थे भूमि को बचाने का जो प्रयास होना चाहिए था उन स्वार्थी भूमाफियो को धिक्कारने की जो लहर चलनी चाहिए थी वह नही हो रहा है। इस विषय में प्रयास तो किए गए। गुरुकुल कागडी मे भूमि रक्षक समिति भी बनी पजाब सभा की ओर से भी यत्न हो रहा है कुछ लेख भी लिखे गए। इन सबका ही सुपरिणाम है कि मामला प्रकाश में आया तथा भूमि का हस्तान्तरण अभी नहीं हो सका। यह सब श्लाघनीय है किन्तु इस घोटाले का प्रतिरोध प्रतिकार समस्त आर्यजनता की ओर से किया जाना चाहिए था। मान्य विद्वज्जन स्नातक बन्धु एतद्विषयक लेख लिखते वक्तागण जमकर इसका प्रतिरोध करते सक्रिय कार्यकर्ता धरना या आन्दोलन जैसा कुछ चलाने तथा सार्वदेशिक सभा सहित अन्य सभाओं के मान्य अधिकारी जन अपना सक्रिय योगदान देते।

अभी भी इन प्रयासो की महत्ती आवश्यकता है। अत समस्त आर्यजनता इस विषय में कुछ सोचे तथा करे यह उसका पुनीत कर्त्तव्य है। प्रयत्न करने से बहुत कुछ हो जाता है। गुरुकुल कागड़ी वृन्दावन की भूमि को भी उ०प्र० की सभा बेचने वाली थी किन्तु जागरुक स्नातकों ने उस योजना को विफल कर दिया। क्या यहा ऐसा नहीं हो सकता। हमारा स्नातक मण्डल कहा सो गया। गुरुकुल के पुराने सुयोग्यतम स्नातक हैं वे इस ओर से क्यो विरत हैं?

भूमि विक्रय के वर्तमान अभियुक्त कहते हैं कि इससे पहले भी गुरुकुल कागडी की भूमि बिकी है। पजाब सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के समय ऐसा हुआ। यह शर्मनाक तर्क देकर वर्तमान विक्रेता अपने को निर्दोष सिद्ध नहीं कर सकते। कारण यह कि उस समय भी ये सभी लोग गुरुकुल कागडी तथा विभिन्न सभाओ में प्रतिष्ठित थे। इन्हें तब भी उस दुष्कृत्य का विरोध करना चाहिए। एक चोर चोरी कर रहा है तथा हम चुपचाप देख रहे हैं। साथ ही जब हमारा दाव लगता है तो हम उससे भी प्रबल डाका डाल देते हैं तो इससे क्या हम निर्दोष सिद्ध हो जाएगे?

सामान्य बुद्धि से भी यह जाना जा सकता है कि १४४ बीघा भूमि का मूल्य केवल ७५ लाख नहीं अपितु कई करोड रूपये है। खरीदार ने तो अभी भी करोडों रुपया ही दिया है। वह धन (Black Money) उसने किसे-किसे दिया कितना दिया यह उससे पूछा जा सकता है। आर्यजनता इसे पूछे। जिस-जिस पर भी वह धन गया है उनसे वापस लेकर क्रेता को वापस कर दिया जाए। यदि विक्रेताओं का हाजमा इतना दुरुस्त है कि वे इसे हजम कर गए तथा डकार लेने का भी नाम नहीं ले रहे तो यह जनता जर्नादन इन स्वार्थियों का कोर्ट मार्शल करे। इनका सामाजिक बहिष्कार कर दे।

आर्यसमाज तथा सभाओ मे उन्हे कोई स्थान न दे तब भी इन्हे अपने किए का दण्ड मिल जाएगा क्योंकि 'सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते' किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का अपयश होना ही उसकी मृत्यु से भी बढकर है। यह भी इन भूमि विक्रेताओं की जीवित मौत हो जाएगी। रही क्रेता को पैसा वापस करने की बात। जब आर्य जनता के दान द्वारा इतना बडा गुरुकुल बनाया जा सकता है तो क्या उसे बचाया नहीं जा सकता। देने वाले तो लाखो भी देगे किन्तु प्रति व्यक्ति यथा सामर्थ्य इस भूरक्षण यज्ञ में जो भी आहुति दे उससे भी क्रेता का धन वापस किया जा सकता है।

सभाओ के तो अपने-अपने दाव-पेच चलते रहते हैं। कभी पजाब सभा ने ऐसा किया तो अब हरियाणा सभा ने उससे भी बढकर कर दिया। दिल्ली सभा के अधिकारी भी उसमें स्वल्पाधिक रूप से सम्मिलित थे। यह दुर्भाग्य ही कहिए कि एक बेचारे गुरुकुल की स्वामिनी तीन सभाए हैं। इन सभाओं के माध्यम से ही तो ये लोग गुरुकुल के कुलपति कुलाधिपति तथा विजिटर जैसे महत्वपूर्ण पदो पर प्रतिष्ठित हो जाते हैं। विश्वविद्यालय के हित में यही होगा कि वह इन सभाओं से मुक्ति पाकर शिक्षाविदों के सरक्षण में रहे।

– बी०-२६६, सरस्वती विहार दिल्ली

बोध कथा

अतीत काल में विदेशों में भारतीय संस्कृति

कई बार यह धारणा रही है कि सदा से भारतवासी सकुचित मनोवृत्ति वाले अपनी सीमाओं मे ही बध रहे है। ऐतिहासिक भौगोलिक अनुसधान ने वह धारणा निर्मूल सिद्ध की। प्राचीन साहित्य का अध्ययन स्पष्ट करता है पर्वत से उतरकर सप्त सिन्धु में आए आर्य साहसिक और भ्रमणशील थे। ईरान में उन्होंने वह सस्कृति प्रतिष्ठित की जिसका जिन्दावस्था मे मूल है। जिन्दावस्था में ऐसे तत्व हैं जिनका वेदो से गहन सम्बन्ध था। वैदिक साहित्य मे व्यापारियो का उल्लेख है वे व्यापारी थे नौकाओ से समुद्रपार कर ये दूर दूर देशो को गए थे। पाण्डय चोल क्षेत्रो मे सस्कृति के प्रथम सन्देशवाहक प्राणी थे। दक्षिण में बसने के बाद श्री लका हालैण्ड से अफ्रीका पहुचे। वहा से वे स्केण्डीनेविया पहुचे।

पुष्ट प्रमाण सिद्ध करते हैं कि समुद्र के मार्ग से भारतीय व्यापारी चीन पहुचे। उन्होने लगया नगर बसाया। आजकल जो इण्डोनेशिया कहलाता है प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में यह स्वर्णदीप था। जावा-यवद्वीप सुमात्रा बाली के द्वीप स्वर्णद्वीप पुकारे जाते थे। तीसरी-चौथी शताब्दियों मे भारत का महाविद्वान् बुद्धभद्र चीन गया सिहल द्वीप से भिक्षुओ और भिक्षुणियों की कई मण्डलिया पहुचीं। इन भारतीय विद्वानो ने वहा कई बार बौद्ध ग्रन्थ लिखे। अनेक सस्कृत पाली ग्रन्थ चीनी में प्रस्तुत किए। दक्षिण पूर्व के कम्बोडिया जावा सुमात्रा बाली आदि द्वीप प्राचीन साहित्य मे स्वर्णदीप कहलाते थे। वहा की सभ्यता सस्कृति मे महाभारत रामायण और भारत की ऐतिहासिक धार्मिक परम्पराए ओत-प्रोत रहीं।

पहले यह समझा जाता था कि अमेरिका की पहली खोज कोलम्बस ने की थी परन्तु ऐतिहासिक मे प्रारम्भिक प्रवेश भारतीयो ने किया था। मैक्सिको के शासकीय इतिहास में लिखा है – अमरीका कहलाने वाले प्रदेश मे सबसे पहले वे लोग आए जो उस प्रवाह के भाग थे जो भारत से पूर्व की ओर प्रवाहित हुआ। मैक्सिको राष्ट्रीय सग्रहालय के क्यूरेटर प्रो० रामन मेना की सम्मति मे द० अमेरिकी मानवो का स्वरूप भारतवासियो सरीखा है उनके सिर के वस्त्र ऊचे-ऊचे भवन रचना शैली भारतवासियों जैसी थी।

दूसरे विद्वान हैविट ने लिखा – भारत से हिन्दू व्यापारी अपने साथ पाण्डवों का अट्ठारह महीने का वर्ष, व्यापार-व्यवस्था भारतीय बाजार शैली लेकर मैक्सिको आए।

विद्वानों की सम्मति मे द० अमेरिका की भाषा पर सस्कृत का प्रभाव है। इसी से मैक्सिको और पीरू के निवासियों के स्वरूप रहन-सहन, भाषा मे भारतीयता की झलक है। भारत मे नाग जाति की चर्चा है वैसे द० अमेरिका में नागाओं की चर्चा है। मैक्सिको के मैक्सिकन लाइफ' पत्र में सूचना दी गई कि स्पेन निवासी जब मैक्सिको पहुचे तब उन्होने इन्द्र और गणेश की पूजा देखी। भारतीय यात्री ही मैक्सिको जाते हुए कपास के बीज लेकर पहुचे थे। द० अमेरिका वाले भी समय को चार युगो मे बाटते थे चन्द्र ग्रहण के समय वे ढोल पीटते और प्रार्थना करते थे। वहा बगाल की चरक पूजा का भी चलन हुआ। भारत के स्तूप मन्दिरो की तरह वहा भी स्तूप बनवाए गए। भारत सरीखे नृत्य प्रचलित हुए। इन्द्रप्रस्थ के मय दानवों के वशज कहलाए। प्राचीन अमेरिकी अपने मुर्दे जलाते थे उनकी शिक्षा प्रणाली गुरुकुल सरीखी थी। योगियों का आदर किया जाता था। वहा के भवनों चित्रों पर भारत की छाप दिखाई देती है। भारत वासी यात्रियो की सन्तान थे।

– नरेन्द्र

**कल्याण-मार्ग पर चलें ·
उत्कृष्ट बनो ! सब सुखी हो**

स्वस्ति पन्थामनुचरेम। ऋ० ५ ५१ १५
हम सदा कल्याण मार्ग पर चले।
उच्च तिष्ठ महते सौभाग्य। अथर्व० ८ ६ २
महान सौभाग्य के लिए उच्च बनो।
सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु खभागभवेत।।
हे नाथ सब सुखी हो कोई न हो दु खारी।
सब भद्रभाव देखे सत्मार्ग के पथी हो।।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

आर्थिक विनिवेश में अधिक सन्तुलन एवं मर्यादा अपेक्षित

ताजा समाचार है कि विदेश सचार निगम लिमिटेड (वी०एस०एन०एल०) की २५ प्रतिशत पूजी प्रबन्धन के साथ टाटा समूह को १४३० करोड ३५ लाख रुपये मे बेचने के सरकारी निर्णय का श्रमिक सगठनो ने तीव्र विरोध किया है। श्रमिक सगठनो का कथन है कि सरकार के इस निर्णय से देश की अर्थव्यवस्था की गाडी पटरी पर आने की जगह अधिक अव्यवस्थित हो जाएगी। विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के दिशा निर्देशो पर चलने वाले कई देश इसके उदाहरण है। दूसरी ओर कुछ पत्रो ने जैसे दैनिक जागरण ने लिखा है – विदेश सचार निगम तथा आई०वी०पी० द्वारा किया निर्णय उचित ही है। इसी तरह भारतीय पर्यटन निगम के कुछ होटलो के विनिवेश का फैसला भी सही दिशा मे उठाया गया कदम है। इस बात का कही कोई औचित्य नहीं कि भारत सरकार होटलो का कामकाज अपने हाथ मे बनाए रखे। पत्र का कथन है – 'सरकार का काम होटल चलाना अथवा मनोरजन के प्रबन्ध करना नही है। पत्र की सम्मति मे 'निजी क्षेत्र की उत्पादकता और कार्यक्षमता सार्वजनिक क्षेत्र की उत्पादकता और कार्य क्षमता से श्रेष्ठ कोटि की होती है। इसी सामयिक गम्भीर समस्या के बारे मे अग्रेजी पत्र 'हिन्दुस्तान टाइम्स लिखता है कि वाजपेयी सरकार ने अनेक राजनीतिक समस्याओ और निर्वाचन सम्बन्धी अनिश्चित सम्भावनाओ के बावजूद आर्थिक सुधारो के बारे मे एक बडा कदम उठाया है। उसने खाद्यान्न खाद्य तेलो और चीनी की देशभर मे उन्मुक्त आवाजाही की अनुमति देकर स्वागत के योग्य कदम उठाया है। इन पत्रो ने यह भी लिखा है कि विनिवेश की प्रक्रिया आगे बढाते हुए सरकार को यह भी देखना होगा कि ऐसा वातावरण बने जिससे उद्योग बिना किसी शोषण के सफलतापूर्वक चलाए जा सके और उनमे अधिक से अधिक पूजी विनिवेश हो। पत्रो ने यह भी लिखा है कि भारत मे समाजवाद की आड लेकर जिस तरह हर क्षेत्र का सरकारीकरण करने की चेष्टा की गई वह एक बडी भूल थी। सभी प्रकार के उद्योगो का सरकारीकरण देश की औद्योगिक प्रगति मे बाधक ही सिद्ध हुआ।

वैसे अधिक अच्छा होता कि ऐसा वातावरण बनता जिससे औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्रो मे अधिक पूजी लगती और जनता स्वेच्छा से उद्योगो मे विनिवेश के लिए प्रयत्न करती लेकिन ऐसा नही किया जा सका। फलत उद्योग सरकारी नियन्त्रण मे आए और उनमे लाल फीताशाही और भाई भतीजावाद को प्रश्रय मिला फल यह हुआ कि सरकारी उद्योगो की कार्यक्षमता घटी उसके फलस्वरूप उत्पादन और आय भी कम हुई। हिन्दुस्तान टाइम्स ने यह ठीक ही लिखा है कि इस नई विनिवेश प्रक्रिया मे यह पूरा ख्याल रखा जाना चाहिए कि उससे निर्धन जनता को कष्ट न हो। नई विनिवेश प्रक्रिया से सार्वजनिक वितरण प्रणाली को क्षति नही पहुचनी चाहिए। प्रत्युत सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से आवश्यक पदार्थों की आपूर्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए जिससे निर्धनता की सीमा से नीचे रहने वाले अभाव ग्रस्तो को भी रसद एव खाद्यान्न पहुच सके। हा सरकार को यह भी देखना चाहिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली का अन्न भण्डार खुले बाजार मे न पहुच जाए। एक जनतन्त्री व्यवस्था मे अत्यधिक विषमता उचित् नही है। प्रभूत अनाज भण्डार होने से अब सरकार को ध्यान देना चाहिए जिससे देश के बहुत से भागो मे व्याप्त भूख और गरीबी का निदान करने के लिए उपयुक्त समाधान प्राप्त किया जाए। ५५ वर्ष पूर्व देश ने विदेशी शासन को खत्मकर पूर्ण राजनीतिक स्वाधीनता पाई थी। यह ठीक है कि भारत छोडते समय विदेशी शासक उसके दोनो बाजू पर्याप्त भूखण्डो के साथ पृथक कर गए थे। विदेशी शासन से मुक्ति का लक्ष्य केवल राजनीतिक पराधीनता से मुक्ति न था प्रत्युत उसके माध्यम से देश मे सच्ची आर्थिक सामाजिक सास्कृतिक विषमता और कष्टो का उन्मूलन करना लक्ष्य था। यह चिन्ता और कष्ट की बात है कि अब भी अनेक क्षेत्रो मे विषमता और भेदभाव प्रचलित है।

स्वाधीनता के प्राप्ति के ५५वे वर्ष मे सर्वोत्तम स्थिति तो यह होती कि भारत आर्थिक सामाजिक सास्कृतिक राजनीतिक दृष्टि से विश्व का एक अग्रणी राष्ट्र हो जाता। आज भारत की जनसख्या १ अरब से अधिक है इसी के साथ प्राकृतिक भौगोलिक ससाधनो की दृष्टि से भारत मे किसी भी बुनियादी धातु सम्पदा साधनो का अभाव नही है तीसरे वैज्ञानिक तकनीकी औद्योगिक कृषि सम्बन्धी किसी भी विद्या प्रौद्योगिकी क्षमता मे हमारे देशवासियो की अच्छी स्थिति है। यदि देशवासियो की प्रतिभा क्षमता कौशल और पुरुषार्थ का समुचित प्रयोग किया जाए तो हमारा राष्ट्र आर्थिक राजनीतिक वैज्ञानिक साधनो क्षमता कौशल से विश्व का प्रत्येक दृष्टि से अग्रणी राष्ट्र बन सकता है। यह चिन्ता की बात है कि राष्ट्रीय प्रतिभा क्षमता सामर्थ्य का हम प्रयोग न करे प्रत्युत उन्हे ऐसे तत्त्वो को हस्तान्तरित कर दे जो राष्ट्र विरोधी हो सकते है। उसके साथ ही यह भी सोचने की बात है कि आजादी के ५० वर्ष से अधिक वर्ष होने पर भी देश से अभी गरीबी भूख आभावो रोगो और कष्टो का उन्मूलन नहीं हुआ है। राष्ट्र मे गणतन्त्री व्यवस्था को प्रचलित हुए भी चालीस वर्ष से अधिक वर्ष बीत चुके हैं ऐसे मे देश मे भूख गरीबी रोगो कष्टो तथा किसी भी प्रकार की आर्थिक सामाजिक नैतिक विभाग का प्रचलित होना एक अभिशाप है। देशवासियो को विशेषत सभी जागरूक देशवासियो को देश से भूख विषमता रोगो कष्टो गरीबी आदि सभी प्रकार के अभिशापो के उन्मूलन का लक्ष्य सम्मुख रखकर उसी तरह बनी सत्याग्रही सकल्पी बनकर तन मन धन की पवित्र आहुति देनी चाहिए जैसे १९४६ से पहले देश से विदेशी शासन के उन्मूलन के लिए प्रत्येक राष्ट्रजन ने अपना विनम्र योगदान किया था। यह काम छोटा तुच्छ और गौण नहीं है प्रत्युत एक बडा कार्य है इससे पूर्ण कर राष्ट्र को प्रत्येक दृष्टि से स्वावलम्बी आग्रणी और महान बनाया जा सकता है।

चिट्ठी-पत्री

लोकतन्त्र के लिए चुनौती

ससद भवन पर हुआ हमला लोकतन्त्र के लिए चुनौती है। अमेरिका ने जिस तरह अफगानिस्तान पर हमला कर आतकवादियो को खदेडा है उसी तरह केन्द्र सरकार से तत्काल आवश्यक कदम उठाते हुए पाकिस्तान स्थित आतकवादी शिविर खत्म करने चाहिए। आतकवाद के उन्मूलन के लिए सभी राजनीतिक दलो को दलगत राजनीति से ऊपर उठकर कार्य करना चाहिए। आतकवादी निरोधक आध्यादेश पोटो देश की सामयिक जरूरत है। वर्तमान कानून आतकवादी गातिविधिया नहीं रोक सकते यह सच्चाई है।

– विजय भल्ला गोविन्द नगर कानपुर

पेट की जरूरत

जलीस आतकवादियो से लोहा लेने वाले अमरीक सिह और सुरजीत सिह वीरता प्रदर्शित करने के लिए भारत पुरस्कार के लिए चुने गए हैं। यह एक अच्छी खबर है। इससे दूसरो मे भी हिम्मत आती है और राष्ट्रीय भावना को बढावा मिलता है लेकिन इस अच्छी खबर के साथ एक दिल दुखाने वाली खबर यह है कि जम्मू-कश्मीर पुलिस ने इन वीर बच्चो को रसोइयो के काम पर लगा रखा है। तथ्य यह है कि इन वीर बच्चों के बारे मे घोषणा हुई कि उन्हे हवलदार बनाया जाएगा। यह सब जानने के बाद सवाल यह है कि कथनी और करनी मे यही फर्क आता रहा तो साहस दिखाने वालो की कहानिया पुस्तको मे सिमटकर रह जाएगी। यह सिर्फ इन्हीं बच्चो के साथ नहीं है बल्कि ऐसे पुरस्कारो से सम्मानित सभी खिलाडी है फाके के दिन गुजार रहे हैं। पुरस्कार ओढने के बिछाने खाने के काम नहीं आएगे। ऐसी खिलाडियो को आर्थिक मजबूती मिलनी चाहिए केवल प्रमाण पत्र या मैडल नहीं।

– इन्द्रसिंह धिगान गाधी आश्रम दिल्ली

कीटनाशकों से बढता खतरा

ज्यादा फसल उगाने के लिए कृषि मे कीटनाशको का प्रयोग तेजी से बढ रहा है। एफ०ए०ओ० की रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश मे पिछले ४० वर्षो मे कीटनाशकों की खपत पन्द्रह गुणा बढी है। यह कीटनाशकों का ही दुष्प्रभाव है कि अब खेतो मे तितलिया नहीं दीखतीं। चिडियो और गुस्सल पक्षियो की इतनी कमी हो गई है कि ये पक्षी अपना अस्तित्व ही खोते दीखते हैं। वैज्ञानिको ने सिद्ध किया है कि एक प्रतिशत कीटनाशक अपना लक्ष्य पूरा करते है शेष ९९ प्रतिशत जैव विविधता को प्रभावित कर पर्यावरण प्रदूषण फैला रहे हैं। कीटनाशकों की जगह हमें परम्परागत तरीकें अपनाने चाहिए अन्यथा कोई भी नई विद्या कारगार नहीं होगी।

– ईश्वरचन्द्र आत्रेय विकासनगर हल्द्वानी

सामवेद से परमेश्वर कीर्तन (आदेश) सप्तकम (३)

परमेश्वर की देनों के लिए धन्यवाद कीर्तन आवश्यक तथा लाभकर

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) रोग विनाशक पदार्थो के प्रदाता प्रभु के प्रति कृतज्ञता प्रकाशन किया करो

कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे। देवममीवचातनम।।

साम० ३२

मेधातिथि काण्व । अग्नि । गायत्री।

अर्थ – ऐ धरणावती बुद्धि की प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशील उपासक ! (अध्वरे) हिसाशून्य इस जीवन यज्ञ मे (अमीवचातनम्) सब रोगो के विनाशक (देवम्) दिव्य भावनाओ के प्रदाता (सत्यधर्माणम्) नित्य सत्यधर्मों के प्रवर्तक (कविम) क्रान्तदर्शी (अग्निम्) सबसे पूर्व विद्यमान अतएव सब के मार्गदर्शक परमेश्वर की (स्तुहि) सदा नियम से स्तुति किया कर।

अध्वरे – यज्ञ नाम सु नि० ३ १७ अमीव रोग क्लेश। *सूर्यकान्त कोष*

निष्कर्ष – परमेश्वर की सदा स्तुति करने वाले को रोग और क्लेश सन्तप्त नही करते। वह सदा सत्यधर्म पालन मे प्रवृत्त रहता है।

(२) परमेश्वर का प्रिय नाम अपने अन्दर बसाकर अपने को पवित्र करो

आ जुहोता हविषा मर्जयध्व नि होतार गृहपतिं दधिध्वम्। इडस्पदे नमसा रातहव्य सपर्यता यजत पस्त्यानाम।।

साम ६३

श्यावा श्वो वामदेवो वा। अग्नि । बृहती।

अर्थ – प्रगतिशील साधको ! (होतार गृहपतिम) सृष्टियज्ञ के होता तथा ब्रह्माण्ड तथा प्रत्येक गृह शरीर के स्वामी परमेश्वर को (नि दधिध्वम्) अपने अन्त करण या सहस्रार चक्र मे धारण करो और (मर्जयध्वम्) अपनी आत्मा को शुद्ध और अलकृत करके (हविषा आजुहोत) अपने मन शरीर और इन्द्रियो को हवि बनाकर लोकहित के लिए आहुति दे डालो। इस (रातहव्यम) दातव्य सासारिक पदार्थो के दाता (पस्त्याना यजतम्) प्रत्येक गृहपति द्वारा सगति करने योग्य (इड पदे) स्तुति प्रार्थना के स्थान हृदय मे (नमसा) अहकार त्याग रूपी नमन द्वारा (अग्नि सपर्यत) जगत के सर्वप्रमुख परमेश्वर की पूजा किया करो अर्थात उसकी आज्ञा मानकर जनता की सेवा करो।

निष्कर्ष – तन मन धन से जनसेवा मनुष्य के सब दोषो को नष्ट करके पवित्र और अलकृत बना देती है। हृदय और मस्तिष्क मे उसे सदा धारण के जनसेवा करना ही परमेश्वर की वास्तविक आराधना व पूजा है।

सपर्यत – सपर पूजयायाम पूजा करना सेवा करना।

(३) अपना दान सत्पात्र तक पहुचाने के लिए, उसी मार्गदर्शक से प्रार्थना करे

तो गूर्धया स्वर्णर देवासो देवमरति दधन्विरे। देवत्रा हव्यमूहिषे।। *साम० १०६*

सोभरि । अग्नि । ककुबुष्णिक।

अर्थ – (देवास) समझदार ज्ञानीजन (अरतिम)। आसक्ति रहित तथा सर्वान्तर्यामी (स्वर्णर य देवम) अतएव मन को सुखमय स्थिति मे पहुचाने वाले जिस परमात्मा को (दधन्विरे) अपने हृदय मे धारण कहते है – (देवत्रा हव्य अहिषे) अपनी दातव्य हवि को दवेताओ तक पहुचाने के लिए (त स्वर्णर देव गूर्धय) उसी सुखदाता परमात्मा की अर्चना और कामना किया करे।

अर्थपोषण – गूर्धय गूर्धयतिअचनाकर्मा।

नि० ३ १४। गृधू अभिकाक्षायाम चाहना

अरतिम अ+रतिम आसक्ति रहित। ऋगति प्रापणयो – सर्वान्तर्यामी।

स्वर्णरम स्व –सुख+नरम (नृनये) प्रापयतीति तम सुखप्रदातारम।

निष्कर्ष – जिसे चाहते है – उसकी आज्ञा का पालन और इच्छा की पूर्ति की जाती है। इसलिए परमात्मा की अर्चना और आकाक्षा करने वालो को वेद प्रतिपादित उसके आदेशो और इच्छाओ को पूरा करके सच्ची अर्चना करे।

(४) परमेश्वर के अतिरिक्त किसी से प्रार्थना न करो, कभी निराशा नहीं होगी

मा चिदन्य द्विशसत सखायो मा रिषण्यत।

इन्द्र मित्स्तोता वृषण सचा सुते मुहुरुक्था चशसत।

साम० २४२

प्रगाथ काण्व । इन्द्र । बृहती।

अर्थ – (सखाय मारिषण्यत) परमेश्वर के सखा बनन के इच्छुक उपासको ! तथा सासारिक मनुष्यो या जड दवो की पूजा करके निराश हुए साधको ! दु खी होकर अपनी आत्मा को हिसित मत करो ! बस यह निश्चय कर लो कि (मा अन्यत चित विशसत) कि अब से परमेश्वर से भिन्न किसी की स्तुति उपासना या प्रार्थना नही करे (इन्द्र इत स्तोता) अब केवल परमेश्वर की ही स्तुति करे और उसी से प्रार्थना करे। ऐसा दृढ निश्चय हो जाने पर (सुते) ससार के प्रत्येक पदार्थ मे (वृषणम) उसका सामर्थ्य अनुभव करो और (सचा) साथ मिलकर (वृषण स्तोत) उस आनन्द वर्षी की स्तुति करो (मुहु उक्थाचशसत) और बार बार वैदिक सूक्तो से उसके गुणो की चर्चा करो।

निष्कर्ष – किसी मानव या जड पदार्थ की स्तुति या प्रार्थना उचित नही क्योकि प्राय उसमे निराश ही होना पडता है केवल परमेश्वर की स्तुति करो और उसी से प्रार्थना करो। तब यदि प्रार्थना न सुनी गई तो अपने प्राक्तन कर्मों का फल समझकर सन्तोष रहेगा निराशा न न होगी।

(५) कलुषित वृत्तियो को नष्ट करने वाले, उसके इन्द्र व अग्नि रूप की स्तुति करो

तमीडिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत्।

कृष्णा कृणोति जिह्वया।। *साम ११४६*

भारद्वाजो बार्हस्पत्य । इन्द्राग्नी। गायत्री।

अर्थ – (त अग्नि इन्द्र इडिष्व) उस मार्गदर्शक प्रणेता परमेश्वर की स्तुति करो और वैसा बनने का प्रयत्न करो (य अर्चिषा विश्वा बना परिष्वजत्) जो भक्तिरस मे पगी सभी स्तुतिया व प्रार्थनाए अपनी ज्ञान दीप्त कृपा से स्वीकार करता है और (कृष्णा) कलुषित प्रवृत्तियो को (जिह्वया) वेद वाणी की प्रेरणा से (कृणोति) वैसे ही समाप्त कर देता है जैसे पार्थिव अग्नि बन के सब वृक्षो को अपनी ज्वालाओ से लपेट कर लपलपाती लपटो से काली राख मे बदल कर नष्ट करता है।

अर्थपोषण – ई डिष्व – ई डतियाऽचकर्मा अध्येषणा कर्मा पूजाकर्मा वेतियास्क ।

अध्यवेणा – अधि=अधिक+एषणा=प्रेरणा प्रयत्नो वा एष्ट प्रयत्ने।

वना – (वण सम्भक्तौ) भक्ति रस मे पगी स्तुतिया तथा जगल के वृक्ष वनस्पति।

कृणोति – *कृञ हिसायाम*। जिह्ना वाणी नाम नि० १–११।

निष्कर्ष – इस मन्त्र मे परमेश्वर के अग्नि और इन्द्र दो रूपो की पूजा=स्तुति करने और वैसा बनने का प्रयत्न करने का आदेश है। ऋग्वेद मे ही इन दो देवताओ के लगभग सवा छ हजार से अधिक मन्त्र हैं।

(१) जो साधक परमेश्वर के ये स्वरूप समझकर उसकी स्तुति प्रार्थना करते हैं और साथ ही वैसा बनने का विशेष प्रयत्न करते है उनकी प्रार्थना ही स्वीकार नही होती उनकी कलुषित (कृष्णा) प्रवृत्तिया भी समाप्त हो जाती हैं।

(२) परमेश्वर अपने ऐश्वर्य के सामर्थ्य से जीवो के कर्म फलो का भोग प्रदान करने के लिए जब चाहता है जगलो को बसाकर मगल ही मगल कर देता है और जब चाहता है बडे बडे अजेय और दुर्धर्ष स्तूपो और महल नष्ट करके कोयले और राख के काले ढेर मे बदल देता है।

(६) स्वाध्याय प्रवचाभ्या मा प्रभदितव्यम्

भद्रा वस्त्रा समन्या वसानो महान्कविर्निवचनानि शसन।

आ वच्यस्व चम्वो पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ।। *साम० १४००*

वसिष्ठ । पवमान सोम । त्रिष्टुप्।

अर्थ – पवित्रता और शन्ति को चाहने वाल जितेन्द्रिय साधक ! (नि वचनानि शसन) अप अन्त करण मे वेदवचनो द्वारा स्तुति और स्वाध्या करते हुए (महान कवि जागृवि) उदार क्रान्तदर्श और अपने कर्त्तव्य पालन मे जागरूक होकर ही सन्तोष न करे अपितु (देववीतौ) समाज मे दिव्यगुणो की व्याप्ति के निमित्त (समन्या भद्रा वस्त्रा वसन) सत्सग और जनसमाओ मे प्रवेश करने योग्य भद्र वस्त्र धारण करके (चम्वो पूयमान) द्युलोक और भूलोक के मध्य नर नारियो मे पवित्रता लाने की कामना करता हुआ (विचक्षण) और विशेष कृपादृष्टि रखता हुआ (आ वच्यस्व) अपने स्वाध्याय और अनुभव के अनुसार प्रवचन करे । केवल अपनी उन्नति से सन्तुष्ट न हो अपने समाज और सम्पर्क मे आने वाले व्यक्तियो को भी उन्नत करे।

– शेष पृष्ठ ८ पर

धर्म शहीद बाल हकीकत राय और बसन्त पंचमी

– प० नन्दलाल निर्भय

आर्यवर्त (भारत वर्ष) ईश्वर भक्त धर्मात्माओ वीर शहीदो की पावन भूमि है। जिन वीरो ने देश धर्म मानवता की रक्षा मे अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था उन्हीं वीरो मे से एक था धर्म शहीद बाल हकीकत राय। हकीकत राय का बलिदान मौहम्मद शाह रगीला के शासनकाल मे बसन्त पचमी के दिन सन १७३४ ई० मे हुआ था। उसकी याद मे अभी भी आर्यसमाज तथा अन्य धार्मिक सस्थाए बसन्त पचमी के दिन शहीद दिवस धूमधाम से मनाती हैं।

हकीकत राय का जन्म सन १७१६ ई० मे सियालकोट पूर्व पजाब (पाकिस्तान) मे हुआ था। उसके पिता का नाम भागमल महाजन तथा माता का नाम कौरा देवी था। बाल विवाह की प्रथा के अनुसार अज्ञानता वश हकीकत राय का विवाह सन १७३२ ई० मे बटाला की लक्ष्मी देवी के साथ कर दिया गया था। हकीकत राय के माता पिता धार्मिक तथा ईश्वर भक्त थे इसलिए हकीकत राय भी धार्मिक वृत्ति का था।

हकीकत राय को सात वर्ष की आयु मे सियालकोट के एक मदरसे मे (पाठशाला) मे प्रवेश दिलाया गया। वह कुशाग्र बुद्धि का बालक था। इसलिए मौलवी साहिब (अध्यापक) उस से बेहद प्यार करते थ। यह देखकर मुसलमान बच्चे हकीकत राय से भारी ईर्ष्या करने थे

एक दिन मौलवी साहिब जरूरी काम से पाठशाला से बाहर चले गए तथा पाठशाला की देखभाल करना हकीकत राय को सौंप गए। मौलवी साहिब के चले जाने पर मुस्लिम बच्चो ने हुडदग मचाना शुरू कर दिया। हकीकत राय ने जब उन्हे ऐसा करने से रोका तो उन्होने हकीकत राय को गालिया दी और बुरी तरह पीटा। मौलवी साहिब के आने पर हकीकत राय ने उन्हे सारा किस्सा सुना दिया। मौलवी साहिब ने हकीकत राय को पुचकार कर अपनी छाती से लगा लिया तथा मुसलमान बच्चो को दण्डित किया। मुसलमान बच्चो ने नाराज होकर हकीकत राय पर बीबी फातिमा को गालिया देने और मौलवी साहिब पर हकीकत राय की तरफदारी करने का आरोप लगाकर नगर के काजी सुलेमान से दोनो की शिकायत की। उन दिनो काजियो का बोलबाला था। इसलिए काजी सुलेमान ने हकीकत राय को मुसलमान बनाने का फतवा जारी कर दिया तथा घोषणा कर दी कि अगर हकीकत राय मुसलमान न बने तो उसका सिर कटवा दिया जाए। काजी ने फतवा जारी करके मामला नगर के हाकिम अमीर बेग को सौंप दिया। अमीर बेग एक शरीफ आदमी था उसने काजी सुलेमान को समझाया कि यह बच्चो का झगडा है इसे ज्यादा बढाना समझदारी नहीं है किन्तु काजी नही माना। कुछ मुसलमान भी काजी के समर्थक बन गए इसलिए अमीर बेग ने सारा मामला लाहौर के नवाब सफेद खान की अदालत मे भेज दिया। भागमल और कौरा देवी कुछ हिन्दुओ को साथ लेकर लाहौर पहुचे और नवाब से हकीकत राय को माफ कर देने की प्रार्थना की।

लाहौर के नवाब ने सारे मामले को ध्यान से पढा और सुना। दोनो पक्षो की बाते सुनकर तथा हकीकत राय की सुन्दरता कम उम्र को देखकर हकीकत राय से खुश होकर कहा।

'बाल हकीकत राय ! मान तू, बात एक बेटा मेरी।
मुसलमान बन, जान बचा ले ज्यादा मत कर तू देरी।।
अपनी प्यारी सुन्दर बेटी, के सग निकाह करा दूगा।
अपनी सारी दौलत का मैं, मालिक तुझे बना दूगा।।
रख मेरा विश्वास लाडले बैठा मौज उडाएगा।
इस सूबे का हर नर नारी, तेरा हुक्म बजाएगा।।
सोच समझ ले बेटा मन मे बात अगर ना मानेगा।
पछताएगा जीवन भर तू, यदि ज्यादा जिद ठानेगा।।

नवाब की बाते सुनकर हकीकत राय ने गम्भीरता पूर्वक नवाब से पूछा – अय नवाब साहिब आप मुझे पहले एक बात बता दो यदि मैं मुसलमान बन जाऊ तो मैं कमी मरूगा तो नहीं ? उन काजी और मौलवियो से भी पूछ लो कि ये और आप भी क्या सदा जीवित रहोगे ? नवाब ने सिर नीचा करके कहा – 'हकीकतराय ससार मे जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मरता है मैं भी मरूगा तू भी मरेगा और काजी मौलवी भी जरूर मरेगे। बेटा मै पुत्रहीन हू अगर तू मेरी दुख्तर से निकाह कर लेगा तो मेरी सारी सम्पत्ति का मालिक बन जाएगा और जीवन भर मौज उडाएगा। अरे हकीकत राय अब तू ठीक तरह सोच–समझकर उत्तर दे बेटा।

नवाब का प्रस्ताव सुनकर हकीकत राय मुस्कारते हुए बोला –

'यह सृष्टि का है नियम अटल, जो इस दुनिया में आता है।
वह कर्मो का फल पाता है ईश्वर न्यायकारी दाता है।।
जब आप मानते हो इसको, मृत्यु सबको खा जाती है।
वह घोरनर्क मे जाएगा जो नर पापी उत्पाती है।।
मै राम, कृष्ण का वशज हू, मैं वैदिक धर्म निभाऊगा।
लालच के चक्कर में फसकर इस्लाम नहीं अपनाऊगा।।

हकीकत राय का उत्तर सुनकर नवाब भारी नाराज हो गया। और हकीकत राय पर रौब जमाते हुए बोला –

'तू कान खोलकर सुन लडके मैं अब जल्लाद बुलाऊगा।
मैं तेग दुधारी के द्वारा तेरे सिर को कटवाऊगा।।
गुस्ताक बडा है तू लडके, मैंने तुझको पहचान लिया।
तू नर्मी के ना लायक है, यह मेरे दिल ने मान लिया।।
तू बातूनी मत बन ज्यादा, ले बात मान सुख पाएगा।
छोटी सी उम्र मे तू पगले, वृथा ही मारा जाएगा।।

हकीकत राय ने जब नवाब की बाते सुनी तो गरजते हुए बोला –

'तू अन्यायी सुन कान खोल, क्यों ज्यादा बात बनाता है।
मेरी तो मौत सहेली है, तू जिसका खौफ दिखाता है।।
अमर आत्मा तन नश्वर है वेद, शास्त्र दर्शाते हैं।
धर्मवीर, बलिदानी मानव, जग में पूजे जाते हैं।।
मैं साफ बताता हू पापी तू घोर नर्क मे जाएगा।
इस दुनिया का हर नर नारी, अत्याचारी बतलाएगा।।
मेरा यह बलिदान, दुष्ट सुन, कभी न खाली जाएगा।
इस आर्यवर्त का हर मानव, वीरो की गाथा गाएगा।।
धर्मवीर, बलवानो की गाथा नर नारी गाते है।
तेरे जैसे अत्याचारी, नफरत से देखे जाते है।।

हकीकत राय की निर्भीकता देखकर नवाब आपे से बाहर हो गया और उसने जल्लाद को बुलाकर हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दे दिया। हकीकत राय उस समय हस रहा था। जल्लाद ने जब हकीकत राय की कम उम्र और सुन्दर सूरत को देखा तो उसका भी पत्थर दिल पिघल गया तथा तलवार उसके हाथ से गिर गई। यह देखकर हकीकत राय ने जल्लाद को समझाते हुए कहा – अरे भाई जल्लाद ! तू अपना फर्ज पूराकर ओर मुझे भी अपना धर्म निभाने दे। कहीं मेरी वजह से तेरे ऊपर भी कोई मुसीबत न आ जाए। जल्लाद ने अपने आसुओ को पोछकर तलवार को उठाकर हकीकत राय की गर्दन पर भरपूर वार किया जिससे हकीकत राय का सिर कटकर धरती पर लुढक गया। धन्य था धर्म शहीद बाल हकीकत राय जिसने अपना सिर कटवाकर भारत माता का मस्तक ससार मे ऊचा कर दिया। जब तक सूरज चाद सितारे और पृथ्वी रहेगी यह ससार उस वीर शहीद की बलिदान गाथा गाता रहेगा।

सज्जनो ! कुछ लोगो का विचार है कि बाल हकीकत राय का बलिदान मुगल बादशाह शाहजहा के शासनकाल मे हुआ था तथा शाहजहा ने न्याय करते हुए नवाब और काजियो मौलवियो को मृत्यु दण्ड दिया था किन्तु यह कथन सत्य से कोसो दूर एवम निराधार है। शाहजहा के पुत्र औरगजेब की मृत्यु सन १७०७ ई० मे हुई थी तथा हकीकत राय का बलिदान सन १७३४ ई० मे हुआ था फिर उस समय शाहजहा कहा से आ गया ? वास्तव मे यह मुसलमान शासको की चाल है। हमे विधर्मी लोगो के षडयन्त्रो से सदैव सावधान रहना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि उस समय मौहम्मद शाह रगीला का कुशासन था जो शराब पीकर औरतो के साथ दिल्ली के लालकिले मे नाचता रहता था। ज्ञातव्य है कि ईरान के हमलावर नादिरशाह ने उसे शराब पिये हुए जनाने कपडो मे गिरफ्तार करके उसके हरम की हजारो स्त्रियो को अपने सैनिको मे बाट दिया था तथा तख्ते ताउस को लूटकर ईरान ले गया था।

आर्यो ! आज भारत मे छुआछात ऊँच नीच जाति पाति का बोलबाला है। उग्रवाद आतकवाद बढ रहा है। भारत के नेतागण भ्रष्टाचार की कीचड मे लिप्त हैं। विधर्मी लोग रात दीन भारत की गरीब जनता को ईसाई मुसलमान बनाने मे लगे हुए है। धर्म के नाम पर पशु पक्षियो की बलि दी जाती है। सीमा पर चीन और पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने को तैयार खडे हैं। ऐसे घोर सकट मे भारत को वीर शहीद हकीकत राय जैसे ईश्वर भक्त धर्मात्मा देश भक्त युवक–युवतियो की आवश्यकता है। परमात्मा से अन्त मे यही प्रार्थना है –

हे भगवान दया के सागर, भारत पर तुम कृपा कर दो।
भारत मा की गोद दयामय, वीर सपूतों से अब भर दो।।
वीर हकीकत राय सरीखे, भारत में पैदा हो बच्चे।
धर्मवीर ईश्वर विश्वासी अन्न बान के हो जो सच्चे।।
जिससे ऋषियों का यह भारत, सारे जग का गुरु कहलाए।
भूखा नगा आर्यवर्त्त में, कोई कहीं नजर ना आए।।

– ग्राम व डाकघर बहीन,
तहसील हथीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

स्वास्थ्य चर्चा

मानसिक कारणों से भी होता है सिरदर्द

– डॉ० रजना कटियार

सिरदर्द एक बेहद आम परन्तु अति निष्कपट सा प्रतीत होने वाला कष्ट है जो रोग में रूपान्तरित हो जाने की क्षमता रखता है। सिरदर्द कई गम्भीर मर्जों का प्रारम्भिक व अकसर एकमात्र लक्षण भी होता है। जिसकी अगर अवहेलना की जाए तो गम्भीर परिणाम भुगतने पडते हैं। सिरदर्द किसी भी व्यक्ति की सम्पूर्ण कार्य-शैली को प्रभावित कर सकता है। अधिकतर लोग इससे कभी-कभार ही पीडित होते हैं जबकि कुछ अन्य सिरदर्द की निरन्तर शिकायत से परेशान रहते हैं। कुछ लोगों को इससे मामूली तकलीफ होती है तो कुछ भीषण सिरदर्द से ग्रस्त होते हैं। सिरदर्द रूपी एकमात्र लक्षण ही भीषण रोगों का द्योतक हो सकता है। भिन्न-भिन्न रोगो में उत्पन्न सिरदर्द के भिन्न-भिन्न स्वभाव होते हैं।

कारण – कुछ विशिष्ट प्रकार के सिरदर्द किसी खास उम्र में ही शुरू होते हैं। अर्थात् किसी खास उम्र के बाद इस प्रकार के सिरदर्द की सम्भावना कम अथवा खत्म हो जाती है। उदाहरणतया माइग्रेन २० वर्ष की उम्र के आसपास सर्वप्रथम होता है व ४० वर्ष के बाद इसके प्रथम बार प्रकट होने की सम्भावना अति क्षीण होती है।

सिर अथवा गर्दन पर आघात पडने से उत्पन्न होने वाला सिरदर्द कभी-कभी मस्तिष्क मे रक्तस्राव के कारण हो सकता है। अकसर सिर पर चोट लगने के वर्षों बाद लोग उस जगह पर दर्द की शिकायत करते हैं।

- वज्रपात की तरह आकस्मिक उत्पन्न होने वाला भीषण सिरदर्द अत्यन्त गम्भीर व जानलेवा भी होता है। यह माइग्रेन के अलावा मस्तिष्क की धमनियों में विच्छेदन अथवा रक्तस्राव की वजह से भी हो सकता है।
- मस्तिष्क में ट्यूमर या मेनिनजाइटिस भी सिरदर्द उत्पन्न कर सकते हैं।
- कमजोर नजर होने पर भी चश्मा न पहनने से भी सिरदर्द होता है। आखो की मासपेशियो की कमजोरी भी सिरदर्द का कारण होता है।
- हाईपरटेंशन से भी सिरदर्द होता है।
- माइग्रेन से पीडित १० में से ६ रोगियों में दर्द सिर के आधे हिस्से को ही प्रभावित करता है। कुछ रोगियों में इसके शुरू होने से कुछ घण्टे या कुछ दिन पहले ही रोगी की मन स्थिति में परिवर्तन आने लगता है। जिससे वो समझ लेता है कि अब रोग की पुनरावत्ति होने वाली है। ऐसा रोगी चिड़चिडाहट उदासी अथवा अत्यन्त लेकिन अनावश्यक खुशी का अनुभव करता है। अकसर माइग्रेन के रोगी को दर्द का पूर्वाभास हो जाता है जिसे 'औरा कहते हैं। यह इनमें मे से किसी में भी त्रुटि उत्पन्न होने से होता है जैसे – नजर इन्द्रियों की सवेदना मे गतिविधियों में, बोलने में भाषा मे।
- माइग्रेन के १० मे से ६ रोगियो में सिरदर्द के दौरान जी मचलाता है। इन्हे रोशनी व शोर कष्टप्रद जान पडता है व कुछ को उल्टी तक हो जाती है। उल्टी के बाद दर्द में राहत मिल जाती है।
- पीडित लोगों में से काफी को माइग्रेन का अटैक कई महीनों में एक बार ही पडता है। जबकि कुछ रोगियों में यह एक-एक दिन में आठ बार उभर सकता है। इस परिस्थिति में इसे **'क्लस्टर माइग्रेन'** की सज्ञा देते हैं।
- क्लस्टर माइग्रेन के दौरान सिरदर्द वाली तरफ की आख की पुतली छोटी हो सकती है अथवा उस तरफ की ऊपरी पलक ढलक सकती है।
- माइग्रेन उत्पन्न होने के विभिन्न कारण हैं जैसे – महावारी मानसिक तनाव शराब, चकाचौंध तेज आवाज, झिलमिलाती रोशनी, पहाड पर जाने से गर्मी व उमस धुआ तथा उपवास।
- जो लोग नींद में खर्राटे भरते हैं, खासकर मोटे लोग वे रात के दौरान श्वास अवरुद्ध होने की वजह से सुबह सिरदर्द की शिकायत कर सकते हैं।

सिरदर्द से सम्बन्धित जाचे

कैट स्कैन (सी०टी० स्कैन) – इसके द्वारा सरचनात्मक विकृति के कारण हुआ सिरदर्द पकडा जाता है।

सी०टी० स्कैन की कमी – इससे सिरदर्द के कई महत्वपूर्ण कारक पकड में आने से रह जाते हैं।

एम०आर० आई० – यह सिरदर्द के मूल्याकन के लिए होता है।

ई०ई०जी० – अगर सिरदर्द का रोगी सम्भावित मिर्गी से भी ग्रस्त है तो इसकी आवश्यकता पड सकती है।

खून की जाचें – इस प्रकार के सिरदर्द के मूल्याकन में इसकी कोई अहम् भूमिका नहीं है, लेकिन सिरदर्द के कुछ कारकों, खासकर सक्रमण में इसका विशेष योगदान है।

लम्बर पक्चर (रीढ की हड्डी की जांच) – यह एक शारीरिक हस्तक्षेप वाली जाच है। अत सिरदर्द के रोगी का इस जाच के पहले एम० आर० आई० अथवा सी०टी० स्कैन कराया जाता है। अगर अक्यूट मेनिनजाइटिस की आशका हो तो यह जाच तुरन्त निदान के लिए अच्छी है।

लम्बर पक्चर से जिन अन्य रोगों के निदान मे सहायता मिलती है वे हैं – सक्रमण (मेनिनजाइटिस, एन्केफेलाइटिस), कैंसर (मेनिन्जीस का कैंसर, खून का कैंसर) मस्तिष्क में रक्तस्राव सी०एस०एफ० (रीढ की हड्डी का पानी) का घटना या बढना।

अत सिरदर्द को पूरी गम्भीरता से लें। सिरदर्द के उचित इलाज के लिए रोग से सम्बन्धित समस्त ब्योरे के साथ कुशल विशेषज्ञ से ही परामर्श लें।

– मानसिक रोग विशेषज्ञ

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का ५८ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुवार २४ जनवरी से (रविवार)२७ जनवरी, २००२ तक आर्यसमाज सान्ताक्रुज का ५८वा वार्षिकोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेदीय यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा प्रो० धर्मवीर जी (अजमेर) एव वेदपाठी प० नामदेव आर्य प० विनोद शास्त्री आचार्य उमेश प० नरेन्द्र शास्त्री एव प० प्रभारजन पाठक जी थे।

इस अवसर पर भजन प्रवचन वेद गोष्ठी, अध्यात्म चर्चा (सर्वधर्म सम्मेलन) शास्त्र चर्चा (शास्त्रार्थ) फलित ज्योतिष पर विशेष चर्चा अन्धविश्वास निर्मूलन एव शका समाधान, आर्य महिला सगठन सम्मेलन तथा आर्य कार्यकर्ता गोष्ठी के साथ-साथ पुस्तक मेले का भी आयोजन हुआ।

इसी श्रृखला में दिनाक २५ जनवरी को आर्य महिला सगठन सम्मेलन में मुम्बई की सभी आर्यसमाजों की प्रतिनिधि महिलाओं ने सहर्ष भाग लिया। श्रीमती जयाबेन (आर्यसमाज घाटकोपर) की अध्यक्षता में यह सम्मेलन हुआ। अनेक महिलाओं ने महिला सगठन के प्रति अपने विचार व्यक्त किए।

अन्धविश्वास निर्मूलन – इस सम्मेलन के अन्तर्गत् समाज व देश मे व्याप्त अन्धविश्वास का खुलासा करते हुए अन्धविश्वास निर्मूलन समिति के सदस्यों ने कई हाथ सफाई के कारनामे व प्रचलित आडम्बर जादू-टोना आदि को मिथ्या साबित कर दिखाया, जिससे अनेक प्रत्यक्षदर्शियो का अन्धविश्वास दूर हुआ।

दिनाक २६ जनवरी, २००२ को प्रात यज्ञ के उपरान्त आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान डॉ० सोमदेव शास्त्री ने ध्वजारोहण किया। तत्पश्चात् राष्ट्रगीत एव सास्कृतिक कार्यक्रम आर्य विद्या मन्दिर सान्ताक्रुज की छात्राओ ने किया। इसके उपरान्त प्रात १० बजे से वेद गोष्ठी का आयोजन प्रो० धर्मवीर जी (मन्त्री परोपकारिणी सभा, अजमेर) की अध्यक्षता में हुआ।

आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम का वार्षिकोत्सव और श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज आर०के०पुरम् का वार्षिकोत्सव व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस दिनाक ३-२-२००२ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें अनेक आर्य विद्वानों ने अपने विचार रखे श्री पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ और श्री बोधराज जी (पूर्व विधायक) श्री सुखदेव जी तपस्वी, श्री एम० के० गाधी समिति सुदेश अहलावत जी ने अपने विचार व्यक्त किए और कार्यक्रम के पशचात विशाल ऋषि लगर का आयोजन किया गया।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली क्या दे रही है ?

– डॉ० कृष्णलाल

हमे स्वतन्त्र मौलिक विचारक चाहिए हमे निर्भीक कवि और लेखक चाहिए जो किसी 'वाद से बधे हुए न हो और केवल देश की महान सस्कृति के अनुरूप जनता की देशी भाषा लिखे–बोले। हमे ऐसे वैज्ञानिक चाहिए जो विज्ञान के तत्त्व सर्वसाधारण को उनकी भाषा मे समझा सके। हमे निष्पक्ष स्वतन्त्र पत्रकार चाहिए न्यायधीश अधिवक्ता (वकील) चाहिए अविष्कारक और गवेषक चाहिए। हमे केवल बाबू, अफसर प्रबन्धक नहीं चाहिए। हमे चाहिए वे युवक युवतिया जो देश की मौलिक आवश्यकताओ के अनुरूप (पश्चिम की नकल किए बिना) वस्त्रो का नमूना तैयार करे जिसमे नग्नता न हो जो खाने पीने की उत्तम वास्तव मे स्वास्थ्यवर्धक वस्तुओ के उद्योग स्थापित करे ऐसी वस्तुए जो नशे से दूर हो। हमे ऐसे युवक युवतिया चाहिए जिनका चरित्र ऊचा हो और जो अपने कार्यों तथा उन्नत चरित्र से अपने देश का नाम उज्ज्वल कर सके।

अब यह सोचना चाहिए कि क्या हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली यह सब कर रही है या करने मे समर्थ है ?

यह कहने मे सकोच नहीं होना चाहिए कि स्थिति निराशाजनक बनी हुई है। पहली बात तो यह आलोच्य है कि यहा दोहरी शिक्षा प्रणाली चल रही है। एक ओर सामान्य सरकारी विद्यालय हैं – न पीने के पानी और शौचालय की उचित व्यवस्था है न बैठने का कोई समुचित साधन है न ही सिर पर उपयुक्त छत है और न ही पढने लिखने के आवश्यक साधन है। दूसरी ओर वे तथा कथित आदर्श या पब्लिक विद्यालय हैं जहा प्रारम्भिक कक्षाओ मे (प्रथम कक्षा से पूर्व) बच्चो पर गणवेष (अनावश्यक टाई सहित) तथा बोझ बढाने वाली पुस्तको पर अन्धाधुन्ध खर्चा करवाया जाता है। अनाप शनाप शिक्षा शुल्क और बसो का किराया इसके अतिरिक्त है।

इस प्रकार दोहरी शिक्षा प्रणाली सामाजिक चिन्तन मे दरार डाल रही है। एक ओर सामान्य वर्ग के अभावग्रस्त छात्र हैं तो दूसरी ओर आभिजात्य वर्ग के सर्व सुविधासम्पन्न छात्र हैं जिनके वस्त्रो पर कभी कीचड का छींटा भी नहीं लग सकता।

इस दरार को बढाने मे दुर्भाग्य से राजनीतिक सरकारी जातिगत आरक्षण भी सहायाता कर रहा है और इसका वर्तमान ढाचे मे कहीं कोई अन्त दिखाई नहीं देता। योग्यता हो या न हो सरकारी विद्यालयो मे विशेष जाति के अध्यापको की नियुक्ति करके सख्या पूरी करनी आवश्यक है। यह स्थिति प्रारम्भिक कक्षाओ से लेकर उच्च कक्षाओ के विद्यालयो तक मे समान है। दूसरी ओर पब्लिक स्कूलो मे नियुक्तिया केवल योग्यता के आधार पर होती हैं। शिक्षा की गुणवत्ता के लिए सुयोग्य समर्पित अध्यापक का होना आवश्यक हैं

परन्तु दुर्भाग्य से दुकानदारी चलाने के लिए पब्लिक स्कूलो मे अग्रेजी और अग्रेजियत को ही आदर्श मान लिया गया है। एकदम प्रारम्भिक कक्षाओ मे दयानन्द के नाम पर चलने वाले विद्यालयो मे भी मानो हिन्दी को अप्रयोज्य मानकर केवल अग्रेजी वर्णमाला अग्रेजी गिनती अग्रेजी तकान्त कावताए (पोयम्स) ही सिखाई जाती हैं। मातृभाषा हिन्दी बेचारी उपेक्षित रहती है। न हिन्दी मे गिनती न पहाडे न सामाजिक सुबोधता की दृष्टि। कही कही केवल वार्षिकोत्सवो के 'सास्कृतिक' कार्यक्रमो मे हिन्दी का प्रयोग करना पडता है। अन्यथा तो हम दयानन्द विद्यालयो मे भी 'गुडमार्निंग' साहब तैयार करने मे लगे हुए हैं।

प्राथमिक कक्षाओ मे मातृभाषा न पढाकर अग्रेजी पढाकर अथवा अग्रेजी की शिक्षा पर अधिक बल देकर हम सविधान के उस अनुच्छेद (स० ३५०–अ) की अवहेलना तो नहीं कर रहे जिसमे प्राथमिक कक्षाओ मे मातृभाषा के द्वारा शिक्षा देना सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है ? यद्यपि यह निर्देश भाषायी अल्पसख्यक वर्गों के लिए उद्दिष्ट है तथापि मातृभाषा से शिक्षा के प्रसग मे आधार रूप मे यह माना ही गया है कि बहुसख्यक बच्चो की प्राथमिक शिक्षा तो उनकी मातृभाषा मे होती ही होगी। सविधान का उल्लघन करने वाले ऐसे विद्यालयो को सरकार को बन्द कर देना चाहिए और भले ही शिक्षा कर लगाकर सरकारी विद्यालयो का स्तर उठाना चाहिए। परन्तु दुर्भाग्य से सरकारी विद्यालयो मे शिक्षा के स्तर के सुधार का अर्थ अग्रेजी की पढाई ही ले लिया गया है। दिल्ली नगर निगम के विद्यालयो मे पहली कक्षा से अग्रेजी की पढाई सविधान की भावना की अवहेलना तो है ही साथ ही उस पर जनता के धन का अपव्यय निर्ममता से किया जा रहा है। हम जानते हैं कि 'स्कूल की बात छोडे कालेज स्तर पर भी बच्चे तीन तीन वर्ष तक अग्रेजी मे उत्तीर्ण नहीं होते। अग्रेजी का यह मोह राष्ट्रीय समय और धन की हानि तो है ही राष्ट्रीय गौरव के विपरीत भी है।

अग्रेजी को और अग्रेजी मे विषयो को रटते रटते उनका खेल कूद सोना आराम सब छूट जाता है। इस सबका उनके स्वास्थ्य और सामाजिक मानसिकता पर कुप्रभाव पडता है। इनके अतिरिक्त दूरदर्शन भी उन्हे आकृष्ट करता ही है। वह भी समय मागता है। प्रकृति से भी बच्चे कट जाते हैं। उनके विचार कुण्ठित हो जाते है। सामान्य समाज से भी सास्कृतिक परम्पराओ से दूर होने के कारण उनके विषय मे बच्चो का चिन्तन अवरुद्ध हो जाता है। ऐसी परिस्थितियो मे हम किसी के रवीन्द्र नाथ ठाकुर अरविन्द जय शकर प्रसाद प्रेमचन्द सुमित्रानन्दन पत बनने की कल्पना भी नहीं कर सकते।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा भी नैतिकता का ह्रास करने मे सहायक है। जो समय बच्चे का नैतिकता सीखने का उसका अभ्यास करने का होता है उसी समय उसके भीतर कमाने की ललक पैदा कर दी जाती है। 'शिक्षा के लिए शिक्षा और 'सच्चरित्र उन्नत सामाजिक बनाने के लिए शिक्षा का आदर्श बीच मे ही छूट जाता है। हम जानते है कि इन आदर्शों को पनपने के लिए कम से कम सारी स्कूली शिक्षा की अवधि अपेक्षित है। इस अवधि मे उसे रोजगार की चिन्ता से मुक्त होना चाहिए। हा ग्यारहवी कक्षा मे विषयो का चयन करते हुए इस ओर ध्यान दिया जा सकता है।

विषय को ठीक से गहराई तक समझने के लिए स्वभाषा (हिन्दी) के माध्यम की उपेक्षा किसी प्रकार नही की जा सकती। इसके साथ साथ विशेष रूप से दयानन्द के नाम पर सास्कृतिक सस्थाओ मे बारहवीं कक्षा तक (भले ही ऐच्छिक अतिरिक्त विषय के रूप मे) सब छात्रो के लिए सस्कृत अनिवार्य होनी चाहिए। नैतिकता और सास्कृतिक चिन्तन मनन उत्थान के लिए यह आवश्यक है। इससे छात्र को सब भाषाओ के मध्य एकसूत्रता की अनुभूति होगी। विद्यालयो मे भारतीय सास्कृतिक उत्सवो का आयोजन और उनमे अनुभवी व्यक्तियो के भाषण छात्रो का सब प्रकार का मार्गदर्शन करते हैं।

– विश्वनीड ई ६३७
सरस्वती विहार दिल्ली ११००३४

R N No 32387/77 Posted at N D.PS O on १४ १५/०२/२००२ दिनांक ११ फरवरी से १७ फरवरी, २००२ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002, 14-15/02/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

पृष्ठ ४ का शेष भाग

परमेश्वर की देनों के लिए धन्यवाद कीर्तन आवश्यक तथा लाभकर

निष्कर्ष – महर्षि दयानन्द ने इसी मन्त्र से प्रेरणा लेकर आर्यसमाज के नवम नियम का निर्धारण किया है जो निम्न है – प्रत्येक मनुष्य को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नही रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

अर्थपोषण – समन्या – समन योग्या नि० विश्वा। नि=अन्त करण मे श्री अरविन्द। शसन–शसति स्तौति पूजयति कृपायति अर्चतिकर्माण। नि० चम्वो – चम्वौ द्यावा पृथिवी नाम। नि० ३–३० द्यावा पृथिवी माता पित रौ।

तन्माता पृथिवी तप्ता धौ। तै० २–७–१६–३ देनवीतये – दिव्याना गुणाना को पुराणातम पूर्ण परमेश्वर की स्तुति करने और स्तुत गुणो को अपनाने और वैसा बनने का अधिकतम प्रयत्न करने का ओदश है। स्तुति के अनुरूप प्रयत्न न करने पर स्तुति व्यर्थ है और प्रार्थना की गई वस्तु प्राप्त करने के लिए अपनी ओर से यथा सम्भव अधिकतम प्रयत्न आवश्यक है। अन्यथा प्रार्थना पूरी नहीं होती।

इस मन्त्र मे सौम्य भक्ति से सकेत है कि परमेश्वर अश्र अन्ध श्रद्धा से प्रेरित स्तुति स्वीकार नहीं करता। क्योकि (इन्द्रस्य युज्य सखा। साम० ऐश्वर्य सम्पन्न जीवन का योग्य। है वह न्याय और उचित परिश्रम के साथ की गई प्रार्थना सुनता है। परमेश्वर की सौम्य भक्ति के साथ अपने इष्ट प्राप्ति के लिए अधिकतम प्रयत्न करने वाला समाज का

२१६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

...र्थ ...ान प्राप्त क... करने का सामर्थ्य भी पाता ह।

– **श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वरभवन, खारी बावली, दिल्ली-६**

(७) इष्ट प्राप्ति के लिए अधिकतम प्रयत्न के साथ की हुई प्रार्थना सुनी जाती है

विभूतराति विप्रशोचिणमग्निभीडिष्व यन्तुरम्।
अस्य मेधस्य सौम्य स्य सो भरे प्रेमध्वराम पूर्व्यम्।।

साम० १६८८

सोभरि काण्व। अग्नि। कादुभ प्रगाथ (सतोबृहती)

अर्थ – हे (विप्र सोभरे) विशेष रूप से अपना पूरण करने वाले और फिर उत्तम ढग से समाज का भरण पोषण करने वाले साधक। (अध्वराय) हिसा हित जीवन यज्ञ की सफलता के लिए (ईम) निश्चित रूप से (विभूतरातिय्) मानव को शक्तिशाली बनाने वाले प्रभूत पदार्थों को देने वाले (चित्र शोचिषम्) अद्‌भुत दीप्ति और ज्ञानप्रद कान्ति वाले तथा (अस्य सौम्यस्य मेघस्य यन्तुरम्) इस सौम्य भक्तिरस पूर्ण उपासना यज्ञ के नियन्ता (पूर्व्यम्) सनातन तथा पूर्ण (अग्निम्) शान्त हृदय मे विद्यमान होते हुए सत्परामर्श देकर मार्गदर्शन करन वाले श्रेष्ठ अग्नि रूप परमेश्वर की (ईडिष्व) स्तुति किया करे साथ ही वैसा बनने का प्रयत्न करे।

अर्थपोषण – ईडिष्व–ई डति याञ्चाकर्मा अध्येषणा कर्मा पूजा कर्मेति वा यास्क। अध्येषणा– अधि+एषणा (एष्ट प्रयत्ने) अधिक प्रयत्न के साथ की हुई प्रार्थना पूर्ण होती है। मेध यज्ञनाम। नि० ३–१७ पूर्व्यम – पुराण नाम। नि० ३–२७ सनातन पूरी आप्यायाने – पूर्ण होना = पूर्वम चित्र शोचिषम् – शुचिर पूती भावे अद्‌भुतदीप्तिम। सोभरे=सो+भरे षोऽन्तकर्मणि+भृ भरणपोषणयो– दुष्प्रवत्तियो का अन्त कर सात्विक वृत्तियो का भरण पोषण करने वाले साधक।

निष्कर्ष – वेदमन्त्र मे मेधावी उपासक

ओ३म्

महर्षि दयानन्द जयन्ती

आपको विदित होगा कि आगामी ८ मार्च, २००२ (शुक्रवार) फाल्गुन कृष्ण दशमी, २०५८ को आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस है जिसे पूर्व की भांति इस बार भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में निम्न कार्यक्रमानुसार समारोहपूर्वक मनाया जाएगा।

दिनांक : ८ मार्च, २००२ (शुक्रवार) **स्थल** : महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र, गाजीपुर
यज्ञ : प्रात ९ ०० बजे **समारोह** : प्रात १० ०० बजे
ऋषि लंगर : दोपहर १ ०० बजे
अध्यक्षता : कैप्टन देवरत्न आर्य, प्रधान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

भजन सन्ध्या

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक के निश्चयानुसार एक भव्य भजन सन्ध्या का आयोजन किया गया है जिसमें ईश्वर-भक्ति, ऋषि गुणगान और राष्ट्रसेवा को समर्पित भजन सगीत एक अपूर्व व्यवस्था के अन्तर्गत प्रस्तुत किए जाएगे।

दिनांक : ९ मार्च, २००२ (शनिवार) **स्थल** : आर्यसमाज मिण्टो रोड, दिल्ली
समय : साय ६ बजे से **प्रीतिभोज** : रात्रि ९ बजे
अध्यक्षता : केप्टन देवरत्न आर्य, प्रधान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
मुख्य अतिथि : प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा, सासद (लोक सभा)

ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव)

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में पूर्व की भाति ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव) निम्न कार्यक्रमानुसार आयोजित होगा

दिनांक : १२ मार्च, २००२ (मगलवार) **स्थल** : रामलीला मैदान, नई दिल्ली
यज्ञ एवं प्रतियोगिताएं : प्रात ८ बजे **विशेष सभा** : दोपहर २ बजे से
मुख्य वक्ता : वैदिक विद्वान् डॉ० भवानीलाल भारतीय

निवेदन

आपसे विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या में बसें, कारें तथा अन्य वाहनों में धर्म प्रेमी जनों को साथ लेकर तीनों समारोहों में पहुचकर आयोजनों की शोभा बढाए। वाहनों पर ओ३म्ध्वज तथा सुविधानुसार आर्यसमाजों के बैनर लगाए। अल्प मूल्य का साहित्य (ट्रेक्ट) इकट्ठा खरीद कर मार्ग में जन सामान्य में वितरित करें। इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त समय और दिनों में अपने अपने क्षेत्रों में भी विशेष आयोजन और जलपान, प्रीतिभोज वितरण करें।

निवेदक

विमल वधावन वरिष्ठ उप प्रधान — **जगदीश आर्य** कोषाध्यक्ष
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

वेदव्रत शर्मा प्रधान — **वैद्य इन्द्र देव** महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य प्रधान — **सुरेन्द्र कुमार रैली** महामन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित **सार्वदेशिक प्रेस,** १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२
(दूरभाष एव **फैक्स** ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष** ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक १६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार २५ फरवरी से ३ मार्च २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

तन, मन, धन से धर्मान्तरण को रोकने का प्रयास करें

आदिवासी क्षेत्रों के लिए प्रचार वाहन रवाना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा खरीदे गए प्रचार वाहन को आदिवासी क्षेत्रो मे प्रचार कार्यों के लिए ओ३म ध्वज दिखाकर रवाना किया। कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्थापित अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ विगत लगभग ३० से भी अधिक वर्षों से महान राष्ट्र सेवा राष्ट्रीय एकता और आदिवासी क्षेत्रो के नागरिको की धार्मिक सुरक्षा के कार्य कर रहा है। धर्मान्तरण से देश को कई प्रकार के सकटो का सामना करना पडता है। दयानन्द सेवाश्रम सघ के कार्यकर्ता गरीब और पिछडे आदिवासी क्षेत्रो मे लोगो को राष्ट्रीय एकता का पाठ पढा कर इस प्रकार की प्रेरणाए देते है कि वे धर्मान्तरण के चक्रव्यूह मे न फसे।

इस प्रचार वाहन मे आने वाला खर्च सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ही वहन करेगी। इसके अतिरिक्त भी काफी धनराशि प्रतिमाह सभा द्वारा इन कार्यों के लिए खर्च की जाती है। कै० देवरत्न आर्य ने धन सम्पन्न राष्ट्रवादी आर्य जनता से आहवान किया कि धर्मान्तरण निरोधक इन कार्यों के लिए भी उदार मन से आर्थिक सहायता सभा को दे।

सर्वादेशिक सभा के प्रधान ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि आर्य समाज का एक गौरवशाली इतिहास है और हमारा प्रमुख उददेश्य ससार का उपकार करना है। धन सम्पन्न लोग धन की आपूर्ति से ज्ञान सम्पन्न लोग प्रचार कार्यों से सहयोग करके और श्रम सम्पन्न कार्यकर्ता अपने शारीरिक सहयोग से तन्मयता पूर्वक समाज सेवा के कार्यों मे जुटे। समाज सेवा के कार्यों मे यदि हम अनुशासित रहकर कार्य करते है तो इन कार्यों का प्रभाव लम्बे समय तक रहता है।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा स्वामी शुभानन्द माता प्रेमलता शास्त्री तथा दिल्ली के पूर्व विधायक श्री गौरीशकर भारद्वाज सहित रानी बाग आर्यसमाज के प्रधान श्री चमनलाल महेन्द्रू, मन्त्री श्री जोगेन्द्र खटटर आदि भी उपस्थित थे।

वाहन को ओ३म ध्वज दिखाकर विदाई दी गई तो उसमे माता प्रेमलता शास्त्री तथा कई अन्य आर्यजन और प्रचारक कार्यकर्ता मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रो के लिए रवाना हुए।

इस कार्यक्रम से पूर्व आयसमाज रानीबाग के तत्वावधान मे लगभग २ घण्टे से भी अधिक समय की प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जिसमे सैंकडो नर नारियो और बच्चो ने भाग लिया।



प्रचार वाहन को ओ३म ध्वज दिखाकर रवाना करने के अवसर पर श्री चमन लाल महेन्द्रू, स्वामी शुभानन्द सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा जोगेन्द्र खटटर।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी महासम्मेलन की तैयारियां जोरों पर

गुरुकुल कागडी हरिद्वार मे २५ से २८ अप्रैल २००२ का आयोजित होने वाले शताब्दी महासम्मेलन की तैयारिया जोर शोर से चल रही है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने भी हरिद्वार जाकर सम्मेलन की रूपरेखा महासम्मेलन स्थल तथा आवास हेतु विभिन्न धर्मशालाओ आदि का निरीक्षण किया। इस महासम्मेलन मे आर्यो के अप्रत्याशित समागम की सभावना को देखते हुए आवास और भोजन आदि का प्रबन्ध विशाल स्तर पर किया जा रहा है। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा भी उनके साथ हरिद्वार गए।

महा सम्मेलन मे भाग लेने वाले आर्यजनो के लिए समय समय पर विशेष निर्देश इस पत्र के माध्यम से प्रचारित किए जा रहे है। आर्य जनता से निवेदन है कि इन निर्देशो के अनुसार अधिक से अधिक सख्या मे हरिद्वार पहुचने का कार्यक्रम बनाए।

महासम्मेलन के आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी कार्यो के लिए अलग अलग समितिया निर्धारित की गई हैं। ३ मार्च को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक में भी शताब्दी महासम्मेलन की तैयारियो पर चर्चा होगी तथा इसके बाद सार्वदेशिक सभा के अधिकारी हरिद्वार भी जाएगे।



आर्यसमाज सान्ताक्रुज के वार्षिकोत्सव पर फिल्म कलाकार श्री धर्मेन्द्र सिह देयोल कैप्टन देवरत्न आर्य को सार्वदेशिक सभा के प्रधान बनने पर बधाई देते हुए।

सत्य हमारे आचरण में आए

– श्रीराम शर्मा आचार्य

जिन्होने सत्य जीवन मे उतारा है आचरण मे लाए है उन्ही के कार्य सफल हुए है। जिन्होने जीवन भर अहिसा व्रत का आचरण किया ऐसे लोगो के प्रति लोग बैरभाव छोड देते है। जीवन मे अस्तेय का व्रत जिन्होने लिया है उन्हे धनाभाव कभी नही रहा। जिस प्रकार ब्रह्मचारी का वीर्यवान बनना आवश्यक है उसी प्रकार सत्याचरण अपनाने वाला तेजस्वी मनस्वी होना स्वाभाविक है।

सत्य बालना सत्य का आचरण और प्रत्येक काय को सत्य की कसौटी पर कसना ये तीनो बाते भिन्न है। सत्य बोलना आसान है और कितने ही लोग प्रतिदिन सत्य बोलते है किन्तु आचरण मे सत्य से भिन्न होने से उनके जीवन मे न कोइ फल निकलता है न उनके सत्य का चमत्कार उनके जीवन मे उन्हे दिखाई देता है क्योकि मन वचन और स्वभाव मे सदैव भिन्नता रहने से कोई फल नहीं मिलता। गाधी जी ने जिस सत्य को अनुभूत किया और आचरण मे उतारा उसके बलबूते वह ब्रिटिश साम्राज्य की नीव हिला सके। सत्य दैवी सम्पदा और ईश्वर समतुल्य है जिन्हे यह विश्वास होता है अटूट श्रद्धा होती है ऐसा सत्य जीवन मे फलदायी होता है।

व्यक्तित्व विकास के लिए मन वाणी और कर्म की एकता चाहिए किन्तु मन वाणी और कर्म मे एषणा अहन्ता और लोभ आदि अनेक ऐसे विग्रह होते है जो व्यक्तित्व का विकास नही होने देते। सत्य वाणी का तप है। इसका तात्पर्य है – उसमे मन की चोरी की गुजाइस नही है। जिन्हे मन वाणी और कर्म की अभेदता सधती है उन्हे सत्य का साक्षात्कार होता है।

सत्य का मूलाधार मनुष्य का स्वभाव है। चित्त मानस की अभिरूचि शक्ति आवेश आदि प्रवृत्तिया होती है। स्वाभाव आनुवशिक सस्कार सामाजिक सयोग शिक्षा ओर सयम से बना है। गीता मे कहा है कि जैसा स्वभाव वैसा मनुष्य। स्वभाव जितना सरल कुठामुक्त पूर्वाग्रह रहित शान्त तथा सत्याचरणी होगा मनुष्य उतना ही देवत्व से पूर्ण होगा।

सत्य व्यक्तिगत विषय है। सत्य अनुशीलन और आचरण का विषय है। सत्यान्वेषी सदैव मन की

सत्य दैवी सम्पदा और ईश्वर के समतुल्य है, जिन्हे यह विश्वास होता है अटूट श्रद्धा होती है ऐसा सत्य जीवन मे फलदायी होता है।

चालाकी और चतुराई पर ध्यान रखे। जब भी चूक होगी तब मन की आर से सत्य आचरण मे ऊपरी दिखावा अथवा किसी प्रकार की चालाकी हस्तक्षेप करगी। यदि चालाकी चली होगी तो निश्चय ही व्यक्तिगत विकास अथवा किसी प्रकार की प्रगति की आशा नही है। व्यक्ति निरन्तर आत्म पर्यवेक्षण करे और अपने पर सयम बरते।

सत्य धर्म का प्रबल लक्षण है परन्तु उसका अर्थ मात्र सच बोलने तक ही सीमित नही है। मोटे तौर पर सच बोलने के अर्थ मे प्रयुक्त ह। जो बात जैसी सुनी या समझी है उस उसी रूप म कहना सच माना जाता है। सामान्य प्रसगो मे यह ठीक है। यह नीति अपनाने वाले भरोसेमन्द माने जाते है। उनका कथन सुनने के उपरान्त असमजस अविश्वास नही होता। किन्तु यह स्पष्ट समझ ले कि सत्य बोलना धर्म का एक छोटा सा अग है। वास्तविक सत्य वाणी तक सीमित न रहकर जीवन की समस्त विधि व्यवस्थाओ मे समाहित होता है। वास्तविकता तो यह है कि हमारा समूचा आचरण समूचा जीवन सत्यमय हो।

बोध कथा

अग्निहोत्र का प्रभाव

पौष सुदी ६ सम्वत १६३० विक्रमी को स्वामी दयानन्द सरस्वती अलीगढ पधारे। उन दिनो अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के उपकुलपति सर सैयद अहमद प्राय नित्य उनके पास आते थे। एक दिन सैयद साहब ने कहा – **"आपकी दूसरी बाते तो युक्तिसगत जान पडती है, परन्तु यह बात कि थोडे से हवन से वायु का सुधार हो जाता है, हमे युक्ति सगत नहीं जान पडती।"**

स्वामीजी ने हवन–अग्निहोत्र के अनेक लाभ बताकर उनसे पूछा – **"सैयद महाशय ! आपके यहा कितने मनुष्यो का भोजन बनता होगा ?"** सैयद साहब ने उत्तर दिया कोई पचार साठ का। स्वामी जी ने उनसे दोबारा पूछा – **"आपके यहा कितने सेर दाल बनती होगी ?"** सैयद साहब ने उत्तर दिया कोइ छह सात सेर।" स्वामीजी ने फिर पूछा – **इतनी दाल मे कितनी हींग का छौका लगता होगा ?** सैयद साहब ने जवाब दिया – माशाभर से कम तो हीग न होली होगी। इस पर स्वामी जी ने जिज्ञासा की – **'क्या इतनी थोडी सी हींग की सुगन्ध सारी दाल को सुगन्धित बना देती है ?'** सैयद साहब ने जबाव दिया – **"हा, अवश्य यह थोडी सी हींग सारी दाल को सुगन्धित बना देती है।"**

तब स्वामी जी ने उत्तर दिया – **'थोडी सी हींग की तरह थोडा सा किया हुआ अग्निहोत्र हवन भी वायु हवा को सुगन्धित बना देता है।'**

सैयद महाशय स्वामी जी के उत्तर से प्रसन्न हो उठे और उनकी स्तुति करते हुए घर लौटे।

– नरेन्द्र

गुजरात में आए भीषण भूकम्प में मृतकों की प्रथम पुण्य तिथि पर

१५१ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित

श्री महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा द्वारा पिछले वष २६ जनवरी को आये भूकम्प मे अकाल मृत्यु के घाट उतरे असख्य नर नारियो की प्रथम पुण्य तिथि पर १५१ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ उनकी स्मृति मे आयोजित किया गया।

जैसा कि आपको विदित ही है कि लगभग पूरे वर्ष ही ट्रस्ट परिसर मे भूकम्प पीडितो हेतु कुछ न कुछ राहत कार्य होता ही रहा है चाहे वह भवन निर्माण का कार्य हो चाहे खाद्य सामग्री एव वर्तन आदि विस्थापितो की देने की बात हो। समस्त आर्य जगत की ओर से ट्रस्ट परिसर को आधार शिविर बनाकर राहत कार्य किया गया।

स्मृति यज्ञ टकारा से १०० किलोमीटर के दायरे मे आने वाले लगभग समस्त गाव के निजी व्यक्तियो पचायतो तहसीलदारो ने भाग लिया। इस आह्वान के पीछे उपदेशक विद्यालय के उन सभी ब्रह्मचारियो का योगदान है जो कि एक वर्ष से इन गावो म निरन्तर सामूहिक यज्ञो का आयोजन करते रहे है। इस सारे आयोजन की परियोजना ब्रह्मचारी विजेन्द्र के मन मस्तिष्क की ही उपज थी। कार्यक्रम मे १०८ कुण्डीय यज्ञ की व्यवस्था थी लेकिन उस दिन लागो का उत्साह देखते हुए तुरन्त ही ४३ कुण्डो की व्यवस्था करनी पडी ओर एक कुण्ड पर ५ दम्पति बिठाए गए। इस हिसाब से १५१० केवल यजमान ही थे और लगभग ५००० व्यक्तियो का अपार जन समूह इसमे सम्मिलित हुआ। गाव वासियो का उत्साह देखते ही बनता था। सभी यजमान अपन अपने गव से शोभायात्रा निकालते हुए टकारा गाव मे घूमते हुए महर्षि दयानन्द जन्म स्थान का दशन करते हुए उत्सव स्थल पर उपस्थित हुए। प्रत्येक यजमान एक एक किलोग्राम घृत इस यज्ञ हेतु लाया था यह उनकी यज्ञ के प्रति अपार श्रद्धा का ही प्रतीक था।

ग्रामवासियो के इस उत्साह को देखते हुए हमे यह दृष्टिगोचर हो रहा था कि पिछले एक वर्ष मे ट्रस्ट द्वारा किए गए सेवा कार्य का ही इतना प्रभाव पडा है कि स्थानीय लोग ट्रस्ट के साथ जुडे है जिसकी कमी पिछले कई वर्षो स अनुभव की जा रही थी। वह आज इस कार्यक्रम स पूर्ण हुई।

इस सारे कार्यक्रम में टकारा मोरबी जोडिया घोल पडधरी तहसील के ग्रामो ने भाग लिया और सारे कार्यक्रम के मुख्य आयोजक के रूप मे आचार्य विद्यादेव जी ने ब्रह्मा का पद ग्रहण कर सम्पूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

सभी आए हुए महानुभावो हेतु ट्रस्ट की ओर स ऋषि लगर की व्यवस्था की गई जिसमे सराहनीय योगदान ग्राम नेकराम के श्री करसन भाई को जाता है जिन्होने अपने दल बल सहित श्रद्धाभाव से व्यवस्था की। ग्राम लखधीरगढ के नवयुवको ने दूध की सारी व्यवस्था अपनी ओर से की।

इस पवित्र अवसर पर हरिद्वार से श्री मामचन्द आर्य भजनोपदेशक अपनी भजन मण्डली के साथ पधारे थे जो कि ब्रह्मचारी धर्मबन्धु के वैदिक मिशन के अन्तर्गत सौराष्ट्र एव कच्छ मे वेद प्रचार कर रहे हैं।

कष्टों का अन्त : एकता, दृढता और सच्चे सौमनस्य से

सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु खभाग्भवेत।।

सुखी बसे ससार सब दुखिया रहे न कोय। यह अभिलाषा हम सब की मेरे भगवन पूरी होय।

समानी व अकूति समाना हृदयानि व ।
समान्‌ ु वो मनो यथा व सुसहासति।।

हो सभी के दिल तथा सकल्प अवरोधी सदा। मन मे भरे हो प्रेम से जिससे बढे सुख सम्प ।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

राष्ट्र की प्रगति : एकता-ऊंचे लक्ष्यों के सामूहिक प्रयत्नों एवं निष्ठा से

नई सहस्राब्दी मे स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे देशवासियो को आत्मचिन्तन करना होगा। यद्यपि राजनीतिक दृष्टि से हम स्वाधीन है परन्तु उत्तर मे हिमालय से लेकर समुद्र तक विस्तीर्ण मातृभूमि के भूप्रदेशो के साथ उसके दोनो पार्श्व पृथक हो गए है। १९७१ के सघर्ष मे निर्णायक विजय के समय शत्रु के एक लाख सैनिक बन्दी थे। उस समय राष्ट्र की एकता सजोई जा सकती थी पर उस घडी का लाभ नही उठाया जा सका। इस समय राष्ट्र के सूत्र सचालाको को नई सहस्राब्दी मे भारत को प्रत्येक दृष्टि से एक समुन्नत महान राष्ट्र के रूप मे प्रतिष्ठित करने के लिए नए सकल्पो और सुनिश्चित कार्यक्रम से वैसे ही बढाना होगा जैसे पिछली शताब्दी मे विदेशी शासन से मुक्त होने के लिए त्याग बलिदान और समर्पण के साथ सभी राष्ट्रजनो ने सामूहिक योगदान किया था। आज भी मातृभूमि भारत के एक अरब से अधिक देशवासी उसे अपनी पुण्यभूमि मातृभूमि घोषित करते है। उत्तर मे हिमालय से लेकर दक्षिण मे रामेश्वरम तक तथा पूर्वी और पश्चिमी समुद्रो तक विस्तीर्ण मातृभूमि ससाधनों भौतिक सम्पदा तथा सौ कोटि से अधिक जनसख्या वाला यह मनस्वी राष्ट्र वस्तुत यशस्वी वर्चस्वी और प्रत्येक दृष्टि से अग्रणी महान बन सकता है यदि उसके कोटि कोटि राष्ट्रजन राष्ट्र की व्यवस्थित समन्वित प्रगति एव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे उच्चतम स्थिति एव कीर्तिमान प्राप्त करने के लिए वैसे ही त्याग बलिदान सच्चे सहयोग और समर्पण के मापदण्ड प्रस्तुत करे जैसे कि उन्होने विदेशी पराधीनता से मुक्त होने के लिए राष्ट्र के स्वाधीनता सघर्ष के युग मे प्रस्तुत किए थे। यह लक्ष्य सीधा और सरल होने के बावजूद सच्ची साधना एकता और निष्ठा का है। विश्व का इतिहास प्रमाण है कि सृष्टि के प्रारम्भ से युगो तक अपनी विशिष्ट सस्कृति तत्वज्ञान और उपलब्धियो के कारण भारत एक अग्रणी श्रेष्ठ राष्ट्र के रूप मे परिगणित किया जाता था परन्तु अपनी एकता निष्ठा और प्रयत्नो के अभाव मे वह पहले तो पश्चिमोत्तर एक आए मध्यपूर्व के और पिछली शताब्दी मे सात समुद्र पार के पश्चिमी आक्रमणकारियो के साम्राजय का शिकार बन गया। अनेक वर्षो के सतत स्वातन्त्र्य सघर्ष के बाद यद्यपि हम स्वाधीन हुए परन्तु स्वाधीनता प्राप्ति के क्षणो मे और बाद के वर्षों मे राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुरक्षित नही रख सके।

विदेशी शासन से मुक्ति के ५५वे वर्ष मे यद्यपि हमारा राष्ट्र राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन है परन्तु सभी देशवासियो को यह कटु तथ्य स्मरण करना होगा कि हमारी यह कथित स्वाधीनता अधूरी है क्योकि हमारा प्राचीन ऐतिहासिक सास्कतिक राष्ट्र तीन पृथक भौगोलिक सास्कृतिक और राजनीतिक इकाइयो मे विभक्त है। फलत कोटि कोटि जनता जनार्दन अपूर्व भौतिक प्राकृतिक तथा परम्परागत साधनो और उपलब्धियो का व्यवस्थित सदुपयोग करने मे समर्थ नही हैं। यदि भारत राष्ट्र का अध्ययन करे तो उन्हे इस दुरवस्था विपरीत एव राष्ट्र विरोधी स्थिति का अन्त करने का सकल्प लेकर राष्ट्र की व्यवस्थित समन्वित प्रगति के लिए सच्ची निष्ठा और सामूहिक प्रयत्नो कठिन अध्यवसाय की अपनी भूमिका प्रस्तुत करनी होगी। यह कार्य कठिन है दीर्घकालीन प्रयत्नो और उद्योगो पर आश्रित है। आज सर्वाधिक चिन्ता और वेदना की बात है कि सभी प्रमुख राष्ट्रीय दल और उनके नेतागण राष्ट्र समाज आर जन जन की दु खद स्थिति का ठीक मूल्याकन नही कर रहे है। यह भी बडी चिन्ता कष्ट और दुर्भाग्य की बात है कि अधिकाश नेता राष्ट्र समाज एव जन जन की एकता सगठन और लक्ष्य की एकता सगठन को व्यवस्थित करने के स्थान पर अपने व्यक्तिगत सकुचित तथा अस्थाई स्वार्थसाधन के प्रयत्नो मे ही सलग्न है। इस दु खद स्थिति का परिणाम है कि सीमापार का आतकवाद और छोटे छोटे गुट और नेता राष्ट्र की एकता समृद्धि और प्रगति का ध्यान न कर सकुचित स्वार्थो की पूर्ति मे सलग्न है। भारत राष्ट्र की कोटि कोटि जनता के हितो महान ऐतिहासिक सास्कृतिक राजनीतिक लक्ष्यो की एकता का लक्ष्य न केवल स्मरण रखना होगा प्रत्युत इन लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयत्नो का सगठित अभियान पूरी निष्ठा साधना एव शक्ति से प्रस्तुत करना होगा। विदेशी शासन से जूझकर देश को राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन करने का लक्ष्य कठिन होने पर भी प्रत्येक देशवासी के लिए सुनिश्चित था परन्तु आज की सर्वाधिक दु खद स्थिति यह है कि देश को स्वाधीन हुए आधी शताब्दी से अधिक समय व्यतीत होन पर राष्ट्र के तीन तीन राजनीतिक इकाइयो मे विभक्त होने के बावजूद हम राष्ट्र की एकता सगठन और प्रगति के ऊचे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए न तो जागरुक है और न इस लक्ष्य के प्रति समर्पित हैं। सभी कथित नेता और अधिकाश दल केवल अपने निजी स्वार्थों और स्थिति को सुदृढ करने मे लगे है।

देश समाज और जन जन की यह स्थिति यदि सच्ची – वास्तविक है तो उसे प्रत्येक देशवासी को न केवल समझना होगा प्रत्युत उसे भली प्रकार समझकर उसके सुधार के लिए सामूहिक प्रयत्नो एव निष्ठा का कठिन और लम्बा मार्ग अपनाना गा। हम यह कडवी सच्चाई भी नहीं भूल सकते कि जब तक देश मे विदेशी शासन था सभी देशवासी उसका अन्त कर सच्ची स्वाधीनता के लिए एक लक्ष्य की पूर्ति के लिए अनुप्राणित थ परन्तु आज हम राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन होते हुए भी तीन राजनीतिक भौगोलिक इकाइयो मे विभक्त है। इतना ही नही इन इकाइयो द्वारा समग्र राष्ट्र को एकता प्रगति के मार्ग पर ले जाने का लक्ष्य हम भूले हुए है। फलत प्रत्येक दल ओर सामान्य देश का नागरिक उस लक्ष्य की पूर्ति के स्थान पर छोटे छोटे दलो की स्थिति सुदृढकर केवल निजी स्वार्थो की पूर्ति मे सलग्न है। यह स्थिति यदि सच्ची है तो यह सारे राष्ट्र के लिए अत्यन्त दु खद और भयावह है हम तीन राष्ट्रो मे विभक्त होकर दलो और नेताओ के सकुचित स्वार्थो की पूर्ति मे सलग्न है अभी पिछले दिनो चार प्रदेशो की विधानसभाओ मे निर्वाचन हुए है वहा भी किसी दल और नेता ने राष्ट्रीय एकता और सगठन का लक्ष्य सामने नहीं रखा। प्रत्येक दल और नेता न केवल अपनी निजी स्थिति सवारने का ही लक्ष्य रखा। फलत इन चारो प्रदेशो मे किसी भी दल की स्थिति या देश की छवि न तो सुधरी और न सुदृढ हुई केवल नेताओ और दलो ने अपनी स्थानीय स्थिति सुधारने का प्रयत्न किया। भारत राष्ट्र के वर्तमान और भविष्य के लिए यह सकुचित स्वार्थभरी स्थिति अत्यन्त दु खद और भयावह है। इसका अन्तकर राष्ट्र की सच्ची एकता सगठन और भविष्य के निर्माण के लिए प्रत्येक देशवासी को आत्मचिन्तन कर उसे व्यवस्थित करने के लिए अपनी विनम्र निष्ठाभरी आहुति प्रस्तुत करनी होगी।



जातिगत चुनाव

बडी हैरानी होती है आज के चुनावो को देखकर जिनमे कोई मुद्दा नहीं कोई योजना नहीं। कोई भी उम्मीदवार मतदाता को यह समझाने का प्रयास नहीं कर रहा कि क्षेत्र के विकास के लिए उसके दिमाग मे क्या रूप रेखा है। कोई भी उम्मीदवार मतदाता को यह विश्वास दिला पाने मे असमर्थ है कि उनकी मूलभूत समस्याए वह कैसे सलझाएगा? जातिगत समीकरण राष्टीय समीकरणो पर हावी हो गए हैं। हर उम्मीदवार ये आकडे तैयार करने मे व्यस्त कि उसके क्षेत्र मे कितने दलित मतदाता हैं। कितने स्वर्ण वैश्य मुसलमान और ब्राह्मण हैं। उन्हे लुभाने और पक्ष मे करने के लिए पैतरेबाजी तैयार की गई। उम्मीदबार की योग्यता क्षमता के मुकाबले उसकी जातिगत क्षमता का आधार बनाकर टिकट दिए गए। हम सोचे कि आखिर हम किस राह पर जा रहे हैं।

– स्वतन्त्र गोलय, बसन्त विहार, कानपुर

राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं एकता के लिए हिन्दी अपनाइए।

आतंकवाद का दंश

भारत की सुरक्षा व्यवस्था पाकिस्तान की सुरक्षा व्यवस्था से कई गुणा अधिक है। इसके बावजूद पाकिस्तान द्वारा सीमापार से सचालित हो रही आतकवादी गतिविधियो को रोक पाने मे देश अक्षम सिद्ध हो रहा है। पिछले कई वर्षो से देश का शायद ही कोई ऐसा कोना बचा है जो आतकवाद से बचा रहा हो। जम्मू कश्मीर मे रक्तरजित दश तो रोजाना जनता झेल रही है। हर रोज विस्फोट कभी ससद तो कभी विधानसभा और कभी कोलकाता आखिर देश की जनता कब तक यह आतक झेलती रहेगी।

– विवेक शुक्ल, महारानी बाग नई दिल्ली

सामवेद से - वृत्र-विजय (आदेश) सप्तकम् (५)

वृत्र, स्तेन यातुधान और मृध विनाश आवश्यक

(१) हे राजन् ! दुर्जेय कुटिल शत्रु को दूर खदेडकर प्रजा का जीवन सुगम करे

अप त्य वृजिन रिपु स्तेनमग्ने दुराध्यम्।
दविष्टमस्ये सत्पते कृधी सुगम्।।

साम० १०५

ऋजिष्वा भरद्वाज । अग्नि । उष्णिक्।

अर्थ – हे (सत्पते) सज्जनो के रक्षक राष्ट्रप्रमुख ! (वृजिनम) कुटिल अतएव वर्जनीय (स्तेनम) छिपकर हानि पहुचाने वाले (दुराध्यम) मुश्किल से जीतने योग्य (रिपुम्) हिसा करने वाले शत्रु को (दविष्ठ अस्य) हम से बहुत दूर फेक दे और (त्य अपकृधि) फिर उसे दूर ही रखे जिससे सज्जनो का जीवन अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार (सुगकृधि) विघ्न बाधाओ से दूर सुगमता से जीने योग्य हो।

अर्थपोषण – वृजिनम – वृजीवर्जने।

दुराध्यम – दु खेन वशीकर्तु योग्यम। *(स्वामी दयानन्द)* अस्य – असु क्षेपणे।

निष्कर्ष – राष्ट्रप्रमुख के लिए वेद का आदेश है कि कुटिल छिपकर हानि पहुचाने वाले आतकवादियो को अपने राष्ट्र से बाहर खदेड दो। सज्जन पुरुषो का जीवन सरल बनाए।

(२) हे सेनानायक ! विद्वेषियो मे फूट डालकर और युयुत्सुओं का सहार कर

मिन्धि विश्वा अप द्विष परि बाधो जहि मृध ।
वसु स्पार्ह तदाभर ।।

साम० १३४

त्रिशोक । इन्द्र । गायत्री।

अर्थ – हे (इन्द्र) प्रमुख सेना नायक ! (विश्वा द्विष अपमिन्धि) राष्ट्र से द्वेष करने वाले सभी शत्रुओ को छिन्न भिन्न कर दे उन्हे सगठित न होने दे। (बाघ परि अप) राष्ट्र मे उत्पन्न की हुई सभी बाधाए पूर्ण रूप से दूर कर और (मृघ जहि) सग्राम करने वाले शत्रुओ का पूर्ण ध्वस करो उनमे से कोई जीवित न रहे। (यत स्पार्ह वसुतद् आभर) शत्रुओ की जो स्पृहजीय वस्तुए (हथियार इत्यादि) है उन्हे अपने राष्ट्र मे ले आ।

अर्थपोषण – मृघ सग्राम नाम। नि०२–१७ सग्राम करने वाले शत्रुओ को

इन्द्र – इन्द्रो वै युधाजित। ता० ७–५–१४ जेसके नेतृत्व मे सेना हार जाए उसे सेवानिवृत कर दे। सेना वेन्द्रस्य प्रिया जाया। ऐ० ३–२२

निष्कर्ष – प्रमुख सेनानायक को वेद का आदेश है कि वह द्वेष करने वालो मे फूट डाले और सग्राम करने वालो का सहार कर उनकी सम्पत्ति छीन ले।

(३) राष्ट्र प्रमुख और सम्पन्न पुरुषों ! सेनापति की रसद और शस्त्रो से सन्तुष्ट रखो

प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत।
वृत्र हनति वृत्रहा शतकतुर्वज्रेण शतपर्वणा।।

साम २५७

नृमेधपुरुषमेधौ। इन्द्र । निवृद् बृहती।

– प० मनोहर विद्यालकार

अर्थ – हे (मरुत) राष्ट्र के सम्पन्न पुरुषो और अपने प्राणो का बलिदान करने के लिए उद्यत सैनिको ! (व) आप सब (बृहते इन्द्राय) सर्वोच्च सेनाध्यक्ष के लिए (ब्रह्म प्र अर्चत) अन्न जल और धान प्रचुर मात्रा मे दे उसे खान पान और शस्त्रास्त्रो की चिन्ता से मुक्त रखे क्योकि वह (शतक्रतु वृत्रहा) कुटिल शत्रुओ को नष्ट करने मे समर्थ इन्द्र सैकडो विधियो का ज्ञाता है। तभी वह (शतपर्वणा वज्रेण) सैकडो प्रकार के विविध शस्त्रास्त्रो द्वारा (वृत्र हनति) छिपकर युद्ध करने वाले आतकवादियो और छापामारो का सहार करने मे समर्थ होगा।

अर्थपोषण – ब्रह्म=जलम। नि० १२ =अन्नम। नि०२–७ धनम। नि० २–१० अर्चत– अर्चति रज्जयति जयति=रजा हुआ रखना। नि० ३–१४ वज्रम– मे हेति कुलिश स्वधिति सायक परशु इत्यादि वध कने वाले। सभी शस्त्रास्त्र सम्मिलित है। नि० २–२० इसलिए कहा वज्रेण शतपर्वणा।

वृत्रम – वृञ वरणे आच्छादयति छिपकर वार कने वाले कुटिल शत्रु को

निष्कर्ष – राजा और प्रजा दोनो का कर्त्तव्य है कि सेना और सेना प्रमुख को रसद तथा हथियारो की कभी कभी महसूस न होने दे।

(४) हे सेनानायक ! स्वराष्ट्र को पूज्य और विजयी बनाने के लिए शत्रु पर आक्रमण करो

प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नियसते।
इन्द्र नृम्ण हि ते शवो हनोवृत्र जयापोऽर्चन्नु स्वराज्यम्।।

साम ४१३

गोतम ! इन्द्र । पङ्क्ति ।

अर्थ – हे (इन्द्र) युद्धो को विजय करने वाले सेना प्रमुख ! आगे बढ (अभीहि) आक्रमण कर (धृष्णुहि) शत्रुओ का पराभव कर (ते वज्र न नियसते) तेरे शस्त्रास्त्र द्वारा किया जाने वाला सहार और तेरी प्रगति शत्रु द्वारा रोकी नही जा सकती क्योकि (ते शव नृम्णभ हि) तेरा बल निश्चय ही शत्रु रूप मे उपस्थित सैनिको को पराजित करने वाला है। अत (स्वराज्य अनु आर्चन) स्व राष्ट्र के लिए प्रशस्ति के कर्म करता हुआ (वृत्र हन) शत्रु की छिपी हुई कुटिल चाल नष्ट कर (अय जय) और उनके अपकर्मों पर विजय प्राप्त कर।

अर्थपोषण – वज्र – अस्त्र (असु क्षेपणे) प्रगति वजगतौ। नृम्णम – नृणा नाभकम – अभिभावकम। शव बलम। नि० २–८ प्रशति – शवति गतिकर्मा। नि० २–१४ अप – अप्न व्रत शक्भ क्रतु। कर्म नामानि। नि० २–१ इन्द्रौ वै युधाजित। वा० ७–५–१४ अर्चति पूजयति। नि० ३–१४

निष्कर्ष – शत्रु को पराभूत करने (हराने) के लिए पहल कर आक्रमण करे केवल आत्मरक्षा से शत्रु का हौसला बढता है वह अपने को शक्तिशाली और हमे दब्बू (कमजोर) समझ लेता है। जब तक हमारा बल शत्रु को झुका कर याचक की स्थिति मे नही हो तब तक न उसे हराया जा सकता है और न अपने राष्ट्र की सच्ची अर्चना (प्रशस्ति) सम्भव है।

(५) समानख्यान सैनिको ! अपने सैन्य प्रमुख की आज्ञा का पूर्ण अनुगमन करो और विजयी बनो

गोत्रमिद गोविद वज्रबाहु जयन्तमज्य प्रमृणन्तमोजसा।
इम सजाता अनुवीरयध्वमिन्द सखयो अनुसरभध्वम्।।

साम १८५४ ऋक १०–१०३–६

अप्रतिरथ ऐन्द्र । इन्द्र । त्रिष्टुप।

अर्थ – अप्रतिश्थ सैनिको को वेद का निम्न आदेश है – हे (सजाता सखाय) समवयस्कतथा समान कीर्ति वाले सैनिक मित्रो ! (गोत्रमिदम) पर्वततुल्य दृढ शत्रुकिलो और व्यूहो का भेदन करने वाले (गोविदम्) गोविकारो (धनुषादि शास्त्रास्त्रो तथा दुग्ध घृतादि खाद्य पदार्थो को प्राप्त कराने वाले (वज्रबाहुम) वज्रसमदृढ बाहुओ मे शस्त्रास्त्रा को धारण करने वाले (ओजसा प्रमृणन्तम) अपने ओज और रौब से शत्रुओ को कुचलने वाले (अज्म जयन्तम्) युद्ध को विजय करने वाले (इभ इन्द्रमअनुवीय ध्वम) अपने सैन्य प्रमुख के अनुशासन मे रहते हुए वीरता के कार्य करे तदनन्तर (अनुसरभध्वम) उसके साथ मिलकर विजयोत्सव प्रारम्भ करे और आनन्दित हो।

अर्थपोषण – गोत्रम– गोत्र नाम्नि कुलेऽप्यद्रौ। यादव पर्वतसम दृढ किला अज्म सग्राम नाभ। नि० २–१७ प्रमृणन्तम–प्र+मृणाति हिसायाम। कौत्सनि० १७ अनुसरभध्वम–अनु (अनु शासन मे) सम (मिलकर) रभध्वम (रभ राभस्ये=प्र+आ+र भ प्रारम्भ करना तथा आनन्दित होना (सस्कृत धातु कोष) युधिष्ठिर

निष्कर्ष – विजय प्राप्ति के लिए अनुशासन मे रहते हुए मिलकर एकमत होकर शत्रु सैन्य पर वीरता पूर्वक आक्रमण करना आवश्यक है अन्यथा विजय सदिग्ध हो जाती है।

(६) वीर योद्धाओ विजयी होने के लिए बाहुबल बढाओ; दूसरों पर निर्भर होना मूर्खता

प्रेता जयता नर इन्द्रो व शर्म यच्छतु।
उग्रा व सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ।।

साम १८–६२

अप्रतिश्थ ऐन्द्र । इन्द्र । अनुष्टुप्।

अर्थ – (नर) हे वीर–श्रेष्ठ यौद्धाओ ! (प्रेत) आगे बढो और तब तक बढते जाओ (जयत) और विजय प्राप्त करो (इन्द्र व शर्म यच्छतु) तुम्हारा प्रमुख सेनापति तुम्हे खानपान तथा निवास की सुख–सुविधा प्रदान करे। (व बाहव उग्रा सन्तु) तुम्हारी बाहुए शत्रु के लिए उग्र हो (यथा अनाधृष्या असथ) जिससे तुम अपराजेय हो जाओ।

अर्थपोषण – शर्म – सुखनामसु। नि० ३–६ शरणम। निरुक्त १२–४–४५

निष्कर्ष – सेना प्रमुख का कर्त्तव्य है कि वह सैनिको के खान पान तथा निवास का ठीक प्रबन्ध करे – उनमे विजय का आत्मविश्वास और उल्लास जागाए।

– शेष पृष्ठ ८ पर

प्रगति का मूल : सच्चे शिव की उपासना

– सोहन लाल शारदा

रात्रि को शय्या पर जाकर प्रणव का जाप किया करो और जाप करते करते ही शयन कर लो। यह वचन कहे थे भक्त पोहलो राम से अमृतसर प्रवास के समय। *(महर्षि जीवनी देवेन्द्र बाबू कृत २०वा अध्याय)*

इसी सन्दर्भ मे तृतीय समुल्लास मे वर्णन है – प्राणायाम के साथ साथ ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म का जाप करते जाए। यहा प्राणायाम की सक्षिप्त विधि का भी वर्णन निम्न है– **"प्रथम प्राणवायु बलपूर्वक बाहर निकालें यथासामर्थ्य बाहर ही रोके। पुन धीरे धीरे भीतर लेकर भीतर ही रोके। जब इच्छा हो तब शैन शैन बाहर निकाले।"** यह हुआ एक प्राणायाम।

यहा इसके लाभो का वर्णन मनुस्मृति व योगशास्त्र के प्रमाणो से किया गया है– "जो मनुष्य प्राणायाम करता है वह प्रतिक्षण उत्तरोत्तर काल मे अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश अन्त समय पर्यन्त वृद्धि करता ही रहता है और उसके मन आदि सर्व इन्द्रियो के दोष क्षीण होकर निर्मल हो जाते है। इस प्रकार आत्मा और मन की पवित्रता और स्थिरता आती है आगे भी बढती जाती है।"

ऐसा महत्वपूर्ण कर्त्तव्य कब और कैसे हो ? इसी हेतु प्रचार क्षेत्र मे प्रवेश करने के साथ ही सर्वप्रथम उस निराकार निर्विकार परमपिता परमात्मा सच्चे शिव की आराधना हेतु उचित समय पर यथाविधि करने के लिए सन्ध्या की पुस्तक लिख प्रचारित की और निर्वाण समय से एक मास पूर्व ही सस्कार विधि के सशोधित सस्करण के लिए पाण्डुलिपि तैयार कर गए।

इसके प्रथम सन्ध्या के मगलाचरण के श्लोको मे वर्णन है –

कृतानीह विधानानि ग्रन्थ ग्रन्थन तत्परै ।
वेदविज्ञान विरहै स्वार्थिभि परिमोहितै ।। ६।।
प्रमाणौस्तान्य ना दृत्य क्रियते वेद मानत ।
जानानाम् सुखबोधाय सस्कारविधिरुत्तम ।।७।।

अर्थ – जो अल्पज्ञानी वेदो के विशेष ज्ञान शून्य जन कर्म काण्डीय ग्रन्थो की स्वार्थ एव मोहवश विधिया लिखते बनाते एव बताते है ऐसे जनो के विचारो को वेद प्रमाणो से निरस्त करके सस्कार विधि का यह अत्युत्तम ग्रन्थ बनाया है।

केवल आर्यजनो के सुख बढाने हेतु ही यह इसलिए भी कि कोई भी सुधार स्थाई नहीं रह सकता जब तक कि उसका आधार वेद न हो। अत जैसे महर्षिकृत सन्ध्या है उसे भली प्रकार से यथाविधि उचित समय पर करने से महाकठिन कार्य सरल हो जाते हैं। इसके लिए प्रथम चार बजे शय्या त्याग कर धर्म का अनुष्ठान और अर्थ के लिए उद्योग का विचार करते हुए पाचो प्रात कालीन मन्त्रो का अर्थ सहित विचार करके शारीरिक कृत्य शौच स्नानादि से निवृत्त हो कौशबर्हि *(सामान्य प्रकरणम्)* कुशासन पर जिधर से वायु आ रही हो उधर ही मुह करके पदमासन पर बैठकर योगमुद्रा से प्रथम सकल्पोच्चारण करे।

(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

यहा वर्णन है कि ओ३म् तत् सत् परमेश्वर के इन तीन नामो का उच्चारण करके आगे वर्ष अयण ऋतु मास पक्ष दिन नक्षत्र लग्न मुहुर्त स्थान स्वनिवास नगर का उच्चारण करे सकल्प पढे – **अहम् अद्य नित्य सन्ध्या यज्ञोपासनादि कर्म करिष्ये।**

इस विषय पर वर्णन करते हुए कहते हैं कि इसे सब आर्यजन यथावत जान ले । इसमे किसी भी प्रकार का विरोध नही है हम आर्यजन बालक से वृद्धजन पर्यन्त आदि काल से ही आज पर्यन्त पढते पढाते लिखते लिखाते चले आ रहे है। इसको जानने हेतु पुरोहित उपदेशक से शिक्षा लेनी आवश्यक है इसलिए महर्षि यहा वर्णन करते हुए लिखते है – **"जो सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर बराबर मिति वार लिखते पढते नहीं बाते तो हम आर्यों को भी इसका हिसाब ज्ञात करना कठिन हो जाता। सो यह बडा उत्तम कर्म है।"**

तत्पश्चात अमृतो पस्तरणमसि० के तीन मन्त्रो से तीन आचमन दक्षिण हस्त मे जल लेकर करे। जल इतना हो कि वह कठ से नीचे हृदय तक पहुचे। *(सस्कार विधि)* आचमन हथेली मे उसके मूल व मध्य देश मे ओष्ठ लगाकर करे। लाभ यह है कि इससे कण्ठस्थ कफ और पित्त की निवृत्ति होती है।

अब आगे पूर्वोक्त विधि से न्यून से न्यून तीन प्राणायाम करते हुए साथ साथ मन में ईश्वर के मुख्यनाम ओ३म' का जाप करता रहे। *(सत्यार्थ प्रकाश)*

आगे गायत्री मन्त्र से शिखाबन्धन करके शन्नो देवी० मन्त्र से तीन आचमनकर इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र से मध्यमा अनामिका अगुलियो से जलस्पर्श कर प्रथम दक्षिण पश्चात वाम पार्श्व मे स्पर्श करता हुआ मार्जन मन्त्र से सर्वलिखित अगो पर जल छिडके। (लाभ) इससे आलस्य दूर होता है।

पुन पूर्वोक्त विधि से न्यून से न्यून तीन प्राणायाम अधिक करना चाहे तो इक्कीस बार करके अघमर्षण मन्त्र पढता एव अर्थो का ध्यान करता हुआ निम्न विधिपूर्ण करे।

"शन्नो देवी० रीति पुनराचामेत। ततो गायत्रादि मन्त्रार्थान मनसा विचारयेत। पुन परमेश्वरेणैव सूर्यादिकम सकल्म जगद्रचित परमार्थ स्वरूपम ब्रह्म चिन्तयित्वा परम ब्रह्म प्रार्थयेत्।"

अर्थात – शन्नो देवी मन्त्र से तीन आचमन कर गायत्री मन्त्र से लेकर मथोस्व अघमर्षण मन्त्र के अन्त तक के मन्त्रार्थों का विचार करता हुआ प्रार्थना करे कि वह परमात्मा सगुण एव निगुण दोनो ही है ऐसा मानकर कहे कि हे प्रभो ! आपने सब पदार्थो की उत्पत्ति करके सब जगत का बहुत उपकार किया है। वैसे ही हमे भी ऐसी शक्ति प्रदान करे कि हम भी इस जीवन मे कुछ यथासामर्थ्य उपकार करे। *(पचमहायज्ञ विधि)*

अब परमात्मा को चारो ओर व्याप्त मानकर मनसा परिक्रमा नि शक उत्साही होकर करे। इन मन्त्रो को सन्ध्या मे स्थान देकर महर्षि ने अथर्वणानाम चतुर्ऋचेभ्य स्वाहा इस अथर्ववेदीय काण्ड १६ सूक्त २३ मन्त्र १ के अनुसार उन्होने ही चारो वेदो की मान्यता कर्मकाण्ड मे प्रस्तुत की।

यहा उस परमपिता परमात्मा को स्वामित्व एव रक्षात्मक गुणो व साधनो से परिपूर्ण जान नमस्कार करते हुए आगे प्रार्थना करे कि जो हम धार्मिक जनो से व्यर्थ ही द्वेष करे और हम भी उनसे किञ्चित द्वेष रखे। इस प्रकार का सभी द्वेषभाव आपके न्यायालय मे प्रस्तुत करते है कि आप यह करे जा भाव आगे उपस्थान प्रकरणम सस्कार विधि मे है। यहा प्रथम मन्त्र है जातवेद से सुनवाम० यह ऋग्वेद का मन्त्र है। इसे आर्याभिविनय के प्रथम प्रकाश मे ३३वे स्थान पर स्थान दिया गया है। इसका अर्थ व्याख्यान करते हुए महर्षि लिखते हैं – मन्त्र कहता है कि अरातियतो निदहाति वेद । यानी हे कृपालु भगवन ! आप (अरातियत) दुष्ट शत्रु जो हम धर्मात्माओ का विरोध करे ऐसे जनो का (वेद) धनैश्वर्य का (निदहाति) नित्य दहन करे जिससे वह भी दुष्टता छोडकर श्रेष्ठता को स्वीकार करे।

अब आगे जो क्रम मन्त्रो का यहा सस्कार विधि मे जो शोधपूर्ण है उसी प्रकार करते हुए सो वर्ष या उससे भी ज्यादा जीवित रहते हुए उस परमात्मा की अद्भुद रचना को देखता सुनता दूसरो से कहता हुआ कभी भी पराधीन नही रहने की प्रार्थना करे। आगे शन्नो देवी० मन्त्र से तीन आचमन कर गायत्री का जाप यथा सामर्थ्य कर ईश्वर को समपण मन्त्र से समर्पण कर आगे नमस्कार मन्त्र से नस्कार करके पुन शन्नो देवी० मन्त्र से तीन बार आचमन करके नित्य का यज्ञारम्भ कर दे।

इस निमित्त पलाश या चन्दनादि की समिधा तथा रोग नाशक गिलोय अपामार्ग मिश्रित सामग्री गौघृत कुल सौलह आहुतिया (सत्यार्थ प्रकाश) देनी है। अग्न्याधान समिधाधान जल सिचन पश्चात आधावाराज्या भागाहुतिया चार प्रात कालीन वा सायकालीन चार महाब्याहृतिया आहुतिया चार आगे प्रार्थना परक चारो मन्त्रो से चार आहुतिया देने के पश्चात जितनी इच्छा हो सामर्थ्य हो गायत्री से और ज्यादा इच्छा हो तो विश्वानिदेव० मन्त्र से देकर सर्व वै पूर्णं की तीन आहुतिया कर यज्ञ विधि का समापन करे।

ततपश्चात सप्तम समुल्लास मे जो प्रार्थना वर्णित है वह ही मूल रूप कि अर्थो से राष्ट्रीय प्रार्थना है इसे करे। तदनुसार आचरण करे।

इस प्रार्थना मे प्रथम बुद्धि पुन शारीरिक क्षमता हेतु आगे मन सकल्प शिव हो इसके लिए छह मन्त्रो पश्चात अग्नेनय० मन्त्र से (राये) विज्ञान व राज्यादि एश्वर्य की प्राप्ति हेतु (सुपथा) अच्छे आप्त लोगो के मार्ग से चलने के साथ ही भक्त कहता है कि हे प्रभो ! आप हमारे किसी भी आत्मीय जनो के हनन करने हेतु किसी को भी प्रेरित न होने दे।

हम अज्ञानान्धकार से हटकर ज्ञानरूपी प्रकाश मार्ग मे – असत से सन्मार्ग की और आगे आपके अमृतत्व को प्राप्त हो जाए।

महर्षि प्रदत्त ऐसी प्रार्थना और तदनुकूल आचरण करने से महाकठिन काम भी सरल हो जाएगे महर्षिकृत सच्चे शिव की यही उपासना है। सच्चे शिव की आराधना की यह ही आर्ष विधि है।

– शाहपुरा (भीलवाडा) राजस्थान

स्वास्थ्य चर्चा

पहचानिए चिन्ता से जुड़े आम रोग

– डॉ० मधुकर कटियार

जिस तरह हमारे शरीर मे अनेक प्रकार की बीमारिया होती हैं उसी प्रकार हमारे मन मे भी अनेक बीमारिया होती रहती है। इस बात का ठोस प्रमाण हे कि अधिकाश मानसिक बीमारिया हमारे दिमाग के किसी विशिष्ट स्थान मे किसी खास जैविक रसायन की कमी अथवा बढोतरी या सामन्जस्य की कमी से होती है। इस दिशा मे और विशिष्ट प्रकार की औषधियो मे निरन्तर शोध हो रहे है। शारीरिक बीमारियो की तरह ही ये मानसिक बीमारिया भी साधारण से अति गम्भीर होती है।

वर्तमान स्थिति यह है कि अब इन बीमारियो से सम्बन्धित खास रासायनिक गडबडिया दूर करने के लिए कारगर दवाए उपलब्ध है। पिछले कुछ समय से जनमानस मे इन मानसिक बीमारियो के प्रति जागरूकता बढाने की आवश्यकता समाने आई है। इसके फलस्वरूप इन मानसिक बीमारियो की सही चिकित्सा सही समय पर मिलेगी।

ऐक्जायटी रोग – अत्याधिक चिन्ता आशका अथवा घबराहट कारणवश या अकारण ही लम्ब समय तक बनी रहती है।

ऐंक्जायटी (चिन्ता) रोग के मुख्य कारण है – हर समय आशका घबराहट भय चिन्ता कि कोई अनहोनी घटना या दुर्घटना न हो जाए। हर कार्य म सदेव भय रहता है कि काम ठीक से नही हो सकगा। मासपेशियो मे दर्द अथवा सिर म तनाव या रहता हे जिससे सिरदर्द अथवा सिर मे तनाव या भारीपन होता है और शरीर के विभिन्न भागो मे दर्द कमजोरी एव थकान होती है। दिल तेज धडकना हाथ पैरो मे कम्पन ठण्डे पडना अत्याधिक पसीना। मुह का सूखना और पेट मे हौल का अनुभव होना। शरीर मे जलन या गर्मी का होना। बार बार पेशाब होना भूख कम होना नीद देर से आना अथवा बार बार टूट जाना।

घबराहट रोग के मुख्य लक्षण है – एकाएक अत्यन्त तीव्र घबराहटहोती हे व्यक्ति को लगता है कि जान निकल जाएगी। हार्ट अटैक सा लगता है दम घुटता है। सास लेने मे रुकावट सी होती है। शरीर और दिमाग पर नियन्त्रण कम होता सा लगता है। कुछ समय पश्चात यह घबराहट स्वय ही समाप्त हो जाती है।

भय – इस रोग मे व्यक्ति को किसी वस्तु कार्य एव स्थिति के प्रति भय हो जाता है। इसके कारण यह वह उस वस्तु कार्य एव स्थिति से बचने भागने का प्रयास करता है। व्यक्ति यह जानता है कि यह भय बिल्कुल निर्मूल है परन्तु वह उसे दूर नही कर पाता।

कुछ आम भय इस प्रकार के है – बन्द जगह मे भय अधेरे मे भय ऊची जगह से भय यात्रा का भय चूहे छिपकली मकडी जैसे छोटे–छोटे जानवरो से भय बिजली की चमक गडगडाहट से भय। खून चोट लाश से भय। मरने का भय। कुछ आम सामाजिक स्थितियो का भय इस प्रकार है – विपरीत लिग व्यक्तियो से बातचीत का भय। किसी सामूहिक सम्पर्क मे सम्मिलित होने से भय। सम्पूर्ण समय व्यक्ति सामान्य रहता है। जब भी उसे यह पता लगता है कि उसे भय वाली वस्तु कार्य या स्थिति परिस्थिति मे जाना पडेगा तो उसकी घबराहट बढती है। बौर उसे ऐक्जायटी रोग केलक्षण होने लगते है।। भय वाली स्थिति के आने पर पर उसे पेनिक रोग के लक्षण होने लगते है।

मनोग्रस्तता बाध्यता रोग – यह एक आम दीर्घकालिक मस्तिष्क की बीमारी है। दुनिया भर मे हर ४० मे से एक व्यक्ति को यह बीमारी है । यह रोग मानसिक रोगो मे चौथा सबसे आम रोग होता है। जन साधारण एव चिकित्सको मे इस रोग के बारे मे जानकारी बहुत कम है। इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति निरन्तर अनचाहे बेकाबू, अर्थहीन और तनाव पैदा करने वाले विचारो और कार्यों के एक जाल मे फसता है। उसका अधिकतर समय और शक्ति इन्ही विचारो से लडते हुए एव बाध्यता के कार्यो को करते हुए ही बीतती है। जिससे रोगी अपने व्यक्तिगत कार्यो पढाई व्यवसाय परिवारिक एव सामाजिक दायित्वो को पूरा करने मे पिछडता है। मन मे निरन्तर बार बार लौटकर आने वाले विशिष्ट अनचाहे विचार चिन्ता चित्र ध्वनि आवगगिक इच्छा ग्रस्तता करते है।। ये विचार रोगी को मन मे स्वत उमडते घुमडते रहत है। ये विचार रोगी को अति अस्वीकार्य होते है। उसे भलीभाति ज्ञात हाता ह कि ये विचार तर्कहीन अनर्गल हास्यापद हैं। जब बेचनी बेकाबू हो जाती है तो रोगी उस विचार से प्रेरित कार्य करने के लिए बाध्य होता है।

कुछ आम ग्रस्तताए ये हैं – दूषित होना (गन्दगी जीवाणुओ सक्रमण बीमारी से) भलीभाति की दुविधा और शक। समानता पूर्णता न होने के विचार। भूलने का भय चीजो को जानने या याद करने की आवश्यकता। छोटी छोटी चीजो पर बहुत ध्यान। किसी भी कार्य को करने पर एकदम सही महसूस करने की आवश्यकता। अपनी किसी गलती से किसी प्रियजन या खुद को खतरा या नुकसान पहुचाने का भय। हर पहलू पर सही गलत अच्छा बुरा पाप पुण्य के बारे मे बराबर ध्यान। आक्रामक या हिसक विचार। अपराध का भय। दूसरे की बेइज्जती का भय। कुछ विशेष सख्याओ रगो शब्दो दृश्यो और आवाजो पर ध्यान देने की आवश्यकता। बार बार बताने पूछने या स्वीकारने की आवश्यकता।

कुछ आम बाध्यताए इस प्रकार है – दूषित होने की ग्रस्तता की प्रतिक्रिया मे सफाई की बाध्यता। जैसे सफाई करना बार बार नहाना बार बार हाथ पैर धोना बार बार कपडे बर्तन एव फर्श फाटक समान रुपये पैसे आदि धोना एव अपने परिवार के सदस्यो से सही व्यवहार करवाना। शक होने पर बार बार जाचना जैसे ताला गैस बिजली दरवाजा इत्यादि बन्द है या नही। अपूर्णता आदि की ग्रस्तता की प्रतिक्रिया मे बार बार खास तरीके से सामान व्यवस्थित करना सजाना लगाना बराबर करना दोनो हाथ से छूना इत्यादि। किसी भी कार्य को बार–बार करते रहना जब तक एकदम सही प्रतीत न हो। एक निश्चित सख्या तक बार बार गिनते रहना। हर कार्य एक निश्चित सख्या तक करना। कुछ वस्तुओ अथवा शरीर के भागो को विशेष रूप से बार बार या निश्चित सख्या तक छूना। मन ही मन कोई जादूई शब्द या वाक्य दोहराना। लगातार दूसरो से पूछते रहना उनकी सहमति लेना उन्हे बताना। अत्याधिक प्रार्थना इत्यादि।

– प्रोफेसर एव वरिष्ठ मानसिक रोग विशेषज्ञ

सस्कृति की प्राचीनता २००० वर्ष बढी

सन्देहो के बावजूद नई खोज से इतिहास की कई उपलब्धि

पुरातत्व सम्बन्धी महती उपलब्धिया अधिकतर सयोग से मिली है। १८८६ मे घूमने निकले जर्मन पर्यटको को आल्पस हिम युग मे सुरक्षित मानव मिला था। उसे बीसवीं सदी की उपलब्धि कहा गया। ११ वर्ष बाद समुद्री प्रौद्योगिकी के राष्ट्रीय सस्थान के वैज्ञानिको को गुजरात के समुद्री तट के समीप खम्भात की खाडी में ३० मील समुद्री तल मे अवशेष मिले।

महीनो बाद समुद्र मे डूबे किसी प्राचीनतम नगर की छवि उनके सम्मुख साकार हो गई। यह सारा नगर ४० मील दूर तक समुद्र मे डूबा हुआ था। सप्ताहो तक समुद्री तल मे गोता लगाकर उन्हे अचानक सहस्रो चित्राकनो के बाद उन्हे अनुभूति हुई कि तट के समीप ८ किलोमीटर दूर तक किसी प्राचीन नगर के भग्नावशेष हैं। पानी मे डूबे नगर की समानता सिन्धु नदी सस्कृति के प्राचीन स्मृति चिन्हो से प्रमाणित हुई। उसमे मोहनजोदडो जैसे भव्य स्नानगृह मिले जो आयाताकार स्वरूप के थे। पानी से निकाली गई पुरानी किश्तियो के अवशेष ५५०० ई०श० से ७५०० ई० पू० से पुराने समय के घोषित किए गए। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से सम्बद्ध वैज्ञानिक एव प्राचीन भारतीय पुरातत्व विज्ञान के विशेषज्ञ श्री दिलीप चक्रवर्ती ने घोषित किया है कि समुद्र तल से मिले अवशेषो की प्राचीनता के विषय मे निष्कर्ष सही हैं तो उनसे विश्व के प्राचीनतम नगरो और गावो के प्राचीन उत्कर्ष की प्राचीनता प्रमाणित हो सकेगी।

अभी तक समझा जाता था कि प्राचीन मेसोपोटामिया मे ४०००–५००० ई० पूर्व नदी घाटी की सभ्यता थी उसके तुरन्त बाद मिस्र की नील घाटी की सभ्यता पनपी उसके बाद १००० वर्ष बाद २५०० ई० पू० मे सिन्धु नदी की घाटी पनपी परन्तु अब खम्भात मे मिले भग्नावशेष मानव सभ्यता के प्राचीनतम स्मृति चिन्ह स्वीकार किए जा रहे है।

आर्यसमाज सरोजनी नगर, नई दिल्ली में
बसन्त मेला-धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति के तत्वावधान मे आर्यसमाज सरोजनी नगर नई दिल्ली मे धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह तथा बसन्त मेला रविवार १७ फरवरी २००२ को बडी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रात काल ८ ३० से ६ ३० बजे तक श्री रामानन्द आर्य जी द्वारा बृहद यज्ञ कराया गया। साढे नो से दस बजे तक श्री सोहनलाल पथिक (पलवल वाले) के मनोहर भजन हुए। १० से १२ बजे तक रतनचन्द आर्य पब्लिकस्कूल के बच्चो द्वारा हकीकत राय पर ड्रामा व बसन्तोत्सव के उपलक्ष्य मे बहुत सुन्दर सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए जिसकी सयोजिका श्रीमती उ्नीता कपिला स्कूल की प्रिसीपल थी। सभी ने इस कार्यक्रम की बडी सराहना की। श्री अशोक सहदेव जी ने अपने पिता स्व० रतनलाल सहदव की स्मृति मे प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले सभी बच्चो को स्मृति चिन्ह पुस्तके व नकद ईनाम दिया। १२ बजे से १३० बजे तक श्रद्धाजलि सभा श्री कृष्णलाल सिक्का प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा की अध्यक्षता मे हुई। जिसमे दक्षिण दिल्ली की सभी आर्यसमाजो के लोग व सरोजिनी नगर की जनता हजारो की सख्या मे सम्मिलित हुई। श्रद्धाजलि सभा मे श्रीमती शकुन्तला आर्या पूर्व महापौर श्री वेदव्रत शर्मा प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व मन्त्री सार्वदेशिक सभा श्री बनारसी सिह पत्रकार श्री रामनाथ सहगल मन्त्री डी एवी प्रबन्धक समिति ने अपने विचार रखे और श्री सोहनलाल पथिक ने प्रभावशाली कविता प्रस्तुत की।

अन्त मे श्री कृष्णलाल सिक्का प्रधान सभा न सबका धन्यवाद किया। मच सचालन श्री रोशनलाल गुप्ता महामन्त्री अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति ने किया। इस कार्यक्रम के पश्चात बहुत सुन्दर ऋषि लगर का प्रबन्ध किया गया।

— *रोशन लाल गुप्ता* उपप्रधान



सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा का स्वागत करते हुए श्री कृष्ण लाल सिक्का प्रधान दक्षिण दिल्ली सभा तथा श्री देशराज बुद्धिराजा प्रधान आर्यसमाज सरोजनी नगर श्री रोशनलाल गुप्त महामन्त्री हकीकत राय समिति मचस्थ अन्य गणमान्य व्यक्ति।

आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम् सैक्टर-६ का
३३वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज रामकृष्ण पुरम सैक्टर ६ का ३३वा वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम से १० फरवरी २००२ (रविवार) को ८ बजे स १ बजे तक सम्पन्न हुआ। प्रात ८ बज स ६ बजे तक हवन क पश्चात श्री विजय भूषण जी का वाद्ययन्त्र पर भजनापदश हुआ। तत्पश्चात पाच (१५ से २० वर्षीय) बच्चो की आर्यसमाज के द्वितीय नियम ईश्वर के विभिन्न नामो की व्याख्या पर एक प्रतियोगिता श्रीमती अनिता चोपडा (मुख्याध्यापिका डी०ए०वी० स्कूल) की देखरख मे हुई। बाद मे उन्हे श्रेणी क अनुसार उत्तम पुरस्कार भी वितरण किए गए।

मुख्य अतिथि व उच्च कोटि के विद्वान श्री सोमपाल(सदस्य योजना आयोग) के साथ डा० महेश विद्यालकार व आचाय श्य्म देव शास्त्री ने अपने-अपन विचार रखे।

आयसमाज के पदाधिकारियो ने आर०के० पुरम के विभिन्न सैक्टरो के आसपास की कालोनियो जैसे सोमविहार आराधना कालानी व निवेदिता कुन्ज आदि मे व्यक्तिगत रूप से जाकर व दूरभाष पर सम्पर्क स्थापित कर विभिन्न हिन्दु समुदायो के परिवारो को निमन्त्रित किया व एक बहुत बड जनसमुदाय को एकत्र करने मे सफल हुए।

उच्च कोटि के वैदिक विद्वानो के विचार सुनकर पूरा जन समुदाय भाव विभोर हो उठा और उनमे से अधिकतर परिवार जो बिल्कुल आर्य विचारधारा से अनभिज्ञ थे विचार बनाकर गए कि वे आर्यसमाज द्वारा आयोजित प्र येक साप्ताहिक सत्सगो मे आएगे और अपने परिवारो मे भी सत्सग रखवाने का प्रयत्न करेगे।

अन्त म बडी श्रद्धापूर्वक लगभग ५५० लोगो न ऋषि लकर ग्रहण किया और पदाधिकारियो को भावी उत्सवो को और उत्कृष्टता पूर्वक मनाने की प्रेरणाए देकर व उ स। ६ । । कर यह वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

वेदो का सही सन्देश जनता तक पहुचाए

वेदो के सही अर्थ का ज्ञान न होना लेखको का दुर्भाग्य है यह उदगार सत्य प्रचारक मच द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए दिल्ली विश्व विद्यालय के सस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ० कृष्ण लाला जी ने किया। कनाट प्लेस स्थित १५ हनुमान रोड के सभागार मे आयोजित सत्य प्रचारक मच की गोष्ठी मे दिल्ली तथा आस पास के क्षेत्रो मे अनेक वैदिक विद्वानो ने भाग लिया। इस अवसर पर डॉ० कृष्ण लाल जी ने कहा कि आजकल कुछ व्यक्तियो द्वारा वेदो मे गोमास आदि के भक्षण की बात कर जनता मे भ्रम फैलाया जा रहा है जबकि उन्हे वेदो के बारे मे जानकारी ही नहीं है। इन तथा कथित विद्वानो को वेदो का सही अर्थ जानने के लिए यास्काचार्य और महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित वेदो क भाष्य पढना चाहिए। इस अवसर पर गुरुकुल कागडी के पूर्व कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार जी ने कहा कि वेदो का सही अर्थ जनता को बताया जाए जिससे भ्रान्तियो न हो। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ० महावीर जी ने कहा कि वेदो के सही अर्थ के जानकारी के लिए मीडिया के द्वारा जनता को बताया जाए एव प्रयत्न किया जाए कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का वेद भाष्य विश्वविद्यालय मे पढाया जाए।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान डॉ० धर्मेन्द्र शास्त्री आचार्य रामचन्द्र आर्य श्री बी०डी० उक्कल प्रो० जयदेव आर्य डॉ० सूर्यप्रकाश स्नातक डॉ० कर्णदेव शास्त्री एव पत्रकार श्री बनारसी सिह श्री अजय भल्ला श्री सत्य नारायण आर्य आदि विद्वानो ने भाग लिया। सभा का सयोजन श्री अरुण प्रकाश वर्मा ने किया।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 28/02 1/03/2002 दिनांक २५ फरवरी से ३ मार्च २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 28/02 1/03/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

पृष्ठ ४ का शेष भाग

वृत्र, स्तेन यातुधान ....

(७) हे सैन्य प्रमुख ! राक्षसशत्रुओ का ऐसा सहार करो कि वे नाक रगडे

वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज।
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासत ।।

साम १८३७

शासो भारद्वाज । इन्द्र । अनुष्टुप।

अर्थ – हे (वृत्रहन इन्द्र) दुष्ट शत्रुओ का विनाश करने वाले वीर सेनानायक ! (रक्ष जहि) राक्षसी स्वभाव वाले दुष्टो का नाश कर मृध वि जहि) सघर्षशील हिसक सैनिको का नाश कर (वृत्रस्य हनू विरुज) छिप कर हमला करने वाले आतकवादियो की ठोडी और नाक को विशेष रूप से तोड दो अर्थात उन से ठोडी और नाक अच्छी तरह से रगडवा ले। हे इन्द्र ! (अभिदासत अमित्रस्य मन्यु विरुज) हमे हानि पहुचाने वाले शत्रु के मान का विशेष रूप से मर्दन करे।

अर्थ पोषण – मन्युम – मन स्तम्ये – गर्वीला होना सस्कृत धातु कोषा। मीमासक गर्व=मान हन – मुखनासिके ठोडी और नाक।

निष्कर्ष – वि जहि मे वि=विशिष्ट तथा विविध रूप की व्याख्या ममीषा रुचनोच्छिष । साम १८६३ और इन्द्रो क्रतुवरवरम।। साम १८७१ मे की गई है – क्रियाशील शत्रुओ मे स किसी को क्षमा न और उनके श्रेष्ठ प्रमुख चुन–चुन कर समाप्त करे।

शान्ति की कामना वाले साधक सामवेद का स्वाध्याय और पारायण करते है क्योकि यह स्तुति–प्रार्थना और उपासना का वेद है। इस मे उनके द्वारा दु ख निवारण (क्लेश मुक्ति) और आन्तर तथा बाह्य शत्रुओ के विनाश से शान्ति की प्रार्थना की गई है। किन्तु सच्ची स्तुति व उपासना का रूप स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानव । बताया गया है कि जिस विशेषण या गुण युक्त भगवान की हम अर्चना (स्तुति) करे यह गुण अपने जीवन मे धारण करे तभी हमारी स्तुति प्रार्थना या उपासना सफल होती है किन्तु जब तक शरीर मे शक्ति न हो रोग घेर लेते हैं मन मे शक्ति (सकल्प और विश्वास) न हो बाह्य और आन्तर दोनो शत्रु प्रबल हो जाते हैं इसलिए शान्ति वेद होते हुए भी सामवेद के अन्तिम अध्याय मे शक्तिसचय और शत्रु–विनाश के उपाय अपनाने का उपदेश या आदेश है। जब तक मनुष्य अपने शत्रुओ को समाप्त या अपने वश मे नहीं करता उसे शान्ति नहीं।

सामवेद के मन्त्र सख्या ८० में की गई निम्न प्रार्थना 'हे मार्ग दर्शक प्रभो ! आप सदा से आतकवादी राक्षसो को सग्रामो पराजित करते रहे हैं। उसी क्रम मे अब भी शरीर को सुखा देने वाले दुर्विचारों और दुष्ट जनो को समूल नष्ट करें। आप की दिव्य अदृष्ट सहारक शक्ति से कोई छूटे नहीं। के उत्तर मे परमेश्वर द्वारा दिए गए आदेशो का वर्णन करने वाले सामवेद के सात मन्त्रो का सप्तकम मे उल्लेख है।

इस सप्तक द्वारा यह भी समझ ले कि केवल स्तुति या प्रार्थना से तब तक कोई लाभ नहीं जब तक प्रार्थित वस्तु के लिए स्वय अधिकतम प्रयत्न नहीं किया जाए अथवा स्तुति के अनुरूप गुण धारण नही करे। इस प्रकार सामवेद का सार यह है कि – 'शक्ति अर्जित किए बिना शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती।

सनादग्ने मृण...
अनुदह सह मूरान कयादा ...

साम० ८०

– **श्यामसुन्दर राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन खारी बावली दिल्ली ६**

ओ३म्

महर्षि दयानन्द जयन्ती

आपको विदित होगा कि आगामी ८ मार्च, २००२ (शुक्रवार) फाल्गुन कृष्ण दशमी, २०५८ को आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस है जिसे पूर्व की भाति इस बार भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में निम्न कार्यक्रमानुसार समारोहपूर्वक मनाया जाएगा ।

दिनाक	८ मार्च, २००२ (शुक्रवार)	स्थल	महर्षि दयानन्द गौसम्वर्धन केन्द्र गाजीपुर
यज्ञ	प्रात ६ ०० बजे	समारोह	प्रात १० ०० बजे
ऋषि लगर	दोपहर १ ०० बजे		
अध्यक्षता	कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा		

भजन सन्ध्या

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बठक के निश्चयानुसार एक भव्य भजन सन्ध्या का आयोजन किया गया है जिसमें ईश्वर भक्ति ऋषि गुणगान आर राष्ट्रसेवा को समर्पित भजन सगात एक अपूर्व व्यवस्था के अन्तर्गत प्रस्तुत किए जाएगे ।

दिनाक	६ मार्च, २००२ (शनिवार)	स्थल	आर्यसमाज मिण्टो रोड, दिल्ली
समय	साय ६ बजे से	प्रीतिभोज	रात्रि ६ बजे
अध्यक्षता	कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा		
मुख्य अतिथि	प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा सासद (लोक सभा)		

ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव)

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में पूर्व की भाति ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव) निम्न कार्यक्रमानुसार आयोजित होगा

दिनाक	१२ मार्च, २००२ (मगलवार)	स्थल	रामलीला मैदान, नई दिल्ली
यज्ञ एव प्रतियोगिताए	प्रात ८ बजे	विशेष सभा	दोपहर २ बजे से
मुख्य वक्ता	वैदिक विद्वान् डॉ० भवानीलाल भारतीय		

निवेदन

आपसे विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या में **बसें, कारें** तथा अन्य वाहनों में धर्म प्रेमी जनों को साथ लेकर तीनों समारोहों में पहुचकर आयोजनों की शोभा बढाए । वाहनों पर **ओ३म् ध्वज** तथा सुविधानुसार **आर्यसमाजों के बैनर** लगाए ।अल्प मूल्य का साहित्य (ट्रेक्ट) इकट्ठा खरीद कर मार्ग में जन सामान्य में वितरित करें । इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त समय और दिनों में अपने अपने क्षेत्रों में भी विशेष आयोजन और जलपान प्रीतिभोज वितरण करें ।

निवेदक

विमल वधावन वरिष्ठ उप प्रधान — **जगदीश आर्य** कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

वेदव्रत शर्मा प्रधान — **वैद्य इन्द्र देव** महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य प्रधान — **सुरेन्द्र कुमार रैली** महामन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (**दूरभाष** एव **फैक्स** ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष** ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

ऋषि पर्व एवं ज्योति पर्व
की हार्दिक शुभकामनाए

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक १७ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७८ सोमवार ४ मार्च से १० मार्च २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

दिल्ली हरिद्वार मार्ग पर

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा का अनेक स्थानों पर भव्य स्वागत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा गुरुकुल कागडी शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की तैयारियो के सम्बन्ध मे विगत सप्ताह सडक मार्ग से दिल्ली से हरिद्वार जा रहे थे तो सभा कार्यालय से अल्प समय पूर्व ही सम्पर्क द्वारा जब गाजियाबाद मुरादनगर और मोदीनगर आदि क्षेत्रो के आर्यो को इस कार्यक्रम का पता लगा तो उन्होने सभा कार्यालय से सम्पर्क करके कई स्थानो पर आर्य नेताओ के स्वागत की योजना बनाइ।

गाजियाबाद मे श्री श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व मे आर्यजनो ने स्वागत किया तो कुछ ही दूर चलने के बाद मुरादनगर मे श्री दामोदर प्रसाद आर्य श्री माया प्रकाश त्यागी भुवनेश्वर त्यागी राकेश मोहन गोयल नरेश चन्द्र गोपी चन्द्र वर्मा तथा सियाराम आदि सहित कई आर्यजन उपस्थित थे।



मुरादनगर में दिल्ली हरिद्वार मार्ग पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य एव दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा का स्वागत करते हुए आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी एव श्री विश्व बन्धु सचदेव।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देव रत्न आर्य ने कहा कि महिलाओ को वैदिक ज्ञान प्रदान कर ही परिवार को सुसस्कृत बनाने का पथ आगे बढ सकेगा। नारी शक्ति मे चेतना लाने की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला सभा के गठन का निर्णय लिया गया है।

शिव शक्ति ग्रामोद्योग सस्थान के कार्यालय मे पत्रकारो से वार्ता के दौरान उन्होने कहा कि नारी ही माता और निर्माता है। माता विदुषी होगी तभी बच्चे विद्वान और चरित्रवान बन सकेगे। इस प्रयोजन को सकारात्मक रूप देन के लिए २७ फरवरी को उदयपुर मे अखिल भारतीय महिला सम्मेलन आयोजित किया गया। उन्होने कहा कि वैदिक सस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए शास्त्र शस्त्र शुद्धि नाम से तीन सूत्रीय कार्यक्रम तय किए गए है। शास्त्र के अन्तर्गत गुरुकुलो के माध्यम से विद्वान तैयार कर देश विदेश मे वैचारिक क्रान्ति को फैलाया जाएगा। शस्त्र कार्यक्रम के तहत युवा शक्ति को आर्यवीर दल से जोड कर सृजनात्मक दिशा मे बढाया जाएगा। शुद्धि नामक तीसरा सूत्र धर्मपरिवर्तन कर दूसरे धर्मो मे चले गए परिवारो की गृह वापसी का मजबूत आन्दोलन होगा। साथ ही घर लौटे अपने भाइयो के साथ रोटी बेटी का सम्बन्ध बना कर उन्हे आत्मसात करने का पूरा प्रयास किया जाएगा।

जानकारी देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देव रत्न आर्य ने कहा कि आर्य समाज की विश्व मे ८ हजार शाखाए है। देश मे एक हजार शिक्षण सस्थाओ के माध्यम से नैतिक सस्कार दिए जा रहे है। आगामी २६ अप्रैल को हरिद्वार मे स्थापित गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे तीन दिवसीय शताब्दी समारोह एव महासम्मेलन का आयोजन किया जाएगा पत्रकारो से बातचीत करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि हरिद्वार मे सार्वदेशिक सभा तथा गुरुकुल के द्वारा आहूत महासम्मेलन एव शताब्दी समारोह मे एक लाख प्रतिनिधि भाग लगे। देश के प्रमुख लोग इसमे शामिल होगे

इसके उपरान्त पुन कुछ ही दूरी के बाद मोदीनगर मे भी इसी प्रकार आर्यो के एक विशिष्ट दल ने सभा के अधिकारियो का स्वागत किया। इन आर्य महानुभावो मे श्री विश्वबन्धु सचदेव तथा अनिल बजाज प्रमुख थे।

आध्यात्म से जीवन जीने का प्रशिक्षण

– श्रीराम शर्मा आचार्य

वैज्ञानिक क्षेत्र मे प्रगति कर अपने सुख सुविधाओ के समान एकत्र करने और उन्हे सुनियोजित ढग से प्रयुक्त कर अपनी जीवनयापन की पद्धति को ऊचा उठाना मानवी पुरुषार्थ का ही कमाल हे। उसन प्रकृति के रहस्यो को अपनी पेनी बुद्धि स खाजा ओर उनका उपयोग करन की विधा विकसित की। उसके लिए गत शताब्दिया के वैज्ञानिक उदभव को श्रेय दिया जा सकता है पर यही सब कुछ नही हे। आत्मिकी क अनुशासन के अभाव मे ता भोतिकी के उच्छृखल होने के अवसर बढत हे। आत्मिकी आर्थात आध्यात्म के सिद्धान्तो के सुख सुविधाओ के सुनियोजित उपयोग हेतु परिपालन। यह परिधि इतनी विशाल है कि व्यक्ति से लेकर विश्व पविार के प्रत्येक घटक को अपने अन्दर समाहित कर लेती है।

आध्यात्म मनुष्य को जीवन जीने का प्रशिक्षण देता है। मानवी काया के समस्स्त यन्त्रो तथा उपार्जित वैभव रूपी पुरुषार्थ जन्य अनुदानो का दुरुपयोग किन परिस्थितियो को जन्म देता है इसका समग्र स्वरूप आत्मिकी की शिक्षाओ मे देखने को मिलता है। आध्यात्म बताता है कि मनुष्य अपने उच्च स्तर से अपनी दुर्बलताओ से ही अध पतित होता है। और दु ख क्लेश भोगता है। मनुष्य को इस विश्व के साथ सम्पर्क बनाकर सुखानुभूति प्राप्त करने को तीन उपकरण मिले हुए है यदि वह उनका ठीक उपयोग जाने तो उसे पग पग यह अनुभव हो कि यह ससार कितना सुन्दर और जीवन कितना मधुर है। इन तीन उपकरणो के नाम है – अन्तरारत्मा मन और इन्द्रिया समूह। इन्द्रिया ऐसी अद्भुत है कि दैनिक जीवन मे सामान्य प्रक्रिया मे ही उन्हे पग पग पर असाधारण सरलता अनुभव हाती है। पेट भरने के लिए भोजन स्वाभाविक हे। भगवान की कैसी महिमा है कि उसने दैनिक जीवन की शरीर यात्रा भर की स्वाभाविक प्रक्रिया कितनी सरस बना दी है। उपयुक्त भोजन करते हुए जीवन को रस मिलता है और चित्त को उस अनुभूति से प्रसन्नता होती है। आख का साधारण काम हे वस्तुओ को देखना ताकि हमारी जीवन यात्रा ठीक चले पर आखो मे कितनी विशेषता है कि वह रूप सौन्दर्य कौतुक जैसी रस भरी अनुभूतिया ग्रहण करके चित्त को प्रफुल्लित बनाती है। ससार मे उत्पादन परिपुष्टि विनाश का कर्म स्वाभाविक है। मध्यवर्ती स्थिति मे हर चीज तरुण और सुन्दर लगती है। क्या पुष्प क्या मनुष्य हर किसी को तीनो स्थितियो से होकर गुजरना पडता है मध्यकाल सुन्दर लगता है।

वस्तुत ये तीनो ही स्थितिया अपने क्रम अपने स्थान और अपने समय पर सुन्दर है पर आखो को सुन्दर असुन्दर समझने की कुछ विचित्र विशेषता मिली है। फलस्वरूप जो कुछ उभरता हुआ विकसित परिपुष्ट दीखता है सो सुन्दर लगता है। सुन्दर असुन्दर का तात्विक दृष्टि से यहा कुछ भी अस्तित्व नही पर हमारी विचित्र आखे ही है जो अपनी सोन्दर्यानुभूति बाल विशेषता के कारण हमारे दैनिक जीवन से सम्बन्धित समीपवर्ती वस्तुओ से सौन्दर्य वाला भाग देखती आनन्द अनुभव करतीं उल्लासित और पुलकित होती है। चित्त प्रसन्न करती हैं। इसी प्रकार जननन्द्रिय की प्रक्रिया है।

प्रजनन मक्खी मच्छरो कीट पतगो बीज अकुरो मे भी चलता है। यह सृष्टि का सरल क्रम है। कान और नाक के बारे मे भी इसी प्रकार समझे। यहा कान रसानुभूति की विलक्षणता इसलिए धारण किए है कि सरस स्वाभाविक सामान्य जीवन मे एसे ही नीरस ढर्रे का जीने भर के लिए मिला हुआ प्रतीत न हो वरण उसमे हर घडी उत्साह उल्लास रस आनन्द बना रहे और उसे उपलब्ध करने के लिए जीवन की उपयोगिता सार्थकता और सरलता का भान हो। इन्द्रिय समूह हमे इसी प्रयोजन के लिए उपलब्ध है। यदि उनका उचित सयमित विवेकपूर्ण व्यवस्थापूर्वक उपयोग किया जाए तो हमारा भौतिक जीवन पग पग पर आनन्द उपलब्ध करता रहे।

दूसरा उपकरण मन इसलिए है कि ससार मे जो कुछ चेतन है उसके साथ अपनी चेतना का स्पर्श करके और भी ऊचे स्तर की आनन्दानुभूति करे। इन्द्रिया जड शरीर से सम्बन्धित है वे जड पदार्थ का स्पर्श करके उस ससर्ग का सुख लूटती है। जड का जड से स्पर्श भी कितना सुखद है। इस विचित्रता का अनुभव हमे इन्द्रियो के माध्यम से होता है। चेतन का चेतन के साथ जीवधारी का जीवधारी के साथ स्पर्श – सम्पर्क होने से मित्रता ममता मोह स्नेह सदभाव घनिष्ठता दया करुणा मुदिता जैसी अनुभूतिया होती है।

प्रतिकूल परिस्थित मे द्वेष घृणा जैसे भाव भी पैदा होते है पर उनका अस्तित्व है इसलिए कि मित्रता के वातावरण मे सम्पर्क ससर्ग का आनन्द रहे अन्धकार न हो तो प्रकाश की विशेषता ही नष्ट हो जाए। वस्तुत मन दूसरो से सम्पर्क सहयोग स्नेह के भावो के आदान प्रदान मे है। मेलो सभा सम्मेलनो मे जाने से उन जन सकुल स्थानो मे व्यक्ति की घनिष्ठता एव समीपता का अदृश्य सुख तो मिलता ही है। चूकि इन्द्रिय सुख और मन सम्पर्क की घनिष्ठता से सम्यता का विकास हो गया है। इस तीसरे मनुष्य कृत आकर्षण तत्व का नाम है– धन। धन मे स्वाभावत कोई आकर्षण नही। इसमे इन्द्रिय समूह या मन को पुलकित करने वाली कोई सीधी क्षमता नही। पर चूकि वर्तमान समाज व्यवस्था के अनुसार धन के द्वारा इन्द्रिय सुख के साधन प्राप्त होते है मैत्री भी सम्भव है इसलिए धन भी प्रकारान्त रूप से मन का प्रिय विषय बन गया है। अस्तु धन की गणना भी सुखदायक माध्यमो से जोड दी गई।

बोध कथा

आर्यावर्त, वैदिक धर्म का पुनरुत्थान सच्चे त्याग-बलिदान से

चित्ताड से प्रस्थान कर स० १९३६ वि० तदनुसार ११ अगस्त १८८२ के दिन स्वामी दयानन्द जी सरस्वती उदयपुर पधारे। वहा महाराजा सज्जन सिह की ओर से नौलखा बाग (सज्जन विलास) मे महाराज के निवास का प्रबन्ध किया गया। एक दिन मोहनलाल पाण्डया ने स्वामीजी महाराज से जिज्ञासा की – **"आर्यावर्त देश का पूर्णहित और जातीय उन्नति कब होगी ?"**

स्वामी जी ने कहा – **'प्रिय मोहनलाल, इस देश का उत्थान तभी सम्भव है जब हमारा एक धर्म एक भाषा और एक लक्ष्य हो। यदि सभी नरेश अपने राज्य में धर्म भाषा और भाव की एकता स्थापित करने का प्रयत्न करे तो इस देश का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है और यह देश उन्नति की ओर बढ सकता है।'**

माहन लाल ने महाराज के कथन पर आशका प्रकट करते हुए कहा – **महाराज ! जिस रूप में आप भावो की एकता चाहते हैं उस दृष्टि से फिर मत मतान्तरो का खण्डन क्यो करते है ? इससे परस्पर भेदभावना को प्रोत्साहन मिलता है।'**

महाराज ने कहा – **'देखो जब धर्माचार्यो और देश के नेताओ की असावधानता अविवेक और प्रमाद से जाति के आचार विचार तथा आदर्श दूषित हो जाते है तब उनमे भावो की एकता नहीं रह सकती। और सकीर्ण दृष्टिकोण से करोडो की सख्या मे आर्यसन्तान आज मुसलमान और ईसाई हो रही है यदि इसे सम्भाला न गया तो इसका शीघ्र ही अन्त हो जाएगा। जाति को विनाश की दिशा मे ले जाने वाले धर्माचार्यो का दुष्टिकोण तभी बदल सकता है जब सत्य की तीक्ष्ण असिधारा से असत्य, पापाचरण अनैतिक प्रथाओ और कुरीतियो का समूल उच्छेद किया जाए। इस कार्य मे मै अनेक कष्ट सहन कर रहा हू। स्वार्थी मुझे गालिया देते है, सभी तरह से मेरे प्राणहरण का प्रयत्न करते हैं, खाने मे विष देते है, प्रलोभन भी देते हैं। आर्य जति की रक्षा और वैदिक धर्म के पुनरुत्थान के लिए मै यह सब सहन करता हू और करूगा।'**

पाण्डया जी बोले – **"प्रभो, यदि आप जैसे दो तीन धर्माचार्य इस देश मे आ जाए जो वास्तव मे आर्यजाति की यह डूबती नैया शीघ्र सकुशल पार हो जाए।'**

– नेरन्द

ओजस्वी बनो, हिंसक को खदेड दो
तेजस्वी हो शत्रु-सहार राक्षसों से रक्षा

ओजो मिमातो विमृधो नुदस्व । *अथर्व० ४/३२/२*
ओजस्वी बनो हिसको को खदेडो।

तपसा युजा विजहि शत्रून। *अथर्व० ४/३२/३*
तजस्वी ही शत्रु का विनाश करे।

पाहिनो अग्ने रक्षस । *ऋ० १/३६/१५*
हे अग्ने। राक्षसो से हमारी रक्षा करो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

अधिक संयम, विवेक और अनुशासन से ही स्थिति का समाधान

स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे महात्मा गाधी और दयानन्द सरस्वती की जन्मस्थली गुर्जर भूमि दुखद घटनाओ के फलस्वरूप झुलस उठी है। साबरमती एक्सप्रेस पर हजारो उपद्रवियो के हमले के विरोध मे २८ फरवरी को गुजरात बन्द रखा गया फलत सारा गुजरात जल उठा अहमदाबाद म ३८ व्यक्ति जिन्दा जला दिए गए। बडौदा सूरत मे लूटपाट हत्याए आगजनी की घटनाए घटीं। कितने दुख और विडम्बना की बात थी कि शान्ति भाईचारे और सौहार्द का सन्देश देने वाले महर्षि दयानन्द और महात्मा गाधी की जन्म स्थली गुर्जर भूमि हिसा अराजकता और लूटमारी की दुखद स्थिति का सामना करना पडा। गोधरा स्टेशन पर जिस तरह आतकवादियो ने साबरमती एक्सप्रेस मे यात्रा कर रहे तीर्थयात्रियो पर हमला किया रेलवे और नागरिक प्रशासन यदि सकट के समय सचेत हौर सावधान होते तो नकेवल दुर्घटना रोकी जा सकती थी परन्तु तीर्थयात्रियो का व्यापक जन सहार और भीषण की रोकथाम हो सकती थी। सामयिक सतर्कता न हाने से गाधरा स्टशन पर हुए आतवी आक्रमण के विरुद्ध प्रदेश भर मे साम्प्रदायिक हिसा भडक उठी। यह चिन्ता ओर दुख की बात है अब भी महर्षि दयानन्द और महात्मा गाधी की जन्म स्थली गुर्जर भूमि मे शान्ति व्यवस्था सुरक्षा की प्रतिष्ठा के स्थान पर सम्बन्धित अधिकारी एक दूसरे पर दोषारोपण करने मे लगे हैं। फलत वहा की अव्यवस्था उपद्रवो ओर आपसी तनाव के फलस्वरूप प्रदेश का साम्प्रदायिक सौमनस्य समाप्त हो गया। सर्वत्र आपसी सघर्ष तनाव मनमुटाव के फलस्वरूप प्रदेश का वर्तमान और भविष्य हिसक विस्फोट और अनिश्चित हो उठा है। यह चिन्ता और सकट की बात है कि केन्द्र और प्रदेशो के प्रशासन मिलजुलकर शान्ति और सौहार्द का वातावरण बनाने के स्थान पर एक दूसरे पर दोषारोपण करने मे सलग्न है। भारतीय आर्यसस्कृति ने विश्व को क्या कर दिया उसका समुचित मूल्याकन करन के लिए उसको भूमण्डल पर विस्तार का समुचित मुल्याकन करना चाहिए। प्रागैतिहासिक काल म आयजाति हिमालय की चोटियो ओर तलहटिया स उतर कर सप्त सिन्धु के धन धान्य पूर्ण क्षेत्र से होकर मध्य एशिया ओर यूरोप तक पहुची। वे अपन साथ आर्यो की भाषा आर्यो का धार्मिक चिन्तन आर आयसस्कृति लेकर गई। भारतीय सस्कृति की दूसरी विचारधारा रामायणयुग के बाद अमेरिका और चीन आदि क्षत्रा मे पहुची। इन देशो मे भारतीय चिन्तन पद्धति का प्राचीन चिन्ह एव स्मारक है। बाली द्वीप जावा सुमात्रा कम्बोडिया चम्पा मलाया स्याम आदि देशा के धार्मिक चिन्तन रीतिया प्राचीन धार्मिक स्मृतिचिन्हो के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

सम्राट अशोक के प्रयत्नो से भारतीय सस्कृति की तीसरी धारा भारत से चलकर पृथ्वी के पूर्वार्द्ध मे बौद्ध धर्म के माध्यम से पहुची। भारतीय सस्कृति की पहले श्रीराम के चरित्र बल से विश्व मे फैली थी तो ईसा से दो शती पूर्व महात्मा बुद्ध के प्रयत्नो से भारतीय सस्कृति की यह धारा विश्व के अनेक देशो मे विस्तीर्ण हुई। सम्राट अशोक ने पहले भारतीय सीमाओ से लगे सिहल आदि मे बौद्ध धर्म के प्रचारक भेजे फिर सीरिया अबीसीनिया मैसिडोनिया आदि यूनानी शासित देशो म बौद्ध प्रचारक भेजे। राजकुमार महेन्द्र और सघमित्र बौद्ध बाना पहनकर सिहल द्वीप गए। अशोक के धर्मप्रेम ओर समर्पण का फल यह हुआ कि उनके निधन के समय तक बौद्ध धर्म एक विश्वव्यापी धर्म का रूप धारण कर चुका था। सम्राट अशोक के बाद पुष्यमित्र पुराने स्मृति ग्रन्थो स्मार्त धर्म मे विश्वास रखता था। इस युग मे यवन सूफी शक और हूण जाति के आक्रमणकारी भारत पर आक्रमण करते रहे परन्तु वे भारत के शूरो से पराजित होते रहे। विदेशी आक्रमणकारियो को परास्त कर भारतीय क्षत्रिय यशस्वी होते रहे। इस युग मे साहित्य कला शिल्प और वेभव की अपूर्व वृद्धि हुई। चन्द्रगुप्त समुद्रगुप्त ने न केवल विदेशियो को परास्त किया प्रत्युत वह चक्रवर्ती शासक भी बना। आश्चर्य की बात है कि बौद्ध धर्म विदेशियो मे निरन्तर विस्तीर्ण हुआ अशोक ने राष्ट्र की शक्ति धर्म प्रचार मे लगाकर विदेशो मे तो फैला दिया परन्तु राज्य का शासन और आत्मरक्षा की शक्ति क्षीण हो गई। फलत इस कमजोरी का लाभ उठाकर सेनापति पुष्यमित्र ने सत्ता सम्भाल ली। महमूद गजनवी द्वारा १२वीं शताब्दी मे भारत पर आक्रमण के साथ इस्लाम भारत मे आया परन्तु भारत मे वह भारतीय सस्कृति को नही जीत सका भारतीय सस्कृति की किलाबन्दी की। रामायण महाभारत तथा प्राचीन महाकाव्यो से प्रेरणा लेकर भारतीय सुधारको ने – राजा राममोहन राय ब्रह्मसमाज और स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की आर जरिटस रानाड ने प्रार्थना समाज की स्थापना की। लोकमान्य तिलक ईश्वर चन्द्र विद्यासागर सेयद अहमद आदि ने समाज सुधार के प्रयत्न किए। १९वी शताब्दी म भारतीय सस्कृति समाज के सवागीण जागरण की चेतना जागृत हो गइ। शान्ति निकतन एव गुरुकुल कागडी आदि स्वतन्त्र राष्ट्रीय शिक्षणालया ने सास्कृतिक जागरण किया। डा० शान्ति स्वरुप भठनागर डॉ० सर जगदीश चन्द्र बसु चन्द्रशखर वकटरमण आदि वैज्ञानिको ने सिद्ध कर दिया कि भारत मे भी उच्च श्रणी के वैज्ञानिक है। उन्ही दिनो महाकवि रविन्द्रनाथ की गीताजलि के लिए विश्व का श्रेष्ठ नोबल पुरस्कार दिया गया।

इस बात के भी पुष्ट प्रमाण मिले कि विश्व से भारत के सम्बन्ध बहुत पुराने है। अशोक न अपने धर्म प्रचारक सीरिया मैसीडोनिया आदि म किया। जावा सुमात्रा बाली स्वर्णद्वीप कहलाते थे वहा प्राचीन काल से भारतीय सस्कृति पहुची हुई थी। अमेरिका के ऐतिहासिक अनुसधान से प्रमाणित हुआ कि वहा सबसे पहले आने वाले लोग भारत से गए थे। दक्षिण अमेरिका की भाषा पर भी सस्कृत का प्रभाव था। स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे सबरमती एक्सप्रेस पर हुए आक्रमण और उसके बाद पारस्परिक सौहार्द के स्थान पर आपसी वैमनस्य की घटना समस्त देशवासियो को सचेत सावधान कर रही है कि इस प्रकार की तात्कालिक घटनाओ से उत्तेजित होकर आपसी वेमनस्य क स्थान पर अच्छा होगा कि स्थिति और राष्ट्र की समस्याओ के स्थाई समाधान के लिए अधिक सयम विवेक और अनुशासन से हमारे राष्ट्र नता सास्कृतिक अग्रणी और समाजसेवी कार्य करे। अनक शताब्दियो और अतीत इतिहास साक्षी है कि भारतीय सस्कृति कला साहित्य अपनी सहृदयता उदारता और विश्वबन्धुता के बल पर विश्व मे विस्तीर्ण हुई थी। वैदिक बौद्ध सस्कृति न तलवार या शक्ति के स्थान पर आपसी सौहार्द स्नेह और उदारता से विश्व मे अपना स्थान बनाया था अब वह समय आ गया है कि गोधरा मे तथा उसके प्रत्युत्तर मे हुए काण्डो स सीख लेकर अधिक सयम विवेक और अनुशासन से कार्य कर भारत एशिया और विश्व मे विश्वबन्धुत्व की भारतीय सस्कृति और चिन्तन को उसी तरह से व्याप्त करने का भगीरथ प्रयत्न करे जैसे हमारे प्राचीन पुरखो ने आपसी सौहार्द भाईचारे और विश्वबन्धुत्व के आधार पर वैदिक सस्कृतिऔर बुद्ध के चिन्तन और दृष्टि को विश्व मे सर्वत्र विस्तीर्ण किया था।

चिट्ठी-पत्री

अंग्रेजी का भूत

[redacted]म्बई मे फिल्म फेयर अवार्ड का कार्यक्रम टी०वी० पर प्रसारित किया गया। यह अवार्ड हिन्दी फिल्मो के बेहतरीन प्रदर्शन के लिए दिए जाते है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि इस कार्यक्रम की शुरुआत एक अग्रेजी गाने से की गई और अधिकतर अग्रजी मे ही सुनाए गए। देखा जाए तो यह देश की मातृभाषा हिन्दी के साथ ही हिन्दी फिल्म उद्योग का भी अपमान था। जो अवार्ड दिए जा रहे थे वे हिन्दी फिल्मो के लिए थे। उसी भाषा का इतना अपमान क्यो करते है। जिस हिन्दी भाषा के माध्यम से ये लोग धन दौलत व शोहरत पाते हैं यह समझ से परे है। लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि ऐसे लोगो पर अग्रेजी और पश्चिमी सभ्यता का भूत सवार है।

– चन्द्रकान्त मौर्य, आजाद नगर, बल्लभगढ

सफेद हाथी का बोझ

[redacted]क समय था जब भारत के राष्ट्रपति वेतन के नाम पर केवल एक रुपया लेते थे शेष वेतन वह राष्ट्रीय कोष मे देते थे। लेकिन अब समय इतना बदल गया है कि सासद विधायक पार्षद एव अन्य राजनीतिज्ञो के वेतन कुछ समय से लगातार बढते जा रहे है अन्य भत्ते अलग से दिए जाते है। ऊपर से मुफ्त सरकारी आवास मुफ्त फर्नीचर कोठियो मे मुफ्त माली बिजली पानी टेलिफोन मुफ्त रेल यात्रा की सुविधाए विमान यात्रा और न जाने अन्य कितनी दूसरी सुविधाए राजनीतिज्ञ उठा रहे हैं। उनकी सुरक्षा के खर्च देखते हुए जन प्रतिनिधि जनता पर सफेद हाथी का बोझ बन गए है। इन खर्चों पर मुख्य लेखा नियन्त्रक और दूसरे विभागा का अकुश जरूरी है। **– हर्ष वर्धन, शाहदरा, दिल्ली**

यजुर्वेद से ईश्वर देवता सप्तकम् (१) (पूर्वार्द्ध)

ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना तीनों आवश्यक

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) ईश्वर के स्तुतगुण की प्रार्थना और वैसा बनने का प्रयत्न आवश्यक

स्वयभूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वर्चोदा असि वर्चो मे देहि। सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते।।

यजु २–२६

वामदेव । ईश्वर सूर्यश्च। उष्णिक।

अर्थ – हे परमेश्वर ! आप (स्वयभू असि) आप सनातन काल से स्वय है (श्रेष्ठ रश्मि) सर्वोत्तम प्रकाश सम्पन्न तथा प्रकाश प्रदाता है (वर्चोदा असि) आप विद्या और तेजस्विता के निरन्तर प्रदाता है। यह जानकर मै (सूर्यस्य आवृत अनु आवर्ते) चराचर जगत के आत्मारूप ईश्वर आपके गुण कर्म के अनुसार व्यवहार करने का प्रयत्न करता हू, इसलिए (मे वर्च देहि) मुझे विद्या और तेजस्विता प्रदान कीजिए।

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। *यजु ७–४२*
स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।

ऋ० ५–५१–१५

निष्कर्ष – (१) मनुष्य की परमेश्वर से की गई प्रार्थना तभी सफल होगी जब वह परमेश्वर के जिस नाम को इष्ट मानता है उस नाम के गुण कर्म का अनुसरण करेगा अथवा प्रार्थित वस्तु को प्राप्त करने का पर्याप्त प्रयत्न करेगा।

(२) परमेश्वर स्वयम्भू है अर्थात न उसका कोई निमित्त या उपादान कारण है न उसके माता पिता है। वह स्वय है सदा से है और सदा रहेगा। श्रेष्ठ रश्मि की व्याख्या भगवद्गीता मे इस प्रकार है –

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।
यदिभा सदृशी सा स्यादभासस्तस्य महात्मन ।।

गीता ११–१२

यदि एक साथ हजार सूर्य उदित हो जाए तो उनकी सम्मिलित कान्ति भी उस परमात्मा की कान्ति के तुल्य शायद ही हो पाए।

(३) परमेश्र से प्रार्थना करते हुए – परमेश्वर के उसी रूप के स्वामी या प्रदाता के रूप मे प्रार्थना करनी चाहिए – जिस वस्तु की हम कामना है। जैसे यहा वर्चस की माग करते हुए उस को वर्चोदा रूप मे ध्यान किया गया है।

(४) जैसे सूर्य सबको प्रकाश देकर मार्गदर्शन करता है वैसे ही जब हम भी अपने ज्ञान का प्रकाश दूसरो के देकर उनका मार्गदर्शन करेगे तब सूर्य के जीवनवृत्त का सच्चा अनुकरण होगा।

(२) आह्लाद व मधुर कामना, परमेश्वर के दिग्दर्शक ध्रुव तारे है

इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोऽसि।
ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि।।

यजु० ५–३०

मधुच्छन्दा । ईश्वरश्चन्द्रश्च। आर्ची उष्णिक।

अर्थ – (चन्द्र) आह्लाद=आनन्दानुभूति तथा मधुर कामनाए (इन्द्रेस्यस्यूरसि) परमेश्वर को बाधने वाली अथवा उसकी अनुभूति का बीजारोपण करने वाली है। यह आह्लाद (सन्तोष+प्रसाद) ही (इन्द्रस्य ध्रुवोऽसि) परमेश्वर की ओर जाने की दिशा का निर्देश करने वाला ध्रुव तारा है। यह आह्लाद (ऐन्द्र असि) परमेश्वर का परिचायक गुण है प्रकृति और जीव से पृथक करने वाला है क्योकि केवल वही सत चित्त तथा आनन्दस्वरूप है। यह आह्लाद ही (वैश्वदेव असि) सब दिव्यताओ देवताओ का आधार है। इसके आते ही सब दु ख दूर हो जाते है।

मन्त्र का यह भाव गीता मे स्पष्ट किया है –

प्रसादे सर्वदु खाना हानिरस्योपजायते।
प्रसन्न चेतसो ह्याशु बुद्धि पर्यवतिष्ठते।।

गीता २/६५

अन्त करण से प्रसन्न और सन्तुष्ट रहने वाले मनुष्य के सब दुखो का नाश हो जाता है और उसकी बुद्धि शीघ्र ही परमेश्वर मे स्थिर हो जाती है।

अर्थपोषण (१) इस मन्त्र मे आह्लाद – आनन्दानुभूति अथवा सन्तोषयुक्त प्रसादवाचक कोई शब्द नही है किन्तु इसका देवता ईश्वर के साथ चन्द्र (वृन्दावन से छपे भाष्य मे) दिया हुआ है इसलिए यहा ऐसा अर्थ किया गया है।

चन्द्र – चदि आह्लादने दीप्तौच॰ह्लादी सुखे अव्यक्तेशब्दे च। सुखी होना प्रसन्न होना सतुष्ट होना अव्यक्तानुभूति होना सस्कृतधातु कोष।

स्यू – सीव्यति – सिवु तन्तु सन्ताने – सीना बीजारोपण करना।

(२) चन्द्र का अर्थ चन्द्रमा के कृष्ण और शुक्ल परस्पर विरोधी दो पक्षो के परिप्रेक्ष्य मे – रागद्वेष सुख दु ख जन्म मरण क द्वन्द्व मे रहने वाला चन्द्र तुल्य जीव या मनुष्य भी हो सकता है।

निष्कर्ष – जैसे चन्द्रमा सूर्य से प्राप्त प्रकाश सारे जगत मे बिखेरकर सबको आह्लादित कर देता है वैसे ही जब हम परमेश्वर से प्राप्त ज्ञान और आनन्द का सबको वितरण करने लगेगे तब हम भी चन्द्र के समान सब के प्रिय बन जाएगे। इसी मार्ग को ऋग्वेद मे स्वस्ति पन्था कहा गया है। ५–५१–२५

(३) परमेश्वर ने पुरुष को अपना प्रतिरूप बनाकर, प्रसन्न रहने को कहा है

अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधाम्यन्तर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम्। सजूर्देवेभिरवरै परेश्चान्तर्यामे मघवन् मादयस्व।।

यजु ७–५

गोतम । ईश्वर । आर्षी पडक्ति ।

अर्थ – हे (मघवन) पवित्र आध्यात्मिक धनो के स्वामी योगिन ! (ते अन्त धावा पृथिवी दधामि) तेरे पिण्ड मे मै शरीर और मस्तिष्क रूपी पृथिवी और द्युलोक को स्थापित करता हू (ते अन्त उरु अन्तरिक्ष दधामि) तेरे पिण्ड मे विशाल हृदयान्तरिक्ष को स्थापित करता हू। (अवरै परै च देवेभि सजू) बाह्य दृश्य इन्द्रियो या विद्वानो और मन बुद्धि चतना ओर अहकार रूपी अदृश्य ओर श्रेष्ठ दिव्य इन्द्रियो या योगियो के साथ समान शील होता हुआ (अन्तर्या मे मादयस्व) अपने अन्त करण मे स्वय आनन्दित हो और समकालीन सभी सह धर्मियो को आनन्दित किया कर।

निष्कर्ष – इस मन्त्र मे ईश्वर उपदेश देता हे कि जैसे ब्रह्माण्ड मे मै अवर और पर देवो के साथ सदा मर्यादा मे सहयोग करता हुआ आनन्दमय बना रहता हू, वैसे ही तू अपने शरीर की बाह्य और आन्तर इन्द्रियो को अपने नियन्त्रण मे रखकर उनके सहयोग से आनन्दित होता हुआ सबको आनन्दित किया कर क्योकि तेरा शरीर ब्रह्माण्ड की पूर्ण रूप से प्रतिकृति है –

यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे ।

अन्तर्याम = मौनसोमाहुति । (*सूर्यकान्त कोष*)

(अपूर्ण)

– श्यामसुन्दर राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन खारी बावली दिल्ली ६

ऐ दयानन्द तेरी याद, सोने वालो को जगा दे

– सुभाष चन्द्र गुप्त

ऐ दयानन्द तेरी याद सोने वालो को जगा दे।
वेद के अनुयायियो की धाक जग मे फिर बिठा दे।।

सच्चे मन से गाए सारे ईश भक्ति के तराने
फिर से हर इक घर से निकले धर्म वैदिक के दिवाने।
वेद मन्त्रो का उच्चारण धरती अम्बर को गुजा दे
वेद के अनुयायियो की धाक जग मे फिर बिठा दे।।

श्रद्धा श्रद्धानन्द जैसी लेखराम सी वीरता हा
हसराज सा त्याग हो गुरुदत्त जैसी धीरता हो।
ओ३म की पावन पताका विश्व का पावन बना दे
वेद के अनुयायियो की धाक जग मे फिर बिठा दे।।

कृष्ण के इस देश मे गोदुग्ध की सरिता बहे
बुद्धि परिमार्जित हो जाए ऋत का पथ हर इक गहे।
शुद्ध शाकाहार हिसा द्वेष की अग्नि बुझा दे
वेद के अनुयायियो की धाक जग मे फिर बिठा दे।।

राम की जय जय करे पर कर्म रावण से न हो
गुण करे जीवन मे धारण कथनी करनी एक हो।
राम सा मर्यादा पालन सयमी जीवन बना दे
वेद के अनुयायियो की धाक जग मे फिर बिठा दे।।

फिर अविद्या और जहालत के लगे सजने है मेले
पाखण्डियो दुराचारियो के आगे बढते जाते रेले।
आर्यो का तेज भ्रष्टाचार को धूलि में मिला दे
वेद के अनुयायियो की धाक जग मे फिर बिठा दे।।

ऐ ऋषिवर ! सच्चे सैनिक तेरे बनकर हम बढे
गऊ रक्षा धर्म रक्षा हित सभी मिलकर लडे।
'सुभाष सारा विश्व फिर भारत के आगे सिर झुका दे
वेद के अनुयायियो की धाक जग मे फिर बिठा दे।।

– १५६ ए०जी०सी०आर० एन्कलेव दिल्ली ९२

ज्योति पर्व (ऋषि बोधोत्सव) पर विशेष

महर्षि के जीवनबोध का पर्व - शिवरात्रि

– डॉ० महेश विद्यालकार

महापुरुषो के जीवन की आद्यान्त घटनाए ससार को प्रेरणा सन्देश उपदेश ओर आदर्श प्रदान करती है। शिवरात्रि जीवनबोध का सार्थक पर्व है। आत्मचिन्तन का अवसर है। अमावस्या की रात्रि को मूलशकर के हृदय मे कण कण मे व्यापत कल्याणकारी शिव के वास्तविक मूल को जानने और पाने की प्रबल इच्छा उठी थी। मूलशकर शिवरात्रि की रात जागने के बाद जीवन भी कभी चैन से नही सोया। वह सारा जीवन मानवता के लिए लडता रहा उनके हृदय मे सत्य और असत्य को धर्म और अधर्म को जड और चेतन को शिव और अशिव को जानने की प्रबल इच्छा थी। हृदय मे जिज्ञासा सत्य श्रद्धा व विश्वास था कर्म मे पुरुषार्थ था। अन्तत जीवन का सत्य आत्मबोध तथा जीवन का प्राण शिव को प्राप्त किया। यही शिवरात्रि है। जो जीवन के सत्य स्वरूप का बोध करा दे। जो जीवन को मूल उद्देश्य के साथ जोड दे। जो जीवन का प्रयोजन बता दे।

शिवरित्र आर्य समाज के बीजाकुर का प्रथम दिन है। इसलिए आर्यसमाज और आर्यसमाजी व्यक्ति के लिए ऐतिहासिक महत्त्व है। यदि ऋषि दयानन्द के जीवन मे शिवरात्रि सत्यबोध लेकर न आती तो मूलशकर दयानन्द न बनते। दयानन्द न होते तो आर्यसमाज न होता ? आर्यसमाज न होता तो वैदिक धर्म का स्वरूप नजर न आता। वेद और यज्ञा का सत्यस्वरूप न होता ? स्त्री और शूद्रो को वेद पाने की वकालत करने वाले न होते ? धर्मग्रन्थो तथा महापुरुषो के व्यक्तित्व एव कृतित्व का सत्य स्वरूप दृष्टिगोचर न होता। न जाने कैसी भयावह स्थिति होती ? हम लोग न जाने किन दुर्गुणो दुर्व्यसनो अन्धविश्वास पाखण्ड गुरुडम आदि मे फसे हुए होते ? न जीवन का ध्येय पता होता न जीन का ढग पता होता। आर्य समाज के उपकारो स ससार उपकृत हे। इतिहास ऋणी हे। न जाने कितनो को इस सस्था ने नवजीवन दिया ? आर्यसमाज के इतिहास मे यह शिवरात्रि का दिन सदैव स्मरणीय व वन्दनीय रहेगा। आर्यसमाज के जीवन के लिए यह बोधोत्सव है। आत्मज्ञान व प्रकाश का महोत्सव है। जीवन परिवर्तन की अमरवेला है। व्रत व सकल्प का प्रभात है। जीवन निर्माण की शुभमगल बेला है। जड पूजा मे चेतन पूजा की ओर चलने का सुअवसर है। ऐसी शिवरात्रि सौभाग्यशाली के जीवन मे ही अवतरित होती है। कोई एकाकी मूलशकर ही दयानन्द बनता है।

यह शिवरात्रि हमे आत्मबोध सत्यबोध कर्त्तव्यबोध और दिशाबोध कराने के लिए प्रतिवर्ष आती है। हम मात्र बाह्य औपचारिकता निभाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं ? पर्वो की जो जीवन्त चेतना व प्रेरणा होती है उस तक न जाते हैं न पकडने की भावना रखते हैं। इतिहास साक्षी है कि छोटी छोटी बातो घटनाओ प्रेरक प्रसगो और उपदेशो ने जीवन बदल दिए। कायाकल्प हो गया। पतित जीवन से पवित्र हो गए। पापात्मा से पुण्यात्मा बन गए। भोगी विलासी दुर्व्यसनी जीवन मे ऐसा काटा बदला कि जीवन तपस्वी त्यागी परोपकारी धर्मात्मा और बलिदानी बन गया। कोई नास्तिक से आस्तिक हो गया। एक वाक्य न कीचड मे फसे होने को अपनी पहिचान करा दी। ये तब होता है जब अन्दर के कपाट खुले हो। सत्य श्रद्धा विवेक और जिज्ञासा की तीव्रता प्रबल हो। सकल्प मे वेदना व अधीरता हो।

आज का ससार अन्तर्जगत की यात्रा के लिए उदासीन हो रहा है। बाहर के क्रियाकलापो बातो व चीजो की पकड गहरी हो रही है। इसलिए ज्ञान उपदेश तथा सत्सग जीवन मे ठहर नही पा रहे है कोई असर नहीं छोड पा रहे है। हम सब बाहर के लिए सब ताम झाम जोड रहे है। अन्दर के लिए कुछ नही कर पा रहे हैं ? जलसे जलूस उत्सव कथा सत्सग आदि सभी बाहर की दुनिया मे पारित हो रहा है अन्तर्जगत मे कुछ नहीं पहुच पा रहा है। इसीलिए सर्वत्र अशान्ति दु ख पीडा अभाव सघर्ष व भोगो की तीव्र लालसा फैल रही है। इतना सब कुछ करने के बाद हम वहीं खडे है ? बाहर की दुनिया मे धूमधाम प्रदर्शन तथा टीप टाप है। अन्दर की दुनिया सोई व खोई पडी है। आवश्यकता है बाहर की दुनिया से अन्दर की दुनिया मे आने की भोग सो योग की ओर चलने की शरीर से आत्मा की ओर उठने की प्रकृति मे परमात्मा को झाकने की। अन्दर छिपे सुख शान्ति प्रसन्नता व आनन्द के स्रोत तक पहुचने की। यही शिवरात्रि है। यही इसका सत्य स्वरूप है। दु खद त्रासदी यही है कि हम अपने को नहीं देख पा रहे हैं ? जो हमारे पास है उसका मूल्याकन नहीं कर पा रहे हैं ? इसीलिए दु खी हैं और भटक रहे है? शिवरात्रि हमे सत्यबोध कराती है।

आर्यसमाज का जीवन दर्शन मे बहुत ही प्रमाणिक व्यावहारिक तथा पूर्णता लिए हुए है। इसके चिन्तन मे जो जीवन जगत की दृष्टि मिलती है उसका मुकाबला ससार की कोई विचारधारा नही कर सकती है। आज के जीवन जगत के सन्दर्भ मे आर्यसमाज के चिन्तन तथा विचारो की बडी आवश्यकता है। दु ख है कि इतने श्रेष्ठ और सार्थक विचारो का धनी आर्यसमाज अपने मूल उददेश्यो से हट व कट रहा है ? जहा सेवा त्याग प्रेम सहयोग मिसनरी भावना आदि होने चाहिए थे वहा स्वार्थ पदलिप्सा सुख सुविधा अहकार कमाई की भावना आदि पतित भाव घर करते जा रहे है। इसी से बिखराव उदासीनता असहयोग व रिक्तता फैल रही है। ये पर्व सचेत करने आते है कि हम आत्मचिन्तन करे। अपना तटस्थ भाव से मूल्याकन करे – हमने क्या पाया ? क्या खोया ? कितने आगे बढे ? कितना हमने मिशन के लिए कार्य किया ? कहीं हम धोखे मे तो नहीं हैं ? कि हम ऊपर से सभा समाज सगठन व सस्था के दिखावे मे भागदौड कर रहे हो ? अन्दर से पद स्वार्थ अहकार सम्मान आदि का षडयन्त्र चल रहा हो। यह शिवरात्रि कह रही है अपने को टटोल कर देखो। ज्ञानचक्षु खोलकर देखो।

यह तिथि श्रेष्ठ सकल्पो व्रतो और आत्मबोध करने का महापर्व है। जड पूजा से चेतन पूजा की ओर चलने का सुवसर है। ससार स्वार्थपूजा व जडपूजा मे लिप्त होकर उद्देश्य विहीन होकर भटक रहा है ? भोगवादी एव भौतिकवादी विचारधारा तेजी से हावी हो रही हैं। देहपूजा बढ रही है आत्म चिन्तन घट रहा है ? आत्मा को शरीर के लिए पतित व बेचा जा रहा है ? सर्वत्र त्राहि त्राहि और हाहाकार हो रहा है ? तेजी से मूल्य मर्यादाए नैतिकता व प्रेरक आदर्श तोडे और फोडे जा रहे है ? जीवन और जगत मे अन्धेरा तेजी से फैल रहा है। कही कोई सीधा सच्चा तथा शास्त्रोक्त रास्ता नहीं दिखा पा रहा है ? धर्म घट रहा है। सम्प्रदाय बढ रहे है। अविद्या पाखण्ड ढोग तथा प्रदर्शन बढ रहे हैं। पूजा प्रार्थना धर्म शक्ति परमात्मा मन्दिर आदि व्यापार का रूप लेते जा रहे हैं। मानव समाज के पतन के उदाहरणो से मानवता बुरी तरह घायल होकर चीख चिल्ला रही है।

आर्यो ऋषिभक्तो ! रामकृष्ण की सन्तानो ! उठो ! जागो – अपने को सभालो। अपने ज्ञान गौरव का ध्यान करो बहुत सो चुके हो। ससार तुम्हारी ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है। तुम्हारे पास विरासत और अमूल्य थाती है। तुम्हारे हाथो मे प्रभु की वेद वाणी का सन्देश और अमर उपदेश है। तुम ससार को प्रत्येक क्षेत्र मे सत्यदिशा दे सकते हो। शिवरात्रि पुकार पुकार कर कह रही है यदि ऋषि को सच्ची श्रद्धाजलि देनी हैं। उनके ऋण से उऋण होना है। आर्यसमाज को अमर रखना है तो पहले सच्चे अर्थों मे आर्य बनो। फिर आर्यसमाज महर्षि दयानन्द के लिए काम करो – अपने पद महत्व तथा स्वार्थ के लिए नहीं। जीवन सस्था सगठन व मन्दिरो को क्रियात्मक बनाओ ! यही शिवरात्रि का सन्देश है। यही इस पर्व की प्रेरणा है।

ज्योति पर्व है ज्योति जलाओ

– ओम प्रकाश शास्त्री

ज्योति पर्व है ज्योति जलाओ अन्धकार को दूर भगाओ।
दयानन्द के वीर सैनिको जग मे फिर से कुछ नाम कमाओ।।
अपनी शिक्षा भूल रहे हो सस्कारो को भूल चुके हो।
पश्चिम की इस चकाचौंध मे निज अस्तित्व भुलाय रहे हो।।
याज्ञवल्क्य मनु की शिक्षा घर घर मे फैलाओ।
वेदो के मारग पर चलकर, वैदिक शख बजाओ।।
अपनी भाषा को पहिचानो, राष्ट्र की भाषा को अपनाओ।
सब भाषाओं की जो जननी , उस भाषा का ज्ञान बढाओ।।
यदि चाहते उन्नति अपनी, सुर भाषा का मान बढाओ।
वेदो का नित स्वाध्याय कर वेदो का जयघोष सुनाओ।।
विश्व विजय करके दिखलाई जग ने गौरव गाथा गाई।
निज पौरुष के बल पर हमने, निज सस्कृति चमकाई।।
अपनी सस्कृति को अपनाकर, स्वाभिमान जगाओ।
कैसे भारत वासी होते, जग को पुन दिखाओ।।
प्रभु व्यापक घर घर मे भाई, विद्यमान सबके अन्तर मे।
नित्य चिरतन जो सुखदायी, नहीं केवल पाषाण मूर्ति में।।
सच्चे शकर की तलाश मे, निर्गुण ब्रह्म में ध्यान लगाओ।
दयानन्द से योगी बनकर, त्याग तपस्या को अपनाओ।।

– यू १२८, शकरपुर, दिल्ली ९२

जीवन में 'ऋत' अपनाइए : 'सत्य' का प्रयोग करें

– गजानन्द आर्य

सत्यमेव जयत यह हमारे राष्ट्र का आदर्श वाक्य है। यह वाक्य मडुक उपनिषद से लिखा गया हे क्याकि साधारण सस्कृत म वाक्य बनता है सत्यमेव जयति। उपनिषद म सत्यमव जयते है जिसका सरल अर्थ हे सत्य की ही विजय होती ह। सच्चा व्यक्ति भूखो मरता हे। कपटी व मिथ्यावादी मोजे करता है। सच्चरित्र व्यक्ति दुष्चरित्र के मुकाबले चुनाव हार जाता है। ऐसा सर्वत्र हे फिर भी हम कहते है सत्यमव जयते। एक ओर प्रत्यक्ष प्रमाण है दूसरी ओर आप्त शब्द। आप्त शब्द को मिथ्या कहते भी नही बनता। अवश्य ही हमारा वाक्य अधूरा है। हमे मानना चाहिए था सत्यमेव जयते नानृतम अर्थात सत्य की ही जय होती है बशर्ते वह अनृत नहीं है। यहा अनृत शब्द से सत्य की कसौटी निखारना अभिप्रेत है। यदि सीधा साधा आशय होता तो कहा सकते थे **सत्यमेव जयते नासत्यम।**

ऋत और सत्य शब्द पर्यायवाची है। सीधा सा अर्थ बनता है सच। इसके विपरीत शब्द है अनृत और असत्य अर्थात झूठ पर वेद मत्रो मे दोनो शब्द साथ साथ आए है जैसे –

ऋत च सत्य चाभीद्धात्तपसो *ऋग्वेद*

ऋत वदिष्यामि सत्य वदिष्यामि *तै० आ०*

ऋत व स्वाध्याय प्रवचने च। सत्य च स्वा० *तैतरीय*

एकार्थवाची होने पर भी एक मौलिक अन्तर यह है कि ऋत का अर्थ यथार्थ ज्ञान है जो कभी सत्य नही हो सकता। प्राकृतिक नियम और वेदो का ज्ञान जिसके आधीन प्राणियो की कर्मव्यवस्था और समस्त लोक लोकान्तरो का नियमपूर्वक सचालन है ऐसी व्यवस्था मानना ऋत है। इसी ऋत के बल पर भूगोल और खगोलशास्त्री एव वैज्ञानिक अपने परीक्षण करते है। परीक्षण मे असफल हो जाने पर उन्हे ऋत प्रति कोई सन्देह नहीं रहता किन्तु अपनी भूल ही माननी पडती है। इसी प्रकार इश्वर की न्याय व्यवस्था पर विश्वास करना ऋत ह। भयकर दु ख ओर असफलता म भी ईश्वर को दोष न देना ऋत का पालन हे। अन प्रत्येक अवस्था मे सत्य हे निरभ्रम हे।

प्राणी मात्र को स्वाभाविक ज्ञान और पृथक पृथक आकृति की पहचान ऋत है। सूर्य चन्द्र आदि नक्षत्रो की नियमपूर्वक गति ऋत है। जल की शीतला और अग्नि की उष्णता ऋत है। एक जाति के नर मादा के सयोग से सतति होना ऋत हे। खेत मे जैसा बीज डालो वैसा ही फल होना ऋत है। इस प्रकार ऋत एक ऐसा सत्य है जिसके आधार पर मानव अपने पुरुषार्थ से सत्य का विस्तार करता है। सक्षेप मे ऋत एक सूत्र है और सत्य एक प्रयोग। सत्य के प्रयोग और अन्वेषण करना मनुष्य की बुद्धि विद्या विस्तार और धर्म अर्थ काम और मोक्ष प्राप्ति के आवश्यक अग हैं। ईश्वर प्राप्ति और मोक्ष के लिए मनुष्य उद्योग करता रहा है। बीज रूप से इसका परिचय वेदो मे है। वेदानुकूल किया गया श्रम सफल हो सकता है किन्तु मानव अपनी अलग अलग कल्पनाओ से विभिन्न उपाय करता है और अपने उपायो को सत्य मानता है। इस प्रकार का सत्य भ्रम बन जाता है।

ऋत और सत्य के भेद समझने का एक सरल उदाहरण दूध है। गौ के स्तन मे दूध है केवल मात्र दूध है ऐसा निश्चयात्मक ज्ञान ऋत है। स्तन से निकल जाने पर मनुष्य द्वार सग्रह किया हुआ दूध कितना शुद्ध हे यही स सत्य असत्य की भदमूलक धारण बन जाती हे। दूध म जल मिल गया क्या ? दूध पाउडर का तो नही है इत्यादि सशय इकटठे हाते ह। असली दूध की पहचान तभी सिद्ध होगी जब विश्वास हो जाए कि दूध का गुण ओर स्वाद ठीक स्तन से निकले दूध जैसा हे। खेत मे बोया जाने वाला बीज तभी अकुर बनेगा जब वह बीज यथार्थ मे होगा। बीज मे विकृति आ जाने पर अकुरित नही होता। इसलिए यह एक सूत्र बन गया कि अकुरित बीज अवश्य ही यथार्थ अर्थात ऋत है।

शास्त्र की भाषा मे ऋत स्वत प्रमाण है ठीक ऐसे ही जैसे वेद स्वत प्रमाण है। वेदज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है ओर ईश्वरीय ज्ञान ऋत है। जिस प्रकार अन्य शास्त्र परत प्रमाण हे उसी प्रकार सत्य परत प्रमाण ह। ईश्वर न मानव का सत्याचरण करने आर सत्यासत्य क विवक के लिए बुद्धि दी ह। सत्यासत्य का निर्णय ओर आचरण करते रहने से ही सत्य बना रहता है क्योकि इसमे असत्य के मिलन की सभावना रहती है इसीलिए आर्यसमाज का चौथा नियम है कि सत्य ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। आर्यसमाज का पहला नियम ऋत को स्वीकार करने का है।

असत्य और अनृत सत्य और ऋत विपरीतार्थक है किन्तु एक अन्तर है दोनो मे असत्य शब्द सत्य का विपरीत होने पर भी सत्य मे घुलमिल सकता है। कोई घटना कोई पदार्थ ऐसा हो सकता है जिसमे आधा सच और आधा झूठ छिपा हो। सत्य असत्य का यही मिश्रण सर्वत्र धोखे का कारण है। न्यायालय मे लडने वाले दोनो पक्षो मे कुछ सच्चाई अवश्य होती है। वास्तविक दूध मे कुछ पानी भी ठहर जाता है। प्रत्येक कथित भगवान पैगम्बर और गुरुओ मे कुछ सच्चाई अवश्य होती है जिसके बल पर उनका झूठ चल निकलता है। सच और झूठ चल निकलता है। सच और झूठ के इस मिश्रण को लक्ष्य करके ही ऋषि ने लिखा था – मनुष्य का आत्मा सत्य और असत्य को जानने हारा है

असत्य और सत्य मे घुलमिल जाता है। वहा अनृत की स्थिति बिल्कुल भिन्न है। अनृत मे ऋत लेशमात्र नहीं हो सकता। अनृत का अर्थ है ईश्वर नियम के प्रतिकूल प्रकाश मे अन्धकार नहीं समा सकता उसकी प्रकार ऋत मे अनृत का स्थान कदापि नहीं। अनृत के इस अर्थ को जान लेने पर नानृतम का तात्पर्य बहुत सुगम है। सत्य की परिभाषा सकीर्ण न होकर विस्तृत हे। तब हम समझ सकत ह कि सत्य केवल वही नही हे जो वर्तमान मे देख रहे ह। हमारी दृष्टि और ज्ञान अल्प हे क्योंकि हम अल्पज्ञ हे। सर्वज्ञ व्यवस्थापक की व्यवस्था म त्रुटि नही हा सकती ऐसा निश्चय होने पर हमारा समझना सार्थक है **सत्यमेव जयते नानृत।**

भोतिक जगत मे दक्षता प्राप्त करने वाले वैज्ञानिक खगोल और भूगोलवेत्ता तथा चिकित्सक ईश्वर प्रदत्त के कायल है। उन सबके परीक्षण प्रकृतिक नियमो को आधार पर होते है। खोटे अथवा अच्छे कर्मों का भुगतान अवश्य होगा। इस एक धारणा को हृदयगम करना सत्यमेव जयते को सार्थक बनाता है। जिस सत्य मे ऋत नही है वह सत्य कभी नही। महर्षि ने सस्कार विधि मे – गृहस्थियो को चेतावनी दी कि मनुष्य निश्चय करके जाने इस ससार मे जैसे गाय की सेवा का फल (दूध आदि) शीघ्र नही होता वैसे ही अधर्म से किए गए कार्यो का फल भी शीघ्र नही। अधर्मकर्ता के सुख का धीरे धीरे क्षय होता है और एक दिन सब सुखो से वचित होकर दु ख ही दु ख भोगता है। *मनु० ४/१७२*

यदि अधर्म द्वारा प्राप्त सुखो का दुष्फल वर्तमान जीवन मे न मिले तो उसक पुत्रा को यदि पुत्रो को भी न मिले तो नातियो के समय मे अवश्य प्राप्त होता है किन्तु यह कभी नही हो सकता कि कर्ता का किया हुआ कर्म निष्फल हो जाए। *मनु० ४/१७३*

कर्मफल की यह व्यवस्था हमारे ऋषि मुनि आर आप्त पुरुषो ने दी है वह मानने योग्य है। असत्य को सत्य मे मिलाकर भले ही कुछ समय के लिए लोग अपना स्वार्थ प्राप्त करे। किन्तु अन्त समय अनृत की कसोटी म आ जाने पर दु खद हागा।

सृष्टि क्रम के प्रतिकूल चमत्कारिक घटनाओ से लोगो की आस्था को प्रभावित करके अपना प्रचार प्रसार करना वैसा ही हे जैसा शुद्ध दूध मे जल मिलाकर दूध के नाम पर बेचते रहना। अत केवल सत्यमेव जयत कहने से जागरूकता नही आएगी साथ मे कहना चाहिए नानृतम।।

– सुक्षिति १६ बालीगज सर्कुलर रोड
कलकत्ता ७०००१६

बोध शिवरात्रि पर्व

– स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

पितुवर ने जो कहा मूलशकर वह करके दिखलाया।
दृढव्रत ध्रुवसम कर निश्चय शिवरात्रि व्रत नियम निभाया।।
पूजार्थ विल्वादि मिष्ठान ले जाकर शिवभोग लगाया।
बम बम हर हर बोल बोलकर कीर्तीगान कराया।।
एक चूहे ने आकर शिव पिडी से सभी चढावा खाया।
भोला भण्डारी नहीं बोला बहुत मूल ने शोर मचाया।।
पारवती के पति सन्त को ध्यान न आया हुआ सफाया।
प्रखर बुद्धि का बालक को देखा दृश्य अचम्भा छाया।।
यह कैसा कैलाशी बासी अपनी रक्षा नहीं कर पाया।
सत्य सूर्य रश्मि का हृदय नभ मे प्रकाश चमकाया।।
ज्ञान चक्षु खुलगए मूल के उठकर फिर घर को उठाया।
बोध हुआ ब्रह्मचारी को यह बोधशिव रात्रि पर्व कहाया।।

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ-गढमुक्तेश्वर (उ०प्र०) का
१२वां वार्षिक सम्मेलन समारोह

आपके प्रिय गुरुकुन पूठ का वार्षिक सम्मेलन फाल्गुन शुक्ल २ ३ ४ वि० स० २०५८ तदनुसार १५, १६ १७ मार्च २००२ (शुक्र शनि रविवार) को कुलभूमि मे उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है जिसमे आर्य जगत के उच्चे कोटि के विद्वान महात्मा नेतागण एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अत आपसे प्रार्थना है कि आप अपने इष्टमित्रो सहित अधिक से अधिक सख्या मे दर्शन देकर धर्मलाभ उठाए।

कार्यक्रम प्रतिदिन

यज्ञ-प्रवचन	प्रात ७ से १० बजे
ब्रह्मा	आचार्य केशवदेव शास्त्री
व्यायाम प्रदर्शन	मध्याह्न १ स पाच बजे
भजन सम्मेलन	रात्रि ८ से ११ बजे

महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन मात्र के हित चितक थे

आदर्श विद्या निकेतन होडल का वार्षिकोत्सव धूम धाम से मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता चौधरी गयालाल विधायक हाडल न की। इस उत्सव म विद्यालय क छात्र छात्राओ न दशभक्ति के भजन नाटक कविताए सुनाइ। आर्यनेता प० नन्दलाल निभर्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को जीवनमात्र का हितकरी बताया। श्री निभर्य ने कहा कि आज देश मे सर्वत्र कन्याए विद्या प्राप्त कर रही है। विधवा विवाह हो रहे है। गरीब शूद्रो के बच्चे पढ लिख रहे है। यह सब स्वामी दयानन्द जी की कृपा का फल है।

श्री गयालाल जी न कहा कि प्रत्यक भारतवासी का स्वामी दयानन्द का अहसान मानना चाहिए। यदि स्वामी जी यहा न आते तो राम कृष्ण का नाम लेने वाले ससार मे कहीं नजर न आते।

श्री जयदेव आर्य व श्री उदय भान विधायक ने भी महर्षि दयानन्द जी को सच्चा नेता बताया।

सत्सग भवन के निर्माण कार्य मे आर्थिक सहयोग देने के लिए विनम्र अनुरोध

राष्ट्रीय राजधानी के पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र मे छावनी दिल्ली एव ग्रमीण अचल छूने वाले छौर पर सागरपुर क्षेत्र मे आर्यसमाज की स्थापना लगभग दो दशक पूर्व की गई थी। इस क्षेत्र के आर्थिक रूप से पिछडेपन के कारण पूरे क्षेत्र मे आर्यसमाज की धार्मिक सुधार एव कल्याणकारी योजनाओ के अनुसार कार्यक्रमो को प्रचुर मात्रा मे चलाए रखने की सम्भावनाओ को ध्यान मे रखते हुए इस क्षेत्र मे आर्यसमाज की अत्यधिक आवश्यकता है।

नकद राशि के रूप मे ११ हजार रुपये से अधिक का योगदान करने वाले दानदाताओ के नाम पृथक पृथक शिलाओ पर विवरण सहित अकित किए जाएगे। सभी धर्मप्रेमी सज्जन एव सस्थान अपना योगदान नकद बैंक ड्राफ्ट चैक अथवा निर्माण मे प्रयोग होने वाली किसी भी सामग्री के रूप मे आर्यसमाज कार्यालय पश्चिमी सागरपुर नई दिल्ली को दे सकते हैं।

सभी आर्यसमाजो आर्यसस्थाओ धार्मिक एव सामाजिक सगठनो नागरिक सगठनो व्यापारिक सगठनो तथा अन्य सम्बन्धित सस्थाओ से अनुरोध है कि वे अपनी ओर से अत्यधिक योगदान और सहयोग देकर इस पुण्य कार्य को सम्पन्न कराने मे भागीदार बनकर धर्म लाभ उठाए।

निवेदक

विजय गुप्त — *प्रधान*
सुखवीर सिह आर्य — *मन्त्री*

भूमिपूजन एव शिलान्यास समारोह सम्पन्न

१७ फरवरी २००२ को बसन्त पचमी के पावन अवसर पर आर्यसमाज डिफेन्स कालोनी नई दिल्ली के भवन निर्माण की आधारशिला पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा (प्रधान डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्ती समिति) के कर कमलो द्वारा रखी गई।

समारोह से पूर्व यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य यजमान श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा श्री रामनाथ सहगल श्री के०एल० पुरी श्री एव श्रीमती सिद्धार्थ लूथरा एव बत्रा परिवार प्रमुख थे।

इसके उपरान्त भवन की आधार शिला चारो वेद स्थापितक र रखी गई ध्वजारोहण पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा द्वारा किया गया और गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियो एव महर्षि दयानन्द टीचर ट्रेनिग कालेज कस्तुरबा नगर नई दिल्ली की छात्राओ के द्वारा ध्वज गीत प्रस्तुत किया गया।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 07 08/03/2002 दिनाक ३ मार्च से १० मार्च २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 07 08/03/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के लिए निर्देश

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का आयोजन २५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियो मे किया जा रहा है। यह महासम्मेलन गुरुकुल कागडी के विशाल प्रागण मे ही आयोजित होगा जिसका नाम श्रद्धानन्द नगर रखा गया है।

(१) इस महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए सभी आर्यबन्धुओ को सार्वजनिक रूप से आमन्त्रित किया जाता है। इस विशाल आयोजन मे बहुत भारी सख्या मे आर्यजनो के पहुचने का अनुमान है। आवास और भोजन की व्यवस्थाओ को भली प्रकार जुटाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आगन्तुको की पूर्व सूचना सभा कार्यालय मे दर्ज हो। इस आशय से यह निश्चय किया गया है कि प्रबन्ध अनुमान एव साहित्य शुल्क के रूप मे ५०/– रु० प्रति व्यक्ति भेजकर अपना अपना नाम पजीकृत कराए। इस पजीकरण के आधार पर ही हम प्रबन्ध का अनुमान लगाने मे सक्षम हो पाएगे। आपके आने की सूचना तथा शुल्क राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे ३० मार्च तक पहुच जानी चाहिए।

जिन महानुभावो का पजीकरण नहीं होगा उन्हे यदि आवास आदि की सुविधा प्राप्त होने मे कुछ कठिनाई हो तो हम उनसे अग्रिम क्षमा प्रार्थी है।

(२) सम्मेलन मे भाग लेने वाले विभिन्न प्रान्तो के प्रबुद्ध आर्यजनो से विशेष निवेदन है कि विभिन्न सत्रो मे प्रसारित उदबोधनो के मुख्य विचर नोट करे तथा उन विचारो के अनुरूप आर्यसमाज की गतिविधियो को भविष्य मे अपने अपने स्थानीय क्षेत्रो के स्तर पर मार्गदर्शन प्रदान करे। ऐसा अभ्यास आर्यजनो को विशेष रूप से करना चाहिए क्योकि हमारे विद्वान वक्ताओ के बहुमूल्य विचारो को क्रियान्वित करने का यही एक मार्ग है कि हम उन्हे पूरी तरह से नोट करके उस पर चिन्तन एव मनन करते हुए उन्हे क्रियान्वित करे।

(३) सम्मेलन के दिनो मे हरिद्वार मे ग्रीष्म ऋतु होगी अत उपयुक्त वस्त्र ही रखे।

(४) जो आर्य जन दलो मे पधार रहे है वे अपने साथ अपनी सस्थाओ तथा आर्यसमाजो के नामपट्ट बैनर तथा ओ३म ध्वज आदि अवश्य लाने की कृपा करे।

(४) सम्मेलन के विभिन्न सत्रो के दौरान आगन्तुक महानुभावो से निवेदन है कि वे सम्मेलन के विभिन्न सत्रो मे वक्ताओ के रूप मे अथवा अन्य घोषणाओ के लिए कोई पर्ची आदि लिखकर सयोजन कार्य मे बाधाए प्रस्तुत न करे। एक सभ्य अनुशासन के तहत हम सबको निर्धारित नियमो के अनुसार ही ऐसे कार्यक्रमो मे भाग लेना चाहिए।

आशा है समूचे आर्यजगत का सहयोग इस सम्मेलन को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने मे प्राप्त होगा।

हकीकत राय बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज सुन्दरनगर कालोनी (हि०प्र०) मे बाल हकीकत राय का बलिदान दिवस आचार्य भगवान देव चैतन्य की अध्यक्षता मे मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमती सत्यप्रिया एव सुषमा शर्मा के भजन हुए। कु० श्रुतिश्रवा ने कविता पाठ किया। इस अवसर पर कु० किरण रानी आर्य श्री अखिलेश भारती ने अपने अपने विचार प्रकट किए। आचार्य चैतन्य जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे हकीकत राय के जीवन पर प्रकाश डालते हुए। आर्यसमाज का क्रान्तिकारी इतिहास श्रोताओ के समक्ष रखते हुए कहा कि आज अपनी सस्कृति तथा राष्ट्रीय अस्मिता की सुरक्षा के लिए प्रत्येक नागरिक को सजग रहने की आवश्यकता है।

चुनाव समाचार

उत्कर्ष कला केन्द्र सुन्दरनगर (हि०प्र०)

अध्यक्ष	–	आचार्य भगवान देव चैतन्य
मन्त्री		श्री जितेन्द्र मल्होत्रा
कोषाध्यक्ष		श्री नवीन शर्मा

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अंक १८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत २०५८ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार, १८ मार्च से २४ मार्च २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की व्यापक तैयारियां

हरिद्वार, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ के आर्यजनों में भारी उत्साह

दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यकर्त्ताओं की बैठकें

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की तैयारिया सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य के निर्देशानुसार कई समितियो और उसमे सम्मिलित महानुभावो के माध्यम से व्यापक स्तर पर चल रही है। सभा कै० देवरत्न आर्य एव श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा हरिद्वार जाकर गतिविधियो का निर्देशन एव अवलोकन करने के बाद विगत सप्ताह महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन एव श्री वेदव्रत पुन हरिद्वार गए और मार्ग मे मेरठ मु० नगर तथा सहारनपुर के आर्यो की सभाए आयोजित करके सम्मेलन मे अधिकाधिक सहयोग के लिए प्रेरित किया गया। इन बैठको मे यथासम्भव उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री जयनारायण अरुण तथा कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द भी उपस्थित थे। सारे देश के आर्यजनो मे गुरुकुल शताब्दी आर्य महासम्मेलन के आयोजन को लेकर विशेष उत्साह है।

सहारनपुर की बैठक के बाद आर्यनेता शहीद भगत सिह के छोटे भाई सरदार कुलतार सिह जी को मिलने उनके निवास पर भी गए। जहा उनसे काफी देर तक भावनात्मक विचारो का आदान प्रदान हुआ। श्री कुलतार सिह जी को भी हरिद्वार महासम्मेलन मे आमन्त्रित किया गया है।

सम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन के शहीद अश्फाक उल्ला खा के परिवार से भी सम्पर्क किया है उनकी दूसरी पीढी के वशज जिनका नाम अश्फाक उल्ला खा दी है इस महासम्मेलन मे भाग लेगे।

हरिद्वार मे बैठके आयोजित करके महासम्मेलन से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियो और तैयारियों पर विस्तृत विचार विमर्श लिया गया। गुरुकुल विश्वविद्यालय गुरुकुल विद्यालय गुरुकुल फार्मेसी वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर वैदिक मोहन आश्रम गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर वैदिक आश्रम ऋषिकेष जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा हरिद्वार आदि सस्थाओं मे विशेष रुचि और उत्साह से इन गतिविधियो मे भाग लेना प्रारम्भ कर दिया है।

हरिद्वार से वापस लौटकर विगत १६ मार्च को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे दिल्ली के आर्यजनो की एक तत्काल बैठक बुलाई गई। इस बैठक मे श्री सोमदत्त महाजन के सयोजकत्व मे एक विशेष समिति का गठन किया गया है। जो दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा की देख रेख मे दिल्ली के आर्यो को विशेष अभियान चलाकर महासम्मेलन मे भाग लेने तथा सहयोग के लिए प्रेरित करेगी।

इस समिति मे ५ सह सयोजक होगे।

१ श्री जगदीश आर्य २ श्री पतराम त्यागी ३ श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता ४ श्री गोपाल आय तथा ५ श्री विनय आर्य। इस समिति म कई अन्य सदस्यो को सहायक सयोजक क रूप म जोडा गया है।

पश्चिमी दिल्ली मे श्री नरन्द्र आर्य श्री बलदेव राज तथा श्री दयानन्द मदान

पूर्वी दिल्ली मे – श्री सुरेन्द्र कुमार रैली श्री रवि बहल तथा श्री ईश कुमार नारग।

दक्षिणी दिल्ली मे – श्री रोशन लाल गुप्त श्री प्राणनाथ घई तथा श्री सत्येन्द्र मिश्र।

उत्तरी दिल्ली मे श्री अविनाश कपूर श्री प्रवीण बत्र' तथ' श्री रमेश डाबर।

मध्य दिल्ली मे – श्री आदित्य आर्य श्री कीर्ति शर्मा तथा श्री श्रद्धानन्द बग्गा।

दिल्ली की एक समिति न दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रो मे बैठके आयोजित करने का विस्तृत कार्यक्रम जारी किया है। प्रत्येक क्षेत्र मे आने वाली आर्यसमाजो के अधिकारियो और सक्रिय कार्यकर्ताओ से विचार विमर्श की योजना बनाई गई।

।। ओ३म।।

हरिद्वार चलो हरिद्वार चलो

गुरुकुल कांगडी शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

हरिद्वार (उत्तराचल)

२५, २६, २७, २८ अप्रैल, २००२

दिल्ली के आर्यजनो मे भारी उत्साह, तैयारिया प्रारम्भ

दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रो मे कार्यकर्ताओ की बैठके

उत्तरी दिल्ली
आर्यसमाज मन्दिर हडसन लाईन किग्जवे कैम्प दिल्ली
२३–३–२००२ प्रात ११ बजे

पश्चिमी दिल्ली
आर्यसमाज मन्दिर राजौरी गार्डन नई दिल्ली
२३–३–२००२ दोपहर ४ बजे

मध्य दिल्ली
आर्यसमाज करोलबाग नई दिल्ली
३०–३–२००२ दोपहर ३ बजे

उत्तरी पश्चिमी दिल्ली
आर्यसमाज मेन बाजार रानी बाग
३०–३–२००२ साय ६ बजे

उत्तरी दिल्ली
आर्यसमाज अशोक विहार फेज – १ नई दिल्ली
३१–३–२००२ प्रात ११ बजे

दक्षिण दिल्ली
आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली
३१–३–२००२ दोपहर ३ बजे

पूर्वी दिल्ली
आर्यसमाज प्रीत विहार नई दिल्ली
३१–३–२००२ साय ५ ३० बजे

पश्चिम मध्य दिल्ली
आर्यसमाज सी ब्लाक पखा रोड जनकपुरी नई दिल्ली
७–४–२००२ दोपहर ३ बजे

विशाल बैठक
अध्यक्षता कै० देवरत्न आर्य
आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली
२०–४–२००२ दोपहर ४ बजे

सभी आर्यसमाजो के अधिकारियो एव उत्साही कार्यकर्ताओ से निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या मे इन बैठको मे पधारकर महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए सहयोग प्रदान करे।

– सोमदत्त महाजन,
सयोजक दिल्ली सोभायात्रा

श्रमदान एव प्रेरक सुझाव आमन्त्रित

गुरुकुल शताब्दी आर्य महासम्मेलन का आयोजन बहुत विशाल स्तर पर किया जा रहा है। आर्यसमाज के बृहद् सगठन मे अनुशासन और कर्तव्यपालन की भावनाओ को पुनर्स्थापित और प्रभावी करने के उद्देश्य आयोजन के पीछे निहित है। इस आयोजन मे अपनी अपनी योग्यतानुसार यथासम्भव सहयोग देने के लिए जो महानुभाव तैयार हो वे अवश्य ही सम्पर्क करे।

इसके अतिरिक्त इस महासम्मेलन मे आयोजित सत्रो और उनके विषयो पर आधारित यदि कोई विशोष सुझाव आपके मन मे प्रस्फुटित हो रहा हो तो उसे भी हमारे साथ बाटने का कष्ट करे जिससे आपके विचारो को व्यापक रूप मिल सके।

– विमल वधावन
महासम्मेलन सयोजक

देश की स्वतन्त्रता का श्रेय महर्षि दयानन्द को ही जाता है

– अटल बिहारी वाजपेयी

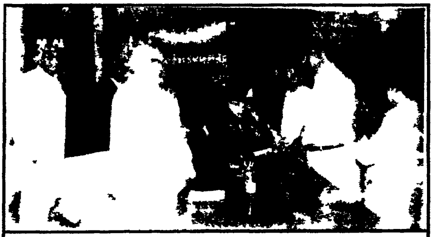
नई दिल्ली ८ मार्च। महर्षि दयानन्द सरस्वती का १७८ वा जन्मदिवस सारे देश मे हर्षोल्लास के साथ यज्ञ प्रवचन और जन सभाओ के आयोजन के रूप मे मनाया गया। देश विदेश की विभिन्न आर्यसमाजो सभाओ तथा अन्य सस्थाओ की ओर से विशेष शुभकामना पत्र बाटे गए तथा महर्षि दयानन्द जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चाए आयोजित की गई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे एक शिष्टमण्डल ने प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी से भेट की और शुभकामनाओ का आदान प्रदान किया। इस शिष्टमण्डल के साथ केन्द्रीय सामाजिक न्याय मन्त्री श्री सत्यनारायण जटिया खाद्य आपूर्ति राज्य मन्त्री श्री अशोक प्रधान प्रधानमन्त्री कार्यालय के राज्य मन्त्री श्री विजय गोयल लोक सभा सदस्य प्रो. रासासिह रावत तथा श्रीरामचन्द्र वीरप्पा भी शामिल थे।

महर्षि दयानन्द के प्रति उदगार व्यक्त करते हुए प्रधानमन्त्री ने कहा कि इस बात मे कोई सन्देह नहीं है कि देश की स्वतन्त्रता और हमारा सब का अस्तित्व महर्षि दयानन्द सरस्वती के कारण ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा ही स्वराज्य अर्थात स्वतन्त्रता आन्दोलन की नींव रखी गई थी।

प्रधानमन्त्री ने कहा कि मेरा आर्यसमाज के साथ मे बाल्य और युवावस्था मे विशेष सम्बन्ध रहा है। उन्होने पुरानी यादो का उल्लेख करते हुए कहा कि जिस भवन मे स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान हुआ उस भवन मे मेरा भी प्रवास रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य जी द्वारा **श्रद्धानन्द बलिदान भवन** को **राष्ट्रीय स्मारक** के रूप मे विकसित करने की माग पर भी गम्भीरतापूर्वक कार्यवाही करने का प्रधानमन्त्री जी ने आश्वासन दिया।



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी से महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर भेट करते हुए एक शिष्ट मण्डल साथ मे हैं केन्द्रीय सामाजिक न्याय मन्त्री श्री सत्य नारायण जटिया खाद्य आपूर्ति राज्यमन्त्री श्री अशोक प्रधान प्रो० रासासिह रावत सासद श्री रामचन्द्र वीरप्पा सासद श्री विमल वधावन एडवोकेट श्री लक्ष्मीचन्द्र एव श्री रवीन्द्र आर्य। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द का चित्र एव सत्यार्थ प्रकाश प्रधानमन्त्री जी को भेट किया गया।

प्रधानमन्त्री कार्यालय के राज्य मन्त्री श्री विजय गोयल ने कहा कि सार्वदेशिक सभा के प्रतिवेदन पर ही उप राज्यपाल की रिपोर्ट उपरोक्त भवन को राष्ट्रीय स्मारक बनाने के सम्बन्ध मे प्राप्त हो चुकी है। इस कार्य को पूरा करने मे कुछ बाधाए हैं जिन्हे दूर करने का उपाय किया जाएगा।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के १०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष मे श्री विमल वधावन ने प्रार्थना की कि इस शताब्दी वर्ष के समापन समारोह के अवसर पर एक **विशेष स्मृति डाक टिकट** जारी किया जाना चाहिए जिसे प्रधानमन्त्री जी ने सिद्धान्तत स्वीकार कर लिया।

केन्द्रीय सामाजिक न्याय मन्त्री श्री सत्यनारायण जटिया जी ने कहा कि समूचे विश्व को महर्षि दयानन्द के श्रेष्ठ बनाओ आन्दोलन के आधुनिक युग की आवाज के रूप मे एक महान प्रेरणा समझना चाहिए जो आज की महत्ती आवश्यकता है।

सासद प्रो० रासा सिह रावत ने कहा महर्षि दयानन्द १९वीं सदी के युग द्रष्टा थे जिनका प्रभाव २१वीं सदी मे भी आकर कम नहीं हुआ अपितु उनके अनुयायियो की सख्या मे लगातार वृद्धि होती जा रही है।

स्टालों की बुकिंग प्रारम्भ

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे २५ से २८ अप्रैल के विशाल आयोजन मे **पुस्तको** तथा अन्य **धार्मिक वस्तुओ** एव **अल्पाहार** के स्टालो का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। अनुमानत यह स्टाल १०x८ फुट के होगे। इन स्टालो का चारो दिनो का शुल्क **२५०० रु०** निर्धारित किया गया है। जो महानुभाव अथवा प्रतिष्ठान अपने स्टाल इस सम्मेलन मे लेना चाहे वे **२५०० रु०** का ड्राफ्ट **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम ३/५ दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली २** के पते पर **१० अप्रैल** से पूर्व भिजवा दे। जो महानुभाव दो स्टाल लेना चाहे वे **५००० रु०** का ड्राफ्ट भेजे जिससे उन्हे दोनो स्टाल साथ साथ आवटित किए जा सके।

आगामी सम्मेलन अपने आप मे एक अद्वितीय सम्मेलन होगा जिसमे बहुत बडी सख्या मे आर्य जनता भाग लेगी। साहित्य के प्रचार का भी अनूठा अवसर होगा।

स्टालों का आवटन प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर होगा। अत यथाशीघ्र अपने स्टाल बुक करवाकर असुविधा से बचें। आपकी राशि एव आवेदन **१० अप्रैल** से पहले **सार्वदेशिक सभा कार्यालय** में अवश्य पहुच जाने चाहिए।

सम्बन्धित महानुभावो को आवटित स्टाल का नियन्त्रण **२४ अप्रैल** से उपलब्ध कराया जा सकेगा।

– वेदव्रत शर्मा सभामन्त्री

बोध कथा — मातृशक्ति को प्रणाम !

कार्तिक सुदी ५ सम्वत १९३८ का प्रसग है। स्वामी दयानन्द जी सरस्वती चितौड पधारे वहा गम्भीरी नदी के किनारे रुद्रेश्वर महादेव के मन्दिर मे ठहरे। उन दिनो चित्तौड मे बडी चहल पहल थी। भारत के गवर्नर जनरल लार्ड रिपन की राजसभा होने वाली थी। उदयपुर के अन्तर्गत जितने भी राजा ठाकुर थे वहा एकत्र हो गए थे।

स्वामी जी का सत्सग प्रतिदिन शाम को लगता था। उसमे मेवाड के राजा श्री दर्शनो उपदेशो के लिए आते थे। अपने दरबारी पण्डित और कविराज फतेहकरण से स्वामीजी की प्रशसा सुनकर एक दिन राणाजी अपने प्रतिष्ठित राजो ठाकुरो के साथ पहुचे। व्याख्यान की समाप्ति के बाद महाराज ने शाहपुरा को देखा उनका कुशलक्षेम पूछा। दूसरी बार पूछने पर स्वामीजी ने कहा – आप राणा सज्जन सिह जी हैं। राणा ने विनय से कहा – आप जैसे सन्तो के पास समान्य स्थिति मे जाना सामान्य आसन पर बैठना शोभा देता है। एक दिन स्वामी जी व्याख्यानके बाद कई राजाओ पण्डितो के साथ जा रहे थे। मूर्तिपूजा के पक्ष विपक्ष मे चर्चा चल रही थी अचानक गाव वालो का देवालय आ गया। स्वामी जी ने कुछ दूर जाकर एकाएक सिर झुका लिया फिर आगे बढ गए। इस पर सज्जन सिह बोले – स्वामीजी आप मूर्तिपूजा का कितना खण्डन करे परन्तु देवालय के सामने आपका मस्तक श्रद्धापूर्वक स्वत झुक गया था।

बात सुनते ही स्वामी जी खडे हो गए और बालको मे खेलती हुई एक चार वर्ष की बालिका की ओर सकेत कर कहा – **"देखते नहीं हो, यह मातृशक्ति है, जिसने हम सबको जन्म दिया है।"**

ये शब्द सुनते ही सारी सगत पर सन्नाटा छा गया और सभी के सिर झुक गए।

– नरेन्द्र

हरिद्वार महासम्मेलन के बाद भ्रमण यात्राएं

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन का समापन **२८ अप्रैल** को होगा। अगले दिन **२९ अप्रैल सोमवार** को स्वभुगतान के आधार पर उन आर्यजनो के लिए हरिद्वार तथा आस पास के स्थलो को देखने हेतु परिवहन व्यवस्था भी उपलब्ध कराई जाएगी जो इसके इच्छुक होगे। यह भ्रमण यात्रा दो प्रकार की होगी।

(क) स्थानीय भ्रमण यात्रा

हरिद्वार तथा ऋषिकेश के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलो को दिखाने हेतु यह यात्रा प्रात काल **महासम्मेलन स्थल** से प्रारम्भ होगी और सायकाल तक वापस महासम्मेलन स्थल पर ही पहुचेगी।

(ख) मसूरी भ्रमण यात्रा

सम्मेलन स्थल से यह यात्रा प्रात जल्दी रवाना होगी और रात्रि मे देर रात तक वापस सम्मेलन स्थल पर पहुचेगी। यह यात्रा **हरिद्वार, ऋषिकेश देहरादून** और **मसूरी** के दर्शनीय स्थलो का भ्रमण करवाएगी।

आर्यजन उपरोक्त मे से जिस यात्रा मे पजीकरण कराना चाहेगे उसकी व्यवस्था के लिए एक अलग **पूछताछ केन्द्र** स्थापित होगा।

भजन सन्ध्या की चित्रमय झांकी



भजन सध्या कार्यक्रम मे केन्दीय खाद्य आपूर्ति मन्त्री श्री अशोक प्रधान को स्मृति चिन्ह देकर स्वागत करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य श्री विमल वधावन एडवोकेट न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल और सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य एव मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा।



भजन सन्ध्या कार्यक्रम को प्रस्तुत करते हुए आर्य कलाकार एव आध्यात्मिक तरगो मे मग्न आर्यजन।

गाय माता भारतीय कृषि का वैज्ञानिक आधार है

नई दिल्ली ८ मार्च। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर मुख्य समारोह गो सम्वर्द्धन केन्द्र गाजीपुर मे आयोजित किया गया। योजना आयोग के सदस्य एव पूर्व कृषि मन्त्री श्री सोमपाल शास्त्री इस समारोह मे मुख्य अतिथि थे। इस समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने की और मच सचालन सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने किया।

कैप्टन देवरत्न आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि महर्षि दयानन्द जी के जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेते हुए विश्व के दृश्य से पाखण्ड को पूरी तरह से दूर करने सत्य धर्म को ग्रहण करने और ससार का हर सम्भव उपकार करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। कैप्टन देवरत्न आर्य को अन्य कार्यक्रम मे भाग लेने के लिए सभा बीच मे ही छोड कर जाना पडा। उनके प्रस्थान के बाद सभा की अध्यक्षता योग विद्या के मर्मज्ञ प्रख्यात सन्यासी श्री स्वामी सत्यपति जी ने की।

मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए श्री सोमपाल शास्त्री जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन और कार्यो का स्मरण करते हुए यज्ञ के वैज्ञानिक आधार और सिद्धान्तो को लेकर अ यन्त प्रेरक उदबाधन प्रस्तुत किया।

यज्ञ से हर प्रकार की बीमारिया की चिकित्सा एव पर्यावरण शुद्धि किस प्रकार सम्भव होती है इस आशय की विस्तृत व्याख्या सुनकर आर्य जनता आनन्दित हो उठी।

महर्षि दयानन्द द्वारा गौपालन को आर्थिक एव वैज्ञानिक सिद्धान्तो के आधार पर प्रेरित और प्रचारित किए जाने के समर्थन मे भी श्री सोमपाल शास्त्री ने विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा कि गाय तो भारतीय कृषि का वैज्ञानिक आधार है। उन्होने कहा गायो की नस्ल के सुधार के नाम पर जो विदेशी ग'यो के जीन्स आयात किए जा रहे है उनके साथ कई प्रकार की गम्भीर बीमारिया भी है।

उन्होने बताया कि अपन कृषि मन्त्रित्व काल मे उन्होने कई ऐसे कदम उठाए जिससे भारतीय कृषि मे गाय का महत्व बढा है

मच सचालन करते हुए सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि प्रति वर्ष महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव गोशाला मे एक उत्सव की तरह आय'जित होता है और भविष्य मे ऐसा प्रयास किया जाएगा कि इस समारोह मे पूरे दिन विभिन्न प्रकार की गतिविधिया ‾लती रहे



महर्षि दयानन्द गौ सम्वर्द्धन केन्द गाजीपुर मे दयानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य मच सचालन करते हुए सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा मुख्य अतिथि श्री सोमपाल शास्त्री को पचास हजार रुपये की धनराशि गौशाला के निमित्त भेट करते हुए सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुशीराम सेठी।

॥ ओ३म् ॥

हरिद्वार चलो

हरिद्वार चलो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान मे

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे आयोजित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन



चैत्र शुक्ल 13 से वैशाख कृष्ण 1-2, सम्वत् 2059

25, 26, 27, 28 अप्रैल 2002

समारोह स्थल :

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्रद्धानन्द नगरी, हरिद्वार

निवेदक

कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	**प० हरबस लाल शर्मा** स्वागताध्यक्ष कुलाधिपति	**विमल वधावन** महासम्मेलन सयोजक
वेदव्रत शर्मा सभा मत्री	**प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री** कुलपति	**सुदर्शन शर्मा** सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	**डॉ० महावीर** कुल सचिव	**आचार्य यशपाल** सभा उप प्रधान

कार्यालय : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3 /5 दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110 002

दूरभाष : (011) 3274771, 3260985 E-mail vedicgod@nda vsnl net in / saps@tatanova com

हरिद्वार कार्यालय : महासम्मेलन सयोजक, गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-249404, (उत्तराचल)

दूरभाष . (0133) 414392, 416811, फैक्स 415265

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान मे

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के 100 वर्ष

पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

चैत्र शुक्ल १३ से वैशाख कृष्ण १–२, सम्वत् २०५९

25, 26, 27, 28 अप्रैल 2002

संक्षिप्त कार्यक्रम विभिन्न सत्र व विषय

(दिल्ली कार्यालय)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, ३/५, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

फोन ३२७४७७१ ३२६०६८५ फैक्स ३२७०५०७

Email vedıcgod@nda.vsnl net ın, saps@tatanova.com

(हरिद्वार कार्यालय)

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, श्रद्धानन्द नगरी, हरिद्वार (उत्तराचल)

दूरभाष (०१३३) ४१६८११ ४१४३६२ (टेलीफैक्स) ४१५२६५

।। ओ३म् ।।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

संक्षिप्त कार्यक्रम - विभिन्न सत्र व विषय

बृहस्पतिवार, चैत्र शुक्ल १३, २०५६ (२५ अप्रैल, २००२)

राष्ट्रभृत यज्ञ — प्रात ८ से ९
ब्रह्मा — आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री
वेदपाठी — ब्रह्मचारी/ब्रह्मचारिणिया
भजनोपदेश — सुविख्यात भजनोपदेशक द्वारा
ध्वजारोहण — प्रात १० बजे
उद्घाटन महासम्मेलन एव दीक्षान्त समारोह — प्रात १० ३० से १ ००
गुरुकुल सस्कृति (शिक्षा के खुले द्वार) — अपराह्न् ३ से ६
उद्बोधन विषय

१ गुरुकुल शिक्षा पद्धति और शुद्धि यज्ञ के ब्रह्मा – स्वामी श्रद्धानन्द २ वैदिक परम्परा और गुरुकुल शिक्षा पद्धति, ३ गुरुकुल शिक्षा पद्धति और आर्यसमाज, ४ आधुनिक जीवन में गुरुकुल की प्रासगिकता, ५ गुरुकुल शिक्षा–प्राचीनता और आधुनिकता का समन्वय, ६ सस्कृत सरक्षण – राष्ट्रीय आवश्यकता, ७ राष्ट्रीय एकता और शुद्धि

पूर्व स्नातक पुनर्मिलन समारोह एव भजन सगीत — साय ७ से १०

शुक्रवार, चैत्र शुक्ल १४, २०५६ (२६ अप्रैल, २००२)

राष्ट्रभृत यज्ञ — प्रात ८ से ९
वेदपाठी — ब्रह्मचारी/ब्रह्मचारिणिया
भजनोपदेश — सुविख्यात भजनोपदेशक द्वारा
आधुनिक युग मे वेद और विज्ञान — प्रात १० ३० से १ ००
उद्बोधन विषय

१ वेद में आध्यात्मिकता और विज्ञान का समन्वय, २ वेद में विज्ञान का व्यावहारिक स्वरूप, ३ विज्ञान और वैदिक जीवन, ४ वेद ईश्वरीय ज्ञान - वैज्ञानिक चिन्तन, ५ वेद और विश्व शान्ति, ६ वेद में यज्ञ और पर्यावरण ७ वैदिक योग और आधुनिक चिकित्सा पद्धति

(२)

वेद की अनन्त यात्रा — अपराह्न् १ से साय ६

(शोभा यात्रा महासम्मेलन स्थल से प्रारम्भ होकर वैदिक मोहन आश्रम पहुचेगी जहा पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहरायी थी।)

समाज की मूल ईकाई आर्य परिवार — साय ७ से १०

उद्बोधन विषय
१ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् – स्वमार्यम्
२ आर्यसमाज और परिवार निर्माण
३ कर्त्तव्य बनाम अधिकार
४ वैदिक परिवारवाद
५ हम इस समाज के माली है, मालिक नहीं
६ सामाजिक व्यवस्थाओं का सरक्षण – हमारा प्रथम कर्त्तव्य
७ वैदिक परम्परा भोगवाद और त्यागवाद

शनिवार, चैत्र शुक्ल १५, २०५६ (२७ अप्रैल, २००२)

राष्ट्रभृत यज्ञ — प्रात ८ से ९
वेदपाठी — ब्रह्मचारी/ब्रह्मचारिणिया
भजनोपदेश — सुविख्यात भजनोपदेशक द्वारा
आधुनिक युग मे धर्म और आध्यात्मिकता — प्रात १० ३० से १ ००

उद्बोधन विषय
१ धर्म बनाम सम्प्रदाय
२ आध्यात्मिकता और आधुनिक जीवन
३ अध्यात्मवाद – उदगम और विकास
४ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष
५ आत्मानम् विद्धि (आत्मा को भी जानो)
६ सुख, शान्ति का मार्ग – अध्यात्म

माता निर्माता भवति — अपराह्न् ३ से साय ६

उद्बोधन विषय
१. नारी – मानव निर्माण
२ धर्म का मूलाधार – नारी
३ महर्षि दयानन्द – नारी उत्थान
४ वैदिक नारी और आधुनिक नारी
५ सुखी गृहस्थ और नारी
६ गृहस्थ जीवन की ब्रह्मा – नारी
७ गुरुकुल शिक्षा पद्धति और मानव निर्माण

आधुनिक युग मे धर्म प्रचार का स्वरूप — साय ७ से १०

उद्बोधन विषय
१ धर्म प्रचार में युवाओं की भूमिका
२ शिक्षण सस्थाए और धर्म प्रचार
३ धर्म प्रचार में नारी

(३)

४ धर्म प्रचार में आधुनिक साधन, ५ भारतीय सस्कृति और वैदिक कर्म काण्ड, ६ वैदिक जीवन का आकर्षण, ७ वैदिक मान्यताए

रविवार, चैत्र वैशाख कृष्ण १-२, २०५६ (२८ अप्रैल, २००२)

राष्ट्रभृत यज्ञ — प्रात ८ से ९
वेदपाठी — ब्रह्मचारी/ब्रह्मचारिणिया
भजनोपदेश — सुविख्यात भजनोपदेशक द्वारा
राष्ट्र सेवा सत्र एव समापन समारोह — प्रात १० ३० से १ ००

उदबोधन विषय १ आर्यसमाज की राष्ट्र सेवा योजन, २ राष्ट्र निर्माण और गुरुकुल, ३ आर्य राष्ट्र – श्रेष्ठता का सिद्धान्त, ४ आर्य शब्द का उद्गम और वर्तमान, ५. आर्य राष्ट्र – सास्कृतिक एव भौगोलिक, ६ समाज सुधार से राजनीतिक सुधार

घोषणा-पत्र प्रस्तुति

कार्यकर्ता सगोष्ठी

दिनाक — २५ अप्रैल, २००२ समय दोपहर १ ३० से ३ ००
विषय आर्यसमाज और हिन्दी-सस्कृत सरक्षण

दिनाक — २७ अप्रैल, २००२ समय दोपहर २ से ६ ००
विषय आर्यसमाज की गतिविधिया - नई दिशाए

गुरुकुल स्नातक सगोष्ठी

दिनाक — २७ अप्रैल, २००२ समय अपराह्न ३ से ६
विषय धर्मप्रचार में गुरुकुलों के स्नातकों की भूमिका

यति सगोष्ठी

दिनाक — २७ अप्रैल, २००२ समय दोपहर ३ से ६ ००
विषय वानप्रस्थ और सन्यास – नई दिशाए

निवेदक

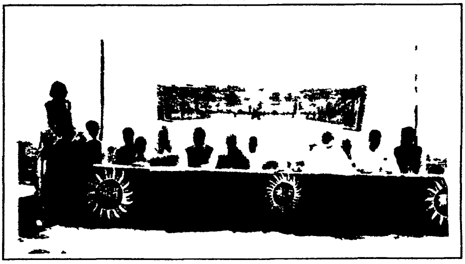
कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	**प० हरबस लाल शर्मा** स्वागताध्यक्ष कुलाधिपति	**विमल वधावन** महासम्मेलन सयोजक
वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री	**प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री** कुलपति	**सुदर्शन शर्मा** सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	**डॉ० महावीर** कुल सचिव	**आचार्य यशपाल** सभा उप-प्रधान

टिप्पणी १ प्रत्येक सत्र के अध्यक्ष सयोजक मुख्य अतिथि विशेष अतिथि तथा विद्वान वक्ताओ आदि के नाम विस्तृत कार्यक्रम मे दिए जाएगे। २ कार्यक्रम मे परिवर्तन का अधिकार सयोजको मे सुरक्षित है।

महर्षि दयानन्द ने जीवन को संस्कारित करने पर बल दिया

– विजय गोयल

महर्षि दयानन्द सरस्वती का राष्ट्र जीवन मे सबसे बडा योगदान यह है कि उन्होने उस समय भारतीयो मे खोए हुए आत्मविश्वास को पुन जागृत किया और उनकी खोई हुई शक्ति को झकझोरा। उन्होने वेदो की ओर लौट चलो का नारा देकर यह बताया कि भारत की प्राचीन सस्कृति और चिन्तन विश्व की सर्वश्रेष्ठ सस्कृति और चिन्तन मे से एक है। उन्होने लोगो को केवल आस्थावान ही नही बनाया अपितु अपनी बात कहकर ज्ञानवान बनाया। महर्षि दयानन्द ही स्वराज्य मन्त्र के प्रथम उद्घोषक थे। उपरोक्त विचार आज यहा आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे रामलीला मैदान मे आयोजित विशाल जनसभा को आर्य एव जन नेताओ ने व्यक्त किए। सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासी एव योग निष्ठागत स्वामी सत्यपति जी ने



कहा कि महर्षि दयानन्द ने कथनी और करनी मे साम्य और योगानुसार जीवन का जो पथ दर्शाया उसी के अनुगमन से भारत विश्व मच पर एक सबल और सुदृढ राष्ट्र के रूप मे उभर सकेगा जो समस्याओ से ग्रस्त विश्व को आलोक पथ दर्शा सकेगा। प्रधानमन्त्री कार्यालय मे राज्यमन्त्री श्री विजय गोयल ने अपने उदबोधन मे कहा कि महर्षि दयानन्द ने जीवन को सस्कारित करने का पथ दर्शाया था। सस्कारित जन ही राष्ट्र का सही मार्गदर्शन कर सकते है।

सुप्रसिद्ध लेखक डॉ० भवानी लाल भारतीय ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर सविस्तार प्रकाश डालते हुए बताया कि महर्षि दयानन्द ने धर्म की जो व्याख्या की वह साम्प्रदायिकता और सकीर्णता से सर्वथा मुक्त है। उन्होने स्पष्ट किया कि सत्य भाषण और सत्याचरण के अतिरिक्त धर्म का कोई दूसरा लक्षण नहीं है। उनकी दृष्टि मे धर्म व्यक्ति के आचरण का निर्माण करने वाला तत्व है।

इस अवसर पर दो दशक से गुरुकुल शिक्षा पद्धति से प्रचारक आचार्य हरिदेव (गुरुकुल गौतम नगर) व कर्मठ कार्यकर्ता चन्द्रमोहन आर्य को क्रमश लालमन आर्य वैदिक विद्वान पुरस्कार व सुरेश ग्रोवर आर्य कार्यकर्ता पुरस्कार मे नकद राशि शाल व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा श्री वीरेश प्रताप चौधरी तथा आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य समाजसेवी श्री आनन्द कुमार चौहान ने भी सम्बोधित किया।

यहा लाला लाजपत राय द्वारा रचित तथा आर्य प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक आर्यसमाज का हिन्दी भाष्य का विमोचन भी किया गया व स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने कल्याण यज्ञ भी सम्पन्न कराया। **सत्य नारायण आर्य प्रचार मन्त्री**

आर्य नेता श्री वीरेश प्रताप चौधरी

पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित



पद्मश्री वीरेश प्रताप चौधरी

विगत माह गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य मे भारत सरकार ने देश के जिन महान विद्वानो और अपने अपने क्षेत्र मे विशेषज्ञता प्राप्त करने वाले महानुभावो को विभिन्न पुरस्कारो एव उपाधियो से विभूषित किया उनमे प्रसिद्ध वरिष्ठ अधिवक्ता एव आर्य नेता श्री वीरेश प्रताप चौधरी का नाम उल्लेखनीय है जिन्हे पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

श्री वीरेश प्रताप चौधरी वर्तमान मे आर्य अनाथालय पटौदी हाउस तथा अन्य सम्बद्ध सस्थाओ का कुशल सचालन कर रहे है।

दिल्ली के प्रसिद्ध आर्यनेता एव यशस्वी स्वतन्त्रता सेनानी स्व० श्री देशराज चौधरी जी से वीरेश जी को समाज सेवा की परम्परा विरासत मे प्राप्त हुई है। विगत लगभग ५० वर्ष से वीरेश जी ने सामाजिक न्यायिक और राजनैतिक क्षेत्र मे अग्रणी एव विशिष्ट पहचान बनाई है। समूचे आर्य जगत और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री वीरेश प्रताप चौधरी को कोटिश बधाई।

श्री वीरेश प्रताप चौधरी का पता इस प्रकार है –

४८४४/२४ असारी रोड, दरियागज, नई दिल्ली २

इस पत्र में प्रकाशित लेखों और विज्ञापनों के सम्बन्ध में

साप्ताहिक आर्यसन्देश मे छपे लेखो तथा विचारो से सम्पादक मण्डल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है। यह साप्ताहिक पूर्णत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नीतिगत एव सैद्धान्तिक पक्ष को ही उजागर करता है। परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियो मे वैदिक विद्वानो के विचारार्थ प्रस्तुत करने के लिए अन्य सामग्री भी प्रकाशित की जा सकती है। साप्ताहिक आर्यसन्देश मे प्रकाशित दान आदि की अपीलो को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का निवेदन या निर्देश न समझा जाए। – सम्पादक

नवसंस्येष्टि का (होली) महत्व

– प० नन्दलाल निर्भय

सकल विश्व के सब नर नारी, वैदिक धर्म निभाओ रे।
नवसस्येष्टि महायज्ञ का, जग को महत्व बताओ रे।।

नवसस्येष्टि महायज्ञ है, पर्व आर्यो का पावन।
आदिकाल से प्रेमपूर्वक, इसे मनाते है सज्जन।।
नए अन्न से यज्ञ जगत मे, करते थे सब ऋषि मुनिगण।
यह सारा ससार सुखी था कहीं न थे निर्बल निर्धन।।
नवसस्येष्टि महायज्ञ को, मिलकर मनाओ रे।
नवसस्येष्टि महायज्ञ का जग को महत्व बताओ रे।।

चना मटर गेहू, सरसो की फसले पक जाती हैं जब।
सुन्दर फसलें, देख देख, कृषक हर्षित होते हैं सब।।
अपनी उत्तम आय देखकर, कौन न खुश होते हैं कब।
आर्य पर्व होली का मित्रो ! अर्थ जगत भूला है अब।।
नवसस्येष्टि महायज्ञ को, मिलकर मनाओ रे।
नवसस्येष्टि महायज्ञ का, जग को महत्व बताओ रे।।

नव शस्येष्टि महापर्व के दिन सब सन्ध्या हवन करो।
प्रदूषण को दूर भगाओ शुद्ध विश्व की पवन करो।।
वीर व्रतधारी बन जाओ पापी मन का दमन करो।
वेद शास्त्र, उपनिषद् पढो तुम, सर्वक्षम विश्व में गमन करो।
श्रीराम श्रीकृष्ण बनो, दुनिया मे आदर पाओ रे।
नव शस्येष्टि महायज्ञ का, जग को महत्व बताओ रे।।

जुआ खेलना, चोरी करना, पाप कर्म कहलाते हैं।
मासाहारी, दुष्ट शराबी, घोर नर्क में जाते हैं।।
परोपकारी नर अरु नारी, जीवन में सुख पाते हैं।
ईश्वर भक्तो की यश गाथाए, नर नारी गाते हैं।।
जगतगुरु ऋषि दयानन्द की, मिलकर महिमा गाओ रे।
नव शस्येष्टि महायज्ञ का जग को महत्व बताओ रे।।

होली का सन्देश यही है, अब तक होली सो होली।
तजो ईर्ष्या द्वेष साथियो बोलो सब मीठी बोली।।
प्रेम प्यार का रग बिखेरो, युवक-युवतियों की टोली।
मानवता के हत्यारो के, सीनो मे मारो गोली।।
नन्दलाल 'निर्भय' जागो ! मानव बनकर दिखलाओ रे।
नव शस्येष्टि महायज्ञ का, जग को महत्व बताओ रे।।

– ग्राम व डाकघर बहीन, जनपद फरीदाबाद

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 21 22/03/2002 दिनाक १८ मार्च से २४ मार्च २००२ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 21 22/03/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १

अत्यावश्यक परिपत्र

दिनाक १५ ३ २००२

आर्यसमाज के अधिकारियों की सेवा में नम्र निवेदन

मान्यवर

सादर नमस्ते !

आर्यसमाज का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च २००२ को समाप्त हो रहा है। आप आगामी वर्ष के लिए वार्षिक साधारण सभा की बैठक विधानानुसार आर्यसमाज के नियमो उपनियमो के अनुसार ३१ मई २००२ तक अवश्य आयोजित करले तथा आगामी वर्ष के अधिकारियो आर्य वीर दल के अधिष्ठाता तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियो का निर्वाचन यदि गत वर्ष न किया गया हो तो कर ले। आपकी आर्यसमाज की ओर से प्रथम दस सभासदों पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदो पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है जिनकी आयु २५ वर्ष से कम न हो और जो किसी आर्यसमाज मे सदाचारपूर्वक दो वर्षों तक सभासद् अकित रहे हो।

सदाचार की परिभाषा "सन्ध्या आदि नित्य कर्म शुद्ध वृत्ति वैदिक सस्कार पत्नीव्रत या पतिव्रत आदि सदाचार हैं। व्यभिचार मद्यादि मादक द्रव्यो और मासादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन जुआ चोरी छल कपट रिश्वत आदि दुराचार हैं।"

१५ मई २००२ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय मे भिजवाने की कृपा करे

१ १ अप्रैल २००१ से ३१ मार्च २००२ तक का वार्षिक विवरण

(क) यज्ञ सस्कार शुद्धिया अन्तर्जातीय विवाह दिन के समय साधारण रीति एव बिना दहेज कराए गए विवाहों का तथा समारोहों का विवरण।

(ख) आर्यसमाज के अधीन चल रही सस्थाओं विद्यालयो चिकित्सालय पुस्तकालय सेवा समिति आर्य वीर दल आदि का विवरण।

(ग) आर्यसमाज में सेवारत धर्माचार्य/पुरोहित का नाम योग्यता आयु तथा अनुभव।

(घ) वार्षिकोत्सव किन तिथियों में सम्पन्न हुआ ?

२ १ अप्रैल २००१ से ३१ मार्च २००२ तक का आय व्यय विवरण।

३ सदस्य सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वय बनाले –
क्रम सख्या सदस्य का नाम पिता का नाम पता आयु वर्ष भर में प्राप्त सदस्यता शुल्क तथा दूरभाष नम्बर।

४ सदस्यता शुल्क का दशाश वेद प्रचार राशि और आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ७५/ रुपये अथवा आजीवन शुल्क ५००/ रुपये।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपनी आर्यसमाज का सहयोग प्रदान करे।

धन्यवाद भवदीय

वैद्य इन्द्रदेव
महामन्त्री

निर्वाचन समाचार
गुरुकुल आमसेना का स्नातक मण्डल

सरक्षक	–	स्वामी व्रतानन्द सरस्वती
अध्यक्ष		अखिलेश आचार्य
सचिव	–	श्री कुजदेव मनीषी
कोषाध्यक्ष	–	श्री आनन्दकुमार शास्त्री
प्रचार मन्त्री	–	आचार्य दयासागर आर्य

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें

आर्यसन्देश पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म ४ निमय ८

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक ऐक्ट)

प्रकाशन का स्थान	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १
प्रकाशन की अवधि	साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	प्रति बृहस्पतिवार और शुक्रवार
मुद्रक का नाम	वेदव्रत शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	हा
मुद्रक का पता	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड नई दिल्ली–१
सम्पादक	वेदव्रत शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	हा
प्रकाशक का पता	पूर्ववत
सम्पादक का नाम	वेदव्रत शर्मा
क्या भारत का नागरिक है	हा
सम्पादक का पता	पूर्ववत
उन व्यक्तियो के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा समस्त पूजी के १ प्रतिशत से अधिक के साझेदार/ हिस्सेदार हो	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड नई दिल्ली–१

मैं **वेदव्रत शर्मा** इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हू कि उपर्युक्त विवरण जहा तक मेरा ज्ञान और विश्वास है सही है।

– **वेदव्रत शर्मा** *प्रकाशक व मुद्रक*

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा** सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति वैद्य इन्द्रदेव**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित **सार्वदेशिक प्रेस** १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (**दूरभाष** एव **फैक्स ३२७०५०७**) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष** ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक १९ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत २०५८ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार २५ मार्च से ३१ मार्च २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

हरिद्वार में आर्यों का महाकुम्भ

देश धर्म की रक्षा के लिए एक बार फिर आर्यों की तैयारी

देश और धर्म की रक्षा के उद्देश्य से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ई० मे आर्यसमाज नामक सगठन की स्थापना उन परिस्थितियो मे की जब भारत के कोने कोने पर ब्रिटिश साम्राज्य की हकूमत चल रही थी। एक तरफ विदशियो के अत्याचार थे तो दूसरी तरफ जाति व्यवस्था के कर्म पर आधारित सिद्धान्तो का तिलाजलि देते हुए उसे जन्म पर आधारित मान लिया गया और जन्मजात जातिवाद ने समाज मे भेदभाव और अत्याचार का विष फैलाना प्रारम्भ कर दिया था।

इन दोनो अव्यवस्थाओ से निपटने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज नामक सगठन की स्थापना करके अपने अनुयायियो को प्रेरित किया कि एक तरफ विदेशी दासता से मुक्ति पाने क लिए हर सम्भव प्रयास करे आर साथ ही यह मार्ग भी बताया कि बाहर वाला से लडाइ लडने क लिए आन्तरिक भदभाव को भी मिटाना पडेगा।

इन निर्देशो पर आधारित महर्षि दयानन्द क प्रवचन को सुनकर बरेली मे एक युवक मुशीराम उनकी ओर आकर्षित हो गया। इस युवक की पृष्ठभूमि पजाब की थी। पेशा वकालत का था। पहले यह युवक वानप्रस्थ लेकर महात्मा मुशीराम बना और बाद मे सन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आर्यसमाज के क्षेत्र म सगठनात्मक रूप म भी सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर रहकर कार्य किया।

वर्ष १९०२ मे महात्मा मुशीराम ने हरिद्वार मे लगभग २ हजार बीघा जमीन दान मे प्राप्त करके आर्यो के धन सहयोग से गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना की। जो अब केन्द्र सरकार के यू०जी०सी० से मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय के रूप मे काय कर रहा हे। जिसमे न केवल वेद उपनिषदो और अन्य धर्म शास्त्रो की शिक्षा दी जाती है बल्कि विज्ञान प्रबन्धन इजीनियरिग आदि जैसे आधुनिक विषय भी शामिल है। पहली कक्षा से लेकर डाक्टरेट तक की पूरी शिक्षा व्यवस्था इस विश्वविद्यालय मे उपलब्ध है।

यह विश्वविद्यालय देश और धर्म की सेवा मे १०० वर्ष पूरे कर रहा है। गुरुकुल शताब्दी वर्ष को अन्तराष्ट्रीय महासम्मेलन के रूप मे सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा २५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियो मे हरिद्वार मे ही आयोजित कर रही है। यह महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे होगा। गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प० हरबशलाल शर्मा जो पजाब सभा के प्रधान भी है इस महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष होगे।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के सयाजक श्री विमल वधावन गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना को केवल मात्र एक सस्था की स्थापना नही मानते बल्कि वे इसे एक सिद्धान्त की स्थापना मानत है। महर्षि दयानन्द के आह्वान से पूव गुरुकुल शिक्षा पद्धति प्राचीन वैदिक कालीन भारत का एक स्थापित सिद्धान्त था। परन्तु इस्लाम ओर ब्रिटिश युग मे यह पद्धति लुप्त सी हो गइ थी १९०२ मे स्थापित यह गुरुकुल आर्यसमाज का पहला गुरुकुल था जिसने आधुनिक युग मे गुरु के सिद्धान्त को पुनर्स्थापित किया। यह सिलसिला ऐसा चला कि आज भारत क लगभग हर प्रान्त मे कुल मिलाकर २०० से भी अधिक गुरुकुल स्थापित हे।

देश भक्ति अच्छा चरित्र और भेदभावरहित शिक्षा व्यवस्था इन गुरुकुलो क लक्षण हैं। सहशिक्षा गुरुकुल पद्धति मे मान्य नही हे।

श्री विमल वधावन ने बताया कि इस महासम्मेन म इस बार एक लाख स भी अधिक सख्या म धर्मप्रमी जनता के पहुचने की उम्मीद हे। प्रतिदिन प्रात १० बज दोपहर बाद तीन बज और साय ७ बज ३ ३ घण्टे क तीन सत्र आयाजित हुआ करग।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

अनुशासन और कर्त्तव्यवाद के ध्वज फहराए जाएंगे



गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन, हरिद्वार के लिए

रेल किराए में ५० प्रतिशत की छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा रेल राज्य मन्त्री श्री दिग्विजय सिह को लिखे पत्र के फलस्वरूप रेलवे बोर्ड के डायरेक्टर श्रीमती मणि आनन्द ने अपने पत्र द्वारा मुम्बई कलकत्ता नई दिल्ली गुवाहाटी गोरखपुर चेन्नई सिकन्दराबाद भुवनेश्वर हाजीपुर इलाहाबाद जयपुर बगलोर तथा जबलपुर कार्यालय को सूचित किया है की **२५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियों में गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार** मे भाग लेने वाले यात्री मेल तथा एक्सप्रेस गाडियो मे द्वितीय श्रेणी साधारण और स्लीपर के किराये मे **५० प्रतिशत छूट** के अधिकारी होगे। यह छूट केवल **३०० कि०मी० से अधिक** की यात्रा करने वालो को ही उपलब्ध होगी। इस छूट का लाभ किन्हीं **३० दिनो** मे उठाया जा सकेगा जिसमे महासम्मेलन की तिथिया (२५ से २८ अप्रैल २००२) शामिल हो। यह छूट प्राप्त करने के लिए आर्य यात्री तत्काल **सार्वदेशिक सभा कार्यालय (फोन न० ३२७४७७१ ३२६०६८५) सार्वदेशिक प्रैस (फोन न० ३२७०५०७ ३२७४२१६) तथा श्री विमल वधावन (निवास ७२२४०६० ७२१४०६० मो० ९८११२२१०८३)** पर अपना नाम लिखवाकर यह सूचित करे कि उनके साथ कितने महानुभावो को किस स्टेशन से यात्रा प्रारम्भ करनी है। यह सूचना मिलने पर तत्काल आर्य यात्री को सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा **हस्ताक्षरित एक प्रमाण पत्र** जारी कर दिया जाएगा। यह **प्रमाण पत्र** प्राप्त होने पर आर्य यात्री अपने निर्धारित रेलवे स्टेशन पर इसे प्रस्तुत करके ५० प्रतिशत छूट वाले रेलवे टिकट प्राप्त कर पाएगे।

– **विमल वधावन** महासम्मेलन सयोजक

हरिद्वार महासम्मेलन हेतु दिल्ली से बस सुविधाएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा क प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा के आदेश पर बनी सयोजक समिति न दिल्ली क आर्यजनो की सुविधा के लिए विशेष बस सवाओ का प्रबन्ध किया है। जिनमे यात्रा करने वाल आर्यजनो को मार्ग मे कई स्थानो पर स्वागत का आनन्द प्राप्त होगा।

बस यात्रा सख्या १

प्रस्थान – २४–४–२००२ प्रात ७ बज स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन नई दिल्ली से
दिल्ली मे वापसी २८ ४ २००२ रात्रि १० बजे
बस ३ X २ हेतु प्रति व्यक्ति किराया ४२५ रुपये (पजीकरण शुल्क सहित)
यात्रा का मार्ग मे मेरठ मुजफ्फरनगर आदि म स्वागत होगा तथा भोजन का प्रबन्ध भी मार्ग म होगा।

बस यात्रा सख्या २

प्रस्थान २४–४–२००२ साय ८ बजे
दिल्ली वापसी २८ ४ २००२ रात्रि १० बजे
बस ३ X २ हेतु प्रतिव्यक्ति किराया ३५० रुपये (पजीकरण शुल्क सहित)
सयोजको द्वारा निर्धारित समय पर ऋषिकेष तथा हरिद्वार आदि मे स्थानीय भ्रमण कराया जाएगा।
अभी से अपनी बसो मे सीटे बुक कराकर स्थान सुरक्षित करे।

– **सोमदत्त महाजन**

आतंकवाद का समाधान

भारत की सच्ची नागरिकता से न कि कुरान की वफादारी से

– आचार्य आर्यनरेश

देश मे गत ५४ वर्षो से चल रहे आतक को समाप्त करने हेतु अब यह आवश्यक हो गया है कि यहा के मुसलमान यह निर्णय करे कि वे यहा के सविधान क वफादार रहना चाहते हैं अथवा कुरान के ? क्याकि यदि वे सविधान भारत के वफादार बनना चाहते है तो वे काफिर कहलाए जाते हैं और यदि वे कुरान के के वफादार बनते हें तो व जहादी आतकवादी बन जाते हैं

मजहबी आधार पर आर्यावर्त का बटवारा करवा कर पाकिस्तान इसलिए बनाया गया था कि इससे भारत मे जातीय दगा व आतकवाद की समाप्ति होकर शान्ति होगी पर इस बटवारे के पश्चात भी इस तथाकथित स्वतन्त्र भारत मे कभी स्थायी शान्ति न हो सकी। बटवारा चाहने वालो ने अपने मजहब मुसलमान तथा ईमान कुरान के अनुसार पाकिस्तान की नीव रखी पर व सबके सब वहा नही गए अत हमार देश के कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी एव अदूरदर्शी नेताओ की गलतियो के कारण जहा कश्मीर का विवाद नासूर बन गया वहा मजहब के नाम पर अलग पाकिस्तान की माग मनवाने वाले वे मजहबी मुसलमान भी यही रखे गए। जिन्ना का यह स्पष्ट कथन था कि एक गिरे स गिरा हुआ मुसलमान भी हिन्द गाधी से अधिक अच्छा हे इसीलिए हमने स्वय देखा कि आज किसी भी कश्मीरी मुसलमान के घर पर कही भी नेहरू या गाधी की फोटो नही मिलती पर अली या जिन्ना की मिल सकती है। भारत के नादान नताओ द्वा अनेक गरीबो का पेट काटकर कश्मीर को दिया गया अरबो रुपये का मुफ्त राशन भी उन्हे भारत का व[illegible] सका। गत दिना कश्मीर से उदगीथ स[illegible] स्थली हिमाचल आए कश्मीर के एक मन्त्री क मुख्य सचिव ने मरी ही बात की पुष्टि करते हुए कहा कि आज वहा के सब ६५ प्रतिशत मुसलमान ही भारत विरोधी है। आखिर ऐसा क्या कारण है कि भारत के मुसलमानो को भारत देश म राष्ट्रपति उच्च न्यायाधीश मन्त्री मुख्यमन्त्री विशेष सेना अधिकारी तथा अनेक राज्यपाल एव उच्च सम्मानयुक्त पद दिए जान पर भी यहा की आम मुसलमान जनता भारत के स्थान पर पाकिस्तान या तालिबान की वफादार बनकर आतकवादियो की सहयोगी क्यो बनी ? यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि इतना प्यार व इतन अधिकार पाकर एक खूखार जगली जानवर शेर भी अपने पैर से काटा निकालने वाले एक आर्य साधु के पैर चाटने लगा गया था प्रेम से समझाने पर उदगीथ आश्रम का कुत्ता और बिल्ली एक थाली मे दूध पीने लगे थे। फिर क्या मौलिक कारण है कि भारत के इतने अधिकार व प्यार पाकर भी यहा के बहुत से मुसलमान सच्चे भारतीय नहीं बने।

जब तक भारत के तथाकथित नागरिक मुस्लिम नेता और उनके पीछे चलनेवाली जनता कुरान से काफिरो का कत्लेआम करने वाली कुशिक्षाओ को अल्लाह का आदेश समझती रहेगी तब तक भारत मे दिल्ली स्थित लालकिला ससद भवन व कश्मीर आदि मे हत्याओ का ताडव नृत्य ओर आतकवादी सिलसिला चलता रहेगा। मुसीबत यह भी है कि यदि कोई सच्चा बुद्धिजीवी छागला जैसा ईमानदार मुसलमान एक सच्चे भारतीय की तरह बनना चाहता है तो यहा के इमाम बुखारी जैसे अनेक देशद्रोही नेता उन्हे कुरान व शरियत का हत्यारा कहकर काफिर करार देते है।

गत दिनो अमेरिका के सी०एन०एन० चैनल पर तालिबान सेना के मुखिया मिया उमर के प्रवक्ता मु० सैयद आगा ने अमेरिका इजराइल व कश्मीर पर हो रहे आतकवादी हमलो को उचित ठहराते हुए कहा था। हम जो कुछ भी कर रहे है वह सब कछ अल्लाह ताला के आदेश कुरानपाक के अनुसार कर रहे हैं। वही हम से यह सब कुछ करवा रहा है। जब तक हमारा अपना पूरा मकसद (उद्देश्य) सिद्ध नही हो जाता अर्थात सम्पूर्ण ससार पर इस्लाम का राज्य नही हो जाता तब तक हम जेहाद करते रहेगे कुछ समय पूर्व यही बात मुस्लिम उग्रवादी नता मुशर्रफ ने कही थी कि कश्मीर का विवाद हल हा जान पर भी हमारी भारत के साथ लडाई चलती रहेगी। आतकवादियो या कुरानवादियो का समर्थन करने वाले नादान नेता विचार करे। यह कौन नही जानता कि जिन भारतवासी जवानो ने अपनी जान देकर बगलादेश के आजाद करवाया था आज वही बगलादशी मुस्लिम नागरिक भारत के सीमारक्षको व हिन्दू लोगो को मार रहे हैं।

क्या यह सत्य है कि तथाकथित मजहब व ईमान के नाम पर लिखा गया कुरान ही मुसलमानो को ईमानदार बनने से रोकता है ? यदि विश्वास न हो तो कुरान की निम्न आयते पढकर देखे जो कि भारत के सविधान स भी विरुद्ध है।

कुरान पारा १ सूरा १ आयत ५ गैर मुसलमानो को जहा पाओ वहा कत्ल करो और उन्ह पकडो व घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक मे बैठो। यदि वे तोबा कर ले नमाज किया करे (मुसलमान बन जाए) और जकात (जीने का टैक्स) दे तो उनका मार्ग छोड दे अन्यथा कभी मत छोडो और कत्ल कर दो। नि सन्देह ऐसा करने वाले मुसलमानो का अल्लाह बडा क्षमाशील और दया करने वाला है।

कुरान पारा ६ सूरा ५ आयत ५७ हे ईमानवालो (मुसलमान लोगो) तुम काफिरो को अपना मित्र न बनाओ।

कुरान पारा ५ सूरा ४ आयत १० नि सन्देह काफिर (गैर मुसलमान) लोग तुम्हारे दुश्मन है। उनके खिलाफ जेहाद करो।

विशेष जानकारी हेतु महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश का १४वा समुल्लास पढे। १३१४३३ मे लिखा है कि सूर्य-चन्द्र तारे फिरते हैं और पृथ्वी खडी है। जो गैर मुसलमानों से झगड़ा करता या उन्हे जान से मार डालता है उन्हे पाप नहीं लगता अपितु बहिश्त मिलता है। अपने बेटे की पत्नी के साथ भी मुहम्मद ने विवाह किया कुरान में गाय जैसे सर्वोपयोगी प्राणी की सुरक्षा की बात न करके मुसलमानो द्वारा हलाल बताई जाती तथा काटी जाती है।

कुरान की उपर्युक्त मान्यताओ से ठीक विपरीत भारत के सविधान की धारा ५१ (स) मे कहा गया है कि भारत का प्रत्येक नागरिक परस्पर प्रेम शन्ति भाईचारा तथा सोहार्द के भाव से रहे महिलाओ का सत्कार करे अन्यत्र भी स्थान स्थान पर सविधान मे कहा है कि भारत की प्राचीन सस्कृति व गाय की रक्षा की जाए।

भारत का सविधान जहा प्राचीन वेदिक सस्कृति की रक्षा की बात करते हुए सयम और सदाचार पर बल देता है। वही ठीक इससे विपरीत कुरान क बहिश्त मे शराब की नदियो लौडो और भोग हेतु अनेक औरतो की सुविधा है।

क्या भारत के सविधान के विरुद्ध अत्याचार अशान्ति तथा गैर मुसलमानो से दगे करने या जेहाद करने की कुशिक्षा से युक्त 'कुरान' के प्रचार रहते कभी भारत मे शान्ति सम्भव है ? क्या ऐसी अश्लील विज्ञान व मानवता विरुद्ध दगे करवाने वाली पुस्तक के आदेशो को मानने वाल मुसलमान कभी सच्चे भारत देशभक्त बन सकते हैं ?

अत मे सविधान की अन्य धाराओ पर विचार करते हुए हम कहना चाहते है कि सविधान की धारा २५(१) के अन्तर्गत व्यक्तिगत मत मजहब आदि के पालने की स्वतन्त्र छूट या अधिकार एक सर्वथा यथाइच्छा सम्पूर्ण अथवा असीमित (सीमा रहित) नहीं है। १६५२ मे मुम्बई हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्री मुहम्मद करीम छागला और न्यायमूर्ति श्री गजेन्द्र गडकर ने उपर्युक्त मौलिक अधिकार पर निर्णय देते हुए फैसला दिया था कि यह अधिकार २५ (३) के अन्य प्रावधानो पर निर्भर है।

अत इससे स्पष्ट सिद्ध है कि भारत के रहने वाले किसी भी मुसलमान या अन्य मतावलम्बियो को बहुत विवाह से बहुत बच्चे पैदा करने गोहत्या करने या अन्य बलि करने धर्म परिवर्तन करने अथवा मजहब के नाम पर लोगो को परेशान करने व जेहाद करने की छूट नहीं है।

भारत सरकार को चाहिए कि भारत मे पूर्ण शान्ति हेतु यहा रहने वाले सभी मुसलमानो को यह सूचित कर दे कि या तो वे यहा रहकर भारत की नागरिकता वोट का अधिकार भारत के नेता बनने की सुविधा तथा भारत सरकार को सब प्रकार की नौकरिया ही प्राप्त कर ले अथवा कुरान की वफादारी और उसकी मनमानी सुविधाए ? सविधान मे वर्णित भारत की प्राचीन वैदिक सस्कृति के अनुसार यत्र ब्रह्म च क्षत्र च वेद मन्त्र यही उपदेश देता है कि राष्ट्र को पुण्यलोक बनाने हेतु बाल्यकाल से प्रत्येक नागरिक को यहा का सच्चा नागरिक बनने हेतु सविधान के मुख्य नियमो का पूर्ण ज्ञान करवा दिया जाए। यदि फिर भी कोई नियमो को तोडे तो उसके विरुद्ध देशद्रोह की कार्रवाई की जाए।

– उदगीथ साधना स्थली (हिमाचल)

बोध कथा

सब आर्यो की मर्यादा का पालन करें।

भरुच से चलकर स्वामी दयानन्द जी सरस्वती दिसम्बर १८७४ मे अहमदाबाद पधारे। उनके स्वागत के लिए रेलवे स्टेशन पर अनेक सज्जन उपस्थित थे। एक भाटिया सेठ ने बडे आदर से स्वामी जी को अपनी गाडी मे बिठाया और स्वय भी साथ बैठ गया। जिस रास्ते से गाडी जा रही थी उसी पर सेठ द्वारा बनवाया हुआ एक मन्दिर था। उस मन्दिर पर सेठ ने दो लाख रुपये व्यय किए थे। सेठ ने मन्दिर की ओर सकेत करते हुए उसके सौन्दर्य का वर्णन किया।

महाराज ने गाडी पर हाथ मारते हुए कहा – **ऐसी अविद्या से ही हम लोगो की यह दुर्दशा हो रही है यदि इतना ही सब आप पाठशाला पर लगा देते तो यहा से वेदशास्त्र के ज्ञाता पण्डित तो निकलते।**

स्वामी जी भोजन के बाद अपने कर्मचारियो को भी कुछ काल के लिए विश्राम करने की अनुमति दे देते थे। एक दिन एक विद्यार्थी स्वामी जी की ओर पाव करके सो गया। जब सारे कर्मचारी जाग गए तब महाराज ने उस विद्यार्थी को बुलाकर समझाया कि प्रत्येक आर्य सदा आर्य मर्यादा का पालन करे। बिना बुलाए बोलना बडो की बात के बीच मे बोल उठना आर्य मर्यादा के विरुद्ध है। अपने पूज्य गुरुओ बुजुर्गो की ओर पीठ करना या पाव करके सोना आर्य मर्यादा के विपरीत है।

स्वामी जी का उपदेश सुनकर अपराधी छात्र ने उनके चरण पकड लिए और भविष्य मे आर्यो की मर्यादा पालन का वचन दिया।

– नरेन्द्र

कल्याण मार्ग पर चलें व्रती बनो

स्वस्ति पन्थामनुचरेम। *ऋ० ५/५१/१५*
हम सदा कल्याण मार्ग पर चले।

स्वस्ति भूमे नो भव। *अथर्व० १२/१/३५*
मातृभूमि मगलमयी हो।

व्रत कृणुत। *यजु० ४/११*
हे मानव ! व्रत धारण करो।

भूयास मधु सदृश। *अथर्व० १३/४/३*
मेरा जीवन माधुर्य भरा हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

समस्या का समाधान : शान्ति, सदभाव और संयम से

श्रीराम और श्रीकृष्ण भारतीय इतिहास और सस्कृति प्रेरक महापुरुष रहे हैं। उनमे से श्रीराम की जन्मभूमि और कर्मभूमि अयोध्या भूमि श्रीराम मन्दिर के निर्माण की समस्या से आक्रान्त रही है। विदेशी शासन के दिनो मे ही वहा एक विदेशी पूजागृह की स्थापना कर दी गई थी। श्रीराम की कर्मभूमि मे मन्दिर मस्जिद सरीखी पूजा पद्धतियो की टकराहट समुचित नही जान पडती फलत काची के शकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती वहा पधारे। उन्होने कहा – वह किसी भी पक्ष का समर्थन नहीं करते परन्तु उनका सुझाव था कि आपसी मतैक्य से यह गम्भीर समस्या सुलझा ली जाए। यह एक शुभ लक्षण है कि मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड शकराचार्य जी के सुझावो पर विचार करने के लिए तैयार हो गया है। उनका सुझाव है कि विवादग्रस्त क्षेत्र मे कोई निर्माण कार्य न हो परन्तु उसी स्थल के समीप विवादशून्य क्षेत्र को साधुओ के अधिकार क्षेत्र मे निर्माण कार्य कर लिया जाए। भारतीय राष्ट्र की सस्कृति और श्रीराम के मर्यादा पौरुष की गरिमा के स्मृति चिन्ह को अयोध्या मे सुरक्षित रखने की दृष्टि से यह सर्वोत्तम होगा कि अयोध्या की समस्या का समाधान सदभावना और भरोसे से कर ले। विवादग्रस्त बाबरी मस्जिद कहा थी उसके लिए भी दोनो प्रमुख सम्प्रदाय या तो सम्प्रदाय पारस्परिक स्वीकार्य समझौते पर चलन का निर्णय करे अथवा उस सम्बन्ध मे दोनो पक्ष न्यायालय के निर्णय पर चलने की सहमति बना ले। काची के शकराचार्य के सुझाव के बाद सभी पक्षो ने समस्या को शान्ति सदभाव और सयम से सुलझाने के विकल्प के उभरने पर प्रसन्नता अभिव्यक्त की है। भारतीय सस्कृति और धार्मिक मान्यताए शान्ति सदभावनाओ और सयम पर विश्वास करती है। भारत का इतिहास साक्षी है कि यहा से भारतीय चिन्तन भारतीय सस्कृति के भारतीय महापुरुषो ने विश्व की सस्कृति इतिहास साहित्य वाडमय को अपना अमर सन्देश दिया परन्तु कभी भी शस्त्रो और शक्ति के बल पर नहीं केवल साधुओ सन्तो परिव्राजको भिक्षुओ मानवीय सन्देश वाहको के माध्यम से पहुचाया। मैक्सिका अमेरिका एशिया यूरोप के सभी भूखण्डो मे भारतीय सस्कृति और धार्मिक मान्यताए शान्ति सद्भावनाओ भाईचारे सन्देश सर्वत्र फैलाया। श्रीराम जन्मभूमि कर्मभूमि अयोध्या मे उनका स्मृति केन्द्र प्रेम सदभाव और भाई चारे से ही स्थायित्व पा सकता ह। काची के शकराचार्य के सत्परामर्श से वहा की समस्या का स्थायी समाधान प्राप्त कर लिया जाए और अयोध्या मे स्थायी शान्ति सोमनस्य और भाईचारा प्रतिष्ठित हो जाए तो यह स्नेह सद्भाव सहिष्णुता की भारतीय वैदिक आर्य सस्कृति के इतिहास और परम्पराओ के सर्वथा अनुरूप होगा। शासन नेताओ और सामान्य जनता सभी को प्रयास करना चाहिए कि अयोध्या की समस्या के समाधान के लिए सदभावना आपसी भाई चारे और सहिष्णुता की जो स्थिति उभरी है उसे अधिक समर्थन और शक्ति मिले वह यशस्वी हो।

कुछ वर्ष पूर्व सिन्धु नदी घाटी मे मोहनजोदरो और हडप्पा के समीप पुरातन युग के नगरो के दबे हुए अवशेष मिले थे उसके बाद शिमला की पहाडियो मे वैसे ही अवशेष मिले। पुरातत्त्व के विशेषज्ञो की सम्मति मे वे प्राचीन अवशेष कम से कम ५५०० वर्ष पुराने है। जैसे अवशेष उत्तरी भारत मे मिले वैसे ही अफ्रीका के कई क्षेत्रो मे भी मिले। इन अवशषो की परीक्षा के फलस्वरूप विशेषज्ञो की सम्मति म यह प्रान्तीय सभ्यता पर्याप्त विकसित थी वे लोग पक्की इटा के मकान बनाते थे उनके मकानो मे कुए थे और स्नानागर थे। नगरो की सडके चोडी थीं गन्दा पानी निकालने के लिए नालिया बनी हुई थी। वे जहा कुशल कृषिकार थे अच्छे समृद्ध व्यापारी थे वे लोग मूर्तिया बना कर देवी देवताओ की पूजा करते थे। प्राचीन मुहरो ओर शिलाओ को देखकर विशेषज्ञो की सम्मति मे व न कवल कुशल कलाकार थे प्रत्युत वे लिखना पढना जानते थे। उनके युद्ध के उपकरण घोषित करते है कि वे कुशल योद्धा थे। पुरातत्व विशेषज्ञो की सम्मति मे प्रागैतिहसिक काल मे ५० हजार वर्ष पूर्व या एक लाख वर्ष पूर्व आर्य जाति के पूर्व पुरुष हिमालय के शिखरो ओर ऊची तलहटियो से उतर कर एक ओर सप्तसिन्धु के धनधान्यपूर्ण मैदानो म फैले और मार्ग मे बस्तिया बसाती पश्चिमी भूभागो मे पहुची। इस प्रक्रिया मे हजारो वर्ष लगे या एक लाख वर्ष लगे उसके कई अनुमान है परन्तु विशेषज्ञो का निष्कर्ष है कि आर्य जाति के पूर्वपुरुष वहा से चले और भूमण्डल के अनेक भागो मे पहुच गए वे लोग अपन साथ आर्यो की भारत आर्यो का चिन्तन और धार्मिक विचार आर्य सस्कृति लेकर गए। सम्भवत पृथ्वी पर व्याप्त होने वाली आर्य सस्कृति की पहली और प्राचीनतम धारा भी। आर्य सस्कृति की दूसरी धारा तब प्रवाहित हुई जब जाति के साहसिक लोग व्यापार विद्या प्रचार के लिए देश देशान्तरो और द्वीप द्वीपान्तरो मे जाने लगे। यह स्थिति रामायण काल के बाद की है अमेरिका चीन और विभिन्न दिशाओ मे फैले भारतीय चिन्तन और सस्कृति के जो अवशेष मिले है उनसे प्रमाणित हो गया है कि रामायणोत्तर काल मे भारतीय सस्कृति की दूसरी धारा देश देशान्तरो मे पहुची और भूमण्डल पर व्याप्त हो गई। बालीद्वीप जावा सुमात्रा कम्बोडिया चम्पा मालवा स्याम आदि देशो म धर्मो सस्कृतियो प्राचीन देवस्थानो अवशेषो के अध्ययन से यह तथ्य प्रमाणित हो चुका है कि वहा प्राचीन युग मे भारतीय सस्कृति चिन्तन और धर्म का प्रभाव पहुचा था। अमेरिका मे प्राचीन खुदे पुरातत्व क अवशेषो से प्रमाणित होता है कि वहा प्राचीन युग मे भारतीय सस्कृति पहुची थी।

भारतीय सम्राट अशोक के समय भारतीय सस्कृति की तीसरी धारा भारत से चल पृथ्वी मे पूर्वार्द्ध मे पहुची। सम्राट अशोक ने पहले धर्मप्रचारक भारत की सीमाओ से सलग्न श्रीलका सिहल चीन आदि देशो मे भेजे फिर सीरिया अबीसीनियर मडिओनिया भेजे गए। भिक्षु प्रचारको ने सब जगाह विहार और चैत्य स्थापित किए। राजकुमार महेन्द्र ओर राजकुमारी सघसिना ने भिक्षु का बाना पहनकर सिहलद्वीप – लका म बौद्ध धर्म फैलाया। अशोक धर्म प्रेम और प्रचार कार्य से कुछ प्रदेशो तक मर्यादित बौद्ध धर्म एक विश्वव्यापी धर्म के रूप मे पहुच गया। सम्राट अशोक के बाद के युग मे यवन शक हूण आक्रमणकारी भारत पहुचे उन्होने कुछ क्षेत्रो पर अधिकार भी कर लिया परन्तु भारतीय नरेशो कोई न कोई शूर एसा उठा जा उन्हे धकेलकर मातृभूमि की स्वाधीनता और सस्कृति की रक्षा करता रहा। भारत की तलवार विदेशी आक्रान्ताओ स सघष मे उज्जवल होती रही। इस युग मे भारतीय साहित्य कला शिल्प और वैभव की समुन्नति हुई। ७वी से ११वी शताब्दी म भारतीय सास्कृति का प्रवाह अनेकता की ओर बढा। फलत वह इस्लाम और ईसाय्यत के विदशी आक्रमण के सामने टिक नही सका। हा १६वी शताब्दी क अन्त मे भारतीय सस्कृति के साथ देश स्वाधीन हो गया अग्रेजो न भारत को स्वाधीनता दी परन्तु उसका विभाजन कर उसक स्वरूप को विकत कर डाला। जावा सुमात्रा बालीद्वीप कभी स्वर्णद्वीप कहलाते थे महाभारत रामायण और दूसरी सास्कृतिक ऐतिहासिक परम्पराए आज भी वहा प्रचलित है स्याम नेपाल आदि देश राजनीतिक दृष्टि स भारत स भिन्न हो परन्तु सास्कतिक धार्मिक परम्पराओ की दृष्टि से ही एक नैतिक शरीर के भाग है। गगा की घाटी से लेकर मलाया की दक्षिणी पाश्व तक यात्रा करने वाला अनुभव करता है कि वह भारतीय सस्कृति के चिन्ह ही देखता है। पहले समझा जाता था कि अमेरिका की पहली खोज करने वाला कोलम्बस था परन्तु ऐतिहासिक अनुसधान ने यह प्रमाणित कर दिया है कि अमेरिका मे पहले प्रवेश करने का श्रेय भारतवासियो को था। मैक्सिको के सरकारी इतिहास मे लिखा है – अमेरिका कहलाने वाले प्रदेश मे सबसे पहले जो लोग आए वे उस प्रवाह के भाग थे तजो भारत से पूर्व की ओर प्रवाहित हुए। अमेरिका के पुराने निवासी केवल नाम से ही इडियन नही थे वस्तुत वे भारत के यात्रियो की सन्तान थे। इतिहास साक्षी है कि भारतीय सस्कृति पश्चिम और पूर्व से आइ दूसरी सस्कृतियो की टक्कर से अक्षुण्ण रही हमारे राष्ट्र निर्माता और जनता सचेत रही तो न केवल भारतीय सस्कृति चिरजीवी रहेगी प्रत्युत वह प्रेम भाईचारे और उच्च सास्कृतिक गुणो विशेषताओ के कारण विश्व मे अपनी देन सदा देती रहेगी।

चिट्ठी-पत्री

और इंसानियत स्वाहा

गोधरा सदी झेलने को मजबूर गुजरात को एक बार फिर सकट का सामना करना पडा। जहा पर धर्मान्धता की पट्टी आखो पर बाधकर हैवानियत की चादर ओढे हुए सडको पर उतर आए हुजूम ने लोगो को बच्चो और महिलाओ को भी नही बख्शा गया। ये वहशी लोग आग के हवाले करते रहे और पुलिस एव प्रशासन इससे बेखबर था। कितने ही बेकसूर लोग इसके शिकार हुए और पगु सा नजर आया यह चिन्तनीय है। गुजरात मे २८ फरवरी के बाद जो हुआ और जो छिटपुट रूप मे आज भी जारी है यह भारतीय सभ्यता पर कलक है। जहा धार्मिक उन्माद मे इसानियत को स्वाहा किया जाता रहा और पुलिस व प्रशासन को लोगो और बच्चो की चीख पुकार सुनाई नही दी जबकि ठीक मौके पर गैस्ट हाऊस मे मौजूद सासदो द्वारा सुने गए वह टेलिफोन वार्ता का प्रमाण पर्याप्त है उसमे सिसकते हुए लोग अपनी सुरक्षा की पुकार करते रहे लेकिन प्रशासन मे बैठे अधिकारियो की इसानियत नही जागी। यहा तक मुख्यमन्त्री भी इसमे अलग नजर नही आए।

– एच०पी० सिह यमुनानगर, दिल्ली

यजुर्वेद से – ईश्वर-देवता सप्तकम् (१) (उत्तरार्द्ध)

ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना तीनों आवश्यक

– प० मनोहर विद्यालकार

(४) मुझे अपने सदृश प्रदीप्त करे, ताकि मै भी दूसरो को प्रदीप्त कर सकू

सोमस्य त्विषिरसि तवेव मे त्विषिर्भूयात्।
मृत्यो पाह्योजोऽसि सहोऽस्यमृतमसि।।

यजु० १०/१५

वरुण । परमात्मा। पंक्ति ।

अर्थ – हे परमात्मन ! (सोमस्य त्विषि असि) आप सब देवताओ को दीप्ति प्रदान करते है (ओज असि) ब्रह्माण्ड के अन्तिम और श्रेष्ठ सार है (सह असि) सबको उत्साह और सहनशक्ति प्रदान करते हैं (अमृत असि) अनादि और अनन्त है सदा एकरस सत है। ऐसी कृपा करे कि (मेत्विषि तव इव भूयात) मेरा उत्कर्ष अथवा कान्ति और शक्ति तेरे उत्कर्ष सदृश हो जाए (मृत्यो पाहि) मेरी मृत्यु के चक्र और भय से रक्षा कर।

निष्कर्ष – हे परमात्मन ! मुझे मृत्यु भय से मुक्त करे ताकि मै भी आप के सदृश ओजस्वी ओर अमृत बनकर सारे समाज को दीप्ति और शक्ति प्रदान करने वाला बनू।

अर्थपोषण – सोम सर्वा देवता। ऐ० २–३। त्विषि – दीप्ति शक्ति उत्कर्ष। सूर्य०

(५) सोम की महिमा जानकर पुत्रेष्टि करे, वे जगत् का सेवन करे और प्रसन्न रहें

होता यक्षत्प्रजापति सोमस्य महिम्न ।
जुषता पिबतु सोम होतर्यज।।

यजु० २३/६४

प्रजापति । ईश्वर । विराड् उष्णिक्।

अर्थ – (होता) सृष्टिकर्ता ईश्वर ने (सोमस्य महिम्न प्रजापतिम्) वीर्य और उससे उत्पन्न होने वाले जगत की महिमा के ज्ञाता प्रजापति {प्रजापतित्व} की (यक्षत) आराधना की ताकि जगत की उत्पत्ति हो और प्रजा = प्राणीमात्र (जुषताम्) उस जगत् का प्रीतिपूर्वक सेवन करे। इसी परम्परा के अनुकरण मे (होत) अपने गृहस्थ जगत के सृष्टिकर्ता मानव ! (सोम पिबतु) अपने सोम का पान कर = वीर्य की रक्षा कर तदनन्तर (यज) गृहस्थ मे प्रविष्ट होकर पुत्रेष्टि यज्ञ कर जिससे सर्वत्र तृप्ति और हर्ष की लहर फैले।

अर्थपोषण – तद यदब्रवीत (ब्रह्म) प्रजापते ! प्रजा सृष्टवा पालयस्वेति तस्मात्प्रजापतिरभवत तत्प्रजापते प्र७ापतित्वम्।। गो० ५०१/४

वास्तव मे होता प्रजापति ब्रह्मा ब्रह्म ईश्वर आदि नाम एक के ही है।

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा, एक रूप बहुधा य' करोति।

कठ० २/२/१२

सोऽकामयत, बहुस्या प्रजायेयेति।

तैत्तिरीय० २/६

प्रजापति बन गया।

सोम रेत। *कौ० १३-७*

सोमयजति रेत एव तद्दधाति।

तै० स० २/६/१०/३

सोमम-ससारम। स्वा० दया० ऋ० ३/४७/३ पाहि। यक्षत-यक्ष पूजायाम यक्ष हो मे यक्षेति तृप्ति

करें प्रतिज्ञा हम होली पर

– राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

प्रेम समन्वित हम आपस मे,
करे सदा ही सद्व्यवहार।
मेल-जोल से रहे सदा हम,
यही सिखाता यह त्यौहार।।

कटुता-द्वेष मिटाए हम सब,
बहे यहा स्नेहिल धारा।
मिटे हमारे अन्तर्मन का,
कलुष भरा है जो सारा।।

अपना स्वार्थ मिटाए हम सब,
आओ ! सबको गले लगाए।
जन जन मे हम मनुष्यता का,
पावन मधुरिम स्रोत जहाए।।

नव-जागृति की भरी चेतना,
हो धरती के जन-जन मे।
सद्विवेक की दिव्य भावना,
भरी सदा हो जन-मन मे।।

करे प्रतिज्ञा हम होली पर,
सारा कलुष दूर करेगे।
एक-दूसरे के हित मे ही,
सदा जीएगे तथा मरेगे।

– मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

हर्षयो ।

निष्कर्ष – सोम के स्वरूप और महत्व को जानने वाला ही जगदीश्वर के समान प्रजापति बनकर अपने जीवन यज्ञ का सेवन व पालनकर्ता होता ही यज्ञस्वरूप बन सकता है और बन जाता है। इसलिए इस मन्त्र मे मानव को होता बनकर यज्ञ करने का आदेश है।

(६) कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविष इत् शत समा'। *यजु० ४०/२*

इम जीवेभ्य परिधिं दधामि मैषानुगादपरो अर्थमेतम।
शत जीवन्त शरद पुरूचीरन्तर्मृत्यु दधता पर्वतेन।।

यजु० ३५/१५

थामायन सकसुक । ईश्वर । त्रिष्टुप्।

अर्थ – ईश्वर ने मानव शरीरधारी जीवो के लिए इस मन्त्र मे एक मर्यादा निर्धारित की है और फिर उसे पालन करने का आदेश दिया है।

मै ईश्वर (जीवेभ्य इम परिधि दधामि) कर्त्तव्यपरायण क्रियाशील सयमी मनुष्यो के लिए इस मर्यादा को निर्धारित करता हू कि वह (पुरूची शरद शत जीवन्त) बहुविध कर्मो से व्याप्त सौ वर्ष तक जीवित रहते हुए (पर्वतेन मृत्यु तिर दधताम) जीवन मे पूर्णता लाने वाले कर्मो द्वारा मृत्यु को अवधि अर्थात् शतायु होने तक तिरोहित रखे – प्रकट न होने दे। (एषा अपर) इन मनुष्यो मे कोई निकृष्ट अर्थात असयमी और आलसी व्यक्ति (इम परिधिनुमा गात) इस शत वार्षिक मर्यादा को न प्राप्त करे। (एत अर्थम) इस यर्थाथ को सब अच्छी तरह से जाने।

अर्थपोषण – यामायन – सयमी सकसुक – कर्त्तव्यनिष्ठ। हरि० ऋग्वेद के ऋर्षि

अर्थम – यथार्थम। आप्टे। अपर – निकृष्ट। आप्टे पर्वतेन – पर्व पूरणे। पर्बगतौ।

निष्कर्ष – कर्त्तव्यनिष्ठ क्रियाशील और सयमी हुए बिना सौ वर्ष जीना सम्भव नही। यह सार्वदेशिक और सार्वकालिक यथार्थ है।

(७) हे सर्व ! मुझे इतना दृढ बनाओ कि आपके प्रदर्शित पथ पर चलकर दीर्घायु बनू।

दृते दृह मा। ज्योक्ते सदृशि जीव्यास ज्योक ते सदृशि जीव्यासम्।।

यजु० ३६/१६

दध्यड् आथर्वण । ईश्वर । पादनिचृद्गायत्री।

अर्थ – (दृते) हे सकल दोष निवारक ईश्वर ! (मादृह) मुझे शरीर से पाषाणतुल्य दृढ और मन से कर्त्तव्य के प्रति निष्ठ बना। (ज्योक्) चिरकाल तक (ते सदृशि) तेरे मार्गदर्शन मे रहते हुए और तेरा मानसिक साक्षात्कार करते हुए (जीव्यासम्) जीवित रहू।

अर्थपोषण – दृते – दृविदारणे।

दृह – दृहि वद्धौ।

निष्कर्ष – ऋषि के शब्दार्थ को जोडकर तथा ब्रह्मसूर्यसम ज्योति को ध्यान मे रखकर यह निष्कर्ष निकलता है कि सूर्योदय से पूर्व ध्यान करने से – दिन मे अधिक से अधिक सूर्य का सेवन करने से और अपने कर्त्तव्य पालन मे दृढ निष्ठा रखने से मनुष्य चिरायु अथवा शतायु होता है।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२, कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली - ६

मन्दिर तोड़कों का इलाज करो : हिन्दुत्व की खिल्ली मत उड़ाओ

– दिनेश शर्मा

आर्य समाज की सर्वोच्च विश्वस्तरीय सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान विमल वधावन एडवोकेट तथा सभा मन्त्री वेदव्रत शर्मा ने आज प्रधान मन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी को पत्र भेजकर सुझाव दिया है कि वे मन्दिर तोडक केन्द्रीय मन्त्री श्री जगमोहन जैसे आर्यसमाज विरोधी सहयोगी को तुरन्त मन्त्रिमण्डल से अलग करके आर्यजगत के प्रकोप से भाजपा को बचाए।

उन्होने कहा है कि हाल ही चुनावो मे उ०प्र० उत्तराचल और पजाब के अतिरिक्त दिल्ली मे जो चुनाव परिणाम आए है उस खतरे की घटी को भापकर माननीय प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री को तुरन्त अपने कार्यो का आत्ममथन करना चाहिए। आर्य जगत और हिन्दुत्व की खिल्ली उडाने से इस देश के बहुसख्यक समाज को भावनात्मक आघात पहुचा है उससे आपके वोट बैंक का ग्राफ निरन्तर गिर रहा है।

अपने पत्र मे आर्य नेताओ ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की स्थापना के बाद आर्यसमाज के अधिकतर अनुयायियो ने आपकी पार्टी को पूर्ववत् समर्थन जारी रखा जैसा जनसघ काल मे था। उसका बडा स्पष्ट कारण था कि आपकी पार्टी का राजनीतिक और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण स्व० श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी के सिद्धान्तो और विचारो पर आधारित था। आपने एव श्री लालकृष्ण आडवाणी ने जिस प्रकार उन सिद्धान्तो को आगे बढाया उसी से आकर्षित होकर आर्यसमाज का समर्थन आपको मिलता रहा। यह सिद्धान्त जवाहर लाल नेहरू के राष्ट्रवाद से भिन्न था जो गाधी जी के तुष्टिकरण सिद्धान्तो पर आधारित थे।

राजनीतिक विकास की दौड मे आपको चाहे अनचाहे कई प्रकार के विचारो वाले व्यक्तियो का समर्थन लेना पडा। इसी प्रक्रिया मे एक नाम था श्री जगमोहन का। जिन्होने बेशक अपनी प्रशासनिक कुशलता से कुछ अच्छे कार्य किए परन्तु मिण्टो रोड स्थित ५० वर्ष से अधिक पुराने आर्यसमाज मन्दिर को पार्क के सौन्दर्यकरण के नाम पर गिराना एक भारी भूल थी। आपके तथा श्री लालकृष्ण आडवाणी जी के स्पष्ट आदेशो के बावजूद भी उन्होने अपनी भूल स्वीकार करके आर्यसमाज के आन्दोलन को तो स्थगित करने मे सफलता प्राप्त कर ली परन्तु भूमि का आबटन अभी तक भी सार्वदेशिक सभा के नाम नही हो पाया। जिसके करण आन्दोलन स्थगित अवश्य है परन्तु समाप्त नही हुआ।

दिल्ली के नगर निगम चुनाव से पूर्व यदि भूमि का आबटन भी कर दिया जाता तो भी आन्दोलनात्मक स्वरो और भावनाओ को समर्थन मे बदला जा सकता था। जिसका परिणाम सामने है।

दिल्ली के स्तम्भ नेतृत्व की लागत पर श्री जगमोहन को प्रोत्साहन दिया गया। आप यह न भूले कि आपकी पार्टी को अभी कई और लक्ष्य प्राप्त करने हैं।

इस प्रत्र के माध्यम से हमारा केवल एक ही निवेदन है कि अभी भी आर्यजनता की भावनाए आपके पक्ष मे परिवर्तित हो सकती हैं यदि आप वर्तमान शहरी विकास मन्त्री श्री अनन्त कुमार को अविलम्ब आर्यसमाज मन्दिर मिन्टोरोड के लिए भूमि का आबटन उसी स्थल पर करने के लिए निर्देश जारी करे।

आर्यनेताओ ने यह अपील भी की है कि आगामी २५ से २८ अप्रैल तक हरिद्वार मे आयोजित आर्यो के कुम्भ मे प्रधानमन्त्री एव गृहमन्त्री स्वय पधारकर आर्यजगत की भावनाओ का आदर करे।

– साभार पजाब केसरी

गुरुकुल महासम्मेलन मे ग्रन्थो तथा प्रचार सामग्री का विमोचन

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार (२५ से २८ अप्रैल २००२) के विशाल आयोजन के अवसर पर जो विद्वान लेखक या प्रकाशक अपने नए प्रकाशित ग्रन्थो या अन्य प्रचार सामग्री का विमोचन कराना चाहते हो तो उसके ५ सेट विमोचन से एक दिन पूर्व गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सीनेट हाल मे स्थित महासम्मेलन कार्यालय मे अवश्य दे दे। सामग्री का वैदिक सिद्धान्तो के आलोक मे अवलोकन करने के बाद ही यह निश्चय किया जाएगा कि विमोचन किस समय और किस अतिथि के द्वारा करवाया जाएगा।

(विमल वधावन)
महासम्मेलन सयोजक

स्वास्थ्य चर्चा

तक्र (छाछ) के गुण

– बशीलाल गोदान

तक्र को सस्कृत मे दण्डाहत कलिशेव अरिष्ठ गोरस एव हिन्दी मे छाछ मट्ठा मही आदि नामो से पुकारते है। क्रिया भेद से वह पाच प्रकार का होता है। यथा (१) घोल (२) मथित (३) तक्र (४) छाछ (५) उदश्वित।

१ **घोल** – बिना जल डाले मलाई सहित जो दही बिलाया जाए उसे घोल कहते है। इसमे शक्कर डाल कर पीने से यह वात पित्त नाशक है।

२ **मथित** – मलाई उतार कर अनोदक मथन किए हुए दधि को मथित कहते है। यह कफ पित्त को दूर करता है।

३ **तक्र** – दधि मे चतुर्थ भाग जल मिलाकर बिलोये हुए मे मक्खन निकाले हुए को 'तक्र कहते है इसमे बहुत से गुण है।

यथा – **तक्र ग्राही कषायाम्ल स्वादु पाक रस लघु।**

वीर्योष्ण दीपन वृष्य प्राणिना वातनाशनम्।। *निघटु*

अर्थ – तक्र ग्राही कषैला खटटा पाक और रसमे स्वादु तथा हल्का उष्ण वीर्य दीपन वीर्यवर्धक वात नाशक तथा ग्रहणी रोग मे हितकारक है। तक्र मे अम्ल रस होने से वात को नाश करता है। मधुर रस होने से पित्त को और कषाय रस से कफ को दूर करता है और भी अनेक रोगो का शमन करता है। यथा प्रमाण देखिये –

शोफोदरार्शो ग्रहणी दोष गृहारुचि।

प्लीहागुल्म घृत व्यापद् गरपाडवा भयाज्जयेत्।। *वाग्भट*

शोथ उदर रोग, अर्श (बवासीर) ग्रहणी मूत्र रोग अरुचि प्लीहा (तिल्ली) गुल्म छर्दि (उबकाई) पाण्डु आमरोग अतिसार प्रवाहिका (पेचिश) विशूचिका शूल मदात्यय पीडिका गलगण्ड अर्बुद, ददु, प्रदर तथा वात पित्त कफादि समस्त रोगो का नाश करता है।

४ **छच्छिका** (छाछ) – मलाई रहित दधि मे समभाग पानी मिलाकर मथे गये को छाछ कहते है। यह शीतल हल्की दीपन और लवण रस युक्त स्वादु तथा कफकारक वातपित्त तृषा श्रमादि रोगो को दूर करती है।

५ **उदश्वित** – आधा जल मिलाकर जिस दही को बिलोया जावे उसे उदश्वित कहते है। यह कफकारक भारी तथा आम नाशक है।

अब विभिन्न रोगो मे तक्र (मटठे) के विविध योगो का अवलोकन करिये।

१ वातरोगो मे खटटे–मटठे को सोठ व सैंधव लवण के साथ मिला कर लेवे।

२ पित्त रोग मे मधुर तक्र बूरा मिलाकर सेवन करे।

३ कफ रोगो मे छाछ को त्रिकुटा मिला पीना चाहिए। त्रिकुटा सोठ पीपल और मिर्च इन तीनो औषधियो को कहते हैं।

४ अतिसार के भयकर उपद्रव मे मही को आमकी गुठली और मिश्री डालकर पीना चाहिए।

५ सग्रहणी रोग मे विशेषत मट्ठे का उपयोग खाने पीने मे किया जाने पर आशुफल प्रद सिद्ध हुआ है।

६ बवासीर रोग मे मही को सैधानमक मिलाकर पीना चाहिए।

७ अजीर्ण रोग मे तक्र को सोठ मीर्च और सैंधानमक मिला पीना चाहिए।

८ शूल मे लाल मिर्च और पीपलामूल मिला हुआ तक्र पीना चाहिए।

९ हैजे मे छाछ को जौ के आटे और यवक्षार के बराबर चूर्ण सहित पीना चाहिए।

१० पाण्डु रोग मे मटठे को चित्रक डालकर पीना चाहिए।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

हरिद्वार महासम्मेलन के बाद
भ्रमण यात्राएं

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन का समापन **२८ अप्रैल** को होगा। अगले दिन **२९ अप्रैल सोमवार** को स्वभुगतान के आधार पर उन आर्यजनो के लिए हरिद्वार तथा आस पास के स्थलो को देखने हेतु परिवहन व्यवस्था भी उपलब्ध कराई जाएगी जो इसके इच्छुक होगे। यह भ्रमण यात्रा दो प्रकार की होगी।

(क) स्थानीय भ्रमण यात्रा

हरिद्वार तथा ऋषिकेश के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलो को दिखाने हेतु यह यात्रा प्रात काल **महासम्मेलन स्थल** से प्रारम्भ होगी और सायकाल तक वापस महासम्मेलन स्थल पर ही पहुचेगी।

(ख) मंसूरी भ्रमण यात्रा

सम्मेलन स्थल से यह यात्रा प्रात जल्दी रवाना होगी और रात्रि मे देर रात तक वापस सम्मेलन स्थल पर पहुचेगी। यह यात्रा **हरिद्वार ऋषिकेश देहरादून** और **मसूरी** के दर्शनीय स्थलो का भ्रमण करवाएगी।

आर्यजन उपरोक्त मे से जिस यात्रा मे पजीकरण कराना चाहेगे उसकी व्यवस्था के लिए एक अलग **पूछताछ केन्द्र** स्थापित होगा।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे आयोजित होगी
महत्वपूर्ण एवं दूरगामी प्रभाव वाली संगोष्ठियां

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे जहा एक तरफ मुख्य पडाल मे विभिन्न सत्रो के तहत वैदिक विद्वानो आर्य नेताओ एव राजनीतिक महानुभावो के विचार सुनने को मिलेगे वहीं कुछ महत्वपूर्ण गोष्ठियो का भी आयोजन किया जा रहा है। यह गोष्ठिया अपने आप मे विशेष और महत्वपूर्ण होगी।

आर्य कार्यकर्ता सगोष्ठी

देश विदेश के विभिन्न क्षेत्रो से पधारे आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ और पदाधिकारियो की दो विशेष सगोष्ठिया आयोजित की जाएगी। प्रथम सगोष्ठी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भवन मे २५ अप्रैल २००२ दोपहर १.३० बजे से ३.०० बजे तक आयोजित होगी जिसका विषय है – **"आर्यसमाज और हिन्दी सस्कृत सरक्षण"**।

इसी प्रकार की दूसरी सगोष्ठी भी विश्वविद्यालय के दीक्षात भवन मे २७ अप्रैल २००२ को दोपहर २.०० बजे से साय ६.०० बजे तक आयोजित होगी जिसका विषय है – **'आर्यसमाज की गतिविधिया नई दिशाए"**।

गुरुकुल आचार्य एव पूर्व स्नातक सगोष्ठी

यह विशेष सगोष्ठी विश्वविद्यालय के पर्यावरण विभाग के हाल मे २७ अप्रैल २००२ (शनिवार) को दोपहर बाद ३ से ६ बजे तक आयोजित होगी जिसकी अध्यक्षता डॉ० निरुपण विद्यालकार करेगे।

इस विशेष सगोष्ठी मे धर्म प्रचार मे गुरुकुल स्नातको की भूमिका तथा गुरुकुल शिक्षा पद्धति की एकरूपता पर विचार विमर्श होगा। इसके सयोजक आचार्य यशपाल जी होगे।

यति सगोष्ठी

आर्यसमाज की परम्परा और वैदिक सिद्धान्तो से ओत प्रोत वानप्रस्थी और सन्यासी महानात्माओ की भी एक विशेष सगोष्ठी २७ अप्रैल २००२ को दोपहर बाद ३ बजे से ६ बजे तक विश्व विद्यालय के प्रबन्धन हाल मे आयोजित होगी। इसकी अध्यक्षता स्वामी आत्मबोध सरस्वती (पूर्वनाम महात्मा आर्यभिक्षु जी) करेगे और सयोजन स्वामी सदानन्द जी दीनानगर करेगे। इस सगोष्ठी मे वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की भूमिका पर चर्चा होगी।

महिला सगोष्ठी

यह विशेष सगोष्ठी २७ अप्रैल २००२ (शनिवार) को साय ७ बजे से ८.३० बजे तक आयोजित होगी जिसकी अध्यक्षता श्रीमती राजेश शर्मा करेगी। श्रीमती उज्ज्वला वर्मा (दिल्ली) इस सगोष्ठी की सयोजिका होगी।

महासम्मेलन मे यजमान बनने के लिए आर्य दम्पत्तियों को आमन्त्रण

गुरुकुल शताब्दी आर्य महासम्मेलन के अवसर पर २५ से २८ अप्रैल तक चारो दिन राष्ट्रभृत यज्ञ प्रात ८ बजे से ६ बजे तक होगा। जिसमे २५ यज्ञ कुण्डो पर १०० यजमान प्रतिदिन आहुतिया देगे। जिसके उपरान्त प्रवचन और भजनोपदेश हुआ करेगे। इस राष्ट्रभृत यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति और वैदिक विद्वान परम आदरणीय आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री होगे। यज्ञ के तीनो पहलुओ – देवपूजा सगतिकरण और दान के लिए यथायोग्य आहुति देने मे जो आर्य दम्पति यजमान बनने के इच्छुक हो वे तत्काल अपना नाम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से यज्ञ समिति के सयोजक प्रा० भारत भूषण को सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे भेजे। महासम्मेलन के चारो दिवस पर आयोजित यज्ञ मे कुल ४०० यजमान बैठ पाएगे। अत प्रथम प्राप्त सूचना के आधार पर सम्पर्क करने वाले दम्पतियो को यजमान के रूप मे यज्ञवेदी पर बैठने के लिए अधिकृत किया जाएगा।

गुरुकुल महासम्मेलन में ग्रन्थों तथा प्रचार सामग्री का विमोचन

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार (२५ से २८ अप्रैल २००२) के विशाल आयोजन के अवसर पर जो विद्वान लेखक या प्रकाशक अपने नए प्रकाशित ग्रन्थो या अन्य प्रचार सामग्री का विमोचन कराना चाहते हो तो उसके ५ सेट विमोचन से एक दिन पूर्व गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सीनेट हाल मे स्थित महासम्मेलन कार्यालय मे अवश्य दे दे। सामग्री का वैदिक सिद्धान्तो के आलोक मे अवलोकन करने के बाद ही यह निश्चय किया जाएगा कि विमोचन किस समय और किस अतिथि के द्वारा करवाया जाएगा।

– विमल वधावन
महासम्मेलन सयोजक

स्टालों की बुकिंग प्रारम्भ

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे २५ से २८ अप्रैल के विशाल आयोजन मे पुस्तको तथा अन्य धार्मिक वस्तुओ एव अल्पाहार के स्टलो का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। अनुमानत यह स्टाल १०x१० फुट के होगे। इन स्टालो का चारो दिनो का शुल्क २५०० रु० निर्धारित किया गया है। जो महानुभाव अथवा प्रतिष्ठान अपने स्टाल इस सम्मेलन मे लेना चाहे वे २५०० रु० का ड्राफ्ट **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम ३/५, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली २** के पते पर १० अप्रैल से पूर्व भिजवा दे। जो महानुभाव दो स्टाल लेना चाहे वे ५००० रु० का ड्राफ्ट भेजे जिससे उन्हे दोनो स्टाल साथ साथ आवटित किए जा सके।

इन स्टॉलो मे दो बडी मेज दो कुर्सिया पखा तथा रोशनी का पूरा प्रबन्ध होगा। तीन तरफ की दीवारे और छत टीन की बनी होगी। स्टॉल बुक कराने के इच्छुक महानुभाव दिल्ली मे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा अथवा हरिद्वार मे कुलसचिव डॉ० महावीर जी से सम्पर्क करे।

आगामी सम्मेलन अपने आप में एक अद्वितीय सम्मेलन होगा जिसमें बहुत बडी सख्या मे आर्य जनता भाग लेगी। साहित्य के प्रचार का भी अनूठा अवसर होगा।

स्टालो का आवटन प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर होगा। अत यथाशीघ्र अपने स्टाल बुक करवाकर असुविधा से बचें। आपकी राशि एव आवेदन १० अप्रैल से पहले सभा कार्यालय मे अवश्य पहुच जाने चाहिए।

सम्बन्धित महानुभावो को आवटित स्टाल का नियन्त्रण २४ अप्रैल से उपलब्ध कराया जा सकेगा।

– विमल वधावन
महासम्मेलन सयोजक

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'हिन्दी' की महान् सेवा की

– डॉ० वेद प्रताप वैदिक

महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्पूर्ण भारत को हिन्दी के माध्यम से एकता के सूत्र मे बाधना चाहते थे। उनके कार्यकाल मे लगभग २०० हिन्दी पत्र निकलते थे हिन्दी पत्रकारिता महर्षि दयानन्द की देन है – ये विचार डॉ० वेदप्रताप वैदिक ने हिन्दी अकादमी एव आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वाधान मे 'स्वामी दयानन्द जयन्ती पर आयोजित सगोष्ठी मे राजेन्द्र भवन नई दिल्ली की एक सभा मे व्यक्त किए। इस अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा डॉ० शशि प्रभा कुमार डॉ० कृष्ण लाल स्वामी सत्यपति डॉ० परमानन्द पाचाल सुरेन्द्र कुमार रैली ने भी हिन्दी अकादमी व आर्य केन्द्रीय सभा की गोष्ठी मे भाग लिया।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मयूर विहार १, दिल्ली ९१

प्रधान – श्री महेन्द्र कुमार चाठली
उपप्रधान – श्री सूरज प्रकाश
श्री बलदेव राज शर्मा
मन्त्री – श्री अमीर चन्द्र रखेजा
उपमन्त्री – श्री सुरेश चन्द्र
श्री जितेन्द्र पाल सच्व्र
कोषाध्यक्ष – श्री कृष्ण लाल बुद्धिराजा
पुस्त० अध्यक्ष – श्री ओइम प्रकाश खेडा

इस पत्र में प्रकाशित लेखों और विज्ञापनों के सम्बन्ध में

॥ ओ३म् ॥

हरिद्वार चलो

हरिद्वार चलो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान मे

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे आयोजित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन



चैत्र शुक्ल 13 से वैशाख कृष्ण 1-2, सम्वत् 2059

25, 26, 27, 28 अप्रैल 2002

समारोह स्थल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्रद्धानन्द नगरी, हरिद्वार

निवेदक

कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	प० हरबस लाल शर्मा स्वागताध्यक्ष कुलाधिपति	विमल वधावन महासम्मेलन सयोजक
देवव्रत शर्मा सभा मत्री	प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री कुलपति	सुदर्शन शर्मा सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	डॉ० महावीर कुल सचिव	आचार्य यशपाल सभा उप प्रधान

कार्यालय : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3 /5 दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110 002

दूरभाष : (011) 3274771, 3260985 E-mail vedicgod@nda vsnl net in / saps@tatanova com

हरिद्वार कार्यालय . महासम्मेलन सयोजक, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-249404, (उत्तराचल)

दूरभाष . (0133) 414392, 416811, फैक्स : 415265

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 29 28/03/2002 दिनांक २५ मार्च से ३१ मार्च २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 29 2803/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

पृष्ठ ५ का शेष भाग

तक्र (छाछ) के गुण

११ अरुचि रोग मे तक्र मे सोठ राई जिरा और मूनी हिग को चूर्ण सैंधानमक के साथ मिलाकर पीना चाहिए।

१२ गदात्यय रोग मे मटठे को मिश्री के साथ पीना चाहिए।

१३ गुल्म रोग मे मटठे को अजयावन नमक और गुड समभाग मिलाकर पीने से शीघ्र ही मल मूत्र का सरण होगा।

१४ मूत्र कि रुकावट मे तक्र को जवाखार मिला कर पीने से पेशाब का निस्सरण शीघ्र होगा व पथरी रोग भी दूर होगा।

१५ पीडिका रोग वाले को मटठे मे तुलसी के पत्तो को मिलाकर सेवन करना चाहिए।

१६ प्लीहा (तिल्ली) रोग मे मही को राई व साभर हल्दी डालकर पीने से शीघ्र दूर होगी।

१७ प्रदर रोग मे तक्र को सैंधानमक और पीपल मिलाकर पीना चाहिए।

१८ प्रतिश्याय (जुकाम) पीनस मे गरम दूध की छाछ को जीरा नमक और अदरख मिलाके पीना चाहिए।

जो मनुष्य भोजन करने के पश्चात नित्य तक्र का सेवन करता है। उसे कोई रोग नही होता। प्रमाण देखिए –

न तक्र सेवी व्यथते कदाचि – छतक्रदग्धा प्रभवति रोगा।

यथा सुराणममृतहिताय तथा नराणा भुवि तक्रमाह ।।

अर्थ – तक्र का सेवन करने वाला मनुष्य कभी रोगी नहीं होता और तक्र से नष्ट किए हुए रोग फिर नही आते। स्वर्ग के सदृश ही मनुष्य को तक्र पृथ्वी पर उपलब्ध है।

किन्तु उर ज्ञत गर्मी के समय दुर्बल श्रमित मूर्छा भ्रम दाह रक्तपित्त और ज्वर वाले रोगी को तक्र अहित कर है। देखिये –

तक्र नैवक्षते दद्यान्नोष्ण काले न दुर्बले।
न मूर्छा भ्रमदाहे च न रोगे रक्त पित्तके।।२।।

आवश्यक सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा का दूरभाष नम्बर बदल गया है।

कृपया सम्पर्क के लिए 2161915 के स्थान पर 2371915 का प्रयोग करे।

श्री राजीव भाटिया मध्य दिल्ली के सह-संयोजक

दिल्लीवासियो को गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन हरिद्वार मे चलने के लिए प्रेरित करने एव प्रबन्ध हेतु श्री सोमदत्त महाजन के सयोजकत्व मे एक समिति का गठन किया गया है। जिसमे श्री राजीव भाटिया को मध्य दिल्ली का सह सयोजक नियुक्त किया गया है। भूलवश श्री भाटिया का नाम विगत सप्ताह आर्य सन्देश साप्ताहिक मे छूट गया था।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज गोविन्द भवन, दिल्ली ७

प्रधान	–	श्री राजकुमार आहूजा जी
उप प्रधान	–	श्री अशोक कुमार अरोडा जी
मन्त्री	–	श्री राजेन्द्र कुमार मदान जी
उप मन्त्री		श्री दीपक कुमार गुलाटी जी
कोषाध्यक्ष		ी शैलेन्द्र भारद्वाज जी

पृष्ठ १ का शेष भाग

इन सत्रो मे देश भर से लगभग ६० से भी अधिक वैदिक विद्वान उदबोधन देने के लिए आमन्त्रित किए गए हैं। निम्न सत्रो का निर्धारण स्वय मे ही विशाल प्रेरणाओ को समाहित करता है–

१ गुरुकुल सस्कृति सत्र २ आधुनिक युग मे वेद और विज्ञान सत्र ३ आधुनिक युग मे धर्म और आध्यात्मिकता सत्र ४ आधुनिक युग मे धर्म प्रचार का स्वरूप सत्र ५ आर्य परिवार सत्र (कर्त्तव्यवाद) ६ माता निर्माता भवति सत्र ७ राष्ट्र रक्षा सत्र ८ आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन सगोष्ठी ६ आर्य सन्यासी सम्मेलन सगोष्ठी १० पूर्व स्नातक सगोष्ठी ११ आर्य महिला सगोष्ठी।

इस महासम्मेलन के आयोजन के पीछे सार्वदेशिक सभा का प्रमुख उद्देश्य आर्यसमाज की विशाल ताकत को अनुशासन और कर्तव्य पालन के सूत्र मे बाधना है। आर्यसमाज का विगत १२५ वर्षो का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस महान सगठन के कर्णधारो ने देश और धर्म की रक्षा क लिए किसी भी बलिदान को बडा नहीं समझा।

वर्तमान भौतिकवादी युग मे कुछ अकर्मण्यता और सिद्धान्त विरोधी भटकाव आर्यसमाज के सगठन मे भी आया है। कुछ स्वार्थी लोग इस विशाल सगठन मे घुसकर इसके उद्देश्यो के विरुद्ध काम करते नजर आ रहे हैं।

यह सम्मेलन अनुशासन और कर्त्तव्यवाद की स्थापना किस हद तक कर पाएगा यह तो आने वाला समय ही बताएगा। परन्तु जिस प्रकार सत्रो तथा उनमे दिए जाने वाले उदबोधनो और पारित प्रस्तावो की तैयारी डॉ० महेश विद्यालकार आर्य तपस्वी सुखदेव कुलपति आचार्य वेदप्रकाश कुलसचिव डॉ० महावीर तथा सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य और मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की देख रेख मे जोर शोर से चल रही है उसे देखते हुए इस बात मे कोई सन्देह नजर नहीं आता कि इस महासम्मेलन के पीछे वैदिक विद्वानो की एक विशाल ताकत देश और धर्म रक्षा के लिए एक बार फिर महर्षि दयानन्द के विचारो को लेकर भारत को एक नई दिशा देने के लिए प्रयासरत है। दूसरी तरफ आयोजको की देख रेख मे दो दर्जन समितिया भाग लेने वाली धार्मिक जनता के लिए आवास परिवहन भोजन जल स्वच्छता चिकित्सा आदि की सुविधाए विशाल स्तर पर उपलब्ध कराने के लिए दिल्ली और हरिद्वार मे कार्य कर रही हैं। क्यो न हो –

यह महासम्मेलन आर्यों का एक कुम्भ ही तो है।

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (**दूरभाष** एव **फैक्स** ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष** ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक २० सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १ अप्रैल से ७ अप्रैल २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

गुरुकुल शिक्षा पद्धति में ही देश का भविष्य निहित है

— कैप्टन देवरत्न आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने समूची आर्य जनता को अधिक से अधिक सख्या मे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए २५ से २८ अप्रैल को हरिद्वार चलने का मार्मिक आह्वान करते हुए कहा है कि जिस प्रकार विगत १०० वर्षो मे महर्षि दयानन्द एव स्वामी श्रद्धानन्द के अनुयायियो ने लगभग २०० से अधिक गुरुकुलो की देश के विभिन्न भागो मे स्थापना की है उससे गुरुकुल शिक्षा पद्धति आर्यसमाज का पर्याय बनकर प्रदर्शित हुई है। इस गुरुकुल शिक्षा पद्धति रूपी सिद्धान्त को अब आने वाले समय मे और अधिक तेजी से प्रचारित प्रसारित एव स्थापित करने के लिए आर्यजनो को नए सकल्प लेने होगे।

कैप्टन आर्य ने कहा कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष १९०२ मे बेशक एक सस्था के रूप मे ही मानी गई हो परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी के त्याग तपस्या कर्मठता और उनकी दार्शनिकता ने इसे एक सस्था के बजाय एक सिद्धान्त के रूप मे स्थापित किया। आज इसी सिद्धान्त को प्रभावशाली ढग से अधिकाधिक गति के साथ समाज मे लागू करने की आवश्यकता है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन आर्य ने कहा कि अब तक स्थापित सभी गुरुकुलो को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त श्रेणी मे लाकर अधिक से अधिक सुविधाए दिलाने का भी प्रयास किया जाएगा। साथ ही साथ पाठयक्रम की एकरूपता भी सम्भव हो सकेगी। उन्होने विभिन्न गुरुकुलो के आचार्य और पूर्व स्नातको को आह्वान किया है कि अधिक से अधिक सख्या मे इस महासम्मेलन मे पहुचे और गुरुकुलो की विशेष सगोष्ठी मे भाग लेकर मार्गदर्शन दे तथा ले। उन्होने कहा कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति मे ही देश का भविष्य निहित है और इसीके द्वारा सबसे अधिक राष्ट्र सेवा सुनिश्चित की जा सकती है।

महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने कहा है कि इस महासम्मेलन के अन्तर्गत २७ अप्रैल को विभिन्न गुरुकुलो के आचार्यों एव पूर्व स्नातको की एक विशेष सगोष्ठी भी आयोजित की गई है जिसमे एकीकरण और एकरूपता तथा गुरुकुलो के माध्यम से वैदिक धर्म प्रचार प्रसार की काफी योजनाओ का क्रियान्वयन करने पर विचार किया जाएगा।

श्री विमल वधावन ने बताया कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य एव विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेदप्रकाश इस सम्बन्ध मे शिक्षाविदो से विचार विमर्श कर रहे है।

शेष भाग पृष्ठ ६ पर

गुरुकुल कांगडी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन, हरिद्वार के लिए

रेल किराए में ५० प्रतिशत की छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा रेल राज्य मन्त्री श्री दिग्विजय सिह को लिखे पत्र के फलस्वरूप रेलवे बोर्ड के डायरेक्टर श्रीमती मणि आनन्द ने अपने पत्र क्रमाक TCII/2066/98/6 दिनाक २५–३–२००२ के द्वारा मुम्बई कलकत्ता नई दिल्ली गुवाहाटी गोरखपुर चेन्नई सिकन्दराबाद भुवनेश्वर हाजीपुर इलाहाबाद जयपुर बगलोर तथा जबलपुर कार्यालय को सूचित किया है की २५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियो मे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे भाग लेने वाले यात्री मेल तथा एक्सप्रेस गाड़ियों में द्वितीय श्रेणी साधारण और स्लीपर के किराये मे ५० प्रतिशत छूट के अधिकारी होगे। यह छूट केवल ३०० कि०मी० से अधिक की यात्रा करने वालों को ही उपलब्ध होगी। इस छूट का लाभ किन्हीं ३० दिनो मे उठाया जा सकेगा जिसमे महासम्मेलन की तिथिया (२५ से २८ अप्रैल २००२) शामिल हो। यह छूट प्राप्त करने के लिए आर्य यात्री तत्काल **सार्वदेशिक सभा कार्यालय (फोन न० ३२७४७७१ ३२६०६८५), सार्वदेशिक प्रैस (फोन न० ३२७०५०७, ३२७४२१६) तथा श्री विमल वधावन (निवास ७२२४०६०, ७२१४०६०, मो० ९८११२२१०८३, ४०५६५७०)** पर अपना नाम लिखवाकर यह सूचित करें कि उनके साथ कितने महानुभावो को किस स्टेशन से यात्रा प्रारम्भ करनी है। यह सूचना मिलने पर तत्काल आर्य यात्री को सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा हस्ताक्षरित एक प्रमाण पत्र जारी कर दिया जाएगा। यह प्रमाण पत्र प्राप्त होने पर आर्य यात्री अपने निर्धारित रेलवे स्टेशन पर इसे प्रस्तुत करके ५० प्रतिशत छूट वाले रेलवे टिकट प्राप्त कर पाएगे।

— **विमल वधावन**, महासम्मेलन सयोजक

दिल्ली के अतिरिक्त गाजियाबाद, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, अमरोहा आदि क्षेत्रो में महासम्मेलन तथा हरिद्वार यात्राओं की विशेष तैयारिया

स्वामी श्रद्धानन्द जी की जन्म स्थली तलवन मे एक विशाल आर्य यात्रा अम्बाला और सहारनपुर होती हुई हरिद्वार पहुचेगी। सहारनपुर के आर्यजनो ने सर्वश्री राजाराम शास्त्री विद्यासागर बी०डी० गौतम राकेश शर्मा सारस्वत विनोद गुप्ता तथा कई अन्य महानुभावो की स्वागत समिति बनाई है जो इस यात्रा का सहारनपुर पहुचने पर स्वागत करेगी।

दूसरी यात्रा बरेली से प्रारम्भ होगी जहा महर्षि दयानन्द सरस्वती के दर्शन पहली बार स्वामी श्रद्धानन्द जी को हुए थे। यह यात्रा उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री जयनारायण अरुण के नेतृत्व मे प्रारम्भ होगी। इस यात्रा के सयोजक डॉ० अशोक आर्य हैं।

यह यात्रा बरेली से हरिद्वार पेसेन्जर रेल द्वारा होगी जिसमे हजारो आर्य नर नारी अपने अपने स्टेशनो से शामिल होगे और आर्यसमाज का उल्लेखनीय प्रचार होगा।

तीसरी यात्रा दिल्ली स्थित बलिदान भवन से प्रारम्भ होगी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने इस यात्रा का सयोजक श्री सोमदत्त महाजन को बनाया है जिनके साथ श्री पुरुषोत्तम गुप्ता जगदीश आर्य गोपाल आर्य राजीव भाटिया पतराम त्यागी विनय आर्य दयानन्द मदान बलदेव राज आदि को सहसयोजक बनाया गया है। इस यात्रा का मार्ग मे गाजियाबाद मुरादनगर मोदीनगर मेरठ तथा मुजफ्फरनगर आदि क्षेत्रो मे पहुचने पर भव्य स्वागत होगा।

यह यात्रा बहुत सारी बसो मे २४ अप्रैल २००२ को प्रात काल दिल्ली से रवाना होगी और सारा दिन प्रचार करते करते रात्रि मे हरिद्वार पहुचेगी। गाजियाबाद क्षेत्र मे सर्वश्री श्रद्धानन्द शर्मा हरप्रसाद पथिक जयपाल सिह आर्य सुभाष चन्द्र सिघल सुरेश चन्द्र गुप्ता चतरसिह माया प्रकाश दामोदर दास आर्य अनिल बजाज एव विश्वबन्धु आर्य आदि के नेतृत्व मे इस यात्रा मे शामिल आर्यो का स्वागत होगा।

मेरठ मे सर्वश्री स्वराज चन्द्र अशोक सुधाकर हरवीर सिह सुमन सुनील आर्य आदि सहित कई अन्य आर्यनेता इस यात्रा का स्वागत करेगे।

मुजफ्फरनगर मे श्री अरविन्द के नेतृत्व मे सर्वश्री रोशन लाल बत्रा सजीव चतरथ कृष्ण गोपाल सुभाष चन्द्र गुप्ता हरदत्त सतवीर आर्य सोराम सिह आर्य धर्मवीर वर्मा ऋषिपाल आर्य धर्मपाल सिह जगदीश सिह महेश सिघल आदि सहित कई आर्यनेता इस यात्रा का मुजफ्फरनगर मे स्वागत करेगे।

वेदों को प्रासंगिक बनाने से वेद प्रचार असम्भव

स्वामी अग्निवेश के मन्तव्य वैदिक सिद्धान्तों से विपरीत

— डॉ० सु०ब०काळे

लातूर मे सम्पन्न वैदिक सम्मेलन मे स्वामी अग्निवेश ने वेदो को प्रासगिक बनाने और आर्यसमाज का प्रचार प्रसार जनशक्ति आधार (मास बेस) पर करने पर बल दिया।

ये दोनो बाते प्रत्यक्ष मे परमात्मा की व्यवस्था एव उद्देश्यो के विरुद्ध है। वेद का ज्ञान यह हर हालत मे मानव मात्र के कल्याण हेतु है उसमे त्रिकालाबाधित शाश्वत जीवन–मूल्य एव शाश्वत तत्वज्ञान है और वह भी कल्याण के लिए है। आज मानव मात्र इनसे भटक गया है। इसलिए वह दुखी है। दुखी तो है पर दुख का रास्ता वह छोडना नही चाहता है। अब ईमानदारी की बात यह है कि आज भी वह यदि वेद के मार्ग पर चले तो सुख शाति एव आनन्द प्राप्त कर सकता है परन्तु स्वामी अग्निवेश लोगो को यह सही रास्ता न बताते हुए वेद को ही प्रासगिक बनाना चाहते है। वेद के शाश्वत तत्वो को छोडकर इन गलती करने वालो को भी वैदिक कहोगे तो कल्याण होगा ही नहीं इसके विपरीत वेद का ज्ञान भी दूषित होगा। एकाएक सर्वसाधारण लोगो को स्वामीजी की यह बाते बहुत अच्छी लगती है किन्तु ऐसे प्रयोग पौराणिक लोगो ने भी किए और कर रहे है। यज्ञ कर्मकाण्ड ईश्वर भक्ति सभी को गलत ढग से करते हुए तथा वेद को ही प्रासगिक बनाते बनाते आज वे जड पूजा जातिवाद मे फसे है। दुनिया मे वे धर्म के नाम पर कुकर्म कर रहे हैं तथा वेदमन्त्रो का उच्चारण करके स्वय को वैदिक बताते हैं तो क्या इससे कल्याण हुआ है ? कभी नही।

सावधान ! यदि ऋषि दयानन्द के अनुयायी भी वैसा ही करना चाहेगे तो निश्चित विनाश होगा। दयानन्द अकेले थे परन्तु ईश्वर की व्यवस्था के विपरीत उन्होने कुछ भी नहीं कहा और किया। ईश्वर के उद्देश्यो के साथ उनकी यह प्रामाणिकता थी।

आर्यसमाज को जनशक्ति के आधार पर आन्दोलन करना चाहिए ऐसा सुनते सुनाते ही हम बूढे हो गए। ये भी विचार मानव जीवन के कल्याण के उद्देश्यो से प्रामाणिक नहीं है। ये तो वोट की नीति से सभी से प्रशसा कर लेना है। सवाल है सत्यज्ञान और कल्याण का। जब तक सत्य को इन्सान जानेगा नहीं स्वीकारेग नहीं तथा आचरण मे उतारेगा नहीं तब तक कल्याण होगा ही नही। यह है परमात्मा की व्यवस्था और फिर इसमे भी आत्मा की स्वतन्त्रता है। मनुष्य की प्रवृत्तियो मे सुधार जादू की काण्डी के समान सम्भव नही। प्रवृति के सुधार के लिए तो अनेको जन्मो तक तप एव साधना करनी पडती है। जन्म जन्मान्तार की प्रवृत्तिया साथ रहती है। कर्मफल सिद्धान्त भी सुख–दुखो के कारण है। घोडे को पानी तक ले जा सकते हैं किन्तु पानी पीने के लिए उसे मजबूर तो नही कर सकते। वैसे ही मनुष्य सत्य ग्रहण करेगा या न करेगा इसमे उसकी स्वतन्त्रता है।

अब आर्यसमाज के द्वार सबके लिए खुले रखो ऐसा कहना व सुनना बहुत अच्छा लगता है पर द्वार बद कब थे ? सत्य को स्वीकारने की तैयारी ही नहीं और द्वार बन्द है ऐसा कहना बहुत ही गलत है। मुसलमान क्रिश्चयन पारसी जैन बौद्ध पौराणिक लोगो के विचार आचार वैसे के वैसे रखकर यदि उन्हे आर्यसमाज मे प्रवेश देकर अग्निवेशजी उनका और आर्यसमाज का हित करना चाहते हो तो ये कोई सत्य चिन्तन नहीं है। रोगी को रोगी रखोगे और केवल जगह या नाम बदलोगे तो वह स्वस्थ कभी होगा नहीं। स्वस्थ होना ही हो तो रोगो के कारणो का निवारण चाहिए। रोग का मूल कारण है अज्ञान और उसका उपाय है सत्यज्ञान एव विवेक। यह सब ज्ञान महर्षि दयानन्द ने वेद के आधार पर बता दिया और आपको आगे भी यही करने का आदेश आर्यसमाज इस सस्था के माध्यम से दिया। इन सब का पालन ईमानदारी से करे अन्यथा क्षमा नहीं होगी।

दलितो के मन्दिर प्रवेश के बारे मे स्वामी अग्निवेश ने नेतृत्व किया। क्या वह वेद का प्रासगिकरण था ? जातीयवादी लोगो को खुश करने के लिए मनु का विरोध किया क्या ये प्रासगिकरण था ? यदि दलितो को उस समय सही ईश्वर कहा है यह बताते और उस परमात्मा के मिलने के लिए यह शरीर सूक्ष्म शरीर कारण शरीर मिला है इसी माध्यम से भगवान के दर्शन करे आपको रोकने की किसी की ताकत नहीं होती यह सत्य बताते तो पौराणिको की पोल खुलती और दलितो की भी पोल खुलती तथा सभी को सही का पता चलता और वेद एव आर्यसमाज ही सही मार्ग है इसका ज्ञान होता। किन्तु मतलब रख के काम करना चूकि दलित भी सत्य को नहीं मानेगे फिर नेतृत्व कैसे होगा ? यह सोच के ऐसा करना ये पाप है तथा दुनिया को भटकाना है। स्वामी जी केवल सभी सत्य ही बतावे ! सत्याचरण ही करने हेतु कहे उसी मे कल्याण है। पहले से अच्छे लोग कभी भी जनशक्ति एव सख्यात्मक आधार पर अधिक नहीं होते। सूरज अकेला है प्रकाश सबको देता है। दयानन्द अकेला हुआ था जिसने सत्य को जानकर कल्याण का रास्ता बताया। वेद स्वय कहते है कि विद्वान तपस्वी लोग अकेले चलते है और अकेले चलकर ही योग्य व श्रेष्ठ बनकर सभी समाज मे वास्तव्य करेगे तब समाज का भला होगा। इसलिए महर्षि दयानन्द ने 'ससार का उपकार करना इतना बडा उद्देश्य तो रखा पर शुरुआत शारीरिक और आत्मिक उन्नति से की। व्यक्ति के बनने से ही समाज बनेगा। व्यक्ति को बनाए बिना कुछ बनेगा नही। गदगी करने वालो से गदगी साफ करने वाला ठीक तो होता है। पर गदगी ही न करने वाला इन दोनो से श्रेष्ठ है यह बताने की आज आवश्यकता है।

स्वामीजी ! आप जीवन भर इस प्रकार लोगो को कब तक भटकाते रहोगे ? वाणी अच्छी तभी होती है जब यह सत्य बोलेगी तथा कल्याण का बोलेगी। वक्तृत्व वही अच्छा है जिससे सत्य और कल्याण का रास्ता बताया जाए।

आर्यो ! चिन्तन करो। थोडा करो पर ठीक करो। थोडा बोलो ! पर ठीक बोलो ! समय एव समाज के विद्वान तथा जिज्ञासु लोग तथा आपका मूल्यमापन क्या करेगे यह देखो ! ईश्वर की व्यवस्था मे आत्मा का कल्याण सर्वोपरि है उसमे शरीर मन बुद्धि सभी का कल्याण है पर आज विश्व मे इसके विपरीत प्रयास चल रहे हैं वे यह है कि लोग आत्मा को छोडकर केवल शरीर एव बुद्धि का कल्याण करना चाहते है। व्यक्ति का कल्याण करना छोडकर समाज एव विश्व का कल्याण चाहते है। इसके पीछे ज्यादा लोग दौड रहे हैं। पर जो कल्याण होगा वह नहीं होगा। वेद कहता है 'नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय। वेदो को कल्याण मार्ग मे ही रखो प्रासगिक मत बनावो कर्मफल देने वाला ईश्वर है। असत्य यह असत्य ही होगा। बहुमत से असत्य को सत्य कल्याणकारी बनाया नहीं जा सकता। ईश्वर की व्यवस्था का विस्मरण न करे।

— मन्त्री महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

बोध कथा

शिक्षा के क्षेत्र में नई चेतना–नई क्रान्ति

उन दिनो शिक्षा की व्यवस्था सोलह आने सरकार के हाथ मे थी। नीचे से ऊपर तक शिक्षा का कारखाना सरकारी मशीन को बनाने और अग्रेजी माल के ग्राहक बनाने के लिए चले रहा था। भारतीय जनता मे राष्ट्रीय भावना की जागृति हुई और आत्म सम्मान जागा तो ऐसे शिक्षणालय मे स्थापित हुए जो सरकार की बनाई शिक्षा विषयक चारदीवारी से बिल्कुल बाहर थे ऐसे शिक्षाणालयो मे सरकारी साचे से बाहर शिक्षा देने का यत्न किया गया। हरिद्वार के गुरुकुल कागडी और बोलपुर के शान्ति निकेतन ऐसे ही शिक्षणालय थे।

गुरुकुल कागडी की स्थापना सन १९०० मे हुई थी। उसके सस्थापक महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द जी) थे। शान्ति निकेतन मे ललित कलाओ को प्रमुख स्थान दिया गया तो गुरुकुल कागडी मे प्राचीन सस्कृति के साथ साथ पाश्चात्य विज्ञान आदि विद्याओ मे अध्यापन पर अधिक बल दिया गया। हिम्मलय की उपासक मे गगा के किनारे गुरु शिष्य परम्परा के बल पर प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली पुनर्जीवित की गई। यद्यपि सस्कृति वाडमय को महत्ता दी गई थी परन्तु सभी प्राचीन अर्वाचीन विषयो का माध्यम हिन्दी को बनाया गया।

सस्था का प्रारम्भ फूस की झोपडियो मे चार श्रेणियो मे किया गया था परन्तु १९१६ मे उसने विश्वविद्यालय का रूप धारण कर लिया। उस समय वैदिक और अर्वाचीन सस्कृत भारतीय वाडमय की शिक्षा के साथ अर्वाचीन विज्ञान इतिहास कृषिशास्त्र आदि की शिक्षा दी जाती थी। प्राय सभी क्षेत्रो मे गुरुकुल के स्नातक सरकारी शिक्षणालयो से निकले डिग्रीधारी ग्रेजुएटो की तुलना मे भारतीय सस्कृति के प्रतीक बन गए। फलत प्राय सभी अशो मे गुरुकुल उस समय की प्रचलित शिक्षा प्रणाली मे विरुद्ध एक सफल प्रतिवाद था। जल्दी ही गुरुकुल कागडी की शैली पर गुरु शिष्य परम्परा के अनुसार वृन्दावन सूपा कुरुक्षेत्र मुल्तान आदि अनेक स्थानो पर गुरुकुलो और ऋषिकुलो की स्थापना हुई ये सभी सरकारी नियन्त्रण से सर्वथा मुक्त थे।

— नरेन्द

मातृभूमि समुन्नत हो हम भी उन्नत हों
अन्धकार से ज्योति की ओर बढे।
हम एक हो !

सा नो भूमिर्वर्धवद् वर्धमाना। *अथर्व १२/१/१३*
हमारी मातृभूमि समुन्नत हो हम भी उन्नत हों।
आरोह तमसो ज्योति । *अथर्व० ८/१/८*
अन्धकार से ज्योति की ओर बढो।
समानो मन्त्र । *ऋ० १०/१५१/४*
समान चिन्तन हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

एक उलझे प्रश्न के समाधान की प्रक्रिया

यह एक अच्छी बात है कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय की खण्डपीठ ने रामजन्मभूमि बाबरी मस्जिद के लम्बे उलझे मामले के जल्दी निपटारे की जरूरत महसूस की। न्यायालय की पूर्णपीठ ने आदेश दिया कि इस मामले की सुनवाई प्रतिदिन की जाएगी जब न्यायालय द्वारा सुनवाई नही होगी तब प्रतिदिन गवाहो के बयान विधिवत गठित आयोग करेगा। केन्द्र सरकार ने एक याचिका द्वारा उच्च न्यायालय से अनुरोध किया था कि वर्षो से चल रहे इस मामले के शीघ्र समाधान के लिए प्रतिदिन सुनवाई की जाए। यद्यपि इस याचिका पर आपत्ति की गई थी कि इस मामले मे केन्द्र सरकार कोई पक्ष नहीं है इस आपत्ति को ठुकराते हुए उच्च न्यायालय ने व्यवस्था दी कि अधिगृहीत भूमि का रिसीवर होने के नाते केन्द्र सरकार मामले के शीघ्र निपटारे का आग्रह कर सकती है। केन्द्र सरकार की ओर से उसकी आपत्ति का औचित्य बतलाते हुए कहा गया – यह एक बहुत गम्भीर मामला है और इस सारे मामले पर केन्द्र सरकार को भारी धनराशि खर्च करनी पड रही है। अयोध्या का विवाद इतना उलझ गया है कि उस पर आपसी सहमति प्राप्त करना मुश्किल सा हो गया है क्योकि उससे इतने विभिन्न दलो के राजनीतिक स्वार्थ जुडे हुए है वहा जितना बडा भूखण्ड है यद्यपि उसमे मन्दिर मस्जिद दोनो बन सकते हैं लेकिन यह दोनो सम्प्रदायो की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है वैसे यदि आपसी सहमति से यह जटिल मामला सुलझ जाता तो वह आदर्श स्थिति होती। ऐसी स्थिति मे न्यायालय के निर्णय को मानना दोनो पक्षो कानूनी मजबूरी है लेकिन विहिप के बयानो से यह आशका होती है कि वह अपने विरुद्ध हुए फैसले को मानने से इन्कार कर सकता है वैसी हालत मे तनाव मे स्थिति बनी रह सकती है। इस सारे मामले मे काची के शकराचार्य की मध्यस्थता इसलिए भी महत्वपूर्ण थी क्योकि उसमे पहली बार विहिप ने लिखित रूप से अदालत का फैसला मानने की लिए अपनी सहमति अभिव्यक्त की थी। उनका प्रयास विफल होने पर अब अदालत मे या बाहर मिल जुलकर इस उलझी समस्या के स्थायी समाधान का प्रयत्न करना होगा। उच्चतम न्यायालय मे उलझा हुआ मामला धूल चाट रहा था अब उच्चतम न्यायालय के निर्णय से इस सवेदनशील मुकदमे के शीघ्र निपटारे की भूमिका तैयार हो गई है। इस स्थायी समस्या के समाधान के लिए अब अदालत मे या बहार मिल जुलकर किसी निर्णय पर पहुचा जा सकेगा।

यह भी चिन्ता की बात है कि स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे महात्मा गाधी और महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मस्थली गुर्जर भूमि दु खद घटनाओ के फलस्वरूप झुलस उठा। साबरमती एक्सप्रेस मे यात्रा कर रहे तीर्थयात्रियो पर हजारो उपद्रवियो के हमले के विरोध मे २८ फरवरी को गुजरात बन्द रखा गया फलत सारा प्रदेश जल उठा। अहमदाबाद मे प्राणहानि हुई। बडौदा सूरत आदि अनेक नगरो मे लूटपाट हत्याए आगजनी की घटनाए घटी। कितने दु ख पीडा और विडम्बना की बात थी कि शान्ति भाईचारे और सौहार्द का अमर सन्देश देने वाले महर्षि दयानन्द और महात्मा गाधी की जन्मस्थली गुर्जर भूमि ही हिसा अराजकता और लूटमारी की दु खद स्थिति का शिकार बनी। गोधरा स्टेशन पर जिस तरह आतकवादियो ने साबरमती एक्सप्रेस मे यात्रा कर रहे तीर्थयात्रियो पर हमला किया रेलवे और नागरिक प्रशासन यदि उस सकट की घडी मे सचेत और सावधान होते तो न केवल दुर्घटना रोकी जा सकती थी प्रत्युत तीर्थयात्रियो का व्यापक जनसहार दूसरे भीषण जघन्य कृत्यो की रोकथाम भी हो सकती थी। जनता और प्रशासन की सामयिक सतर्कता न होने से गोधरा स्टेशन पर हुए आतकी आक्रमण के विरुद्ध प्रदेश भर मे साम्प्रदायिक हिसा भडक उठी। यह चिन्ता और दु ख की बात रही कि महर्षि दयानन्द और महात्मा गाधी की जन्मस्थली गुर्जर भूमि मे शान्ति व्यवस्था और सुरक्षा की प्रतिष्ठा के तात्कालिक दायित्व को निभाने के स्थान पर सम्बन्धित अधिकारी एक दूसरे पर दोषारोपण करने मे सलग्न रहे फलत वहा की अव्यवस्था उपद्रवो और आपसी तनाव के फलस्वरूप प्रदेश का साम्प्रदायिक सौमनस्य समाप्त हो गया। आपसी सघर्ष तनाव और मनमुटाव के फलस्वरूप राष्ट्र के विस्तीर्ण क्षेत्रो मे वर्तमान और भविष्य की स्थिति पर बुरा प्रभाव पडा है। यह भी चिन्ता और सकट की स्थिति है कि केन्द्र और प्रदेशो के प्रशासन मिल जुलकर शान्ति और सौहार्द का वातावरण बनाने के स्थान पर एक दूसरे पर दोषारोपण करने मे जुटे रहे थे।

स्वाधीनता प्राप्ति के ५५वे वर्ष मे साबरमती एक्सप्रेस पर हुए आक्रमण और उसके प्रत्युत्तर म हुए प्रत्याक्रमण सारे देश को सचेत सावधान कर रहे है कि इस प्रकार की तत्कालिक घटनाओ से देशवासी कभी उत्तेजित न हो वे आपसी वैमनस्य मे न पडे प्रत्युत ऐसी स्थिति और दूसरी राष्ट्रीय समस्याओ के लिए अधिक सयम विवेक और अनुशासन का सहारा ले। अयोध्या भारत के मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि और कर्मभूमि के रूप मे राष्ट्र और उसके निवासियो के लिए आकर्षण का स्थायी केन्द्र है यह प्रसन्नता का विषय है कि वहा की उलझन को सुलझाने के लिए उच्चतम न्यायालय ने एक प्रक्रिया अपनाई है आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि सभी सम्बन्धित पक्षो के आपसी सयम और सदव्यवहार से यह एक उलझा प्रश्न स्थायी समाधान प्राप्त कर सकेगा। इस प्रकार को तात्कालिक घटनाओ से उत्तेजित होकर आपसी वैमनसय क स्थान पर आपसी बातचीत से ये समस्याए सुलझाए और यत्न करे कि वे आपसी बातचीत विचार विमश से इस प्रकार की स्थायी व्यवस्था और प्रक्रिय अपनाएगे जिससे इस प्रकार की उलझने पैदा न ह और कभी अनचाहे वे भडक उठे तो उन्हे अधिक सयम विवेक और अनुशासन से सुलझाए। साथ ही इतिहास से सीख लेकर भारतीय सस्कृति कल साहित्य चिन्तन की उदात्त परम्पराओ से सीख लेकर उसे अतीत की तरह वैसे ही व्याप्त करने व प्रयत्न करे जैसे हमारे प्राचीन वैदिक बौद्ध पुरखो आपसी सौहार्द भाईचारे और विश्वबन्धुत्व के आधा पर वैदिक सस्कृति महात्मा बुद्ध के चिन्तन औ भारत की विश्वबन्धु की परम्परा को विश्व भर व्याप्त और विस्तीर्ण किया था।

चिट्ठी-पत्री

गुलाम मानसिकता

हजार वर्षों तक गुलामी काटने वाले भारत के पास अपना कहने को कुछ नहीं है। ऐतिहासिक इमारतो से लेकर बाग बगीचे और शहरो के नाम तक मुगल शासको की देन हैं या फिर अग्रेजो की इनायत। अयोध्या का नाम फैजाबाद तो तीर्थराज प्रयाग का नाम इलाहाबाद हो गया। बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी बनारस की तख्ती लगाए अपनी पहचान की मोहताज बन गई। आज अयोध्या की भूमि राम की नहीं है। हो सकता है कि कल यह विवाद खडा हो जाए कि भारत ? कैसा भारत ? किसका भारत ? कहा है भारत ? यह देश तो अग्रेजो की चेरी यानी इण्डिया है और यहा के निवासी इण्डियन है। हिन्दुओ का इस देश (आर्यावर्त) मे कुछ भी नहीं वह तो आज भी गुलाम है नाम से धाम से काम से। कहने की जरूरत नहीं कि इस तथाकथित लोकतन्त्र की वोट राजनीति मे क्यो पूरे देश की अस्मिता और खुद को दाव पर लगा रखा है।

– शिवदत्त बाधा बादा उत्तर प्रदेश

भट की इन्सानियत

षि मुनियो के इस पावन देश मे साम्प्रदायिकता का जो कैंसर लग गया है और धर्म के नाम पर जो हिसा हो रही है यह सब क्यो ? इसका कारण एक ही है। लोगो को सच्चा का ज्ञान नही है और न दिया जाता है। देश राजनीति ने अनजान जनता को बहकावे मे रखा और उसे विभाजित कर दिया है फिरकापरस्ती स सब देश की एकता का नारा लगाते है परन्तु क से उसे भिन्न भिन्न करने के करते है। किसी आजतक भारतीय मुसलमानो और दूसरे मतवा को यह नही बताया कि वे सब एक हिन्द मा के ब हैं सनातन ऋषियो मुनियो और पुरखो की सन्त है चाहे उनकी पूजा पद्धति कोई हो। यही एक स है और तरीका है – सब जातियो की एकता अ देश की अखण्डता का ।

– स्वामी असगचन्द भारत
हौजखास नई दिल

यजुर्वेद से – ईश्वर-देवता सप्तकम् (२)

ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना तीनों आवश्यक

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) मुझे त्रिभुवन के चेतन और जड सब देव शान्ति प्राप्त कराए

द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति पृथिवी शान्तिराप शान्तिरोषधय शान्ति। वनस्पतय शान्तिर्विश्वे देवा शान्ति ब्रह्म शान्ति सर्व शान्ति,

शान्ति रेव शान्ति सा मा शान्तिरेधि।।

यजु ३६–१७

दध्यड् आथर्वण। ईश्वर। शक्वरी।

अर्थ – हे ईश्वर ! आप ऐसी कृपा और व्यवस्था करे कि (द्यौ अन्तरिक्ष पृथिवी शान्ति) तीनो लोक मेरे लिए शान्तिकर हो मै जहा भी रहू, मेरा मस्तिष्क हृदय और शरीर शान्त रहे। मै कही किसी तरह अशान्त न होऊ। (आप ओषधय शान्ति) मेरे सब पेय और भोज्य पदार्थ मुझे शान्ति प्रदान करे। (वनस्पतय विश्वे देवा शान्ति) वन मे उगने वाले प्रसुप्त चेतन वृक्षादि और सूर्य चन्द्र अग्नि वायु इत्यादि अचेतन देव और सिह व्याघ्र तथा गाय घोडा इत्यादि चेतन प्राणी मेरे लिए शान्तिकर रहे। (ब्रह्म सर्व शान्ति) महतो महान ब्रह्म मेरे लिए सर्वत्र सदा सब प्रकार की शान्ति बनाए। (शान्ति रेव शान्ति) शान्ति भी मेरे लिए शान्ति बनाए (सा मा शान्ति रेधि) विशेष रूप से शान्ति की देवी ही शान्ति प्रदात्री बनी रहे। इस यन्त्र मे ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि जगत् का प्रत्येक पदार्थ वह चाहे चेतन हो चाहे प्रसुप्त चेतन हो या अचेतन मेरे लिए शान्तिकर बना रहे। लेकिन विचित्र बात यह है कि अन्त मे प्रार्थना है यह की गई है कि शान्ति भी हमारे लिए अशान्ति कर न बने।

(१) दार्शनिक सिद्धान्त (जर्मन विद्वान् हेगल द्वारा प्रतिपादित) यह है कि प्रत्येक गुण अपने चरम बिन्दु पर पहुचकर अपने से विपरीत वैसे ही परिवर्तित हो जाता है जैसे जल वाष्प मे और वाष्प जल मे परिवर्तित हो जाता है जैसे जल वाष्प मे और वाष्प जल मे परिवर्तित होते हैं। सत्य असत्य मे और अहिसा हिसा मे परिवर्तित हो जाती है इसलिए मनुष्य सदा चौकन्ना रहकर मध्यमार्ग पर चले।

(२) अहिसा सत्य अस्तेय और ब्रह्मचर्य आदि व्रतो का पालन भी मर्यादा मे करे

महात्मा गाधी, भीष्म पितामह युधिष्ठिर और अर्जुन की तरह अमर्यादित अति तक इन का पालन लाभ के बदले हानि करता है।

(२) हे ईश्वर ! मुझे इतना दृढ बनाए कि सब मित्र बनना चाहें, मैं उनकी मित्रता निभाऊ

दृते दृह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामी हे।। यजु० ३६-१८

दध्यड् आथर्वण। ईश्वर। जगती।

अर्थ – (दृते) सब प्रकार के दोषो और शत्रुओ का विदारण (विनाश) करने वाले ईश्वर ! (मा दृह) मुझे सब दृष्टियो से दृढ बना ताकि (मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि मा समीक्षन्ताम्) सब प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखे मित्र बनाना चाहे। (अह सर्वाणि भूतानि मित्रस्य चक्षुषा समीक्षे) क्योकि मै सब प्राणियो को मित्र दृष्टि से देखता हू। इस प्रकार हम सब परस्पर (मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे) मित्र दृष्टि से देखे।

निष्कर्ष – मनुष्य अपने से अधिक शक्तिशाली या गुणी व्यक्ति अथवा राष्ट्र को अपना मित्र बनाने की कामना करता है इसलिए अपने पडोसियो से मित्रता प्राप्त करने के लिए केवल मित्रभाव रखना पर्याप्त नही। उसके साथ ही उनसे अधिक शक्तिशाली गुणी और दृढव्रती होना आवश्यक है। दृते – दृविदारणे। दृह – दृहवृद्धौ–धारणे

(३) हे ईश्वर ! हमें निर्भय रख और मेरे आश्रितो का कल्याण कर

यतो यत समीहसे ततो मो अभय कुरु।

श न कुरु प्रजाभ्योऽभय न पशुभ्य।।

यजु ३६–२२

दध्यड् आथर्वण। ईश्वर। उष्णिक्।

अर्थ – हे ईश्वर ! आप (यत यत) जिस स्थान स्थिति व्यक्ति या प्राणी से (न समीहसे) हमे निर्भय करना चाहते है (तत न अभय कुरु) उन सबसे हमे निर्भय करे। (न प्रजाभ्य श कुरु) हमारे समकालीन मानवमात्र का कल्याण कर और शान्ति दे। (पशुभ्य न अभय कुरु) हिसक पशुओ तथा पाशविकवृति वाले दुष्ट जनो से हमे निर्भय करे।

निष्कर्ष – दोनो मन्त्रो पर एक साथ विचार करे तो स्पष्ट है कि यदि हम अपने और पडोसी देशवासियो का कल्याण चाहते हैं तो हम सबसे मित्रभाव रखते हुए इतने शक्तिशाली और दृढ हो कि कोई दुराचारी पशुवत् हिसक बनकर भी हमे न आतकित करे ओर नहीं अमित्र दृष्टि से देखने की भी हिम्मत करे।

(४) ईश्वर गर्भवत् सबमे व्याप्त होते हुए, सबके प्रेरक एव रक्षक हैं

गर्भो देवाना पिता मतीना पति प्रजानाम्।

स देवो देवेन सवित्रा गत स सूर्येण रोचते।।

यजु ३७–१४

दध्यड् आथर्वण। ईश्वर। अनुष्टुप्।

अर्थ – ईश्वर (देवाना गर्भ) दिव्यजनो के अन्त करण मे गर्भ सदृश अदृष्ट रहकर प्रेरणाप्रद (मतीना पिता) मननशील मेधावीजनो का रक्षक और (प्रजाना पति) उत्पन्न हुए प्राणीमात्र तथा प्रत्येक पदार्थ का अधिपति – स्वामी है। (देव) दिव्यगुण और कर्म वाला वह ईश्वर (देवेन सवित्रा सूर्येण स रोचते) दिव्य गुण वाले सर्वोत्पादक व सर्वप्रेरक सूर्य मे सभृक्त होकर स्वय प्रकाशित होता है और सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करता है (त सगत) उसकी उपासना करके उसके गुणकर्म स्वभाव को प्राप्त करने का प्रयत्न करो।

निष्कर्ष – परमेश्वर सब के उत्पादक रक्षक प्रेरक पालक और मार्गदर्शक हैं। उनकी सगति (उपासना) करके उनके जैसे बनने का प्रयत्न करे। इस मन्त्र के ऋषि शब्दार्थ सकेत करते है कि तत्सदृश बनने के लिए सदा उसका ध्यान करे। (दध्यड) तथा आत्मनिरीक्षण (अथ+अवडि) करते हुए अपने कर्त्तव्यो का अचल तथा नि सशय होकर पालन करे (अ+थर्वतिश्चरतिकर्मा चर सशये=नि सशय)

सूर्य आत्मा जगतस्थुषश्च।

यजु १३–४६

अगन्म स्व स्वरगन्म स सूर्यस्य ज्योतिषागन्म।

अथर्व १६–६–३

(५) एक बार ईश्वर का साक्षात् होने के बाद, वह कभी कहीं दृष्टि ओझल नहीं होते

अपश्य गोपाभनिपधमान्मा च परा च पथिभिश्चरन्तम्।

स सध्रीची स विषूचीर्वसान आवरीवर्ति भुवनेष्ठन्त।।

यजु ३७–१७

दीर्घतमा। ईश्वर। निवृत्त् त्रिष्टुप्।

अर्थ – (दीर्घतमा) अज्ञानान्धकार के विदीर्ण होने पर मै (आच पराच पथिभि चरन्तम्) समीप और दूर के मार्गे पर सर्वत्र विचरने वाले (अनिपधमान गौपा अपश्यम्) सर्वव्यापक होने से अचल तथा सर्वरक्षक ईश्वर को सर्वत्र अनुभव करता हू। (स सध्रीची विषूची वसान) वह सर्वथा सुलभ और विशेष श्रम से प्राप्त हुआ दुर्लभ सभी दशाओ को व्याप्त किए हुए (भुवनेषु अन्त आवरीवर्ति सब प्राणियो और लोको के अन्तर्तम मे विद्यमान हैं।

निष्कर्ष – सर्वव्यापक ईश्वर की अनुभूति के बाद जो व्यक्ति उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान के अनुरूप आचारवान् बनता है उसकी वह सदा रक्षा करते हैं और वह सदा उसके सखा बने रहते हैं।

(६) ईश्वर हमारे पिता हैं, हमें ज्ञान देते हैं, हमारी रक्षा करते हैं

पिता नोऽसि पिता नो बोधि नमस्तेअस्तु मा मा हिंसी। त्वष्टमन्तस्त्वा

सपेम, पुत्रान्पशून्मयि धेहि प्रजामस्मासु धेह्यरिष्टाह सह पत्या भूयासम्।।

दध्यड् आथर्वण। ईश्वर। निचृदतिजगती।

यजु ३७–२०

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

आत्मा का अनन्त स्वरूप

– सुश्री प्रतिभा आर्या

प्राणी मात्र सुख की खोज मे है। परन्तु प्रकृति के गुणो से उत्पन्न आवेश प्राणियो के शरीर मे इस प्रकार कार्य करते हैं कि उस सुख की प्राप्ति के लिए सभी प्राणी जो प्रयत्न करते है उसकी दिशा शरीर के बाहर की ओर रहती है। बाहर से ही कुछ हटाकर और कुछ सटाकर वह सुखी होने का प्रयत्न करते है। इन्द्रियो को उनके भोग प्रदान करके वे उनकी तृप्ति मे ही अपनी तृप्ति मानते हैं। मन मे बाहर का कूडा कचडा भरकर तद्विषयक मनोराज्य करके वे अपने को सुखी मानते है।

मनुष्यो और मनुष्येतर प्राणियो मे एक बडा अन्तर होता है कि मनुष्येतर प्राणियो मे जहा प्राप्त सुख मे सन्तोष अथवा तृप्ति है वहा मनुष्य मे उच्च से उच्चतर सुखो की उपलब्धि की आकाक्षा एव प्रयास है। मानव जाति का इतिहास इसी सुख विकास की ही कहानी हैं। परन्तु मनुष्य पाया क्या ? उसने धन इकटठा किया है। महल अटटालिकाए बनायी सजाई है। भोग विलास की सामग्री इकटठी की है और तद्विषयक अविद्यात्मक विधाए सग्रह की है। उसने सुख और तृप्ति का दम्भ किया है। जबकि उसका अन्तर अनन्त अभावो एव दीनताओ से ग्रस्त रहा है। उसे क्यो यह होश नही आता कि उसके सुख प्राप्ति के प्रयत्न की दिशा ही विपरीत है। ऐन्द्रिक सुख सुख नही सुखाभास है। सम्पदा का सुख सुख नही सुखाभास है। अभियान जन्य सुख नही पतन का प्राकरूप है। काम चाम दाम के सुख नहीं बन्धन के प्रारम्भ हैं।

वह सुख नही जिसमे भय है बन्धन है पराधीनता है और परिणाम मे रोना है। परन्तु यह तो विवेक है जो किसी धीर पुरुष की बुद्धि मे ही उत्पन्न होता है। ससार का सुख दुख इन्द्रियो को होता है। आत्मा को नही। जब मनुष्य यह समझ लेता है कि इन्द्रिया अलग है आत्मा अलग है। तब यह प्रतीति होने लगती है कि इन्द्रियो का दुख मैं अपने ऊपर आरोपित कर रहा हू। यह दुख आत्मा का नहीं है।

आर्यसमाज बनाया है

– राधेश्याम आर्य सुमन

मानवता का पाठ सिखाने आर्य वीर दल आया है।
ऋषि ने तिमिर हटाया जग का आर्यसमाज बनाया है।।

कलुष कालिमा नष्ट हो गई जाग गया उत्साह नया।
वेदों का शुचि ज्ञान सिखा के आलस्य-प्रमाद को दूर भगा।।

जागृति का आन्दोलन लोक आभा को बिखराया है।
ऋषि ने तिमिर हटाया जगका आर्यसमाज बनाया है।।

घोर तमिश्रा फैली चहुदिक भारत माता क्रन्दन करती।
आर्य-सपूतो ने मिल करके वेद ज्ञान फैलाया धरती।।

देश की आजादी की खातिर अपना खून बहाया है।
ऋषि ने तिमिर हटाया जग का आर्यसमाज बनाया है।।

दनुज वृति बढ गई धरा पर ऋषि ने फिर ललकारा है।
सभी विरोधी हुए पराजित आर्य बनो यह नारा है।।

त्राण दिलाया विधवाओ को प्रेम पसून खिलाया है।
ऋषि ने तिमिर हटाया जग का आर्यसमाज बनाया है।।

– इन्टरमीडियट कालेज थोरी पो० थोरी
सुलतानपुर (उ०प्र०)

इन्द्रियो से मन उत्तम है –

इन्द्रियेभ्य पर मन मनस सत्व उत्तमम्
सत्वात अधिमहान आत्मा महत अव्यक्त उत्तमम।

(कठोपनिषद के २ अ०)

मन से बुद्धि उत्तम है बुद्धि से आत्मा महान है। आत्मा से अव्यक्त अर्थात परमात्मा की अव्यक्त प्रकृति से सर्वव्यापक है।

जो मूर्ख है वे बाह्य सुखो की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते है। परन्त वे इस प्रकार मृत्यु के विस्तीर्ण पाश मे फस जाते हैं परन्तु धीर पुरुष अमृत्व को जानकर विनाशी पदार्थों मे अविनाशी को खोजने की इच्छा नही करते।

धन सम्पदा शिक्षा स्त्री पुरुष जो स्वय विनाशी है वे अविनाशी सुख कैसे दे सकते है ? मीरा की ये पक्तिया कितनी सजीव है –

एसे वर को क्या वरू जो जन्मै अरू मर जाये।
वर वरिये गोपाल जू, म्हारी चुडलो अमर हो जाये।।

छान्दोग्योपनिषद् मे ऋषि ने कहा कि मैने वेदो से लेकर ससार की सभी व्यावहारिक विधाए पढ डाली है परन्तु मेरा शोक निवृत्त नही हुआ।

तरति शोकमात्मविद् इति सोऽह भगव शोचामि त या भगवान शोकस्य पार तारयत्विति।

(छान्दोग्योपनिषद ७१३)

यह शोक मोह से पार होने और परमानन्दस्वरूप आत्मा की प्राप्ति करने का सकल्प ही किसी किसी के हृदय मे होता है फिर प्रयत्न और प्राप्ति तो अत्यन्त दुर्लभ ही है।

मै अपने आपको निसन्देह अल्प सम्पाद का जीवनधन अमृतधन मेघ अनुभव कर रही हू। बाह्य जगत मे तो जितनी सम्पदा इकटठी हो सकती है। वह भी सदैव अल्प ही होती है और वह भी विनाशी होती है। यहा तक कि समष्टि सम्पदा और आधिदैविक ऐश्वर्य भी अल्प और मृत ही होता है। क्योकि महाप्रलय मे तो सबका परमेश्वर मे लय होना ही है। सुषुप्ति मे मनुष्य सारी सम्पदा और अभिमानो को छोड देता है। प्रलय अथवा सुषुप्ति मे ये सारी सम्पदाए कहा चली जाती है ? श्रुति कहती है कि ये सब मन मे ही स्फुरित होते है और मन स्वय आत्मा का एक स्फुरण है। आत्मा मे मन के लय होने पर ये सब आत्मा मे ही लीन हो जाते हैं और मन के जाग्रत होने पर पुन उदय हो जाते है। इस प्रकार सम्पूर्ण सम्पदा का केन्द्र आता है जो इनके जन्म अथवा मृत्यु से अजन्मा एव अमृतरूप रहता है। आत्मा अनल्प सम्पद निवास है अमृतस्वरूप है। मृत्यु से पूर्व आत्मा है। अपनी मृत्यु का साथी कोई भी प्राणी नही हो सकता क्योकि वह स्वय मृत्यु का साक्षी है और साक्षी अमृत है।

नाम रूप देश द्रव्य सब सत आत्मा की विवर्त है। ज्ञान गीत शक्ति ये सब चित के विवर्त हैं। सुख आनन्द मोद प्रमोद ये सब आनन्द के विवर्त है। विवर्त अर्थात आत्मा ही इन सब रूपो मे प्रकट हो रहा है यहा अन्य नही है। सद्घन चिद्घन आनन्दघन सच्चिदानन्द अभाव अज्ञान दुख और मृत्यु के लिए कोई अवकाश नही है।

– कस्बा एलम, जिला मु० नगर

महासम्मेलन मे पधारने की पूर्व सूचना अवश्य दे

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में भाग लेने के लिए सभी आर्यबन्धुओं को सार्वजनिक रूप से आमन्त्रित किया जाता है। इस विशाल आयोजन मे बहुत भारी सख्या मे आयजनो के पहुचने का अनुमान है। आवास और भोजन की व्यवस्थाओ को भली प्रकार जुटाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आगन्तुको की पूर्व सूचना सभा कार्यालय मे दर्ज हो। इस आशय से यह निश्चय किया गया है कि प्रबन्ध अनुमान एव साहित्य शुल्क के रूप मे ५०/– रु० प्रति व्यक्ति भेजकर अपना-अपना नाम पजीकृत कराए। इस पजीकरण के आधार पर ही हम प्रबन्ध का अनुमान लगाने मे सक्षम हो पाएगे। आपके आने की सूचना तथा शुल्क राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे ३० मार्च तक पहुच जानी चाहिए।

जिन महानुभावो का पजीकरण नहीं होगा उन्हे यदि आवास आदि की सुविधा प्राप्त होने मे कुछ कठिनाई हो तो हम उनसे अग्रिम क्षमा प्रार्थी हैं।

पृष्ठ प्रथम का शेष भाग

गुरुकुल शिक्षा पद्धति में ही देश का भविष्य निहित है

उन्होने बताया कि इस महासम्मेलन मे यह प्रस्ताव पारित किए जाएगे कि देश के विभिन्न प्रान्तो मे अधिकाधिक गुरुकुलो की स्थापना योजनाबद्ध तरीके से की जाए।

गत वर्ष केन्द्रीय मन्त्री श्री मुरली मनोहर जोशी ने ससद मे शिक्षा बजट पर चर्चा के दौरान फरीदाबाद के सासद श्री रामचन्द्र बैदा के एक प्रश्न के उत्तर मे स्वीकार किया था कि आज तक सरकार ने सारे देश मे किसी गुरुकुल पर एक रुपया भी खर्च नहीं किया परन्तु साथ ही उन्होंने यह भी माना कि इस प्रकार की योजना बननी चाहिए।

महासम्मेलन मे एक लाख से भी अधिक आर्यजनो के सम्मिलित होने की सम्भावना हैं देश-विदेश से पधारने वाले आर्य समाज के पदाधिकारियों को इस बात के लिए प्रेरित किया जाएगा कि वे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त गुरुकुलों को स्थापित करने के प्रयास शुरू करे जिससे राष्ट्रसेवा के इस महान कार्य मे सरकारी सहयोग भी प्राप्त किया जा सके।

श्री वधावन के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के ही नही अपितु आधुनिक युग मे गुरुकुल शिक्षा पद्धति के जनक थे जिन्होने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में दिए गए निर्देशो के अनुसार प्रथम गुरुकुल आज से १०० वर्ष पूर्व कागडी ग्राम हरिद्वार में स्थापित किया था जिसकी नींव केवल गुरु-शिष्य परम्परा पर ही नहीं अपितु पिता-पुत्र तुल्य सम्बन्धो के आधार पर रखी गई थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी के अपने दोनो पुत्र इन्द्र एव हरिश्चन्द्र भी स्थापना काल से ही ब्रह्मचारी (शिक्षार्थी) रूप मे शामिल थे।

विगत १०० वर्षो मे गुरुकुल शिक्षा पद्धति ने अनेकानेक वैदिक विद्वान शिक्षाविद उच्च राजनीतिज्ञ दार्शनिक भाषाविद वैज्ञानिक अर्थशास्त्री चिकित्सक अधिवक्ता तथा उच्चकोटि के व्यापारी देश को अर्पित किए है। जब तक गुरुकुल शिक्षा पद्धति को देश का भविष्य नहीं समझा जाएगा तब तक उच्च चरित्र ईमानदारी देशभक्ति और राष्टसेवा के सिद्धान्त लडखडाते रहेगे।

हरिद्वार महासम्मेलन हेतु दिल्ली से बस सुविधाएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा के आदेश पर बनी सयोजक समिति ने दिल्ली के आर्यजनो की सुविधा के लिए विशेष बस सेवाओ का प्रबन्ध किया है जिनमे यात्रा करने वाले आर्यजनों को मार्ग में कई स्थानो पर स्वागत का आनन्द प्राप्त होगा।

बस यात्रा संख्या १

प्रस्थान – २४–४–२००२ प्रात ७ बजे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन नई दिल्ली से,

दिल्ली मे वापसी २८-४-२००२ रात्रि १० बजे

बस ३ X २ हेतु प्रति व्यक्ति किराया ४२५ रुपये (पजीकरण शुल्क सहित)

यात्रा का मार्ग में मेरठ मुजफ्फरनगर आदि में स्वागत होगा तथा भोजन का प्रबन्ध भी मार्ग मे होगा।

बस यात्रा सख्या २

प्रस्थान २४–४–२००२ साय ८ बजे

दिल्ली वापसी २८ ४-२००२ रात्रि १० बजे

बस ३ X २ हेतु प्रतिव्यक्ति किराया ३५० रुपये (पजीकरण शुल्क सहित)

सयोजको द्वारा निर्धारित समय पर ऋषिकेष तथा हरिद्वार आदि में स्थानीय भ्रमण कराया जाएगा।

अभी से अपनी बसों मे सीटे बुक कराकर स्थान सुरक्षित करे।

– सोमदत्त महाजन

स्टालों की बुकिंग प्रारम्भ

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे २५ से २८ अप्रैल के विशाल आयोजन में पुस्तकों तथा अन्य धार्मिक वस्तुओ एव अल्पाहार के स्टलो का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। अनुमानत यह स्टाल १०X१० फुट के होंगे। इन स्टालो का चारो दिनो का शुल्क २५०० रु० निर्धारित किया गया है। जो महानुभाव अथवा प्रतिष्ठान अपने स्टाल इस सम्मेलन में लेना चाहे वे २५०० रु० का ड्राफ्ट **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम ३/५, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२** के पते पर १० अप्रैल से पूर्व मिजवा दें। जो महानुभाव दो स्टाल लेना चाहें वे ५००० रु० का ड्राफ्ट भेजें जिससे उन्हे दोनों स्टाल साथ-साथ आवटित किए जा सकें।

इन स्टॉलों मे दो बडी मेज दो कुर्सिया पखा तथा रोशनी का पूरा प्रबन्ध होगा। तीन तरफ की दीवारें और छत टीन की बनीं होगी। स्टॉल बुक कराने के इच्छुक महानुभाव दिल्ली मे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा अथवा हरिद्वार मे कुलसचिव डॉ० महावीर जी से सम्पर्क करे।

आगामी सम्मेलन अपने आप में एक अद्वितीय सम्मेलन होगा जिसमें बहुत बडी सख्या में आर्य जनता भाग लेगी। साहित्य के प्रचार का भी अनूठा अवसर होगा।

स्टालो का आवटन प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर होगा। अत यथाशीघ्र अपने स्टाल बुक करवाकर असुविधा से बचें। आपकी राशि एव आवेदन १० अप्रैल से पहले सभा कार्यालय में अवश्य पहुच जाने चाहिए।

सम्बन्धित महानुभावों को आवटित स्टाल का नियन्त्रण २४ अप्रैल से उपलब्ध कराया जा सकेगा।

– विमल वधावन

महासम्मेलन सयोजक

हरिद्वार महासम्मेलन के बाद भ्रमण यात्राएं

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन का समापन **२८ अप्रैल** को होगा। अगले दिन **२६ अप्रैल सोमवार** को स्वभुगतान के आधार पर उन आर्यजनों के लिए हरिद्वार तथा आस-पास के स्थलों को देखने हेतु परिवहन व्यवस्था भी उपलब्ध कराई जाएगी जो इसके इच्छुक होंगे। यह भ्रमण यात्रा दो प्रकार की होगी।

(क) स्थानीय भ्रमण यात्रा

हरिद्वार तथा ऋषिकेश के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों को दिखाने हेतु यह यात्रा प्रात काल **महासम्मेलन स्थल** से प्रारम्भ होगी और सायकाल तक वापस महासम्मेलन स्थल पर ही पहुचेगी।

(ख) मसूरी भ्रमण यात्रा

सम्मेलन स्थल से यह यात्रा प्रात जल्दी रवाना होगी और रात्रि में देर रात तक वापस सम्मेलन स्थल पर पहुचेगी। यह यात्रा **हरिद्वार, ऋषिकेश देहरादून** और **मसूरी** के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करवाएगी।

आर्यजन उपरोक्त में से जिस यात्रा में पजीकरण कराना चाहेंगे उसकी व्यवस्था के लिए एक अलग **पूछताछ केन्द्र** स्थापित होगा।

महासम्मेलन में यजमान बनने के लिए आर्य दम्पतियों को आमन्त्रण

गुरुकुल शताब्दी आर्य महासम्मेलन के अवसर पर २५ से २८ अप्रैल तक चारों दिन राष्ट्रभृत यज्ञ प्रात ८ बजे से ६ बजे तक होगा। जिसमें २५ यज्ञ कुण्डों पर १०० यजमान प्रतिदिन आहुतिया देगे। जिसके उपरान्त प्रवचन और भजनोपदेश हुआ करेंगे। इस राष्ट्रभृत यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल विश्वविद्यालय के वर्तमान कुलपति और वैदिक विद्वान परम आदरणीय आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री होंगे। यज्ञ के तीनों पहलुओं – देवपूजा सगतिकरण और दान के लिए यथायोग्य आहुति देने मे जो आर्य दम्पति यजमान बनने के इच्छुक हों वे तत्काल अपना नाम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से यज्ञ समिति के सयोजक प्रा० भारत भूषण को सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे भेजे। महासम्मेलन के चारो दिवस पर आयोजित यज्ञ में कुल ४०० यजमान बैठ पाएगे। अत प्रथम प्राप्त सूचना के आधार पर सम्पर्क करने वाले दम्पतियों को यजमान के रूप में यज्ञवेदी पर बैठने के लिए अधिकृत किया जाएगा।

सार्वदेशिक न्याय सभा के सदस्य श्री अरूण आर्य को पितृशोक

सार्वदेशिक न्याय सभा के माननीय सदस्य श्री अरूण आर्य के पिता श्री का दुखद देहावसान २ अप्रैल को रात्रि ६ बजे मन्दिर मार्ग स्थित आवास पर हो गया। वे ८२ वर्ष के थे। विगत् कई वर्षों से रोग पीड़ित होने पर भी सदैव हसमुख रहकर परिजनो को सुख प्रदान करते थे। उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पचकुईया रोड़ स्थित श्मशान घाट पर हुआ।

सार्वदेशिक सभा की तरफ से श्री विमल वधावन ने उनके निवास पर जाकर शोक सतप्त परिवार के प्रति सम्वेदना व्यक्त की।

दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए यज्ञ एव शोक सभा का आयोजन ५ अप्रैल को आर्यसमाज मन्दिर मार्ग पर हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सम्पूर्ण आर्यजगत की ओर से श्री अरूण आर्य को सान्त्वना व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान हो और परिजनो को इस वियोग का दारूण दुःख सहन करने का सामर्थ्य प्राप्त हो।

इस पत्र में प्रकाशित लेखों और विज्ञापनों के सम्बन्ध में

साप्ताहिक आर्यसन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है। यह साप्ताहिक पूर्णतः दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नीतिगत एव सैद्धान्तिक पक्ष को ही उजागर करता है। परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियो में वैदिक विद्वानों के विचारार्थ प्रस्तुत करने के लिए अन्य सामग्री भी प्रकाशित की जा सकती है। साप्ताहिक आर्यसन्देश में प्रकाशित दान आदि की अपीलों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का निवेदन या निर्देश न समझा जाए। – सम्पादक

॥ ओ३म् ॥

हरिद्वार चलो — हरिद्वार चलो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान मे

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे आयोजित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन



चैत्र शुक्ल 13 से वैशाख कृष्ण 1-2, सम्वत् 2059

25 26 27 28 अप्रैल 2002

समारोह स्थल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्रद्धानन्द नगरी, हरिद्वार

निवेदक

कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	**प० हरबंस लाल शर्मा** स्वागताध्यक्ष कुलाधिपति	**विमल वधावन** महासम्मेलन संयोजक
देवव्रत शर्मा सभा मंत्री	**प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री** कुलपति	**सुदर्शन शर्मा** सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	**डॉ० महावीर** कुल सचिव	**आचार्य यशपाल** सभा उप प्रधान

कार्यालय · सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3 /5 दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-110 002
दूरभाष : (011) 3274771, [illegible] E-mail vedicgod@nda vsnl net.in / saps@tatanova com
हरिद्वार कार्यालय · महासम्मेलन संयोजक, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-249404, (उत्तरांचल)
दूरभाष : (0133) 414392, 416611, फैक्स · 416265

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 4-5/04/2002 दिनांक १ अप्रैल से ७ अप्रैल, २००२ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002, 4-5/04/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

[illegible]—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

स्मरण-पत्र दिनाक ५-४

अत्यावश्यक परिपत्र

आर्यसमाज के अधिकारियों की सेवा में नम्र निवेदन

मान्यवर,
सादर नमस्ते।

आर्यसमाज का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च, २००२ को समाप्त हो गया है। आप आगामी वर्ष के लिए वार्षिक साधारण सभा की बैठक विधानानुसार आर्यसमाज के नियमों-उपनियमों के अनुसार ३१ मई, २००२ तक अवश्य आयोजित कर लें तथा आगामी वर्ष के अधिकारियों, आर्य वीर दल के अधिष्ठाता तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों का निर्वाचन, यदि गत वर्ष न किया गया हो, तो कर लें। आपकी आर्यसमाज की ओर से प्रथम दस सभासदों पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदो पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है, जिनकी आयु २५ वर्ष से कम न हो और जो किसी आर्यसमाज में सदाचारपूर्वक दो वर्षो तक सभासद् अंकित रहे हों।

सदाचार की परिभाषा - "सन्ध्या आदि नित्य कर्म, शुद्ध वृत्ति, वैदिक सस्कार, पत्नीव्रत या पतिव्रत आदि सदाचार हैं। व्यभिचार, मद्यादि मादक द्रव्यों और मासादि अभक्ष्य पदार्थो का सेवन, जुआ, चोरी, छल-कपट, रिश्वत आदि दुराचार हैं।"

१५ मई, २००२ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय में भिजवाने की कृपा करें -

१ १ अप्रैल, २००१ से ३१ मार्च, २००२ तक का वार्षिक विवरण -
(क) यज्ञ, सस्कार, शुद्धिया, अन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय, साधारण रीति एव बिना दहेज कराए गए विवाहों का तथा समारोहों का विवरण।
(ख) आर्यसमाज के अधीन चल रही सस्थाओं, विद्यालयों, चिकित्सालय, पुस्तकालय, सेवा समिति, आर्य वीर दल आदि का विवरण।
(ग) आर्यसमाज में सेवारत धर्माचार्य/पुरोहित का नाम, योग्यता, आयु तथा अनुभव।
(घ) वार्षिकोत्सव किन तिथियों में सम्पन्न हुआ?
२ १ अप्रैल, २००१ से ३१ मार्च, २००२ तक का आय-व्यय विवरण।
३ सदस्य-सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वय बना लें — क्रम सख्या, सदस्य का नाम, पिता का नाम, पता, आयु, वर्ष भर में प्राप्त सदस्यता शुल्क तथा दूरभाष नम्बर।
४ सदस्यता शुल्क का दशाश वेद प्रचार राशि और आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ७५/- रुपये अथवा आजीवन शुल्क ५००/- रुपये।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध में यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपनी आर्यसमाज का सहयोग प्रदान करें।

धन्यवाद भवदीय

वैद्य इन्द्रदेव
महामन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज धार, मध्य प्रदेश

प्रधान	श्री मनोहर लाल वर्मा
मन्त्री	श्री चन्द्रशरण भार्गव
कोषाध्यक्ष	श्री विश्वकान्त शुक्ल

राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं एकता के लिए हिन्दी अपनाइए।

पृष्ठ ४ का शेष भाग

अर्थ – हे ईश्वर! (न पिता असि) हमारे पिता के समान रक्षक है (न पिता बोधि) इसलिए हमे पिता के समान बोध दे। (तेनम अस्तु) आपको मेरा वन्दन है (मा मा हिसी) आप मुझे कभी पीडित न करें तथा दूसरो के प्रति भी पीडाप्रद न होने दे। हम (त्वष्टृमन्त त्वा सपेम) वायु के सदृश प्रगतिशील रहते हुए सदा आपके साथ सम्बद्ध रहे। फलत (पुत्रान् पशून मयि धेहि) सन्तान तथा गाय इत्यादि पशु मुझे दे (अस्मासु प्रजा धेहि) हम सब मानवो को यथा योग्य सन्तान और भोग्य पदार्थ धारण कराए। (अह पत्या सह अरिष्टा भूयासम्) मैं आप जगदीश्वर के साथ रहते हुए सब दुखो से बचू। मेरे पास कोई दुख न आए।

निष्कर्ष – पितुर्न पुत्रा क्रतु जुषन्त श्रोषन् ये अस्य शास तुरास।।
ऋ० १–६८–६

जो परमेश्वर के आदेश को मानते हैं उनके सकल्प पूरे हो जाते हे।

(७) आप समृद्धि, दीप्ति और तेज के भण्डार हैं, मुझे भी इनका अंश दें

एधो ऽस्येधिषीमहि समिदसि तेजोऽसि तेजोमयि धेहि।।
यजु ३८–२५

दीर्घतमा। ईश्वर। साम्नी पङ्क्ति।

अर्थ – हे ईश्वर! आप (एध असि) आप स्वय समृद्ध हैं और सब को समृद्ध देखना चाहते हैं अत (एधिषीमहि) हम भी आप की कृपा से समृद्ध हो। आप (समिद् असि) स्वय प्रदीप्त और सबको प्रदीप्त करने वाले तथा (तेज असि) तेजस्वरूप हैं अत (मयि तेज धेहि) मुझे भी तेज देकर तेजस्वी बनाए।

इस मन्त्र का भाष्य स्वामी दयानन्द ने निम्न दिया है –
यथेन्धनेन घृतेन चाग्नेर्ज्वाला वर्धते तथैवोपासितेन जगदीश्वरेण योगिनामात्मा न प्रकाशिता भवन्ति।

जैसे ईंधन और घृत से अग्नि प्रदीप्त होती है वैसे ही ईश्वर की उपासना से योगियो के आत्मा और मन प्रदीप्त होते हैं।

– **श्यामसुन्दर, राधेश्याम, ५२२, कटरा, ईश्वर भवन, खारीबावली, दिल्ली-६**

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित **सार्वदेशिक प्रेस**, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष** ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक २१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०२ विक्रमी सम्वत् २०५८ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १५ अप्रैल से २१ अप्रैल २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

महासम्मेलन रुपी महायज्ञ में अपनी अमूल्य आहुति प्रदान करें

हरिद्वार चलो का वातावरण सारे देश में आर्यों को प्रेरित कर रहा है

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन मे भाग लेने के लिए आर्यजनो मे विशेष उत्साह का सचार दिखाई दे रहा है। देश के सभी हिस्सो से छोटे–बडे समूहो मे पहुच रहे लगभग २० हजार से अधिक रेलवे छूट के फार्म सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी के हस्ताक्षरो से देश के विभिन्न भागो मे भेजे गए हैं। यह फार्म हरिद्वार से ३०० कि०मी० से अधिक की यात्रा करने वाले यात्रियो के लिए ही है। ३०० कि०मी० के दायरे मे हरिद्वार का एक तरफ का किराया लगभग १५०/– रुपये है अत ३०० कि०मी० की दूरी तक रहने वाल आर्य जन तो केवल मात्र तीन चार सौ रुपये प्रति व्यक्ति खर्च करके इस ऐतिहासिक महासम्मेलन मे भागीदार बन सकते है। ऐसा सुअवसर जीवन मे फिर कब मिलेगा।

३०० कि०मी के दायरे मे गाजियाबाद मेरठ मुजफ्फर नगर सहारनपुर अम्बाला राजपुरा फगवाडा मुरादाबाद बरेली अलीगढ बुलन्दशहर अल्मोडा नैनीताल आदि जिले शामिल हैं। इन क्षेत्रो से पधारने वाले आर्य जन अधिक से अधिक सख्या मे पहुचे। और अपने साथ गैर आर्यसमाजी जनता को भी चलने के लिए प्रेरित करे।

अपने साथ इस आयोजन के लिए विशेष रूप से तैयार बैनर आदि अवश्य रखे और इन्हे अपने वाहनो के बाहर प्रदर्शित भी करे। बेशक ये वाहन रोडवेज की बसे अथवा रेलगाडिया ही क्यो न हो।

आर्यजन अपने साथ एक लम्बी चेन ताला–चाबी तथा टार्च अवश्य रखे तो अच्छा रहेगा।

हम परमपिता परमात्मा से प्राथना करते है कि इस आयोजन के प्रबन्ध मे लगे समस्त आर्य महानुभावो को चाहे कितने ही कष्ट आए परन्तु वे कष्ट इस आयोजन मे बाधा न बने और सब आर्यजन मिलकर आगन्तुक आर्यजनो की हर सम्भव सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहे। ईश्वर हम सबको सामर्थ्य और शक्ति प्रदान करे।

इसी प्रकार की प्रार्थना मै आगन्तुक आर्य बन्धुओ से करना चाहता हू कि इस महासम्मेलन को एक विशाल यज्ञ समझकर उसमे अपनी उपस्थिति और सहयोग रूपी आहुति प्रदान करने की नीयत से पधारे।

यज्ञ के दौरान कभी कभी हाथ भी जलते हैं और अग्नि का ताप भी कष्ट देता है।

परमपिता परमात्मा सारे कष्ट सहने की शक्ति और सामर्थ्य हमे प्रदान करे। इन्हीं भावनाओ के साथ इस महायज्ञ का आयोजन गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के नाम से किया जा रहा है।

आपके सेवक

कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	**प० हरबस लाल शर्मा** स्वागताध्यक्ष कुलाधिपति	**विमल वधावन** महासम्मेलन सयोजक
वेदव्रत शर्मा सभा मन्त्री	**प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री** कुलपति	**सुदर्शन शर्मा** सभा उप–प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	**डॉ० महावीर** कुल सचिव	**आचार्य यशपाल** उप प्रधान

पाठ्य पुस्तकों के कानूनी सग्राम मे सार्वदेशिक सभा ने भी याचिका प्रस्तुत की

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा निदशालय द्वारा स्कूली पुस्तको मे कुछ परिवर्तनो के विरोध मे उच्चतम न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत याचिका मे आर्यसमाजो की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल श्री विमल वधावन तथा एम० ए० चिन्ना स्वामी आदि ने भी दखल याचिका प्रस्तुत करते हुए सुनवाई की माग की। यह याचिका सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य की ओर से प्रस्तुत की गई थी।

श्री रामफल बसल वरिष्ठ अधिवक्ता ने अदालत के प्रश्न का जवाब देते हुए कहा कि आर्यसमाज के हजारो स्कूल कालेज और गुरुकुल चल रहे हैं जो केन्द्र सरकार की शिक्षा नीति से सम्बन्धित है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नई पुस्तको की बिक्री पर रोक लगाए जाने से सारे देश मे इस वक्त माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था मे एक शून्यता सी आ गई है। अत सर्वोच्च न्यायालय मे चल रही याचिका मे आर्यसमाज के पक्ष को भी सुना जाना चाहिए।

खण्डपीठ के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति भरुचा ने आदेश दिया कि इस याचिका की सुनवाई निकट भविष्य मे कोई अन्य पीठ करेगी और यह दखल याचिकाए उसी अदालत के समक्ष प्रस्तुत की जाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा क वरिष्ठ उपप्रधान एव अधिवक्ता श्री विमल वधावन ने सर्वोच्च न्यायालय के आदेश से उत्पन्न स्थिति पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि विद्यार्थियो का नया शैक्षणिक सत्र १ अप्रैल से प्रारम्भ हा चुका है और इस प्रकार पुस्तको के अदालती लडाई मे फस जाने से शिक्षा व्यवस्था को व्यापक क्षति पहुचेगी। अत उन्होने सर्वोच्च न्यायालय से शीघ्र निर्णय की प्रार्थना की है।

उन्होने कहा कि विगत ५० वर्षों मे सरकारो ने शिक्षा के मूल मे कभी गहन विचार नहीं किया। इतिहास की पुस्तके लिखने वाले वेद मन्त्रो की व्याख्या नहीं कर सकते। उन्हे वेद पढने और समझने की योग्यता ही नहीं। ऐसे व्यक्तियो द्वारा वेद मे गौ मास लिखे जाने की बाते करना हास्यास्पद है। ऐसे ही लोगो ने सारी शिक्षा व्यवस्था को अदालत मे फसा दिया है। ऐसे मे अदालतो को सामान्य प्रक्रिया के आधार पर धीमी गति से कार्य नहीं करना चाहिए। शिक्षा मे यदि केन्द्रीय सरकार ने कोई परिवर्तन किया है तो समूचे बहुसख्यक समाज की भावनाओ का सम्मान करने के लिए। सर्वोच्च न्यायालय को प्रक्रियावादी न बनकर सच्चा न्यायवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

– जन सम्पर्क अधिकारी

यजमानों से निवेदन

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के चारो दिन की दिनचर्या प्रात ७ ३० बजे से यज्ञ द्वारा प्रारम्भ की जाएगी। जिसके ब्रह्मा आचार्य वेदप्रकाश जी होगे। यज्ञ के लिए २५ हवनकुण्डो का प्रबन्ध किया जाएगा। जिन पर प्रतिदिन १०० यजमान बैठेगे।

यजमानो से निवेदन है कि न्यूनतम ११००/– रुपये की राशि दान मे अवश्य प्रदान करे इससे अधिक भी यदि सामर्थ्य हो तो उनका स्वागत है। यह राशि भी महासम्मेलन रूपी इस विशाल महायज्ञ मे एक अमूल्य आहुति साबित होगी। – **डॉ० भारतभूषण सयोजक यज्ञ-समिति**

असामाजिक तत्वों के भ्रामक प्रचार से सावधान रहें

कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य एव मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा के विरुद्ध अनर्गल बातों एव धमकियों से भरे पत्र अनाम भेजे जा रहे है। आर्यजनता ऐसे भ्रामक प्रचार को महत्व न दे।

यदि किसी व्यक्ति को कोई तथ्य व्यक्त करना ही हो तो उसे स्पष्ट रूप में अपने नाम से पते सहित पत्र व्यवहार करना चाहिए। सार्वदेशिक सभा में सदैव आर्यजनो के सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

— विमल वधावन

आर्यरत्न सम्मान से सम्मानित स्वामी सर्वानन्द

रविवार दिनाक २४ मार्च २००२ का दोपहर १०० बजे डा० वसन्तराव देशपाण्डे सास्कृतिक सभा गृह सिविल लाइन्स नागपुर मे राव हरिश्चन्द्र आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान मे प्रथम आर्य रत्न सम्मान समर्पण समारोह हर्षोल्लास क साथ मनाया गया। यह सम्मान समारोह पूजनीय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (झज्जर) की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। प्रमुख अतिथि समर्पण शोध सस्थान के सस्थापक पूजनीय स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य भी इस अवसर पर विशेष रूप से आमन्त्रित थे।

वयोवृद्ध आर्य जगत के मूर्धन्य वीतराग सन्यासी तथा पजाब राज्य के दीनानगर स्थित दयानन्द मठ के सचालक एक सौ दो वर्षीय पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती को प्रथम आर्य रत्न सम्मान राव हरिश्चन्द्र चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से प्रदान किया गया। स्वामी सर्वानन्द जी के उत्तराधिकारी स्वामी सदानन्द जी ने उनकी ओर से यह पुरस्कार ग्रहण किया। वृद्धावस्था के कारण स्वामी सर्वानन्द जी उक्त समारोह मे उपस्थित नहीं हो सके।

प्रथम **आर्य रत्न सम्मान** स्वरूप स्वामी जी को राव हरिश्चन्द्र आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से हरिश्चन्द्र आर्य एवम उनकी धर्मपत्नी शान्तिदेवी आर्या तथा कैप्टन देवरत्न आर्य ने रुपये एक लाख का ड्राफ्ट शाल श्रीफल स्मृतिचिन्ह एव अभिनन्दन पत्र स्वामी सर्वानन्द जी के शिष्य एव उत्तराधिकारी स्वामी सदानन्द जी को सुपुर्द किया।

तत्पश्चात अपने गुरु स्वामी सर्वानन्द जी का सन्देश प्रस्तुत करते हुए उन्होने कहा कि स्वामी जी की इच्छा है कि सम्मान स्वरूप प्राप्त धन राशि का उपयोग दयानन्द मठ के कार्य मे नहीं बल्कि उनके आदेशानुसार वेद प्रचार के कार्यो मे किया जाए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने अपने प्रारम्भिक उद्बोधन मे कहा कि स्वामी सर्वानन्द जी का जन्म हरियाणा के रोहतक जिले मे १६०१ को हुआ। श्री रामचन्द्र उनका पहल का नाम था। सस्कृत भाषा पर अपनी पकड जमाकर प्राध्यापक के रूप मे उन्होने काम शुरू किया।

दिल्ली के परेड मैदान मे सम्पन्न होने वाले आर्य महासम्मेलन मे उनकी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से अचानक भेट होने पर स्वामी जी ने रामचन्द्र को अपना शिष्य चुना और १६५५ मे मुम्बई अस्पताल मे उपचार के दौरान दयानन्द मठ दीनानगर के उत्तराधिकारी के रूप मे नियुक्त कर उनका नाम सर्वानन्द रखा गया। तत्पश्चात उन्होने स्वामी वेदानन्द जी स सन्यास की दीक्षा ली एव स्वामी सर्वानन्द जी के नाम से विख्यात हुए। सन १६६२ मे आर्यसमाजी बन्धुओ ने कैप्टन देवरत्न जी आर्य के अथक परिश्रम एव सयोजकत्व मे रुपये ३१ लाख की थैली से स्वामी जी को सम्मानित किया गया। इस राशि को उन्होने उसी समय श्रीमती परोपकारिणी सभा को समर्पित कर दिया। उन्होने स्वामी जी के जीवन की अनेक घटनाओ पर भी प्रकाश डाला।

अपने उदबोधन मे कैप्टन आर्य ने आगे कहा कि राव हरिश्चन्द्र जी आर्य ने आज आर्यसमाज के इतिहास मे एक ही व्यक्ति द्वारा विद्वान को एक लाख रुपये की थैली से सम्मानित कर नया पृष्ठ एव नई परम्परा को जन्म दिया है। वे स्वय उनका परिवार अनेकानेक बधाई के पात्र है।

इस भव्य समारोह का सयोजन स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (पिपराली राजस्थान) ने किया। नगर के सभी आर्य समाजी सस्थानो एव प्रतिनिधि सभाओ की ओर से अतिथियों को पुष्पगुच्छ एव पुष्पहार देकर सम्मानित किया गया।

समारोह का उदघाटन कैप्टन देवरत्न आर्य ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० वागीश शर्मा (आचार्य आर्ष गुरुकुल एटा) श्रीमती पुष्पा शास्त्री (रेवाडी) वानप्रस्थी श्री प्रद्युम्न शास्त्री गौतम नगर गुरुकुल के आचार्य श्री हरिदेव जी वैद्य शिवकरण शर्मा छगाणी स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती श्री अमृत आचार्य उमरेड के विधायक श्री वसन्तराव इटकेलवार श्री उमेश शर्मा नागपुर विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति श्री हरिभाऊ केदार सहित अनेक विद्वान व आर्य प्रतिनिधि सभा विदर्भ एव मध्य भारत के प्रधान नैष्ठिक जगतदेव जी मन्त्री श्रीमान भार्गव जी पूर्व प्रधान श्री रमेशचन्द्र जी श्रीवास्तव पूर्व मन्त्री श्री सत्यवीर जी शास्त्री एव उनके परिजन एव नागरिक गण व आर्य नर–नारी आदि विभूतिया बडी सख्या मे उपस्थित थी।



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य से स्वामी सर्वानन्द जी के प्रतिनिधि स्वामी सदानन्द स्मृति चिन्ह आदि प्राप्त करते हुए। साथ मे श्री राव हरिशचन्द जी उनकी धर्मपत्नी तथा स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती। दीप प्रज्जवलित करते हुए कै० देवरत्न आर्य।

आचार्य वागीश शर्मा ने अपने भाषण मे कहा कि जनसमाज मे सत्य को प्रकट करने की परम्परा समाप्त हो रही थी। ऐसे समय मे स्वामी सर्वानन्द जी जैसे दार्शनिको ने सत्य के सूत्र पर चलकर एक नई आशा का सचार किया। मुख्य अतिथि पूजनीय स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने कहा कि दुनिया का सबसे कठिन कार्य सन्यास आश्रम के नियमो पर चलना है जिसे स्वामी सर्वानन्द जी ने कुशलता और सरलता से निभाया है वह अनुकरणीय है। अपने अध्यक्षीय भाषण मे स्वामी ओमानन्द जी ने स्वामी सर्वानन्द सरस्वती से जुडे सस्मरणो का उल्लेख किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश विदर्भ व छत्तीसगढ द्वारा लगभग सात लाख से निर्मित वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए वेद रथ नामक प्रचार वाहन का लोकार्पण आर्य नेता कैप्टन देवरत्न आर्य के करकमलो द्वारा किया गया।

अन्त मे राव हरिश्चन्द्र जी आर्य प्रधान ट्रस्टी राव हरिश्चन्द्र चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से सभी आगन्तुक महानुभावो का स्वागत किया गया।

मातृभूमि समुन्नत हो हम भी उन्नत हों
कल्याण मार्ग पर चले,
व्रत पालन के लिए जागरूक हो।

सा नो भूमिर्वर्धयद् वर्धमाना। *अथर्व १२/१/१३*
मातृभूमि समुन्नत हो हम भी उन्नति करे।
स्वस्ति पन्थामनुचरेम। *अथर्व० ५/११/१५*
हम कल्याण मार्ग पर चले।
व्रतेषु जागृहि। ऋ० ८/११/६४
व्रत–पालन के लिए जागरूक हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

राष्ट्रीय लक्ष्य पर ध्यान दें : संसदीय मर्यादा का पालन

आतकवाद निरोधक अध्यादेश पोटो को लेकर भारतीय ससद की सयुक्त बैठक मे जैसा वातावरण देखने को मिला उससे यह बात स्पष्ट हो गई कि सत्तारुढ दल और विपक्ष के सम्बन्ध बिगड रहे है। इस सयुक्त बैठक मे विपक्ष ने सत्तारूढ पक्ष के सन्दर्भ मे जैसी भाषा का प्रयोग किया ससदीय मर्यादा का उल्लघन किया गया वह कोई अच्छा सकेत नहीं है। कौन नैतिक है और कौन अनैतिक यह निर्धारण करने का अधिकार न तो सत्तारुढ पक्ष के नेताओ को है और न विपक्षी नेताओ को। अधिक अच्छा हो कि सभी पक्ष एक नैतिक मर्यादा का स्वत पालन करे अनैतिकता करने का आरोप साधुओ–सन्तो के मुख से शोभा पाता है न कि इसका बार–बार उल्लघन करने वाले राजनीतिज्ञो से। भारतीय राजनीति मे नैतिकता की जो स्थिति है वह किसी से छिपी नही है। आतकवाद निरोधक अध्यापदेश पोटो को लेकर सयुक्त अधिवेशन का लक्ष्य आतकवाद का उन्मूलन करना था यह चिन्ता की बात है कि इस लक्ष्य के बारे मे सब की सहमति होने के बावजूद उस सम्बन्ध मे चर्चा नहीं की गई जिस उद्देश्य के लिए यह बैठक बुलाई गई थी उस उद्देश्य मुख्य मुद्दे से हटकर सभी वक्ताओ ने अपने सकीर्ण राजनीतिक स्वार्थो पर आवश्यकता से अधिक तूल दिया। यह चिन्ता की बात हे कि औसत सासद ऐसे महत्वपूर्ण अवसरो पर मुद्दे की बात पर जोर देने की जगह भटक जाते है। स्वभावत जिज्ञासा यह है कि ससदीय कार्रवाई के दौरान यही देखा गया कि किसी को भी ससद की गरिमा की पर्वाह नही। यदि यही स्थिति रही ता ससद की गरिमा तो गिरेगी ही भारतीय लोकतन्त्र के सम्मान को भी भारी क्षति पहुचेगी। राष्ट्र के लिए यह आत्म चिन्तन का प्रश्न है कि क्या कारण है कि ससद धीरे धीरे मूल्य विहीनता की ओर बढ रही ह ? लाकतन्त्र मे सत्तारूढ पक्ष और विपक्ष मे जैसे सम्बन्ध होने चाहिए वैसे सम्बन्धो न बढना भी चिन्ता की बात हे। ससदीय प्रणाली मे नीतिगत मतभेद स्वाभाविक है परन्तु अनर्गल एव अशोभनीय आरोप – प्रत्यारोप लगाना वेदिक एव भारतीय परम्परा के सर्वथा प्रतिकूल है। यदि पक्ष विपक्ष के नेता भारतीय ससद की सयुक्त बैठक के लक्ष्य की पूर्ति पर केन्द्रित रहते तो सम्भवत किसी मतभेद का अवसर ही न था।

इस सयुक्त अधिवेशन का वास्तविक लक्ष्य था आतकवाद का उन्मूलन क्योकि पोटो या आतकवाद निरोधक अध्यादेश इसी आतकवाद के उन्मूलन के लिए लाया गया था जब सारा राष्ट्र और उसके प्रतिनिधि सगठन ससद आतकवाद का दश से पूर्ण उन्मूलन करना चाहते है तो पक्ष विपक्ष दोनो को पूर्ण सहमति से इस राष्ट्रीय लक्ष्य की पूर्ति मे ध्यान कन्द्रित करना था। खेद और चिन्ता की बात है कि पक्ष विपक्ष दोनो ने आतकवाद का उन्मूलन करने के मुख्य लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रि न करते हुए अपने सकीर्ण राजनीतिक स्वार्थो पर आवश्यकता से अधिक तूल दे दिया। ससद श्रेष्ठ ससदीय परम्पराओ और मर्यादाओ की निर्माणस्थली है वहा इन परम्पराओ और मर्यादाओ की प्रतिष्ठा के स्थान पर आतकवाद निरोधक अध्यादेश के पक्ष विपक्ष मे अनर्गल अशोभनीय आरोप प्रत्यारोप लगाए गए। सयुक्त बैठक मे विपक्ष द्वारा सत्तारुढ पक्ष के सन्दर्भ मे जैसी भाषा प्रयुक्त की गई वह ससदीय मर्यादा के प्रतिकूल थी। अच्छा हो कि दोनो पक्ष आतकवाद निरोधक अध्यादेश पोटो पर हुए ससदीय कार्यक्रम की समीक्षा करे और उससे सीख लेकर भविष्य के लिए मार्ग निर्धारण करे। इस ससदीय समीक्षा मे यह भी देखा जाए कि जब आतकवाद के उन्मूलन के लिए सारा राष्ट्र और सभी दल सहमत है तो आतकवाद निरोध अध्यादेश पोटो के बहस और निर्णय के समय सब की सहमति क्यो नही मिल सकी ? इसी के साथ लोकतन्त्र मे वैभत्स या परस्पर विरोधी मत होना उचित हे परन्तु ससद मे एक दूसरे पर अनर्गल अशोभनीय आरोप प्रत्यारोप जिनकी पुष्टि सम्भव नहीं है व्यवहार पूर्णतया बन्द होना चाहिए। इसी के साथ सोमनाथ चटर्जी की यह जिज्ञासा उचित है कि गैर रा०ज०पा० शासन क्षत्रो मे केन्द्र सरकार पोटो विधेयक कैसे लागू करेगी।

इसी के साथ आतकवाद निरोधक अध्यादेश पोटो के अपन सख्या बल की अपेक्षा यदि आतकवाद के सम्बन्ध मे विपक्ष क पर्याप्त विचार विमर्श के बाद स्वीकार किया जा सकता था। शासक दल वोटो क माध्यम से उसके बहाने आतकवाद से लडने के चैम्पियन होने के श्रेय मे किसी की सम्मति लेना अथवा सर्वसम्मत स्थिति पैदा करने रास्ता छोड दिया। ससद की सयुक्त बैठक मे यद्यपि १२८ मतो के बहुमत से आतकवाद निरोधक अध्यादेश पोटो को स्वीकृति मिली लेकिन उसने सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच कडवाहट पैदा की इस छोटी सी त्रुटि या चूक का प्रभाव देश के भावी राजनीतिक घटनाक्रम पर पडे बिना नही रहेगा फलत इस घटना से प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजेपयी की सर्वग्रही और विनम्र राजनेता की उदारवादी छवि को भी क्षति पहुची। साथ ही इस बात की गारण्टी कौन देगा कि कानून का पक्षपातपूर्ण अमल नही किया जाएगा। विडम्बना यह है कि ससदीय कार्रवाई के दौरान यही देखा गया कि किसी को भी ससद की गरिमा की पर्वाह नही। यदि यही स्थिति रही तो ससद की गरिमा तो गिरेगी ही भारतीय लोकतन्त्र को भी भारी क्षति पहुचेगी। ससद धीरे धीरे मूल्य विहीनता की ओर बढ रही है लोकतन्त्र मे सत्तारूढ और विपक्ष के मध्य जैसे सम्बन्ध होने चाहिए वैसे सम्बन्धो का अकाल होना स्थिति की गम्भीरता उजागर कर रहा है। अच्छा हो सभी देशवासी जहा आतकवाद का सकट मिटाने का व्रत ले – वहा वे राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ ससदीय मर्यादा का भी पालन करे।

चिट्ठी–पत्री

आतंक का शिकंजा

योध्या मे शान्तिपूर्वक शिलान्यास सम्पन्न हो जाने पर सरकार और देशवासियो ने राहत की सास ली है मगर अयोध्यावासियो कीहालत जस की तस बनी हुई हैं। रामलला ही नहीं सरकार की ढुलमुल नीति के कारणपूरी अयोध्या आतक के शिकजे मे बन्दी है। आवागमन भले ही धीरे–धीरे सुगम किए जा रहे हो। मगर लगभग आधे महीने से बन्दी जीवन जी रहे अयोध्यावासी अपने को पूर्ववत अयोध्या मैं नहीं टाल पा रहे हैं। कुछ दिन पूर्व प्रधानमन्त्री ने अयोध्या मुद्दे की नासूर की उपमा देकर विवाद को अतिशीघ्र हल करने की आशा एक बार फिर जताई है। ऐसा बहुत पहले हो जाना चाहिए क्योकि अयोध्या जैसा सवेदनशील मुद्दा जो देश के किसी भाग मे साम्प्रदायिक भावना उत्तेजित कर सकता है। उसे अधिक समय तक लटकाए रखना देशहित मे नही है। फैसले का फासला जितना बढता जाएगा उतनी ही दरारे बढती जाएगी।

– मीनू विश्नोई वसन्त विहार कानपुर

विदेशों में भारतीय

देशो मे भारतीय मूल के सबसे ज्यादा लोग हमारे पूर्वी पडौसी देश बर्मा मे रहते है। वहा भारतीय मूल की गिनती २८ लाख है जब कि २२ लाख भारतीय मूल के लोगो के साथ दूसरे और एक लाख ६८ हजार भारतीय मूल के लोगो के साथ अमेरिका तीसरे स्थान पर है। यह ब्यौरा ५ सदस्यो की ससदीय समिति ने प्रधानमन्त्री को दिया है। समिति ने सौ से अधिक देशो की यात्रा कर सूचना दी है कि दुनिया मे ४८ देश ऐसे जहा भारतीय मूल के लोगो की सख्या ५ लाख से ऊपर है। समिति ने अपनी नवीन रिपोर्ट मे माग की है कि भारत को बर्मा से हर तरह का सम्पर्क बढाना चाहिए जिससे वहा रहने वाले भारतीय मूल के लोगो को अधिक लाभान्वित किया जा सके।

– अश्रित तिलक राज गुप्त बट्टू, साढौरा हरियाणा

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की तैयारियां अपनी चरम सीमा पर

महासम्मेलन का पूर्व मूल्यांकन



विगत लगभग २ माह से हमारे साथ बहुत से आर्य बन्धु कार्यकर्ता पदाधिकारी विद्वान वानप्रस्थी और सन्यासी महानुभाव गुरुकुल कागडी के अतिरिक्त हरिद्वार की अन्य सभी सस्थाओ के अधिकारी कर्मचारी सभी लोग जी जान से जुटे हुए है। देश के कोने कोने से बडे उत्साह पूर्वक लोगो के हरिद्वार पहुचने की पूर्व सूचनाए प्राप्त हो रही है। भारत सरकार के रेल विभाग से रेल भाडे मे ५० प्रतिशत की छूट का आदेश प्राप्त करने के लिए बहुत कष्टदायक भागदौड करनी पडी। सफलता मिलने पर कष्टो का स्मरण भी नही रहता। गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के आयोजन के पीछे भी कुछ महान और पवित्र सकल्प निर्धारित किए गए है जिनकी पूर्ति बेशक ईश्वर इच्छा पर ही निर्भर करती है परन्तु कर्मनिष्ठा की भावना से हमने जो प्रयास प्रारम्भ करने का विचार किया है और सार्वदेशिक सभा के निर्णयो के अनुसार उस कर्म क्षेत्र मे कूद पडे है तो एक शरीरधारी होने के नाते इतनी इच्छा तो अवश्य है कि यह प्रयास क्रियान्वयन के पथ पर तो चलते हुए नजर आने लगे।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने ४ मार्च १९०२ को गुरुकुल कागडी की स्थापना करते समय हो सकता हो कि यह सोचा भी न हो कि यह सस्था अगले १०० वर्षो मे एक सिद्धान्त की तरह प्रसिद्ध हो जाएगी। १९२६ मे स्वामी जी का बलिदान इस सस्था की सेवा के लिए उन्हे केवल २४ वर्ष ही दे पाया। भावनाए पवित्र थीं सकल्प पवित्र थे पथ पवित्र था मजिल पवित्र थी और राह पर चलने वाला राहगीर भी शत प्रतिशत पवित्र था। शत प्रतिशत का एक गणित पर आधारित सिद्धान्त है कि यदि भावनाए और साधन शत प्रतिशत शुद्ध हो तो सफलता के प्रतिशत मे दुनिया की कोई ताकत एक अक भी कम नहीं कर सकती। वही सिद्धान्त साक्षात इस गुरुकुल कागडी मे हमे देखने को मिला। केवल एक सस्था ही नहीं अपितु सैकडो सस्थाए खडी कर गया वह शुद्धता का सिद्धान्त। १०० वर्षो मे लगभग २०० गुरुकुलो की स्थापना सतोषजनक तो है परन्तु देश की वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए पर्याप्त नहीं। गुरुकुल शिक्षा पद्धति की केन्द्रीय भावना थी शास्त्र मे विद्वता शस्त्र मे निपुणता ईमानदारी सद्चरित्र और देशभक्ति। गुरुकुल शिक्षा पद्धति इन सब बातो पर ध्यान केन्द्रित करती है परन्तु कहीं न कही ऐसे प्रयास की भी गुजाइश है जो इन गुरुकुलो की अर्थ व्यवस्था को मजबूती दे सके। जैसे आज के युग मे अधिकतर आर्यसमाजे आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है उसी प्रकार यदि यही आर्यसमाजे गुरुकुलो की ओर भी अपना ध्यान केन्द्रित करे तो इससे गुरुकुल व्यवस्था को बहुत बडा लाभ पहुचेगा। यही सूत्र है जिसने हमे इस विशाल आयोजन को आधार बनाकर आर्यसमाज के सगठनात्मक ढाचे की दशा और दिशा मे सुधार लाने के लिए प्रेरित किया।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि गुरुकुल भक्ति की लौ आर्यो के मन मे और अधिक तीव्र हो।

चार दिन का यह महासम्मेलन हो सकता है आपको कहीं किसी वक्त कष्टदायक लगे। दिन मे गर्मी का कष्ट रात को मच्छरो का कभी आवास या भोजन की प्राप्ति मे कुछ क्षणो का विलम्ब। परन्तु मन मे प्रेरणाओ के आदान प्रदान का लक्ष्य स्थापित हो तो छोटे मोटे कष्ट स्मरण ही नहीं रहेगे। प्रत्येक कष्ट अस्थाई होता है परन्तु प्रेरणाए बहुत बडे काल तक चलती रहती है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी को जितने कष्ट हुए होगे उनका कहीं भी उल्लेख किसी पुस्तक या लेख मे नहीं मिलता। परन्तु उनकी प्रेरणाए आज सब विद्यमान है।

सम्मेलन के आयोजन मे आयोजको को यदि कोई कष्ट हो ता आयोजन की सफलता को देखकर वे कष्ट भूल जाते है। इसी प्रकार महासम्मेलन मे पधारने वाले महानुभावो को यदि कोई कष्ट हो तो उन्हे भी विस्मृत कर देना चाहिए। क्योकि स्मृति तो शुभ प्रेरणाओ की रखनी है। आपको कोई भी कष्ट हो उससे पूर्व हमारी ईश्वर से प्राथना है और प्रयास भी है कि वही कष्ट सर्व प्रथम हमारे शरीर पर आए। पहले हमे उसका अनुभव हो तभी हम प्रयास कर पाएगे कि आपको उस कष्ट का अनुभव न्यून हो। विगत सप्ताह हरिद्वार मे मैने पैदल १० कि०मी० की यात्रा की। उद्देश्य केवल अनुभव प्राप्त करने का था। पौने दो घण्टे का समय लगा। शोभायात्रा मे अनुमान है साढे ४ घण्टे का समय लगेगा। अधिक से अधिक लोगो के लिए विशेष रूप से वृद्ध महानुभावो के लिए वाहनो का प्रबन्ध भी होगा। युवा और उत्साही व्यक्ति पैदल भी नाचते गाते जाएगे। पैदल चलने वाले यात्री चप्पले डालकर न चले जुराब के साथ जूता पहने तो अच्छा होगा।

भोजन की बहुत बडी व्यवस्था का प्रबन्ध किया गया है। यदि सब लोग स्वअनुशासन और सयम के बधन मे चलेगे तो किसी प्रकार के कष्ट का स्थान नही होगा। प्रात ८.३० बजे से खाना पीना प्रारम्भ होगा और रात्रि के ११ बजे तक चलता रहेगा। भोजन की व्यवस्था बेशक नि शुल्क है परन्तु उसके मूल मे आपके द्वारा पूर्व मे दिया गया या भविष्य मे दिया जाने वाला दान ही नीव की तरह काम करेगा। दान राशि स्वीकार करने का प्रबन्ध भोजनालय मे ही रहेगा। भोजन की व्यवस्था मे मु०नगर के आर्य नेता श्री अरविन्द कुमार और उनके सहयोग के लिए आर्यवीरो की टोली बडे प्रेम और श्रद्धा से आपकी सेवा मे जुटेगी ऐसा प्रयास किया गया है।

आवास को लेकर भी एक बात विनम्र निवेदन के साथ स्पष्ट करना चाहता हू कि हर व्यक्ति को पलग चारपाई बिस्तर नही मिलेगा। इसीलिए इस कष्ट का अनुभव भी पहले स्वय ही लेने का प्रयास कर रहा हू। महासम्मेलन से लगभग एक माह पूर्व ही हरिद्वार मे रहू या दिल्ली मे रहू मैने स्वय ही जमीन पर दरी डालकर सोना प्रारम्भ कर दिया है। वैसे भी इस सम्मेलन को एक विशाल यज्ञ की भावना से आयोजित किया जा रहा है जिसकी प्र[illegible] की सुगध लम्बे समय तक व्याप्त रहे ऐसी अभिलाषा है। इस विशाल यज्ञ के प्रमुख सेवक को तो जमीन पर सोना ही उचित है।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी आर्यजनो की विशेष श्रद्धा के पात्र है। चारो दिनो मे चलने वाले प्रातकालीन यज्ञ के वे ब्रह्मा भी हैं। इस नाते उन्होने भी एक दिन अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि आज से मै भी पलग छोड कर चटाई पर सोया करूगा।

मेरी बारम्बार आप सब लोगो से यही विनती है कि अधिक से अधिक सख्या मे इस महासम्मेलन मे तीर्थ की भावना से पधारे। मन मे देश और धर्म के लिए कुछ विशेष प्रयास करने के उत्साह का निर्माण करे। अनुशासन मे बधे रहकर आर्यसमाज की एकता का ध्वज ऊचा करने का प्रयास करे। जो महानुभाव सम्मेलन मे न भी पधार सके तो वे प्रस्तावो और उद्बोधनो के आधार पर स्वय ही अपने लिए दिशा का निर्धारण करे और आर्यसमाज की दशा मे सुधार लाने के लिए प्रयास करे।

– विमल वधावन

महासम्मेलन सयोजक

हरिद्वार पहुचने वाले यात्री
अपने वाहनों पर बैनर आदि अवश्य लगाएं

सुजानगढ राजस्थान के प्रसिद्ध आर्यनेता श्री सत्यनारायण लाहोटी जी ने बडी सख्या मे आर्यजनो को हरिद्वार मे आयोजित गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे चलने के लिए प्रेरित किया है सुजानगढ मे आर्य महानुभाव समूह बनाकर धर्मयात्रा के रूप मे हरिद्वार पहुचेगे इसी प्रकार से आगरा मुरादनगर अमरोहन पटना कोलकत्ता हैदराबाद कर्नाटक तमिलनाडु, महाराष्ट्र गुजरात मध्य प्रदेश उडीसा आदि क्षेत्रो से भी भारी सख्या मे आर्यजनो के झुण्ड के झुण्ड हरिद्वार पहुचने की सूचनाए प्राप्त हो रही है। इस प्रकार समूहो के रूप मे आने वाले आर्य महानुभावो से हमारा विशेष निवेदन है कि चाहे ५ १० व्यक्तियो का ही समूह क्यो न हो अपने लिए एक बैनर अवश्य बनवाए जिसका प्रारूप निम्न प्रकार हो –

हरिद्वार चलो **हरिद्वार चलो**

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के १०० वर्ष पूर्ण होने पर

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

२५ से २८ अप्रैल, २००२

निवेदक

आर्यसमाज — — — — — — —

— — — — — — —

इस प्रकार के बैनर अपनी बसो या रेलो के बाहर टाग कर रखे यह प्रचार का अपना एक माध्यम है जो दूरगामी प्रभाव डालता है।

अग्निवेश के नेतृत्व में सद्भावना यात्रियों ने आर्यसमाज के प्रधान पर हमला किया !!!

स्वामी अग्निवेश की सद्भावना यात्रा गोधरा गुजरात के लिए आज प्रात अमृतसर बम्बई ट्रेन से प्रात ७ ५५ को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से प्रस्थान कर रही थी तब गुजरात के दगो के लिए गुजरात आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट की प्रतिया बाट रहे अहमदाबाद आर्यसमाज के प्रधान श्री मित्रमेहश आर्य व ओमेश कुमार पर स्वामी अग्निवेश के सचिव श्योताज तथा शमसुद इस्लाम व मामचन्द रिवारिया ने बडी निर्ममता पूर्वक हमला बोल दिया। दोनो कार्यकर्ताओ के कपडे फाड डाले गए थप्पड तथा धक्के मारमार कर अपमानित किया गया। स्वामी अग्निवेश ने बडी जोर से चीखे मार कर कहा ये लोग आर०एस०एस० के कार्यकर्ता है। आर०एस०एस० ने हमारे खिलाफ साजिश की है। अहमदाबाद के कार्यकर्ताओ ने बताया कि हमने रिपोर्ट मे अग्निकाण्ड करने वाले मुस्लिमो की निन्दा की एवम उन्हे आई०एस०आई के पाकिस्तानी एजेन्टस बताया उसमे बुरा क्या है ? फिर भी दोनो कार्यकर्ताओ को खूब पीटा गया। प्लेटफार्म पर भगदड मच गई। रेलगाडी के अन्य यात्रियो द्वारा सदभावना यात्रियो की कडी आलोचना करने पर हमलावर शर्मिन्दा हुए। अनिल आर्य तथा अन्य उपस्थित दिल्ली के आर्यसमाजी लीडरो ने कार्यकर्ताओ को हमलावरो से बचाया तथा पुलिस फरियाद करने से भी रोका।

सदभावना के नाम पर हमला यात्रा कर रहे अग्निवेश के इस दल की हम कडी आलोचना कर भर्त्सना करते है।

– मित्रमहेश आर्य प्रधान, आर्यसमाज अहमदाबाद

वानप्रस्थ और सन्यास की दीक्षा लेने वाले महानुभाव सम्पर्क करें

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार के विशाल आयोजन के अवसर पर जो महानुभाव वानप्रस्थ अथवा सन्यास आश्रम मे प्रविष्ट होना चाह वे यथाशीघ्र महासम्मेलन के अध्यक्ष कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन सयोजक श्री विमल वधावन अथवा यज्ञ समिति के सयोजक डॉ० भारत भूषण से सम्पर्क करे। इस विशाल आयोजन के अवसर पर आश्रम परिवर्तन के कार्यक्रम का ऐतिहासिक महत्व होगा। समूचे विश्व के आर्यों को इससे महान प्रेरणाए मिलेगी। अत जिन महानुभावो ने आश्रम परिवतन का मन बनाया हो वे इस महासम्मलन का लाभ उठाते हुए अपने जीवन मे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन को इतिहास के रूप मे स्थापित करे।

महासम्मेलन हेतु स्टाल बुकिंग में परिवर्त

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार में २५ से २८ अप्रैल २००२ के विशाल आयोजन मे पुस्तको तथा धार्मिक वस्तुओ एव अल्पाहार के स्टालो के बुकिग शुल्क मे निम्न परिवर्तन किया गया है –

(१) १० x १० के स्टाल का शुल्क २५००/– रु० से घटाकर २०००/– रु० कर दिया गया है।

(२) दो स्टाल लेने वाले प्रतिष्ठानो से ३५००/– रु० शुल्क लिया जाएगा।

जो महानुभाव स्टाल बुक करवाना चाहे वे निर्धारित राशि नकद अथवा ड्रॉफ्ट द्वारा **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम ३/५, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली २** के पते पर २० अप्रैल से पूर्व भिजवा दें। जो महानुभाव दो स्टाल लेना चाहें वे ३५००/– रु० का ड्राफ्ट भेजें जिससे उन्हे दोनो स्टाल साथ साथ आवटित किए जा सके।

आगामी सम्मेलन अपने आप मे एक अद्वितीय सम्मेलन होगा जिसमे बहुत बडी सख्या मे आर्य जनता भाग लेगी। साहित्य के प्रचार का भी अनूठा अवसर होगा।

स्टालो का आवटन प्रथम आओ प्रथम पाओ के आधार पर होगा। अत यथाशीघ्र अपने स्टाल बुक करवाकर असुविधा से बचे। आपकी राशि एव आवेदन २० अप्रैल से पहले सभा कार्यालय मे अवश्य पहुच जाने चाहिए।

सम्बन्धित महानुभावो को आवटित स्टाल का नियन्त्रण २४ अप्रैल से उपलब्ध कराया जा सकेगा।

इन स्टॉलो मे दो बडी मेज दो कुर्सिया पखा तथा रोशनी का पूरा प्रबन्ध होगा। तीन तरफ की दीवारे और छत टीन की बनीं होगी। स्टॉल बुक कराने के इच्छुक महानुभाव दिल्ली मे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा अथवा हरिद्वार मे कुलसचिव डॉ० महावीर जी से सम्पर्क करे।

– विमल वधावन, महासम्मेलन सयोजक

हरिद्वार महासम्मेलन के वाद भ्रमण यात्राएं

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन का समापन **२८ अप्रैल** को होगा। अगले दिन **२९ अप्रैल सोमवार** को स्वभुगतान के आधार पर उन आर्यजनो के लिए हरिद्वार तथा आस पास के स्थलो को देखने हेतु परिवहन व्यवस्था भी उपलब्ध कराई जाएगी जो इसके इच्छुक होगे। यह भ्रमण यात्रा दो प्रकार की होगी।

(क) स्थानीय भ्रमण यात्रा

हरिद्वार तथा ऋषिकेश के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलो को दिखाने हेतु यह यात्रा प्रात काल **महासम्मेलन स्थल** से प्रारम्भ होगी और सायकाल तक वापस महासम्मेलन स्थल पर ही पहुचेगी।

(ख) मंसूरी भ्रमण यात्रा

सम्मेलन स्थल से यह यात्रा प्रात जल्दी रवाना होगी और रात्रि मे देर रात तक वापस सम्मेलन स्थल पर पहुचेगी। यह यात्रा **हरिद्वार, ऋषिकेश देहरादून** और **मसूरी** के दर्शनीय स्थलो का भ्रमण करवाएगी।

आर्यजन उपरोक्त मे से जिस यात्रा मे पजीकरण कराना चाहेगे उसकी व्यवस्था के लिए एक अलग **पूछताछ केन्द्र** स्थापित होगा।

गुरुकुल कागडी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन, हरिद्वार के लिए रेल किराए में ५० प्रतिशत की छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा रेल राज्य मन्त्री श्री दिग्विजय सिह को लिखे पत्र के फलस्वरूप रेलवे बोर्ड के डायरेक्टर श्रीमती मणि आनन्द ने अपने पत्र क्रमाक TCII/2066/98/6 दिनाक २५ ३ २००२ के द्वारा मुम्बई कलकत्ता नई दिल्ली गुवाहाटी गोरखपुर चेन्नई सिकन्दराबाद भुवनेश्वर हाजीपुर इलाहाबाद जयपुर बगलोर तथा जबलपुर कार्यालय को सूचित किया है की २५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियो मे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे भाग लेने वाले यात्री मेल तथा एक्सप्रेस गाडियो मे द्वितीय श्रेणी साधारण और स्लीपर के किराये मे ५० प्रतिशत छूट के अधिकारी होगे। यह छूट केवल ३०० किमी० से अधिक की यात्रा करने वालो को ही उपलब्ध होगी। इस छूट का लाभ किन्हीं ३० दिनो मे उठाया जा सकेगा जिसमे महासम्मेलन की तिथिया (२५ से २८ अप्रैल २००२) शामिल हो। यह छूट प्राप्त करने के लिए आर्य यात्री तत्काल **सार्वदेशिक सभा कार्यालय (फोन न० ३२७४७७१, ३२६०६८५), सार्वदेशिक प्रैस (फोन न० ३२७०५०७, ३२७४२१६) तथा श्री विमल वधावन (निवास ७२२४०६०, ७२१४०६०, मो० ६८११२२१०८३, ४०५६५७०)** पर अपना नाम लिखवाकर यह सूचित करे कि उनके साथ कितने महानुभावो को किस स्टेशन से यात्रा प्रारम्भ करनी है। यह सूचना मिलने पर तत्काल आर्य यात्री को सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा हस्ताक्षरित एक प्रमाण पत्र जारी कर दिया जाएगा। यह प्रमाण पत्र प्राप्त होने पर आर्य यात्री अपने निर्धारित रेलवे स्टेशन पर इसे प्रस्तुत करके ५० प्रतिशत छूट वाले रेलवे टिकट प्राप्त कर पाएगे।

– **विमल वधावन**, महासम्मेलन सयोजक

कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करें (यजुर्वेद)

– प्रो० चन्द्र प्रकाश आर्य

जीवन बडा मूल्यवान है। ससार मे प्रत्येक प्राणी जीना चाहता है मरना कोई नही चाहता। चीटी को भी हाथ लगाओ तो वह भी अपने प्राण बचाकर भागती है। महाभारत मे यक्ष ने युधिष्टिर से पूछा कि ससार मे सबसे बडा आश्चर्य क्या है ? तो युधिष्टिर ने कहा कि प्रतिदिन प्राणी मृत्यु को प्राप्त होता है किन्तु फिर भी बाकी जीना चाहते है इससे बडा आश्चर्य और क्या हो सकता है ?

'शेषा जीवितुमिच्छन्ति किमाश्चर्यमत परम्।'

अत जीवन एक अनुपम वरदान है। कालिदास रघुवश (८/८७) मे लिखते है कि मरना प्राणियो का स्वभाव है प्राणी यदि क्षणभर भी जीता है तो यह बडे सौभाग्य की बात है –

मरण प्रकृतिर्शरीरिणाम्
विकृतिर्जीवनमुच्यते बुधै ।
क्षणमपि अवतिष्ठते
श्वसन्यदिजन्तुर्नन्नु लाभवानसौ।।

(रघुवश ८/८७)

जबकि वेद तो बार–बार कहता है कि हम सौ वर्ष जीए सौ वर्ष देखे सौ वर्ष सुने और उससे भी अधिक सौ वर्ष से भी अधिक जीये –

पश्येम शरद शतम्, जीवेम शरद शतम् श्रृणुयाम शरद शतम् प्रब्रवाम शरद शतमदीना स्याम शरद शत भूयश्च शरद शतात्

(यजु० ३६/२४)

परन्तु साथ मे वेद यह भी कहता है कि कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करे किन्तु कर्म मे लिप्त न हो। इससे भिन्न जीवन जीने का अन्य मार्ग नही है –

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतें समा ।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

(यजु ४०/२)

ससार मे सब कुछ कर्म के अधीन है। धर्म अर्थ काम मोक्ष ये चार पुरुषार्थ कहलाते हैं। इनमे मानव मे प्राप्त करने योग्य सभी कुछ आ जाता है किन्तु इनकी प्राप्ति कर्म से ही सम्भव है। फिर मनुष्य जीवन तो कर्म करने के लिए है। गीता कहती है कि कर्म किए बिना कोई रह ही नही सकता –

न हि कश्चिद्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवश कर्म सर्व प्रकृतिजैर्गुणै ।।

(गीता ३/५)

मध्यकाल मे कुछ लोगो ने कहा कि कर्म करने की आवश्यकता नही भगवान सबको देता है जैसे पछी/पक्षी कोई काम नही करते –

अजगर करे न चाकरी पछी करे ना काम।
दास मलूका कह गये सबके दाता राम।।
अनहोनी होनी नहीं होनी होये सो होय।
रामभरोसे बैठ कर रहो खाट पर सोय।।

किन्तु ऐसी बाते आलसी या भाग्यवादी किया करते है। कर्म प्रधान कर्मशील व्यक्ति ससार मे सब कुछ प्राप्त कर सकता है। जैसे मिटटी के ढेले से कुम्हार घडा सुराही दीया आदि जो वस्तु बनाना चाहता है बना सकता है इसी प्रकार मनुष्य अपने किए गए कर्म से इच्छानुसार फल प्राप्त कर सकता है। हितोपदेश (श्लोक ३४) म कहा है –

यथा मृत्पिण्डत कर्त्ता कुरुते यद् यद् इच्छति।
एवम् आत्मकृत कर्म मानव प्रतिपद्यते।।

भाग्य या किस्मत की बात तो कायर पुरुष करते है। कर्म करने मे भी असफलता रह गई तो यह देखना चाहिए कि उसमे कोई दोष या त्रुटि तो नही रह गई। इसलिए भाग्य का सहारा छोडकर मनुष्य को अपने पुरुषार्थ से कर्म करना चाहिए –

उद्योगिन पुरुषसिहमुपैति लक्ष्मी ।
दैवेनहि दैवमिति का पुरुषा वदन्ति।।
दैव निहत्य कुरु पौरुष स्वशक्त्या।
यत्नेकृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोष ।।

आज मनुष्य धरती समुद्र तथा आकाश पर विजय प्राप्त कर रहा है। धरती का उसने नक्शा ही बदल दिया है समुद्रो को चीर कर वहा के खजानो को बाहर लाने मे लगा हुआ है। आकाश पर उसका अभियान जारी है। मगल ग्रह पर जाने के लिए दिन रात लगा हुआ है। अगले २०–२५ वर्षों मे मगल ग्रह पर बस्तिया बसाने मे लगा होगा।यह सब कर्म/उद्यम की महिमा है। इसीलिए कवि दिनकर ने 'कुरुक्षेत्र मे कहा है –

नर समाज का भाग्य एक है।
वह श्रम वह भुजबल है।
जिसके सम्मुख झुकी हुई प्रथ्वी
विनीत नभतल है।।

गीता मे कर्म की महिमा भरी पडी है। लोकमान्य तिलक ने गीता पर लिखे अपने ग्रन्थ गीता रहस्य का दूसरा नाम कर्म योगशास्त्र रखा है। गीता (२/४७) कहती है कि कर्म करने मे ही मनुष्य का अधिकार है फल की इच्छा मे नही। कर्म किए बिना ससार मे जीवन यात्रा भी नही चल सकती। जनक आदि बडे–बडे राजा महाराजा भी कर्म करते आए है। ससार मे कर्म का ही प्रसार दिखाई देता है –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषुकदाचन

(गीता ३/४७)

कर्मणैव ससिद्धिमास्थिता जनकादय ।
लोक सग्रहमेवापि सपश्यन्कर्त्तुमर्हति।।

(गीता ३/२०)

किन्तु कर्म मे लिप्त नही होना चाहिए। कर्म मे लिप्त होना उसके प्रति आसक्ति फल के बन्धन मे बधना यही सब अनर्थो का मूल है। आसक्ति या लिप्तता के कारण मनुष्य जीवन पर्यन्त ससार के बन्धनो मे बधा रहता है। कर्म का अनुकूल फल मिलने पर मनुष्य प्रसन्न होता है और प्रतिकूल फल मिलने पर उद्विग्न होता है निराश हताश हो जाता है आत्महत्या तक कर लेता है या फिर दूसरो की हत्या कर डालता है। जीवन के हर क्षेत्र मे हम आसक्ति या लिप्तता की डोर से बधे हुए हैं। इसी कारण ससार मे धर्म समाज और राजनीति मे बडे–बडे बखेडे एव उत्पात होते हैं। इसीलिए वेद ने कहा कि कर्म मे लिप्त नही होना चाहिए – 'न कर्म लिप्यते नरे। गीता (२/४७) ने कहा "मा कर्मफल हेतुर्भू।" गीता फिर कहती है कि सिद्धि असिद्धि सफलता असफलता जय-पराजय मे सम होकर आसक्ति रहित होकर कर्म करना चाहिए –

योगस्थ कुरुकर्माणि सग त्यक्त्वा धनजय।
सिध्यसिध्यों समो भूत्वा समत्व योग उच्यते।।

(गीता २/४८)

परन्तु फल की इच्छा को त्याग कर हम कर्म क्यो करे ? ससार मे मूर्ख व्यक्ति भी बिना प्रयोजन के किसी कार्य मे नही लगता किसी कर्म को नही करता। फिर आसक्ति रहित होकर या सग त्यागकर कर्म करने से क्या मिलता है ? इसका उत्तर (गीता ३/२०) देती है कि जो व्यक्ति अनासक्त होकर सग या आसक्ति को त्यागकर कर्म करता है वह भगवान को प्राप्त कर लेता है –

तस्मादसक्त सतत कार्य कर्म समस्चर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पुरुष ।।

(गीता ३/२०)

वेद का उपर्युक्त मत्र आगे कहता है कि इससे भिन्न ससार मे जीने को अन्य कोई मार्ग नही है – नान्यथेतोऽस्ति वेद के इस मत्र से निम्न बाते स्पष्ट होती है –

१ मनुष्य को सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए।

२ किन्तु कार्य करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए निष्कर्म होकर नही।

३ कर्म मे आसक्ति या सग रहित होकर या निर्लिप्त होकर कर्म करने चाहिये।

४ सग या लेप/आसक्ति ही सब दुखो का मूल है।

५ अनासक्त होकर/निर्लिप्त होकर जो मनुष्य कर्म करता है वह परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

६ इससे भिन्न ससार मे जीवन जीने का अन्य रास्ता नही है अर्थात अनासक्ति से कर्म करते हुए जीवन जीने का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। अत हमे श्रेष्ठतम कर्म करते हुए जीवन जीना चाहिए।

– अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
दयालसिह कालेज करनाल

॥ ओ३म् ॥

हरिद्वार चलो   हरिद्वार चलो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान में

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन



चैत्र शुक्ल 13 से वैशाख कृष्ण 1-2, सम्वत् 2059

25, 26, 27, 28 अप्रैल 2002

समारोह स्थल

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्रद्धानन्द नगरी, हरिद्वार

निवेदक

कैप्टन देवरत्न आर्य महासम्मेलन अध्यक्ष	प० हरबंस लाल शर्मा स्वागताध्यक्ष कुलाधिपति	विमल वधावन महासम्मेलन संयोजक
वेदव्रत शर्मा सभा मंत्री	प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री कुलपति	सुदर्शन शर्मा सभा उप प्रधान
जगदीश आर्य सभा कोषाध्यक्ष	डॉ० महावीर कुल सचिव	आचार्य यशपाल सभा उप प्रधान

कार्यालय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली–110 002

दूरभाष · (011) 3274771, 3260985 E mail vedicgod@nda vsnl net in / saps@tatanova com

हरिद्वार कार्यालय महासम्मेलन संयोजक, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार–249404, (उत्तरांचल)

दूरभाष . (0133) 414392, 416811, फैक्स 415265

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 18 19/04/2002 दिनाक १५ अप्रैल से २१ अप्रैल २००२ Licence to post without prepayment Licence No. U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 18 19-04/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३९/२००२

।। ओ३म ।।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी
एव
शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र देहलवी जी
के
जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर

रविवार २१ अप्रैल २००२ प्रात ८ ०० बजे से १२ ०० बजे तक
आर्यसमाज दीवान हाल मे

श्री रामनवमी पर्व पर विशेष समारोह

अध्यक्षता वैद्य इन्द्रदेव जी महामन्त्री दिल्ली सभा
मुख्य अतिथि श्री विजय गोयल जी केन्द्रीय राज्य मन्त्री
मुख्य वक्ता श्री वेदव्रत शर्मा महामन्त्री सार्वदेशिक सभा
डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
प० महेन्द्र कुमार शास्त्री
श्री राज सिह भल्ला प्रधान आर्यसमाज एजूकेशनल ट्रस्ट
भजन श्रीमती शशि आर्या

आप से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक सख्या में पधार कर धर्म लाभ उठाए।

निवेदक

कृष्ण गोपाल दीवान — प्रधान
(मेजर) डॉ० रविकात (सेवा निवृत्त) — मन्त्री

कारगिल के शहीदों को श्रद्धांजलि

कारगिल मे शहीद नौजवानो देश को तुम पे नाज है।
कौमे जिससे रहती है जिदा बलिदान मे छुपा वह राज है।

मरना तो है हर इक को लाजम है जिन्दगी मे एकबार।
मरे तो मातृ भूमि के लिए इससे ऊचा न कोई काज है।

बलिदान से अपने छेडा तुमने जो साज है दर्द भरी उसमे आवाज है।
याद बनी रहेगी युगो तक उसकी ऐसा निराला ये साज है।

टाइगर हिल पर तिरगा फहराने के लिए शेर का दिल चाहिए।
जिन्दगी का उपहार भेट कर तुमने किया माता का सत्कार है।

रक्त से अपने तुमने किया माता का तिलक माता को अनोखा उपहार है।
देश वासियो का तुमको आदर भरा नमस्कार है।

— ऋतमरा भाटिया डी १ सी ८५ जनकपुरी नई दिल्ली

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार सर्वशक्तिमान न्यायकारी दयालु अजन्मा अनन्त निर्विकार अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वेश्वर सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी अजर अमर नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है उसकी ही उपासना करनी योग्य है।

आर्यसमाज का दूसरा नियम

।। ओ३म ।।

दैनिक यज्ञ पद्धति

मूल्य 375 रुपये सैंकड़ा

पुस्तक के मुख पृष्ठ पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का सुन्दर चित्र, सफेद कागज, सुन्दर छपाई शुद्ध सस्करण, प्रचारार्थ घर घर पहुचाए।

१ आर्यसमाजो स्त्री आर्यसमाजो के अधिकारियो से अनुरोध है कि वैदिक सन्ध्या तथा यज्ञ की भावना को घर घर पहुचाने के लिए आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव तथा अन्य पर्वो पर इस पुस्तक को अधिक से अधिक क्रय करके अपने अपने क्षेत्र के प्रत्येक घर मे अवश्य वितरित करे।

२ आर्य शिक्षण सस्थाओ के प्रबधको तथा प्रधानाचार्यों से आग्रह है कि वे अपने विद्यालय मे पढने वाले प्रत्येक बच्चे को यह पुस्तक उपलब्ध कराए ताकि उसे वैदिक सन्ध्या तथा यज्ञ के मन्त्र कण्ठस्थ हो।

३ पुस्तक की एक प्रति का मूल्य पाच रुपये है। प्रचारार्थ ५० पुस्तको से अधिक क्रय करने पर २५ प्रतिशत की छूट दी जाएगी।

पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक व्यय पृथक नहीं लिया जाएगा। कृपया अपना पूरा पता एव नजदीक का रेलवे स्टेशन साफ साफ लिखे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड नई दिल्ली १ दूरभाष ३३६०१५०



शाखा कार्यालय-63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 3261871

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा** सम्पादक **नरेन्द्र विद्यावाचस्पति वैद्य इन्द्रदेव**

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित **सार्वदेशिक प्रेस** १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२
(दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५०** के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

र्ष २५ अक २२ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार ६ मई से १२ मई २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, हरिद्वार

ऐतिहासिक संस्मरणों के साथ सम्पन्न

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हरिद्वार का विशाल आयोजन **२५ से २८ अप्रैल २००२ की तिथियों** मे अपार सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस महासम्मेलन का केन्द्रीय उद्देश्य आर्यों मे कर्त्तव्य परायणता के साथ साथ श्रद्धा प्रेम और अनुशासन के सिद्धान्तो को अधिकाधिक मजबूत बनाना था। **सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य** की **अध्यक्षता** तथा **महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन** के **निर्देशन** एव **सभा** मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की देख रेख कुलपति श्री वेदप्रकाश एव कुलसचिव डा० महावीर के कर्मठ सहयोग तथा सैंकडो अन्य कर्मठ आर्य नेताओ के सहयोग से सम्पन्न इस चार दिवसीय महासम्मेलन मे लगभग ५० हजार से अधिक आर्यजन बाल और वृद्ध सहभागी बने।

हरिद्वार का यह सम्मेलन निम्न कारणो से अपने आप मे एक ऐतिहासिक सम्मेलन था।

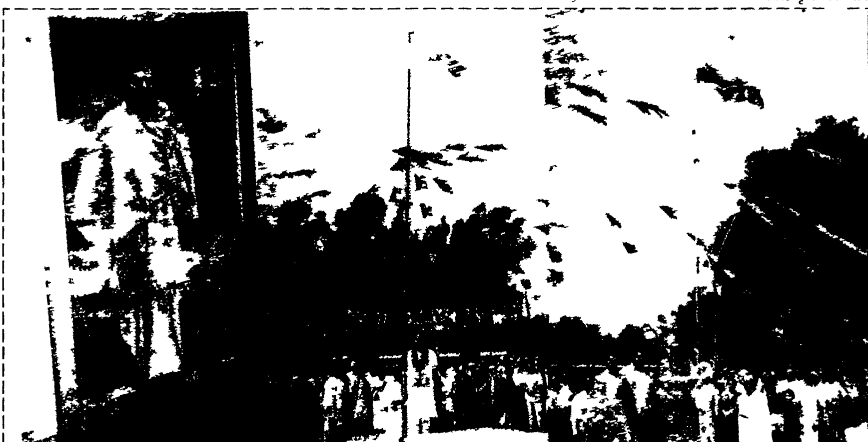
महासम्मेलन की ऐतिहासिकताएं

१ यह पहली बार ही सम्भव हो सका है कि **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** की देखरख ओर नियन्त्रण मे **गुरुकुल कागडी हरिद्वार** की धरती पर यह सम्मेलन आयोजित किया गया।

२ **गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय** की स्थापना के विगत १०० वर्षो के दौरान यह दृश्य भी पहली बार प्रस्तुत हुआ कि जब **ओ३म ध्वज पताका** और **कुल ध्वजपताका** दोनो इकटठे पाच छै फुट की दूरी पर साथ साथ फहराइ गई। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने **ओ३म ध्वज पताका** फहराई और गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा ने **कुल ध्वज पताका** फहराई।

३ इस महासम्मेलन मे देश के विभिन्न हिस्सो से ही नहीं अपितु विदेश से भी प्रतिनिधियो के रूप मे कइ देशो के आय नेता सम्मिलित हुए। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवनकाल मे गुरुकुल की इस धरती पर ऐसे मेले लगा करते थे। पुरानी पीढी के लोगो का मानना हे कि लगभग आठ दशक के बाद इस महासम्मेलन रूपी मेले को देखकर पुन वह दृश्य याद आ रहा था जा स्वामी श्रद्धानन्द जी क जीवन काल से सम्बन्धित इतिहास मे पढा जाता है। विगत कइ दशको के बाद आज फिर दीक्षान्त समारोह खुल प्रागण म आयोजित हुआ

अगले पृष्ठ पर जारी



(१) महात्मा मुशीराम जी का युवावस्था के चित्र से तैयार किया गया तैलचित्र जो स्वामी श्रद्धानन्द सग्रहालय मे विशेष आकर्षण का केन्द्र है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ओ३म ध्वज पताका पहराते हुए पीछे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा भवनो की छतो पर खडे हुए आर्यजन। कुल ध्वज फहराते हुए गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा तथा उनके पीछे कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी तथा कुल सचिव डॉ० महावीर जी।

महासम्मेलन के चित्र आगामी अंक में

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की विस्तृत चित्रावली आगामी अक में प्रकाशित की जाएगी।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, हरिद्वार ऐतिहासिक संस्मरणों के साथ सम्पन्न



ध्वजारोहण कार्यक्रम का सचालन करते हुए महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन। ध्वजारोहण के बाद सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य कुलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा सभा मत्री श्री वेदव्रत शर्मा श्री प्रेम भारद्वाज आचार्य यशपाल श्री देवेन्द्र शर्मा श्री सुदर्शन शर्मा तथा श्री विमल वधावन मच की तरफ अग्रसर होते हुए।

दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र मोहन जी को विद्यामार्तण्ड की उपाधि तथा अन्य स्मृति चिह्न भेट करते हुए श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन आचार्य वेदप्रकाश जी प० हरवश लाल शर्मा कै० देवरत्न आर्य श्री सदानन्द श्री स्वतन्त्रकुमार तथा श्री देवेन्द्र शर्मा।

उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय राज्यमत्री श्री विजय गोयल।

वैदिक विद्वानो और आर्यो का महान समागम

४ वदिक विद्वानो के उदबोधन की श्रृखला तो अपने आप मे ऐतिहासिक थी। सारे महासम्मेलन के दोरान अनुमानत लगभग १०० वैदिक विद्वानो और उच्च कोटि के आर्य सन्यासियो एव कर्मठ आर्य नेताओ ने अपने उदबोधन प्रस्तुत करके आयजनता को सोद्देश्य मार्गदर्शन दिया।

५ चार सो शामियाना से बना विशाल पण्डाल जिसमे ३० हजार से अधिक व्यक्तियो के बैठने की व्यवस्था थी ओर यह पण्डाल प्रात स रात्रि काल तक लगातार आयजनो की उपस्थिति से आर्यसमाज की विशालता का प्रमाण प्रस्तुत करता रहता था।

६ कई प्रान्तो से तो आर्यजन २० २१ तारीख को ही पहुचना प्रारम्भ हो गए थे। उनके भोजन की व्यवस्था पहले तो गुरुकुल ब्रह्मचर्य आश्रम मे ही की जाती रही परन्तु जब सख्या बढनी प्रारम्भ हो गई तो २३ अप्रैल से ही पण्डाल के निकट बना विशाल भोजनालय विधिवत चालू करना पडा। महासम्मेलन के इस विशाल भोजनालय मे प्रात ८ बजे से लेकर रात्रि १ बजे तक भोजन व्यवस्था लगातार चलती रहती थी। इस भोजनालय मे समूचा भोजन शुद्ध घी से तैयार कराया गया। सारी भोजन व्यवस्था मे उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार जी ने केन्द्रीय भूमिका निभाई। दिल्ली के आर्यवीरो का चारो दिन यथाशक्ति सहयोग प्राप्त होता रहा। जबकि श्री अरविन्द जी के साथ २०० व्यक्तियो का एक दल कार्यरत था।

आध्यात्मिक वातावरण

७ इस महासम्मेलन के दौरान दो बार इन्द्र और वरुण देवता ने तेज वेग की आधी और वर्षा के साथ पूरे पण्डाल को अस्त व्यस्त कर दिया। परन्तु जिस कार्य मे ईश्वर का आशीर्वाद सम्मिलित होता है वह कार्य स्वत ही सफल होते जाते है। परिणामत दोनो बार की अस्त–व्यस्तता के बावजूद अगला सत्र सुचारू रूप से चलता रहा। केवल मात्र प्रथम दिन के रात्रिकालीन भजन सन्ध्या सत्र का कार्यक्रम रद्द करना पडा।

८ महासम्मेलन के चारो दिन २५ कुण्डीय यज्ञ और प्राचीन यज्ञशाला स्वय मे एक आकर्षण का केन्द्र था। जिसमे १०० यज्ञमान प्रतिदिन बैठते थे। इस यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी थे और सयाजक डा० भारत भूषण जी थे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के ब्रह्मचारी तथा गुरुकुल चोटिपुरा की ब्रह्मचारिणी वेदपाठी के रूप मे चारो दिन वेद मन्त्रो की छटा बखेरते रहे। यज्ञ के उपरान्त पहले दिन स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी दूसरे दिन आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी के प्रवचन यज्ञ वेदी पर ही हुए। तीसरे दिन स्वामी सुमेधानन्द (चम्बा) एव चौथे दिन स्वामी सत्यपति जी (रोजड) के प्रवचनो की व्यवस्था मुख्यमच से ही की गई। चारो दिन यज्ञ के उपरान्त भजनोपदेश का भी आयोजन होता रहा। प्रथम दिवस पर श्री ओमप्रकाश वर्मा यमुनानगर दूसरे दिन श्री कुवर महिपाल सिह तीसरे दिन श्री नरेश निर्मल तथा चौथे दिन श्री सत्यपाल पथिक जी ने भजन एव उपदेश प्रस्तुत किए।

चारो दिन प्रवचनो से आर्यजनता ने भरपूर आध्यात्मिक लाभ उठाया।यज्ञो मे कई प्रसिद्ध आर्यनेता ससद तथा सरकारी उच्च अधिकारी भी शामिल हुए।

यात्राओ से प्रचार

९ इस महासम्मेलन मे भाग लेने के लिए भारत के लगभग सभी प्रान्तो से जत्थो के जत्थे ऐसे निकल पडे जैसे विभिन्न प्रान्तो से दर्जनो शोभा यात्राए हरिद्वार के लिए निकाली गई हो।

महासम्मेलन के एक दिन पूर्व २४ तारीख की प्रात तीन प्रमुख यात्राए हरिद्वार के लिए अलग अलग क्षत्रो से निर्धारित योजना के अनुसार रवाना हुई। (क) जालन्धर से दर्जनो बसो और कारो मे भरकर आर्ययात्री हरिद्वार के लिए निकले। मार्ग मे इस यात्रा का भव्य स्वागत अम्बाला यमुनानगर तथा सहारनपुर मे हुआ। इस यात्रा के सयोजक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री देवेन्द्र शर्मा थे।

(ख) दूसरी यात्रा श्रद्धानन्द बलिदान भवन दिल्ली से प्रारम्भ हुई जिसका स्वागत दिल्ली की कई आय समाजो के अतिरिक्त मार्ग मे गाजियाबाद मुरादनगर मोदी नगर मेरठ और मुजफ्फरनगर मे हुआ। मुजफ्फरनगर मे तो यात्रियो को लगभग दो तीन किलोमीटर की एक वास्तविक शोभा यात्रा के रूप मे शामिल किया गया जिसमे बैड और बग्घियो का भी प्रबन्ध मुजफ्फर नगर के आर्य नेताओ द्वारा किया गया। इस यात्रा के सयोजक श्री सोमदत्त महाजन थे। और दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा इसका नेतृत्व कर रहे थे।

(ग) तीसरी यात्रा बरेली से उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान श्री जयनारायण अरुण जी के नेतृत्व मे रेलगाडी से रवाना हुई और सभी स्टेशनो से आर्यजनो को शामिल करते हुए तथा प्रचार सामग्री बाटते हुए हरिद्वार पहुची।

दीक्षान्त समारोह

१० गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष मे आयोजित दीक्षान्त समारोह अर्थात शताब्दी दीक्षात का ऐतिहासिक सम्बोधन राज्य सभा के सदस्य एव दैनिक जागरण के मुख्य सम्पादक श्री नरेन्द्र मोहन ने किया। इस ऐतिहासिक दीक्षात के लिए पहले प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वीकृति दे दी थी परन्तु दुर्भाग्यवश वे नहीं आ सके। उनके स्थानापन्न रूप मे प्रधानमन्त्री कार्यालय मे राज्यमन्त्री श्री विजय गोयल महासम्मेलन के उद्घाटन समारोह मे मुख्य अतिथि थे।

सत्रो का निर्धारण एक नया चिन्तन

११ इस महासम्मेलन मे सभी सत्रो को पूर्ण विद्वता ओर गम्भीरता के साथ निर्धारित किया गया था। प्रत्येक सत्र का जहा एक अलग वातावरण था वही उस सत्र मे उदबोधन देने वाले वक्ताओ के लिए भी उनके उदबोधनो के अलग–अलग विषय भी निर्धारित थे। जिन्हे देखकर कुछ महानुभावो न तो सभा के अधिकारियो को धन्यवाद दिया कि प्रकाशित कार्यक्रम स्वय मे ही स्वाध्याय एव चिन्तन की एक अच्छी सामग्री उपलब्ध कराता है।

उद्घाटन भाषण नई योजनाए

१२ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने अपने उद्घाटन भाषण के माध्यम से कई भावी योजनाए आर्यजनो के समक्ष प्रस्तुत की।

गुरुकुल सस्कृति

१३ २५ अप्रैल को गुरुकुल सस्कृति सत्र का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता कुछ समय के लिए आचार्य यशपाल (हरियाणा) तथा बाद मे डॉ० रामनाथ वेदालकार ने की। सासद श्री रामचन्द्र बैन्दा तथा डा० अशोक कुमार चौहान चेयरमेन एमिटी शिक्षण सस्थान इस सत्र के मुख्य अतिथि थे। डा० रघुवीर वेदालकार ने इस सत्र का सयोजन किया जिसमे आचार्य चन्द्र देव शास्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री श्री राममेहर एडवोकेट स्वामी सकल्पानद सरस्वती डा० वीरपाल विद्यालकार तथा श्री कन्हैयालाल तनेजा आदि विद्वान वक्ता थे।

शेष पृष्ठ ७ पर

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के समापन पर २८ अप्रैल, २००२ को प्रस्तुत

घोषणा–पत्र

— विमल वधावन सयोजक महासम्मेलन

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के माध्यम से हम पने मन मे सर्वप्रथम आर्यसमाज रूपी शाल सगठन के मूल अस्तित्व को समझने ा प्रयास करे। आर्यसमाज का जन्म दिक सस्कृति के सरक्षण और पोषण के ाए हुआ था। आज का यह विशाल हासगठन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी े गूढ चिन्तन और गम्भीर प्रयासो का ही ल है। महर्षि के प्रत्येक विचार का त्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध वेद की सस्कृति र जाकर मिलता है।

इसी सस्कृति का सचार हमारी ीवनचर्या मे ठीक वैसे ही होता है जैसे केसी शरीर मे रक्त का हो। इस सस्कृति र आधारित सिद्धान्त ही हमारे जीवन का मूल आधार है। यहा तक कि हमारी ाष्ट्रवाद की कल्पना भी भौगोलिक सीमाओ पर नहीं अपितु इस भूमण्डलीय सस्कृति पर टिकी है।

हमे इस बात को भी मन मे धारण कर लेना चाहिए कि इस सास्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रचार–प्रसार का सर्वोत्तम माध्यम गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही है। विगत सौ वर्षो कि दौरान हमारे गुरुकुलो ने वैदिक सस्कृति के सरक्षण और पोषण मे मूल केन्द्रो की भूमिका निभाई है। गुरुकुल आर्य समाज के प्राण हे – ऐसा कहना किसी प्रकार से भी अतिशयोक्ति नही है।

आने वाले भविष्य मे गुरुकुलो के सरक्षण पोषण और इन पवित्र सस्थाओ की सख्या की वृद्धि को हमने अपना प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस कार्य मे किसी भी आर्य पुरुष का सहयोग लेने और देने मे कोई सकोच नही करेगी और योजनाबद्ध तरीके से इन महान सस्थाओ की वृद्धि के लिए ठोस उपाय किए जाएगे। आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यो पर आधारित गुरुकुल शिक्षा पद्धति के केन्द्रो मे शैक्षणिक एकरूपता का प्रयास भी हमारा गम्भीर लक्ष्य है। समस्त गुरुकुलो को सगठनात्मक एकता रूपी माला मे पिरोना भी उसी लक्ष्य का अग है।

सौ वर्ष पूर्व अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति के माध्यम से ही वैदिक परम्पराओ वैदिक जीवन के अनुशासन शुद्धि कार्यो के द्वारा राष्ट्रीय एकता की स्थापना सस्कृत–हिन्दी के सरक्षण गो–रक्षा तथा आर्यसमाज के बहुमुखी विकास कार्यक्रमो को क्रियान्वित किया। हमने भी उन्हीं कार्यो को अपनी प्रेरणा का स्रोत समझा है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद विगत सौ वर्षो मे जिन महान आत्माओ ने इस पद्धति मे अपना सात्विक सहयोग प्रदान किया है उनके चरणो मे श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए आज समूचा आर्यजगत गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति ने कथनी से अधिक करनी के सिद्धान्त की स्थापना की है। उपदेश से अधिक अपने निज आचरण और व्यवहार को परिलक्षित किया है। केवल मात्र यही पद्धति आज के व्यक्ति को प्राचीनता के मूल से जोडकर आधुनिकता के लक्ष्य की ओर बढने का मार्गदर्शन और माध्यम उपलब्ध करा सकती है। वेद के सिद्धान्तो और मान्यताओ को आज के मानव के समक्ष वर्तमान युग की बुद्धि भाषा और दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना भी आर्यसमाज का दायित्व है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद मे परा और अपरा लौकिक और पारलौकिक आध्यात्मिक और वैज्ञानिक सिद्धान्तो का समावेश स्वीकार करते है। अपने जीवनकाल मे वेद के सिद्धान्तो की व्याख्या व केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कर पाए। वेद के वैज्ञानिक पक्ष का मार्गदर्शन उन्होने अवश्य ही हमे इगित तो किया है परन्तु इस मार्ग पर चलने का माध्यम हमारे विद्वानो को स्वय ही तैयार करना होगा। वेद के मन्त्रो मे ज्ञान क साथ–साथ विज्ञान अर्थात ज्ञान के क्रिया वयन का भी समावेश है। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम वेद पढने और समझने वाले आर्य पुरुषो को वैज्ञानिक बनाने की दिशा मेकार्य करे या वैज्ञानिको को वेद पढाने एव समझाने के अवसर उत्पन्न करे।

वेद और विज्ञान का समन्वय ही विश्व–शान्ति विश्व–बन्धुता तथा हर प्रकार की भौतिक एव आध्यात्मिक शुद्धि का मार्ग बनेगा। शरीर और आत्मा दोनो के समन्वय मे भी यही प्रयास सहायक सिद्ध होगे। यज्ञो को उनका निर्दिष्ट महत्व दिलाने मे भी यही प्रयास सहायक सिद्ध होगे। आत्मा से परमात्मा को मिलाने के लिए वेद और विज्ञान का मेल ही सहायता करेगा। वर्तमान युग को अब हमे नये रूप मे आह्वान करना होगा – वेद पर आधारित वैज्ञानिक जीवन को अपना लक्ष्य बनाए। आज सारे विश्व के समक्ष हमे यह स्पष्ट करने का प्रयास करना होगा कि वेद की यात्रा अनन्त है और इस यात्रा के यात्री ज्ञान की पराकाष्ठा के साथ–साथ कर्म को भी सर्वोच्च मानते हैं मानते ही नहीं अपितु व्यष्टि से समष्टि तक के उत्थान को अपना लक्ष्य मानते हैं।

वेद के नाम पर ही यदि कोई शिक्षित व्यक्ति अनर्गल अथवा पक्षपातपूर्ण बातो को कहने का प्रयास करते हैं तो उसका स्पष्ट और तार्किक उत्तर केवल महर्षि दयानन्द के उपरोक्त दृष्टिकोण ही दे सकते हैं और उन निन्दात्मक प्रहार से वेद ज्ञान की रक्षा कर सकते हे।

इन सब कार्यो के लिए सगठन का सुदृढ होना उसी प्रकार आवश्यक हे जेसे आत्मा को अपने कार्य सम्पन्न करने के लिए एक निरोगी शरीर की आवश्यकता होती है। शरीर की समस्त इन्द्रिया समन्वयपूर्वक एव पुष्ट रूप मे काय करे तभी शरीर को सुदृढ माना जा सकता है।

हमारे परिवार के सदस्य हमारी इन्द्रिया है। आर्य समाज के सगठन से हमे पूर्ण इन्द्रियो सहित जुडकर रहना चाहिए तभी हमारा परिवार आर्य परिवार की परिभाषा मे खरा उतरेगा। एक व्यक्ति से प्रारम्भ हुआ आर्यत्व का यह वेग परिवार को प्रभावित करने का बाद ही समाज को नेतृत्व दे सकता है।

नेतृत्व से अभिप्राय अधिकारो की लूट–खसोट नही अपितु कर्त्तव्यवाद की स्थापना है। नेतृत्व को कर्त्तव्यपालन मे जुटा देखकर ही समाज के अन्य बन्धु भी कर्त्तव्यो के पालन के लिए प्रेरित ह'त ह

समाज की प्रत्येक व्यवस्था चाहे वे अनुशासनात्मक सिद्धान्त हा या भातिक सम्पत्तिया इनका सरक्षण हमारा कर्त्तव्य है। हम इन व्यवस्थाओ के माली की तरह कार्य करे मालिक की तरह नही।

जिस प्रकार स्वस्थ शरीर के लिए विषैले कीटाणुओ का उसमे प्रवेश हर सम्भव उपाय के द्वारा रोका जाता हे और यदि ऐसे कीटाणु प्रविष्ट हो जाए तो उनकी समाप्ति के उपाय किए जाते है। उसी प्रकार आर्यसमाज के इस विशाल सगठन को भी विषाक्त कीटाणुओ से रक्षा के लिए हमे बहुत बडे पैमाने पर एकजुट प्रयास करने की नितान्त आवश्यकता है।

राजनीति मे अपराधियो का प्रवेश विगत तीन दशको मे जिस गति से हुआ है उसका परिणाम आज हमारे सामने है। राजनीति मे बहुसख्यक लोग आपराधिक पृष्ठभूमि से जुडकर सारे देश मे अधिकारो की लूट व्यवस्थाओ के शोषण और इस महान देश के विनाश मे लगे हुए है। आर्यसमाज अपने पवित्र दायित्व का तभी निर्वहन कर पायेगा जब हम सब लोग मिलकर सकल्प व्यक्त करे कि स्वार्थी भावनाओ का इस सगठन मे कोई स्थान नहीं बनने देगे। हमे प्रतिक्षण यह स्मरण रखना चाहिए कि हमारी वैदिक सस्कृति और परम्पराए त्यागवाद मे निहित हैं भोगवाद मे नहीं।

विभिन्न सम्प्रदायो और सकीर्णताओ मे बटे वर्तमान समाज को आत्मा की शक्तियो एव विशेषताओ से साक्षात्कार करव कर ही हम समाज का इस आध्यात्मिकता की ओर ले जा पाएगे जा सुख और शान्ति का पावन मार्ग है।

इस सारे महान काया म हमारी समाज की मातृ शक्ति की विशष भूमिका है। यह मातृ शक्ति हमारी कन्याओ म निहित है। कन्याओ को वदिक विचारा की क्रान्ति क साथ विशष रूप स जोडा जाना चाहिए। अस्थायी रूप म शिविरा क माध्यम से तथा स्थायी रूप म कन्या गुरुकुलो अथवा पाठशालाओ की स्थापना के द्वारा। यह सत्य ह कि राम कृष्ण और दयानन्द क निमाण मे आज भी हमारी कन्याए ही एक मात्र माध्यम ह। इस उत्तरदायित्व का निवहन करन क लिए हमारी माताओ को विशष प्रयास करने होगे।

कहा हमे नारी जाति स इतनी महान अपक्षाए है ओर कहा वही नारी जाति असख्य स्थला पर प्रतिदिन अपमानित ओर लज्जित हा रही हे व्यक्तिगत रूप मे भी और सगठनात्मक रूप मे भी नारी जाति के उत्थान क लिए हमे सर्वथा बलिदान के लिए भी तेयार रहना चाहिए।

आयसमाज क कार्यो का अधिक से अधिक शक्ति प्राप्त हो इसके लिए हमे आधुनिक युग म उपलब्ध हर प्रकार के साधनो का सयमपूर्वक प्रयोग करने म सकोच नहीं करना चाहिए। प्रचार कार्यो मे तन मन आर धन का सहयोग आहूत करने के लिए भी हमे सकाच नहीं करना चाहिए। प्रचार कार्यो मे हमे ऐसा भी सकोच नहीं करना चाहिए कि हमारा व्यक्तिगत सहयोग ही पर्याप्त है अपितु परिवार के सभी सदस्यो को यथायोग्य इन कार्यो मे शामिल करना ही वाछनीय एव श्रेयस्कर है।

हमे अपने मन मे अपने परिवारो एव पूरे समाज के समक्ष इस सिद्धान्त को स्थापित करना चाहिए कि राष्ट्रवासियो की सेवा ही राष्ट्र सेवा है।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन को हम श्रद्धा प्रेम और अनुशासन के साथ–साथ कर्त्तव्यपालन के एक महान पर्व के रूप मे आयोजित कर पाए है। इस आयोजन मे आई कष्ट और बाधाओ को भूलते हुए हम उन सब आत्माओ के प्रति नतमस्तक हैं जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष अधिक या न्यून जैसा भी सहयोग अथवा आशीर्वाद प्राप्त हुआ है।

आइए ! हम सब मिलकर इस घोषणा को अपने भविष्य का एक महान लक्ष्य बनाए कि वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार रूपी महायज्ञ मे अपनी ओर से हर सम्भव आहुति के लिए तैयार रहे।

धन्यवाद

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर २५ अप्रैल, २००२ को प्रस्तुत

उद्‌घाटन भाषण

— **कैप्टन देवरत्न आर्य**, *प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली–२*

आज से १०० वर्ष पूर्व महामनीषी स्वामी श्रद्धानन्द ने पुण्य सलिला भगीरथी के सुरम्य तट पर गुरुकुल के रूप मे जिस प्रणाली का सूत्रपात किया था आज वही गुरुकुल विश्वविद्यालय बनकर विद्या के अनेक क्षेत्रो मे जनता का मार्गदर्शन कर रहा है। **'उपह्वरे गिरीणा सङ्गमे च नदीनाम् धिया विप्रो अजायत्'**। इस पावमानी ऋचा से स्फूर्ति प्राप्त करके स्वामीजी ने गुरुकुल की स्थापना का महान एव दुस्साध्य सकल्प लिया था। महामना मदनमोहन मालवीय जी जैसे विचारको ने भी जिसे असम्भव बतलाते हुए स्वामीजी का उपहास किया था। स्वामीजी का वह सकल्प इसलिए पूर्ण हुआ क्योकि स्वामी श्रद्धानन्द स्वय सकल्प की मूर्ति थे। ऐसे अग्नि पुरुषो के लिए ही शास्त्रो मे कहा गया है — **'सकल्पमयोऽय पुरुष'**।

किसी भी सकल्प की पूर्ति के लिए श्रद्धा का होना अति अनिवार्य है। महात्मा मुशीराम की महर्षि दयानन्द मे उनके सिद्धान्तो मे तथा उनके द्वारा प्रणीत पाठविधि मे गहरी श्रद्धा थी। इसीलिए उन्होने इसे क्रियात्मक रूप देने का सकल्प लिया। स्वामी श्रद्धानन्द सामान्य मानव नही अपितु श्रद्धामयो ऽम पुरुष को जीवन मे चरितार्थ करने वाले महामानव थे। वे महर्षि दयानन्द के साक्षात शिष्य तथा सच्चे उत्तराधिकारी थे।

महर्षि दयानन्द को तो हमने देखा नहीं किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द के दर्शन करने वाले उनसे प्रेरणा लेने वाले अनेक आर्यजन तथा गुरुकुल के पुराने स्नातक अभी भी हमारे मध्य विद्यमान है। हम सभी उस महा मनीषी के उत्तराधिकारी हैं। आज गुरुकुल शताब्दी के सुअवसर पर हमे सोचना होगा कि जिस श्रद्धा से जिस पवित्र सकल्प से स्वामी जी ने इस गुरुकुल की स्थापना की थी क्या आज भी हमारे मन मे इसके प्रति वही श्रद्धा एव सकल्प विद्यमान है? कही आज हम सेवक बनने के स्थान पर इसके स्वामी बनकर स्वार्थ सिद्धि मे तो नही लग गए? आज हमे यह भी सोचना है कि जिस महान उद्देश्य के लिए स्वामीजी ने इस ऐतिहासिक एव गौरवशालिनी सस्था की स्थापना की थी उसकी पूर्ति मे यह कितनी सफल रही है। इस महनीय सस्था की भ्रमवृत्तिवारण एव यशावृद्धि के लिए अभी कौन कौन से कार्य करने है यह भी हमे इस अवसर पर सोचना चाहिए।

गगा के उस पार बीहड प्रदेश मे गुरुकुल रूपी वृक्ष का बीजारोपण करके स्वामीजी ने इसे अपने समय मे ही एक छायादार वृक्ष का रूप प्रदान किया। उन्होने अपने खून पसीने से सींचकर इसे पल्लवित किया पुष्पित किया। परिणामस्वरूप इसकी सुगन्ध न केवल भारत मे अपितु सात समुद्र पार ब्रिटेन मे भी पहुची। वहा के शासन को इसने आकृष्ट भी किया तथा आतकित भी किया।

बचपन मे हम सुना करते थे आएगे खत अरब से जिनमे लिखा ये होगा गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है। यह कल्पनामात्र नही थी अपितु गुरुकुल के सुयोग्य स्नातको ने इसे चरितार्थ किया। गुरुकुल के उन स्नातको की एक लम्बी परम्परा है जिन्होने प्रत्येक क्षेत्र मे अपने कीर्तिमान स्थापित किए। चाहे भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन हो चाहे देश विदेश मे प्रचार का क्षेत्र हो चाहे विद्वता प्राच्यविद्या इतिहास पत्रकारिता तथा आध्यात्मिकता का कोई भी क्षेत्र क्यो न हो गुरुकुल के स्नातको ने सभी क्षेत्रो मे अपना अमूल्य योगदान दिया है।

स्वामीजी के द्वारा रोपित यह गुरुकुल रूपी वृक्ष आज एक विस्तृत उपवन का रूप ले चुका है। ऐसा उपवन जिसकी शीतल छाया मे अनेक प्राणी आनन्द लाभ कर रहे हैं तथा अधिकार युक्त पदो पर प्रतिष्ठित होकर कीर्ति का अर्जन कर रहे है। प्राच्य विद्या के केन्द्र इस उपवन के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है आज हमे यह सोचना है। क्या हम इसके स्वादिष्ट फलो का ही आस्वादन करते रहे अथवा इसकी रक्षा सवृद्धि एव अभिवृद्धि का भी यत्न करे यह हमे इस अवसर पर विचारना चाहिए।

आर्यो के इस महाकुम्भ मे यहा पर सभी प्रकार के मान्य जन उपस्थित है। आर्य समाज के शुभचिन्तक गुरुकुलो के सचालक तथा आचार्यगण सभाओ तथा समाजो के अधिकारीगण यहा विद्यमान है। इसलिए आप लोगो के सामने मै कुछ कार्यो का उल्लेख करना चाहता हू, जिनमे गुरुकुल एव आर्यसमाज की कीर्ति मे अभिवृद्धि हो सके। ये कार्य इस प्रकार है —

१ आज भारत के विभिन्न प्रान्तो मे हमारे गुरुकुल सस्कृत शिक्षण के प्रयास मे रत है इनमे से कुछ तो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित है तथा कुछ सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की परीक्षा दिला रहे है। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय इन गुरुकुलो को अपने अन्तर्गत लेकर एक ऐसी पाठय विधि का निर्माण करे जिनमे सभी विषयो की शिक्षा का प्रबन्ध हो तथा जो सभी को स्वीकार्य हो। गुरुकुल की अलकार परीक्षा मान्यता प्राप्त उपाधि है। इसके साथ ही शास्त्री तथा आचार्य आदि परीक्षाए भी चलाई जा सकती है। पजाब विश्वविद्यालय तथा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक ऐसा कर रहे हैं। ऐसा होने से विश्वविद्यालय का कार्य तो बढेगा ही किन्तु इससे क्षेत्र भी पर्याप्त विकसित हो जाएगा। विकास के लिए श्रम तो करना ही पडता है कार्याधिक्य होने पर तदनुसार नियुक्तिया भी की जा सकती हैं।

२ आज गुरुकुल विश्वविद्यालय मे सस्कृत के साथ साथ एम०बी०ए० इजीनीयरिंग आदि आधुनिक विषयो की शिक्षा भी दी जा रही है। यह युग की माग है तथा इससे अनेक छात्र लाभान्वित हो रहे है। इसके साथ ही हमे यह भी यत्न करना चाहिए कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की ख्याति वेद दर्शन सस्कृत तथा प्राच्य विद्या के एक ऐसे केन्द्र के रूप मे हो जहा इनकी सर्वांगीण शिक्षा छात्रो को दी जाती हो तथा वेदादि सम्पूर्ण साहित्य के विषय मे यहा मान्यतापूर्ण शोध हो रहे हो। यद्यपि यहा के सभी विभाग अपने अपने क्षेत्रो मे शोध कार्य कराते है किन्तु यह केवल पी०एच०डी० उपाधि के लिए ही कराया जाता है। मेरा अभिप्राय एक ऐसे शोध सस्थान से है जैसा कि भण्डारकर रिसर्च इन्स्टीटयूट पूना तथा विश्वेश्वर वैदिक शोध सस्थान होशियारपुर मे है। ये सस्थान सरकार से मान्यताप्राप्त तथा अनुदानप्राप्त सस्थान है। यहा पर भी ऐसा किया जा सकता है। इससे जहा एक ओर हमारे अनेक विद्वानो को कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा वही दूसरी ओर उनके शोधपूर्ण कार्यो से गुरुकुल की ख्याति मे भी अभिवृद्धि होगी। इस कार्य के लिए यहा पर विश्वविद्यालय मे दयानन्द पीठ की स्थापना का सकल्प हमे इस अवसर पर लेना चाहिए। अनेक विश्वविद्यालयो मे इस प्रकार की पीठ विद्यमान है। कुछ समय पूर्व यहा गुरु गोबिन्द सिह पीठ का यत्न किया जा रहा था जिसके लिए सरकार अनुदान देने को तैयार थी। यदि गुरु गोबिन्द सिह पीठ के लिए ऐसा हो सकता है तो दयानन्द पीठ के लिए क्यो नहीं किया जा सकता? हमारा सकल्प चाहिए — सरकार इसके लिए भी सब कुछ देगी।

३ गुरुकुल प्रणाली के शुभचिन्तको को इस दिशा मे भी सोचना होगा कि गुरुकुल कागडी के उपरान्त अनेक गुरुकुल खुले। इनमे से कई तो स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा स्वामी दर्शनानन्द जी महात्मा नारायण स्वामी जैसे तपोभूतियो द्वारा स्थापित थे। लम्बे समय तक इन गुरुकुलो ने प्रशसनीय कार्य किया तथा अनेक सुयोग्य विद्वान समाज को दिए किन्तु वर्तमान काल मे कई गुरुकुल या तो बन्द हो गए या पब्लिक स्कूल मे परिवर्तित कर दिए गए या भ्रमावस्था मे किसी न किसी प्रकार बस जीवित मात्र है। क्या इसे गुरुकुल प्रणाली की असफलता माना जाए ? मैं ऐसा नहीं समझता। क्योकि यदि ऐसा होता तो अन्य नए नए गुरुकुल क्यो खुलते? अभी भी नए गुरुकुल खोले जा रहे हैं तथा सफलतापूर्वक चल भी रहे हैं। जहा जो गुरुकुल बन्द हुआ या मृतप्राय हुआ वहा उसका कारण अधिकारियो की अकर्मण्यता तथा स्वार्थ आदि कुछ भी हो सकता है।

जारी अगले पृष्ठ पर

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर २५ अप्रैल, २००२ को प्रस्तुत

उद्घाटन भाषण

ऐसे गुरुकुलो के इतिहास को देखने से हमे इस प्रश्न का उत्तर स्वत ही मिल जाएगा।

इस स्वार्थ का एक ज्वलन्त प्रमाण यह भी है कि ऐसे अनेक गुरुकुलो की भूमि को बेचा गया। जिस गुरुकुल कागडी की शताब्दी हम आज मना रहे है यहा भी ऐसा प्रयास हुआ। यह सब क्षोभनीय एव गुरुकुल के हित मे नहीं है। इस गुरुकुल के लिए दो हजार बीघा भूमि दान मे दी गई थी। उन लोगो की पवित्र भावना तथा पुण्य सकल्प को आप स्मरण करे जिन्होने स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व तथा त्याग तपस्या से प्रभावित होकर यह पुण्य कार्य किया था। क्या हमारा यही कर्त्तव्य है कि वेद विद्या के प्रचार–प्रसार के लिए अर्पित इस भूमि का हम अपने स्वार्थवश विक्रय करने पर उतारु हो जाए ? मेरी दृष्टि मे इससे अधिक जघन्य एव कृतघ्नतापूर्ण कार्य दूसरा नही हो सकता। इस महासगम के अवसर पर मैं सभी शिक्षाविदो गुरुकुल के मान्य आचार्यों आर्यसमाजो के अधिकारियो तथा आर्यजनता से विनम्र किन्तु सुदृढ प्रार्थना करना चाहता हू कि एक ऐसा सार्वजनिक तथा सार्वकालिक नियम बना दिया जाए कि सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा की अनुमति के बिना किसी भी आर्य सस्था या गुरुकुल के अधिकारी इस प्रकार दान मे प्राप्त भूमि को न बेच सके तथा न ही सार्वदेशिक सभा अपने प्रयोजनवश उसे बेच सके। यदि हम पूर्वजो के श्रम से अर्जित सम्पत्ति मे वृद्धि नही कर सकते तो कम–से–कम उसे अपने स्वार्थवश नष्ट तो न करे।

४ आर्यसमाज एक सार्वजनिक एव सर्वहितैषी सस्था है। ऐसे मे कार्य करते–करते कभी परस्पर वैमनस्य भी उत्पन्न हो जाता है। यद्यपि यह शुभ लक्षण नहीं है। वेद हमे **'समान मन सह चित्तमेषाम'** का उपदेश देता है। इसलिए अच्छा तो यही है कि हमारे समाज तथा सभाए विवादरहित स्थिति मे रहे। सभी आर्यजन मिलकर परस्पर सहयोग की भावना से ऋषि के कार्य को आगे बढाए। तथापि यदि कभी विरोध वैमनस्य पनप भी जाता है तो इतना तो हम कर ही सकते है कि परस्पर निन्दा से बचे। एक दूसरे पर कीचड उछालने से न तो समस्याओ का समाधान होता है न तो सगठन को बल मिलता है साथ ही आर्यसमाज की अप्रतिष्ठा भी इससे होती है। इसके लिए परस्पर निन्दा करने के स्थान पर हम एक प्रेमभाव से एक जगह बैठकर आपसी विवाद सुलझा लिया करे। चाहे वे विवाद आर्यसमाज के स्तर पर हो या सभा स्तर पर। वेद भी ऐसा ही कह रहा है – **'एत सध्रीचीनान् व सम्मनस स्कृणोमि'** आओ! मैं तुम्हे एक गति वाला तथा एक मन वाला करता हू। क्या हम वेद के इस आदेश को अपने जीवन मे उतार सकेगे ?

५ यह एक सुप्रसिद्ध तथ्य है कि आपस मे कलह तथा फूट होने पर विरोधी लोग हावी होते है जो न केवल हमारे सगठन को ही शिथिल एव छिन्न–भिन्न करते है अपितु हमारे सिद्धान्तो पर भी आक्षेप करते है। आज यही हो रहा है। विरोधियो की ओर से वैदिक सिद्धान्तो पर आक्षेप किए जा रहे है। पुस्तके लिखी जा रही हैं। हमारा ध्यान उधर नहीं जाता। यदि जाता भी है तो हम उनका उत्तर नहीं दे पाते क्योकि हमारी शक्ति आपसी विवादो मे ही कम होती रहती है। महर्षि दयानन्द ने अकेले ही वैदिक सिद्धान्तो का मण्डन तथा अवैदिक कार्य का खण्डन किया किन्तु हम सख्या मे अनेक होने पर भी उस कार्य को नहीं कर पा रहे हैं यह स्थिति चिन्तनीय है। इसके लिए हमे अपने विद्वतवर्ग को आगे लाना होगा जो वैदिक सिद्धान्तो पर किए जाने वाले प्रत्येक आक्षेप का उत्तर दे सके। यह कार्य अत्यन्त आवश्यक है जिस पर अभी तक हमारा समुचित ध्यान नहीं गया है।

आप लोगो को स्मरण होगा कि जब आपने सार्वदेशिक जैसी गौरवशालिनी सस्था का कार्यभार मुझे सौंपा था तब मैने कुछ घोषणाए आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाने के लिए की थी। स्वामी श्रद्धानन्द की तपस्थली मे यहा पर मै आज पुन उनकी ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हू। शास्त्र शस्त्र तथा शुद्धि के रूप मे तीन शकारो की ओर हमे ध्यान दना चाहिए। इन तीनो की प्रेरणा भी मैने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से ही ग्रहण की है।

स्वामी जी ने अनेक महान कार्य किए किन्तु जीवन के अन्तिम दिनो मे उनका ध्यान गुरुकुल मे शुद्धि की ओर ही केन्द्रित हो गया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी शुद्धि के कार्य को इतना महत्वपूर्ण मानते थे कि इस विषय पर महात्मा गाधी तथा अन्य नेताओ से मतभेद होने पर उन्होने काग्रेस छोड दी थी किन्तु शुद्धि कार्य को नहीं छोडा। आज भी यह कार्य उतना ही महत्वपूर्ण है। शुद्धि का कार्य राष्ट्रीयता से जुडा हुआ है। यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि विदेशी धन के आधार पर ईसाई तथा मुसलमान व्यापक स्तर पर इस कार्य मे सलग्न है। इस विषय मे हमे वीर सावरकर के शब्द स्मरण कर लेने चाहिए। वे कहते थे – धर्मान्तरण माने राष्ट्रान्तरण। प्रजातन्त्र के युग मे राष्ट्र पर अधिकार उसी का होगा जिसकी जनसख्या अधिक होगी। इसलिए आर्यसमाज को शुद्धि के कार्य को वरीयता प्रदान करनी चाहिए।

दूसरे शकार से मेरा अभिप्राय शास्त्र से है। इसका उल्लेख मै पहले कर चुका हू। सक्षेप मे पुन इतना ही कहना चाहूगा कि वेदादि शास्त्रो का प्रचार–प्रसार उन पर किए गए आक्षेपो का समाधान तथा शोध की ओर भी हमे यत्नशील होना चाहिए। दूसरे सम्प्रदायो को सिद्धान्तो के मर्मज्ञ विद्वान आज हमारे बीच से उठते जा रहे हैं। उनके स्थान की पूर्ति करना भी अति आवश्यक कार्य है।

मेरा तीसरा शकार है – शास्त्र। यह अति आवश्यक तत्व है क्योकि शक्ति की दृष्टि से सुदृढ तथा किसी से भी न झुकने वाले समाज तथा राष्ट्र मे ही शास्त्र की चर्चा की जा सकती है। शस्त्रेण राक्षेते राष्ट्रे शस्त्रचर्चा प्रवर्तते। क्षात्र धर्म के रूप मे आर्यसमाज के पास आर्यवीर दल जैसा सगठन है। हमे इसे इतना सुदृढ एव सगठित बनाना चाहिए कि जहा एक ओर यह आर्य युवको तथा युवतियो को आर्य धर्म मे दीक्षित करके सभी प्रकार के शस्त्र सचालन की शिक्षा दे सके वहीं दूसरी ओर आपत्ति तथा उपद्रवो के समय विधर्मियो के प्रहारो से आर्यजनता की रक्षा भी कर सके। स्वामी श्रद्धानन्द जी इस दिशा मे भी सचेष्ट थे। वे पहलवानो के अखाडे चलवाते थे जो कि समय पडने पर गुण्डो तथा समाज विरोधी तत्वो से जनता की रक्षा कर सके। इस प्रकार शास्त्र शस्त्र तथा शुद्धि ये तीनों की शकार आज अति अनिवार्य हैं।

बन्धुओ ! आर्यसमाज सेवा की सस्था है। इसके सस्थापक ने ससार का उपकार करना इसके मूल मे ही समाहित कर दिया गया है। आर्यसमाज के एक सेवक के रूप मे आप सबसे यह विनम्र प्रार्थना इस सुअवसर पर करना चाहता हू कि हम आपसी मन भेद भुलाकर पद प्रतिष्ठा का लोभ छोडकर तथा अकर्मण्यता एव निराशा को त्यागकर महर्षि के मिशन को पूरा करने मे अपने सच्चे मन से लग जाए तो निश्चय ही यह ससार आर्यसमाज की ओर उन्मुख होगा।

आज से १०० वर्ष पूर्व जिस महामनीषी ने गुरुकुल के रूप मे विद्या का यह दीपक जलाया था हम सबका कर्त्तव्य है कि हम इसमे अपना स्नेह (प्रेम–तेल) उडेलकर इसके प्रकाश को मन्द न होने दे। एक यही नहीं अपितु सभी गुरुकुलो की रक्षा एव अभिवृद्धि करना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। विद्या के ये केन्द्र जनता को प्रकाश देते रहे उसका मार्ग प्रशस्त करते रहे ऐसा प्रयास हमे करना चाहिए। वेद का आदेश है– **ज्योतिष्मत पथो रक्ष धिया कृतान्।** अर्थात बुद्धिमानो के द्वारा बनाए गए ज्योतिस्तम्भो की प्रकाश के मार्गो की हम रक्षा करे। गुरुकुल कागडी ऐसा ही एक उच्चतम ज्योतिस्तम्भ बने यह सकल्प लेकर हम यहा से जाए। तभी यह शताब्दी मनानी सार्थक होगी।

इस सीमित समय मे जो भी निवेदन मैने आप लोगो के सामने किया है उस पर आप ध्यान देगे तथा आर्य समाज एव गुरुकुल की यशोवृद्धि के लिए अवश्य ही कुछ न कुछ करने का सकल्प लेकर यहा से जाएगे इसी आशा के साथ मैं सबको धन्यवाद देता हुआ विराम लेता हू।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह

राष्ट्र धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं – नरेन्द्र मोहन

दैनिक जागरण समूह के सम्पादक व राज्यसभा सदस्य नरेन्द्र मोहन ने आज यहा कहा कि आर्यसमाज की नजर मे राष्ट्र धर्म से बडा कोई धर्म नहीं है। उन्होने जोर देकर कहा आज समाज मे आर्य चरित्र की आवश्यकता है। राजनीति की मौजूदा अवधारणा पर कटाक्ष करते हुए उन्होने बेहद तल्ख शब्दो मे कहा कि आज राजनीति मे सिद्धात की नहीं अहकार की लडाई लडी जा रही है। राजनेता नही बल्कि आम आदमी देश को बचाएगे। सासद नरेन्द्र मोहन स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सौ वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित गुरुकुल शताब्दी दीक्षात समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे दीक्षात भाषण दे रहे थे।

दीक्षात भाषण की शुरूआत मे सासद नरेन्द्र मोहन ने कहा यह एक महान क्षण है अत्यत महान। उन्होने ब्रह्मचारियो का आह्वान करते हुए कहा धर्म की दीक्षा के दौरान कुलपति के प्रथम उपदेश को अगर हम जीवन मे उतार सके तो जीवन सफल हो जाएगा।

उन्होने कहा ब्रह्मचारियो को दीक्षा के महत्व को समझना होगा। उन्होने कहा मेरे गुरुदेव स्वामी राम ने मुझे दीक्षित किया। दोष मेरा गुण उनका है। उन्होने कहा ब्राह्मण कोई जन्म से नही होता। यही वैदिक दर्शन है। उन्होने इसे उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतु का उदाहरण देकर स्पष्ट भी किया। दीक्षात सबोधन मे सासद नरेन्द्र मोहन ने कहा ब्राह्मण बनने के लिए सघर्ष तप समर्पण ब्रह्मचेतना में निवास करना पडता है। उन्होने ब्रह्मचारियो से कहा ब्राह्मण बनना आसान नहीं है। ब्राह्मण बना जा सकता है तप से, श्रम से दम से व सत्यनिष्ठा से। सासद नरेन्द्र मोहन ने स्वाध्याय पर बोलते हुए कहा स्वाध्याय पुस्तकों का पठन पाठन नहीं है जो स्वय का अध्ययन स्वय के मन के कलुष को निहार सके वह मार्ग ही स्वाध्याय का मार्ग है। उन्होने समारोह में मौजूद लोगो से अनुरोध किया कि समस्त ऊर्जा प्रमाद मे नष्ट न करे। जीवन मे ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। उन्होने ब्रह्मचारियो से कहा शीघ्र ही आपका गृहस्थ आश्रम मे प्रवेश हो रहा है। समस्याओ से जूझना पडेगा। उन्होने ब्रह्मचारियो का आह्वान किया कि अपनी चेतना का ऊर्ध्वारोहण करो चेतना को जगाओ। उन्होने कहा आप आर्य परिवार के हो। आर्यत्व ही हमारी शक्ति है लक्ष्य है व ऊर्जा है।

उन्होने आर्य व दस्यु की परिभाषा देते हुए कहा जो दूसरे के अधिकारो का हरण करे उसे प्राप्त करने की चेष्टा करे दूसरे क अधिकार पर गिद्ध दृष्टि जमाए वही दस्यु है। दैनिक जागरण समूह के सम्पादक व राज्यसभा सदस्य नरेन्द्र मोहन ने कहा हर सकल्प प्रारम्भ मे बडा कठिन लगता है लेकिन निश्चित सफल होता है।

उन्होने जोर देते हुए कहा आर्यजीवन के रहस्य को समझे अन्यथा चूक हो जाएगी। उन्होने कहा अपने कलुष को निहारने की दुरिता को समझने का सकल्प तो स्वय ही लेना होगा। हम विश्व को आर्य बनाने की बात करते है लेकिन खुद को तो पहले आर्य बनाये। उन्होने कहा जो भद्र है जिसको गुरु मान लिया हो उसी के बताये मार्ग पर चले।

सासद श्री मोहन ने कहा आर्यसमाज ने राष्ट्र धर्म से बडा कोई धर्म नही माना। उन्होने कहा गुरुकुल मे क्राति भूमि का सृजन करो आज देश को इसी की जरूरत है। सासद नरेन्द्र मोहन ने राष्ट्र चितन करते हुए गुजरात का उदाहरण देते हुए कहा कि यह दुख का विषय है कि भारत की राजनीति सिद्धातो और आदर्शों से भटक कर अपने व्यक्तिगत स्वार्थोंमे निहित हो गयी है। सासद ने कहा कि गुजरात मे स्वार्थी तत्वो द्वारा जान बूझकर दगे कराए जा रहे है। अन्तर्राष्ट्रीय मच पर भारत को बदनाम करने के लिए ऐसा किया जा रहा है। उन्होने कहा आर्यसमाज ने कभी मुसलमानो का विरोध नही किया। सिर्फ खडन किया है पाखण्ड का अविद्या का तथा उन वृत्तियो का जो मानव को हिसक बनाती है। उन्होने कहा प्रेम से बडी कोई शक्ति नहीं है।

इससे पूर्व कुलपति डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री ने आचार्य उपदेश देते हुए कहा कि २०वीं सदी के शुरू मे स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने मा गगा के पावन तट पर कागडी ग्राम मे ४ मार्च १६०२ को राष्ट्र निर्माण की ऐसी सुदृढ आधारशिला रखी थी जो गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के भव्य प्रसाद की प्रथम सोपान बनी। कुलपति प्रतिवेदन मे श्री शास्त्री ने कहा पराधीनता के कालखण्डो मे लार्ड मैकाले द्वारा भारत मे चलाई गई शिक्षा पद्धति राष्ट्र के स्वाभिमान और गौरव को नष्ट कर रही थी। देशभक्त चरित्रवान विद्वान युवको के स्थान पर केवल बाबू बनाने का अग्रेजो का षडयत्र अपना प्रभाव दिखाने लगा था। ऐसे समय मे महान शिक्षा शास्त्री स्वामी श्रद्धानन्द ने प्राचीन व अर्वाचीन विषयो की शिक्षा के साथ साथ ब्रह्मचारियो मे चरित्र बल व राष्ट्र प्रेम की भावना प्रसारित करने के लिए इस पवित्र सस्था का शुभारम्भ किया। उन्होने कहा स्वामी श्रद्धानन्द देश मे ब्रह्मचर्य पर आधारित गुरु शिष्य परम्परा को पुनर्जीवित करना चाहते थे। कुलसचिव प्रो० महावीर अग्रवाल के सचालन मे आयोजित समारोह मे उद्घाटन भाषण देते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने कहा सौ वर्ष पूर्व स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल के रूप मे जिस प्रणाली का सूत्रपात किया था आज वहीं गुरुकुल विश्वविद्यालय बनकर विद्या के अनेक क्षेत्रो मे जनता का मार्ग दर्शन कर रहा है।

उन्होने कहा स्वामी जी ने अनेक महान कार्य किए किन्तु जीवन के अतिम दिनो मे उनका ध्यान गुरुकुल मे शुद्धि की ओर ही केन्द्रित हो गया था। आज से १०० वर्ष पूर्व जिस मनीषी ने गुरुकुल के रूप मे विद्या का जो दीपक जलाया था हम सबका कर्तव्य है कि हम उसके प्रकाश को मद न होने दे। समारोह मे पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के रामनाथ वेदालकार आर्य सस्कृति के प्राण विवेकानन्द महाराज आदि ने भी अपने विचार रखे।

इससे पूर्व मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र मोहन सासद राज्यसभा आर्य मनीषी विशुद्धानन्द तथा कई काव्यों के प्रणेता सत्यव्रत आर्य तथा भारत सरकार के राज्यमत्री विजय गोयल को विश्वविद्यालय की सर्वोच्च मानद उपाधि विद्या मार्तण्ड से विभूषित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ समारोह स्थल से कुछ दूर स्थित यज्ञशाला मे राष्ट्र भृत यज्ञ एव ओ३म ध्वज व कुल ध्वज के ध्वजारोहण के साथ किया गया। ओ३म ध्वज का ध्वजारोहण सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य द्वारा तथा कुल ध्वज का ध्वजारोहण कुलाधिपति प० हरवश लाल शर्मा द्वारा किया गया। ध्वज गान मिश्री लाल आर्य कन्या इण्टर कालेज की छात्राओ व गुरुकुल विश्वविद्यालय के छात्रो ने किया।

इसके बाद ध्वज स्थल से मुख्य मच तक मुख्य अतिथि विशिष्ट अतिथियो विश्वविद्यालय के अधिकारियो तथा उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रो को पारम्परिक गाउन पहना कर दीक्षात यात्रा के रूप मे मच तक ओ३म ध्वज के साथ लाया गया। दीक्षात कार्यक्रम का शुभारम्भ गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री के द्वारा आचार्य उपदेश से किया गया तथा पूर्व स्नातको की ओर से पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रामनाथ वेदालकार ने स्वागत भाषण दिया। कुलाधिपति प० हरवश लाल शर्मा ने नव स्नातको को आशीर्वाद प्रदान किया।

इसी अवसर पर जयदेव वेदालकार द्वारा विरचित दीक्षा लोक पुस्तक जिसमे अभी तक के दीक्षात समारोहो मे दीक्षात भाषण देने वालो के दीक्षात भाषणो का सकलन किया गया है। इस पुस्तक का विमोचन राज्यमत्री विजय गोयल द्वारा किया गया तथा एक अन्य पुस्तक गुरुकुल विद्यालयीय तथा गुरुकुल का इतिहास पुस्तक का विमोचन भी किया गया। मच सचालन डॉ० महावीर द्वारा किया गया। दीक्षात समारोह का समापन डॉ० अबुज के नेतृत्व मे कुल वदना गीत के द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मच पर कुलपति डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक सभा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री वेदव्रत शर्मा कार्यक्रम के सयोजक विमल वधावन तथा विभिन्न प्रातो से आये प्रातीय पदाधिकारियो व स्वामी विवेकानन्द महाराज व हिन्दी विद्वान डॉ० विष्णु दत्त राकेश भी उपस्थित थे। पडाल मे विभिन्न राज्यो व जनपदो से आए हजारो आर्य प्रतिनिधि महिला पुरुष उपस्थित थे।

इस समारोह के तुरन्त बाद गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का उद्घाटन कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया

सांसद नरेन्द्र मोहन गुरुकुल की सर्वोच्च उपाधि 'विद्या मार्तण्ड' से विभूषित

हरिद्वार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह के मुख्य अतिथि दैनिक जागरण के सपादक और सासद नरेन्द्र मोहन को आज गुरुकुल की सर्वोच्च उपाधि विद्या मार्तण्ड की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। नरेन्द्र मोहन सहित सस्कृत के प्रकाड विद्वान सत्यव्रत शास्त्री और केंद्रीय राज्य मन्त्री विजय गोयल को भी विश्वविद्यालय की मानद उपाधि विद्या मार्तण्ड से नवाजा गया।

पृष्ठ २ का शेष

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, हरिद्वार

वेद की अनन्त यात्रा ▶ एक नया इतिहास

१४ प्रशासन के विरोधी व्यवहार ने भी बाधा उत्पन्न करने का प्रयास किया लेकिन आयोजन के पीछे निहित पवित्र भावनाओ के सामने प्रशासनिक बाधाए भी आर्यों से टकराकर चूर–चूर हो गईं। शोभा यात्रा के लिए जिलाधिकारी ने आदेश दिया कि यह यात्रा हर की पौडी से आगे वैदिक मोहन आश्रम तक नहीं जाने दी जाएगी। सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य की ललकार सयोजक श्री विमल वधावन की चुनौती और सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा की व्यवस्था के आगे जिलाधिकारी का अनुमति देने वाला आदेश केवल मात्र एक कागज का टुकडा साबित हुआ जिसकी होली आर्यो ने जलाई।

महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने तो जिलाधिकारी को यहा तक कह डाला कि इस आदेश पर हस्ताक्षर करके ही आपने शोभायात्रा की शोभा मे विघ्न डालने का प्रयास किया है वेद की अनन्त यात्रा का अन्त करने का प्रयास किया है। अत उनकी उलटी गिनती का प्रारम्भ होना स्वाभाविक है। कै० देवरत्न आर्य जी के नेतृत्व मे दृढता के साथ बढते हुए आर्यो की यह यात्रा हर की पोडी को पार कर अपने गन्तव्य स्थान तक पहुचकर ही शान्त हुई। परन्तु सयोगवश आर्यो की इस चुनौती को ईश्वरीय आशीर्वाद प्राप्त हुआ और वह जिलाधिकारी २६ अप्रैल को इस ऐतिहासिक यात्रा के दिन सायकाल को ही स्थानान्तरित हो गया। इस अवसर पर कै० देवरत्न आर्य की सिह गर्जना ने तो स्वामी श्रद्धानन्द की याद तरोताजा कर दी।

अगले दिन मच पर केन्द्रीय मन्त्री श्री वेद प्रकाश गोयल के सामने ही सयोजक श्री विमल वधावन ने कहा कि आर्यसमाज से टकराव मोल लेने वाला कोई भी व्यक्ति सफल नहीं हो सकता चाहे वह डी०एम० हो या पी०एम०।

इसी सत्र मे स्वामी दीक्षानन्द जी ने भी इन्हीं विचारो का समर्थन करते हुए कहा कि गुरुकुल मे न पधार कर प्रधानमन्त्री ने अपनी आर्यसमाजी होने की पात्रता समाप्त कर दी है।

उन्होने स्पष्ट कहा कि आर्यसमाज किसी पार्टी के साथ बधा हुआ नहीं है परन्तु जो लोग गुरुकुल की इस पुण्य भूमि पर पधारे है और आर्यसमाज को सदैव सहयोग देते हैं उनका भविष्य अवश्य ही उज्ज्वल होगा और उनकी कीर्ति बढेगी।

१५ वेद की अनन्त यात्रा के वैदिक मोहन आश्रम पहुचने पर आर्य जनता वैदिक जयघोष के साथ झूम उठी।

सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने इस ऐतिहासिक स्थल पर आज २६ अप्रैल २००२ को ध्वजारोहण किया जिस स्थल पर २५ अप्रैल १८६७ के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई थी। वैदिक मोहन आश्रम के समर्थन मे एक विशेष प्रस्ताव इस सम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसका समर्थन वैदिक जय घोष के साथ हुआ। यह प्रस्ताव इस प्रकार है –

प्रस्ताव

आज दिनाक २६ अप्रैल, २००२ को देश विदेश से गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन मे पधारी आर्य जनता वेद की अनन्त यात्रा मे भाग लेते हुए वैदिक मोहन आश्रम तक दर्शनार्थ पहुची। यह वह पावन स्थल है जहा २५ अप्रैल १८६७ को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई थी। आर्य जनता की भावनाए इस स्थल से गहरे रूप मे जुडी है। आर्य जनता इस स्थल पर आकर भाव विह्वल हो गई

वैदिक मोहन आश्रम का सचालन एक ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है जिसके प्रधान पदमश्री ज्ञान प्रकाश जी चौपडा एव मन्त्री श्री टी०आर० गुप्ता है, इस पवित्र स्थल पर कुछ स्वार्थी तत्वो की स्वार्थपूर्ण निगाहे सम्पत्तियो की लूट मचाने के उद्देश्य से लगी हुई है। आज समूचा आर्य जगत् यह सकल्प व्यक्त करता है कि यदि प्रशासन की किसी लापरवाही या मिलीभगत के कारण इस पवित्र स्थल पर कोई भी आच आई तो समूचे आर्य जन एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस आश्रम के ट्रस्ट का हर सम्भव सहयोग देने के लिए कृतसकल्प है।

इस प्रस्ताव के द्वारा हम कडे शब्दो मे प्रशासन को चेतावनी देना चाहते है कि आर्यो के परीक्षण का दुस्साहस कभी न करे। अपनी गौरव पूर्ण वैदिक सस्कृति एव पवित्र स्थलो के रक्षार्थ हम किसी भी बलिदान को बडा नहीं समझते।

यतिमण्डल का आशीर्वाद

१६ वैदिक धर्म और आर्यसमाज से जुडे समस्त सन्यासियो के सगठन यति मण्डल के प्रधान स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य को भेजे एक विशेष सन्देश मे अपार प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा है कि यह शताब्दी आर्यसमाज के लिए बल देने वाली शक्ति देने वाली सगठन देने वाली तथा आर्यसमाज की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने वाली हो। स्वामी जी का यह सन्देश मच से प्रसारित भी किया गया। इस महासम्मेलन मे लगभग ६० से अधिक आर्य सन्यासी उपस्थित रहकर अपना आशीर्वाद प्रदान करते रहे।

पूर्व स्नातकों की उपस्थिति

१७ इस महासम्मेलन मे बहुत से पूर्व स्नातको ने भी अपनी उपस्थिति से महासम्मेलन की शोभा बढाई। गुरुकुलो के आचार्यों एव पूर्व स्नातको की प्रस्ताविक सगोष्ठी आयोजित नहीं की जा सकी। सार्वदेशिक सभा के अधिकारी निकट भविष्य मे इस सगोष्ठी को आयोजित करने पर विचार करेगे।

महान पिता की महान पुत्रिया

१८ माता निर्माता भवति सत्र मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के समकालीन वैदिक विद्वान आचार्य रामदेव तह कह सुपुत्री श्रीमती दमयन्ती कपूर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की सुपुत्री श्रीमति शाशि प्रभा आर्या स्वामी विशुद्धानन्द जी की सुपुत्री श्रीमती सुषमा शर्मा तथा आचार्य भद्रसेन जी की सुपुत्री कै० देवरत्न जी की वहन श्रीमती उज्ज्वला वर्मा को महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने महान पिता की महान सुपुत्रिया कहकर सम्बोधित किया तो समूचा पण्डाल वैदिक घोष के साथ गूज उठा। इस सत्र मे सूचना प्रसारण मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज मुख्य अतिथि थी। इनके अतिरिक्त माता प्रेमलता डॉ० आशारानी राय श्रीमती शकुन्तला आर्या श्रीमती शन्नो दवी डॉ० इन्दु कुमारी प्रज्ञा आदि ने भी अपने विचार पुस्तुत किए।

१९ इसी प्रकार सूचना प्रसारण मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज वैदिक विभूतियो का उदबोधन सुनत सुनते इतनी भाव विभोर हो गई कि उन्होने इच्छा व्यक्त कि की मेरे से पूर्व सभी विदुषिया उदबोधन प्रस्तुत कर ले जिससे व उन सबका लाभ उठा सके। परन्तु उनकी इच्छा पूर्ण नहीं हुइ माता प्रेमलता शास्त्री श्रीमती सुषमा शर्मा ब्र० इन्दु तथा डॉ० आशा रानी राय तथा श्रीमती शशि प्रभा आर्या के उदबोधनो के बाद ही उन्हे अपना उदबोधन प्रस्तुत करना पडा।

आर्यो का अथाह उत्साह

२० २६–२७ अप्रैल के दोनो दिन रात्रि के कार्यक्रम रात के १२ बजे तक चलते रहे।

२७ अप्रैल को तो तीनो सत्रो के बीच मे दो अवकाश की सुविधा लेना भी आर्यजनता ने उचित नहीं समझा। १–२ हजार व्यक्ति भोजन करने के लिए उठते थे तो अन्य हजारो व्यक्ति जो भोजन कर चुके होते थे वे उनके स्थान पर बैठ जाते थे। इस प्रकार प्रथम अवकाश का सदुपयोग कार्यकर्ताओ के खुले अधिवेशन के रूप मे किया गया और सायकालीन अवकाश ने कण्व आश्रम गुरुकुल से पधारे ब्रह्मचारी जयन्त तथा उनके अन्य ब्रह्मचारी साथियो द्वारा शारीरिक शक्ति और प्राणायाम के बल पर कई प्रकार के प्रदर्शन किए गए। दूसरे अवकाश मे ही स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर निर्मित वृत चित्र पुन प्रदर्शित किया गया।

२१ ५० हजार से अधिक सख्या मे पधारे आर्यजनो के लिए हरिद्वार के दर्जनो मठो आश्रमो और धर्मशालाओ मे आवास की व्यवस्था की गई थी। अकेले विश्वविद्यालय परिसर मे ही लगभग १०००० से अधिक व्यक्तियो के ठहरने की व्यवस्था थी। इसके अतिरिक्त गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम तथा प्रेमनगर आश्रम मे बहुत बडी सख्या मे आर्यजन ठहरे।

व्यायाम प्रशिक्षण

२२ विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग की आधुनिक मशीनो पर लगभग २०० आर्यजनो को शारीरिक व्यायाम का प्रशिक्षण भी दिया। और इसमे भाग लेने वाले व्यक्तियो को एक विशेष प्रमाण पत्र भी दिया गया।

ऐतिहासिक स्मारिका

२३ इस महासम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित एक भव्य स्मारिका का भी विमोचन किया गया जिसमे भारत के अधिकतर गुरुकुलो की सूची तथा सक्षिप्त विवरण प्रकाशित किया गया है। यह स्मारिका सार्वदेशिक सभा कायालय से ५० रुपये मे प्राप्त की जा सकती है।

महासम्मेलन का केन्द्रीय उद्देश्य

२४ इस महासम्मेलन मे एक केन्द्रीय विचार प्रस्ताव रूप मे कि विगत १०० वर्षो मे लगभग २०० गुरुकुलो की स्थापना देश के विभिन्न हिस्सो म हुई है परन्तु अगले पाच वर्षों मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा यह प्रयास करेगी कि भारत का कोई जिला गुरुकुल शिक्षा पद्धति से अछूता न रहे।

स्वामी श्रद्धानन्द पर वृत्तचित्र

२५ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी की प्रेरणा पर स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन और कार्यो पर तैयार कराए गए एक वृतचित्र का विमोचन भी इसी महासम्मेलन मे किया गया। यह फिल्म लगभग ४५ मिनट की है जिसके निर्देशक श्री सुभाष अग्रवाल है।

गम्भीर सैद्धान्तिक चिन्तन

२६ महासम्मेलन की मुक्तकण्ठ से हर व्यक्ति ने प्रशसा की विशेष रूप से आध्यात्मिक वातावरण की। केन्द्रीय जहाज रानी मन्त्री श्री वेदप्रकाश गोयल ने भी भाव विभोर होकर यहा तक कहा कि आमतौर पर धामिक सम्मेलनो मे कहानिया सुनाई जाती है जबकि इस महासम्मेलन के प्रत्येक सत्र मे अति गम्भीर और सैद्धान्तिक विषयो पर गहरी चर्चा प्रस्तुत की जा रही है और उतनी ही गम्भीरता से आर्य जनता को ग्रहण करते हुए देखा जा रहा है।

आधुनिक युग मे वेद और विज्ञान

२७ २६ अप्रैल को आधुनिक युग मे वेद और विज्ञान सत्र का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता आचार्य वेद प्रकाश जी ने तथा सयोजन डॉ० भारत भूषण ने किया। गुरुकुल कागडी के परिदृष्टा श्री सदानन्द तथा पूर्व सासद डॉ० सजय सिह एव सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुन्शीराम सेठी इस समारोह के विशिष्ट अतिथि थे। इस समारोह को स्वामी विवेकानन्द सरस्वती श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय डॉ० सत्यपाल सिह महात्मा गोपाल स्वामी डॉ० रामप्रकश तथा श्री के०एस० शेषाद्रि आदि वैदिक विद्वानो ने सम्बोधित किया। कर्नाटक से पधारे श्री शेषाद्रि ने अपना पूरा भाषण अग्रेजी मे प्रस्तुत किया जिसका सक्षिप्त हिन्दी अनुवाद महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने आर्य जनता के सामने रखा।

शेष भाग ८पर

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 9 10/05/2002 दिनांक ६ मई से १२ मई २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 9 10 05/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

पृष्ठ ७ का शेष

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, हरि

आर्य परिवार सत्र

२८ २६ अप्रैल को ही रात्रि कालीन आर्यपरिवार सत्र की अध्यक्षता सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल ने की और सयोजन श्री देवेन्द्र शर्मा ने किया। इस सत्र मे सर्वश्री रासासिह रावत जयसिह राव गायकवाड पाटील दोनो आर्य सासद तथा श्री रामनाथ सहगल विशिष्ट अतिथि थे। इसी सत्र मे श्री मोहन लाल मोहित जी का सम्मान किया गया। इस सत्र को आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री आचार्य भगवान देव चैतन्य डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री स्वामी दिव्यानन्द आदि वैदिक विद्वानो ने सम्बोधित किया।

आधुनिक युग मे धर्म और आध्यात्मिकता

२६ २७ अप्रैल प्रात काल आधुनिक युग मे धर्म और आध्यात्मिकता सत्र की अध्यक्षता पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी ने की। केन्द्रीय जहाज रानी मत्री श्री वेदप्रकाश गोयल इस सत्र में मुख्य अतिथि थे तथा श्री धर्मपाल आर्य विशिष्ट अतिथि थे। इस सत्र के सयोजक डॉ० महेश विद्यालकार थे। इस सत्र को श्री प्रशस्य मित्र शास्त्री डॉ० प्रियव्रत दास प्रो० उमाकान्त उपाध्याय आचार्य रामानन्द आदि वैदिक विद्वानो ने सम्बोधित किया।

आधुनिक युग मे धर्म प्रचार का स्वरूप

३० २७ अप्रैल को रात्रिकालीन सत्र का विषय था आधुनिक युग मे धर्म प्रचार का स्वरूप जिसकी अध्यक्षता कनाडा आर्य समाज के प्रधान श्री अमर ऐरी ने तथा सयोजन श्री विमल वधावन ने किया क्योकि इस सत्र के पूर्व निर्धारित सयोजक श्री स्वतन्त्र कुमार को किसी कारणवश समारोह छोडकर वापस पठानकोट जाना पडा। इस सत्र मे डॉ० उदय नारायण गगू (मारीशस) मुख्य अतिथि थे। इस सत्र को डॉ० सत्यपाल सिह ब्रह्मचारिणी प्राची ब्रिगेडियर चितरजन सावन्त डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री डॉ० कृष्ण चोपडा तथा प्रो० राजेन्द्र विद्यालकार आदि वैदिक विद्वानो ने सम्बोधित किया।

समापन सत्र मे राष्ट्रभक्ति

३१ २८ अप्रैल २००२ का समापन सत्र जिसे राष्ट्र सेवा सत्र कहा गया था आर्यजनो के दिल और दिमाग पर देश भक्ति की एक अमिट छाप छोड गया। इस सत्र मे अमर शहीद भगत सिह के छोटे भाई सरदार कुलतार सिह तथा भतीजे किरणजीत सिह की उपस्थिति ने आर्यजनो को आनन्द प्रदान किया। श्री राम प्रसाद बिस्मिल के घनिष्ठ मित्र एव स्वातन्त्र्य वीर अश्फाक उल्ला खा के पोते की उपस्थिति भी आर्य जनता के हर्ष और उमग का आधार थी। इस अतिथि का नाम भी अश्फाक उल्ला खा ही है जिनकी आयु लगभग ३५ वर्ष है। अश्फाक उल्ला खा २७ और २८ अप्रैल दोनो दिन मच पर उपस्थित रहकर मच की शोभा बढाते रहे। इन तीनो महानुभावो का भरपूर सम्मान किया गया।

कई महत्वपूर्ण विमोचन

३२ प्रत्येक सत्र मे बहुत सी पुस्तको और प्रचार सामग्री का विमोचन मच से किया जाता था।

विद्वानो और आर्यनेताओ का चिरस्मरणीय सम्मान

३३ प्रत्येक वक्ता एव अतिथि को सम्मानित करने के लिए मोतियो की माला विशेष छोटे और बडे स्मृति चिन्ह तथा कमीज पर लगाने वाले स्मृति बैज प्रदान किए जाते थे। पुष्पमालाओ का प्रयोग केवल दो बार ही किया गया। स्वागत मे प्रदान की जाने वाली यह अभिनन्दन सामग्री प्रत्येक अतिथि एव वक्ता के साथ स्थाई रूप मे एक स्मृति बनी रहती है।

आयोजन की रूप रेखा

३४ महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने इस महासम्मेलन को एक महायज्ञ के रूप मे सम्पन्न कराने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा के साथ विगत तीन महीने से लगभग प्रति सप्ताह अथवा दस दिन के बाद हरिद्वार व्यवस्थाओ क प्रबन्ध के उद्देश्य स आते–जाते रहे। इस महासम्मेलन के घोषणा पत्र के माध्यम से सभी सत्रो की विचारधाराओ को पिरोकर एक चिन्तन सामग्री का प्रस्तुतिकरण श्री विमल वधावन ने करने का प्रयास किया। यह घोषणा पत्र सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने समापन समारोह के सत्र मे पढकर सुनाया।

३५ इस महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन के अनुसार दिल्ली हरियाणा पजाब उत्तर प्रदेश और विशेष रूप से हरिद्वार के लगभग २०० से अधिक महानुभावो के एक व्यापक समूह ने इस समूचे महासम्मेलन म अपना प्रत्यक्ष सहयोग दिया हे उन्होने इनके अतिरिक्त अन्य सभी अत्माओ का भी साधुवाद किया है जिनका बेशक अप्रत्यक्ष सहयोग मात्रा ही इस आयोजन मे प्राप्त हुआ। इस आयोजन के लिए लगभग दो दर्जन विशेष समितियो का गठन कि[illegible] ा। आर्य तपस्वी श्री सुखदेव मध्य प्रदेश के श्री [illegible] नारायण भार्गव स्वामी सकल्पानन्द स्वामी शुभानन्द श्री अमन बजाज श्री इन्द्र कुमार मेहता आदि ने तो श्री विमल वधावन के साथ समारोह से लगभग १० दिन पूर्व ही २४ घण्टे के लिए स्वय को समर्पित कर दिया था। आयोजन मे किसी प्रकार की त्रुटि के लिए श्री विमल वधावन ने स्वय को जिम्मेवार ठहराते हुए क्षमा याचना की है।

विशिष्ट आर्य नेताओं का सम्मान

३६ इस महासम्मेलन के अवसर पर मॉरिशस से पधारे आर्य नेता श्री मोहन लाल मोहित का भी अभिनन्दन किया गया जो २२ सितम्बर २००२ को १०० वर्ष के हो जाएगे। इसी प्रकार स्वामी आत्मबोध जी तथा श्री रामनाथ सहगल का भी अभिनन्दन किया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैo देवरत्न आर्य ने इन महानुभावो के जीवन के बारे मे विस्तृत विचार किया।

राजनैतिक नेता

३७ इस महासम्मेलन मे ३ केन्द्रीय मन्त्री तथा चार सासदो की उपस्थिति भी आर्यजनो के लिए उत्साहवर्धक रही।

सत्रो की विस्तृत रिपोर्ट

३८ इस महासम्मेलन के विभिन्न सत्रो मे प्रस्तुत उदबोधनो तथा अन्य कार्यवाहियो की रोचक प्रस्तुति आगामी अक से प्रारम्भ करने का प्रयास किया जाएगा।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक २३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १३ मई से १९ मई २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

परोपकारी कार्य राष्ट्र समृद्धि का आधार हैं

आर्य समाज सरस्वती विहार का २४ वा वार्षिकोत्सव ६ मई से १२ मई तक वेद प्रचार सप्ताह के रूप मे मनाया गया जिसका समापन १२ मई को राष्ट्र समृद्धि सम्मेलन के रूप मे हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य अखिलेश्वर जी ने की। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन डी०ए०वी० प्रबन्ध समिति के उप प्रधान श्री शान्तिलाल सूरी वेदिक विद्वान डॉ० महेश विद्यालकार वेदानुरागी आर्य तपस्वी श्री सुखदेव जी तथा उत्तरी पश्चिमी वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री राजेन्द्र आनन्द ने इस सम्मेलन मे अपने विचार प्रस्तुत किए। सभी वक्ताओ के उदबोधन आर्यत्व के निर्माण के आधार पर सगठनात्मक एकता के माध्यम से राष्ट्र के सेवा कार्यो पर केन्द्रित थे।

श्री वधावन ने कहा कि किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति शून्यता से प्रारम्भ होती है। इसी प्रकार राष्ट्र की समृद्धि भी व्यष्टि से समष्टि की ओर जाने के सिद्धान्त पर टिकी है। राष्ट्र समृद्धि का मूलाधार हे परोपकार की भावना। यह भावना यज्ञ का प्रतिफल है। जिस व्यक्ति के दिल और दिमाग याज्ञिक वन चुके हो वह व्यक्ति समाज को देने वाला बन जाता है लेने वाला नही। यज्ञ आर्यसमाज की एक मुख्य पहचान है। इसका अभिप्राय यही हे कि परोपकार आयसमाज की पहचान है। जिस प्रकार व्यापारी अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पहले दिन ही सम्पूण लक्ष्य प्राप्त नही कर लेता बल्कि कदम--कदम आगे बढता हुआ वह अपने लक्ष्य तक पहुचता है। उसी प्रकार राष्ट्र की समृद्धि भी किसी एक या दो कार्यो से नही होती। परोपकारी भावना वाला व्यक्ति जब समाज मे बैठकर कोई कार्य करता है तो उसके कार्यो से समाज के अन्य व्यक्तियो को लाभ मिलता है। इस प्रक्रिया मे परोपकार के केन्द्र उस व्यक्ति के कार्यो का जैसे--जैसे विस्तार होता जाता है उसके परोपकार का दायरा बढता जाता है। जैसे--जैसे दायरा बढता हे वेस--वैसे उस परोपकार रूपी यज्ञ से लाभ उठाने वालो की सख्या मे भी वृद्धि होती जाती है। इस प्रक्रिया के चलते कुछ व्यक्ति अपने जीवन मे अपने कार्यो का लाभ १००० व्यक्तियो तक पहुचा पाते हैं कुछ अन्य व्यक्ति १०००० दस लाख या दस दस कराड व्यक्तियो क दायरो को अपना लाभ दे पात हैं। ओर इस प्रचार के जितने भी अधिक से अधिक परोपकार के यज्ञ होते है उतना ही अधिक राष्ट्र समृद्ध होता है।

उन्होने राष्ट्र समृद्धि की इस सैद्धान्तिक व्याख्या के बाद यह भी स्पष्ट रूप से कहा कि इन परोपकारी यज्ञो क विपरीत यदि हम समाज से लेने के कार्य प्रारम्भ कर दे अर्थात स्वार्थी कार्यो मे लिप्त रहे तो उन सारे कार्यो का प्रभाव नकारात्मक हाता है। स्वार्थ की लडाई परस्पर द्वष पाप अपराध और अन्य सभी विध्वसात्मक परिणाम स्वार्थी कार्यो से उत्पन्न हाते हे।

समाज म बढती अपराधी वृत्ति की ओर सकेत करते हुए श्री वधावन ने कहा कि यह परोपकारी कार्यो के अभाव का ही फल हे। जब हम आयसमाज को सबसे बडी परोपकारी सस्था मानते हे ओर स्वय को परोपकारी मानव मानते है तो समाज म अपराधो मे वृद्धि का दायित्व भी हमे स्वीकार करना पडगा। इस पाप की समाप्ति का एक ही उपाय है कि हम गरीब और पिछडे लोगो मे जा--जाकर अपने परोपकारी कार्यो के द्वारा उन निधनो उन अशिक्षित अथवा अर्धशिक्षित व्यक्तियो को पाप और अपराध से मुक्त करे।

– शेष भाग पृष्ठ २ पर

महासम्मेलन नहीं, महायज्ञ था गुरुकुल शताब्दी समारोह

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की सफलता पर लोग हमे अपने बधाई सन्देश भेज रहे है। परन्तु वास्तव मे इन सभी आर्य पुरुषो ओर मातृशक्ति को बधाई के साथ साथ हार्दिक धन्यवाद भी देना चाहता हू, जिनकी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की विशालता ने अपना रूप प्रस्तुत किया।

विगत २३ दिसम्बर २००१ का वह दिन इस सारे कार्यक्रम की योजना और आयोजन के शुभारम्भ का प्रथम दिन माना जाएगा जिस दिन गुरुकुल कागडी मे स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस आयोजित किया ग्या उसी दिन सायकाल दिल्ली पजाब और हरियाणा सभा के कुछ अधिकारियो ने परस्पर मिल बैठकर इस विचार का समर्थन किया कि गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना के १०० वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य म शताब्दी समारोह का आयोजन एक विशाल आर्य महासम्मेलन के रूप मे किया जाए। इस विचार को भी सबने स्वीकार किया कि यह आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान मे आयोजित हो जिसमे देश विदेश के आर्यजनो को इसमे आमन्त्रित किया जाए। सिद्धान्तत इन विचारो को मिले समर्थन से प्रेरित होकर देर रात तक जागकर इस शताब्दी महासम्मेलन की एक विस्तृत रूप रेखा और प्रथम से अन्तिम चरण की सारी योजना बना दी। २४ दिसम्बर को हम दिल्ली आ गए। २५ दिसम्बर को दिल्ली मे भी प्रतिवर्ष की भाति विशाल स्तर पर बलिदान दिवस आयोजित हुआ जिसका नेतृत्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने किया। २६ दिसम्बर को सभा प्रधान जी के समक्ष शताब्दी महासम्मेलन की सारी योजना रखी गई तो उन्होने तत्काल इस पर कार्य प्रारम्भ करने की अनुमति दे दी। बस फिर क्या था पीछे मुडकर देखने की कभी न तो आवश्यकता महसूस हुई और न ही इसका अवकाश था। समय बहुत कम था फिर भी योजनाबद्ध और लक्ष्यबद्ध करके एक एक काम को करते चल पडे। कोई काम किसी की जिम्मेदारी पर तो कोई किसी और पर। आर्यजनो ने भी खूब साथ निभाया दिल्ली पजाब हरियाणा यू०पी० और उत्तराचल के आर्यजनो के अतिरिक्त गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के शिक्षक ओर शिक्षकेत्तर महानुभावो ने प्रारम्भिक काल मे अवश्य ही कुछ सकोच व्यक्त किया परन्तु जब उन्हे यह विश्वास हो गया कि शताब्दी का यह अवसर एक ऐतिहासिक रूप मे सारे विश्व के सामने स्थापित होना चाहिए और इस महासम्मेलन के माध्यम से गुरुकुल कागडी एक बार फिर हजारो हजार आर्यजनो की उपस्थिति से गौरवान्वित होगा तो गुरुकुल कागडी का प्रत्येक व्यक्ति अपना सहयोग देने के लिए इस प्रकार सामने आया जैसे किसी विशाल प्रतियोगिता का आयोजन हो। वास्तव मे यह महासम्मेलन एक महायज्ञ के रूप मे परमपिता परमात्मा के आशीर्वाद से आयोजित एक प्रतियोगिता ही थी।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेदप्रकाश जी और कुलसचिव डॉ० महावीर जी के नेतृत्व मे डॉ० भारतभूषण डॉ० रूप किशोर शास्त्री डॉ० कश्मीर सिह श्री करतार सिह डॉ० श्रवण कुमार शर्मा डॉ० आर० जी० कोशिक डॉ० श्रीकृष्ण डॉ० कौशल कुमार श्री कौस्तुभ पाण्डे डॉ० दीनानाथ डॉ० जयदेव वेदालकार डॉ० जगदीश विद्यालकार श्री बलजीत सिह श्री कमल कान्त बुधकर श्री प्रदीप जोशी श्री आर०डी० शर्मा श्री डॉ० ईश्वर भारद्वाज डॉ० राजकुमार रावत डॉ० बी०डी० जोशी डॉ० यू०एस० विष्ट आदि महानुभावो के नेतृत्व मे इनके सम्बन्धित विभागो के दर्जनो अन्य महानुभावो ने मिलकर इस महासम्मेलन के प्रत्येक कठिन से कठिन कार्य को भी सुगम बना दिया। अनुमानत १०० से अधिक गुरुकुल के इन महानुभावो के अतिरिक्त हरिद्वार के कई अन्य आर्यजनो ने भी हर सभव सहयोग हर समय देने मे तत्परता दिखाई। आर्यनेता श्री देवराज वानप्रस्थाश्रम के प्रधान डॉ० सुभाष एव मन्त्री श्री यशवन्त मुनि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के डॉ० हरिगोपाल श्री नरेश बब्बर एडवोकेट श्री अतुल मगन श्रीमती मनुहारी पाठक श्री राजकुमार चौहान तथा वैदिक मोहन आश्रम के श्री रामस्नेही श्री यशवीर एव श्री दिनेश आदि महानुभावो की नेतृत्व क्षमता और अन्य योग्यताओ का पूरा लाभ इस महासम्मेलन को प्राप्त हुआ।

दिल्ली पजाब हरियाणा और उत्तर प्रदेश की प्रान्तीय सभाओ ने जहा इस आयोजन मे अपना हर सम्भव सहयोग दिया वही देश विदेश की समस्त सभाओ और आर्य समाजो ने सैकडो हजारो व्यक्तियो को समूहो के रूप मे इस महासम्मेलन मे जाने के लिए प्रेरित ही नही किया अपितु समस्त यात्रियो के हरिद्वार पहुचने के प्रबन्ध मे भी भागीदारी की। देश की कोई भी प्रान्तीय सभा ऐसी नही थी जिसने न्यून या अधिक आर्थिक आहुति इस महासम्मेलन मे न प्रदान की हो।

बगाल सभा के प्रधान श्री मोहन लाल जी एव मन्त्री श्री आनन्द कुमार आर्य ने तो लाखो रुपयो से सहयोग के अतिरिक्त बहुत बडी सख्या मे आर्यजनो के हरिद्वार पहुचने का प्रबन्ध किया। इसी प्रकार आसाम बिहार उडीसा तमिलनाडु, कर्नाटक आन्ध्रप्रदेश महाराष्ट्र गुजरात मुम्बई मध्य विदर्भ मध्य प्रदेश राजस्थान हिमाचल प्रदेश और जम्मू कशमीर आदि सभी प्रान्तो से आगन्तुको का ताता बधा रहा।

इस आयोजन मे पजाब के आर्यजनो ने भी इस बार श्री हरबश लाल शर्मा श्री सुदर्शन शर्मा श्री देवेन्द्र शर्मा श्री स्वतन्त्र कुमार और श्री प्रेम भारद्वाज आदि के नेतृत्व मे इस महासम्मेलन के लिए अप्रत्याशित योगदान दिया।

हरियाणा सभा के मन्त्री आचार्य यशपाल जी के नेतृत्व ने भी हर सम्भव योगदान इस महासम्मेलन को प्रदान किया।

दिल्ली से हरिद्वार के बीच गाजियाबाद मुरादनगर मोदीनगर मेरठ मुजफ्फर नगर और सहारनपुरके आर्यनेताओ ने तो जब–जब भी आवश्यकता पडी और विशेष रूप से पजाब और दिल्ली से चलने वाली यात्राओ का स्वागत करके अपनी विशाल ह्रदयता का परिचय दिया।

दिल्ली के आर्यजनो मे सर्वश्री जगदीश आर्य महाशय धर्मपाल मुशीराम सेठी वैद्य इन्द्र देव सोमदत्त महाजन राजीव भाटिया रवि बहल पतराम त्यागी पुरुषोत्तम लाल गुप्ता बलदेव राज तथा विनय आर्य आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय है।

दिल्ली के आर्यजनो माताओ ओर आर्यवीरो ने तो इस महासम्मेलन रूपी महायज्ञ मे अपनी आहुतिया एक याज्ञिक की तरह प्रदान की।

आयोजन के लम्बे चौडे कार्यक्रम पर जब एक दृष्टि वापस मुडकर डालता हू तो कुछ खटटी–मीठी या कडवी यादे भी मस्तिष्क मे उभरने लगती हैं। यज्ञ मे कभी किसी का हाथ जल जाता है तो किसी की अगुली मे समिधा के एक कोने से एक काटा चुभ जाता है। परन्तु फिर भी धन्य हैं वे सब आत्माए जो यज्ञ के दौरान आने वाले इन छोटे–मोटे कष्टो को जिन्दगी मे कभी स्मरण नही रखते।

यज्ञ मे आहुति देने वाले यजमान का भी उतना ही महत्व है जितना गोदाम से समिधा लाकर देने वाले सेवक का और इस यज्ञ मे सयोजक के रूप मे मैने सदैव अपने आप को केवल मात्र एक महत्वपूर्ण सेवक ही समझा है। इससे अधिक कुछ भी नही। जिन उद्देश्यो और सकल्पो को लेकर यह महायज्ञ आयोजित हुआ था वे सकल्प बहुत से आर्यजनो के मन मे स्थापित हो चुके है। आगे इन सकल्पो के क्रियान्वयन का कार्य चलता रहेगा। ईश्वर हमे और समस्त आर्यजनो को सामर्थ्य प्रदान करे कि गुरुकुलो की सख्या वृद्धि वाले सकल्प को हम यथा सम्भव पूरा कर पाए। शताब्दी महासम्मेलन की सफलता केवल इस आयोजन से ही सिद्ध नही होगी बल्कि आने वाला भविष्य बताएगा कि यह सकल्प कितने पूर्ण हुए।

– विमल वधावन

पं० बटेश्वर दयाल शर्मा की प्रथम पुण्य तिथि

आर्यसमाज दीवान हाल के पूर्व प्रधान स्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय पडित बटेश्वरदयाल शर्मा का पहला पुण्यस्मृति दिवस दिनाक २ जून २००२ (रविवार) को प्रात ८ बजे से आर्यसमाज दीवान हाल मे मनाया जाएगा।

सभी से प्रार्थना है कि समय पर पधारकर श्रद्धासुमन अर्पित करे।

– डॉ० मेजर रविकान्त, मन्त्री

पृष्ठ १ का शेष भाग

राष्ट्र समृद्धि का कोई भोगोलिक दायरा नहीं हो सकता क्योकि हमारा राष्ट्र सस्कृति के सिद्धान्त पर स्थापित है। यह सस्कृति वेद और आर्यत्व की सस्कृति है। इसी सस्कृति की सारे विश्व मे समृद्धि का लक्ष्य हमारे लिए महर्षि दयानन्द जी ने स्थापित किया था। जिसे एक नारे के रूप मे हम क्षण प्रतिक्षण स्मरण रखते है **कृण्वन्तो विश्वमार्यम'** लेकिन यह निश्चित है कि कृण्वन्तो स्वआर्यम के बिना उस लक्ष्य तक पहुचना भी असम्भव काम है।

राष्ट्र स्मृद्धि सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आर्य तपस्वी सुखदेव जी ने भी आत्मा की पवित्रता और शुद्धता को सबसे अधिक महत्वपूर्ण बताया। उन्होने कहा कि मुझे यह देखकर हार्दिक प्रसन्नता होती है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान अधिकारी इस सिद्धान्त की स्थापना के लिए अत्यधिक प्रयासरत नजर आते हैं। उन्होने गुरुकुल शताब्दी आर्य महासम्मेलन की सफलता का आधार भी इन्हीं भावनाओ को बताया।

इस कार्यक्रम का सचालन आर्य समाज सरस्वती विहार के प्रधान श्री भजन प्रकाश आर्य ने किया। श्रीमती सुदेश आर्या ने विगत एक सप्ताह मे भजनो के माध्यम से आर्यजनता को धर्म की प्रेरणाए दीं। प्रतिदिन आचार्य अखिलेश्वर जी के वेदप्रवचन तथा ८ मई को आयोजित आर्य महिला सम्मेलन और ११ मई को आयोजित बच्चो की भाषण प्रतियोगिताए विशेष आकर्षण का केन्द्र रहीं।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार के संस्मरण चित्रों के माध्यम से



(क) महर्षि दयानन्द सरस्वती के महान शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का आदमकद तैलचित्र जो पुरातत्व संग्रहालय मे आगन्तुको के आकर्षण का केन्द्र रहा। (ख) ओ३म ध्वज को फहराते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य उनके पीछे सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा विशाल जन समुदाय। (ग) गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलध्वज को फहराते हुए कुलाधिपति श्री हरवश लाल शर्मा तथा उनके पीछे विश्वविद्यालय के अन्य पदाधिकारी।



(क) दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री नरेन्द्र मोहन जी को विद्यामार्तण्ड की उपाधि तथा अन्य स्मृति चिह्न आदि भेट करते हुए श्री सुदर्शन शर्मा श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन आचार्य वेदप्रकाश जी प० हरवश लाल शर्मा कै० देवरत्न आर्य श्री सदानन्द श्री स्वतन्त्रकुमार तथा श्री देवेन्द्र शर्मा। (ख) उदघाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय राज्यमत्री श्री विजय गोयल। (ग) सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य उदघाटन भाषण प्रस्तुत करते हुए। (घ) मच सचालन करते हुए सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा।



(क) गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के परिसर मे स्थित वेद मन्दिर का विहगम दृश्य। (ख) प्रात कालीन यज्ञ के शुभारम्भ का निर्देश देते हुए ब्रह्मा आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री जी तथा मचस्थ श्री आर्य तपस्वी सुखदेव स्वामी शुभानन्द तथा यज्ञ के सयोजक डॉ० भारतभूषण जी। (ग) श्रद्धापूर्वक यज्ञ करते हुए आर्यजन।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] के माध्यम से



(क) दीक्षान्त समारोह के अवसर पर डिग्रिया प्राप्त करने की प्रतिक्षा म नवस्नातक (ख) नवस्नातिकाए (ग) एव (घ) दीक्षान्त समारोह का [illegible] ण्डाल मे आनन्द उठाते हुए मातृशक्ति (ड) भाग पुरुष [illegible] आयोजन का विशाल जनसमुदाय



२५ अप्रैल २००२ को दोपहर बाद आयाजित गुरुकल सस्कृति सत्र के अध्यक्ष डा० रामनाथ वेदालकार जी आचार्य यशपाल जी वक्ता डा० वीर [illegible] विद्यालकार श्री कन्हैयालाल तलरेजा स्वामी सकल्पानन्द सरस्वती श्री राममेहर एडवोकेट डा० सच्चिदानन्द शास्त्री आचार्य चन्द्रदव शास्त्री लोकसभा सदस्य श्री रामचन्द्र बैदा सुप्रसिद्ध शिक्षाविद एव उद्योगपति डा० अशोक कुमार चोहान को सम्मानित करते हुए सत्र क सयोजक डा० रघुवी [illegible] वदालकार तथा श्रीमती अशोक चौहान

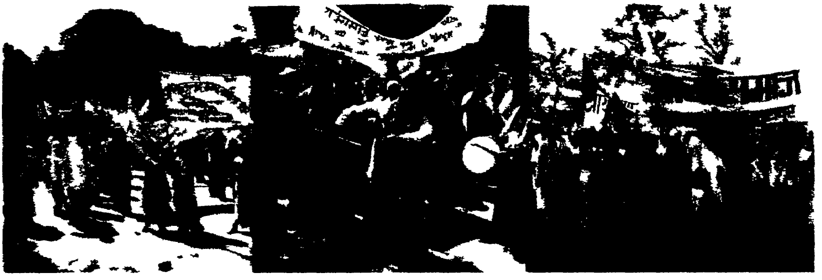


(क) २६ अप्रैल २ [illegible] २ की प्रात बेला मे महासम्मेलन के अध्यक्ष कै० दवरत्न आर्य यज्ञ वेदी पर इस सकल्प के साथ निर्णय लेते हुए कि यज्ञ करने वाले यात्रियो की शोभायात्रा (वेद की अनन्त यात्रा) मे जिलाधिकारी का आदेश केसे बाधा बन सकता है (ख) श्रद्धा से यज्ञ करते हुए आर्य नर नारियो की भावनाए जिलाधिकारी से टकराने के लिए सर्वस्व आहूत करने के लिए तैयार (ग) यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म से सुसज्जित विश्वविद्यालय की झाकिया जिनमे तकनीकी शिक्षा कम्प्यूटर विभाग प्रबन्धन विभाग आदि की झाकिया भी शोभायात्रा म शामिल होने के लिए तेयार खड़ी है

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार के संस्मरण चित्रों के माध्यम से



वेद की अनन्त यात्रा का नेतृत्व सभालने के लिए तैयार कै० देवरत्न आर्य बग्गी पर सवार हुए तो अन्य बग्घियो पर महासम्मेलन के सयोजक श्री *विमल वधावन के निवेदन को स्वीकार करते हुए स्वामी सुमेधानन्द जी चम्बा तथा कनाडा आर्यसमाज के प्रधान श्री अमर ऐरी तथा उनके भाई श्री* देवेन्द्र ऐरी भी बग्घियो पर सवार हुए। आर्य सन्यासी गजराज के आगे चलते हुए और गजराज के ऊपर सवार होकर इस लक्ष्य को लेकर आगे बढे की वेद की अनन्त यात्रा वैदिक मोहन आश्रम पर ही समाप्त होगी।



दर्जनो गुरुकुलो के ब्रह्मचारी अपने अपने बैनरो सहित इस विशाल शोभायात्रा मे शामिल हुए। दिल्ली की आर्यसमाज सी ब्लाक की मण्डली के नेता ढोलक के साथ भगडा नृत्य करते हुए श्री सतीजा जी। आर्यसमाज जयपुर तथा देश के विभिन्न हिस्सो से आयी अन्य मण्डलिया उनके पीछे झूम झूम कर मजिल की ओर अग्रसर होती हुई।



बिहार प्रान्त भी पीछे नही आर्यसमाज नवादा का बैनर उठाए आर्य नर–नारी। हर की पौडी पर शोभायात्रा का एक हवाई दृश्य जो इस यात्रा के विशालता और अपार उत्साह का प्रदर्शन कर रहा है। यात्रा के मध्य मार्ग का एक दृश्य जिसमे अग्रिम पक्ति मे महासम्मेलन सयोजक श्री विमल वधावन के साथ सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य श्री लक्ष्मी चन्द श्रीमती उर्मिला वर्मा श्री आर्य नरेश तथा अन्य सन्यासीगण एव आर्यजनता।

(शेष चित्र अगले अक मे)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य

दक्षिण अफ्रीका में धर्म प्रचार अभियान पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य तीन सप्ताह के धर्मप्रचार अभियान एव सगठनात्मक सुदृढता के उद्देश्य से दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर रवाना हो गए है। उन्होने मुम्बई से १६ मई को यह यात्रा प्रारम्भ की उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या भी गई है। यह विशेष यात्रा आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के निमन्त्रण पर आयोजित की गई है।

सभा प्रधान जी अपने दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान आर्य बैनीवोलैण्ड होम (अनाथालय) का दौरा करेगे। अप्रवासी भारतीयो विशेष रूप से उद्योगपतियो और युवाओ की राष्ट्र निर्माण मे भूमिका पर कई सगोष्ठियो का आयोजन किया गया है। एक विशेष सगोष्ठी मे तो दक्षिण अफ्रीका मे रहने वाले भारतीयो को पश्चिमी प्रभावो से मुक्त रहते हुए भारतीय सस्कृति के आधार पर जीवनयापन करने जैसे सिद्धान्तो पर विचार–विमर्श होगा। एक अन्य सगोष्ठी मे महिलाओ की भूमिका पर भी चर्चा की जाएगी। कैप्टन आर्य इस यात्रा के दौरान डरबन तथा दक्षिण अफ्रीका की अन्य आर्य समाजो का भी दौरा करेगे।

आर्यसमाजो के अतिरिक्त साउथ अफ्रीका हिन्दू महासभा वेद धर्म सभा तथा कई अन्य सस्थाओ के पदाधिकारियो से भी मिलने का कार्यक्रम है। सभा प्रधान जी दक्षिण अफ्रीका के कई राष्ट्रवादी नेताओ से भी भेट करेगे। दक्षिण अफ्रीका मे भारत के राजदूत से भी विशेष मुलाकात का कार्यक्रम निश्चित है।

दक्षिण अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के वयोवृद्ध नेता एव महान प्रेरकडा० शिशुपाल राम भरोस जी तथा सभा के अन्य पदाधिकारी भी इस प्रचार अभियान मे कैप्टन देवरत्न आर्य के साथ रहेगे।

आर्यसमाज कृष्णनगर दिल्ली के पूर्व प्रधान श्री सुभाषचन्द्र सभ्रवाल का आकस्मिक निधन



दिल्ली ११ मई। आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली के पूर्व प्रधान एव ललिता प्रसाद आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल अनाज मण्डी शाहदरा दिल्ली के प्रबन्धक श्री सुभाष सभ्रवाल का शनिवार ११ मई २००२ को प्रात ११ ३० बजे हृदयगति रूक जाने से निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति के साथ आर्यसमाज के धर्माचाय श्री चन्द्रदेव शास्त्री ने की। उनकी चिता को अग्नि उनके भतीजे श्री मुकेश सभ्रवाल के सुपुत्र श्री हर्ष सभ्रवाल ने दी। इस अवसर पर आर्यसमाज कृष्णनगर के प्रधान श्री विशम्भरनाथ अरोडा मन्त्री डा० हरभगवान मलिक एव उपप्रधान श्री जगदीश्वरनाथ कठपालिया के साथ साथ सैंकडो आर्यजन स्त्री समाज की सदस्याए सगे सम्बन्धी एव इष्ट मित्र उपस्थित थे।

उनकी आयु ६२ वर्ष की थी। उनके परिवार मे उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उषा सभ्रवाल सुपुत्र श्री सुनील सभ्रवाल एव सुपुत्रिया श्रीमती सगीता चडढा एव श्रीमती मिन्नी बत्ता हैं। ये तीनो बच्चे विवाहित हैं। मृत्यु के समय श्री सुनील सभ्रवाल एव श्रीमती सगीता चडढा अमेरिका मे थे।

श्री सुभाष जी आर्यसमाज कृष्णनगर के सक्रिय कार्यकर्त्ताओ मे थे। आर्यसमाज के सिद्धान्तो एव यज्ञ मे उनकी अगाध श्रद्धा थी। वे आर्यसमाज के माली थे जो हर समय आर्यसमाज की प्रतिष्ठा और उसके प्रचार प्रसार मे सलग्न रहे। अपने पवित्र दान के माध्यम से आर्यसमाज की गतिविधियो को सक्रिय बनाए रखने मे उनकी रुचि सदा बनी रही।

उनकी स्मृति मे अन्तिम शोक एव श्रद्धाजलि सभा १७ मई २००२ (शुक्रवार) साय ४ से ५ बजे तक आर्यसमाज कृष्णनगर शाहदरा मे सम्पन्न हुई जिसमे विभिन्न आर्यप्रतिनिधि सभाओ आर्य शिक्षण सस्थाओ आर्यसमाजो महिला आर्यसमाजो व्यापारिक सस्थाओ से प्राप्त शोक सन्देश पढकर सुनाए गए तथा आर्य नेताओ ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री सुभाष जी की आत्मा को सदगति प्रदान करे और उनके परिवार जनो सगे सम्बन्धियो एव सहयोगियो को इस अपार दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

– *वेदव्रत शर्मा* सभा मन्त्री

राष्ट्रीय एकता एवं समृद्धि के लिए हिन्दी आपनाएं।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 16 17/05/2002 दिनांक १३ मई से १६ मई २००२ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 16 17 05/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लैसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

श्रीमती लाजवन्ती गिरधर दिवंगत



आर्यसमाज पजाबीबाग विस्तार के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रामदास जी गिरधर की धर्मपत्नी श्रीमती लाजवन्ती गिरधर का २१ मार्च २००२ को निधन हो गया।

स्वर्गीय श्रीमती लाजवती गिरधर जी का जन्म एक अक्तूबर सन १६३२ को सराये सिद्धू (जिला मुल्तान – पाकिस्तान) मे एक आर्य परिवार मे हुआ था। उनके पिता श्री हरिराम जी दुआ व माता श्रीमती लक्ष्मीबाई दुआ दोनो अध्यापक थे। श्रीमती लाजवती जी पर बचपन से ही आर्य सस्कारो का प्रभाव था। वे अपने माता पिता की तरह यज्ञ किए बिना अन्न ग्रहण नहीं करती थीं। उनकी स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र थी। कुशाग्र बुद्धि की धनी श्रीमती लाजवन्ती सौम्य व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं।

विवाह के उपरान्त उन्होने भी अध्यापन का उत्तरदायित्व सम्भाला। १६६२ मे वे मुख्याध्यापिका के पद से सेवानिवृत्त हुई। उनके पतिश्री रामदास जी गिरधर अधिकाशत दौरे पर रहते थे। उन्होने बडी कुशलता से घर और बाहर दोनो की जिम्मेदारियो को सम्भाला और अपनी चारो पुत्रियो को उच्च शिक्षा दिलाई और अपने पैरो पर खडा किया। आज उनकी चारो पुत्रिया भी अध्यापन कार्य करते हुए उनके द्वारा दिए गए सुसस्कारो की सुगन्धि चारो ओर फैला रही है।

अपने जीवन के अतिम दिनो मे उनकी स्मरण शक्ति का उत्तरोत्तर ह्रास होता गया और उन्हे असाध्य कष्ट सहना पडा। २१ मार्च २००२ को उनका देहावसान हो गया। २३ मार्च को आर्यसमाज पजाबी बाग विस्तार मे श्रद्धाजलि सभा हुई। आर्य केन्द्रीय सभा के पूर्व कार्यालय सचिव स्वर्गीय श्री नन्दलाल गुप्ता उनके चाचा थे। – *राजेन्द्र दुर्गा*

गुरुकुल खेडा-खुर्द में प्रवेश प्रारम्भ

अपने बच्चो को ईश्वर भक्त देश भक्त एव आज्ञाकारी बनाने हेतु गुरुकुल खेडा खुर्द दिल्ली मे प्रवेश दिलाये। पाचवीं कक्षा पास स्वस्थ बालको का प्रवेश आरम्भ हो चुका है। शिक्षा आवास नि शुल्क है। सात्विक भोजन – दूध हेतु नाम मात्र शुल्क सहयोग रूप मे लिया जाता है।

– आचार्य सुधाशु

गुरुकुल खेडा-खुर्द दिल्ली ८२ दूरभाष ६८६६८८५६

गुरुकुल में प्रवेश आरम्भ

उत्तराचल वेद–विद्या सभा द्वारा सचालित **महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल (सस्कृत विद्यालय) शौले पो० ज्योली जिला अल्मोडा** मे नवीन छात्रो का प्रवेश आरम्भ हो गया है। कक्षा पाच और कक्षा आठ उत्तीर्ण मेधावी छात्रो से ३१ मई २००२ तक आवेदन आमन्त्रित है। आधुनिक विषयो के साथ साथ सस्कृत तथा वेद वेदागो के अध्ययन का यह स्वर्णिम अवसर है जिसका लाभ इच्छुक अभ्यर्थी शीघ्र उठावे। स्थान सीमित है।

गुरुकुल के लिए एक गुरुकुलीय व स्नातक अथवा प्राचीन व्याकरण विषय मे शास्त्री या आचार्य योग्यताधारी वैदिक सस्कारो वाले अध्यापक की आवश्यकता है। इच्छुक अभ्यर्थी शीघ्र गुरुकुल के आचार्य से उपरोक्त पते पर सम्पर्क करे।

– डॉ० जयदत्त उप्रेती

२११७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

प्रवेश सूचना

श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय टकारा जिला राजकोट ३६३६५० (गुजरात)

१ **प्रथम पाठ्यक्रम** – महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा से मान्यता प्राप्त मध्यमा शास्त्री आचार्य तक अध्ययन सुलभ है। वेद दर्शन उपनिषद सस्कृत व्याकरण एव साहित्य तथा सभी सस्कार स्वामी दयानन्द जी द्वारा लिखित सभी ग्रन्थ उपदेश भजनोपदेश का प्रशिक्षण पाना अनिवार्य है। **योग्यता** – सातवीं कक्षा पास प्रवेश के लिए आवेदन करे।

२ **द्वितीय पाठ्यक्रम** – पुरोहित उपदेशक एव भजनोपदेशक का प्रशिक्षण पाने वाले छात्र आवेदन कर सकते है। योग्यता– न्यूनतम दसवीं कक्षा पास। **आचार्य विद्यादेव** से उपरोक्त पते पर सम्पर्क करे।

नोट दोनो प्रकार के पाठ्यक्रमो के लिए प्रशिक्षण के लिए नि शुल्क व्यवस्था है।

आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि ३१ मई २००२ है।

श्री धर्मवीर खन्ना के युवा दामाद दिवंगत

आर्यसमाज जामनगर (सौराष्ट्र) गुजरात के प्रधान एव टकारा ट्रस्ट के माननीय ट्रस्टी श्री धर्मवीर खन्ना के युवा दामाद का देहावसान हो गया।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवगत आत्मा को शान्ति एव सदगति उनके परिवार तथा सगे–सम्बन्धियो का धैर्य एव सान्त्वनाप्रदान करे। – *वेदव्रत शर्मा सभा प्रधान*

आर्यनेता श्री जगदेव नहीं रहे

दिल्ली के प्रमुख आर्य नेता एव विद्वान तथा आर्य राष्ट्रीय मच के मन्त्री प्रि० जगदेव जी का दु खद देहावसान १ मई को प्रात हो गया। वे ७४ वर्ष के थे। उनके पीछे उनकी पत्नी तथा तीन सुपुत्रो एव एक सुपुत्री का परिवार है।

उनके देहावसान का समाचार आर्यजनो मे एक दु ख की लहर छोड गया। पजाबी बाग श्मशान घाट मे उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आर्य विद्वानो तथा वेद पाठियो के द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन श्री जगदीश आर्य श्री सोमदत्त महाजन श्री नवनीत अग्रवाल श्री विनय आर्य श्री अरूण वर्मा श्री मदन मोहन सलूजा श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा श्री सुरेन्द्र रैली श्री राजेन्द्र दुर्गा स्वामी धर्ममुनि आचार्य हरिदेव जी प० सुधाकर जी तथा अन्य आर्य महानुभाव उपस्थित थे।

उनकी स्मृति मे शोक सभा ३ मई को आर्यसमाज मन्दिर डी ब्लाक जनकपुरी मे सम्पन्न हुई।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक २४ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयान दाब्द १७६ सोमवार २७ मई से २ जून २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

देशहित में वीरांगनाएं आगे आएं

– जयसिंगराव गायकवाड़ पाटील

सुशिक्षित नारी ही राष्ट्र का आधार हैं। स्वाभिमान स्वावलम्बन सस्कृति व सेवा से ही कन्याए राष्ट्र का गौरव बढा सकती है। ये विचार पूर्व के द्रीय राज्य मन्त्री श्री जयसिगराव गायकवाड पाटील न सरिता विहार मे आर्य वीरागना व्यक्तित्व विकास व आत्मरक्षण शिविर मे व्यक्त किए।

आचार्या प्रभा वन्दना अमोद कमार शास्त्री ने ५० कन्याओ युवतियो का लाठी तलवार जूडो कराट योगासन व वैदिक सस्कृति का ज्ञान कराया।

सचालिका श्रीमती उज्ज्वला वर्मा स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती श्री सुरेन्द्र रैली ने समापन समारोह म शिविरार्थियो को चरित्र निर्माण व सादा जीवन उच्च विचार को लक्ष्य बनाने पर बल दिया।

वीरागना दल की प्रमुख श्रीमती उज्ज्वला वर्मा के अनुसार अतीत मे नारी जाति का जो सम्मान था उसे पुन प्रतिष्ठित करना सस्था का उद्देश्य है।



आर्य वीरागना शिविर के दौरान व्यायाम प्रदर्शन करती हुई शिविरार्थी बालिकाए। मुख्य अतिथि श्री जयसिगराव गायकवाड पाटील का स्वागत करती हुई आर्य वीरागना दल की सचालिका श्रीमती उज्ज्वला वर्मा। वीरागना को सम्मानित करते हुए श्री कृष्णलाल सिक्का।

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के सहयोगी हरिद्वार मे सम्मानित

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के सफलतापूर्वक आयोजन के पीछे सैकडो महत्वपूर्ण आत्माओ का योगदान रहा है। महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन के अनुसार आर्यो के इस विशाल समागम की सफलता का सारा श्रेय पृष्ठभूमि मे काम करने वाले समस्त महानुभावो को मिलेगा। इन्हीं विचारो को मूर्त रूप देने के लिए गुरुकुल विष्वविद्यालय तथा हरिद्वार के समस्त आर्यजना का अभिनन्दन कार्यक्रम गुरुकुल कागडी के सीनेट हाल म २५ मई को आयाजित किया गया।

विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेद प्रकाश जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा कुल सचिव डा० महावीर जी एव पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार तथा महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने सहयोगी आर्य बन्धुओ को महासम्मेलन के स्मृति चिन्ह तथा बैच प्रदान करके सम्मानित किया।

श्री विमल वधावन ने कहा कि यह महासम्मेलन एक यज्ञ रूप था इसमे जिस किसी व्यक्ति ने छोटे बडे जैसे रूप मे भी अपनी आहुति दी वह अभिनन्दनीय है परन्तु हम उन लोगो के लिए भी कल्याण और सदबुद्धि की प्रार्थना करते है जिन्होने इस सम्मेलन के दौरान षडयन्त्रपूर्वक इसे विफल करने का प्रयास किया। यह सम्मेलन गुरुकुल पर मडरा रहे काले बादलो को हटाने के लिए था। इस यज्ञ की सफलता से हमारा केवल पहला प्रयास सफल हुआ है।

शेष पृष्ठ ७ पर

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति बर्खास्त

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प० हरबस लाल शर्मा ने विश्वविद्यालय के निलबित कुलपति डा० धर्मपाल को तत्काल प्रभाव से बर्खास्त कर दिया है। विश्वविद्यालय की सर्वोच्च शिष्ट परिषद ने माना है कि डा० धर्मपाल ही विश्वविद्यालय भूमि विक्रय प्रकरण के असली सूत्रधार है। सीनेट की सस्तुति पर ही यह कार्यवाही की गई है

गुरुकुल विश्वविद्यालय का सावा स्थापना वर्ष प्रारम्भ होते ही गुरुकुल के ग्यारह कर्णधारा ने विश्वविद्यालय को दान मे मिली २० करोड रुपय मूल्य की करीब १६८ बीघा बशकीमती जमीन मात्र ७० लाख म बेच दी थी। यह जमीन गुपचुप कूटरचनाए कर बची गई। सरकारी अधिकारियो से मिलकर कुलपति ने दाखिल खारिज भी तत्काल करा दिया था।

इस मामले का खुलासा होने पर विश्वविद्यालय म भारी हगामा तथा प्रदर्शन हुए तथा कब्जे को लेकर गोलिया भी चली। यह वही बेशकीमती जमीन है जिसे दर्शाकर विश्वविद्यालय को यू०जी०सी० की मान्यता मिली थी।

भारी हगाम के बाद गुरुकुल प्रबधिका म भारी परिवतन हुआ तथा दशको से गुरुकुल पर काबिज प्रो० शेरसिह श्रीमती प्रभात शोभा स्वामी इद्रवेश स्वामी ओमवेश आदि को गुरुकुल छोडना पडा। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने गुरुकल सभाला तथा हरबसलाल शर्मा का कलाधिपति बनाया गया। कुलाधिपति न पदभार सभालते ही तत्कालीन कुलपति डा० धर्मपाल का निलबित कर दिया

शेष पृष्ठ ७ पर

व्रतो के लिए सावधान
मुझे तेजस्वी बनाओ ! राष्ट्र को बढाओ

व्रतेषु जागृहि। ऋ० ६/११ ६४
हे मानव व्रतपालन के लिए सावधान हो।

अग्ने वर्चस्विन कुरु। *अथर्व० ३/२२/३*
हे अग्ने मुझे तेजस्वी बनाओ।

राष्ट्र च रोह द्रविण न रोह। *अथर्व १३/१/३४*
राष्ट्र उन्नत हो धन से समृद्ध हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

सीमापार के आतंकवाद के उन्मूलन से ही राष्ट्र रक्षा

श्रीनगर के प्रेस सवाददाता सम्मेलन मे भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने घोषित किया कि भारत पाक सीमा की स्थिति गम्भीर और चुनौती भरी है। उन्होने कहा है कि हमे बारह साल से चल रहे इस परोक्ष युद्ध को जीतना ही होगा। प्रधानमन्त्री के वक्तव्य से स्पष्ट है कि देश के नेतृत्व ने सीमापार से प्रायोजित आतकवादी हमले हमेशा के लिए शान्त करने के लिए उपयुक्त निर्णायक कार्रवाई करने का मन बना लिया हे और धीरे धीरे उसी दिशा मे एक एक कदम आगे बढ रहा है। भारत ने बार बार प्रमाण दिए हे कि भारतीय क्षेत्र मे हाने वाली आतकवादी गतिविधिया पाक द्वारा प्रशिक्षित ओर समर्थित भाडे के आतकवादी कर रहे है। जम्मू–कश्मीर विधानसभा भारतीय ससद तथा कोलकाता स्थित अमेरिकी केन्द्र पर हुए आतकवादी हमलो मे भारत ने पाकिस्तान का हाथ होने के प्रमाण दिए इसे विश्व समुदाय ने गम्भीरता से नहीं लिया। अन्तर्राष्ट्रीय आतकवाद के विरुद्ध झण्डा उठाने वाला अमेरिका और अन्य पश्चिमी राष्ट्र भारत को तो सयम बरतने का तथा बातचीत द्वारा पाकिस्तान से समस्या सुलझाने की सलाह देते रहे है परन्तु उन्होने पाकिस्तान से क्या व्यवहार किया यह स्पष्ट नही है। हर बात की सीमा होती हे। जम्मू क कालूचक म सनिक परिवारो पर हुए आतकवादी हमले ने सीमा पार कर ली। भारत को सयम बरतने की सलाह देने के स्थान पर पाकिस्तान को वह सलाह दी जाए जिससे वह इन हरकतो से बाज जाए। सैनिको के समक्ष भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने यह घोषणा की कि सेना तैयार रहे और इस बार की लडाई निर्णायक होगी यह ऐसा सकेत है कि जिसे पाकिस्तान और साथ ही विश्व समुदाय को गम्भीरता से लेना होगा। यह अचम्भे की बात है कि विश्व के प्रमुख राष्ट्र भारत को तो सयम रखने की सलाह देते है समझ मे नही आता कि वे पाकिस्तान को सही रास्ते पर चलने की सलाह क्यो नही दे रहे ?

जो भी हो भारतीय प्रधानमन्त्री श्री वाजपेयी जी ने ठीक कहा है कि दुनिया हमारा साथ दे या न दे हमे अपनी रक्षा स्वय करनी होगी। वास्तव मे यही वह मार्ग हे जिस पर चलकर सीमा पार से सचालित आतकवाद का उन्मूलन किया जा सकता है। पाकिस्तान ने पिछले पन्द्रह वर्षो से भारत पर जो छदम युद्ध थोपा रखा हे उसे अब और अधिक सहन नहीं किया जाना चाहिए। असल मे पाकिस्तान मे इतनी शक्ति और साहस नही है कि वह सामने आकर युद्ध कर सके इसलिए वह आतकवाद का सहारा ले रहा है। आतकवादियो को प्रशिक्षित करके जैसे पाकिस्तान उन्हे भारत की सीमा मे भेज रहा है उस परोक्ष या छदम युद्ध ही कहा जा सकता है। विडम्बना यह है कि विश्व के शिखर राष्ट्र खासतौर से अमेरिका ओर ब्रिटेन पाकिस्तान द्वारा थोपे गए इस परोक्ष छदम युद्ध की जानबूझकर अनदेखी कर रहे है। वे दोनो राष्ट्र जिस तरह पाकिस्तान के आतकवादी चेहरे की असलयित को पहचानने से इन्कार कर रहे है उससे कभी कभी यह अनुभूति होती है कि वे पाकिस्तान की झासेबाजी मे फस गए है। यदि ऐसा न होता तो वे स्पष्ट समझ जाते कि पाकिस्तान आतकवादियो से लडने के स्थान पर विश्व समुदाय को धोखा ही दे रहा है। पश्चिमी राष्ट्रो को यह भली प्रकार पता होना चाहिए कि पाकिस्तान ने अपने यहा सक्रिय आतकवादी सगठनो के विरुद्ध कार्रवाई करने के नाम पर यह लीपापोती की है। असल मे उन्हे पता होना चाहिए कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर मे अभी भी आतकवादियो के प्रशिक्षण केन्द्र चल रहे है। यद्यपि पाकिस्तान ने आतकवादी सगठनो पर प्रतिबन्ध लगाने की बात कही थी लेकिन यह अधिकतर जानते है कि कथित रूप से प्रतिबन्धित सगठन नाम बदलकर पहले की तरह सक्रिय है।

यह तथ्य है कि इन सगठनो के आतकवादी अभी भी भारतीय सीमा मे घुसपेठ कर रहे ह। यद्यपि प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को निर्णायक सघर्ष की चेतावनी के बाद पाकिस्तान न सैनिक तानाशाह जनरल परवेज मुशर्रफ ने फिर कहा है कि वह आतकवादियो पर लगाम लगाएग लेकिन अब उन पर भरोसा नही किया जा सकता। इसके पहले भी वह इस तरह की अनेक घोषणाए कर चुके है। असल मे परवेज मुशर्रफ कहते कुछ है और करते कुछ हैं। ऐसी परिस्थितियो मे भारत के लिए उचित यही है कि वह सम्पूर्ण युद्ध का सहारा लिए बिना कुछ ऐसा करे जिससे पाक अधिकृत कश्मीर के आतकवादी अडडे नष्ट किए जा सके। अन्तर्राष्ट्रीय नियम कानून के अन्तर्गत कश्मीर स्थित आतकवादी अडडे समाप्त करने का उसका पूरा नेतिक और कानूनी अधिकार है। आवश्यकता से अधिक सयम राष्ट्र की कमजोरी ही समझा जाएगा। पाकिस्तान द्वारा पोषित और प्रायोजित आतकवाद के उन्मूलन के लिए भारत को दृढता का परिचय देना ही चाहिए। प्रधानमन्त्री श्री वाजपेयी जी ने निर्णायक लडाई लडने की बात कही है – अत यह आवश्यक है कि भारत राष्ट्र ऐसी कार्रवाई करे जो वास्तव मे निर्णायक सिद्ध हो। वस्तुत भारत युद्ध नहीं चाहता लेकिन जब उस पर छदम युद्ध थोपा दिया गया है तो उसका, सामना करना ही होगा। आज जरूरत है कि ऐसे सम्भावित निर्णायक युद्ध के लिए सारा राष्ट्र तैयार रहे जिसस राष्ट्र के शत्रुओ के दात खटटे कर विजय एक नया का अध्याय लिखा जा सके।

बोध कथा

वह अद्भुत ज्योति !

कार्तिक अमावास्य (३० अक्टूबर) का दिन था। चिकित्सक डा० लछमनदास ने महर्षि दयानन्द के जीवन की सभी आशाए छोड दी। अजमेर के अग्रेज सिविल सर्जन डा० न्यूमैन भी बुलाए गए। डा० न्यूमैन महाराज की दशा देखकर चकित हो गए। रोम रोम मे अन्तर्दाह था। उस कष्टदायी दशा मे भी साधु शान्त थे साहस और सहनशीलता की पराकाष्ठा थी। क्षौर कर्म और निवृत्ति के बाद वह लेट गए। भक्तजनो ने पूछा – महाराज आप कैसा अनुभव कर रहे है ? महाराज का उत्तर था – **एक मास बाद आज का दिन आराम का है।** भक्त जीवनदास ने पूछा – आप कहा है ? इश्वरेच्छा म। महाराज ने आत्मानन्द से पूछा – **क्या चाहते हो ? महाराज ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप अच्छे हो जाए।** महाराज ने सान्त्वना देते हुए कहा – **यह देह पच भौतिक है उसका क्या अच्छा होगा।** सब भक्तो को आशीर्वाद और उन्हे उपहार दिलवाए। पाच बजे भक्त से सूचना मिलने पर कि कार्तिक मास अमावस्या है दिन मगलवार है – वदमन्त्रा गायत्री का पाठ प्रारम्भ किया फिर शान्त हो समाधिस्थ हो गए और बोले हे **दयामय सर्वशक्तिमान ईश्वर तेरी यही इच्छा है अद्भुत तेरा लीला है।** शब्दो के साथ करवट ली और श्वास को सदा के लिए बहार निकाल दिया।

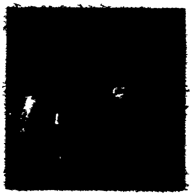
दीपमालिका को सायकाल ६ बजे श्री दयानन्द सरस्वती इहलीला समाप्त कर ज्योतिर्मय प्रभु की शरण मे चले गए।

भक्तजन निहारते रह गए। पाश्चत्य विज्ञान के स्नातक प० गुरुदत्त विद्यार्थी ईश्वर पर कम विश्वास करते थे। भक्तजनो के साथ योगी की यह लीला देख रह थे। असह्य वेदना और अन्तर्दाह मे भी योगी को आनन्दमग्न होकर प्रभु की शरण मे जाते देखकर गुरुदत्त को भी दिव्य शक्ति से प्रेरणा मिली। उनका अन्धकार नष्ट हो गया। उस दिन वह पूर्ण आस्तिक बनकर सच्चे ईश्वर विश्वासी बन गए।

भक्तजनो ने योगी को वेदना भरी विदाई से श्रुणु पूण होकर भी विदाई के उस दिव्य दृश्य को देखकर ईश्वर की अदभुत ज्योति मे प्रवेश की अनुभूति कर रहे थे।

– **नरेन्द्र**

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार के संस्मरण चित्रों के माध्यम से



गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में मंच की सर्वोच्च पंक्ति पर
विराजमान आर्यसमाज के संन्यासी वृन्द,
जिन्होंने महासम्मेलन की प्रत्येक गतिविधि का वैदिक दृष्टि से अवलोकन किया।






(२७ अप्रैल, २००२ दोपहर बाद) माता निर्माता भवति सत्र में
मुख्य अतिथि श्रीमती सुषमा स्वराज को मंच पर लाते हुए सार्वदेशिक सभा
के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा
सभा कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य। मंच पर श्रीमती सुषमा स्वराज को
माल्यार्पण करते हुए श्रीमती शोभा शर्मा, श्रीमती सुदर्शन शर्मा। श्रीमती सुषमा स्वराज को उनके अभिनन्दन
में लिखी संस्कृत की एक कविता भेंट करते हुए लेखक एवं साथ में महासम्मेलन संयोजक श्री विमल वधावन।








[illegible] की [illegible] श्रीमती पुष्पावती का अभिनन्दन करते हुए श्रीमती सुषमा स्वराज।
[illegible] डॉ आभा रानी राय, माता प्रेमलता शास्त्री,
डॉ० इन्दु, श्रीमती सुषमा शर्मा तथा श्रीमती उज्ज्वला वर्मा।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार के संस्मरण चित्रों के माध्यम से









[illegible] महासम्मेलन के [illegible] श्री हरबंस लाल शर्मा जी की पत्नी का स्वागत करते हुए महासम्मेलन के अध्यक्ष डॉ० देवरत्न जी की पत्नी श्रीमती सुशीला आर्या। आर्यों [illegible] इस सत्र की अध्यक्षा श्रीमती [illegible] कपूर साथ में श्रीमती [illegible] सत्र का संयोजन करती हुई श्रीमती [illegible] आर्या।











मुख्य अतिथि श्रीमती सुषमा स्वराज का स्वागत करते हुए सार्वदेशिक सभा के [illegible] महासम्मेलन संयोजक श्री [illegible] के आमन्त्रण पर तीन वर्षीय बालक अथर्व भारत ने शान्तिपाठ प्रस्तुत किया। (२० अप्रैल रात्रिकालीन) सभा में आधुनिक युग में धर्मप्रचार सत्र के अध्यक्ष श्री [illegible] का स्वागत करते हुए महासम्मेलन के अध्यक्ष डॉ० देवरत्न आर्य। [illegible] पधारे डॉ० कृष्ण चोपड़ा। डॉ० देवरत्न आर्य के समक्ष शारीरिक बल का प्रदर्शन करते हुए ब्र० [illegible]। [illegible] प्राची थी।










रात्रिकालीन सत्र के [illegible] (२८ अप्रैल, २००२) समापन समारोह में स्वामी [illegible] का अभिनन्दन करते हुए श्री [illegible] (महाराष्ट्र)। स्वामी सत्यपति जी का अभिनन्दन करते हुए सार्वदेशिक सभा के उप-मन्त्री श्री [illegible] आर्य। [illegible] समापन समारोह में [illegible] प्रस्तुत करते हुए श्रीमती [illegible] शर्मा। [illegible] शहीदों के परिजन शहीद भगत सिंह के छोटे भाई [illegible] सिंह जी, [illegible] तथा शहीद भगत सिंह के भतीजे श्री [illegible]।

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार के संस्मरण चित्रों के माध्यम से





शहीद परिवारों के सम्मान की श्रृंखला - अश्फाक उल्ला खां का अभिनन्दन करते हुए सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा। पुष्प मालाओं से अभिनन्दन प्राप्त सरदार कुलतार सिंह जी। शहीद भगत सिंह के भतीजे श्री किरणजीत का अभिनन्दन करते हुए महासम्मेलन अध्यक्ष कैo देवरत्न आर्य।





महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री अश्फाक उल्ला खां। स्वागताध्यक्ष श्री हरबंसलाल शर्मा के साथ महासम्मेलन अध्यक्ष कैo देवरत्न आर्य। उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा।






अश्फाक उल्ला खां का अभिनन्दन करते हुए गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉo महावीर, कुलपति आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री तथा महासम्मेलन के संयोजक श्री विमल वधावन। समापन भाषण प्रस्तुत करते हुए महासम्मेलन अध्यक्ष कैo देवरत्न आर्य।

पृष्ठ १ का शेष

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन .....

मुख्य कार्य तो अभी प्रारम्भ किया जाना है। यज्ञ करके जिस प्रकार व्यक्ति को ईश्वरीय शक्ति प्राप्त होती है उसी प्रकार इस महासम्मेलन से उत्पन्न शक्ति ओर समर्थन का सदुपयोग गुरुकुल शिक्षा पद्धति के सिद्धान्त के अधिकाधिक प्रचार प्रसार मे किया जायेगा। यही कारण है कि इस महायज्ञ मे सहयोगी आत्माओ को औपचारिक एव अनौपचारिक दोनों प्रकार से धन्यवाद व्यक्त करना हमारा कर्तव्य है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य वेद प्रकाश जी ने कहा कि गुरुकुल कागडी सारे ससार मे एक मात्र ऐसा विश्वविद्यालय है। जिसके पीछे आर्य जनता की एक विशाल ताकत विद्यमान है। जिसके बारे मे पहले हम सुना ही करते थे परन्तु इस महासम्मेलन मे उस ताकत को हमने साक्षात देख भी लिया है।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि इस महासम्मेलन मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सभी व्यक्तियो का हर सम्भव सहयोग हमे मिला इससे सगठनात्मक दृष्टि से हमे महसूस हुआ है कि आप सबकी योग्यताए अपार है। इन योग्यताओ का समुचित सदुपयोग अवश्य ही करना चाहिए।

पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार ने समस्त हरिद्वार वासियो का इस महासम्मेलन मे यागदान देने के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि यदि आप आर्य सस्कारो के बल पर अपने कर्तव्यो का पालन करेगे तो आर्यसमाज की यह विशाल शक्ति हर सुख दुख मे आपके साथ रहेगी और आपके हितो का सरक्षण करेगी।

विश्व विद्यालय के कुल सचिव डॉ० महावीर जी ने विश्व विद्यालय के सहयोगीजनो का साधुवाद करते हुए कहा कि इस महासम्मेलन की योजना के प्रारम्भिक चरण मे हमारा अपना मन सशित रहता था कि इतना विशाल कार्य कैसे सम्पन्न होगा। इस महासम्मेलन की सफलता के बाद हमे यह देखकर आनन्द आया कि महासम्मेलन के सयोजक श्री विमल वधावन ने एक तपस्वी के रूप मे कार्य किया। श्री वेदव्रत शर्मा ने भी अपने शारीरिक कष्टो को भुलाकर अथक प्रयास किये। आर्य समाज के विशाल सगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को बहुत नजदीक से देखने का सुअवसर हमे प्राप्त हुआ। इस महासम्मेलन के दौरान पहली बार हमे इस विश्व विद्यालय के पीछे छिपी सार्वदेशिक सभा की ताकत का अहसास हुआ है। इस महासम्मेलन की सफलता से विश्वविद्यालय का प्रत्येक व्यक्ति गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

इस अभिनन्दन समारोह में जिन प्रमुख महानुभावो को सम्मानित किया गया उनके नाम है — डॉ० भारत भूषण डॉ० त्रिलोक चन्द्र डॉ० कश्मीर सिह श्री करतार सिह डॉ० दीनानाथ श्री महावीर जी डॉ० रणधीर सिह श्री टीकम सिह डॉ० विवेक साहनी श्री लालनरसिह श्री सजीव कुमार डॉ० श्रवण कुमार डॉ० ज्ञानचन्द डॉ० आर० डी० कौशिक डॉ० प्रभात सहगल डॉ० अम्बुज शर्मा डॉ० कौशल कुमार डॉ० श्रीकृष्ण डा० श्यामलता डॉ० नमिता जोशी डॉ० जगदीश विद्यालकर डा० ईश्वर भारद्वाज श्री बलजीत सिह श्री कमलकान्त श्री प्रदीप जोशी श्री आर० डी० शर्मा श्री दीपक अनग श्री भूपेन्द्र वालिया श्री हेमन्त नेगी श्री कौस्तुक पाण्डेय डा बी०डी० जोशी डॉ० राकेश शर्मा डा० यू०एस० बिष्ट इनके अतिरिक्त हरिद्वार क आर्यजनो को भी सम्मानित किया गया जिनमे प्रमुख है — उत्तराचल सभा के मन्त्री श्री देवराज वैदिक मोहन आश्रम के प्रबन्धक श्री रामस्नेही आर्य श्री यशवीर आर्य एव श्री दिनेश चन्द्र शास्त्री श्री नरेश बब्बर एडवोकेट तथा श्री राजकिशोर एडवोकेट वानप्रस्थ आश्रम के प्रधान श्री सुभाष आदि।

पृष्ठ १ का शेष

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति बर्खास्त

गौरतलब है कि डॉ० धर्मपाल जब विदेश यात्रा से गुरुकुल लौटे तब विश्वविद्यालय के तमाम शिक्षक शिक्षणेत्तर कर्मचारी तथा छात्र तबू लगाए धरने पर बैठे थे। खुद को दोषी करार देते हुए डॉ० धर्मपाल ने स्वय भी दो दिनो तक धरने पर बैठकर प्रायश्चित करने का नाटक किया लेकिन भारी जनाक्रोश के सामने वे टिक नहीं पाए। कुलाधिपति द्वारा निलबित कर देने के बाद डॉ० धर्मपाल को गुरुकुल छोडकर जाना पडा।

गुरुकुल विश्वविद्यालय शताब्दी समारोह के समापन से पूर्व विश्वविद्यालय की सर्वोच्च सीनेट ने डॉ० धर्मपाल को दोषी ठहराया तथा उनके स्पष्टीकरण को खारिज कर दिया। सीनेट ने अपनी रिपोर्ट कुलाधिपति के सुपुर्द करते हुए कार्यवाही के तमाम अधिकार उन्हे सौंप दिए। कुलाधिपति ने आज निलबित डॉ० धर्मपाल को बर्खास्त कर दिया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ० महावीर अग्रवाल ने बताया कि गत वर्ष हुआ अनाधिकृत भूमि विक्रय प्रकरण ही बर्खास्तगी का मूल कारण है। उन्होने कहा कि विश्वविद्यालय इस जमीन को वापस लेने का पूरा प्रयत्न करगा।

(साभार अमर उजाला देहरादून १७ मई २००२)

महर्षि दयानन्द शिक्षा ट्रस्ट द्वारा आर्य समाज मन्दिर, ६ ब्लाक, रमेश नगर, नई दिल्ली मे

नैतिक शिक्षा शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्द शिक्षा ट्रस्ट द्वारा आर्य समाज मन्दिर ६ ब्लाक रमेश नगर नई दिल्ली मे झुग्गी झोपडी मे रहने वाले स्कूली छात्रो के लिए दिनाक १६ से २६ मई २००२ तक आठ दिनो के लिए नैतिक शिक्षा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उदघाटन श्री मुन्शीराम सेठी फरन्टीयर बिस्कुट वालो के कर कमलो द्वारा हुआ। आठ दिनो मे बच्चो ने बौद्धिक प्रशिक्षण के माध्यम से भारतीय सस्कृति के उच्च मानवीय मूल्यो का बोध प्राप्त किया। राष्ट्रीय महापुरुषो के जीवन आदर्शो का परिचय प्राप्त किया। सगीत चित्रकला भाषण आदि का उत्तम प्रदर्शन किया। आचार्य विष्णुदत्त ने शारीरिक एव योगासन शिक्षा प्रदान की। आचार्य ब्र० शिवमुनि श्री चावला जी प० श्यामदव शास्त्री आदि ने बच्चो को प्रशिक्षण दिया। आर्यसमाज रमेश नगर के प्रधान श्री नरेन्द्र आर्य श्री भीम सेन गुलाटी जी एव श्रीमती कान्ता हसीजा तथा अन्य सभी अधिकारियो का भरपूर सहयोग शिविर के सचालन हेतु मिलता रहा।

शनिवार दिनाक २५–५–२००२ को प्रात ६ बज से ७ ३० बजे तक रमेश नगर क्षेत्र मे प्रभात फेरी निकाली गई। इस प्रभात फेरी मे आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आय सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा क काषाध्यक्ष श्री जगदीश आय पुस्ताकाध्यक्ष श्री सोमदत्त महाजन श्री रामभज मदान श्री रमश चन्द्र तथा पश्चिमी दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजो के पदाधिकारी उपस्थित थे। प्रभात फेरी का स्वागत प्रसिद्ध उद्योगपति तथा समाजसेवी श्री हीरा लाल चावला तथा उनकी धर्मपत्नी प्रधानाचार्या सावित्री चावला ने किया। प्रभात फेरी मे शिविर मे आए बच्चो ने तथा उपस्थित सभी लोगो ने भजन गए।

२६ मई रविवार को समापन समारोह के अवसर पर महाशय ध र्मपाल जी एम०डी०एच० ने बच्चो को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुन्शी राम सेठी उपस्थित थे। श्री बलदेव जिन्दल ने बच्चो को आशीर्वाद दिया तथा शिविर आयोजन के लिए श्री नरेन्द्र आर्य तथा महर्षि दयानन्द शिक्षा ट्रस्ट को बधाई दी। आचार्य द्विजेन्द्र शास्त्री ने मच सचालन किया। पश्चिम दिल्ली की सभी आर्यसमाजो से पदाधिकारी व सदस्य गुण इस सुअवसर पर आए। उन्होने बच्चो द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की मुक्त कठ से सराहना की। आचार्य प्रकाशचन्द शास्त्री ने दरिद्र नारायण की सेवा ही भगवत सेवा है कहते हुए सभी आर्यजनो व सस्थाओ से इस प्रकार के शिविरो का आयोजन करने हेतु आह्वान किया। श्री प्रकाश चन्द शास्त्री जी ने आर्यसमाज रमेश नगर क प्रधान श्री नरन्द्र आय की प्रशसा की कि उन्होने शिविर क आयोजन मे हर प्रकार का सहयोग दिया। अन्त मे श्री नरेन्द्र आर्य प्रधान आर्यसमाज ने उन सभी का ध न्यवाद किया जिन्होने इस शिविर मे तन मन धन से सहयोग किया। शान्ति पाठ के पश्चात सभी ने ऋषि लगर ग्रहण किया।

आर्यसमाज नगलराय, नई दिल्ली ४६ का ६० वा स्थापना उत्सव

(रविवार, १ जून २००२ से मगलवार, ४ जून २००२ तक)

इस अवसर पर आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान एव हिन्दी सस्कृत बगला उर्दू, फारसी अरबी भाषा के प्रकाण्ड पण्डित श्री महेन्द्र पाल आर्य के धाराप्रवाह उपदेश एव श्री दिनेश दत्त आर्य के मनोहर भजनोपदेश सुनने का सौभाग्य प्राप्त होगा। यज्ञ के सयोजक वानप्रस्थ श्री यज्ञमुनि जी होगे।

आप सभी सपरिवार इष्टमित्रो सहित सादर आमन्त्रित हैं। शनिवार १ जून प्रात ५ से ६ बजे तक प्रभात फेरी होगी। २ जून को व्यायाम प्रदर्शन पुरस्कार वितरण समारोह होगा। अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाए।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री को स्वास्थ्य लाभ

दिल्ली के जयप्रकाश नारायण अस्पताल मे दिनाक २४–५–२००२ को श्री शास्त्री जी का हर्निया का आप्रेशन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। अब उनका स्वास्थ्य प्रगति पर है। वे वर्तमान मे सार्वदेशिक सभा कार्यालय की तीसरी मजिल पर स्वास्थ्य लाभ कर रहे है। परमपिता परमात्मा श्री शास्त्री जी का शीघ्र स्वस्थ करे जिससे व आर्यसमाज क प्रचार प्रसार मे पुन सलिप्त हो सक। सम्पर्क सूत्र ३२६०६८५।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज पश्चिम विहार, ब्लॉक ए ३, नई दिल्ली ६३

प्रधान	श्री रामचन्द्र वर्मा एडवोकेट
उप प्रधान	श्री मेजर के०एन० सेठी
	श्री चन्द्र प्रकाश थरेजा
	श्री मुन्शी राम गुलाटी
मन्त्री	श्री राजेन्द्र कुमार लाम्बा
कोषाध्यक्ष	श्री यशपाल शर्मा

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 30 31/05/2002 दिनाक २६ मई से २ जून २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 30 31 05/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

।। ओ३म।।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा



की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में

पूर्वी दिल्ली मे आयोजित

यज्ञ, प्रवचन एव भजन सन्ध्या

दिनाक	६ जून २००२ रविवार साय ५ बजे
स्थान	रतनदेवी आर्य कन्या उच्चतम माध्यमिक विद्यालय कृष्णनगर शाहदरा दिल्ली ५१
यज्ञ एव प्रवचन	पूज्य स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती
मुख्य अतिथि	श्री लाल बिहारी तिवारी *सासद*
विशिष्ट अतिथि	श्री नसीब सिह *विधायक*
विशिष्ट अतिथि	श्री रामबाबू शर्मा *अध्यक्ष स्थायी समिति*
भजन सध्या	प्रस्तुति श्री अरविन्द सगीताचार्य एव साथी श्री नरेन्द्र आर्य एव श्रीमती शशिप्रभा आर्या

आप सपरिवार एव इष्ट मित्रो सहित सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक

वेदव्रत शर्मा प्रधान	वैद्य इन्द्रदेव महामन्त्री	पुरुषोत्तम लाल गुप्ता कोषाध्यक्ष
पतराम त्यागी मन्त्री	रोशन लाल गुप्त मन्त्री	विनय आर्य सचालक आर्यवीर दल
विशम्भरनाथ अरोडा मन्त्री शाहदरा क्षेत्र	रवि बहल कोषाध्यक्ष पटपडगज क्षेत्र	सुरेन्द्र कुमार रैली प्रधान पटपडगज क्षेत्र
ईश्वरदेवी धवन अध्यक्ष	सुरेन्द्र कुमार गम्भीर प्रबधक	मनोरमा चौधरी प्रिसिपल
पुरुषोत्तम लाल नरुला कोषाध्यक्ष	नयामत राय सदस्य	के०पी० सिह सदस्य

रतनदेवी आर्य कन्या उच्चतम माध्यमिक विद्यालय

आर्यसमाज मन्दिर चन्दन पार्क
नई दिल्ली के
प्रथम वार्षिकोत्सव

गायत्री म
का आयोज

आर्यसमाज मन्दिर चन्दन पार्क (जीवन पार्क) नई दिल्ली–४२ के प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर चतुर्वेद शतक तथा गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन १० जून २००२ से १६ जून २००२ किया जा रहा है जिसमे अनेक साधु–महात्मा विद्वान तथा आर्य भजनोपदेशक पधार रहे है।

समस्त आर्य बन्धुओ एव जन साधारण से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक सख्या मे पहुचकर धर्मलाभ प्राप्त करे।

स्थान आर्यसमाज मन्दिर गली न०–६ चन्दन पार्क (जीवन पार्क) दिल्ली ४२

मार्ग जी०टी० करनाल रोड लिबासपुर स्वरूप नगर बस स्टण्ड से जीवन पार्क पहु

डा० हा० धमपाल ब व कुलपति
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
पत्रालय गुरुकुल कांगडी हरिद्वार
(3050)

निर्वाचन समाचार

दिल्ली की आर्यसमाजो के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली

प्रधान	श्री हस राज चोपडा
उपप्रधान	श्री वेदव्रत शर्मा
	डॉ० अमर जीवन
	श्री वीरेश बुग्गा
	श्री सुभाष गण्डोत्रा
मन्त्री	श्री अरुण प्रकाश वर्मा
उपमन्त्री	श्री राजीव भाटिया
	श्री सुशील कुमार महाजन
कोषाध्यक्ष	श्री एन०सत्य नारायण आर्य
पुस्ताकाध्यक्ष	श्री विजय मनोचा
आ०लेखा निरी०	श्री नरेन्द्र सिह हुड्डा

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली ११०००२
(दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक २५ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार ३ जून से ९ जून २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर ग्लीफैक्स (०११) ३३६०१५०

२१वां वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर सम्पन्न

धर्मान्तरण को काबू करने के लिए सारा देश दयानन्द सेवाश्रम संघ को सहयोग करे

– मनीन्द्रजीत सिंह बिट्टा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत स्थापित अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ द्वारा सचालित २१वा वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर २ जून को सम्पन्न हुआ। इस समापन समारोह मे ससद सदस्य श्री मनीद्र जीत सिह बिटटा मुख्य अतिथि थे। समापन समारोह की अध्यक्षता दयानन्द सेवाश्रम सघ के प्रधान श्री वेदव्रत मेहता ने की और मच सचालन सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन एव माता प्रेमलता शास्त्री ने किया।

सावदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि दयानन्द सेवाश्रम सघ की गतिविधिया समाज की रक्षा का मूल कार्य हे। समूचे आर्यजगत को इस कार्य मे नियमित सहयोग देना चाहिए। उन्होने कहा कि आर्यसमाजो और सभाओ को दयानन्द सेवाश्रम सघ के लिए विशेष बजट बनाने चाहिए।

मच सचालन करते हुए श्री विमल वधावन ने मुख्य अतिथि श्री बिटटा के समक्ष आर्यसमाज और काग्रेस की स्थापनाकाल से लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक का इतिहास प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आर्यसमाज के लोगा ने अपनी साधु प्रवृत्ति का परिचय देते हुए देश के सत्ता सचालन से स्वय को दूर ही रखा। हालाकि कभी कभी ऐसा विचार उठता है कि यदि सत्ता सचालन से दूर न रहते तो अच्छा था। विगत ५० वर्षों के दौरान जिस प्रकार से देश का सचालन किया गया है उसे देखकर आर्यसमाज के लोग दर्द महसूस करते है। आज धर्मान्तरण जैसी समस्या का इलाज भी आर्यसमाज व्यक्तिगत स्तर से ही कर रहा है। बीमारी बहुत विशाल है जबकि इलाज के साधन बहुत कम।

उन्होने कहा कि पजाब प्रान्त मे ही नही अपितु सारे देश मे देश भक्ति के आन्दोलन को महर्षि दयानन्द जी ने खडा किया था। शहीद भगत सिह स्वय ही क्या उसका दो पीढी पूर्व का वश ही आर्यसमाज के प्रभाव मे था।

उन्होने श्री बिटटा के समाने यह विचार रखा कि वे काग्रेस के कर्णधार होने के नाते आज फिर काग्रेस को राष्ट्रभक्ति के मार्ग पर लाने का प्रयास करे।

मुख्य अतिथि श्री मनीन्द्रजीत सिह बिटटा ने कहा कि मैं आतकवाद से तो लड सकता हू, कई बार गोलियो और बमो का सामना कर चुका हू आगे भी कर सकता हू परन्तु राजनीतिज्ञो से लडना मेरे बस की बात नही। भारत के राजनेता वैसे तो बाहर के आक्रमण को भी झेल नही पा रहे परन्तु अन्दर से जो सस्कृति पर आक्रमण हो रहा है उसे तो वे समझ ही नहीं पा रहे।

उन्होने कहा कि सारी दुनिया मे एक ही ऐसा देश है जिसके नाम के साथ माता कहकर सम्बोधित किया जाता है।

उन्होने कहा कि जनता इतिहास को जिन्दा रखना चाहती है परन्तु देश की राजनीति इसमे बाधक है। भगत सिह को फासी पर चढने से पहले यही चिन्ता थी कि गोरे अग्रेजो से मुल्क आजाद हो जाएगा परन्तु काले अग्रेजो के हाथ फिर से कहीं गुलाम न बन जाए। उसे ईश्वर ने भेजा था इसलिए उसके विचार मे सच्चाई थी।

आज लोगो मे अपनी अपनी पहचान प्राथमिक हो गई है जबकि मेरे विचार मे हमारी सबकी पहचान एक भारतीय के रूप मे होनी अत्यन्त आवश्यक है।

उन्होने कहा कि यह धरती स्वामी दयानन्द गुरु गोबिन्द सिह भगत सिह आदि महान सपूतो की धरती है अगर कोई व्यक्ति उसके साथ खिलवाड करने का प्रयास करेगा तो हम इसे बर्दाश्त नही कर सकते। इन देशभक्तो ने भारत मा की रक्षा के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया। मा को कहकर जाते थे –

गोली सीने पर खाएगे
भारत माता को आजाद कराएगे।

आजकल के राजनीतिज्ञ कहते है –

गोली सीने पर नहीं खाएगे
भारतमाता को नौंच नोच कर खाएगे।

आज जिस तरह आर्यसमाज अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा है। सारे देश को इस कार्य मे सहयोग करना चाहिए। अगर सारे देश ने आर्यसमाज का साथ न दिया तो धर्मान्तरण अवश्य होगा। उन्होने कहा कि मुझे तो डर है कहीं सारे देश का ही धर्मान्तरण न हो जाए।

श्री बिटटा ने कहा कि इस देश को तो भगवान ही चला रहा हे क्योकि ताकतवर राजनीतिज्ञ तो इसे हर प्रकार से तोडने मे लगे है। उन्होने कहा कि आज तो देश भक्ति के नारे लगाने से पहले नेता की शक्ल देखनी पडती है।

उन्होने कहा कि मुझे तो इस देश से इतना प्रेम है कि मै इस देश की एक एक इच भूमि को अपना समझता हू। इस देश की रक्षा मे मरना मेरे लिए गर्व की बात होगी। मै बीमार होकर नहीं मरना चाहता मेरी इच्छा है कि गोलिया खाकर मरू मुझ पर पहला बम्ब १५ अगस्त के दिन अमृतसर मे मेरे घर पर फैंका गया। बम्ब फैंकने वाले आतकवादी अपना कार्य करके हरमिन्दर साहब गुरुद्वारे मे छिपे रहे। सुबह ११ बजे जलियावाला बाग मे हमने ध्वज फहराया और साय पाच बजे मेरे घर पर हमला हुआ।

मै अपने दादाजी के साथ जलियावाला बाग जाया करता था। तभी से मेरे मन मे देशभक्ति का सचार हुआ। आज मेरा बेटा मेरे पिताजी के साथ वहा जाता हे। खालिस्तान से सम्बन्धित आतकी नारा को मिटाकर हम देश भक्ति के नारे दीवारा पर लिखा करते थ।

उन्होने कहा कि भगवान इस देश की रक्षा तो कर रहे है परन्तु मुझे डर है कि भारतवासियो को निकम्मा बैठा देखकर भगवान का सहारा भी उठ गया तो इस देश का क्या होगा। आर्यसमाज के यह प्रचार कार्य गम्भीर है। दयानन्द सेवाश्रम सघ को मजबूती मिलनी ही चाहिए।

श्री बिटटा क उदबोधन के उपरान्त माता प्रेमलता शास्त्री न कहा कि बिटटा को देश भक्त बनाने का सारा श्रेय उस मा को जाता है जिसने इसे जन्म दिया। हम भी यही प्रयास कर रहे है कि कन्याआ मे वैचारिक क्रान्ति हो जिससे हज'रो बिटटे पैदा हो सके।

वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार एव डा० कष्ण लाल जी ने भी अपने विचार इस अवसर पर प्रस्तुत किए। राष्ट्रीय पजाबी सभा के सचिव श्री उमेश खोसला ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे।

शिविर के इस सारे कार्यक्रम मे आर्यसमाज रानीबाग के पदाधिकारियो श्री चमनलाल महेन्द्रू, श्री जोगिन्दर खटटर श्री रामलाल आहूजा श्री सुदर्शन नारग श्री अरुण आर्य श्री धर्मपाल गुप्ता श्री कृष्ण कुमार आदि का विशेष योगदान रहा।

अन्त मे श्री वेदव्रत मेहता ने समस्त उपस्थित आर्यजनो एव सहयोगियो का ध यवाद किया और दयान द सेवाश्रम सध की गतिविधियो का भावी स्वरूप प्रस्तुत किया।

अन्धविश्वास और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक आर्यसमाज

गजानन्द आर्य

गुणगान हमारी श्रद्धा भक्ति का प्रतीक है। स्वामी दयानन्द ने लिखा हे कि स्तुति करने म और सुनने मे बहुत आनन्द की अनुभूति होती है। कई बार ऋषि जीवनी सुन सुनकर मन मे श्रद्धा की तरग बही। यदि रामकथा वह अथवा ऋषि कथा सुनने से जीवन मे परिवर्तन नही आया तब वह समय की बरबादी ही होगी। महर्षि सत्यार्थ प्रकाश म लिखते हे **जो केवल भाड के समान परमेश्वर के गुणकीर्तन करता है और अपना चरित्र नहीं सुधारता उसकी स्तुति व्यर्थ है।**

आर्यसमाज जो काम करता है उसे युक्ति सगत मानकर करता है। अन्ध परम्परा अन्ध श्रद्धा आर्यो के स्वभाव मे नही है।

ऋषि का लगाया यह पौधा बहुत पुराना नही है। इस अल्प अवधि मे विश्वभर मे आर्यसमाज का स्थान कितना महत्वपूर्ण बना यह शोध का विषय है। कितने रूपो मे इसे जाना जाता है इसके भी विधान है जिसके अनुसार सदस्य बनते है सभाए होती हैं अधिकारी चुने जाते हैं और निर्धारित अवधि के बाद नया निर्वाचन होता है। कही कोई गुस्सा नहीं। मताधिकार का प्रयोग इस सस्था ने आरम्भ किया सम्भवत कोई भारतीय सस्था इससे पुरानी नहीं। आर्यसमाज ने अपने अधीनस्थ कितनी सस्थाए खडी की है यह भी एक कीर्तिमान है।

यदि आर्यसमाज को एक आन्दोलन के रूप मे जाने तब भी यह सर्वथा उपयुक्त है। अन्धविश्वास और अन्याय के विरुद्ध इसने सदा सघर्ष किया है। जाति पाति छुआ छूत आदि अभिशापो को मिटाने मे बहुत शक्ति लगाई है समाज ने। शिक्षा विस्तार के आन्दोलन से भला कौन अनभिज्ञ होगा। इसी प्रकार आर्यसमाज एक विचार एक जीवन दर्शन ओर एक सार्थक गीत है। आर्यसमाज की समस्त मान्यताए मत मतान्तरो के लोगो ने अपने चिन्तन और विश्वासो मे अपनाई है।

गाव गाव मे आर्यसमाज के गायको ने लोगो के विचार शुद्ध किए है। बडी प्रसिद्ध उक्ति हे कि **आर्यसमाज जब दौडता है तब हिन्दू समुदाय चल पडता है। जब समाज चलता है तब वह अगडाई लेकर खडा हो जाता है। जब तक आर्य समाज जागता है तब हिन्दू समाज सोया रहता है।** सराश यही है कि आर्यसमाज का गतिशील होना आवश्यक है।

आर्यसमाज जाति धर्म सम्प्रदाय और देश विदेश के विभाजन से परे है एक बहुत प्यारा नाम लाला लाजपतराय ने दिया था कि **आर्यसमाज मेरी मा है।** बडी सुन्दर उक्ति थी लालाजी की। आप तुलना करे माताजी और आर्यसमाज के कर्तव्यो का। माता निर्माता भवति अर्थात बच्चो का निर्माण माताओ द्वारा होता है। यही गुण आर्यसमाज मे भी है। निष्ठापूर्वक आचरण करने वाला आर्यसमाजी निश्चय ही अच्छे सस्कारो से युक्त धर्मात्मा और उन्नतिशील बनेगा। देशभक्ति और वेदभक्ति की अमृतमय लोरिया आर्यसमाज का सदस्य बनने पर जिस पर पत्र पर हस्ताक्षर किए जाते हें उसका पाठ आर्यसमाज के सत्सगो मे बार बार दुहराया जाता है ताकि हम अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत रहे।

वर्ष मे एक दिन हमारी इस पवित्र सस्था का जन्म दिन आता है जिसे आर्यसमाज स्थापना दिवस कहते है। घर क किसी सदस्य के जन्मदिन मनाने मे ओर माता रूपी आर्यसमाज का जन्म दिन मनाने मे बहुत अन्तर है। इस सार्वभौम आन्दोलन को वर्ष भर का लेख जोखा प्रस्तुत करने का उपक्रम बनाना चाहिए। केवल ऋषि के गुण गाने तथा आयसमाज के विगत गौरवशाली इतिहास को याद कर लेन भर से भविष्य नही बनेगा।

किसी सस्था को गतिशील बनाए रखने के लिए दो बातो का समन्वय आवश्यक है। दो बाते है – मन और वाणी। मन मे सकल्प करके उसे वाणी द्वारा प्रकट करना यज्ञीय कर्म है। मन मे विचार स्पष्ट न हो और वैसे ही सकल्प विहीन बोलते जाना अयज्ञीय बात है।

इसका दुष्परिणाम होता है गति का रूक जाना। अत अपनी सस्था के जन्मदिन पर आर्यों को यज्ञीय बने रहने का सकल्प लेना चाहिए। सकल्प के लिए मन वचन और कर्म मे धारण करने योग्य ऋषि का वाक्य दोहरा लेना होगा। जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देशनुसार आचरण करना स्वीकार करे नही तो कुछ हाथ न लगेगा क्योकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है, आगे होना उसकी उन्नति तन मन और धन से सब जन मिलकर प्रीति से करे इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत उन्नति दे तो बहुत अच्छी बात है क्योकि आर्यसमाज का सौभाग्य बढाना समुदाय का काम है एक का नही।

– सुक्षिति १६ बालीगज सर्कुलर रोड
कलकत्ता ७०००१६

बोध कथा

वह सच्चे योगी थे

धर्मोपदेश के सिलसिले मे कुछ दिन स्वामी दयानन्द जी काशी मे रहे। पण्डित ठाकुर प्रसाद जी बडे भक्तभाव से महाराज का भोजन उनके आसन पर पहुचाया करते थे। यहा अनेक भद्र पुरुषो ने स्वामीजी से योग के साधन सीखे और उन्हे बडा लाभ हआ। प० ठाकुर प्रसाद जी के हृदय मे स्वामी जी की योगमुद्रा देखने की इच्छा हुई। एक दिन स्वामीजी के सेवको से पूछकर वे उस कुटिया के द्वार पर जा खडे हुए। जिसके भीतर स्वामीजी ध्यानावस्थित थे। यद्यपि दरवाजे बन्द थे परन्तु किवाडो के छिद्रो से महाराज की आकृति स्पष्ट दीख रही थी। उन्होने देखा कि महाराज का आसन धीरे धीरे भूमि से ऊपर उठकर अधर मे अवस्थित हो गया। उस समय स्वामीजी की मुद्रा की अद्भुत छवि थी। उनके मुखमण्डल पर एक प्रकाश भरा चक्र बना था।

एक दिन रायबहादुर प० सुन्दरलाल जी मित्रो सहित स्वामीजी के पास गए। उस समय स्वामीजी आप ही आप हस पडे। प सुन्दरलाल ने पूछा – आप किस बात से हस रहे है ? स्वामीजी ने कहा – एक मनुष्य मेरी ओर चला आ रहा है। उसके आने पर आपको एक कौतुक दिखाई देगा। इस बात के आध घडी बाद एक ब्राह्मण मिठाई लिए आ पहुचा। उसने नमो नारायण करके स्वामीजी को मिठाई भेट की और कहा – इसमे से कुछ भोग स्वामीजी ने उसे कहा – **थोडी सी मिठाई तुम भी खाओ परन्तु उसने नहीं ली।** तब महाराज ने डाटकर कहा लेते क्यो नही हो परन्तु वह मिठाई लेने से झिझकता ही रहा। उस पर स्वामीजी ने कहा – यह मनुष्य हमारे लिए विष मिश्रित मिष्ठान लाया है।

प० सुन्दरलाल जी इस पर पुलिस बुलाने लगे परन्तु महाराज ने कहा – **देखो यह अपने पाप के कारण कितना काप रहा है इसे पर्याप्त दण्ड मिल गया है। पुलिस न बुलाइए।** महाराज ने उस ब्राह्मण को शिक्षा दी ओर छोड दिया। रायबहादुर ने उस मिठाई का एक टुकडा वहीं एक कुत्ते के आगे फेका। वह कुत्ता मिठाई खाते ही मर गया। सारी जनता स्वामीजी के योग के चमत्कार से परिचित हो गई।

– नरेन्द्र

तीन मुक्तक

– मोहनलाल शर्मा रश्मि

एक दूजे के दुख दर्द मे हमे बढाना है हाथ।
गले इन्सानियत को लगाना है भुला के जातपात।।
इस बात को हमेशा हमे याद रखना है।
जीना है साथ साथ हमे मरना है साथ साथ।।

कितना ही आप खोपडी का बाल नोचे।
बेकार है लम्बी चौडी ये तुम्हारी सोचे।।
यदि मुसीबत के मारे कभी किसी गरीब के।
मौके पे रश्मि जो तुमने आसू नहीं पोछे।

गले मिलते थे रोज वो आज गए रूठ क्यो ?
वर्षों की दोस्नी मे पडी है देखा फूट क्यो ?
कभी सोचा नहीं हमने यहा मिल बैठकर।
हो रही अपनो के द्वारा दिन दहाडे लूट क्यों ?

– ४/ ए एकता नगर उकरडी रोड
दाहोद गुजरात ३८९१५१

मैं तेजस्वी बनूं : मुझ में तेज यश हो : राष्ट्र बढाओ धन बढाओ

अग्ने वर्चस्विन कुरु। *अथर्व० ३/२२/३*

अग्ने मुझे तेजस्वी बनाइए।

मयि वर्चो अथो यश । *अथर्व० ६/६६/३*

मुझ मे तेज हो यश हो।

राष्ट्र रोह द्रविण रोह। *अथर्व० १३/१/३*

राष्ट्र को बढाओ धन बढाओ।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

सीमापार के आतंकवाद का उन्मूलन पूरे विवेक : सतर्कता और दृढ़ता से

भारत ने सीमा पार के आतकवाद के उन्मूलन के लिए चार शर्ते रखी हैं यदि उन्हे पूरा किया जाए तो वह आगे बढ कर वार्तालाप की प्रक्रिया शुरू कर सकता है एक बातचीत के लिए उपयुक्त वातावरण हो दूसरे वह बिना कारण वातावरण बिगाडने मे अपनी भूमिका स्वीकार करे। भारत की यह भी मांग है कि पाक अपने यहा अथवा अधिकृत कश्मीर मे आतकवादियो का पोषण और प्रशिक्षण बन्द करे। तीसरे इन प्रशिक्षित आतकवादियो को भारत मे खासतौर से कश्मीर घाटी मे हिसा नरसहार और आगजनी के लिए भेजना बन्द करे। भारत ने बीस कटटर आतकवादियो की सूची पहले ही दे रखी है उन्हे वह भारत को सौंपे जिससे उनके विरुद्ध देश मे अभियोग चलाए जा सके। उसका यह कहना भी कोई नहीं मान सकता कि आतकवादी वहा नहीं हैं। ब्रिटेन के विदेश मन्त्री जैक स्ट्रा ने स्पष्ट शब्दो मे सीमापार का आतकवाद रोकने की बात कही है। रूस ने भी सीमापार के आतकवाद को रोकने की बात कही है। यह भी चिन्ता की बात है कि पाकिस्तान अफगान सीमा पर लगी फौज हटाकर उसे भारतीय सीमा पर लगा रहा है। केन्द्रीय विदेश मन्त्री जसवन्त सिह ने घोषित किया है कि अफगानिस्तान मे आतकवाद का कारखाना बन्द होने क बाद पाकिस्तान आतकवादियो का मुख्य केन्द्र बन गया ह ओर वहा के प्रशिक्षित आतकवादी भारत सहित दूसर दशो को लक्ष्य बना रहे है। यह भी खबर हे कि उसन १००० प्रशिक्षित आतकवादी नियन्त्रण रेखा पर इकटठे कर रखे है और वह उन्हे भारतीय सीमा मे प्रविष्ट कराने की ताक मे है। इसकी के साथ यह भी चिन्ता की बात है कि पाकिस्तान के नवनियुक्त राजदूत मुनीर अकरम ने एक प्रेस सम्मेलन मे कहा है कि यदि युद्ध हुआ तो वह परमाणु आयुधो का प्रयोग करेगा और वह परम्परागत हथियारो तक सीमित नहीं रहेगा। यह भी चिन्ता की बात है कि अहमदाबाद मे एक साथ कई स्थानो पर उपद्रव का प्रयत्न हुआ ठीक वैसे ही जैसे गोधरा काण्ड के बाद गुजरात मे हिसा भडकाई गई थी।

यह कितनी चिन्ता की बात है कि भारत राष्ट्र की स्वाधीनता के ५२वे वर्ष मे स्वाधीन भारत की प्रगति राष्ट्र के उन्हीं भागो मे अवरुद्ध की जा रही है जो कभी भारत राष्ट्र के भाग थे और जिन भूभागो की जनता ने भी स्वाधीनता के सघर्ष मे अपनी उपयुक्त भूमिका प्रस्तुत की थी। उस समय सीमाप्रान्त के आतकवाद से न केवल राष्ट्र की स्वाधीनता को चुनौती दी जा रही है प्रत्युत उसके अस्तित्व को ही निर्मूल करने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस प्रकार भारत को सीमापार के आतकवाद से जो चुनौती मिल रही है उसकी उपेक्षा उचित नहीं है प्रत्युत अब समय आ गया है – जब उसका उन्मूलन पूरे विवेक सतर्कता ओर दृढता से किया जाए। इस भीषण सकट के उन्मूलन के लिए जहा सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र मे आबद्ध होना चाहिए सभी राजनीतिक दलो को उस राष्ट्रीय सकट का सामना करने के लिए सगठित होकर एक सूत्र मे बन्धना चाहिए। इतना ही नही इस भीषण राष्ट्रीय सकट क समय सम्पूर्ण राष्ट्र से सक्रिय सहयोग का आह्वान करना चाहिए। कुछ विदेशी राष्ट्रो ने भारत का पक्ष सराहा है परन्तु देश के सभी प्रमुख दलो नेताओ और जनता को सयुक्त होकर सीमापार के इस आतकवाद के उन्मूलन क लिए वेसा ही सयुक्त सगठित मोर्चा बनाना चाहिए जैसा कि देश से विदेशी शासन के उन्मूलन और स्वाधीनता प्राप्ति के सघर्ष के दिनो किया गया था।

सीमा पार का आतकवाद बहुत बडी समस्या नहीं है यदि देश के सभी प्रमुख राजनीतिक दल राष्ट्रनेता इस सम्बन्ध मे समय रहते जनता ओर राष्ट्र को सगाटित कर ले। यह समस्या ऊपर से क्षणिक सामयिक और छोटी मालूम पड सकती है परन्तु विश्व मे और एशिया मे आतकवाद जिस तरह सकट पैदा कर रहा है उसे ध्यान मे रहकर जनता नेता और शासन को वैसा ही सगटित मोर्चा बनाना चाहिए जैसा कि देश से विदशी शासन के उन्मूलन एव स्वाधीनता सग्राम क दिनो मे बनाया गया था। यह सीमापार का आतकवाद कोई छोटा उपक्षणीय विषय नही है इसक पूर्ण उन्मूलन के लिए सभी राष्ट्रीय दलो को सयुक्त होकर पूरे विवेक सतर्कता और दृढता से राष्ट्रीय एकता को सुदृढ करना होगा। साथ ही इस राष्ट्रीय सकट से जूझने और उसका सदा के लिए निवारण करन लिए विश्व के प्रमुख राष्ट्रो के नैतिक और राजनीतिक सहयोग और सगठन के लिए उपयुक्त वातावरण बनाकर उसे व्यावहारिक स्वरूप तुरन्त देना चाहिए। समस्या जनता एव राष्ट्रीय दलो को सगटित होकर भारतीय और विश्व जनमत को जाग्रत और सगटित करना होगा।

चिट्ठी-पत्री

युद्ध की स्थिति

एक बार फिर हमारे और पाकिस्तान के बीच युद्ध की स्थिति पैदा हो गई परन्तु यह क्या सम्भव है कि युद्ध के बाद हमारी समस्या का समाधान हो जाएगा। युद्ध मे बेतहाशा खर्च बढेगा बहुत से नागरिक और सेना के जवानो की जाने जाएगी। बहुत से गाव और बस्तिया नष्ट हो जाएगी। इससे अच्छा है कि हम अपने देश मे ही आतकवाद को कुचल दे जैसे कि पजाब मे कुचला गया। सरकार सीमापार के आतकवाद से जूझने के साथ देश मे पनप रहे आतकवादियो का सफाया करे। भगवान श्रीकृष्ण ने सीख दी थी कि जब सभी रास्ते बन्द हो जाए तभी युद्ध का विकल्प आजमाना चाहिए।

– नरेश बसल रोहिणी दिल्ली

सब्र की भी सीमा होती है

वर्तमान परिदृश्य मे पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतकवादी गतिविधियो से सीमा पर युद्ध के बादल मण्डराने लगे है। पडोसी युद्धोन्माद मे अपना विवेक खो चुका है। किसी भी बात की एक सीमा होती है और वह सीमा अब पूरी तरह समाप्त हो चुकी है। हमे अपनी सार्वभौम सम्प्रभुता की रक्षा करनी है इसके लिए कब तक मूक दर्शक बने रहेगे कब तक निर्दोष जनता के शवो की गिनती करेगे और कब तक आततायी के जुल्मो के शिकार बनेगे। अब समय आ गया है कि हम शत्रु की भाषा के सकेत को समझकर उसका यथायोग्य समयानुकूल मुहतोड जवाब दे।

– हरिश्चन्द्र औदीच्य आदर्श नगर

बाजे नहीं आए

पाकिस्तान अफगानिस्तान का हाल देखकर भी अपनी हरकतो से बाज नहीं आ रहा। खबरे छप चुकी हैं कि शरीफ के प्रधानमन्त्रित्व काल मे यही मुशर्रफ साहब एटमी हमले की पूरी तैयारी कर बैठे थे। पता नही क्यो हमला नहीं कर सके। अब फिर खबर आई है कि इस बार पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के आतवादी अडडे नष्ट किए जाएगे। प्रश्न है किए जाएग क्या सरकार चुनाव के समीप आने त। प्रतीक्षा कर ... चुनाव जीता जा सक।

– इन्द्रसिह धि[illegible] किग्सवे कैम्प दिल्ली

स्तुति-सख्य-यज्ञ-वीर्य-पड़ौसी एवं परामर्श सम्बन्धी निर्देश

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) अग्रणी प्रभु को स्तुति से अपने अन्दर जगाओ वह हम सब को सात्विक पदार्थ देता है

**अग्नि स्तोमेन बोधय समिधानोऽअमर्त्यम।
हव्या देवेषु नो दधत्।।**

– यजु २२ १५

ऋषि सुतम्भयर। देवता अग्नि। छन्द निचृद गायत्री।

अर्थ हे (सुतम्र) अन्न व वीर्य का भरण करने वाले साधक ! (अमर्त्य अग्निम) अविनाशी अग्रणी परमात्मा को (स्तोमेन बोधय) अपनी स्तुतियो तथा तदनुरूप क्रियाओ के समूह से अपने अन्दर जाग्रत कर। (समिधान) हृदय मे प्रदीप्त होने पर वह (न तेरे साथ) हमे भी (देवेषु) दिव्यगुण प्रदान करके देवो मे सम्मिलित होने के लिए (हव्या दधत्) हव्य दान देने के बाद खाए जाने वाले सात्विक पदार्थो को प्राप्त कराते है।

अर्थ पोषण – सुत यज्ञ सुत्म=अन्नम। हव्या – हुदानादनयो।

निष्कर्ष – अविनाशी परमात्मा को – स्तुतियो तथा तदनुरूप क्रियाओ से अपने मे प्रदीप्त करो। वह तुम्हे सात्विक हव्य, पदार्थो द्वारा दिव्यगुणो को धारण कराकर देव बनाएगा।

२ धन के पीछे दुनिया पडी है, तुम जगन्नाथ की मित्रता का वरण करो

**वेश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम।
वेश्वो राय इषुध्यत द्युम्न वृणीत पुष्यसे स्वाहा।।**

– यजु २२ २१

ऋषि स्वस्त्यात्रेय। देवता विद्वान। छन्द आर्ष्यनुष्टुप।

अर्थ – क्रियाशील जितेन्द्रिय (अत्रेय) विद्वान का मानना है कि (विश्व राय इषुध्यति) विश्व का प्रत्येक मनुष्य धन प्राप्ति के लिए धनुष बाण ताने योद्धा या शिकारी की तरह इधर उधर घूमता फिरता रहता है किन्तु धन के पीछे पडना अच्छा नहीं क्योकि अतिलोभामि भूतस्य चक्र भवति मस्तके। धन सग्रह का अतिलोभ करने से मनुष्य का मस्तक बुरे एव कुटिल उपाया के चक्कर मे पडकर पगलया हत्या प्रवण हो जाता है इसलिए (विश्व भर्त) प्रत्येक मनुष्य को चाहिए वह (देवस्य ने तु) जगत के दिव्य नियन्ता की (सख्य वुरीत) मित्रता को वरण करे और (पुष्य से द्युम्न वृणीत) केवल अपनी परिवार के पोषण के लिए पर्याप्त धन को ही अपना मानकर स्वीकार करे। शेष धन को विद्वत्सेवा या लोक कल्याण मे रत किसी सगठन को दान कर दे – के लिए त्याग कर दे।

निष्कर्ष – आदेश यह है कि (१) जग नियन्ता की मित्रता प्राप्त करने के लिए उसके गुणो को अपना ओ (२) धन के पीछे न पडकर अपने पोषण की आवश्यकता मात्र के लिए सुपथ से दीप्त (हिरण्य या रजत) धन को स्वीकार करो शेष धन को लोक कल्याण के कार्यो मे लगा दो।

(३) आत्म निर्भर बनकर जो महत्व प्राप्त होता है, वह चिरस्थायी होता है

**स्वय वाजिस्तन्व कल्पयस्व स्वय यजस्व स्वय जुषस्व।
महिमा तेऽन्येन न सन्नशे।।**

– यजु २३–१५

ऋषि प्रजापति। देवता विद्वान। छन्द निचृदनुष्टुप।

अर्थ – प्रजापति ब्रह्मा जगत्पिता मनुष्य मात्र को उपदेश करते है कि – हे (वाजिन्) क्रियाशील एव शक्तिशालिन जिज्ञासो ! (स्वय तन्व कल्पयस्व) अपने शरीर को स्वय शक्तिशाली बना दूसरो पर निर्भर रहेगा तो दबता पिछडता जाएगा। (स्वय यजस्व) स्वय यज्ञशील बन दूसरे क्या करते है ? इसकी परवाह मत कर। दूसरो को देखेगा तो तू भी स्वार्थी कुपथगामी बन जाएगा। (स्वय जुषस्व) दूसरो की ओर देखे बिना स्वय प्रभु की प्रीतिपूर्वक उपासना कर और यथासम्भव लोक कल्याण कर। यदि तू ऐसा करेगा तो (अन्येन तेमहिमान सन्नशे) तेरा महत्व कोई नष्ट नहीं कर सकेगा तेरा कोई कुछ नहीं बिगाड सकेगा।

निष्कर्ष – तेरी अन्तरात्मा जिसे ठीक समझती है वह कर। आत्मनिर्भर बन। परमेश्वर मे विश्वास रख। तू परमेश्वर मे जिन गुणो को मानता है उन्हे अपनाने का प्रयत्न कर। लोगो की यथासम्भव भलाई कर। किसी के लिए न बुरा सोच न बुरा कर। तेरी सदा जय होगी।

४ वीर्य का महत्व जान उसकी रक्षा करो और होता बन यज्ञ कर्म करो

**होता यक्षत्प्रजापति सोमस्य महिम्न।
जुषता पिबतु सोम होतर्यज्ञ।।**

– यजु २३ ६४

ऋषि प्रजापति। देवता ईश्वर। छन्द विराडुष्णिक।

अर्थ – (होता) दूसरो को खिलाकर खाने वाला विशाल हृदय व्यक्ति ही (प्रजापति यक्षत्) प्रजाओ के रक्षा एव अधिपति परमात्मा की सगति – अनुभूति व साक्षात करके उसका सखा बनता है। ऐसा ही एक होता नचिकेता था जिसने पृथ्वी हस्ती हिरण्य दीर्घायु पुत्र पौत्रो को छोड यम से आत्म ज्ञान प्राप्त किया। दूसरा होता अर्जुन था जिसने एक लाख की यादव सेना छोडकर निरस्त्र श्रीकृष्ण को वरण किया। तीसरा होता दयानन्द था जिसने ऊखीमठ की गद्दी छोडकर हिमालय मे भटकना स्वीकार किया। (सोमस्य महिम्न जुषताम्) शान्ति और आनन्द के पुज परमात्मा की महिमा जानकर उसका प्रीतिपूर्वक स्तवन और सेवन करे। इसका उपाय है (सोम पिबतु) अपने शरीर मे उत्पन्न सोम=वीर्य का पान करे – उसे सहस्रार मे पहुचा कर ऊर्ध्वरेता बने। यही सोमभाग है। श्रत जगत्पिता परमात्मा (होता) होता बनने के इच्छुक साधक को आदेश देते हैं कि (यज) तू पूज्य विद्वानो वृद्धो का आदर करना सीख अपने बराबर वालो के साथ भरसक सहयोग कर अपने से छोटो की यथासम्भव सहायता कर सात्वना दे।

निष्कर्ष – ईश्वर के प्रेमपात्र सखा बनने के लिए (१) वीर्य रक्षा करो (२) उदार हृदय बनकर दूसरो के लिए त्याग करो – दूसरो को खिलाकर खाओ। प्रभु स्वय दर्शन देगे।

अर्थपोषण – यक्षत – यज्ञ पूजायाम। यज – यज देवपूजा सगति करण दानेषु।

जुषताम जुषी प्रीति सेवनयो। सोम परमात्मा वीर्य वीर्यवर्धक औषधि।

(५) सौभाग्य प्राप्ति के लिए पडोसियों को सन्तुष्ट रख और ब्रह्मज्ञों को अपना बना

**स चेध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते सौभागाय।
मा च रिषदुपसत्ता ते अग्ने ब्रह्माण स्ते यशस सन्तु माऽन्ये।।**

– यजु २७ २

ऋषि अग्नि। देवता सामिधेन्य। छन्द त्रिष्टुप।

अर्थ – हे (अग्ने) प्रगतिशील मानव ! (स इध्यस्व) स्वय अच्छी तरह प्रदीप्त हो (चाहे जिस दिशा या विषय मे। (प्रबोधम च एनम) और अपने पास आने वाले को भी अपनी दीप्ति से प्रबुद्ध दीप्त करे। (महते सौभगाय च उत्तिष्ठ) और इस प्रकार महान सोभाग्यशाली बनने के लिए उठ खडा हो भरसक प्रयत्न कर प्रमादवश कही शिथिल मत पडना। इसके विपरीत अपने अहकार से दूसरो के दिल को दुखाना भी प्रारम्भ न कर देना इसलिए कहा – (ते उपसता च मारिषत) ऐसा व्यवहार कर कि तेरा पडोसी और अपने शिष्य को अपमानित अनुभव न करे। (ब्रह्माण यशस ते सन्तु) ब्रह्मज्ञानी और यशस्वी पुरुष ही तेरे अपने हो अथवा ब्रह्मज्ञ भी तेरे यश का गान करने वाले हो। (अन्येमा) ब्रह्म=ज्ञान से सम्पर्क न रखने वाले तेरे साथी न कह लावे और न ही उन्हे अपना हितैषी समझकर तेरा यशगान करने का अवसर मिले।

निष्कर्ष – समाज मे आगे बढने या उच्चपद प्राप्त करने वाले को किसी न किसी विषय या दिशा मे विशिष्टता प्राप्त करके दूसरो को भी उससे लाभान्वित करने का प्रयत्न करना चाहिए। अपना व्यवहार मधुर और विनम्र रखे तथा ज्ञानी अथवा ब्रह्मवेत्ताओ की सगति करे।

अर्थपोषण – उपसत्ता – उप–समीपे सीदतीति – पडोसी शिष्य अथवा अनुयाई व श्रोता।

रिषत् – रिष हिसायाम्। ब्रह्माण कर्म से ज्ञानी वर्ण से ब्राह्मण नहीं।

(६) किसी को पीडित मत कर, सबका मित्र बन, राजाओं का परामर्शदाता बन, एव प्रदीप्त व प्रसिद्ध हो

**क्षत्रेणाग्ने स्वायु सरभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व।
सजाताना मध्यमस्था एधि राज्ञामग्ने विहव्यो दीदिहीह।।**

– यजु २७ ५

शेष भाग ८ पर

अब भी नहीं तो फिर कब ?

।। शरीर सबके अनित्य हैं यह शरीर भी सदा रहने वाला नहीं है। अत जब तक यह शरीर है तब तक तो कुछ चिन्ता नहीं है परन्तु पश्चात तो आप लोगो को ही यानी सभी को परमार्थ के लिए पुरुषार्थ करना होगा। पुरुषार्थ से ही इस आर्यावर्त । हेतु सब पदार्थ लगाना होगा।।

(… पन … भाग मीमासक जी का पृष्ठ ७८६)

… म आर्यसमाज की स्थापना के समय … म … भी निर्देश किया है कि –

मै सन्यासी हू। मेरा कर्त्तव्य यही है कि जो आप लागो का अन्न खाता हू उसके बदले मे जो भी मैं सत्य समझू उसका निर्भयता से उपदेश करू। मुझे यश कीर्ति की इच्छा नहीं। चाहे कोई मेरी निन्दा करे अथवा स्तुति करे। मै तो अपना कर्त्तव्य समझकर ही धर्म का उपदेश देता हू। चाहे कोई माने या न माने मेरी इससे कुछ भी हानि या लाभ नहीं।

(आर्यसमाज का इतिहास सत्यकेतु जी प्रथमा भाग पृष्ठ २५२)

वर्तमान मे जो कुछ भी आर्य जन जीवन समाज व राष्ट्र मे हानि हो रही है वह महर्षि की हमारी अवमानना से ही है। उन्होने तो अपना कर्त्तव्य पूर्ण रूपेण निभाया। इस आर्य आर्यभाषा आर्य राष्ट्र हित के ही कल्याणार्थ सर्वत्र स्व सामर्थ्यानुसार पद यात्रा स जा कुछ विद्वतजनो की सगति स प्राप्त किया …। …िशयचता पूर्वक … १२।६

म अपने निश्चय और परीक्षानुसार ऋग्वेद से लेकर पूर्व मीमासा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार के लगभग ग्रन्थो को मानता हू

(भ्रान्ति निवारण)

इस प्रसग से यह तो सिद्ध हो ही जाता है कि महर्षि ने जीवन मे कितना अध्ययन किया कितने पडितो ज्ञानियो योगियो से पढा। इनके साथ ही विकृत वैदिक धर्मियो अन्य मतावलम्बियो के भी व जैन बौद्ध ग्रन्थ भी पढे–देखे सुने। इन सबका स्पष्ट उदाहरण **सत्यार्थ प्रकाश** है।

महाकष्ट परिपूर्ण इतनी साधना करके ही हरिद्वार से कलकत्ता पर्यन्त गगा के किनारे किनारे परिभ्रमण करते निर्भयता पूर्वक निराकार परब्रह्म परम पिता परमात्मा की उपासना चारो वेदो को समन्वित करते हुए शिक्षा करते प्रवचन करते रहे। जिसका वर्णन उस समय के कवि सोरो निवासी ने निम्न प्रकार से किया है –

दयानन्द स्वामी सरस्वती बाबा आए ऐसे सन्यासी शास्त्री। बहुतेरे लडके कुपढ डोले पढाई उनको गायत्री।।

(प० लेखराम कृत उर्दू चरित आर्यभाषानुवाद प्रथम सस्कारण नया बास आर्यसमाज)

इसी सन्दर्भ मे श्री टीकाराम स्वामी सनाढ्य ब्राह्मण रामघाट बनखण्डी ने पूज्यपाद प० लेखराम आर्य मुसाफिर को आपबीती सुनाते हुए कहा जब पूज्यपाद स्वामीजी महाराज प्रथम बार यहा पधारे तब मुझसे प्रश्न किया कि – **तुम ब्राह्मण कैसे हो।** प्रत्युत्तर मे मैंने कहा कि **सन्ध्या गायत्री करने से।** तब उन्होने कहा **गायत्री सुनाओ।** तब मैने कहा कि गायत्री सुनाने की किसी को भी गुरु आज्ञा नही है।

– सोहनलाल शारदा

प्रत्युत्तर मे स्वामीजी ने कहा – **सन्यासी ब्राह्मणो का भी गुरु होता है।** इस बात का समर्थन हमारे साथी ने भी किया। तभी मैंने गायत्री मन्त्र सुनाया। इसे सुनकर कहा – **तुम्हारा उच्चारण अच्छा है। तुम हमसे सन्ध्या अग्निहोत्र बलि वेश्वदेव भी पढ लो।** इस बार मुझ सन्ध्या लिखा कर चले गए।

पुन जब सवत १६२८ मे पधारे तब मेरे से प्रश्न किया – तूने सन्ध्या याद कर ली। तो मैने कहा कोई भी पढाने वाला ही नहीं मिला तो म कैसे याद करता। तभी स्वामीजी ने प्रेम पूर्वक कहा –

तू पढेगा तो हम यहीं ठहरकर तुम्हे पढाएगे।

अब मुझे प्रथम दिवस ही लक्ष्मी सूक्त की १५ ऋचाए कण्ठस्थ कराईं। तथा आगे पञ्च महायज्ञ विधि २१ दिवस पर्यन्त लिखाते पढाते रहे।

(पुस्तक वही पृष्ठ १०७)

इस प्रकार के कई उदाहरण नई पीढी को वैदिक धर्मी बनाने के जीवन चरित्र मे भरे पडे है। अन्तिम पडाव वर्ष मे शाहपुरा प्रवास के समय एक पत्र मे लिखते है –

यहा शाहपुरा मे पाच या सात दिन पश्चात दो स्थानो पर नित्य का यज्ञारम्भ होगा। एक राज मे दूसरा पुण्डरीक जी के यहा। उसमे उचित उपदेश व विधि बताने मे समय लगेगा। यह कार्य पूरे आठ दिन मे पूरा हुआ।

(पत्र विज्ञापन दूसरा भाग मीमसक जी का पृष्ठ ६६२ ६६४)

इस प्रकार महर्षि ने कथनी करनी का भेद समाप्त कर योग्य जनो को पढाया अब हमारे पास कई प्रान्तीय व सार्वदेशिक सभाए गुरुकुल विशाल विद्यालय अच्छे योग्य आर्यसमाज भवन विद्यमान है। फिर भी कहा जाता है –

मर्ज बढता ही गया ज्यो ज्यो दवाई की गई

इसी के सुधार निमित्त ही पूना के १३वे प्रवचन मे कहा है –

पढे लिखे आर्यजनो को सच्चे वैदिक धर्म की और अत्याधिक ध्यान देना होगा। इस हेतु ग्राम ग्राम में समाजो की स्थापना करके जड पूजा आदि अनाचारो को दूर करके ब्रह्मचर्य से तप का सामर्थ्य बढा शारीरिक मानसिक आत्मिक बल से पढाने समझाने से सबकी आखे खुल जाएगी और पढाने से ही जो हमारी दुर्दशा है वह सुदशा मे परिवर्तन हो जाएगी। यह कार्य किसी एक जन का नहीं है। आप सभी लोगो से आशा रखता हू कि आप लोग मुझे इस कार्य मे सहयोग करेगे।

इसी निमित्त ही ठाकुर नन्दकिशोर सिह को एक पत्र मे उपदेशक के कर्त्तव्य का निर्देशन करते हुए लिखा कि –

जिस जिस समाज मे उपदेशक जी जाएगे और जितने दिन ठहरेगे। वहा रात्रि मे उपदेश करेंगे और दिन मे उचित समय सभासदो को पढाएगे भी।

(पत्र विज्ञापन भाग दूसरा पृष्ठ ७८३)

क्या पढाएगे ? इस पर सामान्य प्रकरण मे सस्कार विधि मे निर्देश है कि –

सब सस्कारो मे मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करे। नहीं शीघ्र और न विलम्ब से किन्तु मध्य भाग जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है वैसा ही करे। यदि यजमान न भी पढा हो तो भी इतने मन्त्र तो अवश्य ही पढ ले।

इस निर्देशानुसार हम आर्यो का यही कर्त्तव्य है कि हम दैनिक व विशेष सन्ध्या यज्ञ विधि की शुद्धता हतु पढे ओर पढाए। इस प्रकार के पठन पाठन से ही एकरूपता आएगी। महर्षि एक पुस्तक लिखी की विधि एक ही फिर भिन्नता केसे ?

वर्तमान मे हमारे पास महर्षि से सम्बन्धित पाच मुख्य स्थल विद्यमान है। (१) जन्मस्थल टकारा (२) मोक्षधाम अजमेर (३) अध्ययन स्थल मथुरा (४) अध्ययन एव अनुभव का मुख्य ग्रन्थ लेखन स्थल उदयपुर (५) इसी को कार्यरूप मे परिणित करने हेतु पढाने का स्थल शाहपुरा।

यहा भी पूरे ढाई मास पर्यन्त स्थिर रह शाहपुरेदेश को राजनीति धर्मनीति ऐसी पढाई कि वह नरेश तो दृढ प्रतिज्ञा बने ही रहे साथ मे आज तक उनकी चतुर्थ पीढी भी वैदिक धर्मावलम्बी ही हे।

अत पठन पाठन वह भी महर्षिकृत विधि से ही नई पीढी का भी आर्य बनाना हमारा अभीष्ट है। यहा जो भी प्रचार वाहन ह उसमे भाषण प्रवचनो के साथ साथ वेदारम्भ सस्कार मे निर्देशानुसार तीन रात्रि पर्यन्त ठहरकर पढाना है। इससे ही नई पीढी जाग्रत हो आर्य बनेगी।

नई पीढी को आर्य बनाने का यही एक मार्ग मात्र सर्व महर्षिकृत ग्रन्थो मे है।

इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए महर्षि ने जो कुछ ज्ञान सर्वत्र आर्यावर्त्त राष्ट्र मे स्वसामर्थ्यानुसार धूम धामकर एवम गुरुवर के चरणो मे बैठकर प्राप्त किया उसे ही उदयपुर मे बैठ वेदो का भाष्य करने के साथ साथ ही **सत्यार्थ प्रकाश** की रचना की। इसी के छठे समुल्लास मे जो राजनीति विषयक विशेष है तदनुसार ही शाहपुरेश को पढाकर एव वेदाग प्रकाश लिखकर साधारण आर्यो के पठन पाठन हेतु मार्ग प्रशस्त कर गए।

यहा वेदाग प्रकाश मे वर्णन है कि –

साधारण श्रद्धावान जन भी वर्णोच्चारण शिक्षा से जो भी सस्कृत बोलने का अभ्यास प्रथम करना चाहता है वह आगे चलकर बहुत सहाय बनेगा। ऐसे जन जो बोलने मे अभ्यास उत्साह रखे वे व्याकरण के पढे बिना भी व्यवहार सम्बन्धी सस्कृत भाषा मे उच्चारण कर अन्यो से सुनकर कुछ समझने मे समर्थ हो सकते है।

इसी हेतु कहा गया हे

।। वय राष्ट्रे जागृयाम पुरोहित ।।

शेष भाग पृष्ठ ६ पर

प्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं समाजसेवी म० गजराज सिंह पथिक का देहावसान

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ एव गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर के प्रचार अधिष्ठाता म० गजराजसिह जी पथिक का १० अप्रैल २००२ को हृदयगति रुकने से देहावसान हो गया वे लगभग ६५ वर्ष के थे। आर्यसमाज के पुराने कवि गीतकार म० हरिसिह जी 'गजब' के शिष्यमण्डली के माणिक्य थे अच्छे सगीतकार एव कवि थे। आपने समाज सुधार पर कई गीत लिखे। उनकी गीताञ्जली भजनावली एव इतिहास के भजनो की पुस्तके प्रकाशित हुई हैं मेरठ मण्डल मुरादाबाद मण्डल एव सहारन नगर क्षेत्र मे विशेष रूप से ग्रामीण अचल मे आपके गीत लोग सुनने मे रुचि रखते थे आप मधुरभाषी एव कोकिलकण्ठ के नाम से विख्यात हुए। अपने जीवन के अन्तिम समय तक वेद प्रचार करते रहे हैं विधवा विवाह कराना एव शुद्धि प्रचार करना गरीब छात्रो को पढाना होनहार योग्य छात्रो को आर्यसमाज के प्रचार हेतु उपदेशक तैयार करना इनके जीवन का मुख्य लक्ष्य रहा है। परम पिता से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

श्री प्रदीप कुमार आर्य का दु:खद निधन

आर्यसमाज बहादुरगढ के महामन्त्री एव गुरुकुल पूठ के कोषाध्यक्ष तथा कई शिक्षण सस्थाओ एव समाज सेवी सस्थाओ से जुडे एव राजनैतिक क्षेत्र मे भी अपना प्रमुख स्थान रखने वाले आर्यसमाज के युवा नेता स्वनाम धन्य श्री प्रदीप कुमार आर्य का ७ मई की रात्रि मे अचानक हृदयगति के रुकने से दुखद निधन हो गया वे मात्र ३८ वर्ष के थे। इनके निधन से आर्यसमाज की अपार क्षति हुई है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनके परिजनो को यह दारुण दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

शोक सभा आयोजित

बिहार के पटना जिला स्थित आर्यसमाज चक बिहरी के सस्थापक सदस्य एव स्वतन्त्रता सेनानी श्री वासुदेव सिह आर्य का ६२ वर्ष की आयु मे देहावसान हो गया। पटना के आर्यों को एक शोक सभा देवगत आत्मा की शान्ति के लिए स्वामी अग्निव्रत जी के नेतृत्व मे बुलायी गयी जिसमे दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गई।

थाईलैंड के राज परिवार में आज भी वैदिक पद्धति से धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन

थाईलैड के राजगुरु वामदेव मुनि हाल मे ही एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ भारत आए। उनका यहा आने का मुख्य उद्देश्य थाईलैड मे वैदिक रीति के अनुसार कर्मकाण्ड करवाने के प्रसार मे भारत का सहयोग लेना था।

आर्यसमाज करोलबाग के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा ने उनके विभिन्न कार्यक्रमो का सयोजन किया तथा राजगुरु वामदेव के साथ मिलकर भारत – थाई वेद प्रसार परिषद् की स्थापना का निश्चय किया। प्रतिनिधि मण्डल भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवानी मानव ससाधन मन्त्री श्री मुरली मनोहर जोशी एव सास्कृतिक मन्त्री श्री जगमोहन से मिला।

गुरुकुल गौतम नगर मे उनके स्वागत मे विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमे प्रसिद्ध आर्यनेताओ एव विद्वानो ने भाग लिया। इस अवसर पर थाईलैड के राज ज्योतिषी डॉ० चिरापात पाण्डविद्या ने बताया कि १०० वर्ष पूर्व भारत से कुछ ब्राह्मण परिवार वेद एव हिन्दू धार्मिक पद्धति के प्रचार एव प्रसार हेतु थाईलैड गए थे। आम जनता के अतिरिक्त राजघराने ने वैदिक हिन्दू पद्धति को स्वीकार किया जो आज तक राजपरिवार मे होने वाले विभिन्न सस्कारो के लिए अपनाया जाता है। और ये कार्यक्रम राजगुरु वामदेव की ही देखरेख मे सम्पन्न होते है।

– कीर्ति शर्मा

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज यमुना विहार, दिल्ली

प्रधान	श्री रामस्वरूप शास्त्री
उपप्रधान	श्री विश्वामित्र रहेजा
उपप्रधाना	श्रीमति राजरानी ढींगरा
मन्त्री	श्री वीर बहादुर ढीगरा
उपमन्त्री	श्री कृष्ण कुमार सिगला
उपमन्त्रिणी	श्रीमति सुषमा टण्डन
कोषाध्यक्ष	श्री सत्य प्रकाश गोयल
भवन मन्त्री	श्री ठाकुर वीरेन्द्र सिह
पुस्तकाध्यक्ष	श्री राजकुमार बतरा
अधिष्ठाता आर्य वीर दल	श्री बलेश कुमार आर्य

आर्यसमाज सोहनगज, सब्जी मण्डी दिल्ली-७

प्रधान	श्री सुभाष चन्द्र सर्राफ
उपप्रधान	श्री हरी चन्द कालरा
	श्री चान्द किशोर अरोडा
मन्त्री	श्री ओम प्रकाश गर्ग
उप मन्त्री	श्री आत्मा राम जाजौरिया
	श्री वेदरत्न जी
कोषाध्यक्ष	श्री विनय भाटिया
पुस्तकाध्यक्ष	श्री नारायण दास मित्तल
ले० निरी०	श्री दुर्गा प्रसाद गौड

आर्य स्त्री समाज, अशोक विहार, फैज १, दिल्ली-११००५२

प्रधाना	श्रीमती राज मल्होत्रा
मन्त्रिणी	श्रीमती बिमला भाटिया
कोषाध्यक्षा	श्रीमती सरोज नय्यर

आर्यसमाज अन्धेरी, पश्चिम मुम्बई

प्रधान	श्री हरिश आर्य
मन्त्री	श्रीमती शकुतला जोघन
कोषाध्यक्षा	श्रीमती यशी आर्य

पृष्ठ ५ का शेष भाग

परिवार समाज व राष्ट्र मे सुख शान्ति जाग्रत करने मे हम पुरोहितो को ही सक्षम सशक्त भूमिका अपनानी है। अत प्रथम हम सर्व महर्षिकृत ग्रन्थ जीवन चरित्र कथित लिखित पत्र व्यवहार प्रवचन सवाद चर्चा पढकर स्वय लाभान्वित हो कथनी करनी का भेद मिटाकर अन्यो को भी लाभान्वित करे।

इसके लिए हमारी सभाए अपने यहा परीक्षा लेकर पहले नियम व्याख्या सहित पुन नित्य सन्ध्या एव बृहद यज्ञ विधि सामान्य प्रकरणस्थ पढाने की व्यवस्था करे तभी हमारे इस प्रकार के भाषणो प्रवचनो का प्रभाव स्थायी रह सकता है।

इसी प्रसग मे व्यवहार भानु मे कहते है –

'जो मनुष्य अधिक विद्या पढने का तो सामर्थ्य नहीं रखे लेकिन वह **धर्माचरण करना चाहे तो वह भी विद्वानों के सग से अपनी आत्मा की पवित्रता से अवश्य ही धर्मात्मा बन जाता है। सर्व साधारण का तो विद्वान् होना सम्भव नहीं है लेकिन धार्मिक होना सबके लिए सम्भव है। ऐसे जन ही जैसा आत्मा हो वैसी वाणी में और जैसा वाणी मे हो वैसा ही आचरण मे होने से धार्मिक बनते हैं।**

इसी सिद्धान्त के पालनार्थ अविद्या के नाश हेतु जीवन मे ६ स्थानो पर पाठशालाए खोलकर असफल प्रयास किया। वे स्थान है – मिर्जापुर फर्रुखाबाद मिर्जापुर कासगज छलेसर बनारस और लखनऊ।

फिर भी कहा गया है नर हो न निराश करो मन को।

तदनुसार ही शाहपुरा नरेश को जो एक मात्र राजनैतिक शिष्य थे। उनको कई बार पत्रो मे क्षात्रशाला जहा शास्त्र व शस्त्र पढाए जाए बराबर पत्रो मे लेख मिलते हैं। लेकिन यहा भी उसका प्रयास निष्फल रहा। अत अन्त मे महाराजा उदयपुर को लिखते हैं कि –

"सवा लाख रुपये राजकोष में और दो लाख रुपये क्षत्रिय सरदारों से लेकर 'क्षात्रशाला' की स्थापना शीघ्रातिशीघ्र कीजिए।"

(पत्र विज्ञापन भाग २ पृष्ठ ७५५)

इस प्रकार महर्षि की अभिलाषानुसार हमे स्वय के सामर्थ्यानुसार कार्य करना है। पाच जन पठन पाठन हेतु आ सकते हैं। यहा सर्व खर्च हम वहन करेगे। अब भी यदि कुछ पठन-पाठन नहीं कर पाए तो फिर कब पढाएगे विचार करना है।

– शाहपुरा (भलवाल) राजस्थान

राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं एकता के लिए हिन्दी अपनाइए।

निःशुल्क इनामी प्रतियोगिता

जीतिए केवल एक इनाम B/W TV ड्रॉ द्वारा निर्णय होगा। प्रायोजक का निर्णय सर्वमान्य होगा। उत्तर सादा डाक से शीघ्र इस पते पर भेजे – **आचार्य जी महाराज, द्वारा शान्ती ज्वैलर्स, रामनगर, बलदेव रोड, जमुनापार, मथुरा (उ०प्र०)**

१ भारत के राष्ट्रपति कौन हैं ?
२ गीता में कुल कितने श्लोक हैं ?
३ उ०प्र० की राजधानी कहा हैं ?
४ आर्यसन्देश' के सम्पादक कौन हैं ?
५ इस निशान 卐 का नाम बताओ ?

इस पत्र में प्रकाशित लेखों और विज्ञापनों के सम्बन्ध में

साप्ताहिक आर्यसन्देश मे छपे लेखो तथा विचारो से सम्पादक मण्डल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है। यह साप्ताहिक पूर्णत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नीतिगत एव सैद्धान्तिक पक्ष को ही उजागर करता है। परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों में वैदिक विद्वानों के विचारार्थ प्रस्तुत करने के लिए अन्य सामग्री भी प्रकाशित की जा सकती है। साप्ताहिक आर्यसन्देश में प्रकाशित दान आदि की अपीलों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का निवेदन या निर्देश न समझा जाए।

– सम्पादक

११ जून जन्म दिवस पर विशेष

जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी

अमर शहीद पं० रामप्रसाद बिस्मिल

– जगतराम आर्य

१६ दिसबर सन १९२७ ई० सोमवार प्रात काल साढ़े छ बजे गोरखपुर जेल से फासी के तख्ते की ओर जाते हुए शहीद कह उठा

"मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे
बाकी न मैं रहू न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन मे जान रगों मे लहू रहे
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे।"

तत्पश्चात् शहीद ने अपनी अतिम इच्छा प्रकट की **"मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ।"**

इसी प्रकार १६ दिसबर १९२७ को उन्होने लिखा

"हे ईश ! भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो, कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।"

यह शहीद थे प० रामप्रसाद **बिस्मिल**। वे इन्हीं शब्दों को गुनगुनाते हुए फासी पर चढ गए देश के चरणो पर उत्सर्ग हो गए। वे सच्चे देशभक्त थे साहसी थे आर्यवीर थे। वे देश के चरणो पर बलिदान होने के लिए एक तारे की भाति उदित हुए थे। एक तारे की भाति ही वे टूट गए। उनकी उदय और अस्त की कहानी एक मत्र की तरह प्रेरक है शक्तिदायक है। युग आएगे और चले जाएगे पर उनके बलिदान की गाथा सदा प्रेरणा देती रहेगी सदा एक पवित्र मत्र की तरह रगों में शक्ति का सचार करती रहेगी।

प० रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म ११ जून सन १८९७ ई० को प० मुरलीधर तिवारी (शाहजहापुर निवासी) के यहा हुआ था। मुरलीधर ऊचे डीलडौल के व्यक्ति थे। घर की स्थिति सामान्य थी। वे बडे साहस और धैर्य के साथ अपनी गृहस्थी का सचालन करते थे।

बिस्मिल जी की प्रारमिक शिक्षा उर्दू मे सम्पन्न हुई। उन्हे एक मौलवी साहब पढाया करते थे। पर उनका मन पढने लिखने मे बिलकुल नहीं लगता था। वे बडे उद्दड थे। न स्वय पढते थे न दूसरो लडको को पढने देते थे। ज्यो ज्यो वे बडे होते गए उनकी उद्दडता बढती ही गई। कभी कभी अपनी बुरी आदतो के कारण उन्हे अपने पिता के द्वारा अधिक दडित भी होना पडता था।

पर सयोग की बात एक दिन बिस्मिल जी के गाव मे आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता सोमदेव जी का आगमन हुआ। बिस्मिल जी उनके सम्पर्क में आए उनसे प्रभावित हुए और उनके पास आने जाने लगे। सोमदेव जी के कारण बिस्मिल जी के जीवन की कायापलट हो गई। वे बुरी आदतों को छोडकर ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने लगे प्राणायाम करने लगे। आर्यसमाजी नेताओं के उपदेश सुनने लगे। आर्यसमाज मदिर में जाकर यज्ञ और हवन आदि करने लगे। ऋषि दयानन्द के लिखे हुए अमर ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने लगे। इससे बिस्मिल जी के शरीर और हृदय दोनो मे अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। प्राणायाम के द्वारा उनका शरीर सुगठित हो गया। उनके शरीर के अग अग में स्फूर्ति का सागर उमडने लगा। उन्होने घुडसवारी तैराकी और साइकिल चलाने मे अनोखी दक्षता प्राप्त की। दौडने और पैदल चलने मे वे बडे तेज थे। साठ साठ मील तक पैदल चले जाते थे पर उनमे नाममात्र की भी थकावट नहीं पैदा होती थी। शरीर की ही भाति उनका हृदय भी अधिक बलवान हो गया था। ऋषि दयानद की देशभक्ति का बिस्मिल जी पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। वे देश की बाते सोचने लगे। देश के लिए उनके हृदय मे भक्ति पैदा हो गई। वे देशभक्तो के चरित्र पढने लगे देश प्रेम से भरी हुई कविताओ का पाठ करने लगे। वे जब कविताओ का सस्वर पाठ करने लगते तो वातावरण मे एक रस सा पैदा हो जाता था।



बिस्मिल जी को ऊची शिक्षा प्राप्त करने का सुयोग नहीं प्राप्त हो सका था। शिक्षा के नाते उन्होने सामान्य रूप से उर्दू और अग्रेजी पढी थी। उन्होने एन्ट्रेन्स की परीक्षा तो नहीं पास की थी पर एन्ट्रेन्स तक शिक्षा अवश्य प्राप्त की थी। उन्होने स्वतत्र रूप से पढकर बाद मे उर्दू और अग्रेजी का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उर्दू मे वे शायरी करते थे। उनकी कविताए बडी प्रभावपूर्ण और जोशीली होती थीं। वे एक अच्छे वक्ता और सुलेखक भी थे। उन्होने कई पुस्तको की रचना भी की है। उर्दू और अग्रेजी के अतिरिक्त उन्हे बाग्ला और हिदी का भी ज्ञान था।

ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र और सोमदेव जी की प्रेरणा से ही बिस्मिल जी के हृदय मे देश प्रेम का अकुर फूटा। जिन दिनो वे नवीं कक्षा मे पढ रहे थे उन्हे स्वयसेवक के रूप मे सेवा समिति मे काम करने का अवसर मिला। सेवा समिति का कार्य करते हुए उनकी दृष्टि पर सेवा की ओर आकर्षित हुई। पर सेवा से और भी अधिक आगे बढकर उनकी दृष्टि देश सेवा पर गई। देश की गुलामी से उनके हृदय मे दर्द पैदा होने लगा। वे हृदय से यह अनुभव करने लगे कि व्यक्ति का दुख देश का दुख अग्रेज सरकार के कारण है। फलत वे अग्रेज सरकार को विनष्ट करने के सम्बन्ध मे सोच विचार करने लगे।

इन्हीं दिनो बिस्मिल जी को स्वर्गीय गेदालाल दीक्षित से क्रातिकारी दल का पता लगा। दीक्षित जी के दल का केन्द्र मैनपुरी था। बिस्मिल जी की अवस्था उन दिनो केवल उन्नीस वर्ष की थी और वे हाई स्कूल मे पढ रहे थे पर वे इसी कच्ची उम्र मे ही दीक्षित जी के दल मे सम्मिलित हो गए। बिस्मिल जी अपनी कर्मठता और लगन से थोंडे ही दिनो मे दीक्षित जी के दल के प्रमुख सदस्यो मे से बन गए।

बगाल के क्रातिकारियो से भी उन्होने सपर्क स्थापित किया वे बडी लगन से अपने दल के लिए अपने दल के साथियो के लिए अस्त्र शस्त्र और धन एकत्र करने लगे। उनके अस्त्र शस्त्र और धन सग्रह के सबध मे कई रोचक और साहसपूर्ण कहानिया कही जाती है।

बिस्मिल जी डकैतियो के द्वारा भी दल के लिए धन एकत्र किया करते थे। वे सरकारी खजानो डाकखानो और बैको को लूटने के लिए भी प्रोत्साहन दिया करते थे। दल के लिए धन सग्रह करने के उद्देश्य से ही उन्होन १९२५ ई० मे ६ अगस्त को काकोरी मे ट्रेन डकैती करके अपने अदभुत साहस का परिचय दिया था।

काकोरी लखनऊ के पास एक स्टेशन है। १९२५ ई० की ६ अगस्त का दिन था। सध्या के लगभग ८ बज रहे थे। ट्रेन हरदोई से लखनऊ जा रही थी। उस पर सरकारी खजाना था बिस्मिल जी को पहले से ही यह बात ज्ञात हो चुकी थी। उन्होंने पहले ही अपने साथियो से विचार विमर्श करके उस सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई थी।

यद्यपि यह सारा काम बडी चतुराई और होशियारी के साथ किया गया फिर भी सरकारी जासूस विभाग को पता चल ही गया। परिणामस्वरूप गिरफ्तारिया की जाने लगीं। एक एक करके ट्रेन डकैती मे सम्मिलित क्रान्तिकारी बन्दी बनाए जाने लगे। बिस्मिल जी भी २५ दिसम्बर को गिरफ्तार कर लिए गए।

बिस्मिल जी और उनके साथियो पर मुकदमा चलाया गया। लगभग दो वर्ष तक मुकदमा चला पर कुछ फल न निकला। बिस्मिल जी को फासी की सजा सुनाई गई। फासी के पहले बिस्मिल जी के माता पिता जेल मे उनसे मिलने के लिए गए। माता पिता के साथ उनका छोटा भाई भी था। बिस्मिल जी ने जब मा को देखा तो उनकी आखे डबडबा गई। अश्रु बूदे रह रहकर आखो से टपकने लगीं। बिस्मिल जी की आखो मे अश्रु बूदे देखकर उनकी माता जी बोल उठीं मैं समझती थी तुमने अपने आप पर विजय प्राप्त की है किन्तु यहा तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। जीवनपर्यन्त देश के लिए आसू बहाकर अब अन्तिम समय में मेरे लिए रोने बैठे हो! इस कायरता से क्या होगा? तुम्हे वीर की तरह हसते हुए प्राण देते देखकर मैं अपने आपको धन्य समझूगी। मुझे गर्व है कि इस गए बीते जमाने मे मेरा पुत्र देश की वेदी पर अपने प्राण दे रहा है। मेरा काम तुम्हे पाल पलोसकर बडा करना था। उसकेबाद तुम देश की चीज बन गए थे सो उसके काम आ गए। मुझे जरा भी दुख नही है।

बिस्मिल जी अपनी मा के ओजस्वी शब्दो को सुनकर चुप न रह सके। वे आसू पोछते हुए बोल उठे मा तुम मेरी मा हो। तुम मेरी जननी होकर भी नहीं समझ सकीं। मा मैं मृत्यु से भयभीत होकर नही रो रहा हू। जिस प्रकार यदि घी को आग के पास कर दिया जाए तो वह पिघल उठता है उसी प्रकार मा तुम्हे देखकर मेरीआखो से कुछ अश्रुबूदे निकल पडी। विश्वास रखो मा मैं मृत्यु से सतुष्ट हू, पूर्णरूप से सन्तुष्ट हू।

गोरखपुर जेल मे १९२७ई० की १९ दिसम्बर का प्रात काल था। बिस्मिल जी तीन बजे ही उठ पडे। उन्होने शौचादि से निवृत्त होकर सध्या की हवनयज्ञ किया। फिर वे गुनगुनाते हुए फासी के तख्ते की ओर चल पडे। वे गुनगुनाते हुए ही फासी के फन्दे पर चढ गए। आर्यसमाजी होने के नाते उनका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ हुआ। उन्होने फासी के तख्ते पर चढकर जोर से आवाज ऊची की – **"अग्रेज सरकार का नाश हो अग्रेज सरकार का नाश हो !"**

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 06 07/06/2002 दिनाक ३ जून से ६ जून २०
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 06 07/06/2002 पूर्व

पृष्ठ ४ का शेष भाग

स्तुति-सख्य-यज्ञ-वीर्य-पडौसी एवं परामर्शकर सम्बन्धी निदेश

ऋषि अग्नि। देवता अग्नि। छन्द स्वराद् पक्ति।

अर्थ – हे (अग्ने) अग्रणी बनने के इच्छुक मानव! (क्षत्रेण स्वायु सरभस्व) क्षत और पीडा से रक्षा करने वाले बल से सम्पृक्त होकर अपने जीवन को प्रारम्भ कर और सज्जनो से मेल कर आनन्द को अनुभव कर। (मित्रेण मित्रधेये यतस्व) सूर्य के साथ अर्थात प्रात काल से ऐसा प्रयत्न कर कि सब तरे साथ मित्र भाव रखे। (साताना मध्यमस्था एधि) समान आयु वालो मे मध्यस्थ बनो किसी के साथ पक्षपात मत कर। हे (अग्ने) मार्गदर्शक बनने के इच्छुक मानव! (इह) इस जगत मे इस प्रकार जीवन व्यतीत कर (राज्ञा विहव्य) विकट समस्या उपस्थित होने पर शासनकर्ता राजाओ तक से परामर्श के लिए तेरे पास बुलावा आए और (इह) इस प्रकार अपने जीवन को (दीदिहि) खूब प्रदीप्त कर।

अर्थपोषण – क्षत्रेण –क्षतात त्रायत इत्युदग्र क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढ। कालिदास

७ प्रगतिशील मानव! यज्ञ भावना से राजा को कर दे, ताकि सारी लाभान्वित हो

अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेद इन्द्राय हव्यम्।
विश्वेदेवा हविरिद जुषन्ताम्।।

– यजु २७ २२

ऋषि अग्नि। देवता विद्वाज्ञ। इन्द विराडुष्णिक।

अर्थ – हे (अग्ने) प्रगतिकामी मानव! (स्वाहा कृणुहि) अपने लाभ के लिए अपनी सम्पत्ति का त्यागकर इससे यश मिलेगा और यदि दूसरो के लाभ के लिए त्याग करेगा तो नियति तुझे सातगुणा देगी। हे (जात वेद) धन को उत्पन्न करने वाले मानव! (इन्द्राय हव्य कृणुहि) शत्रुओ का नाश करने वाले राजा को कर दे और जितेन्द्रिय विद्वानो को दान दे दान देकर खाना हव्य की यही भावना है। (हुदानादनयो) (विश्वे देवा) दिव्यवृत्ति वाले सभी विद्वान (इद हवि) तेरे इस दान को (जुषनाम्) प्रीतिपूर्वक सेवन करे।

निष्कर्ष यज्ञ की भावना से दिया हुआ कर या दान सम्पूर्ण प्रजा के किसी न किसी रूप मे आता है। विश्वेदेवा मे माता पिता आचार्य र अतिथि विशेष रूप ग्रहण होते है – मातृदेवो भव पितृ देवो भव आचार्य देवो भव अतिथि देवो भव।

(२) दक्षिणा दुहते सप्तमातरम दक्षिणा रूप मे दिया पदार्थ सप्तगुणित फल देता।

ऋ० १०-१०७ ४

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वरभवन, खारी बावली, दिल्ली ६

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक २६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १० जून से १६ जून २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत दिल्ली प्रदेश आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

नैतिकता, सामाजिकता के साथ-साथ वैदिक धर्म के मूल ज्ञान के प्रवाह ने युवा शक्ति को आर्य संस्कारों से दीक्षित किया – वेदव्रत शर्मा

दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो तथा अन्य सस्थाओ से युवा शक्ति के निर्माण के लिए सार्वदेशिक आर्य वीर दल और शुद्धि आन्दोलन तथा धर्मान्तरण विरोध के लिए अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ को अपनी आहुतिया देने के लिए प्रेरित किया



आर्यवीर दल के प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव एव ब्र० अरुण कुमार आर्यजनो तथा प्रशिक्षणार्थियो को सम्बोधित करते हुए

दिल्ली २ जून। आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल दयानन्द विहार दिल्ली मे सम्पन्न हुआ।

इस प्रशिक्षण शिविर मे दिल्ली की विभिन्न शाखाओ के १७३ आर्य वीरो व्यायाम शिक्षको तथा कार्यकर्ताओ ने भाग लिया।

शिविर के समापन समारोह मे बोलते हुए दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि आर्यवीर दल आर्यसमाज का एक सशक्त अग है जिसके माध्यम से बच्चो और युवको मे नैतिकता और सामाजिकता के साथ साथ धार्मिक आध्यात्मिक वैदिक चिन्तन के बीज भी बोए जाते हैं और यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है कि जैसा हम बोए वैसा काटे। आज हम आर्यवीर दल के माध्यम से जितने अधिक से अधिक बच्चो को आकर्षित कर पाएगे उतना अधिक सुदृढ हमारा भावी समाज होगा।

उन्होने कहा कि आर्यवीर दल कोई अलग सगठन नहीं है बल्कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत स्थापित एक अग है जिसके प्रान्तीय स्तर पर सचालक नियुक्त किए जाते है और आर्य समाज के स्तर पर शाखाओ के आयोजन करके प्रशिक्षक नामित होते है। आर्यवीर दल से प्रशिक्षित युवक ही आगे चलकर इसकी गतिविधियो को सचालित करते हैं। उन्होने कहा कि सभी आर्यसमाजो और सभाओ को आर्यवीर दल की गतिविधिया तेज करनी चाहिए। जब आर्यसमाजे वेद प्रचार आदि गतिविधियो के लिए अपना बजट निर्धारित करती हैं उस समय उन्हे युवा निर्माण के नाम पर **आर्यवीर दल** तथा धर्मान्तरण शुद्धि या राष्ट्ररक्षा के नाम पर **अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ** के लिए अलग से राशिया निर्धारित करनी चाहिए और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से अपनी आहुतिया इन कार्यो के लिए प्रदान करनी चाहिए।

शिविर का उद्घाटन दिनाक २५ मई को साय ५.०० बजे यज्ञ के पश्चात ध्वजारोहण द्वारा हुआ।

शिविर मे इस वर्ष देश की वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए नौजवानो के लिए मुख्य रूप से कमाण्डो ट्रेनिग की व्यवस्था की गई थी जो आर्यवीर काफी लम्बे समय से आर्य वीर दल से जुडे हुए थे उन्हे ही इस उद्देश्य के लिए चुना गया था। स्मरण रहे ये वे ही आर्य वीर थे जिन्होने मुम्बई गुजरात तथा हाल ही मे गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन हरिद्वार मे व्यवस्था एव सेवा कार्य किए थे। दीवारो पर चढना ७–८ मीटर ऊची दीवारो को बिना सहारे पार करना आग से निकलना कोहनियो के बल चलना तथा रस्से के माध्यम से बडी खाइयो को पार करना – ये सब बहुत परिश्रम से सीखा तथा सिखाया गया। इसके अतिरिक्त लाठी भाला कराटे आसन दण्ड बेठक सूर्य नमस्कार आदि का शिक्षण तो दिया ही गया।

इस कार्य मे मुख्य रूप से श्री हरिसिह आर्य ब्र० अरुण कुमार आर्य वीर अतुल आर्य वीरेश आय धर्मेन्द्र आर्य राजबीर आर्य आदि शिक्षको का महत्वपूर्ण योगदान रहा। श्री रोहताश आर्य ने जिस प्रकार से अपने गीतो बौद्धिक आदि से युवको को जोडा वह अपने आप मे स्मरणीय रहेगा। प्रात काल यज्ञ तथा दो प्रवचन कक्षाए नित्य प्रति चलती थी उनमे समय समय पर श्री भूदेव शास्त्री आचार्य यशपाल आचार्य सुनहरी लाल यादव डॉ० ब्रह्मदेव ने भी आर्यवीरो से चर्चाए रखी।

– शेष पृष्ठ ४ पर

महामृत्युञ्जय मन्त्र और मृत्यु

– बिशम्बर नाथ अरोड़ा

त्र्यम्बक यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धन।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात।।

भावार्थ हम त्रिअम्बक को यजते हे। मै सुगन्धि युक्त पुष्टिवर्धक खरबूजे के समान मृत्यु के बन्धन से छूट जाऊ ओर अमृत से युक्त हो जाऊ। दूसरे शब्दो मे हमे सदा उस त्रि अम्बक (उत्पत्ति + पालन + सहार कर्ता) की स्तुति प्रार्थना उपासना तथा भक्ति करनी चाहिए जो इस शुद्ध सुगन्धयुक्त शरीर आत्मा और समाज का देने वाला है। जैसे एक पका हुआ खरबूजा पूर्ण रसयुक्त होकर बिना किसी प्रयत्न अथवा कष्ट के अपने लता (बन्धनो) से मुक्त हो जाता है इसी प्रकार प्रभु भक्त भी पक्की (सौ वर्ष या अधिक) आयु को पाकर अपने सब सासारिक कर्त्तव्य कर्मो को (बच्चो का पालन पोषण शिक्षा विवाह व गृहाश्रम के अन्य काम) भली भाति करता हुआ इस ससार से मुक्त हो जाता है और अन्तत मोक्ष का अधिकारी बनता है।

अनुष्ठान जितना गायत्री मन्त्र का जाप होता है सम्भवत उससे अधिक जाप महामृत्युञ्जय मन्त्र का होता है क्योकि पौराणिको ने यह भ्रम फैला रखा है इसके जाप से मृत्यु से बचा जा सकता है और हर व्यक्ति मृत्यु से बचना तो चाहता ही है। पौराणिक इसका जाप ग्रहो उपग्रहो के कुप्रभाव से बचने और उन्हे नियन्त्रि रखने एव रोग निवारण कष्ट निवारण आदि हेतु करते है। वेदान्ती इसका जाप माया से मुक्त होकर ब्रह्म बनने के लिए तान्त्रिक सिद्धिया पाने क लिए और योगी अमरपद पाने के लिए करते हे।

जहा गायत्री मन्त्र का जाप किसी भी समय किया जा सकता ह वहा महामृत्युञ्जय मन्त्र का अनुष्ठान केवल साय को ही किया जाता हे। इसका अनुष्ठान छुपते सूर्य क अभिमुख किसी भी आसन पर बैठ कर करना होता है। इसका जाप जितना समय सूर्यास्त से पहले किया जाए उतना ही समय सूर्यास्त के बाद भी किया जाए। मान लो कोई दो घण्टे इसका जाप करना चाहता है तो उसे सूर्यास्त से एक घण्टा पहले नहा धो कर साफ सुथरे कपडे धारणकर एकान्त स्थान पर पहुच जाना चाहिए जहा अस्त होते सूर्य की किरणो के मुख व छाती को स्पर्श करे। जाप करते समय होठ व जीभ हिलाए बिना इसके अर्थ का विचार मन मे करते रहे। मन ही मन सोचते रहे कि हम प्रभु कृपा से सुगन्धमय पुष्टिवर्धक खरबूजे के समान बन्धन मुक्त हो जाए अमृतत्व को प्राप्त हो जाए। साथ ही साथ महसूस करे कि मृत्यु जा रही है मे स्वस्थ हू, जवान हू, बलवान हू, जितेन्द्रिय हू, ब्रह्मचारी हू। मैं शुद्ध धीर निर्भय अविनाशी मुक्त सुन्दर आनन्दमय और सौम्य हू। यह जाप सूर्यास्त के एक घटे बाद तक जारी रहना चाहिए। याद रहे कि इस मन्त्र के जाप का लाभ तभी होगा जब उतने ही समय के लिए प्रात काल गायत्री मन्त्र का जाप किया जाए।

क्या अमरपद प्राप्त होगा आप जानते हैं कि मनुष्य जैसा सोचता हे वैसा हो भी जाता है। प्रार्थना द्वारा परोक्ष से सहायता मिलती है शक्ति व क्षमता का सचार होता है। पवित्र अन्त करण व पूर्ण श्रद्धा स की गई भक्ति मे पर्वतो को हिला देने की भी शक्ति होती है। जब सच्चे दिल से महामृत्युञ्जय मन्त्र का जाप उपर्युक्त विधि से किया जाए और अपने भीतर अमृतत्व भी महसूस किया जाए तो मनुष्य ज्ञानवान हो जाएगा स्वस्थ निरोग और निडर हो जाएगा। उसे शरीर से मोह नही रहेगा और उसमे विरक्ति का भाव जागेगा। उसके मन से मृत्यु का भय भाग जाएगा और वह निर्भय होकर कह उठेगा –

जा मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द।
मरने ही से पाईए पूरण परमानन्द।।

वह जान जाएगा कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु अवश्य होगी किन्तु प्रभु के साथ जुड जाने के कारण अब उसे मौत भयभीत नहीं कर सकेगी। वह स्वय पुराने चोले को छोडकर नए स्वस्थ ओर उत्तम शरीर मे जाने को आतुर हो उठेगा। वह जान लेगा कि आत्मा जब मर ही नहीं सकती तो मृत्यु कसी ?

वासाँसि जीर्णानि यथा विहाय। *गीता*
नवानि गृहणाति नरोऽपराणि।।

इस प्रकार मनुष्य महामृत्युञ्जय मन्त्र के जाप से मृत्यु से तो नही बच सकेगा परन्तु मृत्यु के भय से बच जाएगा।

– प्रधान आर्यसमाज कृष्ण नगर दिल्ली ५१

बोध कथा

वे मानवीय संस्कृति के प्रारम्भिक सन्देशवाहक थे

स्वामी दयानन्द का जन्म सौराष्ट्र गुजरात के टकारा ग्राम मे हुआ था। शिवरात्रि के जागरण के समय शिवजी की प्रतिमा पर चूहे के घूमने से वह सच्चे शिव की साधना मे लगे। वर्षो पर्वतो नदियो तीर्थों मे भ्रमण कर उन्होने मथुरा मे दण्डी स्वामी विरजानन्द से विद्याध्ययन किया। वह भारतीय सस्कृति के पूर्ण समर्थक बने। स्वामी जी की सुधार योजना चतुर्मुखी थी। उन्होने धर्म समाज शिक्षा और राजनीति इन चारो क्षेत्रो मे सुधारणाए प्रस्तुत कीं। स्वामी जी की विशेषता थी कि वह भारतीय सस्कृति के पूर्ण समर्थक थे। यद्यपि वह पश्चिमी भाषा विज्ञान आदि की शिक्षा आवश्यक मानते थे पर वह प्राथमिकता भारतीय वाडमय और भारतीय वेशभूषा को देते थे।

गुरुकुल कागडी की स्थापना १६०२ ई० मे हुई। उसके सस्थापक महात्मा मुशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) थे। वहा भारतीय प्राचीन सस्कृति के साथ साथ पाश्चात्य विज्ञानादि विद्याओ के अध्ययन पर अधिक ध्यान दिया जाता था। हरिद्वार के समीप गगा तट पर भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली पुर्नजीवित की गई। यद्यपि सस्कृत को प्रधानता दी गई थी परन्तु सभी विषयो का माध्यम हिन्दी थी। १६१६ मे सस्था ने विश्वविद्यालय का स्वरूप धारण कर लिया। उसमे वैदिक अर्वाचीन सस्कृत के साथ आधुनिक विज्ञान शिल्प कृषि आदि शास्त्रो की शिक्षा दी जाती थी। प्राय प्रत्येक दृष्टि से गुरुकुल प्रचलित शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध एक सफल व्यावहारिक प्रत्युत्तर था।

जावा सुमात्रा बाली आदि द्वीप प्राचीन भारतीय साहित्य मे स्वर्णद्वीप कहलाते थे। डॉ० रघुवीर ने इन द्वीपो का भ्रमण करके जो ब्योरा प्रस्तुत किया उससे स्पष्ट हुआ कि भारत स्वर्णद्वीप एक ही सस्कृति के पक्षधर हैं। भारत के जिस देशभक्तो ने दक्षिण पूर्व मे जाकर भारतीय धर्म सस्कृति का विस्तार किया। उनमे काश्यप मातग धर्मरत्न सरीखे विद्वान परिव्राजक थे। नए विवरणो से जानकारी मिलती है कि अमेरिका की खोज करने वाले भारतीय परिव्राजक थे। मैक्सिको के राष्ट्रीय सग्रहालय के क्यूरेटर प्रो० रामन मैना और हैविट सरीखे विद्वानो ने घोषित किया था कि अमेरिकी मानव भारतीय जैसे थे उन्होने भारतीय परम्परा वार्षिक गणना व्यापार व्यवस्था और भारतीय व्यवस्थाए लेकर उन्हे वहा प्रस्तुत किया था।

वस्तुत प्राचीन साहित्य और विवरण साक्षी है कि भारतीय सकुचित मनोवृत्ति के न होकर शिल्प व्यापर धर्मप्रचार और मानवीय सस्कृति के आदान प्रदान करने के कारण मानवीय सस्कृति के प्रारम्भिक सन्देश वाहको मे अग्रणी थे।

– नरेन्द्र

अज्ञान

– नरेन्द्र मोहन

अधूरा सा ज्ञान फिर भी गुमान
अह है बढाता हर क्षण अज्ञान
सत्य के कितने रूप कैसे कोई जानेगा ?
कैसे पहचानेगा न कोई सकेत
न शून्य है अभिप्रेत
जो हे बस वही है वही आकाश
उसका ही प्रकाश है वह कैसा ?
किस रूप जैसा कहा से आया है
कहा वह जाएगा मार्ग वह कौन सा
कब कब अपनाएगा मालूम यट कैसे हो ?
उगता जहा इन्द्रधनुष मिलन वहा कैसे हो ?
आशीष किसी सन्त का है मेरे पास नहीं।
मृत्यु जहा बिखरी हो वहा कोई आस नहीं।
क्या है जो है शाश्वत कैसे इसे जानेगा ?
शाश्वत ही शाश्वत को केवल पहचानेगा।
बीता इतिहास क्यो मैं दोहराता हू।
गाए हुए गीतो को क्यो मैं फिर फिर गाता हू।
नूतन तो अकुर है देख नहीं पाता हू।
ऋत क्या और क्या शाश्वत समझ नहीं पाता हू।
राह तो जानता हू, पर भटक जाता हू।

सौभाग्य के लिए ऊचा बन
सदा ऊचा उठो राष्ट्र को बढाओ
ज्योति की ओर बढो

उच्च तिष्ठ महते सौभगाय। *अथर्व २ ६ २*
महान सौभाग्य के लिए ऊचा बन।
उत्क्रामात पुरुष मावपत्या। *अथर्व ८ १ ४*
हे पुरुष ऊपर उठ नीचे न गिर।
राष्ट्र च रोह द्रविण च रोह। *अथर्व० १३ १ २*
राष्ट्र को बढाओ धन को बढाओ
आरोह तमसो ज्योति। *अथर्व० ८ १८*
अन्धकार से प्रकाश की ओर बढो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

ऊंचे लक्ष्यों के लिए पूरी निष्ठा और एकता की आवश्यकता

हमारे प्राचीन भारतीय वाडमय मे भारत राष्ट्र का भौगोलिक उल्लेख इन शब्दो मे किया गया है – **उत्तर यत्समुद्रस्य हिमवद्दक्षिण य यत। वर्ष यद् भारत नाम यत्रेय भारती प्रजा।।** समुद्र के उत्तर मे और हिमालय के दक्षिण मे अवस्थित भौगोलिक भूखण्ड भारत कहलाता है और वहा रहने वाली जनता भारती कहलाती है। प्राचीन निरुक्त ग्रन्थ मे उल्लेख है भरणाच्य प्रजाना वै मनुर्भरत उच्यते। निरुक्त वचनाच्चेव तद भारत स्मृतय। प्रजा का भारत करने से शासक भारत कहलाता है और निरुक्तकार देश को भारत कहते हैं। राष्ट्र का नाम आज भी भारत है परन्तु उस नाम के साथ कुछ दूसरे नाम भी आजकल प्रयुक्त हो रहे हैं। इतिहास मे भारत राष्ट्र ने युगो मे अनेक परिवर्तन देखे हैं। प्राचीन आर्यावर्त्त और भारत राष्ट्र विश्व के सर्वाधिक सुखी सम्पन्न देशो मे परिगणित होता था कालान्तर मे यहा पश्चिम के विदेशी आक्रान्ता आए। लम्बे सघर्ष और कठिन परीक्षाओ के बाद १५ अगस्त १९४७ का विदेशी अग्रेज शासक चले गए। हा भारत छोडते समय वह भारत को विभक्त कर गए प्राचीन भारत राष्ट्र आज तीन राष्ट्रो मे विभक्त है। राजनीतिक स्वाधीनता के ५५ वे वर्ष मे भारत राष्ट्र नई सहस्राब्दी मे प्रवेश कर चुका है। अब समय आ गया है जब भारतीय राष्ट्र को विश्व को एक सर्वाधिक प्राचीन सास्कृतिक धरोहर के प्रतीक के रूप मे श्रीराम श्रीकृष्ण महात्मा बुद्ध अशोक विक्रमादित्य महात्मा गाधी महर्षि दयानन्द आदि अनेक श्रेष्ठ चिन्तको और महापुरुषो के अमर सन्देशो के अनुरूप भारत राष्ट्र को विश्व के एक श्रेष्ठ यशस्वी अग्रणी महाराष्ट्र के रूप मे ढालकर उसे सस्कृति कला वाडमय जीवन दर्शन के रूप मे एक अग्रणी विश्व के प्रतीक राष्ट्र के रूप मे पुन प्रतिष्ठित करना होगा। विश्व के इतिहास मे भारतीय राष्ट्र ने युगो तक मानवता जनकल्याण एव मानव की सच्ची उपलब्धियो मे ऊचे मापदण्ड प्रस्तुत किए है। अब इस सहस्राब्दी मे ऐसा फिर युग आ सकता है यदि भारतीय मनीषी चिन्तक और महर्षि के रूप मे अपने मानवता और सच्चे अभ्युदय के लिए रामायण महाभारत और दूसरे श्रेष्ठ भारतीय वाडमयो के रूप मे पुन जनता जनार्दन और विश्व की सस्कृति के लिए कुछ श्रेष्ठ मानवीय अभ्युदय ओर जनकल्याण के अमर सन्देशो की प्रस्तुति करे।

सैकडो वर्षो की पराधीनता और कठिन घडियो के बाद पुन भारतीय सस्कृति चिन्तन और श्रेष्ठ मर्यादाओ की प्रस्तुति का विचार गहन परीक्षा और चिन्तन के लिए कठिन सघर्ष की बात समझा जा सकता है। परन्तु मानवता और भारतीय सस्कृति के अभ्युदय के लिए यह असम्भव नहीं है। यदि भारतीय मनीषी चिन्तक और जागृत नेतृवर्ग इस सम्बन्ध मे सावधान होकर अपना उत्तरदायित्व निभाए तो नई सहस्राब्दी मे भारतीय मनीषी चिन्तक ऊची भारतीय सस्कृति तत्वज्ञान विशिष्ट परम्पराओ और मर्यादाओ के कुछ ऊचे श्रेष्ठ उपदेश अमर सन्देश पुन विश्व मानवता और मानव कल्याण के लिए रामायण महाभारत महात्मा बुद्ध अशोक तुलसीदास वाल्मीकी गाधी रवीन्द्रनाथ ठाकुर सुर तुलसी मीरा बाई सरीखे सन्तो एव पथ प्रदर्शको सरीखे अमर सन्देश को पुन मानवता के लिए प्रस्तुत कर सकते है। दो महायुद्धो और अनेक सघर्षो सकटो के बाद मानवता और विश्व को आज पुन एक श्रेष्ठ मानव सन्देशवाहक का सन्देश और सत्परामर्श अपेक्षित है। श्रीराम श्रीकृष्ण तुलसी कबीर मीराबाई गाधी रवीन्द्रनाथ ठाकुर ओर महर्षि दयानन्द का राष्ट्र आज पुन इस सम्बन्ध मे उचित मार्गदर्शन कर सकता है। अतीतकाल मे भारतीय चिन्तको ने विश्व एव मानवता को अमर सन्देश दिया था पूरा विश्वास है कि भारतीय सस्कृति और चिन्तन विश्व मे ऊचे मानवीय लक्ष्यो की पूर्ति मे उचित मार्गदर्शन कर सकते है।

विश्व का इतिहास साक्षी है कि भारतीय सस्कृति चिन्तन और मनीषियो ने विश्व एव मानवता का उचित मार्गदर्शन किया है यह उसी स्थिति मे सम्भव हुआ है जब भारत ने अपने मार्गदर्शन के बदले मे कभी कुछ नहीं लिया और जरूरत पडन पर विश्व और मानवता की अधिकतम दिया। यदि भारतीय मनीषी चिन्तन ओर नेतृत्व विश्व के इतिहास के सुनहरे अध्याय का स्मरण करते हुए किसी भी तरह की अपेक्षा किए बिना मानवता और विश्व को श्रेष्ठ भारतीय चिन्तन श्रेष्ठ मूल्यो का स र्वोत्तम गुण पुन दने का प्रय न करगे ता म ।ग आर विश्व का अब भी बहुत कछ िया जा सकता है। नई सहस्राब्दी मे तीन भूखण्डो म बटे भारतीय राष्ट्र को एक और सयुक्त कर यदि विश्व मे ऊचे लक्ष्यो की पूर्ति के लिए पूरी निष्ठा और एकता से कार्य किया जाए तो विश्व के इतिहास मे भारतीय राष्ट्र के वाल्मीकि वेदव्यास तुलसी सूरदास मीरा गाधी दयानन्द सरीखे महामानवो की परम्परा मे पुन बहुत कुछ श्रेष्ठ अमूल्य अमर सन्देश दिए जा सकते है। हा इस कार्य की पूर्ति के लिए कुछ श्रेष्ठ सच्चे जीवन समर्पित करने वाले ऋषियो मुनियो महामानवो की ऊची जीवन समर्पण की परम्परा कार्यान्वित करनी होगी।

चिट्ठी-पत्री

अब कूटनीति की जरूरत

विगत १४ मई को जम्मू के कालूचक सैनिक शिवर पर पाक आतकवादियो ने हमला बोलकर एक बार फिर साबित कर दिया है कि वह अपनी नापाक हरकतो को छोडने वाला नही। ठीक इसी प्रकार १३ दिसम्बर को भी भारतीय ससद पर आतकवादी आक्रमण के बाद भी पडौसी ने युद्ध का डका बजाकर अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश की थी। सैनिक शिविरो पर हमले भारतीय प्रजातन्त्र का आधार समझी जाने वाली ससद पर आक्रमण आदि कुछ ऐसी लजाने वाली घटनाए है जिन्होने भारत को अपनी चुप्पी तोडने के लिए विवश कर दिया है परन्तु प्रत्येक चीज की भी एक सीमा होती है आखिर कब तक भारत शान्ति का चोला पहने रहेगा। भोली भाली जनता इस प्रतीक्षा मे है कि कोई देवी अवतार आए और उसको मुक्ति मिले। सयम की नीति से भारत का भला होने वाला नहीं है। भारत को अब कूटनीति मजबूत करने के स्थान पर करने की नीति अपनाना बेहतर होगा। अब समय आ गया है जब भारत को अपनी कथनी और करनी मे व्यापक अन्तर स्पष्ट करना होगा।

– प्रवीण कुमार गाजियाबाद

उसी की भाषा में जवाब दें

पाक सैनिक शासक परवेज मुशर्रफ ने २७ मई २००२ को अपने राष्ट्र के नाम सन्देश जो चुनौती दी उसका जवाब भारतीय विदेश मन्त्री ने २८ मई को निराशाजनक और खतरनाक दो शब्दो मे दिया। उन्होने उसे निराशाजनक इसलिए कहा क्योकि उसमे पुरानी शब्दावाली थी। हा भारत के लिए नया शब्द दुश्मन था। अब समय आ गया है जब हमे अपने इस पडोसी से उसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिसका वह हमे मारने के लिए हमारे विरुद्ध प्रयोग करना चाहता है। उसे यह भी कहना चाहिए कि भारत से गए मुहाजिरो के साथ पजाबी और सिन्धी मुसलमान कर है है वह असह्य है। अब तक तीन लाख मुहाजिर या हिन्दुस्तानी मुसलमान मारे जा चुके है। कराची और समीपस्थ एक करोड मुहाजिरा का एक भी परिवार बचा नहीं है जिस घर का कोई बेटा न मारा गया हो।

– डॉ० जयप्रकाश आर्य दिल्ली

पृष्ठ १ का शेष भाग

नैतिकता, सामाजिकता के साथ-साथ वैदिक धर्म के मूल ज्ञान के प्रवाह ने युवा शक्ति को आर्य संस्कारों से दीक्षित किया



बाए से दाए दयानन्द विहार मे माताए मशाल जलूस मे आर्यवीरो को प्रसाद वितरण करती हुई। मशाल जलूस का नेतृत्व करते हुए आर्यवीर श्री वीरेश आर्य एव सार्वदेशिक आर्य वीर दल के सचालक आचार्य देवव्रत। श्री सुरेन्द्र कुमार रैली आर्यवीरो को दूध एव मिष्ठान वितरित करते हुए

शिविर के अवसर पर सामूहिक यज्ञोपवीत सस्कार का कार्यक्रम आयोजित हुआ। आचार्य ब्र० राजसिह जी ने यज्ञ तथा सस्कार कराया। ७२ आर्य वीरो ने पहली बार यज्ञोपवीत धारण किया तथा अन्यो ने अपने यज्ञोपवीत परिवर्तित किए। आर्यसमाज गोबिन्दपुरी के उत्साही कार्यकर्ता श्री सत्येन्द्र मिश्रा जी ने अपने दोनो सुपुत्रो का यज्ञोपवीत सस्कार यहीं कराया तथा दोपहर का भोज अपनी ओर से दिया। सभी ने इस कार्यक्रम की बहुत प्रशसा की। इस अवसर पर यमुनापार क्षेत्र की अनेक आर्यसमाजो के अधिकारीगण उपस्थित थे श्री सुखदेव आर्य तपस्वी तथा श्री ओमप्रकाश कपूर जी ने आशीर्वचन दिए तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन जी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने सम्मिलित होकर बच्चो को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

शुक्रवार ३१ मई को साय काल विश्व मे बढते आतकवाद के विरोध मे आर्यवीरो ने विशाल मशाल जलूस का आयोजन किया।

समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री नसीब सिह विधायक ने इस अवसर पर नौजवानो के इस निर्माण कार्यो की प्रशसा की। श्री धर्मपाल जी आर्य ने इन कार्यो को ठोस बताते हुए इन्हे बढाने की अपील भी की। इस अवसर पर स्वामी जगदीश्वरानन्द जी श्री शान्ती लाल सूरी जी श्री सुरेन्द्र रैली जी तथा श्रीमती सुदेश सेखरी जी ने भी सभा को सम्बोधित किया। अन्त मे जिसका सभी को इन्तजार था कमाण्डो का प्रदर्शन आरम्भ हुआ। प्रदर्शन आरम्भ होते ही पूरे माहौल मे बदलाव आ गया। कही बम्ब की आवाजे कहीं नारे कहीं देशभक्ति के गीत तो कही आग की तेज लपटे यह दृश्य देखकर उपस्थित लोग आश्चर्य चकित रह गए तथा आर्यवीर कमाण्डो की ड्रैस मे पलक झपकते ही पच्चीस फुट ऊची दीवार पर चढ गए तथा टायर के बीच से निकल कर ८ फूट ऊची दीवार पार कर भयकर आग से निकलकर कोहनियो के बल चलकर सुरग मे से निकलकर तथा रस्से के सहारे २४ फूट ऊपर चढकर मच के आगे से रस्से पर उल्टा लटककर ८० फूट पारकर के ज्यू ही मच पर पहुचे सभी ने अपने दातो तले उगलिया दबा ली। उपस्थित आर्यजनो ने इस सारे कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशसा की।

इस सभा के अध्यक्ष आर्य सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी ने सारे कार्यक्रम को देखा तथा अन्त मे अपने वक्तव्य मे उन्होने क्षत्रबल की उन्नति की कामना के साथ आर्यवीर दल की उन्नति को आवश्यक बताकर सभी आर्यवीरो को आशीर्वाद दिया। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।



आर्यवीर कमाण्डो रस्से पर चलते हुए। सार्वजनिक उद्बोधन के समय मच पर बैठे बाए से श्री पतराम त्यागी अध्यक्षता करते हुए श्री गुरुचरण सिघल ब्र० राजसिह श्री सारस्वत मोहन मनीषी दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा श्री सुरेन्द्र रैली श्री रवीन्द्र मेहता एव श्री आर्यमुनि । खडे हुए बाए से श्री रोहतास आर्य श्री वीरेश आर्य एव मनोज आर्य।

महाशय रामविलास खुराना को भ्रातृ शोक

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मडल के प्रधान महाशय राम विलास खराना के लघु भ्राता कृष्णलाल खुराना (६८) का अकस्मात निधन हो गया। वह अपने पीछे पत्नी सहित दो पुत्र एक पुत्री छोड गए हैं। ६ जून को उनकी शोकसभा ५ अरोज फार्म श्री राममदिर मार्ग वसत कुज मे साय ४ से ५ बजे तक हुई।

विश्व पर्यावरण दिवस (५ जून) पर विशेष

सामाजिक अवमूल्यन में पर्यावरण ह्रास की भूमिका : एक सामाजिक परिस्थितिकीय अध्ययन

समाज और पर्यावरण प्रदूषण

– डॉ० आर्येन्दु द्विवेदी

पर्यावरण और हमारा जीवन एक सिक्के के दो पहलू है। पर्यावरण मे अनेक प्राकृतिक या भौगोलिक वस्तुए – जल वायु आकाश पृथ्वी तथा अनेक सामाजिक नियम आते है जो मानव जीवन को प्रभावित करते है। पर्यावरण उन सभी दशाओ का योग है जिन्होने प्राणी के जीवन को प्रभावित किया है और कर रहे है। पर्यावरण शब्द परि और आवग्ण से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ **चारो ओर** और आवरण का अर्थ **ढके हुए**। इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ उन सभी दशाओ और परिस्थितियो से है जो एक प्राणी के जीवन को चारो ओर से घेरे हुए है। इस दृष्टिकोण से किसी भी जीवित वस्तु के अस्तित्व पर जितनी दशाओ का प्रभाव पडता है वह सब पर्यावरण हे। मानव अपनी विभिन्न क्रियाओ द्वारा अपनी सुख सुविध ाओ के लिए आधुनिक औद्योगिक वातावरण का सृजन करके अपने विकास का मापदण्ड प्रस्तुत कर रहा है। विश्व मे पर्यावरण क्रान्ति सयुक्त राष्ट्रसघ द्वारा स्टॉक होम मे सन १६७२ मे आयोजित मानव पर्यावरण विषय पर किए गए सम्मेलन की सस्तुति से सयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा शुरू की गई।

पर्यावरण दिवस की महत्ता

भारत सरकार ने १६७२ मे राष्ट्रीय पर्यावरण समिति का गठन किया तथा १ नवम्बर १६८० मे पर्यावरण विभाग की आधारशिला रखी। सन १६८१ के मध्य विश्व मे पर्यावरण नीति शुरू की गई। पर्यावरण की सुरक्षा की तरफ जनता का ध्यान आकृष्ट करने के लिए सारे विश्व मे ५ जून का दिन पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्याए

जहा आज मानव ने अपने आसपास फैले प्राकृतिक पर्यावरण को तोडा है वहा पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओ ने जन्म लिया है। पर्यावरण प्रदूषण का विस्तृत अर्थ दूषित हो रही हवा पानी मिटटी दलदल रेगिस्तान या बीहडो का बढना नदियो का बरसात मे उफनकर बहना और गर्मी मे सूख जाना जगलो को ध्वस्त करने से लेकर पेयजल का सकट गन्दे पानी का निकास जैसी सारी चीजे सम्मिलित है। तेजी से बढती हुई आबादी एव उपभोग प्रधान सस्कृति की भूख ने प्राकृतिक सम्पदा का अन्धाधुन्ध दोहन किया है। जो अभी भी जारी है। अब प्रकृति ने भी इसका परिणाम बताना शुरू कर दिया है। जनसख्या मे वृद्धि के साथ साथ स्वच्छता की समस्या भी पैदा हुई है। बडे बडे शहरो मे मल मूत्र कूडा कचरा कारखानो की राख व रासायनिक गैसे तेजी से निकली हैं। जिससे जल वायु पृथ्वी सभी प्रदूषण से खराब होने लगे हैं। पर्यावरण जल वायु ध्वनी तथा भूमि प्रदूषण को हुए अमेरिका के राष्ट्रपति ने विश्व २००० नामक एक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया था जिसमे कहा गया था कि यदि पर्यावरण प्रदूषण नियन्त्रित नही किया गया तो सन २०३० तक तेजाबी वर्षा भूखमरी और प्रदूषण का ताण्डव होगा और मानव का भविष्य खतरे मे पड जाएगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी का कथन है कि प्रकृति हम सबकी आवश्यकता तो पूर्ण कर सकती हे परन्तु किसी का लालच नहीं यह चेतावनी की ओर इगित करता है। हमारे मानव जीवन को प्रभावित करने वाले चारो ओर उपस्थित जड ओर चेतन पदार्थ का सामूहिक नाम ही पर्यावरण है। जिस हवा मे हम सास लेते है जिस जल का हम सेवन करते है जिस भूमि पर हमारा आवास है वे सभी पर्यावरण के अभिन्न अग है। वस्तुत स्वस्थ पर्यावरण प्राणीमात्र को स्वस्थ एव खुशहाल रखने मे सहायक होता है। जब हम प्राकृतिक नियमो का उल्लघन तात्कालिक लाभ जैसे – उद्योगीकरण परमाणु ऊर्जा के विकास आदि द्वारा करते है। तब इन लाभो के साथ पर्यावरण सन्तुलन नष्ट करते है। जिस पर हमारा जीवन एव सृष्टि का अस्तित्व निर्भर है। सभी राष्ट्र ससाधनो का अपव्यय कर पर्यावरणीय प्रदूषण को प्रोत्साहन दे रहे है।

पृथ्वी के ताप वायुमण्डलीय गैसीय तत्वो को प्रकृति स्वय सन्तुलित करती है। इस सन्तुलन की सीमा का उल्लघन होने से मानव जीवन दूषित हो जाता है। यह सबसे दु खद बात है कि मानवजाति ने स्वय प्राकृतिक विकृतियो को निमन्त्रित किया है। प्राकृतिक विभीषिका का अनुमान भोपाल गैस त्रासदी रूस मे चर्नोबिल काण्ड व इथोपिया मे भीषण अकाल परमाणु सम्पन्न राष्ट्रो द्वारा समय समय पर परमाणु परीक्षण रेडियोधर्मिता उर्त्सजन आदि से लगाया जा सकता है।

प्रकृति के प्रमुख घटको मानव वनस्पति एव मानवोत्तर प्राणी मे सन्तुलन रहना ही पर्यावरण सरक्षण है। हमे वायु प्रदूषण जल प्रदूषण स्थलीय प्रदूषण रडियोधर्मी प्रदूषण एव ध्वनि प्रदूषण मुख्य रूप से मिलते है।

वायु जल मृदा ध्वनि व रेडियोधर्मी प्रदूषणो द्वारा गम्भीर पर्यावरणीय समस्याए जन्म ले रही है। एक सामान्य व्यक्ति को दिन भर मे सास लेने के लिए १४ हजार लीटर ताजी शुद्ध आक्सीजन वाली हवा चाहिए। जबकि एक हजार किलोमीटर चलने के लिए एक मोटर कार को उतनी ही आक्सीजन की आवश्यकता होती है। स्वच्छ वायु को वायुमण्डल मे अवाच्छित तत्वो व विषाक्त गैसो का प्रवेश उसे बुरी तरह दूषित कर रहा है। लगभग ६० प्रतिशत वायु प्रदूषण केवल स्वचालित वाहनो के धुए एव १० से १५ प्रतिशत ईधन के धुए के कारण होता है। सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण यातायात उद्योग से फैल है। एक सर्वेक्षण के अनुसार आज ससार मे लगभग ४० करोड मोटर वाहन सडको पर है जो लगातार नगरो का वातावरण दूषित कर रहे है। मोटर कारे कार्बन डाइ आक्साइड तथा अन्य अपशिष्ट की विशाल मात्रा लाखो टन नाइट्रोजन आक्साइड तथा हाइड्रोकार्बनो और सीसे को वायुमण्डल मे विसर्जित करती हैं। पेट्रोल मे शीशा डाला जाता है वह विषैला होता है। जर्मन विशेषज्ञ डा० एच० के० हावडे का कथन हे कि – वातावरण मे सीसा जितना ज्यादा बैढता है उसका मानव पशु शरीर पर असर उतना ही गहरा होता है।

हमारे देश मे औद्योगिकरण और शहरीकरण से वायुमण्डल मे विद्यमान हवा की गुणवत्ता मे भारी गिरावट आई है। डीजल व पेट्रोल से मनुष्य के स्वास्थ्य का खतरा ओर भी बढ जाता है। विश्व मे हर साल ३० लाख असामयिक मौते घर के भीतर या घर के बाहर वायु प्रदूषण के कारण होती है और ऐसी मौतो मे सबसे अधिक मामले भारत मे ही है। विश्व स्वास्थ्य सगठन की रिपोर्ट के अनुसार देश की राजधानी नई दिल्ली विश्व के सबसे अधिक १० प्रदूषित शहरो मे एक हे। विभिन्न सर्वेक्षणो एव रिपोर्टो से पता चला है कि नई दिल्ली मे वायु प्रदूषण के कारण सास सम्बन्धी रोगो मे होने वाली मौतो की सख्या इन्ही वजह से होने वाली मौतो राष्ट्रीय औसत से १२ गुना अधिक है। एक अन्य अध्ययन के अनुसार पिछले दो दशको मे भारत का सकल घरेलू उत्पाद ढाई गुना बढ गया है। इसी तरह कल कारखानो से हाने वाले प्रदूषण मे भी चार गुना वृद्धि हुई है। सर्वाधिक जानलेवा वायु प्रदूषण साबित हुआ है।

अन्तर्राष्ट्रीय शोध सस्थान की रिपोर्ट पर नजर डाले ता पता चलता हे कि प्रदूषण स उत्पन्न श्वास सम्बन्धी बीमारिया की चपेट मे आकर कइ लाख बच्चे मोत के मुह म चले जात हे। केन्द्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड ने नई दिल्ली कानपुर को प्रदूषित शहर माना है। वायु प्रदूषण बढाने मे औद्योगिक प्रक्रियाओ का बहुत बडा योगदान है। कारखानो से प्रदूषण फैलाने वाले विभिन्न पदार्थ निकलते है। उदाहरण के लिए एल्यूमीनियम उत्पाद करने वाले कारखानो से धूल जैसे कण निकलते है। तेल शोधक कारखानो से अमोनिया हाइड्रोकार्बन कार्बन अम्ल और सल्फर डाई आक्साइड पदार्थ निकलकर पर्यावरण मे पहुच रहे हैं। इसके अतिरिक्त कूडे कचर से जो काला धुआ निकलता है उससे प्रदूषण फैलता है। वैज्ञानिको ने बार बार चेतावनी दी है कि प्रदूषण के कारण पृथ्वी का वायुमण्डल गरम होता जा रहा है। यह बढोत्तरी एक डिग्री सेन्टीग्रेट तक हो चुकी है। यदि यह बढोत्तरी साढे तीन डिग्री सेन्टीग्रेट पहुच गई तो उत्तरी एव दक्षिणी ध्रवो की बर्फ पिघलने लगेगी और जल प्रलय हो जाएगी। इससे धरती मे ऋतुए बदल जाएगी। महामारिया फैल जाएगी। त्वचा कैसर फसल उत्पादन कम हो सकता है तथा नवजात शिशुओ के पगु होने का खतरा हो सकता है। वैज्ञानिको का अनुमान है कि बढती कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा इस तरह बढती रही तो ३० वर्षो मे धरती के तापमान मै ३ से ५ डिग्री सेन्टीग्रेट न्क की वृद्धि होगी। शीतोष्ण क्षेत्र मरूभूमि मे परिवर्तित होकर ध्रुवो की बर्फ पिघलकर जलप्लावन की भीषण समस्या उत्पन्न कर सकते हैं।

– शेष भाग पृष्ठ ७ पर

स्वास्थ्य चर्चा

ग्रीष्म ऋतु में पेट के मुख्य रोग

— डॉ० बी०डी० अग्रवाल

आजकल गरमी के मौसम मे पीने के स्वचद जल की कमी मक्खी मच्छरो की बढत तेजी से उडती धूल जीवाणुओ तथा अमीबा जैसे परजीवी का आसानो से पनपना पेट के विभिन्न रोगो के लिए जिम्मेदार होते है। इन कारणो से होने वाले पेट के विभिन्न रोग तथा उनसे बचने के उपाय इस प्रकार है।

डायरिया पतले दस्तो का बार–बार होना जीवाणु, वायरस तथा अमीबा एव जियारडिया परजीवी के सक्रमण से मुख्यत होता है। रोगी को केवल पतले दस्त हो सकती हैं या साथ मे रक्त म्यूकस या आव भी आ सकता है तब इसे डीसेन्ट्री या पेचिश कहते हैं। पतले दस्तो के साथ उल्टिया होने पर इसे गेस्ट्रो ऐटेराइटिस कहते हैं। जीवाणुओ तथा परजीवी के सक्रमण से बडी आत मे उत्पन्न सूजन को कोलाइटिस कहते है। छोटी आत मे खास प्रकार के जीवाणु 'कोलेरा विब्रियो के सक्रमण से पानी जैसे पतले दस्तो की बीमारी को कोलेरा कहते हैं। गेस्ट्र–एटराइटिस आत्रशोथ मे आमाशय एव आत की म्यूकस झिल्ली मे जीवाणु अथवा वायरस के सक्रमण से सृजन हो जाती है। यह रोग किसी भ उम्र मे हो सकता है लेकिन् बच्चो को आसानी से प्रभावित कर देता है जिनमे बहुत थोडे ही समय मे पानी तथा खनिज लवणो की खतरनाक रूप से कमी हो जाती है जो जानलेवा भी सिद्ध हो सकती है। खानपान मे स्वच्छता रखने से तथा त्वरित और प्रभावी उपचार से इससे बचा जा सकता है। प्रदूषित जल एव भोजन ग्रहण कर लेने से यह रोग फैलता है। प्रदूषित जल एव भोजन के शरीर मे पहुचने के कुछ घण्टो बाद ही रोगी को उल्टी पतले दस्त और पेट दर्द शुरू हो जाता है। दस्तो की सख्या एक दिन मे लगभग ५ से ५० तक हो सकती है। कुछ रोगी बुखार सिरदर्द तथा चक्कर आने की भी शिकायत करते हैं। उल्टी और दस्तो मे शरीर का जल तथा खनिज लवण बहुत अधिक मात्रा मे निकल जाने से अनेक जटिलताए उत्पन्न हो सकती है। यदि रोगी को लगातार उल्टिया न हो रही हो तो पानी तथा खनिज लवणो की पूर्ति के लिए मुह से स्वच्छ पानी खनिज लवणो (नमक इत्यादि) तथा ग्लूकोस का मिश्रण बहुत लाभदायक माना जाता है। दूरदराज के गावो मे यह उपलब्ध न हो तो चीनी तथा नमक का घोल उबले पानी मे तैयार करके नींबू के रस की कुछ बूदे मिलाकर रोगी को दे सकते हैं। यदि पतले दस्तो के प्रारम्भ होते ही यह घोल दे दिया जाए तो शरीर मे जल तथा खनिज लवणो की विशेष कमी नहीं होगी।

पेचिश डीसेन्ट्री शिगेला जीवाणु अथवा अमीबा परजीवी से बडी आत मे सक्रमण सूजन व घाव बनने से होती है। जिसके मुख्य लक्षण बार–बार पहले दस्त आना पाखाने मे आव खून व मवाद निकलना पेट मे मरोड के साथ दर्द होना हैं। कुछ रोगी बुखार जी मिचलाना चक्कर सिरदर्द जोडो मे दर्द कमजोरी घबडाहट की भी शिकायत करते है। शरीर मे जल खनिज लवणो व खून की कमी हो जाने पर कुछ रोगी अत्यधिक कमजोरी भी बताते है जिनमे नाडी कीगति तेज तथा ब्लड प्रेशरकम मिलता हे। ऐसी दशा मे चिकित्सक से तुरन्त परामर्श करे। इस रोग की पहचान अल्सरेटिव कीलाइटिस आत की टी०बी० तथा कैंसर से करना जरूरी होता हे चूकि कुछ रोगी कैसर होते हुए भी डीसेन्ट्री समझ कर कई माह तक दवा लेते रहते हैं जबकि कैंसर तेजी से बढकर लाइलाज हो जाता है। **टॉयफायड ज्वर** यह भी छोटी आत का एक सक्रामक रोग है जिसमे आत मे घाव बन जाते हैं। बुखार चढने के साथ रोगी पहले कब्ज तथा बाद मे पतले दस्तो की शिकायत करते हैं। निदान व उपकार के अभाव मे घाव फट जाने से मल के रास्ते अत्यधिक मात्रा मे ब्लीडिग होने लगती है। कुछ रोगी बेहोश भी हो जाते हे। जीभ पर सफेद गाढी पर्त एकत्र हो जाती है। **कोलेरा** विब्रियो नामक जीवाणु से प्रदूषित जल के ग्रहण कर लेने से छोटी आत मे सूजन वाले रोगी कुछ ही घण्टो मे अत्यधिक पतले चावल मे मॉड जैसे दस्त अत्यधिक कमजोरी तथा पैरो मे दर्द की शिकायत करते हैं। मल के रास्ते जल तथा नमक व अन्य खनिज लवण अत्यधिक मात्रा मे निकल जाते है जबकि मल की मात्रा बहुत कम होती है। इसीलिए इस रोग के उपचार मे जल तथा नम की पूर्ति त्वरित रूप से अत्यावश्यक होती है। **अमीबिक कोलाइटिस** अमीबा या ई०एच० नामक परजीवी जिसे सूक्ष्मदर्शी यत्र से ही देखा जा सकता है से प्रदूषित जल या भोज्य पदार्थ ग्रहण करने पर ये बडी आत मे पहुच कर तथा पनपकर अपनी सख्या मे वृद्धि करके अत मे सूजन घाव (अल्सर) सकरापन गाठ (अमीबोमा) उत्पन्न कर देते हैं। तीव्र कोलाइटिस के रोगी पतले दस्तो का बार–बार होना ब्लड तााि म्यूकस या आव पाखाने के रास्ते निकलना तथा मरोड के साथ पेट के निचले भाग मे दर्द रहना गैस का अधिक बनना बताते हैं। **हिपेटाइटिस पीलिया** हिपेटाइटिस (लीवर मे सूजन) उत्पन्न करने वाले वायरस (बहुत सूक्ष्म जीव) कई प्रकार की होती है जिनमे से मुख्य वायरस 'ए तथा बी है। 'वायरस ए मुख्यत रोगी के मल से फैलती है। इस वायरस से प्रदूषित जल अन्य खाद्य पदार्थ ग्रहण कर लेने से स्वस्थ व्यक्ति भी रोगी हो सकता है। वायरल हिपेटाइटिस के मुख्य लक्षण अचानक भूख खत्म हो जाना जी मिचलाना उल्टिया होना थकावट कमजोरी बुखार हाथ पैरो मे दर्द मूत्र आखो तथा त्वचा का रग पीला हो जाना है। बहुत से रोगी पेट के दाये ऊपरी लिवर वाले स्थान मे दर्द भी बताते हैं। बचाव पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था करके तथा खानपान मे स्वच्छता के नियमो का कडाई से पालन करके उपरोक्त सक्रामक रोगो से बचा भी जा सकता है। कुछ उपयोगी सुझाव इस प्रकार है पानी सदैव स्वच्छ ही पिये। पेट के उल्लिखित रोग यदि व्यापक रूप से फैले हो और यदि पानी की स्वच्छता के बारे मे सन्देह हो तो पानी उबाल कर पिये तो अधिक उत्तम होगा। भोजन सुपाच्य एव ताजा ले। खाने–पीने की सभी वस्तुओ को धूल मक्खी कॉकरोच चूहो से बचाए। फलो को सदैव घर पर लोकर धोकर ही खाए। तरकारी पानी से भलीभाति धोए।

— सीनियर चिकित्सा विशेषज्ञ
मेडिकल कालेज, कानपुर

ईश्वराज्ञा पालन के २१ सूत्र

हम व्यक्तिगत रूप से ईश्वर जगत–पिता ओ३म की आज्ञा का पालन निम्न तरीको से कर सकते है –

१ अपना आर्य उत्तम गुण कर्म स्वभावो को बढाकर।
२ वेद और आर्य ग्रन्थो का स्वाध्याय करके।
३ वेद ज्ञान रहित लोगो मे प्रचारार्थ प्रतिदिन कुछ घण्टे लगाकर।
४ अपनी आय का एक प्रतिशत प्रचार कार्य मे दान देकर।
५ अपनी सन्तानो को वैदिक शिक्षा देकर।
६ अपने मित्रो को वैदिक मार्ग दिखलाकर।
७ अपने घर मे हवन सत्सग का आयोजन कर।
८ अपने मित्रो सहयोगियो मे वैदिक साहित्य बाट कर।
९ अपने सन्तानो का यथा समय वैदिक सस्कार करवा कर।
१० अल्प मूल्य पर प्रचार साहित्य बाटकर।
११ अपने सन्तानो को गुरुकुल मे पढा कर।
१२ वैदिक शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रो को छात्रवृति देकर।
१३ वैदिक शिक्षण सस्थाओ को धन आदि के सहयोग करके।
१४ अपनी योग्यतानुसार अशिक्षितों और अन्धविश्वासों के मध्य प्रवचन करके।
१५ वैदिक सिद्धान्तो पर वाद–विवाद परिचर्चा व सगोष्ठी आयोजित करके।
१६ भजन एव प्रवचन दृश्य–श्रव्य कैसेट तैयार कर बेच कर भेट कर।
१७ पुस्तक प्रदर्शनी लगवाकर।
१८ छोटी–छोटी पुस्तके लिखकर।
१६ दुर्लभ ओर सस्ते साहित्य छपवा कर।
२० वैदिक पर्वों को पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर विधि पूर्वक मनाकर।
२१ स्वय एक कुशल सदाचारी कर्मचारी अधिकारी बनकर हम विश्व के प्रत्येक मानव को आर्य बना सकते है।

— दशरथ प्रसाद मेहता

महाराणा प्रताप जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में

"इतिहास का स्वर्णपृष्ठ"

दिनाक १३ जून सन २००२ तदनुसार ज्येष्ठ शुक्ला ३ तृतीया गुरुवार सवत २०५८ को महाराणा प्रताप जयन्ती महोत्सव भारत वर्ष मे सार्वजनिक रूप मे मनाया जा रहा है। महाराणा प्रताप के विषय मे किसी आत्मघाती स्वाभिमान शून्य पामर ने यह अफवाह फैलाई कि महाराणा प्रताप भी दिल्ली यवन पति अकबर के दरबार मे जाकर उसकी अधीनता स्वीकार रहे है।

यह बात बीकानेर के महाराजा पृथ्वीसिह को ज्ञात हुई तो एक पत्र सन्देश द्वारा पूछा कि हे महाराणा प्रताप हिन्दुओ के सूर्य यह वार्ता सच है या झूठ कृपया इसका शीघ्रतया समाधान करे। कारण वर्तमान मे राजस्थान के अधिकतम राजे महाराजे अम्बराधीश (जयपुर) के राजा मानसिह का अनुकरण कर रहे हैं सम्पूर्ण राजस्थान के राजपूतो का मान गौरव आपने रखा है।

क्या वर्तमान सकटकाल मे आप भी अपने महाराणा वश पूर्वजो के नाम को कलकित करने का महापाप करने जा रहे हैं ? साधारण मनुष्य तो अपने मे हिम्मत न होने से यह सिद्धान्त बाध लिया करता है कि जमाना मुश्किल है पर वाणी के रहस्य को महाराणा सागा और प्रताप ने ही समझा था। हे महाराणा प्रताप ! अब तक सब की यही आशा रही है कि महाराणा प्रताप अपने शिशोदिया वश की रीति मर्यादा को सुरक्षित रखेगे सुखराशि भगवान एकलिग आप की सहायता करे। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा मे आतुर एक स्वाभिमानी राजपूत।

(बीकानेर नरेश)

महाराणा प्रताप का आत्मबल भरा सन्देश

शेर भूखा हो मगर घास खा सकता नही।
राणा प्रताप अकबर को कभी सर झुका सकता नहीं।।

आन पर मरते रहे पुरखा उसी पर मै मरू।
सूर्यगढ चित्तौड का हरगिज झुका सकता नहीं।।

चाहे सुधाकर उत्तर दिशा मे अग्नि बरसाते रहे।
चाहे दिवाकर शीत हो निशि सौम्य सरसाने लगे।।

चाहे मही को दे डूबा सिन्धू निज मर्यादा को।
चाहे भले ही भूल जाये सिह भीषण नाद को।।

चाहे गगन मे सुमन सुन्दर सुरभित खिलने लगे।
चाहे मयुरो से उरगगण प्रेम युत मिलने लगे।।

किन्तु झुक सकता नहीं यह शीश इस प्रताप का।
होने न दूगा मै कलकित नाम बापारावल का।।

धर्म के खातिर जिऊ धर्म के खातिर मरूगा।
धर्म रक्षा के लिये ही केवल सर्वस्व त्याग दू।।

उपरोक्त स्वाभिमान भरे शब्दो मे सन्देश महाराणा प्रताप का श्री बीकानेर नरेश को मिला तो अति हर्ष भरे शब्दो मे धन्यवाद दिया। हे आर्य क्षत्रिय कुल दिवाकर महाराणा प्रताप तुम धन्य हो तुम्हारा शौर्य आत्मबल धन्य है। तुम्हारा अतुल साहस धैर्य और दृढ विश्वास चहुदिशी भेद कर चहु ओर प्रकाश फैला रहा है। भारतीय विद्यार्थियो के हृदयपटल पर अकित है और सगर्व प्रेरणा दे रहा है। भारतीय इतिहास के स्वर्ण पृष्ठो पर महाराणा प्रताप एव उन्ही के वश परम्परा के तेजस्वी नक्षत्र छत्रपति शिवाजी महाराज की जीवन गाथा सदैव प्रेरणा स्रोत बनी रहेगी।

सग्रहकर्ता — स्वामी केवलानन्द सरस्वती

पृष्ठ ५ का शेष भाग

समाज और पर्यावरण

विभिन्न उद्योगो से मुक्त विषैले रसायनो द्वारा आगामी ४० वर्षो मे कम से कम २५ से ३० प्रतिशत ओजोन परत मे क्षति की सम्भावना व्यक्त की गई है। मनुष्य पर्यावरण औद्योगिक व घरेलू अपशिष्टो की विराट मात्रा मे विसर्जन कर रहा है। दुनिया मे प्रतिवर्ष ४ अरब टन तेल और गैस का २ अरब टन से ज्यादा कोयला लगभग २० अरब टन खनिज व चटटानो का दूषित पदार्थ निकलता है। यह वायु, मिटटी व पानी मे प्रविष्ट हो जाता है। विश्व स्वास्थ्य सगठन के अनुसार हम जो रासायनिक पदार्थ इस्तेमाल करते हैं उनमे से ४० हजार मनुष्य के लिए हानिकारक है।

निर्मल एव स्वच्छ जल अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। विश्व स्वास्थ्य सगठन के प्रतिवदेन के अनुसार ५ लाख बच्चे प्रतिवर्ष प्रदूषित जल के कारण अकाल मृत्यु के शिकार होते है। भारत की पुण्य सलिल व पापहारिणी पवित्र नदिया हजारो टन खतरनाक रसायन पदार्थ दिन रात समुद्र मे डालती हैं जो जीव जन्तुओ के लिए खतरा बन जाता है। अकेले गगा क्षेत्र मे लगभग ४ करोड ५० लाख एकड मिटटी का ह्रास प्रतिवर्ष हो रहा है जिससे भूमि को उर्वर बनाने वाले स्थल और सूक्ष्म तत्व समुद्र मे विलीन हो रहे हैं।

वैज्ञानिको के अनुसार यदि भूभाग पर ३३ प्रतिशत वन हो तो वायु प्रदूषण दुष्प्रभावी नही होता। वृक्षारोपण से न केवल पर्यावरण सन्तुलन वरन भूस्खलन बाढ जेसी जानलेवा विभीषिए रही नियन्त्रित होती है।

वायु प्रदूषण की भयावह तस्वीर कह रही है कि भविष्य मे ५ वर्ष पूरा करते करते पाच बच्चो मे एक की मृत्यु हो जाएगी। विश्व स्वास्थ्य सगठन की रिपोर्ट क अनुसार ८० प्रतिशत बीमारिया दूषित जल टाइफाइड हैजे पेंचिश आदि कीटाणु के कारण होते हैं। भारत मे जल प्रदूषण से ५० से ६० प्रतिशत लोग प्रभावित है प्रतिवर्ष ४२ अरब गैलन मलबा व डेढ टन से अधिक डिटरजैट समुद्र मे जल प्रदूषित कर रहे है।

केन्द्रीय गगा प्राधिकरण का गठन गगा जैसी बृहद जलवाहिनी नदी मे जल प्रदूषण की समस्या के निदानार्थ एक सकारात्मक एव सरचनात्मक कदम है। क्योकि गगा एव सहायक नदिया भारत के ३० प्रतिशत क्षेत्र को जल ससाधन प्रदान करती है। जिस पर देश की ३५ प्रतिशत जनसख्या निर्भर है।

इसके अतिरिक्त परमाणु परीक्षणो मे जो रेडियोधर्मी विष फैलता है उससे वर्तमान मानव ही नहीं भावी पीढिया भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकतीं। नाभिकीय विस्फोट द्वारा इलेक्ट्रान प्रोटान न्यूट्रान एल्फा बीटा गामा किरणे प्रभावित होती है इसके कारण कभी कभी जीन्स तक मे परिवर्तन आ जाते है और अनुवाशिक प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त ध्वनि प्रदूषण बुरा अभिशाप है। ध्वनी प्रदूषण ने मनुष्य को चिडचिडापन मानसिक रोगग्रस्त एव बहरा बना दिया है। ८५ डेसीबल से अधिक ध्वनि होने पर बी०पी० (रक्तचाप) का बढना थकान बहरापन नीद न आना हो सकता है। सरकार को कडे जुर्माने की व्यवस्था करनी चाहिए।

अत पर्यावरण की सुरक्षा हेतु राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावकारी कार्यक्रम शुरू करने की आवश्यकता है। आवश्यकता वैज्ञानिक व उद्योगो के विकास को रोकना नहीं है अपितु निकलने वाले दूषित पदार्थो को ठिकाने लगाने की है। पर्यावरण के प्रति जन-चेतना जगानी होगी। इसके लिए स्वय सेवी सगठनो सामाजिक कार्यकताओ सरकारी अधिकारियो आदि की पर्यावरण प्रदूषण समितिया गाव से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर गठित किए जाने की आवश्यकता है। यदि पर्यावरण मे सुधार की ओर ध्यान न दिया गया तो कोई भी शक्ति सृष्टि को विनाश से नहीं बचा सकेगी।

अत सभी नागरिको का कर्त्तव्य है कि वे इस से उत्पन्न भयावह दुष्परिणामो को समझे और इसके निराकरण हेतु अपने दायित्व को पूरा करने का सकल्प ले।

— प्रवक्ता समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय, जालौन (उ०प्र०)

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 13 14/06/2002 दिनांक १० जून से १६ जून २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 13 14/06/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

जनकपुरी, दिल्ली में संस्कार सम्प्रेषण शिविर

आर्य समाज सी ब्लाक जनकपुरी मे छात्र/छात्राओ का ग्रीष्मऋतु अवकाश मे सस्कार सम्प्रेषण शिविर लगाया गया।

उपरोक्त शिविर ३ जून से ८ जून तक प्रतिदिन प्रात ७ से ६ बजे तक लगाया गया जिसमे ५४ छात्र/छात्राओ ने भाग लिया। गायत्री मन्त्र अर्थ सहित से प्रारम्भ करवाकर योगासन अभ्यास स्तुति प्रार्थना उपासना के एक दो मन्त्रो का गान एव अर्थ ऋषि जीवन की मुख्य घटनाए आर्यसमाज के नियम शिक्षाप्रद चुटकले भजन एव मनोरजक खेल करवाए जाते थे।



सस्कार सम्प्रेषण शिविर में भाग लेने वाले बच्चो का एक दृश्य

समापन समारोह मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव ने अध्यक्षता की। उन्होने समाज के प्रधान श्री सोमदत्त महाजन एव सब आयोजका की प्रशसा की और बच्चो को आशीर्वाद दिया और आशा प्रगट की कि दिल्ली की अन्य समाज भी इस प्रकार के शिविर लगाकर आने वाली पीढी को सुशिक्षित एव सुसस्कत करगी। अभिभावको ने भी कार्यक्रम की बहुत सराहना की।

ईसाई परिवार की जनकपुरी मे शुद्धि

आज दिनाक ६–६–२००२ तदनुसार रविवार साय ६ बजे श्रीमती सीसी मधु पत्नी श्री आर० मधु कुमार सुपुत्री श्री वर्गीस सी० ६बी/१६ जनकपुरी नई दिल्ली – ८ ने वैदिक धर्म की दीक्षा स्वेच्छा से प्राप्त की। उनके सुपुत्र कुमार हन्द्री मधुकुमार सुपुत्र श्री आर० मुध कुमार और सुपुत्री कुमारी जसमीन मधुकुमार सुपुत्री श्री आर० मधुकुमार ने भी वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

जनकपुरी सी०ब्लॉक मे पारिवारिक सत्संग

आर्यसमाज सी ब्लॉक जनकपुरी ने पारिवारिक सत्सगो को स्थायी रूप देना प्रारम्भ कर दिया है।

इन सत्सगो का लक्ष्य परिवारो को विशेष कर बच्चो और युवको को वैदिक सस्कृति से सुसस्कृत करना है। मध्यम वर्ग के लोगो मे बहुत उत्साह है क्योकि पाश्चात्य सभ्यता से जो पारिवारिक जीवन भ्रष्ट हो रहे हैं उनसे सब चिन्तित हैं। ८ जून के पारिवारिक सत्सग मे आर्यजगत के सुप्रसिद्ध प्रवक्ता अध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव भी सम्मिलित हुए। उनके लघु प्रवचनो को सुनकर मोहल्ले के लोग आनन्दित हुए। महामन्त्री न आशा प्रकट की कि भारतवर्ष की सब समाजे पारिवारिक सत्सग प्रारम्भ करेगी।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक २७ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १७ जून से २३ जून २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

समूचे विश्व में आर्यसमाज संगठित होकर वैदिक धर्म का प्रचार करेगा

–कै० देवरत्न आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य लगभग २८ दिन की दक्षिण अफ्रीका यात्रा को सफलतापूर्वक सम्पन्न करके दिल्ली लौटे। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या भी विदेश यात्रा पर गई थी।

१५ जून की मध्य रात्रि को लगभग २३० बजे इन्दिरा गाधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अडडे पर उनका स्वागत करने के लिए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप–प्रधान श्री विमल वधावन तथा पुस्तकाध्यक्ष श्री सोमदत्त महाजन जनकपुरी सी० ब्लाक सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य की अध्यक्षता मे आर्यसमाज राजौरी गार्डन मे कै० देवरत्न आर्य जी के विदेश प्रचार से पधारने पर अभिनन्दन समारोह का आयोजन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर आयोजित हुआ। यह आयोजन पश्चिमी दिल्ली के युवा कार्यकर्ताओ द्वारा किया गया। सभा का सचालन दिल्ली सभा के मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य ने किया। इस अभिनन्दन समारोह मे सर्वश्री विमल वधावन वेदव्रत शर्मा सोमदत्त महाजन चन्द्रदेव प्रसिद्ध उद्योगपति मुशीराम सेठी कै० देवरत्न आर्य जी के प्रधान बनने के बाद उनकी यह पहली विदेश यात्रा थी। उन्होने कहा कि आगामी कुछ महीनो मे विश्व के अन्य हिस्सो मे भी ये यात्राए आयोजित होगी।

श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्यसमाज की विशाल शक्ति को राष्ट्र सेवा के महान कार्यो मे लगाने का आह्वान किया।

सभामन्त्री ने कहा कि दिल्ली की काग्रेस सरकार ने नई आबकारी नीति क माध्यम से शराब की बिक्री रा प्रोत्साहन देने के लिए जो विशेष प्रयास ओर नीतिया के आर्यजनो ने मानवीय सेवा के बल पर वहा के एक एक व्यक्ति के मन मे आर्यसमाज की छवि का निर्माण किया है। यदि कोई बच्चा भी किसी परिवार मे दुख महसूस करता है तो वह भगता हुआ आर्य सरक्षण गृह मे आर्य नेताओ की शरण मे जाना श्रेयस्कर समझता है।

कै० देवरत्न जी ने बताया कि आर्यसमाज के पूर्वजो ने दक्षिण अफ्रीका मे आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व से महान प्रयास प्रारम्भ किए थे जिनका फल आज दखने को मिल रहा है। उन्होने बताया



दाए से बाए आर्यसमाज राजौरी गार्डन के उप मन्त्री श्री सुरेश आहलुवालिया सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य का स्वदेश लौटने पर स्वागत करते हुए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की मन्त्री श्रीमती शशि प्रभा आर्या, श्रीमती सुनीता आर्या का पुष्पगुच्छ भेट कर स्वागत करती हुई।

आर्यसमाज के मन्त्री श्री रमेश तथा अन्य निकटवर्ती क्षेत्रों की आर्यसमाजो के दर्जनो आर्यजन उपस्थित थे। स्वागतकर्ताओं ने भगवा पगडी और पटके धारण किए हुए थे जिससे हवाई अडडे का वातावरण आर्यसमाज के रग मे रगा प्रतीत हो रहा था।

सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी के दृश्यमान होते ही सारा वातावरण वैदिक जयघोष के साथ गूज उठा। श्री सोमदत्त महाजन ने बडे उत्साहपूर्वक जयघोष करवाया।

१६ जून को प्रात काल ही सार्वदेशिक आदि उपस्थित थे। श्रीमती शशि प्रभा आर्या श्रीमती उज्ज्वला वर्मा माता रामचमेली श्रीमती राज पाण्डेय श्रीमती कृष्णा रसवन्त आदि ने श्रीमती सुनीता जी आर्या को पुष्प गुच्छ भेट किए तथा पुष्पमालाओ के द्वारा अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि सार्वदेशिक सभा के वर्तमान प्रधान तथा अन्तरग सदस्य इस लक्ष्य के लिए सकल्पबद्ध हैं कि आर्यसमाज के सगठन को एक महान शक्ति के रूप मे सारे विश्व के स्तर पर प्रतिष्ठित किया जाए। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए लागू करने की योजना बनाई है उसका आर्यसमाज डटकर विरोध करता है।

सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने अपनी विदेश यात्रा का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि दक्षिण अफ्रीका में एक माह के प्रवास के दौरान मैंने कई बार महसूस किया कि भौतिक दृष्टि से बेशक वे उन्नति के शिखर पर हैं सुख सुविधाओ के अपार साधन उनके पास उपलब्ध हैं परन्तु इनके साथ ही वैदिक धर्म के प्रचार की अपार सभावनाए भी वहा मौजूद हैं।

उन्होने बताया कि दक्षिण अफ्रीका कि मेरे वहा जाने का सर्वाधिक लाभ सगठनात्मक दृष्टि से निकट भविष्य मे ही दिखाई देगा। विदेशो मे अग्रेजी भाषा के प्रचारको की भी बहुत आवश्यकता है जिसके लिए उन्हे भारत मे रहकर ही प्रयास करना होगा जिससे विदेशो मे भी आर्यसमाज सामान्य हिन्दू समाज का मार्ग दर्शन कर सके।

इस सभा की अध्यक्षता करते हुए श्री जगदीश आर्य ने कै० देवरत्न आर्य तथा सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया। ऋषि लगर की व्यवस्था आर्य युवा सभा के सौजन्य से की गई।

देश की वर्तमान परिस्थितियों में आर्यसमाज की भूमिका

— आचार्य भगवानदेव वेदालकार

ऋषि दयानन्द ने सन १८७५ मे मुम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना की थी जिसका उद्देश्य था – ससार भर के सब मनुष्यो का उपकार करना मत–मतान्तरो मे फैले अन्धविश्वासो को दूर करना समाज मे श्रेष्ठता लाना।

देश की तत्कालीन परिस्थिति

जिस समय आर्यसमाज का जन्म हुआ उस समय देश शताब्दियो से पराधीन चला आ रहा था देश की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी। सामाजिक व्यवस्था छिन्न भिन्न थी। ईश्वर के स्थान पर पत्थर की बनी मूर्त्तियो और देवी–देवताओ की पूजा होती थी। स्त्रियो को पढाना पाप माना जाता था। लोग आजादी का मूल्य भूल चुके थे ऐसे समय युगो के बाद ऋषि दयानन्द जैसे महान सुधारक के माध्यम से आर्यसमाज जैसी सस्था का जन्म हुआ। किसी कवि ने सत्य ही कहा है –

आर्यसमाज प्रेम का प्रेरक द्वेष दम्भ का नाशक है।
वैदिक धर्म दिवाकर का यह उज्ज्वल ज्ञान प्रकाशक है।।

ऋषि दयानन्द की धारणा थी कि जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति कर सकता है वैसा दूसरा कोई सगठन नहीं कर सकता। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी का विचार था कि **"आर्यसमाज से अधिक देशभक्त, समाज हितैषी और सामाजिक उन्नति चाहने वाली दूसरी सस्था नहीं है।'**

श्री काका हाथरसी ने भी आर्यो ओर आर्य समाज के योगदान का स्वीकार करते हुए लिखा हे –

नत मस्तक सब आर्यजन, करते तुम्हे प्रणाम।
अजर अमर है विश्व मे दयानन्द का नाम।
दयानन्द का नाम महर्षि पदवी पाई।
भूले भटके जन गण मन को राह दिखाई।
गोरे भारत नहीं छोडते राजी राजी।
अगर न देते योग देश के आर्यसमाजी।।

देश की वर्तमान परिस्थिति

जिस प्रकार से ऋषि दयानन्द के समय तक सनातन वैदिक धर्म लुप्त हो गया था वैदिक धर्म की जगह अनेक सम्प्रदाय खडे थे घोर अज्ञान पाखण्ड गुरुडम ओर अन्ध विश्वास फैले थे।

आज हम देख रहे है कि –

सफाइया हो रही है जितनी दिलो की।
दिल उतने ही हो रहे है मैले।
अन्धेरा छा जाएगा एक दिन,
अगर दुनिया की यही हालत रहेगी।

देश मे चारो ओर भ्रष्टाचार झूठ छल धोखेबाजी गुरुडम पूजा मूर्ति पूजा आतकवाद प्रान्तवाद आदि विषम स्थिति उत्पन्न हो रही हे ऐसी स्थिति मे आर्यसमाज की और भी अधिक आवश्यकता अनुभव हो रही है। जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऋषि ने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया जहर पीया पत्थर खाए अपमान सहा उन्ही उद्देश्यो की पूर्ति के लिए आर्यसमाज गुरुकुल ओर डी०ए०वी० आदि सस्थाए बनी हैं। इन सस्थाओ के तप त्याग साधना आदर्श ऋषि भक्ति बलिदान आदि की और अधिक आवश्यकता है।

आर्यसमाज की विशेषता

जिन धार्मिक ओर सामाजिक सगठनो ने देश का सर्वाधिक प्रभावित किया उनमे आर्यसमाज का नाम अग्रणी है। सामाजिक क्षेत्र मे क्रान्तिकारी सुधार करने की दिशा मे आर्यसमाज ने उल्लेखनीय कार्य किया। प्राचीन सस्कृति के प्रति अनुराग वेदो के प्रति श्रद्धा शिक्षा का देश व्यापी प्रचार नारी जाति के प्रति समादर व समानता की भावना छुआछूत का निवारण पुरातन रूढियो का परित्याग आदि कार्य आर्यसमाज की देन हैं। देश मे सामाजिक एव धार्मिक कुरीतिया कुप्रथाए अन्ध विश्वास एव पाखण्ड बढे है। विज्ञान और कम्प्यूटर के युग मे भी चमत्कारो अन्धविश्वासो राशिफल जन्मपत्री आदि पर विश्वास जारी है। छूआ छूत जाति प्रथा क्या मिट गई है ? बाल–विवाह सती प्रथा की घटनाए बढी हैं।

इस युग मे भी आर्यसमाज ही देश मे सामाजिक एव धार्मिक बुराइयो का विरोध कर सकता है। वह ही राष्ट्रीय चेतना जगा सकता है। गुरुडम–पूजारियो की पोल खोल सकता है। आर्यसमाज के पास वेदो का ज्ञान है डी०ए०वी० सस्थाओ की शक्ति है गुरुकुलो आश्रमो का प्रभाव है अच्छे विद्वानो पुरोहितो सन्यासियो का सगठन है। सार्वदेशिक सभा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ की सर्वोत्तम व्यवस्था है। उनके माध्यम से आर्यसमाज देश की वर्तमान विषम परिस्थितिया मे भी समाज सुधार राष्ट्र के नव निर्माण की अहम भूमिका निभा सकता है। कवि की ये पक्तिया यही भावना प्रस्तुत करती हैं –

आर्यजन आश्वस्त रहना, विजय होगी ही हमारी।
लौट आए पुरानी कीर्ति, सुख, सम्पत्ति सारी।
कर्म कोई भी, कभी भी, कहीं भी निष्फल न जाता।
सत्य का तो है विजय से रहा सदा अटूट नाता।
जीत होगी बस उसी की, लक्ष्य जिसका शुद्ध होगा।
पूर्ण होने के निकट है जीत की अभिलाषा प्यारी।
आर्यजन आश्वस्त् रहना, विजय होगी ही हमारी।।

जीवन में शक्ति पाने के लिए वाणी और हाथों के साथ मन की शुद्धि जरूरी

नई दिल्ली २६ मई। आर्यसमाज बी–ब्लाक जनकपुरी के वार्षिकोत्सव मे समापन–समारोह की अध्यक्षता करते हुए स्वामी दीक्षानन्द जी ने कहा कि जीवन मे शाति पाने के लिए वाणी और हाथो के साथ मन की शुद्धि जरूरी है। सच्चे मन से निकली हुई मधुर वाणी आनन्द की अनुभूति कराती है और बिना विचारे बोली हुई कडवी बात झगडे का कारण बनती है। इसी प्रकार मनुष्य अपने हाथो से किसी का भला भी कर सकता है और शत्रुता भी मोल ले सकता है।

इस सत्सग मे स्वामी जीवनानन्द जी ने कहा कि मनुष्य जीवन की सार्थकता ईश्वर की भक्ति में है। दान से भोग और सेवा से आयु की वृद्धि होती है। अच्छे कर्मो और शुद्ध आचरण से ही मन की शाति प्राप्त की जा सकती है।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री बेगराज जी ने अपने सुमधुर गीतो से जनता का मन मोह लिया। इस अवसर पर आर्यसमाज बी–ब्लाक जनकपुरी द्वारा प्रकाशित एव डॉ० सुन्दर लाल कथूरिया द्वारा सपादित पुस्तक 'मानव–निर्माण और आर्यसमाज का लोकार्पण स्वामी दीक्षानन्द जी ने किया। आर्यसमाज के विकास मे योगदान के लिए श्री विमल वर्मा श्री यशपाल श्रीमती वीरबाला एव श्रीमती सुभाष बत्रा का माल्यार्पण शाल और 'सत्यार्थ प्रकाश' की प्रति भेट कर सम्मानित किया गया। स्वामी जीवनानन्द जी को भी स्त्री समाज की ओर से टेप रिकार्ड भेट किया गया। मुख्य अतिथि के रूप मे विधानसभा मे प्रतिपक्ष के नेता प्रो० जगदीश मुखी और निगम पार्षद् श्रीमती मीना ठाकुर उपस्थित थीं। कार्यक्रम का सफल सयोजन सचालन आर्यसमाज के प्रधान प्रो० सुन्दरलाल कथूरिया ने तथा धन्यवाद समाज के मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी ने किया।

वार्षिकोत्सव एव वेद प्रचार समारोह २२ मई से २६ मई तक चला। १६ मई से २१ मई तक प्रभात फेरी का भी आयोजन किया गया। २३ मई को महिला सत्सग एव आय वीर सम्मेलन का भी अत्यन्त सफल आयोजन हुआ।

बोध कथा

विस्मृत प्रयोगसिद्धि

स्वामी दयानन्द की स्मरणशक्ति बडी प्रबल थी। एक दो बार पाठ सुनने पर वह उसे स्मरण कर लेते थे उनकी स्मरण शक्ति के कारण गुरु विरजानन्द दण्डी जी उनसे प्रसन्न भी रहते थे। परन्तु एक दिन अष्टाध्यायी की कोई प्रयोगसिद्धि विस्मृत हो गई ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था उन्हे बडा खेद हुआ। उन्होने गुरुजी से विस्मृत प्रयोगसिद्धि पूछी। दण्डी जी दयानन्द जी को कोई पाठ बार–बार न पढाते थे इसलिए कुछ झिडक कर कहा 'जाओ स्मरण करके आओ यहा एक पाठ बार–बार पढाने के लिए नहीं बैठे हैं। दो–तीन दिन तक निरन्तर प्रार्थना करने पर गुरुजी ने दयानन्द से कहा – हमने एक बार तुम्हे कह दिया है जब तक पहले का पाठ न सुनाओगे आगे का पाठ नहीं चलेगा यदि तुम्हे प्रयोग स्मरण न आए तो भले ही यमुना मे डूब जाना परन्तु मेरे पास न आना।

उस दिन स्वामीजी ने प्रण कर लिया कि यदि वह प्रयोग स्मरण नहीं कर सके तो यमुना मे कूद पडूगा। वह प्रतिज्ञा कर भूले पाठ का स्मरण करने लगे उन्हे स्वप्न की सी स्थिति आई उन्हे ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्हे लम्बी प्रयोग सिद्धि सुना रहा है। स्वामी जी दौडे हुए दण्डी जी के चरणो मे पहुचे और सारी लम्बी प्रयोगसिद्धि सुना दी। दयानन्द जी के धारणा और धैर्य देखकर विरजाननद जी प्रसन्न हो उठे। उन्होने शिष्य को कण्ठ से लगा लिया और भरपूर आशीर्वाद दिया। उस दिन से स्वामी जी कोई बात विस्मृत होने पर इसी प्रकार समाधिस्थ होकर उसे स्मरण कर लिया करते थे।

— नरेन्द्र

व्रत धारण करो .
उठो- तैयार हो जाओ .
राष्ट्र बढाओ . धन बढाओ

व्रत कृणुत। *यजु० ४–११*
हे मानवो व्रत धारण करो।
उत्तिष्ठत सनह्यध्वम्। *अथर्व ११ ११ २*
उठो वीरो तैयार हो जाओ।
राष्ट्र रोह द्रविण रोह। *अथर्व० १३ १३*
राष्ट्र को बढाओ धन को बढाओ

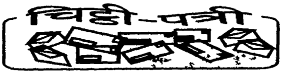
साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

समाधान — निष्ठा — एकता — अनुशासन से

भारत राष्ट्र ने नई सहस्त्राब्दी मे अपनी राजनीतिक स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे प्रवेश किया है यह चिन्ता के साथ एक कठिन अग्नि परीक्षा की घडी है जब उसे अनेक चुनौतियो का सामना करना पड रहा है। वर्षो से उसे सीमा पार के आतकवाद से जूझना पड रहा है उसी के साथ व्यक्तिगत क्षेत्रीय महत्वाकाक्षाओ और स्वार्थो की चुनौतिया भी राष्ट्र को मिल रही है। उसी के साथ विदेशी साम्राज्य बाद से जूझते हुए उत्तर मे हिमालय से लकर दक्षिण मे समुद्र तक और पूर्व–पश्चिम मे विस्तीर्ण महासागर मे अवस्थित राष्ट्रजनो मे एकता–सहयोग के अधिक तत्व प्रस्तुत थे ऐसे तत्व निजी सम्मुनित महत्वाकाक्षाओ के सम्मुख क्षीण और तिरोहित न हो जाए यह देखना राष्ट्र के नेतृत्व वर्ग का लक्ष्य हो। हमारा राष्ट्र केवल चुनौतियो से जूझने मे ही सलग्न न रहे प्रत्युत ज्ञान–विज्ञान अभ्युदय नवीनतम आविष्कारो और उपलब्धियो मे भी वह न केवल अपना मूल्याकन करा सके प्रत्युत यदि सम्भव हो तो हमारे चिन्तन और आविष्कारक मानवता और विश्व की उपलब्धियो मे अपनी विशिष्ट स्थिति वैसे ही अकित कराए जैसे कि मानव इतिहास के अनेक क्षेत्रो मे भारतीय चिन्तको महर्षियो ने समुचित मार्गदर्शन किया था। इस नई सहस्राब्दी मे भारतीय राष्ट्र और उसके नेतृत्वर्ग को सीमापार के आतकवाद और देश मे उभरते हुए स्वार्थी अवसरवादी ताकतो से जूझना होगा वहा ज्ञान–विज्ञान कला सस्कृति और दूसरी नवीनतम उपलब्धियो मे भारत के कलाकारो वैज्ञानिको और चिन्तको को अपना श्रेष्ठतम योगदान करने का दृढ सकल्प करना चाहिए। ज्ञान–विज्ञान कला–सस्कृति की श्रेष्ठ नवीनतम विधाओ को प्रस्तुत करने मे भारतीय चिन्तक मनस्वी आविष्कारक बहुत कुछ दे सकते है यदि वे ज्ञान विज्ञान कला और मानवीय समस्याओ के समाधान मे कडी मेहनत कर कुछ नया मार्गदर्शन करे। मानवीय सभ्यता सस्कृति ज्ञान–विज्ञान के प्रारम्भिक युगो मे भारतीय चिन्तको और ऋषियो ने बहुत कुछ प्रस्तुत किया था पूरा विश्वास है कि यदि जीवन की सभी विधाओ कलाओ जरूरतो के विषय मे भारतीय चिन्तक और मनस्वी ऋषि तुल्य तेजस्वी चिन्तक पुन प्रयत्न करे ले विश्व की सर्वांगीण प्रगति मे नए मापदण्ड प्रस्तुत करने मे भारत अपनी विशिष्ट भूमिका पुन प्रस्तुत कर सकेगा।

विश्व और राष्ट्र की मानवता के सम्मुख उपस्थित चुनौतियो का समुचित समाधान जहा पूरी निष्ठा एकता और अनुशासन से करना चाहिए वहा ज्ञान–विज्ञान मानवीय समस्याओ के समाधान और नवीन विधाओ तथा उपलब्धियो के क्षेत्र मे भारतीय चिन्तक मनस्वी और वैज्ञानिक यदि व्यवस्थिति प्रयत्न करे तो ज्ञान–विज्ञान की नवीन उपलब्धियो और श्रेष्ठ मानवीय प्रगति के उच्चतम मापदण्ड प्रस्तुत कर सकते हैं। इस प्रकार जहा राष्ट्र के सभी अभ्युदयो और समस्याओ का श्रेष्ठतम समाधान करना चाहिए वहा विश्व के ज्ञान–विज्ञान कला–सस्कृति के क्षेत्र मे नई उपलब्धिया कर तथा पुराने ढर्रे के स्थान पर नई श्रेष्ठ प्रविधियो द्वारा मानवता और विश्व को श्रेष्ठ ऊचे मापदण्डो और विशिष्ट स्थिति पर प्रस्तुत करना चाहिए। इस प्रकार जहा देश की आर्थिक सामाजिक वैज्ञानिक चुनौतियो का सामना करना चाहिए वहा जीवन की प्रत्यक विद्या कला ऊचे लक्ष्यो की पूर्ति के लिए उपयुक्त श्रेष्ठ आर्थिक सामाजिक और वैज्ञानिक आविष्कार उपलब्धिया प्राप्त करे। देश के अभावो समस्याआ तथा जरूरतो के समुचित समाधान के लिए राष्ट्र के शासन और नेतृत्वर्ग को प्रयत्नशील होना चाहिए वहा मानवता और विश्व की नवीनतम विधाओ मे राष्ट्र का समुचित मार्गदर्शन करने के लिए भी हमारे मनीषी वैज्ञानिक और नेता अपनी समुचित भूमिका प्रस्तुत करे।

इस प्रकार मानवता राष्ट्र के अभावो को दूर करना तथा सभी समस्याओ का समाधान करना प्रत्येक राष्ट्रजन का मुख्य दायित्व हे तो साथ ही ज्ञान–विज्ञान उद्योग कला पर्यटन आदि विविध क्षेत्रो मे मानव को नए आविष्कार कर मानवीय समुन्नति के नए श्रेष्ठ आयाम प्रस्तुत करने मे अपनी भूमिका प्रस्तुत करनी चाहिए। इस प्रकार जहा अभावो को दूर करना समस्याआ का समाधान करना प्रत्येक देशवासी का दायित्व है वहा कला जीवन उद्योग विज्ञान आदि सभी क्षेत्रो मे मानवीय उन्नति के श्रेष्ठतम मापदण्ड प्राप्त करना भी मानव का लक्ष्य होना चाहिए। राष्ट्र की आर्थिक औद्योगिक प्रगति के लिए जहा पचवर्षीय और दशवर्षीय योजनाए बननी चाहिए और उनके व्यवस्थित कार्यान्वयन का भी व्यवस्थित प्रयत्न होना चाहिए। साथ ही कला क्षेत्र विज्ञान उद्योग शिल्प अदि मे मे आज भी ऐसे बहुत से क्षेत्र है ओर लक्ष्य हे जिन्हे यदि आज भी उनका व्यवस्थित मूल्याकन अध्ययन और व्यवस्थित प्रयत्न किया जाए तो जीवन के अनेक क्षेत्रो मे नई उपलब्धिया की जा सकती है। राष्ट्र के जीवन से जहा सभी अभाव अपूर्णताए समाप्त की जानी चाहिए। वहा प्रत्येक राष्ट्रवासी का यह भी पुनीत कर्त्तव्य है कि कला उद्योग शिल्प एव जीवन की प्रत्येक विद्या से नवीनतम श्रेष्ठ उपलब्धिया प्राप्त की जाए। इस प्रकार जहा नई सहस्राब्दी मे समस्याओ अभावो का समाधान होना चाहिए वहा कला शिल्प उद्योग शिक्षा तथा जीवन की प्रत्येक दिशा मे नए श्रेष्ठतम मापदण्ड प्राप्त करना राष्ट्र का लक्ष्य होना चाहिए। देना चाहिए।



लज्जास्पद आक्रमण

मैगासा से पुरस्कार से सम्मानित राजेन्द्र सिह पर अलीगढ मे जानलेवा हमला गम्भीर और लज्जास्पद घटना है। उसकी जितनी निन्दा की जाए कम है। जनतान्त्रिक सभ्य समाज मे पशुवत् असभ्य व्यक्ति कलक है। जिला पचायत अध्यक्ष जिससे बजर धरती को हरा भरा बनाने वाले कर्मठ असकल्पशील महापुरुष को गली–गलौच करके बुरी तरह मारा पीटा इसानियत का नहीं बल्कि व्यवस्था का खुला अपमान किया। ऐसे जन प्रतिनिधि को फौरन हटाकर सजा दी जानी चाहिए।

— के०सी० शोभित करावल नगर दिल्ली

प्रेम विवाह को संरक्षण

उच्च न्यायालय ने अपने एक महत्वपूर्ण फैसले मे कहा है कि अन्तर्जातीय प्रेम विवाह पूरी तरह वैद्य और देशहित मे हैं। न्यायालय ने प्रशासन से यह सुनिश्चित करने को कहा है कि ऐसे लोगो पर लगाम लगे जो समाज के कथित सम्मान के नाम पर प्रेमी युगलो को प्रताडित करते हुए उनकी हत्या तक कर देते हैं।

ऐसे मे प्रश्न होता है कि आखिर हम कब धर्म जाति की सकीर्णता से बहार निकलेगे और कब स्वस्थ समाज की नींव रखेगे। प्रेम विवाह देश और समय को जोडने के साथ साथ दहेज सरीखी कई बुराइयो को मिटाने मे सहायक हो रहे हैं। प्रेम परमात्मा का ही एक स्वरूप है उसका सभी को उचित सम्मान करना चाहिए इसलिए जनता के अतिरिक्त स्वय सेवी सस्थाओ तथा गैर सरकारी सगठनो को भी प्रेम विवाह कराने मे उचित सहयोग

— मिलन कुच्छल अयोध्या एन्क्लेव रोहिणी नई दिल्ली

कडी कार्रवाई की जरूरत

खानपान की शुद्धता शारीरिक रूप से स्वस्थ रखेगी वैचारिक शुद्धता मानसिक शान्ति देगी और आचरण की शुद्धता साख और मान–सम्मान बढाएगी राजनेताओ प्रशासनिक प्रतिनिधि और बुद्धिजीवी नागरिको को इन बातो पर ठण्डे दिमाग से विचार करना चाहिए साथ ही हर तरह के प्रदूषण गन्दगी फैलाने वालो के विरुद्ध कडी से कडी कार्रवाई करने की माग करनी चाहिए। यदि ऐसा हो सके तो हमारा भारत बिना किसी विदेशी दबाव को विश्व मे अपना गौरव स्थापित करने मे पुन सक्षम हो सकेगा। प्रत्येक को शुद्धता अपने परिवार से करनी चाहिए।

— नत्थूराम चावला ग्राम बाजेखा सिरसा

मानव जीवन की सफलता के सूत्र

– आचार्य भगवानदेव वेदालकार

१ मानव जीवन का महत्त्व

ससार मे अनेक बहुमूल्य पदार्थ है। उनमे मानव जीवन ही सर्वश्रेष्ठ है। मानव परमात्मा की सर्वोत्तम रचना है। अनेक जन्मो के पश्चात दुर्लभ मनुष्य योनि प्राप्त होती है। तुलसीदास जी ने इसकी श्रेष्ठता व महिमा उन शब्दो मे कही है –

बडे भाग मनुष्य तन पावा।
सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थहि गावा।।

भाग्यशाली को यह जीवन प्राप्त होता है। आत्मज्ञान एव आत्मदर्शन इसी मे सम्भव हे। यही जीवन परमार्थ धर्मार्थ व पुण्य कर्म करने का आधार है। मनुष्य शरीर मे ही भक्ति पूजा प्रार्थना साधना सेवा शुभ कार्य आदि हो सकते है। इसी जन्म की सफलता के द्वारा जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष तक पहुचा जा सकता है। इस जीवन की प्राप्ति एक स्वर्णिम अवसर है ऐसा सुनहरा मौका बार बार नही मिलता। किसी कवि का यह कहना उचित ही है –

रात गवाई सोयकर, दिवस गवायो खाय।
हीरा जन्म अमोल था, कौडी बदले जाय।।

२ आज के मानव की स्थति

आम आदमी दुर्लभ मानव जीवन को खाने पीने सोने और विषय भोगो मे ही गुजार देता है। जीवन को सीधा करते करते ही जीवन खत्म हो जाता है। जीवन की सफलता की तयारी करते करते ही जीवन निकल जाता है। आज के इन्सान ने जीवन का अर्थ समझा ही नही जीवन को सफल बनाया ही नही। फिर भी हम देखते है कि जीवन के दो मुख्य पहलू है – एक सफल जीवन ओर दूसरा निष्फलता का जीवन। कुछ व्यक्ति अपने जीवन मे सफल हो जाते है किन्तु कुछ व्यक्ति अपने मानवोचित कमजोरी के कारण दूसरे की सफलताओ से दु खी होते है। यो तो सुख और दु ख मानव जीवन के साथ साथ जुडे रहते है।

३ सफलता के रहस्य और दु ख का कारण

जहा सफलता है आत्म सन्तोष हे शान्ति है खुशी है प्रसन्नता है सुख समृद्धि है। वहा सुख है आनन्द है। जहा निष्फलता है कमजोरी है ईर्ष्या है द्वेष है असन्तोष है अभाव है अन्याय है अत्याचार है वही परेशानी है दु ख है अशान्ति है। मानव मे कमजोरी है कि वह जीवन की सफलता के लिए उतना श्रम नहीं करता जितना उसे करना चाहिए। वह जहा दूसरे व्यक्ति को सफलता की ओर बढता हुआ देखता है वही वह अपनी अन्दर की छिपी हुई कमजोरी ईर्ष्या और द्वेष के कारण दु खी होने लगता है। वह अपनी मन की सकल्प शक्ति को भुला देता है। जल्दी निराशा के वशीभूत हो जाता है। मनुष्य को आशावादी होना चाहिए। निराशावादी नही। वेद मे कहा है तन्मे मन शिव सकल्पम अस्तु" अर्थात हमारा यह मन उत्तम और श्रेष्ठ विचारो वाला हो। कोई हमसे द्वेष न करे और हम भी किसी से द्वेष न करे।

४ सफलता के सूत्र एव कलायें

इसमे कोई सन्देह नही है कि मानव जीवन विशेष जीवनयापन का एक उत्तम पहलू है। सभी मनुष्य चाहे वह स्त्री हो या पुरुष हो युवा अथवा वृद्ध हो कही न कही रहकर अपनी जीवन यात्रा को चलाने के लिए कुछ न कुछ करते है। किन्तु जीवन को सुखपूर्वक जीने की कला को शायद बहुत कम लोग जानते होगे। हमारी इस वार्ता के माध्यम से जीवन मे निराशा से आशा की ओर असफलता से सफलता की ओर अग्रसर होने किसी भी कार्य को शीघ्र और कुशलता से करने के सरल तरीके एव अनुभूत उपायो पर प्रकाश डाला जा रहा है। जैसे –

(क) आज का कार्य कल पर न छोडे– प्रतिदिन का कार्य प्रतिदिन निपटा देने से ही जीवन मे सफलता मिल सकती हे। जिसने भी आज का काम कल पर टाला समझो वह एक महत्वपूर्ण समय को खो चुका हे। हम किसी चीज का मूल्याकन तब करते हैं जब वह हमारे हाथो से निकल जाती है। माता पिता की कीमत तब पता चलती हे जब वे हमसे विदा हो जाते हैं। ऐसे ही जब जीवन खत्म हो जाता है तब हमे जीवन की कीमत पता चलती है। और जीने का ढग आता है। इसीलिए कहा है कि –

काल करे से आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब।।

अर्थात कल कल की बात मत करो। मनुष्य के कल को कौन जानता है ? कवि के शब्दो मे – **आगाह अपनी मौत से कोई वशर नहीं। सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं।।** अर्थात जीवन की सफलता के लिए समय का पालन करो। जीवन का एक एक क्षण अमूल्य है। दुनिया मे सबसे कीमती चीज समय हे जो समय का पहचानते आर उसकी कीमत करते है वे जीवन मे आगे बढ जाते हे।

(ख) सफल व्यक्तियो का अनुसरण करें – सफलता सिर्फ एक सयोग नही है। एक व्यक्ति एक के बाद एक सफलता हासिल करता चला जाता है जबकि दूसर लोग सिर्फ तैयारियो मे ही लगे रहते है। सफलता और असफलता के विषय पर बहुत खोज हुई है। जब हम सफल व्यक्तियो की जीवनियो पर नजर डालते है तो पता चलता है कि सभी मे निसन्देह मिलते जुलते कुछ खास गुण है। सफलता हमेशा अपने निशान छोड जाती है और अगर हम इन निशानो को पहचान ले और सफल व्यक्तियो के गुणा को अपने जीवन म अपना ले तो हम भी सफल हो जाएगे। फिर हमे दूसरो की सफलता से दु खी होने की आवश्यकता नही पडेगी। असफलता सही मायनो मे कुछ गलतियो को लगातार दोहराने का नतीजा है।

(ग) अपनी कमजोरी को दूर करे – मनुष्य दूसरो की सफलता से दु खी क्यो होता है ? व्यक्ति मे कुछ कमजोरिया बैठ जाती है। जैसे – मिथ्या अहकार स्वाभिमान की कमी सफलता–असफलता का डर विचारपूर्वक भावी योजना का न होना अपने मुख्य लक्ष्यो अथवा उद्देश्यो का न होना समय के अनुसार जिन्दगी मे बदलाव न लाना समय पर कार्य न करना अथवा टालमटोल निकम्मापन उचित श्रम न करना पारिवारिक जिम्मेदारियो का पालन न करना आर्थिक असुरक्षा धन की कमी दिशाहीनता रूपये पैसो के लालच की वजह से दूर की न सोचना सारा बोझ खुद उठाना क्षमता से ज्यादा अपने आपको बाधना वचनबद्धता का न होना उचित अनुभव प्रशिक्षण की कमी का होना दृढता की कमी आत्मविश्वास का न होना इत्यादि कमजोरियो के कारण मनुष्य दूसरो की सफलला से दु खी होता देखा गया हे।

५ जीवन की सफलता के तीन तत्व

यद्यपि जीवन को सफल बनाने के लिए अनेक सहायक तत्वो की आवश्यकता है जैसे शरीर को धारण करने वाला और पालन पोषण करने वाला महत्वपूर्ण तत्व धन है। धन के अभाव मे जीवन की गाडी चल नही सकती। धनोपार्जन मनुष्य का धर्म है। आचार्य चाणक्य के अनुसार **'सुखस्य मूलम् धनम्'** धन को सुख का मूल माना गया है। श्री भतृहरि ने तो यहा तक घोषणा कर दी थी कि धनवान ही कुलीन है धन सम्पन्न व्यक्ति ही पण्डित है विद्वान हे गुणज्ञ और वक्ता है एव रूपवान है महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास ने तो यहा तक कह दिया – पुरुषाऽधनम वध" धन का न होना मनुष्य की मृत्यु है। धन जीवन विकास का साधन है साध्य नही। धन से श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण जो जवीन को धारण करता है वह है – **स्वास्थ्य अर्थात निरोगिता** – जीवन मे स्वास्थ्य के महत्व को कौन नही अनुभव करता। छोटे से छोटा बडे से बडा क्या अमीर क्या गरीब क्या स्वामी क्या सेवक क्या विद्वान क्या मूर्ख को रोग का अहसास होने पर स्वास्थ्य क महत्व की अनुभूति होती ह किन्तु मनुष्य धन ऐश्वय विद्वता एव बल आदि क मिथ्या अभिमान के नश मे स्वास्थ्य की अवहेलना करने म काई कार कसर नही छोडता। आयुर्वेद न महान आचार्य महर्षि चरक का कथन है – **'धर्म अर्थ, काम और मोक्ष इन सबका मूल उत्तम स्वास्थ्य है।"**

अतएव जहा जीवन मे धन का बडा महत्व है वहा स्वास्थ्य के अभाव मे धन का महत्व भी नगण्य सा प्रतीत होने लगता है। जिस प्रकार धन जीवन के विकास को कायम रखने के एव उपभोग के लिए साधन सामग्री जुटाता है। वही जीवन विकास के लिए अधिक महत्वपूर्ण एक और तत्व है।

जिसे आचरण या चरित्र कहा जाता है। इसका सीधा सम्बन्ध मन और आत्मा से है। प्राय देखा गया है कि चरित्र के अभाव मे बडे बडे धनधारी समय आने पर विनाश के गर्त मे गिरकर नरक भोगने लगते हैं। जीवन मे सफलता प्राप्त करने के लिए उत्तम आचरण होना आवश्यक है उत्तम आचरण से मानव दु ख दाई पाप से बचा रहता है और वह जीवन को सफलता की ओर अग्रसर करता है। जीवन मे सफलता के लिए जरूरी है – श्रेष्ठता – सफलता की राह मे कामयाबी हासिल करने के लिए हमे श्रेष्ठता हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। श्रेष्ठ होने की कोशिश करना ही तरक्की है। प्रकाशकवि का यह कथन उचित ही है –

बैठा क्यों हाथ पै हाथ धरे, मुखडे पर छायी क्यों घोर उदासी शक्ति निधान महान है तू, यह जान करा न जहान में हासी।
अन्तर तेरे प्रवाहित है सुख, स्रोत निरन्तर बारह मासी।
व्याकुल तू फिर भी है प्रकाश, अचम्भा ये पानी में मीन है प्यासी।।

– ६४, विकासनगर फैस - ३ निकट बाला जी मन्दिर (हस्तसाल एरिया) नई दिल्ली - ५६

(२८ जून पुण्यतिथि पर विशेष)

नररत्न पं० अमरनाथ जी 'प्रेमी'

– रामचन्द्र शास्त्री

सामाजिक सगठन बलिदान की नीव पर खडे होते हैं। त्याग व तपस्या के बिना कोई भी सस्था या सगठन अत्यधिक उन्नति कर सके यह कदापि सम्भव नही। आर्यसमाज का गौरवशाली सूर्य के समान देदीप्यमान सुनहरा अतीत ऐसे ही तपोमूर्तियो की देन है।

आज मैं ऐसे ही मनीषी की सक्षिप्त जीवन गाथा की चर्चा करके अपनी लेखनी को पवित्र कर रहा हू। ये यशस्वी विभूति है स्व० पण्डित श्री अमरनाथ जी 'प्रेमी'।

पण्डित अमरनाथ जी प्रेमी आर्यसमाज के दिव्य रत्न थे और मनसा वाचा कर्मणा धर्मनिष्ठ कर्त्तव्य परायण आर्यसमाजी थे। उन्होने अपना सर्वस्व आर्यसमाज को समर्पित कर दिया और अन्तिम क्षण तक मा आर्यसमाज की सर्वात्मना सेवा मे समर्पित रहे।

पण्डित जी को ईश्वर ने दिव्य कण्ठ और स्तरीय काव्य लेखन की विलक्षण प्रतिभा प्रदान की जिसके द्वारा वे अकूत धन–सम्पत अर्जित कर सकते थे। पर वे तो तपोमूर्ति थे नररत्न थे और थे आर्यसमाज के सच्चे सपूत। उन्होने अपनी सम्पूर्ण क्षमता को आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित कर दिया।

प्रेमी जी की कवित्व क्षमता को देखते हुए उन्हे भारी सख्या मे निमन्त्रण मिलने लगे। मुम्बई के एक फिल्म निर्देशक ने उन्हे सादर आमन्त्रित किया और कहा आप फिल्म मे तर्जकार का कार्य आरम्भ कर दे – आपको इसके लिए एक बडी राशि समर्पित की जाएगी और आपका जीवन सवर जाएगा। इसके लिए पण्डित जी ने जो उत्तर दिया वह किसी भी सगठन के लिए अनुकरणीय है और विशेषत आर्यसमाज के क्रियाकलापो के इतिहास मे स्वर्णिम अक्षरो मे उल्लेखनीय है। प्रेमी जी ने कहा कि यद्यपि इस कार्य मे मेरा व मेरे परिवार का भविष्य सुधर जाएगा परन्तु मैं भारतीय सस्कृति को अवश्य भूल जाऊगा और वैदिक धर्म का प्रचार भी छूट जाएगा अत मैं ऐसा नहीं कर सकता।

प्रेमी जी! धन्य है आपका यह विलक्षण त्याग! आर्यसमाज की भावी पीढी शताब्दियो तक आप के इस त्याग पूर्ण जीवन से प्रेरणा लेती रहगी। किसी ने ठीक ही कहा है –

उन्हीं की रागिनी पर झूमती है दुनिया,
जो जलती चिता में बैठ के वीणा बजाते हैं।

प्रेमी जी को श्रद्धाजलि समर्पित करते हुए प्रा० राजेन्द्र जी जिज्ञासु लिखते है – प्रेमी जी अपने समय के आर्यसमाज के सबसे लोकप्रिय भजनोपदेशको मे थे। वह बहुत स्वाभिमानी उपदेशक थे परन्तु बडे विनम्र थे। उनका कण्ठ अच्छा ही नही बहुत अच्छा था। उनके व्याख्यान मे निरर्थक चुटकुले भी नही सुने थे। उनमे एक बडा गुण यह भी था कि वे आर्यवीरो और और आर्यकुमारो से बडा स्नेह करते थे और उन्हे बडा प्रोत्साहन देते थे।

प० बुद्धदेव जी विद्यालकार स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी व अन्य अनेक दिग्गज महापुरुषो के साथ प्रचार व सेवा का अवसर उन्हे मिला। उनकी रचनाए आज भी उतनी ही सजीव व लोकप्रिय है। उनका यह गीत आज भी आर्यसमाज का कण्ठहार बना हुआ है –

बीहड वन मे विचर रहा था,
सच्चे शिव का मतवाला।
छोड दिया था टकारा।

प्रेमी जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री राजेश जी अमर प्रेमी भी युवा गायक है। उनकी आर्यसमाज के प्रति निष्ठा प्रशस्य है। भाई राजेश जी व्यापारिक कार्यो मे व्यस्त रहते हुए भी यत्र–तत्र आर्यसमाज के कार्यक्रमो मे सगीत गगा प्रवाहित करते रहते है।

प्रेमी जी वैदिक सस्कारो का मूर्त रूप थे। वे २० वर्ष पक्षाघात से पीडित रहे। जब उन्हे कहा गया कि वे कबूतर का सेवन करेगे तो उन्हे लाभ पहुचेगा। परन्तु उन्होने इसे स्वीकार नहीं किया और २८ जून १९९० को ब्रह्ममुहुर्त मे ओ३म का उच्चारण करते हुए नश्वर शरीर को त्याग दिया।

जो जाति अपने पूर्वजो के आदर्श चरित्र को स्मरण नही करती वह निश्चित रूप से धूल मे मिल जाने योग्य है। इस लेख के कारण इन दिव्य मनीषी का स्मरण कर हम अपने कर्त्तव्य का ही पालन कर रहे है।

– गुरुकुल तिलोरा, अजमेर

जम्मू कश्मीर के ६१ प्रतिशत लोग भारत के साथ रहना चाहते हैं

लदन (विसके)। अधिकतर कश्मीरी कश्मीर–विवाद का अत भारत–पाक युद्ध से नहीं चाहते हैं। उनका मानना है कि आतकी हिंसा का मार्ग छोडकर चुनाव प्रक्रिया के द्वारा ही इस क्षेत्र मे शान्ति स्थापित हो सकती है।

स्वयसेवी मार्केट रिसर्च कम्पनी मोरी इन्टरनेशनल द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण से पाकिस्तान द्वारा कश्मीर के सम्बन्ध मे किए जा रहे दुष्प्रचार को करारा झटका लगा है। राज्य के ६१ फीसदी लोग भारत के साथ बने रहने के पक्ष मे हैं। मात्र ६ फीसदी लोगो ने ही पाकिस्तान की नागरिकता के पक्ष मे अपना समर्थन जताया है। सर्वेक्षण के अनुसार दो तिहाई लोग मानते हैं कि इस क्षेत्र मे पिछले दस वर्षों से जारी पाकिस्तान के हस्तक्षेप की नीति अनुचित है। वे मानते हैं कि विदेशी उग्रवादियो की वजह से ही कश्मीर की सुरक्षा एव विकास प्रभावित हुआ है। यह सब जम्मू एव उसके ग्रामीण क्षेत्रो श्रीनगर और उसके आसपास के ग्रामीण क्षेत्रो मे रहने वाले सभी समुदाय एव लिग के लोगों से पूछे गये सवालो के जवाबो पर आधारित है।

स्थानीय लोगो मे ६५ प्रतिशत लोग यह मानते हैं कि उग्रवादियो की वजह से ही कश्मीर की स्थिति खराब हुई है। ६१ प्रतिशत नागरिक राजनीतिक एव आर्थिक दृष्टि से भारत मे रहना अधिक पसन्द करते हैं। ८० प्रतिशत लोगो का मानना है कि विस्थापित कश्मीरी पण्डितो को उनके घर सुरक्षित वापस होने चाहिए। इससे राज्य मे अमन बहाल करने मे मदद मिलेगी। लोगो का यह भी कहना है कि जम्मू–कश्मीर की विशिष्ट सास्कृतिक पहचान अक्षुण्ण रहनी चाहए। ६३ प्रतिशत लोग मानते हैं कि आर्थिक विकास ही यहा की समस्या का हल है। राज्य मे ८६ प्रतिशत लोग स्वतन्त्र एव निष्पक्ष चुनाव चाहते है जबकि ८१ प्रतिशत लोगो का मानना है कि भारत सरकार को कश्मीर से सीधे बात करना चाहिए। राज्य को स्वायत्तता देने के मुद्दे पर राज्य के लोगो की राय बटी हुई नजर आई। जम्मू एव लेह मे किसी ने भी यह बात स्वीकार नही कि कि सुरक्षाबल मानवाधिकारो का जनन कर रहे हैं। जबकि जम्मू के ६६ प्रतिशत लोगो ने स्वीकार किया है कि आतकवादी व्यापक पैमाने पर हिसक कार्रवाइया कर रहे हैं। यह सर्वेक्षण निष्कर्ष जम्मू कश्मीर की ५५ बस्तियो के ८५० लोगो से बातचीत कर निकाला गया।

स्वास्थ्य चर्चा

वृद्धावस्था और श्वांस रोग

– डॉ० ए० के० सिंह

वृद्धावस्था जीवन की एक वास्तविकता है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन मे यह अवस्था आती है। वृद्धावस्था के कारणो के विषय मे बहुत सी भ्रान्तिया प्रचलित हैं। पुराणो मे इसके अनेक कारण बताए गए हैं परन्तु विज्ञान के अनुसार कोशिकाओ की आयु इसका मुख्य कारण है। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता है कोशिकाओं के कार्य करने एव विभाजन होने की क्षमता कम होती जाती है। मानव शरीर में कोशिका ही विभिन्न अगों की इकाई है। कोशिका के वृद्ध होने से शरीर के अगों की क्षमता भी कम होती रहती है जो वृद्धावस्था की शुरुआत है। कोशिका एव शरीर के यह परिवर्तन विभिन्न कारणों पर निर्भर करते हैं जैसे कि सम्बन्धित वातावरण खान-पान व्यक्तिगत आदते एव अनुवाशिकता। वृद्धावस्था मे सामान्य रूप से शरीर में होने वाले परिवर्तन निम्न प्रकार से है जैसे कि पानी की कमी वसा की वृद्धि ब्लडप्रैशर का बढना गुर्दा फेफड़ा हृदय मस्तिष्क की कार्यक्षमता मे कमी निद्रा एव याददाश्त में कमी होती है।

इसी तरह से श्वसन तन्त्र की कार्यक्षमता भी धीरे-धीरे कम होती रहती है, क्योंकि समय के साथ फेफडे की सकुचन शक्ति तथा प्रतिरक्षा कम होने लगती है, जिसके कारण अनेक बार सक्रमण तथा विभिन्न श्वास रोग होते हैं।

वृद्धावस्था के श्वास रोग

क्रोनिक ब्रोंकाइटिस – इस बीमारी का कारण श्वास नली में सूजन तथा म्यूकस ग्लैण्ड की अधिकता है। श्वास नली मे सूजन का मुख्य कारण धूम्रपान, धूल, धुआ एव नाक और गले में इन्फेक्शन का होना है। अपने देश में गाव में खाना सामान्यतया लकड़ी एव कण्डे से चूल्हे पर बनाया जाता है। जिससे निकलने वाला धुआ महिलाओं में क्रोनिक ब्रोकाइटिस का मुख्य कारण होता है। क्रोनिक ब्रोंकाइटिस के मुख्य लक्षण हैं – बार-बार खासी आना तथा बलगम आना, चलने पर श्वास फूलना, कभी-कभी तो खासी में खून भी आने लगता है। अगर सही समय पर उपचार नहीं किया गया तो बाद मे मरीज मे हार्टफेलीयर हो जाता है। यह सभी लक्षण वैसे तो कभी भी हो सकते हैं लेकिन आमतौर पर मौसम परिवर्तन के समय होते है। यदि बीमारी का इलाज सही समय पर किया जाए तथा होने वाले कारणो से बचा जाए तो फेफडो मे होने वाले स्थानीय नुकसान को बचाया जा सकता है।

सीनाइल एमफायसीमा – उम्र बढने के साथ–साथ फेफडे की सकुचन एव कार्य करने की शक्ति धीरे–धीरे क्षीण होने लगती है। इसी तरह का परिवर्तन सभी मनुष्यो मे होता है। लेकिन जो लोग धूम्रपान करते है या धूम्रपान करने वालो के साथ ही रहते हैं या जहा पर धूल एव धुआ से वातावरण प्रदूषित होता है उसमे यह परिवर्तन कम उम्र मे ही आने लगते हैं। जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य मे कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है तथा चलने पर या सीढिया चढने पर सास फूलने लगती है। इस समस्या से बचने का एक ही तरीका है धूम्रपान न करे पैसिव स्मोकिग एव वायु प्रदूषण से बचें।

फेफड़े का कैंसर – वैसे तो सभी कैंसर वृद्धावस्था में अधिक होते है। फेफडे का कैंसर मुख्यतया ४०-५० वर्ष की आयु के बाद ही पाया जाता है। लेकिन कभी-कभी इससे कम उम्र मे भी हो सकता है। ६० प्रतिशत मरीजो मे फेफडे के कैंसर का मुख्य कारण धूम्रपान ही होता है। धूम्रपान की अवधि एव सख्या का सीधा सम्बन्ध कैंसर से होता है। ज्यादा समय तक अधिक धूम्रपान करने वालो मे कैंसर का खतरा निरन्तर बढता रहता है। फेफडे के कैसर के मुख्य लक्षण हैं खासी बलगम में खून आना भूख कम लगना वजन कम होना छाती मे दर्द आवाज मे परिवर्तन गला तथा चेहरे में सूजन आना चलने पर श्वास फूलना आदि। कभी-कभी इनमे से कोई लक्षण नहीं होता है लेकिन एक्सरे मे कैंसर की गाठ हो सकती है। क्योंकि हमारे देश मे टी०बी० की बीमारी अधिकता में पाई जाती है और कैंसर के लक्षण भी टी०बी० के जैसे ही होते हैं यही कारण है कि फेफडे का कैंसर अन्तिम अवस्था म ही पता चल पाता है।

वृद्धावस्था मे दमा वृद्धावस्था मे सास फूलने के बहुत से कारण होते हैं। इसका एक कारण दमा भी है। सामान्यतया दमा जीवन के शुरूआत मे ही हो जाता है लेकिन कभी–कभी वृद्धावस्था मे प्रारम्भ होता है। दमे की बीमारी मे श्वास नली सिकुड जाती है तथा अन्दर सूजन भी हो जाती है। जिसके कारण मरीज को सास लेने मे कठिनाई होती है। दमें का मुख्य कारण भोजन, धूल धुआ सक्रमण पराग कण से सम्बन्धित एलर्जी होती है। वृद्धावस्था मे दमे के उपचार मे कुछ कठिनाइया आती हैं क्योंकि साथ में और बहुत सी बीमारिया भी होती है जैसे हृदय रोग मोटापा स्लीपएपनिया, मधुमेह हाइपरटेन्शन, पारकिनसन एलाजइमर्ज आदि। इनहेलर्स के आने से काफी हद तक इस समस्या का समाधान हो गया है।

वृद्धावस्था में टी०बी० – टी०बी० की बीमारी माइकोबैक्टीरिया नामक जीवाणु से होती है। हमारे देश मे लगभग सभी लोग इस जीवाणु के सम्पर्क मे जीवन मे कभी न कभी आते हैं लेकिन टी०बी० की बीमारी १०–१२ प्रतिशत लोगो मे ही होती है। बाकी लोगो मे शारीरिक प्रतिरक्षा के कारण बीमारी नहीं होती है। वृद्धावस्था में शारीरिक प्रतिरक्षा कम होने के कारण बीमारी होने की सम्भावना अधिक होती है। यदि साथ में अन्य रोग जैसे मधुमेह, मोटापा धूम्रपान कैंसर है तो रोग होने की सम्भावना अधिक हो जाती है। वृद्धावस्था में फेफडे की टी०बी० के साथ-साथ अन्य अगो मे इन्फेक्शन की सम्भावना अधिक होती है। जैसे – मस्तिष्क आतों की टी०वी०, हड्डी एव गुर्दे की टी०बी०। सामान्यत टी०बी० के मुख्य लक्षण होते हैं – बुखार आना, भूख कम लगना, वजन में कमी, खासी, बलगम खासी में खून आना, लेकिन हमेशा यह सभी लक्षण मौजूद नहीं होते हैं। ऐसे में टी०बी० का पता लगना अत्यन्त कठिन कार्य होता है। मुख्यतया जब साथ में अन्य रोग भी होते हैं।

– श्वास रोग विशेषज्ञ, रीजेन्सी अस्पताल, कानपुर (उ०प्र०)

श्री सुभाष गुप्त स्मृति तीरन्दाजी प्रतियोगिता एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का श्रेष्ठ प्रदर्शन

गुरुकुल प्रभाताश्रम मे 'गुरुकुल धनुर्विद्या सस्थान' के प्रतिष्ठापक श्री सुभाष गुप्त का गतवर्ष जून को असामयिक निधन हो गया था। इस घटना के एक वर्ष पश्चात् उनकी पुण्य तिथि के अवसर पर उनकी स्मृति में 'सुभाष गुप्त स्मृति तीरन्दाजी प्रतियोगिता' का अभूतपूर्व विशाल भव्य आयोजन ४ व ५ जून को कैलाश प्रकाश क्रीडा प्रागण मेरठ में किया गया।

इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु भारत के सभी मूर्धन्य तीरन्दाजों को आमन्त्रित किया गया था। इसमें पुरुष वर्ग तथा महिला वर्ग दोनों के ही तीरन्दाजों ने सहर्ष भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय तृतीय पुरस्कार दोनों वर्गों के लिए निर्धारित थे। प्रथम पुरस्कार ११ हजार द्वितीय ५ हजार तथा तृतीय पुरस्कार ३१ सौ रुपये के थे। पुरुष वर्ग के तीनों पुरस्कार गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी सत्यदेव प्रभात कैलाश ने जीते। पुरस्कार वितरण उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री के करकमलों द्वारा ६ जून को साय ५ बजे किया गया। इस अवसर पर 'भारतीय तीरन्दाजी सघ' के अध्यक्ष श्री विजय कुमार मल्होत्रा एव 'उत्तर प्रदेश तीन्दाजी सघ के अध्यक्ष श्री कलराज मिश्र उपस्थित थे।

श्री महामहिम राज्यपाल ने भारत में तीरन्दाजी की प्राचीनता पर प्रकाश डालते हुए भारत में उत्तर प्रदेश को तीरन्दाजी के क्षेत्र में शीर्ष स्थान पर पहुचाने के लिए सुभाष गुप्त के अमूल्य देन की प्रशसा की एव अनेक अन्तर्राष्ट्रीय क्रीड़कों के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका बतलायी और आशा व्यक्त की कि भविष्य में ये खिलाड़ी ओलम्पिक में भारत को स्वर्ण पदक दिलाकर श्री सुभाष गुप्त को सच्ची श्रद्धाजलि समर्पित करेंगें।

क्या शहीदे आजम सरदार भगतसिंह की कोई प्रेमिका थी ?

– राममेहर एडवोकेट

सुना है आजकल शहीद-ए आजम सरदार भगतसिह पर अलग-अलग शीर्षको से लगभग ६ फिल्में बन रही है जैसे २३ मार्च १६३१ शहीद दी लीजेण्ड आफ भगतसिह शहीद–ए–आजम भगतसिह शहीद भगतसिह तथा शहीद। मुझे भगतसिह के जीवन के बारे में बहुत ही कम जानकारी है किन्तु है ठोस। उसी के आधार पर कुछ हिचकते व झिझकते हुए इतने बडे फिल्म निर्माताओं से कुछ कहने का साहस कर रहा हू। जिन्होने भगतसिह के जीवन का पता नहीं कितनी बार बारीकियो से अध्ययन किया होगा। ठीक से तो याद नहीं किन्तु बात निश्चित रूप से १६५६ १६६० या १६६१ की होगी। उन दिनो मैं लॉ कॉलेज जालन्धर में पढता था तब भगतसिह की माता स्वर्गीय विद्यावती जी जालन्धर से कुछ दूरी पर खटकड कला गाव में रहती थी। मैंने पत्र लिखकर माता जी से मिलने की स्वीकृति चाही जो मुझे अतिशीघ्र मिल गई और मैं उनसे मिलने के लिए उनके घर गया। मैंने उनसे भगतसिह व उसके परिवार के बारे में जी खोलकर खुले समय मे जानकारिया प्राप्त की। माता जी के अनुसार ये उनके जीवन का सबसे कष्ट का समय था। कुछ बातो से वह बहुत दु खी थी। उन बातो को यहा लिखकर मैं नये विवादो को जन्म देना नहीं चाहता तथा अपने लिए भी नई समस्याओ को आमन्त्रित नहीं करना चाहता तथा कुछ जानकारियो की यादे भी धूमिल पड चुकी है किन्तु एक बात जिसको लिखे बिना ठीक नहीं रहेगा जो अत्यन्त आवश्यक है और जिस कारण मै लेख लिख रहा हू वो मैं आवश्य लिखना चाहूगा मुझे नहीं पता इसकी प्रतिक्रिया मीठी होगी या कडवी। उन दिनो जालन्धर के एक सिनेमा हाल मे शहीद भगतसिह के जीवन पर एक फिल्म चली थी। नाम याद नहीं, जिसको माता जी ने स्वय देखा था। उस फिल्म के कुछ दृश्यों के बारे मे उनको कडी आपत्तिया थीं। बाकी तो याद नहीं किन्तु एक बात जो उन्होंने कही निश्चित रूप से याद है। उन्होने बताया था कि उस फिल्म मे किसी लडकी को भगतसिह की प्रेमिका दिखाया गया और भगतसिह के साथ 'कुछ बात ठीक से याद नहीं सगाई सम्बन्धी भी दिखाई गई थी। माता जी ने बताया कि रिश्ते सम्बन्धी कोई बात भी कहीं से थोडी आगे नहीं चली थी। हा जैसे गाव मे बच्चो के लिए रिश्ते आते हैं वैसे ही भगतसिह के लिए भी आते थे। किन्तु जब भगतसिह ने रिश्ते के बारे में परिवार के सामने कडे शब्दो में दो टूक इन्कार कर रखा था तो आगे बात चलाने की कोई नौबत ही नहीं आयी। ये बात मैं माता जी की जानकारी के आधार पर लिख रहा हू। यदि उनकी जानकारी के बाहर कोई बात हो तो कुछ कह नहीं सकता हू। साडर्स वध के पश्चात् मौत की दाढ से कभी कोई निकल आए किन्तु भगतसिह का लाहौर से निकलना अति कठिन था। किन्तु एक नकली नाम से फर्स्ट क्लास का छोटा डिब्बा 'कूपे' लाहौर से कलकत्ता के लिए रिजर्व था। तारे आसमान मे हल्के–हल्के झमझमा रहे थे। सुबह पाच बजे की बात है कि नौजवान भगतसिह सिर पर तिरछा फैल्ट लगाए ऊचे उठे कालर का ओवर कोट पहने बायी तरफ श्री भगवतीचरण के बेटे 'शची जो आजकल गाजियाबाद मे रह रहे है को इस तरह गोद मे सम्भाले कि उधर से चेहरा ढक जाए दाया हाथ ओवर कोट की जेब मे डालकर पिस्तौल के घोडे पर उगली रखकर और अपनी बायीं तरफ श्री भगवतीचरण की धर्मपत्नी दुर्गा भाभी को लिए शान्त धीरे गति से प्लेटफार्म पार कर अपने रिजर्व डिब्बे में आ बैठे। इन दिनो दुर्गा भाभी से मै तीन बार आचार्य सुरेश जी श्री सुखदेव जी शास्त्री के साथ गाजियाबाद मे मिला और भगतसिह के बारे मे बहुत जानकारिया प्राप्त की। उन्होंने लाहौर से गाडी तक पहुचने लाहौर से कलकत्ता पहुचने तथा वहा पर निवास सेठ छज्जुराम की कोठी के बारे मे जो जानकारिया दी वह किसी पुस्तक मे नहीं मिलती किन्तु आज का ये विषय नहीं है। मैं तो इस प्रकरण मे जो बताना चाहता हू वह यह है कि दुर्गा भाभी से मैंने विशेष तौर पर पूछा था कि क्या भगतसिह की कोई प्रेमिका थी ? उन्होंने जरा गर्म होकर कहा वकील साहब क्या पूछ रहे हो ? उन दिनों ये बाते तो दिमाग मे नहीं आ सकती थीं देश को स्वतन्त्र कराना ही हमारा उद्देश्य था। भगतसिह के जीवन की जानकारी जितनी आर्यसमाज से मिल सकती है उतनी और कही से शायद नहीं मिल सकती है। इस देश मे और विदेश मे आर्यसमाज का कोई भी एक घर या कोई भी ऐसी सस्था नहीं होगी जिसमे भगतसिह का चित्र न हो। भगतसिह के दादा जी सरदार अर्जुनसिह ने ऋषि दयानन्द के दर्शन किए तो मुग्ध हो गए और उनका भाषण सुना तो नवजागरण की सामाजिक सेना मे भर्ती होकर आर्यसमाजी बन गए। वे उन थोडे से लोगो मे से थे जिन्हे स्वय ऋषि दयानन्द ने दीक्षा दी थी। यज्ञोपवीत अपने हाथ से पहनाया था वह सरदार अर्जुनसिह का सास्कृतिक पुनर्जन्म था। मास खाना उन्होने छोड दिया शराब की बोतले नाली में फेक दी हवनकुण्ड उनका साथी हो गया और सन्ध्या प्रार्थना सहचरी।

उनका जीवन पूरी तरह बदल गया था और यह एक क्रान्तिकारी छलाग थी। वे पहले जाट सिख थे जिन्होंने ऋषि दयानन्द के हाथ से यज्ञोपवीत लिया था बडे और मझले बेटे किशनसिह अजीतसिह तथा अपने पोते भगतसिह को डी०ए०वी० सस्थाओं में शिक्षा दिलवाई। स्वय भी आर्यसमाज के उत्सवों मे भाषण देने जाते थे। वे अपने क्षेत्र के प्रमुख आर्यसमाजी नेताओं में गिने जाते थे। भगतसिह व उनका परिवार आर्यसमाजी था।

भगतसिह के बारे मे हरयाणा मे आर्यसमाज बाबरा मोहल्ला, रोहतक खाण्डा खेडी में उन्हीं के सिन्धु गोत्र के चौ० शीशराम जी आर्यसमाजी के पास जाट स्कूल रोहतक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा अन्य स्थानों पर आने की जानकारी मिलती है। फिल्म निर्माताओ को किसी ऐसे स्थान पर भी शूटिग करनी चाहिए। वे गुरुकुल कागडी मे आचार्य अभयदेव से योग सीखने भी गए थे।

शहीद भगतसिह ने कलकत्ता के कार्नवालिस स्ट्रीट आर्यसमाज मन्दिर मे कुछ समय तक निवास किया। वे वहा क्रान्ति का कार्य करते थे। जब भगतसिह वहा से आए तब तुलसीराम चपरासी को अपनी थाली लोटा देकर आए और कहा कि कोई आवे तो उसको इनमे भोजन करना देना और कहना कि भगतसिह के थाली और लोटे मे भोजन कर रहे हो। देश का ध्यान रखना। शहीद भगतसिह का यज्ञोपवीत सस्कार आर्यसमाज के महोपदेशक शास्त्रार्थ महारथी प० लोकनाथ तर्कवाचस्पति द्वारा हुआ था।

फिल्म निर्माताओं से प्रार्थना है कि वे ऐसी फिल्म बनाए जिससे ये देश जाग उठे और आर्यसमाज का प्रभाव जो इस परिवार पर था वह भी दिखाई दे।

इसी योद्धा वश की एक बेटी विरेन्द्र सिन्धु ने 'युगदृष्टा भगतसिह और उनके मृत्युजय पुरखे जो किताब लिखी उससे भी जानकारी लें और यदि सौभाग्य से विरेन्द्र सिन्धु जीवित हों तो उनसे भी जानकारी प्राप्त करे तथा हरयाणा के भजनोपदेशको ने विशेषकर पृथ्वीसिह बेधडक ने भगतसिह की कथा पर भजन बनाए उनमे से भी एक भजन अपनी फिल्म मे अवश्य रखे। स्वामी ओमानन्द सरस्वती डॉ० भवानीलाल भारतीय तथा राजेन्द्र जिज्ञासु जी से भगतसिह के जीवन के बारे मे जानकारिया प्राप्त करनी चाहिए। आर्यसमाज को भी चाहिए कि वे भी एक कमेटी बनाए और यदि इन फिल्मो में कोई गलत तथ्य हो तो उसका विरोध करे।

– रोहतक

नवीन आर्यसमाज की स्थापना तथा वार्षिकोत्सव

चन्दन पार्क (जीवन पार्क) में नवीन आर्यसमाज की स्थापना और प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर १० जून २००२ को माननीय श्री वैद्य इन्द्रदेव जी महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सयोजकत्व मे उत्सव का कार्यक्रम गायत्री महायज्ञ से प्रारम्भ हुआ। इसी अवसर पर गायत्री महायज्ञ के पश्चात् माननीय श्री आचार्य यशपाल जी शास्त्री महामन्त्री हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा ने ध्वजारोहण किया ध्वज गान के पश्चात् शान्ति पाठ हुआ।

इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त यज्ञ भजन तथा प्रवचन होते रहे।

अन्तिम दिन १६ जून २००२ को महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव जी की अध्यक्षता में सम्पूर्ण उत्सव का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर डॉ० रविकान्त मन्त्री आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली ने विद्वानो को दक्षिणा प्रदान कर सम्मान किया। उपस्थित विधायक श्री लाला जयभगवान अग्रवाल ने आर्यसमाज की मान्यताओ को सर्वोत्तम बताया।

तत्पश्चात् ऋषि लगर मे सभी उपस्थित व्यक्तियो ने सम्मिलित रूप से भोजन किया।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 20 21/06/2002 दिनाक १७ जून से २३ जून २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल 11024/2002 20 21/06/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

आर्य नेता श्री होतूराम आर्य दिवगत

आर्य नेता श्री होतूराम आर्य लम्बरदार निवासी पिनगवा (हरयाणा) का ८२ वर्ष की दीर्घायु म दिनाक १५ ५ २००२ को स्वर्गवास हो गया जिनकी रस्म पगडी मे दिनाक २–६ २००२ को अनक आर्य नेता एव साधु सन्यासी सम्मिलित हुए तथा श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्री होतूराम का जन्म डेरा गाजीखा पूर्व पजाब मे हुआ था। उनके माता पिता दानो ही आर्य थे इसलिए श्री होतूराम आर्य ने मेवात राजस्थान के गावो मे आर्यसमाजो की स्थापना करके वैदिक धर्म का पालन किया। वे अतिथि सत्कार करना अपना परम कर्त्तव्य समझते थे।

श्री आर्य ग्राम पिनगवा मेवात के दो बार सरपच बने तथा एक बार खण्ड पूनाहाना गुडगाव के उपाध्यक्ष रहे तथा ईमानदारी से जनता की सेवा की।

श्री होतूराम जी के चार सुपुत्र श्री सुरेश कुमार आर्य श्री सत्यपाल आय श्री रामपाल आर्य श्री प्रदीप कुमार आर्य है। उनकी तीन सुपुत्रिया श्रीमती सावित्री देवी आर्या श्री सरला देवी आर्या व श्रीमती सरोज कुमारी आर्या हैं जो रात दिन मानवता की सेवा कर रहे हैं। श्री रामपाल आर्य इस समय आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात के महामन्त्री हैं।

श्री होतूराम आर्य के निधन से आर्यसामज की भारी क्षति हुई है। परमपिता परमात्मा उन्हे सदगति प्रदान करे।

प० नन्दलाल निर्भय
आर्यसमाज बहीन फरीदाबाद

नैतिक ¯ शिविर एव मन्त्रपाठ प्रति

२१६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

बच्चो को होन

चरित्रवान तथा वैदिक सि...

प्रशिक्षण देने हेतु आर्यसमाज बाहरी रिग रोड विकासपुरी नई दिल्ली के तत्वावधान म ७ वर्ष से १६ वर्ष की आयु के छात्रो के लिए नैतिक शिक्षा शिविर मन्त्रपाठ चित्रकला भाषण प्रतियोगिता का भव्य आयोजन दिनाक १६–६ २००२ से २३–६–२००२ तक किया जा रहा है।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे १६ जून को प्रात राष्ट्रकल्याण यज्ञ एव श्री विजयगुप्त जी द्वारा बच्चो के चहुमुखी विकास के लिए प्रेरक प्रवचन हागा। २३ जून को समापन समारोह एव पुरस्कार वितरण होगा। विभिन्न प्रतियोगिताओ मे प्रथम द्वितीय एव तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रो को सुन्दर प्रमाण पत्र एव पुरस्कार दिया जाएगा। कार्यक्रम के अन्त मे ऋषिलगर का आयोजन किया गया है। समाज प्रधान डा० पुष्पलताजी के सानिध्य एव श्रीमती सरोजिनी सचदेव श्रीमती जनक चौधरी के सयोजकत्व मे यह कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

...ी आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज किशन गज (मिल एरिया) दिल्ली

प्रधान	–	श्री ओमप्रकाश नरूला
उपप्रधान	–	श्री चमनलाल मदान
उपप्रधान	–	श्री सतपाल अग्रवाल
उपप्रधाना	–	श्रीमती शान्ति शर्मा
मन्त्री	–	श्री धर्मवीर सिह
प्रचार मन्त्री	–	हरिकृष्ण तनेजा
कोषाध्यक्ष	–	प्रो० रामचन्द्र आमेटा

आर्यसमाज मन्दिर मस्जिद मोठ नई दिल्ली ४६

प्रधान	–	श्री पवन कुमार भारत
मन्त्री	–	श्री चतरसिह
कोषाध्यक्ष	–	श्री वीरपाल सिह

अपना समस्त कार्य हिन्दी में करें।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२
(दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक २८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार २४ जून से ३० जून २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

नई शराब नीति के विरुद्ध प्रचण्ड प्रदर्शन

दिल्ली की काग्रेस सरकार द्वारा घोषित नई शराब नीति मे शराब की बिक्री को प्रोत्साहन देते हुए कई नई योजनाए प्रारम्भ करने की घोषणा से समूचे आर्यजगत मे रोष व्याप्त हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने तत्काल इस समस्या पर दिल्ली सभा तथा सार्वदेशिक सभा के अन्य अधिकारियो से विचार विमर्श करके २३ जून साय ४ बजे नई शराब नीति के विरोध मे व्यापक प्रदर्शन करने का निर्णय लिया।

२३ जून को प्रात ११ बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक प्रारम्भ हुई जिसमे विभिन्न प्रान्तो से पधारे आर्य नेताओ को भी इस प्रदर्शन मे भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया।

इससे पूर्व २१ जून को सायकाल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मण्डल दिल्ली राज्य की मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित से मिला और उन्हे सार्वदेशिक सभा की तरफ से एक विस्तृत ज्ञापन भी दिया। इस प्रतिनिधि मण्डल मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा दिल्ली सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव श्री लक्ष्मीचन्द श्री राजेन्द्र दुर्गा श्री पतराम त्यागी श्री रवि बहल आदि शामिल थे। इस ज्ञापन पत्र मे उनसे इस शराब नीति को पूर्णत वापस लेने की माग की गई। इस बैठक मे काग्रेस के दो प्रमुख विधायक भी उपस्थित थे जो व्यक्तिश शराब की इस नई नीति के विरोधी माने जाते हैं। पूर्वमन्त्री डॉ० योगानन्द शास्त्री जो विशुद्ध आर्य समाजी पृष्ठभूमि के हैं तथा मुख्यमन्त्री के ससदीय सचिव और सनातन धर्मसभा पजाब के प्रमुख नेता श्री रमाकान्त गोस्वामी भी उपस्थित थे।

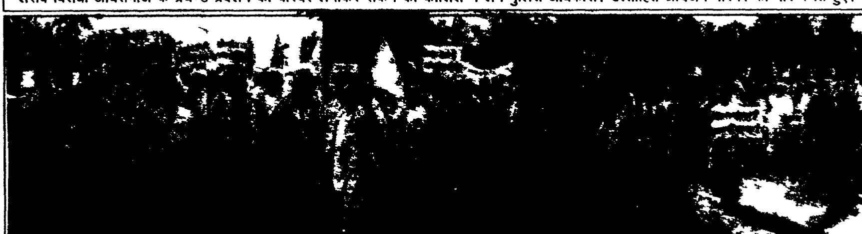
इस बैठक मे मुख्यमन्त्री ने कई बिन्दुओ पर विस्तृत चर्चा आर्यनेताओ से की और कहा कि वे शीघ्र ही अपनी कैबिनेट बैठक मे इस पर पुन विचार विमर्श करवाएगी।

अगले दिन २२ जून २००२ को साय काल मुख्य मन्त्री के हस्ताक्षरो से युक्त एक पत्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी को भेजा गया जिसमे उन्होने कहा कि वे नई आबकारी नीति पर सहानुभूति पूर्वक गम्भीरता से विचार कर रही है।

– शेष पृष्ठ ५ पर



शराब विरोधी आर्यसमाज के प्रचण्ड प्रदर्शन को बैरियर लगाकर रोकने की कोशिश मे लगे पुलिस अधिकारी। उत्साहित आर्यजन बैरियर को पार करते हुए।



आर्यजनता का नेतृत्व करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य। साथ मे बाए से श्री वेदव्रत शर्मा आर्यतपस्वी सुखदेव श्री विमल वधावन श्री लक्ष्मी नारायण भार्गव श्री वाचोनिधि आर्य आदि। प्रचण्ड प्रदर्शन मे अग्रसर होती आर्य महिलाए।

नई आबकारी (शराब) नीति के विरुद्ध मुख्यमन्त्री को दिया गया ज्ञापन-पत्र

माननीया श्रीमती शीला दीक्षित जी
मुख्यमन्त्री राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार

सादर नमस्ते।

यह ज्ञापन-पत्र आर्यसमाजो की सर्वोच्च विश्व स्तरीय सस्था **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा** की ओर से आपकी सेवा मे इस आशा और विश्वास के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है कि आप अपने नेतृत्व मे चल रही दिल्ली राज्य की सरकार की ओर से शराब बिक्री मे वृद्धि के लिए घोषित नई शराब नीति को लागू न करने की घोषणा करके भारत की समूची जनता के मान-सम्मान की पात्र बनेगी।

नई आबकारी नीति –

दिल्ली की समूची धर्मप्रेमी जनता को एक महिला मुख्यमन्त्री के नेतृत्व मे चल रही सरकार द्वारा घोषित नीति के कुछ विशेष पहलुओ को सुनकर रोष व्याप्त हुआ है। इस नई आबकारी नीति मे निम्न मुख्य बिन्दु विशेषरूप से ये धर्मप्रेमी जनता के विरोध का कारण हैं–

१ **प्रत्येक डिपार्टमेण्टल स्टोर पर भी मिल सकेगी शराब,**

२ **टेलीफोन से आर्डर पर भी उपलब्ध हो सकेगी शराब,**

३ **बेकट हाल तथा फार्म-हाउस मे शराब पिलाने की खुली छूट,**

४ **शराब की दुकानो मे एक सौ प्रतिशत वृद्धि,**

५ **शराब की दुकान खोलने हेतु क्षेत्रीय विधायक की अनुमति का नियम समाप्त,**

६ **अधिक शराब खरीदने पर आकर्षक उपहार।**

संवेधानिक स्थिति -

भारतीय सविधान के अनुच्छेद ४७ का उल्लेख इस प्रकार है –

"पोषाहार स्तर और जीवन स्तर को ऊचा करने तथा लोक स्वास्थ्य का सुधार करने का राज्य का कर्त्तव्य – राज्य, अपने लोगों के पोषाहार, स्तर और जीवन स्तर को ऊचा करने तथा लोक स्वास्थ्य के सुधार को अपने प्राथमिक कर्त्तव्यों में मानेगा। और राज्य, विशिष्टतया, मादक पेयों, और स्वास्थ्य के लिए हानिकर औषधियों के, औषधीय प्रयोजनों से भिन्न, उपभोग का प्रतिषेध करने का प्रयास करेगा।"

इस प्रावधान का **राज्य के नीति निर्देशक तत्वों** मे उल्लेख किया गया है। राज्य के नीति निर्देशक तत्वो के पीछे सविधान निर्माताओ की भावना यह थी कि प्रत्येक राज्य अपनी नीतियो का निर्माण करते समय इन निर्देशो का विशेष रूप से ध्यान रखे। इन्हे समाज मे सुख समृद्धि और शान्ति की स्थापना के लिए परमावश्यक समझा गया था।

नई शराब नीति के दुष्परिणाम –

भारतीय सविधान के तहत व्यक्त किए गए उपरोक्त नीति निर्देशक तत्वो की अवहेलना करके आपकी सरकार ने जिस प्रकार यह नई शराब नीति घोषित की है उसके निम्न दुष्परिणाम समाज के सामने आएगे –

१ **शराब की बिक्री को बढाने से भारत की मूल सभ्यता और सस्कृति को विनाश की ओर ले जाना साबित होगा। एक महिला मुख्यमन्त्री होने के नाते इस विनाशलीला की आप मुखिया न बनें।**

२ **शराब की बिक्री बढने से समाज में अपराध की दर बढेगी और सामाजिक अशान्ति का माहौल उत्पन्न होगा। इसकी जिम्मेवारी एक महिला मुख्यमन्त्री की हो, ऐसा भारतीय इतिहास में शोभाजनक नहीं होगा।**

३ **शराब की बिक्री बढने से केवल छोटे-मोटे अपराध ही नहीं, बल्कि हत्याओं का प्रतिशत भी बढेगा। महिलाओं के सुहाग उजडने का महापाप एक महिला मुख्यमन्त्री को अपने सिर पर नहीं लेना चाहिए।**

४ **शराब की बिक्री बढने से और विशेष रूप से डिपार्टमेण्टल दुकानों पर उपलब्ध होने से इसका प्रयोग कम उम्र के नवयुवकों में भी सुगम होगा। परिणामत शिक्षा के स्तर में भारी गिरावट का श्रेय माता के तुल्य महिला मुख्यमन्त्री के रूप में आपको नहीं लेना चाहिए।**

५ **जब व्यक्ति शराब का प्रयोग अधिक करने लगता है तो परस्त्रियों के साथ योनाचार तथा अपनी स्त्रियों पर अत्याचार के मामलों में भी अनुपातिक वृद्धि होती है, जितनी राशि शराब की बिक्री से प्राप्त होगी, उससे अधिक राशि का व्यय सरकार को प्रशासन पुलिस, न्याय व्यवस्था और चिकित्सा पर करना पडेगा। क्या सरकार के इन तथाकथित विशेषज्ञों ने यह सारे आकलन सामूहिक रूप में स्वय विचार कर किए हैं, या उनसे आपको अवगत कराया है ?**

६ **शराब की बिक्री बढाने के पीछे जो लोग राजस्व में वृद्धि के तथ्य और आकडे बनाकर प्रस्तुत कर रहे हैं, वे भविष्य में इसी प्रकार के नए तथ्य और आकडे प्रस्तुत करते हुए सैक्स व्यापार (व्यभिचार) को अधिकृत करने के प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे, तो ऐसी प्रवृत्तियों को किस प्रकार रोका जाएगा ?**

७ **आप मुख्यमन्त्री के रूप में सरकार चलाने के अतिरिक्त, उस अखिल भारतीय काग्रेस की भी राष्ट्रीय नेता हैं, जिसका नेतृत्व वर्तमान समय में श्रीमती सोनिया गाधी कर रही हैं, जिनकी महात्मा गाधी के सिद्धान्तों में पूर्ण आस्था एव अटूट विश्वास है। क्या आपकी काग्रेस पार्टी एक राजनीतिक दल के रूप में आपके इस प्रकार शराब बिक्री में वृद्धि के प्रयासों को मान्यता देगी? क्या इस प्रकार शराब बिक्री में वृद्धि और अन्य सुविधाओं का आश्वासन आपकी पार्टी ने कभी भी अपने चुनाव घोषणा-पत्रों के द्वारा प्रचार मे अपने मतदाताओं को दिया है ?**

८ **शराब की इस प्रकार खुली बिक्री और वृद्धि की बात की नीति को लेकर व्यापक हिन्दू जनता ही नहीं अपितु जैन, बौद्ध, सिख और यहा तक कि मुसलमानों में भी रोष व्याप्त है। क्या आपकी सरकार के नीतिकारो ने प्रजातन्त्र के मुख्य आधार वोट के आकडो को भी आपके समक्ष प्रस्तुत किया है ?**

निष्कर्ष एव निवेदन –

आपकी सरकार द्वारा घोषित नई शराब नीति का निष्कर्ष दिल्ली की समूची धर्मप्रेमी जनता ने उपरोक्त आपत्तियो और सुझावो के रूप मे व्यक्त करते हुए यह सकल्प किया है कि इस शराब नीति के विरोध मे कैसा भी बलिदान क्यो न देना पडे परन्तु भारत के भविष्य को शराब की आग मे जलने नहीं दिया जा सकता। समूची धर्मप्रेमी जनता इस बात पर अडिग है कि यदि सरकार इस शराब नीति को तत्काल वापस नहीं लेती तो दिल्ली मे इसके विरुद्ध व्यापक एव प्रचण्ड आन्दोलन प्रारम्भ किया जाएगा। उस अवस्था मे समाज की रचनात्मक शक्ति को इस प्रकार के आन्दोलन मे झोकने की जिम्मेवारी आप पर ही होगी। जिसका परिणाम अनचाहे आपकी राजनीतिक पार्टी **अखिल भारतीय काग्रेस** को भी भुगतना पडेगा।

उपरोक्त के सन्दर्भ मे आपसे समूचा आर्य जगत साग्रह यह प्रार्थना करता है कि अपनी सरकार द्वारा घोषित नई शराब नीति को तुरन्त रद्द करके सारे दिल्लीवासियों के शुभाशीर्वाद की पात्र बने।

निवेदक

कै० देवरत्न आर्य	**विमल वधावन**	**जगदीश आर्य**
प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

वेदव्रत शर्मा	**वैद्य इन्द्रदेव**
प्रधान	महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

बोध कथा

भारतीय चित्रकला की देन

बौद्ध और विक्रम काल मे बने भारतीय स्थापत्य के अवशेषों को देखकर आधुनिक कला विशेषज्ञो की सम्मति मे उनकी सबसे बडी विशेषता थी उसकी आध्यात्मिक भावना। भारतीय चित्रकला के विशेष हेवल ने लिखा है – 'यूरोप की चित्रकला के पख कट गए है वह केवल भौतिक सौन्दर्य पहचानती है जबकि भारतीय कला आकाश मे उडती प्रतीत होती है क्योकि वह पृथ्वी पर स्वर्ग का सौन्दर्य लाने का प्रयत्न करती है।

सम्भवत इसी कारण बौद्ध जैन और पौराणिक काल के भारतीय चित्रो मे सभी मे शान्ति और गम्भीरता पाते हैं। चित्रकार और मूर्त्तिकार चेहरे और शरीर के सयोजन मे शारीरिक सौन्दर्य की अपेक्षा मन के भावो की अभिव्यक्ति पर अधिक बल देते है। देवी-देवताओ महात्मा बुद्ध और दूसरे महामानवो – जैन तीर्थंककरो की मूर्ति बाह्य सौन्दर्य की अपेक्षा आध्यात्मिक और भावनात्मक भावना का सन्देश देती दिखाई देती है।

– नरेन्द्र

सर्वश्रेष्ठ बनो
मातृभूमि के लिए बलि दे

समाना हृदयानि व । ऋ० १० १५१–४
तुम्हारे हृदय एक हो।
समानीव आकूति । ऋ० १० १५१ ४
तुम्हारे सकल्प एक हो।
त्वमेकवृषो भव। *अथर्व० ६ ८६–१*
तुम सर्वश्रेष्ठ बनो।
वय तुभ्य बलिहृता स्याम। *अथर्व० १२ १–६२*
हे मातृभूमि हम तुम्हारे लिए बलि दे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

सच्ची समानता : समान अवसरों से ही समुन्नति

इन दिनो भारत की राजधानी दिल्ली मे भी बिजली पानी अस्पताल की ही नहीं प्रत्युत फायर ब्रिगेड स्कूलो तक के सन्दर्भ मे असमानताए विद्यमान है। अगर पानी का सवाल ध्यान से देखा जाए तो एक ओर किन्ही विशिष्ट क्षेत्रो मे पानी के व्यर्थ बहाए जाने के विवरण उपलब्ध है तो दूसरी आर कुछ क्षेत्रा मे जरूरत का पानी भी उपलब्ध नही हाता। इस असमानता का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है कि प्रशासन इन विषमताओ को निरन्तर कायम रख रहा हे प्रत्युत वह नियमो कानूनो का उल्लघन होने पर सख्त कार्यवाही करन की चेतावनी भी देता है। यह भी चिन्ता की बात है कि असमानता और विषमता की यह स्थिति दश व्यापिनी ही नही विश्वव्यापिनी है। दिल्ली के कुछ क्षेत्रो की सुविधा के लिए कई नियम और मान्यताए बनाए गए है और शेष दिल्ली मे उन्हे मर्यादित किया गया। इसी तरह दिल्ली भर के वाहनो पर सी०एन०जी० कानून अनिवार्य किया गया। यह समझने की चेष्टा नही की गई कि प्रदूषण की समस्या कहा ओर कितनी है। यमुना पार क अधिकाश प्रदूषण का सबसे बडा स्रोत्र है वहा जनसख्या और वाहनो का भारी दबाव और तग सडके हे वहा इस बात का अन्तर नही पडता कि वाहनो मे कौन सा इन्धन प्रयोग किया जाता है। अतिक्रमण के सम्बन्ध मे रोचक तत्व यह ह कि राजधानी के कुछ क्षेत्र अतिक्रमण से पूरी तरह मुक्त क्षेत्रा मे है जबकि अतिक्रमण के अतिरिक्त वहा दूसरा कुछ है ही नहीं। यह भी तथ्य हे कि नई दिल्ली मे पिछले एक दशक मे जनसख्या की दर नाममात्र की हुई जबकि बाकी दिल्ली और शेष देश मे जनसख्या सामान्य तौर पर बढी। नई दिल्ली मे पानी बिजली का व्यर्थ प्रयोग जरूरत समझकर उपलब्ध कराया गया। इस तरह राजधानी के ही कई क्षेत्रो मे ससाधना का खुला दुरूप्रयोग होता है तो कुछ क्षेत्र इन ससाधनो क लिए तरसते है। राजधानी और देश मे समस्याए अनेक है आज जरूरत इस बात की है इन समस्याओ का ठीक तरह से समझा जाए और व्यवस्थित समाधान के लिए व्यवस्थित याजना बने और उसके कार्यान्वयन के लिए न्यायपूर्ण पक्षपातहीन व्यवस्था कार्यान्वित की जाए।

स्वाधीनता प्राप्ति के ५५वे वर्ष मे भारतीय राष्ट्र ने अनेक क्षेत्रो मे व्यवस्थित समुन्नति की है। शिक्षा समाज सुधारक के क्षेत्रो म भी समुचित समुन्नति हुई है आणविक ओर नूतन वैज्ञानिक उपलब्धियो मे भी देश ने सम्पूर्ण विश्व मे अपनी एक मर्यादा रखी हे इसी के साथ अब वह समय आ गया हे जब शिक्षा सामाजिक एव नागरिक क्षेत्रो म किसी भी प्रकार की विषमता या भेदभाव की स्थिति का तुरन्त उन्मूलन होना चाहिए। बिजली पानी चिकित्सा शिक्षा आदि अनेक क्षेत्रो मे राष्ट्र भर मे प्रत्येक को उन्नति का समान अवसर मिलना ही चाहिए। साथ ही केवल अवसरो के उपलब्धि क कानून की जगह उनका देशव्यापी समान प्रयोग होना चाहिए। यह चिन्ता की बात है कि नई सहस्राब्दी मे स्वाधीनता प्राप्ति के ५५वे वष म दश क कुछ भूभाग या राजधानी क कुछ क्षेत्र इस तरह की विषमता के शिकार बन रहे है। इस समस्या के समुचित समाधान क लिए जहा सामान्य जनता का जागरूक होना चाहिए वहा उसके निर्वाचित जनप्रतिनिधियो और शासन का भी इस प्रकार की विषमता और कानून के अव्यवस्थित प्रयोग को तुरन्त रोकना चाहिए। स्वाधीनता प्राप्ति के ५५वे वर्ष मे इस प्रकार के भेदभाव और विषमता की स्थिति जागरूक जन प्रतिनिधियो ओर सतर्क प्रेस और उसक प्रतिनिधियो के लिए एक चुनौती है। यदि इस प्रकार का भेदभाव ओर विषमता का समाधान ठीक है तो उस प्रकार की राष्ट्रविरोधी स्थिति का तुरन्त युक्तिपूर्ण स्थायी समाधान होना ही चाहिए।

वैसे तो स्वाधीनता प्राप्ति क ५५वे वर्ष और नई सहस्राब्दी के पहल वर्ष म राष्ट्र के सामने अनेक नई तात्कालिक समस्याए आ रही होगी जिनके तात्कालिक समाधान के लिए कन्द्र ओर प्रान्तो की सरकारो को निरन्तर सतर्क होना चाहिए परन्तु जिस तरह की विषमता ओर भेदभाव की चर्चा की गई है यदि उसी मे सच्चा है तो उसके स्थायी समाधान के लिए राज्या ओर केन्द्र की सरकार के अतिरिक्त भारत के समाचार पत्रो राज्या ओर केन्द्र के जनसगठनो और उनक प्रतिनिधियो एव जागरूक राष्ट्र प्रहरियो को अपना दायित्व समझकर उसके सामयिक तथा स्थायी समाधान के लिए तुरन्त काइ कार्रवाइ करनी चाहिए। राष्ट्र ओर राज्यो के सम्मुख जहा तात्कालिक आर्थिक राजनीति समस्याआ का समाधान होना चाहिए वहा राज्यो ओर राष्ट्र म प्रचलित विषमता और भेदभाव का भी तुरन्त कारगर स्थायी समाधान प्राप्त करना शासन जन प्रतिनिधियो और जनसचार माध्यमो का पुनीत दायित्व है। राष्ट्र ओर राज्यो मे प्रचलित भेदभाव और विषमता से आज शायद कोई चुनौती नहीं मिल रही है परन्तु यदि इस गम्भीर समस्या का समय रहते समाधान नही किया गया तो निकट भविष्य मे उससे भी गम्भीर चुनौती मिल सकती है।

चिट्ठी-पत्री

अग्रेजी का भूत

मुम्बई मे फिल्म फेयर एवार्ड का कार्यक्रम टी०वी० पर प्रसारित किया गया। यह अवार्ड हिन्दी फिल्मो के श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए दिए जाते है लेकिन अफसोस की बात यह है कि इस कार्यक्रम की शुरूआत एक अग्रेजी गाने से की गई और अधिकतर अग्रेजी गाने ही सुनाए गए। देखा जाए तो यह देश की मातृभाषा हिन्दी के साथ ही हिन्दी फिल्म उद्योग का भी अपमान था। जो अवार्ड दिए जा रहे थे वे हिन्दी फिल्मो के लिए थे। जिस हिन्दी भाषा के माध्यम से ये लोग धन दौलत और शोहरत पाते है उसी भाषा का इतना अपमान क्यो करते है ? यह समझ से परे है लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि ऐसे लोगो पर अग्रेजी व पश्चिमी सभ्यता का भूत सवार है।

— चन्द्रकान्ता मौर्य बल्लभगढ

भारत के उपेक्षित बच्चे

भारत मे बच्चो की दुरवस्था सयुक्त राष्ट्र सघ के यूनिसेफ की नवीन रिपोर्ट मे अन्धकारपूर्ण भविष्य पर प्रकाश डाल रही है। रिपोर्ट मे कहा गया है कि स्वाधीनता के ५५ वर्ष बाद भी भारत मे जन्म लेने वाले बच्चो मे ६३ प्रतिशत का पजीकरण नही किया जाता और ४७ प्रतिशत बच्चे जन्म को तीन वर्षो बाद भी कुपोषण के शिकार बने रहते है। भारत के १५ प्रतिशत बच्चे विद्यालय का दरवाजा ही नहीं देख पाते और विद्यालय जाने वाले बच्चो मे ५२ प्रतिशत बच्चे ही ५वीं कक्षा तक पहुचते है। रिपोर्ट के अनुसार २५ प्रतिशत बच्चो को रोगो से बचाव के लिए टीको की सुविधा उपलब्ध नही है। भारत मे जन्म लेने वाले २६ प्रतिशत बच्चो का भार जन्म के समय ढाई किलो से कम होता है। यदि सरकार बच्चो को देश का भविष्य मानती है तो उसे बच्चो को सभी तरह का बुनियादी सुविधाए प्राप्त कराने के लिए गम्भीरता से युद्ध स्तर पर प्रयास शुरू करना होगा।

— अक्षित तिलकराज गुप्त यमुनानगर

शराब की नहीं, पानी की सोचे

दिल्ली की सरकार ने हाल ही मे जो आबकारी नीति घोषित की है उससे स्पष्ट हो गया है कि सरकार का प्रदेश के युवाओ का थोडा सा भी ख्याल नही है उसे तो बस वोटो और नोटो से मतलब है। ध्यान रखे कि शराब के मामले मे दिल्ली शुष्क क्षेत्र नही है यहा आसानी से वह सुलभ है लेकिन अब जिस प्रकार प्रत्येक गली मोहल्लो मे शराब की दुकान खोलने की तैयारी कर रही है वह न केवल हमारे युवाओ के लिए प्रत्युत पूरे समाज के लिए घातक है। अचम्भा है कि जब इस समय दिल्ली की जनता पानी की किल्लत से जूझ रही है उस समय दिल्ली के लिए जल का एक विराट जलस्रोत्र बन सकने वाली यमुना की साफ–सफाई की योजनाए कागजी रह गई है चिन्ता की बात है कि सरकार पानी किल्लत कम करने के स्थान पर शराब की बिक्री के बारे म सोच रही है।

— अमरसिह हाडा डी १२५ ए शकरपुर दिल्ली

यजुर्वेद से जीवनधारक तत्व स्पतकम (४) पूर्वार्द्ध

जीवन-धारक तत्वों को धारण करने का आदेश

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) अग्रेणी परमात्मा, प्रबल कामना और ज्ञान रश्मि जीवन को धारण करते है

समिद्धो अग्नि समिधा सुसमिद्धो वरेण्य ।
गायत्री छन्द इन्द्रिय त्र्यविर्गौर्वयो दधु ।।

यजु० २१–१२

ऋषि – स्वस्त्यात्रेय । देवता – अग्नि । छन्द – विराडनुष्टुप।

इस से पूर्व के दो मन्त्रो मे – सतत क्रिया शीलता के द्वारा काम क्रोध व लोभ के त्रिक से मुक्ति पाने के इच्छुक आत्रेय ऋषि ने विद्वान ऋत्विजो से प्रार्थना की है कि ?

शन्नो भवन्तु वाजिनो – अस्मधुवयन्नमीवा ।
बाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञा ।

इसके उत्तर मे वे विद्वान त्रिविध कल्याण की कामना वाले आत्रेय ऋषि को निम्न मन्त्रो मे छन्द शब्दो के अर्थ की भावना को अपनाने के साथ जीवन धारण के लिए वाञ्छित सामर्थ्य (इन्द्रियम) को प्राप्त करने के अन्य उपायो का सकेत व उपदेश करते हैं। यदि ऋषि इन उपायो को अपनाएगे तो उनका जीवन उत्कृष्ट से उत्कृष्टतर होता हुआ धन्य हो जाएगा।

अर्थ – (समिधा समिद्ध अग्नि) समिधाओ से प्रदीप्त अग्निकुण्ड का अग्नि अथवा वानस्पतिक भोजन से प्रदीप्त जाठराग्नि (समिधा सुसमिद्ध वरेण्य) सोम रक्षा और प्राण साधना से प्रदीप्त आत्मा के द्वारा सुसमिद्ध वरणीय प्रभु का सतत स्मरण (गायत्री छन्द) प्राण शक्ति के रक्षण की प्रबल इच्छा है (त्र्यवि गौ) शरीर मन मस्तिष्क तीनो की रक्षा करने वाली ज्ञान की रश्मि (विधिया) अथवा धर्म अर्थ और काम तीनो की साधिका ज्ञान की रश्मिया साधक ऋषि आत्रेय की (इन्द्रियम्) प्रत्येक इन्द्रिय सामर्थ्य तथा (वय) जीवन को (दधु) बृहत्तर (बेहतर) रूप मे धारण करते हैं – उत्कृष्टतर बनाते है।

निष्कर्ष – अग्निहोत्र और वानस्पतिक भोजन द्वारा जाठराग्नि को प्रदीप्तकर प्राप्त शारीरिक स्वास्थ्य वरेण्य प्रभु का सतत स्मरण प्राण शक्ति रक्षण की प्रबल कामना द्वारा प्राप्त मन की पवित्रता धर्म अर्थ व काम का साथ–साथ सेवन करने वाली ज्ञान विद्याओ का अर्जन साधक ऋषि के जीव बृहतर उत्कृष्टतर बना देता है।

अर्थपोषण – समिधा – यज्ञ की समिधाए तथा वानस्पतिक भोजन (वन स्पतय इध्मा।) ऐत० ५–२८ प्राण एवास्येध्म। माश ११–२–६–२ (अय त इधम आत्मा जातवेद)। गायत्री – गया प्राणा त्रा=रक्षण की छन्द=प्रबल इच्छा (चन्दति हृष्यति दीप्यते येन तत। उणादि ४–२२० कपट मिच्छाऽमिप्रायोवशो वा)

त्र्यवि – त्रीन अवतीति अवरक्षणे अवाप्तौ च – शरीर मन मस्तिष्क अथवा काम अर्थ धर्म (धर्मार्थ कामा सममेव सेव्या)

गौ – ज्ञान ज्ञानरश्मिश्च वाग दिग भू रश्मिवज्रेषु गोशब्दमुपलक्षयेत। नाममाला।

इन्द्रियम – शुक्र तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च। अमर वीर विक्रान्तौ वीरयतीति सामर्थ्य तेजोवा – इन्द्रिय का तेज व सामर्थ्य।

छन्द (१) छन्दासि वै वाजिन (अश्वा) यान के प्रतीक। मै० १–१०–८

छन्दोभिहि स्वर्ग लोक गच्छन्ति। (२) छन्दासि वे साध्या देवा। ऐ० १–१६

साधन के प्रतीक – छन्दोमिर्वै तद्रक्ष पाप्मानमपघ्नते। जै० १–८६

(२) शारीरिक स्वास्थ्य, सर्वभूत हित की प्रबल भावना, विभाजन से होने वाली हानि का ज्ञान तथा मानसिक शुचिता जीवन को बेहतर बना देते है

तनूनप्राच्छुचिवुतस्तनूनपाश्च सरस्वती
उष्णिहा छन्द इन्द्रिय दित्यवाडगौर्वयो दधु ।।

यजु २१–१३

ऋषि स्वस्त्यात्रेय । देवता विद्वास । छन्द अनुष्टुप।

अर्थ – (शुचि व्रत तनूनपात) शरीर को स्वस्थ रखने की दृष्टि से प्राण साधना करके पवित्र व्रतो को धारण (तनूपा सरस्वती) शक्तियो के विस्तार (तनू) की रक्षिका (सरस्वती) ज्ञानाधिदेवता की कृपा (उष्णिहा छन्द) उत्कृष्ट स्नेह को क्रिया मे परिणत करने की प्रबल इच्छा (दित्य वाड गौ) खण्डन–पार्थक्य (विभाजन) के द्वारा सम्भावित विनाश को बताने वाली ज्ञान की रश्मिया साधक ऋषि आत्रेय के (इन्द्रय वय) प्रत्येक इन्द्रिय के सामर्थ्य तथा कर्मों के ताने बाने मे व्यस्त जीवन को बृहत्तर (बेहतर) रूप मे उपरिवर्णित उपाय (दधु) धारण करते हैं – उत्कृष्टतर बनाते हैं।

निष्कर्ष – शारीरिक स्वास्थ्य मानसिक शक्तियो का विकास (सरस्वती) सर्वजनो का मित्रवत कल्याण भावना और विभाजन अथवा पार्थक्य के विरोध को वहन करने का सामर्थ्य क्रान्तदर्शी साधक को जीवन को बृहतर विस्तार युक्त तथा उत्कृष्टतर (उच्च व नैतिक) बनाते हैं।

अर्थपोषण – तनून – पात – तनू – न – पात्यहीति – शारिरिक स्वास्थ्य की दृष्टि शुचिव्रत – शुचदीप्तौ। प्राणो वैतनून पात स हि तन्व पाति। ऐ०२–४

उष्णिहा – उष्णिक उत स्निह्यतीति स्निह प्रीतौ

दित्यवाद् – दिते अव कर्म वा दित्यम (दो अव खण्ड ने) खण्डन – पार्थक्य के विरोध का वहन करता है। दित्यस्य विभाजनस्य हाने प्रदर्शन बहतीति।

(३) परमेश्वर की स्तुति व सतत् स्मरण तथा वीर्य रक्षा मनुष्य की दीर्घजीवी बनाते है

इडाभिरग्निरीऽय सोमो देवोऽअमत्ये ।
अनुष्टुप छन्द इन्द्रिम पञ्चाविर्गौर्वयो दधु ।।

यजु २१–१४

ऋषि स्वस्त्यात्रेय । देवता विद्वास । छन्द विराऽनुष्टुप।

अर्थ – आत्रेय की प्रार्थना पर विद्वान लोग स्वस्ति चाहने वाले आत्रेय के जीवन को उत्कृष्टतर बनाने के लिए उपाय बता रहे है कि – १ (दूडाभि ईऽय अग्नि) वेद वाणियो द्वारा स्तुति किए जाने वाले परमात्मा की स्तुति मे कभी व्यवधान न पडने देना क्योकि सर्वेवेदा यत्पदमामनान्ति सारे वेद वचन उसी प्राप्तव्य प्रभु का प्रतिपादन कर रहे है कारण कि ऋचो अक्षरे परमे व्योमन ऋक सारी ऋचाए उस परम अक्षर परमात्मा मे स्थित है २ (सोम देव अमर्त्य) वीर्य का रक्षण दिव्यगुणो व शक्ति को उत्पन्न करके मनुष्य को रोग से आक्रान्त होकर मरने नही देता ३ (अनुष्टुप इन्द्र) अनुष्टुप = अनुस्तौति प्रत्येक कार्य को करते हुए प्रभु स्मरण की भावना (इच्छा) ४ (पञ्चावि गौ) पाञ्चभौतिक शरीर की रक्षा करने वाली ज्ञान की रश्मिया अथवा पच ज्ञानेन्द्रिय पच कर्मेन्द्रिय पञ्चकोश पच प्राणो को सुरक्षित रखने का ज्ञान – ये उपाय आत्रेय ऋषि की (इन्द्रियम्) प्रत्येक इन्द्रिय के सामर्थ्य को और (वय) कर्मो के ताने बाने मे बुन हुए जीवन को (दधु) बखूबी धारण करते है अर्थात उसके उत्कृष्ट जीवन को उत्कृष्टतर बना देते है।

निष्कर्ष – परमेश्वर की स्तुति वीर्यरक्ष' प्रत्येक कार्य करते हुए प्रभु स्मरण पाच भौतिक शरीर की रक्षा का ज्ञान मनुष्य की प्रत्येक इन्द्रिय को सपुष्ट और जीवन को उत्कृष्टतर स्थिति मे पहुचा देते हैं।

अर्थपोषण – अमर्त्य = अमृत–य एव शत वर्षाणि जीवति भूयासि वा स है वैत्तदमृत माप्नोति। माश १०–२–६–८

सोम – रेतो वै सोम। शत १–७–२–६

४ अन्न सेवनकर्ता तथा उदार हृदय व्यक्ति का जीवन उत्कृष्ट होता है

सुबर्हिरग्नि पूषणवान्त्स्तीर्ण बर्हिरमर्त्य ।
बृहती छन्द इन्द्रिय त्रिवत्सो गौर्वयो दधु ।।

यजु २१–१५

ऋषि स्वस्त्यात्रेय । देवता विद्वास । छन्द निचृदनुष्टुप्।

सतत क्रियाशील रहते हुए काम क्रोध लोभ के त्रिक को वश में करने वाले ऋषि तुल्य जनों को विद्वानो ने जीवन को उत्कृष्ट बनाने के उपाय निम्न बताए हैं –

(१) (सुबर्हि अग्नि पूषण्वान्) उत्तम ओषधियो (अन्नो) का सेवन करने वाला वैश्वानराग्नि (जाठराग्नि) उत्तम पोषणकर्ता होता है।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

प्रथम पृष्ठ का शेष भाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

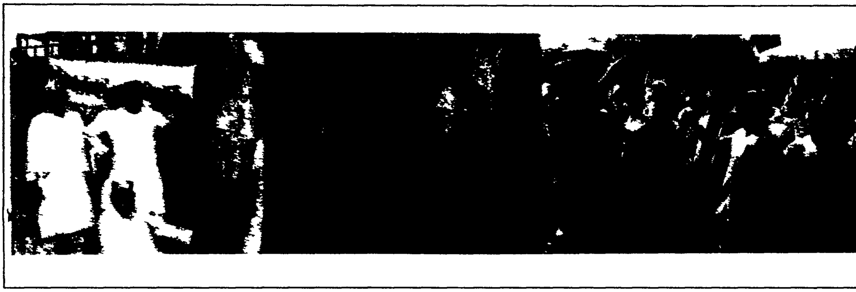
नई शराब नीति के विरुद्ध प्रचण्ड प्रदर्शन

पूर्व घोषित कार्यक्रम के अनुसार २३ जून को साय ४ बजे आई०टी०ओ० के निकट शहीद भगत सिह पार्क पर हजारो की सख्या मे दिल्ली के आर्यजन एकत्र हुए और कै० देवरत्न आर्य जी के नेतृत्व मे मुख्य मन्त्री निवास की ओर अग्रसर होने लगे तो ५० कदम की दूरी पर पुलिस ने बडे जबरदस्त बैरियर लगाकर प्रदर्शन यात्रा को रोका। परन्तु शराब विरोधी आर्यो का उत्साह रुकने वाला विरोध गली गली और शहर शहर मे गूजेगा।

प्रदर्शन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान और हरियाणा सभा के मन्त्री आचार्य यशपाल सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री देवेन्द्र शर्मा श्री वाचोनिधि आर्य श्री आनन्दकुमार आर्य श्री देवराज आर्य तपस्वी श्री सुखदेव तथा कई अन्य अधिकारी सर्वश्री राव हरिश्चन्द्र कल्याण देव सु०ब० काले (महा०) गुरुकुल कागडी के नए कुलपति प्रि० श्री अरुण वर्मा एव श्री ओमप्रकाश आदि सहित कई अन्य आर्यजन भी उपस्थित थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव ने दिल्ली के विभिन्न हिस्सो से पधारे आर्यजनो के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस प्रदर्शन मे विकास पुरी क्षेत्र से श्री रामजीलाल गोयल बी० ब्लाक जनक पुरी से श्रीमती विमला मलिक सागरपुर से श्री सुखवीर एव प० विजय गुप्ता



प्रदर्शन मे शामिल आर्यजनो को सम्बोधित करते हुए कै० देवरत्न आर्य वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा। आर्यजनो मे नारो के माध्यम से सचार करते श्री इन्द्र कुमार मेहता।

नहीं था। बैरियर को जबरदस्ती पार करके आर्यजन आगे बढे तो आधा कि०मी० चलने के बाद पुन बैरियर लगाकर आर्यजनो को रोकने का प्रयास किया गया। परन्तु यह दूसरा प्रयास भी विफल रहा। आर्यजन शराब विरोधी नारे लगाते हुए तपती गर्मी मे मुख्यमन्त्री निवास की ओर बढते रहे।

मुख्यमन्त्री निवास के समक्ष पहुचते ही सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने आर्यजनो को नईशराब नीति के विस्तृत और आपत्तिजनक पहलुओ की जानकारी दी।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि शराब की बिक्री को प्रोत्साहन देना एक महिला मुख्यमन्त्री को शोभा नही देता। उन्होने आर्यजनो को मुख्यमन्त्री के साथ हुई बैठक के ब्यौरे से अवगत कराया। उन्होने कहा कि मुख्यमन्त्री द्वारा नई आबकारी नीति पर पुनर्विचार का आश्वासन स्वागत योग्य है।

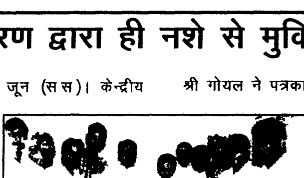
सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने जनसभा के समक्ष वह सारा ज्ञापन पत्र पढकर सुनाया जो उन्होने सार्वदेशिक सभा की तरफ से तैयार करके मुख्यमन्त्री को दिया था। उन्होने कहा कि मुख्यमन्त्री का पत्र मिलने से बेशक आर्यजनो को कुछ सन्तोष हुआ है परन्तु यदि मुख्यमन्त्री ने अपने इस आश्वासन का पालन नहीं किया तो आर्यजन इस शराब नीति के विरुद्ध और भी अधिक प्रचण्ड प्रदर्शन करेगे और यह

स्वतन्त्र कुमार आचार्य वेदप्रकाश जी डा० राजकुमार रावत रामनाथ सहगल श्रीमती शकुन्तला आर्या श्री सोमदत्त महाजन श्री धर्मपाल आर्य श्री विनय आर्य श्री बलदेव राज चौ० लक्ष्मीचन्द श्री जगददेव नैष्ठिक श्री राशनलाल गुप्त श्री अभिमन्यु चावला श्री शान्तिलाल आर्य डा० सत्यकाम श्री मिश्रीलाल श्री सतेन्द्र मिश्र श्री नरेन्द्र आर्य श्री रैली जी श्री शान्तिलाल पश्चिम बिहार से श्री लाम्बा जी आदि अन्य आर्यजनो सहित विशेष रूप से पधारे।

आर्यवीर दल तथा गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी भी बहुत बडी सख्या मे इस प्रदर्शन मे शामिल हुए।

जनजागरण द्वारा ही नशे से मुक्ति संभव

नयी दिल्ली ११ जून (स स)। केन्द्रीय मत्री विजय गोयल ने आज अपने निवास पर आयोजित समारोह मे नशा विरोधी कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होने कहा कि लाटरी शराब व गुटखा आदि समाजिक बुराइयो से देश को मुक्त कराने के लिए युवा पीढी आगे आये। उन्होने कहा कि जन जागरण अभियान चलाकर ही नशे व सामाजिक बुराइयो पर अकुश लगाया जा सकता है।



नशा विरोधी कार्यक्रम मे केन्द्रीय राज्यमन्त्री श्री विजय गोयल मानव ! तू दानव मत बन व आजादी के दीवाने पुस्तको का लोकार्पण करते हुए। उनके साथ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन दिल्ली सभा के प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती तथा अन्य आर्यजन।

श्री गोयल ने पत्रकार चद्रमोहन आर्य की मानव ! तू दानव मत बन तथा आजादी के दीवाने सचित्र पुस्तको का लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा नागरिक युवा सघर्ष मोर्चा ने मिलकर किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन आर्य सन्यासी स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती भी मौजूद थे।

सामाजिक, वैचारिक एवं आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़े।

स्वास्थ्य चर्चा

वृद्धावस्था और श्वास रोग

– डॉ० ए० के० सिह

वृद्धावस्था जीवन की एक वास्तविकता है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन मे यह अवस्था आती है। वृद्धावस्था के कारणो के विषय मे बहुत सी भ्रान्तिया प्रचलित है। पुराणो मे इसके अनेक कारण बताए गए हैं परन्तु विज्ञान के अनुसार कोशिकाओ की आयु इसका मुख्य कारण है। जैसे जैसे समय व्यतीत होता है कोशिकाओ के कार्य करने एव विभाजन होने की क्षमता कम होती जाती है। मानव शरीर मे कोशिका ही विभिन्न अगो की इकाई है। कोशिका के वृद्ध होने से शरीर के अगों की क्षमता भी कम होती रहती है जो वृद्धावस्था की शुरुआत है। कोशिका एव शरीर के यह परिवर्तन विभिन्न कारणो पर निर्भर करते हैं जैसे कि सम्बन्धित वातावरण खान पान व्यक्तिगत आदते 'एव अनुवाशिकता। वृद्धावस्था मे सामान्य रूप से शरीर मे होने वाले परिवर्तन निम्न प्रकार से है जैसे कि पानी की कमी वसा की वृद्धि ब्लडप्रैशर का बढना गुर्दा फेफडा हृदय मस्तिष्क की कार्यक्षमता मे कमी निद्रा एव याददाश्त मे कमी होती है।

इसी तरह से श्वसन तन्त्र की कार्यक्षमता भी धीरे धीरे कम होती रहती है क्योकि समय के साथ फेफडे की सकुचन शक्ति तथा प्रतिरक्षा कम होने लगती है जिसके कारण अनेक बार सक्रमण तथा विभिन्न श्वास रोग होते है।

वृद्धावस्था के श्वास रोग

क्रोनिक ब्रोकाइटिस – इस बीमारी का कारण श्वास नली मे सूजन तथा म्यूकस ग्लैण्ड की अधिकता है। श्वास नली मे सूजन का मुख्य कारण धूम्रपान धूल धुआ एव नाक और गले मे इन्फेक्शन का होना है। अपने देश मे गाव मे खाना सामान्यतया लकडी एव कण्डे से चूल्हे पर बनाया जाता है। जिससे निकलने वाला धुआ महिलाओ मे क्रोनिक ब्रोकाइटिस का मुख्य कारण होता है। क्रोनिक ब्रोकाइटिस के मुख्य लक्षण है – बार बार खासी आना तथा बलगम आना चलने पर श्वास फूलना कभी कभी तो खासी मे खून भी आने लगता है। अगर सही समय पर उपचार नही किया गया तो बाद मे मरीज हार्टफेलीयर हो जाता है। यह सभी लक्षण वैसे तो कभी भी हो सकते है लेकिन आमतौर पर मौसम परिवर्तन के समय होते है। यदि बीमारी का इलाज सही समय पर किया जाए तथा होने वाले कारणो से बचा जाए तो फेफडो मे होने वाले स्थानीय नुकसान को बचाया जा सकता है।

सीनाइल एमफायसीमा – उम्र बढने के साथ–साथ फेफडे की सकुचन एव कार्य करने की शक्ति धीरे–धीरे क्षीण होने लगती है। इसी तरह का परिवर्तन सभी मनुष्यो मे होता है। लेकिन जो लोग धूम्रपान करते हैं या धूम्रपान करने वालो के साथ ही रहते है या जहा पर धूल एव धुआ से वातावरण प्रदूषित होता है उसमे यह परिवर्तन कम उम्र मे ही आने लगते है। जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य मे कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है तथा चलने पर या सीढिया चढने पर सास फूलने लगती है। इस समस्या से बचने का एक ही तरीका है धूम्रपान न करे पैसिव स्मोकिग एव वायु प्रदूषण से बचे।

फेफडे का कैसर – वैस तो सभी कैसर वृद्धावस्था मे अधिक होते है। फेफडे का कैसर मुख्यतया ४० ५० वर्ष की आयु के बाद ही पाया जाता है। लेकिन कभी कभी इससे कम उम्र मे भी हो सकता है। ६० प्रतिशत मरीजो मे फेफडे के कैसर का मुख्य कारण धूम्रपान ही होता है। धूम्रपान की अवधि एव सख्या का सीधा सम्बन्ध कैसर से होता है। ज्यादा समय तक अधिक धूम्रपान करने वालो मे कैंसर का खतरा निरन्तर बढता रहता है। फेफडे के कैसर के मुख्य लक्षण हैं खासी बलगम मे खून आना भूख कम लगना वजन कम होना छाती मे दर्द आवाज मे परिवर्तन गला तथा चेहरे मे सूजन आना चलने पर श्वास फूलना आदि। कभी कभी इनमे से कोई लक्षण नहीं होता है लेकिन एक्सरे मे कैंसर की गाठ हो सकती है। क्योकि हमारे देश मे टी०बी० की बीमारी अधिकता मे पाई जाती है और कैसर के लक्षण भी टी०बी० के जैसे ही होते हैं यही कारण है कि फेफडे का कैसर अन्तिम अवस्था मे ही पता चल पाता है।

वृद्धावस्था मे दमा वृद्धावस्था मे सास फूलने के बहुत से कारण होते है। इसका एक कारण दमा भी है। सामान्यतया दमा जीवन के शुरूआत मे ही हो जाता है लेकिन कभी–कभी वृद्धावस्था मे प्रारम्भ होता है। दमे की बीमारी मे श्वास नली सिकुड जाती है तथा अन्दर सूजन भी हो जाती है। जिसके कारण मरीज को सास लेने मे कठिनाई होती है। दमे का मुख्य कारण भोजन धूल धुआ सक्रमण पराग कण से सम्बन्धित एलर्जी होती है। वृद्धावस्था मे दमे के उपचार मे कुछ कठिनाइया आती है क्योकि साथ मे और बहुत सी बीमारिया भी होती है जैसे हृदय रोग मोटापा स्लीपएपनिया मधुमेह हाइपरटेन्शन पारकिनसन एलाजइमर्ज आदि। इनहेलर्स के आने से काफी हद तक इस समस्या का समाधान हो गया है।

वृद्धावस्था मे टी०बी० – टी०बी० की बीमारी माइकोबैक्टीरिया नामक जीवाणु से होती है। हमारे देश मे लगभग सभी लोग इस जीवाणु के सम्पर्क मे जीवन मे कभी न कभी आते है लेकिन टी०बी० की बीमारी १०–१२ प्रतिशत लोगो मे ही होती है। बाकी लोगो मे शारीरिक प्रतिरक्षा के कारण बीमारी नहीं होती है। वृद्धावस्था मे शारीरिक प्रतिरक्षा कम होने के कारण बीमारी होने की सम्भावना अधिक होती है। यदि साथ में अन्य रोग जैसे मधुमेह मोटापा धूम्रपान कैंसर है तो रोग होने की सम्भावना अधिक हो जाती है। वृद्धावस्था मे फेफडे की टी०बी० के साथ साथ अन्य अगो मे इन्फेक्शन की सम्भावना अधिक होती है। जैसे – मस्तिष्क आतो की टी०वी० हडडी एव गुर्दे की टी०बी०। सामान्यत टी०बी० के मुख्य लक्षण होते हे – बुखार आना भूख कम लगना वजन मे कमी खासी बलगम खासी मे खून आना लेकिन हमेशा यह सभी लक्षण मौजूद नही होते है। ऐसे मे टी०बी० का पता लगना अत्यन्त कठिन कार्य होता है। मुख्यतया जब साथ मे अन्य रोग भी होते हे।

– श्वास रोग विशेषज्ञ, रीजेन्सी अस्पताल कानपुर (उ०प्र०)

छात्र-छात्राओं की चित्रकला प्रतियोगिता

छात्रो को उपयुक्त पुरस्कार दिए गए

शानिवार ८–६–२००२ को आर्यसमाज मोती बाग की ओर से क्षेत्र के योग्य व होनहार छात्र छात्राओ की प्रतिभा का मूल्याकन करने क उद्देश्य से एक चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रात साढे आठ बजे से यज्ञ आरम्भ हुआ तथा ७० बच्चो ने इसमे रुचिपूर्वक भाग लिया। तत्पश्चात् सुयोग्य पर्यवेक्षक की देखरेख मे तीन वर्गो मे चित्रकला आयोजित की गई। पहला वर्ग – पहली से पाचवी कक्षा तक दूसरा वर्ग छठी कक्षा से आठवीं कक्षा तक तथा तीसरा वर्ग नवीं से बारहवीं कक्षा तक के छात्र छात्राओ के थे। तीनो वर्गो मे प्रथम द्वितीय व तृतीय पुरस्कार दिए गए। शेष सभी विद्यार्थियो को सान्तवना पुरस्कार दिए गए। इसके अतिरिक्त क्षेत्र मे १०वीं व १२वीं कक्षा मे ७५ प्रतिशत से अधिक अक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राए वैदिक साहित्य व पुरस्कारो से सम्मानित किए गए।

प्रात ८ ३० से आरम्भ होकर यह आयोजन ११ ३० बजे सम्पन्न हुआ। अभिवावको ने इस अवसर पर पधार कर कार्यक्रम की सराहना की तथा आयोजको को इसके लिए धन्यवाद दिया। जलपान के पश्चात प्रधान जी ने सबका धन्यवाद किया तथा कार्यक्रम समाप्त हुआ।

गुरुकुल प्रभात आश्रम में प्रवेश-परीक्षा

प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का साकार रूप गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला मेरठ मे इस वर्ष नव ब्रह्मचारिया प्रवेशार्थ २६–३० जून के दिनाको मे प्रात नौ बजे प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। प्रवेश परीक्षा मे भाग लेने हेतु बालक की निम्न अल्पतम योग्यताओ की आवश्यकता होगी –

१ बालक की आयु ६ १० वर्ष हो। २ पाचवीं कक्षा उत्तीर्ण हो। ३ शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो।

पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी (पूर्व प० बुद्धदेव विद्यालकार) द्वारा स्थापित गुरुकुल प्रभात आश्रम मे पूर्ण आर्ष पद्धति से वैदिक दिनचर्या का पालन होता है एव मानव की सर्वतोन्मुखी उन्नति मे सहायक शिक्षा नि शुल्क प्रदान की जाती है। गुरुकुल के नियमानुसार एक निश्चित योग्यता प्राप्त करने के उपरान्त ही विद्यार्थियो द्वारा उत्तर प्रदेश सस्कृत शिक्षा परिषद् एव सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय से परीक्षाए दिलाई जाती है।

वर्तमान लोकतान्त्रिक एवं सामाजिक व्यवस्था के बदलाव की आवश्यकता

— प० अखिलेश आर्येन्दु

आज देश सकट के जिस दौर से गुजर रहा है उसका समाधान वर्तमान शासन (सत्ता) और लोक तान्त्रिक व्यवस्था के तहत सभव नहीं दीख पडता। जिस लोकतान्त्रिक व्यवस्था एव प्रणाली के हम गुणगान गाते नहीं थकते उसी व्यवस्था ने ऐसे अनगिनत सकट और समस्याए देश मे खडी कर दी हैं जिसका हल इस व्यवस्था के चलते सभव नहीं दिखता।

वर्तमान मे भारत का सविधान देश मे खुशहाली विकास कल्याण और प्रगति मे सहायक नहीं दिखता। जनता के लिए जरूरी सुरक्षा न्याय (समय के साथ) आहार वस्त्र मकान और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत जरूरते भी पूरी नहीं हो पायीं हैं। वर्तमान सविधान १६३५ मे अग्रेजो ने अपने हित एव शासन सत्ता को दीर्घकाल तक निष्कटक चलाने के लिए बनाए थे। इसी को सशोधित रूप मे अपना लिया गया। नए सविधान–निर्माण की बाते महज प्रोप्रोगण्डा के अलावा कुछ भी नहीं है। भरतीय ससद ने २६ जनवरी १६५० को लागू करते समय इसे देश के समग्र विकास के लिए हितकारी बताया था और जनता मे जो प्रचारित प्रसारित किया गया वह जनता की गुमराह करने की सोची समझी नीति ही थी।

आजादी के इन ५४ वर्षो के दरम्यान ६० से ज्यादा सशोधन किए जा चुके हैं और आगे कितने किए जाएगे एक चिन्तन का विषय है। इससे यह भी सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि वर्तमान सविधान किस तरह अप्रासगिक है। सविधान को भारतीय समाज एव जीवन के अनुरूप बनाने के लिए सविधान सशोधन आयोग का गठन करना भी सविधान की खामियो को ही उजागर करता है। देश के तमाम देशभक्त लेखक पत्रकार वकील शिक्षक समाजकर्मी अर्थशास्त्री समाजशास्त्री एव चिन्तको का मत है कि बिना नए सविधान निर्माण के सही अर्थो मे देश मे पूर्ण शुखहाली नहीं लायी जा सकती है।

अब सवाल उठता है कि अग्रेजो द्वारा निर्मित इस सविधान को किस मजबूरी के तहत ढोया जा रहा है ? सविधान मे वर्णित धाराओ उपधाराओ की समीक्षा से जो तथ्य निकलते है वे यह बताते है कि अग्रेजो ने यह सविधान जनता को गुलाम बनाए रखने के लिए बनाया था न कि जनता के हित मे। यह सविधान पहले अग्रेजो का पोषण करता था आज वर्तमान काले अग्रेजो (सत्ताधीशो) का हित साधन कर रहा है। इसकी जगह नए सिरे से विद्वान एव ऋषि सदृश्य व्यक्तियो के द्वारा नए सविधान बनाने की आवश्यकता है। बिना नए बदलाव एव निर्माण के सविधान व्यवस्था शासन व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को पूरी तौर पर नहीं बदला जा सकता। तभी सही अर्थो मे लोकतत्र की स्थापना की जा सकती है।

आज विश्व मे सारी समस्याओ की जड सरकार गुरुडम और नई बाजार व्यवस्था है। यदि कहा जाए कि विषमता शोषण हिंसा अत्याचार और पशुता के जन्मदाता और पोषणकर्ता यहीं तीनो चीजे हैं तो अतिश्योक्ति न होगी। भूमण्डलीकरण उदारीकरण और निजीकरण इन्हीं तीनो के सरक्षण मे बढने वाले नए शोषण के औजार हैं। जब तक सरकार गुरुडम और बाजार का तत्र जिन्दा है दुनिया मे खुशहाली आ ही नहीं सकती।

ये तीनो खुशहाली लाने के ढोग करते हैं जनता के लिए। वास्तव मे इनका मकसद अपने इर्द गिर्द सम्बन्धो को हर तरह से खुशहाल करने का होता है। जिन देशो मे खुशहाली की बात की जाती है वहा भी बडे स्तर पर विषमता एव दूसरी अनेक समस्याए है।

आम नागरिक आज जितना त्रस्त और शोषित है उतना कभी नही रहा। जनता द्वारा जनता के लिए जनता से बनने वाली लोकतत्र की राजव्यवस्था हर स्तर पर विफल साबित हुई है। हर तरफ हाहाकार भ्रष्टाचार दुराचार अपराध कुपोषण भुखमरी बेरोजगारी अशिक्षा मानवीय मूल्यो का पतन जुल्म शोषण और अनगिनत परेशानिया। आजादी के बाद अमीरी/गरीबी का अन्तर कई बीसदी बढा है।

कागजो मे दिखाने के लिए सरकार ने जरूर गरीबी मिटाने मे सफल हुई है लेकिन जमीनी हकीकत इसके विपरीत है। भ्रष्टाचार का आलम यह है कि विश्व के भ्रष्टतम देशो मे भारत का स्थान तीसरे नम्बर पर और विकास के स्तर पर १६८ वे स्थान पर। इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है। कि आजादी के ५४ वर्षो बाद देश की हालत किस कदर खराब हो चुकी है। इस बदतर स्थिति के लिए राजनेता और नौकरशाह प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं और राजनेताओं और नौकरशाहों को भ्रष्ट बनाने के लिए जिम्मेदार है। भारतीय सविधान और वर्तमान व्यवस्था। इस व्यवस्था को अमूल चूल परिवर्तित किए बगैर न लोकतान्त्रिक व्यवस्था को ठीक किया जा सकता है और न ही सामाजिक व्यवस्था को ही दुरुस्त किया जा सकता है।

वर्तमान शासन व्यस्था केन्द्रीयकृतकरण अधिकार प्रणाली पर आधारित है। यानी सारे अधिकार शासन के हाथो मे निहित है और खुशहाली लाने की जिम्मेदारी भी शासन के हाथो मे है। जनता अपने मन मुताबिक न वह सकती है और कानून ही बना सकती है। केन्द्रीयकृत शासन प्रणाली (व्यवस्था) अग्रेजो ने अपने शासन को दीर्घकाल सुरक्षित रहे इसलिए बनाई थी। उन्होने सारे अधिकार योजनाए जनता बनाने की जिम्मेदारी अपने हाथ मे रखी। जिससे जनता विद्रोह न कर सके और वे जनता का मनमाना शोषण कर सके।

महर्षि दयानन्द और गाधी जी ने स्वराज्य की कल्पना की थी। वह विकेन्द्रीयकृत व्यवस्था को बनाने वाली थी। यानी जनता के हाथो मे अधिकतम अधिकार रहे और जनता जो कार्य न कर सके सरकार तब वहा हस्तक्षेप करे। स्वदेशी स्वराज्य व्यवस्था का यही मूलाधार है।

अग्रेजो के जाने के बाद सत्ता काग्रेस के हाथो मे आई। तब लोगो को इससे बहुत सी अपेक्षाए थीं। पर गाधी जी के करीबी और गाधी के नक्से ए कदम पर चलने का वादा करने वाले जवाहर लाल नेहरू ने सत्ता का विकेन्द्रीयकरण करने के स्थान पर केन्द्रीय कृत शासन प्रणाली को अपनाया। काग्रेस ने अपने ४५ वर्ष के शासनकाल मे गाधी के विकेन्द्रीयकरण लोकतत्र सत्ता की जगह केन्द्रीयकृत प्रणाली को ही अपनाए रखा। परिणाम स्वरूप जनता मे खुशहाली तो नहीं आ पाई लेकिन एक विशेष वर्ग मे खुशहाली उनके मन मुताबिक जरूर आई। तमाम सविधान सशोधन के बावजूद तमाम वादो एव भाषणो के लुभावने नारो के बाद भी आम आदमी की समस्याए हल होने की जगह बढती रहीं।

सरकार के अलावा गाधी जी के नाम पर चलने वाली गाधीवादी सस्थाए भी राष्ट्रीय स्वराज्य को ही स्वराज्य मानकर चरित्र निर्माण के काम मे लग गयीं। यानी वर्तमान शासनतत्र के अधीन या स्वीकार कर स्वराज्य निर्माण के लिए कार्य करती आ रही है। परिणाम सामने है इन पचास वर्षो मे तमाम प्रयासो के बावजूद कोई आपेक्षित सार्थक परिणाम नहीं आए।

आज भी आम जनता छोटे से छोटे कार्य के लिए शासन पर निर्भर है। आम नागरिक का चरित्र दिनोदिन गिरता जा रहा है। जाहिर तौर पर चरित्र निर्माण शिक्षा सस्कार बनाने की जिम्मेदारी शासन के हाथो मे हैं। शासन का ही मूल चरित्र भ्रष्टाचार व अपराध मे डूब चुका है। ऐसे मे आम नागरिक का चरित्र कैसे सुधर सकता है।

मानव प्रकृति का एक सीधा सा सिद्धान्त है कि किसी भी कार्य का करने वाला उस कार्य के परिणाम से जितना अधिक सबद्ध होगा उस कार्य की गुणवत्ता भी उतनी ही अधिक होगी। इसका अर्थ हुआ कि दूसरो की समस्याओ का समाधान का दायित्व दूसरो पर विशेष परिस्थिति मे ही होना चाहिए। लेकिन भारत मे तो आम नागरिको की अधिकाश समस्याओ के समाधान का दायित्व शासन ने उठा रखा है।

भारत का आम नागरिक आम तौर पर दो भागो मे विभाजित है। ये हैं शासक और शासित। शासित पक्ष को आम नागरिक कहा जाता है। शासक पक्ष आम नागरिक की अक्षम अयोग्य और अपढ घोषित करके उनकी समस्याओ के समाधान मे अपनी भूमिका आवश्यक मानता है और दूसरी तरफ आम नारिक स्वय को अक्षम अयोग्य और अनपढ भूमिका जरूरी मानता है। इस वजह से शासक वर्ग मनमाने ढग से शासित की खुशहाली के लिए योजनाए बनाता है।

भारत मे अनेक बुद्धिजीवी चुनाव सुधारो के साथ देश की बेहतरी की बात करता है। इनके अनुसार चुनावो मे अच्छे लोगो के चुनकर जाने से समस्याए सुलट जाएगी। लेकिन सच्चाई कुछ और है। सन १६४७ मे तो आज की अपेक्षा बहुत अधिक ईमानदार और अच्छे लोग शासन मे थे। फिर भी परिणाम अपेक्षा के अनुरूप नहीं मिले। एक बिल्कुल ही रद्दी गाडी मे अच्छा सा अच्छा सुधारक सीमा से अधिक सुधार नहीं कर सकता या यो कहे रद्दी गाडी को उसकी सीमा से ज्यादा तेज नहीं चलाया जा सकता। गाडी को ठीक से चलाने के लिए दुरस्त गाडी और अच्छे चालक दोनो की जरूरत होती है। वर्तमान समय मे जो भी दुष्परिणाम सामने दिख रहे हैं वे शासन पर नागरिको की अधिक निर्भरता रूपी प्रणाली का ही दोष है। इस प्रणाली की वजह से सारी समस्याए पैदा हुई हैं। कुछ लोग कहते हैं यदि अच्छे लोग ज्यादा तादाद मे चुनकर सत्ता मे आ जाए तो अनेक समस्याए हल हो सकती हैं। लेकिन आज के वातावरण व प्रणाली मे योग्य व ईमानदार व्यक्ति चुनकर आ नहीं सकता। यदि कुछ प्रतिशत लोग आ भी गए तो क्या जरूरी है वे चुने जाने के बाद ईमानदार और अच्छे रह जाएगे ? इस प्रकार देखा जाय तो वर्तमान मुराज्य प्रणाली को बदलकर स्वराज्य यानी आम आदमी के अधिकारो की प्रणाली को अपनायी जाय। तभी देश मे पूर्ण सुधार आ सकता है। नहीं तो समाज से भ्रष्टाचार हिसा दुराचार अपराध अश्लीलता मिट नहीं सकती।

— ६/६० पश्चिम फ्रेन्डस इन्क्लेव
सुल्तानपुरी मार्ग, नागलोई नई दिल्ली ४१

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 27 28/06/2002 दिनाक २४ जून से ३० जून २००२ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 27 28/06/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

पृष्ठ ४ का शेष भाग

(२) (स्तीर्ण बर्हि अमर्त्य) काम क्रोध लोभ रूपी पशुओ को मार देने वाला व्यक्ति नीरोग रहकर शतायु वर्ष पर्यान्त यज्ञशील (पर कार्य साधक) होता है।

(३) (बृहती छन्द) हृदय को उदार बना कर आगे बढने की इच्छा से मनुष्य अपने कार्य क्षेत्र मे शीर्ष स्थान प्राप्त करता है।

(४) (त्रिवत्सो गौ) प्रकृति जीव और परमात्मा तीनो का ज्ञान देने वाली वेद धेनु का ज्ञान दुग्ध पीने वाला साधक उत्कृष्टतम स्थिति मे जीवन व्यतीत करता है।

निष्कर्ष – निरामिष अन्नभोजी काम क्रोध लोभ का वशी उदारमना (हृदय) और प्रकृति जीव परमात्मा तीनो का ज्ञाता का जीवन को सशक्त और उत्कृष्ट बनाकर शत वर्ष पर्यन्त दूसरो के कार्यो को सिद्ध करने मे लगा रहता है। यही व्यक्ति शतक्रतु बनता है।

अर्थपोषण – सुबर्हि – ओषधयो बर्हि। ए०२–४ ओषधयो मनुष्याणामन्नम। तै० स० ३–३–६–३ ओषधय फलपाकान्ता। उत्तम अन्न का भोजन सात्विक होता है।

स्तीर्ण बर्हि पशवो वै बर्हि। ऐ० २–४ काम क्रोध लोभादय पशव। स्तृ (मारना–समाप्त करना) आप्टे त्रिविध नरस्येद द्वार नाशनमात्मन। कामक्रोधस्तथा लोभ तस्मादेतत्त्रय त्यजेत।

गीता १८–

अमर्त्य – अमृत – य एव शत वर्षाणि जीर्वा यो वा भूयासि जीवति।

स है वेतदमृत माप्नोति। शत० १०–२–६–६८

त्रिवत्स – त्रीन

प्रकृति जीव परमात्मन वदतीति त्रिवत्स। उणादि ३–६२

बृहती – बृह् वृद्धौ – हृदय (मन) को उदार बनाकर आगे बढने की छन्द इच्छा।

(अपूर्ण)

– श्यामसुन्दर राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन खारी बावली दिल्ली ६

..ल्ली की आर्य समाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज बाकनेर, दिल्ली ११००४०

प्रधान	–	श्री मागेराम आर्य
उपप्रधान	–	श्री ओमप्रकाश गुप्त
मन्त्री	–	श्री मेहरलाल पवार
उपमन्त्री	–	श्री हीरालाल खत्री
उपमन्त्री	–	श्री गजे सिह
कोषाध्यक्ष	–	श्री हवा सिह
पुस्तकाध्यक्ष	–	श्री विजयपाल खत्री
लेखानिरीक्षक	–	श्री लेखराम

रामगली आर्यसमाज हरिनगर, घण्टा घर, नई दिल्ली-६४

प्रधान	–	श्री के०के० कुमरा
उपप्रधान	–	श्री रामप्रकाश भार्गव
		श्रीमती रमेश रानी वर्मा
मन्त्री	–	श्री आनन्द प्रकाश वर्मा
उप मन्त्री	–	श्री श्रीपाल आर्य
कोषाध्यक्ष	–	श्री ओमदत्त गौतम

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक २९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १ जुलाई से ७ जुलाई २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

पूर्वी दिल्ली में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की रजत जयन्ती पर

यज्ञ, प्रवचन एवं भजन सन्ध्या का भव्य आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य मे यज्ञ प्रवचन और भजन सन्ध्या का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज थे। यज्ञ मे स्वामी दीक्षानन्द जी को धर्माचार्य श्री प्रणव शास्त्री एव आर्यसमाज कृष्ण नगर के धर्माचार्य श्री चन्द्रदेव शास्त्री सहयोग कर रहे थे। यज्ञ के यजमान थ श्रीमती एव



स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती सभा महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव एव सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा सासद श्री लाल बिहारी तिवारी विधायक श्री नसीब सिह विद्यालय की अध्यक्षा श्रीमती ईश्वर देवी धवन एव प्रधानाचार्य श्रीमती मनोरमा चौधरी यज्ञशाला की आधारशिला रखते हुए।

श्री लेखराज जी गम्भीर श्रीमती एव श्री यशपाल आर्य श्रीमती एव श्री दर्शनकुमार जी अग्निहोत्री तथा श्रीमती एव श्री वीरभान चावला। स्वामी दीक्षानन्द जी ने यज्ञशाला एव सभागार की आधारशिला भी रखी। समारोह का आयोजन रतन देवी आर्य कन्या उच्चतम माध्यमिक विद्यालय कृष्णनगर शाहदरा दिल्ली मे किया गया था।

इस सभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने की।

समारोह मे सासद श्री लाल बिहारी तिवारी नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री राम बाबू शर्मा विधायक श्री नसीब सिह एव डॉ० हर्षवर्धन मुख्य रूप से उपस्थित थे।

इस मौके पर स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज ने समारोह को सम्बोधित भी किया। उन्होने यज्ञशाला के तीन सिद्धान्तो पर भी विस्तार से चर्चा की। उनके अनुसार जिस यज्ञशाला की आधारशिला रखी जा रही है उसके तीन आधारभूत सिद्धान्त होते है। उनमे से देवपूजा और सगतिकरण मुख्य हैं। उन्हाने कहा कि किन्हीं दो शक्तिया के मिलने का नाम सगतिकरण है। उसमे एक शक्ति बडी तथा एक छोटी होती है। बडी की पूजा होती तो छोटी को आशीर्वाद दिया जाता है। उन्होने कहा कि जहा पर यह सूत्र लागू होता है वही सस्था यज्ञ कहलाती है। इसलिए शिला की प्रतिष्ठा से पहले विचार और आचार मे प्रतिष्ठा होने पर ही बाह्य प्रतिष्ठा बनती है। यही बात सभागार पर लागू होती है। उन्होने आशा व्यक्त की कि यह बात इस सभागार पर भी लागू होगी।



विद्यालय के प्रबन्धक श्री सुरेन्द्र गम्भीर एव श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री आधारशिला रखते हुए।

सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि आर्यसमाज की विचारधारा मे आदि से अन्त तक राष्ट्रीय चेतना और देश के प्रति कर्त्तव्य की भावना कूट कूटकर भरी है। स्वतन्त्रता सग्राम के आन्दोलन मे भी आर्यसमाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होन कहा कि इतिहास साक्षी हे कि आजादी की लडाइ म सक्रिय रूप स भाग लन वाले आर्यसमाजी किसी से भी पीछे नही रहे। इतना ही नही आर्यसमाज ने स्वदेशी आन्दोलन चलाने मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके अलावा आर्यसमाज ने स्वसस्कृति और स्वसभ्यता पर भी बल दिया है।

इस अवसर पर सासद श्री लाल बिहारी तिवारी ने भी समारोह को सम्बोधित किया। उन्होने कहा कि आर्यसमाज का राष्ट्र निर्माण मे बहुत बडा योगदान रहा है। इतना ही नही आर्यसमाज ने देश धर्म जाति और सस्कृति के प्रचार प्रसार मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस मोके पर नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री राम बाबू शर्मा ने भी समारोह को सम्बोधित किया। उन्होने कहा कि आर्यसमाज ने देश की एकता अखण्डता सस्कृति और सभ्यता की सुरक्षा क लिए हमेशा एक सजग पहरदार की भूमिका निभाई है।

श्री नसीब सिह विधायक ने कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अपनी आर्यसमाजो को गरीब बस्तियो के लोगो को जोडने के लिए विशेष निर्देश जारी करे।

सभा अध्यक्ष श्री विमल वधावन ने कामना करते हुए कहा कि आर्यसमोजो के अधिकारी आपस मे भाई भाई की तरह व्यवहार करे और पूरे समाज की परिकल्पना एक परिवार की भाति मन मे बनानी चाहिए तभी हम सब मिलकर आर्यसमाज के माध्यम से हसी खुशी समाज सेवा के कार्य कर सकेगे।

– शेष पृष्ठ ५ पर

सर्वाङ्गीण प्रगति हेतु

– सोहनलाल शारदा

"वार्षिक उत्सवादिकों से मेला करना भी हमें अत्यन्त श्रेय गुण मालूम नहीं देता, क्योंकि उसमें मनुष्य की बुद्धि बहिर्मुख हो जाती है और अत्यधिक धन भी व्यय होता है।"

(सत्यार्थ प्रकाश प्रथम सस्करण पृष्ठ ३८५)

इसके ही आगे यह भी निर्देशात्मक वर्णन करते हुए लिखते है कि –

"केवल अग्रेजी पठन-पाठन से सतोष कर लेने की बात अच्छी नहीं, किन्तु सर्व प्रकार के ग्रन्थ पुस्तकें पढनी चाहिए। इसलिए की जब तक वेदादि सनातन सत्य सस्कृत पुस्तकों को नहीं पढेंगे तब तक परमेश्वर धर्म-अधर्म, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य विषयों को यथावत् नही जान सकेंगे, इसलिए सर्व प्रकारेण पुरुषार्थ करके इन वेदादिक ग्रन्थों को पढना पढाना चाहिए।"

यद्यपि यह प्रकरण ब्रह्म समाज के कार्यक्रमो की समीक्षा मे लिखा गया था तथापि आज हमारी समाजोन्नति के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के निर्देशनो को ध्यान मे रखते हुए जो हमारे प्रवचन भाषण भजनोपदेश से जो मानसिक जागृति होती है उसे अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए हमे न्यूनतम दस प्रतिशत व्यय अवश्यमेव ही रखना है। जिससे कि नई पीढी को पढाकर हम आर्य श्रद्धावान बनाने मे समर्थ हो सके। इसी निमित्त ही दिनचर्या का उपदेश करते हुए ही मेवाडाधिपति महाराणा सज्जन सिह जी को लिखा –

'सदा सनातन वेद शास्त्र आर्यराज व राजपुरुषों की नीति के हेतु एतद् विषयक शास्त्र पढ पढाकर तन मन धन से सदा राज्य रक्षा में प्रवृत्त रहना और इनके साथ ही विरुद्ध भाषाओं की प्रवृत्ति व उन्नति नहीं करे और कराए। किन्तु जितना दूसरे राज्यों के सम्बन्ध में यदि वे इस भाषा को नहीं समझ सकें उतने ही के लिए उन भाषाओं का पठन रखें। तभी यह राष्ट्र प्रबल हो सकेगा।"

(पत्र विज्ञापन दूसरा भाग पृष्ठ ६२६ मीमासक जी)

महर्षि वेद विषयक ग्रन्थ पठन के लिए सस्कृत पठन पर विशेष आग्रहपूर्वक ही ६ठे समुल्लास मे प्रश्न उत्तर मे कहते हैं कि

प्रश्न – सस्कृत विद्या मे राजनीति पूरी-पूरी है या अधूरी ?

उत्तर – **"सस्कृत विद्या मे राजनीति सर्वाङ्ग पूर्ण है और जहा जहा भी ससार के देशों में राजनीति चली और आगे भी चलती रहेगी वह सब सस्कृत विद्या से ले ली गई है और भी लेते ही रहेंगे।'**

इसी उद्देश्य के पूर्त्यार्थ ही राजस्थान के प्रमुख राजघरानो मे एतद् विषयक ग्रन्थ पठन-पाठन पर आग्रह करते हुए जोधपुर के महाराजाधिराज को आग्रह पूर्वक एक पत्र मे लिखते है कि जो आज भी शासनाधिकारियो के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जेसा पूर्व मे था। यहा वर्णन है –

"आप महाराज कुमार के सब सस्कार वेदोक्त कराइएगा। २५ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी व्रत रखते हुए प्रथम में देवनागरी भाषा के पश्चात् सस्कृत विद्या के जो सनातन आर्ष ग्रन्थ हैं। उनके पढने से परिश्रम और समय न्यूनतम लगता है और ऋषि, महर्षि मुनियों के लिखे ग्रन्थों से महालाभ प्राप्त होता है। अत महाराज कुमार को धनार्थी अल्प ज्ञानियों के सग में नहीं रहने दें। इसलिए भी कि जो बाल्यावस्था में जैसा उपदेश होता है वही दृढ होता जाता है। पुन वह कभी भी इसे छोड नहीं सकते।"

अर्थात सत्य के ग्रहण करने की भावना प्रबल नित्य होती रहती ही है।

(पत्र विज्ञापन दूसरा भाग पृष्ठ ७८१)

महर्षि को जब थोडी-सी सफलता की किरण उदयपुर मे मिली तो उन्होने यहा चारणो की पाठशाला मे तथा राजकीय विद्यालयो मे महर्षि द्वारा सचित वेदाग प्रकाश के पठाने की घोषणा कर उसे कार्य रूप मे परिणित कर दिया। इस समाचार को समाचार पत्र रूप मे प्रकाशित वेदभाष्य के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित करने के आदेश के साथ यह भी लिखा कि –

'अब जिस समाचार को तुम पूछा करते थे वह निम्नलिखित जानो। सस्कृत के अपने जो वेदाङ्ग प्रकाशादि हैं उनका प्रचार पढाई निमित्त राजकीय व चारणों की पाठशाला में कर दिया है।'

(पुस्तक वही पृष्ठ ६५६)

इस प्रकार जब चारणो की पाठशाला मे यह पढाई शुरू हुई तब श्री महाराज ने सभी विद्यार्थियो को भोजन दिया और सुप्रसिद्ध महर्षि भक्त श्रीकृष्ण सिह जी बारेठ के सुपुत्र महान क्रान्तिकारी आगे चलकर हुए स्वतन्त्र सेनानी की पीठ थपथपाते हुए कहा –

"तुम चारण ही बने रहकर इन राजा लोगों को सन्मार्ग पर चलाते रहना।"

इसलिए महर्षि का यह विचार भी निश्चय से ही था कि – इन राजा लोगो का ज्ञान लखोस्या ज्ञान है। अर्थात् जैसे लाख अग्नि के समीप तो पिघलती रहती है परन्तु ज्योही अग्नि ससर्ग छूटा कि पुन अपनी स्थिति मे आ जाती है।

महर्षि ने बार-बार देववाणी के पठन-पाठन पर अति आग्रहपूर्वक निर्देश करते हुए श्री काली चरण रामचरण मन्त्री आर्यसमाज फर्रुखाबाद को पाठयक्रम पढाए जाने बाबत लिखते है कि –

"विद्यार्थियों को प्रथम क्रम से वेदाङ्ग प्रकाश पढवाना फिर वैदिक निघण्टु। पुन पिङ्गल सूक्त आदि।"

(पुस्तक वही पृष्ठ ६०६)

इसी उद्देश्य की पूर्ति ही जो पत्र सेठ निर्भय राम फर्रुखाबाद को लिखा वह आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इस पत्र से यह भी ज्ञात होता है कि महर्षि को योगबल से भविष्य का भी कितना ज्ञान था। वह लिखते हैं –

– शेष भाग पृष्ठ ८

बोध कथा

चतुर्मुखी सुधारों के साथ भारतीय सांस्कृतिक जागरण के सूत्रधार

स्वामी जी दयानन्द सरस्वती की सुधार योजना चतुर्मुखी थी। उन्होने धर्म समाज शिक्षा और राजनीति इन चारो क्षेत्रो मे अपने सुधार कार्यक्रम प्रस्तुत किए। धार्मिक क्षेत्र मे वह मूर्तिपूजा मनुष्य पूजा के स्थान पर एक अमूर्त भगवान की उपासना का समर्थन करते थे। सामाजिक क्षेत्र मे जन्म से जात-पात को हटाकर गुण-कर्मानुसार वर्णाव्यवस्था करने स्त्रियो को पुरुषो के समान वेद तक पढने का अधिकार देने बाल-विवाह पर रोक लगाने का पक्षपोषण करते थे। शिक्षा के सम्बन्ध मे वह गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रवर्तक थे। इस प्रणाली की विशेषताए थीं – ब्रह्मचर्य का पालन गुरुओ और शिष्यो का निकट सम्बन्ध सादा जीवन और सदाचार को प्रशस्त करने के लिए सर्वागीण शिक्षा।

राजनीति मे वह अपने समय से बहुत आगे क्रान्तिकारी थे। उन्होने अपने ग्रन्थो और भाषणो से शासन की गणतन्त्र प्रणाली और राष्ट्र की पूर्ण स्वाधीनता का उद्घोष किया।

स्वामीजी की एक विशेषता यह थी कि वह भारतीय सस्कृति के पूर्ण समर्थक थे। यद्यपि वह पाश्चात्य भाषा और विज्ञान आदि की शिक्षा को आवश्यक मानते थे परन्तु वह प्राथमिकता भारतीय वाडमय और भारतीय वेशभूषा को देते थे। उन्होने जन्म से गुजराती होते हुए भी धार्मिक और सास्कृतिक प्रचार का माध्यम राष्ट्रभाषा हिन्दी को बनाया। उन्होने भारतवासियो के ह्रदयो मे अपने अतीत के लिए गौरव का भाव उत्पन्न करने मे सर्वाधिक प्रयत्न किया।

उन्होने अपने लक्ष्य–मिशन को स्थायी स्वरूप देने के लिए चैत्र सुदी ५ सम्वत १८७५ को मुम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना की। यह तथ्य है कि उत्तरी भारत मे इस समाज ने राष्ट्रीय और सास्कृतिक जागरण की विशिष्ट भूमिका प्रस्तुत की।

– नरेन्द्र

संकल्प एक हों : श्रेष्ठ बनो : बुराइयों से रक्षा करो

समानी व आकूति । ऋ० १० १९१ ४
तुम्हारे सकल्प एक हो।
श्रेष्ठा भूयास्थ। अथर्व १८ ४ ८६
श्रेष्ठ बनो।
पाहि नो अग्ने रक्षस । ऋ० १ ३६१५
हे अग्ने हमे काम क्रोध लोभ मोह अभिमान आदि बुराइयो से हमारी रक्षा करे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

नई सहस्त्राब्दी में सच्ची समानता, प्रगति एवं सौमनस्य की नीव रखें

राष्ट्र की राजनीतिक स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे वैसे तो राष्ट्र के सम्मुख अनेक समस्याए है स्वाधीन भारत तीन पृथक इकाइयो मे बट गया ये पृथक हुई इकाइया पुन सयुक्त भारत राष्ट्र का अग बने यह हमारा राष्ट्रीय लक्ष्य है यह राष्ट्रीय लक्ष्य प्राप्त करने क लिए सारे राष्ट्र की जनत और प्रमुख राजनीतिक दलो का सयुक्त सगठित और व्यवस्थित हाकर प्रयत्न करना हागा। परन्तु इस लक्ष्य को पान स पहल सभी राजनीतिक राष्ट्रीय दला ओर जनता क प्रतिनिधिया का एक बुनियादी समस्या क स्थायी समाधान क लिए न कवल चिन्तन करना चाहिए प्रत्युत सभी दला आर जन प्रतिनिधियो को उसकी पूर्ति म अपनी भूमिका प्रस्तुत करनी चाहिए। हिमालय स समुद्र तक ओर पश्चिम म समुद्र लेकर समुद्र स तक की विस्तीर्ण भारत भूमि की सच्ची एकता ओर स्थायी सहयोग की व्यवस्थित योजना पूर्ण करनी चाहिए वहा हमे भूलना नही चाहिए कि स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे भी आर्थिक सामाजिक और सास्कृतिक दृष्टि से आज भी कोटि कोटि देशवासी अभावो विषमताओ और भेदभाव से ग्रस्त है। कोटि कोटि भारतीय देशवासी आज भी आर्थिक सामाजिक ओर सास्कृतिक भेदभाव से पूर्ण हैं। राष्ट्र के विभक्त भागो की एकता के लिए जहा हमे सदा जागरूक रहना चाहिए वहा सामान्य जनता मे आर्थिक सामाजिक ओर सास्कृतिक कष्टो और विषमताओ का तो तुरन्त उन्मूलन होना चाहिए। स्वाधीनता प्राप्ति के ५५वे वर्ष मे भी यदि कोटि कोटि भारतीय जनता निरक्षर अशिक्षित एव आर्थिक सामाजिक सास्कृतिक दृष्टि से अनेक भेदभावो विषमताओ स जूझ रही हे तो देश के चिन्तको नेताओ और जागरूक प्रेक्षको का यह समझना होगा कि अभी भी सच्चे स्वराज्य की आर्थिक सामाजिक आर सास्कृतिक प्रगति क लाभ से दश की कोटि कोटि जनता वचित हे। देश मे जब करोडो स्त्री पुरुष निरक्षर हा सामाजिक आर्थिक और सास्कृतिक दृष्टि से उनम बुनियादी भेद हो तो हम समझना होगा कि राजनीतिक स्वराज्य प्राप्ति के बावजूद राष्ट्र के करोडो बच्च नारिया और पुरुष क्यो निरक्षर हे सामाजिक और सास्कृतिक दृष्टि से उनमे क्यो इतने भेदभाव ह। विभक्त भारत राष्ट्र के तीनो भूभागा की एकता ओर अखण्डता जितनी आवश्यक ह उतनी ही देश के लाखो गावो और बस्तिओ मे सास लेती हुई नारिया बच्चो और सामान्य जनता की सच्ची आर्थिक सामाजिक और सास्कृतिक समानता ओर सोमनस्य भी अपेक्षित हे।

यह चिन्ता और आत्मनिरीक्षण की बात ह कि भारत की कोटि नारिया बच्चो और पुरुष समाज की सच्ची आर्थिक सामाजिक ओर सास्कृतिक समानता प्रगति ओर सौमनस्य की मुख्य समस्या पर उतना ध्यान नही दिया गया जितना कि दिया जाना चाहिए था। जब तक दश म करोडो की सख्या मे स्त्रिया पुरुष ओर बच्चे निरक्षर बेकार निरुद्देश्य है तब तक राष्ट के सुधी चिन्तको को समझना होगा कि सारी प्रगति ओर उपलब्धियो के बावजूद राष्ट्र की सच्ची प्राप्ति और गरिमा उस समय तक अधूरी है जब तक देश के करोडो बच्चो स्त्रियो और राष्ट्रजनो का सामाजिक आर्थिक और सास्कृतिक दृष्टि से अभावो कष्टो अपूणताओ से जूझते हुए सच्ची समानता प्रगति ओर सौमनस्य की उपलब्धि नही हो जाती। स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे भी यदि भारत की कराडो नारिया बच्च ओर नागरिक यदि राष्ट्रीय जीवन मे अपना सच्चा योदान नही कर रहे ता देशवासियो को समझना हागा कि राष्ट्र का एक बडा भाग सच्ची शैक्षणिक सास्कृतिक सामाजिक समानता और उपलब्धियो से वचित हे। स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे भारतीय नारियो बच्चे ओर ओर दूसरे प्रजाजन यदि अशिक्षित हे बेरोजगार ओर राष्ट्र क लिए अनुपयुक्त हो तो समझना होगा कि भारत राष्ट्र की प्रगति उपलब्धि और समुन्नति की सच्ची नीव नही रखी गई।

स्वाधीनता क ५५व वष मे प्रत्यक जागरूक भारतीय नागरिक को दश की इस दुरवस्था विषमता और भदभाव का अन्त करने के लिए राष्ट्र म एक नया जन जागरण का अभियान चलाना होगा। राष्ट्र के राजनीतिक दृष्टि से पृथक हुए भूभागा का भारत राष्ट्र म सयुक्त करना जितना आवश्यक ह लगभग उतना ही आवश्यक हे देश की कराडो स्त्रियो बच्चा और सामान्य जनत की सच्ची समुन्नति समानता आर गरिमा। देश मे व्याप्त अभावो विषमताआ और भदभाव का स्थायी उन्मूलन तभी सम्भव हो सकगा। जब जब प्रतिनिधिया ओर शासन के सक्रिय सहयाग से दश के कराडा प्रजाजनो नारियो बच्चा म विद्यमान आथिक सामाजिक सास्कृतिक विषमता क स्थायी उन्मूलन करन के लिए उनकी शारीरिक सामाजिक ओर सास्कृतिक भूमिका और सहयाग का व्यवस्थित प्रयत्न किया जाए। विश्व म समृद्ध प्रगतिशील राष्ट्र व ही हे जहा के सभी नागरिक नारिया और बच्च अपन राष्ट्रीय अभावा अपूणताआ का उन्मूलन करन क लिए अपनी सार्थक भूमिका प्रस्तुत करत है। देश के सामान्य नागरिको स्त्रिया ओर बच्चो को राष्ट्र की उन्नति ओर समृद्धि लान क लिए राष्ट्र की सर्वागीण प्रगति मे अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत करनी चाहिए। इस दिशा मे यदि भारत की जनता ने अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत की तो कुछ ही समय मे देश मे एक नई आर्थिक सास्कृतिक क्रान्ति के दर्शन हो सकेगे।

चिट्ठी-पत्री

वंशवाद की परम्परा

विदेशी नौकरशाहो द्वारा निर्मित काग्रेस उस समय तक बुद्धिविलासियो की चौपाल से अधिक कभी कुछ नहीं रही जब तक गाधी जी के आध्यात्मिक चरित्र ने उसे भारतीय मानस से एकाकार नहीं कराया। आर्यसमाजियो के योगदान से सस्था को राष्ट्रीय स्वरूप और भारतीय चरित्र मिला। किन्तु मन से देश की प्रथम प्रधान सस्था को फिर विदेशी बना दिया तब से आज तक सस्था के चिन्तन चरित्र चाल स्वरूप मे उस पर विदेशी स्वरूप मिला। काग्रेस आज एक राजनीतिक वशवाद की पक्षधर है।

– शरण, सेक्टर २५, नोएडा

सबक सिखाकर दम लेगे

पाकिस्तान शायद १९७१ की वह मार भूल गया जब याहिया खा धमकी दे रहे थे और भारत सयम से काम ले रहा था। उस समय पाक फौज बगलादेश के बच्चे औरतो का खुला कत्लेआम कर रही थी। १९७१ मे भारत ने अपनी थोडी सी शक्ति का प्रयोग किया था जब जन० नियाजी की कमान मे ८५ हजार पाक फौजियो ने बिना लडे हथियार डाल दिए थे। जनरल मुशर्रफ लोकतन्त्र का गला घोटकर वहा के राष्ट्रपति बने है और भारत को परमाणु बमो के प्रयोग की धमकी दे रहे हैं। अभी तक भारत ने पाकिस्तान की धमकियो की इसलिए उपेक्षा कि वह कभी भारत का ही हिस्सा था। जन० मुशर्रफ को भूलना नही चाहिए कि भारत एक महाशक्ति है उसने किसी प्रदर्शन के लिए नहीं पर अपनी रक्षा के लिए परमाणु हथियार बनाए है। हम अपने पडोसियो से प्यार–मोहब्बत के साथ रहना चाहते है परन्तु जन० मुशर्रफ ने अपने गन्दे विचार नही बदले और ऐसे धमकी देते रहे तो हम पाक को सबक सिखाकर ही दम लेगे।

– हसीनखा नूरी
पूर्वी पुराना सीलमपुर दिल्ली ३१

यजुर्वेद से जीवनधारक तत्व स्पतकम (४) उत्तरार्द्ध

जीवन-धारक तत्वों को धारण करने का आदेश

– प० मनोहर विद्यालकार

(५) शरीर के दिव्य द्वारो को पवित्र रखने वाले मानव का जीवन उत्कृष्ट होता है

दुरो देवीर्दिशो महीर्ब्रह्मा देवो बृहस्पति।
पडक्तिश्छन्द इहेन्द्रिय सूर्यवाड गौर्वयो दधु ।।

यजु० २१/१६

ऋषि स्वस्त्यात्रेय। देवता विद्वास। छन्द अनुष्टुप।

अर्थ (देवी दुर) उत्तमता से कार्य करने वाले दिव्य द्वार {मुख पायु उपस्थ–ब्रह्मरन्ध्र} सही दिशा महनीय दिशाए {प्राची प्रतीची उदीची अवाची} अपने नामो से आगे बढने (प्र–अञ्च) इन्द्रियो को विषयो स वापस (प्रत्याहार प्रति–अञ्च) करने आध्यात्मिक दृष्टि से ऊचा उठने (उत अञ्च) और सदा निरहकार विनम्र बने रहने (अव अञ्च) का उपदेश देने वाली ये दिशाए (ब्रह्मा) जगत का निर्माता (देव) दिवु क्रीडा जीवन और जगत को खेल की भावना से ग्रहण करना तथा (बृहस्पति) बृहती वेदवाणी ओर ब्रह्माण्ड के स्वामी का स्वय को पुत्र मानकर उसके अनुरूप बनने का प्रयास (पडक्ति छन्द) यजमान बनकर अपने को यज्ञमय बनाने की इच्छा (तुर्यवाड गो) तथा जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीनो से ऊपर उठकर चतुर्थ समिधा को वहन करने वाली ज्ञान रश्मि कल्याण चाहने वाल आत्रेय के (इन्द्रियम) प्रत्येक इन्द्रिय सामर्थ्य ओर (वय) जीवन को इस प्रकार (दधु) धारण करती है कि वह कामनाओ से मुक्त हो जाए।

अर्थपोषक प्रमाण पडक्ति – यजमानो वै पडक्ति। मै० ३/३/६। यज्ञो वै पडक्ति। जै० १/२२६।

निष्कर्ष – दिव्यगुणो वाले द्वारो को शुद्ध व स्वस्थ रखने वाला महनीय दिशाओ के निर्देशो का पालन कर्ता सृष्टि निर्माता और देवगुरु बृहस्पति का अनुसरण कर्ता यजमान बनकर पूजा सगति दान कार्यो मे नमग्न तुरीयावस्था (समधि=पूर्ण एकाग्रता) को दिलाने वाली ज्ञान रश्मि सम्पन्न व्यक्ति हर प्रकार के सामर्थ्य को प्राप्त करके निष्काम बनकर मुक्त या इस अवस्था प्राप्ति के बाद के जीवन मे किए कर्मो से मुक्त हो जाता है।

विशेष – अथव १६/२१/१ मे मुख्य सात छन्दो की गणना करते हुए पक्ति के बदले विराट को लिया गया है। यजुर्वेद के २१/१६ मे पक्ति छन्द और २१/१६ मे विराट छन्द को शक्तिप्रद और जीवन धारक माना है।

२१/१६– दुरोदेवी – दिश मही – ब्रह्मा देवो बृहस्पति। तुर्यवाड गौ (पक्ति)

२१/१६ – तिस्र देवी – विश मरुत – इडा सरस्वती भारती। धेनु गौ (विराट्)।

पक्ति शब्द – पचि व्यक्तिकरणे तथा विस्तार वचने से बना है। यह मन्त्र मनुष्य के गुणो को वि तारपूर्वक व्यक्त करता है। विराट शब्द – राजृदीप्तौ से बना है। इन दोनो मन्त्रो मे छन्द शब्द मानव जाति के अर्ध अर्धभाग के लिए आवश्यक गुणो को प्रकाशित करने के कारण दोनो मिलकर एक ईकाई के सूचक है। किसी एक को कहने से मनुष्य से नर+नारी के ग्रहण की दोनो का ग्रहण होगा।

मरुत विश– मितराविण महद द्रवन्तिवा। नि० ११/१३। कम बोलने और अधिक कार्य करने वाली प्रजाए। इन्ह तिस्र देवी के साथ रखा है और मही दिश – को ब्रह्मा बृहस्पति देवो के साथ रखा है क्योकि दिशाए बोलती ही नहीं केवल अपने नाम से ही कार्य का सकेत करती है। इस प्रकार दोनो मन्त्रो मे नर और नारी को मिलाकर इकाई बनाई है।

(६) शरीर, मन, मस्तिष्क तीनो की समतुलित उन्नति मनुष्यो को उत्कष्ट बनाती है।

उषे यह्वी सुपेशसा विश्वेदेवाअमर्त्या।
त्रिष्टुप छन्द इहेन्द्रिय पष्ठवाड गौर्वयो दधु ।।

यजुव २१/१७

ऋषि स्वस्त्यात्रेय। देवता विश्वेदेवा। छन्द निचृदनुष्टुप।

अथ (यही उषे सुपेशसा) दोनो उषाकाल महिमा सम्पन्न और उत्तम (आकषक) रूप वाले है – द्विवचन का प्रयोग होने से यहा उषे शब्द से दोनो सध्याकाल अथवा दिन रात का ग्रहण किया जाता है (विश्वेदेवा अमर्त्या) प्राकृतिक सब देव (पच महाभूत सूय चन्द्र इत्यादि) अपनी पूर्ण आयु (प्रलय) पहले नहीं मरते इसलिए अमर कहलाते हे। (त्रिष्टुप छन्द) शरीर मन और आत्मा तीनो को उन्नत करने की इच्छा (पष्ठवाडा गौ) पीठ से शकर को वहन करने वाले वृषभ के समान अपने कर्त्तव्यभार वहन के दायित्व का ज्ञान मिलकर साधक के अग प्रत्यग को (इन्द्रियम) सशक्त तथा (वय) जीवन को उत्कृष्ट स्थिति मे (दधु) धारण करते है – पहुचा देते है।

निष्कर्ष – (१) शरीर मन और आत्मा तीनो को उन्नत करने की इच्छा के साथ (२) दोनो सन्ध्या कालो मे प्रभु का ध्यान करते हुए आत्मा को सूर्य सदृश प्रदीप्त और मन को चन्द्र सम आहलादित रखने का प्रयत्न (३) शरीर मे विद्यमान अग्नि आदि देवो को नीरोग (जीवित) रखने की अभिलाषा (४) शकर वाहक वृषभ के समान स्व–कर्त्तव्य वहन का दायित्व ज्ञान मिलकर – साधक के अग प्रत्यग को सशक्त और जीवन को उत्कृष्ट व स्तुल्य बना देते है।

अर्थपोषण – छन्द पद्ये च वेदे च स्वैराचारा भिलाषयो। मेदिनी

त्रिष्टुप – त्रीन स्तोपयति स्तुप समुच्छाये।

विश्वेदेवा – अग्निर्वाग्भूत्वा मुख प्राविशत इत्यादि

पष्ठवाड – पष्ठेन पृष्ठेन शकर वहतीति गौ – वृषभ – तद्वत

अमर्त्या – अ – मृता=जीविता। एतद्वै मनुष्यस्यामृतत्व यत्सर्व मायुरेति। शत० ६–५–१–१०

यह्वी – यह्व महन्नाम। नि० ३–३

सुपेशसा – सु (सुन्दर–आकर्षक)+पेश (रूप नामा नि ३–७) रूप वाले।

(७) सामान्य गृहस्थ भी प्राण साधना के साथ प्रभु का सखा बनकर जगती का कल्याण करते हुए युग पुरुष बन सकता है

दैव्या होतारा भिषजेन्द्रेण सयुजा युजा।
जगती छन्द इन्द्रियमनडवान गौर्वयो दधु ।।

यजु० २१–१८

ऋषि स्वस्त्यात्रेय। देवता विश्वेदेवा। छन्द निचृदनुष्टुप।

अर्थ – (आत्रेय) सतत क्रियाशील रहकर काम क्रोध लोभ पर विजय पाने वाले आत्रेय ऋषि ने (जगती स्वस्ति छन्द) लोक *कल्याण की* प्रबल अभिलाषा से विद्वान ऋत्विजो से रोगो को दूर रखने और कुटिलता तथा लोभ की दुर्भावना को नष्ट करने की प्रार्थना की थी। उसके उत्तर मे उन्हाने १२ से १७ तक के मन्त्रो मे छन्दो से निर्दिष्ट भावनाओ के साथ बहुत से उपाय सुझाए है। अब आत्रेय ने जगती (लोक) के कल्याण के लिए पुन विश्वेदेवो से मार्गदर्शन की प्रार्थना की तो उन्होने सक्षेप से सार रूप मे निम्न उपाय बताए –

(१) (दैव्या होतारा भिषजा) प्राणापान की साधना को अपना चिकित्सक समझो इन्हे ठीक रखोगे तो शारीरिक व मानसिक कोई रोग नही होगा।

(२) (इन्द्रण युजा सयुजा) परमेश्वर योग्य सखा बनकर कार्य करने वाल ओर स्वय परस्पर सयुक्त मन और बुद्धि को सन्मार्ग पर लगाओ तो आदर मिलेगा और यशस्वी बनोगे सदा सासारिक बन्धनो से अनासक्त तथा निर्भय रहोगे।

(३) (अनडवान गौ) शकर को खीचने वाले वृषभ की तरह जीवन की गाडी को सुख सुविधा पूर्वक चलाने वाले व्यावहारिक ज्ञान (अविद्या) को भी अर्जित करोगे तो इह लोक का भी सुख मिलेगा और परलोक की भी कोई चिन्ता नहीं सताएगी। क्योकि ये उपाय स्वय को अपनाने वालो के (वय दधु) जीवन को श्रीकृष्ण की तरह धन्य बनाकर युग पुरुष बना देते हैं।

अर्थपोषण – प्राणापानौ हि दैव्या होतारा। ऐ० २४ युजौ–परस्पर सम्बद्धौ मनोबुद्धी। अनडवान – अन शकर वहतीति – गौ – स्वर्गे च बलीवर्दे रश्मौ च कुलिशे पुमान। मेदिनी युजा सयुजा – इन्द्रस्य युज्य सखा ऋक १–२२–१६

निष्कर्ष – (१) जगती के कल्याण के लिए – प्राणापान की साधना मन बुद्धि का सयम जीवन शकर को वहन करने के लिए व्यवहार ज्ञान आवश्यक है। इनको अपनाने से लोक कल्याण होता है और अपना जीवन उत्कृष्ट (सुखी) रहता है।

(२) गायत्र्युष्ठिाक – अनुष्टुप – बृहती पक्ति –त्रिष्टुप–जगत्यै।। अथर्व १६–२१–१

इन छन्द नामो के अर्थ लोक कल्याण के लिए (जगत्यै) आवश्य निर्देशो का सकेत करते हैं।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन खाडी बावली दिल्ली ६

प्रथम पृष्ठ का शेष

यज्ञ, प्रवचन एवं भजन सन्ध्या का भव्य आयोजन

रतनदेवी आर्य कन्या उच्चतम माध्यमिक विद्यालय कृष्णनगर की अध्यक्षा एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की उप प्रधाना माता ईश्वर देवी धवन विद्यालय के प्रबन्धक श्री सुरेन्द्र गम्भीर प्रबन्धक समिति के सदस्य श्री पुरुषोत्तम लाल नरुला एव श्री रन्द्र गम्भीर स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती मनोरमा चौधरी एव उनकी सहयोगी अध्यापिकाओ आर्यसमाज कृष्ण नगर के प्रधान श्री विश्वम्भर नाथ अरोडा उप प्रधान श्री जगदीश्वर कठपालिया तथा मन्त्री डा० हर भगवान मलिक के सक्रिय सहयोग से रजत वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित यह कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर विधायक श्री नसीब सिह एव डा० हर्षवर्धन को **ओ३म का स्मृति** चिन्ह भेटकर सम्मानित भी किया गया।

सगीताचार्य सर्वश्री अरविन्द तथा उनके साथी श्री नरेन्द्र आर्य श्रीमती शशि प्रभा आर्या एव कुमारी आकाक्षा ने अपने अपने भजन प्रस्तुत किए।

इस कार्यक्रम के आयोजन के अवसर पर माता ईश्वर देवी धवन जी के सहयोग एव प्रेरणा से दिल्ली सभा को ५२०००/– रुपये की थैली सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा को भेट की गई जिसे उन्होने सभा महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी को सौंप दिया।

इस अवसर पर पूर्वी दिल्ली की आर्यसमाजो के पदाधिकारियो के अतिरिक्त दिल्ली के अन्य क्षेत्रो से श्री अधिकारीगण आर्यजन एव विद्यालय की अध्यापिकाओ के परिवारजन बहुत बडी सख्या मे उपस्थित थे।

विद्यालय के प्रबन्धक श्री सुरेन्द्र गम्भीर ने विद्यालय की अध्यक्षा माता ईश्वर देवी धवन के सहयोग से बहुत ही बढिया भोजन की व्यवस्था की जिसका सभी उपस्थित आर्यजनो ने भरपूर आनन्द उठाया।

समारोह मे आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सुरेन्द्र रैली एव मन्त्री श्री अभिमन्यु चावला दिल्ली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान प्रि० चन्द्रदेव महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव सर्वश्री पतराम त्यागी विश्म्भरनाथ अरोडा पुरुषोत्तम लाल नरुला रोशन लाल गुप्त विनय आर्य श्री राजेन्द्र दुर्गा श्री मदनमोहन सलूजा श्री रवि बहल श्री ओमप्रकाश भटनागर श्री अरुण वर्मा श्री राजीव भाटिया डा० रविकान्त सत्येन्द्र मिश्र बहन सावित्री देवी जी श्रीमती ऋचा श्रीमती मनोरमा चौधरी तथा श्री के०पी० सिह आदि भी मौजूद थे।

अन्त मे सभा महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने सभी आमन्त्रित आगन्तुक महानुभावो का तथा रतनदेवी आर्य कन्या उच्चतम माध्यमिक विद्यालय कृष्णनगर की प्रबन्ध समिति अध्यापिकाओ एवं कर्मचारियो का धन्यवाद किया।



आधारशिला से पूर्व यजमान यज्ञ करत हुए भजन सन्ध्या मे सगीताचार्य श्री अरविन्द अपने कलाकार साथियो एव सभा मन्त्री एव सयोजक श्री नरेन्द्र आर्य।

आर्यसमाज मन्दिर गाधीनगर जम्मू का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर के तत्वावधान मे आर्यसमाज गान्धी नगर जम्मू की ओर से पिछले ३ से ५ मई २००२ को वार्षिकोत्सव आर्यसमाज मन्दिर गान्धीनगर मे बडी धूमधाम और पूरे उत्साह से मनाया गया।

कार्यक्रम सुबह ७ बजे से पवित्र यज्ञ अथर्ववेद के पाठ से शुरु होकर १० बजे तक विद्वानो के भजन एव प्रवचन तथा शाम को ५ से ७ बजे तक पुन बाहर से आये हुए विद्वानो के उच्चकोटि के प्रवचनो और वैदिक धर्म पर आधारित भजन आदि से पूर्ण होता रहा तथा अन्त मे ऋषि लगर की विशाल व्यवस्था के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर, तिलहर शाहजहापुर

प्रवेश - सूचना

विगत वर्षो की श्लाधनीय उपलब्धियो के साथ गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर' का नवीन शैक्षिक सत्र ८ जुलाई से प्रारम्भ होने जा रहा है। अध्यापन सौविध्य को दृष्टिगत करते हुए शिक्षणादि क्रम तीन वर्गो मे विभक्त है।

प्रवेशिका विभाग प्रथम से पञ्चम तक बेसिक शिक्षा परिषद के निर्धारित पाठयक्रम के साथ धार्मिक नैतिक योगासन पी०टी० आदि के प्रशिक्षण की विशिष्ट सुविधा है।

मध्यमा विभाग षष्ठ से द्वादश तक उत्तर प्रदेश माध्यमिक सस्कृत शिक्षा परिषद लखनऊ के निर्धारित पाठयक्रमानुसार सभी आधुनिक विषयो (अग्रेजी गणित विज्ञानादि) के अध्यापन का सुचारु प्रबन्ध है।

स्नातक विभाग सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बद्ध शास्त्री आचार्य के पाठयक्रमानुसार प्राचीन तथा सभी आधुनिक विषयो के अध्यापन के साथ एन०सी०सी० एन०एस०एस० प्रशिक्षण की विशिष्ट सुविधा उपलब्ध है।

भारतीय परिवेश मे आवासीय पद्धति पर आधारित व्यक्तित्व का समग्र विकास सतत अध्यवसाय स्वावलम्बन एव सह अस्तित्व की भावना उद्दीप्त करना गुरुकुल शिक्षा पद्धति की मौलिक विशेषता है।

दूरभाष विद्युच्चालित उपकरणो से युक्त गुरुकुल का एकान्त शान्त सुरम्य वातावरण अध्ययन मनन के लिये नितान्त उपयोगी है। सम्पर्क करे –

डॉ० सूर्यदेव शास्त्री प्राचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर
तिलहर शाहजहापुर (उ०प्र०)

वैदिक धर्म अपनाया

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे दिनाक २० मई २००२ को श्री ए०इ० अब्राहम सुपुत्र श्री एन० अब्राहम निवासी – २७/७ दक्ष रोड विश्वास नगर शाहदरा का शुद्धि सस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया। श्रीए०इ० अब्राहम ने अपनी स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण कर अपना नाम आशुतोष आर्य रख लिया है। यह शुद्धि सस्कार डा० कर्णदेव शास्त्री द्वारा कराया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान
श्री प्रताप भाई का सभा कार्यालय में स्वागत



सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान श्री प्रताप सिह शूरजी वल्लभ दास का सावदेशिक सभा कायालय मे भ य स्वागत किया गया। स्मृति चिन्ह प्रदान करत हुए सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा एव श्री विमल वधावन। पुरानी स्मृतियो को सुनते अन्य अधिकारीगण।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री प्रतापसिह शूरजी बल्लभदास का २८ जून को सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे पधारने पर भव्य अभिनन्दन किया गया। श्री प्रताप भाइ अपन सुपात्र क ५ ग्ह ारकार का सम्पन्न कराने क लिए विगत माह दिल्ली आये थे। विवाह सस्कार वेदिक रीति से सम्पन्न हुआ जिसमे प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा उप प्रधानमन्त्री श्री लालकष्ण आडवाणी सहित कई अ य सभासद नेता उपस्थित थे। सार्वदेशिक सभा की ओर से वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा सभा के पूर्व मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री भी शामिल हुए।

श्री प्रताप सिह शूरजी बल्लभदास १९६३ से १९७० तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे कई अधिकारियो की उपस्थिति मे उनका भव्य स्वागत किया गया।

सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि श्री प्रताप भाई जी का कार्यकाल प्रेरणाओ और कर्मठ गतिविधियो से परिपूर्ण रहा है। आपके कार्यकाल मे ही लाल बहादुर शास्त्री जब प्रधानमन्त्री थे तो अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की स्थापना की गई थी। आपातकाल मे आपको और आपके परिवार को गम्भीर यातनाए दी गई थी। आपके परिवार के उस गौरवशाली इतिहास की भी अनदेखी कर दी गई जब आपके परिवार ने स्वतन्त्रता आन्दोलन मे लाखो रुपये की सहायता काग्रेस को उपलब्ध कराई थी।

१९७५ मे आर्यसमाज शताब्दी महासम्मेलन मे श्री प्रताप भाई स्वागताध्यक्ष और कछ दिन पूर्व उन्ह जेल मे बन्द कर दिया गया। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी न जब श्रीमती इन्दिरा गाधी जी से मिलकर उन्हे वस्तुस्थिति से अवगत कराया ता उनकी रिहाई सम्भव हुई।

सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा जी ने कहा कि आपातकाल मे श्री प्रताप भाई की गिरफ्तारी के कारण मुम्बई मे आयोजित किया जाने वाला शताब्दी सम्मेलन मुम्बई के स्थान पर दिल्ली मे आयोजित करना पडा उस वक्त दिल्ली वासियो ने अपार उत्साह का परिचय देते हुए उस सम्मेलन को सफल किया।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि श्री प्रताप भाई का ७ वर्ष का प्रधान का कार्यकाल बडी सुखद स्मृतियो से भरा हुआ है। उन्होने कुछ पुरानी स्मृतियो का उल्लेख करके सबके सामने श्री प्रताप भाई के सार्वदेशिक सभा के प्रधान काल की तस्वीर प्रस्तुत की।

श्री प्रताप सिह शूरजी बल्लभ दास ने कहा कि मै अपने जीवन मे आर्यसमाज की जितनी भी सेवा कर पाया हू वह केवल श्रद्धाभावना का ही परिणाम था। आर्यसमाज जैसी पवित्र सस्था मे हमे अपने कर्तव्य पालन की ओर ध्यान देना चाहिए। परन्तु पिछले कुछ वर्षो से मै महसूस कर रहा हू कि कुछ अधिकारवादी लोगो ने इस सगठन क वातावरण का दूषित करन का प्रयास कि ा हे हालाकि व अभी तक सफल नही हुए परन्तु एसे लागो का मुकाबला करने क लिए समूचे आर्यजगत से श्रद्धाभाव वाले व्यक्तियो को सुदृढ सगठन क रूप मे कार्य करना चाहिए।

श्री प्रताप सिह शूरजी बल्लभ दास का मोतियो की माला श्रीफल स्मृति चिन्ह तथा पुष्पमालाओ से सभा कार्यालय मे स्वागत किया गया। इस स्वागत समारोह मे श्री विमल वधावन श्री वेदव्रत शर्मा डा० सच्चिदान द शार्ी श्री लक्ष्मीचन्द श्री राजसिह भल्ला श्री सामदत्त महाजन श्री इन्द्रदेव श्री राजन्द्र दुर्गा श्री पुरुषोत्तमदास गुप्ता श्री रोशनलाल गुप्ता तथा श्री विनय आर्य उपस्थित थे।

ग्यारहवा बाल शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज टैगोर गार्डन (ए०सी०ब्लाक) नई दिल्ली २७ द्वारा ११वा बाल शिविर १२ मई से २६ मई २००२ तक आयोजित किया गया। शिविर का उदघाटन १२ मई को यज्ञ हवन के उपरान्त डा० अभयदेव शर्मा अध्यक्ष वेद सस्थान ने किया। उदघाटन समारोह की अध्यक्षता प्रतिष्ठित स्थानीय सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री सुरेन्द्र कुमार भाटिया ने की।

१५ दिनो तक चलने वाले शिविर मे चौथी कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा तक के लगभग १२० बच्चो ने बौद्धिक प्रशिक्षण के माध्यम से भारतीय वैदिक सस्कति के महान जीवन मूल्यो का ज्ञान प्राप्त किया। सगीत शिक्षण के माध्यम से ईश्वर भक्ति देश भक्ति की भावनाओ को आत्मसात किया। हस्तकला चित्रकला योगासन सिखाए श्रीमती गीता शर्मा सेवा निवृत प्रधानाचार्या श्रीमती सुमन गुप्ता एव श्रीमती प्रतिभा मल्होत्रा ने नैतिक प्रशिक्षण दिया। श्रीमती अनुराधा नन्दा ने हस्तकला–चित्रकला मे और श्री राज मल्होत्रा ने सगीत मे मार्गदर्शन दिया।

दिनाक २६ ५ २००२ को समापन समारोह श्री रामजीलाल गोयल प्रधान आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य क्षेत्रीय विधायक श्री जसपाल सिह निगम पार्षद श्री अशोक वोहरा शिक्षा शास्त्री श्रीमती शशिप्रभा गोयल ने बच्चो द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की मुक्त कण्ठ से प्रशसा करते हुए बच्चो को आशीर्वाद दिया और आर्य समाज टैगोर गार्डन को शिविर आयोजित करने के लिए बधाई दी। पूरे शिविर मे उत्तम प्रदर्शन करने वाले बच्चो को शील्ड और कप प्रदान करके प्ररस्कृत किया गया।

रमेश चन्द्र गुप्त प्रचार मन्त्री आर्यसमाज टैगोर गार्डन (ए०सी० ब्लॉक) नई दिल्ली २७

स्वास्थ्य चर्चा

स्वस्थ रहने के लिए भावनाओं को संतुलित रखें

– डॉ० जे०एल० अग्रवाल

मन और शरीर का अभिन्न अटूट सम्बन्ध है। शरीर मे कष्ट होने से मानसिक तनाव हो सकता है। जबकि मानसिक तनाव के कारण अनेक शारीरिक रोग हो सकते हैं। मानव बौद्धिक प्राणी है। सोच वातावरण मे बदलाव दूसरो के विचार व्यवहार के कारण उनमे विभिन्न प्रतिक्रियाए होती है। स्वस्थ निरोगी सफल होने के लिए भावनाओ विचारो का स्वस्थ सन्तुलित होना भी आवश्यक है। सुख दुख प्यार नफरत दया सन्तुष्टि–असतुष्टि स्वय पर दया स्वय को दीन–हीन समझना बेइज्जत होने पर पीडा प्रियजन की मृत्यु बीमारी नुकसान होने पर दुख इत्यादि नाना प्रकार की भावनाओ के रग विचार मनुष्य मे उत्पन्न हो सकते हैं।

भावनाए व विचार सकारात्मक हो सकते हैं। जिनसे खुशी मिलती है या फिर नकारात्मक हो सकते है जिनसे दु ख क्लेश या मानसिक समस्याओ की उत्पत्ति हो सकती है। यदि मन मे नकारात्मक विचार या भावनाए जैसे – बीमारी मृत्यु का भय स्वय से नफरत हीन भावना दूसरो की गलती मीनमेख निकालना इत्यादि के कारण अनेक शारीरिक मानसिक रोग ग्रसित होने का डर रहता है।

भावनाओ विचारो के कारण प्राय शारीरिक परिवर्तन भी होते है। विभिन्न भावनाओ के कारण हृदयगति रक्तचाप आतो की गति बढधट सकती है। इनका सम्बन्ध भूख पेशाब मल त्याग की आदत से भी होता है। आखो की पुतलिया मे परिवर्तन हो सकता है पसीना आ सकता है। विचारो–भावनाओ के कारण शरीर मे विभिन्न अगो की हरकते जैसे सिर हिलाना हाथ अगुलिया हिलाना इत्यादि हो सकती है। भावनाओ की उत्पत्ति अत्यधिक जटिल प्रक्रिया है इनकी उत्पत्ति मे पुराने सुखद–दुखद अच्छे बुरे अनुभवो तथा वर्तमान व भविष्य मे होने वाले प्रभावो परिणामो के अनुसार ही भावनाओ विचारो की उत्पत्ति होती है। दुखद नकारात्मक भावनाओ के कारण मानसिक क्लेष हो सकता है अनेक शारीरिक रोग जैसे एन्जाइना हार्ट अटैक स्ट्रेक (फालिज) उच्च रक्तचाप मधुमेह दमा एलर्जी कुछ अगो के कैंसर पष्टिक अल्सर इत्यादि बीमारियो की चपेट मे आने का भय रहता है।

यदि भावनाओ विचारो को सतुलित या सकारात्मक रखा जाए तो जीवन सुखमय हो जाता है। कार्य क्षमता बढती है दूसरो से सौहार्द्रपूर्ण मधुर सम्बन्ध बनते हैं जीवन मे सफलता मिलती है रोग ग्रस्त होने का डर कम हो जाता है। रोगग्रस्त होने पर सकारात्मक विचार रखने पर स्वास्थ्य लाभ शीघ्र और तेजी से होता है। विचार–भावनाओ का शरीर से अन्तरग सम्बन्ध है। ज्यादातर व्यक्तियो को विचारो भावनाओ के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभावो का अहसास नहीं होता अत भावनाओ विचारों को स्वस्थ बनाने के प्रयास नहीं करते।

भावात्मक समस्याओ से बचाव समस्याए होने पर उपचार एव सकरात्मक भावनाओ का विकास द्वारा जीवन की गुणवत्ता मे सुधार लाया जा सकता है।

निम्न सिद्धान्तो के पालन करने से भावनात्मक सतुलन तथा सकारात्मक भावनाए बनाए रखी जा सकती है। जिससे जीवन स्वस्थ सुखमय व सफल हो सकता है।

जीवन को व्यवस्थित रखे। बिना सोचे समझे अव्यवस्थित होने से हर स्तर पर अस्त व्यस्त हो जाते है। हडबडी मे कार्य करने मे भावात्मक समस्याए होने का डर बढ जाता है।

आरामदायक पर्याप्त समय के लिए नींद जरूरी है। नींद न आने आवश्यकता से कम समय सोने से बेचैनी झुझलाहट होती है गुस्सा जल्दी आता है जिससे बेवजह बहस नोकझोक झगडे हो सकते हैं।

यदि कब्ज रहता है तो बेचैनी एकाग्रता मे कमी कार्य मे मन न लगना बातचीत मे कडुवाहट क्षमता मे कमी हो सकती है जिसके कारण घर ऑफिस मे अशान्त वातावरण उत्पन्न हो सकता है। अत यदि कब्ज रहता है तो रेशे युक्त भोज्य पदार्थो का सेवन प्रचुर मात्रा मे करे।

नियमित रूप से स्नान करे। इससे स्फूर्ति ताजगी आती है थकान दूर हो जाती है दिन भर तरोताजा रहते है सकारात्मक विचार व भावनाए उत्पन्न होती है। घर एव आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखे। सही नाप के स्वच्छ वस्त्र पहने। ढीले–ढाले कपडे जूते चश्मा पहनने से बेचैनी रहती है मन अशात रहता है। परिवारजनो नाते–रिश्तेदार पडोसियो दोस्तो सहकर्मियो आदि से मधुर सम्बन्ध बनाए। छोटी छोटी गलतियो को नजरअन्दाज करे। मन के विचार खुलकर व्यक्त करे। जीवन मे प्रसन्नता खुशी के लिए भी समय निकाले। नशीले पदार्थों का सेवन मस्तिक का मानसिक भावानात्मक रूप से कमजोर बना देता है। अत इनका सेवन न करे। नियमित व्यायाम करे स्वास्थ्य बेहतर होता है तो मानसिक शान्ति मिलती है। स्वस्थ शरीर और तनाव मुक्त मन से ही स्वस्थ भावनाए आ सकती हैं। हर व्यक्ति के कुछ अन्तरग विश्वासी मित्र होना आवश्यक है जिनसे आप अपनी भावनाए विचार निसकोच कह सके जिससे तनाव कम होता है।

यदि पुस्तको को पढने के शौकीन हैं तो अच्छी पुस्तको का अध्ययन करे। इनके मनन से जीवन मे विचार दृष्टिकोण बदल जाएगे। सदैव शुभ सकारात्मक विचार मन मे आने दे। जिससे सकारात्मक अनुभव होगे जीवन सुखद सफल होगा। जीवन की अधिकाश समस्याओ का कारण भावनाए व विचार हैं। भावनाओ विचारो को सतुलित व्यवस्थित स्वस्थ बनाकर स्वय के जीवन को सुखमय स्वस्थ बना सकते हैं साथ ही दूसरो के जीवन को भी सरल बना सकते है।

आर्य सदाचारी नेताओ का ही सम्मान करें

– प० नन्दलाल निर्भय

बहीन (मेवात) आर्यो को सदाचारी ईमानदार देशभक्त नेताओ का सम्मान करना चाहिए और भ्रष्ट लोगो को फटकार लगानी चाहिए। ये शब्द आर्य नता प० नन्दलाल निर्भय पत्रकार न आर्ययुवक परिषद शिविर के उदघाटन के अवसर पर आर्यसमाज होडल के प्रागण मे कहे। श्री निर्भय ने बताया कि पहले आर्यजन भ्रष्ट राजनीतिज्ञो को कभी मुह नही लगाते थे इसलिए सर्वत्र उनका सम्मान होता था। वस्तुत आर्य वही है जिसका आचार व्यवहार विचार आहार उत्तम है। आजकल धन की आड मे भ्रष्ट व्यक्तियो को आगे बढाया जा रहा है। हमे इस गन्दी दौड को रोकना होगा तभी आर्यसमाज बच सकेगा। आर्यवीरो ! अब जाग जाओ।

श्री उदयभान विधायक ने कहा कि आर्यसमाज ईश्वर भक्तो एव चरित्रवान लोगो का सगठन है इसलिए आर्यो को वेद प्रचार बढ चढकर करना चाहिए। इस अवसर पर चौधरी गयालाल पूर्व विधायक श्री शिवराम आर्य श्री जगवीर सिह आर्य श्री जयदेव आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए। श्री हेतराम गर्ग ने सभी वक्ताओ व श्रोताओ का समारोह मे पधारने पर आभार व्यक्त किया।

आर्य वीरागना ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज मन्दिर किशन पुरा (बी०एस०टी०रोड) गन्नौर मण्डी (जिला सोनीपत) हरियाणा मे कन्याओ को शारीरिक आत्मिक नैतिक बल सामाजिक वैचारिक क्रान्ति एव वैदिक सिद्धान्तो व सस्कारो का प्रशिक्षण देकर उन्हे समाज के निर्माण मे एक अहम भूमिका निभाने हेतु आर्य वीरागना ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण (२३–६–२००२ से ३०–६–२००२ तक शिविर लगाया गया।

इस शिविर का उद्देश्य कन्याओ मे शारीरिक एवम बौद्धिक विकास राष्ट्रीय चेतना आत्मरक्षण अनुशासित जीवन शस्त्र प्रशिक्षण (लाठी तलवार भाला छुरी चलाना) हस्तकला प्रशिक्षण आर्य सस्कृति की भावनाए (यज्ञ सत्सग सन्ध्या) की जागृति लाना था।

इस अवसर पर श्री विकास जी माता सुलक्षणी जी श्री धर्मचन्द्र बत्रा डॉ० रणवीर जी श्रीमती करतार देवी जी दानवीर सेठ ज्वाला प्रसाद श्रीमती उज्ज्वला वर्मा मा० मनोहर लाल चावला श्री वेदपाल आर्य (प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत) श्री हरि चन्द स्नेही (बौद्धिक अध्यक्ष प्रान्तीय आर्य वीर दल हरियाणा) नित्य प्रिय आर्य (मण्डल पति सोनीपत) हरिचन्द बत्रा का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 4 5/07/2002 दिनाक १ जुलाई से ७ जुलाई, २००२ Licence to post without prepayment Licence No. U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 4 5/07/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

पृष्ठ २ का शेष भाग

मुशी कालीचरण रामचरण के पत्र से विदित होता है कि आप लोगो की पाठशाला मे आर्य भाषा व देववाणी सस्कृत का प्रचार बहुत कम और अन्य भाषा अग्रेजी उर्दू, फारसी अधिक पढाई जाती है। इससे अपना उद्देश्य जिसके लिए यह पाठशाला शुरू की है हमे कुछ भी सिद्ध होता नहीं दृष्टिगोचर होता है। इसमे आपके हजारो रुपयो का व्यर्थ व्यय ही हो रहा है।

आगे सारी स्थिति स्पष्ट लिखते हैं –

आप लोग देखते हैं कि इस आर्यावर्त्त राष्ट्र मे सस्कृत का अभाव हो रहा है। सस्कृत रूपी मातृभाषा के स्थान पर अग्रेजी लोगो की मातृभाषा हो चली है। अग्रेजी का प्रचार तो स्थान स्थान पर राज्य की ओर से जिनकी यह मातृभाषा है भली प्रकार से हो रहा है। अत इसकी वृद्धि मे हमे इतनी आवश्यकता नहीं दीखती और हम सरकार के सामने कुछ भी नहीं कर सकते। अत हमारी अति प्राचीनतम मातृभाषा सस्कृत जिसका साहय कोई नहीं है। ऐसी अवस्था देखकर ही यह पाठशाला स्थापित की गई है।

हमारा यह उचित कर्त्तव्य है कि सदैव पूर्वलिखित इष्ट सिद्धि हेतु कुल पठन पाठन के ६ घण्टो मे से ३ घण्टे तो सस्कृत के और २ घण्टे अग्रेजी के तथा १ घण्टा अन्य भाषाओ को पढाया जाए।

इस प्रकार इस अपूर्व ज्ञान भण्डार को ज्ञात करने विधिवत पठन पाठन के साथ परीक्षा के लिए भी कहते हैं कि परीक्षा प्रतिमास स्वय न लेकर अन्य विद्वान पण्डितो से ली जाए जिससे यह ज्ञान हो कि पढाई कितनी हो रही है। पुस्तक वही पृष्ठ ५०१–८२ (दिनाक २३ मई सन १८८१ का पत्र व्यवहार)

इसी विषय पर व्यवहारभानु मे प्रश्न विषय का निरूपण निम्न प्रकार से किया

प्रश्न – विद्या पढते समय व पढकर दूसरे को भी पढाए या नहीं ?

उत्तर – बराबर पढाता जाए इसलिए कि पढने से पढाने मे विद्या की वृद्धि अधिक होती है। पढकर तो व्यक्ति अकेला ही विद्वान रहता है। लेकिन पढाने से दूसरा भी विद्वान हो ही जाता है। इससे ही उत्तरोत्तर काल मे विद्या की वृद्धि होती है जो भी इस प्रकार से विद्या की प्राप्ति करता है वह ही मनुष्य धार्मिक परोपकारी अवश्य हो जाता है कृपया ध्यान दे कि अन्धा तो कुए मे गिर सकता है लेकिन देखने वाला कभी नहीं गिर सकता। अत पठन पाठन के साथ ही सप्ताह मे एक दिन सत्सग का नियम बनाते हुए कहा कि – सब कामो से इस कार्य को मुख्य समझे।

यह इसलिए महत्वपूर्ण है कि यहा वर्णन है कि –

जो मनुष्य विद्या पढने का सामर्थ्य तो नहीं रखे लेकिन धर्माचरण किया करे। यानी विद्वानो के सग सत्सग सभा और अपनी आत्मा की पवित्रता अविरुद्धता से धर्मात्मा अवश्य हो सकता है। इसलिए भी कि –

सब मनुष्यो का विद्वान होनाना तो सम्भव नहीं लेकिन सबके लिए धार्मिक होना सम्भव है।

सभी जन धार्मिक हो अत प्रथम विद्यार्थियो को बचपन मे ही वर्णोच्चारण शिक्षा की पढाई की महत्ती आवश्यकता समझकर ही वेदाङ्ग प्रकाश की रचना की। इसके प्रथम भाग को वर्णोच्चारण शिक्षा के नाम से पढाने का निर्देश किया है। यहा भूमिका मे इसके लाभो का वणन करते हुए लिखा है –

'मुझे इस पुस्तक का प्रक। ·रना आवश्यक इसलिए विदित हुआ कि जो जो वर्णोच्चारण में गडबड हो रही है और होती ही रहेगी उसके निवार्णार्थ यथायोग्य मनुष्य वर्णो का उच्चारण स्थान प्रयत्न से करे। इसी हेतु बडे ही परिश्रम से पाणिनी मुनि कृत शिक्षा की पुस्तक प्राप्त कर उन सूत्रो की सुगम आर्य भाषा मे व्याख्या करके वर्णोच्चरण विद्या की शुद्ध प्रसिद्धि करता हू कि जिससे मानव मात्र को पठन पाठन के अति न्यून परिश्रम से ही इस विद्या का ज्ञान शीघ्र हो जाए।

इसे आगे बढाते हुए दूसरे भाग मे प्रथम काम मे आने वाले सभी विषयो पर वाक्य बना सदृश वाक्य बनाकर पढाने का निर्देश करते हुए लिखा है कि –

"मैने इस सस्कृत वाक्य प्रबोध' पुस्तक को बनाना इसलिए आवश्यक समझा कि शिक्षा पढकर कुछ-कुछ सस्कृत भाषण का आना विद्यार्थियो के उत्साह को बढाने हेतु व्याकरण पढे बिना भी व्यवहार सम्बन्धी सस्कृत भाषा को बोल व दूसरो को सुनकर भी कुछ कुछ समझ सकेगे। इस प्रकार प्रथम मे बोलने का अभ्यास होने से यह निरन्तर आगे बढता जाएगा।'

अत हमारा यही कर्त्तव्य है कि हम कैसे भी पढाकर समर्पण भाव से ५ जनो को तो अवश्य पढाकर वैदिक धर्म मे दीक्षित करना है।

शाहपुरा (भीलवाडा) राजस्थान

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२
(दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक ३० सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार ८ जुलाई से १४ जुलाइ २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

आर्यसमाजें श्रावणी पर्व (वेदप्रचार समारोह) धूमधाम से मनाएं

वैदिक धर्म मे स्वाध्याय को प्रत्येक वर्ण और आश्रम के लिए अनिवार्य और आवश्यक रूप से प्रधान बताया गया है। ब्रह्मचर्य आश्रम और ब्राह्मण वर्ग की कल्पना ही स्वाध्याय के साथ जुडी है अर्थात विद्यार्थियो का स्वाध्याय से विमुख रहना समाज के लिए किसी दृष्टि से भी हितकर नही हो सकता।

क्षत्रिय वर्ग अर्थात देश की रक्षा करने वाले पुलिस और सै य बल तथा शासन चलाने वाले उच्चाधिकारी लोग भी यदि स्वाध्यायशील रहे तो देश की आन्तरिक ओर बाहरी सुरक्षा तथा अनुशासन स्थापित करने मे अवश्य ही सहायता मिलेगी। वैश्य उर्ग यदि रवाध्याशील रहता है तो देश की य पारिक गतिविधियो को सात्विक उन्नति प्राप्त होगी। इसी प्रकार शूद्र वर्ग भी स्वाध्याय के सहारे केवल अपना ही नही अपितु अपने आस पास के समाजो को भी सदव्यवहार के द्वारा सुगन्धित कर सकता है।

इस वर्ष रक्षाब धन २२ अगरत २००२ (बृहस्पतिवार) को तथा श्रीकृष्ण ज माष्टमी ३१ अगस्त २००२ (शानिवार) को है दोनो पर्वो के बीच का सप्ताह वेदप्रचार समारोह के रूप मे मनाया जाता है।

वेदप्रचार समारोह को केवल पारम्परिक रूप मे औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ नही होता। यदि वेदप्रचार समारोह को उत्साहपूर्वक अधिकाधिक लोगो को सम्मिलित करके मनाया जाए तो ज्ञान गगा घर घर मे पहुचाई जा सकती है।

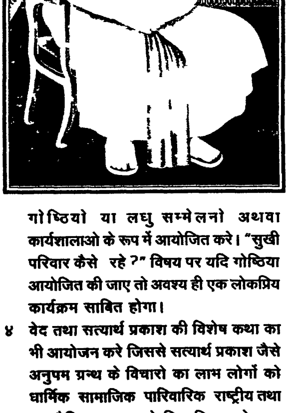
महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारित प्रमुख लक्ष्य **कृण्वन्तो विश्वमार्यम** अर्थात विश्व को श्रेष्ठ बनाना ही वेद प्रचार समारोह का भी प्रयोजन बनना चाहिए।

वेदप्रचार समारोह को सफल बनाने के लिए अपनी सुविधानुसार निम्न उपायो मे से अधिकाधिक उपाय किए जा सकते है –

१ बृहद यज्ञो का आयोजन (यदि सम्भव हो तो पार्को अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलो पर) जिसमे आर्य सदस्यो आदि के अतिरिक्त जन सामान्य को भी प्रेम पूर्वक आमन्त्रित किया जाए सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त ऋषि लगर जलपान प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगो मे करे।

२ यज्ञ के दौरान तथा बाद मे आर्य उपदेशको तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावो के प्रवचन अवश्य आयोजित करे जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य (श्रेष्ठ) विचारो से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

३ अपने क्षेत्र के अलग अलग वर्गो जैसे युवाओ महिलाओ वृद्धो बच्चो आदि के लिए अलग अलग विचार विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम गोष्ठियो या लघु सम्मेलनो अथवा कार्यशालाओ के रूप में आयोजित करे। "सुखी परिवार कैसे रहे ?" विषय पर यदि गोष्ठिया आयोजित की जाए तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।



४ वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश की विशेष कथा का भी आयोजन करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश जैसे अनुपम ग्रन्थ के विचारो का लाभ लोगों को धार्मिक सामाजिक पारिवारिक राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सके।

५ क्षेत्रीय जनता को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारो से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघुसाहित्य वितरित करे। स्वामी दयानन्द के चित्रो सहित कलैण्डर आदि भी स्थानीय जनता मे नि शुल्क वितरित करे।

६ आर्यसमाज के समस्त सदस्यो की एक विशेष बैठक आयोजित करके आत्मावलोकन अवश्य करे कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधिया सन्तोष जनक है ? क्या उससे और अधिक कुछ किया जा सकता है ? यदि नहीं ! तो उसके कारण व समाधान पर चर्चा करे।

७ उपरोक्त के अतिरिक्त कोई अन्य प्रकार का आयोजन आपके मस्तिष्क मे उठे तो उसे हमे भी लिखकर भेजे। जिससे विश्व के अन्य आर्यों को भी उससे अवगत कराया जा सके।

८ आपसे अनुरोध है कि आप अपनी सुविधानुसार अभी से अपने वेद जयन्ती समारोह की तिथिया निश्चित कर ले और आर्यसन्यासियो से सम्पर्क करके स्वीकृति ले ले। वैदिक साहित्य का अधिकाधिक वितरण करे।

९ आर्यसमाज के अधिकारियो से यह भी प्रार्थना की जाती है कि आगामी २५ अगस्त रविवार को हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान विजय दिवस के रूप मे धूमधाम से मनाए।

अपने आयोजनो की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशनार्थ अवश्य भेजे।

वेदव्रत शर्मा सभा प्रधान

सार्वदेशिक आर्य वीरागना दल का गठन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की विगत अन्तरग बैठक दिनाक २३ जून २००२ मे सार्वदेशिक आर्य वीरागना दल का गठन किया गया। जिसकी सचालिका श्रीमती उज्ज्वला वर्मा है जो कुछ विगत वर्षो से दिल्ली मे आर्य वीरागना दल की गतिविधियो का सचालन कर रही हैं।

जीवन में सफलता के लिए वाणी मधुर एवं मर्यादित करें

– सुमन्त्र चन्द्रशेखर लोखण्डे

ईश्वर ने मनुष्य को कई विशिष्ट विशेषताए है। उनमे सबसे महत्वपूर्ण प्रभावशाली माध्यम है मनुष्य की वाणी। यदि मानव की बोलने की तथा अपने विचार व्यक्त करने की क्षमता के बारे म गम्भीरता से विचार करे तो हम जान जाएगे कि परमात्मा ने हमे यह कितनी दिव्य उपलब्धि दी है। किन्तु हम इस अमूल्य दन के बारे मे उदासीन हे। इस पूरे ससार मे ईश्वर ने अनेक प्राणी पशु पक्षी आदि उत्पन्न किए है। किन्तु अपने विचार तथा भावनाआ की अभिव्यक्ति की योग्यता सिर्फ मनुष्य को वाणी द्वारा प्रदान की गई। सृष्टि का कोई भी प्राणी अपनी भावना वाणी द्वारा प्रकट नही कर सकता।

हमे बोलना आता है इतना ही पर्याप्त नही हमे वाणी की शक्ति तथा महत्ता भलीभाति पहचाननी होगी। हमे अपनी वाणी परिमार्जित करनी होगी। जैसे एक कलाकार अपनी कलाकृति सवारता हे उसी प्रकार हम अपनी वाणी भी सवारे। एक सोची समझी नपी तुली और सुसस्कृत वाणी द्वारा आप अनेक उलझने सुलझा सकते हैं। इस गुण द्वारा आपका व्यक्तित्व चमकेगा। आप चाहे किसी भी क्षेत्र मे काम करे सतुलित विन्रम और सुसस्कृत वाणी द्वारा आप उस क्षेत्र मे उन्नति के शिखर पर पहुच सकते है। यह योग्यता हर क्षेत्र मे चाहिए। उदाहरण के रूप मे आप एक व्यापारी देखे। यदि व्यापारी अपने ग्राहको से नम्रता स्नेह और मधुरता से बोलता हो तो ग्राहक बार बार आएगा। इस तरह उसके ग्राहको के साथ सम्बन्ध दृढ होगे। उसका ग्राहक परिवार हमेशा बढेगा। कुछ समय मे वह अपना व्यापार शिखर पर ले जा सकता है। जबकि एक असभ्य कठोर वचन बोलने वाले व्यापारी के पास कोई नही जाएगा इसलिए यह जरूरी है कि हम अपनी वाणी मधुर बनाए। बुद्धिमान लोग आपकी बात से ही अपकी शिक्षा सस्कृति तथा वातावरण पहचान लते है। सफल बनने के लिए जिन जरूरी गुणो की आवश्यकता है उनमे वाणी का अपना महत्व है।

अपनी वाणी मधुर रस पूर्ण तथा नम्र बनाने के लिए हम कुछ गुण धारण करे। हम हमेशा यश और विजय की बात करे। नकारात्मक बातचीत से आप लोगा को निरुत्साहित करते है। हमे लागो के अच्छे कामो की सराहना करे और उन्हे उत्साह ओर प्रेरणा दे। सब सुख के भागीदार बनते है। इसलिए हम केवल प्रसन्नता सुख और आशा भरी बाते करे। इस प्रकार के बर्ताव से लोग आपकी तरफ आकर्षित होगे। किसी समारोह या किसी सार्वजनिक उत्सव मे किसी व्यक्ति के साथ अधिक लोग बात करना चाहते है। इसका कारण कि उसका व्यवहार वाणी और मधुर आचरण होता है। वह अपनी बातो से किसी का दिल आहत नही करता। वह सबको आनन्दित करता है। सबको खुश रखने की कला से ही आप आगे बढेगे। कुछ लोगो को लगता है कि सत्य कटु होता है और किसी का सुधार करना हो ता हमे सच बोलना ही होगा। उन्हे लगता है कि अगर आपको सत्य बोलना हो तो आपको कटुता का आधार लेना ही होगा। परन्तु यह तर्क बिल्कुल तथ्यहीन है। हम सत्य बोलते समय या किसी सुधारात्मक सुझाव देते समय माधुर्य का सहारा ले।

अगर हम सत्य को मधुरता के साथ प्रकट करे ता जो हम अपनी बात कहेगे और साथ ही मे किसी का मन भी आहत नही होगा। कटुवचन आपका बडा अहित करता है। यह आपकी सफलता का मार्ग अवरुद्ध करता है। इसी कारण वाणी शस्त्र कही गई है। जिस तरह धनुष से निकला तीर वापस नही आता उसी तरह वाणी से निकला शब्द भी वापस नही आता। वह तो अपना प्रभाव करके ही रहेगा। शस्त्र से लगा घाव भर जाएगा किन्तु वाणी से लगा घाव नही भरता इसलिए बोलते समय पूरा विचार करके बोले। बोलकर पछताने की बजाए हम सोचकर बोले। अकसर हम क्रोध मे अपना सतुलन खो देते हे और ऐसा कुछ बोलते है जिसका पछतावा हमे बाद मे हाता है।

मधुरती का अतिशय महत्वपूर्ण गुण है। वेदो मे हमेशा मधुरवाणी की बात आती है।

मधुमन्मे निष्क्रमण मधुमन्मे परायणम।
वाचा वदामि मधुमद् भूयास मधुसदृश ।।

अर्थात – मेरा जाना माधुर्ययुक्त हो। मेरा लौटकर आना भी मधुर हो। मै वाणी से मीठा बोलू। मै मधु के समान हो जाऊँ।

मधुरता के बिना हमारा बोलना नीरस होता है। बिना मधुरता के साथ बोली गई वाणी से लोग ऊब जाते है। वह आपसे पीछा छुडवाना चाहगे। इसलिए जिसे अपने आपको अच्छा बनना हो उसे मधुरता पर ध्यान देना होगा। आपके व्यवहार और आचरण से मधुरता टपके। वेद तो कहते है कि आप मधु समान बने। केवल वाणी से मधुर नही हो अपितु हमारा अन्त करण भी माधुय से भरा हो। अगर वाणी मीठी और अन्त करण मे कटुता है तो ऐसे नाटकीय व्यवहार को लोग जल्दी ही पहचान लेते है।

जीवन मे मधुरता का इतना महत्व है जितना कि किसी सब्जी मे नमक का या मिठाई मे चीनी का। बिना चीनी के बनाई गई मिठाई खायी नहीं जा सकती। उसी प्रकार सब्जी कितनी भी महगी क्यो न हो यदि उसमे नमक नही होगा तो वह बेकार होगी। इसी प्रकार जीवन मधुरता के बिना रसहीन है। यदि आपकी बोली मे मधुरता नहीं है तो आपकी अच्छी बात भी दूसरो को अच्छी नहीं लगेगी। अत मधुरता जीवन मे अपना विशेष महत्व रखती है। आपका मधुर व्यवहार आपकी बहुत सी कमियो को छिपाकर आपको आगे बढाने मे सहायक सिद्ध होगा।

वाणी ऐसी बोलिए मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करें आप ही शतल होय।

– सीताराम नगर लातूर (महाराष्ट्र)

बोध कथा

सांस्कृतिक जागृति से ही राजनीतिक जागरण

महाराष्ट्र मे पहले सास्कृतिक जागरण आया। वहा राजनीति से पहले सस्कृति आई। शिवाजी ने पीछे जन्म लिया मानसिक क्रान्ति के जन्मदाता सन्त तुकाराम रामदास वामन पण्डित और एकनाथ पहले अवतीर्ण हुए।

महाराष्ट्र मे १६वी शताब्दी मे जो क्रान्ति हुई उसके मानसिक सामाजिक और साहित्यिक य तीन भाग थ विशेष रूप से समर्थगुरु रामदास ने अपने ग्रन्थ दासबोध से जिस धम का उपदेश दिया उसका बहुत व्यापक स्वरूप था। उसम ज्ञान था और कर्म भी। हिन्दू धर्म और भारतीय सस्कृति की गरिमा के उद्धार के लिए शिवाजी खडग धारण करके रणक्षेत्र मे उतरते उससे पूर्व ही भक्तो और कवियो ने महाराष्ट्र मे सास्कृतिक जागृति का शखनाद कर दिया था।

इस सास्कृतिक जागृति की सबसे बडी विशेषता यह थी कि उसमे सुधार और प्रतिरोध की दोनो भावनाए प्रस्तुत थीं। वह राष्ट्र मे प्रकट हुई अनुदारता का सुधार करने के साथ मुस्लिम कटटरता और सस्कृति के प्रतिरोध का भी प्रयत्न कर रही थी।

जिन कारणो से यह सास्कृतिक जागरण हुआ उसी के फलस्वरूप कार्यक्षेत्र की वेदी पर शिवाजी तैयार हुए। उस भारतीय सास्कृतिक जागरण के प्रतीक स्वरूप शिवाजी आए थे। समर्थगुरु श्री रामदास और अन्य भक्तो की वाणियो ने जिस राष्ट्रीय जागरण की अग्नि प्रदीप्त की छत्रपति शिवजी के बाहुबल ने उसे ज्वाला का रूप दिया औरगजेब की नीति और नृशस शासन की नीति ने उसे वायु रूप मे उसे सम्पूर्ण देश मे व्याप्त कर दिया।

१६वीं शताब्दी के अन्त मे महाराष्ट्र मे एक छोटी चिन्गरी के रूप मे प्रज्वलित हुई कालान्तर मे दश के एक छोर से दूसरे छोर तक एक दावाग्नि के रूप मे जाज्वल्यमान हो उठी वह बढती हुई इस्लामी सस्कृति के विरुद्ध हिन्दू सस्कृति की जबर्दस्त प्रतिक्रिया थी। यह प्रत्याक्रमण दक्षिण तक ही मर्यादित नहीं रहा पजाब मे वह गुरु गोविन्द सिह और भाई बन्दा के रूप मे और मध्य भारत मे छत्रसाल के रूप मे प्रकट हुआ। गुरु नानक के प्रेमप्रधान धर्म को गुरु नानक के प्रेम से परिपूर्ण धर्म के एक बलिदानी योद्धा का स्वरूप दे दिया।

– नरेन्द्र

पवित्र जीवन हो यशस्वी हो

अग्ने वर्चस्विन कुरु। *अथर्व० ३–२२–३*

अग्ने मुझे तेजस्वी बनाए

पुनन्तु या देवजना । *अथर्व० ६–१९–१*

देवजान मेरा जीवन पवित्र करे।

यशस स्याम। *अथर्व ६–३९–२*

हम यशस्वी हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

आतंकवाद के समूल उन्मूलन से ही शान्ति

भारत राष्ट्र की स्वाधीनता प्राप्ति के ५५वे वर्ष मे यह गम्भीर आत्मचिन्तन का विषय है कि इतने वर्ष स्वाधीनता के बावजूद हम स्थायी शान्ति और प्रगति के पथ पर निष्कण्टक नही हो सके है पिछले कुछ समय से एक नई समस्या सम्पूर्ण राष्ट्र को चुनौती दे रही है वह है आतकवादियो की निरन्तर बढती गतिविधिया। पिछले दिनो बरेली के निकट चन्दौसी रेल स्टेशन पर भयकर बम विस्फोट हुआ। सार्वजनिक स्थानो पर आतकवादियो द्वारा किए बम विस्फोट से स्पष्ट है कि विस्फोटो के लिए उत्तरदायी अपराधी तत्त्वो का लक्ष्य आतकवाद का फैलाना था। उत्तर प्रदेश राष्ट्र का केन्द्र स्थान है यह चिन्ता की बात है कि वहा विस्फोटो के लिए उत्तरदायी तत्त्वो का लक्ष्य आतक फैलाना था। यह चिन्ता की बात है कि भारत राष्ट्र के हृदयस्थल उत्तर प्रदेश मे आतकवादियो की अच्छी घुसपैठ है। बरेली और दूसरे क्षेत्रो मे ऐसे भी ध्यान देने की बात है कि इस सारे क्षेत्र मे मदरसो की गिनती अचनाक बढ गई है उनकी बाढ सी आ गई है। शासन और सामान्य जनता को इस कटु तथ्य की जानकारी होनी चाहिए कि इन बडी गिनती के मदरसो के लिए धन कहा से आ रहा है और उन्हे कौन सचालित कर रहा है। केन्द्र सरकार को भी ध्यान देना होगा कि इन आतकवादियो और उनके समर्थको की पैट हरी होती जा रही है। ये समाचार भी प्राप्त हो रहे है कि देश के कई भागो मे पाक खुफिया एजेसी आई०एस०आई० ने अपने अडडे स्थापित कर लिए है। ये समाचार भी मिले है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र के प्रान्तो मे इन एजेण्टो की सक्रियता की बाढ सी आ गई है। यदि ये समाचार सत्य हैं तो स्पष्ट है कि इन राज्यो की खुफिया व्यवस्था और वहा का प्रशासन बडा लचर है कि जिन्होने आतकवाद से निपटने के लिए बने 'पोटा कानून का अभी तक ऐसा कारगर प्रयोग नहीं किया जिससे आतकवादियो की धडपकड कर समस्या का समाधान किया जा सके।

अब वह घडी आ गई है जब आतकवादियो के दुस्साहस का पूर्ण उन्मूलन कर दिया जाए। पाटा कानून के अन्तर्गत पृथक अदालतो और शासन व्यवस्था को व्यवस्थित कर समुचित कार्रवाई से समस्या का कारगर समाधान किया जा सकता है। यह तथ्य है कि पिछले दिनो आतकवाद ने मानवता को सीधी चुनौती दी है। ११ सितम्बर २००१ के दिन न्यूयार्क स्थित विश्व व्यापार केन्द्र और सेना के मुख्यालय पेटागन पर सीधा आक्रमण का विध्वस और विनाश का घिनौना काण्ड किया गया था। १३ दिसम्बर २००१ के दिन भारत राष्ट्र के ससद भवन पर दुस्साहसी आक्रमण किया गया था। आक्रमणकारियो की सामयिक रोकथाम से ससद की गरिमा और राष्ट्रनेताओ और राष्ट्र प्रतिनिधियो की सुरक्षा हो गई। यदि आक्रमणकारियो को ससद भवन के मार्गो सुरक्षा और सम्बन्धित विषयो की व्यवस्थित जानकारी होती तो उस दिन वे भस्मासुर बन सकते थे। २००२ वर्ष मे ही तीसरा हादसा कोलकाता के अमेरिकी सैण्टर पर आतकवादी हमले के रूप मे हुआ। यहा भी पर्याप्त जानकारी न होने से आतकवादी अधिक विध्वस नहीं कर सके परन्तु उन्होने इस महानगर मे विश्व के सर्वाधिक सम्पन्न राष्ट्र की प्रभुता को जैसी चुनौती दी उससे स्पष्ट है कि सीमित साधनो और मर्यादित शक्ति के बावजूद आतकवादी विनाश और विध्वस की लीला खेलने मे कभी सकोच नहीं करेगे। आज आतकवाद की समस्या अकेले भारत की नही है उसे छोटे बडे सभी राष्ट्रो का मिल जूल कर अपने सामूहिक प्रयासो से सुलझाना हागा। वेस विश्व इतिहास मे भारत राष्ट्र की गरिमा और महत्ता रही है अपनी विशिष्ट भोगोलिक स्थिति राष्ट्र मे उपलब्ध प्राकृतिक भूसम्पदा और शत कोटि मानव शक्ति का यदि बौद्धिक वेज्ञानिक औद्यागिक कृषि आदि अनेक क्षेत्रो म व्यवस्थित सदुप्रयोग किया जाए ता उन क्षत्रो म भारत राष्ट्र उत्कर्ष क उन्नत शिखर पर पहुच सकता है।

विश्व के श्रष्ठ चिन्तका की सम्मति मे मानव के लिए असम्भव कुछ भी नही है। जीवन के सभी प्रगतिशील लक्ष्य और मानवीय समुन्नति के सभ उदात्त ऊचे गरिमा भरे लक्ष्य सामूहिक राष्ट्रीय अध्यवसाय से प्राप्त किए जा सकते है। राष्ट्र के नीति निर्धारका ओर राष्ट्रीय सूत्र सचालको को राष्ट्र के सम्पूर्ण भौगोलिक प्राकृतिक ससाधनो सम्पदा और कोटि कोटि राष्ट्रजनो की प्रतिभा क्षमता और मानवशक्ति का व्यवस्थित सर्वागीण सदुप्रयोग करना चाहिए जिससे प्रत्येक क्षेत्र मे जनता स्वावलम्बी सुखी और अग्रणी बन सके। राष्ट्र मे कोई भी अभावो कष्टो शोक व्यथाओ से पीडित न हो। वैदिक जीवन दर्शन के अनुकूल **सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निराम्या मा कश्चिद दु ख भाग्भवेत** सभी प्राणी मात्र सुखी हो किसी को कोई कष्ट न हो कोई दु खी न हो। ये लक्ष्य ऊचे और कठिन होने पर भी असम्भव नही है। मानवीय इतिहास मे भारतीय राम राज्य ने ऐसा ही सुखी जन जन का कल्याणकारी राम राज्य प्रतिष्ठित था जनता और सारा राष्ट्र मिलकर सामूहिक आध्यवसाय करे तो राष्ट्र मे पुन राम राज्य आ सकता है परन्तु उसके लक्ष्य प्राप्ति के लिए सभी देशवासियो को आतकवाद सरीखी अस्थायी परन्तु कठिन समस्या के स्थायी समूल उन्मूलन का व्यवस्थित अभियान चला कर उसे पूरी दृढता और जन सहयोग से पूरी तरह कार्यान्वित करना होगा। इसके लिए केवल वचनो का समर्थन ही नहीं प्रत्युत जन जन का दीर्घकालीन सतत सक्रिय सहयोग अपेक्षित होगा।

चिट्ठी-पत्री

कर्म ही पूजा

गीता मे श्रीकृष्ण जी ने कर्म की प्रधानता बताते हुए कहा है कि मनुष्य को अपने कर्म में हमेशा तत्पर रहना चाहिए। कर्म का पालन करना ही मेरी सच्ची पूजा है। जरूरी नहीं कि प्रतिदिन मन्दिर जाने वाला पूजा करने वाला जप-तप करने वाला ही पूजा करता हो। गाडी चलाते समय एक चालक जैसे बस सवारियो की अधिक चिन्ता करता है अपनी जान की परवाह नहीं करता। नदी के किनारे घण्टो माला जपने वाले से कहीं अधिक अच्छा वो है जो नदी मे डूबते बच्चे को बचाने के लिए अपनी जान की परवाह न करके नदी मे कूद पडता है। उसकी भी पूजा कम नहीं जो बीमारी मे तडपते लोगो की जिन्दगी बचाने के लिए अपनी जान तक न्योछावर कर देते हैं। सीमा की रक्षा मे सावधान खडे जवानो की पूजा भी कम नहीं जो अपना सुख भुला कर देश की रक्षा मे लगे हैं।

– छैल बिहारी शर्मा इन्द , छाता, उत्तर प्रदेश

फिर स्वायत्तता का राग

अब कश्मीर मे विधानसभा चुनाव फिर सिर पर आ गए हैं। वोट लेने हैं। जनता को रिझाना है। इस मौसम मे देश व जनता हित गर्त मे चले जाते हैं तथा येन केन प्रकारेण वोट हथियाने के तरीके खोजे जाते हैं। जम्मू कश्मीर के मुख्यमन्त्री श्री फारूख अब्दुल्ला ने फिर स्वायत्तता का बेसुरा राग छेड दिया है। अफसोस इस बात पर भी होता है कि भारत के नागरिक ही भारत के हितो पर कुठाराघात करने लगते हैं। जरा सोचिए यदि सभी राज्य स्वायत्तता की ही माग करने लगे तो क्या होगा ? स्वायत्तता की रट कश्मीर को देश से पृथक करने के आन्दोलन का हिस्सा मात्र है और कुछ नहीं। यह स्वायत्तता की रट हमेशा के लिए समाप्त होनी चाहिए।

– इन्द सिह धिमान दिल्ली

यजुर्वेद से - आदेश (होतृर्यज) स्पतकम् (५)

दान देकर भोग करो, सब कुछ मिलेगा

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) दान देकर भोग करने वाले बनकर समर्पण करने से प्रभु सम्पर्क हो जाता है

होता यक्षत् समिधाग्निमिडस्पदेऽश्विनेन्द्र सरस्वतीमजो धूम्रो न गोधूमै कुवलैर्भेषज।

मधु शष्पैर्न तेज इन्द्रिय पय सोम पस्रिुता घत मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज।।

यजु० २१/२६

ऋषि - स्वस्त्यात्रेय। देवता - अग्न्यश्वीन्द सरस्वत्याद्या लिगोक्ता। छन्द -निचृदष्टि।

लोक कल्याण कामी ऋषि आत्रेय की धारणा है कि साधक को काम-क्रोध लोभ के त्रिक को वश मे करने के साथ (होता) दूसरों को खिलाकर खाने वाला बनने के लिए (इड पदे) इस पार्थिव शरीर में रहते हुए (अग्निम्) अग्रेणी-मार्गदर्शक प्रभु को प्राप्त करने के लिए (समिधा यक्षत्) अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व (आत्मा मन देह) को समिधा बनकर होम – अर्पित कर दे। **किस प्रकार अर्पित करें ?**

(कुवलै) वन्य अन्नो व फलो (गोधूमै) नागरिक खाद्यो गोदुग्धादि (न) तथा (शष्पै) वानस्पतिक भोजनो के द्वारा (अश्विनौ) प्राणापानदि तथा मन को (इन्द्रम्) आत्मा को और (सरस्वतीम्) ऋतभरा प्रज्ञा को पुष्ट करके (अज धूम्र) अजभाव क्रिया शींल बनकर और वासनाओ को भयाक्रान्त करके दूर रखकर (भेषज मधु) मधुर भेषजो को (इन्द्रिय तेज) इन्द्रियो के सामर्थ्य को (परिस्रुता) परिसृवण अर्थात दोहना मथना टपकाना और बूद बूद करके एकत्र करने की विधियो द्वारा (पय घृत सोम मधु) दूध घी सोमरस तथा मधु आदि को ख्यन्तु प्राप्त करें। इन सब चीजों को प्राप्त कर प्रभु साधक को आदेश देते हैं कि (होत) हे साधक इन सब पदार्थों को स्वस्थ और दीर्घायु रहने के निमित्त स्वय तो भोग कर किन्तु (आज्यस्य) धृतादि उत्तम हवियों का (यज) लोक कल्याणार्थ दान अधिक कर।

निष्कर्ष – परमात्मा को प्राप्त-अनुभव-साक्षात् करने के लिए आवश्यक है (१) प्राणापान की साधना वन्य फलो नागरिक अन्नो गोदुग्धादि पदार्थों का सेवन करके शरीर को स्वस्थ मन को निर्मल तथा प्रज्ञा को ऋतकम्भरा बनाकर आत्मा को जानने के प्रयत्न करे। दुर्वासनाओ को दूर करके अपने अजत्व (अजन्मा – अविनाशी – परमेश्वर के पुत्र होने) को जाने और अनुभव करे। तदनन्तर स्वय स्वस्थ और नीरोग रहने के लिए मधुर भेषज और अन्न दुग्धादि का सयमपूर्वक सेवन करते हुए – लोक कल्याण के लिए सदा यज्ञो को करता रहे – क्रियाशील बना रहे। अपनी उन्नति से सन्तुष्ट होकर निष्क्रिय न हो जाए। क्योकि 'य एष क्रियावान सैव ब्रह्मविदा वरिष्ठ। क्योकि ब्रह्मविदो मे वही श्रेष्ठ माना जाता है, जो ब्रह्मज्ञानी बनने के बाद भी क्रियावान् बना रहता है। इसी बात को गीता के श्लोक कह रहे हैं –

सक्ता कर्मण्यविद्वासो यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद्विद्वास्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोक सग्रहम्।। ३–२५
न बुद्धिभेद जनयेदज्ञाना कर्मसगिनाम्।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्त समाचरन्।। ३-२८-६

अर्थ पोषण – यक्षत् – सगत करे। समिधो – अयत इध्म आत्मा। आश्वलायन गृह्य सूत्र गोधूमै – गेहू उपलक्षित अन्नो से। कुवलै –बेर से उपलक्षित वन्य फलों व अन्नो से इड –इडा भूमि। नि० १–१ पृथिवी शरीरम्। सरस्वती – ऋतभरा प्रज्ञा। नि० ५–५ धूम्र धूञ कम्पने। न – इवार्थे प्रतिषेधे चकारार्थे च सायण श्री अरविन्द हरि०। आज्यस्य – प्राप्तुभर्हस्य धृतस्य। धृत का खाने की अपेक्षा यज्ञ (परार्थ) अधिक उपयोग करना है।

(२) प्राण साधना, निरामिष भोजन और वन्यभेषज सेवन, प्रभु सम्पर्क में सहायक है

होता यज्ञत्तनूनपात्सरस्वतीम विर्मेषो न भेषज पथा मधुमता भरन्नश्विनेन्द्राय वीर्यं

बदरैरूपवाकाभि र्भेषज तोक्मभि पय सोम परिस्रुता घृत मधुव्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज।।

यजु २१–३०

ऋषि -स्वस्त्यात्रेय। देवता - अश्व्यादयो लिगोक्ता। छन्द - भुरिगत्यष्टि।

अर्थ – लोक कल्याण कामना वाले काम क्रोध लोभ के त्रिक के वशी आत्रेय ऋषि की मान्यता है – (होता) त्यागपूर्वक भोग करने वाले यजमान को चाहिए कि वह (तनूनपात्) शरीर से स्वस्थ एव नीरोग रहने के लिए तथा (इन्द्राय वीर्य भरन्) ऐश्वर्यमय आत्मतत्व की प्राप्ति के लिए वीर्य का ऊर्ध्वगमन व रक्षण करने के निमित्त (सरस्वतीम्) ज्ञान की देवता वाणी के साथ (यक्षत्) अपनी सगति – सम्पर्क बनाए रखे (अश्विनौ भेषजम्। प्राणापान साधना के भेषज बनाकर (मधुमता पथा) मधुरतापूर्ण सात्विक मार्ग से चलते हुए (मेष अविन) प्रत्येक कार्य मेढे की तरह प्रतिस्पर्धा पूर्वक कर्ता बनकर तृप्ति दीप्ति और वृद्धि को प्राप्त करने वाला बने। (बदरै उपवाकाभि) वन्य बेर इत्यादि फलों और समीपस्थ इन्द्र जौ इत्यादि भेषजो और (तोक्मभि) अपनी सन्तति की सहायता से (परिस्रुता) परिस्रवण की भिन्नविधियो द्वारा (पय धृत सोममधु) इत्यादि पूर्ववत्।

निष्कर्ष – (१) तनूनपात् होता बनने के लिए वेदवाणी का स्वाध्याय तथा तदनुकूल आचरण करो। (२) वन्य फलो तथा यवादि अन्नों के भक्षण द्वारा तथा प्राण साधना द्वारा मेढे के सदृश प्रतिस्पर्धी बनकर अपनी रक्षा व वृद्धि करे। (३) अपनी सहयोगी सन्तति के द्वारा पूर्वोक्त सब भोग सामग्री को प्राप्त करे। (४) वेद के निम्न आदेश को सदा ध्यान में रखें कि – भोग्य पदार्थों का आवश्यकता से अधिक सचय न होने दे। एतदर्थ घृतादि उत्तम सामग्री को लोक कल्याण के लिए दान करता रहे।

अथपोषण – तोक्मभि–तोक्म अपत्यनाम। नि०२–२ तनूनपात् – तनूनपातयति। नि० ५–२ तोक्मभि– शब्द विशेष सकेत का सूचक है – साधको को अपनी उन्नति व क्रियाकलाप से सन्तुष्ट न होकर अपनी सन्तति को अपने जैसा बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। अन्यथा – विशिष्ट जनों की सन्तान निष्क्रिय दुराचारी तथा आतक उत्पन्न करने वाली बन जाती है। अवि – अवतीति – अव – रक्षण – तृप्ति दीप्ति वृद्धिषु।

(३) अभावग्रस्तों की सेवा, जल चिकित्सा, व शरीर और मन का आह्लाद प्रभु सम्पर्क में सहायक है

होता यक्षन्नराशस न नग्नहु पति सुरया भेषज मेष सरस्वतीभिषग्रथो न चन्द्रयश्विनोर्वया।

इन्द्रस्य वीर्यं बदरैरुपवाकाभिर्भेषज तोक्मभि पय सोम परिसुता घृतमधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजप।

ऋषि - स्वस्त्यात्रेय। देवता - अश्व्यादय। छन्द - अतिधृति। *यजु २१-३१*

अर्थ – वेद की मान्यता है कि लोक कल्याण करने के इच्छुक (होता) यजमान व्यक्ति को सबसे पहले दूसरो को खिलाकर खाने की वृत्ति अपनाकर (नराशस न नग्नहुपति यक्षत्) प्रजाजन से प्रशसित शासक या धनी मनुष्यो के समान ही अभावग्रस्त जनो को सताने वाले अथवा निर्धन व्यक्तियो की पालन पोषण की व्यवस्था करने वाले ब्राह्मण के स्वामी के साथ स्मरण द्वारा सदा सम्पर्क बनाए रखे। (मेष सरस्वती भिषक न) उत्तमता से स्पर्धा करने वाली ज्ञान जल के उपदेशामृत से अज्ञान मल को धो देने वाली वेदवाणी तथा अपनी मधुरता तथा सान्तवना पूर्ण वाणी से रोगो को सह्य बनाने वाले वैद्य के समान (सुर या भेषजम्) केवल ज्ञान जल अथवा जल द्वारा औषधोपचार करने वाला बने। (रथो न चन्द्री) और अपने शरीर को चन्द्रमा के समान आह्लाद प्रद बनाने के लिए (अश्विनो वपा) प्राणापान के वपन (साधना) द्वारा (इन्द्रस्य वीर्यम्) जितेन्द्रिय व्यक्ति के समान वीर्य को मस्तिष्क मे पहुचाकर आसपास पाई जाने वाली इन्द्र जौ इत्यादि ओषधियों से चिकित्सा करे तथा (तोक्मभि) परिस्रुता पय सोम धृत मधु व्यन्तु) पुत्रादि सन्तानों द्वारा दोहन, पोषण प्रोक्षण क्षरणादि क्रियाओं द्वारा प्रदत्त दूध सोमरसादि फल–रस तथा घृत मधु आदि सात्विक पदार्थो का भक्षण सेवन करे। इन सब वस्तुओं का (होत) हे यजमान सयमपूर्वक सेवन करते हुए (आज्यस्य यज) घृत द्वारा अधिक से अधिक यज्ञ किया करे।

निष्कर्ष – लोक कल्याण में नियुक्त अथवा रत व्यक्तियों (यजमान) को परमेश्वर से सदा सम्पर्क रखना ज्ञान जल से मानसिक व बौद्धिक एव जलचिकित्सा द्वारा शारीरिक मलों का मोचन शरीर मन को आह्लादमय बनाने के लिए प्राण साधना द्वारा ऊर्ध्वरेता (सयमी गृहस्थी) बनना (४) वन्य वनस्पतियों तथा सुलभ अन्नों द्वारा शरीर चिकित्सा करना सच्चरित्र तथा क्रियाशील सन्तानों द्वारा प्रदत्त दुग्ध घृत, फलों के रस सोमादि ओषधि तथा मधु– सेवन द्वारा दीर्घायु व स्वस्थ रहते हुए, ज्ञान और सर्पिष् द्वारा अधिक से अधिक यज्ञ करना चाहिए।

– शेष भाग पृष्ठ ६ पर

महान् आर्यो के महान् कार्य

कर्मठ एवं आदर्श सेनानी : चरणजीत राय साहनी

– सीमा घई



स्व० चरणजीत राय साहनी

१९४७ के देश विभाजन मे आतकवाद के हाथो अपने युवा भाई श्री ओम प्रकाश साहनी के बलिदान की आहुति देकर रावल पिण्डी (पाकिस्तान) से दिल्ली पधारे चरणजीत राय साहनी। आते ही आर्यसमाज करौलबाग से ऐसे जुडे कि अपनी जीवन लीला की समाप्ति तक यह सस्था उनके सामाजिक कार्य क्षेत्र की आधार शिला बनी रही।

आर्यसमाज के प्रति अटूट लगन कर्त्तव्य परायणता सौम्य स्वभाव के फल स्वरूप जनता ने उन्हे पूरी दिल्ली की आर्यसमाज की गतिविधियो का अभिन्न अग बना दिया। १९५२ से १९६४ तक आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री सत्भ्रावा आर्य कन्या महाविद्यालय के प्रबन्धक कई साल रहे। १९६१ मे सार्वदेशिक सभा की स्वर्ण जयन्ती तथा नवम महासम्मेलन की विशाल शोभा यात्रा के प्रधान सयोजक रहे। महात्मा आनन्द स्वामी के कथनानुसार आर्य समाज करोलबाग ईट पत्थर का भवन ही नहीं परन्तु वह चलता फिरता व्यक्ति था जिसे चरणजीत राय साहनी के नाम से जाना जाता है।

श्री साहनी का जन्म ८ फरवरी १९०१ को रावलपिण्डी मे हुआ। बाल्यकाल मे स्वामी विशुदानन्द की शिक्षाओ ने उन पर गहरी छाप छोडी। बाद मे आचार्य प० मुक्तिराम जी के सम्पर्क मे आए और चुम्बक की भाति उनके अनन्य भक्त ही नहीं अपितु सहायक बन गए। दृढता और आदर्श उनके चरित्र के प्रमुख अग बन गए। १५ फरवरी १९२५ को उन्हीं आचार्य जी के वरद हस्त से युवा चरणजीत का पाणिग्रहण सस्कार श्री गणपत राय सभरवाल की सुपुत्री लाजवती से कराया। इस विवाह मे दो महत्वपूर्ण बाते देखी गयी – प्रथम कन्या पक्ष के घर के भवन के साथ ही विशाल यज्ञशाला निर्मित की गई थी दूसरे दहेज मे गाय का दान।

१९३८–३९ के हैदराबाद सत्याग्रह मे श्री साहनी ने सक्रिय योगदान दिया – स्वय सेवी जत्थों को भिजवाने अथवा घर–घर से भारी रकमो के दान को एकत्रित करवाना आचार्य मुक्तिराम जी (भावी स्वामी आत्मानन्द जी) द्वारा रावल पिंडी से बाहर एक नये गुरुकुल रावल के लिए भव्य विशाल भवनो के निर्माण गुरुकुल के लिए दान सस्था के सचालन मे सहयोग लगातार देते रहे। स्वामी आत्मानन्द जी के अधीन श्री चरणजीत द्वारा की गई सेवाओ का विवरण आत्मानन्द जीवन ज्योति ग्रन्थ मे मिलता है।

१९२२ मे रावल पिण्डी मे प्लेग की महामारी फैली तो सेवा समिति के मन्त्री होने के नाते कई बार युवा चरणजीत को मुर्दाखाने से मृतक शव श्मशान घाट तक पहुचवाने पडते थे। एक बार सूरज ढले ऐसे ही एक कार्य मे पर्याप्त श्रमिक सहायता न मिल सकी। उन दिनो आजकल की तरह शववाहन नहीं होते थे अतएव हथरेडियो से ही यह काम होता था। ऐसी विकट समस्या मे अपनी जान की परवाह न करके इस कर्त्तव्य को बखूबी निभाया।

स्वतन्त्रता सग्राम मे एक बार वन्देमातरम गाते एक टोली मे वह पुलिस की धरपकड मे आ गए। न्यायधीश ने क्षमायाचना की शर्त पर रिहा करने का आदेश सुनाया देशप्रेमी चरणजीत भला ऐसी शर्त कैसे मानता जेल जाने का विकल्प ही सही माना।

देश विभाजन के बाद शरणार्थी भाइयो की सेवा के लिए अखिल भारतीय स्थापना मण्डल के पुन अध्यक्ष बने। निसहाय महिलाओ को सिलाई मशीने अथवा मासिक भत्ता सरकार की ओर से लगवा दिया।

और कहानी खत्म हो गयी

६ मार्च १९६४ को साय ५ बजे सतभ्रावा विद्यालय से घर आए तो चाय बनने से पूर्व ही हृदय गति के अचानक रुक जाने से यह हसमुख चेहरा सदा के लिए सो गया। रातो रात श्री रामनाथ सहगल जी ने केन्द्रीय सभा की ओर से विराट शोकसभा का आयोजन करवाया जिसमे आर्य नेतागण – लाला रामगोपाल शालवाले (स्व० स्वामी अनन्दबोध जी) महापौर श्री हसराज गुप्त प्रो० रामसिह डॉ० युद्धवीर सिह ने दिवगत आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि दी।

दैनिक प्रताप के सम्पादकीय मे श्री नरेन्द्र ने लिखा एक और सज्जन चल बसा दैनिक मिलाप दैनिक तेज वीर अर्जुन तथा सार्वदेशिक ने अपने-अपने ढग से श्रद्धा सुमन उनकी स्मृति मे व्यक्त किए। श्री प्रकाश वीर शास्त्री ने लिखा कि वह आर्यसमाज के ऐसे दीवाने थे जिन्होने अपने स्वास्थ्य और परिवार की परवाह किए बिना वैदिक धर्म के प्रचार मे अपना जीवन लगा दिया।

श्री साहनी के बडे सुपुत्र कुलभूषण साहनी भी उनके पद चिन्हो का अनुकरण करने मे प्रयत्नशील है। आर्यसमाज करौल बाग तथा बाद में आर्यसमाज अशोक विहार–१ के मन्त्री के रूप मे कार्यरत रह चुके हैं।

इस लेख का उद्देश्य युवा पीढी को पुरानी पीढी की लगन तडप व उत्साहवर्धक कार्यशैली से अवगत कराना है इस आशय से ताकि सम्भवत किसी के लिए आदर्श व प्रेरणा स्रोत बन सके।

– बी-६८, फेज-१, अशोक विहार, दिल्ली-५२

स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द में अन्तर

मुझे बडा आश्चर्य होता है जब अनेको शिक्षित भाई बहन स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द मे अन्तर नहीं जानते। आपकी जानकारी के लिए दोनो का सक्षिप्त परिचय नीचे दिया गया है।

	स्वामी दयानन्द		स्वामी विवेकानन्द
१	**जन्म** गुजरात प्रान्त के जिला राजकोट के ग्राम टकारा मे सन् १८२४ मे हुआ। इनके पिता श्री कृष्ण जी बडे जमीदार थे। इनका पूर्व नाम मूलशकर था।	१	**जन्म** सन् १८६३ मे कलकत्ता मे हुआ। इनके पिता श्री विश्वनाथ जी वकील थे। इनके शैशव का नाम नरेन्द्र दत्त था।
२	**शिक्षा** बचपन से ही घर पर सस्कृत शिक्षा शास्त्रो का ज्ञान कराया गया।	२	**शिक्षा** इन्होने कालेज मे बी०ए० तक शिक्षा प्राप्त की।
३	**गुरु** मथुरा मे गुरु विरजानन्द जी से वेदो का ज्ञान प्राप्त किया।	३	**गुरु** श्री रामकृष्ण परम हस जो काली मा के भक्त थे से प्रभावित होकर अद्वैतवाद को स्वीकार किया।
४	**प्रचार** वेदो का प्रचार किया और मूर्ति पूजा अवतारवाद का खण्डन किया।	४	**प्रचार** नवीन वेदान्त अद्वैतवाद का प्रचार किया और मूर्ति पूजा के पक्ष मे समर्थन किया।
५	मास मछली खाना पाप है। अभय पदार्थ है। स्वामीजी ने स्पष्ट बताया है।	५	इन्होने मास खाने के लिए मना नहीं किया है क्योकि स्वय भी खाया है।
६	भारत की आजादी के लिए विदेशी शासन के विरुद्ध तीखा प्रहार किया।	६	देश की स्वतन्त्रता के लिए कुछ नही किया।
७	देहान्त सन् १८८३ मे कार्तिक मास की अमावस्या को दीपावली के दिन अजमेर मे प्राण त्याग दिए।	७	चार जुलाई सन् १९०२ को शरीर मे काफी थकावट हो रही थी। उसी दिन–रात को लगभग ४ बजे हमेशा के लिए चिर निद्रा मे सो गए।

– देवराज आर्य मित्र आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

गुरुकुल करतारपुर में छात्रों का प्रवेश

(२० जुलाई २००२ शनिवार को प्रात:)

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (जि० जालन्धर) पजाब मे कक्षा–नौवी मे प्रवेश के इच्छुक छात्रो की प्रवेश परीक्षा २० जुलाई २००२ शनिवार को प्रात १० बजे ली जाएगी। इन प्रवेशार्थियो की केवल गणित हिन्दी अग्रेजी विषयो मे आठवीं के स्तर की परीक्षा ली जाएगी। अधिक अक पाने वाले छात्र नियत सख्या मे ही प्रवेश पा सकेगे।

विद्याविनोद अर्थात १०+१ तथा अलकार अर्थात बी०ए० मे प्रवेश के इच्छुक नये छात्रो को २० जुलाई तक प्रमाण-पत्रो सहित उपस्थित होना होगा। शारीरिक और बुद्धि से कमजोर छात्रो को प्रवेश नहीं मिलेगा।

कक्षा ८ तक सी०बी०एस०सी० (एन०सी०आर०टी०) से तथा कक्षा–६ से अलकार (बी०ए०) तक का पाठ्यक्रम गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बन्धित है। छात्रो की आवास शिक्षा एव भोजन की सुविधा निशुल्क है। पुस्तक–वस्त्रादि फुटकर खर्च तथा विश्वविद्यालय का परीक्षा शुल्क अभिभावक को ही वहन करना होगा। कक्षा नौवी के प्रवेशार्थियो को १६ जुलाई २००२ शुक्रवार शाम तक गुरुकुल मे पहुच जाना चाहिए।

यह उचित होगा कि छात्रो के अभिभावक स्वेच्छा से कुछ न कुछ मासिक सहायता भेजते रहने का भी आश्वासन दें।

– आचार्य यशपाल वर्मा, गुरुकुल करतारपुर, जिला जालन्धर, पजाब-१४४८०१

पृष्ठ ४ का शेष भाग

दान देकर भोग करो, सब कुछ मिलेगा

अर्थपोषण – नरा शस नरै शस्यते इति शसुस्तुतौ। नग्नहु नग्नान वस्त्र भोजन – रहितान जुहोति हुदानादनयो अन्नव स्त्राणि ददाति दुष्टान कारागारे क्षिपति स्वामी दयानन्द। तोक्मभि – अपत्यै। सुरा – उदकनाम नि० १–१२। मेष – स्पर्धायाम मिश रोषकृते शब्दे।

भेष – उपदेष्टा स्वामी दयानन्द। रथ – शरीरम (आत्मान रथिन विद्धि शरीर रथमेवतु।) वया–वपनम=बोना=साधना। इन्द्र –जितेन्द्रियो मनुष्य। धृतम–धृक्षरणदीपयो – दीप्ति देने वाले पदार्थ ज्ञान तथा घृत। उपवाकामि – इन्द्र व (कुटजा) आदि नि भेषजम

इस मन्त्र के स्वामी दयानन्द भाष्य मे दिया हुआ भावार्थ मननीय है –

ये निर्लज्जान् दण्डयन्ति प्रशसनीयान् स्तुवन्ति जलेन सहौषध सेवन्ते ते बलारोग्ये प्राप्यैश्वर्यवन्तो जायन्ते।

जो पुरुष (विशेष रूप से शासक व नेता) निर्लज्ज (दुष्ट दस्युओ) व्यक्तियो को दण्ड देते और दिलवाते है तथा प्रशसनीय सज्जनो की प्रशसा करते हैं और जल के साथ (जलचिकित्सा के साथ) ओषधि सेवन करते है वे बल और आरोग्य प्राप्त करके ऐश्वर्यशाली (यशस्वी) होते है। अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम। यजु ८–६

विशेष – इन तीन मन्त्रो की टेक हे

होता यक्षत – पय सोम परिस्रुता घृतमघुव्यन्तु – आज्यस्य होतर्यज।

(१) होता यजमान – दान देकर खाने की वृत्ति वाला बनकर परमेश्वर की आराधना करे।

(२) परिश्रमपूर्वक – दुग्ध सोम घृत और मधु को प्राप्त करे और उसका समुचित भोग करे।

(३) आदेश केवल इतना है कि – हे होत ! घृत (ज्ञान व घी) का अधिक से अधिक दान कर।

निष्कर्ष – अभाव ग्रस्तो को दान करने से परमेश्वर की आराधना होती है। भोजन से बचे का देव पूजा (विद्वत्सत्कार) या सगठन मे दान कर दे सग्रह न करे।

(४) वासना रहित हृदय, मननशील मन और प्राण साधना मानव के जीवन के लिए आवश्यक सभी तत्व प्राप्त कराते हैं

देव बर्हि सरस्वती सुदेवमिन्द्रेऽश्विना।

तेजो न चक्षुरक्ष्योर्बर्हिषा दधुरिन्द्रिय वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज।। यजु २१–४८

ऋषि: स्वस्त्यात्रेय। देवता-सरस्वत्यादय:। छन्द त्रिष्टुप्।

अर्थ – (अश्विनौ) प्राणपान (इन्द्रे) जितेन्द्रिय पुरुष के (बर्हि देवम्) वासना रहित सूक्ष्म शरीर स्थित हृदय (मन) तथा (सरस्वती) अन्तश्चेतना तथा प्रज्ञो की देवी (बर्हिषा) कामना मात्र के उद्वर्हण द्वारा (सुदेवम्) सर्वोत्कृष्ट प्रभु को (दधु) सतत स्मरण रूप मे धारण (स्थापित) कर देते हैं। इसके साथ ही अश्विनौ – सरस्वती (इन्द्रे) जितेन्द्रिय पुरुष के स्थूल शरीर स्थित (अक्ष्यो चक्षु) ज्ञानेन्द्रियो की प्रतिनिधि चक्षुओं मे दृष्टि शक्ति का तेज (वसुवने) निवासक तत्वों की प्राप्ति के निमित्त कर्मेन्द्रियो तथा सम्पूर्ण शरीर में (वसुधेयस्य इन्द्रियम्) निवासक तत्वों के आधारभूत बल–वीर्य को (व्यन्तु) स्थापित करते है प्राप्त कराते है। हे (स्वस्त्यात्रेय) लोक कल्याण चाहने वाले आत्रेय ! अपने नाम को सार्थक बनाते हुस सतत क्रियाशील और काम क्रोधादि वासनाओ से अस्पृष्ट रहकर (यज) सर्वोत्कृष्ट देव से सदा सम्पर्क बनाए रख और लोक कल्याण के लिए अपनी सब शक्तियो व सम्पतियो का दान करता रहे।

निष्कर्ष – प्राण साधना और अन्तश्चेतना का जागरण से जितेन्द्रिय पुरुष के कामना रहित हृदय मे सुदेव प्रभु का साक्षात अनुभव करा देते है और स्थूल शरीर तथा इन्द्रियो को निवासक तत्वो की प्राप्ति के लिए आवश्यक सामर्थ्य भी प्रदान करते है। साधक को चाहिए कि प्रभु साक्षात्कार (अनुभव) के बाद भी जीवनपर्यन्त क्रियाशील और सयमी बनकर लोक–कल्याण रूपी यज्ञ करता रहे।

अर्थ पोषण – देव मन। गोपथ ३०–१०। बर्हि–बर्ह हिसायाम बर्हयति वासना इति व्यन्तु – वी गतिव्याप्ति प्रजनन कान्त्यसन खादनेषु।

(५) अश्विनौ और सरस्वती इन्द्र के सब द्वारो को दिव्य बना देते है,

देवीर्द्वारोऽश्विना भिषजेन्द्रे सरस्वती।

प्राण न वीर्यं नसि द्वारो दधुरिन्द्रिय वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज।। यजु २१–४६

ऋषि स्वत्यात्रेय। देवता अश्व्यादय। छन्द ब्राह्मी उष्णिक।

अर्थ – (अश्विनौ भिषजौ) सब रोगो के भिषक प्राणापान तथा (सरस्वती) ज्ञान व चेतना की देवता (इन्द्रे) जितेन्द्रिय पुरुष मे (द्वार देवी दधु) आख कान नाक मुख तथा पायूपस्थ द्वारो को शुद्ध तथा सबल बनाकर दिव्यता प्रदान करते है। ये ही प्राणापान और सरस्वती (नसि प्राण न वीर्य द्वार दधु) नाक मे प्राण और तेजस्विता को रोग निवारण द्वारा धारण करते है। इसके साथ ही ये दोनो (वसुवने वसुधेयस्य इन्द्रिय व्यन्तु) निवासक तत्वो की प्राप्ति के निमित्त निवासक तत्वो के आधारभूत बल–वीर्य को सारे शरीर मे व्याप्त करते है। हे आत्रेय! इन्हे अपने शरीर मे रक्षित रखने के लिए (यज्ञ) यज्ञशील बन अर्थात परमात्मा देव की पूजा (सतत स्मरण) कर विद्वानो की सगति कर और अभाव ग्रस्तो की यथाशक्ति सहायता कर ।

अर्थपोषण – द्वार – द्वरणे–निवारण करना स्वीकार करना आच्छादित करना सधा कोषा।

निष्कर्ष – प्राणापान की साधना तथा अन्तश्चेतना और प्रज्ञा प्राप्ति से सारे इन्द्रिय द्वार दिव्य (निर्मल अत एव सूक्ष्म ज्ञान वाहक) बन जाते हैं। नासिका में प्राण शक्ति प्रबल और स्थूल शरीर सशक्त हो जाता है। इस अवस्था को सतत कायम रखने के लिए यज्ञशील बने रहना आवश्यक हैं।

(६) दोनों संध्याकाल, प्राणापान और अन्तश्चेतना, मनुष्य के मन, शरीर व मस्तिष्क के लिए आवश्यक सब तत्व प्राप्त का देते हैं। उसके बाद भी यदि वह यज्ञशील बना रहे तो साधक का परमेश्वर से सख्य तथा सम्पर्क सुनिश्चित।

देवी उषासावश्विना सुत्रामेन्द्रे सरस्वती।

बल च वाचमास्य उषाभ्या दधुरिन्द्रिय वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज।। यजु २१–५०

ऋषि- स्वस्त्यात्रेय। देवता-अश्व्यादय:। छन्द.– त्रिष्टुप्।

अर्थ – (देवी उषासौ) दिव्यताओं से युक्त व देदीप्यमान साय प्रात की सन्धिवेलाए (सुत्रामा अश्विनौ) उत्तम त्राण (रक्षण) करने वाले प्राणापान तथा (सरस्वती) अन्तश्चेतना व प्रज्ञा का देवता (इन्द्रे–आस्ये) इन्द्रियो के अधिष्ठाता के मुख मे (उषाभ्याम) दोषो के दाह और गुणो को प्रभा युक्त बना कर (बल न वाचम दधु) बल और वाक शक्ति को धारण (स्थापित) करते है। इसके साथ ही ये तीनो (वसुवने) निवासक तत्वो की प्राप्ति के निमित्त (वसुधेयस्य) निवासक तत्वो के आधार भूत (इन्द्रियम) बल–वीर्य को (व्यन्तु) व्याप्त करे – करते हैं। हे (आत्रेय) इन्हे सदा अपने साथ रखने के लिए (यज) यज्ञशील बन ।

अर्थपोषण – उषाभ्याम – उष दाहे उषस प्रभात भावे।

निष्कर्ष – मुख मे ऊर्जायुक्त तथा मधुर वाणी को धारण करने के लिए सदा यज्ञशील बना रह।

(७) रात-दिन परमेश्वर का स्मरण, इन्द्र को परमेश्वर से अवश्य मिला देगा।

देवी जोष्ट्री सरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्धयन्।

श्रोत्र न कर्णयोर्यशो जोष्ट्रीभ्या दधुरिन्द्रिय वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज।। यजु २१–५१

ऋषि स्वस्त्यात्रेय। देवता अश्व्यादय। छन्द त्रिष्टुप्।

अर्थ – (देवी जोष्ट्री) दिन और रात (सरस्वती) चेतना और ज्ञान की देवी (अश्विनौ) प्राणापान (इन्द्र अवर्धयन) इन्द्रियो के स्वामी पुरुष को बढाते हैं। ये (जोष्ट्रीभ्याम्) कर्त्तव्यो के पालन और यदृच्छा प्राप्त के सेवन से सन्तोष की वृत्ति द्वारा (कर्णयो श्रोत्र न यश दधु) इन्द्र के कानो मे श्रवण शक्ति और यश को स्थापित करते हैं। ये ही (वसुवने) जीवन मे निवास के लिए आवश्यक तत्वो की प्राप्ति की निमित्त (वसुधेयस्य इन्द्रिय व्यन्तु) निवासक तत्त्वो को प्राप्त करने के आधारभूत बल व वीर्य को व्याप्त करे – करते हैं। हे आत्रेय ! इन सब प्राप्तियो को सदा अपने साथ रखने के लिए (यज) सदा यज्ञशील बन – दूसरो को खिलाकर खाने की वृत्ति को अपना।

अर्थ पोषण – देवी जोष्ट्री – देवी जोष्ट्री अहोरात्रे नि० ८–४१ जोष्ट्रभ्याम – जुषी प्रीति सेवनयो। न=च (वेदे)।

निष्कर्ष – (१) प्राण साधना और ज्ञानार्जन द्वारा चेतना को सवेदनशील बनाने से जितेन्द्रिय पुरुष (इन्द्र) का सूक्ष्म शरीर पवित्र और स्वस्थ होता है। जीवन मे स्थूल शरीर के लिए आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति के लिए आवश्यक बल व वीर्य भी उन्हीं से मिलते हैं। उन्हे जीवनपर्यन्त कायम रखने के लिए यज्ञ की भावना (अपने से पहले दूसरो के हित का ध्यान) आवश्यक है। अन्यथा सग्रह की प्रवृत्ति और परिणाम स्वरूप मद तथा लोभ बढकर मानव को दानव बना देते हैं।

(२) इन ४ मन्त्रो की टेक है – **'अश्विनौ सरस्वती (तेजो वीर्यं बलं यश) दधु, वसुवने वसुधेयस्य इन्द्रिय व्यन्तु, यज। यदि जीवन में यज्ञ की भावना बनी रहेगी तो, किसी आवश्यक वस्तु की कमी अनुभव नहीं होगी।**

– श्याम सुन्दर राधेश्याम, ५२२, कटरा ईश्वर भवन-२, खारी बावली, दिल्ली-६

सार्वदेशिक सभा के प्रधान अमरीका यात्रा पर

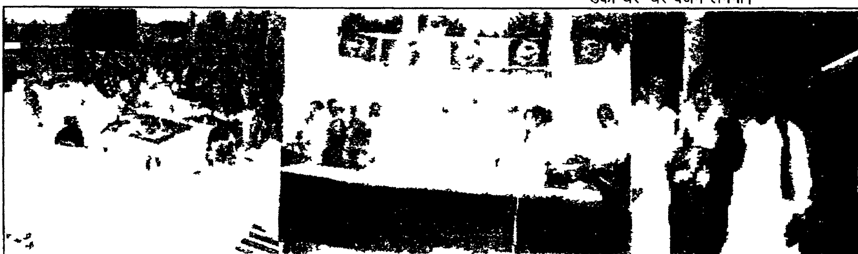
कुछ सप्ताह अमरीका रुकने के बाद कै० देवरत्न आर्य, कनाडा, इंग्लैण्ड तथा हालैण्ड भी जाएंगे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अफ्रीका की यात्रा पूर्ण करके दो सप्ताह बाद ६ जुलाई की मध्य रात्रि अमेरिका के लिए प्रस्थान कर गए उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या भी गई है।

कै० देवरत्न आर्य की विदेश प्रचार य'त्र' का विदाई समारोह ८ जुलाई को दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा तथा अन्य आर्य सस्थाओ का तत्वावधान मे आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी के सभागार मे आयोजित किया गया। इस विदाई समारोह का सयोजन श्री सोमदत्त महाजन जी ने किया।

विदाई समारोह मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन दिल्ली ग्भा के प्रधान ¨व रा'ज्देशिक सभा क मन्त्री श्री वदव्रत शर्म कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य श्री रामनाथ सहगल दिल्ली के पूर्व मन्त्री डा० योगानन्द शास्त्री श्री लक्ष्मीचन्द श्री राजसिह भल्ला श्री धर्मपाल प्रि चन्द्रदेव आर्य तपस्वी श्री सुखदेव श्रीमती उज्ज्वला वर्मा श्री सत्यानन्द आर्य श्री अशोक शर्मा विनय आर्य आदि उपस्थिति थे। इस विदाई समारोह की अध्यक्षता दिल्ली सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने की।

उपस्थित महानुभावो मे अपने अपने उद्बोधन मे क० देवरत्न आर्य से यह आशा व्यक्त की कि उनकी इस विदेश प्रचार यात्रा से वैदिक धर्म का डका घर–घर बजने लगेगा।



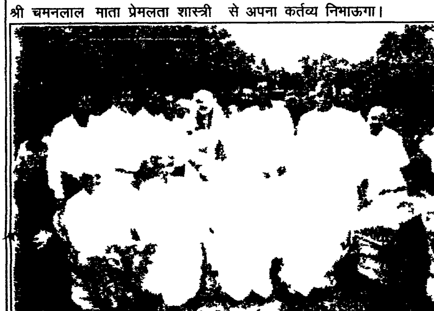
सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री कै० देवरत्न आर्य विदाई से पूर्व यज्ञ करते हुए। विदाई समारोह के अवसर पर मचस्थ कै० देवरत्न आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या अध्यक्षता करते हुए सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी तथा अन्य महानुभाव। कै० देवरत्न आर्य जी का स्वागत करते हुए डॉ० योगानन्द शास्त्री तथा अन्य आर्यजन।

आर्यसमाज की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहूंगा – साहिब सिंह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्ट मण्डल दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा के नेतृत्व मे नवनियुक्त के न्द्रीय श्रमम त्री श्री साहिबसिह वर्मा के निवास पर उनसे मिला और उन्हे मन्त्री बनने पर आर्यसमाज की ओर से बधाई दी गई।

उस शिष्ट मण्डल मे श्री रामविलास खुराना श्री राजसिह भल्ला श्री चन्द्रदेव दिल्ली सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव श्री चमनलाल माता प्रेमलता शास्त्री श्री राजेन्द्र दुर्गा चौ० लक्ष्मी चन्द्र श्री अरुण वर्मा श्री रविकान्त श्री रामलाल आहूजा श्री रोशनलाल श्री आदित्य श्री धर्मपाल श्री जोगिन्दर खटटर श्री रवि बहल आदि उपस्थित थे।

श्री साहिबसिह वर्मा ने शिष्टमण्डल का धन्यवाद करते हुए कहा कि मै आर्यसमाज का सदैव ऋणी रहूगा और आर्यसमाज की सेवा के लिए जब कभी भी मेरी आवश्यकता पडेगी मै तत्परता से अपना कर्तव्य निभाऊगा।



आर्यसमाज के अधिकारियो के साथ श्री साहिब सिह वर्मा।

आर्यवीरो का एक साहसी दल, सियाचिन ग्लेशियर की ओर रवाना हुआ

दिल्ली प्रदेश आर्य वीर दल के प्रचारक श्री विनय आर्य के नेतृत्व मे आर्य वीरो का एक २८ सदस्यीय साहसी दल बस द्वारा सियाचिन ग्लेशियर की दुर्गम यात्रा पर रवाना हुआ। इस साहसी दल को सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य तथा दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा अन्य महानुभावो ने आशीर्वाद देकर रवाना किया। ८ जुलाई को रवाना हुआ यह दल १७ जुलाई को वापस दिल्ली लोटेगा। यह साहसी दल अपने साथ ताबे की प्लेट पर दिल्ली सभा और आर्यवीर दल आदि के नाम से कुछ स्मृति वाक्य लिखवाकर ले गया है जिसे उस दुर्गम चोटी पर स्थित एक मन्दिर मे स्थापित किया जाएगा।

सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि हम इस साहसी दल के दिल्ली वापस आने पर उनका इसी प्रकार स्वागत करेगे।



साहसी दल को विदाई देते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा श्री सोमदत्त महाजन तथा अन्य महानुभाव।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 11 12/07/2002 दिनांक ८ जुलाई से १४ जुलाई २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 11 12/07/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

राष्ट्र को बिस्मिल जैसे समर्पित नेता चाहिए

क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल की १०५वीं जयन्ती सम्पन्न

आर्यसमाज महामन्दिर तथा आर्यवीर दल क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल शाखा के सयुक्त तत्वावधान मे दिनाक २१–६–२००२ को क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल की १०५वीं जयन्ती मनाई गई।

इसी दिन प्रात ५ बजे महामन्दिर क्षेत्र मे प्रभात फेरी निकाली गई। प्रभातफेरी मे क्रान्तिकारी गीत समूह गान और शहीदो की याद मे वीरगान व जयघोष लगाए गए। प्रभात फेरी का सचालन प्रदीप आर्य और भवरलाल आर्य ने किया। प्रभातफेरी का प्रारम्भ ओ३म ध्वज उपसचालक हेमसिह ने दिखाकर किया।

दूसरा सत्र साय ६.३० यज्ञ से हुआ। यज्ञ का सचालन प्रदीप आर्य ने किया।

यज्ञ के पश्चात् आर्यवीर दल जोधपुर के सचालक नारायण सिह ने क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल के क्रान्तिकारी कार्यो जैसे काकोरी रेल अभियान मे सरकारी धन की वसूली गोरखपुर जेल मे लिखित उनकी आत्मकथा तथा अशफाक उल्ला खा चन्द्रशेखर आजाद ठाकुर रोशनसिह राजेन्द लाहिडी जैसे क्रान्तिकारियो का सगठन करना आदि विषयो पर प्रकाश डाला। आर्यवीर दल जोधपुर के सचालक ने कहा कि रामप्रसाद बिस्मिल भारत को आजाद कराने वाले आर्य चिन्तक देव दयानन्द के दीवाने तथा स्वाधीनता यज्ञ के ज्वालामुखी थे। अपने बच्चो को अच्छ सस्कार देने के लिए तथा शारीरिक रूप से इन्हे स्वस्थ रहने के लिए सभी को आर्यवीर दल मे आने का निमन्त्रण दिया।

इस अवसर पर राजस्थान सयुक्त महासघ प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष डी०पी० जोशी भी उपस्थित थे। उन्होने कहा कि क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल जैसे समर्पित नौजवानो की आज राष्ट्र को जरूरत है।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण स्थानीय व्यायामशाला मे व्यायाम प्रदर्शन था। आर्यवीरो ने आसन लाठी बॉक्सिग आग के गोले मे से निकलना मुह से आग नि० लने जिम्नास्टिक आदि के रोमाचकारी प्रदर्शन किए। नन्हे मुन्नो तथा बडो ने बडी गिनती मे व्यायाम प्रदर्शन मे भाग लिया।

श्री डा धर्मपाल आर्य कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
डाकघर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार
(3058)
पि....

नये पदाधिकारी

आर्यसमाज मन्दिर सी-ब्लॉक, प्रीत विहार, दिल्ली-९२

प्रधान	श्री सुरेन्द्र कुमार रैली
उप प्रधान	श्री बुद्धदेव आर्य एव श्री योगेन्द्र नाथ कपूर
मन्त्री	श्री कृष्ण कुमार ढींगरा
सयुक्त मन्त्री	श्री ओमदत्त शर्मा
उप मन्त्री	श्री अशोक बाबू एव श्री राजकुमार खुराना
कोषाध्यक्ष	श्री आर०एस० शर्मा

महिला समाज

प्रधाना	श्रीमती सावित्री रानी कपूर
उप प्रधाना	श्रीमती रामकली सलूजा
मन्त्रिणी	श्रीमती सुन्दर शान्ता चडडा
उप मन्त्रिणी	श्रीमती परीक्षा आहूजा एव श्रीमती शशि गर्ग
कोपाध्यक्षा	श्रीमती अमरलता शर्मा

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक ३१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १५ जुलाई से २१ जुलाई २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

सांप्रदायिक सौहार्द का प्रयास १९वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया था

अल्पसंख्यक आयोग ने की नई शुरुआत

नई दिल्ली राष्ट्रीय अल्पसख्यक आयोग के तत्वावधान मे साम्प्रदायिक सौहार्द को बढावा देने के उद्देश्य से हिन्दू, मुसलमान सिक्ख और ईसाई मतो से सम्बन्धित धार्मिक सगठनो के प्रतिनिधियो की एक बैठक १५ जुलाई को लोकनायक भवन कार्यालय मे बुलाई गई। जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा उपस्थित थे। इस बैठक की अध्यक्षता अल्पसख्यक आयोग के चेयरमैन न्यायमूर्ति श्री मोहम्मद शमीम ने की और सचालन उपाध्यक्ष श्री त्रिलोचन सिह ने किया।

इस बैठक मे राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ की ओर से मदनदास देवी श्री तरुण विजय श्री सत्यनारायण बसल श्रीराम वग्गा विश्व हिन्दू परिषद की ओर स आचार्य गिरिराज किशोर श्री सुरेन्द्र जैन प्रवीण तोगडिया के अतिरिक्त सनातन धर्म क प्रतिनिधि मुस्लिम समुदाय से मौलाना वहीरुददीन फिल्म निर्माता श्री मुजफ्फर अली इमाम सगठन के प्रधान मौलाना जमीर अहमद इलियासी मौ० मुफ्ती इकराम आदि सहित कई अन्य मुस्लिम नेता भी उपस्थित थे। बैठक मे स्वामी चिन्मयानन्द तथा प्रो० वाचस्पति उपाध्याय ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

आर्यसमाज की ओर से अपने विचार प्रस्तुत करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि इस प्रकार की साम्प्रदायिक सौहार्द बैठक १६वी शताब्दी मे ब्रिटिश शासन के दौरान महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने दिल्ली मे आयोजित की थी। उनका यह स्पष्ट विश्वास था कि यदि सभी मतो के विद्वानजन परस्पर विरोध की भावना त्याग दे और बुद्धिमत्ता से जीवन के सर्वमान्य सिद्धान्तो को निष्पक्ष होकर स्वीकार करे तो साम्प्रदायिक सौहार्द की स्थापना कोई कठिन कार्य नही होगा।

श्री विमल वधावन ने अल्पसख्यक आयोग का साधुवाद व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे प्रयास देश के हर हिस्से मे और विशेष रूप से जनता के बीच होने चाहिए। उन्होने इस बैठक मे मुस्लिम नेताओ द्वारा राष्ट्रवादी भावनाए व्यक्त करने पर सतोष व्यक्त करते हुए कहा कि यदि यही भावनाए साधारण जनता के बीच भी प्रचारित की जाए तो साम्प्रदायिक तनाव कभी उत्पन्न ही नही हो सकता।

उन्होने कहा कि जब कहीं भी हिन्दुओ मुसलमानो या अन्य मजहबो मे तनाव की कोई भी बात उत्पन्न होती नजर आए तो तत्काल सभी मजहबो को उसका विरोध करना चाहिए। इसी क्रम मे यदि गाधरा मे हिन्दुओ को रेलगाडी मे जलाए जाने की निन्दा मुस्लिम समाज के द्वारा सच्चे मन से और तुरन्त की जाती तो गुजरात के अन्य हिस्सो मे सम्भवत हिंसा न भडकती।

उन्होने कहा कि इस बैठक मे मुस्लिम नेता कुरान को एक श्रेष्ठ मानवतावादी ग्रन्थ के रूप मे प्रस्तुत कर रहे है। ऐसे विद्वानो को अपने यह विचार अधिक से अधिक प्रचारित करने चाहिए। ओर यह मुस्लिम विद्वान स्वय ही कुरान के उन उपदेशो का खण्डन करे जो सामान्य जनता को विध्वसात्मक और घृणा फेलाने वाले लगते हो।

श्री विमल वधावन ने न्यायमूर्ति मो० शमीम से कहा कि आप अल्पसख्यक आयोग की तरफ से सरकार को अपनी सस्तुति भेजे कि सविधान मे वर्णित नागरिको के मूल कर्तव्यो को देश मे लागू करने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

इस बेठक मे परस्पर भाईचारा आर राष्ट्रवादी भावनाओ को लागू करने के दृष्टिकोण से लगभग सभी प्रतिनिधियो मे एक मत था। बैठक मे यह चर्चा भी सामने आई कि साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न होने की स्थिति म सभी मतो के प्रमुख अधिकारी सयुक्त दौरे आयोजित करे।

बैठक के अन्त म अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री मो० शमीम द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव मे कहा गया कि इस प्रकार की बैठके समाज की एकता के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। ऐसी बैठको का आयोजन प्रान्तीय और जिला स्तर पर भी किया जाएगा। केवल बातचीत के द्वारा ही आपसी मतभेदो को दूर किया जा सकता है। साम्प्रदायिक तनाव का आभास होते ही तुरन्त ऐसे प्रयास आरम्भ कर दिए जाने चाहिए। इस प्रस्ताव को सभी सदस्यो ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया।

परन्तु बैठक समाप्ति के बाद दर्जनो पत्रकार फोटोग्राफर तथा विभिन्न चैनलो के रिपोर्टरो ने जब सघ एव वि०हि०प० प्रतिनिधियो से प्रतिक्रिया जाननी चाही तो आचार्य गिरिराज किशोर जी ने धार्मिक पुस्तको मे से विवादित अश हटाने की बात तथा रामजन्मभूमि विवाद की बात छेड दी। इस पर कुछ मुस्लिम नेताओ की उनके साथ बहस छिड गई और लगभग सभी समाचार पत्रो ने यह समझा कि सारी बैठक मे इसी प्रकार के विवाद चलते रहे। परिणामत समस्त समाचार पत्रो ने इस बैठकको असफल घोषित किया। वास्तव मे यह बैठक सभ्य तरीके से बातचीत के मार्ग खोलने का एक सुप्रयास था। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उपस्थित प्रतिनिधियो मे कितने लोग अपने अपने अनुयायियो को इन भावनाओ से अवगत करा पाते है। और साम्प्रदायिक तनाव के मूल मे जाकर अपने अपने अनुयायियो को एक दूसर के लिए त्याग और सहिष्णुता अपनाने के लिए तैयार कर पाते है।

दूसरी तरफ **आज तक** तथा कुछ अन्य चैनल रिपोर्टरो ने आर्यसमाज के प्रतिनिधियो से प्रतिक्रिया मागी तो सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा न इसे एक अच्छी शुरुआत की शुरूआत बताया। श्री वेदव्रत शमा ने कहा कि आयसमाज इस कार्य का खुले हृदय से स्वीकार करेगा और हम इस प्रकार की बेठके आर्यसमाज के मचो से भी आयोजित करने को तेयार हे बशर्ते मुसलमान नेता भी अपनी मस्जिदो तथा अन्य मचो से उदबाधन के लिए हिन्दू नेताओ को भी आमन्त्रित करे।

श्री मोहनलाल मोहित जी के १०० वे जन्म दिवस पर

मारिशस में ऐतिहासिक महासम्मेलन

आर्यसभा मारिशस के तत्वावधान म वयोवृद्ध आर्यरत्न श्री मोहनलाल मोहित जी का १००वा जन्म दिवस एक ऐतिहासिक समारोह के रूप म विशाल स्तर पर मनाया जाएगा। श्री मोहनलाल मोहित आगामी २२ सितम्बर को अपनी आयु के १०० वर्ष पूर्ण करेगे। वैदिक जीवन पद्धति के प्रतीक श्री मोहनलाल मोहित का मारिशस राष्ट्र के उत्थान तथा आर्य समाज की प्रगति मे गम्भीर एव चिरस्मरणीय योगदान है

यह समारोह मारिशस मे १८ से २४ सितम्बर की तिथियो मे एक महायज्ञ के रूप मे आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम मे भाग लेने वाले आर्यजनो को १७ सितम्बर को प्रात काल की उडान से दिल्ली से रवाना होना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने आयजनो का आह्वान किया है कि वे अधिक से अधिक सख्या मे इस ऐतिहासिक समारोह मे भाग लेने के लिए मारिशस भ्रमण का कार्यक्रम बनाए। इस हेतु १७ हजार रूपये हवाई जहाज से आने जाने का व्यय तथा ५०००रुपये आवास आदि के प्रबन्ध हेतु कुल राशि २२००० रुपये का ड्राफ्ट सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम बनाकर भेजे। इसके साथ ३ पासपोर्ट साईज के फोटो भी भेजे। मारिशस जाने के इच्छुक यात्रियो के पास वैध पासपोर्ट भी होना चाहिए जो अगले ६ माह तक वैध हो।

गोरक्षा — राष्ट्र रक्षा

– ब्रह्मानन्द जिज्ञासु 'आर्य कवि'

वेद म तीन माता शब्द आए ह। प्रथम माता शब्द जिस मा के गर्भ से हम पैदा हुए हे दूसरी माता गोमाता जिसक दुग्ध का पानकर हम बचपन से मृत्यु पर्यन्त स्वस्थ बने रहते ह आर तीसरी माता धरती मा जिससे हम अन्न जल ग्रहण कर जीवित रहते है। यहा हम दूसरी मा अर्थात गोमाता के सम्बन्ध मे चर्चा कर रहे हे। वदिक युग स लेकर आज तक जितन भी भारत के ऋषि मुनि चि तक विचारक सन्त महात्मा फकीर एव राजा महाराजा हुए है सभी एक स्वर से गोरक्षा पर बल देते रह है और गोहत्या को जघन्य अपराध बताते रहे है। उन सभी गो भक्तो ने यथासम्भव गोमाता की सेवा भी की। महर्षि वशिष्ठ महाराज दिलीप योगश्वर श्रीकृष्ण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम महाराजा विक्रमादित्य तथा राजा भोज आदि ने गोसेवा कर भारत का गौरव बढाया। मध्य युग मे तथा उससे पूर्व भी भारत के चिन्तको एव मनिषियो ने गोहत्या का विरोध किया। तीर्थकर महावीर स्वामी महात्मा बुद्ध गुरुनानक महाराणा सागा महाराणा प्रताप छत्रपति शिवाजी महाराज गुरुतेग बहादुर गुरुगोविन्द सिह वीर वन्दा बैरागी महाराजा रणजीत सिह महारानी लक्ष्मी बाई वीर तात्या टोपे नाना साहब महर्षि दयानन्द सरस्वती राव तुकाराम वीर कुवर सिह लोकमान्य तिलक तथा महात्मा गाधी आदि ने भी गोहत्या का प्रबल विरोध किया। मुस्लिम सत फकीरो एव बादशाहो ने भी गाहत्या का विरोध किया था।

मुगल बादशाह बाबर हुमायू, अकबर जहागीर ने गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाए। कवि रहीम रसखान तथा अन्तिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर भी गोहत्या के विराधी रह।

आखिर गाय से क्या लाभ हे जिसके लिए भारतवासी गाय को इतना महत्त्व देते है ? प्रथमत गो स लाभ यह ह कि गा दुग्ध अमृत तुल्य होता है इसके नियमित सेवन से किसी भी व्यक्ति का शरीर स्वस्थ एव हृष्ट पुष्ट हा जाता हे तभी तो यहा के सत महात्मा दुग्धाहर पर बहुत ही बल देते रहे। वे सिर्फ दुग्ध सेवन कर साधना करते रहे और स्वस्थ रहे। किसी मुस्लिम फकीर ने ठीक ही कहा है कि गो का दूध दवा है और मास जख्म है। गो मास से कई प्रकार की बीमारी हो सकती है। यकृत का दोष अपैण्डीसाइटीस गठिया रक्तविकार कुष्ठ एक्जीमा केसर तथा प्रदर विकार आदि। ये सब जानकर भी लोग गोमास सेवन करते है तथा गोहत्या करते हैं – यह कैसी विडम्बना है !

दूसरा लाभ कृषि से सम्बन्धित है। भारत कृषि प्रधान देश है। यहा ८० प्रतिशत व्यक्ति कृषि पर ही निर्भर हैं। भारत जैसे देश मे सब व्यक्ति ट्रेक्टर नही रख सकते। वे बैलो के सहारे ही खेती करते है। गाय बेल का गोबर कृषि की फसल बढाने मे अत्यन्त उपयोगी हे। वर्तमान समय मे कृत्रिम खाद लोग उपयोग मे लाते हे किन्तु इससे भी अधिक लाभकारी गाय बेल कर गोबर होता है। इसके द्वारा फसल मे अच्छी वृद्धि होती है।

इन्ही सब कारणो से भारत के लोग प्राचीन समय से ही गोवश की रक्षा पर बल देते रह किन्तु दुख की बात है कि हमारी भारत सरकार का निर्णय है कि जो गाय बैल बूढे हो जाए या काम के योग्य नही रहे तो उन्हे मार दिया जाए। इस विषय मे कहना यह हे कि यदि मा बाप बूढे हो जाए या काम के योग्य नही रहे तो क्या उन्हे भी मार देना चाहिए ? बूढ बैलो या बूढी गायो से गाबार तो हमे प्राप्त हागा ही आर्थिक लाभ देगा मरने पर उनका चमडा ओर हडडी भी आर्थिक लाभ देगे। दूसरा लाभ यह भी हागा कि गाय और बैल के गोबर से गोबर गैस प्लान्ट की भी आयोजन किया जा सकता है। अत बुढे बैलो एव बूढी गायो की रक्षा राष्ट्र रक्षा हित मे है।

कुछ सिरफिरे भाई बोलते हैं कि गोहत्या बन्द करने से हमारे मुस्लिम भाई नाराज हो जाएगे। मै यह बात नही मानता। मैने कई मुस्लिम भाइयो से बात की वे स्वय नही चाहते कि गोहत्या हो किन्तु राजनैतिक नेतागण उन्हे बहकाते हे ताकि हिन्दु मुस्लिम लोगो मे प्रेम न हो और व आपस मे लडते रहे ताकि उन्हें वोट मिलते रहे। हदीस मे कहा है नही पहुचते खुदा के पास **'गोश्त और खून' वहा पहुचते हैं 'तुम्हारी परहेजगारी'**। अत हिन्दू मुस्लिम भाइयो को आपस मे मिलकर इस विषय मे सम्मेलन कर गोहत्या बन्द करने मे अग्रणी होना चाहिए। यह देश धन धान्य से सुखी सम्पन्न हा और आपसी सौहार्द बढे। प्रभु से प्रार्थना है कि इस देश से शीघ्र गोहत्या बन्द हो।

– ३८६, एल्डिको उद्यान २,
रायबरेली रोड, लखनऊ, उ०प्र०

गीतकार श्री रामनाथ अवस्थी के निधन पर हिन्दी अकादमी ने श्रद्धाजलि अर्पित की

हिन्दी अकादमी दिल्ली हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध गीतकार श्री रामनाथ अवस्थी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। इस अवसर पर शोक व्यक्त करते हुए हिन्दी अकादमी के उपाध्यक्ष श्री जनार्दन द्विवेदी ने कहा कि यह सबके लिए दुखद समाचार है कि आज हमारे बीच श्री रमानाथ अवस्थी नहीं हैं। श्री अवस्थी महान और लोकप्रिय व्यक्तित्व के धनी थे। उनका साहित्य भारत की धरती और जन चेतना का प्रतीक है।

श्री द्विवेदी ने कहा कि फतेहपुर (उत्तर प्रदेश) मे जन्म श्री अवस्थी ने इलाहाबाद से पढाई की और १९५५ मे आकाशवाणी मे मुख्य निर्माता के पद पर कार्य किया तथा वहीं से अवकाश ग्रहण किया। उन्होने कहा कि श्री अवस्थी की आग और पराग आकाश सबका हैं राज और शहनाई बद न करना द्वार ऐसी कृतिया हैं जिनमे मर्मस्पर्शी रचनाए एव प्रेरणादायक गीत सकलित हैं। उन्हे साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा **"महामहोपाध्याय"**, हिन्दी अकादमी का **'साहित्य-सेवा सम्मान'** ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि से सम्मानित किया जा चुका है।

श्री द्विवेदी ने कहा कि हिन्दी साहित्य की समृद्धि मे श्री अवस्थी की भूमिका अविस्मरणीय है। उनके निधन से समस्त साहित्यिक जगत उनकी साहित्यिक सेवाओ से वचित हो गया है। उनका लेखन आने वाली पीढियो को प्रेरित करता रहेगा। समाज और देश के लिए उनके साहित्यिक योगदान को लम्बे समय तक याद किया जाएगा।

– चन्द्र सेन

बोध कथा

वह कल्याण मार्ग के सच्चे पथिक थे !

सरदार पटेल न लिखा था – स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही १९१९ का दृश्य मेरी आखो के सामने खडा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी मे है। स्वामीजी छाती खोलकर सामने आते हैं और कहते है – ' **लो चलाओ गोलिया।" उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता ? मै चाहता हू कि उसी वीर सन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावो को भरता रहे।"**

पत्रकार श्री हरिशकर शर्मा की उक्ति थी –

पूज्य प्रात स्मरणीय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की पवित्र पुण्यस्मृति राष्ट्र की बुझी हुई आत्मा मे जीवन ज्योति जाग्रत करे यही कामना है। वह मरकर भी अमर है महान पुरुषो का भौतिक शरीर भले ही तिरोहित हो जाए परन्तु उनकी आत्मा विश्व के लिए प्रकाश स्तम्भ बन जाता है।

जीए तो जान लडाते रहे वतन के लिए,
मरे तो हो गए कुर्बान सगठन के लिए।।

टी०एल० वासवानी ने ये श्रद्धा सुमन प्रस्तुत किए थे – स्वामी श्रद्धानन्द वह लक्ष्य पर पहुचे उन्होने सब कुछ पाया वह अपना काम इतिहास मे बहुत गहरा लिख गए उन्हे मेरी श्रद्धाजलि उनके जीवन का चिन्ह था – 'सेवा ।

उनकी स्मृति नया जीवन जगा दे राष्ट्र के युवकों मे नई चेतना जगाए दीन दलितो की सेवा के लिए – धर्म और आजादी की सेवा के लिए वह बलि हो गए मैं सबको उस शहीद को सन्देश सुना रहा हू –

उनका सन्देश था – **प्राचीन नवीन का अभिनन्दन करे, धन्य है उनका जीवन जो बलि मे अधिक प्रज्ज्वलित है।**

श्री प्रकाश ने लिखा था – मुझे तो स्वामीजी के अनेक गुणो मे उनका असीम साहस सबसे अधिक आकर्षित करता रहा है। शारीरिक मानसिक सामाजिक और आध्यात्मिक साहस एव उत्साह से वह जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त कार्य करते रहे। उनका सात्विक हठ बहुत ही प्रिय था। उनका सारा जीवन वीरोचित था और अन्त मे भी उन्हें वीरगति ही मिली। ऐस ही महापुरुष हमारे देश का सिर इस गिरी अवस्था मे भी उन्नत किए हुए हैं।

– नरेन्द्र

मातृभूमि समुन्नत हो !

सा नो भूमिर्वर्धयद वर्धमाना। *अथर्व० १२–१–१३*

हमारी मातृभूमि उन्नत हो हम भी उन्नत हो

स्वस्ति भू मे नो भव। *अथर्व० १२–१–३५*

मातृभूमि हमारे लिए मगलमयी हो।

यय तुभ्य बलिहृणा स्याम। *अथर्व १२–१–६२*

हे मातृभूमि तुम्हारे लिए हम बलि दे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

सच्ची निष्ठा और समर्पण से ही राष्ट्र का कायाकल्प

भारत राष्ट्र की स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे राष्ट्र की स्थिति का लेखा जोखा करने से वस्तुस्थिति की सच्ची जानकारी होती है। अधिकृत जानकारी से सूचना मिलती है कि ३३ करोड व्यक्ति गरीबी की रेखा से नीचे है २० करोड व्यक्ति ऐसे है जिनके पेट दोनो समय पूरा आहार नहीं ल पाते। यदि ये आकडे ठीक है तो उस देश के बारे मे यह कहना कि उसके आथिक हालात अच्छे हे जल्दी समझ मे न आने वाली बात है। यदि भारत को एक आद्योगिक शक्ति बनना है तो उसे अपनी आर्थिक नीतिया मे व्यापक परिवर्तन करने होगे। देश की जनता को मुफ्तखोरी की सस्कृति छोडनी होगी। कारखानो ओर खेतो से निकाले गए भ्रष्ट कामचोर श्रमिको के लिए कोई स्थान नही होगा। हमारे राष्ट्र नेताओ को प्रण करना होगा कि वे केवल उन्ही श्रमिका खेतिहर किसानो को समर्थन देगे जिनका उत्पादक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा मे खरा उतरे। उन्हे श्रमिको ओर खेतिहरो को सत्परामर्श दना होगा कि राष्ट्रीय जीवन मे कामचोरी ओर मुफ्तखोरी को पनपने का कोई मौका नहीं दिया जाएगा। भारत के जननायको और नीति निर्धारको से भारत का कोटि कोटि जनता का आह्वान करना होगा कि २१वी शताब्दी मे राष्ट्र के नीति निर्धारको का यह गम्भीर राष्ट्रीय उत्तरदायित्व है कि उस कालाविधि म व राष्ट्र से निर्धनता का समूल नाश कर देगे। देश की कोटि कोटि जनता उसके द्वारा चुने गए जनप्रतिनिधि और राष्ट्र के खेतो एव कल कारखानो मे काम करने वाले कराडो श्रमिको और कर्मचारियो का यह पुनीत दायित्व है कि वे जीवन के हर क्षेत्र मे भरपूर उत्पादन करे जिससे दश की निर्धनता का समूल नाश सदा के लिए कर दिया जाए। इसमे सन्देह नही कि जिस तरह जापान जर्मनी की जनता अपने राष्ट्र की समुन्नति और प्रगति के लिए सब कुछ न्यौछावर करती है उसी तरह हम भी सच्ची निष्ठा और राष्ट्र के प्रति समर्पण से राष्ट्र का कायाकल्प करेगे।

मानवीय इतिहास साक्षी है कि एक समय विश्व मे भारत राष्ट्र की अग्रिम स्थिति थी। यहा सच्चा रामराज्य प्रतिष्ठित था शताब्दियो और युगो तक समृद्ध सम्पन्न सुखी भारत राष्ट्र की गरिमा और यश व्याप्त रहा। यह ठीक है कि आपसी मतभेदो और बुराइयो के कारण यहा विदशी शासक आए ओर राज कर गए। शताब्दियो तक भारत राष्ट्र की जनता को विदेशी शासको के सम्मुख आर्थिक सामाजिक राजनीतिक दृष्टि स शोषण भेदभाव और अन्याय का शिकार बनना पडा। इन विदेशी शासको से शताब्दियो तक भारतीय जनता का सामूहिक सघर्ष करना पडा। राजनीतिक स्वाधीनता के ५५व वर्ष मे यह चिन्ता की बात हे कि देश मे २० करोड व्यक्ति एसे है जिन्हे प्रतिदिन उनकी पूरी खुराक नहीं मिलती यह भी घार चिन्ता और कष्ट की बात है कि देश मे ३३ करोड ऐसे प्रजाजन है जो वस्तुत निर्धन हैं आर्थिक दृष्टि से पिछड हे जो गरीबी की सीमा रखा से नीच हे। स्पष्ट हे कि यदि भारत को आद्यागिक शक्ति बनना है तो उसे अपनी आर्थिक नीतिया मे व्यापक परिवर्तन करन हाग। साथ ही केवल आर्थिक नीतिया मे ही नही श्रम कानूनो और सामाजिक दृष्टिकोण मे भी व्यापक परिवतन करने होगे जिससे कामचोरो की सस्कृति से देश की छुटकारा मिले। आर्थिक क्षेत्र मे इस समय भारत राष्ट्र की प्रगति को गावो से लकर सारे दश मे दो प्रकार के तत्वो से जूझना पड रहा ह पहल तत्व कामचोर है जो पूरा लाभ चाहते हे परन्तु काया को कष्ट नही दना चाहते हे दूसरे हे मुफ्तखोर। आर्थिक मामला मे आज भी देश की आर्थिक प्रगति को मुफ्तखार से छुटकारा दिलाना होगा।

यदि देश मे कामचोरो ओर मुफ्तखारो की प्रवृत्तियो की समय पर रोकथाम नही की गई तो देश आर्थिक दृष्टि से लगडा जाएगा। आज जरूरत इस बात की है कि भारतीय उद्योग और प्रशासन को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का बनाना होगा। हमे ६ प्रतिशत से ऊची विकास दर प्राप्त करनी होगी। निजी और राष्ट्रीय क्षेत्र मे व्यापक पूजी निवेश करना होगा। सबस पहल तो राज्यो और देश मे व्याप्त भ्रष्टाचार का अन्त करना होगा। जनप्रतिनिधियो के सच्चे सहयोग से राज्यो और केन्द्र मे व्याप्त भ्रष्टाचार का समूल नाश सम्भव है इस समूल नाश के लिए राज्यो ओर केन्द्र को वैसी ही सकल्प शक्ति सगठित करनी चाहिए जैसी कि विदेशी शासन से स्वातन्त्र्य वीरो ने सगठित की थी। यह राष्ट्र का कायाकल्प एक कठिन कार्य हे सच्ची निष्ठा ओर जन जन के सच्च सहयाग या समपण से उसे कार्यान्वित किया जा सकेगा। स्वाधीनता प्राप्ति के ५५वे वर्ष म करोडा निधन देशवासियो ओर कोटि कोटि देशवासियो के समुचित भरण पाषण हाने की स्थिति एक चेतावनी द रही है यदि इसे भली प्रकार समझ लिया जाए तो पूरी निष्ठा और सर्मपण से इन कठिन समस्याओ का भी समुचित समाधान सम्भव हे।

चिट्ठी-पत्री

यह कैसी घृणा

कम्यूनिस्टो का इतिहास भी कुछ ऐसा रहा है कि जनमानस एक तरफ और वे दूसरी तरफ खडे है। जनमानस कलाम के साथ है तो आजद हिन्द फौज की स्वतन्त्रता कैप्टन लक्ष्मी सहगल को खडा करने का क्या औचित्य है ? स्वाभाविक जिज्ञासा है कि कल तक आजाद हिन्द फौज की जो वीरागना थी वह आज कम्युनिस्ट कैसे हो गई ? ये ही कम्युनिस्ट उनके नायक को जापानी दास और सब कुछ कहते रहे हैं। वेसे यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि लक्ष्मी जी कामरेड है या आजाद हिन्द फौज की कैप्टन ?

– चन्द्रहास चन्द्र सिह, विश्वविद्यालय दिल्ली

विदेशों मे भारतीय फिल्मे

पाकिस्तान के सप्ताहिक पत्र फ्राइडे टाइम्स मे नादिया हाशमी ने अपने इण्डिया समर हिटस लन्दन शीर्षक लेख मे समीक्षा की है कि भारतीय फिल्मे विदेशो मे रहने वाले एशियाइयो खासतौर से भारतीयो और पाकिस्तानियो को बहुत प्रभावित कर रही है। नादिया लिखती है – पहले लन्दन जैसी जगह मे भारतीय फिल्मे हफ्ते मे एकाध बाद ही देखी जा सकती थी लेकिन हाल के वर्षो इस बारे मे भारी फेरबदल हुआ है। अब भारतीय फिल्मे सुविधाजनक सिनेमाघरो मे प्रदर्शित की जाती है और हफ्तो चलती है। भारतीय फिल्मो की कहानिया परिवारिक पृष्ठभूमि कभी खुश कभी गम से भरी फिल्मो की सफलता साबित करती है कि भारतीय सिनेमा ने विदशो मे अपना अच्छा स्थान बनाया है। वेनिस फिल्म फेस्टिवल मे गोल्डन लायन पुरस्कार जीतने वाली मीरा नायर की फिल्म मानसून वेडिग इस वर्ष भी चर्चित फिल्मे मे शामिल की गई है। अग्रेजी फिल्म बेन्ड इट लाइफ बेकहम मे ऐसी सिख युवती की कहानी है जो फुटबाल का खिलाडी बनना चाहती है।

– एस० सिह

पाक बाज नहीं आएगा

जब भारत पाक के मध्य तनाव चरम पर था सम्पूर्ण देश मे पाक को कडा सबक सिखाने का आक्रोश था भारतीय सैनिक भी आर–पार की लडाई के लिए तैयार थे इस बार की लडाई मे हम पाक अधिकृत कश्मीर को भी अपन अधिकार मे ले सकते थे लेकिन यह सब नहीं हुआ। भारत अमेरिका और विश्व के दवाब के आगे झुक गया लेकिन यह युद्ध अधिक समय तक टाला नहीं सकता पाकिस्तान अपनी आदतो से बाज नही आएगा। भारत को निरन्तर सचेत रहना होगा।

– नरेश कुमार टाक अलवर (राजस्थान)

यजुर्वेद से आदेश सप्तकम् (६) पूर्वार्द्ध

यजुर्वेद के महत्त्वपूर्ण आदेश

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) आनन्द वर्षी व कमनीय प्रभु को हृदयस्थ करके ऐश्वर्य का अर्जन व वितरण करो

आ सुते सिञ्चत श्रिय रोदस्योरभिश्रियम्।
रसा दधीत वृषभम्।।
त प्रत्नथाऽय वेन ।। *यजु ३३–२१*
सुनीति वेन । निवृद् गायत्री।

अथ – (रसा) जीवन के रसो और आनन्द के प्राप्त करने के इच्छुक मनुष्यो ! (सुते) इस उत्पन्न जगत मे (श्रिय आ सिञ्चत) वेदो मे निर्दिष्ट श्री का अपने मे सिचन और सचय करो तदनन्तर उस (श्रियम) श्री को (रोदस्यो अभि सिाञ्चत) अपने लिए आवश्यक मात्र रखकर शेष को धावा पृथिवी म अर्थात दोनो लोको के मानवमात्र मे सिचित (दान) कर दो। अपने लिए एकत्रित करते हुए और दूसरो को देते हुए दोनो समयो मे (वृषण दधीत) उस शक्तिशाली तथा आनन्द वर्षी और सर्वज्ञ तथा कमनीय परमेश्वर को सदा अपने हृदय ये धारण करे रखेगे।

परिणाम – (१) यह होगा कि अपने लिए श्री का सिचन करते हुए भोग विलास म नही फसोगे। (२) दूसरो के लिए दान करते हुए तुम्हे अभिमान नही व्यापेगा और इस प्रकार तुम सुनीति का अनुसरण करते हुए इस मन्त्र के ऋषि का विरुद प्राप्त करने के अधिकारी बन जाओगे।

अर्थपोषण – श्री = ऐश्वयस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशस श्रिय ।

ग्ययोश्चैव षण्णा भग इतीरणा।।
ऋच सामानि यजूषि। सा हि श्रीरमृता सताम् इतिश्रुते । आप्टे

धावापृथिव्यो – धावापृथिवी सर्वे हीमेलोका ।
जै० ३ २७१ लोकरस्तु भुवने जने।
वेन मेघाविनाम। नि० ३ १५, सर्वज्ञ, वेन कमनीय ईश्वर । यजु ३२ ८ स्वा० दया।
वी गति व्याप्ति प्रजन कान्त्यसन खादनेषु।

निष्कर्ष – (१) परमेश्वर को सदा अपने हृदय मे धारण किए रखोगे तो यदृच्छालाभ सन्तुष्ट बनकर निष्काम होते हुए परमेश्वर के सखा वेन जैसे बन जाओगे।

(२) इस मन्त्र का छन्द स्वामी दयानन्द ने निचृत गायत्री लिखा है तथा इस मन्त्र के साथ दो मन्त्र प्रतीको का अर्थ भी नहीं किया हे। इन दोनो बातो से सकेत स्पष्ट है कि वेदो मे जहा जहा मन्त्र के बाद अन्य मन्त्रो की प्रतीके दी हैं उनका मन्त्र से या मन्त्रार्थ से कोई सम्बन्ध नहीं। यज्ञ कर्ता या पुरोहित को जब कहीं जो मन्त्र उत्तम या मन्त्र से सम्बद्ध लगे वह उसके साथ बोल सकता है।

(२) हे इन्द्र! निरामिषभोजी और वीर्यवान् बनकर जीवन मे महत्ता व अर्चना प्राप्त कर

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभि सोमपर्वभि ।
महा अभिष्टि रोजसा। *यजु ३३–२५*
मधुच्छन्द । इन्द्र । गायत्री।

अथ – हे (इन्द्र) इन्दियवशी मानव (अन्धस) अन्न के भोजन ओर ध्यान की साधना की सहायता से रक्षित (विश्वेभि सोमपवभि) वीर्य से प्रीणित शरीर के प्रत्येक जोड (या पोर पोर) से (मत्सि) प्रसन्न और क्रियाशील बना रहे। परिणामत (ओजसा) अपने ओज (रोब) से (अभिष्टि) काम क्रोधादि आन्तरिक और बाह्य शत्रुओ से रक्षा करने के कारण (महान इहि) जीवन मे पूजनीय व महान बनकर व्यतीत कर।

निष्कर्ष – अन्न के भोजन प्राण और ध्यान की साधना से रक्षित वीर्य से सुपोषित अगो के द्वारा जीवन को सोल्लास व्यतीत किया जा सकता है ओर आन्तर तथा बाह्य शत्रुओ से रक्षा करने के कारण मनुष्य समाज मे महान व पूज्य भी बन सकता है।

अर्थपोषण – अन्ध आध्यानीय भवति। निरु ५–१ अन्न तथा ध्यान
अभिष्टि – रक्षक (मो० वि०) महान – मह पूजायाम।

(३) सूर्यसम वृत्र विनाशक इन्द्र सकल्प पूर्वक आगे बढा, जो चाहेगा, प्राप्त कर लेगा

यदघ कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य। सर्वतदिन्द्र ते वशे।। *यजु० ३३–३६*
श्रुतकक्षसुकक्षौ। सूर्य । गायत्री।

वेद मे इन्द्र अग्नि आदि देवता शब्द परमात्मा और जीवात्मा दोनो के लिए प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए देव इन्द्रोनराशस देवमिन्द्रमर्वायत। यजु – २८–१६ मे पहला इन्द्र परमात्मा के लिए और दूसरा इन्द्र जीवात्मा के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसलिए एक ही मन्त्र का अर्थ एक भाष्यकार परमात्मा परक करता है दूसरा जीवात्मा परक करता है। यह मन्त्र भी इसी तरह का है।

परमात्मापरक अर्थ – हे (वृत्रहन्) वासनाओ दुष्टो ज्ञान पर परदा डालने वालो के सहारक (सूय) सूर्य सदृश प्रकाशक तथा जगदुत्पादक (इन्द्र) ऐश्वयशलिन प्रभो ! (अघ यत कत च उदगात्) वर्तमान सृष्टि मे जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है (तत सर्व ते वशे) वह सब कुछ तेरे वश मे (आधीन) है। तू जो चाहे कर सकता है। इसलिए मुझ पर कृपा कर और मेरा उद्धार कर।

जीवात्मा परक अर्थ हे (इन्द्र) जितेन्द्रिय अतएव (वृत्रहन) सब वृत्रो और वासनाओ के विनाशक तथा (सूय) सूर्य सदृश ज्ञान से प्रकाशमान मानव ! तू निराश क्यो हैं ? (अद्य) अब (यतकत च सर्व तत ते वशे) जगत मे जो कुछ तू करना या पाना चाहता है सब तेरे उद्यम के वश मे है। (उत अगा) तू आगे बढ ऊपर उठ। तू कर्म करने मे स्वतन्त्र है और ऐश्वर्यशाली परमेश्वर का सखा (समानख्यान) है। तू जो चाहे प्राप्त कर सकता है। निराश हो बस अपने लक्ष्य को प्राप्त करने मे दत्तचित्त होकर लगा रह अवश्य सफल होगा।

अर्थपोषण – सखा – येषामिन्द्रो युवा सखा। *यजु ३३–२४*

निष्कर्ष – वेद मे स्पष्ट रूप से दो विचारधाराए हैं। दोनो के द्वारा मानव अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

(१) पूर्णतया परमेश्वर के प्रति समर्पण करके अपने कर्त्तव्यो का पालन करते हुए लक्ष्य प्राप्ति का प्रयत्न करते रहो। परमात्मा न्यायकारी दयालु तथा क्षमाशील है। यदि तुम्हारी भावना सच्ची है तो ६० प्रतिशत तुम्हे सफलता मिलेगी।

(२) परमेश्वर का विचार किए बिना अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए तहे दिल से प्रयत्न करते रहो यदि तुम्हे अभिमान और हताशा ने न आक्रान्त किया तो ६४ प्रतिशत तुम्हे सफलता अवश्य मिलेगी।

इन दोनो ही अवस्थाओ मे फल की इच्छा को छोडना आवश्यक है।

कुर्वन्नेवह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा एवत्वयि, नान्यथेतोऽस्ति। *यजु० ४०–२*
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सगोऽस्त्वकर्मणि।। *गीता २–४७*
यथा वशन्ति देवास्तथेदसव तदेषा नकिरामिनत्।
अशवा चिन्मर्त्य ।। *ऋ० ८–२८–४*

(४) जितेन्द्रिय मानव ! अशुभकर्मो को त्यागकर तू विश्व विजयी बन सकता है

त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृध ।
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्व सूर्य तरुष्यत ।। *यजु ३३–६६*
नृमेघ । इन्द्र । पक्ति

वास्तव मे यह मन्त्र इससे इससे प्रथम मन्त्र मे इन्द्र को समृद्धि के लिए बुलाने 'इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमागहि'। के उत्तर मे ऐश्वर्यशाली इन्द्र=परमात्मा द्वारा जितेन्द्रिय इन्द्र=जीवात्मा (मनुष्य) को दिया गया आदेश है। किन्तु इस मन्त्र का अर्थ भी किसी भाष्यकार ने परमात्मा या राजपरक किया है और किसी भाष्यकार ने जीवात्मापरक अथवा सेनापतिपरक किया है। इन अर्थो मे से गलत किसी को नहीं कहा जा सकता है।

अर्थ – हे (इन्द्र) इन्द्रियो के अधिष्ठाता बने जीव {मानव} (त्व प्रतूर्तिषु) तू सग्रामो मे (विश्वा स्पृध अभि असि) सभी शत्रुओ को अभिभूत (दबाने मे) करने मे समर्थ है। क्योकि तू (अशस्तिहा) निन्[illegible] के जनक अशुभ कर्मो का विनाशक (जनिता) शुभ क[illegible] का विकासकर्ता बनकर (विश्व तू असि) सब प्रद[illegible] के शत्रुओ का विनाश करने वाला बन चुका है [illegible] (त्वम) तू स्वय (तरुष्यत तूर्य) हिसा करने वालो [illegible] हिसा कर दे।

निष्कर्ष – वेद की दृष्टि मे प्राथ[illegible] अपेक्षा आत्मविश्वास और स्वप्रयत्न पर निर्भर होने [illegible]क आदेश व महत्व प्रदर्शित किया गया है। प्राथ[illegible] उपयोग तो सफलता के अभिमान से बचे रहने क[illegible] है।

अर्थपोषण – तरुष्यत– नैरुक्तो धातु हिसा[illegible]। सूर्य – तूरी गतित्वरण – हिंसनयो। प्रतूर्तिषु –सग्रामेषु स्वा० दया०।

(अपूर्ण)

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२,
कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली ६

२३ जुलाई जन्मदिवस पर विशेष

अग्निशलाका पुरुष - चन्द्रशेखर आजाद

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व ५५६ देशी रियासतो मे से गुजरात से सटे हुए क्षेत्र मे अलीराजपूर नामक (सम्प्रति मध्य प्रदेश) रियासत के झाबुआ जिले मे एक छोटा सा ग्राम था भाबरा। इसी गाव मे प० सीताराम जी तिवारी तथा जगरानी देवी साधारण सा कान्य कुब्ज ब्राह्मण परिवार निवास करता था। इनके ही निकट अग्निहोत्री जी का परिवार कृषि आदि कार्य कर निर्वाह करता था। इन्हीं प० सीताराम जी तिवारी के यहा जुलाई २३ शुक्रवार सन १९०६ को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। शैव परिवार की मान्यताओ के अनुसार इस बालक का नाम 'चन्द्रशेखर' रखा गया। ५ वर्ष की आयु के पश्चात स्थानीय पाठशाला मे इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। ब्राह्मण-परिवार के सात्विक सस्कारो के कारण इस बालक मे सस्कृत पढने की तीव्र इच्छा हुई। बालक चन्द्रशेखर ने अपनी यह इच्छा पिताश्री से कही। किन्तु पारिवारिक स्थिति के कारण पिताजी ने उन्हे काशी भेजने मे अपनी असमर्थता प्रकट की। किन्तु दृढ-निश्चयी बालक एक दिन चुपचाप घर से निकलकर काशी पहुच गया। वहा एक गुरुवास मे रहकर वे सस्कृत का अध्ययन रुचिपूर्वक करने लगे।

इधर नियति कुछ और ही निश्चय किए बैठी थी। गाधी जी ने असहयोग आन्दोलन छेड दिया था। यह १५ वर्षीय बालक इस आधी की चपेट से दूर कैसे रह सकता था ? काशी मे छिडे आन्दोलन ने इस किशोर बालक चन्द्रशेखर ने पुलिस के क्रूर व्यवहार से नाराज होकर एक पत्थर से पुलिस कर्मी को घायल कर दिया। पुलिसकर्मी गण इस युवक को पहले तो पकड नही सके किन्तु मस्तक पर लगे चन्दन के टीके के कारण ये पहचान मे आ गए। उन्हे पकडकर तत्काल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। युवक चन्द्रशेखर से मजिस्ट्रेट ने पूछा –

तुम्हारा क्या नाम है ? युवक ने अपना नाम 'आजाद' बताया।

तुम्हारे पिता का नाम ? 'स्वतन्त्रा'

तुम्हारे घर का पता ? मेरा घर 'जेलखाना' है।

बालक के इन उत्तरो को सुनकर मजिस्ट्रेट को प्रथमत आश्चर्य हुआ। उसने तत्काल चन्द्रशेखर को १५ बेतो की सजा सुनाई। प्रामाणिक रूप से बताया जाता है कि जब युवक चन्द्रशेखर के खुले बदन पर पानी मे भीगी बेत पडती थी तब प्रत्येक बेत की मार पर वे जोर से नारे लगाते थे – इन्कलाब जिन्दाबाद महात्मा गाधी की जय। यह देखकर पुलिस कर्मी भी बेत मारते हुए थोडा ठिठक जाते थे। वहा से छूटकर इस युवक चन्द्रशेखर ने प्रतिज्ञा की कि – **दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे। आजाद ही रहे है, आजाद ही रहेंगे।।**

इधर कतिपय हिसक घटनाओ के कारण गाधी जी ने असहयोग आन्दोलन' एकाएक बन्द कर दिया। इससे युवा आन्दोलनकारियो को बहुत ठेस पहुची। युवक चन्द्रशेखर के हृदय मे अंग्रेजों के विरुद्ध आग भडक रही थी। सयोगवश उनकी भेट एक महान क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल से काशी मे हो गई। आजाद तत्काल क्रान्तिकारी दल मे जो कि अहिंसा में तनिक भी विश्वास नहीं करता था सम्मिलित हो गए। इस दल को वे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश मे जाल के समान फैला देना चाहते थे। किन्तु इस कार्य मे एक बडी बाधा आ रही थी। हमारे शास्त्रो मे ठीक ही कहा है – अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। यह दल क्रान्तिकारियो के लिए अस्त्र-शस्त्रो को उपलब्ध करवाने के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। कहते हैं एक बार चन्द्रशेखर ने बैंक लूटने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे उन्होने काशी मे एक क्रान्तिकारी पर्चा तैयार कर उसे अनेक स्थानो पर वितरित करा दिया। यह काम उन्होने बहुत चतुराई से किया था। किन्तु यह पर्चा किसी तरह पुलिस दफ्तर तक पहुच गया था।



परमात्मा की कृपा से इन अलौकिक महापुरुषो मे कुछ न कुछ अलौकिक गुण उत्पन्न हो जाते है। हमारे चरित नायक चन्द्रशेखर आजाद' गोली चलाने मे सिद्धहस्त थे। अपने मित्रो के अनुरोध पर उन्होने पेड की टहनी के एक बडे पत्ते मे पाच अलग-अलग छेद पिस्तौल की गोली से कर दिए थे। उनका निशाना अचूक होता था। आजाद को अपने क्रान्तिकारी साथियो के खाने-पीने की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी। इधर भाबरा (अलीराजपुर -झाबुआ) मे उनके माता-पिता बहुत ही विपन्न अवस्था म दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गणेश शकर जी विद्यार्थी को जब इस बात का पता चला तब उन्होने कुछ रुपये आजाद को उनके माता-पिता को भेजने के लिए दिए। किन्तु अब तो आजाद का परिवार तो सम्पूर्ण राष्ट्र बन चुका था और क्रान्तिकारी लोग इस राष्ट्र-परिवार के निकटतम सम्बन्धी बन चुके थे। आजाद जी वह रकम क्रान्तिकारियो के लिए पिस्तौल आदि खरीदने पर खर्च कर दिए। आजाद को अपने माता-पिता से पहले भारत को स्वतन्त्र कराने वाले भारत माता पर मर मिटने वाले भारत-मा के पुत्रो की अधिक चिन्ता थी। उन्होने यह राशि राष्ट्र देवो भव कहकर' इदम न मम के भाव के अनुसार क्रान्तिकारियो पर न्यौछावर कर दी। यह महान त्याग था उस महान कर्मयोगी चन्द्रशेखर आजाद का।

रामप्रसाद बिस्मिल चन्द्रशेखर आजाद अशफाक उल्ला खा अन्य क्रान्तिकारियो के सहयोग से ६ अगस्त १९२५ को सरकारी खजाना लूटने के योजना बनाई गई। काकोरी रेलवे स्टेशन (उ०प्र०) मे रेल रोककर सरकारी खजाना पिस्तौल के बल पर लूट लिया गया। अंग्रेजो के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। काकोरी ट्रेन लूट काण्ड मे अनेक क्रान्तिकारी पकडे गए। परिणामत रामप्रसाद जी बिस्मिल तथा अशफाक उल्ला खा को फासी की सजा सुना दी गई। किन्तु सौभाग्य से चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस न पकड सकी। इस भयकर काण्ड एवम परिणाम के कारण क्रान्तिकारी दल छिन-भिन्न हो गया।

इतने पर भी चन्द्रशेखर आजाद तनिक भी निराश नहीं हुए वे महान क्रान्तिकारी युग पुरुष वीर विनायक दामोदर सावरकर के निकट उचित परामर्श लेने गए। वीर सावरकर ने उन्हे ढाढस बधाया तथा क्रान्तिकारी दल को पुनर्गठित करने का परामर्श दिया। वे अब पुन सगठन मे जुट गए। प्रसगवशात झासी मे उनकी भेट भगतसिह तथा राजगुरु से हुई। इतना ही नहीं कुछ समय पश्चात उनसे बटेश्वर दत्त और अन्य अनेक क्रान्तिकारी आ मिले। इस बार उन्होने नये दल का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी रखा। इसके पुनर्गठन की पृष्ठभूमि मे वीर सावरकर की ही प्रेरणा कार्य कर रही थी।

अक्तूबर १९२८ मे साइमन कमीशन भारत आया। इस कमीशन के सारे सदस्य अंग्रेज ही थे इसमे एक भी भारतीय को नहीं रखा गया था। यह भारत का बडा भारी अपमान था। यह कमीशन बम्बई के पश्चात जब लाहौर आया तब रेलवे स्टेशन पर ही इसका विरोध करने के लिए शेरे पजाब लाला लाजपतराय गए। अंग्रेज पुलिस ने लालाजी पर प्राणघातक आक्रमण किया। लाठी की गम्भीर चोटो के कारण लालाजी की मृत्यु हो गई। विरोध कर रहे जुलूस मे भगतसिह और राजगुरु भी थे। उन्होने यह काण्ड स्वय अपनी आखो से देखा था।

भगतसिह तथा राजगुरु ने यहा यह व्रत लिया कि लालाजी के हत्यारे पुलिस कप्तान सैडर्स से बदला नहीं ले लेगे तब तक चैन नहीं लेगे। बस फिर क्या था योजनानुसार इन दोनो वीरो ने खून का बदला खून से लिया। भगतसिह को पकडने के लिए पुलिस ने बडा प्रयत्न किया किन्तु उसे निराशा हाथ लगी। भगतसिह वेश बदलकर कलकत्ते चले गए। आजाद साधु के वेश मे अलख निरजन का नाद करते हुए लाहौर से गायब हो गए।

६ अप्रैल १९२६ ई० को असेम्बली मे पब्लिक सेफ्टी बिल प्रस्तुत होने वाला था। जिसके अनुसार भारतीय मजदूरो की हडतालो पर स्थायी रोक लगाना थी। इस अत्याचारी दमनात्मक बिल का विरोध करने के लिए भगतसिह और बटेश्वर दत्त दिल्ली जा पहुचे। यद्यपि इसमे आजाद भी सम्मिलित होना चाहते थे किन्तु नीति के अनुसार इन्हे अलग रखकर सगठन कार्य करने के लिए कहा गया। इन दोनो वीरो ने असेम्बली की दर्शकदीर्घा से अंग्रेजो की दमन नीति का भण्डा फोडने वाले पर्चे फेके तथा खाली बेचो पर बम फेके। ये लोग असेम्बली से बाहर ही भागते हुए पकड लिए गए। इसके बाद राजगुरु सुखदेव तथा यशपाल भी गिरफ्तार कर लिए गए। चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की गिरफ्त से बाहर ही रहे। इधर भगवती चरण वर्मा की बम फटने से अकाल मृत्यु हो गई थी। इन क्रान्तिकारियो पर मुकदमा चला अन्त मे भगत सिह सुखदेव तथा राजगुरु को २३ मार्च १९३७ को फासी दे दी गई। लार्ड डरविन ने गाधी जी को इसमे हस्तक्षेप कर उन्हे आजीवन कारावास कर देने के लिए कहा था। किन्तु गाधी जी ने इस ओर ध्यान ही नही दिया। लार्ड डरविन भी गाधी जी की इस कठोरता पर तथा गजब की अहिसा पर घृणा से उनकी ओर देख रहा था। उसका मत था कि यदि गाधी जी इसमे हस्तक्षेप करते तो इन वीरो को फासी पर लटकने से बचाया जा सकता था। इतना ही नहीं गाधी जी ने काग्रेस का अधिवेशन जानबूझकर २२ मार्च को ही समाप्त करवा दिया था ताकि काग्रेस मे विद्रोह न हो। इस दुखद घटना के पश्चात क्रान्तिकारी दल पुन छिन्न-भिन्न हो गया।

दल का धन व्यापारी के यहा रखा गया था। उस धन को लेने हेतु वे इलाहाबाद गए। ऐसे समय मे उनके ही निकट के सहयोगी की देश द्रोहिता के कारण आजाद जी सकट मे फस गए। बिसेसर नामक इस देश द्रोही ने पुलिस का मुखबिर बन कर नाट बाबर जो कि वहा का पुलिस अधीक्षक था को सूचना दे दी कि आज अल्फ्रेड पार्क मे आजाद अपने मित्र के साथ वहा मिलेगे। बस सूचना मिलते ही नॉट बाबर अपने दल-बल के साथ अल्फ्रेड पार्क (सम्प्रति चन्द्रशेखर आजाद पार्क) पहुच गया। आजाद जी को इस विश्वासघात की भनक लग गई और उन्होने फुर्ती से अपने सहयोगी को पार्क से बाहर खिसक जाने के लिए कहा। वह वहा से चला गया। वे अब अकेले ही पुलिस का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। फिर क्या था धाय-धाय कर दोनो ओर से गोलिया चलने लगीं। आजाद ने अपनी अचूक निशाने बाजी से अनेक पुलिस वालो को ढेर कर लिया। इधर उन्होने भी एक वट वृक्ष की आड ले ली। फिर भी उन्हे चार गोलिया लग गई। पुलिस उन्हे जीवित पकडना चाहती थी। उन्होने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे जिन्दा रहते हुए पुलिस की पकड मे नहीं आएगे। जब उनकी पिस्तौल मे अन्तिम गोली रह गई तब उन्होने उस अन्तिम गोली अपनी कनपटी मे मार ली। यह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस २७ फरवरी १९३१ का प्रात साढे दस बजे का था। अंग्रेज आजाद से इतने डरे हुए थे कि उन्हे पूरा मरा हुआ जानने के लिए उनके मृत शरीर पर गोली मारी। जब मृत शरीर मे हलचल न हुई तब पुलिस उनके शव के पास जाने का साहस जुटा पाई।

जिस वटवृक्ष के नीचे आजाद का यह महान बलिदान हुआ था उसे आज भी वहा की महिलाए हल्दी ककू तथा सूत के धागे लपेट कर उसकी पूजा प्रतिवर्ष करती हैं। इन पक्तियो के लेखक को भी उस वृट वृक्ष के नीचे पडी धूल को सिर पर रख कर उस महान वीर को प्रणाम करने का दो बार स्वर्ण अवसर मिल चुका है। इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद इस देश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। उन्हे बारम्बार प्रणाम।

–'सुकिरण' अ/१३, सुदामा नगर इन्दौर ८, (मध्य प्रदेश)

पूर्वी प्रान्तों में वैदिक धर्म के प्रति आकर्षण बढ़ने लगा

गुरुकुलों के व्यवस्थापक उदारतापूर्वक सहयोग करें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक अभिन्न अग अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ आदिवासी क्षेत्रो मे धर्मान्तरण के कुचक्र को रोकने एव आदिवासी नागरिको को अपने मूल वैदिक धर्म से जोडे रखने के लिए स्थापित किया गया था। इसकी स्थापना तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी की प्रेरणा पर सभा के तत्कालीन नेताओ लाला रामगोपाल शालवाले और ओमप्रकाश त्यागी सेठ प्रतापसिह शूर जी वल्लभ दास आदि के प्रयासो से की गई थी। तबसे दयानन्द सेवाश्रम सघ अपने सीमित साधनो से इस विशाल दायित्व का निर्वहन करता रहा है। स्वर्गीय श्री पृथ्वीराज शास्त्री तथा उनकी धर्मपत्नी माता प्रेमलता शास्त्री ने बडी श्रद्धा और प्रेम से इन कार्यों को अपनाया। शास्त्री जी के देहावसान के बाद माता प्रेमलता शास्त्री जी ने इन कार्यों को निर्बाध रूप से जारी रखा।

प्रतिवर्ष वैचारिक क्रान्ति शिविर मई माह म आयोजित किए जाते हैं। इन शिविरो मे युवको और बच्चो को शामिल करने के लिए सुदूर प्रान्तो मे स्थित हमारे आश्रमो के कार्यकर्ता स्थानीय लोगो को प्रेरित करते हैं। जो युवक युवतिया और बच्चे इन शिविरो मे भाग लेते हैं उन्हीं मे से कुछ महानुभावो को बालवाडिया गठित करके गाव गाव मे धर्म प्रचार अभियान के लिए प्रेरित किया जाता है।

विगत मई माह मे ही प्रतिवर्ष की भाति इस बार भी यह शिविर सम्पन्न हुआ। इस बार बच्चो मे उत्साह कुछ अधिक ही नजर आ रहा था। अपने अपने क्षेत्रो मे वापिस जाने पर सभी शिविरार्थी अपने जीवन मे एक शुभ परिवर्तन का प्रदर्शन करते है। इस शुभ परिवर्तन का अन्य स्थानीय लोगो मे एक स्वाभाविक आकर्षण बनता है जिससे वे भी यह कल्पना करने लगते है कि उनके बच्चे भी जवान होने पर बुराइयो की ओर आकर्षित न हो और पवित्र बुद्धि के मालिक बने। यही आकर्षण उन्हे भी प्रेरित करता है कि अगले शिविर मे उनके बच्चे भी दिल्ली जाये। इसके अतिरिक्त दयानन्द सेवाश्रम सघ के आसाम स्थित आश्रमो मे दाखिला लेने के लिए भी होड सी बनी रहती है। आसाम मे ही कई स्थानो पर सघ के स्थायी आश्रम भी चल रहे हैं। किसी मे ५० बच्चो की क्षमता है किसी मे १०० की परन्तु इस बार इन आश्रमो मे प्रवेश की होड बढती ही जा रही है।

आश्रम के स्थानीय प्रबन्धको ने विगत् माह दिल्ली के अधिकारियो से सम्पर्क किया तो माता प्रेमलता जी शास्त्री की विशाल हृदयता के कारण उन्हे प्रवेश निषेध कहने को तैयार नही हुई और उन्होने दिल्ली के आस पास स्थित गुरुकुलो से सम्पर्क किया ताकि वे निःशुल्क इन आदिवासी और पूर्वी प्रान्तो के बच्चो को रखने के लिए तैयार हो। गुरुकुल खेडा खुर्द के आचार्य सुधाशु जी ने अपने प्रबन्धको की अनुमति से २०–२५ बच्चो को स्वीकार करने की स्वीकृति दी। १० जुलाई को आसाम से २२ बालक सर्वश्री होली आर्य मुनीष सिह आचार्य मनीष बर्णी और शम्भु शरण के साथ दिल्ली पहुचे। इन बच्चो को लेने के लिए आचार्य सुधाशु जी गुरुकुल खेडा खुर्द से आर्यसमाज मन्दिर रानी बाग आये जहा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन जी की उपस्थिति मे बच्चो का स्वागत और उन्हे विदाई दी गई।

श्री विमल वधावन ने गुरुकुल खेडा खुर्द के अधिकारियो से निवेदन किया कि यह बच्चे उनके पास हमारी अमानत के रूप मे हैं। उन्होने गुरुकुल के अधिकारियो और आचार्यों की इस उदारता के लिए उनका धन्यवाद किया। श्री विमल वधावन ने कहा कि वैदिक विचारधारा की ओर आकर्षित होती हुई इस भीड को देखकर ऐसा लगता है कि भाग्योदय का समय निकट है। आसाम के सुदूरवर्ती क्षेत्रो मे भी अब वैदिक धर्म के प्रति एक आकर्षण प्रारम्भ हो गया है जिसकी हलचल भी नजर आने लगी है।

लगभग एक सप्ताह बाद ही ४५ बच्चो की एक और टोली दिल्ली पहुच रही है। आसाम के स्थानीय कार्यकर्ताओ ने बताया कि अब तो कई ईसाई परिवारो के लोग भी यह इच्छा व्यक्त करने लगे है कि हमारे बच्चो का पालन पोषण भी वैदिक धर्म के आश्रमो और गुरुकुलो मे किया जाए।

श्री विमल वधावन ने समूचे विश्व की जनता को आह्वान किया है कि राष्ट्ररक्षा और वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे चल रहे इन कार्यो के महत्व को समझे। उन्होने दानी महानुभावो से विशेष सहयोग की अपील की है।

श्री वधावन ने समस्त गुरुकुलो के प्रबन्धको और आचार्यो से भी आग्रह किया है कि वे सार्वदशिक सभा को सूचित करें कि वे ऐसी परिस्थितियो मे ऐसे कितने बच्चो को निःशुल्क व्यवस्था अपने गुरुकुलो मे कर पाने मे सक्षम है। गुरुकुलो के व्यवस्थापको और सचालको का उदारता पूर्वक सहयोग इस महान कार्य को और भी आगे बढायेगा।

माता प्रेमलता शास्त्री जी ने कहा कि यदि आर्यजगत अपने मस्तिष्क मे और अपने हृदय मे इन कार्यों की ज्योति जलाये तो मैं मदर टेरेसा से भी कई गुना कार्य करके दिखा सकती हू। उन्होने कहा कि साधनो की कमी सदैव हमारे सामने बाधा बनकर खडी रहती है। जितना भी हम कार्य कर पाते हैं वह भी उन आर्य पुरुषो के सहयोग का परिणाम है जो इन कार्यो के महत्व को हमारे निकट बैठकर देखते है और समझते हैं।

उन्होने बताया कि दिल्ली के सुप्रसिद्ध उद्योगपति फ्रन्टीयर बिस्कुट के स्वामी श्री मुन्शीराम सेठी विगत माह आर्यसमाज रानीबाग दिल्ली मे चल रहे शिविर के दौरान अचानक आये उन्होने बच्चो का कार्यक्रम देखा तो उन्हे ५ छोटे छोटे आश्रमनुमा स्कूलो मे किसी व्यवस्था की परेशानी बतायी गयी तो उन्होने तत्काल बिना मागे ४० हजार रुपये का चेक प्रदान किया। ओर शिविरार्थियो के खाने पीने का सहयोग भी प्रदान किया।

इसी प्रकार अमेरिका मे प्रवास कर रहे श्री नरेन्द्र नाथ भी अक्सर अमेरिका के अन्य महानुभावो को प्रेरित करके यथासम्भव राशि के डालर भिजवाते रहते है। स्वय दानशील श्री नरेन्द्रनाथ जी अपनी तरफ से भी काफी सहयोग करते है। उनके नाम पर तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा के नाम पर पहले से ही अलग अलग बालवाडिया चल रही हैं।

बच्चो को इस विदाई समारोह मे श्री सूर्यप्रकाश जी श्रीमती ईश्वररानी महता तथा आर्यसमाज के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। आर्यसमाज रानीबाग मे भी कुछ बच्चो की व्यवस्था की गई है।

दिल्ली सरकार का भ्रष्टाचार

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

पीओ खूब शराब नित, कहे दिल्ली सरकार।
ऐसे शासन के लिए, बार-बार धिक्कार।।

बार बार धिक्कार सभी जन बहुत दुखारी।
निश्चय ऐसा शासक होय नर्क अधिकारी।।

एक क्षण मे माहौल अचानक बदल दिया है।
खिलने से पहले कलियों को मसल दिया है।

वातावरण बदल गया हो गया राक्षसीपन में।
आग लगा दी आकर हरे-भरे गुलशन मे।।

गर हालत ऐसी रही देश का हो जाए ऊँट मटीला।
करिए पुन विचार दीक्षित मुख्यमन्त्री शीला।

यह घृणित अत्याचार किसी पर सहा न जाता।
जिसे देखकर शरमिन्दा है स्वय विधाता।।

करनी का फल देने वाला है न्यायकारी।
नाहक क्यो बनती हैं रावण की महतारी।।

कब तक कुर्सी पाप कीच में सनी रहेगी।
समझो कुर्सी नहीं हमेशा बनी रहेगी।।

शुभ कर्मों की खुशबू को चहु ओर लुटाओ।
धूम्रपान मन्दिरा पर सख्त प्रतिबन्ध लगाओ।।

वरना यह महापाप द्वार को खटकाएगा।
जबरन तुमको खींच नर्क मे ले जाएगा।।

कहे स्वरूपानन्द, शीघ्र नहीं कर पाओगी।
अधिक विलम्ब किया तो पीछे पछताओगी।।

— १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की दूसरी शताब्दी का प्रथम सत्र प्रारम्भ



गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के नए सत्र का शुभारम्भ नवनियुक्त कुलपति श्री स्वतत्र कुमार तथा अन्य आर्य नेताओ ने यज्ञ से किया। यज्ञ करते हुए आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री डॉ० भारत भूषण श्री वेदव्रत शर्मा श्री देवेन्द्र शर्मा आचार्य यशपाल श्री प्रेम भारद्वाज आदि। यज्ञ के उपरान्त बैठक को सम्बोधित करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा।

देश द्रोही कौन है ?

१ जो आवश्यकता से अधिक सग्रह करके गरीब जनता को भूखा मरने पर मजबूर करता है।

२ अपनी मातृ भाषा/राष्ट्र भाषा को छोडकर अपने देश मे विदेशी भाषा का प्रयोग करता है। जैसे अग्रेजी मे हस्ताक्षर करता है। निमन्त्रण पत्र इत्यादि अग्रेजी मे छपवाता है।

३ नियमो/कानूनो का उल्लघन करके अनुशासन भग करता है। जैसे जहा धूम्रपान निषेध है वहा बीडी सिगरेट पीता है।

४ गलत झूठी अफवाह फैला कर जनता को गुमराह करता है या ठगता है।

५ जो ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता रिश्वत खोर है बिना परिश्रम के मुफ्त मे खाता है।

६ अपनी उचित/अनुचित माग पूरी कराने के लिए राष्ट्र की सम्पत्ति या जान माल को क्षति पहुचाता है।

१० जो चोरी करता है डाके डालता है और बलात्कार जैसे कुकर्म करके समाज और देश को कलकित करता है। — **देवराज आर्य मित्र**

आर्यसमाज कृष्णा नगर दिल्ली—५१

गृहणी

वास्तव मे घर को घर नहीं कहते गृहणी को ही घर कहते है जिस घर में गृहणी न हो वह घर वन के ही समान है

प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार वितरण समारोह समपन्न

रविवार दिनाक ३० जून २००२ को आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई—५४ मे स्वाध्याय पत्राचार पाठयक्रम रामायण सन्देश के हिन्दी मे स्वाध्यायी छात्रो को प्रमाण पत्र एवम पुरस्कार वितरित किए गए। पठनार्थियो मे डा० श्याम बिहारीलाल (मुम्बई) श्री प्रेमचन्द अग्रवाल (यमुनानगर हरियाणा) तथा ब्र० नवानन्द वैदिक (टकारा गुजरात) ने क्रमश सर्वप्रथम द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए।

डॉ० सोमदेव जी शास्त्री द्वारा सचालित **सत्यार्थ सन्देश** पत्राचार पाठयक्रम का विमोचन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी आर्य ने किया। उन्होने अपने उदबोधन मे कहा कि महर्षि दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मानव समाज को एक नई दिशा प्रदान करने वाला है। विश्व मे फैली हुई कुरितिया पाखण्ड अन्धविश्वास घोर आडम्बर आदि का समाधान सत्यार्थ प्रकाश है। इस ग्रन्थ के स्वाध्याय से मन मे होने वाली अनेक शकाओ का समाधान किया जा सकता है। डॉ० सोमदेव शास्त्री ने पत्राचार पाठयक्रम मे अधिक से अधिक व्यक्तियो को सम्मिलित होने का आग्रह किया।

सत्यार्थ सन्देश का पत्राचार

पाठ्यक्रम प्रारम्भ

जुलाई २००२ से सत्यार्थ सन्देश पर मेघजी भाई नैनसी प्रकाश्न द्वारा पत्राचार पाठयक्रम प्रारम्भ हो रहा है। प्रतिमाह १६ पृष्ठ की लघु पुस्तिका मे सत्यार्थ प्रकाश मे विद्यमान विषयो का विवेचन किया जाएगा। प्रत्येक पुस्तिका के अन्तिम पृष्ठ पर पाच प्रश्न होगे जिनका उत्तर लिखकर सचालक के पास भेजना होगा। सबसे अधिक सही उत्तर देने वाले प्रथम तीन पठनार्थियो को क्रमश २०१/— १५१/— १०१/— रुपये का पुरस्कार प्रमाण पत्र तथा ४० प्रतिशैत सही उत्तर देने वालो को प्रमाण पत्र दिया जाएगा। परीक्षा परिणाम जून २००३ मे घोषित किए जाएगा। पुस्तक डाक व्यय और प्रमाण पत्रादि के लिए केवल मात्र ५० रुपये वार्षिक सदस्यता शुल्क है सदस्यता धनादेश (मनिआर्डर) द्वारा निम्न पते भेजकर शीघ्र ही सदस्यता प्राप्त करे —

— डॉ० सोमदेव शास्त्री

डी० ३०६ मिल्टन अपार्टमेन्ट आजाद रोड जुहू कोलिवाडा मुम्बई ५४ दूरभाष ०२२ ६६०६६८

जीवन का हास

सूर्योदय होने पर जनसमूह प्रसन्न हो उठते हैं और सूर्यास्त होने पर भी प्रसन्न होते हैं। वे सम्भवत यह ध्यान नहीं रखते कि प्रतिदिन उनके जीवन का क्षय या हास हो रहा है।

काम की बाते

१ यदि केले ज्यादा खा लिए हो तो एक छोटी इलायची खालो सब हजम हो जाएगा।

२ यदि आम अधिक खा लिए हो तो मीठा दूध पीना लाभदायक है।

३ यदि मक्का (भुट्टा) ज्यादा खाया हो तो दही की नमकीन लस्सी पीओ।

४ यदि तरबूज या खरबूज अधिक खा लिए हो तो मीठा शरबत पीना लाभदायक है।

५ ततैया (बर्र) या बिच्छु काट ले तो नीबू या प्याज का रस नमक मिला कर लगा दो या आम का अचार रगड दो।

६ यदि किसी मूत्र खुल कर न आए तो मूली या गन्ने का रस नीबू का रस मिलाकर पीओ।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज शान्ति नगर सोनपत

प्रधान — श्री थाबर लाल पाहूजा

महामन्त्री — श्री हरिचन्द स्नेही

कोषाध्यक्ष — श्री ब्रह्म दत्त नारग

आर्यसमाज मन्दिर, सगरूर

प्रधान — महाशय वीरेन्द्र कुमार

मन्त्री — श्री राजेन्द्र आर्य

कोषाध्यक्ष — श्री शिवराम महाजन

अपना समस्त कार्य हिन्दी में ही करें।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 18 19/07/2002 दिनांक १५ जुलाई से २१ जुलाई २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 18 19/07/2002 पूर्व भुगतान f िना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६ /० २

गढ़ी (होडल) में सभ्यता - संस्कृति रक्षक समारोह स

गढी होडल (फरीदाबाद) मे सभ्यता – सस्कृति रक्षक समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता चौ० नारायण सिह ने की तथा मच सचालन मा० रगलाब आर्य ने किया।

आर्यजगत के प्रसिद्ध कवि प० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अगर महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत मे जन्म न लेते तो वैदिक सभ्यता सस्कृति पूरी तरह नष्ट हो जाती और कहीं भी वेदमन्त्रो की ध्वनि सुनाई न देती।

उन्होने कहा कि वैदिक सभ्यता सस्कृति सभी सस्कृतियो से पुरानी है। वेद ससार के सभी धर्म ग्रन्थो से पुराने हैं जो ईश्वर की वाणी माने जाते हैं। वेदो मे जीवमात्र की भलाई करने की शिक्षा दी गई है। सर्वप्रथम वेदो का ज्ञान अग्नि वायु आदित्य अगिरा इन चार ऋषियो को ईश्वर ने दिया था। ससार का कल्याण वैदिक धर्म को मानने से ही होगा।

चौ० उदयभान विधायक हसनपुर (हरियाणा) ने कहा कि महर्षि दयानन्द महाराज ने ससार को वैदिक ज्ञान देकर महान उपकार किया। वह जन्म जाति के विरुद्ध थे तथा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र चारो वर्णो को कर्मों के अनुसार मानते थे अगर वह वेदप्रचार न करते तो सारा ससार विधर्मी बन जाता। हमे महर्षि दयानन्द के जीवन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

इस समारोह मे श्री कुजीलाल सौरोत श्री मनोहर लाल आर्य, ब्रह्मचारी जयदेव आर्य ने भी विचार व्यक्त किए। श्री नारायण सिह ने अतिथियो व श्रोत्राओ का धन्यवाद किया।

वधू की आवश्यकता

आर्य परिवार के सुयोग्य वर को सुन्दर अनुरूप वधू चाहिए। **वर** – कद ५ फुट ४ इच रग गोरा सुन्दर शिक्षा एम०एस०सी० बी०एड० नौकरी अध्यापक मासिक प्राप्ति १० ००० पारिवारिक स्थिति सुदृढ मासिक आय ३५००० रु० के लगभग। सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र मे रूचि। वधु के विषय मे अपेक्षा सुन्दर गुणवती शिक्षित आर्य परिवार मे जन्मी कन्या के अभिभावक सम्पर्क करे –

भारतोदय प्रतिष्ठान
सीताराम नगर वधू वर सूचक केन्द्र
लातूर ४१३५३१ (महाराष्ट्र)
दूरभाष ०२३८३ २६०२६

दिल्ली की आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

स्त्री आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

प्रधाना	–	श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा
उपप्रधाना	–	श्रीमती कुन्ती रानी सूद
उपप्रधाना	–	श्रीमती सुनीता बुग्गा
मन्त्री	–	श्रीमती पूनम मनोचा
उपमन्त्री	–	श्रीमती शकुन्तला सैनी
कोषाध्यक्षा	–	श्रीमती पुष्पलता शास्त्री
पुस्तकाध्यक्षा	–	श्रीमती रश्मि वर्मा
निरीक्षिका	–	श्रीमती सत्यभामा

आर्यसमाज किशनगज, दिल्ली-६

प्रधान	–	श्री ओमप्रकाश नरुला
उपप्रधान	–	श्री चमन लाल मदान एव श्रीमती शान्ति शर्मा
मन्त्री	–	श्री धर्मवीर सिह
प्रचार मन्त्री	–	श्री हरिकृष्ण तनेजा
कोषाध्यक्ष	–	प्रो० रामचन्द्र आमे

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२
(दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक ३१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार २२ जुलाई से २८ जुलाई २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

लोगों के मनों को संगठित करने का प्रयास करें - अब्दुल कलाम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के शिष्टमण्डल की भारत के 12वें राष्ट्रपति से शिष्टाचार भेंट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्टमण्डल भारतीय गणतन्त्र के १२वे नव निर्वाचित राष्ट्रपति श्री ए०पी०जे० अब्दुल कलाम से शिष्टाचार भेट एव शुभकामनाओ के आदान प्रदान के लिए राष्ट्रपति आवास पर पहुचा। इस शिष्टमण्डल मे सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभ के ·धान एव सार्व·शि· सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा दिल्ली सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की मन्त्रिणी माता प्रेमलता शास्त्री आर्य तपस्वी श्री सुखदेव श्री इन्द्र कुमार मेहता श्री चमनलाल महेन्द्रू, श्री जोगेन्द्र खटटर श्री रामलाल आहूजा श्रीमती आरती खटटर श्री शशि जेटली एव श्री निरजन सिह चावला शामिल थे।

शिष्टमण्डल की ओर से राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम को अग्रेजी भाषा मे वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश भेट किया गया। भेट करते समय श्री विमल वधावन ने राष्ट्रपति जी से कहा कि विश्व मे विकसित हर प्रकार के ज्ञान विज्ञान का मूल सूत्र वैदिक ऋचाओ मे निहित है। सत्यार्थ प्रकाश के बारे मे सुनते ही राष्ट्रपति जी ने कहा कि मैने इसे अच्छी तरह से और बारीकी से पढा है। समाज मे सत्य–असत्य का निर्णय करने के उद्देश्य से इस ग्रन्थ की रचना हुई है।

राष्ट्रपति जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने समाज के लिए जो कुछ भी किया उसके बदले मे उन्होने कभी किसी प्रतिफल की इच्छा नही की। धन पद और यहा तक कि प्रसिद्धी को भी उन्होने कभी अपना लक्ष्य नही बनाया। उन्होने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एकता स्थापित करने के लिए दूरगामी प्रभाव वाले सिद्धान्तो की स्थापना की।

श्री विमल वधावन ने राष्ट्रपति जी को बताया कि हजारो की सख्या मे आर्यसमाज मन्दिर तथा आर्य शिक्षण सस्थाए महर्षि दयानन्द जी के मिशन का आगे बढाने के लिए कार्य कर रही हैं।

उन्होने राष्ट्रपति जी से आग्रह किया कि देश के सर्वोच्च पद पर आसीन होकर आप देश मे ज्ञान विज्ञान की वृद्धि को भारतीय सस्कृति और विशेष रूप से वैदिक ज्ञान के साथ जोडे रखने के लिए विचार की प्रक्रिया चालू करे।

देश की वर्तमान परिस्थितियो मे आर्यसमाज के लिए किसी विशेष सन्देश की प्रार्थना पर राष्ट्रपति जी ने कहा कि आज हमारा समाज अलग–अलग सोच को लेकर अलग–अलग दिशाओ मे जाता हुआ नजर आ रहा है ऐसे मे आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ को लोगो के मनो को प्रेम पूर्वक सगठित करने का प्रयास करना चाहिए।

Unite the minds of the people — इस सन्देश को दोहराते हुए राष्ट्रपति जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने भी इसी को अपना लक्ष्य बनाया था



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्टमण्डल भारत गणराज्य के १२वे नव निर्वाचित राष्ट्रपति श्री ए०पी०जे० अब्दुल कलाम को शुभकामना देने के लिए मिला। चित्र मे राष्ट्रपति जी से चर्चा करते हुए श्री विमल वधावन। माल्यार्पण द्वारा राष्ट्रपति जी का स्वागत करते हुए श्री वेदव्रत शर्मा। शिष्टमण्डल का सामूहिक चित्र जिसमे वाए से आर्य तपस्वी श्री सुखदेव माता प्रेमलता शास्त्री, श्री विमल वधावन, श्री इन्द्र कुमार मेहता, श्री जोगेन्द्र खट्टर, वैद्य इन्द्रदेव, श्री निरजन सिह चावला, श्री वेदव्रत शर्मा, श्री चमनलाल महेन्द्रु, श्रीमती आरती खट्टर श्री शशि जेटली।

उठो कर्त्तव्यनिष्ठ बनो !
अन्धकार से ज्योति की ओर बढो

उत्तिष्ठत सनह्यध्वम। *अथर्व० ११–६–२*

उठा कमर कस लो।

आरोह तमसो ज्योति । *अथर्व० ८–१–८*

अन्धकार से निकल प्रकाश की ओर बढो।

श्रेष्ठा भूयास्थ। *अथर्व १८–४–८६*

श्रेष्ठ बना।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

सूखे का संकट : स्थायी समाधान अपेक्षित

समय पर वषा न हाने से देश का बडा क्षेत्र सूखे के सकट से आक्रान्त हे। खरीफ की फसल सूख चुकी है। उ०प्र० के १५ जिले सूखग्रस्त घोषित किए गए ह। अब वर्षा हो भी जाए ता क्षतिग्रस्त खरीफ की फसल की भरपाइ नही हा सकती। सूख के कारण दिन प्रतिदिन के व्यवहार म आन वाली चीजे महगी और दुर्लभ हो चली हे। इस प्रतिकूल मोसम क कारण सकट म ग्रस्त अर्थव्यवस्था आर अधिक ग्रस्न हो सकती है। खडी फसला को ५० प्रतिशत या उससे अधिक की क्षति हुई है। उत्तरी भारत के विस्तृत क्षेत्र सूखे की सीधी चपेट मे है। भारत एक कृषिप्रधान देश है इसलिए सूखे का सीधा प्रभाव देश की अर्थव्यवस्था ओर देश की आम जनता पर तुरन्त पडता है। एक अनुमान के अनुसार दश की ५ करोड जनता सूखे से प्रभावित है और देश की लाखो हेक्टेयर भूमि वर्षा न होने से असिचित और सूखे के सीधे प्रभाव से सूख चली हे। समय पर वर्षा न होन से हुए सूखे अन्नाभाव महगाई इसी वर्ष देश की जनता को पीडा नही हुई है प्रत्युत प्रतिकूल मौसम के कारण यह निरन्तर कष्ट देने वाली समस्या है। विशेषज्ञो का ख्याल है कि राष्ट्रीय जलग्रिड का निर्माण कर समस्या का स्थायी कारगर समाधान प्राप्त किया जा सकता है। देश मे नदियो का जाल बिछा हुआ है। वर्षा का अधिकाश जल नदियो जलधाराओ के माध्यम से बहकर व्यर्थ चला जाता है। अवर्षण की समस्या का समाधान जल सग्रहण की स्थायी ठोस व्यापक योजनाओ के निर्माण और क्रियान्वयन से सम्भव है। उस स्थिति मे राष्ट्र की जनता केवल वर्षा जल पर निर्भर न होकर जलाभाव के स्थायी कारगर समाधान का लक्ष्य उठा सकेगी। इस समय सूखे से खडी फसलो के ५० प्रतिशत या उससे अधिक की क्षति हुई है। अब भी वर्षा आ जाए तो इस वर्ष की समस्या के समाधान का रास्ता बन जाएगा परन्तु अब समय आ गया हे जब देश के सूत्र सचालक नीति निर्धारको को ऐसी स्थायी योजना बनाकर उसे क्रियान्वित करना होगा जब अतिवृष्टि अनावृष्टि आदि समस्याओ का स्थायी समाधान क्रियान्वित किया जाए।

सूखे अनावृष्टि अतिवृष्टि आदि समस्याए केवल भारत के सम्मुख ही नही आती विश्व के अनेक छोटे बडे राष्ट्रो ने अपनी इन समस्याओ के स्थायी समाधान के उपाय खोजे है और उन्हे क्रियान्वित किया हे भारत को भी उन प्राकृतिक आपदाओ–विपदाओ का व्यवस्थित अध्ययन विश्लेषण कर उनमे स्थायी कारगर समाधान की योजना बनाकर उन्हे क्रियान्वित करना होगा। भारत का लम्बा इतिहास साक्षी है कि यह भारत राष्ट्र धन धान्य से परिपूर्ण सुखी राष्ट्र रहा है। यह ठीक हे कि आज देश मे करोडो की गिनती मे जनता और प्राणी हे उन के स्थायी समुचित भरण पोषण की समस्या कठिन और उलझनो भरी हो सकती है परन्तु इसमे सन्देह नहीं कि देश मे जिस प्रकार के प्राकृतिक साधन ओर मानव शक्ति है यदि उसका भली प्रकार अध्ययन कर उनका समुचित सदुपयाग और प्रबन्धन किया जाए तो सूखे अतिवृष्टि आदि समस्याओ का स्थायी समाधान प्राप्त किया जा सकेगा। भारत का इतिहास साक्षी है कि हमारा राष्ट्र हजारो वर्षो तक धन धान्य से भरपूर जन जन के स्थायी कल्याण क प्रतीक रामराज्य एव दूसरी सुखी व्यवस्थाओ के प्रतीक शासनो के गोरव भरे समुन्नत काल मे निरन्तर सुखी समृद्ध हुआ है। स्वाधीन भारत के सूत्रसचालक यदि हिमालय से लेकर दक्षिण मे समुद्र तक और पश्चिम मे समुद्र से प्रारम्भ कर समुद्र तक विस्तीर्ण राष्ट्र की प्राकृतिक सम्पदा और कोटि कोटि मानव शक्ति का यदि अध्ययन कर उनके समुचित सदुपयोग की व्यवस्थित योजना बनाकर उसे पूरी शक्ति बुद्धि से कार्यान्वित करे तो न केवल सूखे अतिवृष्टि सरीखी सामयिक समस्याओ का स्थायी समाधान प्राप्त किया जा सकता है प्रत्युत इस भारत राष्ट्र को पुन विश्व का एक सर्वाधिक समुन्नत प्रगतिशील सुखी देख बनाया जा सकेगा।

प्राकृतिक समस्याए कठिन हो सकती है परन्तु यदि भारतीय नीति निर्धारक भारत महाराष्ट्र के अपूर्व प्राकृतिक ससाधनो और कोटि कोटि मानव शक्ति का समुचित बुद्धिसगत सदुपयोग करे तो कुछ ही वर्षों मे उन अस्थायी प्राकृतिक समस्याओ के स्थायी समाधान के साथ भारत राष्ट्र के प्राकृतिक ससाधनो और कोटि कोटि मानवशक्ति को विश्व के इतिहास मे पुन ऊचा श्रेष्ठ प्रेरणाप्रद गौरव गरिमा की स्थिति से अलकृत करने म किसी तरह का कोई अवरोध बाधा नहीं दे सकेगा। भारत का दीर्घकालीन गौरव से भरा पूरा इतिहास भारत राष्ट्र के अपूर्व प्राकृतिक भौगोलिक ससाधनो के साथ यहा के मनीषियो चिन्तको के श्रेष्ठ मार्गदर्शन का एक प्रेरक सच्चा इतिहास है। राष्ट्र के सम्मुख छाटी बडी अनक समस्याए बाधाए आ सकती है परन्तु यदि भारत के चिन्तको विचारको मनीषियो के सत्यपरामर्श का सदुप्रयोग कर भारत के प्राकृतिक ससाधनो ओर कोटि कोटि मानव शक्ति का सदुपयोग किया जाए तो नई सहस्राब्दी मे भारत राष्ट्र को पुन विश्व का एक श्रेष्ठ कल्याणकारी महाराष्ट्र के रूप म प्रतिष्ठित किया जा सकेगा।

मनोहरलाल ऋषि अधरंग से पीडित आर्थिक सहायता की विनम्र अपील

श्री मनोहर लाल ऋषि भजनोपदेशक चालीस पचास वर्षो से आर्यसमाज की सेवा करता आ रहा है – पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मे भी कुछ सेवा की है – विकलाग एक हाथ न होते भी सेवा कर रहा था इसी से गृहस्थ की जीवन गाडी चल रही थी। अब मैं अधरग से अपाहिज हो गया हू। मेरा चलना फिरना बन्द हो गया है। प्रतिनिधि सभाओ एव आर्यसमाजो के सभी अधिकारियो से प्रार्थना है मेरे बाकी गृहस्थ एव जीवन निर्वाह के लिए कुछ आर्थिक सहायता प्रदान करे। अच्छा हो यदि मासिक सहायता बाध दी जाए। धन्यवाद।

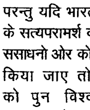
प्रार्थी

– मनोहर लाल ऋषि (भजनोपदेशक)
जी १/३८ बी मन्दिर मार्ग दाबडी पालम रोड महावीर एन्क्लेव नई दिल्ली ४५ दूरभाष ५०३३५८३

हमारे प्रेरणा स्रोत

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता तथा समाज सेवक

स्व० श्री कृष्ण चन्द्र गुप्त



आदरणीय श्री कृष्ण चन्द्र गुप्ता जी बहुत ही शान्त स्वभाव सौम्य सात्विक व सादा जीवन वाले व्यक्ति थे। वे समाज सुधारक तो थे ही पर धर्म प्रचार मे भी उनकी प्रबल रुचि थी। वैदिक धर्म के प्रति निष्ठावान उपदेशक थे। नित्य प्रति सध्या हवन करते थे।

आखे खराब होने के कारण १६७६ में रेलवे से स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण कर लिया व पूर्ण रूप से आर्यसमाज के कार्यो मे लग गए। अवकाश ग्रहण करने के पश्चात शकूर बस्ती रेलवे कालोनी से सैनिक विहार आ गए। उन्होने सबसे प्रथम कार्य आर्यसमाज सैनिक विहार की स्थापना कर सभा से सम्बन्धित किया व कोई पद न लेकर आजीवन कार्य करते रहे।

सैनिक विहार मे आने से पूर्व वे रानी बाग आर्यसमाज मे जाते थे और वनवासी छात्र छात्राओ मे धार्मिक विचार भरकर सस्कारित करने मे तन मन धन से सहयोग करते थे।

उन्होने तिहाड जेल के कैदियो मे सुधार के लिए बहुत धर्म प्रचार किया था। उनके सुपुत्र श्री सुनील गुप्ता तिहाड जेल के सुपरिन्टेण्डेण्ट हैं। उनसे प्रेरणा पाकर व सुश्री किरन बेदी जी के नेतृत्व तथा श्री सुनील गुप्ता के सहयोग से हमने हजारो कैदियो के सुधार हेतु वैदिक सन्यासी व विद्वान भिजवा कर उपदेश करवाए। अन्तिम समय में भी उन्होने आर्यसमाज के भवन निर्माण के लिए अपने सुपुत्र श्री सुनील गुप्ता जी से आर्थिक सहायता का आश्वासन दिलाया।

वह मेरे प्रेरणा स्रोत थे। मैं अपने परिवार व सम्बन्धियो एवम् दिल्ली की समस्त समाजो की ओर से उस पुण्यात्मा को भाव भीनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हू।

– राजेन्द्र प्र० दुर्गा

दक्षिण अफ्रीका और आर्यसमाज

– **कै० देवरत्न आर्य**, *प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली*

१९वीं सदी के प्रारम्भ मे भारतीयो की स्थिति द० अफ्रीका मे ठीक नहीं थी। उस समय भारत से सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासी स्वामी शकरानन्द जी सरस्वती एव भाई परमानन्द जी दक्षिण अफ्रीका गए और हिन्दुओ को सगठित करने के लिए अनेक स्थानो पर आर्यसमाज की स्थापना की। आज वहा के प्राय हर शहर मे आर्यसमाज के भवन है और डरबन मे शहर के मध्य मे तीन मजिल का शानदार भवन है जो द० अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा का है। साथ ही भव्य इमारत खडी है जिसे वेद मन्दिर के नाम से जाना जाता है। आजकल इस सभा के प्रधान डॉ० रामविलास है।

लगभग ६० वर्ष पूर्व डरबन मे स्वामी जी ने आर्य युवक सभा की स्थापना की जिसके अन्तर्गत एक सस्था **"आर्यन बेनेवलेण्ट होम"** (Aryan Benevolent Home) कार्यरत है। आजकल इस सस्था के सचालक सुप्रसिद्ध आर्यनेता माननीय डॉ० रामभरोस है।

आर्य युवक सभा के वर्तमान प्रधान श्री पोलटन जी व श्री रामभरोस जी के आमन्त्रण पर मै अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता के साथ डरबन के लिए दिनाक १८ मई २००२ को एयर मॉरिशस के विमान द्वारा रवाना हुआ। मेरे साथ मेरे छोटे भाई श्री सोम रत्न आर्य की सुपुत्री कुमारी श्वेता भी थी। १९ मई की प्रात हम मॉरिशस पहुचे और लगभग १० बजे जोहन्सबर्ग (द० अफ्रीका की राजधानी) के लिए रवाना हुए। मध्याह्न ३ बजे वहा पहुचकर नेशनल वाईड एयरवेज द्वारा साय ७ बजे डरबन पहुचे। मॉरिशस एयरपोर्ट पर श्री मगरु डॉ० उदयनारायण गगू, डॉ० न्योर श्री राजेन्द्र मोहित आदि अनेक आर्यजन उपस्थित थे।

डरबन एयरपोर्ट पर अनेक आर्यजन विशेषकर डॉ० रामभरोस जी अपनी टीम के साथ उपस्थित थे। हमारे स्वागत के पश्चात् हम डरबन स्थित आर्यन बेनेवलेण्ट होम के लिए रवाना हुए। हम वहीं पर २४ दिन तक रहे। अलग फ्लैट मे निवास हेतु सुन्दर व्यवस्था थी। डरबन मे स्थित आर्य युवक सभा द्वारा सचालित आर्यन होम आर्यसमाज की गौरवमयी सस्था है। आर्य अनाथालय के रूप मे उसका प्रारम्भ हुआ। आज उसकी अनेक शाखाए द० अफ्रीका के विभिन्न नगरो मे कार्यरत हैं। डरबन मे लगभग ४ एकड मे स्थित भव्य भवन है। अनेक वार्ड हैं– जिसमे वृद्ध पुरुष व महिलाए विकृत मस्तिष्क के रोगी विकलाग आदि लगभग ४०० व्यक्ति रहते है। उनकी देखभाल के लिए ३५० व्यक्तियों का स्टाफ है बहुत बडी धोबीशाला तरणताल खेलो के मैदान फिजियोथैरेपी सेण्टर आदि सारी सुविधाए वहा मौजूद हैं। निवासियो की देखभाल के लिए वहा बडी सख्या मे नर्सिंग स्टाफ कार्यरत है। किसी बडे अस्पताल की सफाई बडे स्नेह व प्यार से वहा रहने वालो की देखभाल बडे–बडे मनोरजन सभागृह– आफिस कार्यालय जिसमे लगभग ५० व्यक्ति विभिन्न कार्यो की देखभाल करते हैं। सालाना बजट दो करोड के आसपास है। वहा के चीफ एक्ज्यूकेटिव आफिसर श्री राजेश लक्ष्मण सारे कार्यो को सभालते हैं। हमारी पूरी द० अफ्रीका की यात्रा मे प्राय सभी स्थानो पर कार के साथ वही हमारे साथ रहे। उन्होने भी इस कार्य हेतु बडी समर्पित भावना से जीवन दिया हुआ है।

एक निश्चित कौंसिल इस अनाथालय के कार्य को देखती है। जिसकी नियुक्ति आर्य युवक सभा करती है। आर्य नेता श्री रामभरोस जी इसके मुख्य सचालक हैं। चौरासी वर्षीय श्री रामभरोस जी वहीं रहते है– नियमित जीवन के साथ इस सस्था के लिए समर्पित हैं। ठीक प्रात ८.३० बजे वह कार्यालय पहुच जाते हैं। साय ६ बजे तक वहीं काम करते हैं। इस व्यक्तित्व के आगे द० अफ्रीका का हर नागरिक नतमस्तक है। इस विशिष्ट सम्मानित व्यक्ति को अनाथालय और उसके बाहर प्रत्येक व्यक्ति सामान्य मनुष्य नहीं वरन देवता के रूप मे देखता है। आपके द्वारा सचालित इस सस्था को देखने के लिए नेल्सन मण्डेला जैसे व्यक्ति भी आते रहे हैं। एक बार सुप्रसिद्ध सिने अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन वहा धन सग्रह अभियान मे शामिल हुए थे। इस सस्था के कार्यो एव रहने वालो की सुव्यवस्था को देखकर उन्होने अपनी ओर से २५ हजार डालर का योगदान दिया। अभी हाल ही मे अपनी एक फिल्म के प्रीमियम पर वे पुन डरबन गए और बिना आमन्त्रण के स्वत ही इस सस्था मे पहुच गए। वहा के निवासियो से मिले। इस सस्था ने उनके लिए अपने ही मैदान मे अब एक हैलीपेड बनाया हुआ है।

एक दिन हम श्री रामभरोस जी व श्री राजेश लक्ष्मण डरबन स्थित भारतीय उच्चायुक्त के कार्यालय मे उनके आमन्त्रण पर जलपान के लिए गए। श्री अजीत कुमार उच्चायुक्त ने अपनी बात करते हुए मुझसे कहा –Capt Arya if you wish to see real contribution of Indians to South Africa you must visit Aryan Benevolent Home उन्हे पता नहीं था मै वहीं ठहरा हुआ हू।

लगभग ५० वर्ष पूर्व डरबन मे एक होटल था। श्री रामभरोस जी के प्रयत्न से इस सस्था ने यह होटल खरीद लिया और वहा भी अब इसी प्रकार का मानव कल्याण केन्द्र चल रहा है। हम ६०० कि०मी० दूर जोहनसबर्ग मे गए वहा भी सुन्दर भवनो मे दो शाखाए कार्यरत हैं। डरबन से ३०० किलोमीटर दूर स्थित ग्लेनको शहर मे भी बहुत बडी शाखा इस नाम से कार्यरत है। सब कुछ देखने के पश्चात मैने अपने भाषणो मे कई बार इस बात को दोहराया कि आर्यसमाज के छठे नियम "ससार का उपकार करना ही इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" इसका व्यावहारिक स्वरूप किसी को देखना हो तो वे डरबन स्थित आर्यन बेनेवेलेण्ट होम की गतिविधियो को देखकर आए। इसमे रहने वाले लगभग ८० प्रतिशत व्यक्ति द० अफ्रिकन्स हैं।

२ जून २००२ को आर्य युवक सभा ने अपनी ६०वी वर्षगाठ और आर्यन बेनेवेलेण्ट होम की ८१ वीं वर्षगाठ समारोह मनाया गया। इसी समारोह के मुख्य अतिथि के रूप मे मुझे आमन्त्रित किया गया था। समारोह भव्य रूप से आयोजित किया गया। ६० कुण्डीय यज्ञ का आयोजन था और लगभग सारे पुरोहित उसमे उपस्थित थे। लोग जोहनसबर्ग आदि स्थानों से भी आए थे।

समारोह के प्रारम्भ मे मैने दक्षिण अफ्रीका का राष्ट्रीय झण्डा और बाद मे ओ३म ध्वजारोहण किया। पश्चात मुझे मुख्य यजमान के रूप मे यज्ञ पर बिठाया गया।

यज्ञ के उपरान्त डॉ० रामभरोस जी ने स्वागत भाषण दिया। साथ ही उपस्थित भजन मण्डली ने भजन प्रस्तुत किया। समारोह का सयोजन डॉ० हेमराज कर रहे थे। भजनो के पश्चात् मैंने ३५ मिनट का भाषण दिया जिसमे आर्यसमाज के मुख्य उद्देश्य की ओर सबका ध्यान आकर्षित कर ए०बी०एच० के अधिकारियो को बधाई दी विशेषकर आर्य युवक सभा के प्रधान श्री प्रेम पोलटन जी व डॉ० रामभरोस जी के कार्यो की प्रशसा की। इसी कार्यक्रम मे प्रसिद्ध प्रवासी सन्यासी भवानी दयाल जी की पौत्री श्रीमती सुधा रामनुथन से भी मिलना हुआ। इस समारोह मे मुख्य–मुख्य व्यक्तियो को मैंने गायत्री मन्त्र के पटके – हरिद्वार सम्मेलन के बैज स्वामी श्रद्धानन्द पर बनी वृत्तचित्र की कम्प्यूटर डिस्क आदि से उनका सम्मान किया।

मध्याह्न आर्य युवक लीग के नव युवको के साथ एक मीटिंग की। उन्हे आर्यसमाज मे सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। वे बहुत खुश थे। साय ४ बजे मेरा रेडियो सेण्टर पर जीवित कार्यक्रम था। लगभग ३० मिनट का मेरा साक्षात्कार प्रसारित किया गया जिसमे मैंने आर्यसमाज के सगठन पर अपनी वार्ता दी। पूरे द० अफ्रीका मे यह वार्ता प्रसारित की गई।

मेरी यात्रा के दौरान अनेक हिन्दू सगठनो ने हमे अपनी सभाओं मे आमन्त्रित किया। हिन्दू महासभा हिन्दी शिक्षा सभा रामकृष्ण मिशन लक्ष्मी नारायण मन्दिर द० अफ्रीका हिन्दू ऐसोसिएशन (SAHA) आदि सस्थाओ मे जाने का अवसर मिला। हमे हिन्दू धर्म प्रचार ट्रस्ट के कार्यों को भी देखने का अवसर मिला।

५ जून २००२ को आर्य प्रतिनिधि सभा द० अफ्रीका ने अपने विशाल भवन मे सम्मान समारोह व भोज रखा। ७६ वर्षीय सुप्रसिद्ध सगीतकार श्री हरिसिह जी ने सगीत प्रस्तुत किया – छोटी बालिकाओ ने नृत्य प्रदर्शन किया– मेरा भाषण हुआ। जिसमे मैंने आर्यसमाज के विशाल सगठन पर अपने विचार दिए। डॉ० राम विलास प्रधान ने अपना स्वागत भाषण दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका द्वारा प्रकाशित लगभग ५० पुस्तके उन्होने मुझे भेट की। उनकी गतिविधियो से मैं बहुत प्रभावित हुआ। सभा के मन्त्री श्री जे० बलवन्त ने समारोह का सचालन किया व धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

अपनी यात्रा के दौरान मैं विभिन्न आर्यसमाजो के सत्सगो मे गया। सभी स्थानो पर उनके प्रोग्रामो मे एकरूपता देखने को मिली। सभी सत्सगो मे एक भजन मण्डली अपने निश्चित स्थान पर बैठी होती थी। समय का अनुशासन होता था। निश्चित समय पर यज्ञ प्रारम्भ हो जाता था। सभी उपस्थित समुदाय यज्ञ की समाप्ति पर खडे होकर यज्ञ की आरती गाते थे। तत्पश्चात दो मधुर गीत – एक भाषण पुन दो गीत– धन्यवाद और सत्सग समाप्त। उसके बाद भोजन। यह कार्यक्रम दो घण्टे से अधिक नहीं होता था। अपनी यात्रा के दौरान मैं आर्यसमाज सिल्वर ग्लेन शेपस्टोन ग्लेनको लेडी स्मिथ पीटर मेरित्सबर्ग आयमित्र मण्डल रिजर्ववोयर हिल स्थानो पर सत्सग व भाषण के लिए गया। सभी स्थान डरबन से ८० से १५० किलोमीटर दूर थे। आर्यसमाज के कार्यक्रमो को देखकर बडी प्रसन्नता हुई।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

दक्षिण अफ्रीका यात्रा की झलकियां



१ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य का दक्षिण अफ्रीका मे भव्य स्वागत किया गया।चित्र मे सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए।
२ आर्य बेनीवोलैण्ट होम (दक्षिण अफ्रीका का सुप्रसिद्ध अनाथालय) में बच्चों के साथ सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या तथा भतीजी कु० श्वेता।
३ अनाथालय के बच्चों का प्रसन्न मुद्रा मे एक अन्य चित्र।



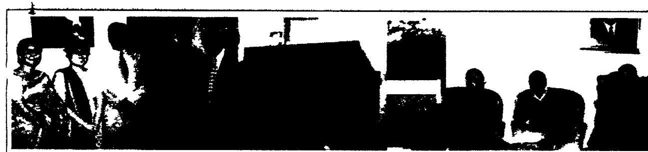
१ दक्षिण अफ्रीका के सुप्रसिद्ध आर्यनेता श्री शिशुपाल राम भरोस जी के साथ यज्ञ करते हुए।
२ इस शिशुगृह से सम्बन्धित अन्य आर्यजनों एव बालक बालिकाओं द्वारा किए जा रहे यज्ञ का विहगम दृश्य।
३ कै० देवरत्न जी की धर्मपत्नी तथा दक्षिण अफ्रीका के अन्य नर नारियां यज्ञ करते हुए।



१ दक्षिण अफ्रीका की सुप्रसिद्ध महिला स्वतन्त्रता सेनानी श्रीमती फतिमा मीर का अभिनन्दन करने के लिए सार्वदेशिक सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या तथा आर्य नेता श्री शिशुपाल राम भरोस उनके निवास पर गए।
२ सोने की खानो के अन्दर श्रीमती सुनीता आर्या का लिया गया एक चित्र।
३ आर्य बेनीवोलैण्ट होम मे एक अपग महिला के साथ श्रीमती सुनीता आर्या।
४ विद्युत शवदाह गृह के बाहर कै० देवरत्न आर्य, श्रीमती सुनीता आर्या कुमारी श्वेता आर्या तथा अन्य आर्य नेता।



१ सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य का रेडियो पर एक घण्टे की अवधि का साक्षात्कार लिया गया जिसका सीधा प्रसारण किया गया।
२ आर्य युवक परिषद् की ६०वीं जयन्ती के अवसर पर सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।
३ आर्य बेनीवोलैण्ट होम की ९०वीं वर्षगाठ पर दक्षिण अफ्रीका का ध्वज फहराते हुए कै० देवरत्न आर्य।



१ दक्षिण अफ्रीका में भारतीय वाणिज्य दूतावास के कृष्णमूर्ति श्री अजीत कुमार के साथ कै० देवरत्न आर्य, श्री शिशुपाल राम भरोस तथा श्रीमती सुनीता आर्या एव कु० श्वेता।
२ दक्षिण अफ्रीका के आर्यसमाज मन्दिर डरबन के द्वार का चित्र।
३ सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य पीटर मेरित्जबर्ग नामक उस रेलवे स्टेशन को भी देखने गए जहा विदेशी शासन के समय महात्मा गांधी को गोरे-काले भेद के कारण रेलगाड़ी से उतार दिया गया था।
४ इसी शहर के उपमहापौर के निमन्त्रण पर कै० देवरत्न आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या उनके निवास पर।



[illegible] में सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य का स्वागत करते हुए सुप्रसिद्ध संगीतकार श्री हरिसिंह जी।
२ [illegible] की कलाकार दक्षिण अफ्रीका का पारम्परिक नृत्य प्रस्तुत करते हुए।
३ [illegible] आशीष प्रदान करते हुए सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।

पृष्ठ ५ का शेष भाग

दक्षिण अफ्रीका और आर्यसमाज

इस यात्रा के दौरान हमे यह ज्ञात हुआ कि हमारी क्या–क्या कमिया है। जिसक कारण विदेशी आर्यसमाज सगठन हमारे साथ सक्रिय रूप से नहीं जुडे हुए है। उनके कार्यालय विशाल वातानूकुलित एव सुसज्जित है। आधुनिक युग के समस्त इलेक्ट्रोनिक साधन उसमे लगे हुए हैं। वे चाहते हैं कि सार्वदेशिक का कार्यालय भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का होना चाहिए। उसमे कम्प्यूटर आदि लगे हो ई–मेल फैक्स की सुविधा हो। आगन्तुको के लिए बढिया व्यवस्था हो आदि–आदि। वे चाहते है कि यदि हम ई मेल से कोई जानकारी जानना चाहे तो १ घण्टे मे उसका उत्तर मिलना चाहिए। मैंने उन्हे आश्वासन दिया कि आने वाले समय मे सारी व्यवस्था आज दिल्ली कार्यालय की स्थिति बिलकुल अलग है और आने वाले समय मे और भी ठीक हो जाएगी।

यहा के सारे सत्सग अग्रेजी भाषा मे होते हैं। सिर्फ यज्ञ मन्त्रो के साथ होता है बीच–बीच मे पुरोहित जो निर्देश देते हैं वह भी अग्रेजी मे। पुरोहित भी सूट और टाई मे होते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पुरोहितो के प्रशिक्षण की व्यवस्था करती है और जो पुरोहित उसमे उत्तीर्ण होते है उन्हे एक डिजायन का गाउन दिया जाता है जिसे वे पुरोहित का कार्य करते समय पहन लेते हैं ताकि सामान्य जन यह जान सके कि ये आर्यसमाज के पुरोहित है। सभी पुरोहितो के अपने–अपने बगले हैं– अपनी अपनी कारे हैं। वे सम्पन्न है और बडी श्रद्धा से आर्यसमाज के कार्य को कर रहे हैं। इसका श्रेय स्वर्गीय श्री नरदेव जी स्नातक को जाता है। हिन्दू धर्म को सगठित करने का अद्वितीय कार्य उन्होने किया। लगभग २० से अधिक पुस्तके उन्होने लिखी व वहा प्रकाशित कीं। वहा के लोगो मे उनके प्रति इतनी श्रद्धा है कि अनेक परिवारो मे जहा हम भोजन करने गए वहा उनका चित्र लगा देखा।

आर्यसमाज के कार्यों के अतिरिक्त उन्होने सभी पर्यटन स्थल दिखाने की व्यवस्था भी की थी। हमने वहा डोलफिन शो चिडिया पार्क क्रोकोडाइल वर्ल्ड (जिसमे १०६०० घडियाल हैं) रेडियो स्टेशन महात्मा गाधी सेटिमेण्टल केन्द्र वेली ऑफ थाउजेण्डस हिल्स आदि अनेक दर्शनीय स्थानो को भी देखा।

दिनाक २७ मई २००२ को हमें विशेष रूप से एक सार्वजनिक कार्यक्रम मे आमन्त्रित किया गया। डरबन मे द० अफ्रीका को स्वतन्त्र कराने मे जिन भारतीयो ने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया था जिसमे महात्मा गाधी के साथ लगभग १० ००० व्यक्ति सक्रिय थे उनकी स्मृति मे एक स्मारक का निर्माण किया गया था जिसका नाम "Resistance Park" था उसका उदघाटन पूर्व राष्ट्रपति श्री नेल्सन मण्डेला के हाथो हुआ। डरबन के महापौर गृह विभाग के मन्त्री श्री बुधदेशी भी उपस्थित थे। मै श्री रामभरोस जी के साथ परिवार सहित उपस्थित था। इस स्मारक निर्माण की प्रेरणा श्रीमती फातिमा मीर थी जिन्होने सक्रिय योगदान स्वतन्त्रता के लिए दिया था। वे अस्वस्थ होने के कारण उपस्थित नहीं हो सकी। हम दिनाक २६ मई को श्री रामभरोस जी के साथ श्रीमती फातिमा मीर के निवास पर गए। अस्वस्थ होने पर भी उन्होने बडी गर्मजोशी से स्वागत किया। मेरा परिचय श्री रामभरोस जी ने दिया। उन्होने मेरी पत्नी सुनीती और भतीजी श्वेता को बडे प्यार से अपने पास बिठाया। मैंने सम्मान से उन्हे ओ३म व गायत्री मन्त्र का भगवा पटका पहनाया। और उनके पैर छुए। उन्होने पटका सिर पर ओढ लिया दोनो हाथो मे मेरा सिर लेकर आशीर्वाद दिया। उनके व्यवहार मे कहीं इस्लाम की बू नहीं दिखाई दी। उन्होने श्री नेल्सन मडेला की जीवनी लिखी। मैंने उनसे कहा कि रसिसटेन्स पार्क के उद्घाटन पर श्री मण्डेला ने अपने भाषण मे आपको कई बार याद किया तो बोली – He is suppose to remember us Because when he was in jail for 27 years, we were the persons who kept him alive out side the jail

दिनाक २४ मई को हम महात्मा गाधी सेटिलमेण्ट" फिनिक्स देखने गए। यहा रहकर महात्मा गाधी ने द० अफ्रीका की स्वतन्त्रता का युद्ध लडा था। एक बडे भवन मे उनका प्रिटिग प्रेस एक बगला जिसमे उनकी पौत्री को हाउस एरेस्ट करके रखा गया था। वह मकान जिसमे महात्मा गाधी रहते थे देखने को मिला। अब उस स्थान को सरकार ने एक स्मारक के रूप मे परिवर्तित कर दिया है यह स्थान डरबन से लगभग ३० किलोमीटर दूर है व अफ्रिकन्स के निवासो के मध्य मे स्थित है।

१ जून २००२ को हम श्री राजेश लक्ष्मण के साथ पीटर मेरित्सबर्ग गए जो डरबन से १०० किमी दूर था आर्यसमाज के कार्यक्रम मे गए। प्रात १० बजे से वहा के अधिकारी हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। यहीं पर स्वामी शकरानन्द ने अपना डेरा डाला था व आर्यसमाज के कार्यों को प्रारम्भ किया। यहा आर्यसमाज के अनेक भवन व स्कूल चल रहे हैं। ४ वेद भवन 'वेद धर्म सभा' के नाम से स्थापित हैं। श्री बन्धु वहा के वरिष्ठ अधिकारी है। आर्यसमाज के भवनो को दिखाने के पश्चात हमे आर्यसमाज द्वारा निर्मित शमशान गृह दिखाया जहा शव गैस के बने चैम्बर या डीजल से जलाए जाते हैं। इतनी सफाई कि विश्वास नहीं होता– बडे हाल कुर्सियो से सुसज्जित जहा प्रार्थना सभा होती है। ऐसा ही एक शमशान स्थल हमे लेडी स्मिथ शहर मे देखने को मिला। जिसके सामने आर्यसमाज का बोर्ड लगा था। इतने सुन्दर ढग से निर्मित था कि वहा जाकर बैठने मे भी किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। दो बडे चैम्बर बने थे। शव को गैस से नष्ट करने की व्यवस्था। अनेक गोरे लोगो को भी वहा लाया जाता है। जो अपने शव दफनाने के स्थान पर जलाना पसन्द करते हैं। है तो शमशान गृह पर दर्शनीय।

मध्याह्न मे एक आर्य परिवार जो अग्रेजो के बनाए "विक्टोरिया क्लब" के मालिक है उन्हेने सम्मान भोज दिया। लगभग ५० व्यक्ति उपस्थित थे। विशुद्ध भारतीय भोजन उनकी पत्नी देहरादून की है।

मध्याह्न ३ बजे पीटर मेरित्सबर्ग की डिप्टी मेयर कुमारी लेटश्वायो ने चाय पर आमन्त्रित किया हुआ था। म्यूनिसिपल भवन के सामने महात्मा गाधी का भव्य पुतला बना हुआ था। जिसका अनावरण श्री मण्डेला ने किया। चारो ओर महात्मा गाधी के वाक्य लिखे थे। वहा से हम पीटर मेरित्सबर्ग रेलवे स्टेशन देखने गए। वह स्थान व प्रतीक्षालय देखा जहा गोरो ने बैरिस्टर मोहन लाल गाधी को बाहर निकाल दिया था यह कहकर यहा कोई काले नही आ सकते और उसी स्थान से द० अफ्रीका की स्वतन्त्रता का अभियान प्रारम्भ हुआ।

साय एक बडा समारोह आर्य भवन मे रखा गया। सबका सम्मान किया। अनेक विविध मनोरजक कार्यक्रम हुए। मेरा भाषण हुआ उपस्थित जन समुदाय अपने भारतीय अतिथियो का दिल से स्वागत कर रहा था। हर व्यक्ति मेरे साथ फोटो खिचवाना चाह रहा था। लगभग ४५ मिनट तक फोटो सेशन चलता रहा। यह स्थिति प्राय सभी स्थानो व समारोहो मे बनी रही।

डरबन से प्रकाशित वहा का सुप्रसिद्ध समाचार दी लीडर मे मेरा इण्टरव्यू प्रकाशित हुआ। अन्य समाचार पत्रो मे भी समाचार प्रकाशित हुए।

७ जून २००२ को हम जोहन्सबर्ग के लिए रवाना हुए। डरबन से ६०० किमी० दूर। हम वहा ३ दिन रहे। ए० बी० एच० के वहा दो बडे केन्द्र हैं। साय का भोजन हमने वहीं किया। हम उनके आयुर्वेद सैण्टर मे रुके। कडाके की सर्दी पड रही थी। ए०बी०एच० कौंसिल की मिटिग मे मैंने भाग लिया उनके कार्यक्रमों की प्रशसा की। ८ जून को दमसन सिटी देखने गए। १० जून को प्रात १० बजे East Wave Radio पर मेरा एक घण्टे का इण्टरव्यू प्रसारित किया गया। इस कार्यक्रम के पश्चात् हम ग्लेनको शहर के लिए रवाना हो गए। वहा भी ए०बी०एच० की बहुत बडी शाखा कार्य कर रही है। शाम को वहा बहुत बडा आयोजन रखा गया था। यह स्थान जोहन्सबर्ग से ३०० किमी० दूर था।

इस भव्य कार्यक्रम मे लगभग २५० व्यक्ति उपस्थित थे। साई सस्थान ने भजनो का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। गायत्री मन्त्र पर डाडी टेम्पल सोसायटी की बालिकाओ ने नृत्य प्रस्तुत किया। श्री राजेश लक्ष्मण ने मेरा परिचय दिया। उसके पश्चात लगभग ३५ मिनट तक मेरा भाषण हुआ।

ए०बी०एच० की इस शाखा मे लगभग २० कमरे और दो बडे हाल हैं। व्यक्ति स्वय की देखभाल स्वय ही कर सकते हैं वे कमरो में व शेष हाल मे रहते हैं। सबकी देखभाल की सुन्दर व्यवस्था है। यहा के इन्चार्ज हैं– डॉ० आई वेदज्ञी। उनकी पत्नी ने समारोह का सचालन किया। इस समारोह मे श्री टी०पी० दया पण्डिता ज्ञानवती राम प्रताप और श्री विजय जगन से भी मिलना हुआ।

श्री हरिसिह जी द० अफ्रीका के सुप्रसिद्ध सगीतकार हैं। वे फिल्मी गाने नहीं गाते। शास्त्रीय सगीत के विद्वान हैं। ७६ वर्ष की उनकी आयु है। आर्य प्रतिनिधि सभा के समारोह मे उन्होने अपना गायन प्रस्तुत किया था। मेरे भाषण से उनके मन मे मेरे प्रति स्नेह की भावना बनी। ए०बी०एच० मे उनका टेलिफोन आया मैं कैप्टन आर्य के सम्मान मे २ घटे का सगीत कार्यक्रम देना चाहता हू। ११ जून को उन्होने सगीत सध्या का कार्यक्रम ए०बी०एच० मे रखा जिसमे कुछ गण्मान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मुझे दो अर्धनिर्मित आर्यसमाजो मे विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। ताकि मैं उन्हे सलाह दे सकू यदि उसमे कुछ कमी हो। एक आर्यसमाज पीटर मेरित्सबर्ग से ६० किमी० दूर हाविक्स पश्चिम मे बन रही है। बडा सुन्दर भवन तैयार हो रहा है। अक्तूबर मे उसका उद्घाटन है। दूसरी आर्यसमाज डरबन से २५ किमी० दूर दूरचेरी रोड डरबन मे बन रही है। विशाल भवन यज्ञशाला पुरोहित का निवास रसोईघर एव हिन्दी कक्षाओ को चलाने के लिए कमरे आदि। उसे देखकर बडी प्रसन्नता हुई। उन्होने अग्रेजी बोलने वाले पुरोहित की भी माग की। इस प्रकार दक्षिण अफ्रीका मे आर्यसमाज विकास के पथ पर अग्रसर है।

१२ जून को हमारा विदाई समारोह आयोजित किया गया। समारोह ए०बी०एच० के हाल मे था। द० अफ्रीका के आर्य दूर–दूर से आए थे। कुछ हिन्दू सगठनो के व्यक्ति भी थे। डॉ० राम विलास डॉ० रामभरोस जी आदि ने अपने–अपने विचार व्यक्त किए। ए०बी०एच० मे रहने वाले अफ्रिकन बच्चो ने नृत्य द्वारा स्वागत गान अपनी भाषा मे गाया। श्री राजेश लक्ष्मण ने समारोह का सयोजन किया। आर्य युवक सभा के प्रधान श्री प्रेम पोलटन जी ने मेरी यात्रा पर अपने विचार व्यक्त किए। लगभग २०० विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे। मैंने अपनी

गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन के विशेष कार्यकर्ता दिल्ली में सम्मानित

आर्यसमाज की संगठनात्मक सुदृढ़ता के कारण सफल हुआ हरिद्वार महासम्मेलन

गुरुकुल शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के आयोजन को सफल करने मे सहयोग करने वाले समस्त आर्य नेताओ और कार्यकर्ताओ को सम्मानित करने की श्रृखला में एक सम्मान समारोह सार्वदेशिक सभा कार्यालय के सभागार मे आयोजित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने की तथा सचालन दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने किया। इस अवसर पर सभा के उपप्रधान आचार्य यशपाल जी भी उपस्थिति थे।

को प्रेरणा प्राप्त होती है कि सामूहिक और सगठनात्मक कार्यक्रम मे हर व्यक्ति को अपने सहयोग की अधिकाधिक आहुति देनी चाहिए।

उन्होने कहा कि आर्यसमाज के सामने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बताए गए महान लक्ष्य हैं स्वदेश और स्वधर्म के सरक्षण और पोषण के लिए हमे अपने प्रत्येक कार्य की योजना बनानी चाहिए। व्यापक प्रचार के इस युग मे हर प्रकार के आधुनिक सचार माध्यमों का प्रयोग करके हमे सदैव आर्यसमाज की सेवा मे लगे रहना चाहिए।

इन्द्रदेव चमनलाल महेन्द्र, जोगेन्द्र खटटर ओ०पी० भटनागर एस०के० भटनागर श्रीमती भटनागर श्रीमती कृष्णा शर्मा डा० माहेश्वरी कृष्ण कुमार ढींगरा आजाद सिह एव आर्यवीर दल के श्री वीरेन्द्र आर्य मनोज आर्य अश्विनी आर्य विजय चतुर्वेदी हरिओम आर्य बृहस्पति आर्य नरेन्द्र आर्य सजय आर्य कमल आर्य आदि।

इसी समारोह मे सियाचिन ग्लेशियर की यात्रा से वापस लौटे साहसी दल के कार्यकर्ताओ को भी सम्मानित किया गया। यह कार्यकर्ता १० दिन की यात्रा पर श्री विनय



गुरुकुल कागडी हरिद्वार के सहयोगी आर्य नेताओ और कार्यकर्ताओ के सम्मान समारोह पर लिए गए चित्र बाए से वैद्य इन्द्रदेव जी को सम्मानित करते हुए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन आचार्य यशपाल जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा समारोह मे आशीर्वाद देते हुए आर्य तपस्वी सुखदेव श्री सोमदत्त महाजन। ग्लेशियर साहसी दल से वापिस लौटे आर्यवीर दल के सचालक श्री विनय आर्य सम्मान सामग्री प्राप्त करते हुए।

श्री विमल वधावन ने कहा कि किसी भी काय के सफल हाने का श्रेय किसी एक व्यक्ति या कुछ गिने चुने व्यक्तियो को नहीं जाता बल्कि इसके पीछे आर्यसमाज रूपी व्यापक सगठन के हर उस सदस्य का भाग होता है जिसने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप मे किसी भी प्रकार से स्वय सहयाग दिया हा या दूर बैठकर सफल आयोजन की कामना की हो। प्रत्यक्ष रूप मे कार्य करने वाले कार्यकर्ताओ को सम्मानित करने के पीछे एक तरफ उनके सहयोग की प्रशसा का उद्देश्य होता है तो दूसरी ओर अन्य महानुभावो

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने गुरुकुल शताब्दी महासम्मेलन मे सहयोग देने वाले आर्य पुरुषों के विशिष्ट कार्यों का उल्लेख करते हुए बारी बारी से सबको सम्मान स्वीकार करने के लिए आमन्त्रित किया। इसी श्रृखला म निम्न महानुभावों को सम्मानित किया गया।

सर्व श्री सोमदत्त महाजन पतराम त्यागी विनय आर्य राजीव भाटिया सत्येन्द्र मिश्र रोशनलाल गुप्त प्राणनाथ धई सुरेन्द्र रैली शान्ति लाल आर्य महा० रामविलास खुराना बलदेव राज राजेन्द्र दुर्गा राजेन्द्र लाम्बा वैद्य

आय के नतृत्व मे गए थे। इस साहसी दल मे निम्न युवक शामिल थे सर्वश्री अश्विनी आर्य वृहस्पति आर्य मनोज आर्य कमल आर्य विवेक गुप्ता प्रेम भाटिया शैलेन्द्र आर्य आदि।

आर्य तपस्वी श्री सुखदेव तथा आचार्य यशपाल जी ने भी सम्मानित होने वाले महानुभावो को शुभकामनाए दीं। अन्त मे दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

दक्षिण अफ्रीका और आर्यसमाज

यात्रा के सुखद क्षणो का वर्णन किया। ए०बी०एच० जैसी समाज कल्याण करने वाली सस्था का अनुसरण सारे विश्व को करना चाहिए ऐसे विचार व्यक्त किए। मेरी यात्रा से सभी अत्यन्त प्रसन्न थे। तत्पश्चात भोज हुआ और द्वार पर खडे होकर सभी से नमस्ते कर व गले मिलकर मैंने विदा ली। कईयो की आखो मे नमी देखकर मेरा भी दिल भर आया।

१४ जून को प्रात के विमान से मुझे मारिशस के लिए रवाना होना था। १३ तारीख को प्रात श्री मून राम लखन जी का स्टेनगर शहर से जो ८० किलोमीटर दूर था टेलिफोन आया कि आज साय यहा पर कार्यक्रम रखा है जिसमें कैप्टन आर्य को अवश्य आना है। कार्यक्रम साय ६ बजे से प्रारम्भ था पर उनका आग्रह था कि दो घटे पूर्व उनके निवास पर आए। हमारे पहुचने पर उन्होंने हृदय से स्वागत किया। वहा जाकर पता चला कि श्रीमून रामलखन मेरे निवास मुम्बई मे ४ दिन रहे। उन्होंने मेरी पत्नी का अपनी बेटी की तरह स्वागत किया और कहा तुम आज अपने पिता के घर आई हो उसे विदा मे ५०० रेन्ड दिए। बढिया भोजन कराया। श्री रामभरोस जी के वे परममित्र थे कहने लगे कि यह तो देवता पुरुष है इनसे मुझ जैसा साधारण व्यक्ति क्या बात करेगा।

अपनी यात्रा के दौरान हम अनेक परिवारो मे गए। जिनमे विशेष उल्लेखनीय है— पण्डिता नानक चन्द श्रीमती पण्डिता आनन्दी देवी श्री रेशमा (पुत्री श्री रामभरोस जी) श्री राम जी पोलटन डॉ० रामविलास पण्डित बेहादर श्रीमान रामलखन जी श्री मन सुखैये श्री घतनदीन श्री शिवगुलाम पण्डित आत्मदेव जी श्री महेन्द्र दयाल (प्रवासी जी के पौत्र) पण्डित एन० रामनूथ प० बेचान श्री लक्ष्मण गनपत (प्रसिद्ध सगीतकार) श्रीमती सुधा रामनुथन श्री भूषण डा० सी० मोहन श्री राम बटोही प० तुलसी राम महाजन।

हमारे निवास के दौरान जहा आदरणीय राम भरोस जी व श्री राजेश लक्ष्मण ने हमारा पूरा ध्यान रखा वहा ए०बी०एच० के स्टाफ श्रीमती नायक श्रीमती नायडू, श्रीमती सरीना कुमारी सुहाना श्रीमती टाईनी श्रीमती सायरा श्रीमती नमसी श्रीमती फौजिया आदि ने भी हमारा ध्यान रखनेमे कोई कसर बाकी नही रखी। मैं सभी का हृदय से आभारी हू।

सायकाल आर्य समाज मे कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। उनका आग्रह था यज्ञ मै कराऊ। मैंने यज्ञ कराया भजन हुए मेरा भाषण हुआ और अन्त में भोज। वहा से रवाना होकर रात्रि को १० बजे हम घर पहुचे प्रात ८ बजे हमें विमान स्थल पर पहुचना था।

१४ जून की प्रात काल हम प्रात १० बजे एयर मारिशस के विमान से रवाना हो गए। डरबन एयरपोर्ट पर आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी आर्ययुवक सघ के प्रधान श्री पोलटन जी डा० रामभरोस जी श्री राजेश लक्ष्मण श्री सुखैय जी आदि के अतिरिक्त श्री हरिसिह जी सगीतकार अपनी धर्मपत्नी के साथ उपस्थित थे। उन्होने बडी भावभीनी विदाई दी। कुछ की आखो मे प्रसन्नता और विदा के आसू थे और अपने जीवन के सुखद क्षणो की स्मृति लेकर वहा से चल दिए।

शाम को लगभग ७ ३० बजे हम मारिशस पहुच गए। भारत के लिए हमारा विमान अगले दिन प्रात १० बजे दिल्ली के लिए रवाना होना था। विमानतल पर आर्य सभा मारिशस के मन्त्री डॉ० उदयनारायण गगू, प्रधान डा० न्योर श्री मगरु जी आदि अनेक आर्यजन उपस्थित थे हमे डा० मगरु अपने ब्लूय बीच बगले पर ले गए। वहा आने व्यक्ति मिलने के लिए बैठे थे। रात के १२ बजे तक आर्यसमाज पर चर्चा चलती रही। भोजन करके हम आराम करने चले गए। प्रात काल पता चला कि विमान की उडान ८ घटा विलम्ब से है श्वेता व सुनीता मारिशस घूमने चले गए। मैं आर्यसभा के कार्यालय। वहा एक मीटिग थी। २४ जून को शराब बन्दी आन्दोलन की। उपस्थित लोगो मे जोश और उत्साह था। इस नए आन्दोलन को प्रारम्भ करने हेतु मीटिग के दौरान उपस्थित आर्यजनो ने अपने अपने क्षेत्रो से लगभग ५०० कारे लाने का आश्वासन दिया ताकि उस दिन एक बडी रैली निकाली जा सके।

मध्याह्न आर्यसभा मारिशस की अन्तरग सभा की बैठक थी। मुझे उद्बोधन करने का अवसर मिला। मैंने सगठन को मजबूत बनाने की अपील की।

रात्रि ८ बजे हम मारिशस से रवाना होकर प्रात २ बजे १६ जून को इन्दिरा गाधी हवाई अड्डे दिल्ली पहुचे। बाहर आते ही वैदिक धर्म की जय आर्यसमाज अमर रहे के नारो से विमान स्थल गूजने लगा। आर्यसमाज जनकपुरी के प्रधान श्री सोमदत्त महाजन के नेतृत्व मे अनेक आर्यजन ओ३म का झण्डा भगवा टोपी व पगडी पहने हमारे आगमन पर स्वागत के लिए मौजूद थे। साथ थे हमारे वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन और मेरी पत्नी सुनीता के भाई। उसी दिन रविवार को प्रात १० बजे आर्य युवक दल व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से राजौरी गार्डन आर्यसमाज मे स्वागत समारोह था। मैं आर्ययुवक सभा के मन्त्री जो सभा के सयोजक थे व श्री जगदीश आर्य (कोषाध्यक्ष) श्री वेदव्रत शर्मा (मन्त्री) वैद्य हरिदत्त जी प्रि० चन्द्रदेव जी व उन सभी आर्यसमाजों के प्रधान मन्त्री व प्रतिनिधि उपस्थित थे का आभारी हू।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 25 26/07/2002 दिनाक २२ जुलाई से २८ जुलाई २००२ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2002

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 25 26/07/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

आर्यसमाज, बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली मे

धर्मवीर पं० लेखराम पुस्तकालय का उद्घाटन

नई दिल्ली १४ जुलाई आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी नई दिल्ली मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री वैद्य इन्द्रदेव जी तथा सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री विद्यासागर नागिया जी ने दीप प्रज्ज्वलित करके धर्मवीर प० लेखराम पुस्तकालय का उद्घाटन किया।

उद्घाटन से पूर्व आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे राष्ट्रकल्याण का आयोजन किया गया जिसमे माता श्रीमती ज्ञानदेवी गुप्ता के परिवार के सदस्यो ने यजमान बनकर घृत सामग्री की आहुतिया प्रदान की। श्रीमती स्वर्णकान्ता जी ने २५ हजार रुपये का चैक आर्यसमाज की प्रधाना डॉ० पुष्पलता वर्मा को पुस्तकालय के लिए प्रदान किया। विशाल जनसमूह ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।



आर्यसमाज बाहरी रिंगरोड विकासपुरी नई दिल्ली मे धर्मवीर प० लेखराम पुस्तकालय का उद्घाटन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री श्री वैद्य इन्द्रदेव जी समाज सेवी श्री दर्शनलाल जी एव वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर जी।

अध्यक्षीय उद्बोधन से पूर्व वैद्य श्री इन्द्रदेव जी का पुष्पमाला से स्वागत समाज के सरक्षक श्री चन्द्रभान चौधरी श्री जी०डी० गुलाटी आदि महानुभावो ने किया। अपने उद्बोधन मे वैद्य इन्द्रदेव जी ने विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम स्वाभिमानी बने अभिमानी नहीं। **जीना है तो आर्यसमाज में आ** इस भजन को जब दिल्ली सभा के मत्री ने गाया तब सारी जनता मत्रमुग्ध हो गई। दिल्ली सभा के मत्री श्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने आर्यसमाज बाहरी रिग रोड विकासपुरी के आर्य सामाजिक गतिविधियो तथा रचनात्मक कार्यक्रमो एव विशाल जनसमूह की श्रद्धा को ... कि इस कार्यक्रम को देखकर ... है।

आचार्य चन्द्रशेखर जी ने सभा को स... त करते हुए कहा कि खाया हुआ अपना नहीं होता अपितु पचाया हुआ अपना होता है। इसी प्रकार कमाया हुआ धन अपना नहीं होता अपितु परोपकार मे लगाया हुआ धन अपना होता है।

आर्यसमाज की प्रधाना डॉ० पुष्पलता वर्मा जी ने समस्त अतिथियो को स्मृतिचिन्ह एव वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया। पडित लेखराम जी का आदेश है कि आर्यसमाज मे लेखनी एव वाणी का काम बन्द नहीं होना चाहिए। श्री विद्यासागर नागिया परिवार के सहयोग से प्रकाशित तथा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी द्वारा सम्पादित 'वैदिक सध्या' नामक पुस्तक का लोकार्पण श्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने किया। श्री नरेद्र आर्य जी के सुमधुर भजन हुए।

इस अवसर पर विशेष रूप से श्री अश्विनी कुमार नागिया श्री यशपाल आर्य (प्रदेशमत्री भाजपा) श्री कुलभूषण कपूर (नेशनल बुक ट्रस्ट) श्री चेतन दास श्रीमती स्वर्णकान्ता श्री दर्शनलाल श्रीमती सुदर्शन गुप्ता श्री के०के० गुप्ता डॉ० सतोष गुप्ता तथा अनेक समाजो एव सस्थाओ के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

समाज मत्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा कोषाध्यक्ष श्री ललित कुमार चौधरी ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अन्त मे पुस्तक वितरण एव जलपान की व्यवस्था की गई।

— पुष्पलता वर्मा प्रधाना

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली—११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

स्वतन्त्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५, अक ३४ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १२ अगस्त से १८ अगस्त २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

यज्ञ मनुष्य को आध्यात्मिक और भौतिक कष्टों से छुटकारा दिलाने में सक्षम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे सात दिवसीय वृहद वृष्टि यज्ञ की पूर्णाहुति ४ अगस्त (रविवार) को आर्यसमाज मिण्टो रोड के प्रागण म सम्पन्न हुई। सात दिन तक चले इस यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी तथा उनके सहायक के रूप में आर्य तपस्वी सुखदेव तथा आचार्य भद्रकाम वर्णी ने यज्ञ के प्रबन्धन तथा सचालन में हर प्रकार का सहयोग दिया। गुरुकुल गौतमनगर के ६ ब्रह्मचारी विशेष रूप से मन्त्र पाठ के लिए आमत्रित थे।

पूर्णाहुति के पश्चात प्रवचन सभा का सचालन करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि वर्तमान युग मे सारा ससार पेट्रोलियम पदार्थो का ईंधन के रूप मे भारी मात्रा मे प्रयोग कर रहा है। स्कूटर से लेकर हवाई जहाज और राकेट तक तथा छोटे से बल्ब से लेकर बडी बडी मशीनो तक जिस मात्रा मे पेट्रोलियम ईंधन तथा बिजली का प्रयोग हो रहा है उससे पर्यावरण का सतुलन पूरी तरह से बिगड चुका है।

प्राचीन काल मे जब यह सब आधुनिक साधन नहीं थे उस समय के व्यक्ति यज्ञ किया करते थे और वे यज्ञ प्रभावशाली होते थे परन्तु आज के मनुष्य को यज्ञ की वैज्ञानिकता का ज्ञान ही नहीं है। आज के युग मे दैनिक यज्ञ करने वाले लोग उगलियो पर गिने जाने योग्य है।

श्री विमल वधावन ने उपस्थित जन समुदाय को प्रतिदिन यज्ञ करने का सकल्प लेने के लिए प्रेरित किया।

यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्द जी ने सम की उपासना पर बल देते हुए कहा कि श्रेष्ठ समाज के निर्माण का केवल यही एकमात्र उपाय ह कि प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ के द्वारा अपना भी उत्थान करे और समाज की रक्षा भी करे। उन्होने आर्यजनता को १६ कलाओ से परिपूर्ण होने का आशीर्वाद देते हुए कहा कि शरीर की इद्रियो को पवित्र रखना ही इसका एकमात्र मार्ग है।

- शेष पृष्ठ ५ पर



वृष्टि यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद सभा का संचालन करते हुए श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन महाशय श्री भद्रकाम वर्णी श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री आर्य तपस्वी सुखदेव स्वामी दीक्षानन्द जी तथा मन्त्रमुग्ध होकर सुनते श्रोतागण।



वृष्टि यज्ञ मे यजमान बनकर आहुतिया अर्पित करते हुए आर्यजन।

पराधीन भारत में स्वराज्य, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय गरिमा के सूत्रधार

स्वामी दयानन्द

– नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

इस बात मे सन्देह नहीं कि सन १८५७ की प्रथम स्वातन्त्र्य क्रान्ति के माध्यम से देश की स्वाधीनता के लिए जो सघर्ष हुआ था स्वामी दयानन्द सरस्वती उससे अछूते नहीं थे। अपने व्यापक भारत भ्रमण मे दिल्ली मेरठ होते हुए आबू पूर्वत से १८५४–१८५५ के देश भ्रमण के दौरान उन्होने मातृभूमि की दुर्दशा देखी थी फलत वह स्वदेश की उन्नति और मानव समाज के कल्याण के लिए प्रवृत्त हुए। १६६० म उन्हे स्वाधीनता सग्राम के कृतकार्य न होने से अनुभूति हई जब तक जन जन मे व्याप्त अन्धविश्वास कुरीतिया सामाजिक विषमता धार्मिक पाखण्ड खत्म न होगा देश स्वाधीन न हो सकेगा। १४ नवम्बर १८६० के दिन मथुरा मे गुरु विरजानन्द के पास स्वामीजी पहुचे। तीन वर्षों तक निरन्तर विद्याध्ययन किया। गुरु दक्षिणा के रूप मे विरजानन्द जी ने अपने योग्य शिष्य से दक्षिणा मागी – **'देश का उपकार करो, सत्य शास्त्रों का उद्धार करो, मत मतान्तरों की अविद्या का अन्त कर वैदिक धर्म का प्रचार करो।''**

स्वामी दयानन्द ने अप्रैल १८६३ मे गुरु विरजानन्द के आश्रम से विदा होकर अपना शेष जीवन विश्व और मानव समाज के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। तीन वर्ष तक स्वामीजी ग्वालियर करौली जयपुर पुष्कर और अजमेर के क्षेत्रो मे धर्म प्रचार और समाज सुधार कार्य करते रहे। १८६७ मे हरिद्वार के कुम्भ मेले मे पहुचकर पाखण्ड खण्डिनी पताका की स्थापना के साथ नवजागरण और सुधार के क्रान्तिकारी कार्यक्रम का प्रारम्भ किया। उस मेले मे भारत के सभी प्रदेशो के लाखो नर नारी आए हुए थे। हरिद्वार के सप्त सरोवर मे पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर अपने प्रचार कार्य का शुभारम्भ किया। पाच छह वर्षों तक उनका कार्यक्षेत्र उत्तर प्रदेश का गगा तटवर्ती प्रदेश रहा।

१६ दिसम्बर १८८२ को स्वामीजी कलकत्ता पहुचे वहा श्री केशवचन्द्र से सम्पर्क के फलस्वरूप स्वामीजी के रहन सहन शास्त्र चर्चा मे अन्तर आए। उस समय तो स्वामी केवल कौपीन लगोट पहनते थे श्री सेन का परामर्श स्वीकार कर उन्हाने वस्त्र पहनने प्रारम्भ किए। इसी के साथ स्वामीजी ने व्याख्यानों और शास्त्रचर्चा के लिए हिन्दी को अपनाया। बगबन्धु की यह सलाह व्यावहारिक थी कि सस्कृत की तुलना मे हिन्दी व्यावहारिक है और देश के सभी भागो मे वह बोधगम्य है। बगाल से विदा लेकर स्वामी जी मुम्बई पहुचे। ६ अप्रैल १८७५ को स्वामीजी ने मुम्बई मे आर्यसमाज की स्थापना की। उन्ही दिनो उनके अमर ग्रन्थ **'सत्यार्थ प्रकाश'** का प्रकाशन हुआ। आयसमाज का लक्ष्य वैदिक धर्म द्वारा ससार मे व्याप्त अशान्ति अविद्या दुराचार का उन्मूलन करना था। वह मानव मात्र को वैदिक भारतीय धर्म सस्कृति मे दीक्षित करना चाहते थे।

१८७५ मे सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से उन्होने घोषणा की थी – **'माता पिता के तुल्य विदेशी राज्य अच्छा होने के बावजूद पूर्ण सुखदायक नहीं है।'** इसी ग्रन्थ द्वारा उन्होने अपने देश मे अपने राज का उदघोष किया था। थियोसोफिकल सोसायटी की मैडम ब्लेवटस्की ने घोषणा की थी – **''महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम नारा लगाया था भारत भारतीयों का है।'** बगाल के पत्रकार रामानन्द चटर्जी ने स्वीकार किया था – **'पिछली शती में महर्षि ही थे जो भारत को राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक रूप से एक सूत्र में बाधने के लिए प्रयत्नशील थे।''**

इस तथ्य मे कोई सन्देह नही कि १८५७ की क्रान्ति के बाद आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम स्वराज्य स्वदेशी स्वभाषा राष्ट्रीय गरिमा की प्रतिष्ठा के लिए अपना तन मन सर्वस्व अर्पित कर दिया था। आर्यभाषा हिन्दी के प्रचार के लिए सबसे पहले यदि किसी ने प्रयत्न किया तो वह स्वामी दयानन्द जी थे। गुजरात मे उत्पन्न होकर देश देशान्तरो मे आर्यसमाज स्थापित करने के बाद भी उन्होने आर्य भाषा अपनाई। मुम्बई मे आर्यसमाज का सगठन करते हुए उन्होने प्रारम्भिक २८ नियमो के पाचवे नियम मे सस्कृत और आर्यभाषा का पुस्तकालय स्थापित करना और आर्यभाषा मे आर्यप्रकाश पत्र निकालना समाज के लिए आवश्यक कर दिया। लाहौर के सगठन सस्कार में एक उपनियम द्वारा आर्यभाषा सीखना आर्यसमाजियो के लिए अत्यावश्यक कर दिया। इन सभी प्रमाणो क आधार पर दृढता से कहा जा सकता है कि आर्यभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा का रूप देने वाले प्रथम व्यक्ति महर्षि दयानन्द थे।

महर्षि ने जहा धर्म मे फैले पाखण्ड कुरीतियो अस्पृश्यता का उन्मूलन कर अविद्या अज्ञान अभावो को दूर कर वैदिक सस्कृति भारतीय परम्पराओ और नैतिक मानदण्डो की प्रतिष्ठा की वहा उन्होने कभी अग्रेज शासको की ठकुर सुहाती नहीं थी। एक बार पौराणिको की लीला की चर्चा करने के बाद उन्होने किरानियो ईसाई मत की चर्चा की फलत पुराणो की आलोचना पर हसने वाले अग्रेज सरकारी अधिकारी क्रुद्ध होकर चले गए। अधिकारियो ने एक स्थानीय रईस से कहलाया – **'पण्डित महाशय से कह दें कि अधिक कठोर खण्डन से काम न लें।''**

उन रईस ने घुमा फिराकर कमिशनर की शिकायत पहुचाई। **''महाराज यदि नर्मी से काम लिया जाए तो बहुत अच्छा है।''** सब सुनकर स्वामीजी हस पड – और कहा – इतनी सी बात पर आप गिडगिडा रहे हैं इसी के लिए इतना समय नष्ट किया। कमिश्नर महाशय ने यही कहा हे – आपका पण्डित बडा खण्डन करता है उसके व्याख्यान बन्द हो जाएगे।

अगले दिन रोज आने वाले सभी यूरोपीयन उपस्थित थे। महाराज ने आत्मा के गुणो का वर्णन करने के बाद गम्भीर गर्जना से कहा – लोग कहते है – सत्य का प्रकाशन न करो क्लेक्टर क्रुद्ध हो जाएगा कमिशनर खुश नहीं रहेगा गवर्नर पीडा देगा अजी चाहे चक्रवती राजा भी अप्रसन्न क्यो न हो हम तो सत्य ही कहेंगे।

काच के विष से अन्तिम क्षणों तक उनके शरीर की वेदना बनी रही। महर्षि के होनहार भक्त कोने मे बैठे थे। अग्रणित छालो की वेदना के बावजूद महर्षि शान्त रहे। उस समय महर्षि वेद मन्त्र गा रहे थे। अपने आत्मिक बल से वह शान्त बैठे थे। मृत्यु की मरणान्तक पीडा मे भी महर्षि के तेजस्वी मुखमण्डल और ओजस्वी मन्त्र पाठ ने गुरुदत्त जी जैसे धुरन्धर नास्तिक को आस्तिक बना दिया।

'हे दयामय हे सर्वशक्तिमान ईश्वर तेरी यही इच्छा है परमात्म देव आपकी इच्छा पूरी हो अहा मेरे परमेश्वर तूने अच्छी लीला की शब्दो से उन्होने भौतिक काया छोड दी।

ऋषि पर्वो पर ऋषि के पावन जीवन की झाकी और भारत राष्ट्र को स्वराज्य स्वभाषा राष्ट्रीय गौरव का सन्देश देकर गुरु विरजानन्द की सच्ची गुरु दक्षिणा देने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रति सच्ची भावपूर्ण श्रद्धाजलि यही हो सकती है कि हम उनके तेजस्वी जीवन और उनके सन्देश निष्ठा से अनुसरण करे।

बोध कथा

बड़े अपना बड़प्पन न त्यागें !

कासगज पाठशाला का प्रबन्ध पूरा होने पर स्वामी दयानन्द जी रामघाट होते हुए चार मार्गशीर्ष १६२० विक्रमी को छलेसर पधारे तब मुकुन्द सिह के एक उद्यान मे स्वामीजी के ठहरने की व्यवस्था की। स्वामीजी जहा विद्यार्थियो को पढाते थे समागत जनता को उपदेश देते थे वहा अपने भक्तो के परिवारो कै सुधार का भी यत्न करते थे। उनके भक्त मुकुन्द सिह जी अपने पुत्र चन्दन सिह से रूष्ट रहते थे। जब श्री स्वामीजी को इस बात का पता लगा तब उन्होने मुकुन्द सिह जी से कहा – 'पिता को अपनी सन्तान के प्रति विशेष कोमल होना चाहिए। छोटे यदि छोटापन करे तो बडो को भी अपना बड़प्पन त्याग देना उचित नहीं। सन्तान के साथ वैमनस्य रखना सासारिक सुख को किरकिरा कर देता है – फीका बना देता है। परस्पर की खींचातानी से अन्त मैं स्नेह सूत्र छीन जाया करता है आपको उचित है कि अपने पुत्र के लिए वात्सल्य भाव प्रकाशित करे।

इस प्रकार प्रेरणा देकर महर्षि दयानन्द ने चन्दनसिह को मुकुन्दसिह की गोद मे बिठा दिया और बिछडे पिता पुत्र का मनमुटाव मिटा कर मेल करा दिया।

– नरेन्द्र

मातृभूमि मंगलमयी हो : हमारे संकल्प समान हो।

स्वस्ति भूमे नो भव।

मातृभूमि हमारे लिए मगलमयी हो।

समानी व आकूति। ऋ० १०–१५१–४

हमारे सकल्प समान हों।

श्रेष्ठा भूयस्थ। अथर्व १८–४–८६

श्रेष्ठ बनो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

सभी सुखी हों : प्रत्येक दृष्टि से समुन्नत हों

भारतीय सस्कृति सभी की समुन्नति और सर्वांगीण अभ्युदय में विश्वास करती है। **सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया** – सभी सुखी हों सभी सब आशकाओ से शून्य हो।

वैदिक सस्कृति का आह्वान है कि एक मानव दूसरे मानव के साथ प्रीतिपूर्वक रहेगा सभी मैत्रीभाव रखेंगे – वहा सत्परामर्श है –

सहृदय सामनस्यमविद्वेष कृणोमि व।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्स जातमिवाघ्न्यामभि।

सहृदयता एकमनस्कता द्वेषहीनता के गुण अपनाकर सब एक दूसरे के साथ प्रीतिपूर्वक रहें। इतिहास साक्षी है कि शताब्दियो तक भारतीय प्रशासन जन-जन के सुख और सबकी सर्वांगीण समुन्नति और अभ्युदय के लिए सलग्न रहा फलत यहा रामराज्य सरीखे श्रेष्ठ सुशासन की प्रतिष्ठा हो सकी। यह भी ऐतिहासिक तथ्य है इसी भारत जब आपसी फूट और भेदभाव पनपे तो यहा विदेशी तत्वों ने आकर भारत को पराधीन बना दिया। अनेक महापुरुषों के नेतृत्व में जब देश की जनता सगठित और सयुक्त होकर सघर्ष मे जुटी तो आधी शताब्दी पूर्व देश स्वाधीन हो गया। स्वाधीनता के वर्षो मे भारत ने अनेक क्षेत्रो मे समुन्नति की और आर्थिक वैज्ञानिक दृष्टियो से श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त की। अनेक क्षेत्रो मे व्यवस्थित प्रगति के बावजूद भारत अभी पूर्णतया सुखी समुन्नत और अग्रणी राष्ट्र नहीं बन सका है। यही कारण है कि देश को सूखे अतिवृष्टि महामारी प्राकृतिक एव मानवीय विभीषिकाओ से जूझना पडता है। राजनीतिक स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे राष्ट्र के नीति निर्धारकों और सूत्र सचालकों को ऐसी समीक्षा करनी चाहिए राजनीतिक स्वाधीनता की आधी शताब्दी बीतने पर क्या कारण है कि कोटि-कोटि जनता अभी भी अभावो कष्टो और अपूर्णताओ से जूझ रही है। ऐसी दुरवस्था मे सबके सुखी और समुन्नत होने का लक्ष्य कैसे पूर्ण हो सकता है। यह भी चिन्तन और आत्म-निरीक्षण का अवसर है जब हम यह आत्म-निरीक्षण और परीक्षा करे कोटि-कोटि भारतीय जनता एव उत्तर मे हिमालय से लेकर दक्षिण मे समुद्र तक तथा पश्चिमी मे समुद्र से लेकर समुद्र तक फैले इस महान् राष्ट्र मे ऐसी कौन-सी न्यूनता अथवा अवरोध आ गया है कि विश्व की प्रगति इतिहास और समुन्नति में वैसी उत्कृष्ट और अग्रणी भूमिका प्रस्तुत नहीं की है जैसी कि इतिहास में उसने अनेक बार प्रस्तुत की है।

वैसे भारतीय राष्ट्र के सूत्र सचालकों और चिन्तको को मिल बैठकर देश की वर्तमान स्थिति का सच्चा मूल्याकन कर भारत राष्ट्र के ऊचे लक्ष्यो एव भावी आदर्शों का व्यवस्थित आकलन कर उन्हे कार्यान्वित करने की व्यवस्थित योजना और कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहिए। इक्कीसवीं शताब्दी एव नई सहस्राब्दी मे भारत राष्ट्र का सास्कृतिक राजनीतिक लक्ष्य हो उदात्त मानवता का सन्देश देने वाली भारतीय सस्कृति और जीवन दर्शन के ऊचे सिद्धान्तों और लक्ष्यो का व्यवस्थित मूल्याकन होना चाहिए। राष्ट्र के नीति निर्धारक एव विचारक न केवल भारत को राजनीतिक सास्कृतिक, वैज्ञानिक आर्थिक तथा प्रत्येक दृष्टि से समुन्नत करे देश की कोटि-कोटि जनता प्रत्येक दृष्टि से सुखी सम्पन्न एव समुन्नत हो। भारत राष्ट्र के सूत्र सचालको से कोटि-कोटि जनता के अभाव अपूर्णता को नष्टकर उन्हे प्रत्येक दृष्टि से सुखी समुन्नत और यशस्वी बनाने के साथ विश्व मे भारत राष्ट्र को आर्थिक वैज्ञानिक सैनिक एव प्रत्येक क्षेत्र मे अग्रणी और यशस्वी बनाने के लिए व्यवस्थित योजनाए बनाकर उन्हे कार्यान्वित करना होगा। यह भी उल्लेखनीय है कि भारतीय सस्कृति एव चिन्तन जहा कोटि-कोटि भारतीय जनता के अभावो कष्टो अपूर्णताओ का अन्त कर जन-जन को सुखी समुन्नत करना चाहता है वहा भारतीय चिन्तको ऋषियो मनस्वियो की दृष्टि से मानव सभ्यता को सुखी यशस्वी एव प्रत्येक दृष्टि से समुन्नत करना चाहता है।

मानव सस्कृति और विश्व के इतिहास मे भारत के चिन्तन और दृष्टि की अग्रणी भूमिका रही है। भारत राष्ट्र के सूत्र सचालकों चिन्तकों और मनीषियो को यह व्यवस्थित अध्ययन करना होगा कि मानवीय सस्कृति और इतिहास मे भारत के ऋषि मनीषी चिन्तक और विचारक भारतीय सस्कृति सभ्यता चिन्तन का क्या अमर सन्देश दे सकते हैं। भारतीय सस्कृति सभ्यता राम कृष्ण नानक गाधी वाल्मीकि तुलसी मीरा आदि भारतीय सस्कृति के सन्देशवाहक आज भी मानवीय सभ्यता-सस्कृति को बहुत कुछ दे सकते हैं। इस सहस्राब्दी मे आज व्यवस्थित प्रयत्न होना चाहिए कि एक भारतीय ऋषियो चिन्तको सन्तो ने मानव सभ्यता को क्या अमर सन्देश दिया था और उसे किस प्रकार भारत और विश्व मे पुन व्यवस्थित रूप से प्रचारित–प्रसारित किया जा सकता है। ये दोनो ही कार्य सरल नहीं हैं अनेक विद्वान् सगठित होकर भारतीय सन्तो विचारको ऋषियो का अमर सन्देश लेखनी द्वारा व्यवस्थित कर सकते हैं। यह सन्देश जब व्यवस्थित रूप मे लेखबद्ध हो जाए तो उसे शासन चिन्तक और कर्मठ जनसेवक के माध्यम से उसे जीवन व प्रत्येक क्षेत्र मे कार्यान्वित किया जा सकेगा। यह कार्य सरल नहीं है उसे भारत के चिन्तको कर्मठ जनसेवकों और उत्तरदायी राज्यो और केन्द्र के शासन द्वारा कार्यान्वित किया जाना चाहिए।

चिट्ठी-पत्री

सुखे से सीखें

देश का जन-गण सूखे के आगामी प्रभावों की कल्पना से ही भयभीत है। केवल मौसम वैज्ञानिकों को ही कोसना इसकी विकरालता के कारणों से मुह चुराने जैसा है। वास्तव में हम सभी इस त्रासदी के जिम्मेदार हैं। हमने न कोई तालाब-बावड़ी छोडी है और न ही जल सचय का उपाय सोचा। पेड़-पौधे तो कागजो में लगाते रहे पर कटाई सचमुच होती रही। जब पर्यावरण की रक्षा का ही हमें ध्यान न रह तो प्रकृति भी इसी प्रकार से चेतावनी देती है। अब भी अगर हम नहीं चेते तो बहुत देर हो चुकी होगी हमारी उपस्थिति धूल में खो चुकी होगी। तब प्रकृति के दर्द का अहसास होगा पर वह भी दर्द का उपचार न कर पाएगी। हमें, हमारे धार्मिक आध्यात्मिक गुरुओ व महापुरुषों को इस पर्यावरण की रक्षा का भगीरथ प्रयास करना होगा। दूसरों को भी प्रेरित करे, खुद भी सकल्प लें – **बच्चे कम, पेड़ ज्यादा। पानी की रक्षा, जीवन की संरक्षा।** प्रकृति से जुडना जीवन सुविधा बढना। सरकार भी सभी नदियों को आपस में 'स्वर्णिम चतुर्भुज योजना' की तरह जोडे ताकि सूखे और बाढ का परस्पर सम्बन्ध दोनों समस्याओं का समाधान करे। फौरन गाव-गाव, गली-गली हर खाली बंजर भूमि में गहरे तालाब नाले खुदवाने के लिए गरीबों को काम के बदले अनाज योजना में युद्ध स्तर पर जोडे। यदि यह सूखा हमे कुछ सिखा जाए तो भी बुरा नहीं, अच्छा ही है।

– विनोद बब्बर उत्तम नगर दिल्ली

जो गरजाते हैं, वे बरसते नहीं

कुछ दिनो पहले जम्मू मे कालू चक व नरसहार के बाद पाकिस्तान और उसके समर्थित आतकवादियो को युद्ध की धमकी देने वाली सरकार को आतकवादियो ने जम्मू मे ही कासिमनगर में निर्दोष पुरुषो महिलाओ और बच्चों का एक नरसहार कर बता दिया है कि वे बरसन चाहते हैं और सरकार बरसाती नहीं।

– आश्रित तिलकराज गुप्त, रादौर, यमुनानगर, हरियाणा

शरीर को रथ जानो

आत्मा को रथी जानो शरीर को रथ जानो, बुद्धि को सारथी जानो और मन को लगाम जानो। मनीषी लोग इन्द्रियों को घोड़े कहते है और विषयों को इन घोड़ों के विचरने का मार्ग कहते हैं। शरीर इन्द्रिय और मन संयुक्त जीवात्मा ही भोक्ता है। - कठोपनिषद

अथर्ववेद से - हिरण्योपदेश सप्तकम (१)

हितकर और रमणीय उपदेश

(१) अति भुक्ति सद्य प्राणापहारिणी अति भोजन से आयु क्षीण होती है

आज्यस्य परमेष्ठिन् जातवेदस्तनू वशिन्।
अग्ने तौलस्य प्राशान यातुधानायातनान्विलापय।।
चातन । अग्नि । (जात वेदा) अनुष्टुप्।
अथर्व १–७–२

अर्थ – समाज से दोषो को नष्ट करने की इच्छा वाला 'चातन' ऋषि उच्चपदस्थ जनो को उपदेश करता है कि – हे (जातवेद) तत्वज्ञ विद्वन् ! तथा (परमेष्ठिन्) उच्च पद पर स्थित मानव ! और (तनूवशिन्) शरीर को अपने वश मे रखने की इच्छा वाले साधक ! (अग्ने) यदि तुम आगे बढकर नेतृत्व करना चाहते हो तो (आज्यस्य तौलस्य प्राशान्) दीप्ति और शक्ति देने वाले घृतादि पदार्थों को माप-तौलकर मर्यादा मे खाने वाला बन तथा (यातुधानान् विलापय) समाज पीडक दुष्टजनो को तथा शरीर को कृश करने वाले रोग कृमियो को रुला कर या भूखा मारकर नष्ट कर दे।

निष्कर्ष – (१) समाज सेवियो ज्ञानार्जन करने वालो उच्च पदासीन व्यक्तियो और सयत जीवनयापन की चाह वालो को मर्यादित भोजन करना चाहिए। शक्तिप्रद और दीप्तिकर भोजन को अधिक मात्रा मे नहीं लेना चाहिए। अधिक मात्रा मे लेने से लाभ के बजाय हानि अधिक होती है। (२) किसी भी क्षेत्र मे प्रमुख या नेता बनने वालो को आतकवादियो की उपेक्षा न करके उन्हे दण्डित करके या कराके नष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिए।

(२) ऐवर्श्य कामी मानव ! दोनो इन्द्रियाश्वो को वश मे करके शूरो की तरह सवारी कर

इन्द जुषस्व प्रवहा याहि शूर हरिभ्याम्।
पिबा सुतस्य मतेरिह मधोश्यकानश्चारुर्मदाय।।
अथर्व २–५–१

भृगु राथर्वण । इन्द्र । निचृदुपरिष्टाद् बृहती।

अर्थ – हे (इन्द्र) किसी भी क्षेत्र मे ऐश्वर्य प्राप्त करने के इच्छुक मानव ! तू (आथर्वण भृगु) स्थिरमति गुरु का शिष्य बनकर पहले अपने को परिपक्व बना। तदनन्तर (शूर हरिभ्या याहि) शूरवीरो की तरह अपने ज्ञान और कर्म को इन्द्रियरूपी घोडो पर सवार होकर–उन्हे वश मे करके निर्भय हो। जीवन मे विचरण कर। (मदाय) मस्ती और तृप्ति प्राप्त करने के लिए (मते मधो) बुद्धि और माधुर्य के (चकान) गति और कान्ति प्रदान करने वाले (सुतस्य) उत्पन्न सोम-वीर्य का (पिब) पान कर और उसे मस्तिष्क के सहस्रार चक्र मे सुरक्षित करने का प्रयत्न कर। परिणामत तू (चारु) प्रत्येक क्षेत्र मे गति करने योग्य बन जाएगा। तब तुझे जो कुछ यदृच्छा (अनायास) प्राप्त हो उसका (जुषस्व) सेवन कर और (प्रवह) अपने प्राप्त कर्तव्य कर्म का वहन पालन कर।

निष्कर्ष – किसी भी क्षेत्र में प्रमुख अथवा ऐश्वर्यशाली बनने के लिए मनुष्य को वीर्य रक्षा के साथ अपनी इन्द्रियों के वश मे रखकर यदृच्छा प्राप्त स्थिति में मस्त रहते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।

(३) हे राज प्रमुख ! स्वय दीप्त होकर, राष्ट्र के महान् सौभाग्य के लिए कमर कस ले

स चेध्यस्वाग्ने प्र च वर्धयेममुच्च तिष्ठ महते सौभगाय।
मा ते रिषन्नुपसत्तारो अग्ने ब्रह्माणस्ते यशस सन्तु मान्ये।।
अथर्व २–६–२

– प० मनोहर विद्यालकार

शौनक (सम्पत्काम)। अग्नि । त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (अग्ने) शासन के प्रमुख नेता ! (स इध्यस्व) पहले स्वय दीप्त हो (च) और फिर (महते सौमगाय) राष्ट्र को महान् सौभाग्यशाली बनाने के लिए (उत्तिष्ठ) कमर कस के खडा होगा द्विविधा मे मत रह (च) अपितु (इम प्रवर्धय) अपने प्रजाजन को प्रकृष्ट रूप से सब दिशाओ मे बढा। (ते उपसत्तार मारिषन्) तेरे पडोसी देश किसी तरह पीडित या हिसित न हो। हे (अग्ने) राज्य प्रमुख ऐसा प्रयत्न कर कि (यश स ब्रह्मण ते उप सत्तार सन्तु) यशस्वी तथा अपने विषय के विज्ञ पुरुष ही तेरे समीप स्थित रहे तेरे सलाहकार बने (मा (अन्ये) इनसे इतर चाटुकार या अल्पज्ञ जन तुझे न घेरे रहे।

निष्कर्ष – राष्ट्र की सौभाग्य वृद्धि के लिए राज प्रमुख करे विज्ञजनो को अपना सलाहकार बनाना चाहिए तथा पडोसी देशो के साथ मित्रभाव रखकर उनके कष्टो को दूर करना चाहिए।

(४) हे राजन ! मित्र राष्ट्रों की सहायता से अपने शत्रु को दुनिया की दृष्टि में गिरा दे

क्षत्रेणाग्ने स्वेन स रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधा यतस्व।
सजाताना मध्यमेष्ठा राज्ञामग्ने विहव्यो दीदिहीह।।
अथर्व २–६–४

शौनक सम्पत्काम । अग्नि । चतुष्पदार्षी पङ्क्ति ।

अथ – ह (अग्ने) प्रगतिशील शासन के नेता (इह) इस राष्ट्र मे (दीदिहि) खूब चमक और ख्याति प्राप्त कर। इसके लिए हे अग्ने ! (स्वेन क्षत्रेण स रभस्व) अपने क्षात्र (सैन्य) बल के साथ राष्ट्र रक्षा के लिए सम्यक उद्योग कर अर्थात उग्र से उग्र युद्ध के लिए उद्यत रह तथा हे अग्ने ! (मित्रधा मित्रेण सयतस्व) मित्र राष्ट्रों का धारण करने वाले राजन् ! मित्र राष्ट्रो के साथ मिलकर अपने शत्रुओ को नीचा दिखाने का प्रयत्न कर। इसक साथ ही हे अग्ने ! (सजाताना राज्ञामध्यमेष्ठा विहव्य दीदिहि) अपने साथी राष्ट्रो मे विवाद उत्पन्न होने पर मध्यस्थ रूप मे बुलाए जाने वाले की ख्याति से चमक।

निष्कर्ष – किसी भी राष्ट्र प्रमुख को प्रदीप्त होने के लिए – अपने सैन्य बल को सन्नद्ध अपने मित्र राष्ट्रो के विवादो को सुलझाने की योग्यता रखकर मित्र राष्ट्रो की विपत्ति मे सदा उनका धारण पोषण करते रहना चाहिए।

(५) हे राजन ! आतकवादियों और देश द्रोहियों को समाप्त कर राष्ट्र का धन बढा।

अति निहो अति स्रिधोऽत्यचित्तीरति द्विष ।
विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वमथास्मभ्य सहवीर रयिं दा।।
अथर्व २–६–५

शौनक (सपत्काम) अग्नि । विराट् प्रस्तार पक्ति ।

अर्थ – हे (अग्ने) राष्ट्र प्रमुख राजन। (निह) निष्कारण दूसरों की हिसा या वध करने वालो को (अतितर) समाप्त कर (स्रिघ अतितर) गुप्त सूचनाओ का स्रवण रूपी दुष्कर्म करने वालो को समाप्तकर (अचित्ती द्विष अतितर) अज्ञानियो के अज्ञान को और परस्पर द्वेषियो के अज्ञानजन्य द्वेष को दूर करने का प्रयत्न कर। इस प्रकार हे अग्ने ! (विश्वा दुरिता तर) राष्ट्र के सभी प्रकार के दुराचरणो को दूर कर। इसके अतिरिक्त (त्व अस्मभ्य सहवीर रयि दा) तू राष्ट्र की अस्मिता के प्रेमियो को वीरता और धन दोनो चीजे दे।

निष्कर्ष – राजा का कर्तव्य है कि राष्ट्र के दुरितो और दुष्टो को सुधार या दण्ड द्वारा समाप्त करे तथा राष्ट्र की अस्मिता के रक्षको को वीर तथा ऐश्वर्यशाली बनाए।

अर्थपोषण – निह – निष्कारण नितरा घ्नन्ति–तान्।

(६) हे प्रदीप्त मानव ! अपने से बृहतर जनों से शिक्षा लेकर स्व सदृश स्तर वालो से आगे बढ़

शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि स्वरसि ज्योतिरसि।
आप्नुहि श्रेयासमति सम क्राम।।
अथर्व २–११–५

शुक्र । कृत्या दूषणम्। त्रिपदा परोष्णिक्।

अर्थ – हे पवित्र और प्रदीप्त होने के इच्छुक मानव ! (शुक्र असि) वीर्य रक्षा के द्वारा काम क्रोध लोभादि का शोषण करके तू पवित्र हो गया है और (भ्राज असि) शरीर तथा मन दोनो से प्रदीप्त हो गय है (स्व असि) आदित्य सदृश दूसरो को मार्गदर्शन करने मे समर्थ हो गया है क्योकि (ज्योति असि) ज्ञान की ज्योति से जगमगा रहा है। इतने से सन्तुष्ट होकर आगे बढना मत छोडो (श्रेयास आप्नुहि) अपितु अपने से विद्या आचरण बल या धन मे श्रेष्ठ जनो को प्राप्त कर उनसे शिक्षा ले और (सम अतिक्रम) अपने बराबर वालो का अतिक्रमण (लाघ जा) कर।

निष्कर्ष – निरन्तर प्रगति के लिए – वीर्य रक्षा द्वारा शरीर व मन को प्रदीप्त कर अपने से श्रेष्ठ जनो के पास बैठ उन से कुछ सीख और दूसरो का मार्गदर्शन कर।

(७) हे मानव ! तपस्या द्वारा शरीर को पाषाण सदृश दृढ बनाकर शतशारद बन

एह्यश्मानमातिष्ठाश्मा भवतु ते तनू ।
कृण्वन्तु विश्वेदेवा आयुष्टे शरद शतम्।।
अथर्व २–१३–४

अथर्वा। विश्वेदेवा । अनुष्टुप्।

अर्थ – स्थिरमति गुरु–अपने शिष्य को अपने विद्यालय मे प्रविष्ट करते हुए – पाषाण पर पैर रखवा कर उपदेश देता है कि तुझे तपस्या द्वारा अपना शरीर पाषाण तुल्य बनाना हे ताकि ऋतु परिवर्तन या कोई रोग कृमि तेरे शरीर या मन को रुग्ण न करे।

(एहि) हे शिष्य ! इधर आओ (अश्मान आतिष्ठ) इस पाषाण पर खडा हो और सकल्प कर कि (ते तनू अश्मा भवतु) तेरा शरीर भी इस पाषाण सदृश दृढ तथा ऋतु परिवर्तन के प्रभाव से रहित हो। यदि तूने ऐसा कर लिया तो (विश्वेदेवा) प्रकृति के जल वायु, इत्यादि सब देव तथा समाज के सब समझदार विद्वान् (ते आयु) तेरी आयु को (शत शरद कृण्वन्तु) सौ शरद ऋतुओ तक जीवित रहने वाला कर देवे – कर देगे।

निष्कर्ष – गुरुकुल मे निवास करते हुए – तपस्या द्वारा अपने शरीर को जैसे पाषाण तुल्य बनाना है वैसे ही उसे अपनी मति को भी अपने सिद्धान्तो मे स्थिर बनाना है ताकि द्वितीय तथा तृतीय सवन मे कोई उसे बहकाकर अन्धश्रद्धा के गर्त मे न ढकेल दे।

यद्यपि लोहा पत्थर से अधिक दृढ होता है फिर भी दृढता के लिए पत्थर से उपमा देने का कारण यह है कि लोहे मे ऋतु परिवर्तन से जग लग जाता है पत्थर मे नहीं लगता।

अर्थपोषण – शतशारद – सौ शरद् ऋतुओ तक जीवित रहने वाला। जैसाकि सन्ध्या मे प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं – **'जीवेम शरद शतम्।'**

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

प्राकृतिक-आपदाएं एवं प्रकृति के सूक्ष्म तत्त्वों का रहस्य

– ज्ञान चन्द

वेदकाल मानव सृष्टि का आरम्भिक काल माना जाता है। वेद काल एक ऐसा काल था जिसमे भूमि सागरो वनो व पर्वतो की स्थिति इस प्रकार थी कि तब प्राकृतिक परिवर्तन बहुत अधिक होते थे। वेदो के सुप्रसिद्ध समीक्षा व विश्लेषण ग्रथ ब्राह्मणो व आरण्यको मे ऐसी घटनाओ के प्रसग मिलते हैं।

प्रकृति के सूक्ष्म नियम व आन्तरिक व्यवस्थाए मानव जीवन के आन्तरिक क्षेत्र व्यवस्थाए मानव के आसपास के विशाल पर्यावरण वनो व प्राणी समुदायो की जितनी गहन समझ व अन्तर्दृष्टि वैदिक ऋषियो को थी वह आज के महान टैक्नोलाजी युग मे भी अकल्पनीय आश्चर्य का कारण बनता है। इस समझ व अन्तर्दृष्टि को यदि आज भी जाग्रत किया जा सके तो मानव समाज का बहुत लाभ होगा।

बाह्य आपदाओ के रूप मे अतिवृष्टि अल्पवृष्टि उल्कापात हिमपात भूकम्प भूस्खलन व महामारी प्राय सभी सकटो और प्राकृतिक विकृतियो के पूरे विश्लेषण कारण तथा साथ ही निवारण की विद्याए और विज्ञान वेदकाल के ऋषियो को ज्ञात थे। वेदादि ग्रन्थो मे इस प्रकार के प्रसग और प्रमाण बहुतायत से प्राप्त होते हैं। प्राकृतिक सकटों और पचतत्त्वों महाभूतों के रौद्र रूप धारण करके विनाश लीला करने के कारणो उपचारादि का विषय बहुत ही सूक्ष्म जटिल व गहन है जिसे अन्तर्दृष्टि और चेतना विज्ञान दृष्टि सम्पन्न लोग ही ठीक से समझते हैं। यहा पर सामान्य जन को समझ मे आने लायक भाषा मे वेदार्थो के आधार पर इस प्राकृतिक आपदा विषय को समझाने का प्रयत्न किया गया है।

वेदविज्ञान के अनुसार ससार के निर्माण ओर विनाश का मूल कारण मन तत्त्व' ही है। 'मन' से ही आकाशादि पचतत्त्वो का उद्गम होता है। मन स्वय अव्यक्त तत्त्व से उत्पन्न एक निर्माणक विनाशक तत्त्व है। यह मन वैश्व मन या जागतिक 'मन' है। हम मानवों के व्यक्तिगत मन उसी जागतिक मन की विभिन्न लहरें हैं जो सम्पूर्णतया विलग भिन्न और स्वतन्त्र रूप से जुदा नहीं हैं चाहे जुदा और विलग महसूस होती हैं। इस एकत्व का ज्ञान होना शोक व मोह से अलग व मुक्त हो जाना है।

प्रकृति की विकास लीला व विनाश लीला मे जागतिक मन एव अव्यक्त अज्ञेय तत्त्व सर्वोपरि कारण है। पर इस कारण को जानना ब्लैक होल के भीतर जाकर उसका नाप ले आने जैसा असम्भव कार्य है। पर मानवीय व्यक्तिमान एव उस पर आधारित मानव के सामुदायिक मन को जानना सम्भव है तथा वेदादि ग्रन्थो ने बहुत तार्किक व मनोगम्य रूप मे उसका वर्णन भी किया है।

मानव मन की एक प्रमुख वृत्ति भाव तथा उसका प्राणिक इमोशन है भय। इस 'भय की वृत्ति की विशाल शक्ति का आकलन साधारण मानव के लिए असम्भव है या असम्भव जितना ही कठिन है। भय का यह स्वभाव होता है कि वह अपने साधन या उस तत्त्व के प्रघटन को जिससे कि 'भय' बनता है आकर्षित करने की प्रवृत्ति रखता है। जिस वस्तु या परिस्थिति से भय' होता है वह वस्तु या परिस्थिति भयभीत व्यक्ति के पास आने की प्रवृत्ति रखती है।

प्राकृतिक आपदाओ के भूगर्भ स्थित व पर्यावरण जनित कारण भी जागतिक मन की वृत्तियो की अभिव्यक्तिया हैं। परन्तु इनमे मानव समुदाय के मनस्थित कारण भी कम नहीं हैं। भूगर्भ स्थित पर्यावरण जनित कारणों पर भू-विज्ञानी कार्य करें परन्तु मनो आध्यात्मिक विशेषज्ञो को मानवीय मन के अन्य क्षेत्रो मे भी कार्य करना होगा। आपदाओ से मुक्ति का यह द्विधारी पथ ही हमे आपदाओ से बचा सकेगा।

वैदिक योग प्रणाली का सबसे प्रमुख एव सूक्ष्मतम तत्त्व है अभीप्सा विशिष्ट एव एकाग्र ईप्सा (अभि=विशिष्ट ईप्सा=कामना)। अभीप्सा एस्पिरेशन अर्थात दृढ सकल्पयुक्त कामना मजबूत इरादे से भरी हुई भावना या प्रार्थना। इसे वेद मे अनेक स्थानो पर अग्नि' तथा कई स्थानो पर आकूति कहा गया है। अग्नि व आकूति मे सूक्ष्म अन्तर है पर दोनो ही इच्छित व काम्य परिस्थिति पैदा करने की सामर्थ्य रखते हैं। अभीप्सा या शुद्ध व तीव्र कामना मे इच्छित परिणाम उत्पन्न करने की सामर्थ्य है। अभीप्सा की इस अपरिमेय शक्ति को वैदिक ऋषिगण बखूबी जानते थे। वेद सहिताए अभीप्साओ भाति भाति की मानव जीवनोपयोगी विशुद्ध कामनाओ से भरी पडी हैं। ये अभीप्साए यदि शुद्ध समर्पित और स्वस्थ मन से अविरल व अभग रूप से की जाए और अहर्निश की जाती रहे तो वे अपना परिणाम सुनिश्चित रूप से उत्पन्न करती हैं। इसे वैदिक मनोविज्ञान ने बहुत विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया है। ●

पृष्ठ १ का शेष भाग

यज्ञ मनुष्य को आध्यात्मिक और भौतिक कष्टों से छुटकारा दिलाने में सक्षम

आर्य तपस्वी श्री सुखदेव ने कहा कि यज्ञ के द्वारा हम परमात्मा के सृष्टि सचालन मे सहयागी बनते हैं। यज्ञो से न कवल पर्यावरण रूपी भोतिक सुधार होता हे अपितु यह व्यक्ति का आध्यात्मिक उत्थान भी करते है।

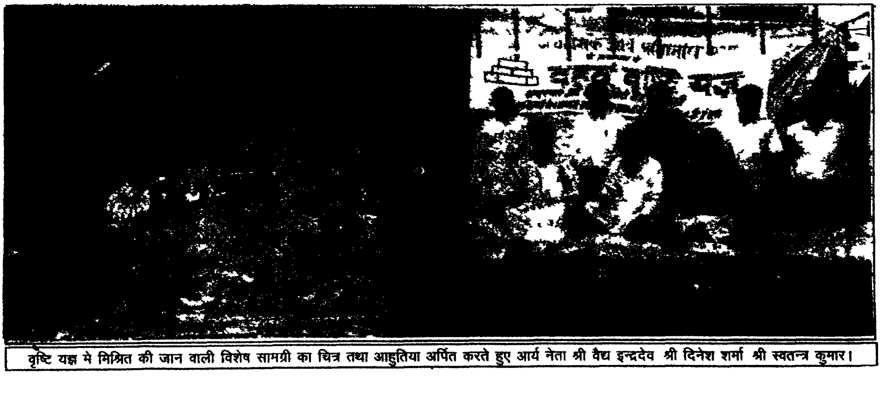
आचार्य भद्रकाम वर्णी ने कहा कि जीवात्मा किसी भी जन्म मे इतना श्रेष्ठ कर्म नहीं कर सकता जितना मनुष्य योनि मे रहकर कर सकता है। यज्ञ ही वह श्रेष्ठतम कर्म है जिसके द्वारा पृथ्वी जल ओर वायु से सम्बन्धित हर प्रकार के ऋण को चुकाया जा सकता है।

इस सभा को श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री तथा प० नेत्रपाल शास्त्री ने भी सम्बोधित किया। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने यज्ञ का सचालन करने वाले विद्वानो एव ब्रह्मचारियो को यथोचित दक्षिणा प्रदान की।

इस सात दिवसीय यज्ञ मे कई विशिष्ट अतिथियो सहित महाशय धर्मपाल श्री मुशीराम सेठी श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन वैद्य इन्द्रदेव श्री जगदीश आर्य गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार वैदिक विद्वान डॉ० रामप्रकाश कुरुक्षेत्र डॉ० महेश विद्यालकार श्री सुरेन्द्र रैली श्री अरुण वर्मा श्रीमती शकुन्तला आर्या श्रीमती उज्ज्वला वर्मा श्री विनय आर्य श्री रोशनलाल गुप्ता महाशय रामविलास खुराना श्री दयानन्द मदान प्रि० चन्द्रदेव श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता श्री बलदेव आर्य श्री हरीश बत्रा चौ० लक्ष्मीचन्द श्री हसराज चोपडा स्व० श्री चमनलाल ग्रोवर की धर्मपत्नी श्रीमती शीला ग्रोवर सुजानगढ के श्री सत्यनारायण लाहोटी जी श्री राजसिह भल्ला श्री राजेन्द्र लाम्बा माता प्रेमलता शास्त्री चमनलाल महेन्द्रु श्री आहुजा जी श्री ओमप्रकाश रुहिल डॉ० अमर जीवन स्वामी केवलानन्द ब्र० नन्दकिशोर श्री राजीव भाटिया श्री राजेन्द्र दुर्गा श्री प्राणनाथ घई श्री मनवीर सिह राणा श्री दिनेश शर्मा श्री बाबू राम आर्य श्री सत्यनारायण लाहोटी सुजानगढ आदि ने अपनी आहुतिया अर्पित कीं।

यज्ञ के कार्यो मे सर्वश्री विनय आर्य सत्येन्द्र मिश्रा भारतेन्द्र ओमप्रकाश भटनागर सजीव कोहली अरुण वर्मा आदि का भी अथक सहयोग प्राप्त हुआ।

इस यज्ञ के अवसर पर श्री जगदीश आर्य राजौरी गार्डन श्री बाबूराम आर्य सीताराम बाजार तथा दिल्ली सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने अपनी–अपनी ओर से प्रसाद वितरित किया। ऋषि लगर का समस्त व्यय दिल्ली सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने वहन किया। ●



वृष्टि यज्ञ मे मिश्रित की जान वाली विशेष सामग्री का चित्र तथा आहुतिया अर्पित करते हुए आर्य नेता श्री वैद्य इन्द्रदेव श्री दिनेश शर्मा श्री स्वतन्त्र कुमार।

आर्य वीरों की लेह-लद्दाख यात्रा

आर्य वीर दल की नियमावली के अनुसार प्रत्येक वर्ष प्रान्त के बाहर भ्रमण का कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। इसी कडी मे इस वर्ष साहसी एव कठिन यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा का उद्देश्य निर्धारित किया गया दुनिया की सबसे ऊची सडक पर पहुचकर **ओ३म ध्वज** फहराना तथा वहा यज्ञ करना।

दिल्ली से १२०० कि०मी० दूर जम्मू काशमीर के लद्दाख क्षेत्र मे स्थित **'खरदुगला पाल'** पर पहुचने के लिए हमने मिनी बस से ८ जुलाई की रात को विदाई समारोह के पश्चात यात्रा आरम्भ की। २० यात्रियो के दल का विदाई समारोह आर्यसमाज सी–ब्लाक जनकपुरी मे आयोजित किया गया था जिसमे सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य वरिष्ठ उप्रधान श्री विमल वधावन श्री वेदव्रत शर्मा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री तथा दिल्ली सभा के प्रधान उपस्थित थे। श्री सोमदत्त महाजन जी ने कार्यक्रम का सचालन किया तथा आशीर्वाद लेकर सभी साथियो ने यात्रा आरम्भ की।

हमारा पहला पडाव आर्यसमाज सुन्दर नगर था जहा पर वहा के अधिकारियो ने बडी सुन्दर व्यवस्था की थी। स्नान तथा यज्ञ के पश्चात भोजन किया तथा मनाली की ओर बढे। व्यास नदी के किनारे सन्ध्या तथा भोजन किया। भोजन हमने स्वय तैयार किया था। रात्री होटल मे विश्राम किया। १० जुलाई को विशेष यात्रा हेतु प्रात काल ६ बजे ही हम लोग चल दिए यात्रा अत्यन्त रोमाचकारी तथा कठिन थी। सुन्दर रास्तो से होकर हम १३३०० फुट ऊचे दर्रे रोहताग पाल पर पहुचे यहा से व्यास नदी आरम्भ होती है। यहा यज्ञ तथा प्रातराश किया गया तथा दोपहर का भोजन भी बना लिया गया। यहा से हम सभी ने आक्सीजन की कमी को महसूस करना शुरु कर दिया और आगे की यात्रा में यह बढती गई।

कोकसर केलाग डार्चा होते हुए हम जैसे ही आगे बढे तो देखा कि एकाएक हरियाली समाप्त हो गई है तथा आक्सीजन की दिक्कत के कारण हमारे सिर में दर्द होना आरम्भ हो गया। हालाकि इस समस्या से हम परिचित थे पर फिर भी अचानक समस्या आ जाने पर सबके चेहरे पर घबराहट सी आ जानी स्वाभाविक थी पर पानी और जूस आदि पीने से कुछ राहत महसूस हुई तथा कुछ आर्यवीरो ने दवाई लेकर भी राहत ली। मार्ग के दृश्यों को देखकर थकावट सिरदर्द गायब सा हो जाता था तथा इस समस्या के बावजूद उन मनोहारी दृश्यो को कैमरे मे कैद करना आर्यवीर नहीं भूले।

सायकाल एक स्थान पर मिलिट्री के जवानो ने मार्ग बन्द होने की सूचना दी तो लगा कि रात फौज की छावनी में ही गुजारनी पडेगी। वहा तेज शीतल हवाए चल रही थी तथा अन्धेरा होने को था किन्तु अफसरो ने वहा स्थान न होने की बात कहकर हमें आगे के स्थान जिगजिग बार भेज दिया। जिगजिग बार पहुचने पर वहा पर भी हमे रहने की कोई व्यवस्था नहीं मिली तो सबके चेहरे पर निराशा सी छा गई। अन्धेरा हो चला था समझ नहीं आ रहा था आगे दूसरे दर्रे बारालाचा की चढाई थी। समय न खोकर हमने इसी अवस्था मे आगे बढना आरम्भ किया। रात्री मे इतनी कठिन व खतरनाक चढाई चढ़ना पूरी तरह से उचित नहीं था पर रात्री विश्राम की जगह पर पहुचने के लिए यह आवश्यक था। चीटी की चाल से बस का चलना। थकान सिरदर्द डर अन्धेरा बाहर की खामोशी को चीरती बस की आवाज एक ऐसा माहौल बना रही थी मानो परमात्मा की गोदी मे खेलते हुए लारी की आवाज। इसी माहौल मे लगभग तीन घण्टे चलकर हम भरतपुर नामक जगह पर रात्री १० बजे पहुच गए वहा एक विशाल तलहटी मे आठ टैण्ट लगे हुए थे। उनमे हमे कुछ जगह रहने हेतु मिल गई। रात्री मे उस स्थान पर आक्सीजन और भी कम हो गई थी। भोजन की आवश्यकता तो थी पर भूख नहीं थी। इसलिए एक-या दो रोटी खाकर ही विश्राम किया किन्तु भय तथा सिर भारी होने के कारण नींद न आना स्वाभाविक था ऊपर से भयकर शीत लहर का प्रकोप वह रात हमने बहुत ही कठिनाईयों से काटी।

प्रात काल वहा के प्राकृतिक दृश्य देखते ही सारी समस्या जाती रही और सन्ध्या के पश्चात हमने आगे की यात्रा आरम्भ की तथा सभी साथी प्राकृतिक दृश्यों मे खोते चले गए इतनी ऊचाई पर (१४०००फुट) पर विशाल मैदान उसमें बहती गहरी नदी तथा दोनों ओर के घाटो पर मिटटी के कटाव द्वारा बने सुन्दर प्राकृतिक दृश्य तथा भरमोट (मोटे चूहे) हमने देखे। दोपहर पाग पहुचने पर हमने देखा कि नदी का पुल टूटा हुआ है और ट्रकों की लाईन लगी है। तभी वैकल्पिक किन्तु खतरनाक मार्ग तैयार व चालू किया गया। पहले नदी मे नीचे उतरना तथा नदी के बहाव को पार करके उपर सडक पर चढना अपने आप में अत्यन्त कठिन था पर हमने दृढता से उसे पारकर लिया तथा दोपहर का भोजन लेने का कार्यक्रम बनाया किन्तु यहा हमे फिर आक्सीजन की समस्या ने आ घेरा तथा भोजन भूलकर हम सब टैन्टो मे जाकर सो गए। कोई दवाई माग रहा था तो कोई पानी जूस तो कोई चाय। जानने पर मालूम हुआ कि नदी के पुल टूटन से जा हम सबने पैदल नदी पार की है वहा पर मेहनत से हमारे सास फूले है हम आराम चाहिए था। कुछ साथी आर्मी वालों से दवाईया मागने भी गए तथा दवाईया लाए। हमें शारीरिक रूप से ना सही पर उन दवाईयो को खाने से मानसिक रूप से हम स्वस्थ हो गए और न चाहते हुए भी थोडा-थोडा भोजन किया तथा आगे की यात्रा आरम्भ की।

हमे बताया गया कि आगे तीखी चढाई है तथा दुनिया के दूसरे सबसे ऊचे दर्रे से हमे गुजरना है उसका नाम था 'तगलागला पाल' । जब हम चले तों पहले तो बहुत बडा मैदान आया जिसका नाम 'चूहा ग्राउड' था लगभग २२ कि०मी० लम्बे विशाल समतल मैदान को देखकर ऐसा लग ही नहीं रहा था कि हमे १५,००० फुट की ऊचाई पर है। परमात्मा की इतनी सुन्दर सृष्टी देखकर हम वास्तव मे गीत गाने लगे दुनिया बनाने वाले कैसी तैरी माया है'। मैदान समाप्त होते ही चढाई आरम्भ हो गई तेथा फिर वही चाल खामोशी मन सहमा सा खासकर जब नीचे की खाईया दिखती थी। कई साथी आख बन्दकर के बैठे थे। कई साथी लेटे हुए थे। आहिस्ता-आहिस्ता हम जब काली मिटटी की धूल और कीचड को पार करके दुनिया की दूसरी सबसे ऊची सडक पर पहुचे तो सारी परेशानी मानो चेहरे से जाती रही। सभी ने वहा पर चित्र खिचाए। वहा पर एक छोटा मन्दिर है तथा बर्फ को काटने वाली मशीन हमेशा वहा रहती है तथा हमारे जवान वहा से दुश्मनों पर नजर रखने हेतु हमेशा वहा रहते है वहा से ढलान चालू था तथा हमने वहीं सन्ध्या की तथा आगे प्रस्थान किया तथा 'रमसे' पहुचे। भारत की सीमाओ के मार्ग बनाने वाले सगठन 'सीमा सडक सगठन' का भारत का सबसे ऊचाई पर स्थित कार्यालय यहीं पर स्थापित है। वहा से 'कगला जल' होते हुए हमने कठिन यात्रा का तीसरा दिन पूरा किया तथा लेह से पचास कि०मी० पहले उपशी पहुचे तथा रात्री विश्राम तथा भोजन किया।





ससार की सबसे ऊची सडक पर 'ओ३म ध्वज' फहराते आर्यवीर । एक स्थानीय मन्दिर में हवन यज्ञ करते हुए आर्य वीर दल के सदस्य।

— शेष भाग पृष्ठ ७ पर

आर्य वीरों की लेह-लद्दाख यात्रा

१२ जुलाई की प्रात हम वहा के प्राकृतिक दृश्यो को देखकर अभिभूत हो गए हमारे आवास के पीछे सिन्धु नदी का बहाव था तथा सामने ऊची चोटिया। उस सुन्दर वातावरण में दो दिन पश्चात हमने स्नान किया तथा यज्ञ व प्रात राश करके हम लेह की ओर बढे जो भारत का सबसे ऊचा शहर है तथा सबसे बडा जिला है। दो घण्टे की यात्रा के पश्चात हम अपनी पहली महत्वपूर्ण मजिल लेह पहुच गए जो सदियो के इतिहास का गवाह है। कभी यहा मध्य एशिया की ऐतिहासिक मण्डी हुआ करती थी यहीं से व्यापारी माल को मारकन्द ले जाते थे तथा रेशम लाते थे। बौद्ध धर्म को मानने वालों की सख्या हमेशा से अधिक रही है मुस्लिम भी लगभग २० प्रतिशत है तथा अन्य समुदायों में पजाबी हिन्दू, सिक्ख तथा कश्मीरी पण्डित लोग हैं। अधिकाश स्थान फौज तथा सरकारी कार्यालयो ने घेर रखी है। दुनिया का सबसे ऊचाई पर स्थित पैट्रोल पम्प यहीं है विशाल एयरपोर्ट भी है तथा सूखे पत्थरो के पहाडो के बीच हरियाली देखकर कुछ मन को सतोष होता है यहा वर्षा नहीं होती अधिकाश घर मिट्टी के बने हुए है। गरीबी का आलम है। उद्योग नहीं है। खेती अपने मतलब की होती है महिलाए कार्य मे अधिक रुचि लेती हैं। पुरुष वर्ग काफी हद तक नशे का आदि है। काफी पहले तो वहा पढाई और स्नान आदि का रिवाज ही नहीं था पर अब तो साक्षरता भी बढी है तथा लोगों ने साफ-सुथरा रहना सीखा है। बौद्ध धर्म का अनुयायी होने के बाद भी भोजन में मासाहार होना साधारण बात है।

आर्यसमाज के सम्बन्ध में मैं कहूगा कि कुछ परिवार वहा थे जो मूल पजाब के थे उन्होने आर्यसमाज चलाया किन्तु अगली पीढी में यह सस्कार नहीं आ पाए। नौकरी पर जाने वाले कुछ परिवार आर्यसमाजी है किन्तु माहौल न मिल पाने के कारण वे गतिविधिया नहीं चला पाते। आवश्यकता है वहा पर कोई प्रकल्प तथा डी०ए०वी० विद्यालय खोलने की यदि इस दिशा में प्रयास किया जाए तो अवश्य ही अच्छे परिणाम सामने आ सकते है।

खैर हम लेह पहुचने के पश्चात समय बेकार करना नहीं चाहते थे। हमने भोजन किया तथा जिप्सी गाडी द्वारा ऐसा स्थान देखने चल पडे जिसकी कल्पना भी अस्वाभाविक थी। लेह से तीस कि०मी० दूर श्रीनगर मार्ग पर एक स्थान है वहा पर जब कोई गाडी चढाई की ओर करके बद कर दी जाती है तो वह रूकती नहीं वरन् पहाडियों मे व्याप्त चुम्बकीय शक्ति द्वारा आगे बढती है तथा अच्छी गति पकड लेती है। यह देखकर सबने खूब तालिया बजाई तथा परमात्मा की सृष्टी में ऐसी अद्भुत विशेषताए मौजूद है सभी ऐसी चर्चाए कर रहे थे।

इसके पश्चात् हम गुरुद्वारा परपर साहब गए। गुरुनानक देव जी से जुडी एक घटना के आधार पर इस गुरुद्वारे का निर्माण हुआ था।

तत्पश्चात् लद्दाखी लोक नृत्य का कार्यक्रम देखने हम फ्याग के गोम्पा गए। वहा पर लद्दाखी लोक गीतों के आधार पर वहा की वेशभूषा में एक नाटक का मचन हो रहा था। तथा बडी सख्या में विदेशी पर्यटक वहा मौजूद थे। वहा से हम 'हाल आफ सेम' देखने गए जहा हमारे वीर जवानों के बहादुरी के चित्र तथा सामान मौजूद था। हमे बहुत खुशी हुई यह देखकर कि कारगिल युद्ध में पाकिस्तान से छीने गए हथियारों को वहा सजाया गया है। सियाचिन ग्लेशियर मे हमारे जवान रहते है तथा कैसे डयूटी देते हैं इसका सारा चित्रण वहा पर था।

तत्पश्चात लेह के बाजार को देखकर सभी सो गए क्योकि अगले दिन दुनिया की सबसे ऊची सडक पर जो जाना था।

इस मार्ग पर जाने के लिए विशेष अनुमति की आवश्यकता होती है वह हमे कुछ देर से मिल पाई तथा हम सब तैयारी करके आगे चले। भीषण चढाई ४५ कि०मी० बाद लगभग ५५०० फुट की ऊचाई पर पहुचना कितना कठिन होगा इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि हमे मात्र ४५ कि०मी० पार करने मे लगभग ३ घण्टे २० मिनट लगे। मार्ग में अनेक बाधाओ नालो टूटे पत्थरों सकरी सडक से पहाडो से निकलकर हम खरदुगला पास पहुचे जो दुनिया की सबसे ऊची सडक है तथा वहा पहुचकर हमे जिस प्रसन्नता का अहसास हुआ उसका वर्णन कर पाना भी कठिन है। हालाकि साय काल का समय हो चुका था तेज हवाए चल रही थी शीत का प्रकोप था फिर भी सभी ने पूरे उत्साह से उस अवसर पर जोर से नारे लगाए भारत माता की जय वैदिक धर्म की जय आदि तथा ओ३म का ध्वज' जो सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने दिल्ली से देकर भेजा था उसे फहराया तथा दुनिया के सबसे ऊचे मन्दिर के ऊपर लगा दिया। उसके पश्चात मन्दिर के अन्दर सभी ने बडे प्रेम व श्रद्धा से यज्ञ का आयोजन किया। वहा मौजूद आर्मी अफसरों को सत्यार्थ प्रकाश भी दिया तथा मन्दिर मे स्थापित किया गया। काफी देर वहा रुककर हम आगे बढे वहा हमने विश्व के सबसे ठण्डे तथा सबसे ऊचे रेगिस्तान पर जाना था रात्री में हम लोग नुबरा वैली के मुख्यालय डिस्किट पहुच गए।

अगले दिन प्रात काल ही हम उस रेगिस्तान की ओर चल दिए जिसको हमेशा सुनते आए थे और सात कि०मी० चलने पर हमने उस रेगिस्तान को देखा और देखते ही उछल पडे। सामने ऊचे पहाड उस पर बर्फ तथा नीचे साफ रेत के ऊचे टीले तथा कैक्टस और टीले भी सुबह-सुबह ही गर्म हो चले थे रेत उड भी रही थी। सभी इतनी ऊचाई पर आकर (१६,०००) फुट इस विशाल रेगिस्तान को देखकर अचम्भित थे। काफी देर हमने उस रेगिस्तान मे गुजारी। तथा उसमें आर्यवीर घूमे भी।

उस रेगिस्तान से भी अधिक हैरानी हमे तब हुई जब हमने वहा के ऊटो को देखा – उन की विशेषता थी उनका छोटे कद का होना था दो कूबड होना रेगिस्तान मे इस प्रकार के अद्भुत ऊट देखकर वास्तव मे हमें अपनी यात्रा का आनन्द आ रहा था। मन ही मन ईश्वर को भी धन्यवाद दे रहे थे की हमारी यात्रा का अन्तिम चरण आज पूरा हो गया था।

आगे की यात्रा वापसी की रही तथा आर्य वीरो को कुछ शारीरिक परेशानी भी आई वे आर्यवीर लेह से वायुयान से वापिस लौटे तथा बाकी सभी साथी यज्ञ सन्ध्या भजन करते उसी रास्ते से वापिस मनाली होते हुए दिल्ली पहुचे तथा ईश कृपा से तथा बुजुर्गों के आशीर्वाद से हमारी यात्रा सफल हुई।

हम इतना जरूर कहेगे कि एक बार भारत भूमि के इस हिस्से के दर्शन करने अवश्य जाना चाहिए। जिससे देश के अन्दर विद्यमान इन विशेषताओ को स्वय देखा जा सके।

– विनय आर्य

राष्ट्रपति जी के नाम
खुला पत्र

महामहिम राष्ट्रपति जी

जयहिन्द

ससार के सबसे बडे गणतन्त्र भारतवर्ष के राष्ट्रपति पद पर आपका चुना जाना फिरकापरस्ती व अलगाववाद की ऐतिहासिक पराजय है। आपकी इस विजय पर हृदय से अपनी ओर से आर्यसमाज न्यू मोती नगर की ओर से युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के नाम पर चलाए जा रहे महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल की ओर से कोटिश बधाई स्वीकार करे। मैं बहुत बडी आशा करता हू कि आपके कार्यकाल मे भारत सर्वतोमुखी उन्नति अमन तथा भाईचारे की मजिले तय करता हुआ ससार भर को शान्ति का सन्देश देगा। आप मजहब इस्लाम और वाहिद उल शरीक एक अल्लाह की ही इबादत करते हैं उसके साथ साथ भारत के महान् दार्शनिक योगीराज भगवान श्रीकृष्ण जी द्वारा ससार के मानवमात्र के भले के लिए युद्ध स्थल मे अर्जुन को सुनायी गई गीता का भी आप अध्ययन करते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता मे कहा है **अर्जुन यज्ञ करने से वर्षा होती है, वर्षा से अनाज उत्पन्न होता है। अनाज से मानव व प्राणियो का पालन होता है।** आप राष्ट्र की प्रथम श्रेणी के राष्ट्रनायक हैं। आपके कर कमलो द्वारा पवित्र भावना से किया यज्ञ (अग्निहोत्र) इस सूखी धरती को लहलहाती खेतियो मे बदल देगा। यज्ञ कराने के लिए शीघ्र आपका सन्देश हमे मिलेगा ऐसी पूर्ण आशा हैं।

भवदीय
तीरथराम आर्य (टण्डन)
प्रधान आर्यसमाज न्यू मोती नगर
नई दिल्ली–११००१५

निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज अशोक विहार १
प्रधान श्री अविनाश चन्द कपूर
महामन्त्री श्री ओम प्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष श्री रामनाथ कपूर

आर्यसमाज मन्दिर गांधी नगर, दिल्ली-३१
प्रधान श्री पूर्ण चन्द विद्यार्थी
मन्त्री श्री शिव शकर गुप्ता
कोषाध्यक्ष श्री रूप किशोर अग्रवाल

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी
प्रधान श्री लक्ष्मी नारायण
मन्त्री श्री अनन्त लाल आर्य
कोषाध्यक्ष श्री बुद्धदेव आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई
प्रधान श्री ओकारनाथ आर्य
महामन्त्री श्री मिठाईलाल सिह
कोषाध्यक्ष श्री अरुणकुमार अबरोल

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 15 16/08/2002 दिनांक १२ अगस्त से १८ अगस्त २००२ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 15 16/08/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू० (सी०) १३९/२००२

राजधानी की आर्यसमाजों में वेद प्रचार समारोह

आर्यसमाज लाजपत नगर नई दिल्ली

दिनाक — सोमवार १९ ८ २००२ से शनिवार २४ ८ २००२ तक
समय — प्रात ६ ३० से ८ १५ बजे तक (यजुर्वेद यज्ञ)
ब्रह्मा — प० श्री मेघश्याम जी वेदालकार
भजन — श्रीमती सुदेश जी आर्या (रात्रि ८ से ९ बजे तक)
वेद कथा — श्री प्रकाश चन्द्र जी शास्त्री (रात्रि ९ से ९ ४५ बजे तक)
पूर्णाहुति — २५ अगस्त को प्रात ८ बजे से १० ३० बजे तक

आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली १५

दिनाक — सोमवार १९ ८ २००२ से २५ ८ २००२ तक
ऋग्वेदीय यज्ञ — (प्रात ६ ३० से ८ बजे तक)
ब्रह्मा — प्रो० रत्न सिह जी
सहयोग — पूज्य वेदप्रकाश शास्त्री प० ऋषिपाल शास्त्री
भजन — महाशय जनार्दन जी (रात्रि ८ बजे से ८ ३० बजे तक)
वेद प्रवचन — प्रो० रत्न सिह जी (रात्रि ८ ३० बजे से ९ ३० बजे तक)
रविवार दिनाक २५ अगस्त २००२
यज्ञ पूर्णाहुति — प्रात ८ बजे से ९ ४५ बजे तक
भजन — प्रात ९ ४५ से १० ०० बजे
प्रवचन एव अभिनन्दन — प्रात १० ०० बजे से ११ ३० बज तक
मुख्य अतिथि — कै० देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
अभिनन्दन — *अमरीका और यूरोप के आर्यसमाजो के सफल दौरे क उपलक्ष्य मे*

ध्यान योग शिविर (स्वामी दिव्यानन्द जी द्वारा)

सोमवार १४ अक्तूबर से रविवार २० अक्तूबर २००२ तक
ध्यान योग यज्ञ — प्रात ५ ३० से ८ ०० बजे
ध्यान योग — साय ६ ४० बजे से ७ ०० बजे तक
प्रवचन — साय ८ ३० से ९ ३० बजे तक

आर्यसमाज बाजार सीताराम दिल्ली ६

दिनाक — गुरुवार २२ अगस्त से शनिवार ३१ अगस्त २००२
वेद कथा — आचार्य श्री राम किशोर जी शर्मा

आर्यसमाज राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

रक्षा बन्धन पर्व समारोह

दिनाक — बृहस्पतिवार २२ अगस्त २००२
यज्ञ एव प्रवचन — प्रात ६ १५ से ८ १५ तक
ब्रह्मा — आचार्य द्विजेन्द्र कुमार शास्त्री

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह

दिनाक — रविवार १ सितम्बर २००२
समय — प्रात ८ से ११ बजे तक

सत्यार्थ प्रकाश व्याख्यान माला

दिनाक रविवार २२ सितम्बर से रविवार २८ सितम्बर २००२ तक
समापन समारोह — रविवार दिनाक २६ सितम्बर २००२
स्थान — आर्यसमाज मन्दिर जे० ३/२०६ २०७ राजौरी गार्डन नई दिल्ली

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली ११०००२
(दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित हाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य स[illegible]श

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक ३५ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १९ अगस्त से २५ अगस्त २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रवादी आर्यनेताओं का सम्मान समारोह सम्पन्न

धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए धन और श्रम की आहुतियां देने वाले आगे आएं

स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य मे आर्यसमाज मन्दिर राजौरी गार्डन में एक विशेष समारोह के अन्तर्गत चार प्रमुख राष्ट्रवादी महानुभावो को उनकी राष्ट्रसेवा के कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। माता प्रेमलता शास्त्री श्रीमती राकेश रानी श्री बलराज मधोक तथा श्री के० नरेन्द्र को सम्मानित करते हुए उन्हे ५० ५० हजार रुपये की नकद राशि तथा श्रीफल प्रदान करते हुए उन्हे इस मार्ग पर आगे बढते रहने की प्रेरणा दी गई। यह सम्मान राशि सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुशीराम सेठी की ओर स प्रदान की गई। श्री मुशीराम सेठी जी ने इ[illegible]

उन्होने दयानन्द सेवाश्रम सघ के माध्यम से चल रहे कार्यो की सूचना देते हुए कहा कि धर्मान्तरण की गतिविधिया बहुत तेजी से बढ रही हैं और धर्मान्तरण विरोधी कार्यों मे जनता दिल खोलकर सहयोग नहीं दे रही। उन्होने इस सम्बन्ध मे सभा की गतिविधियो के आधार पर एक आवश्यक सूचना और अपील आर्यजनों मे वितरित की जो अलग से इसी अक मे प्रकाशित की जा रही है।

श्रीमती राकेश रानी ने कहा कि नारी जाति का आज जहा कही भी सम्मान होता है वह वास्तव मे महर्षि दयानन्द [illegible] सम्मा[illegible] हे क्योकि उन्हीं के

ईसाई धर्मान्तरण जैसा पाप करते हैं हम उसकी रोकथाम का प्रयास करते हैं। दूसरी तरफ उनके पास धन की बाहुल्यता है और हम अभी तक धन की अपीले ही जारी कर रहे हे। यह बात सत्य है कि हम ईसाइयो की तरह धन अनाज या नौकरियो जैसे लालच दुनिया को नहीं दे सकते हमारे कार्य तो वैचारिक क्रान्ति का कार्य है। उन्होने कहा कि पूर्वी प्रान्तो मे हम ३० वर्षो से कार्य कर रहे हें। परन्तु धनाभाव के कारण हम अपने लक्ष्य को नही प्राप्त कर पाए

माता प्रेमलता शास्त्री न कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी कहा करते थे भाड़े

उन्होने भारत के राजनेताओ को चेतावनी देते हुए कहा कि वे भारतीय मुसलमानो का तुष्टिकरण छोडकर उनका राष्ट्रीयकरण करने पर विचार करे।

श्री के० नरेन्द्र ने कहा कि पथ निरपेक्षता इस देश मे असफल रही है उन्होने अहिसा के नारे का मजाक उडाते हुए कहा कि इससे राष्ट्रीय समस्याओ का समाधान नहीं होगा।

उन्हाने आर्यसमाजियो को समाज की बुराइया दूर करने के लिए प्रेरित किया।

श्री विमल वधावन ने इस अवसर पर परमपिता से प्रार्थना करते हुए कहा कि राष्ट्रभक्ति और वैदिक धर्म की समस्त



प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मुशीराम सेठी ५० ०००/ रुपये की राशि एव श्रीफल राष्ट्रवादी नेता श्री बलराज मधोक सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री के० नरेन्द्र समाज सेविका माता प्रेमलता शास्त्री एव समाज सेवी श्रीमती राकेश रानी को प्रदान करते हुए।

समारोह की अध्यक्षता की और सचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने किया। इस अवसर पर सभामन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने भी सम्मानित महानुभावो का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

माता प्रेमलता शास्त्री ने यह सम्मान राशि अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के कार्यों के निमित्त देने की घोषणा की। दूसरी तरफ श्री के० नरेन्द्र ने इस सम्मान राशि को आर्यसमाज राजौरी गार्डन की गतिविधियो के लिए प्रदान कर दिया।

श्री विमल वधावन ने सम्मानित महानुभावो का विस्तृत परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि आपके कार्यों से समूची आर्यजनता ही नहीं अपितु सारा देश परिचित है। इस सम्मान समारोह का आयोजन जहा आपके कार्यों को सार्वजनिक रूप से सम्मान प्रदान करना है वहीं समाज के अन्य नागरिको को भी इन शुभ कार्यों की प्रेरणा देना है।

कारण नारिया कुछ भी कर पाने में सक्षम हो पाई है। महर्षि दयानन्द ने तो बडी विकट परिस्थितियो मे उन बडी बडी ताकतो को चुनौती दी थी जिन्होने इस देश को मुस्लिमस्थान ओर ईसाईस्थान बनाने की योजनाए तैयार कर रखी थी। उन्होने भारतीयता और राष्ट्रीयता की रक्षा का आह्वान किया और इसके लिए उन्होने हमारी अमूल्य धरोहर वेद की ओर ध्यान आकृष्ट किया।

ईश्वर और सत्य उनके साथ था इसलिए अपार जन समूह ने उनका साथ दिया।

श्रीमती राकेश रानी ने कहा कि केवल नारो से काम नहीं चलेगा बल्कि किसी भी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हर व्यक्ति को यत्न करना पडता है। हम सबके घरो मे वेद न केवल उपस्थित हो बल्कि उनका स्वाध्याय भी हो। रोजमर्रा के जीवन मे हम विदेशी सभ्यता के नाम पर अपनी मूल परम्पराओं को महत्व दे।

माता प्रेमलता शास्त्री ने कहा कि के टटटुओ से प्रचार नहीं होगा। इसके लिए वानप्रस्थी लोगा को त्यागी तपस्वी बनकर समाज सेवा के कार्यो मे आगे आना होगा। उन्होने कहा कि आसाम से १०० से अधिक बच्चो का आगमन पूर्वी क्षेत्रो मे वैदिक धर्म का भाग्योदय माना जा सकता है। परन्तु भाग्य के इस वृक्ष पर फल तभी लगेगे जब हर व्यक्ति धन और श्रम का सहयोग करेगा नही तो भाग्य का यह वृक्ष भी कहीं सूख न जाए।

प्रो० बलराज मधोक ने इस सम्मान का धन्यवाद करते हुए कहा कि यह सम्मान राशि हमारे हिन्दू विश्व न्यास के कार्यो मे लगेगी जो सारे विश्व मे हिन्दुओ की रक्षार्थ कार्य करता है।

उन्होने १९४७ के विभाजन को कत्रिम विभाजन कहते हुए कहा कि यह विभाजन किसी मायने मे भी सफल नहीं रहा। भविष्य की घटनाओ की सम्भावना की ओर सकेत करते टुए उन्होने कहा कि आने वाला समय ईसाइयत और इस्लाम के टकराव का भारी समय होगा।

प्रेरणाए हमारे मन बुद्धि और आत्मा का सस्कार सदा सदा बनी रहे। हमारे पूर्वजो ने अपना सर्वस्व बलिदान करके जिन परम्पराओ को सुरक्षित रूप से हम तक पहुचाया हम उन्हे उसी रूप मे बिना किसी मिलावट के आने वाली पीढियो के लिए सुरक्षित रखे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा स्थापित सिद्धान्तो का अधिक से अधिक क्रियान्वयन सुनिश्चित करना हमारा नित्य कर्म बने। इस राष्ट्र की भौतिक उन्नति के साथ साथ आध्यात्मिक उन्नति के लिए हम सदा स्वाध्याय शील रहे।

आर्यसमाज राजौरी गाडन के प्रधान श्री जगदीश आर्य ने समस्त महानुभावो का धन्यवाद किया।

समारोह के अध्यक्ष श्री मुशीराम सेठी ने कहा कि इन राष्ट्रवादी महान आत्माओ का सम्मान करके हमे आत्म सन्तोष होता है क्योकि जो लोग अपना सर्वस्व आहुत करके समाज सेवा करते हे उनका सम्मान अवश्य होना चाहिए।

अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा द्वारा भारतीयता पर आक्रमण

आर्यसमाज ही अंग्रेजियत का प्रवाह रोकने में सक्षम

– विश्वकान्त शुक्ल

आज देश विषम परिस्थितियो से गुजर रहा है। प्रत्यक्ष मे इस्लामिक आक्रमण और परोक्ष म ईसाइयत की घुसपैठ ने बाहर भीतर स मानवता की पोषक वेदिक सस्कृति को दबाच लिया हे। भारतीय भी बडे बेगाने साबित हो रहे हे वे भारत से तो प्यार (वैदिक सस्कृति) करते हे पर भारतीयता क प्रति नितान्त गाफिल है। भारतीयता पर सबस गम्भीर आक्रमण शिक्षा क माध्यम स हो रहा है। जिसका सबसे बडा शस्त्र अग्रेजी माध्यम से शिक्षा का प्रसार।

जिधर देखिए उधर गली गली ग्राम ग्राम मे अग्रजी माध्यम की पाठशालाए खुल रही हे। माता–पिता अपने बालको का उन्ही शालाओ मे पढाने मे गोरव महसूस करते ह। उन्हे स्वय यह विदित नही हे कि वे अपने बच्चो को पढा क्यो रह है ओर उन्हे क्या अपेक्षा हे अपन बच्चो से। शासन मे पदस्थ अग्रेजी परस्त सामन्तशाही भावना से ग्रस्त अधिकारी वर्ग अपने बच्चो के भविष्य को आरक्षित करने की दृष्टि से अग्रेजी का पोषण कर रहे हे ताकि सामन्त जनता के बच्च उनके बच्चो से प्रतियोगित म आग आ सक। जननायक इन अफसरशाहो क सामन अपन को दीन हीन समझत हुए उन्ही अफसरशाहो का अनुसरण कर रह ह। वशीकरण न इस अग्रजी के प्रभाव को करेला और फिर नीम चढा की स्थिति म पहुचा दिया हे। भला इस अग्रजी प्रवाह को जिस पर आसक्त हो ईसाइयत ने भारतीय सस्कृति पर जो परोक्ष आक्रमण कर रखा हे उसे कोन रोके।

हमे अग्रजी से गुरेज नही पर उसके माध्यम स जिस पाश्चात्य सस्कृति का विष हमारी मानवता पोषक वैदिक सस्कृति को नष्ट कर रहा ह वह चिन्ताजनक हे। कहते हे साहित्य समाज का दर्पण होता है। एक कच्ची उम्र का बालक जब अग्रजी पाठयक्रम को पढता है तो उसे सर्वप्रथम उस अग्रेजी समाज के दर्शन होते है और वह उन्हीं बातो का सत्य मान आत्मसात करता जाता हे। के०जी० कक्षा की ही पुस्तक उठाकर दखिए। चित्रो के माध्यम स बालक बच्चे बच्चियो का कोन सी पोषक देखता ह उसकी दृष्टि म राजा रानी का कोन सा स्वरूप उभरता हे। परी का चित्र देख वह कोन स परी की छवि अपन मस्तक म उकरता हे। माता का रूप पिता का रूप शिक्षक का रूप पशु पक्षी जानवरो आदि का रूप किस तरह अपन म जेहन मे उतारता हे। कही कोई भारत या भारतीयता वह ग्रहण करता ह। के०जी० का बालक जब उस अग्रेजी पुस्तक से कहानी अपनी शिक्षिका नही मैडम स सुनता हे तो पाता हे कि एक बालक मुह म कुछ खा रहा ह पिता पूछता हे तेरे मुह म क्या हे तो कहता ह कुछ नही। पिता मुह खोलन को कहता ह तो हस देता हे। बच्चा क्या सीख रहा ह ? इन्ही पुस्तको मे शिकार करना मास खाना आदि प्रसग बच्चो क अन्दर कोन से सस्कार डाल रहे है। चित्र मे माता का चुम्बन पिता द्वारा लेत हुए देखकर बच्चा कोन स भाव ग्रहण कर रहा है। आप किस भारतीय सस्कृति की बात कर रह ह ओर अगली पीढी कसी तयार कर रह ह। भयानक परिदृश्य हे यह।

आज की परिस्थितियो म हम अग्रेजी के विरोध म अपन को कुछ कर सकन की स्थिति म नही पाते पर अग्रजी क माध्यम स अग्रेजियत क बहने वाले प्रवाह को रोकन मे अगर कोई सक्षम हे तो वह है केवल आर्यसमाज। वह स्वय या डी०ए०वी० मेनेजमण्ट के माध्यम से इस कार्य को अजाम दे सकता है यह मेरा पूर्ण विश्वास है।

आज के०जी० से लेकर ऊपर तक की कक्षाओ मे जो पाठयक्रम अग्रेजी के माध्यम से चलता है वह सब विदेशी आधार पर चल रहा है उनके प्रकाशक भले ही भारतीय क्यो न लेकिन उनके प्रकाशन अग्रेजी प्रकाशको का अनुकरण मात्र ही है। अत समस्त प्रकाशनो मे अग्रेजियत का बोल बाला है। मेरा यह विनम्र सुझाव है कि के०जी० से लेकर ऊपर तक के पाठयक्रमो का भारतीयकरण करते हुए शने शने सभी पुस्तको का प्रकाशन करवाया जाए जिससे बालक अग्रेजी तो पढे पर अग्रेजियत के स्थान पर उन्हे भारतीय सस्कृति से सस्कारित होने का अवसर मिले और आने वाली पीढी अग्रेजियत को विष स बच जाए। यह कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है एव करवा सकता है।

मेरा विश्वास है आप सभी आर्यजन इस छोटे से सुझाव पर गम्भीरता से विचार करेगे और अपन मन्तव्य से मुझे अवगत कराएगे।

– तिरुपति नगर मगजपुरा रोड
धार, मध्यप्रदेश

वेदों की ज्योति जलाएं

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति

स्वय बने हम आर्य तभी जगती को आर्य बनाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदो की ज्योति जलाए।।

आज धरा पर वृत्ति आसुरी पलती तथा बिहसती
मानवता है आहे भरकर व्यथा कथा निज कहती
धरती मा है अनाचार व अनय अतुल अब सहती
गगा की पावन धारा प्रतिकूल दिशा मे बहती

बिखरा किरणे वेद ज्ञान की स्वर्ण सवेरा लाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदो की ज्योति जलाए।।

फैल रहा अज्ञान अन्धेरा शिक्षा पद्धति है दूषित
पर्यावरण तथा जल थल नभ होता आज प्रदूषित
विस्तृत है इस पुण्य भूमि पर अनय तथा अन्याय अमित
भ्रष्ट बनी है आज व्यवस्था जन जन को है कष्ट अमित

निरत सभी हो श्रुति के पथ अपना धर्म निभाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदो की ज्योति जलाए।।

आलोकित हो वेद ज्ञान से मानव का अन्तर्मन
ऋषियो मुनियों मनीषियो की इच्छा का हो प्रणयन
वेदाधारित हो शिक्षा सब खुले ज्ञान के दिव्य नयन
बने प्रफुल्लित इस धरती के सभी मानवो का अभिमन

वेद मार्ग पर जगती तल के सब जन कदम बढाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदो की ज्योति जलाए।।
स्वय बने हम आर्य तभी जगती को आर्य बनाए।

मुसाफिर खाना सुलतानपुर उ०प्र०

बोध कथा — सच्चा धर्म क्या है ?

एक बार महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय श्री मोहनदास करमचन्द गाधी और कुछ सज्जनो के मध्य धर्म पर चर्चा हो रही थी। चर्चा के दोरान मालीवय जी ने गाधी जी से पूछा – **बापू आपकी दृष्टि मे धर्म क्या है ?**

गाधीजी ने कहा पण्डितजी मेरी दृष्टि मे धर्म का अर्थ कर्त्तव्य हे। समाज के हर व्यक्ति का अलग कर्त्तव्य है। सैनिक का धर्म या कर्त्तव्य पूरी ईमानदारी से अपने राष्ट्र ओर समाज की रक्षा करना है। भले ही उसके प्राण चले जाए। एक व्यापारी का धर्म पूरी इमानदारी से ग्राहको को आवश्यक वस्तुए प्राप्त कराना है। एक ब्राह्मण का धर्म लोगो को अच्छी शिक्षा देकर उन्हे चरित्रवान बनाना हे तो एक न्यायाधीश का धर्म पूरी ईमानदारी से निष्पक्ष रहकर सभी को न्याय दिलाना है। एक राजा का धर्म पूरी ईमानदारी के साथ जनता की सेवा और रक्षा करना है ओर राज्य की जनता का धम यह हे कि वह अपने राजा के प्रति सच्ची निष्ठा और विश्वास व्यक्त करे।

गाधीजी के मुख से धर्म की ऐसी अनूठी व्याख्या सुनकर मालवीय जी और उपस्थित जनसमूह खुशी से झूम उठा।

– नरेन्द्र

मातृभूमि मंगलमयी हो . एकता हो भुजाएं सबल हो

स्वस्ति भूमे नो भव। *अथर्व० १२–१–३५*

मातृभूमि हमारे लिए मगलमयी हो।

समिति समानी। *ऋ० १०–१५१–३*

तुम्हारी सभा मे एकता हो।

उग्रा व सन्तु बाहव । *यजु० १७–४६*

तुम्हारी भुजाए सदा सबल हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

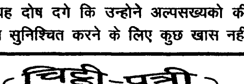
सम्पादकीय अग्रलेख

स्वाधीनता के ५५ वर्षो में : राष्ट्र की उपलब्धियां, अवरोध जनचेतना जगाएं

१५ अगस्त क दिन भारत को राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हुए ५५ वष हो गए हे। यह एक मूल्याकन की घडी है जब हम देख कि स्वाधीनता के वर्षो मे राष्ट्र की क्या उपलब्धिया हे ? हम कहा चूक गए ? राष्ट्र की प्रगति मे कोन से अवरोध हैं ? राष्ट्र क उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा क्या दायित्व है ? यह ठीक है कि देश के विभाजन के लिए तत्कालीन शासक उत्तरदायी थ परन्तु उसके बाद देशवासियो न राष्ट्र क जागरण और एकता के लिए क्या किया ? इन जिज्ञासाआ का समाधान आवश्यक है। डिस्टन्ट नबर्स के रचयिता श्री कुलदीप नैयर के अनुसार भारत के अन्तिम वायसराय लार्ड माउण्ट बैटन ने स्वीकार किया था कि विभाजन के दौरान कम से कम दस लाख लोग मारे गए। हा उनकी सफाई अद्भुत थी कि उन्होने उससे तीन गुना अधिक लोगो को भुखमरी का शिकार होने से बचाया था। परन्तु उस समय की स्थिति के जानकार माउण्टबैटन को यह दोष दगे कि उन्होने अल्पसख्यको की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कुछ खास नहीं किया। नर नारियो और शिशुओ की हत्याओ को रोकने के लिए पजाब सीमा बल का प्रयोग नहीं किया गया जिसका गठन ही दगो को कुचलने के लिए माउण्ट बैटन ने ३ अगस्त १९४७ को किया था। इसी के साथ अनेक शिक्षित और पत्रकारिता के क्षेत्रो मे यह गम्भीर सुझाव रखा गया कि भारत के अन्तिम वायसराय लार्ड माउण्टबेटन पर यह अभियोग चलाया जाए यद्यपि भारत के विभाजन मे उनकी भूमिका नहीं थी तथापि दस लाख लोगो के नरसहार और दा करोड से अधिक जनता के उजडने मे उनकी भूमिका निधारित की जाए। उनके विरुद्ध अभियोग यह ह कि उन्हान भारत के विभाजन की निर्धारित तारीख ३ जून १९४८ को वदल कर १५ अगस्त १९४७ करवा दिया।

उनके इस गलत निणय के फलस्वरूप लाखा लागा का नरमेघ हुआ। उस समय तक भारत और पाकिस्तान की सीमाआ का अकन नही हुआ था ओर पजाब बगाल की करोडा की आबादी का भाग्य अधर मे झूल रहा था। विभाजन तारीख दस माह पहले करके माउण्टबेटन का अनजाने मे ही दस लाख लोगो की हत्या की स्थिति बना डाली। आबादी के इन वर्षो म भारत की जनसख्या ३५ कराड ८० लाख थी अब वह एक अरब २० लाख हो गई है। १९४७ म राष्ट्र की साक्षारता १४ प्रतिशत थी परन्तु आज वह ६६ प्रतिशत हा गई हे। उन दिनो भारतीय को आसत उम्र ३२ वर्ष थी परन्तु अब वह ६२ हा गई है। १९५१ मे प्रति व्यक्ति आय २३१ रु० थी जा कि अमरिका की प्रति व्यक्ति आय का ३ प्रतिशत थी आज वह १९४८७ हो गई है जो कि सयुक्त राज्य अमेरिका की ओसत आय का ८० वा भाग हे। इसी के साथ यह कटु तथ्य भी हम भूल नही सकते कि राष्ट्र नेता सासद विधायक अधिकारी सब के सब मुनाफे के चक्कर मे उलझे है। भारत माता का जयघोष सब करते है परन्तु केवल वाणी से लगभग सभी अपने व्यक्तिगत उन्नति मे सलग्न हैं उसका नतीजा है कि प्रतिदिन माल की चोरी बढ रही है बाजार घटिया माल से पटे पडे है प्रत्येक किसी भी तरह पैसा बनाना अपना लक्ष्य समझता है फलत राष्ट्र की ज्योति मद्धम पड गई है। अब समय आ गया है जब स्वाधीनता आन्दोलन के समान प्रत्येक सजग एव उत्तरदायी होकर पुन त्याग–समर्पण का मार्ग पकड न कि किसी भी तरह पैसा बनाने का लक्ष्य है। कोई भी राष्ट्र स्वत नहीं बनता प्रत्युत सामूहिक प्रयत्नो से ही उसे बनाना पडता है।

वेद का सन्देश हे – भद्र उच्छन्त ऋषय सविर्दस्तपा दीक्षाभुवनिषेदुग्रे तता राष्ट्र बल उत्तेश्च जातम। राष्ट्र के उत्थान के लिए आवश्यक है कि राष्ट्रवासियो मे तप और दीक्षा की भावना ओत प्रात हो। तप का अर्थ है तपो द्वन्द्व सहिष्णुवर लक्ष्य प्राप्ति के लिए हानि लाभ सुख दुख सर्दी गर्मी की चिन्ता छोडकर धीरज से आगे बढना। यक्ष द्वारा प्रश्न करन पर युधिष्ठिर ने कहा था – तप स्वकर्मवर्तित्वम अपने कर्त्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करना ही तप हे। कुशल राजनीतिज्ञ चाणकय की सीख थी – तप सार इन्द्रियविग्रह। तप का सार इन्द्रियविग्रह है। दीक्षा नाम है कटिबद्धता का। राष्ट्र उत्थान के लिए समस्त देशवासिया का उसी तरह तप दीक्षा का मार्ग अपनाना होगा जेसा कि राष्ट्र के स्वाधीनता आन्दोलन मे सत्याग्रहियो क्रान्तिकारियो ने अपनाया था। प्रत्येक देशवासी सकल्प करे – **न दैत्य न पलायनम** न दीनता दिखलाआ न पलायन करा प्रत्युत करा या मरा की प्रबुद्ध भावना से राष्ट्रीय जीवन को आत प्रात कर राष्ट्र का कायाकल्प करना होगा तो सफलता सुनिश्चित हे। १५ अगस्त को स्वाधीनता दिवस पर भाषण करते हुए प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी न घाषित किया जम्मू कश्मीर के चुनाव निष्पक्ष होगे चुनाव मे किसी को भी गडबडी फेलाने नही दी जाएगी। १९७१ के सघर्ष म भारत ने पाकिस्तान के विरुद्ध निर्णायक विजय पाई थी। उस समय अधिक अच्छा होता कि बाग्लादेश से स्थायी एकता का सूत्र सुदृढ किया जाता। राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम द्वारा राष्ट्र के नाम सन्देश आज जनता का मार्गदर्शन कर सकता है कि प्रत्येक जन प्रतिनिधि अपना आचरण सुधारे। वैसे राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक और जनप्रतिनिधियो को स्वत मर्यादा मे रहकर राष्ट्र की उन्नति मे अपना सक्रिय सहयोग देना चाहिए।



पशुओ पर अत्याचार

पशुओ पर अत्याचार के मामले मे दुनिया मे पाकिस्तान का नाम पहले दस देशो की सूची मे आता है। ऐसा होने का कारण भी है। पाकिस्तान मे मुर्गो की लडाई का शोक रखने वालो की कमी नहीं है। यहा घोडो और गधो जैसे जानवरो से दिन मे सोलह घण्टे काम लिया जाता है उसके बदले उन्हे इतना कम भोजन दिया जाता है कि अक्सर वे बेहोश हो जाते हैं। शरीर से कमजोर होते ही उन्हे मार दिया जाता है या बेच दिया जाता है। चिडियाघरो मे भी जानवर विपरीत स्थिति का सामना करते है। इस बारे मे सरकार गम्भीरता से विचार कर कोई ठोस योजना बनाए।

– दूरफान हुसैन डान पाकिस्तान

कश्मीर पर नजर

अमेरिका भी पाक की भाषा बोलने लगा है। पावेल की बयानबाजी पढकर उसमे और मुशर्रफ मे कोई फर्क नजर नहीं आया। पावेल का भारत के आन्तरिक राष्ट्रीय एजेण्डे पर बयान अमेरिका का सीधा हस्तक्षेप है। कश्मीर मे स्वतन्त्र पर्यवेक्षको की नियुक्ति और चुनाव से पहले राजनीतिक बन्दियो की रिहाई की माग से स्पष्ट है कि कश्मीर मे अमेरिका की बुरी नजर हे। अमेरिका इस तरह हस्तक्षेप बढाते हुए भारत पाक विवाद मे मध्यस्थ बनना चाहता है।

– एस०के०जैन मयूर विहार दिल्ली

इन्सानियत की भावना

जब तक जनता मे इन्सानियत की भावना जाग्रत नहीं होगी तब तक आजादी का कोई मतलब नही है।

– रवीना टण्डन

सन्तोष का फल

यद्यपि सन्तोष कडुआ वृक्ष है तथापि इसका फल बडा ही मीठा और लाभदायक है।

– मौलाना रूमी

मर्यादा से रहे और सुखी हो

यदि सब अपनी आवश्यकता के अनुसार सग्रह करे तो किसी का भी कोई तगी न हो और सब सन्तोष से रहे।

– महात्मा गाधी

धर्म की महत्ता

सन्त प्रवृत्ति के लोग प्राण त्याग देते है किन्तु धर्म नहीं।

– महा सुतसोम जातक

योगीराज श्रीकृष्ण और आर्यसमाज

– डॉ० महेश विद्यालकार

भारत का सौभाग्य रहा है कि यहा अनेक ऋषि मुनिया सन्तो व महापुरुषो के जन्म हुए है। इसी परम्परा मे भगवान श्रीकृष्ण जैसे धर्मात्मा पुण्यात्मा योगीराज नीतिज्ञ तपस्वी त्यागी लोकहितकारी महामानव का नाम ससार बडी श्रद्धा भक्ति और पूजा भाव से लता ह। श्रीकृष्ण अपन व्यक्तित्व एव कृतित्व से ससार के प्रेरक तथा मार्गदशक बन। इतिहास म ऐसा विलक्षण अदभुत क्रान्तिकारी सम्पूण कला युक्त व्यक्तित्व दुर्लभ है। हजारो वर्षो क घात प्रतिघातो विवादा आर तूफाना का झलते हुए भी वे आज भी पूजित श्रद्धेय स्मरणीय तथा अलोकिक महापुरुष क पद पर प्रतिष्ठित है। उनका जन्मदिवस भारत म नही अपितु विदशो म भी आदर श्रद्धा एव भक्ति भावना स मनाया जाता है। व भारतीय धार्मिकता व आस्तिकता के प्रतीक है।

योगीराज श्रीकृष्ण का जन्म कारावास म हुआ। जन्म स पूर्व ही मृत्यु के वारन्ट निकल गए। पराए घर म विमाता की गाद म पल। मामा का मारना पडा। राज्य छाडकर भागना पडा। धर्मयुद्ध मे नाना रूप धारण करन पड अपमान आर कष्टा का जहर पिया। उनका सम्पूर्ण जीवन विषम परिस्थितियो कठिनाइया मुसीबता आर सघर्षो का अजायबघर रहा ह। न जान क्या क्या करना पडा। ऐसी अवस्था मे भी वे कभी निराश हताश तथा उदास नही हुए। कभी चेहर पर सिकन नही आने दी। कर्मयोगी बनकर सदा मानवता के कल्याण मे लगे रह। सदेव मुस्करात रहे। आज क भूले भटके निराश हताश ओर साधनहीन मानव समाज को भगवान श्रीकृष्ण क जीवन का यह प्ररक पक्ष सदा सम्भालन आर आग बढन की प्ररणा दता रहग। वर्तमान जगत श्रीकृष्ण के जीवन स सीखना चाहे ता बहुत कुछ सीख सकता ह। दुभाग्य ह कि हमन अपन महापुरुषा क जीवन चरित्रा का इतना विकृत कल्कित ओर उल्टी सीधी बाता स भर दिया हे कि आज उनके सत्य यथार्थ एव प्रेरक पक्ष का पता ही नही चलता है। पुराणा मे वर्णित श्रीकृष्ण के चरित्र व लीलाओ का तो दुनिया मान ओर जान रही है। महाभारत मे वर्णित असली श्रीकृष्ण के स्वरूप तथा कार्यो का लोग भूल रहे है। पुराणो ओर लोक साहित्य म श्रीकृष्ण को चोर जार शिरामणि मक्खन चोर लम्पट भोगेश्वर आदि क विशषण दिए ह। वतमान टेलीविजन सीरियल रासलीला कृष्णलीला ओर कथाओं आदि के माध्यम स भयकर अश्लीलता पाखण्ड तथा अन्धविश्वास का प्रचार व प्रसार किया जा रहा है। चित्र की पूजा हो रही हे। चरित्र का आदर्श छूट रहा हे।

महाभारत म व्यासजी के इस कथन से श्रीकृष्ण क व्यक्तित्व एव कृतित्व की उच्चता तथा महानता का पता चलता हे – **कृष्ण वन्दे जगद गुरुम** महाभारत म यदि काइ सर्वमान्य व सर्वपूज्य थ ता केवल भगवान श्रीकृष्ण थे। उनके वास्तविक स्वरूप का पता महाभारत मे चलता ह। जहा उन्ह सवगुण सम्पन्न राष्ट्रनायक विश्वबन्धु यागीराज उपदेष्ट्रा नीतिनिपुण धर्मरक्षक मार्गदशक आदि विशेषण दिए गए हे। महाभारत स ही गीता निकली ह। गीता ने जा ससार को उच्चकोटि का व्यावहारिक जीवन दशन दिया हे उसक आगे सारा ससार नतमस्तक हे। गीता ज्ञान का पढ आर सुनकर काइ यह नही कह सकता ह कि यागीराज श्रीकृष्ण भागश्वर थ। वे आदर्श महापुरुष थ। उनके जीवन म धम दशन सस्कृति इतिहास काव्य कला सगीत आदि का अदभुत समन्वय था। उनका जीवन योग कर्मसु कोशलम प्रत्यक्ष उदाहरण था। उन्होने जो कार्य किया निपुणता सुन्दरता तथा कुशलता से किया। गाये चराई मुरली बजाई दोस्ती निभाई सारथी बन युद्ध कराया सेवा की सभी कार्यो मे अपनी पहचान तथा छाप छाडी। सभी कामा मे प्ररणा व आदश क उदाहरण बन गए। योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन का उद्देश्य था – १ परित्राणाय साधूनाम – सज्जनो की रक्षा करना। २ विनाशाय दुष्कृताम दुष्टा का सजा दिलाना आर दलन करना ३ धम सस्थापनाथाय – धम की रक्षा करना। इन्ही उदश्या की पूर्ति के लिए उन्हान अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। अपने लिए न कुछ चाहा न मागा और न सग्रह किया। वे चाहते तो महाभारत की विजय के पश्चात पाण्डवा के महामन्त्री बन सकते थ ? मगर उस महापुरुष ने सब कुछ त्याग दिया। वर्तमान राजनीति और राजनीतिज्ञ भगवान श्री कृष्ण से सीखना चाह तो बहुत प्रेरणा सन्दश ओर आदश ल सकते ह।

इस दश ने अपने महापुरुषो क साथ जितना अन्याय और अपमान किया है उतना ओर कही नही हुआ ह। कसी विचित्र बिडम्बना है कि जिन्ह हम भगवान कहत हे उन्ही भगवान को हम नचाते ह गवात आर उन्ही के नाम पर भीख मागते हे ? तालिया बजा बजाकर तमाशा देखते हे। मनारजन करते हे। उनकी नकल उतारत हे। उन पर तरह तरह क लाछन लगाते हे। ऐसा करना अपन महापुरुषा के साथ धोर अपमान तथा अन्याय है। जिन्होने कभी भीख नही मागी थी उन्हे हमने भिखारी बना दिया ? क्या यही उनके उपकारा का बदला हे ? क्या यही उनके जन्मदिन बनाने की उपयोगिता सार्थकता एव व्यावहारिकता ह ? आज महापुरुषा के जन्मदिन पर्व कथा प्रवचन तीर्थ मन्दिर रामलीलाए कृष्णलीलाए आदि धार्मिक मनारजन खाने पीने घूमने व मोजमस्ती के अवसर बनते जा रहे है। मूल तेजी से छूटता जा रहा है। इन कार्यक्रमो क पीछे तो सन्दश प्रेरणा व्रत सकल्प आर सीखन का भाव था वह कही नजर नही आता हे। इसी कारण आज समाज म नेतिक धार्मिक एव सामाजिक जीवन मूल्यो म तजी स गिरावट आ रही हे। जड पूजा आडम्बर ढाग पाखण्ड अन्धविश्वास आदि तेजी से फैल रहे हे। काल्पनिक चमत्कारिक और बे सिर पर की बातो का सत्यवचन महाराज बाबा वाक्यम प्रमाणम कहकर माने जा रहे हें ? आर्यसमाज सदा से सत्य का शोधक ओर सत्य का प्रचारक रहा ह। आर्यसमाज न अपने महापुरुषा महाग्रन्था आर सस्कृति की रक्षा की है। महर्षि दयानन्द ने यागीराज श्रीकृष्ण का उज्ज्वल आदर्श एव प्रेरक चरित्र का प्रमाणपत्र दिया हे – ऐसा काई दे नही सकता हे – व कहते ह **श्रीकृष्ण का गुण कर्म स्वभाव ओर चरित्र महापुरुषो के सदृश है** आर्यसमाज योगीराज श्रीकृष्ण को महापुरुष के रूप म प्रतिष्ठित करता हे। आर्यसमाज मूर्तिपूजा और अवतार नही मानता है। वह चित्र का सम्मान और चरित्र की पूजा का सन्देश दता हे। यदि हम जीवन ओर जगत क लिए सीखना चाहे तो महापुरुषो से कदम कदम पर प्रेरणा सन्देश तथा आदर्श प्राप्त कर सकते है। अपने जीवन का सुधार कर सकते हें।

आज आवश्यकता हे – योगीराज श्रीकृष्ण के वास्तविक स्वरूप और चरित्र को जानने तथा समझने की। इस महापुरुष के जवीन और चरित्र के साथ अनेक भ्रान्तिया व विकृतिया जुड गई हैं। लोगो को सच्चाई व सत्यस्वरूप का बोध ही नहीं है। पूरे इतिहास म योगीराज की उपाधि केवल श्रीकृष्ण का ही मिली है। केसी विचित्रता है कि हम उन्हे भोगीराज के रूप म मान ओर पूजे जा रहे हैं ? वेज्ञानिक युग मे भी तर्क प्रमाण युक्ति व व्यवहार स नही सोच पा रहे हे ? उनके असली जीवन तक नही पहुच पा रहे हे।

यागीराज श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव हमे सन्दश व प्रेरणा दे रहा हे कि आज ससार मे अन्याय अधर्म पाप अशान्ति भ्रष्टाचार अनैतिकता आदि तेजी से बढी हे। हम धर्मपूर्वक आचरण करते हुए सत्य न्याय धम मर्यादा आदि की रक्षा करनी चाहिए। मानवता के रास्ते पर चलना चाहिए। श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन हमे जीने की कला सीखाता है। महापुरुषो के जन्मदिन पूर्व जयन्तिया आदि मनाने की तभी सार्थकता सफलता और विशेषता है – जब हम उनके जीवन चरित्र से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेष्ठ पवित्र सार्थक व परापकारी बना सके।

आर्यसमाज दिवान हाल, दिल्ली

वेद प्रचार सप्ताह

२२ से ३१ अगस्त २००२

समय प्रात ७ ३० बजे श्रावणी, उपाकर्म एव हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया जाएगा। इसी अवसर पर हैदराबाद सत्याग्रहियो का सम्मान किया जाएगा।

आर्यसमाज, हनुमान रोड, नई दिल्ली

श्रावणी पर्व, जन्माष्टमी महोत्सव

२२ अगस्त से ३१ अगस्त २००२

अथर्ववेद पारायण यज्ञ

प्रात ८ से ६ ३० बजे तक

ब्रह्मा आचाय राजू वैज्ञानिक

भजन वेद व्यास साय ६ ३० से ७ ३०

पूर्णाहुति ३१ अगस्त प्रात ८ से ६ ३०

भाषण प्रतियोगिता प्रात ६ ३०

विषय वर्तमान परिस्थिति मे श्रीकृष्ण की रणनीति'

अध्यक्षता प्रि० मोहन लाल

आर्यसमाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक

जनकपुरी, नई दिल्ली ५८

श्रावणी पर्व/ वेदप्रचार पर्व

२२ अगस्त से ३१ अगस्त, २००२

श्रावणी उपाकर्म (यज्ञोपवीत परिवर्तन एव धारण) दर्शनाचार्य श्री विवेक भूषण द्वारा वेद प्रवचन

भारत छोड़ो आन्दोलन एवं स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गोष्ठी

'महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों का भारत'

'आजादी के दीवाने' नामक कैसेट जारी

आर्यसमाजो की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे भारत छोडो आन्दोलन ओर स्वतन्त्रता दिवस की वर्षगाठ का भव्य आयोजन कास्टीटयूशन क्लब मे किया गया जिसकी अध्यक्षता दिल्ली उच्च यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता एव सावदेशिक न्यास सभा के अध्यक्ष श्री रामफल सल न की और सचालन सार्ववेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने किया।

इस कार्यक्रम मे ४० पृष्ठ की एक लघु पुस्तिका का विमोचन किया गया है जिसमे आत्मकथा रूप मे महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित १८५४ ई० की उस अवधि का उल्लेख है जिसमे उन्होने १८५७ की क्रान्ति और स्वतन्त्रता की प्रथम लडाई के लिए बालाजी पेशवा तात्या टोपे अजीमुल्ला खा और झासी की रानी लक्ष्मी बाई को यह कहते हुए प्रेरित किया था कि विदेशी राहु के ग्रास से स्वदेश की रक्षा करो। इस लघु पुस्तक का मूल्य ८/– रुपये है जो सार्वदेशिक सभा के विक्रय केन्द्र मे का प्रमुख केन्द्र रहा। महर्षि दयानन्द तथा उनके अनुयायियो के चरित्र के कारण हिन्दू–मुस्लिम एकता का भी सूत्रपात हुआ।

अमर शहीद भगत सिह के भतीजे श्री किरणजीत सिह ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देशभक्ति ओर आत्म बलिदान की जो भावना प्रज्ज्वलित करने का सकल्प लिया था वह ज्वाला बनकर समूचे विश्व मे फेल गई। उन्ही की प्रेरणा पर सरदार अर्जुन सिह जी को जागृति प्राप्त हुई जिनके पोते शहीद भगतसिह जी ने देश पर बलिदान हाना स्वीकार किया। स्वामी दयानन्द जी के शब्दो से अधिक उनके प्रेरक चरित्र ने जनता को अधिक आकर्षित किया।

अमर शहीद अश्फाक उल्ला खा के पोते श्री अश्फाक ने कहा कि आर्यसमाज देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन

भाजपा सासद प्रो० रासासिह रावत ने कहा कि समूचे देश की शिक्षण सस्थाओ को राष्ट्रभक्ति की भावना विद्यार्थियो मे भरने का प्रयास करना चाहिए और इस गुरुकुलो को आर्यसमाज क इतिहास की पुनरावृत्ति करनी चाहिए।

वरिष्ठतम सासद श्री रामचन्द्र वीरप्पा ने कहा कि आज फिर दश म ऐसा वातावरण बन चुका हे कि महर्षि दयानन्द के अनुयायियो का सामाजिक और राष्ट्रीय कार्यो के लिए फिर से कमर कसनी पडेगी। उन्होने महिलाओ से आग्रह किया कि भावी पीढी को सस्कारित करने की पूरी जिम्मेदारी उन पर है। उन्होने कहा कि धन से सुख सुविधाए खरीदी जा सकती हे आर यहा तक कि मनुष्य तक भी खरीदे जा सकते हे परन्तु श्रेष्ठ आत्माए केवल अच्छ सस्कारो स ही तेयार हो सकती ह।

उन्होने मातृशक्ति से आग्रह किया कि आपने पहले भी राष्ट्र का अमर शहीद भगतसिह रामप्रसाद बिस्मिल तथा अश्फाक उल्ला खा जैसे पुत्ररत्न दिए हे। आशा है भविष्य मे भी राष्ट्र को समुन्नत एव स्वतन्त्र रखने के लिए ऐसे ही रत्न देगी।

मुस्लिम राष्ट्रवादी नेता मालाना महान नागरिको को भारत की प्राचीन सस्कृति को अवश्य ही धारण करना चाहिए जिसमे पवित्र आचरण मानवतावाद और देशभक्ति की शिक्षा दी गई है। उन्होने कहा कि इस मार्ग पर कष्ट अवश्य ही हाते है परन्तु हमे यह याद रखना चाहिए कि घास खाकर दूध देने वाली गाय की ही हमारे देश मे पूजा होती है।

सासद श्री जगमीत सिह बरार ने कहा कि आर्यसमाज की स्थापना बेशक मुम्बई मे हुइ थी परन्तु उसके कार्यो का सबस बडा क्षत्र पजाब रहा। उन्होने कहा कि आज दश म पुनर्जागरण की आवश्यकता ह। कांग्रेस ओर आर्यसमाज न स्वतन्त्रता की लडाई कन्ध से क मिलाकर लडी और महर्षि दयानन्द जी के स्वप्न को साकार किया। उन्होने प्रार्थना करते हुए कहा कि ऐसी देशभक्ति की भावनाए राजनीतिज्ञो मे भी पैदा हो। उन्होने कहा कि आर्यसमाज ने अपने स्थापना काल से ही मानवतावादी कार्यो के द्वारा राष्ट्र सेवा की है।

– शेष भाग पृष्ठ ७ पर



भारत छाडा आन्दालन आर स्वतन्त्रता दिवस की वर्षगाठ क अवसर पर आयोजित विशष गाष्ठी म महर्षि दयानन्द सरस्वती क जीवन स सम्बधित १ ५४ ५५ इ सम्बन्धित कार्या का लघु पुस्तिका क रूप में विमोचन समारोह का दृश्य – बाए से श्री वेदव्रत शर्मा शहीद भगत सिह के भतीजे श्री किरणजीत सिह मोलाना वहीदुद्दीन श्री रामफल बसल पूर्व राज्यपाल श्री वीरेन्द्र वर्मा ससद सदस्य श्री रासासिह रावत तथा शहीद अशफाक उल्ला खा के भतीजे श्री अशफाक। सभा को सम्बोधित करते हुए श्री रासा सिह रावत मच सचालक श्री विमल वधावन श्री रामचन्द्र वीरप्पा ससद सदस्य को आमन्त्रित करते हुए। वक्ता क रूप मे ससद सदस्य श्री जगजीत सिह बरार राष्ट्रवादी मुस्लिम नेता मौलाना वहीदुद्दीन।



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा, श्री जगदीश आर्य कोषाध्यक्ष श्री चन्द्रदेव जी सभा के उपप्रधान आचार्य यशपाल जी आजादी के दीवाने कैसेट का विमोचन करते हुए श्री विमल वधावन श्री विद्यार्णव शर्मा श्री किरणजीत सिह अशफाक उल्ला खा तथा मौलाना वहीदुद्दीन।



भारी सख्या मे आर्य नर नारियो तथा विभिन्न विद्यालयो के छात्रो से खचाखच भरा सभागार। जिन्होंने देश भक्ति और ऋषि भक्ति की भावनाओं को दत्तचित्त एव प्रसन्न चित्त होकर स्वीकार किया।

आर्ष शिक्षाप्रणाली के प्रवक्ता आर्ष विद्वान् पं० युधिष्ठिरजी

– मनमोहन कुमार आर्य

आर्यसमाज के सगठन मे सम्प्रति जो शिथिलताए है उससे समाज अपनी समानधर्मी पुरानी व नवीन सभी सस्थाओ एव इनके प्रवर्त्तको से कई मायनो में पिछड गया है। ऐसे समय में यदि कोई व्यक्ति किसी गुरुकुल मे आर्ष प्रणाली से पढकर स्वामी दयानन्द के मिशन की पूर्ति में सम्मिलित किसी गुरुकुल से जुडकर ब्रह्मचारियो को आर्ष शिक्षा प्रणाली से व्याकरण एव वैदिक साहित्य के अध्यापन में प्रवृत्त होता है तो यह आर्यसमाज उस गुरुकुल व उसक सचालको तथा उस आचार्य के लिए भी आत्म गौरव की बात है।

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा (देहरादून) के आचार्य प० युधिष्ठिरजी एक ऐसे विद्वान् पुरुष है जो आर्ष शिक्षा पद्धति से व्याकरण एव सस्कृत साहित्य का अध्ययन करा रह हे। आचार्य युधिष्ठरजी का जन्म भाद्रपद सम्वत २०१६ विक्रमी तदनुसार सन् १६६० ईस्वी मे नेपाल के विराट नगर के समीप एक जनपद मौरग के ग्राम गोविन्दपुर मे हुआ था। उनका जन्म स्थान बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के पास है। उनके पिता का नाम पशुपति नाथ उप्रेती तथा माता का नाम हरिमाया उप्रेती है। वर्षों पूर्व उनके पूर्वज उत्तराचल राज्य के कुमाऊ क्षेत्र से नेपाल जाकर बस गए थे। पाच भाई तथा तीन बहनो में वह सबसे ज्येष्ठ है। कक्षा ७ तक की उनकी शिक्षा अपने जन्म स्थान के गाव मे हुई। गुरुकुल एटा के आचार्य वागीश सन १६०४ में नेपाल मे आर्यसमाज मेची अचल जिला झापा मे प्रचारार्थ गए और वहा उन्होने नेपाल के विद्यार्थियों को सस्कृत व्याकरण एव वेदाध्ययन के लिए गुरुकुल एटा आने का निमन्त्रण दिया। यह उल्लेखनीय है कि उस समय गुरुकुल ऐटा देश-विदेश मे वेदपाठ एव आर्ष शिक्षा के अध्यापन के लिए विख्यात गुरुकुल था। उनके इस निमन्त्रण पर नेपाल से सात-आठ ब्रह्मचारी अध्ययन हेतु एटा आए और एक वर्ष अध्ययन करने के पश्चात् जब अवकाश के दिनो में नेपाल लौटे तो वहा उन्होने वेद-पाठ, योगासन भजन आदि का प्रदर्शन किया जिससे नेपाल के लोग बहुत प्रभावित हुए। प० युधिष्ठरजी के पिता ने भी ब्रह्मचारियो का प्रदर्शन देखा और अपने पुत्र को एटा जाकर अध्ययन करने की प्रेरणा की। अपने पिता की प्रेरणा दी वह अपने अन्य ५-६ साथियों के साथ गुरुकुल एटा पधारे। उस समय उनकी अवस्था १४-१५ वर्ष के बीच थी।

गुरुकुल एटा की स्थापना यज्ञ प्रक्रिया कर्मकाण्ड तथा दर्शनो के विद्वान श्री ब्रह्मानन्द दण्डी ने की थी जो कटटर ऋषि-भक्त सस्कृत-हिन्दी प्रेमी तथा अग्रेजी के कट्टर विरोधी थे। स्वामी श्रद्धानन्द की बलिदान अर्धशताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित वृहद् यज्ञ के ब्रह्मा उन्हें ही बनाया गया। गुरुकुल के निर्माण मे आपने एक भी ऐसी ईट नहीं लगने दी जिस पर निर्माता का नाम अग्रेजी अक्षर मे अकित हो। उनका मानना था कि यदि अग्रेजी अक्षरों से अकित ईट हमारे भवन मे लगेगी तो फिर अग्रेजी का विरोध करने का नैतिक अधिकार हमे नहीं होगा। अत ईंटों के निर्माता को उन्होंने हिन्दी अक्षरों मे कम्पनी का नाम अकित करने के लिए बाध्य किया। गुरुकुल एटा मे ८४ खम्भो की एक विशाल एव भव्य यज्ञशाला है तथा युधिष्ठरजी के अध्ययन काल मे यहा लगभग १०० ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे। गुरुकुलो की गतिविधियों के सचालन के लिए दान मुख्य रूप से मुम्बई के लोगो से प्राप्त होता था। प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के शिष्य श्री आचार्य ज्योति स्वरूप गुरुकुल के प्रथम आचार्य थे तथा उन्हीं के पुत्र आचार्य वागीश जी हैं। गुरुकुल एटा की एक विशेषता यह है कि यहा ब्रह्मचारियो को अन्य विश्वविद्यालय से परीक्षाए आदि न दिलाकर व्याकरणाचार्य की अपनी ही उपाधि दी जाती है।

सन १६७६ से १६८३ तक युधिष्ठिरजी ने गुरुकुल एटा मे अध्ययन कर 'व्याकरणचार्य की उपाधि प्राप्त की। वह गुरुकुल के मेघावी छात्रो मे प्रमुख थे। गुरुकुल एटा के सचालक उन्हें गुरुकुल एटा मे ही आचार्य नियुक्त करना चाहते थे परन्तु वह सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की परीक्षा देना चाहते थे जिसकी उन्हें अनुमति नहीं दी गई। अत उन्हे गुरुकुल छोडना पडा। गुरुकुल में उन्होंने अष्टाध्यायी प्रथमावृति काशिका महाभाष्य निरुक्त निघण्टु, योग दर्शन वैशेषिक दर्शन, एव न्याय दर्शन आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया। स्वामी मनीषानन्द जी ने सस्कृत के अध्ययन में सहायता की जो बाद में उनके अध्ययन में वरदान सिद्ध हुए।

गुरुकुल एटा के पश्चात उन्होने गुरुकुल महाविद्यालय मे तीन वर्ष तक अध्ययन किया और सन् १६८६ में यहा की बी०ए० समकक्ष विद्याभास्कर उपाधि प्राप्त की। यहा अध्ययन के दिनो मे उन्होंने गुरुकुल महाविद्यालय में सरक्षक के रूप मे सेवा भी की। अपने कर्त्तव्य के प्रति समर्पित एव निष्ठावान रहने के कारण उनका भोजन अस्त-व्यस्त रहता था जिससे स्वास्थय बिगडने लगा और अन्तत उन्हें यह कार्य छोडना पडा। अध्ययन के मध्य आर्थिक समस्याओं ने भी उनके अध्ययन में बाधा उत्पन्न की जिसका समाधान एटा के स्वामी मनीषानन्द ने अपने एक गुजराती भक्त श्री धीरूभाई तेजमल आर्य के द्वारा किया। श्री धीरूभाई उन्हे प्रत्येक माह २०० रुपये की आर्थिक सहायता देने लगे जिससे उनके अध्ययन में सहायता मिली। एक वर्ष के पश्चात् यह सहायता मिलनी बन्द हो गई। विद्याविलासिता का उनका स्वभाव विपरीत परिस्थितियो में भी मन्द न हुआ। सन् १६८८ में उन्होने गुरुकुल कागडी से सस्कृत साहित्य मे एम०ए० की उपाधि प्राप्त की साथ ही आर्य साहित्य इतर सस्कृत साहित्य के अतिरिक्त दर्शनों आदि नाना सस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन भी उन्होंने पूरा किया।

अध्ययन समाप्त कर वह आजीविका की तलाश मे अनेक गुरुकुलो मे गए जहा उन्हे अध्यापन के साथ अनेक उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करने के लिए कहा गया, परन्तु वेतन की राशि नहीं बताई गई। बनारस सहित विभिन्न स्थानों में अध्यापन का कार्य ढूढकर जब वह ज्वालापुर लौटे तो सन् १६८६ में गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के आचाय हरिगोपाल जी ने गुरुकुल मे उन्हें अध्यापन हेतु नियुक्त किया। उन्होंने बी०ए० के समकक्ष तक की कक्षाए अध्यापनार्थ दी गई। अध्यापन के साथ वह गुरुकुल की देखभाल भी करते रहे। यहा लगभग तीन वर्षों तक सेवा करने के पश्चात् वर्ष १६६०–६१ में त्याग–पत्र देकर अपने पैतृक गाव नेपाल आ गए जिसका कारण यहा स्वास्थ्य ठीक न रहना था। विराट नगर नेपाल के गुरुकुल मे बुलाकर उन्हे अध्यापनार्थ नियुक्त किया गया जहा उन्होंने लगभग आठ वर्ष तक कार्य किया और शिक्षण के साथ अन्य दायित्वो का भी वहन किया परन्तु उचित वेतन राशि न मिलने के कारण उनके लिए कार्य करना सम्भव नहीं रहा। यहा लगभग १५० विद्यार्थी अध्ययन करते थे जिनमे गुरुकुल मे ही निवास करने वाले तथा प्रतिदिन अपने घरो से आने वाल दोनों तरह के विद्यार्थी थे। अब यह गुरुकुल एक विद्यालय का रूप ग्रहण कर चल रहा है।

सन् १६६३ मे उनका विवाह हुआ। उनके एक पुत्र व एक पुत्री है। उनकी पत्नी बच्चे तथा परिवार के अन्य लोग नेपाल में रहते हैं। दो वर्ष पूर्व देहरादून में श्री मद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली' की एक शाखा के रूप में आरम्भ किए गए गुरुकुल मे आचार्य हरिदेव जी ने उन्होंने अध्यापनार्थ आचार्य नियुक्त किया। ११ जुलाई २००० को इस गुरुकुल मे पहुचकर कार्य आरम्भ करने के बाद से वह यहा निरन्तर अध्यापन करा रहे हैं। वह यहा सम्पूर्ण सस्कृत व्याकरण एव सस्कृत साहित्य पढाते हैं। आचार्य हरिदेव जी एव गुरुकुल पौन्धा के सचालक धनजय शास्त्री आचार्य युधिष्ठिर जी की विद्या ज्ञान एव कार्य के प्रशसक हैं और उन्हे पूर्ण आदर देते हैं। अपनी स्थापना के दो वर्षों में ही यह गुरुकुल निरन्तर प्रगति की ओर है। गुरुकुल में ४ से १६ जून २००२ तक आयोजित वार्षिकोत्सव सामवेद पारायण यज्ञ एव आर्यवीर दल के राष्ट्रीय शिविर के अवसर पर अनेक गुरुकुलों के आचार्य गुरुकुलो के पुराने विद्यार्थी आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् एव साधु-सन्यासी भारी सख्या में गुरुकुल पौन्धा पधारे। आचार्य युधिष्ठिर के गुणों व नाम आदि से गुरुकुलों से जुडे लोग प्राय परिचित हैं।

आचार्य युधिष्ठिर जैसे विद्वान् व्यक्ति का आर्यसमाज में होना और ब्रह्मचारियों को गुरुकुलीय आर्ष प्रणाली से अध्ययन कराना आर्य जगत् के लिए गौरव की बात है।

– देहरादून

"महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों का भारत"
८ अगस्त, २००२ (गुरुवार) को आयोजित विशेष संगोष्ठी में पारित प्रस्ताव

हम भारत के नागरिक महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों एव निर्देशो मे पूर्ण आस्था व्यक्त करते हुए यह सकल्प लेते है कि भारत की प्राचीन विरासत-गौरव पूर्ण वैदिक सस्कृति के सच्चे अनुयायी बनते हुए सदचरित्र और ईमानदारी के बल पर समाज को श्रेष्ठ मार्ग पर चलाने का हर प्रयास करेगे। भारत राष्ट्र को विदेशी व्यवस्थाओ के हस्तक्षेप से मुक्त कराने मे भी हम हर सम्भव प्रयास करेगे। विदेशी के स्थान पर स्वदेशी हमारे जीवन का प्रमुख लक्ष्य होगा।

स्वधर्म की स्थापना

स्वधर्म की स्थापना से हमारा अभिप्राय वैदिक सिद्धान्तों के उस विशाल रूप से हे जो सामाजिक एकता के लक्ष्य से सहनशीलता ओर उदारता के साथ साथ यथायोग्य व्यवहार का उपदेश करते हैं। धर्म शब्द का प्रयोग मतो या मजहबो के सन्दभ मे नहीं किया जाना चाहिए। लोगो के मजहब तो अलग–अलग हो सकते है परन्तु धर्म नहीं। मनुष्य जाति का धर्म केवल ध ारण करन योग्य वे नियम हैं जो उसे श्रेष्ठ बनाने मे सहायक हो। इसलिए अपने उत्थान के साथ "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अथात विश्व को श्रेष्ठ बनाना भी हमारा सामूहिक लक्ष्य है।

सामाजिक कार्यो को करते समय किसी भी प्रकार क लाभ लालच आलस्य मे न फसकर त्याग तपस्या कर्मठता आर बुद्धिमत्ता से काय करना व्यक्तिगत स्वार्थ क स्थान पर परोपकार की भावनाओ को स्वय धारण करना तथा भारतवासियो को इसके लिए प्रेरित करना हमारे जीवन का सकल्प होना चाहिए।

आर्यसमाज से सम्बन्धित सस्थानो गुरुकुलो ओर विद्यालयो आदि का हम देशभक्त ईश्वरभक्त तथा सामाजिक शक्ति का केन्द्र बनाने मे सफल हो पाए इसक लिए हमे किसी भी व्यक्ति का सहयोग प्राप्त करने म सकाच नही करना चाहिए।

हमे भारत के नागरिकों के मन मे इस सिद्धान्त को भी स्थापित करने का सदेव प्रयास करते रहना चाहिए कि दश वासियो की सेवा ही सच्ची राष्ट्र सेवा हे। इस सम्बन्ध मे आर्यसमाज का अपना एक गोरवपूर्ण इतिहास हे।

हमारा इतिहास ही हमारा भविष्य है

अत भारत क उज्ज्वल भविष्य की स्थापना क लिए आर्यसमाज को अपन गोरवपूर्ण इतिहास को दोहराना होगा।

हम सकल्प करते है कि आर्यसमाज के राष्ट्रवादी एव मानवतावादी कार्यो मे एक अनुशासनबद्ध एव कर्मठ सिपाही की तरह हर सहयोग करने के लिए सदेव तत्पर रहेगे जिससे इस जीवन का सदुपयोग हम इस देश ओर धर्म की रक्षा के लिए कर पाए।

प्रस्तावक **विमल वधावन,**
वरिष्ठ उप प्रधान
सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रेम और श्रद्धा की मूर्ति
श्री ओंकारनाथ जी नहीं रहे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कमठ सदस्य मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा के प्रबन्धक न्यासी श्री ओकारनाथ जी का ७ अगस्त २००२ को हृदयगति रुक जान स आकस्मिक निधन हा गया।



स्व० श्री ओकार नाथ आर्य जी

सार्वदशिक आ । प्रतिनिधि सभा क वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन टकारा ट्रस्ट क मन्त्री श्री रामनाथ सहगल तथा सार्वदेशिक सभा क उपमन्त्री श्री वाचोनिधि आर्य उनकी शोक सभा मे भाग लेने क लिए मुम्बइ पहुचे।

श्री ओकारनाथ आर्य अपने पीछ अपनी धर्मपरायणा पत्नी श्रीमती शिवराजवती विवाहित पुत्री बहन सविता भसीन तथा दो विवाहित पुत्र श्री सुधीर एव श्री सुनील तथा उनका सुखी सम्पन्न परिवार छोड गए हे।

१९२१ ई० म जन्में श्री ओकारनाथ जी ने ८२ वर्ष की आयु मे दह त्याग किया। उनकी प्राणवायु न ब्रह्मरन्ध्र स प्रस्थान किया। चिकित्सकों तथा प्रत्यक्ष दशियो क अनुसार देहावसान क समय उनके मस्तिष्क मे दरार आ गइ।

उनकी स्मृति म शोक सभा का आयोजन १० अगस्त को आर्य विद्या मन्दिर तथा ११ अगस्त का आयसमाज सान्ताक्रुज मे किया गया। जिसका सचालन क्रमश श्री सामदव शास्त्री तथा श्री सगीत आर्य ने किया।

पृष्ठ ५ का शेष भाग

'महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों का भारत'..

उन्होने कहा कि १९२१ मे ब्रिटिश शासन के दौरान जब सर्वे किया गया था तो आर्यसमाजियो की कुल जनसख्या चार लाख इकसठ हजार बताई गई थी जिनमे से दो लाख साठ हजार आर्यसमाजी पजाब के निवासी बताए गए थे। इससे यह पता लगता है कि पजाब आर्य समाज की गतिविधियो का मुख्य केन्द्र रहा है।

उन्होने कहा कि एक बार सर सैयद अहमद खा ने लाहौर क आर्यसमाज के विद्यालय मे वहा के अधिकारियो से एक बार कहा था कि अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय का भवन आपके भवन से सुन्दर है वहा की प्रयोगशाला (लेबौरेटरी) तथा अन्य व्यवस्थाए आपसे अच्छी हैं परन्तु आपके पास महात्मा हसराज जैसे त्यागी–तपस्वी की उपस्थिति हमारी सस्था मे नही है। यह घटना साबित करती है कि त्याग और तपस्या के आधार पर ही सस्थाओ का भविष्य उज्ज्वल होता है।

श्री बरार ने कहा कि भारत की सभी समस्याओ का समाधान नागरिको की एकता मे है और यही महर्षि दयानन्द सरस्वती का भी सन्देश था।

मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए पूर्व राज्यपाल श्री वीरेन्द्र वर्मा ने कहा कि स्वतन्त्रता सेनानियो की समूची फोज के पीछे स्वामी दयानन्द की ही प्रेरणा थी। उन्होने कहा कि ६ अगस्त १९४२ को महात्मा गाधी जी ने भारत छोडो आन्दोलन का आह्वान किया। उन्होने भी महर्षि दयानन्द सरस्वती की तरह हमेशा देश की सामाजिक बुराइयो और भ्रष्टाचार के विरोध मे आवाज उठाई।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने इस सम्मेलन का प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमे यह सकल्प व्यक्त किया गया हे कि स्वदेशी और स्वधर्म की स्थापना के लिए समूचे भारतवर्ष मे किसी भी बलिदान को बडा न समझते हुए राष्ट्र सेवा के कार्यो मे सहयोग करे।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन द्वारा तैयार प्रस्ताव को अलग से इसी पृष्ठ पर ऊपर प्रकाशित किया जा रहा है।

शोक-प्रस्ताव

आयसमाज पखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली–५८ की कार्यकारिणी समिति एव समस्त सदस्यगण आर्य जगत के कमठ एव श्रद्धावन नेता आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान तथा टकारा ट्रस्ट के मेनेजिग ट्रस्टी (मुख्य) श्री ओकार नाथ आर्य के आक्समिक देहावसान से अत्यन्त दुखी हे।

आप देश विभाजन के समय लाहोर से बम्बई आकर स्थापित हुए और जीवन पर्यन्त सर्वात्मना वैदिक सस्कृति के प्रचार प्रसार मे समर्पित रहे। मुख्य न्यायाधीश स्व० श्री मेहर चन्द महाजन व महात्मा आनन्द स्वामी जी को आपन वेदिक सस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु अधिक से अधिक सहयोग किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के प्रति आपकी श्रद्धा अतुलनीय थी। आपने महर्षि के जन्म स्थान टकारा को विश्व के मानचित्र पर लाने म सराहनीय कार्य किया।

आर्यवीर दल महासम्मेलन दिल्ली (१९९८) सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन बम्बई (२००२) तथा पूर्व के सभी महासम्मेलन आपके सहयोग से सफल हुए थे।

यज्ञ के प्रति आपकी श्रद्धा अकथनीय थी। दैनिक यज्ञ आपके जीवन का अभिन्न अग था। जिस किसी कार्यक्रम मे जाते समय से पूर्व उपस्थित होकर यजमान अवश्य बनते ओर दान दक्षिणा देते थे। इस आर्यसमाज मे बम्बई महासम्मेलन की सफलता के बाद सपत्नीक आए और समय से पूर्व पहुचकर यजमान के आसन पर विराजमान हुए बम्बई महासम्मेलन को सफल बनाने मे आपके कार्य को देखते हुए इस समाज ने आपको व केप्टन देवरत्न आर्य को सिक्को से तौलकर आपका सम्मान किया।

आपकी आर्यजगत को अभी बहुत आवयकता थी जिसकी पूर्ति असम्भव नही तो कठिन अवश्य है। परन्तु विधाता का विधान अटल है और हम सब उसके आगे नत मस्तक है। परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि दिवगत आत्मा को सन्मार्ग पर प्रेरित करे और परिवार तथा निकट सम्बन्धियो को इस दारुण दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

– *रमेशचन्द्र, मन्त्री*

R N No 32387/77 Posted at N.D P S O on 22-23/08/2002 दिनांक १९ अगस्त से २५ अगस्त, २००२ Licence to post without prepayment, licence No. U (C) 139/2002

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल-- 11024/2002, 22-23/08/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू० (सी०) १३६/२००२

२१६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्या
हरिद्वार (उ० प्र०)

धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए
आवश्यक सूचना एवं अपील

क्या आप जानते हैं कि ईसाई मिशनरी करोडो अरबो रुपया अपने विदेशी दान दाताओ सरकारो और अन्य ईसाई सगठनो से भारत मे प्राप्त करके उसका भारत के गरीब पिछडे और विशेष रूप से दलितो और हरिजनो को ईसाई बनाने के लिए प्रयोग करते है।

इसके लिए भारत मे ईसाइयो का सगठन २४ बडे क्षेत्रो मे बटा हुआ है। जिन्हे "आर्च डायसिस" कहते है। इन आर्च डायसिसो मे लगभग १४६ बिशप कार्य कर रहे है। एक डायसिस के अधीन लगभग पचास हजार ईसाई आते हैं। इसके अतिरिक्त लगभग २००० से अधिक की सख्या मे विभिन्न प्रकार के सस्थान ईसाइयो द्वारा भारत मे चलाए जा रहे है।

लोभ लालच और दबाव के अतिरिक्त अन्य कई प्रकार के हथकडे अपनाकर धर्मान्तरण की गतिविधिया चलाई जाती हैं। धर्मान्तरण के साथ साथ जहा सख्या पर्याप्त हो जाती है वहा राजनीतिक नियन्त्रण के भी प्रयास प्रारम्भ होते हैं।

इस विशाल व्यवस्था वाले धर्मान्तरण के प्रयासो का विरोध करने के लिए ओर वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए हमारे पास साधनों का नितान्त अभाव रहता है। हालाकि हमारे प्रयास इन धर्मान्तरण विरोधी कार्यों को लेकर निरन्तर चरैवेति चरैवेति के सिद्धान्त पर अग्रसर हैं परन्तु लक्ष्य से अभी बहुत दूर है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अभिन्न अग अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के तत्वावधान मे आदिवासी तथा उत्तर पूर्वी राज्यो मे विशेष आश्रमो की स्थापना की गई है जिनके माध्यम से वहा के क्षत्रा से आदिवासी युवक युवतियो को प्रतिवर्ष दिल्ली मे वैचारिक क्रान्ति शिविर मे भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया जाता है। यह शिविर प्रतिवर्ष मई मास मे आर्यसमाज मन्दिर रानी बाग दिल्ली मे आयोजित किए जाते हैं। इन शिविरो मे जो शिविरार्थी अत्यधिक उत्सुकता वाले प्रतीत होते है उन्हे वापस अपने क्षेत्रो मे जाकर बालवाडिया खोलने के लिए नियुक्त किया जाता है। एक बालवाडी खोलने वाले को ५००/— रुपये प्रतिमाह सहायता दी जाती हे। इस बालवाडी के माध्यम से उस क्षेत्र मे वैदिक धर्म प्रचार के कार्य नियमित चलाए जाते हैं। यह बालवाडिया अपने क्षेत्रो मे धर्मान्तरण की गतिविधियो को पाव नहीं जमाने देती हैं। यह बालवाडिया एक प्रकार से वैदिक धर्मरक्षा की चौकी का काम करती है। इस वा बालवाडियो की सख्या में वृद्धि की गई है।

आपसे यह अपेक्षा की जाती है कि कम से कम एक बालवाडी का खर्च ५००/— रुपये प्रतिमाह के दर से (छ हजार रुपये प्रतिवर्ष) अनुदान राशि अपनी तरफ से भिजवाकर कृतार्थ करे।

आपको विदित होगा कि अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का ही एक अग है। अनुदान राशि "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" अथवा "अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ" के नाम से दी जा सकती है। इस प्रकार के सहयोग के लिए अन्य आर्य महानुभावो को भी विशेष रूप से प्रेरित करे और यदि आवश्यक हो तो हमसे सम्पर्क करवा दे। आशा है इस कार्य मे आपका तथा आपकी आर्यसमाज का सहयोग अवश्य प्राप्त होगा।

— विमल वधावन
वरिष्ठ उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली—११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक ३६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार २६ अगस्त से १ सितम्बर २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

मेवात में पूरे परिवार का जबरन धर्मान्तरण

मदुरै में २५० बच्चों को गुमराह करके ईसाई बनाया

विगत माह मे धर्मान्तरण रूपी राष्ट्रद्रोही षडयन्त्र के काले बादल अधिक तीव्रता के साथ दिखाई दिए है। लगातार दो बडी घटनाओ ने राष्ट्रवादी जनता को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि धर्मान्तरण से निपटने के लिए यदि कोई ठोस कार्यक्रम अभी भी न बनाया गया तो अगले कुछ वर्षो मे धर्मान्तरण की गतिविधिया बहुत बडे पैमाने पर पहुच सकती है।

विगत माह हरियाणा मे एक बाल्मीकि हिन्दू परिवार के लगभग तीन दर्जन सदस्यो को कुछ लालच देकर और डरा धमका कर इस्लाम धर्म कबूल करवा दिया गया था। उनमे से एक सदस्य २१ वर्षीय वीरसिह किसी प्रकार निकल भागा तो उसने प्रशासन के सामने अपना बयान देकर यह रहस्योदघाटन किया कि गाव के कुछ मुस्लिम परिवारो ने परिवार की महिलाओ और बच्चो के विरोध के बावजूद जबर्दस्ती यह धर्मान्तरण करवाया है। परिवार के कुछ बुजुर्ग सदस्य अवश्य ही किसी लालच की वजह से धर्मान्तरित होना चाहते थे। अपनी मा कमलेश की मदद से वीरसिह किसी तरह घर छोड कर भाग निकला।

धर्मान्तरण के बाद इस परिवार के सदस्यो को मुसलमानो ने पूरी तरह से कैद करके रखा है।

इस घटना की सूचना जैसे ही समाचार पत्रो के माध्यम से सार्वदेशिक सभा को प्राप्त हुई तो सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा क मन्त्री आचार्य यशपाल जी स सम्पर्क किया और गुडगाव की समस्त आर्यसमाजो के अधिकारियो की एक बैठक मे भाग लेने वहा पहुचे।

इस बैठक मे गुडगाव के आर्यजनो को इस बात के लिए प्रेरित किया गया कि हमे हर हालत मे वीरसिह का साथ देना चाहिए और जबरदस्ती किए गए इस धर्मान्तरण के खिलाफ आवाज उटानी चाहिए। विडम्बना यह है कि इस परिवार के दो चार बुजुर्ग पुरुषो की जिद और मनमानी के कारण इस परिवार की महिलाओ और बच्चो को भी इस राष्ट्र विरोधी षडयन्त्र का शिकार होना पडा है।

इस बैठक मे उपस्थित आर्य नेता श्री कन्हैया लाल तथा श्री पदमचन्द्र जी ने बताया कि आज भी इस परिवार के लोग कुछ असामाजिक तत्वो की अघोषित कैद म है। उन्हाने बताया कि आर्यसमाज इस घटना का लेकर एक व्यापक जन जागृति अभियान चलाना चाहता है। जिसमे अन्य राष्ट्रवादी वर्गो को भी साथ लिया जाएगा।

गुडगाव मे श्री विमल वधावन तथा आचार्य यशपाल जी अन्य आर्यनेताओ के साथ सनातन धर्म के सुप्रसिद्ध सन्यासी श्री भक्तिस्वरूपानन्द जी से भी मिले और आगे के कार्यक्रम पर विचार किया गया।

अगले दिन सार्वदेशिक सभा का एक शिष्ट मण्डल गृह मन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी जी की अनुपलब्धता के कारण गृह मन्त्रालय के उच्च अधिकारियो से मिला और बाद मे गृह राज्यमन्त्री श्री आई०डी० स्वामी से भेट की।

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

धर्मान्तरण रुपी विषलता आपके सहयोग से रुक सकती है

अन्तर्वेदना को अंगीकार करें

धर्मान्तरण करने के लिए ईसाइयत और इस्लाम को करोडो अरबो रुपये की विदेशी सहायता मिल रही है आदिवासी ग्रामीण और गरीबी से ग्रस्त अचलो मे इनके मिश्नरियो ने चप्पे चप्पे पर समाज कल्याण के कई कार्यक्रम चलाकर जनता को अपनी ओर आकर्षित करने का हर प्रयास किया है। इस प्रयास के अतिरिक्त झूठे लोभ लालच छल कपट और गैर कानूनी दबाव का प्रयोग करने में भी यह लोग किसी प्रकार का सकोच नहीं करते।

इस देश का दुर्भाग्य है कि भारत के सविधान द्वारा प्रदत्त धर्म की स्वतन्त्रता के अधिकार रूपी कवच का इस्तेमाल करते हुए यह सारे धर्मान्तरण रूपी षडयन्त्र इस देश की सामाजिक व्यवस्था को आमूल चूल परिवर्तित करने के उददेश्य से किए जा रहे है। इन्ही षडयन्त्रो के माध्यम से इस देश के मजबूत राष्ट्रवाद को भी दफन करने की योजना को लागू किया जा रहा है। जबकि भारत का सर्वोच्च न्यायालय कई फैसलो मे यह व्यवस्था जारी कर चुका है कि लोभ लालच या दबाव के द्वारा किया गया धर्मान्तरण धर्म स्वतन्त्रता मे शामिल नहीं माना जा सकता। इसके बावजूद हमारी सरकारे लोभ लालच और दबाव से हुए धर्मान्तरण को प्रतिबन्धित करने मे हमेशा सकोच करती रही है परिणामत आज तक ऐसा कोई कानून हमारे देश मे नही बन पाया।

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

मॉरीशस जाने के इच्छुक महानुभाव ५ सितम्बर, २००२ तक सम्पर्क करें

मॉरिशस आर्यसभा द्वारा आयोजित महासम्मेलन में प्रमुख कार्यक्रम वयोवृद्ध आर्यनेता श्री मोहनलाल मोहित जी का १००वा जन्मदिवस मनाया जाना है। श्री मोहित जी के सुपुत्र श्री राजन मोहित ने सार्वदेशिक सभा को सूचित किया है कि भारत से आने वाले उन महानुभावों के लिए जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित भ्रमण दल में शामिल होंगे, भोजन तथा मॉरीशस के स्थानीय भ्रमण की व्यवस्था वे व्यक्तिगत रूप से उपलब्ध कराएगे। इसमे लगभग ३५००/- प्रति व्यक्ति खर्च कम हो जाएगा। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य जी ने कहा है कि पूर्व घोषित २८५००/- रुपये के स्थान पर केवल २५०००/- रुपये ही प्रत्येक यात्री से लिए जाएगे। अत समस्त इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि २५०००/- रुपये की राशि का बैंक ड्राफ्ट (कृपया चैक न भेजें) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम ५ सितम्बर से पूर्व अवश्य सभा कार्यालय में पहुचा दें। इसके बाद आने वाले नामों को यात्रा में शामिल करना कठिन होगा। शेष सूचना पूर्ववत् रहेगी।

1 मारीशस यात्रा दिल्ली से 18 सितम्बर, 2002 (बुधवार) दोपहर 2 बजे की हवाई उडान से प्रारम्भ होगी और वापसी 25 सितम्बर 2002 (बुधवार) को दोपहर तक दिल्ली पहुचेगी।

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

आर्यसमाज का असीम सामाजिक काम

बिशम्बर नाथ अरोडा

आर्यसमाज का छठा नियम पूरे विश्व के शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उत्थान का सन्देश देता है। हमारा कर्त्तव्य केवल ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ तक ही समित नही वरन मनुष्यमात्र के कल्याणार्थ उसके शारीरिक मानसिक व आत्मिक एव नैतिक विकास के क्षेत्रो को भी अपने घेरे मे लेना। महर्षि दयानन्द ने जहा वेदो के पढने पढाने और सुनने सुनाने को परम धर्म की सज्ञा दी वहा उन्होने हिन्दू समाज को प्रचलित कुरीतियो से भी मुक्त करने का आह्वान किया। महर्षि के जीवनकाल मे नितान्त क्रान्तिकारी लगने वाले सुधारो जैसे नर नारी की समानता नारी को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार स्वयवर का समर्थन बाल विवाह बेमेल विवाह का कडा विरोध विधवा विवाह एव नियोग का समर्थन सती प्रथा का विरोध छुआ छूत का विरोध कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था फलित ज्योतिष को ढोग ठहराना कब्र दरगाह मडी आदि पर मन्नत मानने को मूर्खता बताना जादू टोना तागा तवीज झाड फूक अन्धविश्वास का कडा विरोध श्राद्ध करवा चौथ एव उपवासो को सारहीन अर्थहीन बताना और हर प्रकार की जड पूजा का विरोध आदि कार्य भी स्वामीजी हमारे जिम्मे लगा गए थे।

अब देखना यह है कि हम इन सामाजिक सुधारो को कितना आगे बढा पाए है या नहीं। निष्पक्ष विवेचन करने से साफ पता चलता है कि स्वामीजी द्वारा निर्दिष्ट कुछ कार्य ता सरकार ने ही अपना लिए है कुछ साक्षरता बढने के कारण वैचारिक जागृति आने के कारण और कानून आदि बन जाने के कारण ठीक होते जा रहे है। इनमे कुछ योगदान आर्यसमाज का है कुछ शेष हिन्दू समाज का और कुछ सरकार का। आज सवैधानिक दृष्टि से नर नारी के अधिकार एव कर्त्तव्य समान है। कानून लिग के आधार पर किसी को छोटा बडा नहीं मानता परन्तु समाज आज भी स्त्री को पुरुष से दूसरे दर्जे पर ही समझता है। बहुत से आर्य परिवारो मे भी स्त्रियो की भावनाओ का ध्यान नहीं रखा जाता। आज भी हिन्दू समाज मे नारियो को घर मे पर्दे मे बन्द रखने की प्रथा है। आज भी दहेज प्रथा न केवल है बल्कि छुआछूत की बीमारी की तरह बढ रही है और इस हमाम मे आर्यसमाजी भी पीछे नही है। पढीं लिखी सुन्दर सुघड और कमाऊ महिलाओ को भी सताया जाता है मारा जाता है परेशान किया जाता है घर से निकाला जाता है और कम दहेज लाने के ताने दिए जाते है। कोई कोई तो जवान दुल्हनो से अधिक धन पाने की लालसा मे हत्या भी कर देते है। पढे लिखे भी गर्भ मे स्थित बालक का लिग पता करवा कर कन्या होने की सूरत मे भारी खर्च करके भी गर्भपात करा देते है। आज भी राजस्थान उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश अन्ध्रा और प्रगतिशील पजाब व हरियाणा जैसे राज्यो मे नवजात कन्याओ को आक का दूध पिलाकर मार डालने की प्रथा कहीं कहीं प्रचलित है। सक्षेप मे नर नारी की समानता का वेदो का सपना पूर्णत यह पूरा नही हो सका। अब आर्यसमाज भी इस दिशा मे कोई प्रयत्न नही कर रहा।

नारी शिक्षा का कार्यक्रम सरकार ने भी अपना लिया है और आर्यसमाज की देखा देखी सनातन धर्म जैनमत एव सिक्ख मत वाले भी इस कार्य की उपयोगिता के कायल हो गए है और प्रत्येक ने नारी शिक्षा के लिए अपने अपने विद्यालय खोल रखे है। आज बाल विवाह के समर्थको एव विधवा विवाह क विरोधियो की सख्या नगण्य रह गई है। केवल मात्र अनपढ एव रूढिवादी बिरादरी मे ही ये बुराइया रह गई है। पढी लिखी कन्याए कभी कभार अपने मन पसन्द युवक से विवाह करने मे कामयाब हो जाती है अन्यथा आज भी विवाह मा बाप एव बडे बुजुर्गो का इच्छानुसार ही करना पडता है। अपने ही सहधर्मियो से छुआ छूत करने का पिशाच कुछ कमजोर तो पडा है परन्तु अब भी बडा शक्तिशाली है। अधिक दुख की बात यह है कि वैदिक मतानुयायी (विशेषत महिलाए) भी अधिकतर छुआ छूत मे विश्वास रखते है। मुह से चाहे कुछ कहते रहे। सती प्रथा लगभग समाप्त हो गई हैं हालाकि राजस्थान से कभी कभी एकाध सती होने की सूचना मिल जाती है। कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का सिद्धान्त तो जड ही नही पकड सका।

समाज मे फैले ढोग जैसे जादू टोना झाड फूक जड पूजा तागा तावीज कब्रमढी पूजन गुरुडम ज्योतिष श्राद्ध उपवास आदि तो घटने की बजाए बढ गए है। खेद का विषय है कि खूब शिक्षित लोग ओर राजनेता भी इन कुरीतियो को बढा रहे है। आज ठगो और पाखण्डियो की पाचो अगुलिया घी मे है और उनका विरोध करने का किसी मे साहस नही। आर्यसमाज भी यह सब मूकदर्शक बनकर देख रहा है। पिछले पचास वर्षो मे इनके उन्मूलन के लिए कोई आन्दोलन नही चला पाया। आजकल जन्म पत्री (जिसे स्वामीजी ने शोक पत्र की सज्ञा दी थी) का प्रचलन भी तेजी से बढा है और इस व्यापार मे पण्डितो की खूब चादी हो रही है। आज उन्हे ललकारने वाला कोई दयानन्द कोई श्रद्धानन्द कोई लेखराम नहीं है। सो स्वामीजी द्वारा हमारे जिम्मे लगाया गया सामाजिक काम भी बन्द पडा है। क्या हमारे नेता प्रचारक सन्यासी अपने आश्रमो मन्दिरो कोठियो से निकलकर इस काम को आगे बढाएगे ?

प्रधान, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली ५१

वीरो श्रीकृष्ण बन जाओ

प० नन्दलाल निर्भय

अब समय नहीं है सोने का जागो भारत के नर नारी।
योगराज कृष्ण से वीरो बन जाओ सब बलधारी।।

द्वापर युग मे यदुनन्दन ने मिटता ससार बचाया था।
मानवता की रक्षा की थी खुद भारी कष्ट उठाया था।।
जीवन भर लडा पापियो से वह कभी नही घबराया था।
कस और शिशुपाल पछाडे वैदिक धर्म निभाया था।

वसुदेव का पुत्र निराला था गृहस्थी या अजब ब्रह्मचारी।
योगीराज कृष्ण से वीरो बन जाओ सब बलधारी।।

उस योगी के जीवन का लक्ष्य जगती को स्वर्ग बनाना था।
दुर्योधन और जरासन्ध का जग से नाम मिटाना था।
त्यागी था बडा देवकी सुत जिसने न कभी भी राज लिया।
ऋषियो मुनियो की सेवा की कुल दुनिया का उद्धार किया।।

ईश्वर के भक्त निराले के गुण गाती है दुनिया सारी।
योगीराज कृष्ण से वीरो बन जाओ सब बलधारी।।

देवो की धरती भारत मे फिर भ्रष्टाचार गया है बढ।
डाकू गुण्डे चोर शराबी बोल रहे है सिर पर चढ।।
देशद्रोही देश तोडने की नित रहे योजना गढ।
चूहो की चमडी से जालिम रहे नगाडे देखो मढ।।

नेतागण बन गए स्वार्थी सब मगाडे मासाहारी।
योगीराज कृष्ण से वीरो बन जाओ सब बलधारी।।

राम कृष्ण के भारत पर अमरीका धौंस जमाता है।
चीन कुचाली बेईमान रोजाना हमे डराता है।।
पापी पाकिस्तान जवानो बढ चढ बात बनाता है।
कई बार पीटा भारत ने फिर भी ना शरमाता है।

कश्मीर मे अत्याचारी करता है नित सीनाजोरी।
योगीराज कृष्ण से वीरो बन जाओ सब बलधारी।।

याद रखो तुम धर्म द्रोही धर्म का मर्म जानते ना।
लातो के जो यार कभी बातो से कभी मानते ना।।
श्रीकृष्ण बन जाओ वीरो आगे कदम बढाओ तुम।
लो चक्र सुदर्शन हाथो मे दुष्टो के शीष उडाओ तुम।।

नन्दलाल निर्भय बन जाओ वेदों के सब प्रचारी।
योगीराज कृष्ण से वीरो बन जाओ सब बलधारी।।

– ग्राम डाकघर – बहीन जनपद फरीदाबाद हरियाणा

बोध कथा

देने वाला कोई और !

एक सज्जन बडे दानी थे। वह जब भी किसी को दान देते तो उनका देने वाला हाथ सदा ऊचा रहता था परन्तु उनकी निगाह सदा झुकी रहती थी। एक दिन किसी ने उन दानी सज्जन से जिज्ञासा की – 'महोदय आप प्रतिदिन बहुतो को दान देते हैं आप का हाथ तो देते हुए ऊपर उठा होता है परन्तु आपकी निगाह सदा नीची होती है फलत आप लेने वालो का चेहरा नहीं देख पाते इसलिए कुछ लोग आपसे बार बार दान ले जाते हैं। इस पर उन दाता सज्जन ने कहा –

देनहारा कोई और है देत रहत दिन रैन।
लोग भरम हम पर करें ताते नीचे नैन।।

दानदाता बोले – **देने वाला तो असल में भगवान है मैं तो निमित्त मात्र हू, जनता मुझे दाता कहती है इस शर्म लज्जा के कारण मैं आखे नहीं उठा पाता।**

उस जिज्ञासु की समझ मे आ गया कि दान देकर मिथ्या अभिमान करने वाला सच्चा दानी नहीं होता।

– नरेन्द्र

हम ऋण मुक्त हों ! भद्रवाणी बोलें ! हम अमर हो !

अनृणा स्याम। *अथर्व० ६–११७–३*

हम सदा ऋणमुक्त रहे।

वाच वदत भद्रया। *अथर्व ३–३०–३*

भद्रवाणी बोलो।

अमृता वयम्। *अथर्व ३–३१–११*

हम अमर हो जाए।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

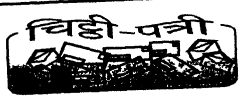
सम्पादकीय अग्रलेख

एक सिंहावलोकन : वस्तुस्थिति एव भावी कार्ययोजना

१५ अगस्त के दिन भारतीय गणतन्त्र की स्वाधीनता का ५५वा वर्ष था। वस्तुत यह एक सिहावलोकन की घडी थी जिसमे राष्ट्रनेताओ और सामान्य जनता को यह सिहावलोकन करना चाहिए था कि ५५ वर्ष पूर्व जब देश को स्वाधीनता मिली थी तब से आज तक भारतीय राष्ट्र की क्या उपलब्धिया है आज राष्ट्र और जनता की वस्तुस्थिति क्या है ? और भारतीय राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी भावी कार्ययोजना क्या हो ? हम इस कुट तथ्य को भूल नही सकते कि ५५ वर्ष पूर्व विदेशी शासक भारत छोडने के लिए बाध्य हुए थे तब वे देश को बाट गए थे। भारत के दोनो पाश्वो पर पाकिस्तान एक नए राष्ट्र के रूप मे उपजा था। यह भी चिन्ता की बात है कि हमारी सदभावनाओ और स्नेह के बावजूद नए राष्ट्र का भारत विरोध प्रचलित हुआ कई बार सघर्ष भी हुआ। १९७१ मे भारत ने निर्णायक युद्ध मे अपने उस पडोसी राष्ट्र को पराजित कर दिया था। उस समय भारत के पूर्व मे बगलादेश का अभ्युदय हुआ। यदि उस समय हम अधिक सावधान और प्रयत्नशील होते तो नए बग राष्ट्र का भारत के साथ स्थायी स्नेह सम्बन्ध जुड सकता था। वह सुनहरा क्षण तो बीत गया। उसके बाद उस पडोसी पाक राष्ट्र से नए स्नेह सम्बन्ध बनाने के प्रयत्न किए गए। हमारे ये पडोसी सार्वजनिक रूप से तो मेत्री और सदभाव की बात करते रहे परन्तु व्यवहार मे वे निरन्तर विरोध भी करते रहे। पडोसी पाकिस्तान बातचीत के लिए तो हमेशा तैयार रहता है परन्तु वह भारत विरोध मे भी सदा अग्रणी रहा। इतना ही नहीं पिछले वर्षो मे वह सीमापार से घुसपैठ और आतकवादी गतिविधियो को प्रोत्साहित करने मे भी निरन्तर प्रवृत्त रहा है। २१ अगस्त के दिन भारत के विदेशमन्त्री श्री यशवन्त सिन्हा ने पाकिस्तान द्वारा बिना शर्त बातचीत का प्रस्ताव ठुकरा दिया और शिकायत की कि सीमापार से घुसपैठ अब भी जारी है अब भी वहा से आतकवाद को प्रोत्साहित किया

दक्षिण एशियाई देशो की बातचीत और दूसर अवसरो पर भारत ने जहा आपसी सौहार्द को प्रोत्साहित किया वहा भारतीय प्रतिनिधियो को स्पष्ट करना पडा कि घुसपैठ और बातचीत दोना साथ नही चल सकते पहले पडोसी घुसपैठ और आतकवाद रोको। यदि वह उन्हे स्वत रोकने मे असमर्थ है तो वह स्पष्ट स्वीकार करे जिससे कि दोनो देश मिलकर घुसपैठ और आतकवाद के विरुद्ध सगठित मोर्चा बना सके। इसमे सन्देह नही कि भारतीय गणतन्त्र ने अपनी स्वाधीनता के ५५ वर्षो मे अनक क्षेत्रो मे प्रगति की है विभिन्न क्षेत्रो मे कीर्तिमान प्रस्तुत किए है परन्तु इस ऐतिहासिक सच्चाई स भी इन्कार नही किया जा सकता कि जब तक भारत के दोनो बाजू कटे हें और सीमापार से घुसपैठ आतकवाद और भारत विरोध के कई अभियान निरन्तर प्रचलित है तब तक हमारी राष्ट्रीय प्रगति अवरुद्ध रहेगी। अनेक क्षेत्रो मे निरन्तर प्रगति के बावजूद भारतीय राष्ट्र के दोनो पार्श्व विच्छिन है। इतना ही नही इस विच्छिन्नता के बावजूद राजनीतिक विरोध के बावजूद घुसपैठ आतकवाद और दूसरे माध्यमो से भारतीय राष्ट्र को निरन्तर स्थायी मतभेदो सघर्षो और सीधे युद्ध के खतरो का निरन्तर सामना करना पडा है। यह ठीक है कि ५५ वर्ष पूर्व भारत राष्ट्र राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हुआ था परन्तु साम्राज्यवादियो द्वारा भारत राष्ट्र के दोनो बाजू काटकर वहा एक नए राष्ट्र के निर्माण से स्वाधीन भारत को रात दिन कठिनाइयो ओर सीधे सघर्षो से जूझना पडा हे।

भारतीय राष्ट्र के ससाधनो और उसके निवासियो की जा शक्ति राष्ट्रीय अभ्युदय और प्रगति के विभिन्न क्षेत्रो मे व्यवस्थित रूप से लगाई जानी चाहिए थी वह विभक्त भारत और उनकी पीडित जनता के कष्टो को मर्यादित करने और नए पडोसी शत्रु राष्ट्रो से जनता और राष्ट्र की सुरक्षा के सतत अभियानो मे लगानी पडी। यह चिन्ता की बात है कि इतने वर्ष व्यतीत होने पर भी स्वतन्त्र भारतीय राष्ट्र की जनता और राष्ट्र के समन्वित अभ्युदय की कोई व्यवस्थित याजना और उसे कार्यान्वित करने का कोई व्यवस्थित कार्यक्रम न हे। [illegible] नीति निर्धारक और सूत्रधार स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे राष्ट्र की वस्तुस्थिति का व्यवस्थित मूल्याकन करे। वह समग्र भारतीय राष्ट्र की वर्तमान वस्तुस्थिति के राजनीतिक आर्थिक और भौगोलिक स्वरूप के अच्छे बुरे सभी पहलुओ को समझे और भारत राष्ट्र की आर्थिक सास्कृतिक और बहुद्देशीय समुन्नति और कायाकल्प की व्यवस्थित योजना बनाए। भारतीय राष्ट्र की उपलब्ध मानवीय प्रतिभा वैज्ञानिक प्राकृतिक ससाधनो और कोटि कोटि मानव शक्ति का यदि व्यवस्थित सद्प्रयोग किया जाए तो नई सहस्राब्दी और युग मे भारत राष्ट्र मे व्यवस्थित प्रगति और समृद्धि का युग प्रशस्त किया जा सकेगा। भारत राष्ट्र मे ऐसी प्रतिभा शक्ति क्षमता ससाधनो का अभाव नही है आज जरूरत है उन्हो एकत्र कर सगठित व्यवस्थित स्वरूप मे एक राष्ट्रीय समुन्नति के अभियान मे प्रयुक्त करने की। क्या भारतीय राष्ट्र के वर्तमान शासक सूत्रधार ओर नीति निर्धारक समस्या की गम्भीरता समझकर व्यवस्थित मूल्याकन और कार्यान्वयन का मार्ग प्रस्तुत करेगे ?



देश को एक परिवार समझें

[illegible]तिकवाद की चकाचौंध मे फसकर हम अपनी आजादी को भूल चुके हैं। हमे समझना होगा सारा देश एक परिवार है। परिवार के किसी भी एक सदस्य द्वारा किया गया धोखा देश के लिए खतरे का निशान है। सबसे अहम बात तो यह है कि वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली मे सुधार लाकर भारत की भावी पीढी सुसस्कारो से सुसज्जित की जाए।

– गणेश जोशी, मारोठ, राजस्थान

मुशर्रफ का भडकाऊ बयान

[illegible] अगस्त को पाकिस्तान दिवस पर पाक राष्ट्रपति जन० मुशर्रफ ने कश्मीर के चुनाव को मात्र छलावा कहा। भारत को प्रजातन्त्र का उपदेश देने वाले मुशर्रफ काश अपना गिरेबान मे झाकते। लोकतन्त्र का गला घोटकर सत्तासीन बनने वाले हमे लोकतन्त्र का पाठ पढा रहें है यानी उल्टे बास बरेली को। भारत मे लगातार चुनाव होते हैं और यहा की जनता जानती है कि वह कितनी आजादी से अपने मतो का उपयोग करती है। यहा जनता को कोई डर या भय नहीं है सिवाय आतकवादियो के भारत को उपदेश देने की नही बल्कि आपके चाल चालन मे नेकनीयती चाहिए।

– इन्द्रसिह धिगान, किग्जवे कैम्प, दिल्ली-११०००९

उपेक्षित बहुसंख्यक

वोट की राजनीति हिन्दुस्तान मे रहने वाले बहुमत का कब तक अपमान करती रहेगी ? चुनाव आयोग विपक्षी पार्टिया गुजरात मे जानकारी लेने गए पर किसी ने भी किसी हिन्दू से नहीं जानने की कोशिश की कि वह क्या चाहते है ? किसी ने भी किसी लुटे-पिटे हिन्दू का दुख दर्द नहीं पूछा। क्या इन दगो में कोई हिन्दू नही मरा कोई हिन्दू बेघर नहीं हुआ ? इन प्रश्नो का कोई उत्तर राजनीति के ठेकेदारो के पास है ?

– सतपाल महाजन, मौजपुर, दिल्ली

अथर्ववेद से हिरण्योप देश सप्तकम (१)

अथर्ववेद के हितकर और रमणीय आदेश व उपदेश

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) ऊपर उठने के इच्छुक साधक ! पार्थिव सुखो से उठकर अध्यात्म कल्याण को प्राप्त कर

मद्रादधि श्रेय प्रेहि बृहस्पति पुर एता ते अस्तु।
अथेममस्या वर आ पृथिव्या ओर शत्रु कृणु हिसर्ववीरम्।।
अथर्व ७ ८ १

उपरिबभ्रव । बृहस्पति । त्रिष्टुप।

अर्थ – आध्यात्मिक दृष्टि से ऊपर चढने के इच्छुक मानव ! (बृहस्पति ते पुर एता अस्तु) देवगुरु सदृश वेदवाणी का स्वामी गुरु तुझे मार्गदर्शक के रूप मे प्राप्त हो। उसकी सहायता से (मद्रात अधि श्रेय प्राप्नुहि) भौतिक कल्याण से ऊपर उठकर आध्यात्मिक कल्याण को प्राप्त कर। (अथ) तदनन्तर हे बृहस्पते ! (इमम) इस अध्यात्म मार्ग के साधक को (अस्या पृथिव्या वरे आकृणुहि) इस पृथिवी के तत्त्वो से निर्मित पार्थिव शरीर के उत्तमाग स्थित सहस्रार चक्र मे स्थपित कर दे और इसके (सर्ववीर शत्रु आरे कृणुहि) सबसे प्रबल शत्रु काम को इस से दूर कर दे।

निष्कर्ष – अध्यात्म मार्ग मे ऊपर चढने वाले साधक को बृहस्पति सम गुरु मार्गदर्शन के लिए मिल जाता है। उस गुरु की सहायता से स्वय ब्रह्म (ब्रह्माण्ड और वेद=ज्ञान) का स्वामी इसे सहस्रार मे पहुचाकर इसके सबसे प्रबल शत्रु काम (वासना) ओर कामना मात्र को दूर –समाप्त कर देता है।

अर्थपोषण – पृथिवी शरीरम। अथर्व ५–८ ७ उपरिबभ्रव – भृज धारणपाषणयो ।

(२) हे साधक ! गुरुमन्य जनो के वचनो से बचकर दैवीय वचनो का अनुसरण किया कर

अपक्रामन्पौरुषेयाद् वृणानो दैव्य वच ।
प्रणीती रभ्यावर्तस्व विश्वेभि सरिवभि सह ।।
अथर्व० ७ १० ५

अथर्वा। मन्त्रोक्ता (दैव्यवच)। अनुष्टुप।

अर्थ – हे स्थित प्रज्ञकामी मानव ! (पौरुषैयात अपक्रामन) सामान्य पुरुषो के बनाए ग्रन्थो (वचनो) से बचता हुआ (दैव्य वच वृणान) देव सम्बन्धी वेदवचन (ज्ञान वाणियो) को अपनाता हुआ (विश्वेभि सरिवभि सह) अपने समानख्यान सब सखाओ और सहकर्मियो के साथ (प्रणीती) प्रकृष्ट नीतिमार्गो का अनुसरण करता हुआ (अभ्यावर्तस्व) प्रणय प्रेमपूर्वक व्यवहार किया कर।

अर्थपोषण – दैव्य वच – ब्रह्म अथवा ब्रह्मज्ञानियो से उपदिष्ट वचन

निष्कर्ष – केवल अपने विषय के ख्यातनामा विशेषज्ञो के वचनो को स्वीकार करके उन पर आचरण करे तथा अपने सभी साथियो के साथ तदनुकूल प्रेमपूर्ण व्यवहार करे।

(३) इहलोक के सुखोपभोग कामी पुरुष! अग्नि और सूर्य के सम्यक् सेवन को मत छोडना

उत्क्रामात पुरुष मावपत्था मृत्यो पडवीशमवमुञ्चमान ।
माच्छित्था अस्माल्लोकादग्ने सूर्यस्य सदृश ।।
अथर्व ८ १ ४

ब्रह्मा। आयु । प्रस्तार पडक्ति ।

अर्थ – ब्रह्मा शरीर पुरी मे रहने वाले पुरुष को उपदेश देते हैं – हे (पुरुष) दीर्घायुकामी मानव ! (मा अवपत्था) हताश होकर अवनति के गर्त मे मत गिर। (मृत्यो पवीश अवमुञ्चमान) मृत्यु के पादबन्धन रूपी रोगो से छुटकारा पाकर (अत उत्क्राम) वर्तमान परिस्थिति से ऊपर उठ। (अस्मात लोकात) देवो के भी प्रिय इस लोक से अपना (मा छित्था) सम्बन्ध विच्छेद मत करना। इस का उपाय है (अग्ने लोकात सूर्यस्य सदृश मा छित्था) अग्नियो (जाठर गार्हपत्य और यज्ञीय) के प्रकाश उष्णता और मार्गदर्शन तथा सूर्य के सम्यक सेवन को कभी मत छोडना।

निष्कर्ष – शारीरिक या मानसिक रोग की जकड से घबरा कर निरश न हो अपितु अग्नियो और सूर्य रश्मियो को सम्यक सेवन सदा नियम से करता रहा रोग दूर हो जाएगे।

(४) हे मानव ! अकाल मृत्यु से बचने के लिए, मृतजनो का भयावह अति स्मरण छोड

मैत पन्थामनु गा भीम एष येनपूर्व नेयथ त ब्रवीमि।
तम एतत पुरुष मावपत्था भय परस्तादभय ते अर्वाक।।
अथर्व ८ १ १०

ब्रह्मा। आयु । त्रिष्टुप।

अर्थ – हे पुरुष ! (एत पन्था मा अनुगा) इस मृतपुरुषो और भूतकाल की परिस्थितियो का अनुगमन मत कर। (एष भीम) यह मृतपुरुषो का स्मरण करते रहने वाला मार्ग भयकर है इससे हताशा उत्पन्न होती है और मनुष्य दीर्घजीवी नही हो पाता। मै तुझे (त ब्रवीमि) वह मार्ग बताता हू (येन) जिस पर चलकर (पूर्व नई यथ) अपने मृत्युकाल से पहले नही जाएगा – तेरी अकाल मृत्यु नही होगी। हे दीर्घायुकामी पुरुष ! (एतत तम) मृतपुरुषा का सतत ध्यान अन्धकार – निराशा की ओर ल जाने वाला है (एतत मा अवपत्था) इस मार्ग की ओर मतजा (भय पर स्तात) परलोक मे गए हुओ का चिन्तन स्मरण भयावह और निराशाजनक है। (अर्वाक ते अभयम) इहलोक को सुधारने के लिए कर्त्तव्य पालन का मार्ग उत्साह और अभय प्रदान करता है।

निष्कर्ष – अपने पूर्व पुरुषो के पराक्रम और ऐश्वर्य को ही सदा याद नही करे। ऐसा करने से हताशा और हीन भावना जाग्रत होती है। वर्तमान मे जीने और आगे बढने तथा ऊचा उठने का प्रयत्न करो। ऐसा करने से उत्साह बढेगा और उन्नति होगी।

(५) दीर्घायुष्कामी मानव ! अमृत पदार्थो का सेवनकर, रज और तम के समीप मत जा

आरभस्वेमामृतस्य श्नुष्टिमच्छिद्यमाना जरदष्टिरस्तु ते।
असु त आयु पुनरामरामि रजस्तमो मोपगा मा प्रमेष्ठ।।
अथर्व ८ २ १

ब्रह्मा। आयु । भुरिक त्रिष्टुप।

अर्थ – हे रोगिन अथवा दीर्घायुष्य का मानव ! (इमा अमृतस्य श्नुष्टि आरभस्व) यज्ञशेष रूपी अमृत भोजन को प्रारम्भ कर जिससे (अच्छिद्यमाना जरदष्टि अस्तु) तुझे असाध्य रोगो द्वारा छिन्न हुए (कटे) बिना कम से कम जरावस्था तो प्राप्त हो। (ते आयु असु पुन आभरामि) मैं तेरे जीवन मे प्राणो का पुन आहरण और सचरण करता हू। अब तू (रज तम उप मा गा) रजोगुण और तमोगुण का अति सेवनमत कर। यदि तू ऐसा करेगा तो (मा प्रमेष्ठा) जरावस्था से पूर्व हिंसित नहीं होगा – तेरी मृत्यु नहीं होगी।

अर्थपोषण – अमृतम – अमृतमाज्यम। कौ ७–१० अमृत वै प्राणा । तै० स० २–६–८–७

अमृत वै हिरण्यम (वीर्यम) मै० ५–२–२।

निष्कर्ष – जरावस्था तक जीवित रहने के लिए (१) अन्न और घृत का भोजन (२) प्राण साधना और (३) वीर्य रक्षा सहायक होती हैं। (४) रोगी पडने के बाद राजस और तामस भोजनो का परित्याग आवश्यक है।

(६) चचल वृत्तियों को जल प्रयोग से, और आतकवादी राक्षसों को विष से समाप्त करें

विषेण भगुरावत प्रति स्म रक्षसो जहि।
अग्ने तिग्मेन शोचिषा तपुरग्राभिरर्चिभि ।।
अथर्व ८ ३ २३

घातन । अग्नि । अनुष्टुप।

अर्थ – (अग्ने) हे राजप्रमुख ! (मगुरावत रक्षस वृति) तोड-फोड करने वाले तथा राक्षसी वृत्ति के हत्यारे आतकवादियो को (विषेण) व्यापक विष प्रयोग द्वारा (तिग्मेन शोचिषा) तीक्ष्ण दीप्ति द्वारा अथवा (तपुरग्रामि अर्चिभि) तपते अग्र भागो वाले अर्चि नायक अस्त्रो द्वारा (प्रति जहि स्म) चुनचुन कर प्रत्येक को अवश्य मार दो।

आध्यात्मिक अर्थ – हे सब दृष्टियो से सर्वाग्रणी प्रभो ! (भगुरावत रक्षस) मगुर=चचल वृत्ति वाले काम तथा राक्षसी वृत्ति वाले क्रोध आदि प्रत्येक शत्रु को (विषेण) जल के प्रयोग से अथवा (तिग्मेन शेचिषा) तीव्र ज्ञान की ज्योति से अथवा (तपुर ग्रामि अर्चिभि) तपस्या प्रधान योगिक क्रियाओ द्वारा चुन चुनकर अवश्य समाप्त करे।

अर्थपोषण – विषम – जलनामसु। नि० १–१२ विषमा क्ष्वेऽस्तुगाल विषम। अमर ।

निष्कर्ष (१) राज प्रमुख का कर्त्तव्य है कि आतकवादियो को विष प्रयोग से ज्ञान के प्रसारण से दिल बदलकर अथवा शस्त्र प्रयोग से अपने राष्ट्र मे से चुन चुनकर नष्ट करे।

(२) इसी प्रकार गुरु का कर्त्तव्य है कि वह अपने शिष्यो मे से चचल वासनाओ और राक्षसी प्रवृत्तियो को जल चिकित्सा से ज्ञान दीप्तियो से यौगिक क्रियाओ से चुन चुनकर समाप्त करे।

(७) ऐश्वर्य कामी मानव ! पशु बना देने वाली काम, क्रोधादि वृत्तियो की अति को मसल दे

उलूकयातु शुशलूकयातु जहि श्वयातुमुत कोकयातुम।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातु दृषदेव प्रमृण रक्ष इन्द्र।।
अथर्व० ८ ४ २२

चातन । इन्द्र । त्रिष्टुप

अर्थ – हे (इन्द्र) जितेन्द्रियता द्वारा ऐश्वर्यशाली बनने के इच्छुक मानव ! तू अपने मे से (कोक या तुम) चकवे सदृश चलन – काम (शुशुलूकयातुम) भेडिए की तरह खूखार चलन – क्रोध (गृध्रयातुम) गिद्ध सदृश लोभ के व्यवहार को (उलूकयातुम) उल्लूसदृश चलन मोह (सुपर्णयातुम) गरुड की चाल मद और (श्वयातुम) कुत्ते जैसे व्यवहार – मत्सर=ईर्ष्या रूपी (रक्ष) प्रत्येक राक्षस को (दृषदा इव प्रमृण) ऐसे मसलकर चकनाचूर कर कि वह पुन प्रकट होने का साहस ही न करे।

निष्कर्ष – काम क्रोधादि की उपमा कोक शु शुलूक अदि से इन की अति मात्रा को दिखाने के लिए की गई है। ये काम क्रोध आदि मानव जीवन के लिए मर्यादा मे रहते हुए लाभकर हैं किन्तु अतिमात्रा मे उपस्थित होकर मानव को पशु और राक्षस बनाते हैं। उन्हे मसैलने का अर्थ यही है कि ये मर्यादा मे रहे। मानव पर सवार न हो जाए। उन्हे समाप्त करने के लिए नहीं कहा गया है।

– श्याम सुन्दर, राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली ६

कर्नाटक के नव-नियुक्त स्वाध्यायशील राज्यपाल श्री टी० एन० चतुर्वेदी

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य सामाजिक परिवेश मे पले–बढे श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी (सदस्य राज्य सभा) को भारत के राष्ट्रपति ने कर्नाटक का राज्यपाल नियुक्त किया है। श्री चतुर्वेदी अवकाश प्राप्त आई०ए०एस० तो है ही उन्होने चण्डीगढ के आयुक्त लोक प्रशासन सस्थान (Institute of Public Administration) के निदेशक भारत सरकार मे शिक्षा सचिव तथा गृह सचिव और नियन्त्रक तथा महालेखा परीक्षक जैसे उच्च एव दायित्वपूर्ण पदो पर कार्य किया है। १९९० मे सरकारी सेवा से अवकाश लेने के पश्चात वे राजनीति मे आए तथा दो बार राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। गम्भीर एव अध्ययनशील प्रवृत्ति के श्री चतुर्वेदी का सम्बन्ध फर्रुखाबाद जिले के एक आर्य परिवार से रहा है। उनके चाचा श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी की आर्यसमाज मे अनन्य आस्था थी तथा उनके निजी पुस्तक सग्रह मे आर्यसमाज विषयक ग्रन्थो की प्रचुर सख्या थी। इस बहुमूल्य पुस्तक सग्रह का प्रत्यक्ष लाभ श्री चतुर्वेदी को मिला। फलत स्वामी दयानन्द एव नवजागरण के अन्य महापुरुषो के जीवनचरितो का अध्ययन करने मे उनकी अनन्य रुचि रही।

१९२९ मे जन्मे श्री चतुर्वेदी का उच्च अध्ययन इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे हुआ जहा से उन्होने अर्थशास्त्र मे एम०ए० किया। भारतीय प्रशासनिक सेवा मे निर्वाचित होने के पश्चात उनकी प्रथम नियुक्ति राजस्थान मे हुई। वे तत्कालीन मुख्यमन्त्री स्व० मोहनलाल सुखाडिया के सचिव रहे तथा अजमेर के जिलाधीश के पद का निर्वहन किया। जिन दिनो वे अजमेर मे थे (साठ के दशक मे) दीपावली के पश्चात आयोजित ऋषि मेले में उनकी नियमित उपस्थिति रहती थी। चण्डीगढ के चीफ कमिश्नर के पद पर रहते समय उन्होने इस नगर की भव्यता और सौन्दर्य बढाने मे सराहनीय योगदान दिया। प्रसिद्ध उद्यान रॉक गार्डन की आधारशिला उन्हीं के कर-कमलो से रखी गई जो आगे चलकर प्रसिद्ध कलाविद् नेकचन्द की प्रतिभा का चमत्कार बना। आर्यसमाज सैक्टर १६ के भव्य समागार की नींव भी उन्होने ही रखी। वे यहा आर्यसमाज की गतिविधियो मे रुचि लेते रहे।

प्रशासन एव राजनीति के दायित्वो को निभाते हुए भी उन्होने अध्ययन एव अनुशीलन को सदा वरीयता दी। यह देखकर आश्चर्य होता था कि भारत के गृह सचिव तथा महालेखाकार जैसे दायित्वपूर्ण पदो पर रहकर भी वे अपने अध्ययन के लिए पर्याप्त समय निकाल लेते थे। चण्डीगढ की द्वारकादास लाइब्रेरी से उनका पर्याप्त सम्पर्क रहा। यह वह ऐतिहासिक पुस्तकालय है जिसकी स्थापना लाहौर मे लाला लाजपतराय ने अपने आर्यसमाजी मित्र लाला द्वारकादास की स्मृति मे की थी और देश विभाजन के पश्चात जिसे चण्डीगढ मे लाया गया था। लालाजी के स्वय के ग्रन्थो तथा उनके द्वारा सम्पादित पत्रो का यहा मूल्यवान सग्रह है। मैं स्वय यहा का सदस्य रह चुका हू।

मै इसे अपना व्यक्तिगत सौभाग्य मानता हू कि चतुर्वेदी जी ने मेरे लेखन मे निरन्तर रुचि ली है। अजमेर मे सत्तर के दशक मे जब एक बार उनका आगमन हुआ उस समय वे राजस्थान उद्योग निगम के अध्यक्ष थे। सर्किट हाउस मे उनसे मेरा विस्तृत वार्तालाप हुआ और स्वामी दयानन्द के साहित्य पर व्यापक चर्चा हुई। वे मेरे निवास पर मेरा निजी पुस्तक सग्रह देखने आए और वहा सगृहीत अनेक दुर्लभ ग्रन्थो को रुचि पूर्वक देखा। १९८० मे जब पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ के अध्यक्ष पद पर मेरी नियुक्ति हुई तो उन्होने विशेष प्रसन्नता व्यक्त की तथा आशा जताई कि यहा रहकर शोध एव अनुसधान के मुझे प्रचुर अवसर मिलेगे। १९८१ मे जब वे शिक्षा सचिव थे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर उन्हे आमन्त्रित किया गया। मैंने देखा कि वे समारोह की समाप्ति पर वहा लगी पुस्तको की दूकानो पर खडे है तथा स्वरुचि के ग्रन्थ क्रय कर रहे हैं। भारत के गृह सचिव का पद तो अधिक चुनौतियो भरा तथा दायित्व का था। वे दिन पजाब में आतकवाद जन्य अशान्ति के थे। उन्हे यदा कदा स्थिति का जायजा लेने के लिए प्रधानमन्त्री के विशेष आदेश से चण्डीगढ आना पडता था उस समय वे मुझे स्मरण करते तथा घण्टो तक दयानन्द एव आर्यसमाज विषयक नये पुराने साहित्य पर व्यापक चर्चा करते। उस समय वे मेरे विभाग मे भी आए और मेरे निजी पुस्तकालय मे विशेष रुचि ली। आश्चर्य होता था कि उनका ६ अशोक रोड स्थित सरकारी निवास का अध्ययन कक्ष नव प्रकाशित ग्रन्थो से परिपूर्ण है तथा प्रत्येक ग्रन्थ पर वे अधिकारपूर्वक वार्तालाप करने की शक्यता रखते हैं। मैंने उनसे प० सत्यदेव विद्यालकार लिखित स्वामी श्रद्धानन्द की वृहत जीवनी भेट रूप मे प्राप्त की। उनकी एक अन्य विशेषता मेरे लिए निजी वरदान रूप मे रही। अनेक अधिक मूल्य की पुस्तको को स्वय क्रय करके उन्होने मुझे भेट किया ताकि मै उनका अध्ययन कर सकू। इनमे डॉ० जॉर्डन्स के स्वामी दयानन्द विषयक शोध निबन्ध तथा उमा चक्रवर्ती लिखित प० रमाबाई विषयक ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं।

१९८७ मे श्री चतुर्वेदी जी को कुछ निजी कठिनाइयो का सामना करना पडा। उनके पाव की हडडी टूट जाने के कारण कई महीनो तक उन्हे शैयासीन होना पडा। उधर श्रीमती चतुर्वेदी की रुग्णता तथा मार्च १९८९ मे उनका निधन एक अपूरणीय क्षति थी। तथापि कर्त्तव्यनिष्ठ चतुर्वेदी जी इनसे विचलित नही हुए। चतुर्वेदी जी जहा अध्ययनशील वृत्ति के है वे एक प्रगल्भ वक्ता भी है। हिन्दी तथा अग्रेजी दोनो भाषाओ पर उनका समान अधिकार है। चण्डीगढ के रामकृष्ण मिशन मे जब उनका भाषण हुआ तो प्रसगोपात्त दयानन्द सरस्वती के अवदान का उल्लेख किया तथा मेरे ग्रन्थ 'नवजागरण के पुरोधा' की चर्चा की। पुस्तको के प्रति उनके अनन्य प्रेम का एक उदाहरण देना आवश्यक है। यह घटना १९९० की है। वे उस समय भारत के नियन्त्रक तथा महालेखा परीक्षक के पद पर आसीन थे। साहित्य अकादमी ने वृन्दावनलाल वर्मा पर एक सगोष्ठी आयोजित की जिसमे ऐतिहासिक उपन्यासो पर अनेक शोध पत्र पढे जाने थे। वृन्दावनलाल वर्मा के बुन्देलखण्ड पर आधारित उपन्यासो पर मेरा शोध पत्र भी पढा जाना था। चतुर्वेदी जी ने सगोष्ठी मे एक साधारण श्रोता के रूप मे भाग लिया तथा शोध विद्वानो के वक्तव्यो को तल्लीनता से सुना।

इसी अवसर पर उन्होने अपनी इच्छा जाहिर करते हुए कहा कि क्यो नही राजधानी के प्रमुख आर्य साहित्य प्रकाशको के यहा हम जाए तथा नवीनतम आर्य साहित्य का परिचय प्राप्त करे। मैने इस साहित्य यात्रा मे उनका सहकार किया फलत मै और मेरी पत्नी श्रीमती शान्ति भारतीय आर्य साहित्य प्रकाशको के यहा की इस सारस्वत यात्रा मे श्री चतुर्वेदी जी के साक्षी बने। सर्वप्रथम हम प्रसिद्ध आर्य साहित्य प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द के असारी रोड स्थित कार्यालय गए और इस सस्थान के सचालक श्री विजयकुमार से मुलाकात की। यहा से दो वर्ष पूर्व ही मेरे द्वारा ग्यारह खण्डो मे स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का सम्पादित सस्करण छप चुका था। इसी क्रम मे हम सार्वदेशिक सभा कार्यालय तथा अजमेरी गेट स्थित आर्य प्रकाशन की दूकान पर गए तथा नव प्रकाशित साहित्य की जानकारी प्राप्त की। किसी उच्च सरकारी अधिकारी की अध्ययन मे रुचि का यह एक प्रमाण था। उस समय भी चतुर्वेदी जी पाव के कष्ट से पीडित थे।

कुख्यात बोफोर्स तोप सौदे मे उनके द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट ने सारे देश को हिला दिया। सकीर्ण मनोवृत्ति के अनेक सासदो ने ससद मे उन पर व्यक्तिगत आक्षेप किये (जिसके लिए बाद मे उन्हे माफी मागनी पडी) किन्तु चतुर्वेदी जी इससे विचलित नहीं हुए। उन्होने जयपुर मे पत्रकारो के समक्ष स्पष्ट किया कि उनकी रिपोर्ट तथ्याधारित है और किसी व्यक्ति या दल के दबाव मे आकर नहीं लिखी गई है। उन्होने यह भी साफ किया कि उनका सम्पूर्ण प्रशासनिक सेवा काल एक खुली पुस्तक है जिस पर कहीं कोई दाग नहीं है। सेवा से अवकाश लेने के बाद उन्होने भारतीय जनता पार्टी को अपनी गतिविधियो के लिए चुना। वे राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित होने के साथ–साथ इस दल की कार्यकारिणी के भी सदस्य हैं। राज्य सभा मे अनेक महत्त्वपूर्ण मुद्दो पर वे प्रभावशाली ढग से अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मुम्बई तथा उससे पहले स्वामी दयानन्द के शेखावाटी निवासी भक्त शिष्य महात्मा कालूराम जी की निर्वाण शताब्दी मे उनका रायगढ मे आगमन वैदिक धर्म के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा का द्योतक हैं। गत जनवरी मे जब चतुर्वेदी जी का जोधपुर आगमन हुआ तो पर्याप्त समय तक उन्होने मेरे पुस्तक सग्रह को अवधानपूर्वक देखा। यहा सत्यार्थप्रकाश के विभिन्न सस्करणो विभिन्न भाषाओ मे इसके अनुवादो तथा ऋषि दयानन्द के लगभग डेढ सौ जीवन चरित्रो का अदभुत सग्रह देखकर उन्होने प्रसन्नता व्यक्त की। ऐसे मनस्वी पुरुष का कर्नाटक के राज्यपाल पद पर प्रतिष्ठित होना इस पद को ही गौरव प्रदान करता है।

– ८/४२३, नन्दन वन, जोधपुर

वयोवृद्ध राजनेता श्री भैरोसिंह शेखावत भारत के १२ वें उप-राष्ट्रपति

वयोवृद्ध राजस्थानी नेता तथा पूर्व मुख्यमन्त्री श्री भैरो सिह शेखावत भारत



के १२वे उपराष्ट्रपति निर्वाचित घोषित हुए। श्री भैरो सिह शेखावत से भेट करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्टमण्डल [redacted] भवन मे मिला। इस शिष्टमण्डल मे ससद सदस्य श्री रासासिह रावत के अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा आर्यतपस्वी श्री सुखदेव दिल्ली सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव श्री राजेन्द्र दुर्गा आदि उपस्थित थे।

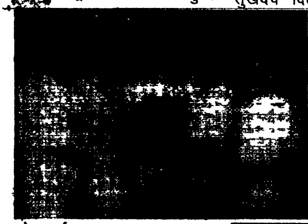
श्री भैरो सिह शेखावत ने राजस्थान के मुख्यमन्त्री पद पर रहते हुए नवलखा महल उदयपुर की वह भूमि सत्यार्थ प्रकाश न्यास को आवटित की थी जहा बैठकर महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश की रचना की।

श्री भैरो सिह शेखावत को ओइम् का एक भव्य चित्र वृहद सत्यार्थ प्रकाश तथा देशभक्ति के कुछ कैसेट प्रदान किए गए।

वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ १२वे उपराष्ट्रपति के पद पर कार्य प्रारम्भ करने हेतु उन्हे कल्याणकारी शुभकामनाए प्रदान की गई।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी कर्नाटक के राज्यपाल नियुक्त

भारत के राष्ट्रपति श्री ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने राज्यसभा सदस्य राष्ट्रवादी विद्वान और ईमानदारी के लिए सुप्रसिद्ध श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी



को कर्नाटक राज्य का राज्यपाल नियुक्त किया है। श्री चतुर्वेदी आर्यसमाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यो में काफी गहरी रुचि लेते हैं। पुस्तको के प्रेमी श्री चतुर्वेदी सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री विमल वधावन के साथ पहले भी सार्वदेशिक सभा कार्यालय में स्वय पधार कर कई सैद्धान्तिक चर्चाए करते रहे हैं। प्रसिद्ध वैदिक लेखक डॉ० भवानी लाल भारतीय के भी आप बड़े प्रशसक हैं।

श्री चतुर्वेदी के राज्यपाल बनने की सूचना मिलते ही श्री वधावन ने उन्हे टेलीफोन पर बधाई दी और तत्पश्चात सभा का एक प्रतिनिधि मण्डल उन्हे शुभकामनाए देने उनके निवास पर पहुचा। इस शिष्ट मण्डल मे श्री रासासिह रावत श्री विमल वधावन दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा आर्य तपस्वी श्री सुखदेव दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री इन्द्रदेव श्री राजेन्द्र दुर्गा आदि शामिल थे।

श्री चतुर्वेदी से सम्बन्धित एक विशेष लेख डॉ० भवानीलाल भारतीय जी ने लिखा है जिसे इसी अक मे अलग से प्रकाशित किया जा रहा है।

दिल्ली की आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली-३४

प्रधान	–	श्री भजन प्रकाश आर्य
उप-प्रधान	–	श्री बिशन दास गम्भीर
		श्री धर्म देव सक्सेना
मन्त्री	–	श्री कृष्ण देव
उपमन्त्री	–	श्री नन्द किशोर गुप्त
		श्री सजीव महाजन
प्रचारमंत्री	–	श्री मितिन दुआ
कोषाध्यक्ष	–	श्री विनय भूषण गुप्ता
पुस्तकालयाध्यक्ष	–	श्री गोपी चन्द गैहर

आर्यसमाज अशोक विहार-१ दिल्ली

प्रधान	–	श्री अविनाश चन्द्र कपूर
मन्त्री	–	श्री ओमप्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष	–	श्री रामनाथ कपूर

आचार्य चैतन्य जी को रामवृक्ष बेनीपुरी शताब्दी सम्मान

अनेक पुरस्कारो से सम्मानित आर्यजगत के अत्याधिक लोकप्रिय तथा सैद्धान्तिक वैदिक प्रवक्ता एव वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य भगवान देव चैतन्य जी को उनके द्वारा की गयी साहित्यिक एव सामाजिक सेवाओ क लिए **"रामवृक्ष बेनीपुरी शताब्दी साहित्यिक सम्मान"** के लिए चुना गया है। उल्लेखनीय है कि आचार्य चैतन्य जी की एक दर्जन से अधिक पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है तथा पत्र–पत्रिकाओ मे इनके हजारो लेख प्रकाशित व पुरस्कृत हो चुके हैं। इन्हे परमात्मा ने ~~आध्यात्मिक ज्ञान दिव्यता~~ के साथ–साथ साहित्य की लगभग प्रत्येक विद्या पर भी लिखने की सामर्थ्य व प्रतिभा प्रदान की है। इन्हे यह सम्मान जैमिनी अकादमी द्वारा आयोजित विशाल सम्मेलन मे हिन्दी दिवस वाले दिन प्रदान किया जाएगा।

शहीदों, स्वतन्त्रता सेनानियों, विकलांगों और खिलाड़ियों के आवटन रद्द नहीं होंगे

भारत सरकार ने भारी जनमत के दबाव के फलस्वरूप शहीदो विकलागो की विधवाओ विकलागो स्वतन्त्रता सेनानियो और प्रतिष्ठित खिलाड़ियो को आवटित पेट्रोल पम्पो गैस और मिट्टी के तेल की एजेंसियो के आवटन रद्द न करने का निर्णय किया है।

ऐसे थे गाधीजी

– झवरलाल व्यास, रगीला

बेतिया मे कोई कार्यक्रम था। बिहार का एक किसान भी गाधीजी को देखना चाहता था सो वह भी बेतिया के लिए चल पडा। किसान की कल्पना मे महात्मा गाधी का बढा चढा स्वरूप था। वह विलायती कपडे पहनते होगे बडे डील डौल वाले होगे। फर्स्ट क्लास मे सफर करत होग। राजा और महाराजाओ जैसा भोजन करते होगे। उस बेचारे को क्या पता था कि सच्चे सेवक अपना जीवन महत्वाकाक्षाओ से नही विनयशीलता लगन और सादगी से बिताते है। किसान रेलगाडी मे सवार हुआ। तीसरे दर्जे के डिब्बे मे कुई आदमी ~~बैठे थे एक सज्जन~~ उनके बीच मे लेटे थे काफी थके जान पडते थे। किसान ने हाथ पकडकर उन्हे उठाते हुए कहा – उठ कर बैठो ऐसे लेटो हो जैसे तुम्हारे बाप की गाडी हो। वह महाशय उठ बैठे उन्हे इस तरह उठाए जाने से न तो खिन्नता थी और न कोई द्वेषभाव। अब किसान ने मजे मे बैठकर एक तान छोड दी – धन–धन गाधीजी महाराज दुखियो का दुख मिटाने वाले। उधर डिब्बे मे बैठे सब लोग मुस्कारते रहे।

बेतिया मे रेलगाडी रूकी तो जनता गाधीजी के उतारने डिब्बे की ओर बढी। जनता की जय जयकार से स्टेशन गूज उठा। वह बचारा किसान यह देखकर स्तब्ध रह गया कि जिस व्यक्ति को उसने हाथ से उठाकर बिठाया था वही गाधीजी थे।

श्रीकृष्ण को बदनाम मत करो

– देवराज आर्य मित्र

श्रीकृष्ण के भक्तो ! श्रीकृष्ण को बदनाम मत करो।
उनके नाम पर कोई धब्बा आए, ऐसे काम मत करो।।

वे दूध-मलाई, मक्खन खाने के लिए कहते थे।
उन्हें माखन चोर बताकर, बदनाम न करो, बदनाम न करो।।
श्रीकृष्ण के भक्तो

गौओं को चराया बंसी बजा-बजाकर।
तुम गन्दे रास रचाकर, उन्हें सरनाम मत करो, बदनाम न करो।।
श्रीकृष्ण के भक्तो. .. .

वह चरित्रवान पुरुष था, रुक्मिणी थी पत्नी उनकी।
राधा से मेल मिलाकर, गलत काम मत करो, बदनाम न करो।।
श्रीकृष्ण के भक्तो.. ..... .

वह योगीराज ज्ञानेश्वर, गीता का ज्ञान दिया था।
तुम वस्त्र हरण दिखलाकर, अपमान मत करो।।
श्रीकृष्ण के भक्तो........ ..

– आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

पृष्ठ १ का शेष भाग

मेवात में पूरे परिवार का जबरन धर्मान्तरण

गृह राज्य मन्त्री ने गुडगाव के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री सिहाग को न्यायोचित कार्यवाही करने के निर्देश दिए। इस शिष्ट मण्डल मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री कन्हैया लाल तलरेजा आदि शामिल थे।

दूसरी तरफ मदुरै मे २५० स्कूली बच्चो का छल कपट से धर्मान्तरण कराने की सूचना भी प्राप्त हुई है। इस घटना मे १५ से २० वर्ष की आयु के बच्चो को यह कहकर धर्मान्तरित किया गया कि ईसाई धर्म ग्रहण करने से उन्हे जीवन मे कभी आर्थिक कठिनाइयो का सामना नही करना पडेगा और उनके जीवन मे धन की कमी कमी नहीं रहेगी।

इस घटना की सूचना मिलते ही सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने तमिलनाडु आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुबोध चन्द्र जी से सम्पर्क किया और मदुरै के कलेक्टर वी०रामचन्द्र से टेलीफोन पर बात की। उन्होने यह आश्वासन दिया कि वे इसकी छानबीन करेगे।

श्री वधावन ने सभा के अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे तत्काल इन धर्मान्तरित बच्चो की सूची तैयार करवाने का प्रयास करे और इनके परिजनो के साथ एक एक करकै सम्पर्क किया जाए।

मदुरै क्षेत्र मे शुद्धि का कार्यक्रम चलाने मे अग्रणी वी० नारायण स्वामी जी विगत कुछ दिनो से [illegible] अस्वस्थता के बावजूद भी स्वामी जी ने यह निर्णय लिया है कि वे तत्काल धर्मान्तरण का शिकार हुए बच्चो के माता पिता से सम्पर्क करेगे और उन्हे अपने धर्म पर अडिग रहने की प्रेरणा दी जायेगी।

पृष्ठ १ का शेष भाग

मॉरीशस जाने के इच्छुक महानुभाव ....

2 जिन महानुभावों के साथ परिवार के बच्चे जाना चाहें उन्हें 2 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए 4000/- रुपये केवल हवाई जहाज के टिकट के देने होंगे।

3 दो वर्ष से बडे और 12 वर्ष तक की आयु के बच्चो के लिए 13500/- रुपये हवाई जहाज टिकट तथा 6000 /- रुपये आवास भोजन तथा अन्य खर्च के निमित्त कुल 19,500/- रुपये देने होंगे।

4 पासपोर्ट साईज के तीन फोटो भी भिजवादें।

5 जाने वाले महानुभावो का पासपोर्ट [illegible] अवधि तक वैध होना चाहिए।

6 मारीशस जाने के इच्छुक महानुभाव तत्काल टेलिफोन से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय को अपना नाम, पता लिखवाए जिस पर उन्हें वीजा फार्म भेजा जा सके जिसे वे हस्ताक्षर करके 5 सितम्बर से पूर्व सभा कार्यालय में भेज सकें।

7 एक बार धनराशि जमा होने के बाद यात्री अपना कार्यक्रम रद्द करेंगे तो उनकी राशि में से केवल 1500/- रुपये काटकर बाकी राशि उन्हें वापस लौटा दी जाएगी।

8 विशेष जानकारी के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में टेलिफोन न0 3274771, [illegible], 3248086, 3248087 पर सम्पर्क करें।

पृष्ठ १ का शेष भाग

धर्मान्तरण रुपी विषलता आपके सहयोग से रुक सकती है

अन्तर्वेदना को अंगीकार करें

कानूनी व्यवस्था की इन कमजोरियो का लाभ उठाते हुए विदेशो मे बैठे मिश्नरी लोग अपने अपने धर्मो का प्रचार करने के लिए करोडो अरबो रुपया फेकते रहते हैं जबकि धन सम्पन्न हिन्दुओ के सामने हमारी सामाजिक सस्थाओ को एक याचक की तरह धन का सहयोग मागना पडता है।

ऐसे महानुभावो से मेरा विनम्र निवेदन है कि अपनी तिजोरियो और बैको मे जमा धन को केवल मात्र अपनी व्यक्तिगत शोभा ही न बने रहने दे अपितु उस धन के कुछ भाग को वैदिक धर्म के अधिकाधिक प्रचार प्रसार मे प्रयोग करने का पवित्र सकल्प ले। विदेशी मिश्नरी अपने अवैज्ञानिक सिद्धान्तो के प्रचार के लिए जहा लाखो रुपया बहा देते हैं वहा हम ५००/– रुपये प्रतिमाह (६०००/– रुपये वार्षिक) की दर से एक बालवाडी खोलकर प्रचार प्रसार मे भी अपेक्षित मात्रा मे सक्षम नही हो पा रहे है। जबकि आवश्यकता इस बात की है कि यदि लाखो करोडो रूपये का सहयोग एकत्रित करके हिन्दूजाति मूर्तिया स्थापित करने के बजाय भारत के प्रत्येक गाव मे एक एक विद्यालय या धर्मशिक्षा केन्द्र स्थापित कर दे प्रत्येक जिले मे एक एक अनाथालय खोला जाए अधिक से अधिक गुरुकुल स्थापित किए जाए तो वैदिक धर्म की सुरक्षा और प्रचार प्रसार के लिए कुछ ठोस कार्यवाही सम्भव होगी।

आशा है सुधीजन इस अतर्वेदना को अगीकार करते हुए अपना अधिकाधिक सहयोग धर्मान्तरण रुपी विषलता की रोकथाम के लिए अर्पित करेगे।

निवेदक – विमल वधावन,
वरिष्ठ उप-प्रधान सार्वदेशिक सभा

व्यवस्थित समाज हेतु सत्य पालना आवश्यक है – तत्वबोध

"व्यवस्थित समाज हेतु सभी द्वारा सत्य पालन नितान्त आवश्यक है।" यह बात श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के तत्वावधान मे सचालित वेद प्रचार मण्डल द्वारा न्यास के सभागार मे श्री अशोक आर्य के सयोजन मे आयोजित पारिवारिक सत्सग के अवसर पर स्वामी तत्वबोध सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन मे कही। उन्होंने कहा कि व्यस्थित समाज उचित न्याय पर तथा उचित न्याय सत्य पर आधारित है आज देश मे नि स्वार्थ व सत्यवादियो की नितान्त आवश्यकता है।

इससे पूर्व मुख्य वक्ता के रूप मे डॉ० रवीन्द्र वर्मा ने "आर्यावर्त और प्राचीन विश्व विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

आर्यों के सभी कार्यक्रम प्रभु भक्ति व ऋषि महिमा के भजन के अभाव मे अधूरे ही समझे जाते हैं अत न्यास के भजनोपदेशक श्री कृष्णकुमार जी द्वारा "नर नारी सब एक समान, भजलो प्यारे ओम का नाम" व "भारत के इक सन्यासी की हम कथा सुनाते हैं" सुमधुर भजन प्रस्तुत किए गए। तबले पर सगत आर्यवीर दल देवास के सचालक श्री सुनील फत्तरोड ने की।

इस अवसर पर सर्वप्रथम वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमे प्रचुर वर्षा की कामना से वृष्टियज्ञ की विशेष आहुतिया भी दी गई तथा आज जिसशाति प्राप्ति के लिए समस्त विश्व लालायित है उसकी याचना हेतु शाति पाठ किया गया।

मातृभाषा विकास परिषद द्वारा समस्त शिक्षण सस्थाओं मे

मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम सुनिश्चित करने हेतु जनहित याचिका

भारत की समस्त भाषाओ के उत्थान एव विकास हेतु कार्यरत मातृभाषा विकास परिषद् ने देश के शिक्षा सम्बन्धी कार्यो मे सुधार हेतु उच्चतम न्यायालय मे आज प्राथमिक स्तर पर देश की समस्त शिक्षण सस्थाओ मे मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम सुनिश्चित करने हेतु जनहित याचिका प्रस्तुत की है।

इस याचिका मे परिषद् के महामन्त्री श्री आनन्द स्वरूप गर्ग ने बताया है कि देश के सविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारो के अन्तर्गत बच्चे को प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा मे ही दी जानी चाहिए तथा इस अधिकार को राज्य अथवा कोई भी शिक्षण सस्था अथवा कोई व्यक्ति चाहे वह बच्चे का अभिभावक ही क्यों न हो अतिक्रमण नहीं कर सकता। भारत की सघ सरकार तथा दिल्ली की राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकारो द्वारा उपेक्षा किए जाने तथा दुर्भाग्य से अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन न कर पाने के कारण देश के सविधान द्वारा प्रदत्त बच्चो के मौलिक अधिकारों का निरन्तर हनन हो रहा है।

इस याचिका मे यह भी आरोप लगाया गया है कि देश में पिछले तीन दशको से अधिक समय से देश मे बच्चे को प्राथमिक कक्षाओ मे शिक्षण देने हेतु सरकारे निहित स्वार्थो वाले तत्वो के साथ साठ गाठ करके बच्चो को मातृभाषा मे शिक्षा न देकर अन्य भाषा के माध्यम से शिक्षा देने मे जुटी हुई हैं। ऐसी सस्थाओ का जाल सारे देश में कैंसर की भाति बढता जा रहा है। इसके कारण देश मे बच्चो को अवैध सविधानेतर समानातर आततायी तथा उत्पीडन करने वाले विद्यालयो मे विवश होकर पढना पड रहा है। इस हेतु याचिका मे माग की गई है कि समस्त देश मे प्राथमिक स्तर की शिक्षा मे मातृभाषा को छोड कर अन्य भाषा के माध्यम द्वारा शिक्षा दिए जाने पर प्रतिबन्ध लगाया जाए।

हमारी ज्वलन्त समस्याओं का समाधान संस्कारित जीवन

आर्यसमाज बी० ब्लॉक जनकपुरी के मच से बोलते हुए प्रसिद्ध आर्य विदुषी डॉ० रमा जी ने कहा कि आज का युवा व किशोर वर्ग अपने बुजुर्गों का सम्मान नहीं करते। और परिवार के सदस्यों मे प्यार भावना एव सामजस्य भावना का अभाव है। अपने जीवन मे हमे आज जिन ज्वलन्त समस्याओ का सामना करना पड रहा है। उसका एकमात्र कारण यही है कि हमने अपने बच्चो को अच्छे सस्कार नहीं दिए। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम अपने बच्चो को आर्यसमाज मे आने की प्रेरणा दें क्योकि यहा की हवा बच्चो को सस्कारित कर सकती है। कार्यक्रम का सयोजन मन्त्री श्री जगदीश चन्द गुलाटी ने किया।

आदर्श समाज सेवी श्री मंगतराम जी वर्मा का निधन

स्वतन्त्रता सेनानी भारत माता मन्दिर सरस्वती नगर हरदासपुरा के सस्थापक धर्म प्रेमी दयानन्द मठ चम्बा के प्रबल सहयोगी आदर्श समाज सेवी अनेक सस्थाओ के सगठनकर्ता आर्यसमाज चम्बा के भूतपूर्व प्रधान श्री मास्टर मगतराम जी वर्मा ३१-७-२००२ को ह्रदयगति के रुकने के कारण इस असार ससार को छोडकर परमतत्व में लीन हो गए। इनका पूर्ण वैदिक रीति से सस्कार किया गया इस अवसर पर हजारों लोगो ने भावपूर्ण विदाई दी। १२-८-२००२ को भारतमाता मन्दिर में रस्मपगडी सम्पन्न हुई।

– स्वामी शुभानन्द

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 29 30/08/2002 दिनाक २६ अगस्त से १ सितम्बर २००२ Licence to post without prepayment Licence No. U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 29 30/08/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

डॉ० कलाम - एक ओर गांधी

– लक्ष्मण प्रसाद

एक अराजनीतिक व्यक्तित्व का देश के सर्वोच्च पद पर चुना जाना सम्भावनाओ से भरे भविष्य के लिए शुभशगुन है क्योकि वर्तमान मे राजनीतिक जनो की विश्वसनीयता अपने निम्नतर स्तर पर है। डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम एक विश्व विख्यात वैज्ञानिक एव भारतीय प्रक्षेपणास्त्र प्रणाली के जनक हैं। वैज्ञानिक के साथ साथ वह महान विचारक तथा दार्शनिक भी हैं। डॉ० कलाम का निर्वाचन [illegible] समुदाय की महान सम्पन्न किया है। कलाम वास्तव मे महात्मा गाधी की भाति ही कर्मयोगी एव द्रष्टा है। गाधी जी स्वतन्त्र भारत के स्वप्न द्रष्टा थे जबकि डॉ० कलाम स्वावलम्बी स्वय समर्थ विकसित भारत के स्वप्न द्रष्टा है। उनकी सादगी शालीनता अर्थशुचिता नैतिकता स्वदेश के प्रति गहनतम प्रेम और इन सबके ऊपर ईश्वर के प्रति अटूट आस्था उन्हे भारत के एक और गान्धी के रूप मे स्थापित करेगी। महात्मा गाधी के सभी मौलिक गुण उनमे विद्यमान है। नियम नियन्त्रित कर्त्तव्यशील कार्यकलाप के लिए गीता गान्धी जी की मार्गदर्शक शक्ति थी इसी प्रकार चमत्कारी उपलब्धियो के लिए गीता क[illegible] की ऊर्जा की सतत शीर्ष प्रवाहमयी निर्झरिणी है। जैसे गाधीजी महात्मा बन गए थे वैसे ही गीता और कुरान की सद्शिक्षाओ के अनुरूप अपने कृतित्व एव निष्ठा के फलस्वरूप कुछ काल बाद डॉ० कलाम भी सन्त कलाम के रूप मे जाने जाएगे।

कतिपय राष्ट्रीय समाचार पत्रो ने उनके सादा जीवन उच्च विचार को प्रतिबिम्बित करते हुए व्यक्त किया है कि भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक परामर्शदाता (कैबिनेट मन्त्री स्तर) के पद पर आसीन वह एशियाड ग्राम के एक शयनकक्षीय आवास मे रहते थे और पहनने के लिए उनके पास मात्र दो जोडी वस्त्र थे। उनके व्यक्तिक गुण निसन्देह उन्हे भारत का सफल राष्ट्रपति सिद्ध करेगे।

डॉ० कलाम अपने नवीन उदाहरण मानक मर्यादाओ एव नैतिक बल से राजनीतिज्ञो एव नौकरशाहो को अपने आदर्श की ओर प्रेरित करने म सफल होगे जिससे आगामी २० वर्षो मे निर्धनता [illegible] सशक्त विकसित भारत के निर्माण मे इन सबकी प्रखर भूमिका होगी। इस परिप्रेक्ष्य मे ध्यातव्य है कि भारतीय नागरिक जो निकट भविष्य मे देश को समृद्ध विकसित राष्ट्र के रूप मे देखना चाहते है का पुनीत कर्त्तव्य हे कि वे अपना अपरिमित सहयोग एव समर्थन भारत के नव निर्वाचित राष्ट्रपति को प्रदान करे जिससे वह अपने इस महान स्वप्न [illegible]।

– आशीर्वाद ३/६ मौरिस रोड
मेन्दू अहाता, अलीगढ, उ०प्र





प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२
(दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक ३७ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार २ सितम्बर से ८ सितम्बर २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

राष्ट्रीय पशु आयोग द्वारा गोहत्या बन्दी की सिफारिश
गौपालन के मूल आर्थिक पक्ष को प्रचारित किया जाए

अल्पसख्यको की रक्षा के लिए अल्पसख्यक आयोग अनुसूचित जनजाति तथा अन्य दलित वर्गो के लिए दलित आयोग महिलाओ के लिए महिला आयोग आदि विभिन्न प्रकार के आयोग अपनी–अपनी प्रजा के हित मे सलग्न देखे और सुने जा सकते हैं। इसी प्रकार का एक आयोग बेजुबान पशुओ के लिए भी गठित किया गया है। राष्ट्रीय पशु आयोग (National Commission on Cattle) का गठन केन्द्र सरकार द्वारा किया गया था।

अब यह आयोग गाय माता की रक्षा के लिए एक नया मोर्चा खोलकर खडा हो गया है। इस आयोग ने गृह मन्त्रालय के माध्यम से केन्द्र सरकार को भेजी अपनी रिपोर्ट मे कहा है कि गौहत्या पर राष्ट्रव्यापी प्रतिबन्ध लगाने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि पशुपालन विषय को भारतीय सविधान की राज्य विषय सूची से हटाकर केन्द्र और राज्य की सम्मिलित सूची मे रखा जाए तभी गोहत्या बन्दी का राष्ट्रव्यापी और प्रभावशाली कानून बनाया जा सकेगा।

पशु आयोग का कहना है कि गोहत्याबन्दी समूचे राष्ट्र के हित का विषय है जिसे राजनीति से ऊपर समझा जाना चाहिए। आयोग का मानना है कि गाय के पूजनीय स्तर को देखते हुए इसके वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगना चाहिए चाहे गाय दूध देने योग्य बच्चे पैदा करने योग्य तथा बैल आदि खेती योग्य भी न रहे।



आयोग ने अपनी यह रिपोर्ट केन्द्रीय कृषि मन्त्री जी अजीत सिह को भी प्रदान की है। पशु आयोग ने गृह मन्त्रालय से इस बात की भी आवश्यक सस्तुति की है कि गैर कानूनी गो हत्या तथा राज्यो के बीच गाय अथवा गो मास के यातायात को बन्द करने के लिए विशेष दल गठित किए जाने चाहिए। केरल और पश्चिम बगाल मे विशेष प्रयासो के लिए गृह मन्त्रालय को आग्रह किया गया है। इसी प्रकार बगला देश और पाकिस्तान को होने वाले व्यापारिक यातायात मे भी इस तरह की निगरानी के लिए आग्रह किया गया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस रिपोर्ट पर अपनी हर्षित एव सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए पशु आयोग के कार्यकारी अध्यक्ष श्री गुमानमल लोढा का साधुवाद किया है

श्री लोढा को लिखे एक पत्र म सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने इस रिपोर्ट को एक ऐतिहासिक दस्तावेज बताते हुए कहा है कि भविष्य मे किसी भी सरकार को गोहत्या बन्दी पर विचार करने मे यह रिपोर्ट एक प्रमुख आधार रहेगी। आयोग द्वारा विचार किए गए विषयो के अतिरिक्त श्री विमल वधावन ने गाय के सुदृढ आर्थिक पहलुओ पर भी विशेष छानबीन करके निष्कर्ष प्रस्तुत करने का आग्रह आयोग से किया है।

आयोग को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित गौकरुणानिधि की हिन्दी और अग्रजी की पुस्तिकाए भेजकर यह निदेवन किया गया हे कि वित्त मन्त्रालय से इस आशय की विशेष रिपोट तैयार करवाई जाए।

पत्र मे यह आशा व्यक्त की गई है कि यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा प्रस्तुत दृष्टिकोण को ध्यान मे रखते हुए गौपालन की यह आर्थिक रिपोर्ट ईमानदारी से तैयार की जाए तो कोई भी सरकार भविष्य मे गोहत्या बन्दी के विषय पर टाल मटोल नहीं कर पाएगी।

कै० देवरत्न आर्य विदेश प्रचार यात्रा से वापस

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य अमेरिका के विभिन्न राज्यो के बाद कनाडा इग्लैण्ड की प्रचार यात्रा से स्वदेश वापस लौट आए हैं। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्या भी गई थी। वापस आगमन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन तथा आर्यसमाज जनकपुरी के कार्यकारी प्रधान श्री सतीजा जी एव मन्त्री श्री रमेश कुमार जी के साथ कई अन्य आर्य कार्यकर्ताओ ने दिल्ली हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया।

कै० देवरत्न आर्य जी की विदेश यात्रा के अनुभवो पर आधारित एक विस्तृत रिपोर्ट शीघ्र ही सार्वदेशिक साप्ताहिक में प्रकाशित करने हेतु तैयार की जा रही है।

धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए प्रयास

मेवात की आर्यसमाजो तथा अन्य राष्ट्रवादी सस्थाओ की तरफ से सार्वदेशिक सभा की प्रेरणा पर एक लक्ष्यबद्ध सम्मेलन नूह की पुरानी धर्मशाला मे आयोजित किया गया है जिसमे लगभग १०० हरिजन और वाल्मीकि नेताओ को आमन्त्रित किया गया है। श्री पदमचन्द्र आर्य इस कार्यक्रम के सयोजक हैं।

श्री विमल वधावन के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मत्री आचार्य यशपाल तथा अन्य प्रमुख आर्य नेताओ के साथ विचार विमर्श करके एक व्यापक प्रचार योजना तैयार की जा रही है जो धर्मान्तरण की रोकथाम मे सहायक हो।

उधर मदुरै मे भी आर्य प्रतिनिधि सभा तमिलनाडू के प्रधान श्री सुबोध चन्द्र ने मुख्यमत्री श्रीमती जयललिता को पत्र लिखकर धर्मान्तरण रूपी समाज विरोधी गतिविधियो पर कडाई से रोक लगाने की माग की है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने आर्य जनता का आह्वान किया है कि धर्मान्तरण की रोकथाम के लिए तन मन धन से सहयोग करे।

स्वामी आत्मबोध जी नहीं रहे

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान एव सन्यासी आत्मबोध जी का दुखद देहावसान ४ सितम्बर की प्रात कालीन ब्रह्म बेला मे हो गया। वे ८० वर्ष के थ। सन्यास आश्रम मे प्रवेश लेन से पूर्व आर्यभिक्षु नाम स प्रसिद्ध स्वामी जी देश के विभिन्न हिस्सो मे घूम घूमकर वेदिक धर्म के प्रचार मे अग्रणीय रहते थे। प्रचार कार्यो से प्राप्त दक्षिणा आदि का सदुपयोग भी वे सदैव आर्य सस्थाओ को दान स्वरूप प्रदान करने मे करते थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तथा टकारा ट्रस्ट के कार्यो मे स्वामी जी विशेष रूचि लिया करते थे। सार्वदेशिक सभा का उन्होने कई बार इस प्रकार सहयोग करके बहुत बडी राशि की स्थिर निधिया स्थापित कराई।

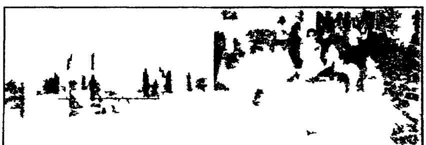
स्वामी अत्मबोध जी का अन्तिम सस्कार हरिद्वार मे पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न किया गया जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय और ज्वालापुर वानप्रस्थाश्रम के समस्त अधिकारी और सदस्य शामिल हुए।

कच्छ के भूकम्प में असहाय तथा माता पिता विहीन हुए बच्चों के प्रकल्प 'जीवन प्रभात' का कार्य प्रगति पर

कच्छ मे २६ जनवरी २००१ को आए विनाशकारी भूकम्प ने जहा गाव के गाव ध्वस्त कर दिए वहीं सैंकडो महिलाओ के सुहाग छीन लिए सैकडो बच्चो को माता पिता विहीन कर दिया।

आर्यसमाज की हमेशा प्राकतिक आपदा मे राहत व बचाव कार्य करने की परम्परा रही है। भूकम्प आते ही भारतभर से आर्यसमाज के महानुभाव राहतसामग्री व आर्यवीर दलो के साथ कच्छ मे पधार। करीब ११२ ट्रक भारतभर स राहत सामग्री लेकर आए जो पूरे कच्छ क्षेत्र मे बटी। विदेशो से भी ३२ कन्टेनर राहत सामग्री आर्यसमाज को भेजी गई। करीब १००० शवो को मलबे से आर्यवीरो ने निकाला और उनका घी व हवन सामग्री से मत्र पाठ सहित अतिम सस्कार किया। इस कारण भूकम्प के बाद महामारी फैलने नहीं पायी। सार्वदशिक सभा ने नुरन्त भूकम्प मे माता पिता विहीन बालको को आश्रय दने हेतु एक योजना बनायी व उसे कायान्वित करने के लिए आर्यसमाज गाधीधाम (कच्छ) का माध्यम बनाया तथा सार्वदेशिक सभा ने तत्कालीन केन्द्रीय कानून व जहाजरानी मन्त्री श्री अरुण जटली से मिलकर इस योजना की जानकारी दी व लाखो की कीमत की करीब १०००० वर्ग गज जमीन १ रुपये टोकन पर प्राप्त की। इस बीच भूकम्प के तुरन्त बाद २६/१/२००१ को **जीवन प्रभात** नाम से भूकम्प से असहाय हुए माता पिता विहीन बालको को विधवा हुई बहनो को आश्रय दना शुरु कर दिया गया। यदि इन बच्चो को आर्यसमाज न सभालता तो विदेशी सस्थाए इन्हे अपनाकर धर्म परिवर्तन करने को तैयार बैठी थी।

इस प्रकल्प के अतर्गत आज ३ वर्ष से ११ वर्ष उम्र के ७१ बालक बालिकाए व ८ विधवा बहने



निर्माणाधीन जीवन प्रभात भवन का दृश्य तथा वर्तमान मे आर्यसमाज गाधीधाम के भवन मे सचालित अनाथ व विधवा आश्रम मे बच्चो को प्रेरणाए देती बहने।

आश्रय ले रही हैं। जीवन प्रभात प्रकल्प मे बालको की कम से कम १८ वर्ष तक एव बालिकाओ की विवाह कराने तक नि शुल्क जिम्मेदारी आर्यसमाज उठाएगा। बिना जातिगत भेदभाव के सभी बच्चे एक साथ वैदिक परम्परा मे ढल गए हैं। आर्यसमाज गाधीधाम के पदाधिकारी उन्हे अपने बच्चो जैसा ही रख रहे हैं वे भूकम्प मे तो अनाथ हो गए थे लेकिन आर्यसमाज ने उन्हे सनाथ कर दिया है। बालको पर अपने बच्चो से भी ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। कुछ बच्चे तो अपनी कक्षा मे प्रथम श्रेणी प्राप्त कर उत्तीर्ण हुए हैं। बच्चो के लिए गौशाला बनायी गयी है और बच्चो को शुद्ध गौदुग्ध प्राप्त हो रहा है। उन्हे दयनीय अवस्था मे न दिखाकर उन्हे स्वाभिमानी दिखाकर लोगो का सहयोग प्राप्त किया जा रहा है।

इन बच्चो को अस्थायी रुप से आर्यसमाज मे रखा गया है। इन बच्चो हेतु स्थायी भवन सरकार द्वारा प्राप्त दो एकड जमीन मे ३ करोड रुपये के खर्च से बन रहा है जिस हेतु करीब एक करोड रुपया सार्वदेशिक सभा सहित देश विदेश के दाताओ से प्राप्त हुआ है। जीवन प्रभात भवन एक आधुनिक सकुल होगा जिसके ६ विभाग होगे। एक विभाग बालिका सदन दूसरा विभाग बाल सदन होगा तीसरा विभाग विधवा सदन चौथा विभाग रसोई व बाल कक्षा सदन पाचवा विभाग सत्सग भवन एव छठा विभाग प्रशासनिक भवन होगा। सभी विभाग तिमजिले होगे एव करीब ६५ हजार फुट निर्माण होगा। इस समय तल मजिल का कार्य चल रहा है। पूरा सकुल १८ माह मे तैयार हो जाएगा एव उसमे २५० बच्चे व ५० विधवा बहने आश्रय ले पाएगी। ६ मे से किसी भी १ विभाग की हर मजिल पर ११ लाख रुपये देकर दानदाता अपने स्वजन के नाम पर मजिल बुक करा सकते है। १ घर का १ लाख रुपये दान दे सकते है। इससे भी कम रकम के दान स्वीकार्य होगे जिनका शिलालेख लगाया जाएगा। १ रुपये प्रतिदिन के हिसाब से भी कई लोग दान दे रहे है।

इन बच्चो के माता पिता नही रहे। हमे उनका बचपन लौटाना है इनके माता पिता हम सब है। कपया अपनी आहुति अवश्य आर्यसमाज गाधीधाम महर्षि दयानन्द मार्ग गाधीधाम कच्छ पिन – ३७०२०१ के पते पर चैक/ड्राफ्ट या मनीआर्डर से भेजने की कृपा करे।

किसी आर्यसमाज के पास भूकम्प हेतु दान भिजवाना बाकी रहा हो वो भी हमे भिजवा दे। आर्यसमाज गाधीधाम भारत की आदर्श व नवयुवको द्वारा सचालित आधुनिक आर्यसमाज है। कभी व्यक्तिगत रुप से भी मुलाकात लेने की प्रार्थना है।

– वाचोनिधि आर्य महामन्त्री
आर्यसमाज गाधीधाम

बोध कथा

सत्यनिष्ठा का पुरस्कार

घटना भारत के स्वातन्त्र्य सग्राम से पहले की है। शिक्षक ने सारी कक्षा को कुछ प्रश्न लिखाए और उनका समाधान करने का आदेश दिया।

केवल एक विद्यार्थी ने सभी प्रश्नो के ठीक उत्तर लिखे थे। शिक्षक उसे पुरस्कार देने लगे तो छात्र ने पुरस्कार लेने से इन्कार कर दिया और रोने लगा।

शिक्षक न रोने का कारण पूछा ता छात्र ने उत्तर दिया – **गुरुजी ये सवाल मैने स्वय हल नहीं किए मैने एक मित्र की मदद ली मै तो दण्ड का अधिकारी हू।**

छात्र की बात स शिक्षक तुरन्त प्रभावित हो उठे। उन्होने छात्र से कहा – तुम्हे यह पुरस्कार तुम्हारी सत्यनिष्ठा के लिए दे रहा हू।

उल्लेखनीय हे यह सत्य बोलने वाले देशभक्त थे श्री गोपाल कृष्ण गोखले।

– नरेन्द्र

बचपन

– हिमानी

जब मैं बडी हो रही थी कोई पूछता था मुझ से
कि जीवन की तुम्हारी खास ख्वाहिश क्या है ?

मैं कहती यही कि ले लो मेरी डिग्रिया
और जिम्मेदारिया मेरी जो बचपन के बदले मैंने पाई हैं।।

न छीनों मुझ से मेरा बचपन और गुडिया मेरी।
जो मेरे बचपन की रहनुमाई है एक नहीं दो नहीं।।

जिसमें अनगिनत यादें समाई हैं तुतलाहट थी घबराहट भी थी।
पर शर्म और झिझक नहीं थी कोई।।

आज भी मागती हू यही।
कि सारी शोहरत इशरत लेकर बचपन मेरा लौटा दे कोई।।

– सी १/२३७ यमुना विहार दिल्ली ५३

ज्ञानी . फल : अभिलाषा

सब से बडा ज्ञानी वह है जो अपनी हानि का सबसे अच्छा सुधार कर सकता है।

— सूक्ति

जीवन मे शारीरिक और मानसिक परिश्रम के बिना फल नहीं मिलता। दृढ निश्चयी और महान उद्देश्य वाला मनुष्य सब कुछ कर सकता है।

एरी शफर

अभिलाषा तभी फलदायिनी होती है जब उसे दृढ निश्चय मे बदला जाए।

स्वट मार्टेन

साप्ताहिक आर्य सन्देश

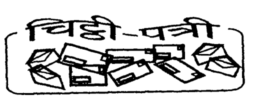
सम्पादकीय अग्रलेख

बाधाए अनेक : समाधान — एकता, अनुशासन और निष्ठा से

भारतीय गणतन्त्र की स्वाधीनता का पचपनवा वर्ष चल रहा है। आज भारतीय राष्ट्र के सम्मुख समस्याए अनेक है परन्तु यदि हम चिन्तन और निरीक्षण करे तो मालूम होगा कि उनका समाधान राष्ट्रजनो की सच्ची एकता अनुशासन निष्ठा मे ही सम्भव है। पिछले दिनो श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व आया। दीवाली का पर्व श्रीराम की विजय यात्रा का स्मरण कराता है। श्रीराम और श्रीकृष्ण दोनो ने जन जन के कल्याण के लिए निरन्तर सघर्ष किया और स्वय दुख झेले उनके सघर्ष और त्याग के कारण जनता ने उन्हे भगवान का प्रतिनिधि भगवान माना। श्रीकृष्ण ने कारागार मे जन्म लिया। शल्य के आधात से कठिन स्थिति रही। श्रीकृष्ण और श्रीराम ने दिखला दिया कि अपने सघर्ष प्रयासो और कर्मो के बिना कोई व्यक्ति महान नही बन सकता। उन्होने यह भी दिखला दिया कि महान वह नही है जिसने अस्त्र शस्त्र अथवा शक्ति से दूसरो के अधिकारो या सम्पत्ति पर प्रभुत्व किया हे प्रत्युत महान वह है जिसके पास क्षमा दया करुणा और मैत्री के भाव है। विवेकानन्द ने ठीक कहा था श्रीकृष्ण के जीवन अनासक्ति प्रधान है वह अपनी कोई इच्छा नही करते कर्म के निर्मित कर्म करते है उपासना के निमित्त उपासना करते है। राष्ट्रीय स्वाधीनता के पचपनवे वर्ष मे देखते है भारतीय राष्ट्र तीन भागो मे विभक्त हे। भारतीय स्वातन्त्र्य योद्धाओ के ऊचे स्वातन्त्र्य लक्ष्यो के विरुद्ध हमारा पश्चिमी पडोसी पाकिस्तान अनेक बार विरोध सघर्ष करता रहा है। १९७१ के निर्णायक युद्ध मे श्रीमती इन्दिरा जी की नेतृत्व मे भारतीय राष्ट्र ने उसे पराजित किया [illegible] अधिक अच्छा होता यदि उस अवसर [illegible] पाकिस्तान मे बगला देश के अभ्युदय [illegible] मे उससे भारतीय राष्ट्र से स्थायी [illegible] सूत्र सुदृढ करते। वह बीती घडी तो वापस नहीं आ सकती परन्तु हम भारतीय उपमहाद्वीप के भूखण्डो मे स्थायी एकता [illegible] अवश्य जुटा सकते है।

अब समय आया है जब हम अतीत की बाधाओ अवरोधो का स्मरण तो अवश्य करे [illegible] भविष्य मे उनसे बचा जा [illegible] जनता और नेताओ के [illegible] राष्ट्रीय [illegible] सगठित [illegible] सुदृढ करना होगा जिस प्रकार [illegible] विदेशी शासन से जूझने के लिए सगठित [illegible] व्यवस्थित किया गया था। विदेशी शासन से सत्याग्रह के माध्यम से जूझते हुए जिस प्रकार की एकता अनुशासन निष्ठा और दृढता सजाई गई थी अब समय आ गया है कि विश्व मे एक अग्रणी भारतीय गणतन्त्र के अभ्युदय और उसे यशस्वी बनाने के लिए पुन राष्ट्रीय एकता सगठित की जाए और उस सच्चे अनुशासन और पूरी निष्ठा से उसे मूर्त स्वरूप दिया जाए। यह लक्ष्य जीवन और व्यवहार मे कठिन दीखता है परन्तु यदि देशवासी प्रमुख राजनीतिक दल और राष्ट्रीय नेतृत्व उस सम्बन्ध मे जागरूक होकर प्रयत्न करे तो राष्ट्र मे एकता अनुशासन और निष्ठा का वैसा ही वातावरण बन सकता है जैसा कि विदेशी शासन के दिनो मे तिलक गाधीजी गोखले एव मालवीय [illegible] जन नेताओ के सपने [illegible] भारतीय राष्ट्र प्रस्तुत कर सका।

आज [illegible] मे नई सहस्राब्दी और [illegible] मे एक अग्रणी यशस्वी महान भारतीय [illegible] अभ्युदय कठिन मालूम पडता है परन्तु [illegible] असम्भव नही है यदि स्वातन्त्र्य सग्राम के दिनो की तरह पुन एकता सगठन अनुशासन निष्ठा [illegible] सगठित कर [illegible] महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सगठित [illegible] किया [illegible] असम्भव [illegible] सकता [illegible] हम की वर्तमान [illegible] कर [illegible] राष्ट्र की [illegible] के सभी [illegible] का सही मूल्याकन करना होगा। [illegible] कठिन [illegible] परन्तु [illegible] चिन्तन [illegible] सगठित होकर स्वातन्त्र्य [illegible] एकता अनुशासन [illegible] कठिन [illegible] का सच्चा मूल्याकन [illegible] प्रस्तुत [illegible] समाधान के लिए पुन एकता [illegible] निष्ठा [illegible] सम्भव [illegible] वर्तमान स्थिति के व्यवस्थित मूल्याकन [illegible] समुचित समाधान के लिए सच्ची [illegible] और निष्ठा [illegible] जुटाना अनिवार्य है।



गुजरात मे चुनाव

निर्वाचन आयोग यदि सच्चा है तो उसे चाहिए कि गुजरात के समस्त मतदान केन्द्रो की सख्या सार्वजनिक करे और स्पष्टीकरण दे कि अल्पसख्यको के कृत्यो की छाया बहुसख्या क्यो ढोए ? निर्वाचन आयोग यह भी बताए कि सीमित प्रतिकूलता की दशा मे अन्य राज्यो मे उसने क्या किया ? और वही गुजरात मे क्यो नही करना चाहता ? करने की क्रान्ति का एक अवसर स्पष्ट सामने है। वह सचल मतदान केन्द्र बनाकर शरणार्थी शिविरों में जाकर कश्मीर और गुजरात मे मतदान सुविधा सुलभ करे।

— शरण, नोएडा

आचरण

आचरण दर्पण के समान हे जिस मे हर मनुष्य अपना प्रतिबिम्ब देखता हे।

गेटो

सिद्धान्त

आनन्द का मुख्य सिद्धान्त तन्दुरुस्ती हे ओर तन्दुरुस्ती का मुख्य सिद्धान्त व्यायाम।

— टायसन

कन्हैया की महिमा

जिहि रहीम चित्त आपनो कीन्हो चतुर चकोर।
निसि बासर लाग्यो रहे कृष्णचन्द्र की ओर।

— रहीम

पैगामे हयाते जादवा था हर नगमा कृष्ण बासुरी का।

— हसरत मोहानी

आ गया फिर हुस्न दुनिया अजल आबन्द पर।
जिन्दगी मथुरा से बरसी आलमे ईजाद पर।।

निहाल शिवहादरी

क्या आप जानते है ?

१ विश्व का सबसे बडा बायो गेस प्लाण्ट कहा बन रहा हे ?

२ रथ यात्रा आयोजित करने वाला पुरी किस भारतीय राज्य मे ?

३ भारत टी ९० टैक किस देश से ले रहा है ?

४ राष्ट्रमण्डल खेल कहा सम्पन्न होगे ?

५ अर्जुन पुरस्कार चयन समिति के अध्यक्ष प्रकाश पादुकोण किस खेल से सम्बन्धित रहे है ?

६ क्रिकेट खिलाडी मोहम्मद कैफ के राज्य के है ?

उत्तर १ भारत २ उडीसा ३ रूस ४ मैनचस्टर ५ बेडमिण्टन ६ उत्तर प्रदेश।

अथर्ववेद से – हिरण्योपदेश सप्तकम्

अतिथि सेवा की महिमा-प्रदर्शन का हितकर उपदेश

(१) अतिथि को साक्षात् ब्रह्म मानकर, उसका आदर सत्कार और सत्सग करे

यो विद्यात्ब्रह्म प्रत्यक्ष परूषि यस्य सभारा ऋचो यस्यानूक्यम्।। *अथर्व०*

ब्रह्मा। अतिथि , विद्या। नागीनामत्रिपाद् गायत्री।

अर्थ – (य) जो सयमी साधक (ब्रह्म प्रत्यक्ष विद्यात्) ब्रह्म को प्रत्यक्ष जानना चाहता है वह अतिथि को (प्रत्यक्ष ब्रह्म विद्यात्) प्रत्यक्ष ब्रह्म माने। क्योकि (यस्य) अतिथि का (परुषि सभारा) प्रत्येक परू या जोड यज्ञ सामग्री के समान पवित्र है और अतिथि की (अनूक्य परुषि ऋच) रीढ का प्रत्येक परु वेद की ऋचाओ के समान ब्रह्म की स्तुति मे रत है।

मनन – (१) जो साधक (अतिथि) आत्म कल्याण की दृष्टि से यज्ञ सामग्रियो और वेद की ऋचाओ को जितना महत्व देता है शरीर-कल्याण (स्वास्थ्य) की दृष्टि से उतना ही महत्व शरीर के प्रत्येक जोड और विशेषकर रीढ की प्रत्येक परु (पोर) को देना है क्योकि शरीर माद्य खलु धर्म साधनम् । यह अतिथि की प्रथम श्रणी है।

(२) अतिथि दूसरी श्रेणी है – अत सातत्यगामने जो साधक मानवता के हित मे अथवा अपने निर्धारित लक्ष्य के प्रति निरन्तर क्रियाशील है। किसी विघ्न बाधा से हताश होकर अपने अध यवसाय को नही छाडता।

(३) अतिथि की तीसरी श्रेणी है – अ+तिथि – जो साधक किसी आर्त व्यक्ति के बुलाए बिना – और जताए बिना अभावग्रस्त जनो की सेवा और सहायता करता है।

(४) अतिथि की चौथी श्रेणी है – 'एष वा अतिथिर्यात श्रोत्रिय जो वेद अथवा किसी भी ज्ञान क्षेत्र का विशेषज्ञ है अथवा ब्रह्मज्ञानियो और विशेषज्ञो की बात को सुनकर उस पर मनन और आचरण करता है।

निष्कर्ष – इस प्रकार के अतिथि को प्रत्यक्ष ब्रह्म मानकर उसकी तन मन धन से सेवा करे। मध्यकाल मे स्वार्थी विद्वानो ने इसी को बिगाडकर चाहे जिसे गुरु मानकर उसे ब्रह्म के रूप ब्रह्मा विष्णु महेश मे से किसी भी रूप मे पूजने का और उसके उचित अनुचित सभी आदेशो को मानने का प्रचलन किया।

श्रोत्रिय अतिथि की सेवा तो ब्रह्मयज्ञ के समान है। अपनी सन्ध्या को छोडकर भी श्रोत्रिय अतिथि की देखभाल करे।

(२) अतिथि सेवा और सत्सग देवयज्ञ के समान गृहस्थ को स्वर्ग बनाते हैं

यद्वातिथिपतिहर तिथीन्प्रति पश्यति देवयजन प्रेक्षते।

(अथर्व ६–६ पर्याय १) ३

यदुपरिशयनमाहरन्ति स्वर्गमेव तेन लोकमवरुन्धे।

(अथर्व ६–६ पर्याय १) ८

– प० मनोहर विद्यालकार

ब्रह्मा। अतिथि , विद्या। साम्नी त्रिष्टुप्। आर्ची अनुष्टुप्।

अर्थ – (यत अतिथिपति अतिथीन् प्रति पश्यति) जब गृहस्थ प्रथम तीन श्रेणी के अतिथियो की देखभाल करता है तो मानो देवयज्ञ (अग्निहोत्र) कर लेता है। और (यत उपरिशियन आहरन्ति) और जब गृहस्थ अतिथि के शयन और निवास का प्रबन्ध करता है (तेन) मानो उस क्रिया से (स्वर्ग मेव लोक अवरुन्धे) अपने लिए स्वर्गलोक सुरक्षित कर लेता है। उसका घर स्वर्ग के सदृश आलोकपूर्ण हो जाता है। इसी तथ्य को द्वितीय पर्याय के छठे मन्त्र मे कहा है (स्वर्ग लोक गमयन्ति यदतिथय)।

निष्कर्ष – सच्चे अतिथि की सेवा स्वर्ग प्राप्ति का सुख देती है।

(३) ज्ञानी मनुष्य किसी से द्वेष न करे, किन्तु अपने द्वेषी का अन्न भक्षण न करे

स य एव द्विान्न द्विषन्नश्नीयान्न द्विषतोऽन्नमश्नीयात्।

अथर्व० ६–६– (पर्याय २) – ७

सर्वो वा एषोऽजग्धपाप्मा यस्यान्न नाश्नन्ति।।

अथर्व ६–६ (पर्याय २) – ६

ब्रह्मा। विद्या, अतिथि । चतुष्पदा विराट्, साम्नी अनुष्टुप्।

अर्थ – (य एव विद्वान्) जो आतिथ्य का महत्व जानता है (स द्विषन न अश्नीयात्) वह कभी किसी के प्रति मन मे द्वेष रखता हुआ भोजन न करे। इसी प्रकार अतिथि भी (द्विषत अन्न न अश्नीयात्) अपने से द्वेष रखने वाले का अन्न न खाए। (यस्य अन्न न अश्नन्ति) अतिथि देव जिस गृहस्थ के अन्न को नही खाते है (एष वा सर्व अजग्घपाप्मा) ऐसा प्रत्येक व्यक्ति अनष्ट पाप वाला रहता है। उसके पाप कभी भी नष्ट नही होते।

निष्कर्ष – यही दृष्टि ध्यान मे रखकर श्रीकृष्ण ने दुर्योधन का अतिथि स्वीकार नही किया था हम भी अपने से द्वेष करने वाले का भोजन नहीं करे तथा भोजन करते समय किसी के प्रति द्वेष भाव न रखे।

(४) अतिथि के घर मे आने के बाद, उससे पूर्व खाने वाले का गृह श्रीहीन हो जाता है

श्रिय च वा एष सविद च गृहाणामश्नाति य पूर्वोऽतिथेरश्नाति।

एष वा अतिथिर्यच्छोत्रियस्तस्मात्पूर्वो नाश्नीयात्।। *अथर्व० ६–६ (पर्याय ३)६ ७*

ब्रह्मा । विद्या, अतिथि । त्रिपदागायत्री, साम्नी बृहती।

अर्थ – (य अतिथे पूर्वो अश्नाति) जो गृहपति अतिथि से पहले खा लेता है (एष गृहाणा श्रिय वा स विदच अश्नाति) वह घर की शोभा और समृद्धि तथा सज्ञान और ख्याति को नष्ट करता है इसलिए चाहे आपातकाल मे प्रथम तीन श्रेणियो के अतिथि से पहले खा भी ले किन्तु (एष वा अतिथि यत श्रोत्रिय तस्मात् पूर्व न अश्नीयात्) श्रोत्रिय अतिथि से पूर्व कभी भोजन न करे। (यज्ञस्य अविच्छेदाय तद् व्रतम्) अतिथि यज्ञ के भग न होने के लिए क्योकि अतिथि यज्ञ का यही शास्त्र विहित नियम है।

(५) इस मन्त्र के आधार पर वेद में मास भक्षण का विधान मानना अनुचित व स्वार्थी दृष्टिकोण है

एतद्वा उ स्वादीयो यदधिगव क्षीर वा मास वा तदेव नाश्नीयात्। *अथर्व ६–६*

ब्रह्मा। अतिथि ,विद्या। त्रिपदा गायत्री।

अर्थ – (एतद वा छठे) इस बात को निश्चय से ध्यान मे रखे कि (अधिगव श्रीरम्) गाय से प्राप्त दूध (वा) और (मासवा) दूध से उत्पन्न मन को लुभाने वाले घृत मलाई रबडी खोया पानी (इत्यादि पदार्थ (तदेव नाश्नीयात्) को किसी अवस्था मे (अत्यन्त आपातकाल मे) भी अतिथि से पहले ना खाए।

अर्थपोषण – मासम् – मानस अस्मिन् सीदतीति। निरु०

निष्कर्ष – (१) स्वादिष्ट पदार्थ और जो पदार्थ अतिथि को प्रिय हो उन्हे तो अतिथि के सम्मुख रहते किसी हालत मे उससे पहले न खाए। (२) यहा कुछ लोगो का आग्रह है कि मास का अर्थ मास ही करना चाहिए और फिर इस को उद्धत करके – वेद मे गोमास भक्षण का विधान सिद्ध करते है। यह तो केवल भारतीय साम्यवादी कर सकते है क्योकि – (क) मास का अर्थ सन्देहास्पद है (ख) यह अतिथि सत्कार का प्रकरण है भोजन विधान का प्रकरण नही है (ग) अथर्व ६–१४०–२ मे स्पष्ट विधान है

ब्रीहिमत्त यवमत्तमथो भाषमथोतिलम्।

एषा वा भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ मा हिंसिष्ट पितर मातर च।।

यहा प्राणीमात्र के मास भक्षण का निषेध है।

चावल जौ आदि अन्न माष आदि दाले तिल आदि स्निग्ध पदार्थ दान्तो द्वारा भक्षण के लिए निर्धारित है। उनसे वीर्य धारण मे सहायता मिलती है। माता पिता बनने वाली प्राणीमात्र की हिसा का स्पष्ट निषेध है।

(६) अतिथि सेवक को जड व चेतन सब देव अपना आश्रय (भाग) प्रदान करते हैं

तस्मै उषा हिं कृणोति सविता प्रस्तौति।। १।।

विश्वेदेवा निधनम्।। २।।

निधन भूत्या प्रजाया पशूना भवति य एव वेद।।

अथर्व ६–६ (पर्याय ५) ३

ब्रह्मा। अतिथि , विद्या। साम्नी उष्णिक्। पुर उष्णिक्। भुरिक् साम्नी बृहती

– शेष भाग पृष्ठ ७ पर

महर्षि दयानन्द कृत संन्ध्या यज्ञ पद्धति का निर्णय

– सोहन लाल शारदा

"उस घृत मे से जो के उष्ण कर, छान सुगन्ध्यादि पदार्थ मिलाया हो। उसमे से चमसा (श्रुवा) मे के जियमे ६ मासा ही घृत आवे ऐसा बनाया हो उसे भर के इस मन्त्र से पाच आहुति दे।"

ओम अयन्त इधम आत्मा जात वेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान

अजया पशुभिर्ब्रह्म वर्च से नान्नाद्येन समेधय स्वाहा।।

इदमग्न्ये जातवेद से –इदन्न मम।।

(गृह सूत्र १/१०/१२ सामान्य प्रकरणम)

इस मन्त्र मे सस्कार विधि प्रथम सस्करण सम्वत १६३२ विक्रमी के पृष्ठ सख्या ११४ पर विशेष पाठ निम्न है।

ओ शृतानि हवीष्य भिघार्यो दगुद्वास्व बर्हिस्या साधेधमभिधार्योऽयन्त इधम०।।

इसके आगे पृष्ठ ११७ पर गृहाश्रम सस्कार मे निम्न अर्थ है। हे जात वेद परमात्मन इन्धन की तरह हम लोगो को ज्ञान से बढा। और हम लोगो को पशु विद्या प्रजा और अन्नादि से युक्त कर।

इसके पश्चात सम्वत १६३८–१६३६ मे महर्षि के बम्बई प्रवास समय वेदोक्त सस्कार प्रकाश का लेखन प्रकाशन पण्डित बालाजी बिटठल गावस्कर द्वारा मराठी व साथ ही गुजराती भाषा मे भी अनुवाद कर तत्कालीन आर्यसमाज बम्बई के प्रधान बापू आत्माराम जी दलवी को सानन्दाश्रवर्यपूर्वक परम प्रेम भाव से अर्पण किया।

इस ग्रन्थ के पृष्ठ ५५–५६ पर इसी मन्त्र का विनियोग निम्न प्रकार से हुआ है। उपर्युक्त समिधा काष्ठ (जितने से अग्नि प्रज्वलित हो सके) उतनी को लेकर उस पर श्रुवा से घृत सिचन करके उनमे से एक–एक समिधा लेकर इस मन्त्र (अयन्त इंधन आत्मा) से यज्ञ कुण्ड मे भलीभाति अग्नि प्रज्वलित होने पर्यन्त डाले।।

इस प्रकार की विधि को ही सम्वत १६४० विक्रमी मे जोधपुर अवस्थिती समय सशोधित वर्तमान चालू सस्कार विधिका निर्माण किया।

इसके विषय मे स्वय एक पत्र मे लिखते है –

'अब की बार सस्कार विधि बहुत अच्छी बनी है। अमावस्या तक बन चुकेगी।"

(पत्र विज्ञापन मीमासक जी भाग २ पृष्ठ ७३७ मिती भाद्र कृष्णापचमी १८४० विक्रमी)

इस अच्छी बनी सस्कार विधि के सामान्य प्रकरण मे समिधाधान मे प्रथम मन्त्र से एक समिधा घृत से डूबी हुई कुछ प्रज्वलित समिधाओ पर चढाने का विधान है। आगे इसी मन्त्र का पचाहुतियो का वर्णन घृत से श्रुवा को जिसमे ६ मासा ही घृत आवे भरकर देने का विधान है।

इस महान ग्रन्थ की भूमिका मे पाठ है –

"जो मन्त्र वा क्रिया का सामान्य प्रकरण की सस्कारो में अपेक्षित है उसे पृष्ठ पक्ति के प्रतीक उसे अन्य सस्कारो मे लिखा है।"

तदनुसार ही गृहाश्रम सस्कार मे नित्य यज्ञ निमित वर्णन है कि 'लिखे प्रमाणो (सामान्य प्रकरणम्) अग्न्याधान समिधाधान और अदितेऽनुमन्य स्व० इत्यादि चार मन्त्रो से कुण्ड के चारो और जल मोक्षण करे।

इस प्रकार अत्यन्त स्पष्ट सगतियुक्त विधिवत पाठ का आदेश होने पर भी श्रद्धेय डॉ० ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री जुलाई २००२ के मधुर लोक दिल्ली के मे उपरोक्त शीर्षक से लेख मे लिखते है कि –

'अग्नयाधान समिधाधान पश्चात् अयन्त इधमा आत्मा से पचघृताहुतिया दे आदितेऽनुमन्य स्व० इत्यादि चार मन्त्रो से जल छिडाना नित्य अग्निहोत्र मे ज्ञापक है।

और आगे अपने विचारो से महर्षिकृत का निरस्त करते हुए जो स्पष्ट है सदेहाद लक्षणम कहकर आप्रासगिक विधि को अनावश्यक व्यर्थ ही सिद्ध किया है।

यहा गृहाश्रम सस्कार मे जहा नित्य यज्ञ की विधि है। यहा प्राक्षेण शब्द है जो बैठे बैठे ही हो जाता है। छिडकाना नही।

ऐसे ही पूज्य शास्त्री जी महोदय के अनुसार दैनिक यज्ञ मे पचाहुतिया भी देनी नही है इसलिए साधक को भक्त पचमहायज्ञ विधि देवयज्ञान्तर्गत निर्देश है कि न्यूनतम एक छटाक घृत शोधे हुए मे से लेकर० । सो यह वर्तमान देश कालानुकार उचित ही है। इससे अधिक घृत यज्ञ मे प्रयुक्त न लेकर न्यूनातिन्यून हम आर्यो के घरो मे समझे एक छटाक ही। एक छटाक बराबर ५ तोला यानी ६० मासा। पचाहुतिया श्रुवा को भरकर देने पर व्यय हुआ ५ गुणा ६ = ३० मासा। ऐसे ही आधा वा राज्यभागाहुतिया ४ भी श्रुवा को भरकर तो व्यय हुआ ४ गुणा ६ = २४ मासा। इस प्रकार खर्च हुआ ५४ मासा। शेष रहता है ६ मासा। इसमे हमे दीपक समीधा डुबोनी तथा सर्व वै० की तीन आहुति भर भरकर श्रुवा को देनी है। जो सर्वथा असम्भव है।

अत यह कर्मकाण्ड परक पूज्य शास्त्री जी का लेख नितान्त भ्रमपूर्ण अल्पज्ञानयुक्त महर्षि विचारधारानुसार नहीं होने से सर्वथा ही अमान्य है। तो मान्य क्या है ?

सप्तम समुल्लास मे वर्णन है कि – योगी जन भूत भविष्य व वर्तमान व्यवहारो को जानते जो नाशरहित जीवात्मा को परमात्मा के साथ मिल के त्रिकालयज्ञ करता है।

महर्षि समाधी पाद तक पहुच जाने से भविष्य के कई उदाहरण जीवन चरित्र मे भरे पडे है। अत सर्वसुलभ एक छटाक घृत नित्य यज्ञ के उपयोग मे उचित है। महर्षि निर्देशानुसार।

हम मन्त्रो की अनावश्यक भरभार विधि की न्यूनता अशुद्ध उच्चारण दूर करके नई पीढी के आर्यसमाज मे लाने हेतु प्रथम मे व्याख्या सहित १० नियम पुन नित्य सन्ध्या यज्ञ विधि पूर्णतया विचार कर पढे पढाए। तत्पश्चात सामान्य प्रकरणस्थ बृहद् यज्ञ विधि पढाए। इस प्रकार के कार्यक्रम से अच्छी सफलता मिल रही है।

साधक मनसा परिक्रमा मे कहना है कि – हे प्रभो ! जो हमसे द्वेष करता है। ऐसे जनो से हम भी स्वाभाविक तौर से किचित द्वेष रखते हैं। अब हम दोनो के ही द्वेष भावो को आप के न्यायालय मे देते है। हे न्यायकारी भगवान ! ऐसे द्वेषीभावना वाले जनो का आप।

इससे आगे उपस्थान प्रथम मन्त्र मे साधक भक्त प्रार्थनापूर्वक कहता है कि – हे कृपालो भगवान ! (अरातीयत) दुष्ट शत्रु जो हम धर्मात्माओ का विरोधी। उसके (वेद) धनैश्वर्योदि (निदहति) नित्य दहन करो। इसलिए के जिससे वह दुष्टता को छोडकर श्रेष्ठता को स्वीकार कर सके।

(आर्याभिविनय महर्षिकृत)

यह मन्त्र आर्याभिविनय के प्रथम प्रकाश मे ३३वे स्थान पर है।

इस प्रकार सर्व महर्षि कृत ग्रन्थो से यथाविधि उचित समय पर सन्ध्या यज्ञोपासनादि कर्म करने से ही हमारे महा कठिन कार्य सुगमता पूर्वक सिद्ध हो सकेगे से।

यह महा कठिन कार्य है वर्तमान मे आर्यसमाजो मे फैली शैल्यावस्था एवम विवाद जो व्यक्तिगत हो या सामाजिक अथवा क्षेत्रिय प्रान्तिय वा सार्वदेशिक का जो भी हो सभी महर्षिकृतानुसार पठन पाठन कर कुछ भी न्यूनाधिक नही करते हुए सभी विवादो को धैर्य से ब्रह्मर्पण कर नई पीढी को आर्य बनाने हेतु सप्तम समुल्लास के निर्देशनुसार सन्ध्या यज्ञ विधि को विधिवत करना सिखाना है। ऐसा ही विचार प्रतिनिधि सभा के महाराज सिह पुर मे भी आए है।

अत पूज्यपाद शास्त्री जी महोदय अपने विचार जो असगतियुक्त महर्षि की सुस्पष्ट सगतियुक्त विचारधारा के सर्वथा प्रतिकूल है उसे त्याग। स्वयम पालन करते हुए अन्यो को भी पढा सिखाकर नई पीढी को तैयार करने का निश्चय रखे।

इसी के पालनार्थ ही जब प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की बम्बई मे तब महर्षि ने जो सन्देश प्रवचन दिया वह ही सदा सदा ही हमे जागृति जाता रहेगा। वहा महर्षि कहते है कि –

'मै सन्यासी हू। मेरा कर्त्तव्य यही है कि जो आप लोगो का अन्न खाता हू। इसके बदले मे जो भी सत्य समझता हू उसका निर्भयता से उपदेश करू। मुझे यश कीर्ति की कोई इच्छा नहीं है। मै तो अपना कर्त्तव्य समझकर ही धर्म का बोध करता है। चाहे कोई माने या नहीं माने। इसमे मेरा कुछ भी हानी व लाभ नहीं है।

जो कुछ भी होगा आप लोगो का ही होगा।"

(आर्यसमाज का इतिहास सत्यकेतु जी प्रथम भाग पृष्ठ २५२)

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर का वार्षिकोत्सव

नैतिक शिक्षा से ही भ्रष्टाचार का प्रतिकार सम्भव : डॉ० जोशी

नई दिल्ली २ दिसम्बर। मानव ससाधन विकास मन्त्री डा० मुरली मनोहर जोशी न भ्रष्टाचार को आर्थिक और सामाजिक विकास मे सबसे बडी बाधा बताते हुए कहा कि नैतिक मूल्यो से अनुप्राणित शिक्षा से ही इस समस्या का कारगर इलाज सम्भव ह।

उन्हाने कहा कि नतिक शिक्षा की आवश्यकता स्व० राजीव गान्धी के प्रधानमन्त्रित्व काल मे स्वीकार की गई थी। सरकार केवल उस सकल्प को क्रियान्वित कर रही ह

डा० जोशी कल चन्द्र आय विद्या मन्दिर और इसस सम्बद्ध सस्थाआ क वार्षिकोत्सव म गणमान्य नागरिको का सम्बोधित कर रहे थ उन्हाने कहा आज देश की अधिकाश समस्याए इसलिए ह कि हमन नेतिक मूल्या का तिलाजलि द दी राष्ट्रहित का तिलाजलि दी और महापुरुषो क जीवन से कइ पाठ नही पढा।

सरकार पर भगवाकरण का आराप लगाने वालो स डा जाशी न सीधा सवाल किया कि नतिक मूल्य यदि पाठ्यक्रम स नही त कहा स आयग उन्होने कहा कि पश्चिम प्रेरित बाजार शक्तो न आज बिजनस प्रमाशन क नाम पर हर तरह क भ्रष्टाचार का जायज करार द दिया है। परन्तु हम पश्चिम से आन वाली अग्राह्य प्रवृत्तियो का स्वीकार नही कर सकते।

डा० जाशी ने कहा कि वेश्वीकरण क इस युग म भी स्वदेशी की महत्ता कम नही हुइ। जरूरत स्वदेशी की युगानुकूल व्याख्या करन की है। सौ करोड निवासिया का यह देश अगर डट कर खडा हा जाय तो दुनिया हमारी बात सुनगी।

मानव ससाधन विकास मन्त्री न कहा कि किसी तरह का विद्वेष पदा करना हमारा मकसद नही। लेकिन नयी पीढी को सही तथ्य ता बतान ही होग। इतिहास पुस्तका का लखन ब्रिटिश राज क पुरान ढर्रे पर हुआ ह जिसम राष्ट्रीय आन्दालन के अनक प्रसगो का नजरदाज कर दिया गया। यह त्रुटि हम दूर करनी ह

डा० जाशी न कहा दयानन्द सरस्वती एस पहल महापुरुष थ जिन्होन हिन्दी का राजभाषा बनाने का आग्रह किया। उन्होने पहल इतने जोर स यह बात किसी न नही कही थी उन्होन अस्पृश्यता क विरुद्ध पहल की सती प्रथा क शास्त्रीय प्रतिकार किया महिलाआ को वद पढन का अधिकार दिलाया और पराधीनता क विरुद्ध सार देश को जगाया परन्तु इतिहास पुस्तको मे उनके इस यागदान का कोई जिक्र नही।

केन्द्रीय मन्त्री ने कहा कि स्वतन्त्रता के बाद यदि देश को दयानन्द क रास्ते पर चलाने की काशिश की जाती तो भारत अब तक विश्व महाशक्ति का दर्जा हासिल कर लता उपस्थित वृन्द न हर्षनाद से उनके इस कथन स सहमति व्यक्त की।

प्रौद्यागिकी का प्रकृति अनुकूल बनाने की आवश्यकता पर बल दते हुए डा० जाशी न देसराज परिसर म प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र क सफल सचालन की सराहना की। उन्होन कहा कि इस चिकित्सा प्रणाली की जरूरत अब सारी दुनिया मे महसूस की जा रही ह।

चिन्तक पत्रकार डा० वद प्रताप वदिक न कहा कि सार्वजनिक जीवन म दयानन्द और लाहिया जैस दृढ लाग की जरूरत ह जा बुराई स समझाता करन से इकार कर द।

उन्हान कहा माजूदा स्थिति का दख कर लगता हे कि राजनीति म विचार धारा का अवसान हो गया है सारे राजनीतिक दल एक ढर्रे पर चल रह ह और एक ही प्रवाह म बह गए है। सदाचरण के लिए खडा होने की जुर्रत कोई जुटा नहीं पा रहा। स्थिति मे सुधार लाने के लिए सामाजिक सगठनो को आगे आना होगा।

विद्या मन्दिर के प्रधान वीरेश प्रताप चौधरी ने बताया कि आर्य अनाथालय और देसराज परिसर मे ग्यारह सौ वेसहारा बालक बालिकाओ को मध्यम वर्गीय जीवन स्तर मुहैया करने के अलावा पब्लिक स्कूल स बेहतर शिक्षा दी जाती है। इस सस्थान मे पूर्ण मनुष्य तेयार करन का प्रयास किया जा रहा है जो दश क सुयाग्य नागरिक बनग।

श्री महन्द्र कुमार शास्त्री न अभ्यागता क प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्ह सस्था स स्थायी रूप से जुडन की प्ररणा की। चन्द्रवती चोधरी स्मारक ट्रस्ट क प्रधान सुशील प्रकाश प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र की सचालक डा० मधु गुप्ता शास्त्री चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर की कार्यवाहक प्राचार्या राजकुमारी और रानी दत्ता अन्य विद्यालय के प्रधान ज्ञानश चाधरी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति समाराह मे उपस्थित थ।

हमीर सिह रघुवशी
मानसेवी अधिष्ठाता

वैदिक विद्वान् डॉ० लाजपत का निधन

बहुभाषाविद महान कवि विचारक गवेषक वैदिक विद्वान डा० लाजपत का निधन गत चार अप्रल का प्रात सवा छह बज गुरुकुल गौतम नगर म हा गया। डा० लाजपत लम्ब समय स अस्वस्थ थे और उनको गुर्दे व लीवर की बीमारी थी। कुछ समय तक उनकी चिकित्सा बत्रा अस्पताल म भी चली।

उनका अतिम सस्कार ग्रीन पार्क इलेक्ट्रिक शवदाह गृह (?) — उनका अतिम सस्कार ग्रीन पार्क विद्युतशवदाह गृह स्टशन क श्मशान घाट म किया गया। मन्त्राग्नि गुरुकल के आचार्य प० हरिदव शर्मा ने दी। इस अवसर पर उनक साथी श्री दत्तात्रय तिवारी अनुज अजय भल्ला व प्रशसक केलाश सत्यार्थी भी थे।

स्वर्गीय चमुपति जी के बड पुत्र श्री लाजपतराय अपने पिता की तरह ही अनोखी प्रतिभा के धनी थे। वैदिक सस्कृत क वे अप्रतिम विद्वान थे। वेद के दुर्बोध स्थलो की अनोखी व्याख्या कर वे कठिन गुत्थियो को खोलकर सबको चमत्कृत कर देते थे।

सस्कृत के अतिरिक्त अग्रेजी जर्मन भाषाओ पर भी उनका अधिकार था और इनके लेख समाचार पत्रो मे प्रकाशित होते रहते थे। इसी प्रकार राजनीति दर्शन अध्यात्म विज्ञान आदि विषयो का भी उन्हे गम्भीर ज्ञान था।

स्वभाव स सकाची मनावृत्ति क श्री लाजपतराय सार्वजनिक सभाओ गाष्ठियो म पीछ ही रहने थ। परन्त अपनी अदभुत प्रतिभा क कारण इन सभाआ व गाष्ठिया म भाग लने वाल विद्वाना म आदर क पात्र थे।

महर्षि दयानन्द के प्रति उनका अदभुत व अगाध प्रम था। वह प्राय कहत थे वर्तमान क आयसमाज के नता विद्वान दयानन्द क सन्देश को पूरी तरह समझन व उस पर चलने म असमथ ह।

पिछले पचास वष से यायावरी जीवन व्यतीत करते श्री लाजपत ने भीषण मानसिक शारीरिक व आर्थिक कष्टा का झेला परन्तु उनके व्यवहार मे कहीं कटुता का प्रभाव नही दिखा। कभी किसी तरह की किसी की भी उन्होने शिकायत नही की ओर मान अपमान म समदृष्टि रखी।

उनके निधन से अतरग मित्रो का बहुत गहरा अत्यधिक व्यथित है। ऐसे स्नेहिल स्वभाव वाल मृदुभाषी तथा सब विषयो मे सब तरह की जिज्ञासाओ का समाधान करने वाले सरल निरभिमानी ज्ञानी पुरुष का अभाव उन्हें निरतर खलता रहेगा।

बापू की दया

झवरलाल व्यास रगीला

सेवाग्राम मे एक गाशाला थी उसकी देखरख के लिए गाधीजी न एक लडका नियुक्त किया हुआ था। सर्दी क दिन थे ओर सर्दी स बचाव के लिए लडक क पास इकलाती चादर थी।

एक दिन बिल्कुल सुबह गाधीजी गोशाला पहुच। उन्हाने गायो–बछडा का दखा उन पर हाथ फिराया ओर उन्ह पुचकारा उस समय तब वह लडका भी आ गया। गाधीजी न उसके कन्धे पर। हाथ रखा ओर कहा – बेटे तुम रात का खुल मे लटत हा तुम्हे सर्दी ता नहीं लगती। लडका नीची नजर किए चुपचाप सुनता रहा। बापू लाटे और अपनी कुटिया पर पहुचकर बा स बोले – यदि तुम्हारे पास कुछ पुरानी साडिया हा तो उन्हे ले आओ। बा पुरानी साडिया ले आई। बापू और बा ने मिलकर उन पुरानी साडियो का एक खोल तैयार किया और उसमे पुरानी रूई भर दी और एक नई रजाई तैयार कर दी।

शाम को उन्होने लडके को बुलाया और उसे वह रजाई दी और बोले – यह रजाई ले जाओ तुम्हे रात को सर्दी लगती है। इसे ओढकर सो जाना।

दूसरे दिन जब बापू गोशाला पहुचे तो वह लडका बोल उठा बापू, राम को मुझे अच्छी गहरी नींद आई।

बापू उसकी बात सुनकर मुस्करा उठे।

सत्यार्थ प्रकाश प्रश्न मच प्रतियोगिता

आयसमाज आदशनगर नजीबाबाद द्वारा **सत्यार्थ प्रकाश प्रश्न मच प्रतियोगिता** यह प्रतियोगिता २४ नवम्बर २००२ रविवार को अपराह्न १ बज आरम्भ होगी जिसम सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय से दशम समुल्लास पयन्त भाग स ही मोखिक प्रश्न पूछ जाएग। प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त विजेताओ को क्रमश १५००/ रुपये १०००/ रुपये व ७००/ रुपये की राशि प्रमाण पत्र तथा अन्य विशिष्ट प्रतियागियो का भी प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाएगे। सभी वर्ग के स्त्री पुरुष व छात्र छात्राए इसमे भाग ले सकते हे। प्रतियोगिता का प्रवेश शुल्क १० रु० है। विस्तृत जानकारी व प्रवेश पत्र प्राप्त करने के लिए प्रतियोगिता सयोजक से निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करे –

– आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, सयोजक सत्यार्थ प्रकाश प्रश्न मच प्रतियोगिता, आदर्श नगर, नजीबाबाद (उ०प्र०) २४६७६३

गुरुकुल प्रभात आश्रम में वैदिक शोध सगोष्ठी सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला मेरठ मे स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध सस्थान ने आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज (पूर्व पण्डित बुद्धदेव विद्यालकार) के जन्मदिवस – (श्रावण शुक्ल एकादशी १८ अगस्त) के उपलक्ष्य मे वैदिक शोध सगोष्ठी आयोजित की। शोध-सगोष्ठी का विषय था – **"वैदिक वाड्मय में वेदार्थ प्रक्रिया एव व्याकरण।'**

शोध-सगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ० भारतभूषण वेद विभागाध्यक्ष गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने की। डॉ० एस०एस० गुप्ता पूर्व कुलपति आगरा विश्वविद्यालय एव डॉ० रमेशचन्द्र वर्तमान कुलपति चौधरी चरण सिह विश्वविद्यालय मेरठ मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे। सगोष्ठी के सयोजक डॉ० निरूपण विद्यालकार थे।

विभिन्न विश्वविद्यालयो के अनेक वैदिक विद्वानो ने अपने शोध-लेख प्रस्तुत किए। शोध-लेख प्रस्तुत करने वाले विद्वानो मे प्रमुख थे –

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से डॉ० भीमसिह डॉ० राजेश्वर प्रसाद अलीगढ विश्वविद्यालय से डॉ० सत्य प्रकाश शर्मा डॉ० श्री निवास मिश्र चौ० चरणसिह विश्वविद्यालय से डॉ० दुर्गाप्रसाद मिश्र, डॉ० विजयेन्द्र तोमर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से डॉ० सोमदेव शताशु, डॉ० ब्रह्मदेव दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली से डॉ० श्रीवत्स निगमालकार।

शोध पत्रो के वाचन के पश्चात् शान्तिपाठ से पूर्व सगोष्ठी के सयोजक की प्रार्थना पर गुरुकुल प्रभात आश्रम के कुलपति पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज के आशीर्वचन गोष्ठी मे आई वेदभक्त जिज्ञासु जनता एव वैदिक शोध मे सलग्न विद्वानो को प्राप्त हुए।

टंकारा में भव्य ऋषि मेले का आयोजन

आर्य जगत को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि प्रतिवर्ष की भाति अगले वर्ष २००३ मे महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे ऋषि बोधोत्सव २८ फरवरी से २ मार्च तक को सम्पन्न होगा। विश्व की समस्त आर्यसमाजो स्त्री आर्यसमाजो शिक्षण सस्थाओ गुरुकुल एव समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि इन तिथियो को अभी से अकित कर ले और इन दिनो मे और कोई कार्यक्रम न रखकर महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे सपरिवार पधारे। वहा आपके ठहरने और भोजन आदि की सब सुव्यवस्था टकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। टकारा पहुचने के लिए राजकोट (गुजरात) तक रेल द्वारा हवाई जहाज द्वारा पहुचा जा सकता है। राजकोट से टकारा केवल ४५ किलोमीटर की दूरी पर है।

यज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर बी०एन० पूर्वी शालीमार बाग दिल्ली–८८ मे २ सितम्बर से ८ सितम्बर, २००२ तक यज्ञ एव वेदकथा का आयोजन किया गया है।

इस अवसर पर प्रात ५ ३० से ६ ३० बजे तक ध्यान योग ६ ३० से ८ ३० तक यज्ञ एव उपदेश एव रात्रि ७ ४५ से ९ ४५ तक भजन एव उपदेश के कार्यक्रम सम्पन्न होगे। समारोह मे स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, डॉ० सुभाष जी भास्कर प० सत्यपाल जी पथिक सहित अन्य विद्वान पधार रहे हैं। रविवार ८ सितम्बर को प्रात ११ बजे से राष्ट्ररक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

मुख्य अतिथि के रूप मे श्री रविन्द्र जी बसल (विधायक शालीमार बाग) तथा श्री रामकृष्ण जी सिघल (निगम पार्षद शालीमार बाग) पधार रहे है। स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, श्री परमानन्द जी नागर डॉ० शिवकुमार जी शास्त्री डॉ० महेश जी विद्यालकार सहित अनेको विद्वानो के विचारो से लाभान्वित होने के लिए अधिक से अधिक सख्या मे पधारे।

जो उपासना का आरम्भ करना चाहे, उसके लिए यही आरम्भ है कि किसी से वैर न रखे, सर्वदा सबसे प्रीति करे, सत्य बोले, मिथ्या कभी न बोले, चोरी न करे, सत्य व्यवहार करे, जितेन्द्रिय हो, लम्पट न हो और निरभिमानी हो, अभिमान कभी न करे।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

हमारी ज्वलन्त समस्याओं का समाधान संस्कारित जीवन

आर्यसमाज बी० ब्लाक जनकपुरी के मच से बोलते हुए आर्य विदुषी डॉ० रमा ने कहा कि आज जीवन मे बहुत समस्याए हैं। प्रत्येक प्राणी दुखी और तनावग्रस्त है। दैनिक जीवन के अनेक उदाहरण देकर उन्होने यह सिद्ध किया कि आज का युवा व किशोर वर्ग अपने बजुर्गो का सम्मान नहीं करते। बच्चो के पास अपने बडे बूढो के पास बैठकर उनके सुख दुख बाटने का समय नही है किन्तु रात के १२ बजे तक टी०वी० या कम्प्यूटर के सामने बैठे रहते हैं। आज वृद्ध-पीढी एकाकीपन की पीडा से गुजर रही है और परिवार के सदस्यो मे त्याग भावना एव सामजस्य भावना का अभाव है। अपने जीवन मे हमे आज जिन ज्वलन्त समस्याओ का सामना करना पड रहा है उसका एक मात्र कारण यही है कि हमने अपने बच्चो को अच्छे सस्कार नही दिए। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम अपने बच्चो को आर्यसमाज मे आने की प्रेरणा दे क्योकि यहा की हवा बच्चो को सस्कारित कर सकती है और हमारी तमाम ज्वलन्त समस्याओ का समाधान सस्कारित जीवन मे निहित है।

आर्यसमाज के प्रधान डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया ने डॉ० रमा जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पहले हमे अपने जीवन को आदर्श तथा सस्कारित करना होगा तभी हमारे बच्चो पर प्रभाव पडेगा। कार्यक्रम का सयोजन सचालन मन्त्री जगदीशचन्द्र गुलाटी ने किया। प्रवचन से पूर्व सन्ध्या यज्ञ एव भजनापदेश भी हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री हरिप्रसाद आर्य थे। अपने सुमधुर भजन से तपोवन देहरादून के वानप्रस्थी श्री चैनमुनि जी ने सब का मन मोह लिया।

पृष्ठ ४ का शेष भाग

अतिथि सेवा की महिमा-प्रदर्शन का हितकर उपदेश

अर्थ – (य एव वेद) जो इस प्रकार अतिथियज्ञ की महत्व को समझता है (तस्मै) उसके लिए (उषाहिकृणोति) उषाकाल आनन्द का सन्देश देकर उत्साहित करता है। (सविता प्रस्तौति) सविता ऐश्वर्य प्राप्ति की प्रेरणा देता। (विश्वे देवा निधनम्) अन्य सब देव भी अपना आश्रय प्रदान करते है और वह अतिथिपति (भूत्या प्रजाया पशूना निधन भवति) कल्याणकारी सम्पत्ति प्रजा (सन्तान) और पशुओ का आश्रय (निवास) स्थान बना रहता है।

निष्कर्ष – अतिथि सत्कारकर्ता को सम्पत्ति सन्तान और दुग्धपायी तथा यानयोग्य पशुओ की कमी कमी नहीं होती।

अर्थपोषण – उषा– उषस प्रभात भावे उषदा है हताशा का दग्ध करती है।

सविता – सुप्रसवैश्वर्ययो। सुप्रेरणे।

(७) अतिथिपति को दोनो लोको (इहलोक और परलोक) में सुख व सन्तोष मिलता है

स उपहूत उहूत। १२। आप्नोतीम लोकमाप्नोत्यमुम।। १३।। ज्योतिष्मतो लोकान् जयति य एव वेद।।

अथर्व ९–६ (पर्याय ६) १४।।

ब्रह्मा। अतिथि, विद्या। आसुरी जगती। याजुषी त्रिष्टुप्। आसुरी उष्णिक।

अर्थ – (य एव वेद) जो इस सूक्त मे वर्णित आतिथ्य के महत्व को जानकर उस तरह के आचरण से लाभ उठाता है (स उपहूत) आत्मीयजनो मे आमन्त्रित होता है और इतरजनो मे भी (उपहूत) आमन्त्रित किया जाता है। इस प्रकार वह (इम लोक आप्नोति) अपने राष्ट्र मे ख्याति का आलोक प्राप्त करता है और तदनन्तर (अमु लोक आप्नोति) पर राष्ट्रो मे ख्याति का आलोक प्राप्त करता है। और मृत्यु के बाद (ज्योतिष्मत लोकान् जयति) उन ज्योतिर्मय लोको को प्राप्त करता है जिन लोको की प्राप्ति के लिए ऋक ९–११३ मे मारीच कश्यप = अन्त स्थिति प्रभु की ज्ञानकिरणो से क्रान्तदर्शी बने कश्यप ने – यत्र ज्योति रजस्र यस्मिँल्लोके स्वर्हितम। लोक यत्र ज्योतिष्मन्तस्तत्र माममृत कृधि। प्रार्थना की थी।

निष्कर्ष – आतिथ्य का महत्व जानने वालो को सब लोको से आदर प्रदानार्थ निमन्त्रण मिलता है और मृत्यु के बाद वह मोक्ष अथवा ज्योतिर्मय लोको मे सूक्ष्म भोगो को भोगता है।

अर्थपोषण – 'शृण्वन् श्रोत्र भवति पश्यन चक्षुर्भवति मन्वानो मनोभवति अहकुर्वाणोऽहकारो भवति। सत्यार्थ प्रकाश नवम समुल्लास

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 5 6/09/2002 दिनांक २ सितम्बर से ८ सितम्बर २००२ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 5 6/09/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

पृष्ठ ५ का शेष भाग

महर्षि दयानन्द कृत संन्ध्या यज्ञ पद्धति का निर्णय

अत महर्षि के अति सुस्पष्टं लेखो पर स्वान्त सुखाय मे सदेहाद् लक्षणम कहकर जो भी न्यूनाधिक करने की कुचेष्ठा करते हैं वे आर्यसमाज को हानि ही पहुचाते हैं। सत्य यही है कि सम्पूर्ण समस्याओ को हल करने की क्षमता महर्षिकृत सर्वग्रन्थो यानि जीवनियो पत्र व्यवहारो लेखो वेदभाष्यो व पुस्तको मे विद्यमान है। ये सभी ग्रन्थ सर्ववेदानुकूल सार सक्षेप से है।

अत जो सन्ध्या यज्ञ ग्रन्थो की प्रकाशको की बाढ – सी आ रही है उसे रोकने हेतु ही सस्कार विधि मे प्रथम ही लेख दिया गया है कि –

कृतानीह विद्यानानि ग्रन्थ ग्रन्थन तत्परै ।
वेद विज्ञान विर है स्वार्थिभि परिमोहितै ।। ६।।
प्रमाणौस्तान्य ना दृत्य क्रियते वेद मानत ।
जनानाम सुख बोधाय सस्कार विधि रुत्तम ।। ७।।

अर्थात – जो भी कर्मकाण्ड विषयक ग्रन्थो को वेद ज्ञान से शन्य स्वार्थो व मोहमाया वस बना रहे है उन सभी के विचारो ग्रन्थो को निरस्त करके वेदो को ही प्रमाण मानकर मानव मात्र के सुखवर्धन हेतु ही यह सस्कार विधि का बहुत ही उत्तम ग्रन्थ बनाया है।

इसी बहुत अच्छे ग्रन्थ की भूमिका मे वर्णन है –

जो विषय प्रथम विशेष लिखा था उसमे से अत्यन्त उपयोगी नहीं जानकर छोड दिया है। और अबकी बार जो जो भी अत्यन्त उपयोगी विषय है वह अधिक भी लिखा है। इसके यह नहीं समझा जाए के प्रथम उपयुक्त नहीं था। उपयुक्त छूट गया है। किन्तु इसका सशोधन किया गया है।

सशोधन से ही जो आदिम सस्कार विधि मे गृहाश्रम सस्कार अलग से है और सोलह गिनती पूरी करने हेतु वानप्रस्थ व सन्यास सस्कार को सयुक्त किया गया है। इसे ही सशोधन से गृहाश्रम सस्कार व शाला कर्मसस्कार को विवाह सस्कार के परिशिष्ट भाग मे लिखा है। और वानप्रस्थ एव सन्यास सस्कार को अलग अलग करके सोलह की गिनती पूरी हुई है। इस प्रकार यह सशोधन महर्षि द्वारा ही होने से स्वत प्रमाण है। हमे मान्य करना है।

– शाहपुरा भीलवाडा राजस्थान

यदि आप वास्तव में एक नेक दिल इन्सान है, यदि आप वास्तव में शिक्षित है तो प्रत्येक व्यक्ति की पीडा आपको ऐसा कष्ट पहुंचाएगी मानो ये आपकी खुद की पीडा हो। हमारे लिए शिक्षा का यही मतलब है।

– डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक ३८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार ९ सितम्बर से १५ सितम्बर २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

दिल्ली में आर्यसमाज की स्थापना का १२५वां वर्ष प्रारम्भ

रविवार ३ नवम्बर, २००२ का विशाल कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना के लिए देश के विभिन्न भागा मे घूम घूमकर सर्वप्रथम इस्लामी और इसाइयत रूपी राष्ट्रद्रोही षडयन्त्रो के विरुद्ध जनता को जागृत करने का प्रयास किया। इस राष्ट्र रक्षा अभियान मे स्वामीजी कई बार दिल्ली भी पधारे। मुम्बई मे नव सम्वतसर वाले दिन सन १९७५ मे आर्यसमाज की स्थापना करने के बाद उनक दौरे और अधिक तेज हो गए। अब स्थान स्थान पर आर्यसमाजो की स्थापना उनका एक लक्ष्य निर्धारित हो गया था।

इसी श्रृखला मे ३ नवम्बर १८७८ को पुन स्वामीजी दिल्ली मे विराजमान थे। सब्जी मण्डी क्षेत्र मे लाला बालमुकुन्द केसरीचन्द के उद्यान मे उनका अस्थायी आवास बनाया गया था इसी प्रवास क दोरान देहली मे प्रथम आर्यसमाज की शुभ स्थापना स्वय महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के करकमलो से हुई।

दिल्ली मे आर्यसमाज की स्थापना करने के उपरान्त स्वामीजी जयपुर क लिए प्रस्थान कर गए। दिल्ली मे आर्यसमाज की स्थापना से महर्षि दयानन्द के दिल्लीवासी अनुयायियो मे अपार प्रसन्नता की लहर दौड गई। इस आर्यसमाज का नाम **आर्यसमाज देहली** रखा गया। उस समय सुचारु रूप से सचालन के लिए किसी व्यवस्थित भवन का प्रबन्ध ता न हो पाया परन्तु आगे चलकर जेसे जैसे भवनो की व्यवस्था होती गइ वैसे वैसे आर्यसमाजो की स्थापना का क्रम प्रारम्भ हा गया। आर्यसमाज सदर बाजार आर्यसमाज चावडी बाजार आर्यसमाज सीताराम बाजार आदि। ये आर्यसमाजे दिल्ली की प्राचीनतम आर्यसमाजो मे जानी जाती हैं। उसके पश्चात आर्यसमाज चावडी बाजार ने आयसमाज दीवान हाल के नाम से गतिविधिया प्रारम्भ कर दी हनुमान रोड करोलबाग तथा आर्य अनाथालय के रूप मे आर्यसमाज की गतिविधिया बढती चली गई। दिल्ली मे आयसमाज की गतिविधियो ने प्रगति के पथ पर चलते हुए कभी पीछे मुडकर नही देखा। इसी निरन्तर प्रगति का यह परिणाम है कि आज वर्ष २००२ मे दिल्ली का आर्यजगत जब दिल्ली मे आर्यसमाज की स्थापना के १२५वे वष मे प्रवेश कर रहा है तो आज समूची दिल्ली मे हमे सैकडो की सख्या मे आर्यसमाजे खडी दिखाई दे रही हैं।

प्रारम्भ मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की स्थापना से दिल्ली की समस्त आर्यसमाजे पजाब का अग बनी और १९६६ म पजाब प्रान्त के विभिन्न भागो मे विभाजित हो जाने के उपरान्त दिल्ली की आर्यसमाजो को भी अलग आर्य प्रतिनिधि सभा गठित करने का दायित्व निर्वहन करना पडा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १९७६ मे हुई स्थापना के बाद २५ वष पूण होने का सयोग दिल्ली मे आर्यसमाज की स्थापना के १२५वा वर्ष प्रारम्भ हाने के साथ विशाल पर्व के रूप मे मनाया जाना प्रत्येक आर्यजन के लिए अभीष्ट है। इस भावना को ध्यान मे रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शमा ने दिल्ली सभा के मुख्य पदाधिकारियो क साथ विचार विनिमय के उपरान्त इसे एक विशाल कायक्रम के रूप मे इस महान उपलक्ष्य को आयोजित करने का निश्चय किया है।

यह कार्यक्रम **रविवार ३ नवम्बर २००२** को आयोजित होगा। जिसके लिए एक विस्तृत **सचालन समिति** तथा **स्वागत समिति** के अतिरिक्त अन्य समितिया गठित करने पर विचार चल रहा है।

इसी अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूव प्रधान स्व० श्री सूयदेव जी की स्मृति मे एक भव्य स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी।

सभा महामन्त्री श्री वैद्य इन्द्रदेव जी के अनुसार यह विशाल समारोह पूर दिन का होगा और इसमे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा उससे सम्बन्धित और अन्य सस्थाओ के अतिरिक्त आर्य शिक्षण सस्थाओ आर्यजना क विशिष्ट स्मरणीय कार्यो को प्रस्तुत करने के साथ साथ भावी कार्यक्रम की विशाल एव महत्वपूर्ण प्ररणाओ से सुसज्जित विचार प्रस्तुत किए जाएग। यह कार्यक्रम दिल्ली की गतिविधिया का समूचे विश्व के सामने प्रभावशाली ढग स प्रस्तुत करने के उद्देश्य से किया जा रहा है।

स्व० श्री सूर्यदेव जी की स्मृति मे विशेषाक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा जी की अध्यक्षता मे आयोजित पदाधिकारियो – अन्तरग सदस्यो की एक विशेष बैठक मे स्व० श्री सूर्यदेव जी की स्मृति मे आर्य सन्देश' का एक विशेष अक प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है।

स्व० श्री सूर्यदेव जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्थापना काल से ही इस सभा के साथ जुडे रहे और उन्होने विभिन्न पदो पर रहकर आर्यसमाज की उल्लेखनीय सेवा की। वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा महामन्त्री भी रहे। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सर्वोच्च पद को सुशोभित करते हुए कई वर्षो तक इस महान सस्था के कुलाधिपति भी रहे। ७ नवम्बर १९६८ को वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री बने।

जो महानुभाव श्री सूर्यदेव जी की स्मृति मे विशेष सन्देश भेजना चाहे उनसे निवेदन है कि अपना सन्देश अधिकतम १००-१५० शब्दों में लिखकर भेजें।

इस विशेषाक के लिए विज्ञापन भी आमन्त्रित किए गए हैं। जिनकी दरें एव आकार इस प्रकार है –

विशेषाक का आकार २०X३०/८
पूरा पृष्ठ (रगीन) ३१००/ रुपये
पूरा पृष्ठ (सामान्य) २१००/ रुपये
आधा पृष्ठ (सामान्य) ११००/ रुपये

श्री सूर्यदेव जी से सम्बन्धित विशेष चित्र यदि किन्हीं महानुभावों के पास उपलब्ध हों तो उन्हे भी सभा कार्यालय में भिजवाने का कष्ट करे। इस विशेषाक से सम्बन्धित सन्देश लेख तथा विज्ञापन **३० सितम्बर, २००२** तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१ में अवश्य पहुच जाने चाहिए।

– **वैद्य इन्द्रदेव** महामन्त्री

श्रद्धा, प्रेम और अनुशासन की स्थापना के लिए

Be Positive Act Positive

आर्य कार्यकर्त्ता कार्यशाला २ अक्तूबर को

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे दिनाक २ अक्तूबर २००२ (बुधवार) को प्रात १० बजे से १ बजे तक आर्यसमाज रमेश नगर के सभागार मे एक आर्य कार्यकर्त्ता कार्यशाला (Work Shop) का आयोजन किया जा रहा है।

इस कार्यशाला मे भाग लेने के लिए प्रत्येक आर्यसमाज को अपनी समाज की तरफ से न्यूनतम एक प्रतिनिधि भेजना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त अन्य महानुभावो भी ज्ञानवर्धन और मार्गदर्शन प्राप्त करने की दृष्टि से कार्यशाला मे पधार सकते है।

प्रतिनिधियो से यह अपेक्षित है कि वे निम्न विषयो मे से किसी एक विषय पर सार गर्भित १०० शब्दो का प्रस्ताव तैयार करके अग्रिम रूप से इस कार्यशाला के आयोजको तक पहुचा दे।

१ हमारी आर्यसमाज के तहत विशेष प्रशसनीय धर्मप्रचार गतिविधियो की रूपरेखा और उनका प्रभाव या विशेष परिणाम। बच्चो महिलाओ और गरीब बस्तियो के लिए विशेष कार्यक्रम।
२ आर्यसमाज भवनो का सदुपयोग या दूसरे शब्दो मे दुरुपयोग रोकना।
३ समाचार पत्रो मे प्रकाशित अच्छी सामग्री की प्रशसा और बुरी बातो की निन्दा करते हुए समाचार पत्रो को पत्र।
४ आर्यसमाज की साधारण सदस्यता ओर सभासद जी योग्यताओ मे अन्तर।
५ साप्ताहिक सत्सगो की रूपरेखा विभिन्न विषयो पर आधारित प्रवचन।
६ सगठनात्मक सुदृढता (त्रिस्तरीय सगठन के ढाचे को मजबूत बनाना)।
७ आर्यसमाज को राजनीतिक प्रभाव से मुक्त रखना।
८ आर्यसमाज सदस्यता व्यक्ति पर नहीं अपितु परिवार पर केन्द्रित/पूरा आर्य समाज एक बृहद परिवार कैसे बने ?

शेष भाग पृष्ठ ६ पर

आर्यनेता श्री मोहनलाल मोहित की जन्मशती के अवसर पर

भारतीयता की प्रतिमूर्त्ति - श्री मोहनलाल मोहित

मॉरीशस निवासी श्री मोहनलाल मोहित सादा जीवन उच्च विचार रखने वाले कर्मठ आर्य नेता है। समाज सेवा वैदिक धर्म के प्रचार शैक्षणिक सस्थाओ अनाथालयो के लिए करोडो रुपये दान मे दिए है। वह अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध दानवीर आर्य पुरुष है। २२ सितम्बर २००२ को श्री मोहित जी के जीवित काल मे उनकी जन्मशती भाव्य रूप से मनाई जा रही है इस मौके पर मॉरीशस हिन्दी लेखक सघ के सचिव श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ का लेख प्रकाशित कर रहे है।

श्री मोहनलाल मोहित भारतीयता की प्रतिमूर्ति है। आखो के सामने वह अपने इसी महान व्यक्तित्व के रूप मे प्रकट होते है भारतीय वेषभूषा मे उनका सौम्य रूप दिव्य गुण सजोए अपने व्यक्तित्व मे। एक बार एक ईसाई ने मुझे से कहा था – गाधी जी एक सच्चे हिन्दू थे – अपनी वेश भूषा से अपने गुणो से अपने व्यक्तित्व स और भारतीय दर्शन से भी। उन्हे दखते ही कह सकते थे हा वह एक हिन्दू थे। वेश भूषा बहुत मात्रा मे लोगो की नस्ल की पहचान कराती है लेकिन आज पाश्चात्य का रग चढने से पहचानना मुश्किल हा जाता है कि यह व्यक्ति हिन्दू है या गैर जाति का। भारतीय वेश भूषा मे आज कम लोगो ही देखे जाते है यह भी सही है कि ठाठ बाट मे कोइ महानता प्राप्त नही करता। गुणो की झलक साधारण वस्त्र धारण करने पर भी मिल जाती है। इमर्सन ने कहा है – **महानता से बढकर और कोई सरलता नहीं**

इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

वस्तुत सरलता ही महानता की पथदर्शिका है।

श्री मोहनलाल मोहित मजदूर से करोडपति बने समाज क साधारण सदस्य से आर्य सभा जैसी बडी सस्था के प्रधान बने पढने लिखने की कम सुविधा प्राप्त करने पर भी स्वाध्याय के बल पर विद्वान बने पर जेसे फलो से लदी डालिया झुक जाती है उसी आदर्श को अपनाते हुए उन्होने अपने सादे जीवन उच्च विचार जीवन के उच्चादर्शो व मानव जीवन के मूल्यो की महत्ता किसी हालात मे न बदली। अपनी छवि बनाए रखी। सही भारतीय मूल के रूप मे धोती कोट कमीज पगडी मे वह जितने फबते है ओर इस वेश भूषा मे रहते हुए आर्यजनो मे वह जो आदर मान पाते है निश्चय ही यूरोपियन वेश भूषा चाल चलन मे समाज और देश विदेश मे उतना मान नहीं पाते और महान पुरुष की उनकी उतनी छवि न बनती। भारतीयता की भावना और भारतीय दर्शन से ओत प्रोत श्री माहनलाल मोहित मर्यादित पुरुष है। उन्हे देखते ही हमारा शीश आदर से उनके सामने भुक जाता हे मर्यादा क वशीभूत।

२२ सितम्बर २००२ को श्री मोहनलाल मोहित जी पूरे १०० व५ क हो जाएगे। उनकी जन्मशती देश विदेश के आर्यजन भव्य रूप से मना रहे है। कवि के शब्दो मे

महर्षि के भक्त वत्सल आर्य नेता मोहित
यशस्वी व्यक्तित्व से अपने
विश्व ख्यातिमान है
शताब्दी की आयु पाए वह
प्रभु भी उन पर मेहरबान है
प्रेरणा से अपनी करते रह हमे प्रेरित
शाश्वत कीर्ति प्राप्त करे मोहनलाल मोहित।

– सचिव हिन्दी लेखक सघ मॉरीशस

यज्ञ से वृष्टि

आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिए एक वर्ष मे १०००० (दस हजार) रुपये की घृतादि का जिस रीति से होम हुआ था उसी रात से होम कराइए परन्तु उनमे से पाच हजार (५०००) रुपये के सुगन्धित घृत मोहन भोग का होम वर्षा ही मे कि जिस दिन वर्षा का आर्द्रा नक्षत्र लगे उस दिन से लेकर विजयादशमी तक चारो वेदो के ब्राह्मणो का वरण कर एक सुपरीक्षित धार्मिक पुरुष उन पर रखकर होम कराइएगा।

(ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन पत्र सख्या – ४८६ पृष्ठ सख्या ४४६)

जुलाई के प्रथम सप्ताह के वृष्टि के बिना व्यतीत होने पर कृषको का धैर्य समाप्त हो गया और वृष्टि यज्ञ कराने हेतु **गुरुकुल प्रभात आश्रम** मे आने लगे। गुरुकुल के कुलपति पूज्य स्वामी विवेकानन्द महाराज ने उनसे कहा – इस वर्ष अनावृष्टि की समस्या विकराल है। उसके समाधान के लिए विशाल यज्ञ की नही अपितु यज्ञो की आवश्यकता है। सभी ग्रामो मे यज्ञो की झडी लग जानी चाहिए और इस सकल्प के साथ यज्ञ प्रारम्भ हो कि जब तक व्यापक व प्रचुर मात्रा मे वृष्टि न हो तब तक अनवरत यज्ञ चलते रहेगे।

१७ जुलाई से दौराला ग्राम मे यज्ञ प्रारम्भ हुआ निकटवर्ती ग्रामो मे भी यज्ञ प्रारम्भ हुए। १६ जुलाई को दौराला ग्राम मे अच्छी वृष्टि हुई। अन्य ग्रामो मे भी जहा यज्ञ प्रारम्भ किए गए थे कुछ कुछ वृष्टि होती,रही। पूज्य स्वामीजी महाराज की प्रेरणा से गुरुकुल प्रभात आश्रम ने यह निश्चय किया कि जब तक व्यापक वृष्टि नहीं होगी तब तक पूर्णाहुति नहीं करेगे। प्रभात आश्रम मे यज्ञ चलता रहा। खण्ड–वृष्टि के समाचार मिलते रहे किन्तु गुरुकुल अपने निश्चय पर अडिग रहा।

५ अगस्त को प्रभात आश्रम के आसपास अच्छी वृष्टि हुई। ८ अगस्त को यज्ञ की पूर्णाहुति करने का विचार हुआ किन्तु कुछ ग्रामवासियो से सूचना मिली एक यह वृष्टि सम्पूर्ण क्षेत्र मे पर्याप्त नहीं है अत पूर्णाहुति का विचार स्थगित हुआ। ६ अगस्त को पुन वृष्टि हुई किन्तु वह सन्तोषप्रद नहीं थी। १३ अगस्त को अच्छी व्यापक वृष्टि के समाचार आने लगे। १४ अगस्त को तो लोगो ने हाथ जोड लिए कि अब वृष्टि बहुत अधिक हो गई इससे अधिक होने पर किसानो की हानि होगी। अत १५ अगस्त को एकमास से सतत चलने वाले यज्ञ की पूर्णाहुति सायकाल आठ बजे कर दी गई। क्षेत्र से अनावृष्टि थी छाया समाप्त हो गई। चतुर्दिक प्रसन्नता का वातावरण है। प्रभात आश्रम का

1dYi 1wZgqlA

– व्यवस्थापक गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ

बोध कथा

राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार - श्रीकृष्ण

शिशुपाल वध मे कवि माघ ने महाराजा युधिष्ठिर की श्रीकृष्ण के प्रति यह उक्ति रेखाकित की है **गहन दायित्व सम्भालने वाले श्रीकृष्ण महाराज आपकी कृपा के चमत्कार से ही आज सारा भारत हमारे अधिकार मे है।** युधिष्ठिर से पूर्व जरासघ देश के बडे भाग का सम्राट था। वह सौ राजाओ की बलि देना चाहता था। श्रीकृष्ण ने परिवार की फूट खत्म की कस को मार जरासघ की पराजित करवा कर बडी कुशलता से पाण्डवो के नेतृत्व मे राष्ट्रीय एकता स्थापित कराई। मगध साम्राज्य से मथुरा सुरक्षित न देख उन्होने वृष्णियो अन्धको को द्वारवती मे बसाया। अपने घर की चिन्ता से मुक्त होकर उन्होने धृतराष्ट्र से आधा राज्य पाने एव इन्द्रप्रस्थ मे नई राजधानी बनाने म योगदान किया। अजुन सुभद्रा के विवाह के बाद पाण्डवो और यादवो की मैत्री सुदृढ हुई। युधिष्ठिर ने राजसूय किया खून की एक बूद गिराए बिना जरासघ का वध किया। श्रीकृष्ण की नीति निपुणता से ही पाण्डव भारत की दिग्विजय करने मे सफल हुए। उस समय भारत के मानचित्र मे सम्पूर्ण भारत के अतिरिक्त अफगानिस्तान और चीन का कुछ भाग था। श्रीकृष्ण के प्रयत्नो से युधिष्ठिर सम्राट बने। राज्य सभा मे शिशुपाल ने चुनौती दी तो श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से तुरन्त दण्ड दे दिया।

युधिष्ठिर ने अपना सारा राज्य परिवार सबको जुए मे खो दिया। पाण्डव १२ वर्ष के वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास पर गए। श्रीकृष्ण चाहते थे युद्ध न हो। दुर्योधन ने कृष्ण की सलाह नही मानी भीषण महाभारत युद्ध हुआ सभी राजकुल नष्ट हुए। शान्ति होने पर युधिष्ठिर ने अश्वमेघ किया फिर दिग्विजय हुआ। अश्वमेघ मे श्रीकृष्ण तटस्थ थे। महाभारत युद्ध के ३६ वर्ष बाद तक वह जीवित रहे। उन्होने भारत का जरासन्ध के साम्राज्य से निकालकर युधिष्ठिर के धर्म साम्राज्य मे बाधा। शिशुपाल वध के रचयिता माघ न इसी को श्रीकृष्ण युधिष्ठिर का गुरुवर कहा था। गीता मे सजय ने कहा जहा योगेश्वर कृष्ण है वहा धुनर्धर अर्जुन हैं वहीं विजय है।

– नरेन्द्र

निर्भय हों : सर्वोच्च बनें

अभय नो अस्तु।

अथर्व० १६ १४ १

हमे निर्भयता प्राप्त हो।

उच्च तिष्ठ महते सौभगाय।

अथर्व० २६ २

महान सौभाग्य के लिए उच्च बने।

समानी व आकूति।

ऋ० १० १५१४

हमारे सकल्प एक हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

दीपक तले अन्धेरा : पूर्ण राज्य में मर्यादित भूमिका

लोकतान्त्रिक प्रणाली से दिल्ली की जनता द्वारा विधिवत चुनी हुई राज्य की सरकार के अधिकारो को मर्यादित करने के लिए कन्द्र सरकार के अधिकारो को मर्यादित करने के लिए केन्द्र सरकार ने एक परिपत्र भेजा है फलत दिल्ली की निर्वाचित विधानसभा और चुनी हुई सरकार के निर्णय करने मे उपराज्यपाल की भूमिका सर्वोपरि बना दी गई है। केन्द्र के इस आदेश के फलस्वरूप राज्य सरकार उपराज्यपाल की पूर्व अनुमति के बिना कोई विधेयक भी राज्य विधान सभा मे प्रस्तुत नही कर सकेगी। इस निर्णय से जनता द्वारा निर्वाचित राज्य सरकार का असन्तुष्ट होना स्वाभाविक है। उल्लेखनीय है कि दिल्ली प्रदेश मे दिल्ली की जनता द्वारा विधिवत चुनी हुई लोकतान्त्रिक सरकार है। जनता द्वारा निर्वाचित जन–प्रतिनिधि विधान सभा और प्रदेश की जनता के प्रति अपनी उत्तरदायिता उसी स्थिति मे भली प्रकार निर्वाह कर सकते हैं जब वे अपने कर्त्तव्या और उत्तरदायित्व का निर्वाह व्यवस्थित रीति से पूर्ण कर सके। नए परिपत्र के अनुसार दिल्ली सरकार के वित्तीय अधिकार मर्यादित करने के साथ दिल्ली मे निर्वाचित मुख्यमन्त्री और मन्त्रियो का अपने प्रतिदिन के कार्यो की पूर्ति भी उपराज्यपाल की डयोढी पर दस्तक दिए बिना सम्भव नही हो सकगी। यट नई व्यवस्था लोकतान्त्रिक परम्पराओ व्यावहारिकता और कार्यकुशलता के सभी मापदण्डो के सर्वथा प्रतिकूल है। दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री और भाजपा अध्यक्ष श्री मदनलाल खुराना न भी इस विचित्र निर्णय पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उसे असवैधानिक कहा है। स्पष्ट है कि कन्द्र दिल्ली प्रशासन से दोहरा व्यवहार कर रहा है। एक ओर वह केन्द्र ओर राज्यो की स्वायत्तता के अधिकारो की दुहाई देता है और उसका व्यवहार स्वायत्तता के अधिकार का सीधा अतिक्रमण है। उल्लेखनीय है कि इस दल के नेता दिल्ली राज्य को पूर्ण स्वायत्त राज्य की स्थिति को आधे अधूरे सीमित अधिकार देने की भूमिका का निर्वाह कर रहे है। वे जनता द्वारा निर्वाचित जन प्रतिनिधिओ के अधिकारो की कटौती कर रहे है।

उल्लेखनीय है कि १६६३ म राष्ट्रीय राजधानी कानून बनाया गया। १६६८ मे मुख्यमन्त्री श्री साहिब सिह को गुजराल सरकार ने हटा दिया। नए आदेश से प्रदेश मे लोक निवाचित विधानसभा ओर उसके प्रति उत्तरदायी निर्वाचित सरकार के अधिकारो की कटोती व्यावहारिक हो जाएगी। इस प्रकार लोकतान्त्रिक प्रणाली से दिल्ली की जनता द्वारा विधिवत चुनी हुई राज्य सरकार के अधिकार हमेशा के लिए मर्यादित हो जाएगे। सम्भवत जिज्ञासा होती है कि भारत की राजधानी दिल्ली को पूर्ण राज्य मे क्या निवाचित सरकार की मर्यादित भूमिका उचित है ? यदि उचित नहीं है तो एक पूर्ण राज्य मे विधिवत निर्वाचित सरकार को आधे अधूरे सीमित अधिकार देने की भूमिका क्या दीपक तले अन्धेरा नही है ? क्या एक पूर्ण राज्य मे यह मर्यादित भूमिका सवैधानिक एव व्यावहारिक दृष्टि से ठीक नही है। दिल्ली के दो पूर्व मुख्यमन्त्री दिल्ली प्रशासन के इस तर्क से सहमत नही है कि दिल्ली राज्य या उसके प्रशासन के अधिकारो मे अधिक काटछाट की गई है। उनका कहना है कि दिल्ली की मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित घडियाली आसू बहा रही है। पूर्व मुख्यमन्त्री श्री साहिब सिह वर्मा का कहना है कि केन्द्र की एन०डी०ए० सरकार ने पिछले चार वर्षो मे दिल्ली राज्य की मुख्यमन्त्रिणी श्रीमती शीला दीक्षित से कई बार कहा है कि वह दिल्ली को अधिक अधिकार देना चाहते है लेकिन वे अधिकार कैसे हो यह दिल्ली सरकार को ही बताना है। उल्लखनीय है साथ ही हैरानी की बात भी है कि श्रीमती शीला दीक्षित के मन्त्रिमण्डल ने पिछले चार वर्षो मे अधिक अधिकारो की माग के लिए कोई प्रस्ताव विधिवत पारित करके केन्द्र के पास नही भजा है। यह भी ध्यान देने की बात है कि इस सिलसिले श्रीमती शीला दीक्षित भारत के प्रधानमन्त्री या केन्द्रीय गृहमन्त्री से भी नही मिली।

इसी के साथ श्री साहिब सिह का दावा है कि जब वह मुख्यमन्त्री थे तब उन्हान डी०टी०सी० दिल्ली जल बेर्ड दिल्ली विद्युत बोर्ड और दिल्ली फायर ब्रिगेड दिल्ली सरकार को हस्तान्तरित किए थे। अधिक अधिकारो की माग के लिए उन्होने साइकिल पर सफर कर माग को पुष्ट किया था। उनका यह भी कहना है कि मेट्रो रेल परियाजना पर दिल्ली सरकार अपना दावा प्रस्तुत कर रही हे जबकि इस कार्यक्रम की शुरूआत उन्होने ही की थी। यह भी ध्यान दने की बात है कि इन दिनो भारत की राजधानी दिल्ली म १७ फ्लाई ओवर बनाए जा रहे है श्री साहिब सिह का दावा ह कि उनका शुभारम्भ भी उनकी सरकार ने ही किया था। उनका यह भी दावा हे कि आज भी दिल्ली सरकार को उतने ही अधिकार है जितने कि पुरानी सरकार के शासन के दिनो म थे। उन्होने स्वीकार किया कि दिल्ली राज्य को दूसर छोट बड राज्यो या प्रान्तो जैसी स्थिति और व्यापक अधिकार दिए जाने चाहिए अन्यथा राष्ट्र की राजधानी होने के कारण और केन्द्रीय सरकार की अपूर्व क्षमता के सम्मुख दिल्ली राज्य की हीन ही नही प्रत्युत नगण्य सी स्थिति की वस्तुस्थिति के बारे मे कोई सन्देह की बात नही है। इस तरह भारत की राजधानी दिल्ली की वस्तुस्थिति या दुरवस्था के तथ्य से किसी को इन्कार नहीं है। इस स्थिति के बारे मे कोई विवाद भी नही है वस्तुत भारत की राजधानी एव महानगर दिल्ली मे दीपक तले अन्धकार है। नाम से या लेखे की दृष्टि से यह भारत का यह एक पूर्ण राज्य है परन्तु व्यवहार मे वस्तुत राष्ट्र की राजधानी का महानगर होने से सर्वाधिकार सम्पन्न केन्द्रीय सरकार उसे मर्यादित अधिकार ही देती रही है। वैसे आगे पीछे दिल्ली राज्य को अधिक उत्तरदायी और अधिक शासनाधिकार देने के मौलिक सिद्धान्त की मान्यता मिल सकेगी जब केन्द्र और राज्य अपने–अपने क्षेत्रो मे अधिक सार्थक शासनाधिकार प्रयुक्त कर सके।

चिट्ठी-पत्री

ऐतिहासिक निर्णय

दिल्ली उच्च न्यायालय ने दिल्ली के सभी सरकारी चिकित्सालयो मे हडताल पर प्रतिबन्ध लगाने का निर्णय एक जनहित याचिका पर सुनाया है। वस्तुत यह निर्णय एक ऐतिहासिक फैसला है। कोई भी सभ्य नागरिक यह नहीं चाहता कि चिकित्सालयों में जरा जरा सी बात पर अमर्यादित हडतालें हो और दिल्ली और देश के दूरस्थ क्षेत्रो में जाकर फुटपाथों पर लेटकर मरीजो को चिकित्सा करानी पडे। इसी के साथ मानवता का यह भी तकाजा है कि माननीय न्यायालय गम्भीरतापूर्वक इस बात का भी प्रबन्ध कराए कि चिकित्सालयो के चिकित्सको नर्सो और दूसरे सामान्य कर्मचारियो को प्रबन्धक अनुचित रूप से परेशान न करे। प्रत्येक इन्सान को उसका उचित अधिकार अवश्य मिले चाहे वह चिकित्सक हो या रोगी।

– यू०एस० आजाद तेखण्ड, नई दिल्ली

मुफ्तखोरी मानवाधिकार नहीं

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने पाच राज्यो को नोटिस देकर पूछा है कि क्या उन्होने जनसख्या नियन्त्रण का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए ऐसे कदम उठाए है जिनके माध्यम से मुफ्त शिक्षा और मुफ्त भाजन से भी जनता वचित की जा सकती है। ये राज्य है राजस्थान उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश महाराष्ट्र और आन्ध्र प्रदेश। बढती हुई जनसख्या का विकराल रूप नियन्त्रित करने के लिए सरकार को व्यापक अधिकार होने चाहिए मानाधिकार आयोग ऐसे कार्यो मे बाधा न डाले। मुफ्तखोरी किसी भी राष्ट्र मे मानवाधिकार नही है।

– डॉ० शशिकान्त गर्ग, फरीदाबाद

गांवों की समृद्धि के लिए चार उपाय

ग्रामीण क्षेत्रो की समृद्धि के लिए ज्ञान सडको का जाल बाजार और नवीन यातायात व्यवस्था होनी चाहिए। – **ए०पी० जे० अब्दुल कलाम**

अथर्ववेद से – हिरण्यादेश सप्तकम्

राजा, सैनिकों और सेनापति को हितकर आदेश

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) शत्रुसेना को शस्त्रास्त्रो और अफवाहो के धूए से अन्धा कर दे

असौ या सेना मरुत परेषामस्मानेत्यभ्याजसा स्पर्धमाना। ता विध्यत तमसापव्रतेन यथेषामन्यो अन्य न जानात।।

अथर्व ३ २ ६

अथर्वा। मरुत। त्रिष्टुप।

अर्थ – दृढमति सेनापति – सैनिको को आदेश दता हे कि – (मरुत) मरने मारने क लिए उद्यत सैनिको ! (परेषा असौ या सेना) शत्रुओ की जा सेना (स्पर्धमाना) हमारे साथ स्पर्धा (श्रेष्ठता का दम्भ) करती हुई (ओजसा अस्मान अभि एत्ति) बलातिशय के कारण हमारी ओर बढी आ रही है (ताम अपव्रतेन तमसा) उसे तामसिक नियम विरुद्ध कर्मो से भी (विध्यत) बीध डालो जैसे श्रीकृष्ण कर्ण को मरवाया था यथा अथवा अस्त्र शस्त्रो की वर्षा से ऐसा अन्धकरण उत्पन्न कर दा कि (एषा अन्य अन्य न जानात) उनमे से एक सैनिक दूसरे निज सैनिक का भी न पहचान सके।

निष्कर्ष – (१) युद्ध की पराकाष्ठा होने पर नियमो की अपेक्षा जय पराजय पर अधिक दृष्टि रखे। (२) शत्रुसेना को शस्त्रो की चमक और अफवाहो द्वारा सदा भ्रान्त करते रहे।

(२) बहुमत होने पर योग्य प्रशासक को बडे से बडा उत्तरदायित्व लेने से मुकरना अनुचित है

अभि प्रेहि मापवेन उग्रश्चेत्ता सपत्नहा।
आतिष्ठ मित्रवर्धनतुभ्य देवा अधिब्रुवन।।

अथर्वागिरा। देवा। अनुष्टुप।

अथर्व ४ ८ २

अर्थ – हे राजन (अभि प्रेहि) राजगद्दी की ओर बढ (मा अपवेन) हिचककर अनिच्छा व्यक्त मत कर (उग्र चेत्ता सपत्नहा) उदार चौकन्ना और राजद्रोहियो का सहारक बनकर (आतिष्ठ) इस आसन पर विराजमान हो। (मित्रवर्धन) राष्ट्र के मित्रो और मित्रराष्ट्रो का वर्धन करने वाले राजन ! (देवा तुभ्य अधिब्रुवन) ससद के प्राय सभी दववृत्ति वाले सदस्यो न आपके लिए सम्मति प्रदान की है।

निष्कर्ष – राजा या राज प्रमुख उदार किन्तु सचेत हो। शासन व्यवस्था मे ढील न दिखाकर शत्रुओ और उनके सहायक राष्ट्रो के सहार के लिए भी उद्यत रहे। बुश प्रशासन का रुख दस्युओ की सहायता करने वाले अथवा सरक्षण देने वाल राष्ट्रा को भी हम अपना शत्रु मानेगे और उनके साथ भी दस्युओ जैसा व्यवहार करेगे। इस आदेश का सामयिक तथा समुचित उदाहरण है।

(३) राजा सिह और व्याध्र दोनो के व्यवहार का अनुकरण करे

सिह प्रतीको विशो अद्धि सर्वा व्याघ्रप्रतीकोऽव बाधस्व शत्रून। एकवृष इन्द्रसखा जिगीवाँ छत्रूयतामाखिदा भोजनानि।।

अथर्व ४ २२ ७

वसिष्ठ अथर्वा। इन्द्र क्षत्रियोराजा च। त्रिष्टुप।

अर्थ – हे राजन ! (सिह प्रतीक) सिह के सदृश राष्ट्र का एकछत्र शासक बनकर (सर्वा विश अद्धि) सब प्रज्ञाओ स कर ले अर्थात उनका सदुपयोग करे और फिर उनके भोजन की व्यवस्था कर और (शत्रून) शत्रुओ को (व्याघ्र प्रतीक अव बाधस्व) व्याघ्र के सदृश आक्रमण करके उन्हे देश की सीमाओ से दूर रख = (एक वृष) अद्वितीय बलशाली (इन्द्रसखा) राष्ट्र सघ के सम्राट अथवा सम्राटो के सम्राट प्रभु की मित्रता प्राप्त करके (जिगीवान) आन्तर और ब्राह्य दोनो शत्रुओ का विजेता बनने वाले राजन ! (शत्रूयता भोजनानि आखिदा) शत्रुवत व्यवहार करने वाले पुरुषो सघो और राष्ट्रो के भोजनो=भोज्यपदार्थो को छिन्न भिन्न करके उन्हे त्रस्त ओर दीन हीन बना दे।

अर्थपोषण – आखिद – खिद त्रासे खिद दैन्ये – खिन्न और त्रस्त करना।

निष्कर्ष – राजा को प्रभु का सखा=समानख्यान होकर सज्जनो के लिए सिह सदृश और दुष्टो के लिए व्याघ्र सदृश होना चाहिए। सिह बिना भूख के तथा बिना छड छाड के किसी को नही मारता। इसी तरह राजा बिना आवश्यकता के कभी कर नही लगाए और व्याघ्र के समान शत्रुओ पर आक्रमण करके उन्हे सदा त्रस्त रखे।

(४) राष्ट्र के समुत्कर्ष के लिए राजा स्वार्थ त्यागे, और दस्युओ के तेज को पराभूत करे

अग्ने शर्ध महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु। सजास्पत्य सुयमयाकृणुष्व शत्रुयतामभितिष्ठा महासि।।

अथर्व ७ ७३ १०

अथर्वा। अग्नि धर्म। जगती।

अर्थ – हे (अग्ने) राजप्रमुख अथवा राष्ट्रनेता ! (महते सौभगाय शर्ध) राष्ट्र की महत्ती समृद्धि के लिए अपने वेयक्तिक कष्ट व अपमान को सहन कर (तवद्युम्नानि उत्तमानि सन्तु) तेरे कोश मे आने वाले धन उत्तम हा उन्हे प्राप्त करने के लिए जोर जबर्दस्ती अथवा प्रजा को पीडित न करे और तेरे राष्ट्र मे उत्पन्न हाने वाले अन्न प्रदूषण रहित हो। अपने राष्ट्र मे (सजास्पत्य सुयम आकृणुष्व) पति पत्नी के सम्बन्ध और कर्म को सुनियन्त्रित तथा सुसयमित बना। (शत्रूयता महासि अभितिष्ठ) अपने राष्ट्र के प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने वालो के तेजो को अभिभूत – निस्तेज पादाक्रान्त करे।

अर्थपोषण – शर्ध शृधु प्रसहने – सहन करना। द्युम्नम – धननाम। नि० २–१०

द्युम्नम – धोतते – यशो वा अन्न वा निरुक्त ५–५ जास्पत्यम=जाया और पति के सम्बन्ध तथा कर्म।

निष्कर्ष – (१) राष्ट्र के उत्कर्ष के लिए राजा को अपना अपमान और आर्थिक नुकसान भी सहन करना चाहिए। (२) राष्ट्र की समृद्धि उत्तम आय से करे नशीले पदार्थों के व्यवसाय अथवा जुए लॉटरी इत्यादि से नहीं। (३) स्त्री पुरुष सम्बन्ध को नियन्त्रित रखे। रात्रि क्लबो पर रोक हो। व्यभिचार और बलात्कार के लिए कडे दण्ड दिए जाए। (४) शत्रु राष्ट्रो के व्यवहार का समुचित (जसका तस) उत्तर दे।

(५) पर पीडा देने वाले स्त्री पुरुषो की दण्ड व्यवस्था मे भेदभाव न करे

इन्द्र जहि पुमास यातुधानमुत स्त्रिय मायया शाशदानाम्। विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन्त्सूर्य मुच्चरन्तम।।

अथर्व ८ ४ २४

यातन। इन्द्र। त्रिष्टुप।

अर्थ – हे (इन्द्र) शत्रु विदारक राजन ! (पुमास यातुधान जहि) सामान्य प्रजा को यातना देने वाले पुरुष को मृत्युदण्ड दे और (मायया शाशदाना स्त्रिय उत जहि) छल कपट द्वारा प्रजा को पीडित करने वाली स्त्री को भी समाप्त कर दे।

(मूर देवा विग्रीवास ऋदन्तु) सूठ मूठ सज्जन रूप धारण करने वाले दुष्ट लोग नष्ट हो जाए (ते) ऐसे लोग (उच्चरन्तसूर्य मादृशन) उदित होते हुए सूर्य का दर्शन न कर पाए। उन्हे तत्काल मृत्यु दण्ड दे दिया जाए या काल कोठरी मे डाल दे।

अर्थपोषण – ऋदन्तु – नश्यन्तु – ऋद्वपे हिसायाम। निरुक्त ६–३३ मर्म स्थल भडभडाकर गिर जाए। शाशदानाम – अपने को ढोग (कपट) द्वारा श्रेष्ठ दर्शाती हुई। निरुक्त ६–१६

निष्कर्ष – पर पीडक पुरुष के समान ही कपटी स्त्री का भी उतना ही दण्ड दे। स्त्री समझकर उसके साथ रियायत नहीं करे।

(६) शत्रु द्वारा प्रयुक्त प्रच्छन्न दीक्षा और यज्ञकृत्यो को नष्ट करना आवश्यक है

यस्त्वा कृत्याभिर्यस्त्वा दीक्षाभिर्यज्ञैर्यस्त्वा जिघासति। प्रत्यक त्वमिन्द्र त जहि वज्रेण शतपर्वण।।

अथर्व ८ ५ १२

शुक्र। इन्द्र। पुरस्ताद् बृहती।

अर्थ – हे (इन्द्र) ऐश्वर्यशाली सम्राट ! (य) जो शत्रु (त्वा) तुझे (कृत्याभि) घातक सैनिक प्रच्छन्न सुरगादि क्रियाओ द्वारा (दीक्षाभि) मौन पचाग्नितप आदि कपट व्रतो के धारण द्वारा अथवा (यज्ञै) अभिचार आदि यज्ञो द्वारा (त्वा जिघासति) तेरी हिसा करना चाहता है (प्रत्यक) पलटकर तू (तम) शत्रु के उस जासूसी करने वाले प्रतिनिधि को (शतपर्वणा वज्रेण) सैकडो जोडो से निर्मित अनबूझ अस्त्र द्वारा (जहि) मरवा दे।

निष्कर्ष – शत्रु राष्ट्र– आतकवादियो द्वारा घातक क्रियाए कराकर जासूसो द्वारा ढोगी साधुओ को दीक्षित करके भोली जनता को भ्रमित करके स्वराष्ट्र से असन्तुष्ट कराकर और अपने याज्ञिको द्वारा अभिचार यज्ञो को कराकर भय का सचार उत्पन्न करते है। इन उपायो से यदि तेरे राष्ट्र का सहार करना चाहते हैं। ऐसे समय राजा को चाहिए पलटवार करके अपने शताधिक जोड तोड वाले कार्यों से शत्रु राष्ट्र को समाप्त कर दे। मदरसो की स्थापना की बाढ प्रच्छन्न दीक्षा द्वारा सहार का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

हिन्दी भाषा व साहित्य को आर्यसमाज की देन

– डॉ० अशोक आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुजराती होते हुए भी देश को एक सूत्र मे बाधने के लिए अपनी प्रचार की भाषा सस्कृत के स्थान पर जन सामान्य की भाषा हिन्दी को अपनी लेखिनी व प्रचार के लिए अपनाना एक क्रान्तिकारी कदम था। यह सत्य विशेष रूप से उस समय और भी महत्वपूर्ण हो जाता है जब कि इस हिन्दी साहित्य के आदि काल के उन्नायक महर्षि दयानन्द सरस्वती हिन्दी के पूर्व साहित्यिक काल 'रीति काल' या 'श्रृगार काल' के सन्धि समय मे ही हुए थे तथा श्रृगारिकता के दुष्परिणाम स्वरूप जो देश को पराधीनता का मुह देखना पडा था उससे जनमानस को बचाने के लिए न केवल जनभाषा हिन्दी की खडी बोली मे प्रचार आरम्भ किया अपितु उन्होने हिन्दी साहित्य का मुख स्वाधीनता स्वालम्बवन देश भक्ति पूर्व वैभव का स्मरण व अन्धविश्वासो के खण्डन की ओर मोड दिया। जिस कारण तत्कालीन युगाचार्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जो श्रृगार काव्य द्वारा ही अपना लेखन कार्य आरम्भ कर चुके थे को भी उल्टी गगा के बहाव मे बहने को बाध्य होना पडा। सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तथा उनकी उत्तराधिकारिणी आर्यसमाज ने हिन्दी के प्रचार प्रसार मे कोई कसर न उठा रखी। यहा तक कह दिया कि यदि आप हमारे साहित्य को पढना चाहते हो तो हिन्दी सीखो। विदेशियो को भी ऐसी ही शिक्षा दी। आओ हम हिन्दी के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज द्वारा किये गए कार्यो का मूल्याकन करे

सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना के साथ ही सर सैय्यद अहमद फ्रासीसी विद्वान गार्सा–द–तासी सयुक्त प्रान्त शिक्षा विभाग के तात्कालीन अध्यक्ष मि० हैवल काशी के राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द आदि लोग हिन्दी को गवारो की भाषा कहते हुए तथा इसका विरोध कर रहे थे तथा इस मे फारसी शब्द मिला रहे थे उनके झूठ का भण्डा चौराहे मे फोड कर जन सामान्य को हिन्दी विरोधी होने से बचाते हुए उन्हे बताया कि हिन्दी एक सशक्त भाषा है। इसे देश के प्रत्येक कोने मे समझने वाले लोग हैं। इसमे हर प्रकार के विचारो की अभिव्यक्ति हो सकती है। उनकी इस बात को राजनारायण बोस भुदेव मुकर्जी तथा कालीचरण काव्य विशारद जैसे उस युग के नेताओ की प्रेरणा कह सकते है जो हिन्दी को स्वाधीनता का मार्ग मानते थे। अत स्वामी जी द्वारा सस्थापित आर्यसमाज इस प्रकार का प्रथम आन्दोलन था जिस मे हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का सर्वप्रथम प्रयास किया गया। मिश्र बन्धु विनोद तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने साहित्य ग्रन्थो मे इस तथ्य को भली भाति स्वीकार किया है।

हिन्दी अपनाने के पश्चात स्वामी दयानन्द सरस्वती केवल आठ वर्ष जीवित रहे इन आठ वर्षो मे वेद प्रचार के अतिरिक्त १५००० पृष्ठो के लेखन द्वारा साठ ग्रन्थ हमे धरोहर मे दे गए जिनमे उनकी वह आत्मकथा भी एक है जिसे हिन्दी समुदाय हिन्दी गद्य साहित्य की प्रथम प्रकाशित आत्मकथा स्वरूप स्वीकार कर चुका है। इन ग्रन्थो मे सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसा ग्रन्थ है जिसे विश्व की अनेक भाषाओ मे अनुवाद कर लाखो की सख्या मे छपवाया व करोडो की सख्या मे लोगो ने पढा है।

हिन्दी साहित्य को महर्षि ने नई दिशा दी उन्होने वीरोचित मार्ग अपनाते हुए जहा इसे शात वीर व उत्साह प्रदान करने का मार्ग अपनाया वहा साहित्य मे उपसाहात्मक वृत्ति का भी उदय किया यथा अन्धविश्वासी ब्राह्मण को पोप अभिमानी को गर्वगण्ड सरीखे शब्द देकर हिन्दी के नए शब्दो का सृजन भी किया। पुनरपि पुनश्य नैरोग्य आदि तथा सर्वतन्त्र भुषुण्डी विडालाक्ष आदि सस्कृत के शब्दो को प्रयोग किया जो उनके सस्कृतज्ञ तथा उनके गाम्भीर्ष को दर्शाता है। वह पुजारी शब्द को पूजा का अरि अर्थात शत्रु मानते हुए इसे पुजारि लिखने हेतु प्रेरित करते थे। वह सस्कृत के अनुसार ही हिन्दी मे लिगो का प्रयोग करते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र व प्रताप नारायण मिश्र ने भी यही शैली स्वीकार की।

स्वामी जी अपनी भाषा को सशक्त दर्शाने के लिए मुहावरो व लोकोक्तियों का अत्यधिक प्रयोग करते थे। आख का अन्धा गाठ का पूरा उल्टा चोर कोतवाल का डाटे आदि जैसे मुहावरा व लोकोक्तियो का भरपूर प्रयोग किया है।

स्वामी जी ने गद्य के गुणो तथा ओज सरलता प्रवाह व रोचकता को अपन साहित्य मे विशेष स्थान दिया है। स्वदेश स्वधर्म स्वजाति व देशाभिमान की भावना भरने हेतु ओज युक्त शब्दो का प्रयोग करते थे। देवनागरी के महत्त्व को समझते हुए तो यहा तक कह जाते हैं कि विश्वभाषाओ की कोई भी लिपि इस की प्रतिस्पर्धी नही हा सकती। तभी तो रामधारी सिह दिनकर ने उन्हे रणारूढ हिन्दुत्व का निर्भीक नेता कहा है। प्रतिमा पूजा पर लिखते है तोपो के मारे मन्दिर मूर्तिया अग्रेजो ने उठा दी तब मूर्ति कहा गई थी ?

स्वामी जी भाषा की सुबोधता व स्पष्टता के भी पक्षधर थे। यही कारण है कि उनकी भाषा मे प्रसाद गुण प्रधान हे। स्वामी जी मे श्रोताओ व पाठको को अपने प्रवाह गुण मे बहाने की क्षमता भी थी। अत वह प्रवाह गुण का भी समीचीन प्रयोग करते थे। वह अपने उद्धरणो को शास्त्रोक्त प्रमाणो से पुष्ट भी करते थे। जिससे सुधि श्रोताओ का शास्त्रो से सम्बन्ध जुडता था। उनकी इस प्रवृति का हिन्दी साहित्य पर दूरगामी प्रभाव पडा। यहीं से हिन्दी साहित्य मे प्रमाण ग्रन्थो के आधार पर विवेचना की प्रथा चल पडी है।

स्वामी जी की शौली गाम्भीर्य एव तर्कपूर्ण रही है। जिसका पाठको पर गहरा प्रभाव पडा। हजारो व्यक्ति इन्हे पढकर अन्धविश्वासो से मुक्त हुए।

स्वामी जी न अपने लेखन व व्याख्यानो मे कुरीतियो का खण्डन करत हुए रोषपूर्ण शब्दो मे क्षोभ प्रकट किया। सोमनाथ मन्दिर प्रसग मे उनका यह आक्रोश अद्वितीय अवस्था मे दिखाई देता है।

स्वामी जी तथा आर्यसमाज की जिस शैली को उस काल के तथा अनुगामी युगीन साहित्यकारो ने बडे जोश के साथ अपनाया वह है उनकी व्यग्यात्मक शैली यथा जन्म पत्र के लिए शाक पत्र मन्त्र शक्ति पर कहना अगर तुम्हारे मन्त्र मे शक्ति है ता कुबेर क्यो नही बन जाते ?" तपोवन को भिक्षुक वन पोपलीला के गपोडे आदि का प्रयोग करते हुए अपनी विनोद वृत्ति का अच्छा प्रदर्शन किया है। वह व्यग्य मे हर की पोडी को हाड की पौडी कहते थे।

स्वामी जी ने अपने गूढ विषयो को पाठको के लिए बडे सरल ढग से रखने के लिए दृष्टात शैली का अवलम्बन किया। एतदर्श शेखचिल्ली कथा लाल बुझक्कड कथा आदि अनेक कहानियो का भी उन्होने प्रयोग किया है।

स्वामी जी ने एक नवीन साहित्यिक शैली आरम्भ की जिसे अनुगामी साहित्यकारो ने भी अपनाया वह शैली है "प्रश्न शैली इस मे स्वय एक प्रश्न रखकर फिर उसका उत्तर विस्तार से समझाया जाता है। आप शास्त्रार्थो व व्याख्यानो मे भी इसका प्रयोग करते थे।

स्वामी जी के प्रभाव से हिन्दी गद्य को नई दिशा मिली तथा अब तक अछूते रहे विषयो पर भी साहित्यिक कलमे उठने लगीं। कथा कहानियो मे दार्शनिकता भी पैदा हुई। समाज सुधार शास्त्रीय व वैज्ञानिक विषयो की विवेचना के साथ ही साथ राजनैतिक प्रश्नो को भी हिन्दी साहित्य ने अपनाना आरम्भ कर दिया। सत्यार्थ प्रकाश मे जो दार्शनिक आध्यात्मिक नैतिक सामाजिक व राजनैतिक प्रश्नो की विवेचना की गई है उनके बारे मे आचार्य चतुरसैन जी कहते है – "तुलसी कृत रामायण के बाद सत्यार्थ प्रकाश ही इस युग का इतना लोकप्रिय ग्रन्थ हुआ है।" हजारो व्यक्तियो ने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से हिन्दी सीखी। बाबू श्यामसुन्दर दास के अनुसार "सत्यार्थ प्रकाश और आर्यसमाज के प्रभाव से पजाब मे हिन्दी का वह असर हुआ जिसकी कदापि आशा नहीं थी।" इससे हिन्दी मे गम्भीर विवेचना की पद्धति आई तथा रोचक एव विनोदात्मक शैलियो का विकास हुआ।

रामधारी सिह दिनकर के अनुसार "स्वामी जी का ब्रह्मचर्य नैतिक शुद्धता और पवित्रता पर बल देना हिन्दी साहित्य के इतिहास मे एक महान उल्लेखनीय तथ्य है। रीतिकाल के ठीक बाद वाले काल मे हिन्दी भाषी क्षत्रो मे जा उल्लेखनीय घटना घटी वह स्वामी दयानन्द का पवित्रवादी प्रचार था।"

द्विवेदी युग पर स्वामी जी की विचारधारा का प्रभाव भारतन्दु युग से भी अधिक पडा। परिणाम स्वरूप नायिका भद सम्बन्धी साहित्य को हेय समझा जाने लगा। यही कारण है कि कवि नाथूराम शकर ने अपना श्रृगारिक काव्य ग्रन्थ कलित कलेवर स्वय ही नष्ट कर दिया। सुदशन का भी अपनी कहानियो का प्रवाह बदलना पडा।

इस युग के कवि श्रृगार रस की कविता लिखने से डरने लग थे। यही कारण है कि मैथिली शरण गुप्त नाथूराम शकर तथा इस युग के अन्य कवियो के काव्यो म राष्ट्रप्रेम राष्ट्रोद्धार समाज सुधार आदि की भावनाए विपुलता से पाई जाती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती व आर्यसमाज ने सुधारवादी माग अपनाते हुए बाल विवाह विधवा विवाह अनमल विवाह छुआछूत आदि अनेक कुप्रथाओ के विरूद्ध आवाज उठाई। इन्हे अनुगामी साहित्यकारो ने भी अपनाया। मिश्र बन्धुओ ने लिखा है कि अनेक भूलो और पाखण्डो मे फसे हुए लोगो को सीधी राह दिखाकर जो अपने समय मे महात्मा बुद्ध स्वामी शकराचार्य रामानन्द कबीर दास बाबा नानक वल्लभाचार्य चैतन्यमहाप्रभु और राममोहन राय ठौर ठौर कर गए हम आर्यसमाजी नही हे तो भी हमारी समझ मे ऐसा आता है कि हम लोगो को जो वास्तविक हित इस दृष्टि के प्रयत्नो द्वारा हुआ और होना सम्भव है उतना उपर्युक्त महात्माओ मे से बहुतो ने नही कर पाया।" वैष्णव व रामभक्त मैथिलीशरण गुप्त की भारतभारती मे स्वामी जी के प्राय सभी सुधारो का वर्णन है तभी तो दिनकर ने कहा है कि साकेत के राम तो स्वामी दयानन्द के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम का नारा लगाते हैं।"

हिन्दी को आरम्भ से ही राष्ट्रभाषा के स्थान पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास उन्होने किया। आप विदेशियो को भी हिन्दी मे पत्र लिखने का अनुरोध करते थे। मदाम ब्लैवेटस्की को लिखा था कि जिस पत्र का हमसे उत्तर चाहते हो वह हिन्दी मे लिखा करे। कर्नल अल्काट को हिन्दी सीखने को प्रेरित किया था। श्याम जी कृष्ण वर्मा को भी लिखा था कि अब भी वेदपाठी के लिफाफे के ऊपर देवनागरी नही लिखा गया।"

आपने हिन्दी शैली का परिष्कार भी किया। पूर्व मे तो शैलिया प्रचलित थीं। (१) राजा लक्ष्मण सिह की शैली जिसमे तत्सम शब्दो पर बल था। (२) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की शैली जिसमे उर्दू शब्दो पर बल था। स्वामी जी ने जनता तक अपनी आवाज पहुचाने के लिए अपनी भाषा मे स्पष्टता ओज विशदता तथा पाठको को प्रभावित करने के गुणो का खूब प्रदर्शन किया। कुछ लोग कहते है कि विरोधियो को चुप कराने हेतु आप लक्कड तोड भाषा का प्रयोग करते थे। किन्तु तात्कालिक सामाजिक बुराईयो के नाश के लिए स्वामी जी ने ऐसी कठोर भाषा का प्रयोग करने के साथ ही साथ साधारण क्षणो मे सरल सुबोध व प्राजल भाषा का प्रयोग किया। तत्सम और तदभव दोनो प्रकार के शब्दो का प्रयोग किया। तत्सम और तद्भव दोनो प्रकार के शब्दो का प्रयोग करते हुए अनेक प्राचीन शब्दों को पुन हिन्दी को लौटाया। उन्होने हिन्दी को केवल बोझिल व विद्वतगण की भाषा नहीं बनने दिया। उनकी भाषा मे न तो गवाह निर्वासित हुआ और न ही 'कलक्टर' शब्द को धक्का लगा।

डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के अनुसार "आर्यसमाजी की भाषा से हिन्दी भाषा मे एक नई शैली का प्रतिपादन हुआ इससे भाषा मे गहन से गहन विषयो पर भी वाद विवाद करने की शक्ति आ गई। आर्यसमाज के कारण व्याख्यानो की धूम मची इससे हिन्दी भाषा का समस्त उत्तर भारत मे प्रचार हुआ। इस प्रकार हिन्दी गद्य शैली का विकास हुआ यह निर्विवाद है।

सस्कृति के वैदिक तथा शास्त्रीय साहित्य को भी अनुवाद द्वारा हिन्दी मे सुलभ किया गया। आर्यसमाज से सम्बन्धित साहित्यकारो का विवरण इस प्रकार है –

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

हिन्दी भाषा व साहित्य को आर्यसमाज की देन

आर्य उपन्यासकार पण्डित गौरी दत्त मुन्शी प्रेमचन्द डॉ० अशोक आर्य सुदर्शन धनीराम द्विजेन्द्रनाथ मिश्र निर्गुण सत्यदेव परिव्राजक बलराज साहनी भीष्म साहनी यशपाल श्रीमती सत्यवती मल्लिक श्रीमती चन्द्रकिरण सोनरिक्सा।

आर्यसमाज के निबन्ध लेखक कालीचरण पण्डित मोहन लाल विष्णु लाल पण्डया प० रूद्रदत्त शर्मा प० पद्मसिह शर्मा डॉ० हरिशकर शर्मा वेदक कृष्ण प्रसाद गौड बेढब डॉ० धीरेन्द्र वर्मा डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल डा० नगेन्द्र डॉ० सत्यदेव डॉ० विजयेन्द्र स्नातक डॉ० मुन्शीराम शर्मा सोम, डॉ० धर्मवीर भारती श्री क्षेमचन्द्र सुमन।

आर्यसमाज के नाटककार प० रूद्रदत्त शर्मा नारायण प्रसाद बेताब तुसलीदास शैदा मुन्शी प्रम चन्द श्री सुदर्शन हरिशकर शर्मा आ० चतुरसेन शास्त्री श्री चन्द्रगुप्त विद्यालकार इन पक्तियो के लेखक डॉ० अशोक आर्य ने भी कुछ एकाकी लिखे।

आर्य गद्यकार आचार्य चतुरसेन आचार्य अभयदेव विद्यालकार देवदूत विद्यार्थी।

आर्यसमाज के समीक्षक (सैद्धान्तिक) – प० शालीग्राम शास्त्री प० उदयवीर शास्त्री डॉ० हरिदत्त शास्त्री आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री प० क्षेमचन्द्र सुमन डॉ० नगेन्द्र (व्यवहारिक समीक्षा) तुलनात्मक समीक्षा पद्धति के जन्मदाता पद्म सिह शर्मा डॉ० मुन्शीराम शर्मा डा० विजयेन्द्र स्नातक डॉ० सरयुप्रसाद अग्रवाल डा० सुरेश कुमार विद्यालकार डॉ० हरदेव बाहरी।

आर्य समाजी टीकाकार प० पदम सिह शर्मा डॉ० बाबू लाल सक्सेना डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल।

इतिहासकार आर्यसमाजी डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री आचार्य चतुरसेन शास्त्री डॉ० विजयेन्द्र स्नातक आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन डॉ० हरिवश कोछड डॉ० धर्मवीर भारती डॉ० शीरेन्द्र वर्मा डॉ० नागेन्द्र।

आर्य समाज के तुलनात्मक साहित्य लेखक डॉ० भर्ग सिह डॉ० विजयवीर विद्यालकार ओमप्रकाश विद्यालकार ओम प्रकाश वेदालकार चन्द्रभाणु सोणवणे डॉ सुरेश कुमार विद्यालकार प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु डॉ० भवानीलाल भारतीय।

हिन्दी के आर्यसमाजी कवि मुन्शी केवल कृष्ण चारण उमरदान कवि कुमार शेर सिह वर्मा प० बलभद्र मिश्रा प० बाबूराम शर्मा सेठ मागी लाल गुप्त कविकिकर नाथू राम शकर बद्रीदत्त शर्म जोशी नारायण प्रसाद बेताब ठाकुर गदाधर सिह लोकनाथ तर्कवाचस्पति स्वामी आत्मानन्द श्री कर्णकवि स० जसवन्त सिह टोहानवी भूरा लाल व्यास हरिशकर शर्मा विद्याभूषण विभू प० चमूपति प० बुद्धदेव विद्यालकार प० वागीश्वर विद्यालकार प० दुलेराम काराणी प० राम प्रसाद बिस्मिल प० विश्वम्भर सहाय प्रेमी राजकुमार रणवीर सिह प० अनूप शर्मा प० सिद्धगोपाल कविरत्न प० मद्रजित चन्द्र श्री हरिशरण श्रीवास्तव मराल प० धर्मदत्त विद्यावाचस्पति राजा रणन्जय सिह डॉ० सूर्यदेव शर्मा गायत्री देवी डॉ० मुन्शी लाल शर्मा 'सोम' प० प्रकाश चन्द्र कविरत्न' प० सत्यकाम विद्यालकार स्वामी सत्यप्रकाश प० अखिलश शर्मा प० लक्ष्मीनारायण शास्त्री (नारायण मुनि चतुर्वेदी) प० विद्यानिधि शास्त्री राम निवास विद्यार्थी डॉ० सुशीला गुप्ता कृष्णलाल कुसुमाकर प० रमेश चन्द्र शास्त्री रामनारायण माथुर (स्वामी ओम प्रेमी) प्रो० उत्तम चन्द शरर प० ओकार मिश्र प्रणव डॉ० मदन मोहन जावलिया प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु कु० सुख लाल आर्य मुसाफिर कु० जोरावर सिह प्रभा देवी राधेश्याम आर्य।

आत्मकथा लेखक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती भवानी दयाल सन्यासी प० नरेन्द्र जी स्वामी विद्यानन्द सरस्वती स्वामी वेदानन्द भाई परमानन्द सत्यव्रत परिव्राजक देवेन्द्र सत्यार्थी प० गगा प्रसाद उपाध्याय गगाप्रसाद जज आचार्य नरदेव प० राम प्रसाद बिस्मिल म० नारायण स्वामी प० इन्द्र विद्यावाचस्पति सन्तराम बी०ए० पृथ्वीसिह आजाद आचार्य रामदेव सत्यव्रत सिद्धान्तालकार प० रूचिराम डॉ० भवानी लाल भारतीय प० युधिष्ठिर मीमासक लाला लाजपतराय।

हिन्दी गद्य मे जीवनी लेखक आर्यसमाजी गोपालराव हरिदेशमुख चिम्मन लाल वैश्य सत्यव्रत शर्मा द्विवेदी दयाराम मुन्शी रामविलास शारदा चौ० राय सिह स्वामी सत्यानन्द दीवानचन्द जगदीश विद्यार्थी (स्वामी जगदीश्वरानन्द) त्रिलोक चन्द आर्य म० आनन्द स्वामी प० मुनीश्वर देव भूदेव शास्त्री वैद्य गुरुदत्त डॉ० भवानी लाल भारतीय प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु डॉ० अशोक आर्य श्रीमती राकेश रानी विश्वम्भर प्रसाद शर्मा हरिश्चन्द्र विद्यालकार इन्दु विद्यावाचस्पति धर्मदेव विद्यावाचस्पति भारतेन्दु नाथ वेदानन्द तीर्थ श्रीराम शर्मा स्वामी वेदानन्द सरस्वती (दयानन्द तीर्थ) सत्यप्रिय शास्त्री डॉ० राम प्रकाश आचार्य विष्णुमित्र अलगूरायशास्त्री राम विचार भक्तराम डॉ० देशराज सत्यव्रत अवनीन्द्र कृष्णकान्त स्वामी श्रद्धानन्द प० शकर शर्मा वीरेन्द्र सिधु ईश्वर प्रसाद वर्मा धर्मवीर उषा ज्योतिष्मति स्वामी स्वतन्त्रानन्द देवी लाल पालीवाल डॉ० ब्रजमोहन जावलिया फतहसिह मानव दीनानाथ शर्मा परमेश शर्मा रघुवीर सिह शास्त्री पृथ्वी सिह आजाद ओमप्रकाश आर्य महावीर अधिकारी परमेश शर्मा भाई परमानन्द जगदीश्वर प्रसाद प० लेखराम।

हिन्दी मे सस्मरण यात्रा वृतान्त शिकार कथा आदि के लेखक इनके अतिरिक्त है वास्तव मे हिन्दी साहित्य की सेवा के क्षेत्र मे आर्यसमाजियो के नामो की पूर्ण गणना कर पाना सम्भव नहीं है। इतना कहा जा सकता है कि हिन्दी लेखन क्षेत्र मे आर्य समाजियो की असीमित सख्या के अतिरिक्त ऐसे भी सैंकडो नाम मिलेगे जो सीधे रूप मे आर्य समाजी न होते हुए भी आर्यसमाज से प्रभावित थे।

– आर्य कुटीर, ११६ मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरियाणा)

आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

श्रावणी उपाकर्म एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य मे आर्यसमाज कीर्तिनगर मे यज्ञ भजन एव वेद प्रवचन आदि कार्यक्रम बडे हर्षोल्लास पूर्वक आयोजित किये गये। प्रारम्भ मे चार दिन कीर्तिनगर एव मोतीनगर सुदर्शनपार्क मे प्रभात फेरी निकाली गयी जिसमे आर्यजनो आर्यवीरो एव माताओ ने भारी सख्या मे भाग लिया। ईश भक्ति एव ऋषि गुणगान के भजनो ने प्रभात फेरी की शोभा को द्विगुणित बढा दिया। आर्यसमाज सुदर्शन पार्क एव आर्य परिवारो के द्वारा प्रभात फेरी मे आये आर्यवीरो आर्यजन्ो एव माताओ का बहुत सुन्दर ढग स स्वागत किया।

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री म[illegible]र [illegible]ाल कुमार इस कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थ। उन्हान अपने उदबोधन मे कहा कि आज देश के सामने इस्लाम और ईसाइयत की विचारधारा एक षडयन्त्र कारी ताकत के रूप मे कार्य कर रही हे। उन्हाने कहा कि इन षडयन्त्रो का मुकाबला करन की क्षमता केवल मात्र आर्यसमाज मे ही है।

श्री मनोहर लाल कुमार ने कहा कि आर्यसमाज के चिन्तन का प्रत्येक अश राष्ट्रवादी है। उन्होने यह आशा व्यक्त की कि आर्यसमाज का नेतृत्व अपने अभियान को अपने प्राचीन स्वरूप के अनुसार ही चलाए तो समूचे हिन्दू समाज की रक्षा सम्भव हो सकेगी।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि आर्य समाजी ही नही पौराणिक हिन्दू भी इस तथ्य को स्वीकार करते है कि अपने राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के कारण आर्यसमाज हिन्दू जाति का सुदृढ प्रहरी है परन्तु धर्मान्तरण के विरूद्ध सार्वदेशिक सभा के देशव्यापी प्रयासो में साधारण पौराणिक तो क्या अभी स्वय आर्यसमाजी भी लक्ष्यबद्ध होकर सहयोग नही दे पा रहे। धर्मान्तरण विरोधी कार्यो मे हर व्यक्ति को तन मन धन से सहयोग देना चाहिए।

प्रो० रतनसिह जी ऋग्वेदीय यज्ञ के ब्रह्मा रहे एव रात्रि मे वेद प्रवचन के द्वारा सबको ज्ञानामृत का पान कराते रहे। महाशय जनार्दन जी सुन्दर भजनो के द्वारा सबको आनन्दित करते रहे। २५ अगस्त को पूर्णाहुति के कार्यक्रम मे अन्य वक्ताओ मे डॉ० महेश विद्यालकार श्री मनोहर लाल कुमार श्री विमल वधावन श्री रामनाथ सहगल श्री जगदीश आर्य ने विचार व्यक्त किये। सभा की अध्यक्षता श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली ने की। सुन्दर ढग से कार्यक्रम का सचालन श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा मन्त्री आर्यसमाज ने किया। आर्यवीरो के प्रदर्शन ने सबके मन को मोह लिया।

– सुरेन्द्र बुद्धिराजा

पृष्ठ १ का शेष भाग

आर्य कार्यकर्त्ता कार्यशाला २ अक्तूबर को

माननीय प्रतिनिधिगण जिस विषय पर भी अपने विचार तैयार करके उपलब्ध कराएगे उन्हीं को कार्यशाला मे प्रस्तुत करने के लिए आमन्त्रित किया जाएगा।

आर्यसमाज के सगठन मे श्रद्धा प्रेम और अनुशासन की स्थापना के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम सकारात्मक बुद्धि को अपनाए। दूसरे लोग क्या कार्य नहीं कर रहे इससे अधिक हमे इस बात को प्रस्तुत करना चाहिए कि हम स्वय क्या कर रहे हैं ? हमारे कार्य दूसरो की प्रेरणा बन सके इससे बडा सौभाग्य अन्य कुछ नही हो सकता। आप और आपकी आर्यसमाज के सदस्य इस सौभाग्य को प्राप्त करे और २ अक्तूबर को आयोजित इस कार्यशाला मे अपने प्रतिनिधि के माध्यम से इस विशाल सगठन को सुदृढ बनाए रखने मे सहयोग करे।

वेदव्रत शर्मा	**वैद्य इन्द्रदेव**	**नरेन्द्र आर्य (प०)**
प्रधान	महामन्त्री	सयोजक
२३७१६१५	३६५१२८५	५४५७७५५
पतराम त्यागी (पू०)	**रवि [illegible]ल (पू०)**	**राजीव भाटिया (के०)**
२४६२३२१	२४१२४२६	३७४२२५१
सत्येन्द्र मिश्र (द०)	**रोशन लाल गुप्ता (द०)**	**पुरुषोत्तम लाल गुप्ता (द०)**
६५४६७७४	२४११७४०	६८३४८२२
राजेन्द्र आनन्द (उ०प०)	**भजन प्रकाश आर्य (उ०प०)**	**गोपाल आर्य (उ०)**
७१८४४४३	७०१७७८०	३६७१२४६
	शशि प्रभा आर्या (महिला)	
	५४३६८२८	

नोट –

१ अपनी आर्यसमाज के प्रतिनिधि महानुभाव तथा कार्यशाला मे भाग लेने वाले अन्य सदस्यो के नाम पते और दूरभाष न० तुरन्त सयोजक को लिखवा दें।

२ इस आयोजन मे भाग लेने वाले प्रतिनिधियो को नोट बुक पैन वहीं पर प्रदान किया जाएगा।

३ कार्यक्रम के उपरान्त समस्त प्रतिनिधियो और उनके साथ आने वाले अन्य महानुभावों का प्रबन्ध स्वागतकर्ता आर्यसमाज रमेश नगर के द्वारा ही किया गया है।

आर्यसमाज मन्दिर शकरपुर में वेद प्रचार सप्ताह का भव्य आयोजन

आर्यसमाज मन्दिर शकरपुर दिल्ली–९२ मे २२ अगस्त से ३१ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह का आकर्षक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इसके अन्तर्गत हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियो को श्रद्धाजलि अर्पित की गई। सामूहिक रूप से यज्ञोपवीत परिवर्तन किया गया तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

२२ अगस्त से ३१ अगस्त तक प्रतिदिन प्रात ७ बजे से ८.३० बजे तक चारो वेदो के शतको से विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यसमाज शकरपुर के पुराहित श्री विजय प्रकाश शास्त्री तथा आर्यसमाज शकरपुर के मन्त्री श्री ओमप्रकाश रूहिल थे।

२२ अगस्त को श्रावणी पर्व तथा भाई बहन के प्यार का प्रतीक रक्षाबन्धन पर्व समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ मे उपस्थित सभी श्रद्धालुओ के यज्ञोपवीत भी परिवर्तित कराए गए।

३१ अगस्त को विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर तीन यज्ञ कुण्डो पर वृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। कन्धो पर पीतवस्त्र डाले हुए यजमान यज्ञ की सुगन्धि तथा मन्त्रो के उच्चारण की ध्वनि से सारा वातावरण अत्यन्त मनोहारी दृश्य प्रस्तुत कर रहा था।

यज्ञ के उपरान्त दिल्ली सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता पूज्य स्वामी स्वरूपानन्द जी की अध्यक्षता मे भजन प्रवचन तथा उपदेश के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस अवसर पर श्री तुलसीराम जी श्री औमप्रकाश भारद्वाज श्री ओमप्रकाश रूहिल श्री पतराम त्यागी सहित अनेको वक्ताओ ने अपने विचार प्रकट किए। समारोह के सफल आयोजन मे आर्यसमाज के प्रधान श्री मिश्रीलाल गुप्ता मन्त्री श्री ओमप्रकाश रूहिल तथा कोषाध्यक्ष श्री राकेश शर्मा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कार्यक्रम के उपरान्त श्री प्रदीप गुप्ता के सहयोग से ऋषि लगर का आयोजन किया गया।

अन्याय, आतंक, अत्याचार का अन्त करने के लिए श्रीकृष्ण ने आजीवन उद्योग किया था

कस ने अनेक प्रयत्न किए कि कृष्ण पैदा न हो परन्तु अभिमानी कस श्रीकृष्ण का जन्म नहीं रोक पाया क्याकि होनी को रोकना असम्भव है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी प्रतिवर्ष आती है और अनीति अत्याचार अनाचार का अन्त करने की प्रेरणा देती है। यदि हम कृष्ण जन्माष्टमी के समय उनके जीवन से प्ररणा ले तो मानवता का कल्याण होगा।

श्रीकृष्ण ने बाल्यावस्था से जीवन पर्यन्त धर्म की रक्षा के लिए सघर्ष किया साथ ही प्रेम सदभाव और मैत्री का आदर्श स्थापित किया। पुराने साथी सुदामा से उनकी मैत्री समानता और सहृदयता का अनूठा उदाहरण है। महाभारत के रणक्षेत्र मे अर्जुन को उन्होने कर्त्तव्य परायणता की शिक्षा दी जिसे हमेशा स्मरण किया जाता है। यही कारण है कि गीता का रहस्य जानने के लिए पश्चिमी देश आज भी उत्सुक है फलत वहा के मूल्यहीन विचारक गीता से श्रीकृष्ण का मूल्यो पर आधारित मानवता का सन्देश सुनते है।

गीता मे उन्होने स्वय कहा है – जब जब धर्म की हानि होती है मैं धर्म की रक्षा के लिए जन्म लेता हू – **यदा यदा हि धर्मस्य ग्लनिर्भवति भारत अभ्युत्थानाद धर्मस्य तदत्मान सृजानाम्हम।**

जन्माष्टमी एक राष्ट्रीय पर्व है इस अवसर पर आतक के विरुद्ध यदि श्री कृष्ण का सन्देश हम अपना सके तो विश्व का कल्याण होगा। श्रीकृष्ण ने अत्याचारी कस का सहार किया उन्होंने भय आतक का अन्त किया उसी उनके यशस्वी जीवन पर चलते हुए हम अन्याय आतक का अन्त करे।

आर्यसमाज, पीपाड शहर में वेद प्रचार सप्ताह एवं वृष्टि यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज पीपाड शहर राजस्थान की प्राचीनतम आर्यसमाजो मे से एक है इस आर्यसमाज के पदाधिकारी दानदाता एव समाज के भामाशाह दान दाताओ के सहयोग से प्रतिवर्ष श्रावणी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष इस क्षेत्र मे अकाल की स्थिति को देखते हुए यहा के कार्यकताओ ने वेद प्रचार सप्ताह के साथ वृष्टि यज्ञ के आयोजन का निर्णय किया।

दिनाक १६–८–२००२ से २२–८–२००२ तक चले वेद प्रचार सप्ताह एव वृष्टि यज्ञ के ब्रह्मा प० रामनारायण शास्त्री थे। आगन्तुक अन्य सन्यासी एव विद्वानो मे प० नरदेव जी भजनोपदेशक भरतपुर स्वामी रामानन्द जी सरस्वती अजमेर आदित्यमुनि वानप्रस्थी जोधपुर एव श्री देवीप्रसाद जी बाडमेर थे।

वेद प्रचार सप्ताह के ... आर्यसमाज मन्दिर मे प्रतिदिन प्रात ७ से ८ बजे तक यज्ञ ८ से ९ तक भजनोपदेश एव ८ से १० बजे तक प्रवचन दोपहर २ बजे से ४ बजे तक रामायण कथा एव शाम ८ से ९ बजे तक भजन तथा ९ से १० बजे तक प्रवचन होता था। वृष्टि यज्ञ का लेकर पीपाड नगरवासियो मे उत्साह था। आर्यसमाज के प्रधान श्री शकरलाल आर्य एव मन्त्री श्री चम्पालाल आर्य ने दो पूर्व महा यज्ञ की तैयारी प्रारम्भ कर दी थी। समाज के कोषाध्यक्ष श्री शिवरतन आर्य ने अवगत कराया कि इस वेद प्रचार सप्ताह एव वृष्टि यज्ञ मे पीपाड नगरवासियो एव इस समाज से जुडी आर्यसमाज कोसाना के प्रधान श्री बसीलाल जी आर्य का पूर्ण सहयोग मिला। पीपाड शहर के नगर निवासियो ने यज्ञ हेतु नकद दान के अतिरिक्त घृत सामग्री मिष्ठान्न

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे वेद प्रचार समारोह

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे २२ अगस्त से ३१ अगस्त २००२ तक वेद प्रचार समारोह के उपलक्ष्य मे श्रावणी पर्व एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात ७.३० से ९ बजे तक आचार्य राजू वैज्ञानिक के ब्रह्मत्व मे अथर्ववेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रतिदिन सायकाल प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री वेदव्यास जी के मनोहारी भजन तथा आचार्य राजू वैज्ञानिक के सुमधुर प्रवचन होते रहे।

श्रावणी पर्व पर २२ अगस्त को सामूहिक रूप से यज्ञोपवीत का परिवर्तन किया गया। २५ अगस्त को सत्याग्रह बलिदान दिवस के अवसर पर अमर हुतात्माओ के नामो की सूची पढकर सुनायी गई तथा श्रद्धाजलि अर्पित की गइ। ३१ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभावसर पर गुरुकुलो के एव स्कूलो के छात्र छात्राओ की भाषण प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रो० मोहनलाल जी ने की। सफल प्रतियोगियो को पुरस्कृत भी किया गया।

आर्यसमाज गाधी नगर, दिल्ली में वार्षिक उत्सव का आयोजन

दिनाक १६ सितम्बर से २२ सितम्बर

आर्यसमाज गाधी नगर दिल्ली मे प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी वार्षिक उत्सव समारोह पर कथा सत्सग का आयोजन **१६ सितम्बर से २२ सितम्बर** तक किया जा रहा है।

इसमे राष्ट्रीय स्तर के उच्चकोटि के विद्वान वैदिक प्रवक्ता आचार्य अखिलेश्वर जी (जम्मू) तथा सगीतज्ञ श्री प० सत्यपाल पथिक जी पधार रहे हैं।

कार्यक्रम

प्रात ६.३० से ८.१५ बजे तक

साय ८.०० से १०.०० बजे तक

वृष्टि यज्ञ

दिनाक ११–८–२००२ को आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल मे एक विशाल वृष्टि यज्ञ का आयोजन हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री देशराज जी शास्त्री थे इस शुभ अवसर पर पलवल नगर वासियो ने बढ–चढकर दान दिया तथा यज्ञ की सराहना की। इस अवसर पर श्री रामप्रकाश आर्य श्री जितेन्द्र आर्य श्री ओमप्रकाश शास्त्री श्री शिवराम विद्यावाचस्पति आदि लोग मौजूद थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री धनपत राय आर्य तथा यज्ञ के यजमान श्री कृष्ण कुमार भुटानी थे। अन्त मे प्रसाद वितरण के साथ सभा विसर्जित हुई।

आगमी आकर्षण

शहीद चित्र प्रदर्शनी

दिनाक	२६ से २९ सितम्बर २००२
स्थान	आर्यसमाज मन्दिर सरस्वती विहार दिल्ली
समय	प्रात ९ बजे से ४ बजे तक

प्रदर्शनी के मुख्य आकर्षण भारत से पलायन के बाद नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जीवन की रोमाचक घटनाए। अमर शहीदो के ७० से भी अधिक श्री रविचन्द्र गुप्ता के स्व–रक्त निर्मित चित्रो की श्रृखला। स्वतन्त्रता सग्राम की घटनाओ की आकषक झाकिया। शहीद बच्चो के रोमाचक कारनामे।

२६ सितम्बर २००२ प्रात १० बजे

उदघाटन	श्री दीपचन्द जी बन्धु उद्योगमन्त्री दिल्ली राज्य
अध्यक्षता	डा० एस०सी० वत्स विधायक
विशिष्ट अतिथि	श्री राजवीर सिह निगम पार्षद
प्रश्न मच	शहीद–चित्र प्रदर्शनी के आधार पर २८ सितम्बर साय ४.३० बजे

समापन समारोह २९ सितम्बर २००२ प्रात ९ बजे

मुख्य अतिथि	श्री राजकुमार जी चौहान शिक्षामन्त्री दिल्ली राज्य
अध्यक्षता	श्री जयभगवान अग्रवाल विधायक
विशिष्ट अतिथि	श्री अजय सहगल श्री कमल किशोर गोयनका

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 12 13/09/2002 दिनांक ६ सितम्बर से १५ सितम्बर २००२ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 12 13/09/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

२१६ श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

पृष्ठ ४ का शेष भाग

राजा, सैनिकों और सेनापति को हितकर आदेश

(७) राजा को चाहिए कि वह प्रत्येक क्षेत्र मे विजयी होकर अपने सैनिको को हर्षित और सतुष्ट करे

इतो जयेतो विजय सजय जय स्वाहा।
इमे जयन्तु परामी जयन्ता स्वाहैभ्यो दुराहामीभ्य ।
नीललोहितेनामूनम्य वतनोमि।।

अथर्व ८ ८ २४

भृग्वगिरा । इन्द्र परसेनाहननच। त्रिष्टु बुष्णिगर्भा परा शक्करी जगतीच।

अर्थ – हे राजन ! (इतोजय) राष्ट्र की एक दिशा मे मचे उपद्रव पर जय प्राप्तकर (इत विजय) दूसरे क्षेत्र मे उठे आतकवाद पर विजय प्राप्त कर। (सजय जय) सारे राष्ट्र मे सम्यक शान्ति स्थापित कर सर्वत्र विजयी हो। इसका उपाय है (स्वाहा) अपने वैयक्तिक सामाजिक और दलगत स्वार्थो का पूरी तरह त्याग कर दे। यदि ऐसा किया तो (इे मे जयन्तु) हमारे वीर विजयी होगे और (अभीपरा जयन्ताम्) शत्रु राष्ट्र के वीर पराजित हो जाएगे। परिणामत (एभ्य स्वाहा) हमारे वीरो के लिए यश के सुन्दर वचन बोले जाएगे और (दुराहा अमीभ्य) आक्रामक राष्ट्र के लिए अपयश क वचन बोले जाएगे। ऐसा होने पर – मै (इन्द्र) सम्राट=राष्ट्र का प्रमुख (नीललोहितेन) नीलग्री व महादेव शिव की प्रेरणा से आक्रामक पक्ष को नील (कलुषित) वचनो से निन्दा करके और स्वपक्ष को लोहित उत्साहप्रद वचनो से उत्पन्न हर्ष से (अवतनोमि) आच्छादित–विमोर कर देता हू – कर दूगा।

निष्कर्ष – यदि ऐश्वर्यशाली राजप्रमुख अपने राष्ट्रहित मे अपने स्वार्थो का पूर्णतया त्याग कर देता है तो उसे चतुर्दिक विजय प्राप्त होती है। उसके सैनिको की वीरता की प्रशसा और शत्रु राष्ट्र के सैनिको की अपकीर्ति फैलती है।

– **श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, खारीबावली दिल्ली ६**

दिल्ली की आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज बाजार सीताराम, दिल्ली-६

प्रधान	–	श्री रामकिशन अग्रवाल
मन्त्री	–	श्री बाबूराम आर्य
कोषाध्यक्ष	–	श्री अरुण गुप्ता

आर्यसमाज अशोक नगर, नई दिल्ली-१८

प्रधान	–	श्री भगवानदास मनचन्दा
का० प्रधान	–	श्री जसवन्तराय ढींगरा
मन्त्री	–	श्री चतुर्भुज अरोडा
कोषाध्यक्ष	–	श्री प्रताप ढींगरा

हिन्दी का सम्मान
राष्ट्र का सम्मान

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक ३९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १६ सितम्बर से २२ सितम्बर २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

महर्षि दयानन्द के अनुयायियों ने अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती में स्वर्ण पदक जीते

महर्षि दयानन्द युवा स्पोर्टस ऐसोसियेशन के नाम से चलाए जा रहे एक खेल सगठन की कुश्ती टीम दक्षिण अफ्रीका मे कुश्तियो की चैम्पीयनशिप से सफल होकर लौटी है। इस टीम ने दक्षिण अफ्रीका की इस खेल प्रतियोगिता मे कई स्वर्ण पदक भी जीते हैं। महर्षि दयानन्द के भक्त श्री अजीत सिह इस टीम के मैनेजर के रूप मे साथ गए थे। भारत वापस पहुचने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन त मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने सभा कार्यालय मे पहलवानो के इस विजेता दल का स्वागत किया।

सभा कार्यालय मे आयोजित स्वागत समारोह मे खिलाडियो को सम्बोधित करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि खेल की भावना केवल खेल के मैदान मे ही नहीं अपितु हमारे दैनिक जीवन मे भी परिलक्षित होनी चाहिए। उन्होने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने शरीर और आत्मा दोनो की उन्नति का आह्वान किया था। कुश्ती दल के पहलवान अपनी शारीरिक क्षमता को बढाकर जहा शरीर की उन्नति कर रहे हैं वहीं उन्हे स्वाध्याय के द्वारा अपनी आत्मा की उन्नति भी सुनिश्चित करनी चाहिए। जिस दिन शरीर से सुदृढ व्यक्ति स्वाध्याय द्वारा अपनी आत्मा की उन्नति करके आर्यजनता का मार्गदर्शन करेगा उसी दिन शारीरिक और आत्मिक उन्नति का उदाहरण प्रस्तुत होगा।

श्री विमल वधावन ने कहा कि समूचे विश्व मे इस युग मे शारीरिक क्षमता बढाने के लिए कुछ दवाइयो आदि के सेवन की प्रवृत्ति भी बढ रही है। दवाईयो का सेवन करके व्यक्ति कुछ घण्टो के लिए अपने शरीर मे बल की उत्तेजना अवश्य पैदा कर लेता है परन्तु स्थाई शक्ति अर्जित करने के लिए केवलमात्र ब्रह्मचर्य ही एकमात्र उपाय है। ब्रह्मचर्य की रक्षा शाकाहारी खान पान तथा गाय के दूध और घी के सेवन से शरीर की शक्ति विशाल और स्थाई ही नहीं होती अपितु इसी माध्यम से आत्मा की भी उन्नति सम्भव है।

उन्होने कुश्ती दल के समस्त सदस्यो उनके प्रबन्धक एव कोंच को भी सार्वदेशिक सभा की ओर से सार्वदेशिक साप्ताहिक की सदस्यता नि शुल्क प्रदान करके सम्मान किया। समस्त विजेताओ का माल्यार्पण द्वारा विभिन्न आर्यजनो ने स्वागत किया। स्वागत करने वाले आर्य महानुभावो मे प्रमुख थे सर्वश्री हरिसिह आर्य कृष्णा (नेपाल) विनय आर्य अश्विनी कमार आर्य अरूण वर्मा आदि। कुश्ती दल के विजेता सदस्य थे सर्वश्री बिजेन्द्र विजयेन्द्र मनोज शर्मा विनोद कुमार रविन्द्र कुमार अमनदीप सिह गुरुमीत सिह अजीत सिह वीरेन्द्र सिह एव उमेश कुमार तथा कोच थे श्री नवल किशोर।

– **सम्बद्ध फोटो पृष्ठ ७ पर**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को
प्रचारक की आवश्यकता

वेद प्रचार के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को विद्वान प्रचारक की आवश्यकता है।

वेद विषय मे निष्णात होने के अतिरिक्त योग और कर्मकाण्ड मे कुशल तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले प्रचारक महानुभाव मे पाश्चात्य सस्कृति से प्रभावित लोगो को भी आकर्षित करने की क्षमता होनी चाहिए।

आवास सुविधा के अतिरिक्त ५०००/– रुपये की मासिक दक्षिणा राशि भी प्रचारक महानुभाव को दी जाएगी। योग्यतानुसार यह राशि बढाई भी जा सकती है।

आवेदन सभा मन्त्री को दो सप्ताह के भीतर भेजे।

– ***वैद्य इन्द्रदेव, महामन्त्री***
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड नई दिल्ली–१

दिल्ली सभा के समस्त अधिकारियों से भेंट का समय

दिल्ली आर्य सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने सभा के अन्य समस्त अधिकारियों को यह निर्देश दिया है कि सभी पदाधिकारी आर्यजनों तथा विभिन्न आर्यसमाजों के अधिकारियो से विचार विमर्श के लिए प्रत्येक सोमवार एव शनिवार को साय ५ बजे से ७ बजे तक सभा कार्यालय मे उपलब्ध रहा करे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध आर्यसमाजों के लिए
कार्यकर्ता कार्यशाला में प्रतिनिधि भेजना अनिवार्य है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा है कि सभा के तत्वावधान मे आगामी २ अक्तूबर २००२ (बुधवार) को आयोजित कार्यकर्ता कार्यशाला मे सभी सम्बद्ध आर्यसमाजो को अनिवार्य रूप से अपने प्रतिनिधि भेजना होगा। आर्यसमाजो के अधिकारी इस सम्बन्ध मे विस्तृत जानकारी के लिए कार्यशाला के सयोजक **श्री नरेन्द्र आर्य** से उनके निवास **दूरभाष ५४५७७५५ या ९८१०३७७३४५** पर सम्पर्क करे। समस्त सम्बद्ध आर्यसमाजो को अलग से इस कार्यशाला के परिपत्र भैजे जा रहे है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव ने कहा है कि दिल्ली सभा से सम्बद्ध आर्यसमाजो के अतिरिक्त अन्य आर्यसमाजे भी इस कार्यशाला मे भाग ले सकती हैं क्योकि इसमे वेदप्रचार की विभिन्न योजनाओ पर विचार विमर्श किया जाएगा। इस कार्यशाला मे प्रतिनिधि सम्मिलित होने के लिए कोई शुल्क नहीं है।

इस कार्यशाला की विस्तृत सूचना आर्यसन्देश ने विगत अक मे प्रकाशित हो चुकी है फिर भी आर्यजनो स्मृति के लिए कार्यकर्ता कार्यशाला क प्रमुख विषय पृष्ठ ५ पर प्रकाशित किए जा रहे हैं।

अनेकता में एकता हेतु:

– सोहनलाल शारदा

"यह सनातन वैदिक हिन्दू धर्म कच्चे सूत के धागे के सदृश कच्चा नहीं है। यह तो लोहे से भी अधिक पक्का है। लोहा टूट जाए, लेकिन वह कभी भी टूटने वाला नहीं है।"

ये वचन महर्षि दयानन्द महाराज ने एक प्रश्न के उत्तर मे जो अमृतसर के कमिश्नर महोदय श्री परकिस के शका समाधान मे कहे थे। श्री कमिश्नर महोदय ने कहा – 'हिन्दू धर्म तो सूत के धागे कच्चे सदृश है। उपर्युक्त उत्तर को सुनकर श्री कमिश्नर महोदय ने पुन कहा स्वामीजी आप कोई उदाहरण देकर दिखाओ तभी विश्वास होगा।

अत महर्षि ने प्रत्युतर मे कहा –

'सनातन हिन्दू वैदिक धर्म समुद्र के समान है। जैसे समुद्र मे लहरे असख्य उठती हैं, ऐसी ही दशा इस धर्म की है। देखिए इसमें ऐसे जन भी हैं जो पानी को वस्त्र से छान आख से देखकर ही पीते हैं, जिससे कोई अदृश्य जन्तु हानिकारक उदरस्थ न हो जाए। इस विशाल समुदाय मे केवल दुग्धाहारी महात्मा जन भी हैं। जो दुग्ध से अन्य कोई भी पदार्थ खाते-पीते नहीं है।

इस समाज में ऐसे भी वाममार्गी है जो पवित्र-अपवित्र योग्य-अयोग्य का विचार किए बिना ही जो भी उपलब्ध हो, सब ही उदरस्थ कर जाते हैं। इस समाज में ऐसे भी नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं अर्थात् केवल विवाह ही नहीं करते वरन किसी भी महिला को कुदृष्टि से देखते ही नहीं, और यहा ऐसे लोगो की भू न्यूनता नहीं है जो पराई महिलाओ से काला मुह किया करते हैं।

इस समाज में ऐसे जन भी हैं जो एकेश्वरवादी धारणा ध्यान उपासना करते है और ऐसे जन भी बहुतायत से हैं जो अवतारो व कई देवी-देवताओं को पूजते व मनोतिया मागते रहते हैं।

इस समाज में कोई ज्ञानी है केवल मात्र तथा कोई केवल ध्यानी ही है। यहा अस्पृश्यता का कडाई से पालन करने वाले जन भी हैं जो अन्यों मतावलम्बियो की तो बात छोडो चतुर्थ श्रेणी जनो का छुआ पानी तक भी नहीं पीते। भोजन की तो बात ही बहुत दूर की है। इसके विपरीत यहा ऐसे जन भी है, जो शूद्रों से भोजन बनाकर खाते-पीते रहते है। इन सब बातों के होते हुए भी सब के सब हिन्दू ही है। उन्हें कोई भी इससे बहिष्कार नहीं करता।

अत यही समझना चाहिए कि यह हिन्दू धर्म बहुत पक्का फौलद सदृश है। कच्चा-पच्चा नहीं है। *(महर्षि जीवनी देवेन्द्र बाबू अध्याय १६ अमृतसर प्रवास)*

अत हम सब आर्य ही है। मिलकर महर्षि कृत सर्वग्रन्थो भाष्यो से सर्वविवादो का हल करे। महर्षि दृढता पूर्वक घोषणा करते है – **'कोई भी सुधार स्थायी नहीं रह सकता जिसका आधार वेद नहीं हो।'** और महर्षि कृत सर्वग्रन्थ वेदानुकूल ही हे। चेतावनी स्वरूप प्रथम आर्यसमाज स्थापना बम्बई के समय कहते हे –

'मै तो अपना कर्त्तव्य समझकर ही वैदिक धर्म का बोध कराता हू। चाहे कोई माने या न माने। इससे मेरा कोई कुछ भी हानि व लाभ नहीं है।'

(आर्यसमाज का इतिहास सत्यकेतु जी प्रथम भाग पृष्ठ २५२)

हमे नई पीढी को आर्य बनाना है। अत प्रथम मे सर्वविवाद समाप्त करे। इस हेतु महर्षिकृत सर्वग्रन्थ सक्षम है। उनके ही आदेशो निर्देशो का पालन करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

जैसे सामान्य प्रकरण मे मन्त्रान्त मे आहुति हेतु स्वाहा इसी शब्द के प्रयोग का वर्णन है। तदनुसार ही अन्तेष्टी सस्कार मे शुद्धि हेतु वर्णन है – **"स्वस्ति वाचन, शान्ति करनम् मन्त्र-पाठ पश्चात् इन्हीं मन्त्रों से जहा मत्र समाप्त हो वहा 'स्वाहा' शब्द का उच्चारण करके सुगन्धादि मले हुए घृत की आहुति घर में दें। इससे कि मृतक का वायु घर से निकलकर शुद्ध वायु का प्रवेश हो जाने से सबका चित्त प्रसन्न हो जाए।**

दूसरा विवादास्पद विषय है **'सृष्टि सवत्'** इसका विवरण चार स्थलो पर विद्यमान है। (१) चादपुर मेला (२) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का वेदोत्पत्ति विचार (३) अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश (४) उदयपुर शास्त्रार्थ।

हम सत्यार्थ प्रकाश पठन पाठन परम अत्याधिक आग्रह पूर्वक कह रहे है। वहा लेखानुसार सृष्टि सवत है १६६०८५३१०३ विवाद समाप्ति हेतु हम इसे ही माने।

तीसरा विषय विवादास्पद है 'उपस्थान प्रकरणम्

सस्कार विधि भूमिका मे वर्णन है कि – **पूर्व लिखि विधि का सशोधन किया है। सर्व साधारण आर्यजनों के लिए इसे सुगम किया है।**

इसी सशोधित सुगम सस्कार विधि मे वैदिक सस्कार प्रकाश मे वर्णित उपस्थान के क्रम के साथ वहा के ६ मन्त्रो मे से ५ को ग्रहण कर सगतियुक्त इस मे लिखकर साथ ही वेदारम्भ सस्कार मे आचार्य महोदय को निर्देश किया कि ब्रह्मचारी को तीन रात्रि पर्यन्त रखकर गृहाश्रम सस्कारस्थ सन्ध्या की विधि की शिक्षा व सत्सग विधि सिखाए। महर्षि के लेख को मान लेने पर यह विवाद समाप्त।

चतुर्थ है – एक अति उपेक्षित पच महायज्ञ विधि के अन्तर्गत सन्ध्या मे मनसा परिक्रमा से पूर्व अघमर्षण मन्त्र के पश्चात् वर्णन आद्रेशात्मक है कि –

'शन्नो देवी' रिति पुनराचामेत्। ततो गाय आदि मन्त्रार्थान् मनसा विचारयेत्। पुन परमेश्वरेणैव सूर्यादि सकल जगद्रचित् मिति परामार्थ स्वरूपम् पर ब्रह्मचिनयित्वा परम् ब्रह्म प्रार्थयेत्।।'

इस प्रार्थना का भावार्थ भी पच महायज्ञ विधि मे है। इसके सिवाय 'प्रणव जाप तथा गायत्री जाप सत्यार्थ प्रकाश मे महाराज मनु के आधार यह जप मन मे करना उत्तम है।

इससे कार्य रूप मे परिणत करना हमारा कर्त्तव्य है। इस प्रकार विधिवत करने के लाभो का भी वर्णन सर्वसुलभ है।

पञ्चम विषय है – सप्तम समुल्लास मे वर्णित प्रार्थना।

महर्षि आर्यो का चक्रवर्ती वा माण्डलिक राज्याधिकारी होने का स्वप्न सजोए हुए थे। जो स्थान-स्थान पर भाष्य व अन्य ग्रन्थो मे प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर होता है। यह प्रार्थना भी इसी उद्देश्य पूर्त्यार्थ परमपिता परमात्मा से प्रार्थना के रूप मे एक राष्ट्रीय महत्वपूर्ण प्रार्थना है यह। इसलिए इसके अर्थो से सगति ऐसी ही बैठती है। यहा प्रथम मे बुद्धि की पुन आगे शारीरिक बल वीर्य प्राक्रम आदि के पश्चात मन शिव यानी लोक कल्याणार्थ कर्त्तव्य कर्म करता रहे ऐसी प्रार्थना के पश्चात (रामा अस्मने) अग्ने नय० मन्त्र से विज्ञान एव राज्यादि ऐश्वर्य प्राप्ति हेतु पुन अगले मन्त्र से हमारे सुयोग्य जनो को मारने हेतु उस परमपिता परमात्मा से कहता है कि आप किसी को भी इस ऐसे जघन्य कर्म के लिए प्रेरित करने की कृपा नही करे और हमे असत् मार्ग से सत् मार्ग की और अज्ञान अन्धकार से ज्ञानरुपी प्रकाश की और ले चलते हुए हमे मोक्ष मार्ग की ओर ले चलने की कृपा करे।

इस प्रकार इसे कर्मकाण्ड की प्रार्थना मे आवश्यक समझे। षष्ठ विवादास्पद विषय है **(अयन्त इधन आत्मा०) मन्त्र।** **– शेष भाग पृष्ठ ५ प**

बोध कथा

स्वामीजी का अपूर्व साहस

रौलट कानून का विरोध करने के लिए दिल्ली मे स्वामी श्रद्धानन्दजी के नेतृत्व मे सत्याग्रह का प्रारम्भ हुआ। सारा यातायात रुक गया। पुलिस ने स्वयसेवको को गिरफ्तार कर लिया। जनता ने साथियो की रिहाई के लिए प्रार्थना की तो पुलिस ने गोलिया चला दी।

सायकाल के समय बीस-पच्चीस हजार की भीड मे एक पक्ति मे **'भारत माता की जय'** के नारे लगाती हुई घण्टाघर की ओर स्वामी श्रद्धानन्दजी के नेतृत्व मे चल पडी। अचानक कम्पनी बाग मे तैनात गोरखा फौज के किसी सैनिक ने गोली चला दी। जनता क्रुद्ध हो उठी। जनता को अपनी जगह खडे रहने का आदेश देकर स्वामीजी जलूस के सामने जा खडे हुए और गम्भीर आवाज मे सैनिक से पूछा – तुमने गोली क्यो चलाई ?

सिपाही ने स्वामीजी की ओर निशना साधते हुए कहा – हट जाओ नही तो हम तुम्हे छेद देगे। स्वामी जी एक कदम आगे बढे। बन्दूक की नली स्वामी जी छाती छू रही थी। निर्भय स्वामीजी गरजते हुए बोले – 'मेरी छाती खुली है हिम्मत है तो गोली चलाओ'। सन्नाटा छा गया। अग्रेज अफसर के आदेश से सैनिको ने अपनी बन्दूके नीची कर ली और विरोध जलूस स्वामी जी के नेतृत्व मे आगे चल पडा।

– नरेन्द्र

वर्चस्वी बनाइए : हमें यशस्वी हो

अग्ने वर्चस्विन कुरु।

अथर्व० ३ २२ ३

अग्ने मुझे तेजस्वी बनाइए।

अभय मित्रदभय मित्रात्।

अथर्व० १३ १५ ६

मित्र से निर्भय हो शत्रुओं से निर्भय हो।

यशस स्याम।

अथर्व० ६ ३१२

हम यशस्वी हों।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

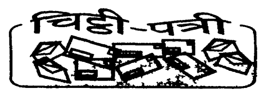
सम्पादकीय अग्रलेख

चुनौतियां अनेक समाधान — एकता, दृढता: कठिन अध्यवसाय से ही

भारतीय गणतन्त्र की प्रतिष्ठा का ५५वा वर्ष चल रहा है। कठिन स्वातन्त्र्य सघर्ष के बाद मिली स्वतन्त्रता को साम्राज्यवादी भारत राष्ट्र के दोनो बाजू काटने मे सफल हो गए थे। चिन्ता की बात है कि राष्ट्र के दोनो बाजू अब भी पृथक है। भारतीय गणतन्त्र ने १६७१ के सग्राम मे निर्णायक विजय पाई थी इसके बावजूद उन पृथक हुए भूभागो से एकता सम्भव न [illegible] उस समय यदि व्यवस्थित प्रयत्न किया जाता तो पूव स पृथक हुए भूभागो से किसी स्थायी मैत्री और एकता की कडी की भूमिका प्रस्तु की जानकारी थी परन्तु इतिहास की बीती घडी तो वापस नहीं हो सकती परन्तु अब समय आ गया है जब भारतीय राष्ट्र के सूत्र सचालक भारतीय राष्ट्र को विश्व का एक अग्रणी प्रगतिशील समुन्नत राष्ट्र बनाने का सुदृढ सकल्प करे। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राष्ट्र को अनेक समस्याओ का समाधान करना होगा अनेक आन्तरिक एव बाह्य चुनौतियो से जूझना होगा। यह लक्ष्य कठिन एव असम्भव प्रतीत हो सकता है परन्तु जिस प्रकार विदेशी शासन से राष्ट्र की स्वाधीनता अनेक वर्षों के कठिन परिश्रम सघर्ष और एकता से सम्भव हो सकी उसी प्रकार राष्ट्र के सम्मुख सभी चुनौतियो समस्याओ कठिनाइयो और विरोधो का समाधान सम्भव है। हा यह लक्ष्य प्राप्त करना सरल नहीं है इस लक्ष्य प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम तो देशवासियो और सूत्रसचालको को मिल बैठकर राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित समस्याओ कठिनाइयों और चुनौतियों का व्यवस्थित मूल्याकन करना होगा। यह प्रारम्भिक कार्य कठिन ही नहीं असम्भव प्रतीत होता है परन्तु भारत राष्ट्र को विदेशी शासन से खत्म करने का अभियान जिस प्रकार व्यवस्थिति सगठित किया गया ठीक उसी प्रकार राष्ट्र के सम्मुख आई समस्याओ कठिनाइयों चुनौतियों का व्यवस्थित में मूल्याकन करने के लिए राष्ट्र के नेताओ और सूत्र-सचालको का कोई व्यवस्थित योजना बनानी चाहिए फिर ऐसी योजना के आधार पर राष्ट्रीय समस्याओ चुनौतियो का व्यवस्थित उतर देना चाहिए। यह कार्य सरल नही है। सबसे पूर्व तो राष्ट्र के विचारको प्रमुख नीति निर्धारिको को जनता के सम्मुख आई समस्याओ चुनौतियो का व्यवस्थित स्वरूप जनता के सम्मुख रखना होगा। स्वाधीनता सग्राम के समय विदेशी शासको से जूझने के लिए जिस तरह एकता दृढता और कठिन अध्यवसाय अपेक्षित था उससे कहीं अधिक कठिन कार्य आज के प्रबुद्ध चिन्तको के सम्मुख है। उल्लेखनीय है उस प्राचीन पराधीनता के युग मे विदेशी शासन सर्वत्र दीखता था परन्तु राष्ट्र की स्वाधीनता के ५५ वे वर्ष मे हम राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित समस्याओ चुनौतियो का मूल्याकन नहीं कर पा रहे है। यही कारण है कि प्रदेशो के चुनाव आते है उनके दौरान सच्चे राष्ट्रसेवको की हत्या कर दी जाती है या प्रमुख दलो और नेताओ मे आपसी विरोध को बढावा दिया जाता है।

हो सकता है कि कुछ प्रत्यक्षदर्शी इन समस्याओ चुनौतियो की गम्भीरता को महत्व न दे परन्तु राष्ट्र की स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे सभी सवेदनशील चिन्तको विचारको और देशवासियो का मिल बैठ कर सोचना समझना होगा कि राष्ट्र के सम्मुख कौन सी समस्याए चुनौतिया और कठिनाइया हैं जिनके रहते राष्ट्र की एकता सगठन को व्यावहारिक मूर्त रूप देने मे बाधा आ रही है। हो सकता है कि कई चिन्तक स्थिति की गम्भीरता अनुभव न करे परन्तु कश्मीर पजाब सरीखे सवेदनशील क्षेत्रो मे चुनाव जैसी शान्त प्रक्रिया को जन हत्याओ बाधाओ द्वारा अव्यवस्थित करने का प्रयत्न किया जाए तो सवेदनशील राष्ट्रजनो को अनुभव करना होगा कि आज प्रमुख देशवासी मिल बैठकर राष्ट के सम्मुख समस्याओ का व्यवस्थित मूल्याकन कर उनका समाधान कर सकते है परन्तु उनकी उपेक्षा करने से स्थिति अधिक गम्भीर हो सकती है। कश्मीर मे सभी प्रकार की सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद आतकवादियो द्वारा मुश्ताक अहमद लोन की हत्या और चुनाव रैली मे भाग लेने वालो की हत्याए स्थिति की गम्भीरता की ओर सचेत कर रही है। ये घटनाए स्थानीय और छोटी हो सकती है परन्तु उनकी उपेक्षा से राष्ट्र मे सवेदनशील सीमा प्रदेशो मे स्थिति अनियन्त्रित हो सकती है। महात्मा गाधी लोकमान्य तिलक तथा दूसरे राष्ट्रीय नेताओ ने विदेशी शासन के समय राष्ट्र को एकता और सार्वजनिक आन्दोलन की महत्ता प्रदर्शित की थी। आज यह सम्भव है कि राष्ट्र के सम्मुख विदेशी शासन सरीखी कठिन चुनौती न हो परन्तु सभी देशवासियो को यह अनुभव करना चाहिए कि स्वाधीन भारत चुनौतियो समस्याओ और कठिनाइयो से मुक्त नहीं हुआ है प्रत्युत उसे प्रतिवर्ष नई उलझनो नई दुर्घटनाओ का सामना करना पडा है। कश्मीर सरीखे सवेदनशील क्षेत्र मे सर्वोच्च सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद जब मुश्ताक अहमद सरीखे उच्च अधिकारी की हत्या कर दी जाए और दूसरे क्षेत्र मे चुनाव रैली मे अनेक व्यक्ति मार दिए जाए तो स्पष्ट है कि स्थिति को शान्त और नियन्त्रित कहना उचित नहीं हैं।

इसी तरह कुपवाडा मे जम्मू–कश्मीर के कानून राज्य मन्त्री नेशनल कान्फ्रेन्स के प्रत्याशी मुश्ताक अहमद की हत्या इस बात का भी प्रमाण है कि पाकिस्तान परस्त आतकवादी कश्मीर की चुनाव–प्रक्रिया को छिन्न भिन्न करने के लिए कटिबद्ध है। यदि पाक परस्त आतकवादी इसी तरह प्रत्याशियो और राजनीतिक कार्यकर्ताओ की हत्याए करते रहे तो यह लगभग सुनिश्चित है कि चुनाव मे मतदान का प्रतिशत गिरेगा। यह भी चिन्ता की बात है कि जम्मू–कश्मीर मे पडोसी पाक के नापाक इरादो से परिचित होते हुए भी ऐसी सुरक्षा–व्यवस्था नही की जा सकी जिससे आतकवादियो के दुस्साहस का नियन्त्रण किया जा सके। यह भी चिन्ता की बात है कि पिछले दस दिनो मे जम्मू कश्मीर मे १०० ऐसे लोगो की हत्याए की गई जो राजनीतिक दलो से जुडे हुए थे अथवा राज्य के चुनाव प्रचार मे जनता को चुनावो के प्रति उत्साहित कर रहे थे। उल्लेखनीय है कि इस बार के चुनाव मे पिछली बार की अपेक्षा बडी सख्या मे निर्दलीय प्रत्याशी खडे हुए थे। आतकवादी दो प्रत्याशियो की हत्या कर चुके है। इस विवरण से स्पष्ट है कि भारत राष्ट्र की स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे जहा अनेक समस्याए चुनौतिया है वहा स्वाधीनता प्राप्ति के समय से चल रही जम्मू कश्मीर राज्य की समस्या आतकवादी अधिक उलझा रहे है। वे केवल वहा कानून–व्यवस्था की स्थिति बिगाडकर अराजक स्थिति पैदा कर रहे है प्रत्युत वे इस सवेदनशील क्षेत्र को आतकवाद के सहार कठिन परीक्षा के सकट मे ले आए है। इस प्रकार स्वाधीनता प्राप्ति के ५५वे वर्ष मे देश के सम्मुख अनेक समस्याए हैं वहा राष्ट्र की पश्चिमोत्तम सीमा के सवेदनशील कश्मीर की स्थिति बिगाडने के लिए आतकवादी तुले दीखते है। ऐसे मे राष्ट्रवासियो को देश के सम्मुख जहा दूसरी अनेक समस्याओ चुनौतियो का समाधान सच्ची एकता दृढता से करना होगा वहा छोटी बडी इन सभी समस्याओ और उत्तरी सीमा के सवेदनशील कश्मीर को अराजकता और आतकवाद से सुरक्षित करना सच्ची एकता और अपने कठिन अध्यवसाय से ही देना होगा।



स्वागत योग्य फैसला

उच्चतम न्यायालय द्वारा माध्यामिक विद्यालयो के राष्ट्रीय पाठयक्रम प्रारूप २००२ को लागू करने तथा इतिहास और हिन्दी सहित सामाजिक विज्ञान की पुस्तके प्रकाशित करने के लिए केन्द्र सरकार को दी गई स्वीकृति सम्बन्धी फैसले का सर्वत्र स्वागत होना चाहिए। शिक्षा क्षेत्र मे राजनीति करना देश के लिए दुर्भाग्यशाली है। धर्मनिरपेक्षता की आड मे कुछ निहित स्वार्थी तत्व देश के बच्चो के भविष्य से भी खिलवाड करने से नहीं चूके। ऐसे लोग एक बार पुन देश को गुलामी की ओर धकेल रहे हैं।

— वीरेन्द्र सिह जरयाल, गाधी नगर, दिल्ली

अथर्ववेद से – हिरण्यादेश सप्तकम्

पत्नी के लिए हितकर व रमणीय उपदेश

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) तुझे भाग्यशाली पति मिले, और तू उसके गृहजनो का मल मोह ले

भगस्त्वे तो नयतु हस्तगृह्याश्विना त्वा प्रवहता रथेन।
गृहानाच्छ गृहपत्नी यथासो वशिनी त्व विदथमावदासि।।

अथर्व० १४–१–२०

सूर्या सावित्री। त्रिष्टुप।

अर्थ – हे पुत्री ! (भग) भाग्यप्रद ६ वस्तुओ (गुणो) से सम्पन्न तेरा पति (हस्तगृह्य नयतु) हाथ का सहारा और पालन पोषण का विश्वास दिलाकर तुझे अपने घर ले जाए (अश्विनौ) वर के माता पिता (त्वा रथेन प्रवहताम) तुझे सुन्दर यान द्वारा अपने घर ले जाए। (गृहान गच्छ यथा गृहपत्नी वशिनी अस) पतिगृह मे पहुचकर वहा के निवासियो के पालन पोषण और मधुर भाषण द्वारा वश मे करने वाली हो। तदनन्तर (त्व विदथ आवदासि) उनमे से प्रत्येक को कर्त्तव्य बोध कराने वाली बन।

निष्कर्ष – (१) पति के घर मे पहुचकर पत्नी को उस घर के सदस्यो की आवश्यकताओ को जानकर पूरा करने और मधुर भाषण द्वारा उनके मन को जीतकर अपने वश मे करना चाहिए। उसके बाद किसी भी प्रकार का विवाद उठने पर प्रत्येक सदस्य का कर्त्तव्य बोध कराकर घर मे सदा शान्ति बनाए रखने का प्रयत्न करना चाहिए।

(२) अथर्व ३–१६–५ मे **भग एव भगवानस्तु देव।** को देखकर स्वार्थी लोगो ने पत्नी को आदेश दिया कि **तू पति को अपना भगवान् समझ।** और इस तरह गृहस्थ की रानी को दासी बना दिया। वेद तो स्पष्ट शब्दो मे पत्नी को पतिघर की साम्राज्ञी बनने का आदेश देता है।

अर्थपोषण – ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशस श्रिय। ज्ञानवैराययोश्चैव षण्णा भगइतूरणा।।

वेद इन छ गुणो के कारण पति को भग कहता है भगवान होने से भग नहीं कहता।

(२) गृहस्थ-धर्म पालन मे जागरूक रह, तेरी सन्तान समृद्ध होगी

इह प्रिय प्रजायै ते समृध्यतामस्मिन्गृहे गार्हपत्याय जागृहि।
एना पत्या तन्व सस्पृशस्वाथ जिर्विर्विदथमावदासि।।

अथर्व १४–१–२१

सूर्या सावित्री । जगती।

अर्थ – (अस्मिन गृहे गार्हपत्याय जागृहि) इस पति गृह मे पति के कार्यों के सम्पादन और कामेषणा के पूरण के लिए सदा जागरूक रह ताकि पति इधर उधर न भटक जाए और स्वय (एना पत्या तन्व सस्पृशस्व) केवल अपने पति के साथ ही शरीर का सस्पर्श करना – पतिव्रता बनना। यदि इन दोनो धर्मों का पालन करेगी तो (इह ते प्रजायै प्रिय समृध्यताम्) इस जीवन मे तेरी सतान के लिए इष्ट सुखो मे वृद्धि और उनकी पूर्ति होगी। (अथ जिर्वि) तदनन्तर अर्थात् ६८ वर्ष या द्वितीय सवन की समाप्ति के बाद (विदथ आवदासि) अपने अनुभूत ज्ञान का प्रवचन किया करना।

निष्कर्ष – स्वय पतिव्रता रहना और पति को पत्नीव्रत बनाए रखना। परिणामत आह्लाद का निर्माण करने वाला चन्द्र सम पुत्र होगा जो तुम दोनो को दीर्घायु बनाएगा – स्योन पत्ये वहतु कृणुष्व चन्द्रमा प्रतिरते दीर्घमायु।

अर्थपोषण – जिर्वि=जिव्रि=जरावस्थागत – जीर्यतीति। उणादि ५–४६

विदथे – वेदने। निरु १–३–७ विदथानि–वेदनानि। निरु ६–२–७

वहतु = विवाह दहेज।

(३) पतिगृह मे सुख की वर्षा करके साम्राज्य स्थापित और साम्राज्ञी कहला (बन)

यथा सिन्धुर्नदीना साम्राज्य सुषुवे वृषा।
एवा त्व सम्राज्येधि पत्युरस्तपरेत्य।।

अथर्व १४ १ ४३

पत्यु रनुव्रता भूत्वा सन ह्यस्वामृताय कम्।

अथर्व १४–१–४२

सूर्या सावित्री। अनुष्टुप्।

अर्थ – (यथा) जैसे (सिन्धु) समुद्र (वृषा) बादल रूप मे वर्षा करके (नदीना साम्राज्य सुषुवे) नदियो का साम्राज्य निर्माण करके उनका स्वामी बन जाता है (एवम) इसी प्रकार (पत्यु अस्त परेत्य) पति के घर मे जाकर (त्वम्) तू वधू रूप मे सुख की वर्षा करके सम्पूर्ण गृहस्थी की सम्राज्ञी – स्वामिनी बन जा। और उसके बाद (पत्यु अनुव्रता भूत्वा) पति के व्रतो और कार्यो का अनुकरण करती हुई (अमृताय क सनह्य स्व) जीवन के सुख को प्राप्त करने के लिए सन्नद्ध होजा।

निष्कर्ष – (१) पति के व्रतो कर्मो को पूर्ण करने मे सहायक बन। फिर जीवन मे सुख प्राप्त करने के लिए निरन्तर सत्कार्यो मे जुटी रह।

(२) जैसे समुद्र अपने जल को बादल बनाकर और जल बरसाकर नदियो का साम्राज्य बनाकर उनका स्वामी कहलाता है। वैसे ही तू भी अपने कृत्यो और गुणो द्वारा अपने गृहस्थ के सदस्यो सेवको हितचिन्तको आश्रितो और पशुओ पर सुख की वर्षा करके उनकी सम्राज्ञी बन जा।

अर्थपोषण – सुषुवे – सु प्रसवैश्वर्ययो साम्राज्य का निर्माण और फिर उसका ईश्वर बनना।

(४) भोजन में उदारमना तथा सन्तानवती होकर पति की बल्लभा (चहेती) बन

प्रतितिष्ठ विराऽसि विष्णुरिवेह सरस्वति।
सिनी वालि प्र जायता भगस्य सुमतौ असत्।।

अथर्व १४–२–१५

सूर्या सावित्री। आत्मदैवत्यम्। भुरिक्

अर्थ – हे (सिनी वालि) अन्न की स्वामिनी बनकर सबकी भोजन व्यवस्था करने वाली (सर स्वति) ज्ञानवती बनकर द्विविद्या मे सबका मार्गदर्शन करने वाली (विष्णु इव इह विराट असि) विष्णु के सदृश सबका भरण पोषण करने वाली पत्नी तू अत्यन्त उदार हृदय है। अब (भगस्य सुमतौ असत्) भगप्रद ऐश्वर्यो से सम्पन्न पति की समुति मे रहने वाली वल्लभा बनकर (प्रज्ञायताम्) सन्तानवती बन जिससे (इह) इस गृहस्थ मे (प्रतितिष्ठ) प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि मे प्रतिष्ठित हो।

निष्कर्ष – पत्नी मे चाहे जितना गुण हो जब तक वह पति वल्लभा और सन्तानवती माता नहीं बन जाती तब तक उसकी पूरी प्रतिष्ठा नही होती। अत पत्नी का कर्त्तव्य है कि वह जगदुपादक विराट रूप धरके सन्तान के रूप मे अवश्य उत्पन्न हो।

अर्थपोषण – सिनी वाली – सिन्न अन्नम।

नि० २–७ तद्वती – भोजन की व्यवस्थापिका

सरस्वती – सर विज्ञान विद्यतेऽस्यासा। उणादि ४–१६० स्वा० दया० द्विविद्या मे मार्गदर्शिका

विराट– ततो विराडजायत विराजोअधिपूरुष। स जातोऽत्यरिंचात पश्चाद

भूमिमथो पुर। यजु ३१–५ विराट प्रकृति और परमपुरुष उसका अधीश्वर है।

(५) प्रजावती, वीरसू और देवृकामा बनने के लिए गार्हपत्य अग्निहोत्र जरूरी है

अदेवृघ्न्यपतिघ्नी है वेधि शिवा पशुभ्य सुयमा सुवर्चा।
प्रजावती वरीसूर्देवृकामा स्योनेममग्नि गार्हपत्य सपर्य।।

अथर्व १४–२–१८

सूर्या सावित्री। आत्मदैवत्यम्। त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे वधु ! (इह) इस पति ग्रह मे तू (सुयमा) यम नियम का पालन करने वाली (सुवर्चा) परिणामत उत्तम कातिमयी तथा (अदेवृघ्नी अपतिघ्नी) देवरो और पति को कष्ट न देने वाली (पशुभ्य स्योना) पशुओ तक को सुविधा दायिनी (देवृकामा) देवर स्थानीय अपने से छोटी आयु वाला की शुभकामना करने वाली अथवा आवश्यकता पडने पर नियोगार्थ देवर की कामना करने वाली (वीरसू प्रजावती) वीर सन्तानो को पैदा करने वाली) बनकर (शिवा एधि) सब का कल्याण चाहने और करने वाली बन। एतदर्थ (इम गार्ह पत्य अग्नि सपर्य) इस घर की रोगो से रक्षक अग्नि=दैनिक यज्ञ की नित्य सेवा करनी चाहिए।

निष्कर्ष – इस मन्त्र मे वधू को सबा का कल्याण करने वाली बनने का सारगर्भित सक्षिप्त उपदेश दिया है – (१) देवरो को और पति को मानसिक तथा शारीरिक कष्ट मत देना (२) पशुओ की सुविधाओ का ध्यान रखना (३) यम नियमो का पालन करते हुए वीर सन्तानो को उत्पन्न करना (४) देवर से उपलक्षित अपने से छोटो के लिए सदा शुभकामना करना (५) आवश्यकता पडने पर नियोग के लिए एक देवर = द्वितीयवर को चुन लेना व्यभिचारिण मत बनना (६) सबके स्वास्थ्य के लिए देवयज्ञ (दैनिक हवन) अवश्य करना।

अर्थपोषण – देवर (१) पति के छोटे भाई दिव क्रीऽायाम जिनकी अभी शिक्षा शुरू नहीं हुई

(२) देवर कस्मात द्वितीयो वर उच्यते निरुक्त ३–१४ विद्यवेव देवरम्। ऋ० १०–४०–२

(६) शतशारद दीर्घायु प्राप्ति के लिए, सविता-काल (ब्रह्म मुहूर्त) मे उठने की आदत डाल

प्रबुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
गृहानाच्छ गृहपत्नी यथासो दीर्घं त आयु सविता कृणोतु।।

अथर्व १४–२–७५

सूर्या सावित्री। आत्म दैवत्यम्। त्रिष्टुप्।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

२ अक्तूबर को आयोजित आर्य कार्यकर्ता कार्यशाला के

प्रमुख विचारणीय विषय

२ अक्तूबर २००२ को आर्यसमाज रमेश नगर मे आयोजित आर्य कार्यकर्ता कार्यशाला मे शामिल होने वाले प्रतिनिधियो से यह अपेक्षित है कि वे निम्न विषयो मे से किसी एक विषय पर सार गर्भित १०० शब्दो का प्रस्ताव तैयार करके अग्रिम रूप से इस कार्यशाला के आयोजको तक पहुचा दे।

१ हमारी आर्यसमाज के तहत विशेष प्रशसनीय धर्मप्रचार गतिविधियो की रूपरेखा और उनका प्रभाव या विशेष परिणाम। बच्चो महिलाओ और गरीब बस्तियो के लिए विशेष कार्यक्रम।

२ आर्यसमाज भवनो का सदुपयोग या दूसरे शब्दो मे दुरुपयोग रोकना।

३ समाचार पत्रो मे प्रकाशित अच्छी सामगी की प्रशसा और बुरी बातों की निन्दा करते हुए समाचार पत्रो को पत्र।

४ आर्यसमाज की साधारण सदस्यता और सभासद की योग्यताओ मे अन्तर।

५ साप्ताहिक सत्सगो की रूपरेखा विभिन्न विषयो पर आधारित प्रवचन।

६ सगठनात्मक सुदृढता (त्रिस्तरीय सगठन के ढाचे को मजबूत बनाना)।

७ आर्यसमाज को राजनीतिक प्रभाव से मुक्त रखना।

८ आर्यसमाज सदस्यता व्यक्ति पर नहीं अपितु परिवार पर केन्द्रित/पूरा आर्य समाज एक बृहद परिवार कैसे बने ?

माननीय प्रतिनिधि गण जिस विषय पर भी अपने विचार तैयार करके उपलब्ध कराएगे उन्हीं को कार्यशाला मे प्रस्तुत करने के लिए आमन्त्रित किया जाएगा।

आर्यसमाज के सगठन मे श्रद्धा प्रेम और अनुशासन की स्थापना के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम सकारात्मक बुद्धि को अपनाए। दूसरे लोग क्या कार्य नही कर रहे इससे अधिक हमे इस बात को प्रस्तुत करना चाहिए कि हम स्वय क्या कर रहे हैं ? हमारे कार्य दूसरो की प्रेरणा बन सके इससे बडा सौभाग्य अन्य कुछ नहीं हो सकता। आप और आपकी आर्यसमाज के सदस्य इस सौभाग्य को प्राप्त करे और २ अक्तूबर को आयोजित इस कार्यशाला मे अपने प्रतिनिधि के माध्यम से इस विशाल सगठन को सुदृढ बनाए रखने मे सहयोग करे।

– नरेन्द्र आर्य सयोजक
दूरभाष ५४५७७५५

नोट –

१ अपनी आर्यसमाज के प्रतिनिधि महानुभाव तथा कार्यशाला मे भाग लेने वाले अन्य सदस्यो के नाम पते और दूरभाष न० तुरन्त सयोजक को लिखवा दे।

२ इस आयोजन मे भाग लेने वाले प्रतिनिधियो को नोट बुक पैन वही पर प्रदान किया जाएगा।

३ कार्यक्रम के उपरान्त समस्त प्रतिनिधियो और उनके साथ आने वाले अन्य महानुभावो का प्रबन्ध स्वागतकर्ता आर्यसमाज रमेश नगर के द्वारा ही किया गया है।

कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व में

मॉरिशस यात्रा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे आर्यजनो का एक समूह मॉरिशस की धर्म प्रचार यात्रा पर रवाना हुआ। उनके साथ सभा के उपप्रधान आचार्य यशपाल जी भी सपत्नीक गए है। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी भी दो दिन बाद मारीशस के लिए रवाना हुए।

मॉरिशस आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे वयावृद्ध आयनेता श्री मोहन लाल मोहित जी का १००वा जन्म दिवस २२ सितम्बर को विशाल स्तर पर मारिशस मे मनाया जाएगा। इसके अतिरिक्त कई अन्य प्रचार कार्यक्रम भी आयोजित किए गए हैं। यह प्रचार यात्रा २५ सितम्बर के बाद आर्यजनो के दिल्ली आने पर समाप्त होगी।

आर्यसमाज निर्माण विहार दिल्ली मे वेद प्रचार समारोह

आर्यसमाज निर्माण विहार विकास मार्ग दिल्ली–९२ के तत्वावधान मे २५ से २८ सितम्बर तक वेद प्रचार समारोह का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर रात्रि ८ बजे से ६.३० तक आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान वैदिक प्रवक्ता श्री प्रणव शास्त्री के प्रवचन तथा सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री श्यामसिह जी राघव के भजनोपदेश होगे। यह कार्यक्रम आर्यसमाज मन्दिर ए ब्लॉक निर्माण विहार दिल्ली–९२ मे सम्पन्न होगा। सभी भाई बहनो से निवेदन है कि अधिक से अधिक सख्या मे परिवार एव मित्रगणो सहित पधारकर धर्म लाभ उठाए।

सर्वांगीण उन्नति के ४ उपाय : महर्षि दयानन्द का आह्वान

१ ओ३म्' यह ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम है क्योंकि उसमें सब गुणों का समावेश है।

२ मैंने परीक्षा करके निश्चय किया है कि जो धर्मयुक्त व्यवहार मे ठीक ठीक बर्तता है उसे सर्वत्र सुख, लाभ और जो विपरीत बर्तता है, वह सदा दुखी होकर अपनी हानि कर देता है।

३ कोई कितना ही, परन्तु स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

४ जो मनुष्य दुष्टाचरण और बुरी सगत छोडकर परमेश्वर और आप्त सत्यवादी विद्वानों की सेवा करते हैं व धन धान्य से युक्त हुए दीर्घ व्यवस्था वाले होते है।

पृष्ठ २ का शेष भाग

अनेकता में एकता हेतु:

यह मन्त्र आदिम सस्कार विधि के गृहाश्रम सस्कार मे केवल प्रार्थनापरक है। आगे वेदोक्त सस्कार प्रकाश मे पृष्ठ ५५–५६ मे महर्षि के बम्बई प्रवास समय लिखी गई। इसके पृष्ठ सख्या १०६ पर वर्णन है – उपलब्ध समिधा काष्ठ (जितने से अग्नि प्रज्वलित हो सके लेकर उस पर घृत सिचन कर उनमे से इस मन्त्र से एक एक समिधा निकाल यज्ञाग्नि कुण्ड मे भलि भाति अग्नि प्रज्वलित होने पर्यन्त डाले ।

आगे महर्षि ने ही सशोधन कर सुगम करते हुए वर्तमान सस्कार विधि मे जो प्रयोग लिखा है उससे घृत से श्रुवा को भरकर पचाहुतियो का वर्णन है। और पच महायज्ञ विधि मे दैनिक यज्ञ हेतु न्यूनतम एक छटाक घृत का विधान किया है। जो देश काल परिस्थितियो अनुसार उचित है। नित्य यज्ञ हेतु सस्कार विधि गृहाश्रम सस्कार मे लेख है कि –

अग्नयाधान समिधाधान और ओमृश्रदितेऽनुमन्य स्व इत्यदि चारो मन्त्रो से चारो तरफ जल प्रोक्षण करके इस पाठ से पचहुतिया नित्य यज्ञ मे मानना सिद्ध नहीं है और न ही इस एक छटाक घृत से पाच आहुतिया निर्देशानुसार सम्भव ही है। अत सुस्पष्ट महर्षिकृत लेख को मानकर इस विवाद को समाप्त करने की कृपा करे।

सप्तम विवादास्पद विषय है **'गृहाश्रम सस्कार विषयक'**।

इस विषय का समाधान यह है कि जब प्रथम सस्करण सस्कार विधि बनी तब १९३२ विक्रम की मे पृष्ठ ११४ पर यह सस्कार अलग लिख उसमे वानप्रस्थ व सन्यास सस्कार को सयुक्त किया है। ऐसा ही वेदोक्त सस्कार प्रकाश मे भी पृष्ठ सख्या १०६ पर १९३८–३९ बम्बई प्रवास समय किया गया।

पुन अपने ही लेखक के अधिकारो से ही इसमे सशोधन कर सवत १९४० विक्रमी मे जोधपुर अवस्थित समय गृहाश्रम व शाला कर्म सस्कार को विवाह सस्कार मे परिशिष्ट यानी उतर भाग मे लिख यहा वानप्रस्थ व सन्यास सस्कार को अलग अलग लिख सोलह सस्कार की गिनती पूरी की गई। अत जो भी शका हो उसे इन पुस्तको मे देख पुनर्विचार कर विवाद को यहीं समाप्त कर व्यर्थ विवाद विद्वजन नहीं बढाए।

– शाहपुरा (भीलवाडा) राजस्थान

।। ओ३म्।।

दूरभाष ६६११२५४
६५२५६६३

निमन्त्रण-पत्र

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय

११६ गौतमनगर, नई दिल्ली-४६

का

७०वां वार्षिक समारोह एवं २३ वां चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

रविवार २६ सितम्बर, २००२ से रविवार २० अक्तूबर २००२ तक
विभिन्न सम्मेलनों के साथ सम्पन्न होने जा रहा है।

ब्रह्मा	आर्यजगत् के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी विद्वान् श्रद्धेय श्री स्वामी दीक्षानन्दजी विद्यामार्त्तण्ड
२६ सितम्बर प्रथम दिवस	अग्न्याधान, पारायण यज्ञ एव उपदेश, प्रात ८ बजे से १० बजे तक
ध्वजारोहण	श्री लाला मोहनलाल जी चोपडा, एवरग्रीन प्रात १० से ११ बजे तक
स्वागताध्यक्ष	श्री विद्यामित्र जी ठकुराल
दैनिक समय	प्रात ७ बजे से १० बजे तक एव साय ३ ३० बजे से ६ ३० बजे तक।

इस अवसर पर विशिष्ट सम्मेलन एवं कार्यक्रम

महिला सम्मेलन	८ अक्तूबर (मगलवार) को प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में २ बजे से ४ ३० बजे तक
आर्य सम्मेलन	१९ अक्तूबर (शनिवार) को दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान में साय ४ ३० बजे से ७ बजे तक

यज्ञपारायण कार्यक्रम

ऋग्वेद	२६ सितम्बर रविवार प्रात से ८ अक्तूबर मगलवार साय तक।
यजुर्वेद	६ अक्तूबर प्रात से १० अक्तूबर साय सवन तक।
सामवेद	११ अक्तूबर प्रात से १२ अक्तूबर प्रात सवन तक।
अथर्ववेद	१३ अक्तूबर साय से १७ अक्तूबर साय सवन तक।

[illegible]ार्थभृत् यज्ञ

१८ अक्तूबर की प्रात से २० अक्तूबर की प्रात तक।

इसी दिन चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति भी होगी। पूर्णाहुति के अवसर पर आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वान्, सन्यासी, वक्ता, नेता और भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

- आवश्यक पालनीय यजमान दम्पती के लिए धोती एव साडी का पहनना आवश्यक होगा।

विशेष

- ऋषिलगर, वेदविद्या एव सस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु दान देकर पुण्य के भागी बनें।
- आप द्वारा प्रदत्त दानराशि आयकर अधिनियम 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।
- इस शुभ अवसर पर गुरुकुल यमुनातट मझावली (फरीदाबाद एव आर्य ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा (देहरादून) के भवन निर्माण हेतु दान देकर कृतार्थ करें।
- कम से कम ११००० रुपये दान देने वाले महानुभावों का नाम शिलापट्ट पर अंकित किया जाएगा।

निवेदक

आचार्य हरिदेव

स्वामी अग्निवेश द्वारा लिखित 'होर्वस्ट आफ हेट'

घृणा और साम्प्रदायिकता का विष फैलाने वाली पुस्तक

स्वामी अग्निवेश तथा वाल्सन थम्पू रूप्प द्वारा लिखी गई १४० पृष्ठ की पुस्तक होर्वस्ट आफ हेट मे स्वामी अग्निवेश मुस्लिम अतियादियो का साथ देते है। इस पुस्तक का मूल्य १५० रुपये है। इण्डिया टुडे २४ ७ २००२ मे फ्रासीसी पत्रकार फ्रान्टवा ग्वातिया की समीक्षा प्रकाशित हुई है। इस समीक्षा का हिन्दी अनुवाद प्रसिद्ध विद्वान डॉ० भवानीलाल भारतीय ने किया जिसे यहा प्रकाशित किया जा रहा है।
सम्पादक

भारत मे स्वामी अग्निवेश एक सम्मानित व्यक्ति माने जाते है। कहा जाता है कि उन्होंने अनगिनत बधुवा मजदूर बच्चो का मुक्त कराया है। एक ईसाई पादरी वाल्सन थिम्पू के सहयोगी बन कर लिखी इस पुस्तक मे गुजरात क दगो के दौरान मुसलमानों पर किए गए हिन्दुओ के अत्याचारो का विस्तार से विवरण दिया गया है। दुर्भाग्य की बात है कि इस पुस्तक के द्वारा दोनो कोमो के बीच घृणा की खाई बढने की ही उम्मीद है जब कि आवश्यकता दोनो सम्प्रदायो मे सौहार्द स्थापित करने की है। इस पुस्तक का तो पहला वाक्य ही आपत्तिजनक है ? हम चाहे महात्मा गाधी के आदर्शो को भूल जाए हमे यह नही भूलना है कि उनका हत्यारा कौन था। स्वामीजी की यह विचित्र सीख है कि हम गाधी जी के प्रेम और सहिष्णुता के आदर्श को चाहे भूल जाए हमे याद रखना चाहिए कि उनकी हत्या करने वाला एक हिन्दू था। स्वामी अग्निवेश का सघ परिवार के प्रति द्वेष यहा स्पष्ट दिखाई देता है। साबरमती एक्सप्रेस के डिब्बे को जलाने का उल्लेख इस पुस्तक के १७वे पृष्ठ पर हुआ हे और यहा भी उन्होने इस दुर्घटना के वे ही कारण बताए है जो मुसलमाना की ओर से दिए गए है। अर्थात कथित कारसेवको ने मुसलमान चाय वालो को चाय देने के पहले जय श्रीराम का घोष करने के लिए मजबूर किया। जिन्होने इन्कार किया उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। ये स्वामीजी इस बात का उल्लेख क्यों नही करते कि १९९१ म गोधरा के एक मदरसे के उन सभी हिन्दू अध्यापको का मुसलमानो ने कत्ल कर दिया था जो वहा पढाते थे। वे यह क्यो नही लिखते कि गोधरा क मुस्लिम बहुल क्षेत्रो मे बिजली की भरपूर चोरी होती है किन्तु बिजली बोर्ड के अधिकारी वहा जाने से भयभीत है। बजरग दल ने चाहे तलवार क जोर से दहशत फलाई हो किन्तु कमल की ताकत से यह पुस्तक नफरत फैलाने मे बाजी ल गइ।

यह तो सत्य है कि इन दगो मे ऐसी खौफनाक घटनाए भी हुई जो दिल दहलाने वाली थी और जिन्हे कभी माफ नही किया जा सकता। किन्तु स्वामी अग्निवेश तथा उनका सह लेखक पादरी थम्पू यह नहीं लिखते कि दगो मे मरने वाले पच्चीस प्रतिशत लोग हिन्दू थे। उन्हे यह भी बताना चाहिए था कि पुलिस के विवरणो से पता चलता है कि गुजरात मे घटित १५७ दगे मुसलमानो द्वारा भडकाए गए थे। उन्हे यह भी बताना चाहिए था कि साबरमती ट्रेन के हादसे के बाद सवा लाख हिन्दू जिनमे से बहुत से दलित और आदिवासी थे क्यो सडको पर उतर आए। उनके आक्रोश का क्या स्वामी ने समझा हे ? इनमे उच्च वर्ग के लोग भी थे। उनके इस भयकर कर्मो की निन्दा करने के साथ लेखको को यह भी जानना चाहिए था कि उनके इन गहराई म पैठे क्रोध का कारण क्या था ? शताब्दियो से हिन्दू यह बताते आए है कि उनमे कितना धैर्य और सहनशीलता है। इस पुस्तक म मुस्लिम माहल्लो मे जाकर सहायता कार्य करने वाले हिन्दुओ की भी कोई चर्चा नही है। अहमदाबाद के एक हिन्दू व्यापारी ने उन मुसलमानो के लिए ६० घरो का निर्माण कराया था जिनक घर जलाए गए थे।

स्वामी अग्निवेश ने दिषाध हाकर मुसलमानो का पक्ष लिया हे। उनके एसे पूर्वाग्रह पूर्ण वाक्यो को देखे

'यह एक अविश्वसनीय सत्य है कि देशवासियो ने मुसलमानो को पूर्णतया भुला दिया। इससे भी भयकर कथन – क्या हम सचमुच गुजरात के मुसलमानो को दोष दे सकते हैं यदि वे नरेन्द्र मोदी की अपेक्षा दाउद इब्राहिम को पसन्द करे।

निष्कषत यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक मुस्लिम उग्रवादियो को ताकत दगी तथा उदार विचार वाले मुसलमानो को जिहादी बनने की प्रेरणा देगी। पुस्तक का हिन्दू द्वेष इतना प्रबल है कि इसे पढकर उदार विचारो वाले हिन्दू भी कटटर पथियो के समर्थक बन जाएगे। निश्चय ही यह पुस्तक विपरीत परिणाम दगी शायद स्वामी अग्निवेश ने भी एसा नहीं सोचा होगा जब उन्होने इसे लिखना आरम्भ किया था।

समीक्षा लेखक फ्रान्टवा ग्वातिया (फ्रासीसी पत्रकार)

इण्डिया टुडे दिनाक २४ ७ २००२

अनुवादक डॉ० भवानीलाल भारतीय

गुरुकुल शिक्षा से ही राष्ट्र निर्माण संभव

महाभारत कालीन प्राचीन तीथ स्थली पुष्पावती नाम से प्रसिद्ध गगा किनारे गढ मुक्तेश्वर के निकट गुरु द्रोणाचार्य की तपस्या स्थली कौरव पाण्डवों की परीक्षा स्थली एकलव्य की साधना स्थली पर सचालित गुरुकुल महाविद्यालय पूठ का स्थापना दिवस एव वेदारम्भ सस्कार महोत्सव विभिन्न कार्यक्रमो तथा सम्मेलनो के बीच सम्पन्न हा गया जिसम ३१ अगस्त से सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसकी पूर्णाहुति ८ सितम्बर को हुई। ७–८ तारीख को विशेष सम्मलनो का आयोजन हुआ इसमे अनको विद्वानो तथा नेताओ ने अपने विचार प्रकट किए। ब्रह्मचारियो का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन हुआ। गुरुकुल के सचालक डा० धर्मपाल आचार्य ने सभी का आभार व्यक्त कर कहा कि गुरुकुल शिक्षा से ही राष्ट्र निर्माण सभव है। हमे परमात्मा का आशीर्वाद पाने का यत्न करना चाहिए।



दक्षिण अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय कुश्तियों की प्रतियोगिता में सफल होकर लौटे विजेता दल का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में स्वागत का एक दृश्य।

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 19 20/09/2002 दिनाक १६ सितम्बर से २२ सितम्बर २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 19 20/09/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

पृष्ठ ४ का शेष भाग

पत्नी के लिए हितकर व रमणीय उपदेश

अर्थ – हे वृध ! (सुबुधा) समझदार होने के कारण (शतशारदाय दीर्घायुत्वाय) सौ वर्ष वाली दीर्घायु प्राप्त करने के लिए (बुध्यमाना) वैद्यो से बोध प्राप्त करने वाली बनकर (प्रबुध्यस्व) दीर्घायु और स्वस्थ रहने के उपायो से प्रबुद्ध हो। (सविता ते आयु दीर्घ कृणोतु) प्रात कालीन सूर्य तेरी आयु को दीर्घ करे। (गृहान गच्छ) पति के रिश्तेदारो और परिचित जनो के घर मे पति के साथ अवश्य जाया कर (यथा) जिससे (गृह पत्नी अस) तुझे गृहपत्नी के रूप मे जान जाए।

निष्कर्ष – शत वर्ष की दीर्घायु प्राप्त करने का सब से सुगम उपाय है कि सविता काल मे अर्थात ब्रह्म मुहूर्त मे उठकर भ्रमण व्यायाम ध्यान इत्यादि नित्यकर्म किए जाए। क्योकि वेद मे सविता का बडा माहात्म्य कहा है –

(१) आ देवो याति सविता परावतोऽप विश्वा दुरिता बाधमान। ऋ० १–३५–३

सविता देव हमारे मानसिक और शारीरिक सब क्लेशो को दूर करने वाला है।

(२) हिरण्याक्ष सविता देव आगाद् दधद्रत्ना दाशुषेवार्याणि। ऋ० १–३५–६

हितकर और रोमाचकारी किरणो वाला सविता अपने सेवन कर्ता को वरणीय रत्न प्रदान करता है।

(३) भगस्य सवितु र्देवस्य सर्वधातम भोजन वृणीमहे। ऋ० ५–८२ १

६ भगो के प्रदाता सविता देव के सब विटामिनो को धारण करने वाला भोजन की हम आकाक्षा करते है।

(४) देवस्य सवितुर्मतिमासव विश्वदैव्यम। धिया भग मनामहे।। यजु० २२–१४

सकल ऐश्वर्यप्रदाता सविता देव से हुआ सब इन्द्रियो के लिए हितकर आसव (वीर्य) क्रियाशक्ति के साथ प्रज्ञा और यश तप वैराग्य आदि की याचना करते है। क्योकि सविता के सम्यक सेवन से ये सब तत्व मिलते है।

(७) मृतपति के शरीर (प्रेत) को छोड, नए जीव मे प्रवेश कर। इस पाणिग्रहण कर्ता की पत्नी बनकर इसकी सन्तान उत्पन्न कर

उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोक गतासुमेतमुपशेष एहि। हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेद पत्युर्जनित्वमनिसबभूथा।।

अथर्व १८–३–२

अथर्वा। नारी यम। निचृत त्रिष्टुप।

अर्थ – हे विधवा नारी ! (गतासु एत उपशेषे) अब मृत पति (प्रेत) के पास तू क्यो पडी हुई है (उदीर्ष्व) उठ इसका मृतक सस्कार कर और (जीवलोक अभि एहि) जीवित मनुष्य समाज मे पुन सम्मिलित हो। और (हस्ताग्राभ्स्य पत्यु) पाणिग्रहण करन वाले पूर्वपति की (इदजनित्वम) इस सन्तान को और (दिधिषा जनित्वम) तेरा धारण पाषण करन के

इच्छुक ... बनने की विधि ... सम्यक रूप से स्वीकार कर और ... इसकी सतान को भी (सबभूथ) उत्पन्न क

अर्थपोषण – सबभूथ – भवतीत्येष सत्ताया प्राप्ति सम्पत्तिजन्मसु। आख्यातचन्द्रिका जनित्वम – जायात्वम=पत्नीत्वम–पत्नी बनना जनित्वम–सन्तान प्रो० शिवनाथ ३–३–१

दिधिषो गर्भस्य निधातु सायण

निष्कर्ष – (१) 'जनित्वमभि सबभूथ – पद स्पष्ट रूप से पति के मरने पर स्त्री को पुनर्विवाह की स्वीकृति देते हैं। किन्तु स्वामी दयानन्द का कथन है कि पुनर्विवाह केवल शूद्रवर्ण मे होता है द्विजवर्णो मे नहीं। द्विजवर्ण वाले – विधवा विधुर के साथ और विधुर विधवा के साथ नियोग करके सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं किन्तु पुनर्विवाह नही कर सकते। **भाष्य भूमिका नियोग प्रकरण**

स्वामी दयानन्द की यह व्यवस्था विचारणीय है। गत एक शती मे आर्यसमाज के विद्वानो अथवा नेताओ ने इस व्यवस्था को अव्यावहारिक मानकर मान्यता प्रदान नहीं की। द्विजवर्णों मे भी पुनर्विवाह खूब प्रचलित है।

– श्याम सुन्दर राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन खारी बावली दिल्ली ६

प्रधान सम्पादक **वेदव्रत शर्मा**, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५, अंक ४०   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३   विक्रमी सम्वत् २०५९   दयानन्दाब्द १७६   सोमवार, २३ सितम्बर से २९ सितम्बर, २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये   वार्षिक ७५ रुपये   आजीवन ५०० रुपये   विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर   टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

वैदिक धर्म प्रचार की आधुनिक युग में नई रूपरेखा कैसी हो ?

कार्यकर्ता कार्यशाला में भाग लेकर अपने सुझाव प्रस्तुत करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एव **२ अक्तूबर, २००२ को आयोजित कार्यकर्त्ता कार्यशाला** के सयोजक श्री नरेन्द्र आर्य ने एक पत्र के माध्यम से दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो को सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा जी के आदेश से अवगत कराते हुए कहा है कि इस कार्यकर्त्ता कार्यशाला मे समस्त आर्यसमाजो को अपने प्रतिनिधि भेजना अनिवार्य है।

इस कार्यशाला में जिन विषयो पर प्रतिनिधियो के सुझाव आमन्त्रित किया गए हैं। उन विषयो को पुन पृष्ठ ७ पर प्रकाशित किया जा रहा है। प्रतिनिधियो से इन विषयो पर सक्षिप्त में लिखित सुझाव मागे गए हैं जिन्हे वे कार्यशाला मे भी प्रस्तुत करेगे।

आर्यसमाज के सगठनात्मक सुदृढता तथा श्रद्धा और अनुशासन की स्थापना की दृष्टि से इस कार्यशाला का विशाल महत्व है। वेद प्रचार एव धर्म प्रचार गतिविधियो मे व्यापकता लाने तथा आधुनिक युग मे कार्यशैली को नया रूप देने के उद्देश्य से इस कार्यकर्त्ता कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इसकी सफलता आर्यजनो के सहयोग पर ही निर्भर करती है। शुद्ध एव निर्मल हृदय से आर्यसमाज की प्रत्येक गतिविधि मे हमे यथायोग्य सहयोग देना चाहिए और सदा सहयोग की मात्रा बढाने पर प्रयासरत रहना चाहिए।

बहुत सी आर्यसमाजो की स्वीकृति हमें प्राप्त हो चुकी है। जिन आर्यसमाजो या अधिकारियो का सम्पर्क श्री नरेन्द्र आर्य जी के द्वारा नहीं हो पाया, उनसे निवेदन है कि वे बिना किसी सकोच के स्वय ही उनके निवास **दूरभाष ५४५७७५५** तथा **मो० ९८१०३७७३४५** पर सम्पर्क करके उन्हे अपने प्रतिनिधियो के नाम अवश्य लिखवा दें।

यह कार्यशाला आर्यसमाज रमेश नगर **दिल्ली में २ अक्तूबर, २००२ बुधवार को प्रात १० से** प्रारम्भ होगी। कार्यशाला के उपरान्त भोजन की व्यवस्था आर्यसमाज मे ही की गई है। प्रतिनिधियो के नाम **१ अक्तूबर, २००२** तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। समयाभाव मे यह सूचना केवल दूरभाष पर ही नोट कराई जा सकती है।

स्व० श्री सूर्यदेव जी की स्मृति में विशेषांक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा जी की अध्यक्षता में आयोजित पदाधिकारियो — अन्तरग सदस्यो की एक विशेष बैठक में स्व० श्रीं सूर्यदेव जी की स्मृति मे आर्य सन्देश का एक विशेष अक प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है।

स्व० श्री सूर्यदेव जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्थापना काल से ही इस सभा के साथ जुडे रहे और उन्होने विभिन्न पदो पर रहकर आर्यसमाज की उल्लेखनीय सेवा की। वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा महामन्त्री भी रहे। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सर्वोच्च पद को सुशोभित करते हुए कई वर्षों तक इस महान् सस्था के कुलाधिपति भी रहे। ७ नवम्बर, १९९८ को वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री बने।

जो महानुभाव श्री सूर्यदेव जी की स्मृति मे विशेष सन्देश भेजना चाहे उनसे निवेदन है कि अपना सन्देश अधिकतम १००-१५० शब्दो मे लिखकर भेजे।

इस विशेषाक के लिए विज्ञापन भी आमन्त्रित किए गए हैं। जिनकी दरे एव आकार इस प्रकार है —

विशेषाक का आकार २०X३०/८
पूरा पृष्ठ (रगीन) ३१००/- रुपये
पूरा पृष्ठ (सामान्य) २१००/- रुपये
आधा पृष्ठ (सामान्य) ११००/- रुपये

श्री सूर्यदेव जी से सम्बन्धित विशेष चित्र यदि किन्हीं महानुभावो के पास उपलब्ध हो तो उन्हे भी सभा कार्यालय मे भिजवाने का कष्ट करें। इस विशेषाक से सम्बन्धित सन्देश लेख तथा विज्ञापन **३० सितम्बर, २००२** तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ मे अवश्य पहुच जाने चाहिए।

— वैद्य इन्द्रदेव, महामन्त्री

आतंकवाद को मिटाना राजनीतिक कार्य नहीं
पुलिस और सेना कर्त्तव्य पालन के लिए स्वतन्त्र

गाधीनगर (गुजरात) मे योगीराज श्रीकृष्ण के भक्तो द्वारा बनाए गए अक्षरधाम मन्दिर पर आतकवादियो का जुनूनी हमला भारतीय समाज मे वर्ग सघर्ष पैदा करने की दृष्टि से ही किया गया एक और प्रयास है। इस हमले और गोधरा मे रेलगाडी के डिब्बे मे यात्रियो को बन्द करके जला देने वाली घटना मे मौलिक समानता है। हमले का षडयन्त्र रचने वाले लोगो का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट हो रहा है कि जिस प्रकार गोधरा काण्ड के बाद प्रतिक्रियात्मक घटनाओ से गुजरात की शान्ति व्यवस्था भग हुई और काफी दिन उथल—पुथल के बाद अब शान्त नजर आने लगी, उसी प्रकार इस मन्दिर हमले से भी यही आशा इन भारत विरोधियो ने बाधी होगी कि वही वर्ग सघर्ष एक बार फिर पैदा हो।

यह भी स्पष्ट है कि इस प्रकार भारत मे अशान्ति फैलाने का उद्देश्य पाकिस्तान प्रायोजित ही हो सकता है — प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष।

अक्षरधाम मन्दिर पर हमले से मुस्लिम समुदाय स्वत ही अपने आपको कटघरे मे खडा पाता है। परन्तु यह बात न्यायोचित मानवीय और राष्ट्रीय हित मे है। हिन्दुओ पर हुए एक तरफा हमले की निन्दा मुस्लिम समुदाय के नेताओ को जोरदार शब्दो मे करनी चाहिए।

सेक्यूलरवादी राजनेता भी ऐसे समय मे चुप्पी साध लेते हैं। मृतक परिजनो दर्द से करहा रहे लोगो का कष्ट बाटने के लिए इन सेक्यूलरवादी नेताओं को आगे आना चाहिए।

प्रतिक्रियात्मक विनाशलीला को रोका जा सकता है, यदि भारत मे रहने वाले समस्त देशवासी न केवल ऐसी घटनाओ की निन्दा करें बल्कि सरकार को देशद्रोही ताकतो का सिर कुचलने के लिए प्रेरित करे, प्रोत्साहित करें व बाध्य करे और हर प्रकार का सहयोग दे।

इन सभी षड्यन्त्रो के पीछे पाकिस्तानी गुप्तचर सस्थाओं के हाथ पूरी तरह से नजर आ सकते हैं। आई० एस० आई० तथा अन्य सस्थाए भारत मे अपने विधिवत् केन्द्र स्थापित कर कार्य कर रही हैं।

शेष पृष्ठ ७ पर

अखिल भारतीय हिन्दी के युगद्रष्टा - महर्षि स्वामी दयानन्द

स्व० प० प्रकाशवीर शास्त्री

आज से सौ वर्ष पूर्व मुम्बई नगर मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। इस बहुमुखी सगठन की नींव रखते समय जहा उनकी दृष्टि सामाजिक कुरीतियो के निवारण और नए राष्ट्रीय जागरण की ओर गई वहा उनकी आखो ने देश की एकता और विकास का सपना भी देखा। अग्रेज दोनो हाथो से देश की सम्पत्ति बटोर रहे थे साथ ही वे धर्म और सस्कृति के क्षेत्र मे दिवालिया बना रहे थे। बडी गिनती मे उसके दलाल देश की भाषा राष्ट्रीयता नेता और सस्कृति पर प्रहार कर रहे थे।

भारत मे अग्रेजी के पावो का फैलाव देखकर लार्ड मैकाले ने अपन एक सम्बन्धी को लिखा था 'यदि ऐसी ही स्थिति रही तो वह दिन दूर नही जब भारतीय रग रूप मे हिन्दुस्तानी होगे परन्तु दिल और दिमाग से अग्रेज हो जाएगे लेकिन उसे क्या पता था कि भारत मे एक सन्यासी ने ऐसी लहर पैदा कर दी है जो उसके सपनो को ही मिटटी मे न मिला रहा थी बल्कि अग्रजी राज की नीव भी हिला देगी।

स्वामी दयानन्द का जन्म सौराष्ट्र के मोरवी राज्य के टकारा ग्राम मे हुआ था। उनकी मातृभाषा गुजराती थी और अध्ययन सस्कृत के माध्यम से हुआ इसलिए गुजराती और सस्कृति पर उनका जितना अधिकार था उतना हिन्दी पर नहीं था अपना लिखा सत्यार्थ प्रकाश का पहला सस्करण उन्हे इसलिए छोडना पडा क्योकि उसमे प्रयुक्त हिन्दी उतनी जोरदार नहीं थी जितनी दूसरे सस्करण मे। स्वामीजी ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका मे उसका उल्लेख किया था। डा० अम्बेडकर ने **थाटस आन पाकिस्तान** मे सत्यार्थ प्रकाश की हिन्दी को आदर्श हिन्दी कहा है। उन्होने लिखा हिन्दी न तो क्लिष्ट हो जिसमे सस्कृत के शब्द भरपूर हो और न ऐसी हिन्दी हो जिसमे अरबी फारसी के शब्द लादे गए हो। सत्यार्थ प्रकाश मे स्वामी दयानन्द ने जो हिन्दी लिखी है वह स्वाभाविक भाषा है। स्वामीजी ने सत्यार्थ प्रकाश के अतिरिक्त छोटे बडे ३७ और ग्रन्थ हिन्दी मे लिखे।

स्वामीजी के सम्पर्क मे जो विदेशी आए उन्हे हिन्दी सीखने की सलाह उन्होने दी। थियोसोफिकल सासायटी की श्रीमती ब्लवस्की को उन्होने लिखा यदि आप आप अपने पत्र का उत्तर चाहे तो उसकी नागरी करवाकर भेजे। कर्नल अलकाट को उन्होने कहा कि मुझे यह सुनकर खुशी हुई कि आपने नागरी पढना शुरू कर दिया है।

राष्ट्रीय एकता के लिए कोई भाषा जो पूरे देश मे बोली समझी जा सके उसे स्वामी दयानन्द बहुत आवश्यक मानते थे। उदयपुर के दीवान मोहनलाल विष्णुलाल पाण्डया को एक प्रश्न के उत्तर मे स्वामीजी ने कहा था **एक भाषा एक भाव और एक धर्म राष्ट्रीय एकता मे आधार है।** स्वामीजी ने स्वय अपने भाषणो और ग्रन्थो का माध्यम भी हिन्दी को ही रखा। जो पुस्तक मे सस्कृति मे लिखी थीं उनका भी हिन्दी अनुवाद कर दिया। आर्यसमाज के राष्ट्रीय और समाज-सुधार के कार्यक्रमो मे उन्होने हिन्दी का माध्यम अपनाया। स्वामीजी ने अपने ग्रन्थो मे हिन्दी के लिए आर्यभाषा शब्द का प्रयोग किया।

एक बार ब्रह्म समाज के नेता केशवचन्द सेन ने स्वामीजी से कहा 'महाराज कही आपने अग्रेजी सीख ली होती तो बहुत बडा काम हो जाता फिर वेदो का ज्ञान विश्व मे फैल जाता जहा अग्रेजी बोली समझी जाती है। स्वामीजी ने उत्तर दिया केशव बाबू, अगर आपने अग्रेजी की जगह सस्कृत पढ ली होती तो उससे भी बडा काम होता एक और एक ग्यारह पहले हम दाना मिलकर अपने दश का सुधार करते और फिर कहीं और चलने की बात सोचते।

उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज के शिक्षणालयो मे चाहे वे गुरुकुल हों अथवा डी०ए०वी० दोनो मे ही शिक्षा का माध्यम प्रारम्भ से हिन्दी रहा। पजाब में आर्यसमाज के प्रचार से पहले उर्दू का बोलबाला था आपसी पत्र व्यवहार स लेकर समाचार पत्र तक मे उर्दू चल रही थी लेकिन पजाव के इन उर्दू पत्रो ने भी हिन्दी के लिए अनुकूल वातावरण बनाया। इन सभी पत्रो ने अपने हिन्दी सस्करण भी निकाल दिए। जिन घरो की पुरानी पीढी उर्दू पत्र पढती थी उन्हीं घरो मे नई पीढी हिन्दी अपना रही है।

डी०ए०वी० कालेज के सस्थापको मे महात्मा हसराज के बाद लाला लाजपत राय का नाम प्रमुख था। उन पर अभियोग था लाला लाजपतराय का नाता उस आर्यसमाज से है जो हिन्दी का प्रचार प्रसार राष्ट्रीय धर्म मानता है। महात्मा मुशीराम ने सन्यास के बाद स्वामी श्रद्धानन्द बनने पर हरिद्वार के पास जिस गुरुकुल कागडी की स्थापना की उसमे विज्ञान दर्शन इतिहास आदि सभी विषय हिन्दी मे पढाए जाते है।

प्रसिद्ध अभिनेता पृथ्वीराज कपूर ने कहा था 'स्वामी दयानन्द जी कृपा से ही मुझे भी हिन्दी सीखनी पडी। विवाह से पहले मेरी पत्नी ने एक पत्र मुझे हिन्दी में लिखा उस समय तक मैं उर्दू या थोडी बहुत अग्रेजी जानता था। पजाब और सीमायुक्त मे आर्यसमाज के प्रभाव के कारण सब हिन्दी सीख रहे थे विशेष रूप से लडकिया हिन्दी ही पढ रही थीं। श्री कपूर ने लिखा अपनी होने वाली पत्नी का पत्र मैं किसी दूसरे से पढाना नहीं चाहता था फलत बाजार से हिन्दी की बारहखडी खरीदकर जमकर हिन्दी सीखी और वह पत्र पढा। मेरे लिए मेरी पत्नी का वह पत्र हिन्दी सिखाने वाले गुरु का कार्य कर गया।

कर्म-फल

देवराज आर्यमित्र

ईश्वर के न्यायालय मे न्याय अनोखा होता है।
कुछ देर अवश्य होती है अन्धेर कभी नहीं होता है।

तुम कर्म करो चाहे जैसे तुम को पूरी आजादी है।
परिणाम भुगतने मे लेकिन उसका ही इशारा होता है।

स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कितने ही चुस्त चालाक बनो।
होता है वही लेकिन स्ब कुछ मजूर उसे जो होता है।।

इस हाथ से लो उस हाथ से दो यह माया आनी जानी है।
कोई धोखा छल और कपट नहीं इन्साफ उजाला देता है।।

वह अटल नियम है ईश्वर का जो बोएगा सो काटेगा।
कर्मों से ही भाग्य बनता है कर्मों से ही दुख पाता है।

वेद की विद्या पढकर सोए हुए कर्मो को तू जगा।
बिना अमल के जीवन में कल्याण कभी नहीं होता है।

आयसमाज कृष्णा नगर दिल्ली ५१

बोध कथा

पाटलिपुत्र का वह उज्ज्वल चित्र

चीनी यात्री फाह्यान ने गुप्त शासन की राजधानी पाटलिपुत्र का बडा उज्ज्वल चित्र खीचा है। फाह्यान का वृत्तान्त पढकर महाकवि कालिदास का एक श्लोक प्रेक्षको को सार्थक हो उठा जिसमे कहा गया था उसके शासन मे वायु की भी यह हिम्मत नही थी कि वह थककर सोई हुई महिलाओ का अशुक भी शरीर से हटाए चोर और डाकुओ की तो हिम्मत ही क्या हो सकती थी। सुरक्षा की ऐसी सुन्दर व्यवस्था राष्ट्र के सुशासन की क्षमता के कारण ही सम्भव हो सकती थी साथ ही यह भी मानना पडेगा कि उस समय नगर जनपदो की स्वाभाविक सच्चरित्रता उसका मूल कारण रही होगी।

कारण चाहे कुछ भी रहा है – चाहे राष्ट्र के सुशासन की क्षमता के कारण हो अथवा तत्कालीन नागरिको की ऊची सच्चरित्रता रही हो विदेशी यात्री भी तत्कालीन भारतीय राष्ट्र की श्रेष्ठ शासन प्रणाली के वैभव जनता के सौम्य स्वभाव और राष्ट्रीय शासन के सौम्य जन कल्याणकारी माधुर्य से प्रभावित हो उठे थे। – नरेन्द्र

हृदय समान हों। मातृभूमि के बलि दें : राष्ट्र को समुन्नत करो

समाना हृदयानि व।

ऋ० १० १५१ ४

तुम्हारे हृदय एक हों।

वय तुभ्य बलिहृता स्याम।

अथर्व० १२ १ ६२

हे मातृभूमि हम तुम्हारे लिए सदा बलि दे।

राष्ट्र रोह द्रविण रोह।

अथर्व० १३ १ ३

राष्ट्र को बढाए धन बढाए।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

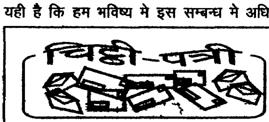
सम्पादकीय अग्रलेख

नई सहस्राब्दी में मातृभूमि की गरिमा के लिए समन्वित योग करें

सारा विश्व नई सहस्राब्दी के दूसरे वर्ष मे प्रवेश कर चुका है स्वाधीन भारत की स्वाधीनता का भी ५५वा वर्ष चल रहा है। भारत राष्ट्र और उसकी जनता के सम्मुख यह आत्मनिरीक्षण की घडी है। राष्ट्र को राजनीतिक स्वाधीनता अवश्य मिली परन्तु उसके दोनो बाजू पृथक कर उसे अपग एव शक्तिहीन कर दिया गया। १६७१ मे हुए सग्राम मे यद्यपि भारत को निर्णायक विजय मिली थी परन्तु वह चाहते हुए भी पृथक हुए भूभागो को जोडने मे सफल नहीं हो सका। उस समय यदि प्रयत्न किया जाता तो नए बगलादेश से स्थायी एकता मैत्री के सम्बन्धो का सूत्रपात हो सकता था। बीते युग की बीती बातो की याद का लाभ यही है कि हम भविष्य मे इस सम्बन्ध मे अधिक सतर्क और प्रयत्नशील हो। वैसे स्वाधीनता प्राप्ति के ५५ वर्ष मे देशवासियो विशेषता उसके नेताओ और चिन्तको को मिल बेठकर पुरानी भूलो स शिक्षा लेकर मातृभूमि की गरिमा और प्रगति के लिए व्यवस्थित योजना और कार्यक्रम का निर्धारण करना चाहिए। अतीत की भूलो या घटनाओ पर पश्चाताप का अब समय नहीं है। अब तो देश मे सभी नेताओ और चिन्तको को मिल बैठकर नइ सहस्राब्दी और सगठन की व्यवस्थित योजना कार्यक्रम का लेखा जोखा कर उसको कार्यान्वित करने के लिए सभी प्रदेशो दलो चिन्तको और देशवासियो को सगठित और व्यवस्थित करना होगा। विदेशी शासन से मुक्ति के लिए देश मे जिस प्रकार समन्वित स्वातन्त्र्य सग्राम चलाया गया था अब देश के सम्मुख पुन ऐसी घडी आ गई है जब विभुक्त एव असगठित राष्ट्र को नई सहस्राब्दी मे मातृभूमि की नई गरिमा और अभ्युदय को प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित प्रयत्न और राष्ट्रीय अभियान से उसे पुन सगठित और व्यवस्थित किया जाए। यह ठीक है कि इस समय भारत राष्ट्र मे एक वैधानिक शासन प्रचलित है परन्तु उसे अधिक शक्ति और सहयोग देने के लिए आज आवश्यकता है कि नई सहस्राब्दी मे विभक्त भारतभूमि को पुन अधिक सगठित व्यवस्थित करने के लिए व्यवस्थित चिन्तन और समन्वित राष्ट्रीय अभियान किया जाए। हो सकता है बहुत से चिन्तक एव राजनीतिक समीक्षक इस प्रकार की योजना एव अभियान को उचित न समझे परन्तु नई सहस्राब्दी मे असगठित एव विभक्त राष्ट्र से नई समस्याओ का समाधान सम्भव न हो सकेगा। इन समस्याओ का व्यवस्थित अध्ययन कर ही विभक्त भारत को नई सहस्राब्दी मे पुन सगठित और व्यवस्थित कर उसे एशिया मे ही नहीं विश्व मे एक अग्रणी यशस्वी राष्ट्र के रूप मे प्रतिष्ठित किया जा सकता है।

विश्व के मानचित्र एव इतिहास मे भारतीय राष्ट्र की सदा महत्ता रही है। यह ठीक है कि विदेशी पराधीनता के युग मे भरत की गरिमा और उसके योगदान को क्षति पहुची है परन्तु इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि वर्तमान खण्डित राष्ट्र की मानवशक्ति चिन्तन ओर श्रेष्ठ जीवनमूल्यो को यदि पुन व्यवस्थित और सगठित किया जाए तो खण्डित राष्ट्र की गरिमा की पुन प्रतिष्ठा सम्भव है। इसमे कोई सन्देह नहीं कि यदि हमारा राष्ट्र अपनी गरिमा की पुन प्रतिष्ठा करते तो आगे पीछ विभक्त राष्ट्र के खण्डित भागो की पुन प्रतिष्ठा और एकता की घडी आ सकती है। इतिहास साक्षी है कि राष्ट्रो की एकता और अभ्युदय किसी की कृपा या सहायता पर अवलम्बित नहीं होता उसे प्राप्त करने के लिए देशवासियो और सभी जन नेताओ को यह समझ लेना होगा कि मातृभूमि भारतभूमि की प्राचीन गरिमा किसी की कृपा से प्राप्त नहीं होगी प्रत्युत उसे प्राप्त कर राष्ट्र को प्रत्येक दृष्टि से यशस्वी महान और अग्रणी बनाने के लिए देशवासियो का पुन उसी प्रकार प्रयत्न करना होगा जिस प्रकार विदेशी शासन से मातृभूमि को स्वतन्त्र करने के लिए वर्षो तक नही प्रत्युत अनेक पीढियो तक व्यवस्थित सघर्ष और अध्यवसाय करना पडा था। हो सकता है कि कई चिन्तक और समझदार सज्जन इस प्रकार के प्रयत्न की महत्ता न समझे परन्तु पिछले दिनो भारत राष्ट्र की सीमाओ पर जैसी घटनाओ घटी उनसे सीख लेकर सभी जागरूक देशवासियो को विभक्त भारत की वर्तमान समस्याओ कठिनाइयो और भावी आशकाओ के बारे मे अधिक सतर्क सगठित और प्रयत्नशील होना पडेगा।

पिछले दिनो बागलादेश मे जैसी समस्याए उभरी वैसे उलझने कभी भी हमारे सीमा प्रदेश मे उभर सकती हैं यदि हमारे प्रमुख राजनीतिज्ञ राष्ट्रनेता चिन्तक और जनता जागरूक रहे तो समस्याओ को समझने और उनके समुचित समाधान के लिए समय पर सगठित प्रयत्न किए जा सकते हैं। हमने जन जन की राष्ट्रीय एकता और अध्यवसाय से विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र से राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त कर ली थी परन्तु हम चाहते हुए भी राष्ट्र की एकता और अखण्डता परिस्थितियो के कारण सुरक्षित नहीं कर सके। नई सहस्राब्दी मे भारत राष्ट्र के सम्मुख अनेक समस्याए और चुनौतिया है उनसे जूझकर भारत एक स्वावलयवी शक्तिशाली और महान राष्ट्र बनाने के लिए सभी प्रबुद्ध देशवासियो को अधिक सतर्क सगठित और प्रयत्नशील होना पडेगा। आने वाली छोटी बडी समस्याओ कठिनाइयो और चुनौतियो से जूझा जा सकेगा। आज जरूरत है कि देश के सभी चिन्तक और कार्यकर्ता अनुभव करे कि विभक्त भारत की वर्तमान अशक्ति एव स्थिति का समाधान केवल आलोचना से सम्भव नहीं है। विदेशी शासन से जूझने के लिए जिस तरह की एकता सगठन एव परिपक्व मार्गदर्शन की अपेक्षा थी आज उसी तरह नई सहस्राब्दी मे भारत राष्ट्र की गरिमा और एकता की प्रतिष्ठा के लिए छोटे बडे सभी को मिल जुलकर सगठित प्रयास जन जन के व्यवस्थित अभ्युदय और सगठित प्रयत्नों का सहारा लेना होगा।



नौकरी भूलें : स्वरोजगारी बनें

वे पुराने दिनो की बाते हो गई जब लोग रेल पुलिस डाक बिजली आदि विभागो मे एक बार लगकर फिर सेवानिवृत ही होते थे। आजकल बात और है सरकारी विभागो की स्थिति दयनीय है नई भर्तियो की बात तो दूर जो कर्मचारी हैं उन्हे ही वेतन के लाले पडे है लोग यह तथ्य जानकर भी नौकरी वाला सब कुछ देखकर भी वे स्थिति की अनदेखी करते हैं। आज का युग स्वय रोजगार निर्माण करने का है। जनता को इस कटु स्थिति से परिचित कराना होगा कि कोई आपको रोजगार देगा नहीं अपना रोजगार स्वय पैदा करना होगा। स्वरोजगार ही बेकारी का समाधान है। दलित-पिछडे वर्ग भी आरक्षण की बैसाखी की प्रतीक्षा करने की जगह कोई अपना उद्यम रोजगार स्वय शुरू करे। वैसे भी कहावत है – नौकरो के नौ काम। नौकरी की जी हजूरी से अच्छा है अपने काम का राजा बन कर रहो। नौकरी मे पदोन्नति की प्रतीक्षा मे जिन्दगी बीत जाती है।

– दिलीप कुमार गुप्त, बरेली उ०प्र०

यात्राओं की भरमार

भारत मे यात्राओ का सिलसिला बहुत पुराना है। इरादे नेक हो तो यात्रा सुखद ही होती है। यात्राओ मे सभी का सहयोग अपेक्षित है। आधुनिक समय मे 'रामरथ यात्रा 'जनादेश रथ यात्रा से कम लोग अपरिचित होगे। आजकल गुजरात में 'गौरव रथ यात्रा के चर्चे हर जुबान पर हैं पर प्रतीक्षा है उस दिन की जब से प्रत्येक देश का नागरिक साम्प्रदायिक सौहार्द' तथा विकास एव समृद्धि यात्रा में सम्मिलित होने के लिए बेचैन होगा। प्रभु से प्रार्थना है कि वह देश के कर्णधारो को ऐसी यात्रा प्रारम्भ करने की सद्बुद्धि देगे।

– [illegible], [illegible], सिवानी, हरियाणा

वैदिक मर्यादाएं

– प० मनोहर विद्यालंकार

मर्यादा शब्द का अर्थ सीमा है। मनुष्यो के लिए निश्चित की हुई सीमा को मर्यादा कहते है 'मर्येभ्य आदत्ता स्वीकृता' इति।

ऋग्वेद के मन्त्र सख्या म० १० सूक्त ५ मन्त्र ६

'सप्त मर्यादा. कवयस्ततक्षु स्तासामेकामिद अभ्यहुरोगात्' द्वारा मनुष्य के लिए सात मर्यादाए निर्धारित करने का वर्णन है। इन सात मर्यादाओं मे से एक का भी उल्लघन करने से अहुर-पापी हो जाता है। पाप–अहम् को अमन्ति (प्रप्नुवन्ति दुख येन तत उणादिकोश की व्युत्पत्ति द्वारा) दु ख का कारण माना गया है लेकिन वे सात मर्यादाए कौन-कौन सी है इस का कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं है। वेद भाष्यकार यास्काचार्य तथा सायणाचार्य ने अपने भाष्य मे **स्तेय तल्पारोहण ब्रह्महत्या सुरापान दुष्कृतकर्मण पुन पुन सेवा पातकेऽनृतोधम् इति'** कहकर चोरी व्यभिचार ब्रह्महत्या भ्रूणहत्या सुरापान निषिद्ध कर्म का बारम्बार सेवन पातक के असत्य आरोप पाप माना है अर्थात् उनमे से किसी एक का भी वरण मनुष्य को दु खी या पापी बनाता है।

लोक मे ये सातो कर्म त्याज्य हैं। उनका आचरण या सेवन दण्डनीय है इसलिए ये दुखदायी तथा पाप है लेकिन अध्यापन से ऐसा प्रतीत होता है कि सायण द्वारा वर्णित ये मर्यादाए वेदो मे उल्लिखित नहीं हैं।

मर्यादा और पाप

हमारे विचार से नित्यकर्म या विधिरूप से निर्दिष्ट कर्त्तव्य मर्यादा हैं। इनका पालन आवश्यक है किन्तु इनका त्याग और उल्लघन दुखदायी है। इसके विपरीत निषिद्ध कर्म वर्जित आचरण पाप हैं। इस दृष्टि से भाष्यकारद्वय द्वारा प्रतिपादित स्तेय आदि मर्यादाए न होकर वर्जित पाप हैं। उनसे बचना अर्थात उनका सेवन न करना लाभप्रद तथा इनका सेवन करना दुखदायी है। मर्यादा का अर्थ है नीति का बन्धन, व्यवस्थित नियम औचित्य विधान।

मर्यादा नकारात्मक न होकर विधिपरक हो, अर्थात् स्पष्ट रूप से ऐसा करो जैसे 'धर्मचर' 'मातृदेवो भव इत्यादि। यदि ऐसा नहीं करोगे तो दु खी होगे अथवा दण्ड मिलेगा।

पाप विधिपरक न होकर निषेधात्मक है। झूठ मत बोलो चोरी न करो – यदि ऐसा करोगे तो दु ख और दण्ड मिलेगा पाप के भागी बनोगे इसलिए उणादि कोशकार ने पाप शब्द का अर्थ किया है 'पान्ति रक्षन्ति आत्मानमस्मात् ३–२३ अर्थात् उनके आचरण से अपनी रक्षा करे। यदि उनका सेवन करोगे दु ख होगा पापी कहलाओगे। पाप अपने कर्ता को खा जाता है। **'पिबति भक्षयति कर्तारम्।'** वेद का अध्ययन करने से वे सात मर्यादाए निम्न प्रतीत होती हैं जिनका पालन अनिवार्य है। यदि उनका पालन नहीं किया जाएगा तो दु ख और दण्ड भोगना होगा।

सात मर्यादाएं

१. त्यागपूर्वक भोग करो – लोभ को त्यागो

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध· कस्य स्विद धनम।

यजु० ४०–१

परमेश्वर ने जो कुछ तुम्हे दिया उसका त्याग भावना से भोग करो अर्थात तुम्हे सुपथ से जब जितना मिलता है उसका निर्लिप्त होकर भोग करो, और यदि सम्भव हो तो दूसरो के लिए अपने सुखोपभोग का त्याग भी करो। दूसरे के वैभव को देखकर ललचाओ मत। धन किसी के पास सदा स्थिर नहीं रहता और यदि जन्म भर रह भी जाए तो मृत्यु के समय कभी कोई अपने साथ नहीं ले जा सकता। यदि दूसरे के वैभव को देखकर ललचाओगे तो कुपथ से भी धन प्राप्त करने का प्रयत्न प्रारम्भ होगा।

धन की प्राप्ति मे सन्तोष करे और भोग मे त्याग भावना (निर्लिप्त) रखे अर्थात् भोगो को भोगो उनका गुलाम नहीं बने। कर्मानुसार जितना भोग मिलता है उसे तो सयम के साथ भोगे। उसे त्यागना या प्राप्त सुविधाओ से लाभ न उठाना समझदारी नहीं। वेद भोग का निषेध न करके उसे नियन्त्रण करता है।

२. कर्म करते हुए ही जीने की इच्छा करो – आलस्य त्यागे,

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा·।

यजु० ४०–२

१०० वर्ष तक जीने की इच्छा करो लेकिन कुछ न कुछ करते हुए। प्रमादी या आलसी न बनो। यदि तुम्हारे पास उपभोग के लिए पर्याप्त है, तो भी उत्पादन करो। जिस स्थिति मे हो, उससे आगे बढो और ऊपर उठो। इस प्रकार प्राप्त हुए अतिरिक्त धन को यज्ञ की भावना से दूसरो के लिए हव्य रूप मे दो, जिससे उन्हे भी सुख मिले। ऐसा करने से धन घटता नहीं, बढता है।

ऋक् १–१२५–२ को देखिए

अह दधामि द्रविण हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते

३. श्रम से कमाओ और उसमें सन्तोष करो – जुआ मत खेलो

अक्षैर्मा दीव्य कृषिमित्कृषस्व।

वित्ते रमस्व बहु मन्यमान·। *ऋक १०–३४–१३*

धन कमाओ, प्रभूत मात्रा मे कमाओ, लेकिन कमाओ कृषि से या कृषि तुल्य परिश्रम वाले व्यवसाय से। जुआ खेलकर या पासे फेककर अर्थात् बिना श्रम के अथवा दूसरो के श्रम से या उनके अधिकार को छीनकर मत कमाओ। सुपथ से जितना मिले उसे अपने परिश्रम का फल समझ कर उतने मे ही सन्तोष करो, उसी को बहुत मानो और मस्त रहो।

दूसरो के वैभव से ईर्ष्या न करो लेकिन प्रमादी भी न बनो। सदा आगे और आगे बढो।

'न मृषा श्रान्त यदवन्ति देवा ' *ऋक १–१७६–३* स्पष्ट रूप से घोषणा करती है कि परिश्रम करके थके हुए की ही देव रक्षा तथा वृद्धि करते हैं। वेद मे सदा सुपथ से श्रेष्ठ धन प्राप्ति की प्रार्थना की गई है। अग्ने नय सुपया राये' ऋक् १–१८९१ 'इन्द्रश्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि। ऋक् २–२१–६

४ त्रिविध प्रगति–शरीर से दृढ, मन से स्थिर, आत्मा से शुचि बनो

स्थिरीभव वींग आशुर्भव वाज्यर्वन्।
पृथुर्भव सुषदस्त्व पुरीषवाहन।।

यजु ११–४४

पालनादि शुभकर्मो के वाहक (पुरीषवाहन) प्रगतिशील (अर्वन्) तथा समृद्धियो वाले मनुष्य (वाजी) तू शरीर से दृढ अगो वाला बनकर शारीरिक रोगो को दूर रख मन से स्थिर होकर मानसिक आधियो का सहार कर और आत्मा से शुचि होकर (आx शु) अपने यशु द्वारा विस्तार को प्राप्त कर।

क सदा आगे बढ। **'प्राचीमारोह गायत्री त्वावतु'**

यजु० १०–१०

ख सदा ऊपर उठ। **'उत्क्राम महते सौभगाय'**

यजु० ११–२१

ग शत्रुओ का विनाश कर। **अर्ध्वो भव·प्रमृणीहि शत्रु न्'**

यजु० १३–१३

घ धन कमा और सन्तान उत्पन्न कर। **रायस्पोषेण ससृज प्रजया च बहु कृधि'** *यजु० १७–५०*

५. मनुष्य बन, पशुवृत्तियों को मसल दे, इतर जनों को दिव्यता प्रदान कर

मनुर्भव जनया दव्य जनम्। *ऋक् १०–३५–६*

माहिर्भूर्मा पृदाकु। *यजु० ६–१२*

उलूकयातु शुशुलूकयातु,
जहि श्वयातुयुत कोकयातुम।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं
दृषदेव प्रमृण रक्ष इन्द्र।।

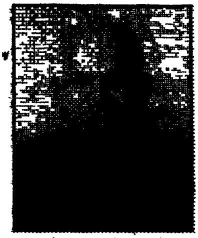
ऋक ७–१०४–२२

मनुष्य जन्म दुर्लभ है इसलिए इस देह मे जन्म लेकर मनुष्य ही बनो। यदि ऊपर उठेगा तो तेरी सन्तान दिव्यता से सम्पन्न होकर दिव्य बनेगी। यदि तू पशुता की ओर पीछे हटा तो तेरी सतति राक्षस बनेगी और फिर कल्याण और भद्र विदा हो जाएगे।

नेह भद्र रक्षस्विने *ऋक० ७–४७–१२*

– क्रमश

श्रद्धेय भाई राममूर्त्ति कैला जी को जैसा मैंने जाना



आज भाई राममूर्ति कैला जी इस लोक से सब सम्बन्ध समाप्त कर परमपिता की गोद मे पहुच गए। इस दु खद समाचार से एक अजीब सा अभाव भर गया। प्रभु की इच्छा ऐसी रही कि उनके अन्तिम दर्शनो से व उनकी अत्येष्टि से भी वचित रह गए हम। उनके विदा होने के एक दिन बाद जब सूचना मिली तो यकायक तीन जगह से पाच मिनट के अन्तराल मे ही फोन आए। जीवन के उस शाश्वत सत्य को तो स्वीकारना ही है। समाचार पाने के बाद स्मृतिपट पर पिछले २७ वर्षों की झलकिया एक के बाद एक उभरने लगी।

गौर वर्णा मध्यम कद चूडीदार पाजामा अचकन उनपर खूब खिलता था। जब भी बात करते आत्मीयता से सराबोर कर देते स्वभाव मे ठहराव उसके साथ मुस्कराता चेहरा। आपका जिस किसी से एक बार साक्षात्कार हुआ उसे आपने जीवनभर याद रखा। उदार हृदय इतने कि मालूम पडे कि वे अमुक समस्या का समाधान करने या करवाने मे सहायक हो सकते है तो वे उस समस्या को सुलझाकर ही दम लेते थे भले ही उन्हे अपने व्यस्त सामाजिक अथवा पारिवारिक कर्त्तव्यो से कैसे भी समय निकालना पडे। मुझे भी व्यक्तिगत रूप मे उन्होने इसी लगन से एक बहुत बडी समस्या से उभारा था मैं जब कभी उनका आभार स्वीकारने के लिए मुह खोलती तो यही कहते भाई तो बहनो को सदा सुख देखना चाहते हैं फिर मैंने तो कोई आप पर अहसान नहीं किया। मेरे पति डॉ० अमर जीवन जी से उनका गहरा सम्बन्ध रहा। दोनो ही सामाजिक सेवा के लिए नई नई योजनाए बना लिया करते थे और दोनो एक दूसरे

– सत्याभामा

के सहयोग से उन्हे लागू भी करते रहते थे।

श्री कैला जी का जीवन समाज के परोपकार हेतु ही हुआ। न जाने कितने सम्पन्न परिवारो के पुत्र व पुत्रियों के विवाहो का सम्बन्ध उनके प्रयत्नो के द्वारा हुआ उनका दायित्व केवल सम्बन्ध बनवाने तक ही सीमित न रहता था वरन दोनों परिवारो के सम्बन्धो में अगर कभी कोई ऊच नीच हो जाती तो उसका निराकरण करना भी वे अपना मुख्य दायित्व समझते थे। इसी प्रकार गुरुकुलों और कन्या विद्यालयो के प्रति भी उनका दृष्टिकोण बडा ही उदार रहता था। जहा कहीं जैसी भी सहायता की आवश्यकता आ पडती सभी सस्थाए उन्हे सदा अपने उद्धारक के रूप मे यादकर लेती थीं। उनके ऐसे उदारीकरण के पीछे जिस देवी का वरद हस्त था उसने उनके जीवन मे पग पग पर उनकी हर इच्छा को पूर्ण करने मे अपना सर्वस्व दे दिया। जब कभी समाज मे कोई उनकी सेवाओ के प्रति कृतज्ञता जताने आता तो हसकर यही कहते मैंने क्या किया प्रभु की इच्छा मे सब हुआ। जब जब किसी समस्या या किसी अन्य द्वन्द्व मे कुछ जटिलता आन पडती तो अकसर यह भजन गुनगुनाते उन्हे मैंने सुना सिर जावे ता जावे मेरा वैदिक धर्म न जावे। कभी कभी उनके पास बैठने का उनके जीवन से कुछ सीखने का अवसर भी मिला उन्होने सदा ही एक ही बात कही कि हर दिशा मे प्रगति होनी चाहिए। कभी समाज के भवन को नया रूप देने की इच्छा कभी भवन मे अधिक सुविधाए जुटाने के लिए व्यग्रता कभी फीजियो थैरेपी सैन्टर खोलने के प्रति उत्कण्ठा इत्यादि जिससे भवन का उपयोग ज्यादा अच्छी तरह होता रहे।

हनुमान रोड समाज की यज्ञ शाला निर्माण के लिए समय उनमे मैंने बडा ही उत्साह देखा। यज्ञ के बाद यज्ञ शेष के साथ दूध पिलाने का एक नया प्रयोग उन्होने शुरू किया। कहा करते थे अच्छे काम के लिए प्रभु स्वय ही कोई न कोई साधन बना देगा। ईश्वर पर अटूट विश्वास था जब कभी सामाजिक कर्त्तव्यों के पालन मे कहीं परस्पर वैमनस्यो को पाटने के लिए आगे आते तो इतना धैर्य रखते थे कि कभी कभी साथ कार्य करने वाले खीझ जाते थे कि आपने अपने अधिकार का प्रयोग करके अपराधी को दण्डित क्यो नहीं किया किसी से कुछ न कहकर मालूम नहीं कैसे दोनो पक्षो के लोगो मे समझौता करवा देते थे। वे सबके लिए पिता समान बने रहे। जीवन भर सबको इक्टठा रखने मे प्रयत्नशील रहे तोडना तो वे जानते ही न थे। जो कोई अपना गुस्सा उन पर उगल दे उससे उन्होने कभी बदले या वैरभाव को नहीं पाला। वास्तव मे उन्होने सेवक के समान मुनियो जैसा हृदय पाया था।

भाई कैलाजी की पारखी दृष्टि समाज के कल्याण मे रत होने वाले व्यक्तित्वो को पहचानने मे कभी भूल नही करती थी। उनके अन्तरग साथियो ने सदा उनका आदर सम्मान किया उनकी एक आवाज पर उनकी आज्ञाओ का पालन किया। स्वास्थ्य निरन्तर गिर रहा था शारीरिक क्षमता से ज्यादा ने अपने आपको सामाजिक कार्यों मे खटाते रहे एक बार समाज मे ही अत्यन्त गम्भीर हृदय आघात हुआ उपचार के बाद फिर उसी प्रकार सेवाकार्य मे जुट गए। इस बार जो उन्होने चारपाई पकडी फिर वे समाज नहीं आ सके। उनके इस समय ससार मे चले जाने पर हमारी व्यक्तिगत और सामाजिक क्षति को भाप पाना कठिन है। बहन कमला का तो दिन भी उनके लिए था और रात भी जिस धैर्य और लगनता से बहन जी ने उन पर अपना सर्वस्व न्योछावर किया यह भी भाई कैला जी के शुभ कर्मों का ही फल था। दिवगत भाई की आत्मा को प्रभु के चरण मे स्थान मिले उनके परिवार के प्रत्येक सदस्य को उनके वियोग को सहने की प्रभु शक्ति दे। हनुमान रोड की आर्यसमाज उस कर्मठ सन्यासी की सेवाओ से आजीवन उऋण नहीं हो सकती।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज बस्ती हरफल सिह दिल्ली के प्रधान श्री मुन्ना लाल शर्मा का देहावसान २० सितम्बर की रात्रि को हृदयगति रुक जाने से हो गया जिनका अन्त्येष्टि सस्कार दिनाक २१–६–२००२ को निगम बोध घाट पर वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। उन्होने आर्यसमाज की जो सेवा की है वह स्वर्णिम अक्षरो मे अकित होगी। उनके निधन से आर्यसमाज को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना निकट भविष्य में सम्भव नहीं है। दिनाक २२–६–२००२ को सत्सग के पश्चात् श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

– तिलक राज आर्य, मन्त्री
आर्यसमाज बस्ती हरफूल सिह, दिल्ली ६

आर्यसमाज किरण गार्डन, नई दिल्ली का
वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज किरण गार्डन नई दिल्ली का वार्षिक उत्सव दिनाक १६ १०-२००२ रविवार को प्रात ८ से १ ३० बजे तक पैराडाइज पब्लिक स्कूल सी० – ४७ किरण गार्डन मे मनाया जाएगा।

– कार्यक्रम :–

यज्ञ	प्रात ८ बजे से ६ बजे तक
भजन	प्रात ६ बजे से १० बजे तक

मानव सुधार सम्मेलन
प्रात. १० से दोपहर १ बजे तक

दिल्ली की आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली

प्रधान	श्री बिशम्बर नाथ अरोडा
व० उपप्रधान	श्री जगदीश्वर नाथ काठपालिया
उपप्रधान	शान्ति नारायण कालडा
	श्री रघुनाथ राय
	श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य
मन्त्री	डॉ० हर भगवान मलिक
उपमन्त्री	श्री हरीश खुराना
	श्री अमीर चन्द माधी
कोषाध्यक्ष	श्री राजकुमार शर्मा
उप कोषाध्यक्ष	श्री प्रभुदयाल गेरा
पुस्तकाध्यक्ष	श्री जगेन्द्र लाल
सहा० पुस्तकाध्यक्ष	श्री ओमप्रकाश कसल
लेखा परीक्षक	श्री सुभाष चोपडा
आर्यवीरदल अधि०	श्री मनीष सहगल

।। ओ३म्।।

दूरभाष : ६६११२५४
: ६५२५६६३

निमन्त्रण-पत्र

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय

११६ गौतमनगर, नई दिल्ली-४६

का

७०वां वार्षिक समारोह एवं २३ वां चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

रविवार २९ सितम्बर, २००२ से रविवार २० अक्तूबर २००२ तक

विभिन्न सम्मेलनो के साथ सम्पन्न होने जा रहा है।

ब्रह्मा	आर्यजगत के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी विद्वान् श्रद्धेय श्री स्वामी दीक्षानन्दजी विद्यामार्त्तण्ड
२९ सितम्बर प्रथम दिवस	अग्न्याधान, पारायण यज्ञ एव उपदेश, प्रात ८ बजे से १० बजे तक
ध्वजारोहण	श्री लाला मोहनलाल जी चोपडा एवरग्रीन प्रात १० से ११ बजे तक
स्वागताध्यक्ष	श्री विद्यामित्र जी ठकुराल
दैनिक समय	प्रात ७ बजे से १० बजे तक एव साय ३ ३० बजे से ६ ३० बजे तक।

इस अवसर पर विशिष्ट सम्मेलन एवं कार्यक्रम

महिला सम्मेलन	८ अक्तूबर (मगलवार) को प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में २ बजे से ४ ३० बजे तक
आर्य सम्मेलन	१६ अक्तूबर (शनिवार) को दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान में साय ४ ३० बजे से ७ बजे तक

यज्ञपारायण कार्यक्रम

ऋग्वेद	२९ सितम्बर रविवार प्रात से ८ अक्तूबर मगलवार साय तक।
यजुर्वेद	६ अक्तूबर प्रात से १० अक्तूबर साय सवन तक।
सामवेद	११ अक्तूबर प्रात से १२ अक्तूबर प्रात सवन तक।
अथर्ववेद	१३ अक्तूबर साय से १७ अक्तूबर साय सवन तक।

सत्यार्थभृत् यज्ञ

१८ अक्तूबर की प्रात से २० अक्तूबर की प्रात तक।

इसी दिन चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति भी होगी। पूर्णाहुति के अवसर पर आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वान्, सन्यासी, वक्ता, नेता और भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

- आवश्यक पालनीय यजमान दम्पती के लिए धोती एव साडी का पहनना आवश्यक होगा।

विशेष

- ऋषिलगर, वेदविद्या एव सस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार हेतु दान देकर पुण्य के भागी बनें।
- आप द्वारा प्रदत्त दानराशि आयकर अधिनियम 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।
- इस शुभ अवसर पर गुरुकुल यमुनातट मझावली (फरीदाबाद एव आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा (देहरादून) के भवन निर्माण हेतु दान देकर कृतार्थ करें।
- कम से कम ११००० रुपये दान देने वाले महानुभावों का नाम शिलापट्ट पर अंकित किया जाएगा।

निवेदक

आचार्य हरिदेव

पृष्ठ १ का शेष भाग

पुलिस और सेना कर्त्तव्य पालन के लिए स्वतन्त्र

सरकार यदि सख्त कानून कभी टाडा और कभी पोटा लागू करने का प्रयास करती है तो ससद मे वही तथाकथित सेक्यूलरवादी नेता ऐसे शोर मचाते हैं जैसे इन कानूनो से भारतवासियों पर अत्याचार प्रारम्भ हो जाएगा।

ऐसे देशद्रोही लोगो के लिए ये कानून ही नहीं बल्कि चौक पर खडा करके सार्वजनिक फासी का प्रावधान भी ऐसे कानूनों में शामिल कर दिया जाए तो भी किसी देशभक्त भारतीय को आपत्ति नहीं होनी चाहिए परन्तु राजनेता और देशभक्ति अब विपरीतार्थक शब्द बन चुके हैं। स्वय पाकिस्तान का फौजी शासक यह स्वीकार कर चुका है कि आतकवादी मदरसो का भरपूर प्रयोग करते हैं। भारत के नेता इस बात को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। आतकवाद के विरुद्ध हर आवाज को वे मुस्लिम विरोधी मानकर मुस्लिम वोटों के लालच मे ऐसे प्रयासों का विरोध करते हैं।

दूसरी तरफ जब प्रतिक्रिया मे कुछ माहौल बिगडने लगता है तो मुस्लिम समुदाय को होने वाला कष्ट एक राजनीतिक चुनावी मुद्दा बनकर चर्चा मे आ जाता है। इस भेदभावपूर्ण व्यवहार को सेक्यूलर नहीं बल्कि देशद्रोही असामाजिक और अमानवीय कार्य कहा जाना चाहिए। वर्तमान राजनेताओ को पूरी तरह से देशद्रोही कहने के हमारे पास एक से अधिक कारण हैं। स्वार्थों मे लिप्त ये राजनेता हर घटना पर इस ताक मे रहते हैं कि चल रही सत्ता को निकम्मा साबित करके अपना दावा कैसे प्रस्तुत किया जाए। भारतीय समाज का माहौल बिगडने की हमेशा प्रतीक्षा मे ससद के वातानुकूलित कमरो मे बैठे ये राजनेता (पक्ष और विपक्ष दोनो) तुरन्त उस समय अपने बिलो से बाहर निकलते हैं जब मार-काट और वर्ग सघर्ष उग्र रूप ले चुका होता है। उस समय सरकारो को बर्खास्त करने की माग राष्ट्रपति शासन की माग कभी चुनाव करवाने और कभी रुकवाने की माग करने वाले ये देशद्रोही (यदि स्वय को देशभक्त समझते हैं तो) तब क्यो चुप रहते हैं जब आतकवादी भारतमाता की छाती पर कूदते हुए दनादन कर रहे होते हैं ? क्या यह देश द्रोह नही है ?

मारीशस से वेद-प्रचार दल स्वदेश लौटा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के नेतृत्व मे धर्म प्रचार यात्रा पर मारीशस गया आर्य नताओ का दल वापस दिल्ली पहुच गया। इस दल मे सभा के उप प्रधान आचार्य यशपाल जी तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री स्वतन्त्र कुमार जी भी थे। वापस पहुचने पर हवाई अड्डे पर सार्वदेशिक सभा के मत्री श्री वेदव्रत शर्मा तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सम्पदाधिकारी श्री करतार सिंह ने समस्त वेद प्रचार यात्रियो का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

सभा प्रधान कै० देवरत्न जी ने बताया कि लगभग एक सप्ताह का यह कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। मारीशस के विभिन्न क्षेत्रो मे एक एक दिन में ८८ कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। आर्य जनता का उत्साह तथा श्रद्धा अनुकरणीय है। मारीशस यात्रा की विस्तृत रिपोर्ट शीघ्र ही प्रकाशित की जाएगी।

मारीशस के वयोवृद्ध आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित जी का ९०वा जन्मदिवस बहुत ही विशाल स्तर पर आयोजित हुआ जिसमे मारीशस के प्रधानमत्री एव अनेक मन्त्री भी पधारे।

भारत की अन्दरुनी अव्यवस्थाओ से अपने राजनीतिक व्यापार का हित चाहने वाले कभी ये माग क्यों नहीं करते कि पाकिस्तान के फौजी शासक को मिट्टी मे मिलाया जाए पूरे पाकिस्तान मे भारत के राष्ट्रपति का शासन हो पाकिस्तान पर पुरजोर हमला करके एक-एक पाकिस्तानी आतकवादी को तडफा तडफाकर मारा जाए। क्या ऐसी मागे न करना देश द्रोह नहीं ?

अमेरिका की मात्र दो बिल्डिगे टूटी तो उस देश के राष्ट्रपति का पहला बयान जिसने भी देखा उसने अनुभव किया होगा कि बुश की आखो मे खून उतरा हुआ था। उपरोक्त सभी मागे जो हमने व्यक्त की है वही बुश दोहरा रहा था अफगानिस्तान के लिए। परन्तु हमारे प्रधानमन्त्री की आखो मे खून उतरना तो दूर मुझे लगता है भाग के नशे से आखे ही नहीं खुलती। आखे बन्द करके सोया हुआ कवि कोई नई कविता जरुर सुना देगा। क्या यही देशभक्ति है ?

ससद पर हमले के बाद भारत की सुरक्षा सस्थाओ-दिल्ली पुलिस तथा गुप्तचर कम्पनीयो की कार्यवाही के बाद आई०एस०आई० के जो केन्द्र पुरानी दिल्ली की तग गलियों मे चलाए जा रहे थे उन्हे स्थानान्तरित कर दिया गया है। ये केन्द्र अब मेवात के क्षेत्रो मे ऐसे चल रहे हैं जैसे कि स्वतन्त्र देश की सत्ता के तहत चल रही सस्थाए। करोडों का लेन-देन विदेशो से बेरोकटोक हो रहा है। एक-एक मस्जिद/मदरसे मे करोडो रुपये का भवन खडा है। अन्तर्राष्ट्रीय टेलीफोन का सबसे अधिक उपयोग इन्हीं क्षेत्रो मे है। धर्मान्तरण के लिए भी अच्छी खासी राशिया पानी की तरह बहाई जा रही हैं। परन्तु सरकारे इन क्षेत्रो पर अपनी नजरे बन्द बन्द करके चल रही हैं। देखकर भी रोक लगाने का कोई प्रयास नहीं। यदि कोई हिम्मत करे तो वोट का लालच बाधा बनता है और विपक्षी दल उसका अधिक फायदा उठाने की ताक मे बैठे नजर आते हैं। इसलिए भारत के समस्त नेताओं की आखें बन्द हैं। हालाकि इस आशय का एक स्पष्ट विवरण भारत के गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी जी के कार्यालय मे इनके निजी सचिव श्री दीपक चोपडा जी को हमने स्वय दिया था।

जनता झुलसती रहेगी प्रतिक्रिया मे सारा समाज कष्ट भोगता रहेगा। भारत मे आतकवाद किसी दिन सचमुच ससद को मिट्टी में मिला देगा तो प्रधानमन्त्री एक बार फिर कह उठेंगे- "अब हमारे सब्र का बाध और अधिक प्रतीक्षा नहीं करेगा।" सत्ता का मोह लोभ और भोग छूटेगा नहीं। परन्तु कब तक ? आतकवाद कोई राजनीतिक समस्या नहीं है यह तो केवल क्षात्र धर्म की परीक्षा है।

दर्जनो सैकडो राजनेता जब सामूहिक रूप से आतकवाद का शिकार होगे तो एक ऐसा समय आएगा जब पुलिस और सेना के हाथ मे पूरा नियन्त्रण होगा तब शायद बिना भेदभाव के आतकवाद को आतकवाद समझकर निपटा जाएगा। ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है।

वास्तव में यह प्रार्थना परमात्मा के नाम पर परमात्मा के उन क्षत्रिय पुत्रो को करना चाहता हू जिन्होने पुलिस या फौज में भर्ती होते समय सम्भवत मन मे यह सकल्प अवश्य लिया होगा कि भारतमाता की अन्दर-बाहर से हर प्रकार रक्षा करने का प्रयास करेगे।

क्या पुलिस और फौजियो के वह सकल्प भी केवल मात्र अपने बच्चे और परिवार पालने के लक्ष्य की पूर्ति का कवर मात्र थे। इन्हें याद रखना चाहिए कि शहीद पुलिस अफसर या फौजी अफसर के बच्चो को तो भारतीय समाज सिर पर बैठाकर रखता है। इतनी इज्जत एक सेवानिवृत्त अफसर तथा उसके परिवार को नहीं मिलती जितनी शहीद होने वालों के परिवारों को मिलती है।

क्या इन अफसरो का खून भी चाय और शराब के नशे मे मिलावटी हो चुका है। क्या उस खून मे से भारत माता के प्रति समर्पण की गन्ध भी समाप्त हो चुकी है।

क्या इन पुलिस या फौजी अफसरो को यह बात समझ नहीं आ रही कि आतकवाद को जडमूल से मिटाना उनका दायित्व है ?

यदि वे इस बात को स्वीकार करते हैं तो उनके मार्ग मे बाधा क्या है ? राजनीतिक बन्दर यदि बाधा उत्पन्न कर रहे हैं तो उनका इलाज भी मुश्किल नहीं। राजनीति के खिलाडी चाहे कितने ही धुरन्धर क्यों न हों रहते तो पुलिस और फौज के सरक्षण मे ही हैं। जिस दिन पुलिस और फौज ने ये ठान लिया कि आतकवाद को मिटाना है उसी दिन इस मार्ग मे आने वाली ये बाधाए मिटाना बडी बात नही होगी। अब एक-एक करके कोई कार्य सफल नहीं होगा। अब आतकवाद से सम्बन्धित कानून बनाने की ताकत या सीमाओ पर रक्षा के निर्देश जारी करने का अधिकार इन राजनेताओ से छीनना होगा। अब तो उस घडी की प्रतीक्षा है जब ससद मे सभी राजनेता मिलकर उछलकूद मचा रहे हो और फौज की एक टुकडी देश पर नियन्त्रण के लिए अग्रेजो की बनाई इस ससद और इसके कानूनो के स्थान पर प्रजा पालन का एक नया मन्दिर और एक नया विधान बनाकर लागू कर दिखाए

भारत मे एक साधारण व्यक्ति से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक इस मूल सिद्धान्त को स्वीकार करे कि आतकवाद मिटाना राजनीतिक समस्या नहीं है इसके लिए क्षात्रधर्म (पुलिस और फौज) को कर्त्तव्य पालन के लिए स्वतन्त्र करना चाहिए।

– विमल वधावन
वरिष्ठ उप प्रधान सार्वदेशिक सभा

कार्यकर्त्ता कार्यशाला में प्रमुख विचारणीय विषय

१ हमारी आर्यसमाज के तहत विशेष प्रशसनीय धर्मप्रचार गतिविधियों की रूपरेखा और उनका प्रभाव या विशेष परिणाम। बच्चो महिलाओ और गरीब बस्तियो के लिए विशेष कार्यक्रम।
२ आर्यसमाज भवनो का सदुपयोग या दूसरे शब्दो मे दुरुपयोग रोकना।
३ समाचार पत्रों में प्रकाशित अच्छी सामग्री की प्रशसा और बुरी बातों की निन्दा करते हुए समाचार पत्रों को पत्र।
४ आर्यसमाज की साधारण सदस्यता और सभासद की योग्यताओ मे अन्तर।
५ साप्ताहिक सत्सगो की रूपरेखा विभिन्न विषयों पर आधारित प्रवचन।
६ सगठनात्मक सुदृढता (त्रिस्तरीय सगठन के ढाचे को मजबूत बनाना)।
७ आर्यसमाज को राजनीतिक प्रभाव से मुक्त रखना।
८ आर्यसमाज सदस्यता व्यक्ति पर नहीं अपितु परिवार पर केन्द्रित/पूरा आर्य समाज एक बृहद परिवार कैसे बने ?

R N No 32387/77 Posted at N D.P.S O on 26 27/09/2002 दिनांक २३ सितम्बर से २९ सितम्बर २००२ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2002

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० एल– 11024/2002 26-27/09/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू० (सी०) १३९/२००२

११६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार (उ० प्र०)

राष्ट्र सैनिक सम्मान एवम् श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई द्वारा रविवार दिनाक २५ अगस्त से रविवार दिनाक १ सितम्बर २००२ तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। इस उपलक्ष्य मे रविवार दिनाक १ सितम्बर २००२ को आर्यसमाज सान्ताक्रुज के विशाल सभागृह मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह के अन्तर्गत राष्ट्रहित मे शहीद सैनिकों के बच्चो के शिक्षण व सपोषण हेतु एकत्र सहायता धनराशि १ लाख २१ हजार रुपये सेना के अधिकारियो के एक प्रतिनिधि मण्डल मे कर्नल नीरज मेहरा कमाण्डर अवतार कृष्ण बब्बर व मेजर पाटील को सादर समर्पित किए गए। आर्यसमाज द्वारा उनका स्वागत किया गया। शहीदो को श्रद्धाजलि अर्पण करते हुए श्रीमती अविकि सेठ ने देशभक्ति पर गीत गाकर सबके मन को छू लिया।

इसी सन्दर्भ मे दिनाक २६ अगस्त से ३१ अगस्त २००२ तक रात्रि कालीन सत्र मे प० आशाराम आर्य (भजनोपदेशक गाजियाबाद) के सुमधुर भजनोपदेश तथा बालक योगेश आर्य के भजन हुए। आचार्य श्री चन्द्रदेव जी के अध्यात्म से सम्बन्धित वेद मन्त्रों के आधार पर अमृतमय सारगर्भित प्रवचन हुए। आरा (बिहार) से पधारे हुए प० सियाराम जी निर्भय ने समसामयिक परिस्थिति का वर्णन करते हुए अपने काव्य गान से दर्शको का मन मोह लिया।

रविवार दिनाक १ सितम्बर २००२ को अष्ट दिवसीय यजुर्वेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति प्रात ६ ३० बजे हुई। प्रात राश के पश्चात १० ०० बजे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह स्वामी मेधानन्द जी की अध्यक्षता मे ईश वन्दना के साथ आरम्भ हुआ।

इस अवसर पर आचार्य चन्द्रदेव जी ने अपने वक्तव्य मे कहा कि 'जो अपने लिए नहीं केवल परिवार समाज के लिए नहीं अपितु पूरी मानवता के लिए जीते हैं वास्तव में वही महापुरुष होते हैं। योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज ने धर्म की स्थापना के लिए राष्ट्र यज्ञ मे अपने को समर्पित किया।

डा० सोमदेव शास्त्री (प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई) ने अपने वक्तव्य में कहा कि योगेश्वर श्रीकृष्ण का चरित्र आप्त पुरुषों जैसा था। उन्होने प्रभावी शब्दो मे अनेक ग्रन्थो के प्रमाण प्रस्तुत करते हुए भगवान श्रीकृष्ण को आदर्श महापुरुष बतलाया। डा० सत्यपाल जी सिह (आई०जी० मुम्बई) ने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि लोगो का भय दूर करके अभय बनाए तथा अन्याय से जूझने का सामर्थ्य प्रदान करे। श्रीकृष्ण को आदर्श पुरुष मानते हुए अपने घरो मे श्रीकृष्ण के आदर्श को स्थापित करे।

समारोह अध्यक्ष स्वामी मेधानन्द जी (सस्थापक आर्यसमाज अन्धेरी) ने कहा कि हमें आज के दिन भगवान श्रीकृष्ण के किसी एक आदर्श को जीवन मे उतारने का सकल्प करना चाहिए।

अन्त मे आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई के प्रधान डा० सोमदेव शास्त्री ने सबका धन्यवाद ज्ञापन किया। आर्यसमाज सान्ताक्रुज के उप प्रधान श्री विश्वभूषण जी आर्य ने शान्ति गीत गाया। शान्तिपाठ एव जयघोष हुआ। प्रीतिभोज के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

आर्य वीर प्रतिभा शिविर का आयोजन

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे १ अक्तूबर साय ५ बजे से २ अक्तूबर साय ५ बजे तक एक विशेष आर्यवीर प्रतिभा शिविर का आयोजन आर्य समाज मिण्टो रोड पर किया गया है। आर्य वीरो मे वैदिक धर्म प्रचार से सम्बन्धित प्रतिभाए विकसित करने की दृष्टि से इस शिविर का विशेष महत्व होगा।

आर्यवीर दल के सचालक श्री विनय आर्य के अनुसार इस शिविर मे सारी दिल्ली के प्रमुख आर्य वीरो को एकत्रित करके विशेष योजनाओ पर विचार होगा।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५, अक ४१   सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३   विक्रमी सम्वत् २०५९   दयानन्दाब्द १७६   सोमवार, ३० सितम्बर से ६ अक्तूबर, २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये   वार्षिक ७५ रुपये   आजीवन ५०० रुपये   विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर   टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

६ अक्तूबर २००२ (बुधवार) को आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड का शिलान्यास

आर्यसमाज मन्दिर मूल स्थल पर ही बनेगा

ऐतिहासिक संगठनात्मक एकजुटता का परिचय दें

१७ अप्रैल २००१ को आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड को गलत तरीके से ध्वस्त किए जाने का विरुद्ध २१ अप्रैल २००१ को आर्यजनता के प्रचण्ड प्रदर्शन के परिणाम स्वरूप प्रधानमन्त्री सहित सरकार के सभी उच्च पदस्थ अधिकारियो ने पूर्व स्थिति बहाल करने का आश्वासन दिया। इस आश्वासन के उपरान्त २२ अप्रैल को मन्दिर का शिलान्यास तो सम्पन्न करवा दिया गया परन्तु विधिवत् भूमि आवटन को नियमित और वैध रूप देने मे सरकार ढील वरतती रही।

कुछ शरारती तत्वो ने एक षड्यन्त्र करके सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध दिल्ली उच्च न्यायालय मे एक मुकदमा प्रस्तुत करते हुए यह दावा किया कि आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड के वे प्रधान तथा अन्य पदाधिकारी हैं और यह भूमि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को न दी जाए क्योंकि यह भूमि प्राप्त करना उनका अधिकार है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस पर एक स्थगन आदेश जारी करते हुए कहा कि सरकार यह भूमि अभी सार्वदेशिक सभा को न दे।

उस समय के शहरी विकास मन्त्री श्री जगमोहन ने इस आदेश की आड लेकर भूमि को सार्वदेशिक सभा के नाम पर नियमित करने का कार्य ठडे बस्ते मे डाल दिया। दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष चल रहे मुकदमे को तन्मयता के साथ श्री विमल वधावन एडवोकेट ने वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल जी की सहायता से निपटा और अन्तत यह मुकदमा ११ जनवरी २००२ को रद्द घेषित हो गया।

मुकदमें में विजय मिलने के बाद पुन सभा के अधिकारी सर्वश्री वेदव्रत शर्मा विमल वधावन जगदीश आर्य तथा वैद्य इन्द्रदेव आदि सरकार को यह बाध्य करने में जुट गए कि अब इस भूमि को विधिवत सार्वदेशिक सभा के नाम नियमित कर दिया जाए। दिल्ली के दो पूर्व मुख्यमन्त्रियों सर्वश्री मदनलाल खुराना एव डॉ० साहिब सिह वर्मा का इसमें उल्लेखनीय योगदान रहा। श्री खुराना तो सभा अधिकारियो के साथ कई बार शहरी विकास मन्त्री श्री अनन्त कुमार के साथ इस सम्बन्ध मे बैठके आयोजित करते रहे।

एक बैठक मे तो सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन को यहा तक कहना पडा कि मन्दिर का निर्माण तो उसी स्थल पर होगा जहा विगत ५० वर्षों से यह भवन खडा था। इसके दो ही मार्ग हो सकते हैं प्रथम कि आर्यसमाज भवन निर्माण को लेकर पुन आन्दोलन की मुद्रा में आ जाए। बेशक इस कार्य में आर्यसमाज की वह बहुमूल्य ताकत खर्च होगी जो अन्यथा राष्ट्र निर्माण के कार्य मे लगी हुई है। राष्ट्र निर्माण के महान कार्य को क्षति पहुचाने का महापाप सरकार को ही लगेगा क्योकि सरकार को ही इसका लोकतान्त्रिक फल भुगतना पडेगा। दूसरा मार्ग है कि सरकार हमे विधिवत उस भूमि को नियमित घोषित करते हुए एक पत्र जारी कर दे जिससे हम शान्तिपूर्वक उस भवन का निर्माण कर सके।

इन बैठको के दौर के चलते विगत १७ सितम्बर को श्री अनन्त कुमार श्री मदनलाल खुरना तथा श्री साहिब सिह वर्मा ने स्वय आर्यसमाज मिण्टो रोड का दौरा किया और सभा अधिकारियो से बातचीत की। इस अवसर पर अन्य अधिकारियो के साथ सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य भी उपस्थित थे। इसी बैठक मे श्री अनन्त कुमार ने कहा कि शीघ्र ही एक समारोह का आयोजन किया जाए जिसमे यह भूमि सार्वदेशिक सभा को सौंप दी जाएगी।

६ अक्तूबर २००२ बुधवार को शहरी विकास मन्त्री श्री अनन्त कुमार स्वय इसकी आधार शिला रखेगे। सभामन्त्री को लिखे एक पत्र मे शहरी विकास मन्त्रालय ने विधिवत् यह स्वीकारोक्ति प्रदान कर दी है कि आर्यसमाज मिण्टो रोड के लिए उसी भूमि को आवटित किया जा रहा है। मन्त्रालय द्वारा भेजे गए नक्शे मे भी आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड का स्थान उसी मूल भूमि को इगित किया गया है।

६ अक्तूबर २००२ बुधवार को एक भव्य समारोह आयोजित किया जाएगा। प्रात ६ बजे से प्रारम्भ होने वाले शिलान्यास यज्ञ के ब्रह्मा पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी होगे जो पहले दिन से ही आन्दोलन के साथ भी जुडे रहे हैं।

यह कार्यक्रम १ बजे तक चैलेगा। कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लगर वितरित होगा। दिल्ली के दोनो पूर्व मन्त्रियो श्री मदनलाल खुराना तथा साहिब सिह वर्मा का भी इस अवसर पर अभिनन्दन किया जाएगा। इस शिलान्यास समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल जी करेगे।

समस्त आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि आर्यसमाज मिण्टो रोड के शिलान्यास समारोह को विजय समारोह के रूप मे मनाने के लिए अधिक से अधिक सख्या में प्रात ६ बजे आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड अवश्य पहुचे।

।। ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान में

आर्यसमाज मन्दिर, मिण्टो रोड, नई दिल्ली के मूल स्थल पर पुनर्निर्माण हेतु

यज्ञ एवं शिलान्यास समारोह

दिनाक	आश्विन शुक्ल चतुर्थी २०५६ तदनुसार ६ अक्तूबर २००२ बुधवार
समारोह स्थल	आर्यसमाज मन्दिर मिण्टो रोड नई दिल्ली
समय	यज्ञ – प्रात ६ बजे समारोह प्रात ११ बजे
यज्ञ के ब्रह्मा	**पूज्य स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती**
समारोह की अध्यक्षता	**कैप्टन देवरत्न आर्य** प्रधान सार्वदेशिक सभा
मुख्य अतिथि	**श्री अनन्त कुमार** केन्द्रीय शहरी विकास मन्त्री
विशिष्ट अतिथि	**श्री रामफल बसल** अध्यक्ष सार्वदेशिक न्याय सभा **श्री मदन लाल खुराना,** सासद **डॉ० साहिब सिह वर्मा,** केन्द्रीय श्रम मन्त्री **श्री विजय कुमार मल्होत्रा** सासद

आपकी उपस्थिति इष्ट मित्रो सहित अधिकाधिक सख्या मे प्रार्थनीय है।

निवेदक

विमल वधावन	**जगदीश आर्य**	**वेदव्रत शर्मा**	**वैद्य इन्द्रदेव**
वरिष्ठ उपप्रधान	कोषाध्यक्ष	सभा प्रधान	सभा महामन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा   **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

नोट शिलान्यास समारोह के उपरान्त ऋषि लगर अवश्य ग्रहण कीजिए।

हम श्रेष्ठ बनें :
राक्षसो का सहांर करें।

श्रेष्ठा भूयास्थ । अथर्व० १८/४/८७

हम श्रेष्ठ बनें।

न रिष्येम कदाचन। अथर्व० २०/१२७/१४

हम कभी किसी से हिसित न हो।

प्रतिदह यातुधानान् । अथर्व० १/२८/२

राक्षसो का सहार कर दो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

बर्बर आक्रमण के विरुद्ध जन-अभिव्यक्ति हो, परन्तु संयम से

अच्छा हुआ कि गुजरात के अक्षरधारम मन्दिर पर आतकवादियो के बर्बर आक्रमण के विरुद्ध आयोजित देशव्यापी बन्द के दौरान कोई बडी घटना नहीं हुई और सारा बन्द शान्ति से बीत गया। स्वभावत जिज्ञासा होती है कि इस बन्द से क्या उपलब्धि हुई ? इसमे सदेह नहीं कि इस देशव्यापी बन्द से आतकवाद के विरुद्ध वातावरण बनाने मे उल्लेखनीय सफलता हुई। स्वभावत जिज्ञासा होती है कि क्या उससे आतकवादियो की दृष्टि मे कोई परिवर्तन हुआ ? यह तथ्य है कि इस बन्द के दौरान देश के अधिकतर राज्यो मे बाजार शिक्षा सस्थान और व्यापारिक प्रतिष्ठान बन्द रहे। अनेक राज्यो मे जन जीवन ठप्प हो गया जनता आशिक कामकाज ही कर सकी हिसा की छिटपुट घटनाए भी घटीं। तथ्य यह है कि सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद ये घटनाए घटी। स्वभावत जिज्ञासा होती है कि आतकवादियो के दुष्कृत्य पर क्षोभ आक्रोश व्यक्त करने वाला सामान्य जन जीवन ठप्प कर देने के आयोजन का औचित्य कैसे ठहराया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि इस देशव्यापी आयोजन से देश को अच्छी खासी क्षति ही उठानी पडी। जानबूझकर जन जन को क्षति पहुचाने वाले कार्यक्रम बुद्धिमत्ता के प्रतीक नही है और न वे शोक और आक्रोश के। इसमे सन्देह नहीं कि अहमदाबाद मे अक्षरधाम मन्दिर पर आतकवादियो के हमले की घटना सारे देशवासियो को उद्वेलित और आक्रोशित करने वाली थी इसलिए सिद्धान्तत ऐसी जन अभिव्यक्ति मे कुछ भी अनुचित नहीं हा हमे भूलना न होगा कि अक्षरधाम की घटना पर बन्द का आयोजन सामान्य जनता के लिए परेशानी का कारण बना। यह ठीक है कि ऐसे बन्द और जन आयोजन पहले भी हुए हैं पर अधिक अच्छा हो कि हमारा प्रयत्न हो कि देश मे शान्ति कैसे रहे आपसी सद्भाव मे कमी न आए और भारत मे शान्ति–सद्भाव का वातावरण बढाने मे सफलता मिले। ऐसे समय मे जनाक्रोश की व्यापक अभिव्यक्ति मे असहयोग और सविनय अवज्ञा भग आन्दोलन के सूत्रधार महात्मा गाधी का जीवन दर्शन हमे नई प्रेरणा और पथ पदर्शन कर सकता है।

महात्मा गाधी जी दो दशको मे असहयोग और सविनय अवज्ञा भग आन्दोलन का आह्वन किया था। यह ऐतिहासिक सच्चाई है कि इन देशव्यापी असहयोग और सविनय अवज्ञा भग के आन्दोलनो के बावजूद सारे राष्ट्र मे हिसा की घटनाए नहीं घटीं। दोनो जन आन्दोलनो का लक्ष्य देश को विदेशी शासन से मुक्त कराना था इसके बावजूद सम्पूर्ण जनता शान्त और नियन्त्रित रही। शासको ने भी किसी भी प्रकार की हिसा अथवा तीखी प्रतिक्रिया की शिकायत नहीं की। सम्भवत इन दोनो देशव्यापी जन आन्दोलनो मे कोटि कोटि भारतीय जनता की सयुक्त सगठित शक्ति सगठन का ही परिणाम हुआ कि अन्ततोगत्वा १५ अगस्त १९४७ को ब्रिटिश साम्राज्यवादी भारत छोडने के लिए विवश हुए। भारत को राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हुए ५५ वर्ष हो गए है नई सहस्त्राब्दी मे अक्षरधाम सरीखी आतकवाद की घटनाए घट सकती हैं परन्तु अधिक अच्छा होगा ऐसे उत्तेजना के अवसरो पर देश की जनता शान्त और नियन्त्रित रहे वह आतकवाद के विरुद्ध आवाज उठाए सगठित नारे लगाए ठीक वैसे ही जैसे असहयोग और सविनय अवज्ञा भग आन्दोलनो के दौरान विदेशी शासन के विरुद्ध लगाए जाते थे। यह ऐतिहासिक सच्चाई कि इन दोनो ही ऐतिहासिक आन्दोलनो के दौरान विदेशी शासन के विरुद्ध जलूस निकाले गए व्यापक प्रदर्शन किए गए परन्तु सारे राष्ट्र मे हिसा की एक छोटी घटना भी नहीं हुई। आतकवादी तत्वो द्वारा की हिसा के विरुद्ध नारो जलूसो प्रदर्शनो के माध्यम से उसका विरोध करना उचित हो सकता है परन्तु ऐसे अवसरो पर सभी नेताओ दलो और सामान्य जनता को हिसा और सगठित उत्पात की घटनाओ से यत्नपूर्वक बचना होगा।

अक्षरधाम मन्दिर पर आक्रमण करने वाले आतकवादी तत्व विदेशी थे या देशवासी थे। यह इतने कोतूहल की बात नही है प्रत्युत इस सवेदनशील घटना ने जनता और सारे राष्ट्र को पाठ पढा दिया है कि बर्बर आक्रमणो के विरुद्ध जन आक्रोश की अभिव्यक्ति होनी चाहिए परन्तु ऐसी परीक्षा की घडियो मे नेताओ जनता और चिन्तको को जन विरोध को अधिक मर्यादित करने का वैसा ही प्रयत्न करना चाहिए जैसे कि महात्मा गाधी प० नेहरु डा० राजेन्द्र प्रसाद के युग मे विदेशी साम्राज्यवादियो के विरुद्ध सामूहिक विरोध के प्रदर्शन किए थे सत्याग्रही नारे लगाते थे सामूहिक प्रदर्शन करते थे। परन्तु हिंसा और आतक की कमी छोटी घटना भी नहीं घटी। अक्षरधाम मन्दिर पर आतकवादियो के बर्बर आक्रमण के असन्तोष और सगठित जन अभिव्यक्ति के लिए नारे लगाना या जलूस निकालना – मर्यादित रहकर भी आतकवाद को चुनौती दे सकता है परन्तु ऐसी परीक्षा की घडियों मे आतकवादियो की बर्बरता के विरुद्ध हिंसा अथवा कडी कार्यवाही अपनाना उचित नहीं है। तीन दशकों के मध्य असहयोग और सविनय अवज्ञा भग आन्दोलन के राष्ट्रव्यापी जन कार्यक्रम किए गए परन्तु किसी छोटी-बडी एक घटना मे भी हिंसा या मर्यादाहीनता की एक घटना नहीं हुई। विदेशी साम्राज्य के सभी अत्याचारों और कडे व्यवहार के बावजूद तीन दशकों तक जिस सयम और मर्यादा की अभिव्यक्ति की, इस नई सहस्त्राब्दी से स्वाधीनता के ५५वें वर्ष में अधिक सार्थक हो सकता है।

बोध कथा

अमेरिका में प्रथम प्रवेश

पहले समझा जाता था कि अमेरिका को सबसे पहले कोलम्बस ने खोजा था परन्तु ऐतिहासिक अनुसन्धान से सिद्ध हुआ कि अमेरिका मे प्रथम प्रवेश का श्रेय भारतीयो को था। मैक्सिको के सरकारी इतिहास मे लिखा है – अमेरिका कहलाने वाले राष्ट्र मे सबसे पहले 'जो लोग आए वे उस प्रवाह के भाग थे जो भारत से पूर्व की और गया। मैक्सिको के राष्ट्रीय सग्रहालय के क्यूरेटर प्रो० रामन मेना की सम्मति है 'दक्षिण अमेरिका मे मनुष्यों की आकृति भारतवासियो जैसी है, उनके सिर ढकने के वस्त्र, ऊची-ऊची इमारते, रचना शैली आदि से प्रमाणित है कि उनका भारतवासियों से गहरा सम्बन्ध था।

एक अन्य विद्वान हैविट ने लिखा – भारत से मैक्सिको आए हिन्दू व्यापारी अपने साथ पाण्डवो का अठारह महीने का वर्ष व्यापार-व्यवस्था और भारतीय बाजार की शैली लेकर पहुचे थे। विद्वानों ने अपने अन्वेषण से परिणाम निकाला कि अमेरिका की भाषा पर सस्कृत का बहुत प्रभाव है। मैक्सिको और पीरू के निवासियो का स्वरूप जीवन प्रणाली और भाषा पर भारतीयता की झलक दिखाई देती है। जैसे भारत मे नाग जाति की चर्चा है वैसे ही ही अमेरिका मे भी नागाओ का विवरण है। मैक्सिको के 'मैक्तिकन लाइफ ने रहस्योद्घाटन किया – जब मैक्सिको मे स्पेनवासी पहुचे तो उन्होने इन्द्र और गणेश जैसे देवताओ की पूजा देखी। स्वभावत जिज्ञासा होती रही कि वहा भारतवासी कैसे पहुचे परन्तु वैदिक काल मे वर्तमान समय तक समुद्र पार कर देश-देशान्तरो मे भारतीयो की यात्रा पुष्ट हो चुकी है उनके साथ भारतीय सस्कृति के कई अश पहुचे, जैसे वहा की जनता भी समय को चार युगो में बाटती थी, चन्द्रग्रहण के समय ढोल पीटा जाता था, मैक्सिको के स्तूप भारतीय स्तूपो के तुल्य थे वहा के नृत्य भारतीय प्रतीत हुए, इन्द्रप्रस्थ बनाने वाले मय दानव के ही वे भी उत्तराधिकारी थे, बालकों में गुरुकुल प्रणाली जैसी व्यवस्था थी, अनेक तथ्य प्रमाणित करते हैं कि वे नाम से ही इण्डियन नहीं थे, वस्तुत भारतीयों की सन्तान थे।

– नरेन्द्र

।। ओ३म्।।

दूरभाष ६६११२५४
६५२५६६३

निमन्त्रण-पत्र

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय

११६ गौतमनगर, नई दिल्ली-४६

का

७०वां वार्षिक समारोह एवं २३ वां चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

रविवार २६ सितम्बर, २००२ से रविवार २० अक्तूबर २००२ तक
विभिन्न सम्मेलनो के साथ सम्पन्न होने जा रहा है।

ब्रह्मा — आर्यजगत् के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी विद्वान् श्रद्धेय श्री स्वामी दीक्षानन्दजी विद्यामार्तण्ड

२६ सितम्बर प्रथम दिवस — अग्न्याधान, पारायण यज्ञ एव उपदेश, प्रात ८ बजे से १० बजे तक

गुरुकुल के स्नातकों एव ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ के पश्चात् प्रतिदिन
सस्कृत, हिन्दी, एव बहासा (इण्डोनियशन भाषा) में भाषण होगें।

दैनिक समय — प्रात ७ बजे से १० बजे तक एव साय ३ ३० बजे से ६ ३० बजे तक।

इस अवसर पर विशिष्ट सम्मेलन एवं कार्यक्रम

महिला सम्मेलन — ८ अक्तूबर (मगलवार) को प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में २ बजे से ४ ३० बजे तक

आर्य सम्मेलन — १६ अक्तूबर (शनिवार) को दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्त्वावधान में साय ४ ३० बजे से ७ बजे तक

यज्ञपारायण कार्यक्रम

ऋग्वेद	२६ सितम्बर रविवार प्रात से ८ अक्तूबर मगलवार साय तक।
यजुर्वेद	६ अक्तूबर प्रात से १० अक्तूबर साय सवन तक।
सामवेद	११ अक्तूबर प्रात से १२ अक्तूबर प्रात सवन तक।
अथर्ववेद	१३ अक्तूबर साय से १७ अक्तूबर साय सवन तक।

सत्यार्थभृत् यज्ञ

१८ अक्तूबर की प्रात से २० अक्तूबर की प्रात तक।

इसी दिन चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति भी होगी। पूर्णाहुति के अवसर पर आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वान्, सन्यासी, वक्ता, नेता और भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

- आवश्यक पालनीय · यजमान दम्पती के लिए धोती एव साडी का पहनना आवश्यक होगा।

विशेष

- ऋषिलगर, वेदविद्या एवं संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु दान देकर पुण्य के भागी बनें।
- आप द्वारा प्रदत्त दानराशि आयकर अधिनियम 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।
- इस शुभ अवसर पर गुरुकुल यमुनातट मझावली (फरीदाबाद एव आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा (देहरादून) के भवन निर्माण हेतु दान देकर कृतार्थ करें।
- कम से कम ११००० रुपये दान देने वाले महानुभावों का नाम शिलापट्ट पर अंकित किया जाएगा।

[illegible]

आचार्य हरिदेव

आर्य सन्देश - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१, दूरभाष : ३३६०१५०

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 3 4/10/2002 दिनांक ३० सितम्बर से ६ अक्तूबर २००२ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 3 4/10/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

३११९—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

सामान्य बालक से लेकर वैदिक विद्वान
सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिताओं में भाग लें

आर्यसमाज राजौरी गार्डन के तत्वावधान मे २२ सितम्बर से २६ सितम्बर तक सत्यार्थ प्रकाश सप्ताह का आयोजन किया गया। प्रतिदिन सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न समुल्लासो पर विभिन्न वैदिक विद्वानो के प्रवचन आयोजित किए गए। २६ सितम्बर रविवार को समापन समारोह भव्य रूप मे मनाया गया जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री विमल वधावन ने की तथा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज राजौरी गार्डन के प्रधान श्री जगदीश आर्य तथा मन्त्री श्री दयानन्द मदान ने किया।

सत्यार्थ प्रकाश सप्ताह के आयोजन का उददेश्य बताते हुए श्री जगदीश आर्य ने कहा कि वेद प्रचार सप्ताह तो प्रतिवर्ष आयोजित किया ही जाता है परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित भव्य ग्रन्थो मे सबसे अग्रणीय ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश का पठन पाठन कम न हो उस दृष्टि से यह विशेष आयोजन किया गया है।

उन्होंने समूचे आर्यजगत से आह्वान किया कि साप्ताहिक सत्सगो के दौरान सत्यार्थ प्रकाश के एक दो पृष्ठों के पाठन की प्रवृत्ति जारी रखनी चाहिए। जिससे महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यो और सिद्धान्तो के प्रचार प्रसार मे किसी प्रकार की कमजोरी न आए।

अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए श्री वधावन ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश सप्ताह का आयोजन करके आयोजको ने समूचे विश्व को यह स्मरण कराने का प्रयास किया है कि सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसा ग्रन्थ है जो आर्यसमाज के इतिहास मे हमारी गतिविधियो का मुख्य आधार रहा है। इसे लेकर जिस प्रकार पूरा सप्ताह सत्यार्थ प्रकाश के वातावरण से ओत प्रोत रहा उसी प्रकार वर्ष मे कई बार सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न विषयो पर अलग अलग प्रवचन कराए जा सकते हैं।

बच्चो मे वाक प्रतियोगिताए आयोजित की जा सकती हैं। महिलाओ मे गृहस्थ धर्म की शिक्षाओ को लेकर चर्चाए कराई जा सकती हैं। विभिन्न मतो और विश्वासो को लेकर भी परिचर्चाए आयोजित हो सकती हैं।

उन्होने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश समूचे विश्व मे एक प्रसिद्ध ग्रन्थ रहा है। हालाकि कुछ लोग इसमे खण्डन पक्ष की बाहुल्यता के कारण इसे कडवाहट पूर्ण ग्रन्थ मानते हैं परन्तु वास्तव मे ऐसा नहीं है। सच्चाई देखने मे कडवी अवश्य लगती है परन्तु उसे प्रस्तुत करने का तरीका सुन्दर हो सकता है। जिस प्रकार कडवी दवाई को शहद मे मिलाकर रुग्ण व्यक्ति को दिया जाता है उसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश को वेद ज्ञान रूपी शहद के साथ प्रेम पूर्वक यदि जनता के सामने प्रस्तुत किया जाए तो हर व्यक्ति इस सच्चाई को ग्रहण कर पाएगा।

उन्होंने सार्वदेशिक सभा द्वारा चलाई जा रही प्रतियोगिताओं का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि इनकी रूपरेखा इस प्रकार से नियोजित की गई है कि इसमे सामान्य बालक से लेकर बडे से बडे विद्वान तक सभी व्यक्ति भाग ले सके।

सर्वप्रथम १८ वर्ष से कम आयु के बच्चो के लिए सत्यार्थ प्रकाश मे से चुनकर निकाली गई कहानियो की एक पुस्तक बच्चों को भेजी जाएगी और उनसे प्रत्येक कहानी का सार और शिक्षा लिखने को कहा गया है। इस श्रेणी का प्रथम/ द्वितीय/ तृतीय पुरस्कार २००० १००० ५०० रुपये है। उत्तीर्ण होने वाले सभी बच्चो को प्रशस्ति पत्र अवश्य प्रदान किए जाएगे।

द्वितीय वर्ग में १८ वर्ष से अधिक आयु के आर्यजन भाग ले सकेगे जिन्हे सभा द्वारा भेजे गए प्रश्नो का उत्तर सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करके देना होगा। इस श्रेणी का प्रथम/द्वितीय/ तृतीय पुरस्कार ३००० २००० १००० रुपये है। उत्तीर्ण होने वाले सभी प्रतियोगियो को प्रशस्ति पत्र अवश्य प्रदान किए जाएगे।

तीसरी श्रेणी की प्रतियोगिता वैदिक विद्वानों के लिए तथा कालेजों एव गुरुकुलों के अध्यापकों के लिए घोषित की गई है जिन्हें सत्यार्थ प्रकाश के प्रत्येक समुल्लास पर सारगर्भित लेख भेजना होगा। इस श्रेणी का प्रथम/द्वितीय/तृतीय पुरस्कार ५००० ४००० २००० रुपये है। उत्तीर्ण होने वाले सभी प्रतियोगियो को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाएगे।

इन प्रतियोगिताओ मे भाग लेने के लिए ५०/– रुपये प्रवेश शुल्क होगा। श्री विमल वधावन ने अधिक से अधिक लोगों को किसी भी एक निर्धारित श्रेणी मे भाग लेकर सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि दिल्ली की सभी आर्यसमाजो को इस प्रकार के आयोजन करने की विशेष प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

उन्होने कहा कि जो लोग यह कहते है कि वेद प्रचार नही हो रहा वास्तव मे वे स्वय किसी गम्भीर कार्य को नहीं करना चाहते। उन्होने दिल्ली की आर्यसमाजो को प्रेरित करते हुए कहा कि अपने साप्ताहिक सत्सगो की रूपरेखा उद्देश्य परक बनानी चाहिए जिसमे सामान्य जनता मे भी उसका लाभ पहुच सके।

सत्यार्थ प्रकाश सप्ताह के समापन समारोह मे आचार्य सुभाष जी ने अपने प्रवचनो के माध्यम से आर्यों को आलस्य छोडकर तीव्रगति से कार्य करने की प्रेरणाए दी।

जम्मू कश्मीर से पधारे विद्वान श्री विद्याभानु शास्त्री जी ने सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न समुल्लासो का सार प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस अनमोल ग्रन्थ की शिक्षाए लगातार पढते रहना या सुनते रहना जीवन के लिए अवश्य ही कल्याणकारी होगा।

श्री जगदीश आर्य ने बताया कि सत्यार्थ प्रकाश सप्ताह के दौरान अनेक विद्वानो ने अलग अलग समुल्लासो को लेकर अपने अपने प्रवचन प्रस्तुत किए।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

र्ष २५ अक ४३ सृष्टि सम्वत १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १४ अक्तूबर से २० अक्तूबर २००२ तक
ूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर ेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

अप्रैल, 2001 में ध्वस्त आर्यसमाज मिण्टो रोड का

मूल भूमि पर ही हर्षोल्लासपूर्वक शिलान्यास

नई दिल्ली ६ अक्तूबर। दिल्ली के सासद एव पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदन लाल खुराना एव केन्द्रीय श्रममन्त्री डा० साहिब सिह वर्मा के अथक प्रयासो से आज आर्यसमाज व भाजपा के बीच पैदा हुई खटास ब्याज सहित समाप्त हो गई।

उल्लेखनीय है कि आज से डेढ वर्ष पूर्व सौन्दर्यकरण की आड मे मिण्टो रोड के जिस प्राचीन आर्यसमाज मन्दिर को तोड दिया था आज उसी स्थान पर स्वय केन्द्रीय शहरी विकास मन्त्री श्री अनन्त कुमार ने उपस्थित होकर भव्य मन्दिर निर्माण का शिलान्यास कराया।

श्री मदनलाल खुराना के साथ एक ही वाहन मे आए श्री अनन्त कुमार ने यह भूमि सौंपने की जब घोषणा की तो उपस्थित हजारो आर्यसमाजियो ने श्री खुराना अनन्त कुमार व डा० वर्मा के पक्ष मे नारेबाजी की और और बार बार वैदिक जयघोष करवाकर मच सचालक श्री विमल वधावन ने पण्डाल मे एक विचित्र उत्तेजना का सचार कर दिया। श्री विमल वधावन ने कहा कि पहले हमने कहा था कसम वेद की खाते है हम मन्दिर यही बनाएगे अब हमारा नारा है कि कसम वेद की खाते है कि मन्दिर भव्य बनाएगे।

श्री अनन्त कुमार ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मातृशक्ति के प्रति श्रद्धा का निर्देश दिया था। मातृशक्ति से अभिप्राय महिलाओ के साथ साथ प्रकृति माता और धरती माता से भी है। उन्होने कामना करते हुए कहा कि प्रकृति की गोद मे एक भव्य आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण हो यही हमारी महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धाजलि होगी।

दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना ने कहा कि गत वर्ष जब मन्दिर ध्वस्त किया गया था तो मैने केन्द्र सरकार के सभी वरिष्ठ नेताओ को आर्यजनता की भावनाओ से अवगत कराने का ही प्रयास किया था। आर्यसमाज की सगठन शक्ति के सामन हम तो केवल नतमस्तक हुए है।

शेष भाग पृष्ठ ७ पर



आर्यसमाज मिण्टो रोड के शिलान्यास समारोह के मच पर का दृश्य सचालन करते हुए श्री विमल वधावन तथा दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा। मचस्थ कै० देवरत्न आर्य के साथ मुख्य अतिथि श्री अनन्त कुमार श्री मदनलाल खुराना एव अन्य आर्य नेता। यज्ञ वेदी से उद्‌बोधन देते हुए श्री विजय कुमार मल्होत्रा एव डॉ० साहिब सिह वर्मा।

वेद ज्ञान की जिज्ञासा कैसे उत्पन्न करें ?

पश्चिमी दिल्ली स्थित आर्यसमाज मन्दिर मानसरोवर गार्डन के वार्षिक उत्सव पर मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने कहा कि वेद को समझने के लिए अपने अन्दर सर्वप्रथम एक ऐसी जिज्ञासा उत्पन्न करना अत्यन्त आवश्यक है कि हम किस विषय पर वेद ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। आर्यसमाज वेद के प्रचार प्रसार मे तन्मयता के साथ लगी हुई एक महान् सस्था है। हमारी यह निश्चित मान्यता है कि वेद में मानव मात्र के कल्याण का खजाना भरा हुआ है। अत जब कोई मनुष्य अपने अन्दर किसी निश्चित विषय पर वेद ज्ञान की जिज्ञासा उत्पन्न करता है तो उसकी पूर्ति करना भी हमारा प्रथम दायित्व होना चाहिए।

उ होने आर्यसमाजो के पदाधिकारियो को प्रेरणा की दृष्टि से कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्रो की जनता से सुझाव आमन्त्रित किया करे कि उन्हे किस विषय पर वैदिक ज्ञान के आधार पर प्रवचनो की आवश्यकता है। सामान्यजनो की आवश्यकता के आधार पर समाजो के पदाधिकारी वैदिक विद्वानो को निर्धारित विषयो पर प्रवचन के लिए आमन्त्रित करे। इससे वेद को समझना भी सरल होगा और अधिक सख्या मे लोग इस ओर आकर्षित होगे।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि एकजुट होकर सगठन को मजबूत बनाते हुए वेद प्रचार एव वैदिक धर्मप्रचार की गतिविधियो को व्यापक बनाए।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य तथा उप प्रधान आचार्य यशपाल ने भी उपस्थित जनो को सम्बोधित किया। सभा का सचालन आर्यसमाज के वरिष्ठ नेता श्री प्रियतम दास रसवन्त ने किया।

बधाई महा बधाई

स्वामी श्रद्धानन्द की इस नगरी में अरे
दुहाई है दुहाई मन्दिर ध्वस्त है हो रहे
नही सुनते अब अपने भाई

कैप्टन देवरत्न जी सार्वदेशिक को हो
आज महाबधाई विमल आर्य वेदव्रत
इन्द्र बसल विजय अनन्त साहिब मदन
के यत्नो से स्वामी दीक्षानन्द जी के
आशीष से यह शुभ घडी है आई

दिल्ली नहीं पूरे भारत मे आर्यजनता में
क्या जाग्रति है आई

यह जागरूकता प्रभु बनी रहे ऋषि सदा
रहे सहायी मिण्टो रोड आर्यसमाज को
पूरे आर्यजगत की हो शुभ बधाई।

— बी०के० चौधरी
आर्यसमाज, मुखजी नगर

देव दयानन्द के गुरु ब्रह्मर्षि महामना विरजानन्द

– आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी

आर्यसमाज के संस्थापक देव दयानन्द महाराज के गुरु स्वामी विरजानन्द स्रस्वती का जन्म पजाब प्रान्त के जालन्धर जनपद के वर्तमान गगापुर नामक ग्राम मे श्री नारायण दत्त जी के घर हुआ। परमात्मा की लीला अपार है कि जिसे समाज सुधार के महावृक्ष के बीज का वपन करना है जो क्रान्ति का प्रथम सक्रामयिता होगा जिसे राष्ट्र की सर्वविध स्वतन्त्रता का मार्ग परिष्कृत करना है उस दिव्यात्मा को पाच वर्ष की अल्पायु मे बाह्य चक्षुओ से हीन कर दिया। लगभग ५ वर्ष की अवस्थी मे शीतला राग से पीडित होने पर नेत्रज्योति सदा के लिए चली गई। नत्रो की बहुमूल्यता तथा महत्ता के कारण नेत्रो को प्राण कहा जाता है। नेत्रो के चले जाने पर मानो जीवन का सर्वस्व चला जाता है किन्तु कभी–कभी विपत्तिया भी बडी तीव्रता से आती है नयनहीन बालक का सबसे बडा आश्रय माता–पिता होते है किन्तु आह ! विधि ने उनसे यह अवलम्बन भी शीघ्र ही छीन लिया। अब बडे भ्राता व भाभी का ही सहारा लेना पडा किन्तु उनके तिरस्कारपूण व्यवहार से विवश होकर १२ वष के नेत्रहीन बालक विरजानन्द को गृहत्याग करना पडा।

गृहत्याग करके यातायात की सुविधआ से रहित पग–पग पर डाकुओ ओर चोरो स युक्त माग मे त्रिविध दु ख बाधाआ का आलिगन करते हुए तीन वष पश्चात ऋषिकश पहुच। आज का ऋषिकेश आधुनिक समस्त सुख सुविधाओ स सम्पन्न है किन्तु तब उस अरण्यस्थली म तपस्यानिरत महात्मा और हिसक सिह व्याघ्र आदि ही निवास करत थे। ये भी कन्दमूल से उदरपूर्ति करते हुए गायत्री साधना मे लग गए। विरजानन्द जी जन्म स ही तीव्र बुद्धि क धनी थे। गायत्री जप के अनुष्ठान से प्रभु की कृपा हुई और ये प्रतिभान्वित होकर बुद्धि वैभव से प्रज्ञा चक्षु कहलाए जाने लगे। कुछ समय पश्चात प्रज्ञाचक्षु ने एक दिन सोए–सोए सुना कि हे विरजानन्द ! तुम्हारा यहा जो कुछ होना था हो चुका। अब तुम यहा से चले जाओ। उन्होने अन्तरात्मा के सन्देश परमात्मा की प्रेरणा को सुना और हरिद्वार कनखल पहुचे। वहा दण्डी स्वामी पूर्णानन्द जी से सन्यास की दीक्षा लेकर विद्याध्ययन करने लगे।

कुछ काल पश्चात कनखल से प्रस्थान करके वाराणसी रहकर अध्यापन करते रहे। वाराणसी से गया कलकत्ता इत्यादि स्थलो पर कुछ–कुछ समय रहकर एटा जनपद मे गगातीर स्थित सोरो नगर पहुचे। सोरो से अलवर नरेश महाराजा विनय सिह अनुनय–विनय करके स्वामीजी को अलवर ले गए। स्वामीजी ने अलवर नरेश विनय सिह से कहा कि हम आपके साथ तभी चलेगे जब आप नियमित रूप से प्रतिदिन हमसे पढना स्वीकार करे।" और कहा कि जिस दिन भी आप न पढेगे हम अलवर छोड देग।" महाराजा विनय सिह नियमित रूप से स्वामीजी से पढते रहे किन्तु एक दिन यह राजछात्र अनुपस्थित हो गया। सम्भवत राज्यो के कार्यो मे उलझकर गुरुचरणो मे उपस्थित होना स्मरण न रहा। स्वामीजी भी अपनी प्रतिज्ञानुसार अलवर से प्रस्थान करके सोरों होते हुए मथुरा पहुच गए।

दण्डी स्वामी विरजानन्द जी जहा–जहा रहे वहा अध्यापन भी करते रहे। मथुरा मे भी पाठशाला स्थापित की गई। पाठशाला के व्ययभार अलवर नरेश भरतपुर के राजा तथा जयपुराधिपति वहन करते थे। एक बार जब स्वामीजी ने अष्टाध्यायी के पाठ श्रवण किया तो आर्ष ग्रन्थो मे श्रद्धा गहरी हो गई। आर्ष ग्रन्थो के प्रति स्वामीजी की आस्था का परिचय उन्ही का रचित एक पद्य स्वय कराता हे –

अष्टाध्यायी महाभाष्ये द्वे व्याकरण पुस्तके।
अतोऽन्यत्पुस्तक यत्तु तत्सर्व धूर्तचेष्टितम्।।

अर्थात प्राणिनिप्रणीत अष्टाध्यायी तथा उस पर महर्षि पतञ्जलिरचित महाभाष्य आर्ष पुस्तके है अन्य कौमुदी इत्यादि अनार्ष पुस्तके धूर्तो की रचनाए है।

दण्डीजी न स्वातन्त्र्य सग्राम के बीज स्वरूप पवित्र कर्म मे भी अपना बहुमूल्य योगदान किया। महाराजा रामसिह आदि राजाओ को भाति–भाति प्रकार से देशभक्ति का पाठ पढाकर विविध उपाय भी समझाए। स्वामीजी का अपने लिए कोई अभिलाषा न थी वह देश की स्वाधीनता और आर्षग्रन्थो का ही पठन–पाठन सर्वत्र देखना चाहते थे।

इस अभिलाषा की पूर्ति के लिए विद्या बुद्धि आदि सब अपेक्षित सामग्री उनके पास थी किन्तु नेत्रो के अभाव के कारण असमर्थ हो रहे थे। बडे लोगो की कामनाए भी बडी होती है। उन्हे ससार हित की अपनी अभिलाषा की पूर्ति के लिए किसी सहारे की आवश्यकता थी। सच्चे भक्त परमात्मा को जिस–जिस कामना के साथ पुकारते है। वह पूर्ण हो जाती हे। उनकी पाठशाला मे एक दिन एक अद्वितीय ब्रह्मचारी आया जिसे प्राप्त करके इस नेत्रहीन महामानव ने एक दिन कहा था – "अन्धे को लाठी मिल गई।"

गुजरात प्रान्त के टकारा ग्राम मे उत्पन्न विद्याभिलाषी दयानन्द स्वामी विरजानन्द जी महाराज का द्वार खटखटाते है। तब भीतर से प्रश्न हुआ कौन हो ? दयानन्द विनय भाव से बोले – यही जानने के लिए आपकी शरण मे आया हू। द्वार अब भी न खुला प्रत्युत प्रश्न हुआ – क्या पढे हो ? तब दयानन्द ने पाठित ग्रन्थो को बता दिया। उन ग्रन्थो को सुनकर आर्ष ग्रन्थो के प्रहरी गुरु विरजानन्द कहते है कि तुमने जो कुछ पढा है वह अनार्ष होने से त्याज्य है अत जो पढा है उसे भुला दो और उन ग्रन्थो को भी यमुना मे डाल आओ। अकिञ्चन विद्यार्थी आत्मा का ही कार्य है तथा पुस्तको को यमुना मे बहाने के साथ–साथ पढे हुए को भी भुलाकर अपने असाधारण होने का परिचय दिया क्योकि योगियो के अतिरिक्त ऐसा कौन कर सकता है उधर गुरु विरजानन्द भी अपने नवागत शिष्य के पारखी थे तभी तो उन्होने पूर्व पाठित को भूलने का असाधारण आदेश दिया। दण्डीजी लोकोत्तर महामानव का शिष्य के रूप मे सान्निध्य पाकर मन ही मन प्रसन्न हो विद्यादान मे तत्पर थे।

एक दिवस नित्य नियमानुसार दयानन्द जी मथुरा से दूर एकान्त मे ध्यानावस्थित बैठे थे। ध्यानावस्था से उठने ही वाले थे कि यमुना मे स्नान करके लौट रही एक देवी ने भक्तिभाव से अपना सिर दयानन्द जी के चरणो मे रख दिया। दयानन्द जी ने विनम्रता से देवी को परे हटने को कहा और स्वय तभी वस्त्रो सहित यमुना मे स्नान किया तथा वहीं निर्जन स्थान पर तीन दिन निराहार रहकर व्यतीत किए। दूसरी ओर गुरुवर दण्डीजी दयानन्द की अकारण अनुपस्थिति से व्यग्र हो गए। उनका मन चिर अभिलाषित अपने प्रिय शिष्य के प्रति नाना क्लिष्ट कल्पनाओ से आक्रान्त हो गया। चतुर्थ दिवस श्री दयानन्द जब गुरु के चरणों मे अभिवादन करत है तब गुरु विरजानन्द ने पूछा – "वत्स दयानन्द ! तुम इतने दिन कहा रहे ? कृशाग प्रतीत हो रहे हो। गुरुवर की इस जिज्ञासा के उत्तर मे अखण्ड ब्रह्मचर्यव्रती दयानन्द अथ से इति पर्यन्त, समस्त वृतान्त सुना देते है। इस वृतान्त को सुनकर जो वृद्ध अभी कुछ देर पहले तक व्याकुल था वही अत्यन्त हर्षित हो शिष्य को गले लगाकर सहसा कह देता है – अन्धे को लाठी मिल गई।"

दण्डी जी के आश्रम मे स्नातक दयानन्द के समावर्त्तन सस्कार का अवसर आया। सामान्यत दण्डीजी कोई दक्षिणा लिए बिना ही शिष्यो को आशीर्वाद देकर समावर्तित कर देते थे। स्वामी विरजानन्द जी लौगो का सेवन विशेषतया किया करत थे अत दयानन्द जी ने दक्षिणा स्वरूप लौग को ही गुरुचरणा मे अर्पित किया। गुरुजी ने पूछा– दयानन्द क्या लाए हो ? गुरु की इस अपूव जिज्ञासा को सुनकर अन्य शिष्य अपनी दक्षिणा की अल्पता के कारण घबरा गए और सोचने लगे कि दक्षिणा स्वरूप एक कण भी न स्वीकार करने वाले गुरुजी आज अकिञ्चन सन्यासी से दक्षिणा की कामना क्यो कर रहे हैं ? किन्तु दयानन्द जी बिना किसी सकोच के धीर भाव से कहते हैं कि कुछ लाग लाया हू। तब विरजानन्द जी कहते हैं कि हमारे घोर परिश्रम का क्या यही पारिश्रमिक है ? गुरुजी के इस विलक्षण परिवर्तित भाव से सभी छात्र घबरा गए किन्तु दयानन्द जी शान्त और विनम्र होकर निवेदन करते है कि मै अकिञ्चन सन्यासी भिक्षा करके ये लौग लाया हू, मेरे पास और अन्य क्या है जो आपको समर्पित करू। तब स्नेहसिक्त विरजानन्द जी ने कहा कि मैं। तुमसे वही वस्तु चाहता हू जो तुम्हारे पास है। यह सुनकर आदर्श शिष्य गुरु के समक्ष नतमस्तक हो गया और बोला कि मेरा सर्वस्व समर्पित है। स्वामी विरजानन्द जी ने नतमस्तक शिष्य को उठाकर कहा "वत्स दयानन्द ! ससार मे नाना मत–मतान्तरो की अविद्या से वैदिक धर्म का लोप हो गया है। तुम जाओ वेद तथा आर्ष ग्रन्थो का पुन प्रचार करके सारे विश्व का उद्धार करो यही गुरु दक्षिणा चाहता हू।" अहो ! शिष्य व गुरु द्वारा दक्षिणा का यह दानादान अपूर्व है। दयानन्द जी जब वहा से प्रस्थान करने लगे तब भी वे अपनी समस्त आशाओ के केन्द्र प्रिय शिष्य को सावधान करते हैं – हे दयानन्द ! सदा स्मरण रखना ऋषि प्रणीत ग्रन्थो मे ईश्वर और वेद की निन्दा नहीं मिलती।"

वेद और ईश्वर के परमभक्त समाज सुधारक स्वामी विरजानन्द यावज्जीवन आर्ष वाङमय के लिए समर्पित रहे। आर्ष ग्रन्थो के प्रहरी जीवनमुक्त स्वामी जी आश्विन कृष्णा त्रयोदशी सम्वत १९२५ विक्रमी को अपना भौतिक शरीर त्यागकर पचतत्व को प्राप्त हो गए। तब मृत्यु का समाचार जानकर महर्षि दयानन्द के मुख से नि सृत यह स्वभावोक्ति – "आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया" उनकी सर्वोच्च महत्ता की परिचायक है।

– आदर्श नगर, नजीबाबाद २४६७६३ (उ०प्र०)

दुर्गुण दूर करें। सबसे निर्भय हों।
दीनता से हीन शतायु हों।

दुरितानि परासुव।

यजु० ३०३

हे प्रभु, दुर्गुणो पापो तांम को दूर करे।

अभय ज्ञातादयभय पुरो य ।

अथर्व० १६ १५ ६

हमें परिचित से भय न हो, अपरिचित से निर्भय हो।

अदीना स्याम शरद. शतम्।

यजु० ३६ २४

दीनता से शून्य सौ शतायु हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

जम्मू-कश्मीर निर्वाचन का सन्देश

पिछले दिनों जम्मू-कश्मीर मे विधानसभा चुनाव हुए। पर्यवेक्षको की दृष्टि मे ये चुनाव सर्वाधिक निष्पक्ष स्वतन्त्र हुए। चुनाव के परिणामस्वरूप जनता के सत्तारूढ नेशनल काफ्रेस के २७ वर्ष पुराने किले को ध्वस्त कर दिया। काग्रेस और महबूबा मुफ्ती की पी०डी०पी० को अच्छी बढत देकर सरकार बनाने का अवसर दिया है। किसी भी एकाकी दल को बहुमत नही मिला। अपनी जान की पर्वाह न कर मतदाताओ ने भारी सख्या मे मतदान मे भाग लिया। लोकतान्त्रिक इतिहास मे हिसा और आतक से ग्रस्त इस राज्य मे जनता के लोकतन्त्र मे प्रति गहरी आस्था प्रकट की। राज्य की जनता ने परिवर्तन के पक्ष मे मतदान किया। परिणाम से स्पष्ट है कि जनता सत्तारूढ नेशनल कान्फ्रेस से नराज थी। नतीजो के अनुसार सम्भावना यह है कि नेशनल कान्फ्रेस और पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी छोटे दलो और निर्दलियो की मदद से सरकार बनाने मे सम्भवत सफल हो जाए। इस समय चुनाव मे परिणाम मे लोकतन्त्र की विजय हुई है लेकिन बात तब बनेगी जब आतकवाद पर भी विजय पाई जा सके। पडोसी पाकिस्तान द्वारा पोषित आतकवादियो ने जम्मू-कश्मीर के मतदाताओ को भयभीत करने के लिए वे सारे हथकण्डे अपनाए जो अपनाए जा सकते थे लेकिन मतदाताओ ने डरकर घर बैठने के स्थान पर बडी गिनती मे मतदान केन्द्रो मे पक्तिबद्ध होकर सामूहिक मतदान किया। परिणाम यह हुआ कि अपेक्षा के विपरीत ४५ प्रतिशत मतदान हुआ फलत यह बुलेट पर (गोली पर) बेलट (मतो की) ऐसी जीत है जिसकी विश्व-समुदाय भी चाहकर भी अनदेखी नहीं कर सकता। देखना यह होगा कि विश्व-समुदाय जम्मू-कश्मीर मे लोकतन्त्र की इस शानदार जीत के बाद पाकिस्तान को सही रास्ते पर लाने की चेष्टा करता है या नहीं ?

यह चिन्ता और खेद की बात है कि विश्व समुदाय और विशेष रूप से विश्व की महाशक्तिया सच्चाई के पक्ष का समर्थन करने के स्थान पर पक्ष विशेष का समर्थन करती रही है। यद्यपि भारतीय लोकतन्त्र के साथ मे सम्पन्न हुए आम चुनाव को देखते हुए विश्व समुदाय को इस बात पर ध्यान देना ही होगा कि चुनाव की आड मे लोकतन्त्र कलकित न किया जा सके। पाकिस्तान मे राष्ट्रीय असेम्बली के लिए जो चुनाव हुए वैसे उन्हे चुनाव की सज्ञा देना चुनाव–प्रक्रिया का अपमान करना है ऐसे धोखे से पूर्ण चुनाव केवल तानाशाही के ही परिचायक हो सकते है। इससे बडी विडम्बना क्या हो सकती है कि चुनाव की पूर्व सन्ध्या मे जनरल परवेज मुशर्रफ ने राष्ट्र के नाम अपना जो सन्देश दिया वह उन्होने फौजी वर्दी मे दिया। फोजी वर्दी यानी लोकतन्त्र को कुचलने ओर तानाशाही को थोपने वाली वेशभूषा असल मे परवेज मुशर्रफ के जिस विपक्षी उम्मीदवार से तनिक भी खतरा था उसे उन्होने किसी न किसी तरह चुनाव लडने के लिए अयोग्य ठहराने का प्रयत्न किया। धोखाधडी से पूर्ण चुनाव के बल पर परवेज मुशर्रफ ने अपने देश की जनता की आखो मे तो धूल झोक ही उन्होने विश्व समुदाय की भी भ्रान्त सूचना देने की चेष्टा की। पाकिस्तान मे सम्पन्न आम चुनाव जिस तरह सैनिक तानाशाही स्थिर रखने के माध्यम बने खेद है कि विश्व समुदाय ने उन चुनावो पर गम्भीरता और ईमानदारी की दृष्टि नही अपनाई फलत पाकिस्तान मे लोकतन्त्र से किया अन्याय अनदेखा ही रह गया। पाकिस्तान मे हुए चुनावो की उपेक्षा से देश की तानाशाही हकूमत को ही समर्थन मिला है क्योकि सारी चुनाव प्रक्रिया एक तानाशाह द्वारा तानाशाही तौर-तरीको से सम्पन्न कराई गई।

तानाशाह द्वारा तानाशाही तौर तरीको से कराया गया चुनाव सन्धिग्ध था तो उसका परिणाम अधिक सन्दिग्ध होगा। इन चुनावो से तानाशाही को ही बल मिलेगा। वहा मिली जुली सरकार बनना तय है। यद्यपि इस सरकार के गठन के सन्दर्भ मे चाहे स्पष्ट रूप से कुछ कहा न जा सके परन्तु एक बात तय है कि वहा जो भी सरकार बनेगी वह मिली-जुली सरकार होगी और उसके समक्ष सबसे बडी चुनौती पाकिस्तान प्रेरित और पोषित आतकवाद को पराजित करने की होगी पर यह लक्ष्य उस स्थिति मे पाया जा सकता है कि जब केन्द्र सरकार जम्मू-कश्मीर की नई सरकार के साथ मिलकर आतकवाद से निपटने के कई ठोस उपाय करे। जम्मू कश्मीर के चुनाव परिणामो से इस बारे मे कोई स्पष्ट सकेत नहीं मिला है तो भी नई गठित सरकार को आतकवाद से निपटने के लिए कोई ठोस स्थायी उपाय करने होगे। जम्मू–कश्मीर के चुनाव मे यदि कुछ अप्रत्याशित घटा तो भाजपा को अपने ही गढ जम्मू मे पहली बार पराजय का सामना करना पडा। इस परिणाम के लिए दल को ही आत्ममन्थन करना होगा कि आखिर क्या कारण है जम्मू की जनता ने उसे ठुकरा दिया। एक ओर इस दल को जम्मू–कश्मीर के सन्दर्भ मे अपनाई गई नीतियो पर पुनर्विचार करना होगा साथ ही इस पक्ष की केन्द्र सरकार को भी सोचना होगा कि चुनाव सम्पन्न होने के बाद पडोसी पाकिस्तान से निपटने के लिए क्या रणनीति अपनाई जाए ? यह ठीक है कि जम्मू–कश्मीर मे लोकतन्त्र की विजय हुई है लेकिन बात तब बनेगी जब आतकवाद पर भी विजय पाई जा सके।

चिट्ठी-पत्री

समान श्रम : समान मजदूरी

अफसोस की बात है कि भारत मे समान श्रम का समान मूल्य निर्धारित नहीं किया गया है। इससे भी अफसोस की बात यह है कि निजी क्षेत्र मे तो मजदूरी का मूल्य सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मजदूरी मूल्य से भी कहीं कम दिया जाता है इसलिए यह आवश्यक है कि पूरे देश मे समान श्रम का समान मूल्य निर्धारित किया जाए। साथ ही सरकार को इस बात की भी व्यवस्था करनी चाहिए कि मजदूर को उसकी मजदूरी सौंप कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेने की प्रवृत्ति पर रोक लगे। एक श्रमिक को उसकी कार्यावधि के साथ-साथ उसकी सेवा-निवृत्ति के बाद की अवधि के दौरान भी अपने और अपने परविार के पालन-पोषण और विकास की कोई चिन्ता नही रहनी चाहिए। इसके साथ यह भी जरूरी है कि हम बालश्रम को 'श्रम' की परिधि से पूरी तरह से बाहर कर दे जिससे हर बच्चे की शिक्षा के भरपूर अवसर उपलब्ध हो।

– अक्षय तिलकराज गुप्त, रादौर (हरियाणा)

बढती आबादी

केवल दिल्ली की बढती आबादी का नहीं है बल्कि पूरे देश की तीव्र गति से बढती जनसख्या की है। देश की लगभग ७० प्रतिशत जनसख्या गावो मे रहती है वहा आज भी शिक्षा की स्थिति दयनीय है। अशिक्षा-गरीबी के चलते जनता अपने बच्चो को भी नहीं पढा पाती। इसी के साथ नवदम्पती अधिकतर जनसख्या नियन्त्रण के उपायो से अनभिज्ञ हैं और कुछ उनका प्रयोग करने मे शर्माते है फलत वे कई-कई बच्चो को जन्म दे देते हैं। जब वे बडे परिवार को पालने मे असमर्थ होते हैं तो रोटी की तलाश मे महानगरो की शरण लेते हैं फलत दिल्ली सरीखे महानगरो की आबादी बढ रहीं है। गावो से जैसे-जैसे गरीबी-अशिक्षा दूर होगी वैसे-वैसे दिल्ली और दूसरे महानगरो की अबादी स्वत ही बढ जाती है।

– रमेश कुमार, दरियागज

साहस के अनुसार सकल्प

जिस मनुष्य में जितना साहस होता है, उसी के अनुकूल उसका सकल्प भी होते है।

– मुतनब्बी

इन शहीदों की स्थिति

मायावती की रैली मे भगदड से जो बेचारे 'शहीद' हुए हैं क्या मायावती जी उनकी भी मूर्तिया स्थापित करेगी या उन्हे केवल शहीद कहकर ही पल्ला झाड देगी ?

– मनोजकुमार पटवा, बिजनौर (उ०प्र०)

आर्यसमाज और अमेरिका

कैप्टन देवरत्न आर्य, प्रधान - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

गताक से आगे

२७ जुलाई को आर्यसमाज हयूस्टन मे समस्त हिन्दू सगठनो की ओर से स्वागत समारोह आयोजित किया गया था। विभिन्न हिन्दू सगठनो के प्रधान मन्त्री व कार्यकर्त्ता वहा उपस्थित थे। विदेशो मे समस्त आर्य समाजे हिन्दू सगठनो के साथ मिलकर कार्य करती है। अफ्रिका में अनेक मन्दिर है जहा आर्यसमाज के सत्सग लगते है ठीक इसी प्रकार अनेक हिन्दू सस्थाओ के कार्यक्रम आर्यसमाज मन्दिर मे होते है यदि वह हमारे सिद्धान्तो के विरुद्ध न हो। इस समारोह मे विश्व हिन्दू परिषद राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ मीनाक्षी मन्दिर के अधिकारी आदि अपनी धर्मपत्नियो के साथ उपस्थित थे।

श्री देव महाजन जी ने मेरा परिचय दिया। हिन्दू सगठनो के अधिकारी बोले तत्पश्चात मै हिन्दू सगठन पर लगभग ३५ मिनट बोला। मैंने स्वामी दयानन्द की बात को सबके सामने रखा कि हिन्दू तभी सम्भव है जब हमारी भाषा ईश्वर जाति और पूजा पद्धति एक हो। अनेक लोगो ने विभिन्न प्रश्न किए जिसका मैने उत्तर दिया। डॉ० प्रेम चन्द श्रीधर ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। भोजन के पश्चात सभा समाप्त हुई। मैंने सभी सगठनो के मन्त्री व प्रधान का भगवा पटको से सम्मान किया। सायकाल ४ बजे आर्य नेता श्री गजानन्द आर्य के बहनोई श्री शत्रुघ्न गुप्त की सुपुत्री श्री बेला जैन हमसे मिलने आई व हमे कुछ स्थान दिखाने ले गई। सायकाल भोजन हमने उनके साथ ही किया।

२८ जुलाई का दिन हमारे लिए बडा महत्त्वपूर्ण था। आज रविवार था – और हम आर्यसमाज के सत्सग मे गए। इससे पूर्व लगभग २० मिनट की मेरी वार्ता आर्यसमाज व स्वामी दयानन्द पर रेडियो स्टेशन से प्रसारित हुई। मै आर्यसमाज मे होने वाले यज्ञ मे यजमान के रूप मे सपत्नी बैठा। श्रीमती मीनू पुरुषोत्तम जी के भजन हुए। श्री देव महाजन जी ने मेरा विस्तृत परिचय दिया। शाल श्रीफल से सम्मान किया। इसके पश्चात लगभग ४० मिनट तक मेरा भाषण हुआ। आर्यसमाज के अतीत व इतिहास पर बोलते हुए अनेक उदाहरणो से मैने आर्यसमाज की छवि का परिचय देते हुए पुन उसे स्थापित करने की प्रेरणा दी। उपस्थित जनसमुदाय प्रसन्न हुआ। इस आर्यसमाज के प्रमुख पाच स्तम्भो के रूप मे जिन आर्यो ने इसके विकास एव निर्माण मे सहयोग दिया मैने उन्हे सार्वदेशिक सभा की ओर से सम्मानित किया वे थे – श्री देव महाजन श्री सुनील मेहता श्री शेखर अग्रवाल श्री वृज कथूरिया और श्री प्रवीण गुलाटी। श्री प्रवीण गुलाटी के छोटे भाई श्री मनीष गुलाटी जो आजकल दिल्ली मे रहते है का भी बहुत बडा योगदान रहा है। वे ह्यूस्टन आने जाते रहते है। पक्के आर्य विचारो के है। मेरा उनसे पूर्व परिचय भी रहा है। सत्सग मे लगभग १५० व्यक्ति उपस्थित थे। अधिकाश युवा थे यह प्रसन्नता की बात थी।

आर्यसमाज सत्सग के पश्चात लगभग १५ किलोमीटर दूर विश्व हिन्दू परिषद् का सस्कार शिविर लगा हुआ था। उसका आज समापन समारोह था। हम विशेष रूप से आमन्त्रित थे। लगभग १५० युवक उसमे भाग ले रहे थे। हिन्दू सस्कृति और सस्कारो की उन्हे शिक्षा दी जा रही थी। समापन समारोह मे मेरा भाषण हुआ।

आर्यसमाज ह्यूस्टन की एक विशेष प्रथा का मैं यहा वर्णन करना चाहूगा। वहा आर्यसमाज मे कोई पदाधिकारी नही है। उन्होने अलग–अलग कार्यों के लिए समितिया बनाई है और उसके सयोजक नियुक्त किए हुए है। उस समिति के कार्य को सुचारू रूप से करने का उत्तरदायित्व सयोजक पर है। उदाहरणार्थ – एक समिति है कम्यूनिकशन समिति–सत्सग मे माईक की [illegible]

होने से पूर्व आते है – माईक व्यवस्था को चैक करते है। इसी प्रकार यज्ञ समिति यज्ञ की व्यवस्था भोजन समिति भोजन की व्यवस्था फाईनेन्स कमेटी – एक रूप मे आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष का कार्य करती है। सयोजक अपने कार्य के लिए किसी से नहीं पूछते और उन सब सयोजको को मिलाकर व पाच स्तम्भ जो समाज है अन्तरग सभा का निर्माण होता है उसके प्रमुख चीफ कार्डिनेटर के रूप मे कार्य करते हैं जो आजकल श्री देव महाजन है। इसका लाभ यह है कि हर व्यक्ति समाज के कार्य मे स्वतन्त्रता के साथ जुडा हुआ है और आर्यसमाज प्रधान मन्त्री कोषाध्यक्ष पदो के अहकार से दूर रहता है। मुझे यह तरीका बहुत पसन्द आया।

२८ जुलाई को हम ह्यूसटन से अटलान्टा विमान द्वारा रवाना हुए। लगभग ६ बजे साय हम अटलान्टा पहुचे। विमान स्थल पर श्री अरोडा श्री अमिताभ शर्मा आदि हमे लेने के लिए उपस्थित थे। श्री अरोडा की धर्मपत्नी श्रीमती प्रीतम अरोडा आर्यसमाज की मत्राणी है। वे कनाडा से यहा कुछ समय के लिए आ गए। श्री अरोडा और उनकी धर्मपत्नी बडी मिलनसार और पक्का आर्यसमाजी परिवार है। हमारे एटलान्टा निवास के दौरान हम उन्हीं के निवास पर ठहरे। हमारी देखभाल मे श्रीमती प्रीतम अरोडा ने कोई कसर वाकी नहीं रखी।

रात्री को हम अटलान्टा आर्यसमाज के प्राण डॉ० दीनबन्धु चन्दोरा के निवास पर गए। रात्री उन्हीं के पास रहे। आर्यसमाज के दीवाने है डॉ० दीनबन्धु चन्दोरा। सारा घर आर्यसमाज का पुस्तकालय बना हुआ है। कम्प्यूटर मे सारा काम आर्यसमाज का होता है। आर्यसमाज उनके रग–रग मे भरा है। सोते जागते अपना व्यवसाय करते हुए उनका ध्यान आर्यसमाज के विकास पर ही लगा है। आर्यसमाज की अनेक पुस्तके उनकी लाइब्रेरी मे है – एक–एक पुस्तक की ८ से १० प्रतिया लगी हुइ है। जो आता है घर मे उसे ही पुस्तक भेट। आर्यसमाज भवन के पुस्तकालय रिकार्ड मे लगभग १००० पुस्तके थी – मै गया तो लगभग २०० पुस्तके भी नहीं थी। जो व्यक्ति पुस्तके ले गया पढने के लिए और लौटाई तो बडे खुश होते ह कि किसी भी बहाने उसके घर मे वैदिक साहित्य पहुच गया है। अनेक पुस्तको का उन्होने प्रकाशन भी किया। आर्यसमाज के प्रति ऐसी दीवानगी मैंने सम्भवत किसी व्यक्ति मे नही देखी। उनके एक साचने का ढग देखिए। उनके बडे पुत्र अविवाहित ३० वर्ष की आयु भारत मे एक डाक्यूमेन्ट्री फिल्म बनाने आए। अभी हाल ही मे उनकी एक दुर्घटना जोधपुर मे हो गई। उन्हे उपचार के लिए दिल्ली लाया गया पर वह नहीं बच सके। डॉ० दीनबन्धु चन्दोरा भारत आए मैं उस दिन मुम्बई मे था। मुझे पूर्व निश्चित कार्यक्रमानुसार हैदराबाद जाना था। ६ सितम्बर को मैने अफसोस करने के लिए उन्हे दिल्ली टेलिफोन किया। सयत स्वर डा० चन्दोरा का। विशेष बात नही। कहने लगे मैने दिल्ली मे डाक्टरो को कह दिया था – कि मृत्यु पर उसका दिल–आखें–किडनी और जितनी जरूरत के अग है निकाल लेना। ये अग जिस व्यक्ति को आवश्यकता हो उसे लगा देना। मुझे तसल्ली हैं कि इस रूप मे तो पुत्र जीवित है। डॉ० चन्दोरा राजस्थान के रहने वाले है। यह भी एक सयोग रहा कि मेरा ननिहाल सोजत सिटी मे हैं और डॉ० चन्दोरा का निवास भी उसी मोहल्ले मे है।

डॉ० चन्दोरा के निवास पर जाने से पूर्व हम आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता और बीकानेर निवासी डॉ० अरोडा के घर गए। विशाल बगला जहा एक मारवाडी परिवार का विवाह से पूर्व होने वाला समारोह चल रहा था। डॉ० अरोडा [illegible]

३० अगस्त की प्रात १२ बजे तक हम डॉ० चन्दोरा के निवास पर आर्यसमाज के विकास पर चर्चा करते रहे। क्या तडप थी उनमे। उनका वश चलता तो वे सारे विश्व को आर्य बनाकर ही दम लेते। उनकी पत्नी ने कई बार उन्हे टोका कि डयूटी पर नहीं जाना है क्या ? पर वे मस्त थे आर्यसमाज की प्रगति के चिन्तन मे। उसके पश्चात हम श्री प्रीतम अरोडा के निवास पर आ गए। रात्रि को ७ बजे हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज एटलान्टा मे था। दो सुन्दर भवन। लगभग २ एकड का प्रागण। आर्यसमाज मे सगीत की कक्षाए चल रही थी। एक भवन मे विद्वान के रहने की व्यवस्था – पुस्तकालय – भोजन करने की व्यवस्था आदि थी। बाहर भवन के मुख्य प्रवेश पर एक रैक मे आर्यसमाज से सम्बन्धित अत्यन्त सुन्दरता से पूर्ण छोटे–छोटे फोल्डर लगा रखे थे। उनके विषय थे Vedic Dharma, Sanskars (Sacraments), Founder of Hindu Renaissauce Movement, Principles, Traditions and Code of conduct, Vedic Temple Activities, Hindu Satakam, आदि। Folder की कोई कीमत नहीं। जो आये व जितना चाहे ले जा सकता है – उद्देश्य था – वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार।

८ बजे समारोह प्रारम्भ हुआ। लगभग ७०–७५ व्यक्ति उपस्थित थे। मेरा परिचय डॉ० चन्दोरा जी ने कराया। विशिष्ठ व्यक्ति के रूप मे उपस्थित थे नेपाल निवासी डॉ० बिस्त। डॉ० बिस्त इससे पूर्व साउथ अफ्रिका मे काम कर रहे थे और आर्यसमाज के अच्छे विद्वान हैं।

मैंने लगभग ४५ मिनट अपना भाषण दिया। श्रोता बहुत खुश थे। मेरे पश्चात मेरे विचारो की प्रशसा मे डॉ० बिस्त ने लगभग १५ मिनट अपना भाषण दिया। मैंने समारोह के अन्त मे डॉ० चन्दोरा डॉ० बिस्त श्रीमती अरोडा श्री अरोडा प० गिरी जी श्री कुमार आदि का भगवे पटके व १२५वीं जयन्ती के बिल्लो से सम्मान किया। पूर्व उसके किसी भी व्यक्ति ने इस प्रकार सम्मान नहीं किया। वे बडे प्रसन्न थे कि सार्वदेशिक के प्रधान ने आर्यसमाज के प्रति की गई उनकी सेवाओ को पहचान दी है। समारोह समाप्ती पर भोजन की व्यवस्था थी। आर्यसमाज ने सभा को ५०१ डालर का दान भी दिया।

३१ अगस्त की साय डा० चन्दारा हमे स्टोन माउन्टेन स्थान दिखाने ले गए। विश्व का सबसे बडा 'लेजर शो' लगभग १ घण्टे यह शो चला। खुले मे विशाल पहाड को परदे की तरह प्रयोग कर यह शो दिखाया जाता है। इसमे दक्षिण अमेरिका व उत्तर अमेरिका के आपसी विवादो की झलकिया देखने को मिली। इस विशाल सपाट पहाड के चारो ओर झील–होटल आदि बने है जहा प्रकृति का आनन्द लेने के लिए लोग बाहर से आकर ठहरते हैं। लेजर शो देखकर हम डॉ० चन्दौरा जी के निवास पर आए और फिर वही आर्यसमाज की बाते। अन्टालान्टा विमान स्थल विश्व का व्यस्ततम एयरपोर्ट माना जाता है। विमान स्थल पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए इलेक्ट्रिक ट्रेन चलती है। दिन मे हर ३ मिनट मे एक विमान उडान भरता है व एक विमान नीचे उतरता है।

१ अगस्त २००२ को हम एटलान्टा से रवाना होकर न्यूयार्क विमान स्थल पर साय ५ बजे पहुचे। यह विमान स्थल न्यूयार्क शहर से लगभग २०–२५ किलोमीटर दूर है लगभग १ घण्टा हमे न्यूयार्क आने मे लूगा। न्यूयार्क समाज के प्रधान श्री सुभाष अरोडा ने हमारे रहन की व्यवस्था हॉटल PAN AMERICAN मे कर रखी थी। साय वे होटल मे आये और हमे एक पजाबी रेस्टोरेन्ट मे ले गए।

श्री सुभाष अरोडा आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता है। फिरोजपुर पजाब के रहनेवाले है। आर्यसमाज न्यूयार्क के मन्त्री श्री मुखी बडे उत्साह से आर्यसमाज के कार्य को कर रहे है। वे शक्तिनगर दिल्ली के निवासी है और आज भी शक्ति नगर आर्यसमाज के साथ सलग्न है।

जैसा मैं पूर्व मे वर्णन कर चूका हू कि मुझे आर्य महासम्मेलन क्लिव लेण्ड के पश्चात कनाडा का वीसा लेने के लिए न्यूयार्क आना पडा था। मैंने कनाडा जाने का विचार बदल दिया था। पर श्री अमर ऐरी के विशेष आग्रह पर न्यूयार्क वीसा के लिए आया। १५ जुलाई को हमे प्रो० वेदश्रवा (सुपुत्र आचार्य विश्वेश्रवा जी) जो हडसन वेली मे रहते है हमें डॉ० रमेश गुप्ता (न्यू जरसी) के घर से अपने यहा ले आए थे। उन्होने मुझे अपने बडे भाई की तरह सम्मान दिया। उनकी पत्नी डॉ० सुनीता बच्चो की विशेषज्ञ है और अपने बगले पर ही प्रेक्टिस करती है। अपने पिता श्री के समान प्रो० वेदश्रवा भी आर्य हैं उन्होने घर मे ही एक हाल को आर्यसमाज बना रखा है।

१६ जुलाई को हम प्रो० वेदश्रवा जी के साथ न्यूयार्क कार द्वारा गए। न्यूयार्क वहा से करीब ७५ किलोमीटर दूर था। कनाडा के दूतावास मे अपना कार्य करके हम आर्य स्प्रिच्यूल सेन्टर क्वीन मे आए। यह विशाल आर्यसमाज एक चर्च को खरीदकर बनाई गई है। वहा के विद्वान प० रामलाल जी का इस क्रय मे विशेष हाथ रहा। आर्यसमाज के लोग उन्हे बडे सम्मान के साथ देखते है। हम आज इस आर्यसमाज में प० रामलाल जी के विशेष आग्रह पर आए थे। वहा आर्यवीर दल का शिविर चल रहा था। लगभग १३० बच्चे भाग ले रहे थे। ७८ वर्ष तक के बच्चे भी उसमे मौजूद थे। प० रामलाल जी ने मेरा व प्रो० वेदश्रवा का परिचय बच्चो को दिया। लगभग १ घण्टे तक बच्चो ने जो सीखा उसका प्रदर्शन किया। तत्पश्चात मैने व प्रो० वेदश्रवा ने बच्चो को सम्बोधित किया। छोटे–छोटे बच्चो ने भाषण के बाद बडे–बडे प्रश्न कर डाले – आप सार्वदेशिक के प्रधान कैसे बने – आपका क्या काम होता है ? सेना मे आप क्या करते थे ? भारत मे आर्यवीर दल कैसा काम करता है ? गुजरात मे भूकम्प पर आर्यसमाज ने क्या किया ? आदि आदि। इन दिनो अमेरिका मे स्कूलो का अवकाश होता है अत मा बाप बच्चो को आर्य सस्कृति के ज्ञान के लिए शिविरो मे भेज देते है। मै इस कार्य को देखकर प० रामलाल जी के व्यक्तित्व से बडा प्रभावित हुआ। मेरी पत्नी श्रीमती सुनीता आर्य ने भी बच्चो को सम्बोधित किया।

रात्री को हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज न्यूयार्क हिल साईड ऐवेन्यू जमाईका मे हुआ। लगभग ३५ व्यक्ति उपस्थित थे। आर्यसमाज के प्रधान श्री सुभाष जी अरोडा मन्त्री श्री वीरसेन जी मुखी व आचार्य प० बलजीत आदि विशिष्ठ व्यक्ति उपस्थि थे। श्री मुखी जी ने मेरा परिचय दिया। मैंने सभा को लगभग ४० मिनट तक सम्बोधित किया। गुरुकुल कागडी की जमीन विक्रय पर आम रोष था। मैने भाषण मे आर्यसमाज के सक्रिय सगठन – मुम्बई मे व हरिद्वार मे आयोजित आर्य महासम्मेलन का विवरण दिया व आर्यसमाज के सुदृढ सगठन का परिचय दिया। इस सभा मे स्वामी इन्द्रवेश को भी आमन्त्रित किया गया था पर वे नहीं आए। हम रात्री को लगभग ११ बजे रवाना होकर १२–३० बजे प्रो० वेदश्रवा के निवास पर पहुचे।

मेरे मित्र और बडे भाई के समान श्री मनमोहन माहेश्वरी जो कलकत्ता मे रहते है और जिन्हे मैं सम्मान से दद्दा कहकर पुकारता हू – वे उन दिनों अमेरिका मे ही थे। उनका न्यूयार्क मे निवास व व्यवसाय था। वे गेनहटन नामक स्थान पर रहते थे। उन्होंने प्रात काल ही प्रो० वेदश्रवा के निवास पर प्राईवेट कार भेज दी थी और हम उनके निवास पर रहे और वहीं से वीसा का कार्य किया। वीसा मिलने मे दो दिन की देरी थी अत श्री माहेश्वरी जी ने हमे न्यूयार्क के सभी प्रसिद्ध स्थानो को दिखाया। १६ जुलाई को हम कनाडा दूतावास मे गए और हमे वीसा मिल गया। उसी शाम हम विमान से शिकागो के लिए रवाना हो गए। शिकागो पहुचने के पश्चात हमारे जितने कार्यक्रम अमेरिका के विभिन्न स्थानों पर हुए उसका मैं पूर्व वर्णन कर चुका हू।

हम एटलाण्टा शहर से विमान द्वारा पुन १ अगस्त २००२ को रवाना होकर न्यूयार्क आए। आर्यसमाज न्यूयार्क के प्रधान माननीय सुभाष जी अरोडा ने हमारी व्यवस्था न्यूयार्क विमान स्थल पर लाने की कर रखी थी एव हमारे ठहरने की व्यवस्था क्वीन्स क्षेत्र मे स्थित होटल पेन अमेरिकन मे कर रखी थी। रात्री को वे होटल मे मिलने आए और हमे एक प्रसिद्ध पजाबी होटल मे भोजन के लिए ले गए। २ और ३ अगस्त को कोई काम न होने के कारण हम होटल मे ही रहे और न्यूयार्क मे घूमने निकल गए। हमने स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी सेट पाल चर्च एम्पायर एस्टेट बर्ल्ड ट्रेड सेन्टर का सपाट मैदान जहा नया भवन बनाने की नींव रखी जा रही थी आदि देखे। ११ सितम्बर २००१ को यह भवन मुस्लिम आतकवाद का शिकार हो गया था। जिसमे लगभग ३००० व्यक्तियो की मृत्यु हो गई थी और अरबो की सम्पत्ति नष्ट हो गई थी। सारे विश्व ने इस आतक विरोधी गतिविधि की तीव्र भर्त्सना की थी।

सायकाल ७ बजे हमारा कार्यक्रम वैदिक स्प्रिच्यूल सेन्टर मे न्यूयार्क की समस्त आर्यसमाजों की ओर से सार्वजनिक सभा हमारे सम्मान मे रखी थी। इस समारोह मे डॉ० हरिश्चन्द हैदराबाद भी उपस्थित थे। डॉ० हरिश्चन्द एक निष्ठावान आर्यसमाजी है एव इस समय हैदराबाद मे 'दयानन्द वैदिक एकाडमी' के नाम से चल रही सस्था का सचालन कर रहे हैं। अमेरिका मे एक सस्था 'वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ वैदिक स्टडिज (WAVES)' की अन्तराष्ट्रीय कानफ्रेन्स दिनाक १२ से १४ जुलाई २००२ को सम्पन्न हुई थी। डॉ० हरिश्चन्द्र उस कानफ्रेन्स मे वक्ता के रूप मे आए हुए थे। वे अनेक कोर्स जन कल्याण के लिए चलाते है और उसमे एक है 'SCOPE' The Short Course of Resronality Enhancement' इस विषय पर उन्होने अपना भाषण दिया। सभी उपस्थित व्यक्ति आर्यसमाज भवन मे इन भाषणो से प्रसन्न थे। आदरणीय प० रामलाल जी ने इस सम्मान समारोह का सयोजन किया। इस अवसर पर मैने प० रामलाल जी श्री सुभाष अरोडा श्री मुखी जी आदि आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ताओ का भगवे पटके से सम्मान किया जिससे सब बडे प्रसन्न थे। सहभोज के साथ सभा सम्पन्न हुई।

४ अगस्त को रविवार था और हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज न्यूयार्क के साप्ताहिक सत्सग मे था। मैंने विशेष आग्रह कर आर्यसमाज मे ही रहने का निर्णय किया व होटल छोड दिया। हम वहा २ दिन रहे आदरणीय प० बलजीत जी व उनके परिवार ने हमारी खूब देखभाल की।

रविवार होने के कारण हम पहले वैदिक स्प्रिच्यूल सेन्टर गए। वहा मेरा भाषण हुआ व वहा से श्री सुभाष अरोडा हमे न्यूयार्क आर्यसमाज ले गए। वहा पहले आचार्य बलजीत जी का भाषण हुआ और पश्चात मेरा। प० बजजीत जी श्री सुधाशु महाराज के चाचा है। उन्होने आर्यसमाज के कार्य को बहुत सम्हाल रखा है। इस साप्ताहिक सत्सग के पश्चात वैदिक विद्वान प० सत्यानन्द जी स मिलने का मुझे सौभाग्य मिला। उनके पुत्र भी आए हुए थे। उन्होने ३० वर्ष पूर्व प्रकाशित आर्याभिविनय का अग्रेजी अनुवाद पुस्तक मुझे भेट की व अन्य ग्रन्थ भी। हम ४ बजे तक अनेक व्यक्तियो से मिलते रहे। उनके पुत्र ने इस पुस्तक को पुन प्रकाशित करने की मुझे अनुमति दी।

इस समाज के प्रधान माननीय श्री सुभाष अरोडा जनकल्याण के अनेक कार्यक्रम समय–समय पर ससार के उपकार के लिए इस आर्यसमाज के माध्यम से करते रहते हैं। तरह–तरह के मेडिकल शिविर कैंसर डिडेक्शन शिविर आदि। यह आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य हैं और समस्त आर्यसमाजो को इस प्रकार के क्रिया कलापो मे सलग्न रहना चाहिए।

४ बजे हम पुन आर्य स्पीच्यूल सेन्टर गए। वहा के आय समाज की मन्त्राणी श्रीमती साकी की सुपुत्री कुमारी नादिया की ग्रेज्यूशन पार्टी थी। अमेरिका मे जब बच्चा पहली बार ग्रेज्यूशन के लिए विश्वविद्यालय में जाता है तो इस प्रकार की पार्टिया आयोजित होती है। बच्चा घर छोडकर विश्वविद्यालय मे जाता है और वही रहता है। मेरे अमेरिका निवास के दौरान मैं ऐसी अनेक पार्टियो मैं गया।

परन्तु यह पार्टी अलग ही तरह की थी। प० रामलाल जी ने इस पार्टी को गुरुकुल जाने की प्रथा से जोड दिया एव कुमारी नादिया का यज्ञोपवीत सस्कार किया व विश्वविद्यालय मे जाने व रहने की अनुमति मा बाप से ली। मुझे यह सस्कार बहुत अच्छा लगा। मात्र एक साधारण सी पार्टी को उन्होने अच्छे सस्कार देने की प्रथा मे बदल दिया। उसके पश्चात् बडे स्तर पर भोज का आयोजन किया गया।

हम ५ और ६ अगस्त को आर्यसमाज न्यूयार्क में ही रहे। होटल से भी ज्यादा आराम हमे वहा मिला और मिला प० बलजीत जी का सानिध्य। वे हमे अपनी कार से अनेक स्थानो मे घुमाने ले गए। और इस प्रकार ६ अगस्त २००२ को हमारी अमेरिका यात्रा समाप्त हुई।

अमेरिका मे आर्यसमाज की ४३ शाखाए है। आर्यसमाज का कार्य बडी सक्रियता से चल रहा है। बडे–बडे भवन सक्रिय आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यवीर दल के सगठित शिविर। मेरा सौभाग्य रहा कि वहा मुझे आदरणीय डॉ० सुखदेव जी सोनी डॉ० दिलीप वेदालकार प० रामलाल जी डॉ० दीनबन्धु चन्दोरा श्री देव महाजन श्री सुभाष अरोडा डॉ० प्रेम चन्द श्रीधर आदि विद्वानो व सक्रिय कार्यत्ताओ से मिलने का सौभाग्य मिला। वर्तमान मे – डॉ० विनोद सेठी प्रो० वेदश्रवा और श्री गिरिश खोसला आर्यसमाज के मिशन को उत्तरोत्तर आगे बढाने मे प्रयत्नशील हैं। यदि में यह लिखू तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इन सब सक्रियताओ के पीछे श्री गिरिश खोसला का विशेष हाथ रहा है। उनका जन सम्पर्क समस्त आर्यसमाजो के साथ सराहनीय हैं।

अमेरिका मे शाकाहार का कोई विशेष प्रचार नहीं हो पाया। स्थानीय नागरिको को हम अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाए है। लोगो को कहते सुना कि यदि मानव का करिश्मा देखना हो तो न्यूयार्क जाओ जहा समुद्र के किनारे सैकडो बहुमजिल इमारते देखकर आश्चर्य चकित रह जाओगे। इतनी ऊची इमारते हैं कि आप ऊपर तक अपनी निगाहे टिकाने का प्रयत्न करोगे तो चक्कर खाकर गिर जाओगे और यदि ईश्वर का करिश्मा देखना हो तो 'न्याग्रा प्रपात' देखो जिसका भव्य स्वरूप कनाडा मे जाकर देखने को मिलता है।

भारत के समान सास्कृतिक एव पारिवारिक ६ रोहर उनके पास नहीं है। कहते हैं वहा चार W पर कभी भरोसा नही किया जा सकता है – W- for Weather, W- for Wine W for Work & W for Women यह कब बदल जाएगें कहा नहीं जा सकता। आचार्य बलजीत जी ने अपनी पुस्तक मेरा अमेरिकी प्रवास पुस्तक मे बडे सुन्दर ढग से लिखा है जब प्रथम बार कोई अमेरिका आता है तो उसे दो वर्ष यहा के तौर तरीके सीखने मे लगते है और दो वर्ष अपने देश को भूलने मे लगते है। पाचवे वर्ष मे व्यक्ति पूरा अमेरिकन हो जाता है। यह सब उसको धीरे–धीरे गिरफ्त में ले लेता हैं। परन्तु दस साल बाद जब वह अमेरिका उसकी हडिडयो मे रम जाता है और बच्चे बडे हो जाते है या अमेरिकन हवा उन्हे लगने लगती है तब सस्कृति के हिसाब से उसे अपना भारत देश याद आने लगता है। तब वह कुछ भी नहीं कर पाता। रो कर मन मारकर यही इसी डालर की सस्कृति मे दफन हो जाता है। परन्तु इस स्थिति तक न पहुचने मे यदि कोई सहायक होता है तो वह है आर्यसमाज। और अपनी इन स्मृतियो को अपने साथ लेकर हम ७ अगस्त २००२ को प्रात विमान से कनाडा के लिए उड गए।

आर्यसमाज डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, आर०बी०ई० पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६

बाल चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

वर्तमान भौतिकता के युग मे बिगडते पारिवारिक सामाजिक राष्ट्रीय एव सास्कृतिक परिवेश को देखते हुए हमारा विद्यालय गत सात वर्षों से 'बाल-चरित्र निर्माण शिविर' का आयोजन सफलता पूर्वककर रहा है। उसी श्रृखला मे इस वर्ष दिनाक ५ ६ ०२ से ८ ६ ०२ तक शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का शुभारम्भ दिनाक ५ ६ ०२ को प्रात ६ ०० बजे श्रीमती आशा माता जी के ब्रह्मत्व मे बृहद् यज्ञ से हुआ। तत्पश्चात् विद्यालय के अध्यक्ष श्री बलदेव जिदल जी तथा श्री महेश विद्यालकार जी ने दीप प्रज्वलित करके विधिवत् उद्घाटन किया। विद्यालय की अध्यापिकाओ ने एक भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे – **'स्वय बने हम आर्य फिर जगत को आर्य बनाए।'** विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सावित्री चावला जी ने शिक्षक दिवस की शुभकामनाए देते हुए अपने कर्त्तव्य पालन के लिए प्रेरित किया। डॉ० महेश विद्यालकार जी ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है। शिक्षक जागरूक रहे तो देश भी जागता है। बच्चो के लिए अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि बच्चो को बच्चे ही बने रहना चाहिए अर्थात् सभी दुर्गुणो और बुराइयो से बचे रहे। इस समारोह पर आर०बी०ई० कॉलोनी के सभी प्रमुख व्यक्ति उपस्थित थे। श्री जिन्दल जी ने आए हुए भी महानुभावो का धन्यवाद किया। इसी दिन साय ६ ०० बजे शिविरार्थी सेवा बस्ती मे गए और वहा के लोगो म भोजन तथा वस्त्र वितरित किए गए।

दिनाक ६ ६ ०२ को श्रीमती सुभाष कण्व माता जी ने अपने प्रवचन मे **'अहम् भूयासाम् सवितेव चारु'** इस सूक्ति की व्याख्या की। व्याख्या करते हुए बच्चो को कहा **'हमें सूर्य के समान सुन्दर बनना चाहिए।'** अन्त मे एक भजन गया जिसके बोल थे **'आर्यसमाज ने भारत मा का सोया भाग्य जगाया।'**

दिनाक ७ ६ ०२ को प्रात ६ ०० बजे आर०बी०ई० के जे और जी ब्लॉक मे प्रभात फेरी निकाली गई। श्रीमती प्रेम छाबडा जी ने भजन प्रस्तुत किया 'आओ रलमिल सारे प्रभु गुण गाए।' तत्पश्चात् श्रीमती शाकुन्तला गुप्ता जी ने अपने प्रवचन मे अग्रेजी शब्द वाच की व्याख्या करते हुए कहा कि हमे अपने जीवन मे शब्द कर्म विचार चरित्र और स्वास्थ्य पर दृष्टि रखनी चाहिए। इसी दिन साय शिविरार्थी आर्यसमाज अनारकली मे गए। आर्यसमाज के मन्त्री श्री आर०एन० भल्ला जी ने बच्चो का स्वागत किया। आचार्य विजय पाल शास्त्री जी ने बच्चो को सरल शब्दो मे आर्यसमाज की जानकारी देते हुए कहा कि हमे श्रेष्ठ कार्य करते हुए आर्य बनना चाहिए। प्रिसिपल सावित्री चावला जी ने बच्चो को बताया कि हमे प्रार्थना क्यो करनी चाहिए।

शिविर के दिनो मे शिविरार्थी प्रात ५ ०० बजे उठकर नित्यकर्म करके योगाभ्यास करते थे। तदुपरान्त सध्या और यज्ञ करते थे। दिनचर्या मे शिविरार्थी के लिए सगीत कला अभ्यास स्वाध्याय चर्चा शका समाधान खेल यज्ञ विधि अभ्यास तथा भजन कहानी प्रश्न मच जैसी प्रतियोगिताओ का भी समय रखा गया था। इन सभी कार्यक्रमो के द्वारा बच्चो मे ईश्वर शक्ति स्वदेश स्वाभिमान माता-पिता तथा बडो के प्रति आदर भाव जगाने का सफल प्रयास किया गया।

दिनाक ८ ६ ०२ रविवार को आर्यसमाज मन्दिर पश्चिम विहार मे समापन समारोह का आयोजन किया। इस समारोह मे विचार प्रकट करते हुए श्री महेश विद्यालकार जी ने कहा कि हमे अपने मूल्यो को जानते हुए मनुष्य जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। हम इसे व्यर्थ न गवाए। श्री विश्वामित्र मेधावी जी ने अपने भाषण मे कहा कि बच्चो को उद्दण्डता त्यागकर नम्र तथा श्रद्धावान बनना चाहिए यही चरित्र निर्माण है। स्वामी जीवानान्द जी ने अपने प्रवचन मे सोच समझ कर कर्म करने की शिक्षा दी। उसके बाद शिविरार्थियो ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर आधारित 'राद् धर्म प्रसारक' लघु नाटिका को मचन करके प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आर्य कुमार सभा की स्थापना की। जिसका प्रमुख सिद्धार्थ गुप्ता और उप–प्रमुख कुश जैन को बनाया गया। श्री धर्मपाल आर्य जी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा ने दोनो बच्चो को रेशम का दुशाला ओढा कर सम्मानित किया। अध्यक्षीय भाषण मे श्री धर्मपाल आर्य जी ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि हमे ईश्वर की सर्वव्यापकता को ध्यान मे रखते हुए निरन्तर शुभ कार्य करने चाहिए। अन्त स्वामी जीवनानन्द जी के कम कमलो से बच्चो को पुरस्कार किए गए।

इस समारोह मे श्री रवि चढढा जी श्री लाजपत राय आर्य जी श्री राजेन्द्र दुर्गा जी श्री मनमोहन सलुजा जी श्री नवनीत अग्रवाल जी श्री बलदेव राज सेठ जी श्री महेन्द्र कुमार बूटी जी श्री नरेन्द्र आर्य जी श्री जगदीश आर्य जी श्री हीरालाल चावला जी श्री बी०एन० चौधरी जी आदि आर्य नेताओ ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढाई। शान्तिपाठ एव ऋषिलगर के साथ शिविर का सफल समापन हुआ।

क्या आप सुखी रहना चाहते हैं ?

देवराज आर्यमित्र

यदि आप सुखी रहना चाहते हैं तो निम्न प्रश्नों के उत्तर जाचते हुए आत्म निरीक्षण करो। आपका आचरण हा युक्त है तो निसन्देह आप स्वस्ति के पथ पर चल रहे हो और अवश्य कल्याण होगा –

क्या आप प्रतिदिन

१ **प्रात काल सूर्य उदय होने से एक घण्टा पूर्व नींद त्यागकर उठ जाते हो ?**

२ **प्रात उठकर ईश्वर का स्मरण करते हुए धन्यवाद करते हो।**

३ **प्रात उठकर मुह धोते हो और माता-पिता गुरुजनों से नमस्ते करके आशीर्वाद प्राप्त करते हो ?**

४ **भ्रमण करने जाते हो या व्यायाम करते हो ?**

५ **दात साफ करते हो, स्नान करते हो ?**

६ **प्रात सत्सग में जाते हो ? आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय करते हो ?**

७ **अपना काम (कर्तव्य) परिश्रम और ईमानदारी से करते हो ?**

८ **धूम्रपान/मद्यपान आदि कोई नशा तो नहीं करते हो ?**

९ **मीट, मछली, अण्डा से बचकर शुद्ध सात्विक भोजन करते हो ?**

१० **नाइलोन के चमकदार वस्त्रों का प्रयोग तो नहीं करते ?**

११ **घर में या बाहर किसी से ईर्ष्या द्वेष तो नहीं करते ?**

१२ **रात को दस बजे के बाद देर तक टी०वी० या फिल्म तो नहीं देखते ?**

इनके अतिरिक्त और भी अनेक बाते हैं जैसे ब्रह्मचर्य का पालन करना, यथा योग्य व्यवहार करना आदि। जीवन को सफल बनाने के लिए उपर्युक्त बाते सक्षिप्त में लिखी हैं। इनके अनुसार अपनी दिनचर्या बनाकर चलोगे तो अवश्य लाभ होगा और सुखमय रहोगे।

– आर्यसमाज कृष्णा नगर, दिल्ली-५१

पृष्ठ १ का शेष भाग

मूल भूमि पर ही हर्षोल्लासपूर्वक शिलान्यास

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व मे शिलान्यास यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमे केन्द्रीय श्रम मन्त्री डॉ० साहिब सिंह वर्मा एव प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा ने आहुतिया अर्पित की। सभा का सचालन करते हुए श्री विमल वधावन ने भारतीय सविधान के अनुसार अवैध धर्मान्तरण की गतिविधियो पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए देशव्यापी कानून की माग की। इस अवसर पर एक प्रस्ताव पारित किया गया जिसे मे तमिलनाडु सरकार द्वारा इस सम्बन्ध में जारी आध्यादेश का भी स्वागत किया गया।

समारोह की अध्यक्षता करत हुए कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि आर्यसमाज ने अपने स्थापना काल से ही बुराइयो के उन्मुलन के लिए कार्य किए हैं। आज जिस आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि का शिलान्यास किया जा रहा है वहा पर हम मानव निर्माण का महत्वपूर्ण दायित्व पूरा कर पाएगे।

इस कार्यक्रम मे प्रतिपक्ष के नेता श्री जगदीश मुखी सुभाष आर्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी आर्य नेता सर्वश्री जगदीश आर्य रामनाथ सहगल वीरेश प्रताप चौधरी राज सिह भल्ला तथा दिल्ली की समस्त आर्यसमाजो से बडी सख्या मे आर्यजन पधारे हुए थ।



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य सम्बोधित करते हुए एव मन्त्रमुग्ध होकर सुनते आर्यजन।

आर्यसमाज मिण्टो रोड की जन सभा मे

धर्मान्तरण पर देशव्यापी कानून की मांग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने आर्यसमाज मिण्टो रोड के शिलान्यास समारोह के अवसर पर केन्द्रीय शहरी विकास मन्त्री श्री अनन्त कुमार एव दिल्ली के पूव मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना की उपस्थिति मे एक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए देशव्यापी कानून की माग करते हुए कहा कि धर्मान्तरण पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगना चाहिए।

प्रस्ताव मे कहा गया कि लोभ लालच और दबाव के द्वारा एक पथ से दूसरे पथ मे देश के नागरिको को शामिल होने के लिए चलाए जा रहे धर्मान्तरण अभियान न केवल राष्ट्रद्रोही एव अखण्डता मे बाधक है अपितु सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशानुसार असवैधानिक भी है।

भारत का सविधान भारत मे रहने वाले नागरिको को धर्म की स्वतन्त्रता तो होता है परन्तु धर्मान्तरण की नहीं।

तमिलनाडु सरकार द्वारा धर्मान्तरण जैसी गतिविधियो को रोकने के लिए जो यह आदेश जारी किया गया है प्रस्ताव म इस महान कार्य के लिए प्रशसा की गई है।

प्रस्ताव मे हरियाणा सरकार से भी आग्रह किया गया है कि मेवात मे धर्मान्तरण के बढते दबाब के कारण पूरे हरियाणा मे भी ऐसा कानून लागू किया जाए।

उपस्थित आर्य जनता ने वैदिक जयघोष के साथ इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

दिल्ली की आर्यसमाजो के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज मयूर विहार, फेस-२, दिल्ली ९१

प्रधान	श्री चरनजीत लाल मोहन
मन्त्री	श्री हरबस लाल
कोषाध्यक्ष	श्री राम देव चोपडा

ईश्वरी देवी को पुत्र शोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की उप-प्रधाना श्रीमती ईश्वरी देवी धवन के सुपुत्र श्री अशोक का दिल्ली मे दुखद देहावसान हो गया। वे पिछले काफी समय से अस्वस्थ थे। उनका अन्तिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया।

श्री अशोक की स्मृति मे आयोजित शान्ति यज्ञ एक शोक सभा मे स्वामी दिव्यानन्द जी सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा उपप्रधान श्री चन्द्रदेव महामन्त्री श्री इन्द्रदेव डॉ० रविकान्त श्री वीरपाल वेदालकार श्री राजसिह भल्ला श्री पतराम त्यागी श्री रवि बहल आदि उपस्थित थे।

शोक सभा को सम्बोधित करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि 'क्रिया सस्कार का वास्तविक अर्थ है कार्य का करना। जिस व्यक्ति के दिवगत होने की क्रिया रस्म पूर्ण की जा रही है इसका अभिप्राय यह है कि उस व्यक्ति के अधूरे कार्यों को कौन पूरा करेगा ? जो व्यक्ति दिवगत आत्मा के वियोग से पीडित है वे सब उसके अधूरे कार्यो को पूरा करने के लिए उत्तरदायी हैं। उन सब व्यक्तियो का प्रतिनिधित्व बडे सुपुत्र के रूप में एक व्यक्ति करना है। शेष इस सकल्प के भागीदार है।

अत क्रिया सस्कार जैसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अवसर पर दिवगत आत्मा के कार्यों का चिन्तन होना चाहिए उनकी प्रशसा हो और सकल्प लिए जाए। ऐसे अवसर को रोकर गवा देना बडा सरल कार्य है परन्तु वैदिक सिद्धान्तो और बुद्धि के सदुप्रयोग से दूर है। रोने से अपने शरीर और आत्मा दोनो मे दुर्बलता भी आती है।

श्री विमल वधावन ने दिवगत आत्मा को सदगति एव शोक सतप्त परिजनो के लिए शान्ति की प्रार्थना की।

अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण संस्कार चैनल पर

समस्त आर्यजनो के लिए अत्यन्त हर्षकारक स्वास्थ्य दायक एव गौरवपूर्ण समाचार है कि आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी तपोनिष्ट सन्त नैष्ठिक ब्रह्मचारी आचार्य बलदेव जी के परम शिष्य गुरुकुल कालवा के स्नातक वेद व्याकरण व योग प्रकाण्ड विद्वान दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट) कनखल हरिद्वार के सस्थापक आर्ष गुरुकुल किशनगढ घासेडा (रेवाडी) के सचालक सिद्ध योगी परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज द्वारा योग की चमत्कारिक विधियो से उच्च रक्तचाप मधुमेह हृदय रोग मोटापा एसिडिटी कब्ज व सर्वाइकल जैसे खतरनाक रोगो से तुरन्त छुटकारा पाने तथा आत्म साक्षात्कार हेतु अष्टाग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण देखिए। ८ अक्तूबर मगलवार से प्रतिदिन साय ६.४० बजे ७.०० बजे तक सस्कार चैनल पर – ४५ दिनो तक।

— आचार्य सत्यवीर शर्मा, धर्माचार्य आर्यसमाज करोल बाग दिल्ली

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मुम्बई

प्रधान	श्री करसनदास जे० राणा
मन्त्री	श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय
कोषाध्यक्ष	श्री विजयकुमार गौतम

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, बिरला लाइन्स, दिल्ली-७

प्रधान	श्री रामनाथ सहगल
का०प्रधान	श्री हरवशलाल कोहली
महामन्त्री	श्री राजीव भाटिया
मन्त्री	श्री सरेन्द्र गुप्ता
कोषाध्यक्ष	श्री जी०पी० मालवीया

आर्यसमाज पानीपत

प्रधान	श्री कुलभूषण आर्य
मन्त्री	श्री नवनीत शिगल
कोषाध्यक्ष	श्री लक्ष्मी चन्द्र

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 17 18 10/2002 दिनांक १४ अक्तूबर से २६ अक्तूबर २००२ Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल 11024/2002 17 18/10/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

२११७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री मदनलाल खुराना

नैतिक दिल्ली, चरित्रवान दिल्ली का आह्

नई दिल्ली १४ अक्तूबर। दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री एव सदर ससदीय क्षेत्र के सासद श्री मदनलाल खुराना के ६७वे जन्मदिवस पर आज प्रात उनके निवास पर दीर्घायु कामना यज्ञ आर्यसमाज द्वारा किया गया। श्री मदनलाल खुराना एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राज खुराना तथा सुपुत्र श्री विमल खुराना एव पुत्र वधु श्रीमती वन्दना खुराना ने इस यज्ञ मे आहुतिया प्रदान कीं।

आर्यसमाज के पुरोहित डा० कर्णदेव शास्त्री एव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा श्री चन्द्रदेव श्री राज सिह भल्ला श्री जगदीश आर्य एव दिल्ली सभा के महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव ने श्री खुराना को दीर्घायु एव उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाए दी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन ने श्री खुराना को शुभकामनाए देते हुए कहा कि यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि "जो जैसा करता है वैसा भरता है। आपका जैसा इतिहास रहा है वैसा ही भविष्य भी होगा।

उन्होने श्री खुराना को प्रेरणा देते हुए कहा कि स्वय आर्य (श्रेष्ठ) बनने तथा समाज को भी श्रेष्ठ बनाने का सकल्प आपने यज्ञ के दौरान लिया। यदि जनता के पालन की महत्वपूर्ण जिम्मेवारी अपने कन्धो पर लेनी हो तो केवल भौतिकवादी सुख सुविधाए उपलब्ध कराकर ही समस्त जनता का मन पूरी तरह जीतना सम्भव नहीं। दिल्लीवासियो मे आध्यात्मिक प्रेरणाए उत्पन्न करने के लिए यदि कोई राजनीतिक दल अभियान चलाए तो यह अभूतपूर्व होगा। अत श्री खुराना को नैतिक दिल्ली चरित्रवान दिल्ली का उत्तम अभियान चलाना चाहिए।


श्रीमती एव श्री मदनलाल खुराना अपने निवास पर यज्ञ करते हुए।

श्री मदनलाल खुराना ने भी इस प्रेरणा को यज्ञ के दौरान ही स्वीकार करते हुए उपस्थित आर्यजनो को आश्वासन दिया कि वे एक सुन्दर आध्यात्मिक अभियान चलाकर दिल्लीवासियो के जीवन का उत्थान करने के लिए आजीवन अपने हर कर्त्तव्य का पालन करने का प्रयास करेगे।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५ अक ४४ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार, २१ अक्तूबर से २७ अक्तूबर २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

दिल्ली में ३ नवम्बर, २००२ रविवार को भव्य आयोजन

आर्यसमाज देहली की स्थापना के 125वें वर्ष का शुभारम्भ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक मे सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा द्वारा **आर्यसमाज देहली की स्थापना के १२५वे वर्ष के शुभारम्भ** पर भव्य समारोह को रूपरेखा की स्वीकृति प्रदान की गई।

मुम्बई मे १८७५ ई० मे आर्यसमाज की स्थापना के बाद महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कई बार दिल्ली पधारे। सन १८७८ मे महर्षि जी का प्रवास दिल्ली में ३ अक्तूबर से ६ नवम्बर तक रहा। इस प्रवास के दौरान **३ नवम्बर १८७८** को **आर्यसमाज देहली** के नाम से दिल्ली मे इस पवित्र आन्दोलन को विधिवत एव सस्थागत रूप मे स्थापित की गई।

यह स्थापना महर्षि दयानन्द जी ने अपने करकमलो से आर्यसमाज देहली के नाम से की। आगामी **३ नवम्बर २००२ (रविवार)** को आयसमाज देहली अपने १२५व वर्ष मे प्रवेश करेगी। इस एनिहासिक अवसर का भव्य समारोह के रूप मे मनाए जाने का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है।

३ नवम्बर २००२ की प्रात वेला मे ७ बजे से ८ बजे तक यज्ञ का आयोजन **आर्यसमाज आर्य कन्या हायर सैकेण्डरी विद्यालय चावडी बाजार दिल्ली** मे किया जाएगा। यह विद्यालय उसी पवित्र स्थान पर स्थापित किया गया था जहा आज से १२५ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज देहली की स्थापना के लिए दिल्ली प्रवास के दौरान अपने प्रमुख अनुयायियो को प्रेरित किया था।

इस यज्ञ के **ब्रह्मा वयोवृद्ध आर्य नेता श्री राजसिह भल्ला** होगे।

यज्ञ के उपरान्त प्रात ८ बजे उपस्थित आर्यजन चावडी बाजार से आर्यसमाज ग्रीन पार्क नई दिल्ली की ओर यज्ञ ज्योति को लेकर प्रस्थान करेगे।

यह यज्ञ ज्योति यात्रा चावडी बाजार से चलकर नई सडक घण्टाघर दीवान हाल चान्दनी चौक लाल किला सुभाष मार्ग दरियागज दिल्ली गेट तिलक ब्रिज इण्डिया गेट शाहजहा रोड तुगलक रोड सफदरजग पुल के ऊपर से बाई ओर पुल के नीचे से नोरोजी नगर राजनगर चौक से होती हुई आर्यसमाज मन्दिर ग्रीन पार्क नई दिल्ली पहुचेगी।

आर्यसमाज ग्रीन पार्क के विशाल दो मजिला सभागार मे मुख्य कायक्रम आयोजित किया गया ह। आयसमाज मन्दिर ग्रीन पार्क के **प्रधान श्री वेदपाल खन्ना मन्त्री श्री कर्मचन्द नन्दवानी** समस्त सभासद एव सदस्य दिल्ली की आर्य जनता का स्वागत करने के लिए कृत सकल्पित है। **प्रात १० बजे** से प्रारम्भ होने वाले इस ऐतिहासिक समारोह मे आर्य नताओ एव विद्वानो के उदबोधन के अतिरिक्त वयोवृद्ध आर्य सेनानियो का सम्मान एव समस्त आयसमाजो को **उज्ज्वल भविष्य की प्रेरणा के प्रतीक** चिह्न प्रदान करना **दो प्रमुख आकर्षण** हागे।

इस समारोह के उपरान्त आयसमाज ग्रीन पार्क की आर स ऋषि लगर की व्यवस्था की गइ ह।

इस ऐतिहासिक समारोह स सम्बन्धित अधिक जानकारी तथा वयोवद्ध आय सनानियो क नाम सूचित करने के लिए निम्न महानुभाव म स किसी से भी सम्पर्क कर

वेदव्रत शर्मा	**वैद्य इन्द्रदेव**	**पुरुषोत्तम लाल गुप्ता (द०)**
सभा प्रधान	सभा महामन्त्री	सभा कोषाध्यक्ष
२३७१६१५	३६५१२८५	६८३४८७२
नरेन्द्र आर्य (प०)	**मदन मोहन सलूजा (प०)**	**जगदीश आर्य (प०)**
५४५७७५५	५४६३६४२	५४३६८२
पतराम त्यागी (पू०)	**रवि बहल (पू०)**	**विश्वम्भर नाथ अरोडा (पू०)**
२४६२३२१	२४१२४२६	२४६६५७७
राजसिह भल्ला (के०)	**कीर्ति शर्मा (के०)**	**राजीव भाटिया (के०)**
७२३२६१८	५७५८०३५	३७४२२५१
रोशन लाल गुप्ता (द०)	**सत्येन्द्र मिश्र (द०)**	**वेदपाल खन्ना (द०)**
२४११७४०	६५४६७७४	६८५६६४७
राजेन्द्र आनन्द (उ०प०)	**भजन प्रकाश आर्य (उ०प०)**	**महाशय रामविलास खुराना (उ०)**
७१८४४४३	७०१७७८०	७२१६३६७
गोपाल आर्य (उ०)	**जयकृष्ण आर्य (उ०)**	**शशि प्रभा आर्या** (महिला)
३६७१२४६	२६११७२६	५४३६८२८
जगदीश वर्मा (उ०प०)	**विनय आर्य** (सचालक आर्य वीर दल)	**राजेन्द्र दुर्गा (उ०प०)**
५२६०२३१	५०४६६६६	५२६४३३३
अजय भल्ला (प०)	**अभिमन्यु चावला (पू०)**	**रमेश डाबर (उ०)**
६८६५६६८	२२८८२६३	७४४५०५०

वयोवृद्ध आर्य सेनानी सम्मान

दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजो को सूचित किया जाता है कि अपनी अपनी आर्यसमाज से सम्बन्धित उन महान आत्माओ (पुरुष/माताओ) के नाम पते दूरभाष हमे तुरन्त उपलब्ध कराए जिनकी आयु ८५ वर्ष से ऊपर हो चुकी है और जिन्होने अपने जीवन मे आर्यसमाज की उल्लेखनीय सेवा की है।

ऐसे महान् आर्य पुरुषो और माताओं को इस ऐतिहासिक समारोह मे 'वयोवृद्ध आर्य सेनानी सम्मान' से विभूषित किया जाएगा। इन महान् आत्माओ से प्रार्थना है कि वे ३ नवम्बर, २००२ (रविवार) को प्रात १० बजे से १ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर ग्रीन पार्क, नई दिल्ली में आयोजित इस समारोह में अपने परिजनो एव इष्टमित्रो सहित उपस्थित होने की कृपा करें।

भावी प्रेरणा प्रतीक चिह्न

दिल्ली की प्रत्येक आर्यसमाज के प्रधान/मन्त्री या किसी अन्य अधिकृत पदाधिकारी को यह भव्य प्रतीक चिह्न भेट किया जाएगा।

आर्यसमाजो के पदाधिकारियो से निवेदन है कि वे अधिक से अधिक सख्या मे पहुच कर समारोह स्थल पर गठित विशेष **प्रेरणा प्रतीक** कक्ष मे अपनी उपस्थिति दर्ज करवाए जिससे उन्हे मच पर आमन्त्रित करके यह प्रतीक चिन्ह उन्हे भेट किए जा सके।

दिल्ली मे आर्यसमाज के १२५ वर्षो के गौरवशाली इतिहास की स्मृति एव भविष्य की प्रेरणा के रूप मे प्रतीक चिह्न प्रत्येक आर्यसमाज मन्दिर के लिए तैयार करवाए गए हैं।

व्यवहार से विशेष प्रतिभा की प्राप्ति

– आचार्य भगवानदेव वेदालकार

व्यवहार से अभिप्राय

प्राचीनकाल से आज तक हमारे समाज मे व्यक्तिगत जीवन मे **व्यवहार** की आवश्यकता सर्वदा रही है। हमार ऋषि महर्षि पूर्वज बडे व्यावहारिक थ। उनका मानना था कि **व्यवहारेण हीना पशुभि समाना** अर्थात व्यवहारहीन मानव पशुओ के समान है। हमारा यह आर्यावर्त्त देश व्यवहार मे सर्वश्रेष्ठ रहा है। महर्षि मनु घोषणा करते है

एतद देश प्रसूतस्य शकासाद अग्रजन्मना।
स्व स्व चरित्रान शिक्षेरन पृथिव्या सर्वमानवा।।

अर्थात सम्पूर्ण भूमण्डल के लोग यहा के रहने वाले विद्वान आचार्यो स अपने व्यवहार की चरित्रो की शिक्षा लेने के लिए आते रहे है। व्यवहार का अभिप्राय है **जो हम एक दूसरे के विचारो का शिष्टाचार का आदान प्रदान करते हैं। जिसके माध्यम से हम एक दूसरे को अच्छी प्रकार से समझते है।**

व्यवहार एक कसौटी

व्यवहार अच्छे बुरे को समझने की एक कसौटी हे अच्छे व्यवहार क दपण मे ही उत्तम व्यक्तित्व का निमाण सम्भव है।

महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा

आधुनिक युग क महान शिक्षाशास्त्री आचार्य दयान्न्द जी ने भी सातव नियम मे हमारा व्यवहार दूसरो के साथ कैसा हाना चाहिए ? विषय पर स्पष्ट लिखा है –

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए अर्थात ऐसा किस मनुष्य का आत्मा होगा कि जो सुखो को सिद्ध करने वाले व्यवहारो को छोडकर उल्टा आचरण करने मे प्रसन्न होगा। क्या यथायोग्य व्यवहार किए बिना किसी को सर्व सुख हो सकता है ? क्या मनुष्य अच्छी शिक्षा से धर्म अर्थ काम और मोक्ष फलो को सिद्ध नहीं कर सकता और इसके बिना पशु के समान होकर दु खी नहीं रहता है ? इसीलिए सब मनुष्यो को सुशिक्षा से सुन्दर और शिष्ट व्यवहार से युक्त होना चाहिए।

मनुष्यो मे मनुष्यपन यही है कि सर्वदा झूठ व्यवहारो को छोडकर सत्य व्यवहारो का सदा ग्रहण करे क्योकि सर्वदा सत्य की ही विजय और झूठ का पराजय होता है। इससे वे मनुष्य धन्य है जो सब व्यवहारा को सत्य से ही करते है और झूठ से युक्त कम किंचितमात्र भी नही करते है।

सन्त कबीर भी सत्य के व्यवहार को श्रेष्ठ मानत है –

साच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साच है ताके हृदय आप।।

हमारी वदिक सस्कृति के महान धरोहर वद शास्त्रो मे (हमारा व्यवहार दूसरो के साथ केसा हो ?) विस्तार स उल्लख किया गया है। विशेषकर अथववेद मे भग्वान आदश करते हे **हे मनुष्यो ! तुम एक दूसरे से विरोध मत करो वैर करना छोड दो परस्पर प्रेम और प्रीति से व्यवहार करो।**

वेदो मे व्यवहार की शिक्षा

सहृदय सामनस्यम अविद्वेष कृणोमि व।
अन्यो अन्यम अभिहर्यत वत्स जातम इव अघ्न्या।।
अथर्ववेद ३–३०–१

अथात तुम लाग आपस मे एक दूसरे से ऐसा प्रेम का व्यवहार करो जेसे नवजात शिशु बछडे को गो प्रेम करती है।

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजो की भाति तुम कर्त्तव्य के भागी बनो।

हो विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हू बराबर भोग्य पा सब नेक हों।।

हो सभी के दिल तथा सकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हो प्रेम से जिससे बढे सुख सम्पदा।।

इस प्रकार वेद की ऋचाए भी हमे यही शिक्षा दे रही हैं कि एक दूसरे का परस्पर एक दूसरे से प्रीतिपूर्वक व्यवहार होना चाहिए।

व्यवहार मे वाणी का प्रभाव

व्यवहार मे वाणी का प्रयोग बहुत ही सोच विचार कर करना चाहिए। कडवी वाणी के प्रयोग से ही महाविनाशकारी महाभारत का युद्ध हुआ इसलिए व्यक्तित्व के निर्माण मे **मधुर वाणी का व्यवहार** प्रभावकारी होता है।

सन्त कवियो का भी ऐसा ही विचार है –

तुलसी मीठे वचन से सुख उपजत चहु ओर।
वशीकरण इक मन्त्र है तज दे वचन कठोर।।

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करे आपुहि सीतल होय।।

मधुर वचन है औषधि कटुक वचन है तीर।
श्रवन पन्थ से लगत है सालत सकल सरीर।।

कागा किस का धन हरै कोयल किसको देत।
इक वाणी के कारणे जग अपना कर लेत।।

व्यवहार से ही मित्र और शत्रु

महान पुरुषो के इन अनुभवो से यह सिद्ध होता है कि मनुष्य के अच्छे व्यवहार से उसके अच्छे सहयोगी मित्र पैदा हो जाते है और उसके दुर्व्यवहार से अनेक शत्रु भी बन जाते है। उदाहरण के लिए – व्यक्ति दूसरो को कष्ट देने वाला कार्य न करे। अच्छे साधनो से धन कमाए और अच्छे ही कामो पर खर्च करे। दूसरो क प्रति सहानुभूति दया तथा करुणा का बर्ताव करे। परोपकार की भावना रखे। अपने जीवन मे स्वावलम्बी बनकर अपने कार्य स्वय करने की आदत डाले। अपने माता पिता गुरुजनो के प्रति सेवा सम्मान का विचार रखे। ईमानदारी परोपकार सत्य बोलना आदि गुण सदाचार रूपी माला के मोती है। नम्रता बडा भारी गुण है। हमारा व्यवहार विनम्रता से युक्त होना चाहिए।

उत्तम व्यवहार स एक विद्यार्थी अध्यापक किसान अथवा व्यापारी अपने व्यक्तित्व का निर्माण कैसे कर सकता है ? व्यक्तित्व निर्माण मे भी उसका अपना श्रेष्ठ व्यवहार एव अर्जित गुण उसको आगे बढाते है जिनसे उसका व्यक्तित्व बनता है।

उत्तम व्यवहार से व्यक्तित्व का निर्माण

शिष्टाचार अपनाए

अपने जीवन मे व्यक्ति शिष्टाचार और शालीनता के गुणो को अपनाए। अपनी बातचीत मे जी जी हा जी नही सर यस सर जी मैडम थैंक्स आप लीजिए आप बैठिए जैसी शिष्ट शब्दावली का प्रयोग करे। किसी के साथ अशिष्ट क्रोध युक्त भाषा का प्रयोग न करे।

दूसरो को सम्मान देकर प्रतिष्ठा बनाए

सस्था मे आपकी योग्यता प्रतिभा और सफलता दूसरो से होती है। आजकल दूसरो से काम लेना एक कुशलता का कार्य समझा जाता है आप भी दूसरो को महत्त्व देकर उनसे सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए सस्था के प्रत्येक कर्मचारी को उसके गौरव गरिमा के अनुसार मान प्रतिष्ठा दे। इससे वे आपके समर्थक और भक्त हो जाएगे।

समर्पित भावना से कार्य करके प्रतिष्ठा प्राप्त

आप जहा भी हैं अपनी कार्य कुशलता से अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहे। किसी भी काम को कभी भी कहीं भी छोटा न समझे। बल्कि आप लक्ष्य से अधिक काम करके दिखाए। इससे आप दूसरे के लिए प्रेरणा और आदर्श के केन्द्र बनेगे।

स्वभाव में सरलता लाकर व्यक्तित्व निर्माण

आकर्षक व्यक्तित्व के लिए जरूरी है कि आप अपने आपको दूसरो से अलग भिन्न श्रेष्ठ कुछ विशिष्ट न समझे बल्कि सरल–स्वभाव बने। यदि आप साधन सम्पन्न हैं प्रतिभाशाली हैं तो इसका लाभ दूसरो को भी देते रहे। – शेष भाग पृष्ठ ८ पर

बोध कथा

प्रेम से दिया न्योता

बारह वष के वनवास ओर एक वर्ष के अज्ञातवास के बाद जब पण्डवो ने अपने राज्य की माग की तब दुर्योधन ने वह माग ठुकरा दी। पाण्डवो का न्याय दिलाने के लिए श्रीकृष्ण दूत बनकर कारवो के यहा गए तब बाह्य शिष्टाचार दिखलाते हुए दुर्योधन ने श्रीकृष्ण को भोजन के लिए आमन्त्रित किया। कारण पूछन पर श्रीकृष्ण न कहा दो ही अवस्थाओ मे भोजन का न्योता स्वीकार किया जाता है एक तो जब भूख के कारण प्राण निकल रहे हो ऐसे मे जो कुछ भी मिले उसे वह स्वीकार करता है दूसरे जब न्योता देने वाले से गहरा प्रेम हो तो वहा भोजन करके गहरी प्रसन्नता होती है। यहा दोनो ही बाते नही है आप म प्रेम का भाव तो है नही दूसरे मे भी भूख के कारण व्याकुल नहीं हू, इसलिए धन्यवाद। कहकर श्रीकृष्ण चल गए और महात्मा विदुर के यहा भोजन करने चले गए।

श्रीकृष्ण को भीष्म द्रोणाचार्य और कृपाचार्य आदि ने भी घर चलकर भोजन करने के लिए कहा परन्तु उन्होने किसी का निमन्त्रण स्वीकार नही किया। उस दिन उन्होने दोपहर का भोजन महात्मा विदुर के यहा किया और स्नेह तथा सम्मान का नया नमूना प्रस्तुत कर दिया।

& नरेन्द्र

हम श्रेष्ठ बने मातृभूमि मगलमयी हो

बलिदान के लिए प्रस्तुत रहें

श्रेष्ठा भूयास्म।

अथर्व० १२ ४ ८७

हम श्रेष्ठ बने

स्वस्ति भूमे नो भव ।

अथर्व० १२ १ ३५

मातृभूमि हमारे लिए मगलमयी हो।

वय तुभ्य बलिहृत स्याम।

अथर्व० १२ १ ६२

हम तुम्हारे लिए बलि के लिए प्रस्तुत हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

राष्ट्र की सुरक्षा : श्रेष्ठ शासन द्वारा

नौ सितम्बर के दिन हावडा राजधानी एक्सप्रेस भीषण दुर्घटना का शिकार हुई थी। रेलवे की प्रारम्भिक जाच के अनुसार हावडा एक्सप्रेस की दुर्घटना का कारण तोड फोड की कार्यवाही थी। इस दुर्घटना मे ११६ लोग मारे गए थे और १५४ घायल हुए थे। रेलो के सुरक्षा आयुक्त न ३ अक्तूबर को अपनी प्रारम्भिक जाच रिपोर्ट प्रस्तुत की। दुर्घटना के दूसरे दिन रेल बोर्ड के अध्यक्ष ने घटना स्थल का दौरा करने के प्रथम दृष्टि मे मामला तोड फोड का कहा था। लगभग इसी घटना के आस पास नहीं लगभग एक महीने बाद ३ अक्तूबर भारत राष्ट्र की सीमा मे अज्ञात विमान घुसे। एक विमान ने तालाब मे दो बोरिया गिराई। इस क्षेत्र की पचायत की अध्यक्षा नमिता राय न सूचना दी कि बोरिया गिरने से तेज धमाका हुआ और पानी का रग नीला हो गया। पुलिस ने तलाशी ली यद्यपि कोई आपत्तिजनक सामान नही मिला। घटनाक्रम बडी तेजी से बदला फलत एक के बाद एक परस्पर विरोधी समाचार मिलते रहे। यदि यह घटना सच है तो देश की वायुसीमा की सुरक्षा को धता बताकर १९९५ के पुरलिया काण्ड जैसी घटना की पुनरावृत्ति की गई। नीति का सत्परामर्श ही दण्डनीति अधितिष्ठन प्रजा सरक्षति जो शासक दण्ड का ठीक प्रयोग करता है वह प्रजा की रक्षा करता है दण्ड से ही राष्ट्र के ऐश्वर्य की रक्षा होती है दण्ड का समुचित प्रयोग न हो तो अच्छे सलाहार भी नहीं मिलते। राष्ट्र शासन की समुचित रक्षा के लिए व्यवस्थित दण्डनीति आवश्यक है परन्तु दण्ड का प्रयोग कठोरता से न किया जाए क्योकि उस स्थिति मे सभी लोग विरोध करने लगेगे। भारत राष्ट्र को आज चाणक्य और सरदार पटेल सरीखे श्रेष्ठ प्रशासको **की आवश्यकता है। गुरु चाणक्य** वस्तुत अच्छे मन्त्री **साहसी सेनानी और नीति-निपुण** शासक थे। उनमे **राजनीति की दूरदर्शिता और श्रेष्ठ** व्यवहार का **व्यवस्थित सतुलन था।**

यद्यपि ये **घटनाए छोटी एव क्षणिक** परिणाम देने वाली **हैं** परन्तु **उनसे राष्ट्र** की सुरक्षा एव व्यवस्था को **चुनौती देने वाले अस्थायी** और स्थायी सकटो की **अनुभूति अवश्य होती** है। नई सहस्राब्दी मे भारत की राजनीतिक स्वाधीनता के ५५ वे वर्ष मे इस तरह की घटनाए सारे राष्ट्र को कह रही है कि इन घटनाओ का घटना ही चेतावनी दे रहा हे कि हमारा भारत राष्ट्र सुरक्षा की दृष्टि से पूर्ण सुरक्षित नही है। अधिक अच्छा होगा यदि इन घटनाओ से चिन्तित न होकर उनसे जनता देश के राजनीतिज्ञ और प्रशासक अधिक सतर्क होकर राष्ट्र रक्षा क स्थायी तत्वो – व्यवस्थाओ का पुनर्मूल्याकन करे और राष्ट्र की रक्षा के सामयिक और स्थायी सगठनो और स्थिति को इतना सुदृढ व्यवस्थित और निर्दोष करे कि उन्हे कोई भी तत्व शक्ति अर सगठन चुनौती न दे सके। यह कार्य छोटा न होकर एक व्यवस्थित सुशासन की उपयोगित की। समुचित परीक्षा का लखा जाखा है। हमे स्मरण रखना हागा कि यद्यपि भारतीय राष्ट्र ने विदेशी शासको को भारत छोडने क लिए बाध्य किया था परन्तु वे देश छोडते समय उसक दानो बाजू पृथक राष्ट्र के रूप मे बाट गए थे। यह भी चिन्ता की बात है कि १९७१ मे निर्णायक जीत के बावजूद हम पृथक हुए दोनो प्रदेशो या एक भी प्रदेश के राष्ट्र के साथ मे सयुक्त करने मे कृतकाय नही हो सके थे। नई सहस्राब्दी मे भारत राष्ट्र के सम्मुख पुरानी चुनौतिया तो हे ही उनके साथ छोटी बडी घटनाए भी समय समय पर होकर हमे सतर्क करती रहती हैं कि हिमालय से लेकर समुद्र तक और पूर्व और पश्चिम मे समुद्रो से घिरे भारत राष्ट्र को पूर्ण व्यवस्थित समुन्नत और सयुक्त बनाने के लिए राष्ट्रीय नेताओ और कोटि कोटि जनता को सम्बद्ध पक्षो की सहानुभूति और सहयोग की अपेक्षा अपने ही व्यवस्थित लक्ष्यो कार्यक्रमो और कोटि कोटि देशवासियो के सगठित प्रयत्नो पर भरोसा करना होगा।

ये कार्यक्रम और लक्ष्य आज कठिन प्रतीत हो सकते है परन्तु यदि देश के सुधी नेतागण प्रमुख **राजीनतिक** दल और सामान्य जनता यह समझ ले **कि** राष्ट्र की सुरक्षा और उसका भावी स्वरूप किसी दूसरे पक्ष की सदभावना और सहयोग पर अवलम्बित नही है उन्हे चिन्तन कार्यक्रम और भावी योजना के कार्यान्वयन के लिए देशवासिया को पुन सगठित और गतिशील होना पडेगा जैसा कि विदेशी शासन के दिनो मे हमारी नियति थी। देश की वर्तमान समस्याओ कार्यक्रमो और योजनाओ को व्यावहारिक स्वरूप देना और भावी मार्गदर्शन करने के लिए राष्ट्र क चिन्तको विचारको और जन नेताओ का पहला दायित्व है। हम दूसरो की आलोचनाओ और दोषो की छानबीन न कर एसा प्रयत्न करे कि नई सहस्राब्दी मे भारत राष्ट्र के अस्तित्व सुरक्षा और उज्ज्वल भविष्य दे सके। यह कायक्रम एव योजना अभी चिन्तन के क्षेत्र मे हा सकती ह परन्तु इस सम्बन्ध मे यदि देश के विचारक राजनीतिज्ञ पत्रकार और नागरिक स्थिति भी गम्भीरता समझे तो वर्तमान उलझनो कठिनाइयो और कार्यक्रमो को अधिक व्यवस्थित स्वरूप दिया जा सकगा। भारत राष्ट्र के सम्मुख कोइ ज्वलन्त समस्या कठिनाई और चुनौती न हो यह कहना व्यावहारिक नही हे राजधानी एक्सप्रेस की भीषण दुघटना ओर राष्ट्र के सीमावर्त्ती प्रदशो मे विदशी विमानो द्वारा जल मे विस्फोटक तत्वो की वृष्टि की घटनाए हम चेतावनी दे रही हे वे राष्ट्र की सुरक्षा के लिए खतरा बन सकती है एसी घटनाओ की उपेक्षा न कर उनस समय पर सीख लेकर राष्ट्र की सुरक्षा ही नही प्रत्युत उसके स्थायी भविष्य को सुदृढ करन के लिए सभी देशवासियो राजनीतिज्ञो न समय रहते अधिक सतर्क व्यवस्थित और उत्तरदायी बनना होगा और किसी स्थायी कार्यक्रम की योजना को व्यावहारिक स्वरूप देना चाहिए।



जान की कीमत : ७५० रुपये

सलमान को शायद सुर्खियो मे आने का शौक है। कभी पत्रकारो से गाली गलौच और हाथा पाई। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपना व्यक्तिगत स्तर खो चुके हैं। हाल ही मे नशे मे धुत होकर उन्होने आदमी को अपनी कार से नीचे फेक दिया और हमारी लचर कानून व्यवस्था के देखिए कि मात्र ६५० रुपये मे दोषी सलमान को जमानत दे दी यानी एक निर्दोष की जान भी कीमत मात्र साढे नो सौ रुपये। हमारी न्यायव्यवस्था इतनी लचर है कि अपराध कितना ही गम्भीर क्यो न हो निर्णय से पहले ही अपराधी के रास्ते साफ हो जाते हैं।

हमारी कानून व्यवस्था मजबूत होती तो आज दाऊद इब्राहीम एव अबू सलेम जैसे माफियो का अस्तित्व नहीं होता।

– कृष्णा शर्मा किग्जवे कैम्प दिल्ली

कब लौटेगा अमन-चैन ?

गुजरात की राजधानी गाधीनगर स्थित प्रसिद्ध 'अक्षरधाम मन्दिर' मे आतकवादियो द्वारा निर्दोष एव निहत्थे लोगो की हत्या अत्यन्त निन्दनीय घृणित एव कायरतापूर्ण कार्रवाई है। गोधरा काण्ड गुजरात के दगे और अब मन्दिर पर हमला आखिर गुजरात में अमन चैन कब लौटेगा ? जहा गुजरात मे अहिसा के पुजारी महात्मा गाधी का राम नाम गूजा था आज वहा दर्द भरी चीखे सुनाई पड रही हैं। धर्म के नाम पर यह हिसा कैसी ? मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे और चर्च सभी शान्ति के प्रतीक हैं। इन सिर फिरे लोगो पर लगाम लगाना बहुत जरूरी है। यह सुनहरी दुनिया प्रकृति की देन है। प्रकृति का आनन्द ही हमारा लक्ष्य हो फिर यह खून खराबा क्यो ? गुजरात के मधुर सुनहरी दिनो का लौटना कहीं सपना न बन जाए आइए सभी मिलकर देश मे अमन चैन के लिए धीरज का परिचय देते हुए अपना सहयोग दे।

– तेजेन्दर पाल कौर पलवल (फरीदाबाद)

अथर्ववेद से हिरण्यादेश सप्तकम

पति के लिए हितकर व सुन्दर आदेश

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) विवाह के बाद पति को अधिक शिष्ट व्यवहार तथा दान करना चाहिए

परादेहि शामुल्य ब्रह्मभ्यो विभजावसु।
कृत्यैषा पद्वतीभूत्वा जाया विशतेपतिम।।

अथर्व १४–१–२५

सूर्यासावित्री। नृणा विवाहमन्त्राशिष । अनुष्टुप।

अर्थ – (एषा जाया) यह पत्नी (पद्वती कृत्या भूत्वा) मानेक्रिया शक्ति पाव धारण करके (पति विशत) पतिगृह म प्रवेश करती है। अत अब (शामुल्य परादेहि) शाति भग करने वाले कटुभाषण कठार शासन दीघ सूत्रता आदि व्यवहारो को घर से बाहर कर दो और (ब्रह्मभ्य वसुविभज) यज्ञादि शुभ कर्मो की समाप्ति पर दक्षिणा रूप मे ब्रह्मवेत्ताओ को धन दान ओर परिवारजनो को मिष्टान्न दान आदि कार्यो को प्रारम्भ कर।

निष्कर्ष – (१) विवाहोपरान्त पत्नी के घर मे आ जाने के बाद मित्रो के साथ होहुल्लड आदि उच्छृखता छोडकर यज्ञ प्रीतिभाज आदि का व्यवहार बढा देना चाहिए।

(२) विलोम सभोग सन्तान के लिए दाहजनक ओर मलिनता जनक रोगा को देने वाला हे। अत इसका सदा परित्याग रखना चाहिए।

अथपोषण शामुल्यम – मलधारक वस्त्रमी । सूयकान्त शान्तिदाहक व्यवहार – प्रो० विश्व

कृत्या–क्रियाशक्ति प्रो विश्वनाथ अभिचार क्रिया सूर्यकान्त व्यभिचार स न्यूनतर पाप।

(२) पति को चाहिए कि वह पत्नी का ऐसा पालन पोषण करे कि वह शतायु बने

ममेयमस्तु पोष्या मह्यत्वादादबृहस्पति ।
मया पत्या प्रजावति त्व जीव शरद शतम।।
सूर्या सावित्री। आत्मदैवत्यम। अनुष्टुप।

अथर्व १४–१ ५२

अर्थ हे सूर्या सम तेजस्वती ओर सावित्री सम सती पत्नी! (मह्यत्वा बृहस्पति अदात) मेरे लिए तुझ बृहस्पति परमात्मा की प्रेरणा से उसके प्रतिनिधि तेरे पिता ने प्रदान किया हे अत (इय मम पाष्या अस्तु) यह मेरे लिए सवथा पोषणीया हे मै सदा प्रयत्न करूगा कि यह जीवन पयन्त सर्वथा पाषणीया रहे। हे सूर्यासावित्री (त्व मया पत्या प्रजावति) तू मुझ पति के द्वारा सन्तावती हा और सुखपूर्वक पुष्ट होती हुई (शरद शतजीव) सौ वर्ष तक जीवित रह।

निष्कर्ष विवाह के समय पति पत्नी को सब प्रकार के पाषण और सन्तानात्पत्ति का आश्वासन देता है। यदि इन आश्वसनो म व्याधात हो तो उसे दूसर व्यक्ति–देवर–द्वितीय वर से सन्तान उत्पन्न करने का अधिकार है।

अर्थपोषण – बृहस्पति – ब्रह्म (परमात्मा) वै बृहस्पति । मे० २ ३–५

बृहस्पति – वीय वै बृहस्पति । मै० ४–४–५ अत वीर्यप्रदाता पिता भी बृहस्पति है।

(३) सास सुसर को चाहिए वे अपनी सन्तान को मनमुटाव व दूर करने की प्रेरणा दे

उत्तिष्ठेतो विश्ववसो नमसेडामहेत्वा।
जामिमिच्छ पितृषद न्यक्ता स ते भागो जनुषा तस्य विद्धि।। *अथर्व १४–२–३३*

सूर्या सावित्री। आत्मदैवत्यम। पुरोबृहती।

अर्थ – हे (विश्वा वसो) निवास के लिए आवश्यक सब वस्तुओ से सम्पन्न पुत्र ! हम (त्वा नमसा ईडामहे) हम विनयपूर्वक तुझसे प्रार्थना याचना करते है कि (इत उतिष्ठ) इस शोकाकुल अवस्था से ऊपर उठ और (न्यक्ता पितृषद जामि इच्छ) अपमानित होकर निश्चय पूर्वक तुझ छोडकर पितृगृह मे रहने वाली अपनी पत्नी की चाहकर – उसके पास जा और उसे मनाकर ला (जनुषा) सन्तानोत्पत्ति के निमित्त (स ते भाग) वही तेरे भाग्य मे लिखी हे (तस्य विद्धि) इस तथ्य को अच्छी तरह से जान ले। क्योकि तू उसे चाहता है और वह तुझे चाहती है।

निष्कर्ष – पति पत्नी मे मनमुटाव होता रहता है उनके माता पिता का कर्तव्य है कि ऐसा होने पर वे अपने पुत्र या पुत्री को समझा बुझाकर उनकी नाराजगी को दूर करे न कि उन्हे तलाक के लिए भडकाए। विवाह का बन्धन अटूट है। इस बन्धन मे बधने के बाद परस्पर अपना भाग्य मानकर जीवन पर्यन्त निर्वाह करना चाहिए।

अर्थपोषण – यत्काम–नि– (निश्चयपूर्वक) अत्काम अञ्जुगतौ जनुषा जननम सन्तानोत्पादम हे तौ तृतीया।

(४) विवाह के बाद पति को चाहिए कि वह तप और भोग का मध्यमार्ग चुने

श तप माति तपो अग्ने मा तन्व तप ।
वनेषु शुष्मो अस्तु ते पृथिव्यामस्तु यद्धर ।।

अथर्व १ २ ३६

अथर्व। अग्नि ।

अर्थ – (अग्ने) प्रगतिकमी गृहस्थ ! (शतप) शान्तिप्रद मात्रा मे ही तपस्या किया कर (मा अति तप) अति मात्रा मे तपस्या मत किया कर कही ऐसा न हो कि पत्नी ही छोडकर चली जाए। (मातन्व तप) शरीर को इतना सतप्त मतकर कि रुग्ण अथवा कृश हो जाए। (वनेषु शुष्म अस्तु) शरीर को सुखा देने वाला अति तप तो वानप्रस्थियो के लिए ईष्ट है। (पृथिव्याम) पार्थिव भोगो वाले गृहस्थ जीवन मे (ते तप) तेरा तप उतना ही हाना चाहिए (यत हर) जितना आलस्य प्रमाद और रोगो को हरने वाला हो।

निष्कर्ष (१) नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति नैव चैकान्तम नश्नत । गीता ६–१६

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्यकर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुखहा।। १७

अर्थात अतिसर्वत्र वर्जयेत। – जग की लाज मन की मोज दोनो को निभाना।

वनेषु–वान प्रस्थिषु पृथिव्याम–पार्थिवभोगयुक्ते गृहस्थाजीवन मञ्चा क्रोशन्ति–मचस्था क्रोशन्तिवत।

तपश्चत चित्त प्रसादनम अबाधमानमनेना से व्यमितिमन्ते। योगदर्शन २–१ के व्यास भाष्य मे – तप उतनी मात्रा मे ही करना चाहिए जितने मे चित्त की प्रसन्नता बनी रहे और दैनिक कार्यो मे बाधा उत्पन्न न हो।

(५) पति को चाहिए कि पुनर्विवाहित पत्नी को सन्तान और धन से सन्तुष्ट रखे

इय नारी पतिलोक वृणाना निपद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम।
धर्म पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजा द्रविण चेह धेहि।।

अथर्व १८–३–१

अथर्वा। यम । त्रिष्टुप।

अर्थ – (मर्त्य) हे मृत स्त्री पुरुष ! (प्रेतम) मृत पति के गृहजनो की उपेक्षा करके (पति लोक वृणाना) पति लोक के सुखो की कामना करती हुई तथा (पुराण धर्म अनुपालयन्ती) पुरानी धर्मविहित परम्परा का पालन करती हुई (त्वा उप निपद्यते इय नारी) यह विधवानारी तेरे पास आई है (इह) इस स्थिति मे (तस्यै) इसके लिए (प्रजा द्रविण च) सन्तति और उसके पालन पोषण के लिए धन की (धेहि) व्यवस्था धारण कर।

निष्कर्ष (१) विधवा विवाह की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है।

(२) मर्त्य शब्द का प्रयोग मृतपतिका का पुनर्विवाह मृतस्त्री का पति से करने का सकेत मिलता है।

(३) यह मन्त्र और इससे अगला दोनो मन्त्र नियोग का भी सकेत करते हैं। नियोग के लिए मृत स्त्रीक या मृत पति का होना भी जरूरी नहीं है। अपना कोई पूर्व परिचित या सहपाठी भी हा सकता है। लेकिन नियोग केवल सन्तानोत्पति के लिए है – इसलिए यह घोषणापूर्वक होना चाहिए जिससे दोनो परिवारो को शिकायत न हो तथा यह व्यभिचार का रूप न धारण कर ले।

(४) पुनर्विवाहित पत्नी को पूर्वपति के घरवालो से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए।

(६) पति पत्नी दोनो चाहे तो वे पूरी आयु गृहस्थ मे ही व्यतीत कर सकते है

इहैवस्त मा वियौष्ट विश्वमायुर्व्यश्नुतम।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ।

ऊथर्व १४–१–२२

सावित्री सूर्या। आत्म दैवत्यम। (स्वविवाह) अनुष्टुप।

अर्थ वर वधू दाना के पितर इन्हे आशीर्वाद देते हैं – हे दम्पती ! तुम दानो (इह) इस गृहस्थाश्रम मे (पुत्रै नप्तृभि) पुत्रो पोतो और दोहतो के साथ (मोदमानौ) मौजमस्ती करते हुए (स्वस्तकौ) अपने सुन्दर घर को आदर्श व अनुकरणीय बनाते हुए (विश्व आयु व्यश्नुतम) अपनी पूण आयु को प्राप्त करो और (इह एव स्तम) यही रहो (मा वियौष्टम) कभी नाराज होकर या तलाक देकर अलग मत होओ।

निष्कर्ष (१) सामान्यजन के लिए वानप्रस्थ या सन्यासी बनना आवश्यक नहीं। वेद को विवाह विच्छेद मान्य नहीं। (२) सब कुछ – धन सम्पत्ति कीर्ति स्वस्थ दीर्घायु होते हुए भी सन्तान के बिना गृहस्थ जीवन सुस्त और सूना रहता है।

(७) सभोग सन्तानोत्पत्ति के लिए है, यह ध्यान रहे तो दीर्घायु मिलती है

आ रोहोरुमुप धत्स्व हस्त परिष्वजस्व जाया सुमनस्यमान ।
प्रजा कृण्वाथामिह मोदमानौ दीर्घ वामायु सविता कृणोतु।।

अथर्व १४–२–३६

सूर्या सावित्री। आत्मदैवत्यम्। अनुष्टुप।

अर्थ – हे पति ! (अरु आरोह) पत्नी की जघा पर आरोहण कर (हस्त उपधत्सव) हाथो का उपधान (तकिया) रूप मे सहारा (सुमनस्यमान जाया परिष्वजस्व) प्रसन्न मन से पत्नी का गाढ आलिगन कर। इस प्रकार प्रमुदित होते हुए (इह) इस गृहस्थ मे (प्रजा कृण्वाथाम) सन्तानोत्पत्ति किया करो (सविता) सर्वोत्पादक परमात्मा और प्रातकालीन सवितादेव का सेवन (वा आयु दीर्घ कृणोतु) तुम दोनों की आयु को दीर्घ करे। अर्थात (मा पुरा जरसो मृथा) ६८ वर्ष की आयु से पूर्व मत मरना।

निष्कर्ष – सन्तानोत्पत्ति के लिए सम्भोग की यही एक स्थिति है। अन्य स्थितिया केवल मौजमस्ती अथवा व्यभिचार मे उपयोगी हैं। ऋ० २–१०–३ मे 'उत्तनायामजनयन सुषूत भवति'। कहा है – इस स्थिति मे किया हुआ गर्भधाकरण सुगमता से प्रसूत (उत्पन्न) होता है।

शैथल्यता निवारणार्थ:

– सोहन लाल शारदा

ईश्वरोपासना जो दो प्रकार की है – एक सगुण और दूसरी निर्गुण। जैसे ईश्वर सर्वशक्तिमान दयालु, न्यायकारी सर्वव्यापक अन्तर्यामी सभी का उत्पादक धारणकर्त्ता मगलमय शुद्ध सनातन ज्ञान आनन्द स्वरूप है। धर्म अर्थ काम मोक्ष पदार्थो का देने वाला। वही प्रभु माता पिता बन्धु मित्र राजा और न्यायाधीश है। इत्यादि ईश्वर के गुण विचार पूर्वक उपासना करने का नाम। **सगुणोपासना है** और वह ईश्वर अनादि अनन्त अजन्मा अमृत्यु निराकार निर्विकार है जिसमे रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द अन्याय अधर्म रोग दोष अज्ञानता मलीनता नहीं है जो बन्धन इन्द्रिय दर्शन ग्रहण ह्स्व दीर्घ व शोकातुर कभी नही होता। जिसको भूख प्यास शीत उष्ण शोक हर्ष कभी नहीं होता। इत्यादि सृष्टि के गुणो से अलग जान ध्यान करना **निर्गुणोपासना** कहाती है।

इस प्रकार विधि को पूर्णतया (पच महायज्ञ विधि) हृदयगम करके नई पीढी को आर्य बनाने हेतु पढाना है। महर्षि न आर्यसमाज रूपी पौधा लगाया और उसके लिए खाद पानी की व्यवस्था भी कर गए। इसी उद्देश्य हेतु प्रथम गगातट पर विचरण करते भक्त श्रद्धालु जनो को सन्ध्या यज्ञ आदि पचमहायज्ञ करने की शिक्षा करते रहे थे। इसी विषय पर प० लेखरामकृत जीवन चरित्र मे इसका अत्युत्तम वर्णन है।

यहा एक सौरो निवासी नारायण ने वर्णन किया है कि –

स्वामी दयानन्द सरस्वती बाबा आए ऐसे शास्त्री।
बहुतेरे लडके कुपढ डोले पढाई उनको गायत्री।।

(आर्यभाषानुवाद नया बास आर्यसमाज दिल्ली पृष्ठ ११७)

सन्ध्या और उसके **'ओ३म्'** व **'गायत्री जाप'** विधि का निर्देश दे गए। लाभो का वर्णन भी सस्कार विधि मे है कि –

'यथाविधि उचित समय पर इसे करने से महाकठिन कार्य भी सुगमता पूर्वक सरल हो जाते है।'

वर्तमान मे महाकठिन काय उपस्थित है आर्यसमाजो मे शैथल्यता की। इसके लिए ही अभी मध्य भारतीय व बरार प्रतिनिधि सभा ने महाराज सिह पुर मे एक प्रतिनिधि सम्मेलन इसी हेतु बुलाया गया। इस सभा मे जो जून २००२ मे हुई यहा २४ स्थानो के प्रतिनिधियो ने अपने विचार रखे। इन्होने यहा शैथिल्यता दूरी करने के लिए विविध विचार बताए। एक सदस्य ने सन्ध्या यज्ञ शिक्षा देने की योजना भी बताई।

इसी प्रकार हमारी सार्वदेशिक सभा ने भी महाराष्ट्र प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आर्यसमाज परली मे एक गोष्ठी का आयोजन किया। यहा भी १६ सदस्यो (प्रतिनिधियो) ने अपने विचार इसी निमित्त कहे। और हरियाणा प्रदेश मे भी हासी के नगर आर्यसमाज मे चार जिलो के कार्यकर्त्ताओ ने यानि हिसार भिवानी सिरसा फतेहा बाद से आए ६ प्रतिनिधियो ने इसी निमित्त विविध विचार प्रगति हेतु रखे।

इन सर्व प्रतिनिधियो के प्रगति हेतु जो विचार आए। इनमे जो पढाने का वह भी सर्व महर्षिकृत से ही। यह ही नई पीढी को आर्य बनाने मे पूर्ण तथा समर्थ है। महर्षि ने कथनी करनी के भेद को मिटाते हुए जीवन सन्ध्या समय शाहपुरा के महाराजाधिराज सर नाहर सिह वर्मा के०सी०आई० ई० को राजनीति पढाई। और यही के पण्डितो को पूरे सप्ताह भर ठहरकर सन्ध्या यज्ञ विधि पढाई।

महर्षि कहते है कि – विधि ही बडी बात है या तो परमेश्वर ने ससार की समस्त वस्तुए ओषधिया मे मनुष्यो के उपयोग हेतु दे रखी है लेकिन जो विधि नहीं जानते वह उनसे होने वाले लाभो से वचित रहते है। एसे जनो को इससे कुछ भी सुख नही मिल सकता अत विधि ठीक ठीक लिखनी व कार्यरूप मे करनी ही अत्यावश्यक है।

(पुस्तक वही लेखरामकृत पृष्ठ ४७६)

कथनी करनी भेद हेतु ही कहा गया है कि –

यद्यदा चरति श्रेष्ठस्तत्तदेवे तरो जन।
स यत् प्रमाणम् कुरुते लोकस्तदनु वर्तते।।

गीता ३। २१।

अर्थात् – जो भी श्रेष्ठ पुरुष लोकोपकार वा अन्य कर्त्तव्य कर्म करते है। वैसा ही साधारण जन भी इसे प्रमाण मान तदनुसार ही अनुगमन करने लगते है।

महर्षि ने जहा प्राथमिक जीवन मे शिक्षा पढाइ की वैसी ही पठन पाठन का आदेश शाहपुरेश को भी दे गए अत यहा इस अति लघु राज्य म महर्षि के शाहपुरा अवस्थिती समय से ही राजकीय विद्यालयो मे अनिवार्य धर्मशिक्षा कर दी गई। इसे इस नरेश के आगे चलकर पुत्र व पौत्र ने भी इसे निभाया। यह प्रथा सन १६५० तक चालू रही तब तक की यहा शिक्षा विभाग का राजस्थानी विलीनकरण नहीं हुआ तब तक। फल यह हुआ कि इस शाहपुरा को आर्यजगत मे आर्य राज्य कहने लगे थे।

वहा पठन हेतु सभी ग्रन्थ सप्रेम भेट मे दिए जाते थे। इनमे सस्कार विधि सत्यार्थ प्रकाश भाष्य भूमिका व लघु ग्रन्थ व्यवहारभानु आर्योदेश्य रत्नमाला पोप लीला की पुस्तक सत्यासत्य निर्णय जिसे इन्दौर से महर्षि ने भेजा थे। उसे ही नाम बदलकर रखा था। उत्तीर्ण छात्रो को पारोतिषक भी महाराजाधिराज अपने कर कमलो से प्रदान करते थे।

अत हमारा कर्त्तव्य यही है कि हम नई पीढी को अपने ही मन्दिर मे न्यूनतम पाच जनो को अवश्य ही पढाने की व्यवस्था करनी है। परम्परानुसार महर्षिकृत ग्रन्थो से सकलित सन्ध्या यज्ञ की पुस्तके सप्रेम भेट डाक खर्च माफ नमूने की मगा सकते है। इसलिए ही सस्कार विधि मे आदेश है कि –

अत सस्कार करो क्रियता मुद्यमो बुधै।
शिक्षयौषधिभिर्न्नित्यम सर्वथा सुख बर्धन।। ५।।

अर्थात – नई पीढी को आर्य बनाने के लिए उन्हे शिक्षा देकर तर्कपूर्ण ढग से समझाकर पढाकर आर्य वैदिक विचार भरना। इस प्रकार से कार्यक्रम को अपनाना ही सर्वथा ही सुख बढाने वाला है।

यहा इस प्रकार के कार्य करने के लाभो का वर्णन भी यह है कि

सस्कारैस्सस्कृतम् यद्यन्मेध्यमत्र तदुत्तयम्।
अ सस्कृतम् तु यल्लोके तद मेध्यम् प्रकीर्त्यते।।

अर्थात – उत्तम सस्कारो से जो सस्कृत याने जिसे ग्रहण करा दिए गए है वह ही राष्ट्र व समाज मे अत्युतम कहा जाता है और जिसके सस्कार भ्रष्ट है उसकी तो सर्वत्र ही अप कीर्ति ही है।

इस प्रकार पूर्णतया सक्षम महर्षि कृत ग्रन्थो से ही स्वयम तैयार हो पुन नई पीढी को उत्तम शिक्षा से सस्कृत करना ही नियमानुसार अविद्या का नाश करना है। इसी हेतु उपदेशक के कर्त्तव्य का निरूपण करते हुए लिखते है कि –

उपदेशक जी महोदय जिस जिस समाज मे जाएगे और जितने दिन रहेगे वे रात्रि मे व्याख्यान करेगे, एवम् दिन मे यथा समय सदस्यो को पढाएगे भी।

(पत्र विज्ञापन भाग २ पृष्ठ ७६३)

इस प्रकार आर्यसमाज के स्थापना के साथ साथ यह सदा सर्वदा हरी भरी फलती फूलती रहे। अत शाहपुरा प्रवास समय ही शाहपुरेश को पढाने हेतु निर्देश देकर पाठ विधि निम्न स्तरीय दे गए। तदनुसार ही हम सभी आर्यो का यही कर्त्तव्य है कि नई पीढी को आर्य बनाने हेतु महर्षि कृत से ही न्यूनतम रात्रि शाला चला। पढाए हम सभी को इस प्रकार आर्य बनाने मे योगदान करना है। इससे ही शैथल्यता दूर हो सकेगी।

– शाहपुरा, भीलवाडा (राजस्थान)

दिल्ली की आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज, सूरजमल विहार, दिल्ली-६२

प्रधान	श्री सतीश कुमार दुआ
उपप्रधान	श्री भूषण कुमार मेहदीरत्ता
मन्त्री	डॉ० सोमदत्त महाजन
सयुक्त मन्त्री	श्री सुभाष चन्द्र ढीगरा
कोषाध्यक्ष	श्री भीमसेन कस्तूरिया

ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में हिन्दी की उपयुक्तता

– विश्वम्भर प्रसाद गुप्त बन्धु

किसी एक विशेष क्षेत्र मे हिन्दी की उपयुक्तता की चर्चा करने से पहले हमे यह जानकारी होनी चाहिए कि हिन्दी कोई मामूली भाषा नहीं वरन एक अत्यन्त समृद्ध और विश्वव्यापी भाषा है। डॉ० जयन्ती प्रसाद नौटियाल के अनुसार '**हिन्दी जानने वालो की सख्या विश्व मे सबसे अधिक है। भाषा जानने वालो की दृष्टि से हिन्दी का विश्व मे पहला स्थान है।** (देखिए – गृह मन्त्रालय भारत सरकार की पत्रिका **राजभाषा भारती** का अक्तूबर दिसम्बर–१९९७ अक पृष्ठ–४०)। अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की पहचान हिन्दी मे होने लगी है। डॉ० कैलाश चन्द्र भाटिया के अनुसार यूनेस्को की मान्यता प्राप्त सात भाषाओ मे हिन्दी भी है और यह बडी तेजी से अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप मे स्थापित हो रही है। विश्व के सैतीस देशो मे एक सौ तीस विश्वविद्यालय/सस्थाओ मे हिन्दी के पठन पाठन की व्यवस्था है। विश्व के अडतालीस देशो मे हिन्दी के जानकार पर्याप्त सख्या मे है। यूनिवर्सिटी आफ वाशिग्टन के सन १९०२ के आकडो के आधार पर विश्व मे हिन्दी की स्थिति प्रथम है। विश्व की छप्पन भाषाओ मे भारतीय भाषाए अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

हिन्दी की शानदार विकास यात्रा

भारत की सस्कृति सबसे पुरानी सबसे श्रेष्ठ और विश्व वरणीय है **(सा प्रथमा सस्कृतिर्विश्ववारा। यजुर्वेद ७/१४)**। यह तत्वत एक योजक मसाला है जो व्यक्ति को व्यक्ति से परिवार को परिवार से समाज को समाज से देश को देश से राष्ट्र को राष्ट्र स और अन्तत सारे विश्व से जोडकर एक करता है और वैदिक परिकल्पना कि समस्त विश्व एक कुटुम्ब एकरूप या **विश्वमार्यम** है साकार कर सकता है। इस श्रेष्ठ सस्कृति की वाहक भाषा सस्कृत है जो पूर्णतया सस्कारित और सर्वश्रेष्ठ है। यह विश्व की सभी भाषाओ की जननी भी है। उसी सस्कृत का समयानुकूल परिवर्तित रूप हिन्दी है जो **कृण्वन्तो विश्वमार्यम** के उदात्त उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए अपेक्षित दिशा मे प्रगति कर रही है।

सस्कृत का व्याकरण इतना गहन और विस्तृत वैज्ञानिक और व्यवस्थित ध्वन्यात्मक और सर्वांग सम्पूर्ण है कि इसका पूरा पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए डाक्टरेट स्तर तक का अध्ययन आवश्यक होता है किन्तु भाषा मे इस सीमा तक शुद्धता का प्रवेश होने से यह देवभाषा (विद्वानो की भाषा) बनकर रह गई और जन सामान्य के लिए स्थान स्थान पर सस्कृत से मिलती जुलती ही किन्तु बोली जा सकने योग्य अलग-अलग लोक भाषाए या बोलिया बन गई। पहले पाली प्राकृत अपभ्रश जैसे इनके नाम हुए फिर धीरे धीरे और भी विकसित होकर अनेक सम्पन्न और समर्थ भाषाए बनीं जो क्षेत्र के अनुसार पजाबी गुजराती आदि कहलाई। फिर थोडे थोडे अलगाव वाली बहुत सी भाषाओ (या बोलियो) को राष्ट्र की एकता के हित मे पुन विकसित करके विद्वानो ने एक राष्ट्र भाषा **हिन्दी** बनाई। यह आर्य (श्रेष्ठ) भाषा सर्व गुण सम्पन्न है सूक्ष्म से सूक्ष्म और गम्भीर से गम्भीर विचार व्यक्त करने मे समर्थ है और सरल तथा क्लिष्ट सभी प्रयोजन सिद्ध करने के लिए सक्षम है। इसी कारण हिन्दी एकता की विश्व की सामासिक सस्कृति की और **एक विश्व नेक विश्व** बनाने की सर्वाधिक उपयुक्त भाषा बनी है तथा विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है।

सस्कृत सी सुधरी हुई भाषा है हिन्दी

हिन्दी सभी मनीषियो द्वारा पारस्परिक व्यवहार की आपस मे मिलने जुलने की भाषा के रूप मे विकसित होकर एक महान राष्ट्र भारत की राष्ट्रभाषा राजभाषा सम्पर्क भाषा योजक भाषा के आसन पर प्रतिष्ठापित है। यह सस्कृत से भी आवश्यकतानुसार सुधरकर पुष्ट हुई है और सभी प्रकार से सुभाषा कही जाने की अधिकारिणी है। सस्कृत से भी आवश्यकतानुसार सुधरकर पुष्ट हुई है और सभी प्रकार से सुभाषा कही जाने की अधिकारिणी है। सस्कृत से भी सुधरी हुई भाषा है हिन्दी। जैसे सस्कृत के देवर शब्द का अर्थ है पति का भाई (जठ या छोटा)।

इसी प्रकार व्याकरण मे लिग ओर वचन क प्रकरण भी हिन्दी सुधरे हुए है। उदाहरण के लिए ते सर्वनाम पुल्लिग म बहुवचन है किन्तु स्त्रीलिग और नपुसक लिग मे द्विवचन है और इनके विशेष (पूर्वपद antecedent) दूर होने पर तात्पर्य समझना कठिन होता है सस्कृत मे सख्यावाची शब्द एक सदा एकवचन 'द्वि सदा द्विवचन त्रि सदा बहुवचन और **चतुर** भी सदा बहुवचन होते हे किन्तु इन सभी के तीनो लिगो मे अलग अलग रूप होते है ।

हिन्दी की आभासी अक्षमता

प्रखर राष्ट्रवादी विद्वान दिनकर ने विश्व मैत्री विश्व बन्धुत्व विश्व शान्ति आदि भारतीय सस्कृति की तमाम प्रमुख विशेषताए और अपेक्षाए गिनाकर भारत के रूप मे मानवता के इस ललाट चन्दन को मन किया है। भारत भारतीय सस्कृति और राष्ट्रीय एकता के इसी निर्विवाद तथ्यात्मक सम्बन्ध को भारत के उच्चतम न्यायालय ने भी प्रदीप जैन मामले मे अपने निर्णय मे स्वीकारा है। इसका श्रेय भारत की सुसस्कृत राष्ट्र भाषा हिन्दी को ही है।

१ 'श ष स तीनो मे ध्वनि–मूलक अन्तर बहुत कम है फिर भी वर्ण–रूप तीन हैं। अग्रेजी मे c (कप) (स्कूल) और k (काइट) की ध्वनिया क – जैसी है जो एक दोष समझा जाता है। किन्तु हिन्दी मे यह दोष क्यो न समझा जाए ? तीन वर्णो के बजाए एक ही वर्ण से काम क्यो न चलाया जाए ?

२ क्र (सयुक्ताक्षर) और 'कृ (ह्रस्व ऋ की मात्रा–युक्त क) का भेद भी गलत समझ के कारण दोष कह दिया जाता है। 'कृपा (क्रिपा गलत है) 'क्रिया (कृया गलत है) 'सुकृत ('सुक्रित गलत है) सक्रिय (सकृय गलत है) आदि मे 'कृ ह्रस्व ऋ की मात्रा–युक्त 'क (एक वर्ण) है। क्रि मे ह्रस्व इ की मात्रा युक्त क के साथ र भी (दो वर्ण) है। दोनो वर्ण नियमो के अनुसार ही साथ लगे हुए या अलग है। वास्तव मे इन शब्दो के उच्चारण के अनुसार रूप है।

३ इक प्रत्यय लगाने पर या सज्ञा से विशेषण बनाने पर शब्द के आरम्भ के स्वर मे वृद्धि करने की सुस्थापित परिपाटी सस्कृत मे है जैस शब्द–शाब्दिक चन्द्र चान्द्र आदि। हिन्दी मे भी इसका प्रचलन है। स्वर वृद्धि की परिपाटी मे दोहरी वृद्धि भी अपना स्थान बनाती जा रही है। जैसे विधि विधान स+विधि सविधान साविधानिक (सवैधानिक भी) शायद बोलने की सुविधा के कारण प्रचलित है।

४ कुछ विद्वान उपरि (सस्कृत)+उक्त= उपर्युक्त को शुद्ध मानते है उपरोक्त को नही। उनके अनुसार ऊपर (हिन्दी)+उक्त= उपरोक्त होना चाहिए। परन्तु उपरोक्त पत्र–पत्रिकाओ अच्छी पुस्तको मे ही नही अच्छे शब्द कोशो मे भी स्थान पा चुका है।

ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र मे हिन्दी

प्रो एम०जी०के० मेनन ने विज्ञान परिषद प्रयाग मे ५ अक्तूबर १९९६ को **विज्ञान का रोमाच** विषय पर भाषण देते हुए कहा था गणित की अनेक उपलब्धिया' जिनके आविष्कारकर्ता आज कल पश्चिमी वैज्ञानिक माने जाते है भारतवर्ष मे बहुत पहले से ज्ञात थी। भारत मे खगोल विज्ञान रसायन विज्ञान धातु विज्ञान पादप विज्ञान मे कई आविष्कार हुए। भारतीय दर्शन के अग के रूप मे तर्क भाषा विज्ञान और व्याकरण के अति परिष्कृत पहलुओ पर शोध हुए। बारहवीं से अठारहवीं सदी के बीच केवल ६०० वर्षो मे भारत मे विज्ञान ओर प्रौद्योगिकी पर १० हजार से अधिक पुस्तके लिखी गई। भारत की पाण्डुलिपियो का अनुवाद अरबी और फारसी मे हुआ। बहुतेरा ज्ञान भारत स बाहर भी गया।

मनुष्य को ज्ञात चिकित्सा का सर्वप्रथम आयुर्वेद है। आयुर्वेद के पितामह चरक ने २५०० वर्ष पूर्व इस ज्ञान का सकलन किया था। सुश्रुत शल्य क्रिया के पितामाह थे।

नौचालन की कला का जन्म ६००० वर्ष पूर्व सिन्धु नदी मे हुआ था। सस्कृत शब्द नौगति से ही नैविगेशन और नौ से ही 'नैवी बने हैं। सिचाई के लिए बाधो और जलाशयो का निर्माण भी सबसे पहले सौराष्ट्र (भारत) मे हुआ था। मोहन जोदडो और हडप्पा की खुदाइयो से मिले अवशेषों से भारतीय नगर नियोजन की उत्कृष्टता प्रकट होती है।

गणित का तो उद्गम स्थल ही भारत है। अको के लिए अरबी शब्द हिन्दसा इसका प्रमाण है। बीजगणित त्रिकोणमिति और कलन गणित (कॅलकुलस) भारत की ही देन हैं। द्विघाती समीकरण श्रीधराचार्य ने ग्यारहवीं शताब्दी मे हल किए थे। ईसा से ५००० वर्ष पूर्व हिन्दू लोग $१०^{५३}$ तक की बडी सख्याओ का प्रयोग करते थे और उन्होने उनके अलग अलग नाम भी दे रखे थे।

– शेष भाग पृष्ठ ८ पर

मनुष्यों के दुःख-दर्द को बांटना हमारी संस्कृति है

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के तत्वावधान मे विशाल वेद प्रचार सप्ताह हापुड के निकट निजामपुर गाव मे मनाया गया। इस आयोजन के समापन समारोह मे सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री विमल वधाव मुख्य अतिथि थे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप मे दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान आचार्य यशपाल एव उपमन्त्री श्री जयनारायण अरुण (प्रधान उत्तर प्रदेश सभा) भी उपस्थित थे। समारोह मे वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रदेव तथा भजनोपदेशक श्री बेगराज जी तथा अन्य विद्वान भी उपस्थित थे।

समापन समारोह को **सस्कृति रक्षा सम्मेलन** के रूप मे मनाया गया। इसकी अध्यक्षता जिला सभा के अध्यक्ष श्री श्रद्धानन्द शर्मा जी ने की और सचालन श्री माया प्रकाश त्यागी ने किया।

श्री विमल वधावन ने कहा कि हमारी सस्कृति भी धर्म पर आधारित है और धर्म सदेव श्रेष्ठता क सिद्धान्त को मान्यता देता है। अर्थात धम श्रेष्ठ कार्य करने और बुराइयो से बचने की प्रेरणा देता है। दूसरो के लिए उपकार का कार्य करना प्रेम और सद्भाव से व्यवहार करना और ईमानदारी यह सब श्रेष्ठ काय होने के नाते हमारी सस्कृति के अग है। इन्ही परोपकारी कार्यो क कारण हमारी सस्कृति को यज्ञ वाली सस्कृति भी कहा जाता है। यज्ञ का अभिप्राय केवल अग्नि मे आहुतिया देने तक सीमित नही है बल्कि हर परोपकार यज्ञ का ही पर्यायवाची है।

श्री विमल वधावन ने कहा कि दूसरो के दु ख दर्द हम तभी समझेगे जब हम उनके बीच जाकर कार्य करने की शैली को अपनाए। आर्यसमाज के मन्दिरो से परोपकार के वचन भी यदि जनता तक नही पहुचते तो चार दिवारी के भीतर सीमित व्यक्तियो मे वेद ज्ञान की चर्चा एक गुप्त चर्चा बनकर रह जाएगी। अत आर्य नेताओ ने अपन श्रेष्ठ धर्म और सस्कृति का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार समान्य जनता के बीच मे जाकर व्यापक कार्यक्रमो के माध्यम से करना चाहिए।

दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने कहा कि भारतीय सस्कृति की रक्षा करने मे आर्यसमाज सदैव अग्रणीय रहा है। आर्यसमाज का व्यक्तित्व अपनी ईमानदारी और कर्त्तव्य निष्ठता के कारण सदैव भारतीय सस्कृति का ध्वज वाहक बना रहे ऐसा प्रयास हम सब को करते रहना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान आचार्य यशपाल ने भी सस्कृति की रक्षा का सर्वोत्तम मार्ग एव चरित्र की रक्षा बताते हुए कहा कि **कृर्णवन्तो विश्वमार्यम** का लक्ष्य **कृर्णवन्तो स्वयमार्यम** से ही प्रारम्भ होता है।

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक सभा के उप मन्त्री श्री जयनारायण अरुण ने कहा कि आर्यसमाज को सर्वोत्तम मार्ग पर चलते चलते कुछ षडयन्त्रो मे फसकर अपनी रक्षा के लिए ही अपनी ताकत खर्च करनी पड रही है। उन्होने कामना करते हुए कहा कि समस्त आर्यजन आपस मे किसी प्रकार के वादो विवादो मे न फसकर समाज मे धर्म की स्थापना के उद्देश्य निर्धारित करे। वेद के सिद्धान्तो को अधिकाधिक जनता पहुचाए।

चित्तवृत्तियो का नियन्त्रण ही प्रभु से सच्चा योग

आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली मे प्रवचन करते हुए वैदिक विद्वान श्री ब्रजेश गौतम विद्यालकार ने कहा कि योग मे वैराग्य और अभ्यास का विशेष महत्त्व है। योग के नाम पर आज अनेक प्रकार की भ्रातिया प्रचलित हैं जिनका निराकरण आवश्यक है। महर्षि पतजलि के अनुसार योग चित्त की वृत्तियो का नियन्त्रण है। अपनी वृत्तियो को अन्तर्मुखी बनाकर ही हम परमात्मा तक पहुच सकते है। बाहरी आकर्षणो से बचकर मन को वश मे कर अभ्यास और वैराग्य के द्वारा ही हम अपने को जान और पहचान सकते है। श्मशान वैराग्य के द्वारा योग का अकुर फूट तो सकता है पर वह स्थायी तभी होगा जब हम उसे पुष्पित और पल्लवित करेगे। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने योग के नाम पर शारीरिक सिद्धि के प्रदर्शन को बाजीगरी माना है – प्रदर्शन और आडम्बर मे उनका विश्वास नहीं था।

अन्ध भक्ति और पाश्चात्य सभ्यता के इस दौर मे योग का वास्तविक स्वरूप भी विलुप्त हो गया है। अग्रेजीदा लोग इसे बडे गर्व के साथ योगा कह रहे है पर योगा मे केवल आसनो पर बल है जबकि आसन योग के आठ अगो मे से केवल एक है और वह समाधि से बहुत पहले का अग है। आज के इस व्यावसायिक युग मे योगा का भी व्यवसायीकरण हो गया है। योग के वास्तविक स्वरूप को तो महर्षि पतजलि के सूत्रो से ही जाना जा सकता है। श्री कृष्णलाल कुमार श्री विनय आर्य आदि ने अपनी जिज्ञासाए रखी जिनके समाधान का प्रयत्न विद्वान वक्ता ने किया। आर्यसमाज के प्रधान प्रो० डा० सुन्दरलाल कथूरिया ने वक्ता के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सचालन समाज के मन्त्री श्री जगदीश गुलाटी ने किया।

हजारों आर्य वीरों के प्रेरणा स्त्रोत आचार्य फूलसिह नहीं रहे

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के बौद्धिकाध्यक्ष पश्चिम उत्तर प्रदेश आय वीर दल के सचालक प० फूलसिह आर्य का भाव भीनी श्रद्धाजलि दी गई। डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल बुढाना के खचाखच भरे प्रागण मे हजारो स्त्री पुरुषो ने उन्हे भरे हृदय से याद किया।

समस्त आर्य जगत मे युवाओ के प्रेरणा स्त्रोत आचार्य पण्डित फूलसिह आय के आकस्मिक निधन से अपूर्णीय क्षति हुई है। विदित हो कि आचार्य प० फूल सिह का गत ८ अक्तूबर को हृदय गति रुकने से आकस्मिक निधन हो गया था। उनके देहावसान की सूचना पाकर हजारो नर नारी उनके बुढाना स्थित आवास पर एकत्र हो गए थे। जो उनके पैतृक गाव धनौरा टीकरी मे उनके अन्तिम सस्कार तक अश्रुपूरित नेत्रो से सम्मलित रहे।

आचार्य जी की श्रद्धाजलि सभा के उपलक्ष्य मे उनके निवास बुढाना (मुजफ्फरनगर) पर एक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रथम प्रात काल शान्ति यज्ञ किया गया। प० धनकुमार शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया और क्षेत्रवासियो और दूर दराज स भारी सख्या मे लोगो ने भाग लिया। इसके पश्चात हुई श्रद्धाजलि सभा मे देश के विभिन्न स्थानो से अनेक आर्य नेताओ ने भाग लिया। स्थानीय डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल के प्रागण मे आयोजित इस सभा मे आचार्य जी की स्मृति म प० **फूलसिह आर्य स्मृति मानव सेवा न्यास** गठित करने का निर्णय किया गया इसके लिए सभा मे उपस्थित स्वामी विवेकानन्द सरस्वती स्वामी धर्ममुनि जी ने अपनी स्वीकृति प्रदान की तथा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान स्वामी देवव्रत आचार्य एव यज्ञमुनि वानप्रस्थी ने इसके लिए पूर्व मे ही स्वीकृति प्रदान कर दी थी। इस श्रद्धाजलि सभा मे पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती स्वामी धर्ममुनि जी महाराज के अतिरिक्त सहारन पुर मुजफ्फरनगर बागपत मरठ गाजियाबाद दिल्ली हरियाणा राजस्थान के भनेक आर्यनेताओ और अधिकारियो ने भाग लिया। प० श्री देव शर्मा ने आचार्य जी के जीवन पर मर्मस्पर्शी कविता का पाठ करके सबको सम्मोहित कर दिया। इस अवसर पर सर्वश्री वेदप्रकाश आर्य सत्यवीर आर्य विनय आर्य हरि सिह आर्य वीर सिह आर्य अरविन्द्र कुमार ऋषिपाल वर्मा वीरेन्द्र सिह राणा उत्तम सिह आर्य जगदीश प्रसाद आर्य अभिमन्यु गुप्ता रणसिह आर्य वेद सिह प्रधान आदि अनेको आर्यसमाजो के अधिकारि उपस्थित थे।

शोक संवेदना

आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली के समस्त सभासदो सदस्यो आर्य बन्धुओ सत्सग प्रेमी सज्जनो एवम प्रबुद्ध नागरिको की एक सभा समाज के प्रधान शशि भूषण अग्रवाल की अध्यक्षता मे वेद प्रचार सप्ताह एव यजुर्वेदपारायण यज्ञ कार्यक्रम के प्रात कालीन सत्र के अवसर पर दिनाक २६–०६–२००२ को सम्पन्न हुए जिसमे स्वामी नारायण अक्षरधाम मन्दिर गुजरात मे हुई आतकवादी घटना की तीव्र भर्त्सना की गयी और मृत व्यक्तियो पीडितो आहत घायल आदि के परिवारो के प्रति हार्दिक शोक सवेदना व्यक्त की गई।

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

– आर्यसमाज के पहला नियम

आर्य सन्देश - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१; दूरभाष : ३३६०१५०

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 24 25/10/2002 दिनांक २१ अक्तूबर से २७ अक्तूबर २००२ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 24 25/10/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

पृष्ठ २ का शेष भाग

व्यवहार से विशेष ...

अपना परिचय क्षेत्र बढाकर अपना परिचय क्षेत्र बढाए। खुले दिल से दूसरो का स्वागत करे क्योकि आप सबके है। अपनी मधुर मुस्कान को सब पर बखेरे। इसस सम्बन्धो की स्थापना मे मधुरता और निकटता आएगी।

बुरी आदतो को त्यागकर जाने अनजाने मे भी यदि आपको किसी प्रकार की कोई बुरी आदत पड गई है तो जितनी जल्दी हो सके उस आदत से छुटकारा पाने की मानसिक सोच अपनाए। **'जब जागो तब ही सवेरा**

विचार किए कार्य को पूरा करके सोचे हुए कार्य को पूरा करे उसे कल पर न डाले। आप चाहे विद्यार्थी हो अथवा कर्मचारी या अधिकारी हो व्यापारी हो अपने आर्थिक और सामाजिक व्यवहारो मे अपने से बडे अधिकारी से समय समय पर मिलते रहे।

इस प्रकार आपके उत्तम व्यवहार के दर्पण मे निश्चय ही श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण होगा। इससे आपकी प्रतिमा का विस्तार होगा।

– ६४ विकास नगर फेस ३ निकट बालाजी मन्दिर हस्तसाल एरिया नई दिल्ली ५६

पृष्ठ ६ का शेष भाग

ज्ञान-विज्ञान की भाषा

हिन्दी की वर्तमान स्थिति

सविधान के अनुच्छेद ३५१ मे आदेशात्मक स्वर मे कहा गया है कि **सघ का यह कर्तव्य होगा कि हिन्दी का प्रसार बढाए उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक सस्कृति के सभी तत्वो की अभिव्यक्ति का माध्यम हो।** तदनुसार सघ सरकार ने केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो राजभाषा विभाग और राज्यो ने हिन्दी अकादमियो आदि की स्थापना करके हिन्दी के स्वयम्भू फैलाव को स्वीकृत सुव्यवस्थित नियन्त्रित और प्रोत्साहित करते हुए अपने सविधान–प्रदत्त दायित्व के निर्वाह का पूरा प्रयास किया। वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य तैयार हुआ है।

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग अत्यन्त सुव्यवस्थित ढग से हिन्दी को समृद्ध करता रहा है। सन २००० तक इसने विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी विषयो की अडतीस शब्दावलिया और शब्द–सग्रह तथा पचपन विषयो के परिभाषा कोश प्रकाशित किए है। किसी किसी विषय के परिभाषा कोश तो इतन बृहद है कि उनकी दो तीन तीन तीन खण्ड करके प्रकाशित करने पडे है। वनस्पति विज्ञान परिभाषा कोश के चार खण्ड है।

विश्वविद्यालयो मे पढाई भी हिन्दी मे होने लगी है। वैज्ञानिक और तकनीकी विषयो की पढाई हिन्दी मे करने के लिए आवश्यक पुस्तके भी उनके हिन्दी प्रकोष्ठो मे तैयार होती है जिनमे वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित शब्दावलियो का उपयोग किया जाता है।

वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसधान परिषद (सी०एस० आई० आर०) नई दिल्ली ने ६६६–१९८० की अवधि मे प्रकाशित हिन्दी वैज्ञानिक और तकनीकी प्रकाशन की निर्देशिका तैयार की थी। उनमे ३३४४ पुस्तको और लगभग ३२० पत्रिकाओ की प्रविष्टिया थी।

– बी १५४ लोक विहार पीतम पुरा दिल्ली ५

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान् रोड नई दिल्ली ११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

दीपावली पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २५, अक ४५ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार, २८ अक्तूबर से ३ नवम्बर, २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड, १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित
आर्यसमाज देहली का १२५वें वर्ष में प्रवेश
आर्यजन अपने भवनों, आर्यसमाज मन्दिरों पर दीपमाला करें

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने **३ नवम्बर, १८७८** ई० को दिल्ली मे प्रथम आर्यसमाज **आर्यसमाज देहली** के नाम से चावडी बाजार दिल्ली मे स्थापित की थी। सन् १९३७ मे यह आर्यसमाज वर्तमान **आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली** के नाम से विश्व विख्यात हुई। **आगामी ३ नवम्बर, २००२ (रविवार)** को **'आर्यसमाज देहली'** की स्थापना के १२५वे वर्ष का शुभारम्भ होने जा रहा है।

इस उपलक्ष्य मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्तवाधान निम्न कार्यक्रमो का आयोजन किया जा रहा है जिसकी विस्तृत रूपरेखा नीचे दी जा रही है। आपसे प्रार्थना है कि आप **तन-मन-धन** से इस कार्यक्रम को सफल बनाए तथा अधिकाधिक सख्या मे आप सपरिवार एव इष्टमित्रो के साथ इस समारोह मे सम्मिलित होकर सगठन-शक्ति का परिचय दें।

आपसे यह भी अनुरोध है कि आप अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगो को सक्षिप्त करके सभी सदस्यो के साथ इस समारोह मे सम्मिलित हो तथा आपकी आर्यसमाज के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए **उज्ज्वल भविष्य की प्रेरणा** का **प्रतीक चिह्न** को भी ग्रहण करे।

कृपया आर्य महानुभाव **केसरिया पगडी** अथवा **टोपी** तथा महिलाए **केसरिया साडी** अथवा **दुपट्टा** एव **गले में केसरिया गायत्री मन्त्र** वाले **पटके** डालकर आने का कष्ट करे।

कृपया अपने-अपने वाहनो पर **'ओ३म् के ध्वज'** तथा अपनी-अपनी **आर्यसमाजों के बैनरों** से सुसज्जित वाहनो मे आकर समारोह की शोभा बढाए।

कृपया आप अपने **निजी भवनो, आर्यसमाज मन्दिरो, आर्य शिक्षण सस्थाओं** तथा **व्यापारिक सस्थानो** पर **दीपमाला** अथवा **बिजली से रोशनी** करे।

इस शुभावसर पर **आर्य साहित्य** का वितरण कर **वैदिक विचारधारा एव मान्यताओं** के प्रचार-प्रसार मे सहायक हो।

समारोह के अन्त मे आर्यसमाज ग्रीन पार्क नई दिल्ली की ओर से ऋषि लगर की व्यवस्था की गई है।

विस्तृत कार्यक्रम
स्थापना-स्मृति-यज्ञ
दिनाक . ३ नवम्बर, २००२ (रविवार)

यज्ञ प्रात ७ से ८ बजे तक **ब्रह्मा** श्री राजसिह भल्ला
स्थान आर्यसमाज आर्य कन्या हायर सैकेण्डरी विद्यालय, चावडी बाजार, दिल्ली

यज्ञ-ज्योति यात्रा : प्रातः ८ बजे
'यज्ञ-ज्योति यात्रा' चावडी बाजार से चलकर, नई सडक, घण्टाघर, दीवान हाल चान्दनी चौक, लाल किला, दिल्ली गेट, तिलक ब्रिज, इण्डिया गेट, सफदरजग पुल के ऊपर से बाईं ओर पुल के नीचे से नौरोजी नगर, राजनगर चौक से होती हुई आर्यसमाज मन्दिर ग्रीन पार्क, नई दिल्ली पहुचेगी।

आर्यसमाज ग्रीनपार्क यज्ञ प्रात ६ से १० ३० बजे **ब्रह्मा** श्री आर्य तपस्वी सुखदेव जी

मुख्य समारोह
प्रात १० ३० बजे से १ ३० तक **स्थान** आर्यसमाज मन्दिर, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली

गौरवशाली इतिहास की स्मृति
इस अवसर पर ८५ **वर्ष से अधिक की आयु** के **आर्य पुरुष एव माताओ** को सम्मानित किया जाएगा।

उज्ज्वल भविष्य की प्रेरणा
दिल्ली की प्रत्येक आर्यसमाज के प्रधान/मन्त्री या किसी अन्य अधिकृत पदाधिकारी को यह **भव्य प्रतीक चिह्न** भेट किया जाएगा।

अध्यक्षता	**श्री वेदव्रत शर्मा**, प्रधान – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
आशीर्वाद	**श्री रामफल बसल**, अध्यक्ष – सार्वदेशिक न्याय सभा
	महाशय धर्मपाल, पदमश्री श्री वीरेश प्रताप चौधरी, श्री राजसिह भल्ला
मुख्य अतिथि	**पदमश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा**, प्रधान – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली
विशिष्ट अतिथि	**श्री पूनम सूरी**, उपप्रधान – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली
मुख्य वक्तागण	**प० मोद प्रकाश शास्त्री, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम शास्त्री**
सयोजक	**श्री विमल वधावन एडवोकेट**

निवेदक

प्रि० चन्द्रदेव
वरिष्ठ उपप्रधान
सोमदत्त महाजन
उपप्रधान
नरेन्द्र आर्य (प०)
पतराम त्यागी (पू०)
डॉ० रविकांत (के०)
रोशन लाल गुप्ता (द०)
राजेन्द्र आनन्द (उ०प०)
गोपाल आर्य (उ०)
जगदीश वर्मा (उ०प०)
अजय भल्ला (म०)

श्रीमती ईश्वर देवी धवन
उपप्रधान
लखीराम कटारिया
उपप्रधान
मदन मोहन सलूजा (प०)
रवि बहल (पू०)
कीर्ति शर्मा (के०)
सत्येन्द्र मित्र (द०)
भजन प्रकाश आर्य (उ०प०)
जयकृष्ण आर्य (उ०)
विनय आर्य (प०)
अभिमन्यु चावला (पू०)

वैद्य इन्द्रदेव
सभा महामन्त्री
पुरुषोत्तम लाल गुप्ता (द०)
सभा कोषाध्यक्ष
जगदीश आर्य (प०)
विश्वम्भर नाथ अरोडा (पू०)
राजीव भाटिया (के०)
वेदपाल खन्ना (द०)
राजेन्द्र दुर्गा (उ०प०)
महाशय रामविलास खुराना (उ०)
शशि प्रभा आर्या (प०)
रमेश डाबर (उ०)

दीपावली की शुभकामना
– स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

दीप जलाकर ज्ञान के,
करो हृदय प्रकाश।
मिटे तिमिर अज्ञानता
होय अविद्या नाश।।

शुभ मति हो, दुरितों की क्षति हो,
घर-घर में खुशहाली हो।
सद ज्ञान सुकीर्ति गौरवमय
सुख स्वास्थ्य समृद्धि बलशाली हो।।

सब के गृह प्रागण गुजित हो
दिग-दिगन्त ज्ञान उजियाली हो।
परिपूर्ण रहे ऐश्वर्य कोष,
लोटा सुवर्ण की थाली हो।।

देविया विदुषी, पतिव्रता,
गृह की गरिमा सुख वाली हो।
सौख्य, शान्ति, मगलमय,
सब विधि त्यौहार दिवाली हो।।

दीपावली का सन्देश

– श्री राम सुमेर मिश्र

वैदिक धर्म के अभाव मे हिन्दू सस्कृति यह विश्वास करती चली आ रही है कि पर्व ऐतिहासिक हे। दीपावली का शुभ पर्व इसलिए मनाया जाता हे कि इस दिन रामचन्द्र जी १४ वष का वनवास पूरा करके अयोध्या मे राजगद्दी पर बेठे थ। इसी प्रकार सभी पर्वो मे दन्त कथाए लगा दी गई है। किन्तु वह चार वैदिक पर्व श्रावणी दशहरा दीपावली ओर होली इतिहास से अछूते है। यह चार पर्व जीवन के चार पडाव है। जीवन के चार लक्ष्य है धर्म अर्थ काम और मोक्ष। यह चार पर्व इनसे ही सम्बन्धित है। अत यह चार पर्व जीवन को अपने लक्ष्य स अभिन्न करते है तथा साधन पथ पर स्थापित करत है।

दीपावली का शुभ पव चार पदार्थो मे स काम से सम्बन्धित हे। काम का यहा अर्थ काम क्रोध लाभ मोह वाल काम से सम्बन्धित नही है। यह तो जीवन क शत्रु ह किन्तु साधना का यह काम एक सत्य पदार्थ ह। जीवन हे तो उसका कोई उद्देश्य है उसका कोइ अर्थ हे जा अर्थ होता हे वही सत्य होता है। जो सत्य हाता ह वह अवाधित होता है ओर सहज प्राप्त हाता हे। अथात जीवन मे सहज प्राप्त अबाधित सत्य जो है वही काम है। अर्थात जीवन की जो माग है जीवन जिसक लिए साधन रूप है वही काम हे। जीवन उत्पन्न होता ह प्राढ होता है श्रम करता हे शिथिल होता है और अन्त है। इस सारी धारा क अन्दर वह किसी आवश्यकता की पूर्ति मे सलग्न रहता हे यह आवश्यकता किसी माग क अस्तित्व का सकेत करती हे यह माग जिसकी है वही मे हू। यह माग ही मरा काम हे। अब हमको जिज्ञासा होती है कि हमारी माग क्या है ? एक ऋषि से एक जिज्ञासु ने पूछा कि ईश्वर ने सृष्टि क्यो की और मुझे क्यो पैदा किया। ऋषि ने उत्तर दिया वासना के कारण काम के कारण। कार्ल मार्क्स ने कहा अध प्रेरणा ही जीवन और जगत की उत्पत्ति का कारण है। बुद्ध ने कहा काम ही उत्पत्ति का हेतु ह। महर्षि स्वामी दयानन्द कहते है कि काइ जीव का कर्म ऐसा नही हो सकता कि काम का मूल ही क्षय हो जाए अत जीव प्रवाह से सदा जन्म लेता रहेगा मोक्ष के बाद भी जन्म लेगा।

महर्षि दयानन्द के शब्दो मे वैदिक धर्म यह घोषित करता हे काम का क्षय सम्भव नही है। अत मनुष्य को काम की पूर्ति की साधना करना उसका धर्म हे।

दीपावली का शुभ पर्व इस पूर्ति क लक्ष्य की सिद्धि करने की सा[illegible]ा बतलाय' है। महर्षि दयानन्द इसकी सिद्धि के लिए ईश्वर की कृपा का होना अनिवार्य बतलाते है। कार्ल मार्क्स कहता है कि काम की सिद्धि एक मात्र अर्थ से ही हो सकती है। अर्थ शास्त्री भी ऐसा ही विश्वास करते है।

धर्म शास्त्री कहते है कि अर्थ से किसी काम की एक बार पूण तुष्टि अवश्य हा जाती है किन्तु काल के अवसान मे वह पुन उठती है। तुष्टि के पूव नीरसता रहती है कलपना पडता हे ओर अभाव की अनुभूति होती है। तुष्टि के बाद पुन स्मृति एक नए राग क साथ कलपाती है। ऐसा क्यो होता है ? इससे जीवन म अशाति ओर दुख बराबर बना रहता हे।

खाज करने पर ज्ञात होता है कि जिसने जीवन दिया है उसी ने सृष्टि भी दी हैं जीवन की माग के हेतु सृष्टि का निर्माण है। मांग की पूर्ति किसी नए अर्थ का उत्पादन नहीं करना है। वरन प्राप्त पदार्थ का सदुपयोग करना है जीवन जिस परिस्थिति मे उत्पन्न होता है उसी परिस्थिति मे उसके काम की पूर्ति की सामग्री उपस्थित है। बच्चे के आने के साथ मा के स्तन मे दूध विद्यमान से है।

हमारी सबसे बडी भूल यह होती है कि हम जीवन के प्रति राग रखकर मोह मे ऐसे आवद्ध हो जाते है कि जीवन के श्रम को माग की पूर्ति मे व्यय न करके उसको सुख देने की कल्पना मे आबद्ध हो जाते है। यह झूठी इच्छाओ की मूल माग पर आच्छादन माग को ढक लेता है किन्तु समय पाकर वह पुन अतृप्त अवस्था सम्मुख होती है जिससे नीरसता अभाव और विकलता अनुभव हाती है।

इस मोह स छूटे बिना सुखासक्ति का नाश नही हो सकता। और इसका अन्त हो सकता है एक मात्र ईश्वर विश्वास से। इसी कारण महर्षि ईश्वर की कृपा को साधना का अबाधित अग मानते है। यदि हम मोह को छोडकर ईश्वर के दिलाए हुए विवेक का आदर कर ले तो प्राप्त सामर्थ्य से प्राप्त परिस्थिति का सदुपयोग करके काम की पूर्ति सरलता स कर सकते है।

विवेक हमको यह बतलाता है कि किसी भी मानव की सारी आवश्यकताए अकेले श्रम से पूरी नही हो सकती और साथ ही यह भी बतलाता है कि एकाकी मानव अपन सारे श्रम से प्राप्त भोग को भोग भी नही सकता। अत मानव एक समाज है जिसमे व्यक्ति अभिन्न है। अत शुभ भावना से आर्यसमाज से अभिन्न होकर ही मानव काम की सिद्धि कर सकता है। हमारी आवश्यकता यही है कि हम किसी की आवश्यकता हो जाए। यदि इस प्रकार समाज मे सब अभिन्न हो जाए तो मोह भी छूट जाए आसक्ति भी मिट जाए और काम की पूर्ति से कृतकृत्य भी हो जाए।

यह दीपावली का वैदिक पर्व वैदिक धर्म का यह सन्देश देता है। इसको स्वीकार करके सभी सुख समृद्धि से सम्पन्न हो आनन्द पा सकते है।

बोध कथा

सच्चा आतिथ्य

दक्षिण के सन्त आलवाम बहुत ही सादगी पसन्द उदार व्यक्ति थे। वह गाव से बाहर एक बहुत ही छोटी कुटिया मे जगल मे रहत थे। एक दिन बडी जोर की मूसलाधार वर्षा हा रही थी। चारो ओर अन्धरा और पानी ही पानी था। अचानक किसी ने उनकी कुटिया का दरवाजा खटखटाया।

आलवाम ने दरवाजा खोला तो देखा कि एक आदमी वषा से भीग रहा था। उसके कुछ कहने से पूर्व ही सन्त आलवाम बोले – अरे भाई अन्दर कुटिया मे आ जाओ। कुटिया छोटी जरूर है इसमे केवल एक आदमी सो सकता है पर बैठकर तो दोनो ही समय गुजार देगे। वह व्यक्ति कुटिया मे आ गया। कुछ देर बाद किसी ने दरवाजा खटखटाया। आलवाम ने दरवाजा खोला तो एक और आदमी वर्षा से भीगा खडा था सर्दी के कारण उसके दात कटकटा रहे थे। वह गिडगिडा उठा महाराज वर्षा से बचने और रात बिताने के लिए आश्रय चाहिए।

सन्त आलवाम बोले – ६ हम तीन तो इस कुटिया मे केवल खडे होकर रात बिता सकते है लेकिन खराब मौसम मे भीगने से यह कहीं अच्छी जगह है। आओ तुम भी आ जाओ।

इस तरह उन तीनो ने सारी रात खडे होकर गुजारी और सन्त आलवाम ने मुस्कारते हुए दोनो अतिथियो का साथ दिया।

– नरेन्द्र

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे
महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव, दिल्ली

दिनाक	४ नवम्बर २००२ (सोमवार)
स्थान	रामलीला मैदान नई दिल्ली
समय	यज्ञ प्रात ७ ३० बजे
ध्वजारोहण	प्रात ६ १५ बजे
सार्वजनिक सभा	प्रात ६ ३० से १२ बजे तक

अधिकाधिक सख्या में पधारकर निर्वाणोत्सव को सफल बनाएं।

श्रेष्ठ बनो : राक्षसों को भस्म करो : हम यशस्वी हों

श्रेष्ठा भूयास्थ।

अथर्व १२ ४ ४६

श्रेष्ठ बनो

प्रतिदह यातुधानान।

अथर्व १२८ २२

राक्षसो को भस्म कर दे

यशस स्याम।।

अथर्व ६ ३८ २

हम यशस्वी बने

साप्ताहिक आर्य सन्देश

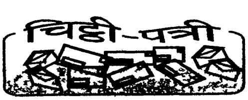
सम्पादकीय अग्रलेख

श्रीराम का अमर सन्देश : लोक की आराधना के लिए सर्वस्वत्याग

इस वर्ष १५ अक्टूबर विजय दशमी का पर्व था और ४ नवम्बर दीपावलि का पर्व है। भारत क ये दोनो ही राष्ट्रीय पर्व हमे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का स्मरण कराते हैं। विजयादशमी पर उन्होने अत्याचार और दानवता के प्रतीक रावण का सहार किया था और दीपावलि पर राष्ट्र की जनता ने वर्षो के वनवास के बाद स्वदेश लौटे श्रीराम का घर–घर दीप जला कर भव्य स्वागत किया था। वस्तुत इसमे सन्देह नहीं कि रामायण के रचयिता ऋषि वाल्मीकि ने अपने ग्रन्थ मे सार्थक भविष्यवाणी की थी – जब तक इस पृथ्वीलोक मे पर्वत प्रतिष्ठित है ओर जब तक यहा नदिया प्रवाहित हो रही है तब तक इस भूमण्डल पर श्रीराम की अमर गाथा गाई जाती रहेगी। ऋषि वाल्मीकि की इस भविष्यवाणी के सार्थक होने का सच्चा कारण यही है कि उन्होने अपने ग्रन्थ रामायण मे मर्यादा पुरुषोत्तम की जीवन गाथा वास्तविक स्वरूप मे चित्रित की थी न किसी स्वार्थी साम्राज्यवादी शासक का चित्रण किया था। अनेक प्रदेशा के विजेता रावण की सोने की लका जीतन के बाद उनके छाटे भाई लक्ष्मण ने इशारा किया था – सोने की इस लका पर शासन कीजिए। उस समय श्रीराम ने उत्तर दिया था आर्य स्वर्णमयी लका म न रोचते लक्ष्मण जननी जन्मभूश्चि स्वर्गादपि गरीयसी – प्रिय भाई लक्ष्मण मुझे यह सोने की लका आकषक नही लगती मुझे तो अपनी जन्म देने वाली माता ओर जन्मभूमि भारतभूमि ही स्वाग से अधिक आकर्षण लगती है। इसी के साथ वाल्मीकि रामायण की यह भी साक्षी है कि गुरु वसिष्ठ ने कहा था – श्रीराम को जब अयोध्या एव भारतभूमि क शासन के लिए आनुचित किया गया और जब उन्ह माता क आह्वान पर चौदह वर्षो के वनवास के लिए निमन्त्रण दिया गया तब दोनो ही अवसरो पर उनक मुखमण्डल पर हर्ष या विषाद की एक हल्की झलग भी नही दिखाई दी।

पिता के मरणासन्न हाने पर उन्होने माता कैकेयी से कहा था – मा मे आपके कहने मात्र से भाई भरत के केवल राज्य नही अपितु जानकी सीता अपने प्राण इष्ट और धन लोक की आराधना के लिए सब कुछ न्योछावर कर सकता हू। वस्तुत श्रीराम ने अपने शासन मे सच्चा प्रजारजन किया था। रामायण की विश्व को सबसे बडी दन यह है कि वहा राम और रावण अच्छाई और बुराई के दो दृष्टान्त थे। श्रीराम की सत्यपरायणता और विनम्र भरत और लक्ष्मण की भ्रातृभक्ति सीता की अनुपम पति भक्ति हनुमान की शक्ति और वफादारी सुग्रीव कि मित्रता आदि आज भी भारतवासियो क लिए मार्गदर्शन कर सकती है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि रामायण भारत के उस प्राचीन युग की सस्कृति का एक बहुत ही स्पष्ट और उज्ज्वल चित्र भी ठीक है कि उस युग मे भी बुराई और बुरे लोग थे तो अच्छाई के प्रतीक अच्छे लोग भी थे। परन्तु रामायण का अध्ययन करने से उस समय के आदर्शो और उनके अनुरूप श्रेष्ठ शासक ओर समुन्नत प्रजा की झाकी अवश्य मिल जाती ह। स्वभावत कहा जा सकता है कि इक्कीसवी शती के इस कलि काल मे उस प्राचीन युग की चर्चा का लाभ क्या ह ? उसका लाभ अवश्य ह – हमे स्मरण रखना हागा कि उस कलि काल म जब विदशिया का भीषण शासन था तब गाधी जी लोकमान्य तिलक आर दूसर महापुरुषो ने प्राचीन राम राज्य के आदर्शो और श्रीराम के उज्ज्वल चरित्र से ही कोटि कोटि जनता मे उत्साह स्फूर्ति का नया सन्देश दिया था।

यह ठीक है कि आज भारतभूमि मे स्वशासन है। ओर यहा किसी तरह क दुव्यवहार ओर अत्याचार नही हे। यह ठीक हे परन्तु नइ सहस्राब्दी म स्वाधीनता क ५५ वष म भी अभी तक भी वेसा श्रेष्ठ सुशासन और स्थिति नही ह जसा कि श्रीराम के रामराज्य मे थी। स्वाधीनता और विश्व अभ्युदय के इस युग म भी वस दख तो स्वाधीन भारत आज भी श्रीराम आर उनकी रामायण स राष्ट्र मे सच्च रामराज्य की प्रतिष्ठा के लिए श्रीराम के यशस्वी जीवन ओर उनके महान ग्रन्थ रामायण स लोक जन जन की सच्ची आराधना का सन्देश ग्रहण कर सकते ह। महात्मा गाधी की ओर राष्ट्र के दूसरे नेता बार बार जनता से श्रीराम के उज्ज्वल चरित्र का अनुकरण करने का सन्दश देते रहे है। परन्तु जब जन जन जन आर लोक की सच्ची आराधना को कार्यरूप मे परिणत करन की बात आती हे तब सब उसे भूल जाते है। इस नई सहस्राब्दी ओर स्वाधीनता की दूसरी अधिशताब्दी क वर्ष मे अब वह घडी आ गई है जब राष्ट्र मे शासक ओर जन नता अपने व्यक्तिगत सामाजिक और राष्ट्रीय नेता श्रीराम और रामराज्य की जय के नारे पर बल देने के स्थान पर जन जन लोक की सच्ची आराधना के लिए अपने व्यक्तिगत सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन मे सच्ची जनसेवा कर सच्चे रामराज्य के शुभागमन और प्रतिष्ठा के लिए अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत करे।



वक्त भी ठहर चुका है

हिन्दुस्तान में फैल रहे इस्लामिक आतकवाद के खूनी पजो को यदि समय रहते काबू नहीं किया गया तो वह दिन भी आएगा कि राष्ट्रव्यापी लोकसभा चुनाव या राज्यस्तरीय चुनाव क्षेत्रवार और क्रमिक तरीके से आयोजित करने पडेगे।

सुरक्षा बन्दोबस्त के मतदाताओ की सख्या से अधिक सुरक्षा प्रहरी रखने पडेगे। आज वक्त भी ठहर गया है और प्रतीक्षा कर रहा है उस घडी की जब वाजपेयी का हुक्म पाकर भारतीय सैनिक पाकिस्तान से भारत मा के अपमान का बदला सूद सहित वसूल कर सके। मगर हमारा दुर्भाग्य कि हमने हिन्दुस्तान के गौरव और स्वाभिमान को भुला दिया है।

– किरण दुमका, नैनीताल, उत्तराचल

सीमा पार का आतंक और वीरप्पन

यह शायद भारत मे ही सम्भव है कि वीरप्पन जैसा आतकवादी हमारे देश मे मौजूद है और हम सीमा पार के आतकवाद के सफाए की बात कर रहे हैं।

– नवीन अग्रवाल, लक्ष्मी नगर, दिल्ली

निष्काम कर्मयोग

निष्काम कर्मयोग तभी सिद्ध होता है जब हमारे बाह्य कर्म के साथ अन्दर से चित्त शुद्धि रूपी कर्म का भी सयोग होता है।

– विनोबा

ऋग्वेद से हिरण्यादेश सप्तकम् (२)

हितकर और रमणीय —

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) शान्ति के लिए शरीर को, पाषाणवत् ऋतुओ की अत्तियों का सहनकर्ता बना

सोमस्य मा तवस वक्ष्यग्ने वह्निं चकर्थ विदथे यजध्यै।

देवाँ अच्छा दीद्यधुञ्जे अद्रि शमाये अग्ने तन्व जुषस्व।।

ऋ० ३–१–१

गाथिनो विश्वामित्र । अग्नि । त्रिष्टुप।

अर्थ – हे (विश्वामित्र अग्ने) अपने सकुचित दायरे से आगे बढकर मानव मात्र का कल्याण करके विश्वनेतय बनने के इच्छुक साधक। जैसे पहले तूने मुझे (तवस वह्निचकर्थ) महान शक्तिशाली को अपना वहन कर्त्ता–नेता बनाया था वैसे ही अब (सोमस्य विदथे) इस विश्व के शान्ति यज्ञ मे (यजध्यै सा वहि वक्षि) सब के साथ सगति (मित्रता) करने के लिए भी मुझे अपना नेता बना ले लेकिन इसके साथ ही (अग्ने) नेता बनने के इच्छुक (शमाये) और शासन विस्तार को भी पाषाण तुल्य सब ऋतु परिवर्तनो को सहन करने वाला बनाकर अपने कर्त्तव्य कर्म करते हुए पार्थिव भोगो का सेवन कर। यदि तू ऐसा व्यवहार करेगा तो मै (दीधत देवान अच्छ युञ्जे) सर्वतोदीप्त सब दिव्य गुणो को धारण करने वाले देवजनो को तेरे साथ सम्यक सयुक्त रखूगा।

निष्कर्ष – इस मन्त्र के आधार पर एक रोचक कथा बना ली गई कि ऋषि विश्वामित्र जो क्षत्रिय था – अर्थात अपने वर्ग या राष्ट्र के लिए युद्ध करता था उसके मन मे मानव मात्र का कल्याण करने की ब्राह्मण बनने की इच्छा जागृत हुई। विश्वनेता के रूप मे अग्नि (परमात्मा) उसे उपदेश देता है – कि यह कामना अत्युत्तम है। तूने जैसे मुझे सर्वशक्तिमान रूप मे (तवसम्) अपना पथ प्रदर्शक माना था वैसे ही अब इस विश्वकल्याण यज्ञ मे मुझे सर्वज्ञ और न्याकारी रूप मे (सोमरस वह्निम्) पथपद्रर्शक मान ले किन्तु इस के साथ अपने वैयक्तिक स्वास्थ्य और राष्ट्रीय चरित्र को भी सब परिस्थितियो के सहने मे समर्थ पाषाणवत विपत्ति और विरोध का विदमण करके आदर पाने योग्य बनाए रखना। तभी विश्वमित्र अग्नि=सच्चे। ब्राह्मण का आदर प्राप्त करेगा।

अर्थ पोषण – तव बलनाम। नि० २ १ तवसम् महन्नाम। नि० ३ ३

वृद्धि–अभ्यस्व (सायण) जुषस्व–जुषी प्रीति सेवनयो: आदरणीय – आदरणीया।

अद्रि पर्वत पाषाण विदारणे आदृणात्रिशत्रून। चन्द्रशेखर कोष

(२) भोजन दाता को नमन तथा दानशील और सयमी की परिचर्या किया करो

नमस्यत हव्यदाति स्वध्वर दुवस्यत दम्य जातवेदसम्।

रथीर्ऋतस्य बृ हतो विचर्षणिरग्नि र्देवानामभवत्पुरोहित ।

ऋ० ३ २ ८

विश्वामित्र । अग्निर्वैश्वानर । विराडजगती।

अर्थ – (स्वध्वर हव्यदाति नमस्यत) शोभन यज्ञ करने वाले अर्थात भूखो को भोजन देने वाले को सदा नमन करो तथा (दम्यजात वेदस दुवस्यत्) दानशील धनी तथा सयमशील ज्ञानी की सदा सेवा किया करो और यह भी ध्यान रखना कि (ऋतस्य बृहत विचर्षणि) बृहत्तम ऋत–परमात्मा का विशेष रूप से द्रष्टा अर्थात उसकी तरह सत्याचारी और न्यायकारी दयालु तथा विशाल राष्ट्र के कोने कोने की परिस्थिति का ज्ञाता महत्मा गाधी जैसा नेता ही (देवानो पुरोहित रथी अभवत्) दिव्यता का भी राष्ट्र का मार्ग दर्शन करता हुआ उसका रथी बनता है।

इस मन्त्र के भावार्थ मे स्वामी दयानन्द ने लिखा हैं –

यो बृहद्विद्योऽहिसको जितेन्द्रिय प्रशसितो विद्वान् भवेत् स

एव नमस्करजीय सेवनीयश्च स्यात (राष्ट्रस्य रथी कर्त्तव्य)

अर्थ पोषण – हव्य भोजनम हुदानादनयो। दम्मम सयमिनम दानशील नीति दयानन्द। विचर्षणि पश्यतिकर्मा।

नि० ३ ११ ब्रह्मवाऋतम। ४ ६ ८०

निष्कर्ष – अपना नेता या राजप्रमुख – सम्पूर्ण प्रजा की भोजन व्यवस्था करने मे समर्थ सयमी ज्ञानी और धनी व्यक्ति को ही चुनना चाहिए।

(३) भूखे प्यासो के अभावों को दूर कर मन को शान्ति मिलेगी, और लोग आदर करेंगे

अति तृष्ट ववक्षिथाथैव सुमना असि।

प्रप्रान्ये यन्ति पर्यन्य आसते येषा सख्ये असि श्रित ।।

ऋ० ३ ८ ३

विश्वामित्र । अग्नि । विराड्बृहती।

अर्थ – है विश्वामित्र बनने के इच्छुक नेता ! (येषासख्ये असिश्रित) तू जिन का समान कर्मा सहयोगी या सखा बना हुआ है उनमे से (अन्ये प्रयन्ति) कुछ प्रयत्न करके खूब आगे बढ रहे हैं और (अन्ये परिआसते) कुछ दूसरे हाथ पर हाथ धरे वहीं के वहीं बैठे हैं। तू इन दोनो की ओर ध्यान दिए बिना (अति तृष्ट ववक्षिथ) भूख और प्यास से व्याकुल जनो को प्राप्त हो – उनके पास जा और उनके अभावो को दूर करने का प्रयत्न कर (अथ एव) और तू अनुभव करेगा कि (सुमना असि) तेरा मन प्रसन्नता से भर गया है। और तू (अथ एव ववक्षिथ असि) एकाएक महान बन गया है सब तेरा आदर करने लग गए है।

अर्थपोषण – ववक्षिथ – वह प्रापण वोढुनिच्छ ववक्षिथ महन्नामसु। नि० ३–३ नकल मत कर और न ही आलसी बन कर बैठे साथियो की तरह निकम्मा बनकर समय को बर्बाद कर। तू केवल अभाव ग्रस्तो की जरूरतो को पूरा कर। एक दिन आएगा कि तू अपने साथियो मे सब से उच्च स्थान परस्थित होगा।

(४) दुष्टो और बाधाओ का निराकरण करके, देवो का सत्कार और सत्सग कर

अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान् देवयते यज।

होता मन्द्रो वि राजस्यति स्रिध ।।

ऋ० ३ १० ७

विश्वमित्र अग्नि । उष्णिक्।

अर्थ – हे (अग्ने) आगे बढने और सब को मित्र बनाने के इच्छुक मानव ! तू (यजिष्ठ) प्रजा को सगठित करने मे अत्यन्त कुशल है तथा (मन्द्र होता) सब को आह्लदित रखने वाला दाता यजमान बनकर (स्रिध अति विराजसि) सद्व्यवहार विरोधी दुष्टो और उनके द्वारा खडी की गई बाधाओ का निराकरण करके विशेष रूप से सब की दृष्टि मे विराजता है। अत (देवान देवयते) दिव्यगुणो की कामना करने वाले दिव्यजनो – सज्जनो विद्वानो सन्तो का सदा (यज) सत्कार तथा सत्सग किया कर और उनकी आवश्यकताओ की पूर्ति किया कर। यज – देवपूजा सगतिकरण दानेषु। दिवु क्रीडा विजिगीषा व्यवहार धुति स्तुति मोदमद स्वरूप का कान्तितिषु। उष्णिक्–उत+स्निह

निष्कर्ष – (१) विश्वामित्र बनने के इच्छुक नेता के लिए आवश्यक है कि वह देवों का सत्कार–सत्सग करे और उनकी आवश्यकताओ को पूरा करे। तथा समाज को क्षति पहुचाने वाले दुष्टो को दण्ड देकर अथवा उन्हे समाप्त करके समाज को स्नेहपूर्वक सगठित करे। स्निह प्रीतौ।

(२) महर्षि दयानन्द ऋ० ३ १२ ६ के भावार्थ मे लिखते है कि –

'विद्वासो विदुष एव सत्कुर्वन्तु न मूढान। विद्वान विद्वानो का ही स्वागत सत्कार करे मूर्खों का नहीं। वर्तमान युग मे इसके विपरीत विद्वानलोग अपने से अतिन्यून जानकारी रखने वाले धनियो के आदर सत्कार मे बाध्य दृष्टिगोचर होते हैं।

ऋग्वेद के उपदेश

(५) केवल प्राण साधना से सब रोगों को और ब्रह्मास्त्र से शत्रु नगरों को नष्ट कर दो

इन्द्राग्नी नवति पुरो दासपत्नीरधूनुतम्। साकमेकेन कर्मणा।

ऋक् ३–१२–६

विवामित्र । इन्द्राग्नी। गायत्री।

अर्थ – (इन्द्राग्नी) इन्द्र और अग्नि (दासपत्नी नवति पुर) आतकवादियो द्वारा सरक्षित नब्बे की बस्तियो को (एकेन कर्मणा) एक ही सकल्प के साथ चलाए गए भयकर ब्रह्मास्त्र से (अन्धूनुतम्) कम्पित्त कर देते हैं।

१ आध्यात्मिक दृष्टि से – इन्द्राग्नी हैं – प्राणापान अथवा बल और ज्ञान नवति पुर है – ५ कर्मेन्द्रिया+५ ज्ञानेन्द्रिया+ १ मन + १ अहकार + ६ तन्मात्राए = १८ तत्व = सूक्ष्म शरीर इसे (अष्टादशकलिगम्) लिग शरीर भी कहते है। इन मे प्रत्येक तत्व पञ्चपर्वा अविद्या अर्थात् अविद्या अस्मिता राग द्वेष अमिनिवेश रूपी ५ क्लेशो से घिरा रहता है। इन १८ X ५ = ९० को ही दस्युओ से आक्रान्त नब्बे पुरिया कहा गया है। एकेन कर्मणा = आदि कर्मणा = प्राणायामेन कम्पित या प्रभावहीन अथवा निर्मल बनाया जा सकता है।

२ आधिदैविक दृष्टि से – इन्द्राग्नी–विधुत और अग्नि

• ३ आधिमौतिक दृष्टि से – इन्द्राग्नी – राजा और मन्त्री अथवा राजा और प्रधान सेना

निष्कर्ष – दृढ सकल्प के साथ, केवल एक बडे (ब्रह्म) प्रक्षेपात्र से शत्रु की सब बस्तिया केवल प्राण साधना से आत्मा, मन और शरीर के सब विघ्नो को और परमात्म देव के एक ही बडे (ब्रह्म) कर्म अर्थात् बाढ सुखा–घा भूकम्प से सम्पूर्ण दुष्ट बस्तियो को भयकम्पित अथवा नष्ट किया जा सकता है।

भावार्थ – इस मन्त्र पर स्वामी दयानन्द का भावार्थ विशेष माननीय है –

'इन्द्राग्नी भ्यामेक मत्येन दुष्टान्निवार्य श्रेष्ठान्सत्कृत्य धर्माचारणेन राज्यशान कर्तव्यम्। इसके विपरीत यदि सिफारिश और रिश्वत (अनुशसा और भ्रष्टाचार) से दुष्ट जन आतकवादी प्रमुख पदो पर पहुचने लगेगे और सज्जन व सरल जन साधारण दु खी और पीडित रहेगे तो शासन शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा।

किसी भी कर्म की सफलता व विजय प्राप्ति के लिए, दान और कर्म कथनी और करनी। (यत्र ब्रह्म च क्षत्र च सम्यञ्चौ चरत सह। यजु २०–२५) का सामञ्जस्य अनिवार्य है।

(६) पवित्र धन का भोक्ता और दाता ही बडे आयोजनों को कर पाता है

स यन्ता विप्र एषा स यज्ञानामथा हि ष।
अग्नि त वो दुवस्यत दाता यो वनिता मघम्।।

ऋक् ३-१३-३

ऋषभो वैश्वामित्र । अग्नि । निघृदनुष्टुपे।

अर्थ – (य (ऋषभ वैश्वामित्र)) जो व्यक्ति वीर्यवान् शक्तिशाली होते हुए भी सबका मित्र बनने की इच्छा रखता है अथवा जो सबको अपना मित्र बनाकर शक्तिशाली बनना चाहता है (स) ऐसा व्यक्ति (एषा यज्ञाना यन्ता) इन नित्य व्यवहार मे आने वाले कर्मो अर्थात् सत्कार सत्सग सगठन सान्त्वना सहयोग दान कार्यो का नियम न करने मे समर्थ होता है (स हि अथ विप्र) ऐसे ही व्यक्ति को प्रेरणा प्रद या मेधावी कहते है। (तम्) ऐसे विप्रको (य) जो (मघ वनिता दाता) सुपथ से अर्जित धन का स्वय भोग करता हो और अभाव ग्रस्तो को दान भी करता हो (व त अग्निम्) आप लोग ऐसे मनुष्य को अपना मार्गदर्शन नेता बनाओ तदनन्तर (त दुवस्यत) उसकी सेवा करो और सेवन भी करो तभी पूरा लाभ मिलेगा।

निष्कर्ष (१) सेवा और सेवन साथ-साथ चलते है। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति सूर्य सेवन से लाभ उठाना चाहता है तो उसे सूर्योदय से पहले उठकर सूर्यकिरणो वाले स्थान मे जाकर बैठना होगा। यह उसकी सेवा होगी और उसके बाद उसके सेवन का लाभ मिलेगा। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति गुरु से कुछ सीखने के लिए उसका सेवन करना चाहता है तो उसे गुरु के पास बैठकर उसकी दिनचर्या का निरीक्षण तथा सेवा द्वारा उसे प्रसन्न करना होगा तभी उससे कुछ ग्रहण किया जा सकेगा यही उसकी उपासना या सेवन होगा।

(२) गुरु या मार्गदर्शक दान और भोग दोनो मे समर्थ होना चाहिए। केवल भोक्ता तो त्याज्य है ही केवल दाता भी वाञ्छनीय नहीं क्योकि वह भी एकागी है। वह अनुयायियो और शिष्यो को पूर्णतया सतुष्ट नहीं कर सकेगा।

स्वामी दयानन्द का भावार्थ है – य स्वय धर्मात्मा जितेन्द्रिय सद्गुणाना दाता, ग्रहीता च प्रकृतेर्नियन्ता भवेत्त सर्वोपायै सेवध्यम्।

अर्थ पोषण – ऋषभ – वीर्यवान् शक्तिशाली वीर्य वाऋषभ। ताण्ड्य १८–८–१४

विप प्रेरणा सतीति विप् प्रेरणे उप्यतेऽस्मिन्नतिशयेनमेधा, वप वीजस क्षिपत्यनया पापवा विप क्षेपे मा अधम सुपथार्जित धनम्। नि० २–१० सुखदायी,

(७) ज्ञानवान् – अपना नेता सुदर्शन और बनाओ

मन्थता नर कविम द्वयन्त प्रचेतसममृत सुप्रतीकम्।
यज्ञस्य केतु प्रथम पुरस्तादग्नि नरो जनयता सुशेवम्।। ऋ० ३–२९–५

विश्वामित्र । ऋत्विज अग्निर्ता। त्रिष्टुप।

अर्थ – (नर) कार्य को सफल बनाने वाले मनुष्यो ! (मन्थत) अपना नेता या मार्गदर्शक गुरु बनाने से पूर्व परस्पर खूब मन्थन – विचारो का आदान प्रदान करो और तदनन्तर (कविम्) क्रान्तदर्शी तथा काव्यमयी भाषा के पारखी (अद्वेयन्तम) किसी के साथ दुभात न करने वाले तथा कथनी और करनी मे एक से (पचेतसम्) प्रकृष्ट चेतना वाले सहृदय (अभृतम) स्वय उत्साही और निराशो को उत्साहित करने वाले (सुप्रतीकम्) स्वस्थ और सुन्दर शरीर वाले (यज्ञस्य के तुम) यज्ञ (सत्कार सत्सगो सगठन सान्त्वना सहयोग – उपदेश आदेश निर्देश तथा धन और वस्तुओ व सुविधाओ का दान) के कार्यों का ध्वज के समान सूचक और विज्ञापक (सुशीवम्) सब को सुख पहुचाने वाले (पुरस्तात्) विपत्ति के समय सदा आगे रहने वाले (प्रथम अग्नि जनयत) प्रमुख पुरुष को अपना मार्गदर्शक और नेता निर्धारित करो।

निष्कर्ष (१) जिस सगठन के सदस्य – अत्युक्ति उपमा व्यग्य आदि काव्य विद्याओ के ज्ञाता वचन निर्वाह के धनी समदृष्टि दूसरो की लाचारी को अनुभव करने वाले स्वस्थ और सुन्दर आपत्तिकाल मे सदा आगे रहने वाले सब को सुविधाए प्रदान करने के इच्छुक, यज्ञ भावनाओ को मूर्त रूप प्रदान करने वाले प्रथम पुरुष को अपना मार्गदर्शक नेता चुनते है, वे सदा सफल और विजयी होते हैं।

(२) यदि मनुष्य सर्वमित्र बनना चाहता है तो उसे काम, क्रोध, लोभ के त्रिक का सवरण और समय तथा परिस्थिति का आकलन करके अपना व्यवहार करना चाहिए। यह सारभूत सन्देश है इस मन्त्र के ऋषि देवता छन्द शब्दों का।

अर्थ पोषण – कार्याणि नयन्ति साधयन्तीति। २–१०२ उज्ज–देव पूजा (सत्कार सत्सग) यज्ञस्य सगठन सान्त्वना) दानेषु। दान (उपदेश सगनिर्देश, धन, पदार्थ सुविधा आदि का) केतु ज्ञापक–ध्वज कित ज्ञाने विशिष्ट सस्कृति, देश आयोजन का सकेत या विज्ञापक।

– श्यामसन्दर राधेश्याम ५२२, ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

सिख भाई मुसलमानों के अधिक समीप हैं या कि हिन्दुओं के

— आचार्य आर्य नरेश वैदिक गवेषक

कुछ काल पूर्व पजाब मे सत्यसनातन वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए जब लेखक ने यह नारा सुना कि सिख मुस्लिम भाई भाई हिन्दू कौम कहा से आई ? तो मेरा माथा ठनका क्योकि मै बाल्यकाल से ही 'स्वर्ण मन्दिर तथा गुरुवाणी से जूडा हू। अत यह बात सुन कर लेखक को हार्दिक दु ख हुआ। तब उसने पजाबी भाषा अर्थात गुरुमुखी लिपि मे एक पुस्तक छपवाई और उसे पजाब तथा जम्मू मे नि शुल्क वितरित किया क्योकि जम्मू मे सिखो के साथ साथ मुसलमान भी रहते हैं। अत लेखक सर्वप्रथम उपर्युक्त समस्या का समाधान करने वहीं पहुचा।

जम्मू मे एक सरदार साहब एडवोकट लेखक के प्रवचनों को सुनने आते थे। एक दिन प्रवचन के बाद मैने उन्हे वहीं रोक लिया और प्रश्न पूछा कि आप बताए श्री गुरु नानक देव जी हिन्दू थे या मुसलमान ? प्रश्न पर बिना विशेष विचार किए वे सिख भाइ बोल उठे — श्री गुरु नानक देव सिख ही थे। मैंने कहा देखो मेरे प्रश्न का ठीक उत्तर नहीं मिला क्योकि सिख शब्द जो कि शिष्य शब्द का अपभ्रश है उसका वास्तविक अर्थ है चेला तो क्या श्री गुरु नानकदेव जी आप के चेले थे ?

मेरी इस विवेचना को सुनकर वह सिख एडवोकेट महोदय गहरी चिन्ता मे डूब गए। जब वह थोडी देर के लिए चुप रहे तो मैने पुन प्रश्न किया कि बताइए ना श्रीगुरु नानकदेव जी मुसलमान थे या हिन्दू ? उन्होने दबी आवाज मे कहा — जो मैं जानता था बता दिया। मैंने कहा आप तो पढे लिखे व्यक्ति ही नहीं अपितु बात की गहराई मे जाने वाले एडवोकेट हैं जो और तर्क वितर्क तथा बहस से मामले सुलझाते है। यदि आप नानक जी को सिख कहते हैं तो यह उनका अपमान है

क्योकि वह आप के पूज्य गुरु थे न कि शिष्य और यदि आप उन्हे मुसलमान कहते है तो यह उससे भी बडा अपमान होगा क्योकि उनका सम्पूर्ण जीवन तथा उपदेश सार ओम वेद यज्ञ चारो वर्ण योग तथा धोती और सनातन वैदिक सस्कारो से पूर्ण मिलता है।

गत् दिनो मुझे पजाबी विश्वविद्यालय से छपी श्री गुरुनानक देव जी का महत्वपूर्ण चित्र मिला। उस चित्र के देखने से यह बात बिल्कुल साफ सिद्ध हो जाती है कि आखिर वे कौन थे ? उस रगीन चित्र मे श्री गुरु नान देव स्नान करते हुए दिखाया गए हैं क्योकि स्नान वस्त्रो को उतार कर अर्थात् टोपी पगडी एव कुर्ते को उतारे बिना नहीं होता तथा सभी प्राचीन चित्रो मे उन्हे टोपी मे ही दिखाया जाता है। वर्तमान के सभी लम्बी दाढी व पगडी वाले चित्र स्व० श्री शोभा सिह चित्रकार को धमकी देकर बने थे।

पटियाला से मिले इस चित्र मे दिखाया गया है कि उनके नगे सिर पर केशो के स्थान पर चोटी है तथा बदन पर छुरी के स्थान पर 'यज्ञोपवित है। आज से लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व जब लेखक ESIR नेशनल फिजिकल लैबोर्टरी दिल्ली मे एक इन्जीनियर के रूप मे सेवारत था तो वहा ठेकेदार की ओर से एक बडी आयु के इजीनियर सिख सज्जन भी कार्यरत थे। एक दिन भोजन अवकाश के समय मैंने उनसे पूछा कि आप यज्ञोपवीत रखते हैं ? कहने लगे नहीं। तब मैंने कहा कि आप नहीं मैं पक्का सिख हू, क्योंकि मैं यज्ञोपवीत रखता हू। उन्होने हडबडा कर कहा 'यह कैसे हो सकता है ? क्योकि तुम्हारे पासन तो केश हैं न पगडी है न कडा है और न ही कृपान। अत आप सिख कभी नहीं हो सकते। मैंने कहा लगता है आपने ध्यान से गुरुवाणी पाठ नहीं किया। उन्होंने कहा आप कैसे बोलते हैं ? मैंने कहा मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हू और गुरु मर्यादा के अनुसार ही बोल रहा हू। मैंने कहा गुरुवाणी में लिखा है — 'केश धरे न मिले हरि प्यारे तथा सुन अधी लोई बे पीर इन मुण्डियन सरन भज कबीर अर्थात केवल यू ही केश रखने से ईश्वर नहीं मिलता और यदि ईश्वर को पाना है तो किसी मुण्डे-मुण्डाए ब्रह्मनिष्ठ बिना बाल वाले सन्यासी की शरण मे जा।

लेखक की यह सप्रमाण बात सुनकर उस वृद्ध सिविल इजीनियर ने उत्तर तो कुछ नही कहा अपितु अपने सिर पर जोर जोर से हाथ मार कर रोने लगा। इससे लेखक डर गया क्योकि उस समय वे बहुत छोटा था कि कहीं यह इस सरकारी कार्यालय मे मेरे विरुद्ध कुछ मजहब की तौहीन की शिकायत न कर दे। मैने केशो के न रखने के समर्थन मे उन्हे यह भी कहा था कि देखिए केश कडा आदि नित्य रखने की व्यवस्था श्री गुरु गोविन्द सिह ने तब युद्ध के लिए ही की थी। अब तो हमारा देश की एक अलग ही फौज बन चुकी है। अत अब इसकी क्या आवश्यकता है।

इतना ही नहीं अपितु यह बात भी आप ध्यान मे रखे कि किसी व्यक्ति के देश धम हित सेना (फौज) मे भर्ती होने मात्र से उसकी जाति या धर्म नहीं बदल जाता। क्या किसी व्यक्ति के द्वारा भारत की फौज मे भर्ती होने से और खाकी कमीज पैट पेटी बोतल किट या खास जूते पहनने से अब उसका धर्म खाकी फौजी या फोजा अथवा फोजीस्तानी हो जाना चाहिए। क्या फौज मे भर्ती हो जाने से उसका प्राचीन धर्मग्रन्थ वेद अथवा इष्टदेव राम कृष्ण या शिव न रहकर उनका ब्रिगेडियर आदि होगे ? अत बुद्धिजीवी यह कभी न भूले कि श्री गुरु गोविन्द सिह ने एक देश धर्म रक्षक सेना खालसा पथ सजाया था न कि पृथक मत—पथ या मजहब।

श्री गुरुगोबिन्द सिह का धर्म क्या था और उन्होने फौज किस लिए बनाई ?

गुरुद्वारा श्रीदशमी पा० रिवाल्सर जिला मण्डी हिमाचल

वहा बोर्ड पर गुरुमुखी हिन्दी तथा इग्लिश मे छपे शब्द (इसकी असली कैमरा फोटो जिसमे साथ ही वहा का ग्यानी भी खडा है मेरे पास सुरक्षित है)

श्री गोविन्द सिह जी महाराजने मुसलमान बादशाह औरगजेब के 'हिन्दू धर्म' के विरुद्ध अत्याचार को रोकने हेतु तथा भारत देश की आजादी हेतु रिवालसर में सम्वत् १७८५ मे एक बैठ की थी।

इन वाक्यो से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि गुरु गोबिन्द सिह तथा उनकी फौज हिन्दू—धर्म ही मानती थी और किसी पृथक स्थान की बात न करके भारत को ही अपना देश समझती थी।

लेखक मन्दिरो के साथ गुरुद्वारो मे भी प्रवचन करता है। दिसम्बर २० से २२ विक्रमी २०५७ मे मेरे गुरुद्वारा सिह सभा उड्लाना कला पानीपत में निम्नलिखित विषयों पर प्रवचन हुए। इससे पूर्व भी लेखक भारत के रिवालसर मुरादाबाद हरिद्वार नरकटियागज सूरत तथा भुवनेश्वर के गुरुद्वारों में प्रवचन कर चुका हू।

स्वर्ण मन्दिर अमृतसर से प्रकाशित श्री ग्रन्थ साहब में उ के स्थान पर ओ ही लिखा है।

कुछ वर्ष पूर्व हुई मेरी बातचीत —

वर्तमान की स्थिति में शहीद भगत सिह का परिवार क्या कहता है ?

१ हमारे दादा सरदार अर्जुन सिह जी कहते थे कि हमारा धर्म वेद है। उन्होने अपनी एक पुस्तक 'हमारे सिख गुरु वेदों के पैरवी थे में लिखा है कि सब 'गुरु' वेदभक्त थे।

२ सरदार अर्जुन सिह जी कहा करते थे कि गुरु का सच्चा सिख बनने के लिए केश रखने की आवश्यकता नहीं जितनी की प्राचीन वेद मर्यादा पर चलने की आवश्यकता है।

३ प्राचीन चित्रो को देखने से पता चलता है कि नौ, गुरुओ के सिरो पर लम्बे लम्बे केश नहीं थे विशेष जानकारी के लिए दिल्ली की कोतवाली का चित्र देखे। जो लोग शहीद भगतसिह को बिना वालो के टोपी मे नहीं चाहते वे वास्तव मे उन्हे हृदय से नहीं चाहते और यदि चाहते है तो केवल अपने स्वार्थ के लिए।

उन्होने मास मछली अण्डा खाना छोडकर ऋषि दयानन्द से प्रभावित होकर यज्ञोपवित लिया था तथा वह प्रतिदिन सन्ध्या व यज्ञ (हवन) करते थे। जिन्होने हम सबको भी यज्ञोपवीत पहनाया था।

४ वह ग्रामो मे वैदिक सस्कृति की रक्षा के लिए साइकिल द्वारा यज्ञ व वेदप्रचार करते थे।

५ वह जन्म से जातिवाद व कौमवाद नहीं मानते थे।

६ उनके हृदय मे अदभुत राष्ट्र—भक्ति थी और वह राष्ट्रीय एकता व सुरक्षा के समक्ष और किसी विवाद को कुछ न समझते थे। ऐसी ही शिक्षा देशहित पर मर मिटने की उन्होने हम सब भाईया को दी।

७ वह जड वस्तुओ को सिर झुकना पाप समझते थे उनका सिर तो परमात्मा के हृदय मन्दिर मे ही झुकता था।

८ हमारे पिता श्री किशन सिह जी ने एक पुस्तक दसो गुरुओ के विवाह सस्कार पर लिखी थी जिसमे उन्होने जन्मसाखियो के प्रमाण देकर सिद्ध किया था कि हमारे दसो सिख गुरुओ का विवाह यज्ञ एव वेद मन्त्रो की वैदिक रीति से ही हुए थे।

९ वर्तमान के सिखो द्वारा बिना यज्ञ केवल वेद मन्त्रो के गुरु ग्रन्थ साहब के चारो ओर चक्र काटकर विवाह करने की रीति को वह दसो गुरुओ की मर्यादा के विरुद्ध समझते थे।

१० वह कहते थे कि मिस्टर मैं कालिफ नामक धूर्त अग्रेज की कूटनीति से यह वेद विरुद्ध परम्परा सिखो मे प्रचलित हुई। मि० मैकालिफ नामक अग्रेज की भी यह चाल थी कि भारत पर शासन करने के लिए, उसे कमजोर किया जाए और कमजोर करने के लिए उसे फिरको मे बाटा जाए। उसकी चाल सफल हुई और बहुत से गुरुभक्त अज्ञान से आदि गुरुओ की वैदिक रीति छोडकर नए मजहब मे फस गए। ईश्वर उन्हे सद्बुद्धि दे। जिससे कि वे आदि गुरुओ के आदर्श पर चलकर तथा विदेशी मुसलमानो व अग्रेजो की चाल से बचाकर राष्ट्र को सगठित तथा शक्तिशाली बनाए और सच्चे सिख (शिष्य) कहला सके।

— शहीद भगतसिह के भाई सरदार कुलबीर सिह जी

कुछ ज्वलन्त प्रमाण —

१ श्री ग्रन्थ साहब 'वाहे गुरु' से नहीं एक ओकार से शुरू होता है।

२ उसमे सब से पहले किसी अन्य ग्रन्थ या वाणी के पाठ का विधान न होकर सुनये शास्त्र सिमरत 'वेद' का विधान है।

३ उसमें सर्वप्रथम किसी जप तप या क्रिया का नहीं 'योग' युक्त तन 'भेद' करने का विधान है।

४ ग्रन्थ साहब मे सनातन सन्ध्या तथा 'होम' का विधान है।

५ श्रीराम श्रीकृष्ण की स्तुति का विधान है।

६ श्री गुरुगोबिन्द सिह जी ने अपने अमर ग्रन्थ दशम ग्रन्थ के विचित्र नाटक में 'पथ चलाना' — पडे—पात अपने ते जले से नया पथ न चला कर केवल प्राचीन धर्म की ही मान्यता की है।

- उद्गीथ साधनास्थली,
हिमाचल

डॉ० महावीर मीमांसक का प्रो० डी०एन० झॉ को उत्तर

वेदो के मूर्धन्य विद्वान डा० महावीर जी मीमासक दिल्ली ने दिल्ली सस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार (उत्तराचल) मे आयोजित अखिल भारतीय त्रिदिवसीय सम्मेलन (अक्तूबर ६ ८ २००२) मे अपना शोध लेख वैदिक वाडमय मे अन्तरिक्ष विज्ञान विषय पर सस्कृत मे प्रस्तुत किया। २० पृष्ठ का यह लेख अत्यन्त उच्चकोटि का था। जिसकी भूरि भूरि प्रशसा सभी विद्वान श्रोताओ ने की जो देश के सभी स्थानो से पधारे थे।

अपने शोध लेख मे डा० मीमासक ने अन्तरिक्ष की परिभाषा वैदिक वाडमय से प्रमाण देकर स्पष्ट किया। फिर अन्तरिक्ष विज्ञान के मूलभूत बिन्दु अन्तरिक्ष स्थानीय देवताओ की सूची सप्रमाण वैदिक निघण्टु और यास्क के निरुक्त के आधार पर प्रस्तुत की जो इद की वास्तविक और सप्रामाणिक व्याख्या के लिए कई हजार वर्ष पूर्व लिखे गए थे। इसमे प्रमुख पाच देवता **वायु वरुण रुद्र इन्द्र** और **पर्जन्य** का विवरण दिया।

डा० मीमासक ने सर्वप्रथम देवता शब्द की परिभाषा मे बतलाया कि देवता वैदिक मन्त्रो के वर्णनीय विषय का कहते है न कि किसी महान आकारवान व्यक्ति विशेष को जैसा कि सायण महिधर आदि। मध्यकालीन वेद भाष्यकार उन्ही पर आधारित पाश्चात्य विद्वान और पाश्चात्यो की दासता करने वाले आधुनिक भारतीय विद्वानो की यह सर्वथा गलत धारणा है।

इसके पश्चात डा० मीमासक ने वायु वरुण रुद्र इन्द्र और पर्जन्य इन पाच देवता जो वैदिक मन्त्रो के वर्णनीय विषय है अन्तरिक्ष मे अपना कार्य व्यवहार और विश्वमण्डल मे अपने कार्यों का प्रभाव फैलाने वाली भौतिक शक्तिया है जो वृष्टि आदि करवाने मे कार्य करती है। यह कोई दैत्याकार वाले पुरुष व्यक्ति विशेष नही है जैसा कि मिथ्या धारणा इनके सम्बन्ध मे है।

इस प्रसग मे डा० मीमासक ने दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास के प्रो० डी०एन० झा के उन लेखो का सप्रमाण जमकर खण्डन किया जो उन्होने १७ १८ दिसम्बर २००१ के अग्रेजी के हिदुस्तान टाइम्स मे Paradox of Indian Cow और Mincing no words शीर्षक से लिखे थे। प्रो० झा के उन्ही मन्त्रो के उदहरणो को लिया जिसमे प्रो० उन्होने लिखा था कि इन्द्र देवता को तीन सौ गायो और भैसो आदि पशुओ का मास खाने वाला वेदो मे कहा गया है। डा० मीमासक ने निरुक्त के हजारो वर्ष पुराने प्रमाण के आधार पर वैदिक मन्त्रो की व्याख्या के आधार पर स्पष्ट किया कि इन्द्र वह भौतिक शक्ति है जो अन्तरिक्ष मे मेघ को फाडकर पानी के रूप मे बदल कर भूमि पर वृष्टि के रूप मे गिराती है। वृष का अर्थ मेघ है न कि राक्षस वैदिक **वृषभ** शब्द का अर्थ बादल है न कि बैल या भैसा **महिष** शब्द का अर्थ महान है जो मेघ का विशेषण है न कि भैंसा और **उक्षा** शब्द भी महान आकार वाले बादल का विशेषण है न कि बैल अर्थ है। सौ और तीन सौ शब्द भी आकाश मे इन भौतिक शक्तियो द्वारा मेघ रचना मे लगने वाले समय के लिए है न कि पशुओ की सख्या के लिए। डा० मीमासक जी ने डा० सध्या जैन के भी लेख का खण्डन उन्हे वेदार्थ के ज्ञान से शून्य कहते हुए किया। जिसमे उन्होने वृषभ महिष और उक्षा शब्दो की व्याख्या पशु विशेष देकर की थी। आकाश मे होने वाली इन्ही प्राकृत घटनाओ को वेद मे इन्द्र देवता द्वारा विशालकाय मेघ को खाने पकाने या मारने के रूप मे वर्णित किया गया है जिसका वास्तविक अर्थ बादल को बरसाना है।

इस सम्बन्ध मे डा० मीमासक जी के हिन्दी और अग्रेजी के दैनिक समाचार पत्रो मे लेख शीघ्र ही पढने को मिलेग।

अरुण वर्मा

श्री गोपी चन्द नन्दवानी दिल्ली जल बोर्ड के सदस्य बने



आर्यसमाज प्रीत विहार से जुडे श्री गोपी चन्द नन्दवानी दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली जल बोर्ड के सदस्य बनाए गए। आप दिल्ली जल बोर्ड मे १९९७ से मुख्य अभियन्ता (जल) के पद पर आसीन थे। अब आप **इजीनियर इन चीफ** का कार्य भी देखेगे। आपका सहयोग चाहे वह महर्षि दयानन्द गोसम्वर्द्धन केन्द्र गाजीपुर हो या कोई भी आर्यसमाज हो या कोई आर्य महासम्मेलन हो उनका सहयोग सदा मिलता रहा है।

आप एक ईमानदार कर्त्तव्यनिष्ठ मिलनसार व धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति है। आप वैदिक चिन्तन मे विश्वास रखते है। हमे आप पर गर्व है। **आर्य सन्देश** परिवार की ओर से आपके यशस्वी जीवन के लिए शुभकामनाए।

वेदव्रत शर्मा

स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती चोट ग्रस्त

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचाराधिष्ठाता श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी २७ सितम्बर को प्रात काल साढे चार बजे अपने कमरे से बाहर निकलते हुए गिर गए तथा उनके कूल्हे की हडडी टूट गई। श्री स्वामी जी को तत्काल कृष्णनगर के एक नर्सिंग होम मे भरती कराया गया जहा पर २६ सितम्बर को उनका सफल आपरेशन हुआ। उनको १८ टाके लगे हैं। आजकल स्वामी जी दिल्ली सभा के कार्यालय मे स्वास्थ्य लाभ कर रहे है। चिकित्सक के आदेशानुसार इनका वेदप्रचारार्थ बाहर जाना कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया है। *वेदव्रत शर्मा*

पूज्य स्वामी स्वरूपानन्द जी के आर्यसमाज मन्दिर मे दर्शन न होने पर मेरे मन मे जिज्ञासा हुई कि निरन्तर दो सप्ताह से स्वामी जी मन्दिर मे क्यो नहीं दीख रहे हैं पूछताछ के पश्चात मालूम पडा स्वामी जी यहीं अपने निवास पर गिर गए और उनकी हडडी मे चोट आई है और वे अपने पुत्र के पास स्वास्थ्य लाभ कर रहे है। मन को कष्ट हुआ कि दुबले पतले विनोदी स्वामी जी क्योकर शारीरिक कष्ट से पीडित हो गए। मैं कुछ एक कारणो से उन्हे देखने नहीं जा सका। उनके शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रभु से प्रार्थना करता रहा हू।

आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रागण मे ही स्वामी जी का निवास है व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता हैं। स्वामी जी अपनी कविताओ से वैदिक प्रचार करते हैं। वैदिक साहित्य वितरण के द्वारा वैदिक मान्यताओ के प्रति साधारण जनता को जागरूक बनाने का सतत प्रयत्न करते है। स्वामी जी ने स्वय जो वैदिक साहित्य लिखा है वह अत्यन्त रोचक व लाभकारी है।

मैने स्वामी जी को सन्यासी रूप मे ही जाना है। गुणकारी भोजन छोटी छोटी घरेलु दवाओ का स्वामी जी के पास भण्डार है। बच्चो से लेकर बडो व बुजुर्गों के लिए स्वामी जी के पास शिक्षा और मनोरजन का भरपूर पिटारा है। ईश्वर भक्ति के भजनो को मधुर स्वर मे गाकर श्रोताओ को आकर्षित कर लेने की अद्भुत कला है। जीवन के चारो आश्रमो मे मनुष्य को जीने की कला सिखाने के लिए स्वामी जी ने काव्य को माध्यम बनाया है।

ऋषि दयानन्द और अन्य बलिदानियो के शौर्य की गाथाए हो या फिर आर्यसमाज के इतिहास की गौरव गाथा हो स्वामी जी ने उसे कविता मे बद्ध कर बडा ही सरल और सक्षिप्त रूप दिया है।

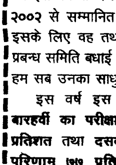
मेरा सौभाग्य था कि एक बार स्वामी जी मेरे घर पर आए। उनकी हास्य रस से सराबोर कविताओं के माध्यम से वैदिक विचारों को श्रोताओ ने बडे ही उत्साह से ग्रहण किया। श्रोत्राओ के बार बार अनुरोध करने पर स्वामी जी बसन्त कुज मे स्त्री सत्सग' समाज मे पधारे और सब बहनो की जिज्ञासाओ का समाधान किया। अभी कुछ मास पहले आपने विनय चालीसा लिखकर समाज कल्याण का बहुत बडा काम किया है। ईश्वर की स्तुति दोहो व चौपाइयो मे बद्धकर उसे इतना सरल और ग्राह्य बनाया है कि उनकी इस पुस्तिका को ईश्वर भक्त लोगो ने बडे स्नेह से अपनाया है। मैने कुछ पुस्तिकाए अमेरीका मे अपनी पुत्री को भेजी वहा **भारतीय सस्कृति मन्दिर** मे सभी सदस्यो ने बडे ही स्नेह और श्रद्धा से मागा है।

स्वामी जी को ईश्वर स्वास्थ्य प्रदान करे जिससे वे अज्ञानता के गहरे अन्धकार को छाटते हुए समाज को ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाने का सतकर्म करते रहें और अपनी छोटी छोटी विनोद से पूर्ण रचनाओ द्वारा समाज का मार्ग दर्शन करते रहे और हम सभी उनके चरणो में बैठकर कुछ ज्ञान प्राप्त करते रहे।

डॉ० अमर जीवन

प्रधानाचार्य मनोरमा चौधरी राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत चलने वाले सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयो मे रतन देवी आर्य कन्या उच्चतम विद्यालय की



प्रधानाचार्या **श्रीमती मनोरमा चौधरी** को इस वर्ष राज्य **शिक्षक पुरस्कार** २००२ से सम्मानित किया गया है इसके लिए वह तथा विद्यालय की प्रबन्ध समिति बधाई की पात्र है तथा हम सब उनका साधुवाद करते हैं।

इस वर्ष इस विद्यालय का **बारहवीं का परीक्षा परिणाम ९९ प्रतिशत** तथा **दसवीं** का **परीक्षा परिणाम ७७ प्रतिशत** रहा जो उत्साहवर्धक है।

विद्यालय की प्रधानाचार्या विवेक विहार जहा वह रहती हैं वहा की महिला आर्यसमाज की प्रधाना भी है।

आर्य सन्देश परिवार इनके तथा इनके परिवार के मगलमय भविष्य की कामना करता है।

वेदव्रत शर्मा

आर्य सन्देश - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१; दूरभाष : ३३६०१५०

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 24 25/10/2002 दिनाक २८ अक्तूबर से ३ नवम्बर, २००२ Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002, 31-10-2002/1-11-2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

दीपावली मंगलमय हो, निर्वाण दिवस प्रेरणादायक हो

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव एव समूची अन्तरग सभा आर्यजनो को दीपावली के पुनीत पर्व पर हर प्रकार की सुख समृद्धि और शान्ति की कामना से परिपूर्ण बधाई देती है। दीपावली के दिन ही महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण समस्त आर्यों के लिए ईश्वर भक्ति के मार्ग की सर्वोच्च प्रेरणा बने ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

२१६७—श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ० प्र०)

अष्टम सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २३ से २५ फरवरी, २००३

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष पू० स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न एक अत्यावश्यक बैठक मे निर्णय लिया गया कि **अष्टम् सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २००३ का आयोजन नवलखा महल, उदयपुर में दिनाक २३, २४ व २५ फरवरी, २००३** में किया जाएगा। हाल ही में विदेशो मे आर्य सामाजिक गतिविधियों का आकलन कर लौटे बैठक मे समुपस्थित न्यास के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने बताया कि विदेशो मे बसे आर्यों मे भारत आकर महर्षि से सम्बन्धित पवित्र स्थलो के अवलोकन की हार्दिक अभिलाषा है। अत इस समारोह को अन्तर्राष्ट्रीय रूप प्रदान किया जाएगा।

बैठक मे सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि उदयपुर मे पूर्व मे आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव की श्रृखला मे प्रति वर्ष जिस प्रकार आर्य जगत के मूर्धन्य तपस्वी सतों के अभिनन्दन की गौरवशाली परम्परा रही है उसी क्रम मे आगामी महोत्सव मे न्यास अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती का उनके चरणो मे आर्यजनो की ओर से **३१ लाख रुपये की थैली** भेट कर अभिनन्दन किया जाएगा।

ज्ञातव्य है कि स्वामी तत्वबोध जी वही अद्वितीय दानवीर तपस्वी मनीषी व्यक्तित्व हैं जो पूर्वाश्रम मे राज्य के दक्षिण अचल के प्रमुख उद्योगपति **श्री हनुमान प्रसाद चौधरी** के नाम से विख्यात थे तथा जिन्होने अपना सर्वस्व होमकर चतुर्थाश्रम मे प्रवेश कर चौबीसो घण्टे अनथक प्रयत्न कर सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थल नवलखा महल उदयपुर (परोपकारिणी सभा का स्थापना स्थल भी) को अपने कुशल निर्देशन मे कुछ नहीं की स्थिति से एक करोड रुपये से भी ऊपर व्यय कर विकसित कर भव्य स्मारक का रूप प्रदान किया और इसे वेद प्रचार व सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओ के प्रचार प्रसार का सशक्त केन्द्र बना दिया है। उन्होने अपनी ओर से इस पवित्र कार्य हेतु ८१ लाख रुपये भी समर्पित किए हैं।

कै० देवरत्न आर्य ने विश्वभर के आर्यों से अपील की कि वे ऐसे महनीय व्यक्तित्व का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर की ओर से किए जा रहे (सयुक्त रूप से) अभिनन्दन मे अधिकाधिक सख्या मे उक्त समारोह मे पधारे एव भेट किये जाने वाले ३१ लाख रुपये की पूर्ति हेतु (स्पष्ट है कि इस राशि का उपयोग भी पूज्य स्वामी जी न्यास की योजनाओ को विस्तारित करने मे करेगे) अपनी छोटी बडी आहुति अवश्य प्रदान करे। आपका सात्विक योगदान **श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर ३१३००१** के पते पर भेजे। यह सहयोग आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

समारोह की विस्तृत रूपरेखा से आर्यजनो को शीघ्र ही अवगत कराया जायेगा।

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा, जयपुर

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २६, अक १ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार ४ नवम्बर से १० नवम्बर २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशों मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

आर्यसमाज देहली की स्थापना का 125वां वर्ष

स्मृति समारोह के रूप में सम्पन्न

दिल्ली मे महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा पहली बार 'आर्यसमाज देहली' की स्थापना **३ नवम्बर, १८७८ ई०** मे की गई थी। आर्यसमाज रूपी यह आन्दोलन ३ नवम्बर २००२ को १२५वे वर्ष मे प्रवेश कर गया। इस अवसर पर एक **स्मृति स्थापना-समारोह** का आयोजन किया गया।

प्रात ७ बजे **आर्य समाज कन्या विद्यालय चावडी बाजार** मे **श्री राजसिह भल्ला के ब्रह्मत्व** मे यज्ञ का आयोजन हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा भी इस यज्ञ मे उपस्थित थे।

आर्यसमाज सीताराम बाजार के मन्त्री श्री बाबू राम आर्य एव उनकी धर्मपत्नी यज्ञ के मुख्य यजमान थे। आर्यसमाज दीवान हाल के धर्माचार्य श्री विद्युत वेदालकार ने यज्ञ कार्य को सम्पन्न करवाया।

यज्ञ के उपरान्त सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव प्रि० चन्द्रदेव डॉ० रविकान्त चौ० लक्ष्मी चन्द तथा श्री राजसिह भल्ला आदि के नेतृत्व मे एक शोभा यात्रा चावडी बाजार से ग्रीन पार्क आर्यसमाज मन्दिर तक के लिए निकाली गई। इस यात्रा के आगे कुछ मोटर साईकिलो पर सवार आर्यवीर वैदिक जयघोष के साथ चल रहे थे। इस शोभा यात्रा का मार्ग मे कई स्थानों पर फल एव मिठाइयो से स्वागत किया गया।

दूसरी ओर आर्यसमाज ग्रीन पार्क नई दिल्ली मे भी एक यज्ञ का आयोजन हुआ जिसके **ब्रह्मा आर्यतपस्वी श्री सुखदेव जी** थे। यज्ञ के उपरान्त आर्य तपस्वी सुखदेव एव श्री राजसिह भल्ला ने वैदिक उपदेशो से उपस्थित आर्यजनो को लाभान्वित किया।

मुख्य समारोह की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा ने की थी।

समारोह का प्रारम्भ 'सत्यार्थ प्रकाश' पर आधारित एक भजन सभा मन्त्राणी श्रीमती शशि प्रभा आर्या द्वारा किया गया।

श्री प० मोद प्रकाश शास्त्री एव श्री वीरेन्द्र विक्रम शास्त्री ने भी अपने अपने ओजस्वी वैदिक उदबोधन से आर्यजनो का मार्गदर्शन किया।

इन वैदिक विद्वानो ने आर्यजनता को इस समारोह की भावनाओ के अनुरूप अपने गौरवशाली इतिहास को देखते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए सगठित होकर सुदृढ प्रयास करने की आवश्यकता पर बल दिया।

मच पर उपस्थित मुख्य अतिथि सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल तथा प्रसिद्ध उद्योगपति महाशय धर्मपाल जी ने ८५ वर्ष से अधिक आयु के वृद्ध आर्यसेनानियो एव माताओ को विशेष **सम्मान चिह्न** प्रदान किए तथा आर्यसमाजो को **उज्ज्वल भविष्य की प्रेरणा** और गौरवशाली इतिहास की स्मृति बनाए रखन के लिए विशेष **स्मृति चिह्न** प्रदान किए गए।

समारोह के अध्यक्ष श्री वेदव्रत शर्मा ने घोषणा करते हुए कहा कि विलम्ब से सूचना मिलने तथा कुछ अन्य कारणो से जिन आर्य महानुभावो और आर्यसमाजो को यह **स्मृति चिह्न** नही प्राप्त हुए उन्हे यह **स्मृति चिह्न** बाद मे प्रदान किए जाएगे।

समारोह के अन्त मे आर्यसमाज ग्रीन पार्क नई दिल्ली द्वारा ऋषि लगर की समुचित व्यवस्था थी जिसमे सभी सम्मिलित हुए।



● आर्यसमाज देहली के १२५वें वर्ष के शुभारम्भ पर आर्यसमाज ग्रीन पार्क, नई दिल्ली में आयोजित सभा का सचालन करते हुए श्री विमल वधावन एडवोकेट। ● प्रसिद्ध उद्योगपति महाशय धर्मपाल आर्यसमाज सरोजनी नगर के प्रधान श्री देसराज जी को 'स्मृति चिह्न' प्रदान करते हुए साथ में हैं सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा, सभा मन्त्री श्री रोशनलाल गुप्ता एवं श्री परसराम त्यागी। ● सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष श्री रामफल बसल श्री राजसिह भल्ला को 'वयोवृद्ध आर्य सेनानी' पुरस्कार से सम्मानित करते हुए, साथ में है सभा महामन्त्री वैद्य इन्द्रदेव जी एव सभा प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा।

हम निर्भय हों :
हम यशस्वी हों ! हम पवित्र हो

अभय नो अस्तु।

अथर्व ११४१

हमे निर्भयता मिले।

यशस स्याम।

अथर्व ६३१३

हम यशस्वी हो।

अस्मान पुनीहि चक्षसे।

अथर्व ६११३

प्रभो हमे पवित्र करो जिससे आपके दर्शन हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

राष्ट्र का भविष्य :
अधिक संतुलन और दृढता से ही सम्भव

२००२ का वर्ष व्यतीत हो रहा है और भारतीय गणतन्त्र अपने सार्थक अस्तित्व के ५५वे वर्ष मे प्रगति कर रहा है। स्वभावत जिज्ञासा होती है कि हमारे राष्ट्र का कैसा लेखा जोखा रहा है और उसका भविष्य कैसा होगा ? यह जिज्ञासा स्वाभाविक है। विदेशी शासक भारत छोडते समय उसके दोनो बाजू पृथक कर गए थे हमारी इच्छा के बावजूद पृथक हुए भूभाग देश से जुड नहीं हो सके। १६७१ मे भारत मे अपने पडोसी से निर्णायक विजय प्राप्त की थी उस समय देश के पूर्वी भूभागो को जोडा जा सकता था, परन्तु यह स्वभाव नहीं हुआ। इस नई सहस्त्रब्दी मैं भारत राष्ट्र का कैसा भविष्य होगा यह एक स्वाभाविक जिज्ञासा है। यह गौरव की बात है कि भारतीय गणतन्त्र निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है इन दिनो देश की स्थिति सुधारने के लिए अनेक प्रयत्न प्रचलित है। यह भी सन्तोष का विषय है कि आन्ध्र पदेश के कृष्णा और गोदावरी के अचल मे प्राकृतिक गैस का भण्डार मिला है। यह सूचना भी दी गई है कि ५० खरब घनफुट तेल भण्डार से देश मे गैस की उपलब्धि ६० प्रतिशत बढ सकती है फलत गैस आयात पर होने वाले खर्च मे धन की काफी बचत हो सकेगी। इसी के साथ देश के कुछ भागो मे बाढ और कुछ क्षेत्रो मे सूखे की समस्या के स्थायी समाधान के लिए सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) ने एक महत्वपूर्ण फैसले मे केन्द्र सरकार को अगले दस वर्षो मे देश की सभी नदियो को एक दूसरे से जोडने के लिए उचित कार्यवाही करने का आदेश दिया है। यद्यपि केन्द्र सरकार सिद्धान्त नदियो को आपस मे जोडने की योजना से सहमत है तथापि नदियो को आपस म जोडने की योजना को कार्यान्वित करने पर होने वाल ५ लाख ६० हजार करोड रुपयो के भावी ससाधनो को जुटाने की योजना तथा उसे कार्यान्वित करने की समस्या का समाधान असम्भव नहीं ता कठिन आवश्य मानती है। महामानवो की दृष्टि मे मानव के लिए असम्भव कोई भी योजना और लक्ष्य नहीं होता। हा उसे व्यावहारिक स्वरूप देने के लिए अधिक दृढता और अनुशासन की अपेक्षा होती है। इसमे सन्देह नहीं कि भारत की राष्ट्रीय प्रतिभा और मानव शक्ति चाहे और प्रयत्न करे तो राष्ट्र की सभी प्रमुख नदिया आगे पीछे जोडी जा सकती है। परन्तु उसके लिए उपयुक्त मानवीय प्रतिभा ससाधनो को रेखाकित कर उन्हे सगठित ओर सयुक्त करने के लिए भारत राष्ट्र की श्रेष्ठ श्रेष्ठ प्रतिभा क्षमता पैदा करना कठिन हो सकता है परन्तु यह कार्य असम्भव नहीं है।

विश्व के श्रेष्ठ मानवो ने सिद्ध किया है कि मनुष्य के लिए असम्भव कोई भी लक्ष्य नहीं है, यदि राष्ट्र और उसके सुधी प्रजाजन एक व्यावहारिक लक्ष्य निर्धारित कर उसे सामूहिक मानव शक्ति और सामर्थ्य से सच्चे हृदय से सगठित हो कार्यान्वित करे। यह प्रसन्नता का विषय है कि देश के वैज्ञानिको ने दक्षिण की दो नदियो के क्षेत्र मे प्राकृतिक गैस का विराट भण्डार पाया है। इस भण्डार के समुचित एव उपुयक्त प्रयोग से राष्ट्र की ईंधन समस्या का स्थायी समाधान सम्भव है। इसी तरह देश की प्रमुख नदियो को यदि जोडा जा सके तो राष्ट्र की प्राकृतिक एव आर्थिक सम्पदा और शक्ति को अधिक व्यवस्थित और सुदृढ किया जा सकता है इसमे कोई सन्देह नहीं है। यह ठीक है कि उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में समुद्र तक और पश्चिम में समुद्र से लेकर पूर्व मे समुद तक फैली मातृभूमि भरतभूमि आज एक और सयुक्त नहीं रह गई है परन्तु उस स्थिति के लिए ही निरन्तर चिन्तन करने की अपेक्षा जो भूभाग राष्ट्र के पास है उनके ससाधनो का व्यवस्थित आकलन कर उनके सदुप्रयोग से राष्ट्र का वर्त्तमान और भविष्य अधिक व्यवस्थित सुरक्षित और सुदृढ किया जा सकता है इस मे कोई सन्देह नहीं। हमें स्मरण रखना चाहिए कि विश्व के अनेक छोटे राष्ट्र हैं जो, अपने सगठन और शक्ति से मानव इतिहास मे अपना उल्लेखनीय यशस्वी योमदान कर रहे हैं। इस तथ्य से राष्ट्र और उसके नेतृव वर्ग को सीख लेनी ही होगी।

विभाजन के बाद भी इस समय उत्तर मे हिमालय से लेकर दक्षिण मे समुद्र तक और दोनो समुद्रो के मध्य मे जो भारत राष्ट्र है उसके जो भौतिक ससाधन और मानवशक्ति हमारे पास है यदि उनका अधिक सन्तुलित व्यवस्थित सदुप्रयोग किया जाए तो भारत राष्ट्र की जनता और राष्ट्र की सभी समस्याओ कठिनाइयो का समुचित समाधान कर कोटि कोटि मानव शक्ति और प्राकृतिक भौतिक ससाधनो के समुचित सदुप्रयोग से मातृभूमि भारत भूमि को विश्व की एक अग्रणी महाशक्ति एव श्रेष्ठ अग्रणी राष्ट्र के रूप मे उभारने से कोई नहीं रोक सकेगा। विश्व के मानचित्र मे छोटे बडे दर्जनो ऐसे राष्ट्र है जो अपने सीमित ससाधनो और छोटे आयतन के बावजूद अपने कर्तृत्व और देन से विश्व के इतिहास मे अपनी गारिमा बनाने मे सार्थक सिद्ध हुए हैं। भारत राष्ट्र को भी ऐसे छोटे परन्तु परिश्रमी उद्यमी राष्ट्रो से सीख लेकर अधिक राष्ट्रीय सन्तुलन और दृढता से अपना वर्त्तमान सुदृढ कर अपना भविष्य अतीत के गौरव भरे इतिहास की तरह सवारना होमा। विभक्त भारत राष्ट्र की मानव शक्ति और ससाधन आज भी इतने हैं यदि उन्हे सन्तुलित एव व्यवस्थित कर उनका समुचित सदुपयोग किया जाए तो इस समय भी अधिक, सन्तुलन और दृढता से भारत राष्ट्र का वर्त्तमान और भविष्य सवारा जा सकता है इसमे तनिक भी सन्देह नहीं है।

बोध कथा
मनोरंजन और ज्ञान-विकास साथ-साथ

अवसर दीवाली का था कुछ बुजुर्गों ने कहा कि यह त्योहार इस पकार मनाए जिससे मोहल्ले भर के बच्चो के ज्ञान के विकास की प्रतियोगिता भी हो सके। एक ओर मोहल्ले भर के बच्चो से खेलकूद विज्ञान इतिहास भूगोल राजनीति से सम्बन्धित विषयो से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाए। प्रतियोगिता सफल रही उसमे पहले तो सबमे एकता की भावना सुदृढ हुई दूसरे सभी बच्चे पढाई के प्रति सजग हुए और एक आपसी स्पर्धा पनपी। इस सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के बहाने मोहल्ले के बडो को भी एकत्र होने का अवसर मिला। यह भी देखा गया कि जुआ खेलने की बुरी आदत से भी बचाव हुआ।

इस तरह दीवाली के माध्यम से मोहल्ले भर के छोटे बडे जहा अनेक खुशिया बटोरने मे कामयाब हुए वहा यह जिज्ञासा भी सबके दिमाग मे उभरी कि क्या इसी तरह हम अपने सभी राष्ट्रीय त्योहारो और पर्वो का सामूहिक प्रसन्नता का साधन नहीं बन सकते हैं जहा बच्चो बडो सभी परिवारो और मोहल्ले भर की एक सुखद एकता का प्रेरक माध्यम भी बना सकते हैं।

— नरेन्द्र

टंकारा उपदेशक महाविद्यालय के
पूर्व स्नातकों से अपील

कुछ पूर्व स्नातकों ने ट्रस्ट को सम्पर्क कर यह आग्रह किया कि सभी पूर्व स्नातको को एक सम्पर्क सूत्र मे बाध 'कौन—क्या—और कहा ?' नाम से एक डायरेक्ट्री उनके चित्र सहित प्रकाशित की जाए एव आने वाले ऋषिबोधोत्सव पर पूर्व स्नातक मधुर मिलन सम्मेलन का भी आयोजन किया जाए। इसी लक्ष्य मे सभी पूर्व स्नातको/छात्रो से आग्रह है कि निम्नलिखित सयोजको से शीघ्र सम्पर्क करें —

पं० रामकृष्ण शर्मा, पोस्ट बाक्स नं० ७०२८३, नैरोबी, केन्या (ईस्ट अफ्रीका)

पं० मेघश्याम आर्य (शास्त्री) आर्यसमाज, लाजपत नगर-२, डी-ब्लॉक, नई दिल्ली-२४

आर्यसमाज और कनाडा

– डॉ० देवरत्न आर्य

अमेरिका की यात्रा पूर्ण करके हमारा कार्यक्रम ७ अगस्त २००२ से १४ अगस्त २००२ तक कनाडा में आर्यसमाज की गतिविधियों से अवगत होना था। हम दिल्ली से आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान माननीय डॉ० सुखदेव जी सोनी के आमन्त्रण पर गए थे। उन्होंने मेरा व मेरी पत्नी सुनीता आर्य का विमान टिकट भेज दिया था। अमेरिका में हमारे आमन्त्रण हेतु डॉ० दिलीप वेदालकार जो शिकागो में रहते है, विशेष रुचि ली और हमें आर्य महासम्मेलन क्लिवलैण्ड के लिए आमन्त्रित किया।

कनाडा और अमेरिका साथ-साथ लगे है। न्यूयार्क से टोरेन्टो की सिर्फ दो घण्टे की विमान यात्रा है। श्री अमर ऐरी जी जो कनाडा में आर्यसमाज के सुदृढ स्तम्भ हैं उनके विशेष आग्रह पर हम ७ अगस्त २००२ को प्रात १० बजे के विमान से न्यूयार्क से कनाडा के लिए रवाना हुए। श्री वेदश्रवा जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका हमें आर्यसमाज न्यूयार्क जहा हम ठहरे हुए थे लेने आ गए। वे वहा से लगभग ७५ किलोमीटर दूर रहते हैं। श्री सुभाष जी अरोडा भी हमें छोडने के लिए आ गए थे परन्तु हमें उनसे क्षमा मागनी पडी।

न्यूयार्क के पास लवाडिया नाम से विमान स्थल है वहीं से हमारे विमान ने उडान भरी और हम अमेरिका की धरती से कनाडा के लिए रवाना हो गए। लगभग १ बजे हम टेरेन्टो विमान स्थल पर पहुचे। विमान स्थल पर श्री अमर ऐरी उनकी धर्मपत्नी मेरे छोटे भाई डॉ० वीररत्न आर्य की सुपुत्री श्रीमती मधु जो वहीं रहती हैं श्री बेरी जी मन्त्री टोरेन्टो आर्यसमाज श्री जयन्त (आधुनिक भीम) श्री अभय शास्त्री आदि १५ गणमान्य व्यक्ति हमें लेने के लिए आए हुए थे। वहा से हम श्री अमर ऐरी जी के निवास पर गए। वहा पहुचते ही हमें अमेरिका से श्री विनोद सेठी का टेलीफोन आया कि आपके पुत्र अश्विनी ने ई-मेल पर सूचना दी है कि श्री ओंकार नाथ जी आर्य का देहान्त हो गया है व उनका अत्येष्टि सस्कार ८ अगस्त को है। मेरे कनाडा आने का उत्साह बिल्कुल समाप्त हो गया। मैं जा भी नहीं सकता था उनके अन्तिम दर्शन करने।

श्री ओंकार नाथ जी मेरे लिए पिता के समान थे। आज जिस पद पर मैं बैठा हू वहा तक पहुचाने में उनका विशेष हाथ रहा। अमेरिका के लिए रवाना होने से पूर्व उन्होंने मुझे मेरे मुम्बई निवास पर टेलीफोन किया। जब उन्हें पता चला कि मैं कल राजधानी एक्सप्रेस से दिल्ली जा रहा हू और वहा से अमेरिका चला जाऊगा तो वे श्रीमती शिवराजवती के साथ मिठाई का डिब्बा लेकर मेरे निवास पर आए। मैंने उनके पैर छुए और उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया। वे बड़े प्रसन्न थे। जब मुझे अमेरिका का वीसा मिल गया और वो भी दस साल के लिए तो उन्होंने प्रसन्नता के साथ १०-१५ व्यक्तियों को टेलीफोन किए। मेरे विदेश जाने से बड़े प्रसन्न थे। मुझ से कहा खूब काम करो आर्यसमाज का। कोई भी कमी हो तो मुझे बताना। ऐसे प्रेरणा स्रोत को खोकर मेरा उदासीन होना स्वाभाविक था। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। मैंने उसी दिन वहीं से अपना शौक सन्देश श्री अजय सहगल सम्पादक टकारा समाचार व श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री सभा को दिल्ली में भेजा। श्री अमर ऐरी जी के परिवार में लगभग डेढ घण्टा बिताने के बाद मेरी भतीजी मधु के विशेष आग्रह पर श्री ऐरी जी हमें उनके निवास पर छोड आए। हालाकि श्री ऐरी जी चाहते थे कि हम उनके निवास पर ही रहें। दोनों घर पास-पास थे अत कोई दिक्कत नहीं आई।

सायकाल हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज मारखम में था। श्री अमर ऐरी जी के साथ हम आर्यसमाज मन्दिर गए। इस आर्यसमाज का निर्माण दो समाजों ने मिलकर किया। गायना के आर्यसमाजी अपनी आर्यसमाज बनाना चाहते थे और भारतीय अपनी। फिर दोनों ने मिलकर इस आर्यसमाज का निर्माण किया। एक वर्ष भारतीय रविवार का सत्सग प्रात करते है और गायना के व्यक्ति साय। ठीक इसी प्रकार एक वर्ष गायना के व्यक्ति प्रात और भारतीय साय।

ह्यूसटन (अमेरिका) के भव्य भवन को देखकर में अत्यन्त प्रभावित हुआ था। परन्तु आर्यसमाज मारखम के भवन को देखकर मैं और भी अधिक प्रसन्न हुआ। एक छोटी से टेकडी पर दो एकड भूमि में विशाल भवन और बाहर से बडी सुन्दरता के साथ छवि बिखेरता हुआ यह समाज मन्दिर था। वातानुकूलित भवन व तलघर जिसमें लगभग १५०० व्यक्ति आराम से बैठ सकते है व तलघर में भोजन कर सकते हैं। आधुनिक सामानों से सुसज्जित विशाल रसोई घर-विशाल पुस्तकालय मीटिंग रूम पुरोहितों के लिए सुसज्जित दो फ्लेट लगभग २०० कारे खडी करने हेतु पार्किंग। रात्रि को ऊचाई से मारखम व टोरेन्टो शहर देखने का विद्युत नजारा अगर लिखू तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि भारत में भी इतना विशाल आर्यसमाज भवन देखने को नहीं मिलेगा।

भवन की एक और विशेषता है इसकी मुख्य मजिल लगभग १५००० स्क्वायर फुट की है और नीचे की मजिल भी लगभग १४५०० स्क्वायर फुट सम्पूर्ण भवन लगभग २६५०० स्क्वायर फुट का है। भवन की ऊचाई ६० फुट की है। और भवन २ एकड़ जमीन पर बना है।

भवन में बनी हर एक वस्तु किसी न किसी वैदिक सिद्धान्त का प्रतीक है। मुख्य प्रवेश पर दो बड़े स्तम्भ बने हैं जो पुरुष और महिला को सम्बोधित करते है जिससे आर्य परिवार बनता है। शिखर का रग गहरा भगवा रग का है जो अग्नि का प्रतीक है जिससे पर्यावरण शुद्ध होता है। शिखर पर हर दिशा में १२ त्रिभुज बने है जो भारतीय संस्कृति के ६ उपनिषद् ओर ६ वेदागों के प्रतीक है। इन १२ त्रिभुज के साथ ४ छोटे स्क्वायर बने है जो ४ वेदों की प्रतीक है। भवन के दाहिने ओर समाज का पुस्तकालय है उस पर ११ मनुष्य की आकृति बनी है जो ग्यारह उपनिषदों के प्रतीक हैं। मुख्य प्रार्थना भवन के ऊपर तीन खुले-आसमान प्रकाश बने है जो ईश्वर जीव व प्रकृति के प्रतीक है। इस प्रकार भवन निर्माण की हर वस्तु भारतीय सस्कृति के किसी न किसी पहलू को दर्शाती है।

७ अगस्त की सायकाल आर्यसमाज के भारतीय अधिकारी अन्तरग सदस्य व कार्यकर्त्ताओ की बैठक थी। श्री अमर ऐरी जी ने आदरणीय ओंकार नाथ जी के देहावसान की सूचना सभी को दी और उनकी पृष्ठ भूमि को सबके सम्मुख रखा। एक मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शान्ति की प्रार्थना की।

मैंने अपने विचार उसके पश्चात् सभा में रखे। भारत मे आर्यसमाज की गतिविधियों द० अफ्रिका में आर्यसमाज का विस्तृत कार्य अमेरिका में आर्यसमाज की सक्रियता और आर्यसमाज के विशाल सगठन से सभी को अवगत कराया। उपस्थित आर्यजनों ने अनेक प्रश्न पूछे और मैंने उनका उत्तर दिया। एक प्रश्न अमेरिका की समस्त आर्यसमाजों में और यहा भी पूछा गया कि हम आर्यसमाज में नवयुवकों को कैसे आकर्षित करें। मैंने प्रश्नकर्त्ता से ही पूछा कि क्या आपके बच्चे आर्यसमाज में आते है। मैंने कहा जिस दिन आप अपने सभी पारिवारिक सदस्यों के साथ आर्यसमाज में सक्रियता से भाग लेगे और नवयुवको को उत्तरदायित्व देगे नवयुवक स्वत आर्यसमाज के कार्यों में रुचि लेने लगेगे।

८ अगस्त २००२ को श्री एव श्रीमती ऐरी हमें Toronto down Town दिखाने ले गए। हमने सगम नाम के भारतीय रेस्टोरेन्ट में भोजन किया। भारतीय उच्चायुक्त श्री दिव्यम मानचन्दा ने हमें ११३० बजे चाय पर आमन्त्रित किया हुआ था। हम उनसे मिले। उन्होने बडे स्नेह और सम्मान से हमारा स्वागत किया। उनके दिव्यम नाम पर जब मैंने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की तो मालूम पडा वे दिल्ली के प्रसिद्ध आर्यसमाजी मानचन्दा परिवार के है जिन्होंने मानचन्दा कालेज आदि शिक्षण सस्थाए भी चला रखी है। जब उन्हें आर्यसमाज मारखम की सक्रियता एव भव्यता के बारे में बताया तो उन्होंने कहा मैं एक दिन अवश्य ही इस आर्यसमाज मन्दिर को देखने आऊगा।

भोजन के पश्चात् हम विश्व की प्रसिद्ध सर्वोच्च ऊचाई को प्राप्त सी०एन० टावर देखने गए। १४१ मजिल की ऊचाई का यह टावर २६०० फीट का है। आश्चर्य इस बात का था कि तल मजिल से १४१ मजिल तक जाने के लिए लिफ्ट सिर्फ सवा मिनट लेती हैं। सामने से लिफ्ट में आप टोरेन्टो नगर भी देख सकते है। ऊपर जाने के बाद सड़कों पर दौडती कारें चीटियों के समान लगती है। दुनिया की यह आश्चर्यजनक टावर को देखने के लिए सैकड़ो आदमी पक्ति में खड़े थे। ऊपर जाने से पूर्व एक छोटी सी फिल्म भी दिखाई गई जिसमें टावर के निर्माण का इतिहास फिल्माया गया था।

ऊपर जाकर ५०-६० मजिल की इमारतें भी छोटी-छोटी लग रही थी। १४०वीं मजिल पर Glass Floor बना हुआ था। बच्चे उस पर खेल रहे थे। लेकिन हमें तो उस ग्लास पर कदम रखने का साहस नहीं हुआ। ग्लास से १४० मजिल नीचे का दृश्य देखने से अजीव सी सिरहन पैदा होती थी शरीर में। मेरी पत्नी सुनीता ने उसका खूब आनन्द लिया। उसी मजिल में बने एक रेस्टोरेन्ट मे हमने आइसक्रीम खाई और उस ऊचाई पर बैठकर खाने का आनन्द लिया। आइसक्रीम इतनी सारी एक विशाल कप मे दी गई कि उसे पूरा खाने मे एक घण्टे का समय चाहिए। हम चारो ही उसे पूरा नहीं खा पाए।

जैसा मैंने पूर्व में लिखा है वैदिक स्प्रीच्यूल सेन्टर मारखम का भवन दो आर्य समुदायो द्वारा बनाया गया है। आज सायकाल हमें। गायना के आर्यसमाजियो का निमन्त्रण था। सायकाल ८ बजे उस समुदाय के अधिकारी अन्तरग सदस्यो एवं सक्रिय कार्यकर्त्ताओ की बैठक को मैंने सम्बोधित किया। लगभग ३० मिनट के भाषण के पश्चात् जो आर्यो के सुदृढ सगठन पर था – वे प्रसन्न हुए और यही कहते रहे कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूर्व में भी आते जाते रहते तो हम महर्षि के मिशन को और विकासमय गति देते। उपस्थित आर्यो ने अनेक प्रश्न किए जिसका मैंने उन्हें सन्तोषजनक उत्तर दिया वे भारत की आर्यसमाजों की गतिविधियो को जानकर बडे प्रसन्न हुए। मैंने अपने समस्त कार्यक्रमों में व भाषणों में सिर्फ आर्यसमाज की सकारात्मक भूमिका ही आम सदस्यों के सामने रखी। हालाकि उनकी ओर से किए गए अनेक नकारात्मक प्रश्न आए थे पर मेरे सकारात्मक उत्तर से वे बहुत प्रसन्न हुए।

एक प्रश्न था कि आर्यसमाज ने चर्च मस्जिदों व गुरुद्वारों जैसी उन्नति क्यों नहीं की ? मैंने उत्तर दिया आपकी यह तुलना करना गलत है। ईसाई धर्म लगभग २००० साल पहले प्रारम्भ हुआ था। इस्लाम १४०० वर्ष पूर्व और सिक्ख धर्म ४०० वर्ष पूर्ण कर चुका है। जबकि आर्यसमाज ने सिर्फ १२५ वर्ष ही पूर्ण किए है। इन १२५ वर्ष में ६००० आर्यसमाजें बनी है। २००० स्कूल कालेज मेडिकल कालेज आदि बने है सैकडों अनाथालय विधवा आश्रम दयानन्द सेवा आश्रम आदि बने हैं। विश्व के समस्त देशों में आर्यसमाज का विस्तार है। अकेले मॉरिशस जैसे छोटे देश में ४५० आर्य समाजें ३ सेवाश्रम और अनेक डी०ए०वी० कालेज है।

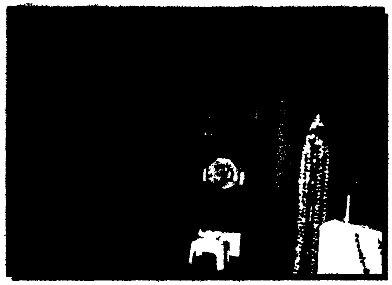
आज भारत में तीन विश्वविद्यालय आर्यसमाज के नाम है। रोहतक में 'महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय' अजमेर में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय' और हरिद्वार मे 'गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय' है इसके अतिरिक्त सैकड़ों सस्थाए अलग से बनी है वे अपने-अपने क्षेत्र में कार्यरत् है। आप बताए कि ससार में कौन सा धर्म या मजहब है जिसने अपने १२५ वर्षों के जीवन में इतना विकास किया है। भारत के स्वतन्त्रता सग्राम में ८५ प्रतिशत आर्यो ने भाग लिया। सरदार भगतसिह रामप्रसाद विस्मिल सुख देव राजगुरु लाला लाजपत राय स्वामी श्रद्धानन्द श्याम जी कृष्ण वर्मा भाई परमानन्द आदि अनेक महापुरुष या तो फासी के तख्ते पर लटक गए या शेष ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। ऐसा कोई उदाहरण किसी धर्म या मजहब में मिलता हो तो बताए। मानव निर्माण की ऐसी विचित्र फैक्टरी किसी के पास हो तो बताए। मेरा उत्तर सुनकर जो उल्लास उनके चेहरे पर था और जो सतुष्टी की भावना उनके चेहरे पर देखने को मिली वह अनोखी थी। श्री अमर ऐरी तो मेरे कनाडा निवास के दौरान अनेक बार मुझसे कहते रहे आपने जो उत्तर उस दिन दिया मैं उससे बडा प्रभावित हुआ हू।

– शेष पृष्ठ ८ पर

कनाडा यात्रा



आर्यसमाज टोरण्टो के भवन में सर्वश्री ज्ञानन्दरूप नारायण, अमर ऐरी,
डॉ० तुलसी शर्मा कै० देवरत्न आर्य महात्मा प्रेम प्रकाश जी व श्री जयन्त जी।



आर्यसमाज मारखम में आयोजित गायत्री यज्ञ के अवसर पर उद्बोधन करते
कै० देवरत्न आर्य। पीछे बैठे हैं यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा प्रेम प्रकाश जी।



आर्यसमाज टोरण्टो के अधिकारियों व गणमान्य व्यक्तियों के साथ
सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।



गायत्री महायज्ञ के एक हवन कुण्ड पर बैठे श्री यश आर्य,
श्रीमती सुरोज आर्या, श्री अमर ऐरी एवं सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।



गायत्री महायज्ञ के एक अन्य हवन कुण्ड पर बैठे यजमान।
साथ में हैं श्रीमती सुनीता आर्या, श्रीमती अमर ऐरी एवं एक विदेशी महिला।

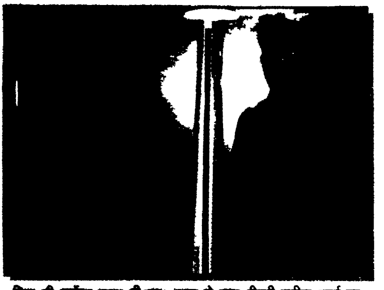


आर्यसमाज मारखम के साप्ताहिक सत्संग में सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य
भाषण देते हुए। सबसे पीछे बैठे हैं श्री अमर ऐरी, डॉ० सुखदेव सोनी एवं
श्रीमती सरोज सोनी।

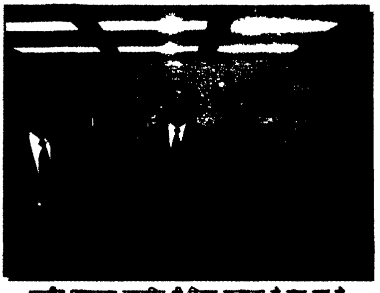
की झलकियाँ



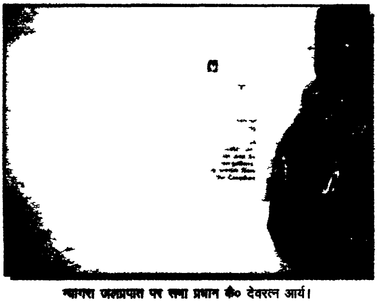
१४०वीं मंजिल पर बने सी०एन० टावर रेस्टोरेन्ट में श्री अमर ऐरी व डॉ० देवरत्न आर्य।



विश्व की सर्वोच्च स्तम्भ सी०एन० टावर के साथ श्रीमती सुनीता आर्या एव डॉ० देवरत्न आर्य।



भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री विमल मानचन्दा के साथ खड़े हैं श्री अमर ऐरी श्रीमती सुनीता आर्या सभा प्रधान डॉ० देवरत्न आर्य एवं श्रीमती अमर ऐरी।



न्यागरा जलप्रपात पर सभा प्रधान डॉ० देवरत्न आर्य।



आर्यसमाज मारखम (कनाडा) के भव्य भवन का एक चित्र।



कनाडा विमान स्थल पर विदाई के क्षणों में सभा प्रधान डॉ० देवरत्न आर्य एव श्रीमती सुनीता आर्या के साथ श्रीमती मधु शर्मा उनके सुपुत्र श्री सनी शर्मा आर्यसमाज पील के प्रधान श्री डी०मेल श्रीमती अमर ऐरी एव आर्यसमाज मिसिसागा के प्रधान श्री वेद खन्ना।

पृष्ठ ५ का शेष भाग

आर्यसमाज और कनाडा

मैंने कहा आप सब सगठन के सूत्र से बधे और हम मिलकर ईमानदारी और सच्चाई से महर्षि के मिशन को विकसित करने के लिए कदम उठाएगे तो आने वाले समय मे कोई धर्म हमारा मुकाबला नहीं कर पाएगा। रात्री को लगभग १० ३० बजे यह सभा समाप्त हुई।

६ अगस्त को हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज पील मे था। श्री ऐरी जी हमें साय ५ बजे ले गए। उद्योगों की नगरी में ही किसी उद्योग के भवन को लेकर इस सुन्दर आर्यसमाज का निर्माण हुआ। वातानुकूलित भव्य भवन अत्यन्त साफ सफाई से चमकती उस आर्यसमाज को देखकर कोई भी व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता है। इसके प्रधान है श्री लाईनेल प्रसाद और मन्त्री डॉ० कृष्णबृज पाल। दोनों मिलकर शेष सदस्यों के साथ अत्यन्त सक्रिय है। इस आर्यसमाज को ब्रिटिश गायना से आए आर्यों ने बनाया हैं। मेरा भाषण हुआ। श्री अमर ऐरी जी ने मेरा परिचय कराया। और फिर वही प्रश्नों की बौछार। युवा वर्ग कैसे आर्य समाज में आए सार्वदेशिक का प्रधान पूर्व हमारे देश में क्यो नहीं आया – सार्वदेशिक का क्या अर्थ है – आदि-आदि। मैंने हसते हुए कहा यह प्रश्न गलत है कि सार्वदेशिक का प्रधान पहली बार यहा आया। वास्तविकता यह है कि आपने सार्वदेशिक के प्रधान को पहली बार आमन्त्रित किया है। आप पूर्व में भी आमन्त्रित करते तो वे अवश्य आते। वहा मुझे आर्य महिला समाज अन्धेरी मुम्बई की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला भी मिली वे वहा पर अपने पुत्र के पास आई थी। मुझसे विदेश में मिलकर बडी प्रसन्न हुई।

१० अगस्त को आर्यसमाज मारखम में एक आर्य परिवार का विवाह सस्कार था। उनके विशेष आग्रह पर मैं उसमें सम्मिलित हुआ। आर्यसमाज भवन को दुल्हन की तरह सजाया हुआ था। लगभग ४०० व्यक्ति उपस्थित थे। हमने नवदम्पत्ति को आशीर्वाद दिया। अनेक विद्वान व कार्यकर्त्ताओं से मिलना हुआ व वही भोजन किया।

साय ४ बजे कनाडा देश की समस्त आर्यसमाजों की ओर से हमारे सम्मान मे एक सयुक्त कार्यक्रम रखा गया था। कनाडा की समस्त आर्यसमाजो के प्रतिनिधि वहा उपस्थित थे। इस कार्यक्रम की सूचना पिछले तीन दिनों से ए०टी०एन० टी०वी० पर प्रसारित हो रही थी।

स्वागत समारोह में बडी अच्छी उपस्थिति थी। मैंने भारत की आर्यसमाज व विदेशो की आर्यसमाज-गतिविधियो पर प्रकाश डाला। मेरे सहित सभी आर्य इस बात पर आश्चर्य चकित थे कि विदेशों में आर्यसमाज का इतना कार्य हो रहा है। इस कार्यक्रम मे शुद्धि कार्यों पर अनेक प्रश्न पूछे गए। वास्तव में अमेरिका दक्षिण अफ्रिका इग्लैण्ड की सरकारे भी धर्मान्तरण के कार्यों से परेशान है। यहा इस्लामीकरण तेजी से हो रहा है। यह कार्यक्रम लगभग ६ बजे समाप्त हुआ। मैने सभा की ओर से जितने प्रधान व मन्त्री एव विद्वान उस सभा मे आए उनका भगवा पटको से सम्मान किया।

समारोह समाप्त होते ही हमें श्री सुरेश शर्मा जी (वैदिक विद्वान निरुकाचार्य श्री धर्मदेव जी के सुपुत्र और हमारे परिवार के दामाद) व मेरी भतीजी मधु शर्मा हमें न्यागरा प्रपात दिखाने ले गए। वहा जाकर उस प्राकृतिक दृश्य को देखकर क्या आनन्द आया इसका वर्णन करना कठिन है। यह प्रपात अमेरिका और कनाडा की सीमा के साथ बह रहा है। एक पुल बीच मे है उसे पार कर लो तो अमेरिका और इस ओर कनाडा। लेकिन इस प्रपात की सुन्दरता देखनी हो तो कनाडा में खड़े होकर देखे। प्रकृति और ईश्वर का करिश्मा है यह प्रपात। सतत् बारहों माह एक विशाल ऊचाई से पानी गिर रहा है। पानी गिरने की आवाज आप कई मीलों तक सुन सकते है। हमें जहा पानी गिर रहा है एक मानव निर्मित गुफा द्वारा उस सतह तक जाने का अवसर मिला। एक विशाल सफेद परदा जो बह रहा है तेजी से उसे देखने का आनन्द कितना आया, लिखा नहीं जा सकता। थोडी देर में अधेरा हो गया और प्रपात के गिरते हुए पानी पर रग बिरगी रोशनी डाली गई। अनेक रगों में प्रपात का गिरता हुआ पानी देखने को मिला। वहा एक बोर्ड पर लिखा था 'यह प्रपात १७६ फीट की ऊचाई से गिर रहा है। हर मिनट पर यहा १५४ मिलियन लीटर पानी गिरता है। हमारी इच्छा वहा से जाने की नहीं हो रही थी फिर भी लगभग ११ बजे हम वहा से वापिस लौटने की तैयारी करने लगे। इस प्रपात को देखने के लिए वहा हजारों पर्यटक घूम रहे थे। वहा पर अनेक पाच सितारा होटल और सैकड़ों दुकानें पर्यटकों को लुभाने के लिए बनी हुई है।

११ अगस्त को हमारा बहुत व्यस्त कार्यक्रम रहा। रविवार होने के कारण हम प्रात आर्यसमाज मारखम पहुचे। आज यहा प्रात ब्रिटिश गायना सेआए आर्यों का सत्सग था। पडिता यशोधरा जी यज्ञ का सचालन कर रही है। वेद मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण बीच-बीच में वेद मन्त्रों को सगीत वाद्यों के साथ गाकर उनकी आहुति दी जाती रही। मैंने अपने जीवन में इतना आकर्षक यज्ञ इससे पूर्व नहीं देखा था। मैंने उसके वीडियों कैसेट की भी माग की। आज यज्ञ मे मुख्य यजमान के रूप में श्री एव श्रीमती दलजीत थे जो अपनी ५० वीं वैवाहिक वर्षगाठ मना रहे थे। सबको मिठाई के डिब्बे व भोजन उनकी ओर से दिया गया था।

सत्सग में लगभग ३०० व्यक्ति उपस्थित थे। समाज के प्रधान श्री आदित्य कुमार जी ने हमारा स्वागत किया। श्री अमर ऐरी जी ने मेरा परिचय दिया। मैंने आर्यसमाज की स्थापना क्यों और कैसे हुई एव आर्यसमाज के गौरवमय अतीत पर अपने विचार रखे। कुछ प्रश्न भी श्रोताओं ने पूछे। इस सत्सग के समाप्त होने पर हम लगभग १३० बजे अगले कार्यक्रम के लिए रवाना हो गए।

३ बजे से हमारा कार्यक्रम आर्यसमाज मिसीसागा में था। श्री रणवीर सरदाना हमें मिसीसागा ले जाने के लिए १३० बजे आ गए थे। आर्यसमाज का यह कार्यक्रम एक कम्यूनिटी हाल में होता है। अब उन्होंने अपना भवन बनाने का निश्चय कर लिया है। जमीन खरीद ली गई है योजना व नक्शा बन गया है व एक वर्ष मे यह भवन बनकर तैयार हो जाएगा। समाज के प्रधान श्री विनोद खन्ना बडे भावुक एव पक्के आर्य विचारों के है। मेरे भाषण के पश्चात् बोले हमारे नए भवन के उद्घाटन पर आप अवश्य आना। और मैंने कहा आप आमन्त्रित करेगें तो मैं इसे अपना सौभाग्य समझूगा।

आर्यसमाज के मन्त्री श्री सुशील कुमार जी एव विद्वान डॉ० श्री वास्तव जी मंच पर उपस्थित थे। डॉ० श्रीवास्तव अध्यापन के साथ-साथ विशेष आमन्त्रण पर सस्कार भी कराते है। मेरा परिचय प्रधान श्री विनोद खन्ना ने दिया। इस सत्सग में मुम्बई की श्रीमती पुष्पा भण्डारी और आदरणीय श्री ओंकार नाथ जी की छोटी बहिन भी उपस्थित थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व प्रधान आदरणीय डॉ० सुखदेव सोनी एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज सोनी अमेरिका से प्रात आर्यसमाज मारखम के सत्सग में एव मध्याह्न आर्यसमाज मिसीसागा के सत्सग में उपस्थित होने के लिए अमेरिका से आए हुए थे। समाज के अधिकारियों ने उनका पुष्प गुच्छों से सम्मान किया। वास्तव में मैं और पत्नी सुनीता आर्या उन्हीं के निमन्त्रण पर अमेरिका में होने वाले आर्यमहासम्मेलन में आए थे। आज भाषण के पश्चात् उन्होंने मुझे जनवरी २००३ में वर्मा देश में आर्यसमाज का कार्य देखने के लिए आमन्त्रण दिया जिसे मैंने स्वीकार किया। डॉ० सोनी जी मूलत बर्मा देश के है और पिछले ४० वर्षों से अमेरिका में बस गए हैं।

मेरे भाषण के पश्चात् मैंने आर्यसमाज मिसीसागा के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का भगवा पटकों से सम्मान किया। उसके पश्चात श्री सरदाना जी हमें ५ बजे आर्यसमाज मारखम छोड़ गए।

सायकाल वैदिक स्प्रिच्यूल सेन्टर मारखम में भारतीयों का रविवारीय सत्सग था। मेरा भाषण हुआ। मैंने आधुनिक परिवेश में आर्यसमाज की आवश्यकता कितनी है और आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य मानव निर्माण का है विषय पर अपने विचार रखे। भाषण के पश्चात् उपस्थित आर्यों में जो उत्साह था देखने योग्य था। मुझे इस भाषण के पश्चात् अनेक बुजुर्गों ने गले लगाकर बधाई दी। भोजन के पश्चात् हम अपने निवास पर आ गए।

कनाडा में आर्यसमाज का कार्य श्री अमर ऐरी जी जिस उत्साह और तन्मयता से कर रहे है वह हम सब के लिए प्रेरणा स्रोत है। मैं इन समाजों में जाकर वहा उनके कार्य व गतिविधिया देखकर बड़ा प्रभावित व प्रसन्न हुआ। मैंने श्री अमर ऐरी जी से प्रार्थना की कि विदेशों में अपने-अपने देश की आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यरत् है। आप भी समस्त आर्यसमाजों को सगठित कर आर्य प्रतिनिधि सभा कनाडा का निर्माण करें व हमें सूचित करें ताकि मान्यता देकर एक नवीन आर्य प्रतिनिधि सभा हमारे सगठन से जुड़ सकें।

१२ अगस्त से एक सप्ताह के लिए आर्यसमाज मारखम में 'गायत्री यज्ञ' का आयोजन रखा गया था। प्रात १० से १२ बजे तक एव साय ७ से ६ बजे तक यज्ञ होता रहा। यहा दिन बहुत बडे होते हैं। रात्री ६ बजे तक भी सूर्य की रोशनी देखने को मिल जाती है। यज्ञ के ब्रह्मा आदरणीय महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी (पजाब) थे। वे प्राय उन दिनों अपने सुपुत्र के पास कोलम्बस (अमेरिका) में आ जाते हैं। मैं प्रात यज्ञ में सम्मिलित हुआ। उसके पश्चात् श्री प० अभयदेव जी शास्त्री हमें अपने निवास पर भोजन कराने ले गए। प० अभय देव जी अत्यन्त व्यस्त विद्वान हैं फिर भी समय निकाल कर वे हमें भोजन के लिए ले गए। जब हम कनाडा पहुचे थे उस समय भी प० अभय देव शास्त्री और श्री जयन्त जी विमान स्थल पर स्वागत के लिए उपस्थित थे।

सायकाल हम कनाडा के भव्य मार्किट जिन्हें वहा 'मोल' कहा जाता है देखने गए। इस मोल की भव्यता देखकर बडा आनन्द आया। सारी आवश्यक वस्तुए उस एक छत के नीचे उपलब्ध थी।

१३ अगस्त को हम प्रात गायत्री यज्ञ में उपस्थित हुए। यज्ञ के पश्चात् आ० प्रेम प्रकाश जी महात्मा व मेरा प्रवचन हुआ। मैंने देव पूजा सगतिकरण और दान पर अपने विचार रखे और अनेक भावुक उदाहरणों को श्रोताओं के सामने रखा। इस भाषण को विशेषकर महिलाओं ने बहुत पसन्द किया। यज्ञ के पश्चात् इस विषय पर कि 'हम ससार का उपकार कैसे कर सकते हैं महिलाओं ने अनेक उपयोगी सुझाव दिए। लगभग १.३० बजे हम घर आ गए और उस दिन फिर कहीं नहीं गए।

१४ अगस्त को प्रात हम गायत्री यज्ञ मे सम्मिलित हुए। यज्ञ के पश्चात् मेरा भाषण हुआ। आज हमें इग्लैण्ड के लिए रवाना भी होना था। श्री अमर ऐरी जी चाहते थे कि हम गायत्री यज्ञ की सामाप्ति तक यहीं रहें परन्तु हम पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार ही चलना चाहते थे।

वैदिक विद्वान एव अनेक पुस्तकों के लेखक आदरणीय डॉ० तुलसी राम जी मुझसे मिलने आर्यसमाज मन्दिर आ गए थे। अपनी कई पुस्तकें उन्होंने मुझे भेंट की। श्री गिरिश खोसला ने अनेक टेलीफोन कर हमारी इग्लैण्ड में रहने आदि की व्यवस्था कर दी थी। वे एक कुशल प्रशासक के रूप में सारी व्यवस्था सारे देशों में हमारे लिए करते रहें।

सायकाल ६ बजे हम श्री ऐरी जी के साथ व श्री सुरेश शर्मा व मधुशर्मा के साथ टोरेन्टो विमान स्थल के लिए रवाना हुए। वहा पील आर्यसमाज के प्रधान श्री लाईनेल प्रसाद व मिसीसागा आर्यसमाज के प्रधान श्री विनोद खन्ना पहले ही हमें विदा देने के लिए उपस्थित थे। वे हम से विदा लेकर चले गए और रात्री ६ बजे ब्रिटिश एयरवेज की फ्लाईट सख्या बी-ए ९८, से हम इग्लैण्ड के लिए रवाना हो गए।

कनाडा देश हमें बहुत अच्छा लगा। खुला शहर, स्वच्छता पर्यावरण की शुद्धता और विभिन्न आर्यसमाजों की सक्रियता देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। श्री अमर ऐरी जी के कार्यों ने हमें बहुत प्रभावित किया। दिन-रात वे आर्यसमाजों की गतिविधियों में लगे रहते हैं। आर्यसमाज मारखम उनकी दूरदृष्टि और सक्रियता का प्रमाण है। उनका मधुर और सरल स्वभाव एव आर्यसमाज के प्रति उनकी समर्पित भावना हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके मन्त्री श्री सुदर्शन बेरी जी निष्ठावान कार्यकर्त्ता है और कधे से कधा मिलाकर आर्यसमाज का कार्य कर रहे है। ईश्वर सभी कार्यकर्ताओं को दीर्घायु प्रदान करे ताकि हम सब मिलकर महर्षि के मिशन को तीव्र गति दे सके। अपनी इन मधुर स्मृतियों को लेकर हम इग्लैण्ड चले गए।

– प्रधान, सार्वदेशिक सभा
दिल्ली

आर्यसमाज, बी० ब्लाक जनकपुरी में निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण

आर्यसमाज, बी-ब्लाक, जनकपुरी में निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र का उदघाटन करते हुए साहित्यकार समाज सेवी एव आर्यसमाज बी-ब्लाक जनकपुरी के प्रधान डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि क[illegible] वर्तमान समय की अनिवार्यता है। रोजगार उन्नति और प्रगति चाहने वाले बच्चो के लिए इसका ज्ञान आवश्यक है किन्तु व्यावसायिक शिक्षण सस्थान इसके लिए छात्रो से हजारो रुपये वसूलते हैं। ऐसी स्थिति मे प्रतिभा सम्पन्न एव निर्धन छात्र इसके प्रशिक्षण से वचित रह जाते हैं। ऐसे छात्रो की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सीमा (सोसायटी फॉर इटर्नल एजूकेशन ऑफ म्यूजिक एण्ड आर्ट) (पजीकृत) नामक सामाजिक सस्था ने एक पखवाडे के लिए नि शुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण देने का निश्चय किया है जिसके लिए आर्यसमाज इस सस्था के पदाधिकारियो का आभारी है। इस अवसरपर 'सीमा के अध्यक्ष श्री अजय भल्ला ने कहा कि इस सस्था का उद्देश्य समाज के कमजोर वर्गों एव निर्धन छात्रो की हर प्रकार की सहायता करना है।

कम्प्यूटर का यह नि शुल्क प्रशिक्षण 'सीमा' के सौजन्य से आर्यसमाज बी-ब्लाक जनकपुरी में दिनाक ७ अक्तूबर से दिनाक २० अक्तूबर तक प्रतिदिन अपराह्न ३ बजे से साय ६ बजे तक दिया जाएगा।

गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक उत्सव

गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर का ३६वा एव गुरुकुल करतारपुर का ३२ वा वार्षिकोत्सव गुरु विरजानन्द भवन जी०टी०रोड करतारपुर मे बडे उत्साह से मनाया गया।

कार्यक्रम ३० सितम्बर से ६ अक्तूबर रविवार तक हुआ। ६ अक्तूबर को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात यज्ञ के ब्रह्मा श्री आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रीय ने सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया।

इस अवसर पर श्री वेदप्रकाश श्री श्रोत्रीय (दिल्ली) श्री आचार्य अखिलेश्वर (जम्मू) श्री आचार्य भद्रसेन (होशियारपुर) श्री गणेश प्रसाद विद्यालकार (दिल्ली) श्री सत्यपाल जी पथिक (अमृतसर) के उपदेश व भजन हुए।

६ अक्तूबर को प्रात ६ बजे यज्ञ की पूर्णहुति हुई। श्री गुरु विरजानन्द सम्मेलन प्रात १० बजे से १.३० बजे तक श्री आचार्य अखिलेश्वर जी की अध्यक्षता मे हुआ।

इस समय गुरुकुल मे १२५ ब्रह्मचारी पढ रहे है भोजन आवास दूध व शिक्षा नि शुल्क है। ५४ लाख रुपये की अनुमानित लागत से परिसर का निर्माण हो रहा है।

अपराधियों को महिमा-मण्डित न किया जाए

नामी अखबारो के मुख पृष्ठो पर महामहिम राष्ट्रपति उपराष्ट्रपति प्रधानमन्त्री केन्द्रीय सरकार के मन्त्री प्रातीय मुख्यमन्त्री अन्य मन्त्रियो धर्माचारियों अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाडियो बडे उद्योगपतियो महान सगीतकारो तथा फिल्मी सितारो के अतिरिक्त अब चन्दन तस्करी से जुडे वीरप्पन दाउद इब्राहिम शिवानी हत्याकाण्ड से जुडे आई०पी०एस० अधिकारी आर०के०शर्मा घरेलू नौकर की पत्नी से बलात्कार करने वाले देहरादून के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त शर्मा अबू सलेम अबू सलेम के अपराधी साथियो तथा निर्दोष आदमी को कार से कुचलकर मारने वाले फिल्मी कलाकार सलमान खान के फोटो भी अब कई दिनो तक छपते रहते हैं।

इस तरह यदि देखा जाए तो घर घर मे पढे जाने वाले अखबारो मे विज्ञापन और नामी हस्तियो के साथ ही घिनौने तथा निन्दनीय अपराध करने वाले भी लगभग बराबरी की पब्लिसिटी प्रकाशन पा रहे हैं। बारीकी से यदि देखा जाए तो किसी बुद्धिमान के ये शब्द – **' कि बदनाम भी होगे, तो क्या नाम न होगा'** भली भाति चरितार्थ हो रहे हैं।

सभ्य-समाज की अपनी कुछ मर्यादाए भी होती है। एक न्यायाधीश की सम्माननीय कुर्सी पर बैठकर किसी अपराधी की सजा लिखते समय यह भी विचार किया जाता है – **कि उस अपराधी ने कितनी नृशसता से अपराध किया और ऐसे अपराधो के बढने से सभ्य समाज को कितनी हानि हो सकती है ?**

अखबार बेचना और बिक्री के रिकार्ड कायम करना अलग बात है किन्तु सभ्य समाज की मर्यादा को यदि बचाना है तो जिम्मेदार सम्पादको को भले और बुरे विख्यात और कुख्यात सभ्य और असभ्य विवाहित एव अविवाहित सामाजिक तथा आसामाजिक निर्दोष और दोषी देशभक्त और देशद्रोही तथा सृजनकारी और विघटनकारी के बीच अन्तर स्थापित करना जरूरी है। क्या ही अच्छा हो – 'कि अपराध और अपराधियो से जुडी खबरों को खेलकूद की खबरों के समान भीतर के किसी निर्धारित पृष्ठ पर ही छापा जाए और उन्हें मुख पृष्ठ पर महिमा मण्डित न किया जाए।

– भूषण द्विवेदी,
साऊथ मोती बाग, नई दिल्ली

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा वयोवृद्धों का सम्मान

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा रविवार दिनाक ६ अक्तूबर २००२ को आर्यसमाज के विशाल सभागृह मे शरद ऋतु के सुअवसर पर वैदिक परम्परा के अनुसार पितृयज्ञ अर्थात जीवित माता पिता की बडी श्रद्धा और निष्ठा से सेवा के अन्तर्गत वयोवृद्धो का शाल श्रीफल एव मोती माला भेट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रात ८ बजे से ६ बजे तक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया तदनन्तर साप्ताहिक सत्सग के मध्य आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान डॉ० सोमदेव शास्त्री एव अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियो ने आर्यसमाज को गति प्रदान करने वाले तथा अनेक गतिविधियो मे सक्रिय भूमिका निभाने वाले एव तन मन धन से पूर्ण सहयोग देने वाले निम्न महानुभावो का अभिनन्दन किया।

श्री भगवती प्रसाद गुप्त एव श्रीमती विद्यावती गुप्त श्रीमती प्रभावती मूना श्रीमती प्रकाशवती अरोडा श्री नारायणदास हासानन्दानी एव श्रीमती भगवानी देवी हासानन्दानी श्री इन्द्रबल मल्होत्रा श्रीमती पुष्पा मल्होत्रा श्री कान्तिभाई जगबारी श्रीमती लीलावती महाशय श्री आनन्द गहलोत श्रीमती चन्द्रावती मल्होत्रा का।

इस समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य उपस्थित थे। उन्होने अपने वक्तव्य मे आर्यसमाज सान्ताक्रुज की इस स्वस्थ परम्परा की भूरि भूरि प्रशसा की तथा कहा कि 'यह वृद्धो के सम्मान की प्रथा देश विदेश मे स्थित समस्त आर्यसमाजो के लिए अनुकरणीय है। कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री श्री सगीत आर्य ने किया।

श्रीमती नीलम चुघ दिवंगत

श्री दिनेश चुघ ११ बी सुप्रिया अपार्टमेण्ट पश्चिम विहार नई दिल्ली की धर्मपत्नी श्रीमती नीलम चुघ अपनी पुत्री प्रियवदा तथा पुत्र प्रफुल जिन की आयु मात्र १६ वर्ष तथा १२ वर्ष है को ससार रूपी मझधार में छोड ४० वर्ष की अल्पायु मे ही देहावासान कर गई।

आपका परिवार आर्यसमाज मुल्तान नगर से जुडा है। आप बी०के० बाल ज्योति पब्लिक स्कूल पश्चिम विहार के प्रबन्धक श्री वेदप्रकाश चुघ की पुत्रवधू थी तथा वे विद्यालय के कार्यों मे भी बढकर सहयोग करती थीं।

उन की आत्मा की सदगति और शान्ति के लिए शोक सभा रविवार २० अक्तूबर २००२ साय ४ बजे सुप्रिया अपार्टमेन्ट मे हुई जिसमे आशा माता जी श्री राजेन्द्र शास्त्री श्रीमती कण्व प्रधाना आर्यसमाज पश्चिम विहार श्रीमती शकुन्तला सेठ प्रधाना आर्यसमाज न्यू मुल्तान नगर तथा श्री पी०एल० सेठी प्रधान सुप्रिया अपार्टमेण्ट ने दिवगत आत्मा को सदगति के लिए प्रार्थना की।

आर्य सन्देश परिवार की ओर से हम परम पिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की सदगति की कामना करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते है कि उनके परिवार को इस दारुण दुख को सहने की शक्ति दें।

– राजेन्द्र दुर्गा, जी०के०बाल ज्योति विद्यालय, पश्चिम विहार

सुख-प्राप्ति का साधन है 'शिव संकल्प'

यदि हम जीवन मे सुखी होना चाहते हैं और आनन्द पाना चाहते हैं तो हमे अपना मन शिव सकल्पमय बनाए। वेद में अनेक बार यह कहा गया है कि हमारा मन शिव सकल्पो अर्थात कल्याणकारी विचारो से युक्त हो। मन में शुभ विचारों को लाने के लिए यह आवश्यक है कि हम बुरे विचार मन में न आने दे। आर्यसमाज बी-ब्लाक जनकपुरी में प्रवचन करते हुए उक्त विचार वैदिक प्रवक्ता डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया ने प्रबुद्ध श्रोताओं के सामने रखे। उन्होने कहा कि यो मन बडा चचल और वेगवान है। यह जागते समय ही नहीं सोते समय भी कहीं का कहीं चला जाता है किन्तु उसे अभ्यास से ही वश मे किया जा सकता है। मन तो सकल्प विकल्पात्मक होता है किन्तु हमें विकल्प छोडकर सकल्पशील बने। सकल्प शीलता मे दृढता का भी समावेश है अर्थात् हम अच्छे कार्मो मे दृढता के साथ लगे। ढुलमुल होकर हम अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते। शिव और अशिव की पहचान विवेक बुद्धि से सम्भव है। परोपकार के सभी कार्यों का समावेश शिव सकल्प मे हो जाता है – परोपकार से बडा और कोई धर्म नही है और पर पीडा से बडा कोई पाप नहीं। धर्म के सभी लक्षणो का समावेश भी शिव सकल्प मे है तथा अन्य सभी श्रेष्ठ गुण भी इसी मे समाविष्ट हैं। श्रीमती राज मैहन श्री योगेश्वर चन्द्रार्य श्री विनय आर्य श्री सोहन लाल ओहरी आदि की शकाओ का विद्वान प्रवक्ता ने समाधान किया।

R N No 32387/77 Posted at N D.P.S O on 7-8/11/2002 दिनांक ४ नवम्बर से १० नवम्बर, २००२ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002, 7-8/11/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

21 कुण्डीय विराट गायत्री महायज्ञ उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न

विश्व शान्ति एव मानव कल्याण हेतु आर्यसमाज एव वैदिक यज्ञ समिति विकास कुज के तत्वाधान मे आयोजित २१ कुण्डीय विराट गायत्री महायज्ञ वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे सेन्ट्रल पार्क, विकास कुज मे उल्लासमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर धार्मिक जगत के महान प्रवक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विराट जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि ससार मे परोपकार का सबसे बडा उदाहरण यज्ञ हवन है। मनुष्य दूसरो का भला करके सुनाता व जतलाता है। अच्छे काम करके इतराता है। जिससे बैर द्वेष हो उसका भला करने की सोच भी नहीं सकता परन्तु हवन का लाभ सबको पहुचता है मित्र हो या शत्रु।

वेदज्ञ विद्वान आचार्य श्री ने श्रद्धालुओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि यज्ञकुण्ड की अग्नि में घृत की आहुति से प्रखर उष्णता की ऊर्जा तैयार होती है जिसमे अशुद्ध वायु को शुद्ध करने तथा शरीर और मन के तनावो को भी दूर करने का अदभुत सामर्थ्य है। यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध पुष्ट एव सुगन्धित होता है। यज्ञ मानव को दानशील बनाता है तथा इससे मनुष्य सर्वहित मे अपना हित समझता है।

मुख्य यजमान श्रीमती भारती तनेजा श्री सुधीरकान्त सेठ श्रीमती निर्मला सेठ श्री हरीश ओबराय आदि को आचार्य श्री चन्द्रशेखर जी के कर कमलो से स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। इस अवसर पर अनेक ल ने मासाहार एव मादक पदार्थों को छोडने का सक लिया। हजारो लोगो ने यज्ञ समारोह मे उपस्थित होक विश्व शान्ति एव मानव कल्याण हेतु घृत सामग्री की आहुतिया प्रदान की।

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी द्वारा मानव कल्याण हेतु किए हुए कार्यों को देखते हुए, स्मृति चिह्न देकर उन्हे सम्मानित किया गया। डॉ० रमा शर्मा के क्रान्तिकारी भाषण एव भजन सम्राट श्री नरेश आर्य के सुमधुर भजन हुए। इस यज्ञ मे प्रत्येक समुदाय के लोग उपस्थित थे। विकास कुज मे पहली बार २१ कुण्डीय यज्ञ का आयोजन था जिसकी भूरि-भूरि प्रशसा हुई।

इस अवसर पर श्री यशपाल आर्य श्री अशोक सुनेजा (उपप्रधान भारत विकास परिषद्) श्री कुलभूषण कपूर (नेशनल बुक ट्रस्ट) श्री वी०एस० नागिया (समाज सेवी) डॉ० पुष्पलता वर्मा (प्रधान आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी) श्री विजय आर्य आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम के सयोजक श्रीमती चचल विज एव समाज प्रधान डॉ० पुष्पलता ने सभी का आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम के अन्त मे नागिया परिवार द्वारा 'दैनिक यज्ञ पद्धति' नामक पुस्तक का वितरण किया गया तथा हजारो लोगो ने ऋषि लगर ग्रहण किया।

– डॉ० पुष्पलता, प्रधान

...ारप्रसाद द्विवेदी सम्मान

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता, लेखक तथा वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य' जी को वर्ष २००२ के **आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी साहित्यिक सम्मान** के लिए चुना गया है। इस निर्णय की घोषणा अखिल भारतीय साहित्यकार कल्याण मच रायबरेली (उ०प्र०) के महासचिव श्री अवतश रजनीश जी ने करते हुए श्री चैतन्य जी के साहित्य को मानवमूल्यो का पोषक तथा तात्विक दृष्टि से मील का पत्थर बताया। उल्लेखनीय है कि आचार्य चैतन्य जी की एक दर्जन से अधिक पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं तथा आर्यजगत् के ये सैद्धान्तिक एव अत्यधिक लोकप्रिय वैदिक प्रवक्ता है। पत्र-पत्रिकाओ मे इनके हजारो लेख प्रकाशित व पुरस्कृत हो चुके हैं। इससे पूर्व भी अनेक सस्थाओ ने इनके सराहनीय कार्यों के लिए आचार्य जी को सम्मानित किया है।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एवं फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २६ अक २ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार ११ नवम्बर से १७ नवम्बर २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

पारिवारिक मिलन समारोह के माध्यम से
घर-घर वैदिक सिद्धान्तों की अलख जगाएं

पश्चिमी दिल्ली की आर्यसमाजो के युवाओ ने रविवार दिनाक १० ११ २००२ को को दीपावली के उपलक्ष्य मे पारिवारिक मिलन समारोह का आयोजन किया। यह आयोजन सुभाष नगर स्थित मौर्य बैंकेट हाल मे हुआ। साय ६ ३० बजे यज्ञ किया गया। श्रीमती शशि प्रभा आर्या जी यज्ञ की ब्रह्मा थी। इस कार्यक्रम मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य जी मुख्य अतिथि थे। सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री जगदीश आर्य जी ने युवाओ को अशीर्वाद दिया। इस कार्यक्रम के सयोजक श्री नरेन्द्र आर्य ने मच सचालन किया। इस अवसर पर आचार्य सुभाष आचार्या सुनीता आर्या ने भी युवा दम्पतियो तथा बच्चो का मार्गदर्शन दिया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी ने अपनी विदेश यात्रा के बारे मे बताया कि विदेशो मे किस प्रकार से वेद प्रचार तथा मानवता के कल्याण के कार्य किए जा रहे है। इस अवसर पर बच्चो ने मन्त्र तथा भजन प्रस्तुत किए।

सयोजक श्री नरेन्द्र आर्य ने प्रत्येक व्यक्ति के पास जाकर उनका परिचय (माइक पर) करवाया। कार्यक्रम के अन्त मे श्रीमती शशि प्रभा आर्या तथा श्री नरेन्द्र आर्य ने **जयकारा मैं भी ला लया वेदा वाले दा** भजन प्रस्तुत किया जिसे उपस्थित जन समूह ने बेहद पसन्द किया।

इस कार्यक्रम मे श्री नवनीत अग्रवाल श्री रविन्द्र आर्य श्री सुरेश अहलूवालिया श्री विनय मदान श्री विवक चड्डा श्री ओ३म प्रकाश अरोडा श्री जितेन्द्र खरबन्दा श्री नरेश सुरेश विग आदि ने विशेष सहयोग दिया।

श्री नवनीत अग्रवाल तथा श्री जदीश आर्य ने सभी का धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के पश्चात सभी ने ऋषि लगर का आनन्द लिया।



पारिवारिक मिलन समारोह के अवसर पर उद्बोधन करती हुई आचार्या सुनीता आर्या साथ मे है श्री जगदीश आर्य समारोह के सयोजक श्री नरेन्द्र आर्य एव श्री दयानन्द मदान। सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य उद्बोधन करते हुए।

शहीद मेजर अश्विनी कण्व का १६वां स्मृति दिवस
शहीदों का जीवन स्व-संस्कृति, स्व-भाषा और मातृभूमि के प्रति समर्पित था

'मृत्यु' एक जीवन में आने वाले जातीय बदलाव की एक मामूली सी घटना है जो यजुर्वेद के ४०वे अध्याय के १५वें मन्त्र के अनुसार शरीर के अन्दर की महत्त्वपूर्ण वायु रूप आत्मा को बाहरी अनिल (वायु) में मिलकर अमृत हो जाना है। अत मानव जीवन में बुद्धि की सर्वोच्चता का लाभ उठाते हुए हमें जीवन का सचालन इस प्रकार करना चाहिए कि हमारे कर्म बीज बनकर इस ब्रह्माण्ड में स्थापित हो और हम जैसा कर्म करे (बीज बोए) वैसा ही फल और आगामी जीवन हमे प्राप्त होता रहे।

यह विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री विमल वधावन ने मेजर अश्विनी कण्व के १६वें स्मृति दिवस पर व्यक्त किए।

वायुरनिलममृतमथेद भस्मान्त शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर किलबे स्मर कृत स्मर।।
यजु० ४० / १५

इस मन्त्र से प्रारम्भ करते हुए श्री विमल वधावन ने कहा कि मेजर अश्विनी कण्व ने जिस प्रकार अपनी युवा अवस्था मे ही अपनी आहुति राष्ट्र रक्षा यज्ञ मे दी वह वास्तव मे हमारे देश की परम्पराओं और सस्कृति के अनुरूप ही थी। इसीलिए ऐसे महान वीरो का नाम महान शहीदो की सूची मे आ जाता है इसीलिए ऐसे वीर पुरुषो के जन्मदाता और अन्य परिजन मित्र आदि भी उनके यश मे भागीदार होते है। सम्मान की दृष्टि से ऐसा कुछ नहीं जो उनको मिलने वाले सम्मान से बड़ा हो।

श्री वधावन ने कहा कि ऐसी शहीद आत्माओ की स्मृति मात्र से हमारे अन्दर देश सेवा का जोश और उत्साह सचारित होने लगता है इसलिए मेरी तो सदैव यही अभिलाषा रहती है कि मृत्यु के समय तक मेरा प्रत्येक कार्य देश समाज और मानवता की सेवा मे ही सम्पन्न हो और अपने व्यक्तिगत जीवन के लिए मैं न्यून से न्यून आवश्यक कार्य करके ही सन्तोष कर सकू।

शेष भाग पृष्ठ ७ पर

हम श्रेष्ठ बनें !
हम हिंसित न हो ! चारो दिशाए सुखद हो

श्रेष्ठा भूयास्म।
अथर्व १८ ४ ८७
हम श्रेष्ठ बने।
न रिष्येम कदाचन।
अथर्व २० १२७ १४
हम कभी किसी से हिंसित न हो।
श ते भवन्तु प्रदिशस्चतस्न।
अथर्व २ १० ३
तुम्हारे लिए चारो दिशाए सुखद हो।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

दक्षिण-पूर्व एशिया से प्रगाढ़ सम्बन्धों की अपेक्षा

दक्षिण पूर्व एशियाई देशो के सगठन आसियान के साथ भारत की शिखर बातचीत के नतीजे महत्त्वपूर्ण रहे हैं। इस सगठन से भारत का जुडना भारत के दीर्घकालीन आर्थिक एव सास्कृतिक हितो के लिए लाभप्रद हो सकते हैं। इस समय विश्व मच पर यूरोपीय समुदाय के बाद यदि कोई अन्य आर्थिक महत्त्व वाला सगठन वह आसियान ही है। यह प्रसन्नता की बात है कि चाहे देर से ही हो भारत ने दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रो की ओर मैत्री का हाथ बढाया है। इस समय चीन जापान और दक्षिण कोरिया आदि आसियान सगठन के साथ जुडकर अधिक से अधिक लाभ उठाने की जुगत मे हैं। पिछले दिनो भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दक्षिण पूर्वी एशिया के कुछ देशो की यात्रा की थी। इस यात्रा के दौरान किए समझौतो मे यद्यपि उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई तथापि भारत को प्राचीन इतिहास से सीख लेकर इन देशो क साथ अपने घनिष्ठता बढानी चाहिए। सौभाग्य से इसमे कोई बाधा नही है क्योकि भारत के कम्बोडिया लाओस और वियतनाम के साथ प्राचीन सम्बन्ध हे। इस सम्बन्धो का लाभ उठाकर दक्षिण पूर्व एशियाई देशो के सार्क सगठन को अधिक व्यावहारिक और सुदृढ करना होगा। इन सम्बन्धो की प्रगढता से दक्षिणी एशिया के राष्ट्र अतीत की तरह पुन सच्चे मित्र और सहयोगी बन सकते है। इतिहास साक्षी है कि अतीत काल मे भारत के न केवल दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्रो से घनिष्ठ सम्बन्ध थे प्रत्युत पृथ्वी के दूसरे छोर मे अवस्थित अमेरिकी महाद्वीप से भी प्रथम प्रवेश का श्रेय भारतीयो को था। नई खोजो से प्रमाणित हुआ है कि यद्यपि इस युग मे कोलम्बस ने अमेरिका को खोजा था परन्तु मैक्सिको के सरकारी इतिहास मे लिखा है कि अमेरिका कहलाने वाले राष्ट्र मे सबसे पहले वे लोग आए जो भारत की ओर से पूर्व की ओर गए मानव–प्रवाह का भाग था। अब वह समय आ गया है जब भारत न केवल दक्षिण पूर्वी एशियाई देशो के साथ प्रत्युत पृथ्वी के दूसरे गोलार्द्ध मे अवस्थित सयुक्त राष्ट्र अमेरिका और मैक्सिको आदि के साथ अपने प्राचीन सास्कृतिक ऐतिहासिक सम्बन्धो को पुन परिपुष्ट करे।

भारत का प्राचीन सास्कृतिक एव राजनीतिक इतिहास साक्षी है कि प्राचीन भारतीय पुरखा विश्व के सभी क्षेत्रो से अपने सास्कृतिक आर्थिक सम्बन्धो को जोडे हुए थे। दक्षिण पूर्वी एशियाई क्षेत्रो और अमेरिकी महाद्वीप के प्राचीन ऐतिहासिक पुरातात्विक विवरण इस तथ्य को पुष्ट करते हैं। बीच मे भारत राष्ट्र में विदेशी मुगल ब्रिटिश शासन प्रतिष्ठित होने पर पुराने सम्पर्क टूट गए थे वैसे अब समय आ गया है जब भारतीय पर्यटक पुन विश्व के सभी क्षेत्रो से अपने पुराने सास्कृतिक मानवीय सम्बन्धो को पुन प्रतिष्ठित कर उन्हे नया सास्कृतिक ऐतिहासिक स्वरूप दे। इस दिशा मे भारत के शासक और राजनीतिज्ञ भी जागरूक हो इस बारे मे अपना दायित्व निभा सकते है परन्तु भारत के जागरूक प्रजाजनो पर्यटको और सामान्य जिज्ञासुओ का दायित्व है कि वे विश्व के सभी क्षेत्रों से अपने सास्कृतिक आर्थिक मानवीय सम्बन्धो को स्थापित करे और उन नए सास्कृतिक आर्थिक सम्बन्धो का विवरण लेखनी और वाणी द्वारा प्रस्तुत कर नए मानवीय सर्म्पको का अध्याय प्रारम्भ करे। विश्व के सभी प्रमुख क्षेत्रो से इस तरह के सास्कृतिक आर्थिक सम्बन्ध जोडे जा सकते है और उन्हे अधिक पुष्ट किया जा सकता है वैसे इस प्रकार के सम्बन्धो का श्रीगणेश दक्षिण पूर्वी एशिया के समीपस्थ क्षेत्र से तुरन्त किया जाना चाहिए। वैसे तो इस सम्बन्ध मे भारत के प्रशासको और राजनीतिज्ञो को जागरूक और सक्रिय होना चाहिए परन्तु जब तक वे इस बारे मे सक्रिय न हो देश के प्राचीन पर्यटको यात्रियो और वैदिक गुफाओ की तरह अपनी व्यक्तिगत सामाजिक सास्कृतिक भूमिका पूरे मनोयोग से प्रस्तुत करनी चाहिए।

भारत का इतिहास साक्षी है कि यहा के यात्री पर्यटक जिज्ञासु नागरिक समाज और शासन के निर्देश के बिना ही विश्व मे विशेष रूप से दक्षिण पूर्वी एशियाई क्षेत्रो मे पर्यटन यात्रा एव अन्वेषण की दिशा मे न केवल जागरूक रहे हैं प्रत्युत अपनी भूमिका पूरी प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करते रहे हैं। अब वह घडी फिर आ गई है कि जब भारतीय जिज्ञासु, पर्यटक और यात्री पुन विश्व के सभी क्षेत्रो से विशेष दक्षिण पूर्वी एशिया से अपने सास्कृतिक सामाजिक आर्थिक सम्बन्धो को पुन प्रतिष्ठित करे। आधुनिक भारत के शासक और राजनीतिज्ञ उस दिशा मे सक्रिय हो तो ठीक है परन्तु जब तक वे इस बारे मे अपना उत्तरदायित्व नहीं निबाहत तब तक देश के प्रबुद्ध पर्यटको इतिहास और सस्कृति के जिज्ञासुओ को अपने-अपने वैयक्तिक सामाजिक एव सास्कृतिक सर्म्पको को पुन प्रतिष्ठित कर उन सम्पर्को से मिलने वाले अध्ययन और निष्कर्षो को लेखबद्ध करने का प्रयत्न करना चाहिए। इस बारे मे शासन या राजनीतिज्ञो से कोई अपेक्षा किए बिना सभी प्रबुद्ध चिन्तको साहित्यकारो नागरिको को स्वत सचेत जागरूक होकर अपनी व्यक्तिगत भूमिका प्रस्तुत करनी चाहिए। वैसे विश्व के सभी क्षेत्रो से हमारे सास्कृतिक सम्बन्ध सुदृढ होने चाहिए परन्तु सबसे पहले दक्षिण पूर्वी एशिया के क्षेत्रो से अपने प्रगाढ सम्बन्धों को अधिक सुदृढ और हार्दिक करने के लिए व्यक्तिगत सामाजिक और सास्कृतिक भूमिका प्रस्तुत करने के लिए सचेत होना चाहिए।

बोध कथा

अमेरिका में प्रथम प्रवेश

पहले समझा जाता था कि अमेरिका को सबसे पहले कोलम्बस ने खोजा परन्तु ऐतिहासिक अनुसन्धान से सिद्ध हुआ कि अमेरिका मे प्रथम प्रवेश का श्रेय भारतीयो को है। मैक्सिको के सरकारी इतिहास मे लिखा है – अमेरिका कहलाने वाले राष्ट्र मे सबसे पहले जो लोग आए वे उस प्रवाह के भाग थे जो भारत से पूर्व की ओर गया। मैक्सिको के राष्ट्रीय सग्रहालय के क्यूरेटर प्रो० रामन मेना की सम्मति है – दक्षिणी अमेरिका के मनुष्यो की आकृति भारतवासियो जैसी है उनके सिर ढकने के वस्त्र ऊची ऊची इमारते रचना शैली आदि प्रमाणित करती है कि उनका भारतवासियो से गहरा सम्बन्ध था।

एक अन्य विद्वान हैविट ने लिखा – भारत से मैक्सिको आए हिन्दू व्यापारी अपने साथ पाण्डवो का अठारह महीने का वर्ष व्यापार व्यवस्था और भारतीय बाजार शैली लेकर पहुचे थे। विद्वानो ने अपने अन्वेषण से परिणाम निकाला कि अमेरिका की भाषा पर सस्कृत का बहुत भाव हैं। मैक्सिको और पीरू के निवासियो का स्वरूप जीवन–प्रणाली और भाषा पर भारतीयता की झलक दिखाई देती है। जैसे भारत मे नाग जाति की चर्चा है वैसे ही दक्षिण अमेरिका मे भी नागाओ का विवरण है। मैक्सिको के '**मैक्सिन लाइफ** ने रहस्योद्घाटन किया – जब मैक्सिको मे स्पेन निवासी पहुचे तो उन्होने इन्द्र और गणेश जैसे देवताओ की पूजा देखी। स्वभावत जिज्ञासा होती रही कि वहा भारतवासी कैसे पहुचे परन्तु वैदिक काल से वर्त्तमान समय तक समुद्र पारकर देश देशान्तरो मे भारतीयो की यात्रा पुष्ट हो चुकी है उनके साथ भारतीय सस्कृति के कई अश पहुचे जैसे वहा की जनता भी समय को चार युगो मे बाटती थी चन्द्रग्रहण के समय ढोल पीटा जाता था मैक्सिको के स्तूप भारतीय स्तूपो के तुल्य थे वहा के नृत्य भारतीय प्रतीत हुए। प्रतीत हुआ कि इन्द्रप्रस्थ बनाने वाले मय दानव के ही वे भी उत्तराधिकारी थे। बालको में गुरुकुल प्रणाली जैसी व्यवस्था थी। अनेक तथ्य प्रमाणित करते हैं कि वे नाम से इण्डियन नहीं थे वस्तुत भारतीय यात्रियों की सन्तान थे। – नरेन्द्र

 कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यसमाज और इंग्लैण्ड

– कै० देवरत्न आर्य

दक्षिण अफ्रीका अमेरिका और कनाडा देशो की यात्रा करके हमें भारत आना था। कनाडा से भारत आने के लिये लदन पहुचना था और फिर लदन से दिल्ली। अत हमने लदन से तुरन्त विमान यात्रा करने के बजाय नौ दिन का अन्तर लिया और हमने १४ अगस्त २००२ को कनाडा से लदन के लिये प्रस्थान किया। हमारा विमान १५ अगस्त २००२ को प्रात ६ बजे लदन विमान स्थल पर पहुचा।

भारत से अमेरिका जाने से पूर्व मैंने अपना कार्यक्रम श्री सुरेन्द्र भारद्वाज को टेलीफोन द्वारा सूचित किया व उनसे एक पत्र मगवाया जो वीसा लेने के लिये आवश्यक था। मुझे लदन आर्य समाज के मत्री श्री ए०बी० भारद्वाज का पत्र मिला और हमने मुम्बई स लदन जाने का वीसा प्राप्त कर लिया।

कनाडा से लदन जाने से पूर्व श्री गिरीश खोसला ने अमेरिका की आर्य समाजो को मेरे आने की सूचना दे दी। मुझे श्री खोसला जी का टेलीफोन आया था कि लदन विमान स्थल पर आपको श्री भसीन लेने आयेगे और हम उनके निवास पर ही ठहरेगे।

लदन विमान स्थल पर किसी कारणवश श्री भसीन नहीं आ सके और न ही आर्य प्रतिनिधि सभा लदन के कोई अधिकारी। विमान स्थल पर हमे ले जाने के लिए श्री ए०बी० भारद्वाज श्री अमर गिरधर श्रीमती दयाकपूर आचार्य ताना जी प० राम चन्द्र जी शास्त्री आचार्य डॉ० सोनेराव आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। डॉ० सोनेराव जी से मेरा पूर्व परिचय था। उन्हे आर्य समाज बरमिघम के अधिकारियो ने भेजा था कि हमे सीधा कार द्वारा बरमिघम ले आये।

हमारे पास सामान ज्यादा था – अत कार या बस से जाना सम्भव नही था। श्री गिरधर जी व श्रीमती दया कपूर का निवास विमान स्थल के समीप था। श्रीमती दया कपूर के विशेष आग्रह पर हम उनके निवास पहुच गये और वहीं पर पूरा दिन रूके।

दक्षिण अफ्रीका अमेरिका व कनाडा की यात्रा कर व वहा की आर्यसमाजो की सक्रियता व गतिविधियो को देखकर जितना उत्साह मेरे मन में भरा था – वह आकर समाप्त हो गया। मैंने लदन आर्यसमाज व उनके अधिकारियो विशेषकर प्रो० सुरेन्द्र भारद्वाज के बारे मे जितना सुना था वहा जाकर वैसी अनुकूलता नहीं पाई। एक चर्च को खरीद कर वहा उसे आर्यसमाज मदिर के रूप मे परिवर्तित कर दिया था। अधिकाश सदस्य वे थे जो नैरोबी को छोडकर वहा बस गये थे और नैरोबी आर्य समाज की जैसी सक्रियता थी वैसी आर्यसमाज की गतिविधिया वहा प्रारम्भ करना चाहते थे। इसीलिए नैरोबी के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यदेव भारद्वाज जो गुरुकुल के स्नातक भी थे व जिन्होने भारत मे सन फ्लेग आयरन एण्ड स्टील इन्डस्ट्रीज भी लगाई है खुले मन से इस चर्च को खरीदने के लिए योगदान दिया।

इस आर्यसमाज का विशाल भवन देखकर बडी प्रसन्नता हुई। जब हम वहा पहुचे उसमे ताला लगा हुआ था। मैंने एक सज्जन से पूछा कि यहा इस भवन मे क्या कार्य होता है तो उसने उत्तर दिया यहा रविवार को कुछ लोग एकत्रित होते हैं और उनका एक ही कार्यक्रम होता है "आओ गाओ खाओ और जाओ"। मुझे अनेक व्यक्तियो ने इस आर्यसमाज की निष्क्रियता के बारे मे कहा। वहा आर्य प्रतिनिधि सभा लदन बनी है जिसने पिछले १० वर्षो मे कोई बैठक नहीं की। किसी विद्वान को आमन्त्रित नहीं किया। जो विद्वान स्वय वहा चले गये उनके रहने भोजन आदि की व्यवस्था नहीं की। अगर वे स्वय रविवार के सत्सग मे चले गये तो उन्हे १०–१५ मिनट बोलने का समय दे दिया। मुझे लिखते हुए खेद होता है कि मेरे साथ भी प्रतिनिधि सभा के सर्वोच्च अधिकारी का यही व्यवहार रहा। अत मैं बिना बुलाये रविवार के सत्सग मे भी नहीं गया।

समाज भवन मे विद्वान पुरोहित के रहने की सुन्दर व्यवस्था है। समाज की व उनके निवास की चाबिया उनके पास ही रहती हैं। वे उस भवन में अकेले रहते हैं। वे आये और बडे सम्मान से हमे अपने निवास मे ले गये और आवभगत की। वे लातूर (महाराष्ट्र) से थे वे मुझे बचपन से जानते थे।

उनसे पूर्व इस समाज मे आचार्य ताना जी रहा करते थे। आर्यसमाज का जितना कार्य आचार्य ताना जी ने लदन मे किया वह प्रशसनीय है। जिन जिन परिवारों मे मैं गया वहीं ताना जी के कार्यों की प्रशसा सुनी। अपनी कार की डिक्की मे वे हमेशा हवनकुण्ड घी सामग्री व समिधा लेकर चलते हैं। कहीं भी उनके मोबाइल पर फोन आ जाये तो वे सीधे सस्कारो पर चले जाते हैं। स्वभाव से सरल मेहनती आर्यसमाज के प्रति समर्पित व उदार हृदय के विद्वान हैं। कुछ समय के लिये वे कनाडा व अमेरिका मे भी रहे पर पुन लदन आकर अपना कार्य स्वतन्त्र रूप से कर रहे हैं।

१६ अगस्त को हमे बरमिघम जाना था। आचार्य सोनेराव जी भी १५ अगस्त को बरमिघम न जाकर आचार्य ताना जी के निवास पर ही रूक गये थे। बरमिघम जाने से पूर्व आचार्य ताना जी हमे एक आर्य परिवार श्री बत्रा जी के निवास पर ले गये। वहा पारिवारिक सत्सग था। आचार्य ज्ञानेश्वर जी (पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज के शिष्य) वहा पूर्व ही आ गये थे। उनका भाषण हुआ और पश्चात मेरा। दोना भाषणो से यह परिवार बडा प्रसन्न हुआ। वहीं पर चाय नाश्ता करके हम आचार्य सोनेराव की कार मे बरमिघम के लिये रवाना हो गये वरमिघम लदन विमान स्थल से लगभग २०० किलोमीटर दूर है। मुझे बडी प्रसन्नता हुई जब आचार्य जी को कार चलाते देखा। क्योकि मेरा उनसे पुराना परिचय था।

हम बरमिघम मे प्रसिद्ध आर्य नेता आदरणीय श्री गोपाल जी चन्द्रा के निवास पर रूके। ८१ वर्षीय श्री चन्द्रा जी एक निष्ठावान आर्यसमाजी हैं। वह अपने बगले मे अकेले ही रहते हैं। घर का सारा काम भी वही करते है। अनेक लेख उनके पत्रिकाओ मे छपते रहते हैं। अलग एक कमरे मे उनका पुस्तकालय है वहीं कम्प्यूटर व टाईपिग मशीन है। स्वय को दिन भर किसी न किसी कार्य मे व्यस्त रखते है। वे स्वय कम्प्यूटर पर काम करते हैं और स्वय ही अपने लेख व पत्राचार टाईप करते है। दिन भर आर्यसमाज के कार्य के अतिरिक्त उनकी रूचि किसी मे नहीं है। वे लदन आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान अवश्य है पर बडे असतुष्ट हैं। हम रात्रि को ८ बजे उनके निवास पर पहुचे तो ब्रिगेडियर चितरजन सावत (नोएडा) भी वहा उपस्थित थे। वे भी आज ही लदन आये थे। आर्यसमाज बरमिघम के निमन्त्रण पर। आर्यसमाज ने उनके ८ भाषण रेडियो पर प्रसारित करने की व्यवस्था कर रखी थी। अत वे इस हेतु वहा लगभग डेढ माह रूकने वाले थे। श्री चन्द्रा जी का सक्रिय एव सादगी भरा जीवन देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। इस आयु मे भी वह स्वय कार चलाते हैं और किसी भी काम के लिये किसी पर भी निर्भर नहीं हैं।

१७ अगस्त को श्री कृष्ण चोपडा जो स्वय भारत मे गुरुकुल मे पढे हुए थे और आज सम्पन्नता मे खेल रहे हैं। हमे घुमाने के लिये कार लेकर आये। वे हमे बरमिघम से लगभग ४० किलोमीटर दूर शेक्सपीयर गाव मे ले गये। यह वह स्थान है जहा शेक्सपीयर का जन्म हुआ था। इस सम्पूर्ण गाव को सरकार ने एक सुन्दर पर्यटक स्थल बना दिया है। बडे बडे बगीचों प्राकृतिक सौंदर्य हजारो फूलो से सजा यह गाव है। शेक्सपीयर का जन्म भवन पर्यटको का विशेष आकर्षण हैं जिसमे शेक्सपीयर द्वारा प्रयोग की जाने वाली हर वस्तु बडी सुरक्षित व सजा कर रखी है। उनका पलग बर्तन कपडे पुस्तके आदि सब सुरक्षित व सजा कर रखी हुई थी। पास मे ही एक विशाल थियेटर था जिसमे शेक्सपीयर के लिखे नाटको का मचन होता था। लगभग २०० दुकानें आस पास बनी थी चूकि बडी सख्या मे वहा पर्यटक आत हैं। जब हम गये उस समय भी वहा लगभग २००० पर्यटक घूम रहे थे।

इस गाव को शेक्सपीयर गाव घोषित करने से पूर्व ब्रिट्रिश सरकार ने एक कमेटी बनाई थी। इस कमेटी को यह कार्य दिया गया था कि वह इस तथ्य की खोज करे कि जो साहित्य शेक्सपीयर ने लिखा है क्या वास्तव मे वह उन्हीं की कृति है या किसी अन्य लेखक की। कहते है पूरी जाच करने के बाद इस कमेटी ने अपना निष्कर्ष एक पक्ति मे सरकार को दिया कि "शेक्सपीयर – शेक्सपीयर ही है" इसी गाव से चलने वाली एक बस मे हमने इस गाव के चारो ओर बिखरी प्राकृतिक सौदर्य हरे मैदान और पहाडो को देखा।

इस गाव का सौंदर्य इतना था कि मेरे मन मे आया हमारे भारत मे भी श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे साहित्यकार हुए हैं जिन्हे नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था और जो किसी शेक्सपीयर से कम नहीं थे पर ऐसी सुन्दर स्थली उनके नाम से हमारी सरकार नहीं बना सकी।

इस सौंदर्य को देखकर हम वापिस आ गये। हमारा व श्री चन्द्राजी व बिग्रेडियर चितरजन सावत का रात्रि का भोजन डॉ० नरेन्द्र कुमार आर्य प्रधान आर्य समाज बरमिघम के निवास पर था। वहा जाकर पता लगा कि डॉ० नरेन्द्र कुमार आर्य सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य के छोटे भाई हैं और उन्ही की तरह विदेश मे बडी सक्रियता और तत्परता के साथ आर्यसमाज का कार्य कर रहे हैं। उनके पिता श्री मिश्री लाल जी आर्य टाण्डा ने अपना समस्त जीवन आर्यसमाज को समर्पित कर दिया था व नवम्बर २००२ मे टाण्डा मे उनकी जन्म शताब्दी बहुत बडे स्तर पर मनाई जा रही है। रात्रि को भोजन कर हम पुन आदरणीय श्री चन्द्रा जी के निवास पर आ गये।

अगले दिन १८ अगस्त रविवार को हम सब प्रात श्री कृष्ण चोपडा जी के निवास पर भोजन करने गये। श्री कृष्ण चोपडा आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता है। गुरुकुल मे पढे आप सस्कृत हिन्दी व अग्रेजी भाषा के विद्वान है। आपने अनेक वेदमन्त्रो की विशेषकर हवन व सध्या के मत्रो के भावार्थ का अग्रेजी अनुवाद वैदिक प्रार्थना पुस्तक के रूप मे प्रकाशित किया है। आजकल वे वेदो के मत्रो के भावार्थ का अग्रेजी अनुवाद करने मे व्यस्त है। वे पिछले वर्ष इस आर्यसमाज के प्रधान पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। उनकी पत्नि व्यवसाय से डाक्टर हैं। श्री कृष्ण चौपडा जी ने अपने युवा पुत्र को वैदिक मान्यता और भारतीय सस्कृति के ज्ञान के लिये ६ माह हेतु उपदेशक महा विद्यालय हिसार मे भेजा था वह भी २ दिन पूर्व ही वहा से शिक्षा प्राप्त कर लदन लौटा।

सायकाल ४ बजे आर्यसमाज बरमिघम के सत्सग मे हम गये। इस सत्सग को उन्होने भारत स्वतन्त्रता दिवस के रूप मे मनाया। विशाल आर्यसमाज का भवन विद्वान पुरोहितो के निवास की समुचित व्यवस्था। विदेशो मे आर्यसमाज के इस स्वरूप को देखकर प्रसन्न होना स्वाभाविक था।

इस समारोह में लदन के अग्रेज व्यक्ति भी ब्रि० चितरजन सावत के कारण उपस्थित थे। आचार्य सोनेराव जी ने यज्ञ सम्पन्न किया। उसके पश्चात मुझे भारतीय झण्डा फहराने के लिए आमन्त्रित किया गया। तत्पश्चात भारत की आजादी पर ब्रि० चितरजन सावत और पश्चात मेरा भाषण हुआ। समाज का हाल पूरा भरा हुआ था। लगभग ३०० व्यक्ति उपस्थित होगे। डॉ० नरेन्द्र कुमार आर्य ने समारोह का सचालन किया। इस समाज के कार्यों व उपस्थिति को देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। सभी अधिकारी बडी सक्रियता से आर्यसमाज क काम मे जुटे हुए थे।

बरमिघम से १ घटे की ट्रेन यात्रा पर शेफील्ड नामक शहर है।

शेष भाग पृष्ठ ८ पर

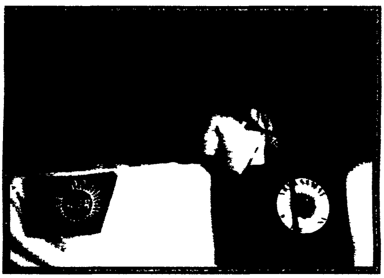
इंग्लैण्ड यात्रा



आर्यसमाज वरमिंघम मे श्रीमती सुनीता आर्य व सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य का सम्मान करते हुए श्री गोपाल जी चन्द्रा।
पीछे खडे है डॉ० नरेन्द्र कुमार आर्य (आर्यसमाज के प्रधान)



आर्यसमाज बरमिंघम मे भारत का राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य। साथ मे हैं ब्रिगेडियर चितरजन सावत व श्री गोपाल चन्द्रा जी।



आर्यसमाज बरमिंघम मे भाषण देते सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।



आर्यसमाज बरमिंघम में सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता आर्य व उपस्थित जन समुदाय।
पहली पंक्ति में दो ब्रिटिश नागरिक भी बैठे हैं।



Tussaud's London में अभिनेता अमिताभ बच्चन के मोम के पुतले के साथ श्रीमती सुनिता आर्य एव सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।



श्री गोपाल चन्द्रा जी के निवास पर दाये से डॉ० नरेन्द्र कुमार आर्य श्री चन्द्रा जी कै० देवरत्न आर्य एव ब्रि० चितरजन सावत।

की झलकियाँ



श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा जी के निवास पर बाए से श्रीमती सुनीता आर्या कुमारी स्टेफनी की माता कुमारी स्टेफनी व सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।



शेक्सपीयर के निवास पर बाए से श्रीकृष्ण चापडा व सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य



विन्डसर पैलेस रानी एलिजाबेथ का महल का दृश्य। सामने खडे है श्रीमती सुनीता आर्य एव सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।



लदन का सुप्रसिद्ध बिग बेन टावर साथ मे ब्रिटिश पार्लियामेन्ट।



इण्डिया हाऊस जहा वीर सावरकर ने अपने साथियो के साथ रहकर भारत की आजादी के लिये ब्रिटिश सरकार से लडाई लडी थी नीले रग की पटिटका पर यह लिखा है।



श्री कृष्ण चोपडा जी के निवास पर बाए से ब्रिग्रेडियर चितरजन सावत श्री कृष्ण चोपडा श्रीमती डॉ० चोपडा श्री गोपाल जी चन्द्रा ओर सभा प्रधान कै० देवरत्न आर्य।

पृष्ठ ५ का शेष

आर्यसमाज और इंग्लैण्ड

वहा मेरी मोसेरी बहन डॉ० सविता व डा० सतीश माथुर (आर्यजगत के प्रसद्धि नेता व लेखक आदरणीय श्री विजय बिहारी लाल जी माथुर की सुपुत्री व दामाद) रहते है। अत आर्य समाज के कार्यक्रम के पश्चात हम ट्रेन द्वारा शेफील्ड चले गए। रात्रि को व अगले दिन हम वहीं रहे।

१६ अगस्त को हम शेफील्ड से डयूक आफ डेविन्यिर का महल उनका म्यूजियम वहा बने विशाल बगीचे देखने गये। डयूक अभी भी इस महल के एक हिस्से मे रहते है। तीन मजिल का यह महल और सुन्दर बगीचे जहा Duke की विलासिता के परिचायक थे। वहा सुन्दर और भव्य बगीचे और नदी की। प्राकृतिक सौदर्यता को निहार कर मन प्रसन्न हुआ। हम वहा से कार द्वारा लगभग २५ मील दूर तक गए। अनेक हरियाली से भरे छोटे छोटे पहाड एक पहाड से दूसरे पहाड पर जाती सडके प्राकृतिक सुन्दरता से भरा नजारा देखने को मिला।

२० अगस्त को प्रात हम ट्रेन से रवाना होकर साऊथ हाल जहा हम पहले दिन ठहरे थे श्रीमती दयावती जी कपूर के घर पहुचे। ७० वर्षीय श्रीमती दयावती जी कपूर अपने निवास पर अकेली रहती है। हम अपना सौभाग्य समझते है कि हमे ऐसे घर मे ठहरने का अवसर मिला। ममता भरी मा की सी उनकी छवि है। परिवार म कोई अतिथि आ जाये विद्वान या पुरोहित आ जाये तो उनकी देखभाल बडे प्यार और स्नेह से करती है। प्रतिदिन प्रात यज्ञ और सध्या सात्विक खान पान सादा जीवन प्रतिदिन स्वाध्याय उनकी दिनचर्या है। उनके निवास पर अनेक विद्वान जो भारत से आते हैं ठहरते हैं। स्वामी दिव्यानन्द जी जब भारत से गये उनके पास ही रहे पर समीप मे ही बनी आर्यसमाज लदन ने कोई व्यवस्था नहीं की। श्रीमती कपूर को हमारे निवास के दौरान तीन दिन के लिये किसी की मृत्यु पर स्विटरजरलैण्ड जाना पडा – पर हम वही रहे अपने घर की चाबिया और तीन दिन का हमारे लिए भोजन बना कर हमे दे गईं। कैसा अनूठा प्यार और स्नेह था।

हमारे वहा पुन पहुचने पर श्री गिरधर जी आचार्य ताना जी हम से मिलने आए व अगले दिन का कार्यक्रम बनाकर चले गए।

२१ अगस्त को श्री ताना जी अपनी कार से हमे घुमाने ले गए हमने रानी एलिजाबेथ का विडसर महल जहा राजकुमारी डायना भी रहती है देखा। किले की तरह एक छोटे पहाड पर यह विशाल महल बना हुआ है। चारो और बडे–बडे बाजार टेम्स नदी के दोनो ओर प्राकृतिक फूलो से सुसज्जित विशाल बगीचे। सैकडो पर्यटक घूम रहे थे वहा।

हम २२ अगस्त को फिर आचार्य ताना जी के साथ मध्य लदन देखने गए। पूरा दिन कार मे बैठे–बैठे ही हमने लदन के अनेक दर्शनीय स्थल देखे जिसमे मुख्य थे लदन का म्यूजियम बरमिघम महल जहा रानी एलिजाबेथ रहती है बिग बेन टावर ब्रिटिश पार्लियामेन्ट प्रधानमन्त्री का निवास १० डाऊनिग स्ट्रीट इण्डिया हाऊस टेम्स नदी उस पर बने विशाल पुल मिलेनियम आई आदि आदि। हमारे साथ लदन आर्यसमाज के विद्वान पुरोहित श्री प० राम चन्द्र जी शास्त्री और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मीनाक्षी भी थी।

सायकाल हमे आचार्य ताना जी उस ऐतिहासिक स्थल को दिखाने ले गए जहा क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा रहते थे। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। स्वामी जी के आदेश पर वे ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भारत को आजादी दिलाने हेतु लदन गए थे। एक मध्यम स्तरीय बगला जहा श्याम जी कृष्ण वर्मा रहते थे हमने बाहर से खडे होकर उसके चित्र लिए। उसी समय एक नवयुवती उस बगले से बाहर निकली नाम था स्टेफनी। कुमारी स्टेफनी ने बगले के फोटे लेने का कारण पूछा। आचार्य ताना जी ने मेरा परिचय देते हुए उनसे कहा यह स्थान हमारे लिए ऐतिहासिक स्थान है। यहा श्याम जी कृष्ण वर्मा रहते थे जिन्हे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ब्रिटिश सरकार के विरोध मे भारत को आजादी दिलाने हेतु भेजा था। इतने मे ही कुमारी स्टेफनी की माता भी बाहर आ गई। उन्होने बडे सम्मान से हमे घर मे बुलाया – हमारी बाते सुनी और कहा यह हमारा सौभाग्य है कि हमने यह बगला खरीदा। उन्होने कहा मेरे ऐसे पेपर है कि इस मकान मे श्याम जी कृष्ण वर्मा रहते थे। यह रशियन परिवार था और उनके पति किसी शिपिंग कम्पनी मे काम करते है। उन्होने वह पेपर खोजने शुरू किए पर नहीं मिले परन्तु वायदा किया कि मिलते ही मुझे मेरे पते पर भेज देगीं। उन्होंने हमारे साथ फोटो खिचवाए सारा घर दिखाया ऊपर से नीचे तक। यह भवन उन्होने ४ वर्ष पूर्व ही खरीदा था। मुझे यह भी पता चला कि श्री गोडवोले जो लदन मे रहते है उन्होने इस भवन पर काफी अनुसधान किया है।

यहा यह लिखना भी अप्रासगिक नहीं होगा कि महर्षि दयानन्द ने अपनी उत्तराधिकारिणी सभा मे श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को एक ट्रस्टी भी बनाया था।

मेरे मन मे बडा दुख हुआ कि जब ४ वर्ष पूर्व यह भवन बिका था तो यहा के आर्यो ने इस ऐतिहासिक स्थल को क्यो नहीं खरीदा। यदि वे अपील भी निकालते तो पैसा चारो ओर से आ जाता। परन्तु मैं पूर्व ही यहा की पुरानी आर्यसमाज की निष्क्रियता का जिक्र कर चुका हू।

श्याम जी कृष्ण वर्मा जब लदन मे रहते थे उस समय बाल गगाधर तिलक ने उन्हे पत्र लिखा था कि भारत की आजादी के सग्राम हेतु श्री वीर सावरकर लदन आ रहे है – अत उनकी व उनके साथियो के रहने की व्यवस्था करना। श्याम जी कृष्ण वर्मा ने जहा उनके रहने की व्यवस्था की उस स्थान को पहले भारतीय होस्टल के रूप मे जाना जाता था कुछ समय के पश्चात उस भवन का नाम इण्डिया हाऊस पड गया। हमे आचार्य ताना जी वह स्थान दिखाने ले गए। भव्य भवन उसमे एक अग्रेज परिवार रहता है। बाहर भवन पर एक नीले रग का बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था – यहा वीर सावरकर अपने साथियो के साथ भारत की आजादी के लिए रहते थे। मुझे उसे देखकर भी आश्चर्य हुआ कि लदन मे इतने भारतीय और कुछ तो कटटर हिन्दू रहते है – पर इस भवन को अपने कब्जे मे लेकर 'वीर सावरकर का स्मारक क्यों नहीं बनाया। हमने उसे अन्दर से देखना चाहा पर उस अग्रेज परिवार ने जो अन्दर रहता था इस बात की अनुमति नहीं दी।

वीर सावरकर ने यहीं रहकर बेरिष्टर की शिक्षा प्राप्त की। जब वे अपनी डिग्री लेने गए तो उस समय ब्रिटिश नियमानुसार हर स्नातक को शपथ लेनी होती थी कि मै ब्रिटिश शासन के प्रति वफादार रहूगा। वीर सावरकर ने इस शपथ को लेने से मना कर दिया और डिग्री को ठुकरा दिया। ओर हम भारतीय उस स्थान को खरीदकर उसे वीर सावरकर का स्मारक भी नहीं बना पाए।

वहा से आकर श्री ताना जी हमें एक आर्य परिवार श्री वर्मा जी के यहा ले गए। प० रामचन्द्र जी विवाह के पश्चात हाल ही मे अपनी पत्नी सौ० मीनाक्षी को लदन लाए थे। उनके सम्मान मे उन्होने अपने घर यज्ञ रखा इस दम्पत्ति को यजमान बनाया और उसके पश्चात सह भोज। आज रक्षा बन्धन का पर्व भी था। अत दोनो आयोजन उन्होने अपने परिवार मे रखे। वहा मैंने सबसे पहले प्रो० सुरेन्द्र भारद्वाज को देखा जो स्वय को आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान कहते है। सार्वदेशिक के प्रधान का लदन आने पर उन्होंने न तो मिलने की आवश्यकता समझी न व्यवस्था की। न ही उन्होने मुझसे रविवार को सत्सग मे आने का कहा। दूसरी ओर जब श्री वर्मा जी को पता चला कि उनकी तरह मुझे भी लाइन्स क्लब को सर्वोच्च अवार्ड मिला हुआ है तो वे बडे गरम जोशी के साथ मुझ से मिले। भोजन करके हम लगभग रात्री को १२ बजे श्रीमती दया कपूर के निवास पर पहुचे।

२३ अगस्त २००२ को एशियन फाऊडेशन ऑफ यूनाईटेड किगडम फार हेल्प की प्रधाना श्रीमती इन्दू बेन मेहता और मन्त्री श्री गोपाल भाई पोपट ने हमारे सम्मान मे ब्रेन्ट इडिया एशोसियेसन मे एक पार्टी रखी। यह एशोसिएशन जो कि आर्यों की नहीं है मुझे आर्य मेडिकल रिलिफ मिशन के नाम से पिछले १० सालो से किसी न किसी रूप मे सहायता कर रही। १० वर्ष पूर्व स्व० स्वामी रामानन्द जी शास्त्री जो आर्य मेडिकल रिलिफ मिशन के सस्थापक थे उन्हे ८ लाख की लागत से एक्स रे वेन भेट की थी ताकि भारत के कौने–कौने मे जाकर विशेषकर गावो मे टी०बी के मरीजो का पता कर उन्हे दवा दी जाए। यह वेन आज भी कार्य कर रही है। उसके अलावा एक वातानूकुलित रुग्णवाहिका आर्यसमाज साताक्रुज को एक आचार्य भद्रसेन चेरिटेबल ट्रस्ट अजमेर को भेट की। लाखो रुपये उन्होने मुझे मेडिकल कैम्पो के लिए कच्छ मे भूकम्प पीडितो की सहायता के लिए दयानन्द टकारा ट्रस्ट के लिए राजस्थान मे सूखा पडने पर जानवरो के घास आदि के लिए समय–समय पर भेजते रहे। मेरे लदन आने पर वे बहुत खुश हुए। उन्होने मेरा भाषण कराया मेरा व मेरी पत्नी का शाल व श्रीफल से सम्मान किया और गरीबो की मदद करने के लिए १ लाख का चैक दिया। परोपकार पर मेरे भाषण से वहा कई लोग प्रभावित हुए और उन्होने एशियन फाउन्डेशन को भी आर्थिक मदद दी। उसके पश्चात् श्री गोपाल भाई हमे भोजन के लिए अपने घर ले गए। कई दिनों के बाद विशुद्ध भारतीय भोजन खाकर हम बहुत प्रसन्न हुए।

साय श्री गोपाल जी गिरधर के निवास पर हमारा भोजन था। श्री गिरधर जी ने हमारा बहुत ध्यान रखा। स्वभाव से वे बडे नम्र व मिलनसार इन्सान है। हमे विमान स्थल से लाना व भारत आने पर प्रात विमान स्थल पर छोडने के लिए आना हमारी देखभाल उन्होने बडी तत्परता के साथ की। उनकी पत्नी स्वस्थ नहीं थी फिर भी उन्होने हमारा भोजन पर स्वागत किया। हम उनका मधुर व्यवहार नहीं भूल सकते।

२४ अगस्त को हमारे पास कोई कार्यक्रम नहीं था। हम ट्रेन से लदन घूमने चले गए। हम Madam Tussaud भवन देखने गए। वहा लगभ्र १५० मोम के पुतले विशिष्ट व्यक्तियो के बने हैं। उन्हे देखने सेलगता है कि सत्य मे ही कोई व्यक्ति खडा है। भारत के अभिनेता अभिताभ बच्चन इन्दिरा गाधी आदि अनेक व्यक्तियो के मोम के पुतले देखकर हम आश्चर्य चकिंत रह गए। यह भवन इतना बडा है कि इसे देखने मे करीब–करीब पूरा दिन ही चाहिए। वहा से हम Haarrods shopping Centre देखने गए। यह ६ मजिला भवन है और उनका दावा है कि विश्व की सारी वस्तुएं और रेस्टोरेन्ट मे समस्त प्रकार के व्यजन उपलब्ध हैं।

इस प्रकार हम लदन की यात्रा पूरी कर २६ अगस्त को लदन से रवाना होकर २७ अगस्त को दिल्ली पहुचे। लदन मे आर्यसमाज का काफी कार्य है परन्तु सगठन न होने के कारण समाजे बिखरी हुई है। जब एक व्यक्ति २०–२० साल तक बिना कुछ कार्य किए अपनी कुर्सी से चिपका रहता है तो सगठन का कमजोर होना स्वाभाविक है। दूसरी बात हम सारे विश्व के सगठन का नेतृत्व करते है। हम कभी विदेशो मे नहीं गए अत वहा के व्यक्तियो ने सार्वदेशिक सगठन के महत्व को नहीं समझा। आशा है हम भविष्य मे इस ओर पूरा ध्यान देगे और निष्क्रिय व्यक्तियो से योग्य व्यक्तियो के हाथो मे सगठन सोपेगे ताकि हम महर्षि के मिशन को आगे बढाने मे समर्थ हो सके।

अपनी इन विदेश यात्राओ मे जो हमने दक्षिण अफ्रिका अमेरिका कनाडा यू०के० और मॉरिशस की की मुझे बहुत सीखने को मिला। विदेशो मे आर्यसमाजो का कार्य बहुत सुदृढ और सक्रिय है कमी है तो हमारे स्तर पर जिसे हम दूर करने का प्रयत्न करेगे। अपने लेख में मैंने उन व्यक्तियो का धन्यवाद समय–समय पर किया है जिनसे मुझे स्नेह और सम्मान मिला। पुनरपि मे डॉ० सुखदेव जी सोनी और वैदिक विद्वान डॉ० दिलीप वेदालकार का विशेष आभारी हू जिनके कारण ही यह सब सम्भव हो पाया।

– प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

तीन शताब्दियों के प्रत्यक्षदर्शी पं० सुधाकर चतुर्वेदी - विमल वधावन

वयोवृद्ध वैदिक विद्वान प० सुधाकर चतुर्वेदी जी अपनी आयु के १०६ वर्ष पूर्ण करने के बाद उत्तर भारत भ्रमण करते हुए दिल्ली पधारे और मेरे निमन्त्रण को स्वीकार करते हुए अपनी तीन सुपौत्रियो के साथ सार्वदेशिक सभा कार्यालय मे पधारे जहा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एव दिल्ली सभा के प्रधान श्री वेदव्रत शर्मा तथा कई अन्य आर्य नेताओ ने उनका भाव-भीना स्वागत और अभिनन्दन किया।

पालित पुत्र के परिवार मे आज तक हस खेलकर अपना जवीनयापन कर रहे हैं। ईश्वर की कृपा से परिवार के सदस्य अच्छी आध्यात्मिक भावनाओ से ओत-प्रोत प्रतीत हुए।

माननीय प० सुधाकर जी का दर्शन पहली बार मुझे मार्च २००१ मे बम्बई मे आर्य महासम्मेलन के मच पर करने का सौभाग्य हुआ। यह दूसरा अवसर था कि जब सभा कार्यालय मे उनके दर्शन हुए। इस विशेष भेट को के कारण अपने सूत्ररूप विचारो की माग की तो उनके विचार हमे इस रूप मे प्राप्त हुए।

१ भगवान पर भरोसा और आत्मा पर विश्वास रखो तथा इस सम्पत्ति को निरन्तर बढाते चलो।

२ मानसिक क्षमता कभी भी खोनी नहीं चाहिए।

३ यदि हम शिक्षक हैं और हमारे शिष्य योग्य नहीं बनते तो यह हमारा दोष है। इसी प्रकार यदि हम माता-पिता हैं और हमारी सतान योग्य नहीं बनती तो यह भी हमारा दोष है।

४ हसना हसाना धर्म है और रोना सताना अधर्म है।

प० सुधार जी का पता है –
२८६, सी० १० वा मेन, पाचवा ब्लाक, जय नगर बैंगलोर - ५६००४१, कर्नाटक

आर्यजनता से भी मैं कामना करता हू कि ऐसे वैदिक विद्वानो का पत्रो द्वारा ही बेशक अभिनन्दन करे इसी मे हम सबका भी सौभाग्य होगा। प० सुधाकर जी इस अवस्था मे भी आशा और विश्वास के साथ वेद भाष्य के कार्य मे लगे हुए हैं। १०६ वर्ष की अवस्था मे भी उनका विश्वास है कि मेरे वेद भाष्य का कार्य १० वर्ष मे सम्पन्न होगा।

हमारी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी यह भावनाए लक्ष्य तक पहुचे जिससे दक्षिण भारत मे विशेष रूप मे कन्नड मे वेद प्रेमियो का आध्यात्मिक लाभ हो।



बाए से प० सुधाकर चतुर्वेदी जी का चित्र, दाए श्री विमल वधावन, श्री वेदव्रत शर्मा, श्री अजय भल्ला, आदि के साथ लिया गया चित्र

प० सुधाकर जी का जन्म १८६७ ई० की रामनवमी के दिन हुआ था। गुरुकुल कागडी के प्रारम्भिक काल मे वे यहा से स्नातक बनकर निकले और दक्षिण से उत्तर तथा पश्चिम से पूर्व सभी क्षेत्रो मे प० सुधाकर जी ने घूम-घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार किया।

आज १०६ वर्ष की अवस्था मे भी एक भावुक एव उत्साही युवक की भावनाओ का प्रदर्शन शरीर की कमजोरियो को भी दबा देता है। तीन शताब्दियो के प्रत्यक्षदर्शी इस महान् आत्माओ को आज भी स्वामी धर्मदेव विद्यामार्तण्ड आचार्य रामदेव स्वामी श्रद्धानन्द प० बुद्ध देव विद्यालकार प० अभय देव तथा महात्मा गाधी के साथ बिताए दिन इस तरह से याद है जैसे ताजा घटना चक्र हो।

स्वतन्त्र भारत के प्रथम शिक्षा मन्त्री डॉ० जाकिर हुसैन जी ने एक बार जब हिन्दू मुस्लिम एकता पर चर्चा करते हुए एक अद्वितीय पुस्तक लिखने की बात कही तो प० सुधाकर जी ने तुरन्त जवाब दिया कि क्या आप ऐसी पुस्तक मेरे से लिखवाना चाहते है जिसमे मैं आदर्श पात्रों को मौलाना वाल्मीकि बादशाह दशरथ तथा बेगम सीता कहकर सम्बोधित करू अर्थात् हिन्दू विचारधारा का इस्लामीकरण हो तो क्या इसी को हिन्दु मुस्लिम एकता कहा जाएगा ? इस पर जाकिर हुसैन उनके व्यग्य को समझकर शर्मिन्दा हुए।

हसमुख स्वभाव के प० सुधाकर जी ने कहा कि वेदश्री वेद शिरोमणी और वेद वेदाग आदि कई उपाधिया मुझे मिली परन्तु मुझे सबसे अधिक अच्छी गाधी जी की उपाधि लगी जो मुझे 'मुलफट' कहा करते थे।

पं० सुधाकर जी ने कन्नड वेदभाष्य का महान् सकल्प किया और उसे पूरा करने मे जुट गए बहुत विशाल कार्य पूर्ण हो चुका है। कई ऋषिकृत ग्रन्थों जैसे सत्यार्थ प्रकाश गोकरुणानिधि, आर्याभिविनय रत्नमाला और व्यवहार भानु आदि का कन्नड भाष्य कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित किया गया जिसमें प० सुधाकर जी का प्रयास दृष्टिगोचर होता है।

आजीवन ब्रह्मचारी रहे प० सुधाकर जी ने एक बालक को अपना धर्मपुत्र स्वीकार किया और उसी आजीवन भुला पाना सम्भव नहीं क्योकि ऐसा व्यक्तित्व बहुत कम देखने को मिला। श्री प० सुधाकर जी को देखकर आर्यसमाज की प्रथम पीढी के स्वभाव और मनोवृत्ति के साक्षात दर्शन हो गए। उन्हे मिलकर ऐसा लगा जैसे स्वामी दयानन्द जी के अनुयायियो की प्रथम श्रृखला से साक्षात हो रहे हो।

उनकी सुपौत्री डॉ० सुमित्रा ने जैसे ही मुझे फोन पर बताया कि प० सुधाकर चतुर्वेदी नई दिल्ली मे है तो इससे पूर्व कि वे उनकी सभा कार्यालय आने की इच्छा बता पाती मेरे उत्साह ने छलाग मारी और तुरन्त उनसे निवेदन किया कि आप उनको सभा कार्यालय मे ला सके तो हम यहीं पर उनका अभिनन्दन करना चाहेगे। अगले ही दिन प० जी अपनी तीन पौत्रियो तथा अन्य परिजनो के साथ कार्यालय मे आए जहा श्री वेदव्रत शर्मा श्री अजय भल्ला श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता बलदेव राज आर्य श्री रोशन लाल गुप्ता तथा श्री विनय आर्य ने भी इस सगतिकरण का लाभ उठाया।

मैंने जब प० सुधाकर जी से १९वी २०वी और २१वीं शताब्दी के प्रत्यक्षदर्शी और अनुभव सम्पन्न होने

पृष्ठ १ का शेष भाग

उन्होने शहीद मेजर अश्विनी कण्व के जीवन की प्रेरणा घर-घर स्थापित होने की प्रार्थना करते हुए कहा कि प्रत्येक घर में 'ईला सरस्वती मही' अर्थात स्व-सस्कृति स्व-भाषा और मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावनाए स्थापित होनी चाहिए। इसकी सबसे अधिक जिम्मेवारी माता-पिता की ही होती है।

मेजर अश्विनी कण्व स्मृति दिवस पर इस कार्यक्रम का आयोजन शहीद वीर के पश्चिम विहार निवास पर ही किया गया था जिसका सचालन आर्य केन्द्रीय सभा के पूर्व प्रधान डॉ० शिव कुमार शास्त्री ने किया। उन्होंने शहीद अश्विनी के जीवन के बहुत से प्रेरक सस्मरण सुनाए।

दिल्ली की पूर्व महापौर माता शकुन्तला आर्या ने शहीद आत्मा के गौरव को भारत के भविष्य की प्रेरणाओं के रूप में प्रस्तुत किया। श्रीमती उमा व्यास ने मधुर काव्य रचनाओं के द्वारा शहीद अश्विनी कण्व को श्रद्धाजलि देकर वातावरण को भाव विहल बना दिया।

आनन्द का सूत्र

– आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'

सत्य को ग्रहण करने में
सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

सत्य है ब्रह्म
सत्य है आत्मा।
सत्य है – धर्म।

सार्वभौमिकता सत्य है
सत्य तृप्ति है – असत्य प्यास
सत्य ज्ञान है – असत्य अज्ञान
सत्य लक्ष्य है – असत्य भटकाव
सत्य पूर्णता – असत्य अभाव।

स्व स्मृति सुख है - ज्ञान है।
स्व विस्मृति दु ख है - अज्ञान है।

काम में – क्रोध में
लोभ में – अहकार व मोह में
पद और प्रतिष्ठा में सुख नहीं – आनन्द नहीं।

अज्ञान की पगडण्डियों में भटकना ही
आत्म हनन है
आत्महत्या है।

अज्ञान के प्रति
अहर्निश जागरण ही
आनन्द का सूत्र है।
आत्म स्मृति है आत्म तृप्ति है
सत्य है और शाश्वत है ।

– ८१/ एस-५, सुन्दर नगर, (हिमाचल प्रदेश)

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 14 15/11/2002 दिनाक ११ नवम्बर से १७ नवम्बर २००२ Licence to post without prepayment Licence No. U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 14 15/11/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

श्री डा धर्मपाल आर्य कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
पुस्तकालय-गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार
(30570)

आर्यसमाज किरण गार्डन मे वार्षिकोत्सव एव मानव सुधार सम्मेलन का भव्य आयोजन

आर्यसमाज किरण गार्डन का वार्षिकोत्सव दिनाक २० १० २००२ को मानव सुधार सम्मेलन के रूप मे पैराडाइज पब्लिक स्कूल नजफगढ रोड किरण गार्डन मे प्रात ८ बजे से १२ ३० तक भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री हीरा लाल चावला ने की। मुख्य अतिथि के रूप मे श्री मुशी राम सेठी तथा स्वागताध्यक्ष श्री राजतिलक नैय्यर थे। इस अवसर पर श्री हरफूल सिह जी निगम पार्षद सारस्वत मोहन मनीषी श्री जगदीश आर्य श्रीमती सावित्री चावला सहित अनेको गणमान्य व्यक्तियो ने अपने विचारों से श्रोताओ का मार्ग दर्शन किया। श्री नरेन्द्र आर्य के भजनो ने समा बाध दिया। इस अवसर पर लगभग ६०० व्यक्ति उपस्थित थे।

इसके पूर्व प्रात काल श्री खुशीराम आर्य के ब्रह्मत्व मे मे सम्पन्न हुए विशेष यज्ञ मे बडी श्रद्धा और भक्ति से सैकडो लोगो ने आहुतिया अर्जित की। आर्यनेता श्री अशोक कुमार सम्पादक 'करुणा सागर' के अथक प्रयासो से उक्त समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हो सका।

दिल्ली की आर्य नए पदाधि

आर्यसमाज पखा रोड जनकपुरी नई दिल्ली

प्रधान	श्री सोमदत्त महाजन
मन्त्री	श्री ओमप्रकाश गुलाटी
कोषाध्यक्ष	श्री हरि किशन लाल गुलाटी

आर्यसमाज मन्दिर टैगोर गार्डन विस्तार नई दिल्ली

प्रधान	श्री हरिदेव
मन्त्री	श्री वासदेव भाटिया
कोषाध्यक्ष	श्री धर्मदेव

आर्यसमाज दरिया गज, नई दिल्ली

प्रधान	श्री श्रीदत्त यादव
उप प्रधान	श्री सत्येन्द्र गुप्ता एव श्री ज्ञानवीर सिह
मन्त्री	श्रीमती श्रीबाला चौधरी
उप मन्त्री	श्री सजीव अरोडा
कोषाध्यक्ष	श्री महेन्द्र सिह चौहान

हिन्दी का सम्मान राष्ट्र का सम्मान

गुरु । ण्डी जन्मदिवस उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न

आर्यसमाज बाहरी रिग रोड विकासपुरी के तत्वावधान मे गुरुवर विरजानन्द जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य मे आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे विराट यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ।

समाज प्रधान डॉ० पुष्पलता जी ने ब्रह्मा श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी एव आचार्य विश्वमित्र मेधावी जी का पुष्पमाला से स्वागत किया।

इस अवसर पर आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी विरजानन्द जी सस्कृत व्याकरण के अद्वितीय विद्वान् भारतीय नवजागरण के पुरोधा आर्षग्रन्थो के प्रतिष्ठापक तथा स्वामी दयानन्द जी के विद्या गुरु थे। श्री मेधावी जी ने गुरु विरजानन्द जी के समस्त पहलुओं पर प्रकाश डाला तथा गुरु शिष्य धर्म पर लोगो को प्रेरणादायक जानकारी दी। इस अवसर पर आर्यसमाज की ओर से समस्त श्रोताओं को गुरुविरजानन्द जी से सम्बन्धित एक पुस्तक भेंट की गई। विराट जनसमूह ने स्वामी विरजानन्द जी का जन्मोत्सव मनाया।

समाज प्रधान डॉ० पुष्पलता मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा कोषाध्यक्ष श्री ललित कुमार चौधरी ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अन्त मे जलपान एव वैदिक साहित्य का वितरण किया गया।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष २६ अक ३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत् २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार १८ नवम्बर से २४ नवम्बर २००२ तक

मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

आर्यसमाजों के अधिकारियों की सेवा में नम्र निवेदन

अत्यावश्यक परिपत्र

दिनाक १८ नवम्बर २००२

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन

५ जनवरी, २००३ (रविवार) को निश्चित

माननीय महोदय

निवेदन है कि **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन रविवार ५ जनवरी २००३** को होना निश्चित हुआ है। सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजो के प्रतिनिधि इस अधिवेशन मे भाग लेते हैं। आपकी आर्यसमाज से अभी तक प्रतिनिधियो के नाम प्राप्त नहीं हुए हैं। कृपया अपनी आर्यसमाज की ओर से प्रतिनिधियो के नाम चुनकर अविलम्ब भिजवाने की कृपा करे। नियमानुसार आर्यसमाज की ओर से **प्रथम दस सभासदों पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदों पर एक प्रतिनिधि** निर्वाचित किया जाता है **जिसकी आयु पच्चीस वर्ष से कम न हो** और जो पिछले **दो वर्षों से आर्यसमाज का सभासद रहा हो**। प्रतिनिधियो के नामो के साथ अपनी **आर्यसमाज के सदस्यों की सूची पिता का नाम उनके निवास के पते आयु तथा वर्ष में दिए गए चन्दे का विवरण** भी भेजने की कृपा करे।

निर्वाचन मे केवल उन्हीं आर्यसमाजो के प्रतिनिधि भाग ले सकेगे जिन आर्यसमाजो की सभा को गत वर्षों की देय वैधानिक राशिया – **दशाश** (वर्ष **मे सदस्यों से प्राप्त चन्दे का दसवा भाग) वेदप्रचार राशि** न्यून से न्यून **१०१/ रुपये प्रतिवर्ष** के हिसाब से तथा **आर्य सन्देश की वार्षिक शुल्क राशि ७५/ रुपये** – सभा कार्यालय को प्राप्त हो गई होगी।

कृपया पत्र के मिलते ही सारी औपचारिकताए पूरी करने का कष्ट करे ताकि आपके प्रतिनिधियो को एजेण्डा भेजा जा सके और वह अधिवेशन मे भाग ले सके। प्रतिनिधि भेजने तथा देय वैधानिक राशिया जमा करने की **अन्तिम तिथि ३ दिसम्बर २००२ साय ५ बजे है।**

हमारी हार्दिक इच्छा है कि सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजो के प्रतिनिधि इस अधिवेशन मे भाग ले और सगठन को सुदृढ करने मे सहयोग दे।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप यथाशीघ्र कार्यवाही कर सभा को अपना सहयोग प्रदान करेगे।

धन्यवाद

भवदीय

वैद्य इन्द्रदेव सभा महामन्त्री

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन में खेल मेला

महर्षि दयानन्द के नाम पर सचालित इस स्कूल का उद्देश्य विद्यार्थियो मे वैदिक विचारधारा को भरना और उन्हे **पूर्ण मानव** एव श्रेष्ठ मानव बनाकर देश के लिए सुयोग्य नागरिक तैयार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय समय पर विशेष समारोहो का आयोजन किया जाता है।

दिनाक १४ नवम्बर २००२ को प्रात १० ३० बजे गायत्री मन्त्र के उच्चारण से **खेल मेला** का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती विभापुरी चेयरमैन श्री जगदीश आर्य मैनेजर एव सैकेट्ररी श्री देव प्रकाश पाहवा जी के निर्देशन मे अध्यापिकाओ ने एव आर्य वीरदल के अधिकारियो ने यह कार्यक्रम तैयार कराया। विद्यालय के प्रबन्धक समिति के सदस्यो द्वारा मुख्य अतिथि श्री ऋषिपाल (ए०सी०पी०) राजौरी गार्डन श्रीमती राजकुमारी (शिक्षा अधिकारी) का भव्य स्वागत किया। उत्सव मे आमन्त्रित विशिष्ट अतिथि दिल्ली सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा प्रि० चन्द्रदेव जी दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री इन्द्रदेव जी श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता जी का भी स्वागत किया गया।

पुरस्कार वितरण समारोह मे मेधावी विद्यार्थियो को छात्रवृत्ति के रूप मे धनराशि दी गई। यह धनराशि विद्यालय के द्वारा एव प्रबन्धक समिति के सदस्यो की ओर से दी गई। प्रतिभाशाली विद्यार्थियो को ट्राफी भी प्रदान की गई। दसवी कक्षा की छात्रा भजनप्रीत के माता पिता को विद्यालय मे सहयोग देने के लिए भी सम्मानित किया गया। अध्यापिकाओ को भी सम्मानित किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती विभापुरी को आर्य विद्या परिषद् की ओर से विशिष्ट समाज सेविका का सम्मान चिह्न प्रदान किया गया।

शेष भाग पृष्ठ ५ पर

अग्निवेश के नाम खुला पत्र

श्री अग्निवेश जी सप्रेम नमस्ते

यदि आप के साथ रहने वाले पादरी और मौलवी मानवता के रक्षक व आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश के १३वे व १४वें समुल्लास के अनुसार उन ग्रन्थों के विज्ञान विरुद्ध पाखण्ड जीवो की हत्या व्यभिचार तथा मानवता पर अत्याचार को छोडकर श्रेष्ठ मानव 'आर्य' बन गए होते तो हम आपके अभियान को ठीक समझते। इतना नहीं तो कम से कम भारत सरकार के जज द्वारा घोषित दगे करवाने और भडकाने वाली २४ आयतें ही छोड़ने की घोषणा करते। यदि नहीं तो आपका यह कार्य केवल एक पाखण्ड है।

– आर्य नरेश, उद्गीथ साधना स्थली हिमाचल प्रदेश १७३१०१

प्रो० उत्तम चन्द जी शरर अभिनन्दन ग्रन्थ विमोचन समारोह

आर्यजगत के प्रतिष्ठत विद्वान प्रो० उत्तम चन्द जी शरर का अभिनन्दन ग्रन्थ विमोचन समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्लीतथा अभिनन्दन ग्रन्थ विमोचन समारोह समिति पानीपत के सयुक्त तत्वावधान मे शीघ्र ही पानीपत नगर मे मनाया जायेगा।

जो सस्था इस पवित्र कार्य के लिए अपना आर्थिक योगदान देना चाहें वे ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजकर अनुगृहीत करें तथा समारोह को सफल बनाए। कृपया चैक ड्राफ्ट मनीआर्डर इत्यादि निम्नलिखित खाते के नाम से भेजे। "प्रो० उत्तमचन्द शरर अभिनन्दन समारोह समिति पानीपत। उपरोक्त ड्राफ्ट चैक मनीआर्डर इत्यादि निम्नलिखित पतो पर भेंजे।

१ मुनीष चन्द अरोडा प्रधान वेद प्रचार एव पारिवारिक सत्सग समिति १६६ पुरानी हाउसिग बोर्ड कालोनी पानीपत।

२ मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आसफ अली रोड रामलीला मैदान नई दिल्ली।

– मुनीष चन्द अरोडा प्रधान वेद प्रचार समिति

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

– डॉ० भवानीलाल भारतीय

बुरी राहो पर चलकर भी यदि कोई व्यक्ति जीवन सुधारने का सकल्प कर ले तो वह कल्याण मार्ग का पथिक बन सकता है। इस उक्ति को चरितार्थ करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द बचपन मे मुशीराम थे। उनके पिता लाला नानकचद मूलत पजाब के निवासी थे किन्तु उत्तर प्रदेश की पुलिस–सेवा मे उनका जीवन वाराणसी बरेली बदायू, मिर्जापुर आदि नगरो मे व्यतीत हुआ। मुशीराम का जन्म १८५४ मे तलवन (जिला जालधर) मे हुआ किन्तु उनकी शिक्षा मुख्यत काशी मे हुई। अपने किशोर काल मे वे कटटर पौराणिक थे। बिना विश्वनाथ शिव का दर्शन किए हुए अन्न जल भी ग्रहण नहीं करते थे किन्तु मूर्तिपूजा से उनका मन विरक्त हो गया। जब काशी के विश्वनाथ मन्दिर मे रीवा की महारानी दर्शनार्थ गई तो सामान्य भक्तो को मन्दिर मे घुसने नहीं दिया गया।

मुशीराम सूझबूझ के धनी तरुण थे। ऐसे भगवान की भक्ति कैसे करते जिसे राजा रानी के आने पर देखने का अधिकार भी न हो ? यूरोप के नास्तिक दर्शनो तथा डार्विन के विकासवाद के अध्ययन ने उनके हृदय मे बची खुची आस्तिकता भावना भी निर्मूल कर दी। उस समय अपने पिता के पास बरेली मे रहते थे।

नास्तिकता दूर हो गई

१८७६ के वर्ष मे स्वामी दयानन्द बरेली मे पधारे। पिता तो पुलिस व्यवस्था के नाते स्वामी दयानन्द का प्रवचन सुनते थे उन्होने पुत्र मुशीराम को भी आग्रह करके भेज दिया। नास्तिक मुशीराम बुझे मन से स्वामीजी के उपदेशो को सुनने के लिए गए तब उसकी सारी नास्तिकता दूर हो गई। महान सन्यासी के प्रभावशाली प्रवचनो को सुनकर मुशीराम का पुनर्जन्म हो गया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी आत्मकथा मे उन सभी दुर्गुणो दुर्व्यसनो तथा अभद्र आदतो का स्पष्ट ब्यौरा दिया है जिनके कारण उनका जीवन पतन की सीमा पर पहुचा था। ऋषि दयानन्द के सत्सग ने मुशीराम का जीवन बदल दिया। वे उन सभी बुराइयो से मुक्ति पा गए जिनके कारण उनका जीवन नरक बन रहा था।

१८८१ मे मुशीराम लाहौर आए और कानून की पढाई मे लग गए। इसी नगर मे पहले वह ब्रह्मसमाज के सम्पर्क मे आए किन्तु उनकी धार्मिक एव आध्यात्मिक जिज्ञासाओ का समाधान आर्यसमाज मे आकर ही हुआ। ऋषि दयानन्द के महान ग्रन्थ **सत्यार्थप्रकाश** के अध्ययन से उनकी अनेक शकाओ का निवारण हुआ। तब वह विधिवत् आर्यसमाज के सदस्य बन गए।

वह युग आर्यसमाज के इतिहास का स्वर्णिम काल था। प० गुरुदत्त लाला लाजपतराय और लाला हसराज जैसे जीवनदानी युवको ने वैदिक धर्म की सेवा का व्रत लेकर आर्यसमाज मे आए थे। मुशीराम जी भी इस मित्र मण्डली के एक महत्वपूर्ण सदस्य रहे।

लाला मुशीराम का सामाजिक जीवन जालधर मे प्रारम्भ हुआ वहा वह वकालत करते थे। आर्यसमाज जालधर ने शीघ्र ही उन्हे अपना प्रधान निर्वाचित कर दिया। वह नियमित रूप से व्याख्यानो सत्सगो तथा शास्त्रार्थों के द्वारा आर्यसमाज के प्रचार मे सलग्न हो गए। मुशीराम जी की धर्म प्रचार के लिए लग्न अपूर्व थी। वह समय निकालकर समीपवर्ती कस्बो और नगरो की आर्यसमाजो के उत्सवो में जाते वहा व्याख्यान देते और यदि आवश्यकता पडती तो विधर्मियो से शास्त्रार्थ भी करते। प० दीनदयालु जैसे प्रसिद्ध पौराणिक विद्वान् से शास्त्रार्थ के मच पर टक्कर लेकर उन्होने अपने अध्ययन तथा वाकचातुरी का सिक्का जमाया।

दृढ सकल्पी

प्रारम्भ मे वह स्वामी दयानन्द की स्मृति मे लाहौर मे स्थापित किए गए डी०ए०वी० कॉलेज की सचालन व्यवस्था मे सहभागी रहे। थोडे समय बाद उन्हे यह अनुभव हो गया कि इस शिक्षा–प्रणाली मे



सस्कृत भाषा और वैदिक आर्ष शास्त्रो के अध्ययन को अग्रेजी की तुलना मे गौण स्थान दिया जा रहा है तब उनका मन ऋषि दयानन्द द्वारा उपदिष्ट गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मूर्तरूप देने मे लग गया। उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से उसे स्वीकार करा लिया। यह प्रतिज्ञा करके घर से निकल पडे कि जब तक गुरुकुल के लिए एक निश्चित धनराशि वह एकत्र नहीं कर लेगे तब तक अपने नगर मे लौटेंगे। सचमुच दृढव्रती थे मुशीराम। अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने मे थोडी भी कठिनाई नहीं हुई। वह निश्चित अवधि के पूरा होने से पहले ही सकल्पित राशि से भी अधिक धन एकत्र कर लाए।

इस प्रकार मार्च १९०२ मे गगा के किनारे कागडी ग्राम में गुरुकुल आरम्भ हुआ। महात्मा मुशीराम ने अपने तप त्याग श्रम और लगन से इस गुरुकुल को देश के एक प्रमुख सास्कृकि एव राष्ट्रीय शिक्षण सस्थान के रूप मे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाई। पुरातन भारतीय शिक्षा प्रणाली को मूर्तरूप देने के लिए जो सस्था एक नन्हे पौधे के रूप में आज से १०० वर्ष पूर्व रोपी गई थी। वह कालान्तर मे नाना शाखा प्रशाखाओं से युक्त होकर एक महानवृक्ष हो गई।

राष्ट्रीयता देशभक्ति के भाव

गुरुकुल-शिक्षा की एक विशेषता छात्रों में राष्ट्रीयता एव देशभक्ति के भावो भरना भी था। जब गुरुकुल कागडी के ब्रह्मचारियों ने स्वदेश हित को सर्वोपरि मानकर लोक कल्याण के कार्यक्रम अपनाए तब तत्कालीन ब्रिटिश शासको के मन मे गुरुकुल को लेकर अनेक प्रकार के सन्देह पनपे। महात्मा मुशीराम नहीं चाहते थे कि शासको की वक्रदृष्टि से गुरुकुल को व्यर्थ में ही हानि हो अत उन्होने तत्कालीन वायसराय लॉर्ड चैम्सफोर्ड तथा सयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मैस्टन को गुरुकुल मे आमन्त्रित किया और उन्हे वास्तविकता से परिचित कराया।

शीघ्र ही वैदिक आश्रम-व्यवस्था के अनुसार महात्मा मुशीराम ने सन्यास की दीक्षा ली। मुशीराम से वह स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। स्वामीजी का सार्वजनिक जीवन केवल आर्यसमाज तक ही सीमित नहीं था। देश की आजादी के आन्दोलनो मे उन्होने सक्रिय भूमिका निभाई। महात्मा गाधी तथा उनके कार्यों से तो वह तभी परिचित हो गए थे जब बैरिस्टर मोहनदास कर्मचन्द गाधी दक्षिण अफ्रीका को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर प्रवासी भारतीयों की सेवा कर रहे थे। भारत मे आने के पश्चात् गाधी जी ने गुरुकुल कागडी आकर महात्मा मुशीराम से व्यापक विचार विमर्श किया था। जब महात्मा गाधी ने सत्याग्रह और असहयोग का कार्यक्रम देशवासियो को दिया तब मातृभूमि की पुकार को सुनकर राष्ट्रहित के लिए अपनी आहुति देने स्वामी श्रद्धानन्द आगे आए।

३० मार्च १९१९ को जब दिल्ली की जनता का नेतृत्व करते हुए वह चादनी चौक के घण्टाघर मे पहुचे तो गोरखा पलटन के सिपाहियो ने उन्हे अपनी सगीनो का लक्ष्य बना लिया।

यह वीर सन्यासी के तेजोदीप्त मुखमण्डल तथा उनकी निर्भीक वाणी का प्रभाव ही था कि वे उद्दण्ड सैनिक उन पर गोली का प्रहार करने का साहस नहीं जुटा सके।

जलियावाला बाग के हत्याकाण्ड के बाद जब पजाब मे राष्ट्रीय काग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया जाना प्राय असम्भव था उस समय अमृतसर मे सफलतापूर्वक राष्ट्रीय महासभा का अधिवेशन सम्पन्न करा लेना और उसके स्वागताध्यक्ष के पद से प्रथम बार हिन्दी मे स्वागत भाषण प्रस्तुत करना स्वामी श्रद्धानन्द जैसे स्वाधीनचेता महापुरुष से ही सम्भव हुआ।

स्वामीजी पूरी तरह राष्ट्रीयता के रग मे रगे थे किन्तु वह यह भी अनुभव करते थे कि काग्रेस की साम्प्रदायिक तुष्टिकरण की नीति आगे चलकर देशहित मे बाधक होगी। फलत उन्होने काकीनाडा काग्रेस अध्यक्ष पद से दिए गए मौलाना मुहम्मद अली के भाषण के उस अश का दृढतापूर्वक विरोध किया जिसमें मौलाना ने सात करोड अछूतो को हिन्दू और मुसलमानो के बीच आधा आधा बाटने की बात कही थी।

शुद्धि सगठन पर बल

अब स्वामीजी ने यह अनुभव किया कि जब तक हिन्दू समाज को सगठित नहीं किया जाता और हिन्दू धर्म त्यागकर अन्य मतों को स्वीकार करने वालों के लिए हिन्दू धर्म के द्वार पुन नहीं खोले जाते तब तक भारत का राष्ट्रीय हित सम्भव नहीं। इसी विचार से स्वामीजी ने शुद्धि और सगठन पर जोर दिया। महामना मदनमोहन मालवीय के साथ उन्होंने सगठन के कार्यक्रमों में भी रुचि दिखाई। अब वे अछूतोद्धार को प्रमुखता देने लगे। कुछ वर्ष पूर्व इस्लाम ग्रहण करने वालो को पुन हिन्दू समाज मे प्रविष्ट कराने का अभियान चलाया।

कटटरपन्थी मुसलमान स्वामीजी के शुद्धि और सगठन के इस कार्यक्रम से घबराहट अनुभव कर रहे थे। मतान्ध लोगों ने स्वामीजी की हत्या का षडयन्त्र रचा। परिणामस्वरूप २३ दिसम्बर १९२६ को अमर हुतात्मा श्रद्धानन्द ने बलिदान देकर कर्त्तव्य की वेदी पर स्वय को न्योछावर कर दिया।

– नन्दन वन, जोधपुर (राजस्थान)

कल्याण मार्ग के पथिक हों। हम निर्भय हों !

स्वस्ति पन्थामनुचरेम्।

ऋ० ५/५१/१५

हम सदा कल्याण मार्ग के पथिक हो।

वो अभय कृधि।

साम० २७४

हे देव हमें निर्भय करो।

श्रेष्ठा भूयास्म्।

अथर्व० १८/४/८७

हम श्रेष्ठ बने।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सम्पादकीय अग्रलेख

राष्ट्रीय संकट का निवारण : विवेक और एकता से

भारत के राष्ट्रपति श्री ए०पी० जे० अब्दुल कलाम ने १४ नवम्बर को जोरदार शब्दो मे घोषित किया कि यद्यपि भारत परमाणु शस्त्रो के प्रथम प्रयोग न करने के वचन पर सुदृढ है परन्तु यदि भारत राष्ट्र की शान्ति खतरे मे पडी तो भारत परमाणु शस्त्रों का प्रयोग करने मे सकोच नहीं करेगा। स्वाधीनता प्राप्ति के ५५वे वर्ष मे भी भारत राष्ट्र को नित नई समस्याओ से जूझना पड रहा है ऐसे मे भारत के राष्ट्रपति द्वारा परमाणु शस्त्रो का प्रथम प्रयोग न करने की घोषणा की विशेष महत्ता है। भारत अपनी तात्कालिक और स्थायी समस्याओ और चुनौतियो का सामना सदा विवेक और एकता के स्थायी सहारो से ही करता रहा है और भविष्य मे भी इन्हीं का सहारा लेना चाहेगा परन्तु यदि कुछ शक्तिया अवैध घातक अस्त्रो का प्रयोग करे तभी भारत को भी आत्मरक्षा के लिए ऐसे अस्त्रो का प्रयोग करना पड सकता है। भारत के चिन्तको मनस्वी विचारको ने किसी भी सकट आपत्ति आने पर गायत्री मन्त्र आदि के माध्यम से **धियो यो न प्रचोदयात्** वह ब्रह्म सद्बुद्धियो की सद् प्रेरणा दे। 'मेघा मे सविता आ दधातु – प्रेरक प्रभु मुझ मे मेधा सद्बुद्धि का आधान करे। मेघा मे देवी सरस्वती आ दधातु। – यह दिव्यज्ञान युक्त वेदवाणी मुझ मे सदा प्रतिभा का सचार करे। **भद्रा हिन प्रभतिस्य ससदि।** *अथर्व० २०१२३* प्रभु के सत्सग से हमारी बुद्धि तीव्र और भद्र हो जाए।

विवेक और एकता के इन सद्गुणो की प्राप्ति के लिए ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत राष्ट्र और आर्यसमाज को 'सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश दिया तो उनके श्रेष्ठ वर्चस्वी तेजस्वी अनुयायी महात्मा मुशीराम स्वामी श्रद्धानन्द उच्च तपस्वी जीवन व्यतीत कर कल्याण मार्ग के सच्चे पथिक बन गए थे। स्वाधीनता के ५५वे वर्ष मे इस सहस्राब्दी मे मातृभूमि भारत भूमि आज भी सकटो समस्याओ और विपरीत परिस्थितिओ से जूझ रही है। विदेशी शासक भारत छोडते समय भारत भूमि के दोनों बाजू काट गए थे भारत राष्ट्र और यहा की कोटि कोटि जनता की सदिच्छा के बावजूद ये पार्श्व अभी भी जुदा हैं। १९७१ के निर्णायक युद्ध मे यद्यपि भारत ने अपने पडोसी देश को पूरी तरह पराजित कर दिया था हम अपनी सदिच्छाओ के बावजूद राष्ट्र के पृथक हुए पूर्वी भाग को भारतभूमि मे सयुक्त नहीं कर सके थे अधिक से अधिक हम अपने पूर्वी छोर पर एक नए भिन्न राष्ट्र बगला देश के निर्माण मे ही सहायक बन सके थे।

नई सहस्राब्दी मे स्वाधीनता प्राप्ति के ५५वे वर्ष मे आज भी वही परिस्थिति है जो देश की राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्ति के समय थी। देश के दोनो बाजू आज भी पृथक हैं। इन दोनो पृथक प्रदेशो मे पश्चिमी क्षेत्र के शासक यद्यपि भारत राष्ट्र के स्थायी प्रतिस्पर्द्धी हैं तो पूर्व मे निर्बल एकाकी बग्गला देश अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और स्थायी व्यवहार मे कोई भी सार्थक भूमिका प्रस्तुत करने मे अक्षम दीखता है। ऐसी परिस्थिति मे भारत राष्ट्र के सूत्र सचाल को और राष्ट्रीय जनता को निरन्तर सजग सन्नद्ध रहकर नई सहस्राब्दी मे अधिक सावधान सयुक्त और सुदृढ हो छोटी बडी सभी समस्याओ और परिस्थितियो से जूझने के लिए अपनी सक्रिय भूमिका प्रस्तुत करनी होगी। यह चिन्ता और विवेक का तकाजा है कि हम नई सहस्रबदी मे भारतीय राष्ट्र के वर्तमान और भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए निरन्तर जाग्रत और सयुक्त रहें। देशवासियो का प्रयत्न होना चाहिए भारत राष्ट्र मे ऐसा स्थायी सुदृढ और दूरदर्शी शासन सुदृढ हो जो इस सहस्राब्दी में आने वाले सकटो और समस्याओ का तुरन्त सामना और तुरन्त उनका स्थायी समाधान कर सके। यह लक्ष्य सामान्य सा प्रतीत होता है परन्तु इसकी सफलता राष्ट्र में एक सजग सुदृढ दूरदर्शी केन्द्रीय शासन की स्थायी प्रतिष्ठा से सम्भव है। इस समय नई सहस्राब्दी में भारत राष्ट्र को जहा गम्भीर परिस्थियो और समस्याओं से जूझना पड रहा है या उसे जूझना पड सकता है ऐसी परिस्थिति मे वर्तमान या भावी राष्ट्रीय सकटो का निवारण देश की जमता और प्रमुख राजनीतिक दलो एव राष्ट्रीय नेतृत्व को निरन्तर सजग और सन्नद्ध होकर ऊचे विवेक से सच्ची राष्ट्रीय एकता को सुरक्षित एव सशक्त करना होगा। हो सकता है कि कई प्रक्षेक परिस्थिति की सवेदनशीलता से सहमत न हो परन्तु विश्व का इतिहास साक्षी है कि छोटे बडे अनेक राष्ट्र सम्भावित राष्ट्रीय सकटों से असावधान होकर सकट मे पडते रहे हैं। इस समय राष्ट्र मे अशिक्षा अज्ञान व्याप्त है। महामहिम ने यह भी कहा कि २०२० तक भारत को यदि एक विकसित राष्ट्र बनाना है तो छोटे बच्चो से लेकर समस्त बाल युवा वर्ग को एक छात्र आधारित साक्षरता आन्दोलन चलाना होगा उन सभी का गावो मे जाकर बच्चो तथा बडो के साक्षर बनाना होगा उससे बच्चो पर व्यर्थ का पढाई का बोझ भी नहीं पडेगा। यह बडा लक्ष्य कठिन परिश्रम और लगन से पूरा हो सकेगा वास्तव मे कठिन परिश्रम ही सफलता का मूल मन्त्र है।

एक युग था जब श्रीराम और श्रीकृष्ण के उज्ज्वल चरित्रो और मार्गदर्शन ने विश्व का पथप्रदर्शन किया था। इस नई सहस्राब्दी मे भारत पुन विश्व का मार्गदर्शन कर सकता है यदि हमारा राष्ट्र केवल राजनीतिक दृष्टि से ही एक और सयुक्त न हो प्रत्युत सच्चे मानव धर्म के सत्य अहिंसा भाईचारे और सहिष्णुता सरीखे ऊचे तातवो के बल पर एक ओर अपनी एकता सुदृढ कर सकेगा दूसरी ओर सत्य अहिंसा सहिष्णुता भाईचारे आदि के ऊचे तत्वों के बल पर पुन मानवता और विश्व मे अपना ऊचा मापदण्ड प्रस्तुत कर जागरण और भ्रातृत्व की अनुकरणीय छवि प्रस्तुत कर सकता है।

आइए बच्चों से लेकर राष्ट्र के समस्त सभी पुरुष जहा विवेक और एकता अपना कर वर्तमान राष्ट्रीय सकट का स्थायी निवारण करे वहा वे अपने ऊचे चरित्र और जीवन की छवि से मानवता और विश्व के सम्मुख सच्चा मार्गदर्शन करे।

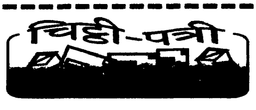


दान की महत्ता

महाभारत के युग में दानवीर कर्ण ऐसे दाता थे जिनके पास से कोई भिक्षुक खाली हाथ नहीं लौटता था। लोग मनमर्जी मागते थे और वह सब को देते जाते थे एक दिन एक व्यक्ति उनके पास मागने आया। कर्ण ने अपने दाए हाथ में कोई चीज पकडी थी फलत उन्होने अपने बाए हाथ से गले में पहली सोने की माला उतारी और उस भिक्षुक को दे दी। इस पर कर्ण के समीप खडे उनके एक सहयोगी ने कहा – 'महाराज बाए हाथ से दान नहीं दिया जाता दान तो सदा दाए हाथ से दिया जाता है।

इस पर कर्ण ने समझाया – 'तुम्हारी बात तो ठीक है लेकिन बाए हाथ से माला दाए हाथ में देते समय कहीं मेरा मन बदल जाता तो इसलिए मैंने तुरन्त बाए हाथ से ही दान दे दिया।

– नरेन्द्र



अव्यवस्था की पराकाष्ठा

देश मे अन्न भण्डारण की अव्यवस्था के कारण अन्न सड रहा है और कलेजे के टुकडे और भावी जन नेता भूख से तडप–तडप कर मर रहे हैं। वर्तमान में जन नेता अपनी–अपनी कुर्सियों को थामे रखने की व्यवस्था मे व्यस्त है बाकी सब कुछ अव्यवस्था के हवाले है। मानवाधिकार आयोग की व्यवस्था का आलम यह है कि उसे भूख से मरने वालो पर तरस नहीं आ रहा है। वह मानव धर्म नहीं निभा रहा है परन्तु दिल्ली में आतकवादियो के साथ हुई मुठभेड से त्रस्त है और पुलिस से जवाब तलब किया जा रहा है। वाह रे ! मानवाधिकार आयोग। देश की अव्यवस्था मिटाओ देश को आतकवाद से बचाओ और दरिद्र की भूख मिटाओ।

– वैद्य महावरी प्रसाद आर्य,
केशव नगर, लोहारु

ऋग्वेद से हिरण्योपदेश सप्तकम्

वेद के हितकर

(१) मित्र का सदा उचित सत्कार और उसके गुणों धारण करें

मित्रो जनान्यातति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम्।
मित्र कृष्टीरनिमिषाभिचष्टे मित्राय हव्य घृतवज्जुहोत।।

ऋ० ३ ५६-१

विश्वामित्र । मित्र । त्रिष्टुप।

अर्थ – (मित्र) प्राणीमात्र का मित्र परमात्मा (ब्रुवाण) हृदय मे व्यक्त रूप (आध्यात्मिक) से बोलता हुआ (जनान यातयति) मनुष्यो को दुरितो से बचकर कर्त्तव्य कर्मों की प्रेरणा देता है (दाधार पृथिवीं उतद्याम्) पृथ्वी और द्युलोक को धारण किए है (कृष्टी अनिमिषा अमिचष्टे) कर्म करने वाले प्राणीमात्र के कर्मों का निरीक्षण करता है। अत (मित्राय) सर्वमित्र परमात्मा के प्रति (हव्य घृतवत्) दीप्तज्ञान युक्त भक्ति रस (जुहोत) सदा प्रदान किया करो।

आधिदैविक – (मित्र) प्राणीमात्र का मित्र सूर्य अन्त प्रेरणा देकर सबको प्रात काल अपने नित्यकर्मों और कर्त्तव्य कर्मों मे प्रवृत्त करता है। सम्यक सेवन किया हुआ सूर्य मानव के शरीर और मस्तिष्क को स्वस्थ रखता है। सूर्य दिनभर अपने प्रकाश द्वारा मनुष्यो को कार्यरत रहने की प्रेरणा देता है ऐसे मित्र को प्रति प्रात काल (घृतवत हव्यम्) जल से भरी अजलि प्रदान किया करो।

आधिभौतिक – (मित्र) सच्चा मित्र अपने सखा को दुरितो से बचने और कर्त्तव्य कर्मों को करने की चेतावनी तथा प्रेरणा निरन्तर देता रहता है। वह अपने मित्र को शरीर और मन बुद्धि से सदा स्वस्थ रखने का प्रयत्न करता है। अपने कर्मठ मित्र पर निरन्तर दृष्टि रखकर कुपथ पर जाने से रोकता है। ऐसे सखा को सदा घृतादि युक्त स्वादिष्ट भोजन कराना चाहिए।

अर्थपोषण – मित्रो रवावपि। अमर अथ मित्र सखा सुहत। अमर त्व मित्रो भवसि दस्भ ईऽय।

ऋ० २ १ ४

द्यौष्पित पृथिविमातर धुक्।

ऋ० ६–५१–५

द्यौष्टापित्ता पृथिवी माता।

अथर्व० २ २८ ४

हव्यम् जुहोत हु दाना दनयोरादाने च।
हवि (हव्यम्) जलनामसु।

नि० १ १२

घृतम् घृक्षरणदीप्त्यो, सर्पि, भक्ति रसम्, जलम्।

नि० १ १२

निष्कर्ष – (१) मित्रवत व्यवहार करने वाले – परमात्मा की सदा भक्ति करो सूर्य को सदा उषाकाल मे जिलाजलि दो और मित्र का सदा घृतवाले स्वादु पदार्थों से सत्कार करो।

(२) मित्र को सदा आदर सत्कार प्रदान करे साथ ही उसके गुणो का ग्रहण करके अपना सुधार करे। और उसके दुर्गुणो को सद्भावनापूर्वक बताकर उन्हे दूर करे।

– प० मनोहर विद्यालकार

(२) आदित्य को हवि प्रदान करो और उसके गुणों धारण करो,

महा आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जनो गृणते सुशेव।
तस्मा एतत्पन्यतमाय जुष्टमग्नौ मित्राय हविराजुहोत।।

ऋ० ३ ५१ ५

विश्वामित्र । मित्र । त्रिष्टुप्।

अर्थ – (आदित्य) इस नाम से ज्ञात परमात्मा सूर्य तेजस्वी आदित्य ब्रह्मचारी – प्रत्येक (यातयज्जन) मनुष्यो को दुर्गति से बचाकर सत्कर्म की प्रेरणा देने वाला (गृणते) अपनी स्तुति और सेवन करने वाले को (सुशेव) शुभ सुख देने वाला होने से (महान्) महान अथवा पूजनीय हैं। (तस्मै पन्यतमाय मित्राय) ऐसे व्यवहार कुशल और सबके मित्र आदित्य के लिए (अग्नौ जुष्ट हवि) अग्नि मे परिपक्व भोजन सामग्री प्रदान करो।

परमात्मा को ब्रह्माग्नि मे परिपक्व जप स्तुति ध्यान इत्यादि सूर्य को उषाकाल की जलाजलि और अग्निहोत्र मे प्रदत्त हवि आदित्य ब्रह्मचारी को उसके योग्य सात्विक तथा पौष्टिक भोज्य पदार्थ दिए जाए क्योकि इनमे से प्रत्येक (नमसा उपसद्य) विनयावनत होकर प्राप्तव्य और सेवनीय है।

निष्कर्ष – (१) उषागमन से पूर्व उठकर जपादि ध्यान सूर्य नमस्कार और अग्निहोत्र द्वारा परमात्मा और सूर्य दोनो को हवि दो और परिणामत सुख प्राप्ति होती है।

(२) तत्पश्चात आदित्य सम तेजस्वी ब्रह्मचारी और विद्वानो को सात्विक तथा पौष्टिक भोजन कराकर अपनी जाठराग्नि मे भी सात्विक हव्य की आहुति दे।

स्वामी दयानन्द जी के इस मन्त्र के भावार्थ का मुख्य अश अवधेय है –

'त एव पूज्या आप्ता विद्वासो ये सर्वान् शुभगुणकर्मसु प्रेरयेयुर्यथ र्त्विजोऽग्नौ हविर्हुत्वा सर्वान्मनुष्यादीन्सुखिन कुर्वन्ति।'

उन्हीं विद्वानो को पूज्य और आप्त समझे जो सब को सदा शुभ गुण कर्म की प्रेरणा देते हैं जैसे ऋत्विज अग्निहोत्र मे हवि प्रदान द्वारा सब मनुष्यादि प्राणीमात्र को सुखी करते हैं।

अर्थ पोषण – आदित्य – सूर्य – 'ब्रह्म सूर्य सम ज्योति। यजु परमात्मा।

मा शूने भूम सूर्यस्य सदृशि।
भद्र जीवन्तो जरणामशीमहि। ऋ० १०–३७–६
आदित्य ब्रह्मचारी कृताष्टचत्वारिंशद्वर्ष ब्रह्मचर्येण पूर्व विद्वान्।

ऋ० ६–५१–४ स्वा० दया

(३) हे मानव ! अपनी मति और शक्ति से प्राप्त भोगों में प्रसन्न रहने का प्रयत्न कर

इन्द्र ऋभुमान्वाजवान्मत्सवेह नोऽस्मिन्सवने शच्या, पुरुष्टुत।
इमानि तुभ्य स्वसराणि येमिरे व्रता देवाना मनुषश्च धर्मभि।।

ऋ० ३ ६०-६

विश्वमित्र । इन्द्र । जगती।

अर्थ – हे (इन्द्र) सर्वमित्र तथा ऐश्वर्यशाली बनने के इच्छुक मानव ! (इमानि स्वसराणि) जीवन के ये दिन स्वय सरकते चले जाएगे किन्तु फिर भी (तुभ्यम्) तुझे फल देते समय ये (देवाना व्रता) तेरे द्वारा किए गए यज्ञादि दिव्य शुभकर्मों (च) और (मनुष धर्मभि) मनुष्य के स्वभाव से प्रेरित आचरणो और कर्मों से (येमिरे) प्रतिबन्धित (नियन्त्रित) होते रहते हैं।

अत (शच्या परिष्टुत) अपनी प्रज्ञा वाणी और कर्म की बदौलत प्रतिष्ठित होकर (ऋभुमान् वाजवान्) मेधावी और शक्तिशाली बनकर (अस्मिन सवणे) इस माध्य दिन सवन अर्थात यौवन के कार्यकाल मे (इह) इस जगत् मे रहते हुए (मत्सव) प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत कर और (न) हम प्रजाजनो अथवा सहयोगियो को भी (मनुष धर्मभि) मानव के दया दान न्याय सदाचारादि गुणो से (मत्स्व) आनन्दित कर।

अर्थ पोषण – ऋभुमान – ऋभु मेधाविनामसु। नि० ३–१५ वगवान – वाज – बलनामसु। नि० २–८ शच्या – शची – वाङनाम। नि० १–११ कर्मनाम। नि० २–१ प्रज्ञानाम। नि० ३–८ धर्मा पुण्ययम न्याय स्वभावाचार सोमपा। अमरकोश।

येमिरे – यम उपरमे – प्रतिबन्धित (नियन्त्रित करना) व्रत कर्मनाम। नि० २–१

निष्कर्ष – मनुष्य कर्म करने मे स्वतन्त्र है फिर भी उसके आयुष्य तथा सौभाग्य के दिन अपने ही पूर्वकर्मों से प्राप्त स्वभाव और आचार से नियन्त्रित होकर घटते बढते रहते हैं और वह जान लेता है कि कर्म करने मे वह पूर्ण रूप से स्वतन्त्र नहीं है।

गीता का श्लोक देखिए

अधिष्ठान तथा कर्ता करणचपृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैव चैवात्र पञ्चमम्।।

गीता १८–१४

मानव कर्म की सफलता मे मुख्यत – स्थान या शरीर कर्ता या आत्मा साधन या मन सहित इन्द्रिय पृथक पृथक चेष्टाए तथा दैव (परमात्मा या प्राक्तन कर्मफल रूप मे प्राप्त स्वभाव तथा परिवेश) ५ हेतु हैं। किसी की भी कमी के कारण उसकी सफलता अथवा स्वतन्त्रता बाध्य हो जाती है।

(४) उषागमन पूर्व जागकर प्रसन्नता और पुरुषार्थ द्वारा सफलता प्राप्त करो

अच्छा वो देवीमुषस विभाती प्र वो भरध्व नमसा सुवृक्तिम्।
ऊर्ध्व मधुधा दिवि पाजो अश्रेत्प्ररोचना रुरुचे रण्वसंदृक्।।

ऋ० ३-६१-५

विश्वमित्र । उषा। त्रिष्टुप्।

जारी अगले पृष्ठ पर

और मनोहर उपदेश

अर्थ – (रण्व सदृक्) रमणीय वातावरण तथा पदार्थों का दर्शन कराने वाली (रोचना) उत्साह और आनन्द से भरने वाली (मधुधा) माधुर्य आदि सात्विक गुणो को धारण कराने वाली (योषेव भद्रा) पत्नी के समान कल्याण चाहने वाली उषा (दिवि ऊर्ध्वं पाज अश्रेत्) ऊपर द्युलोक मे आध्यात्मिक तेज और पार्थिव भोगो का आश्रय लेकर (प्ररुरूचे) प्रकृष्ट रूप से दीप्त और प्रीतिकर होती है। ऐसी (विभातीम्) विधि रूपो मे शोभित होने वाली (देवी उषसम) दिव्य रूप धारिणी उषा देवी की (नमसा) विनयपूर्वक अन्नदान से (सुवृक्तिम) उत्तम सुन्दर स्तुति और सेवा तथा सेवन (भर ध्वम्) से भर दो। स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र भाष्य के भावार्थ मे तथा अगले मन्त्र के भावार्थ में बहुत अपूर्व बाते कही हैं। माननीय तथा आचरणीय हैं –

यथा प्रातर्वेला सेवमाना जना उत्कृष्ट बल प्राप्नुवन्ति तथैव हृद्या पतिव्रता भार्यां प्राप्य पुरुष शरीरात्मबलारोग्यानि प्राप्नोति।।

वेद मे कहा है **जायेव यत्ये उशती सुवासा उषा निरिणीते अप्स।**

ऋ० १ १२४ ७

जैसे पत्नी के समान कल्याण चाहने वाली उषा उत्तम पुष्प परिधानो द्वारा अपना स्वरूप प्रकट करती है। स्वामी जी ने उपमा बदलकर लिखा है – जैसे प्रातर्वेला का सेवन करने वाले लोग उत्कृष्ट बल प्राप्त करते हैं वैसे ही चहेती पतिव्रता पत्नी को पाकर मनुष्य शरीर और आत्मा दोनो का बल तथा शरीर और मन दोनो का आरोग्य प्राप्त करता है। (शरीर से रोगी और मन से विकल नहीं होता।

'ये जना रात्रेश्चतुर्थे यामे प्रबुध्येश्वरस्य स्तुतिप्रार्थनोपासना कृत्वा शुभगुणान्याचन्ते ते पुरुषार्थेनावश्यमेव तत्प्राप्नुवन्ति। ऋ० ३ ६१-६

जो लोग ब्रह्ममूहूर्त मे उठकर ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करके शुभगुणो की याचना करते हैं वे पुरुषार्थ द्वारा उन गुणो और पदार्थों को अवश्य प्राप्त करते हैं।

परमेश्वर की स्तुति (उसके गुणों का वर्णन करके) ध्यान द्वारा उसके समीप बैठकर उपासना के द्वारा (उन गुणो को अपने में धारण करने का सकल्प) किया जाता है। तदनन्तर उन्हे धारण करने का प्रयत्न किया जाए तो वे गुण अवश्य प्राप्त होते हैं।

निष्कर्ष – (१) ब्रह्म मुहूर्त मे उठकर परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करे प्रार्थित गुणो व पदार्थों के लिए पुरुषार्थ करे तो वे गुण और पदार्थ अवश्य मिलते हैं।

(२) उषा और पत्नी दोनो ही अपनी परिचर्या (सेवा और सेवन) करने वाले को रमणीय गुण और स्वभाव तथा सन्तान रूपी रत्न अवश्य प्रदान करते हैं। दधाति इत्न विधते जनाय (उषा)। ऋ० ७–७५–६

(३) यदि पति पत्नी दोनों ईश्वर के उपासक हो उषाकाल में जागते हो और परस्पर सहयोग करे तो घर स्वर्ग बन जाता हैं।

अर्थपोषण – नम विनय और नम अन्ननामसु। नि० २–७ पाज अन्नम। पाज बलनामसु। नि० २–८ रोचना रुरुचे – रुच दीप्तौ – अभिप्रीतौ च।

अप्स रुपनाम। नि० ३ ७ योषेव भद्रा निरिणीते अप्स। ऋ० ५ ८० ६

निरिणीते – प्रेरणे व्युत्पादने च। अख्यातानु क्रमीणी

(५) ब्रह्माण्ड के स्वामी की स्तुति उपासना करो और अजेय ओज प्राप्त करो

शुचिमर्कै बृहस्पतिमध्वरेषु नमस्यत।
अनाम्योज आचके।। ऋ० ५ ६२ ५
वृषभ चर्षणीना विश्वरूपमदाभ्यम्।
बृहस्पति वरेण्यम्।। ऋ० ५–६२–६
विश्वामित्र । बृहस्पति । गायत्री।

अर्थ – (अनामि ओज आचके) किसी के सम्मुख न झुकने (परापभूत होने) वाले तेज की कामना करने वाले विश्वमित्र बनने के इच्छुक क्रान्तदर्शी मनुष्यो को वेद आदेश देता हैं –

(चर्षणीना वृषभम्) मनुष्यो को अभिमत फल को देने वाले (विश्वरूपम्) सब कर्मो और वस्तुओ को यथार्थ रूप मे प्रकट करने वाले (अदाभ्यम) किसी से भी तिरस्कृत न किए जाने वाले (वरेण्यम्) सब के द्वारा वरणीय (बृहस्पतिय) ब्रह्माण्ड तथा वेद (ज्ञान) के स्वामी (शुचिम) सर्वथा पवित्र परमात्मा को अथवा अपने समाज के प्रमुख की (अध्वरेषु) हिसा रहित तथा मार्गदर्शन के कार्यो मे (अर्कै) स्तुतियो – सत्कर्तव्यो सत्परामर्शों तथा अन्न से (नमस्यत) सत्कार तथा परिचर्या किया करो।

अर्थपोषण – अर्कै – अर्क अभनामसु। नि० २–७ अर्कस्तवने अर्च पूजायाम। अध्वम ध्वरतिहिसाकर्ता तत्प्रतिषेध यत्र – यज्ञनाम। नि० ३–१७ अध्वान मार्ग राति ददाति दर्शयिति – मार्ग दर्शन यत्र – ।

वृषभम – वृषु सेवने – वर्षकम – दातारम– फलप्रदातारम। अन्नाभि – अ (न) + नभि–नमनशीलम।

निष्कर्ष – विश्वमित्र या अजातशत्रु बनने के लिए वेद ने आदेश दिया है कि – साधक (राजा नेता गुरु प्रमुख) को चाहिए कि (१) वह मानवमात्र की सत्कर्मों परामर्शों मार्गदर्शन तथा अन्न दान द्वारा यथासम्भव परिचर्या करे।

(२) सर्वथा निर्लेथ यर्थाथ फलप्रदाता अतएव वरेण्य और सर्वतोमहान परमात्मा का सत्सग (स्तुति प्रार्थना उपासना) करके उसके गुणो को धारण करे।

(६) जीवन यज्ञ के पुरोधा रुद्र को मृत्यु से पूर्व ही अपना लो, अन्यथा पछताओगे

आ वो राजनमध्वरस्य रुद्र होतार सत्यज रोदस्यो।
अग्नि पुरा तनयित्नोरचित्ता द्धिरण्यरूपवसे कृणुध्वम्।।
ऋ० ४ ३ १

वामदेव । अग्नि (रुद्रोवा)। त्रिष्टुप।

अर्थ – हे साधक मनुष्यो ! आप (व अध्वरस्य राजानम्) अपने जीवनयज्ञ को दीप्त करने वाले (रुद्रम्) वेदोप देष्टा सब रोगो के भिषक दुष्टो को रुलाने वाले (होतारम) सृष्टि के कर्ता और सहर्ता (रोदस्यो सत्ययजम्) द्यावा पृथिवी मे सच्चा सामजस्य स्थापित करने वाले (हिरण्यरूपम्) सर्वहित कर रमणीय स्वरूप वाले महादेव को (तनयित्नो अचित्तात पुणे) कडकडाती विद्युत के समान अकस्मात आकर चेतना को हरने वाली मृत्यु से पूर्व ही (अग्नि कृणुध्वम) (अव से) अपनी रक्षा के लिए अपना मार्गदर्शक नेता बना लो।

अर्थपोषण – रुद्र – भिषजानिषक रुत वेदशब्द रातिददति दष्टानारोदयिता अस्ति तनयित्नो विद्युत ।

(स्वा० दया०)

निष्कर्ष (१) स्वामी दयानन्द ने (अव से) का अर्थ धर्मात्मना क्षणाय दुष्टाना हिसनाय' किया है। इसी मन्त्र भावना के आधार पर श्रीकृष्ण गीता मे कहते हैं –

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम।।

(२) जिसने जीवनभर परमात्मा को याद न किया हो वह अन्त समय मे भी उसे याद नहीं कर सकता इसलिए वेद सब को उपदेश करता है कि – चेतना शून्य बनाने वाली मृत्यु के आने से पूर्व ही देवाधिदेव महादेव को अपना अग्नि – नेता मार्गदर्शक बना लो।

(३) इसलिए वेद मे प्रार्थना की गई है कि –

यत्किचाहत्वायुरिद वदामि तज्जुषस्व कृधि मा देववनाम। ऋ० ६ ४७ ३१

मैं आपका भक्त जो कुछ कहू, आप उसे स्वीकार कीजिए। मैं तो केवल यह चाहता हू कि आप मुझे दिव्यगुण सम्पन्न कर दीजिए। मैं सदा से आपका हू।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम ५२२ कटरा ईश्वर भवन खारी बावली दिल्ली ६

पृष्ठ १ का शेष भाग

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन में ...

तत्पश्चात कार्यक्रम के प्रारम्भ मे नन्हे मुन्ने बच्चो ने रग बिरगी वेशभूषा मे मातृभूमि की वन्दना की। नृत्य द्वारा बच्चो ने अतिथियो का स्वागत किया। सगीत द्वारा शारीरिक व्यायाम योग आसन एव कराटे का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम की समाप्ति देश प्रेम की भावना से ओत प्रोत नृत्य द्वारा की गई।

मुख्य अतिथियो ने अपने सन्देश मे कहा यह विद्यालय शिक्षा के साथ साथ विद्यार्थियो मे अच्छे सस्कार भी दे रहा है। सभी ने कार्यक्रम को सराहा। अन्त मे शान्तिपाठ के साथ विद्यालय का कार्यक्रम समाप्त हुआ। कार्यक्रम के पश्चात सभी के लिए जलपान का आयोजन किया गया।

संविधान की भावनाएं जातिवाद और मतान्तरण की पक्षधर नहीं

– विमल वधावन एडवोकेट

इस वक्त भारत के अन्दर एक ऐसी आधी चल रही है जिसकी सूचना केवल मात्र एक समाचार की भाति बहुतायत देशवासियो को है। परन्तु उसके दूरगामी प्रभाव की ओर बहुत कम लोगो का ध्यान है। उससे भी कम सख्या में ऐसे लोग हैं जो इन समाचारो पर गम्भीर चिन्तन कर रहे होगे या देश मे चल रही इस आधी का समय से इलाज करने के लिए कुछ योजनाए बना रहे होगे। इस आधी का नाम है – धर्मान्तरण।

धर्मान्तरण को साधारणतया परिभाषित करना हो तो यह कहा जा सकता है कि एक मत पथ को छोडकर किसी दूसरे मत या पथ को स्वीकार कर लेना। तकनीकी दृष्टिकोण से इसे धर्मान्तरण कहने के बजाए मतान्तरण कहना चाहिए। मत या पथ से अभिप्राय होता है हिन्दू, मुस्लिम सिक्ख या ईसाई आदि। जबकि धर्म शब्द की परिभाषा एक सर्वमान्य सच्चाई है। सच्चा धार्मिक व्यक्ति वह है जो आत्मा की पवित्रता के साथ ईश्वर की सर्वोच्च सत्ता (अव्यक्त ब्रह्माण्डीय ताकत) को सब से बडा पिता मानकर समूचे प्राणीमात्र को उस पिता की सन्तान समझता हुआ जहा तक सम्भव हो परोपकार के विभिन्न तरीको के द्वारा उनकी सेवा मे लगा रहता है। परन्तु उस सेवा के बदले किसी प्रकार से अपनी सामाजिक या भौतिक ताकत को बढाने का कोई प्रयास नहीं करता। सेवा से सत्ता पर अपना प्रभाव स्थापित करने का मार्ग धार्मिक नहीं अपितु एक षडयन्त्र है।

जब मतान्तरण होता है तो स्वाभाविक है व्यक्ति की परम्पराए और रीति रिवाजो के साथ साथ विश्वास के केन्द्र भी बदल जाते हैं। यह स्वत स्वीकृत तथ्य है कि इस्लामिक और ईसाइयत मतों के विश्वास का केन्द्र भारत की धरती नहीं है। उनके विश्वासों के केन्द्र क्रमश: मक्का और वेटिकन हैं।

मतान्तरण करने के लिए कहीं लोभ लालच तो कहीं दबाव और कहीं कहीं धोखाधडी का सहारा भी लिया जाता है। मतान्तरण करने वाले पथो के नेता इस बात से इन्कार करते हैं। यदि उनका यह कहना है हम लोभ लालच दबाव और धोखे से मतान्तरण नहीं करते तो फिर उन्हें इस प्रकार के हथकण्डोंपर प्रतिबन्ध लगाने पर आपत्ति क्यो है ?

मध्य प्रदेश मे 70 के दशक में कांग्रेस पार्टी की सरकार ने ऐसा ही एक कानून बनाया तो इसाई मिशनरियों ने उसे उच्च न्यायालय में चुनौती दी। वहा उनके पक्ष में निर्णय नहीं हुआ तो वे सर्वोच्च न्यायालय में भी पहुचे। सर्वोच्च न्यायालय की सवैधानिक पीठ ने भी लोभ-लालच और दबाव एव धोखे से धर्मान्तरण को प्रतिबन्धित करने वाले कानूनो को मान्यता प्रदान की। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय मे यह स्पष्ट कहा गया कि सविधान के अनुच्छेद 19 मे धर्मप्रचार करने की स्वतन्त्रता तो दी गई है परन्तु लोभ लालच दबाव और धोखे से किए गए किसी कार्य को धर्म की स्वतन्त्रता की आड मे मान्यता नहीं दी जा सकती।

हाल ही में इसी प्रकार का कानून जयललिता की तमिलनाडु सरकार ने पारित किया तो फिर से यह शोर मचने लगा। हो सकता है इस बार फिर एक कानूनी युद्ध शुरू हो। परन्तु किसी दृष्टिकोण से भी निर्णय सविधान की मान्यताओं के बाहर नहीं हो सकता और सविधान की मान्यताए पहले ही व्यक्त हो चुकी हैं।

विगत ५० वर्षों मे हमने देखा है कि सरकारो के सोचने का तरीका अपनी राजनीतिक महत्वाकाक्षाओ मे मिलने वाली सहायता से निर्धारित होता है। कानून उस गुट विशेष की इच्छाओं की पूर्ति के लिए बनाए जाते हैं जहा से सामूहिक वोटो की कुछ मात्रा मे किया गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने दलित या शूद्र व्यवस्था का पूरा खण्डन किया अस्पृश्यता को दूर करने के लिए उन्होने स्वय कई बार चमार और भगी अनुयायियों के घर पर भोजन भी स्वीकार किया। आर्यसमाज मन्दिरो मे पुरोहितों की नियुक्ति करते समय कभी किसी से उसकी जाति नहीं बल्कि हमेशा गुरुकुल से प्राप्त योग्यता ही पूछी गई। गुरुकुलो मे प्रवेश के समय भी फार्मों मे जातिवादी पूछताछ का कोई स्थान ही नहीं रखा गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के इस दृष्टिकोण को विगत् माह सर्वोच्च न्यायालय द्वारा (एन० आदित्यन बनाम ट्रैवन कोर देवास्वम बोर्ड) मुकदमें में दिए गए निर्णय ने भी पुष्टि प्रदान की है। इस मामले मे एक गैर ब्राह्मण व्यक्ति को केरल के अर्नाकुलम जिले के एक मन्दिर मे शान्तिकरण (पुजारी) रखा गया था। याचिकाकर्ता एन० आदित्यन ने स्वय को ब्राह्मण बताते हुए यह कहा कि एक गैर ब्राह्मण के हाथों मन्दिर में पूजा से उसका धर्म भ्रष्ट हो रहा है।

सर्वोच्च न्यायालय ने याचिकाकर्ता की सभी दलीलो को रद्द करते हुए कहा है कि गीता के उपदेश भी जाति व्यवस्था को जन्म पर आधारित नहीं मानते और सामाजिक भेदभाव समाप्त करने के पक्षधर हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने सविधान के अनुच्छेद २५ का हवाला देते हुए भी यह स्पष्ट कहा कि भेदभाव पूरक कोई व्यवस्था इस देश में नहीं चल सकती। मन्दिरों में दलितों के प्रवेश को तो सविधान के अनुच्छेद २५ में पहले ही स्वीकार किया जा चुका है।

धर्मान्तरण को साधारणतया परिभाषित करना हो तो यह कहा जा सकता है कि एक मत-पथ को छोडकर किसी दूसरे मत या पंथ को स्वीकार कर लेना। तकनीकी दृष्टिकोण से इसे धर्मान्तरण कहने के बजाए मतान्तरण कहना चाहिए। मत या पथ से अभिप्राय होता है हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख या ईसाई आदि। जबकि धर्म शब्द की परिभाषा एक सर्वमान्य सच्चाई है। सच्चा धार्मिक व्यक्ति वह है जो आत्मा की पवित्रता के साथ ईश्वर की सर्वोच्च सत्ता (अव्यक्त ब्रह्माण्डीय ताकत) को सब से बडा पिता मानकर समूचे प्राणीमात्र को उस पिता की सन्तान समझता हुआ जहा तक सम्भव हो परोपकार के विभिन्न तरीकों के द्वारा उनकी सेवा में लगा रहता है। परन्तु उस सेवा के बदले किसी प्रकार से अपनी सामाजिक या भौतिक ताकत को बढाने का कोई प्रयास नहीं करता। सेवा से सत्ता पर अपना प्रभाव स्थापित करने का मार्ग धार्मिक नहीं अपितु एक षडयन्त्र है।

समानता नजर आ रही हो। राजनीतिक सोच और व्यवहार पर इतने आसू बहाए जा चुके हैं कि शायद उन आखो का पानी ही सूख गया होगा। यह सोच सदैव निन्दा का पात्र रही है और रहेगी।

कानून के प्रावधानों से मतान्तरण रूपी अव्यवस्था और सख्या खेल पर नियन्त्रण करना केवल एक मार्ग है। परन्तु जबकि दूसरा प्रभावशाली मार्ग जिसकी तरफ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी सारे भारतवासियों का ध्यान आकृष्ट किया था वह है सामाजिक एकता और सुदृढता का मार्ग। दलितों गरीबों महिलाओ और अन्य असहाय वर्ग के लोगो के लिए परोपकारी दृष्टि का विकास होना चाहिए। शहरो मे शायद यह जातिगत भेदभाव कुछ कम हो गया हो परन्तु सुदूर क्षेत्रों में अब भी यह भेदभाव देखने को मिलता है जिसके कारण इन वर्गों पर दूसरे पथो के लोगों का प्रभाव चल जाता है। जब मतान्तरण हो जाता है तो बाद में हिन्दूवादी सस्थाए चिन्तित होती हैं।

आर्यसमाज की स्थापना केवल मात्र एक सुधारवादी आन्दोलन के रूप में की गई थी जिसका धर्म के नाम पर वेद के सदा सत्य रहने वाले वैज्ञानिक सिद्धान्तों में विश्वास है और राष्ट्र के नाम पर ईमानदारी और चरित्र निर्माण की प्रेरणाओं का प्रचार प्रसार विगत् लगभग १२८ वर्षों में पर्याप्त समानता ...

अब भी यदि मताध हिन्दुओ की आखे नहीं खुली और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बावजूद भी यदि वे इस भेदभाव को समाप्त करने का सकल्प नहीं करते तो उन्हें भी देशभक्त नागारिकों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकेगा ठीक उसी प्रकार जैसे उन मुसलमानो और ईसाइयो के साथ साथ उन राजनीतिज्ञों को भी हमने लेख के प्रथम भाग में निन्दा का पात्र बनाया है जो सविधान की भावनाओं तथा सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशानुसार लोभ-लालच दबाव और धोखे से चल रहे मतान्तरण अभियान के पक्षधर हैं।

देश में जहा कहीं भी इस प्रकार का जातिगत भेदभाव सामने आए उसकी सूचना हमे vedicgod@nda.vsnl.net.in पर ई-मेल द्वारा दें। राष्ट्रवादी देशवासियों से यह अपेक्षित है कि वे भेद भाव रहित समाज की स्थापना में हमारा सहयोग अवश्य करेंगे।

– वरिष्ठ उप-प्रधान,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज निर्माण विहार, दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज निर्माण विहार दिल्ली का ३८वा वार्षिक उत्सव सोमवार दिनाक १८ नवम्बर २००२ से २४ नवम्बर २००२ तक उत्साहपूर्वक मनाया जाएगा। प्रात ७०० बजे से ६ ३० बजे तक प्रतिदिन यज्ञ तथा उपदेश और रात्रि ७ ३० बजे से ९ ३० बजे तक भजन एव वेद कथा पूज्यवाद स्वामी सत्यानन्द जी द्वारा एव भजन आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ओमप्रकाश वर्मा द्वारा होगे। यज्ञ की पूर्णाहुति २४ नवम्बर रविवार को प्रात होगी। इसके पश्चात आर्य सम्मेलन ११०० से १०० तक होगा जिसकी अध्यक्षता वैद्य इन्द्रदेव महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा करेगे तथा मुख्य अतिथि सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी आर्य तथा विशिष्ट अतिथि सर्वश्री विमल वधावन जी उपप्रधान सार्वदेशिक सभा तथा श्री वेदव्रत शर्मा जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव मन्त्री सार्वदेशिक सभा भी सम्मिलित होगे। श्री नसीब सिह जी विधायक तथा श्री रमेश पण्डित निगम पार्षद भी मुख्य वक्ता के रूप मे आमन्त्रित है। सभी आर्य जनता से अनुरोध है कि वे सम्पूर्ण कार्यक्रम मे भाग लेकर धर्मलाभ उठाए तथा आर्य समाज निर्माण विहार के कार्यकर्त्ताओ का उत्साह बढाए।

आर्यसमाज बी० ब्लॉक जनकपुरी द्वारा वेदप्रचार समारोह

आर्यसमाज बी ब्लॉक जनकपुरी ५८ द्वारा २० नवम्बर से २४ नवम्बर २००२ तक वेदप्रचार समारोह का भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य श्री हरिप्रसाद जी आचार्य के ब्रह्मत्व मे ब्रह्मपारायण महायज्ञ एव वेदोपदेशक का आयोजन किया गया है। श्रीमती सुदेश जी आर्या के भजनोपदेश तथा डॉ० शिवकुमार शास्त्री डॉ० सोमदेव जी शास्त्री के प्रवचनो से लाभान्वित होने का अवसर है।

इस अवसर पर महिला सत्सग आर्य वीर सम्मेलन सहित अनेक अन्य कार्यक्रम सम्पन्न होगे। २४ नवम्बर को समापन समारोह की अध्यक्षता डा० सुन्दरलाल जी कथूरिया करेगे तथा श्री विमल वधावन वरिष्ठ उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित रहेगे। अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाए।

आर्यसमाज टैगोर गार्डन नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मन्दिर ए सी ब्लॉक टैगोर गार्डन नई दिल्ली का ३६वा वार्षिकोत्सव १८ से २४ नवम्बर २००२ तक मन्दिर प्रागण मे समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर शोभायात्रा ऋग्वेदीय वृहद यज्ञ राष्ट्रनिर्माण सम्मेलन मनोहर भक्ति सगीत वेद कथा आर्य महिला सम्मेलन गोष्ठी तथा चित्र प्रदर्शनी सहित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

इस अवसर पर श्री हीरालाल चावला श्री वेदव्रत शर्मा श्री विमल वधावन सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं।

आर्यसमाज रोहतास नगर, शाहदरा दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज रोहतास नगर शिवाजी पार्क शाहदरा दिल्ली–३२ का १८वा वार्षिकोत्सव १८ से २४ नवम्बर २००२ तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर शोभायात्रा आचार्य प्रकाशचन्द्र जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद पारायण महायज्ञ भाषण प्रतियोगिता आर्य महिला सम्मेलन सहित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर पर आचार्य सुखदेव आर्य तपस्वी के प्रवचन तथा श्री रामदास आर्य के भजन सुनने को मिलेंगे।

आर्यसमाज सरिता विहार का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सरिता विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव २५ नवम्बर से १ दिसम्बर २००२ तक समारोहपूर्वक आयोजित किया गया है। इस अवसर पर आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व मे विशेष यज्ञ सम्पन्न होगा तथा श्री दिनेश दत्त एव श्री श्यामवीर राघव के मनोहर भजन सुनने को मिलेगे।

आर्यसमाज बिडला लाइन्स, कमलानगर, दिल्ली का ६७वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमला नगर दिल्ली–७ का ६७वा वार्षिकोत्सव शुक्रवार २२ नवम्बर २००२ से रविवार २४ नवम्बर २००२ तक आयोजित किया गया है। इस अवसर पर होने वाले विशेष यज्ञ के ब्रह्मा श्री प० कुवरपाल शास्त्री होगे तथा वेदकथा श्री आचार्य छविकृष्ण शास्त्री द्वारा तथा भजन प० जीवनसिह आर्य के सम्पन्न होगे।

हिन्दी का सम्मान राष्ट्र का सम्मान

ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति के लिए सात्त्विक तप आवश्यक है

आर्यसमाज बी–ब्लाक जनकपुरी मे प्रवचन करते हुए वैदिक विद्वान आचार्य हरिप्रसाद आर्य ने कहा कि वह ईश्वर वर्चस्वी है और हम उससे प्रार्थना करते हैं कि वह हमे भी वर्चस्वी बनाए। यदि हम ब्रह्मवर्चस को प्राप्त करना चाहते हैं ब्रह्म का साक्षात्कार करना चाहते हैं तो हमे उसकी कीमत चुकानी पडेगी क्योकि किसी भी वस्तु को प्राप्त करने के लिए उसकी कीमत चुकानी आवश्यक है और जो वस्तु जितनी बडी अथवा महत्त्वपूर्ण होगी उसका मूल्य भी उतना ही अधिक होगा। हम परमात्मा को पाना चाहते हैं जो श्रेष्ठतम परम पवित्र और सर्वोत्तम है पर उसकी प्राप्ति के लिए कोई तैयारी नहीं करते। हम देखते हैं कि आज ईश्वर को सस्ते दामो मे बेचा जा रहा है पर वह इतनी आसानी से मिलने वाला नही। उसे पाने के लिए यज्ञ अध्ययन दान तप सत्य धृति और क्षमा की सीढिया पार करनी होगी। यज्ञ अध्ययन और दान दिखावे के लिए किए जा सकते है किन्तु सात्त्विक तप जो अत्यधिक श्रद्धा के साथ किया जाता है आडम्बररहित होता है। ब्रह्मवर्चस एव परमात्मा की प्राप्ति हेतु सात्त्विक तप की परम आवश्यकता है। द्वन्द्वो को सहन करना ही तप है। मन वाणी और शरीर से परम श्रद्धा के साथ किया जाने वाला तप सात्त्विक है एव अध्यात्म मार्ग के पथिक के लिए यह नितान्त आवश्यक है।

प्रधान पद से बोलते हुए प्रो० सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि शास्त्रकारो ने सत्य को सबसे बडा तप कहा है तथा ब्रह्मचर्य एव तप से मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की बात भी कही है। विद्वान वक्ता का धन्यवाद करते हुए उन्होने यह कामना की कि हम सब तपस्वी बने। कार्यक्रम के प्रारम्भ मे श्रीमती उज्ज्वला वर्मा के सुमधुर भजनो ने श्रोताओ का मन मोह लिया। कार्यक्रम का सयोजन आर्यसमाज के मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी ने किया।

आर्यसमाज मन्दिर सरस्वती विहार दिल्ली का वेदप्रचार समारोह

आर्यसमाज मन्दिर सरस्वती विहार दिल्ली में २५ नवम्बर से १ दिसम्बर २००२ तक वेदप्रचार समारोह का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आचार्य राजू वैज्ञानिक द्वारा वेद प्रवचन एव श्री भगतराम एव श्रीमती रेखा शर्मा के मधुर भजन होगे। यह कार्यक्रम प्रतिदिन रात्रि ७४५ से ९३० तक आयोजित किया जाएगा।

आर्यसमाज डिफेंस कॉलोनी नई दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्ता विंग कमांडर राजेन्द्र पाल का देहान्त

विंग कमांडर राजेन्द्र पाल का सोमवार ४ नवम्बर २००२ को अकस्मात निधन हो गया। श्री राजेन्द्र पाल दिल्ली से बाहर जहा भी कार्यरत रहे वह आर्य समाज की तन मन धन से सेवा करते रहे और अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सरला पाल जो इस समय भी स्त्री आर्यसमाज डिफेन्स कालोनी की प्रधाना है वह भी दिल्ली से बाहर जहा भी रही स्त्री आर्यसमाज की कर्मठ कार्यकर्त्री रही और तन मन धन से वह भी स्वर्गीय श्री राजेन्द्र पाल के साथ आर्य समाज की सेवा करती रही। उनके निधन से एक दिन पूर्व रविवार ३ नवम्बर २००२ को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाज दिल्ली की १२५वी स्थापना के समारोह के अवसर पर उन्हे गौरवशाली इतिहास की स्मृति मे एक प्रतीक चिन्ह भेट किया गया क्योकि वह ८५ वर्ष आयु के हो गए थे।

आर्यसमाज ग्रीन पार्क मे वृहस्पतिवार ७ नवम्बर २००२ को श्रद्धाजलि सभा हुई जिसमें कर्नल दीवान इन्द्रसेन साहनी पूर्व प्रधान आर्य समाज डिफेन्स कालोनी वर्तमान प्रधान ब्रिगेडियर धवन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष तथा दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली की ओर से श्रीमती शकुन्तला आर्या ने श्रद्धाजलि अर्पित की।

महाशय कल्याण दास आर्य नहीं रहे

बडे दुख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज ब्रह्मपुरी के सरक्षक महाशय कल्याण दास जी आर्य का दिनाक १४ सितम्बर २००२ को प्रात ८ बजे आकस्मिक निधन हो गया। वे गत कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका पूरा जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित रहा। आर्यसमाज ब्रह्मपुरी की स्थापना के समय उनके द्वारा ही यज्ञशाला का निर्माण किया गया। परम पिता परमात्मा दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे और शोक सतप्त परिवार एव सम्बन्धियों को इस अपूर्णनीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

आर्यसमाज यमुना विहार, दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज यमुना विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव २५ नवम्बर से १ दिसम्बर २००२ तक समारोहपूर्वक आयोजित किया गया है। इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। वेद कथा डॉ० अन्नपूर्णा जी एव मधुर भजन श्री नरदेव आर्य द्वारा होगे। आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक तथा नेतागण पधार रहे हैं।

R N No 32387/77 Posted at N D.P S O on 21 22/11/2002 दिनांक १८ नवम्बर से २४ नवम्बर २००२ Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/2002
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 21 22/11/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू० (सी०) १३६/२००२

कर्मवीर जयानन्द भारतीय का जयन्ती समारोह सम्पन्न

आचलिक गढवाल आर्यसमाज दिल्ली के तत्वावधान मे बृहस्पतिवार दिनाक १७ अक्तूबर २००२ को प्रात ८.३० बजे से १ बजे तक गढवाल के जाज्वल्यमान नक्षत्र वैदिक धर्मावलम्बी स्वतन्त्रता सेनानी महान् क्रान्तिकारी देशभक्त समाज सुधारक कर्मवीर जयानन्द भारतीय की १२१वीं जयन्ती श्री मोहनलाल जिज्ञासु के निवास स्थान यमुना विहार दिल्ली मे मनाई गयी। सर्वप्रथम यज्ञ किया गया जिसमें श्री जिज्ञासु यज्ञमान बने। यज्ञोपरान्त एक लघु समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री जिज्ञासु, समाज प्रधान धर्मसिह शास्त्री अमरदत्त आर्य एव हीरासिह वक्ता थे। वक्ताओ ने कहा कि जिस प्रकार स्व० भारतीय ने गढवाल मे सामाजिक कुरीतियो धार्मिक आडम्बरो एव अन्धविश्वासो जैसी विषमताओ का सामना किया तथा आर्यसमाज के सार्वभौमिक आन्दोलन को आगे बढाया वह सदैव प्रेरणादायक एव चिरस्मरणीय रहेगा।

इसके उपरान्त साय ४ ३० बजे उत्तराखण्ड दिवगत विभूति विचार मच के तत्वावधान मे कर्मवीर जयानन्द भारतीय की जयन्ती समारोहपूर्ण गढवाल भवन पचकुइया रोड नई दिल्ली मे मनाई गई जिसकी अध्यक्षता श्री कुलानन्द भारतीय ने की। श्री हरीश रावत अध्यक्ष उत्तराचल काग्रेस समारोह के मुख्य अतिथि थे। आचलिक गढवाल आर्यसमाज दिल्ली के कार्यकर्त्ताओ एव सभासदो ने इसमे भाग लेकर मच का साथ दिया। श्री धर्मसिह शास्त्री समाज प्रधान ने समारोह मे 'जयानन्द गौरव गान कविता पढकर सुनायी एव स्व० भारतीय जी की सघर्षमय एव एक प्रखर वैदिक क्रान्तिवीर के रूप मे उनके अनेकानेक सामाजिक धार्मिक राजनैतिक कार्यों का वर्णन किया।

– हीरासिह, समाज मन्त्री,

आर्यसमाज करौल बा

आवश्यकता है

पुरोहित पद के आवेदन आमन्त्रित हैं। पद के लिए योग्यताए

१ कर्मकाण्ड में कुशलता (वैदिक रीतिनुसार)
२ सस्कृत भाषा, वेदपाठ एव प्रवचन में उच्चकोटि की योग्यता।
३ प्रचारक के नाते कार्य करने का दृष्टिकोण।
४ सस्कृत विश्वविद्यालय अथवा गुरुकुल से शिक्षित नव स्नातक भी स्वीकार्य
५ आयु अधिकतम ३५ वर्ष।

कृपया प्रकाशन तिथि के सात दिन के अन्दर आवेदन निम्न पते पर भेजें। – मन्त्री,

आर्यसमाज करोलबाग,
आर्यसमाज रोड नई दिल्ली 110005
दूरभाष 5727458

...कुमार ...वसान

आर्य पुरोहित के प्रधान प० अमरदेव जी शास्त्री एव उपप्रधान श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि आर्यजगत् के सुयोग्य धर्माचार्य एव ओजस्वी वैदिक प्रवक्ता प० रामकुमार जी आर्य का २७ अक्तूबर २००२ को असामयिक निधन हो गया। उनके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। उनकी स्मृति में आर्यसमाज मन्दिर ई–३६ ए मानसरोवर गार्डन नई दिल्ली मे ३० अक्तूबर २००२ को दोपहर ३ बजे से ४ बजे तक श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमे उनको अश्रुपूरित श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

– अमरदेव शास्त्री

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित।

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वर्ष २६ अक ८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९१०३ विक्रमी सम्वत २०५९ दयानन्दाब्द १७६ सोमवार, २३ दिसम्बर से २९ दिसम्बर २००२ तक
मूल्य एक प्रति २ रुपये वार्षिक ७५ रुपये आजीवन ५०० रुपये विदेशो मे ५० पौण्ड १०० डालर टेलीफैक्स (०११) ३३६०१५०

स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन केवल देश और धर्म के लिए था

स्वामी श्रद्धानन्द जी के ७६वे बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे देश भर से अनेको आयोजनो के समाचार हैं। विगत वर्ष की भाति स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रमुख कर्मस्थली हरिद्वार मे बलिदान दिवस शोभायात्रा बडे हर्ष और उल्लास के साथ निकाली गई। इस यात्रा का नेतृत्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कै० देवरत्न आर्य ने किया। इस शोभा यात्रा मे समस्त उत्तराचल के विभिन्न हिस्सो से तथा उ०प्र दिल्ली हरियाणा और ॥। के आर्यजना ने भाग लिया। प्रान्तीय आय समाजो वानप्रस्थाश्रम तथा आर्य महा विद्यालय ज्वालापुर से विशेष उत्साह के साथ आर्य जन झाकियो के रूप मे सम्मिलित हुए। इस शोभा यात्रा मे एव कुलपति श्री स्वतत्र कुमार जी के आदेशानुसार विश्वविद्यालय के समस्त विभागो एव अन्य सम्बद्ध सस्थाओ ने अपनी अपनी झाकिया तैयार करके शोभा यात्रा मे सम्मिलित की। लगमग ५ किलोमीटर लम्बी इस शोभा यात्रा ने समूचे शहर का वातावरण श्रद्धानन्दमय कर दिया। कुलपति श्री स्वतत्र कुमार एव नव नियुक्त कुलाधिपति श्री सुदर्शन शर्मा एव विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री वेदव्रत शर्मा जी के प्रयासो से इस वर्ष ७ दिन की खेल प्रतियोगिताए भी आयोजित्त की गई। २३ दिसम्बर को प्रात काल यज्ञ और शोभायात्रा के बाद विश्वविद्यालय के क्रीडास्थल पर खेल के आयोजनो का उद्घाटन किया गया। अपराह्न अखिल भारतीय श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामेण्ट के उद्घाटन समारोह में पद्मश्री के०पी०एस०गिल को मुख्य अतिथि के रूप मे पधारना था लेकिन उनके आगमन का कार्यक्रम निरस्त होने पर उत्तराचल के पुलिस महानिदेशक पी० डी० रतूडी को मुख्य अतिथि बनाया गया। उद्घाटन समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे पुलिस महानिदेशक पी०डी० रतूडी ने कहा

कि खेलो को खेल की भावना से ही खेला जाना चाहिए। उन्होने कहा गुरुकुल के हाकी मैदान पर ध्यानचन्द्र जैसे खिलाडियो का आना इसके गौरवमयी इतिहास को प्रदर्शित करता है। डी०जी०पी० श्री रतूडी ने गुरुकुल के हाकी मैदान को एस्ट्री टर्फ का रूप देने की घोषणा की। डी०जी०पी० श्री रतूडी ने कहा उनका ध्येय उम्मीद अपेक्षा व आकाक्षा यही रहेगी कि यहा से एक खिलाडी भारतीय हाकी टीम मे पहुचे। उन्होने कहा उन्हे उम्मीद है कि खिलाडी राजनीति को बीच मे न लाते हुए आगे बढेगे। उद्घाटन समारोह मे उत्तराचल हाकी फेडरेशन के सचिव व इडियन ओलम्पिक उत्तराचल के अध्यक्ष राजीव मेहता भारतीय हाकी फेडरेशन के कोषाध्यक्ष जे० एन० त्यागी गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पडित सुदर्शन शर्मा कुलपति प्रो० स्वतत्र कुमार उपकुलपति आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री. कुलसचिव डॉ० महावीर अग्रवाल गुरुकुल फार्मेसी के महाप्रबधक डॉ० राजकुमार रावत डॉ० श्रवण शर्मा देवेन्द्र शर्मा सहायक मुख्याधिष्ठाता महेन्द्र कुमार पूर्व सहायक मुख्याधिष्ठाता दीनानाथ शर्मा

प्राध्यापक कमलकात बुधकर काग्रेस नेता पारस कमार जैन हरियाणा आर्य सभा के उपमत्री रोशनलाल आर्य समेत अनक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। समारोह मे कुलाधिपति पडित शर्मा ने टूर्नामेट के लिए ५१ हजार रुपये का चेक भी दिया। सचालन सयुक्त रूप से अध्यक्ष डा० कश्मीर सिह सचिव करतार सिह व जनसम्पर्क अधिकारी डॉ० प्रदीप जोशी ने किया। समारोह मे विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से अतिथियो का शाल ओढाकर व स्मृति चिह्न प्रदान कर अभिनन्दन किया गया। उद्घाटन समारोह के पश्चात फिरोजपुर पजाब व उत्तर प्रदेश पुलिस के बीच पहला हाकी मैच शुरू हुआ। उधर बलिदान पर्व के एक कार्यक्रम मे कुलाधिपति पडित सुदर्शन शर्मा ने कहा विश्वविद्यालय को ऊचाइयो पर ले जाकर विश्व मे इसका नाम करना तथा समाज को श्रेष्ठ बनाने कृण्वन्तोविश्वमार्यम के उद्देश्य की पूर्ति करना ही स्वामी श्रद्धानन्द को हमारी सच्ची श्रद्धाजलि होगी। उन्होने कहा गत वर्षो मे कुछ गडबडिया विश्वविद्यालय मे हो गई थी उन्हे सुधारना हमारा पहला काम है।

पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के रजिस्ट्रार देवेन्द्र शर्मा ने कहा गुरुकुल आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए था यह कार्य इसी स्थान से पुन जोर शोर से हा ऐसा हमे हर सभव प्रयास करना चाहिए।

कार्यक्रम को मुख्य अतिथि कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अध्यक्ष एव कुलपति प्रो० स्वतत्र कुमार व प्रो० वेद प्रकाश शास्त्री ने भी सम्बोधित किया।

कै० देवरत्न आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति था। उन्होन अपना समूचा जीवन देश की सेवा मे समर्पित किया। इसलिए उनके जीवन से हमे यही प्रेरणा लेनी चाहिए कि इस प्रकार हम देश और समाज की सेवा कर सकते है।

इससे पूर्व प्रात प्रभातफेरी फिर यज्ञ तथा कुलाधिपति द्वारा ध्वजारोहण किया गया तथा एक शोभायात्रा निकाली गई जोकि गुरुकुल से श्रद्धानन्द चौक शकर आश्रम चद्राचार्य चौक तथा नए पुल से होती हुई सभास्थल गुरुकुल मे पहुची। कार्यक्रम का सचालन कुलसचिव डा० महावीर अग्रवाल तथा सहायक मुख्याधिष्ठाता महेन्द्र कुमार ने किया। आर्य समाज कटारपुर अन्य आर्य समाज आर्य कन्या महाविद्यालय देहरादून तथा समस्त प्राध्यापक कर्मचारीगणो ने भाग लिया। वहीं डॉ० हरिराम आर्य इटर कालेज के एन०सी०सी० के सभी कैडेटस तथा विद्यालय का समस्त परिवार गुरुकुल कागडी से आरमभ होने वाली शोभा यात्रा मे सम्मिलित हुआ वहीं स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान पर्व पर जिला काग्रेस कमेटी ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से आरम्भ शोभायात्रा का काग्रेस जिला महामत्री सुमनपाल सिह के कार्यालय पर काग्रेस जिला महामत्री हरेन्द्र सैनी व सुमनपाल सिह के नेतृत्व मे स्वागत किया गया।

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय पर डाक टिकट जारी

विस्तृत सूचना अगले अक मे

स्वामी श्रद्धानन्द जी के ७६वे बलिदान दिवस एव उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के १०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक भव्य डाक टिकट का लोकार्पण २४ दिसम्बर २००२ को प्रधानमन्त्री निवास पर आयोजित एक समारोह मे किया। इस समारोह का सचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री विमल वधावन ने किया।

प्रधानमन्त्री निवास पर आयोजित इस समारोह की सचित्र रिपोर्ट अगले अक में प्रकाशित की जाएगी।

मानवता के सच्चे गुरु महर्षि दयानन्द, जिन्होंने मानव-कल्याण के लिए अपना जीवन अर्पित कर सच्ची गुरु दक्षिणा दी।

– नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

महर्षि दयानन्द मे सच्ची दया कूट कर भरी थी। उन दिनो युवक मूलशकर ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य किसी अच्छी गुरु की खोज मे देशाटन कर रहे थे। उन्होने देखा कि कुछ लोग गाजे बाजे के साथ जा रहे थे। पीछे एक रोती बिलखती औरत जा रही थी। शुद्ध चैतन्य ने पूछा – 'मॉ ! क्या बात है ? औरत ने कहा – मैं एक अभागी विधवा हू। ये लोग मेरे इकलोते बेटे को देवी की बलि बना रहे हैं। शुद्ध चैतन्य दुखी मा के साथ मन्दिर पहुचे। वहा देवी की मूर्ति के सामने एक छोटा सा बच्चा लिटाया हुआ था। मन्दिर मे जाकर शुद्ध चैतन्य ने कहा – 'इस बच्चे और विधवा मा पर क्यो अत्याचार करते हो ? वे ढोंगी बोले – हमे तो देवी का बलिदान करना है बच्चा बचाना चाहते हो तो खुद की बलि दे दो।

एक क्षण का सकोच किए बिना ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य ने बलि स्थान पर अपनी गर्दन रख दी। सब ढोगी हर्ष से चिल्ला उठे। वे आगे कुछ करते उससे पहले ब्रिटिश कम्पनी के कुछ सिपाही वहा आ गए। सारा दृश्य देखकर उन्होने ढोगियो को ललकारा जिस पर वे अपनी पूजा–सामग्री और हथयार छोड कर भगाए। बच्चे की मा ने ब्रह्मचारी के पैरो मे सिर नवा दिया और उनकी दया के लिए कृतज्ञता प्रकट की।

अपनी शिक्षा पूरी होने पर आर्य मर्यादा के अनुसार स्वामी दयानन्द जी ने कुछ लौंग लेकर उन्हे आदर के साथ गुरु–चरणो मे भेट किया। विदाई की बात सुनकर शिष्य के सिर पर आशीर्वाद का हाथ–फेर गुरु विरजानन्द बोले – 'वत्स मैं तुम्हारी मगल–कामना करता हू। ईश्वर तुम्हारी शिक्षा सफल करे। मुझे गुरु दक्षिणा मे लोगो से भिन्न दूसरी वस्तु चाहिए। वह वस्तु तुम्हारे पास है दोगे ?

शिष्य दयानन्द का उत्तर था – 'गुरु जी यह शिष्य तन–मन–सर्वस्व अपनी भेट करता है। आपकी जो भी आज्ञा होगी मै उसे जीवन भर शिरोधार्य करूगा।

गुरु विरजानन्द बोले – 'इस भारतभूमि मे दीन–हीन जन अनेक दुख पा रहे हैं जाओ उनका उद्धार करो। मत–मतान्तरो की कुरीतिया दूर करो। आर्य जनता की बिगडी दशा सुधारो। प्रिय शिष्य मुझे गुरुदक्षिणा मे यही चाहिए। मुझे किसी सासारिक वस्तु की कामना नहीं है।

शिष्य स्वामी दयानन्द ने कहा – मैं आपकी आज्ञा का प्राणपन से पालन करूगा। गुरुजी बोले – 'बहुत अच्छा दयानन्द जी जाइए ईश्वर आपको सफल करे। आपका मनोरथ पूरा हो।

मै मानव को बधवाने नहीं छुडवाने आया हूं

अनूपशहर का प्रसग है। एक दिन एक ब्राह्मण ने विनय पूर्वक नमस्ते कर स्वामी दयानन्द को एक पान भेट किया। महाराज ने सहज स्वाभाव से पान मुख मे रखा। उसका रस लेते ही समझ गए कि पान मे विष है। उन्होने उस नराधम से कुछ नहीं कहा। गगा पर न्यौली करने गए। देर तक सब किया। स्वामी जी का विष देने की बात तहसीलदार को मालूम हुई तो उसने अपराधी को पकड कर बन्दी गृह मे डाल दिया और स्वामी जी के दर्शन करने गया। उसे प्रसन्नता थी कि उसने स्वामी जी के शत्रु को दण्ड देकर बदला लिया है। तहसीलदार के सामने आते ही स्वामी जी ने दृष्टि हटा ली।

तहसीदलार ने स्वामी जी से उनकी अप्रसन्नता का कारण पूछा। स्वामी जी ने कहा – मैंने सुना है कि आपने मेरे लिए एक आदमी को पकड लिया किन्तु मैं उसे छुडवाने आया हू। यदि दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोडते तो क्यो हम अपनी मानवता का परित्याग कर दे।

तहसीलदार स्वामी जी के शब्द सुनकर रोमाच से भर उठा। उन्होने क्षमा के एक ऐसे धनी मानव को कभी न देखा था।

ब्रह्मचार्य की महिमा

अगस्त १८७७ मे स्वामी दयानन्द जी सरस्वती अमृतसर होते हुए जालन्धर पधारे। सरदार सुचेत सिह की कोठी पर निवास किया। यहा स्वामी जी के ३५ व्याख्यान हुए। एक दिन सरदार विक्रमसिह ने स्वामी जी से कहा – आप ब्रह्मचर्य की महिमा का बहुत वर्णन करते हैं। हम कैसे समझे कि ब्रह्मचारी मे अतुल शक्ति होती है ? उस समय स्वामी जी शान्त रहे।

एक दिन सरदार विक्रमसिह दो घोडो की गाडी पर सवार हुए। महाराज ने चुपके से गाडी का पिछला पहिया पकड लिया। कोचवान ने गाडी चलानी चाही। घोडो को खूब चाबुक लगाए पर गाडी आगे नहीं बढी।

सरदार विक्रमसिह ने पीछे की ओर देखा तो स्वामी जी महाराज गाडी का पहिया पकडे हुए खडे थे और मुस्करा रहे थे। सरदार विक्रमसिह ने ब्रह्मचर्य के बल का प्रत्यक्ष प्रमाण पाया और स्वामी जी महाराज के प्रति श्रद्धान्वित होकर उनके चरण स्पर्श कर लिए।

आर्यसमाज न्यू मुल्तान नगर में महर्षि दयानन्द बलिदान दिन का आयोजन

दिनाक ३–११–२००२ रविवार को आर्यसमाज मे यज्ञ के उपरान्त ऋषि बलिदान समारोह का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्रीमती कमलेश सब्रवाल जी ने ईश्वर भक्ति का भजन प्रस्तुत किया। आर्यसमाज के प्रधान श्री बलदेव राज सेठ जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि – स्वामी जी ही स्वराज्य के सर्वप्रथम उद्घोषक थे। उसके बाद भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमे श्रीमती कान्ता तलवार जी ने प्रथम तथा श्री रोशन लाल गुप्ता जी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। श्री ज्ञानेन्द्र जी ने भी इस प्रतियोगिता मे स्वामी जी के जीवन पर बहुत ही अच्छे विचार प्रस्तुत किए। विजय प्रतिभागियो को श्री बलदेवराज सेठ जी की ओर से एक एक छडी भेट की गई। श्री कृष्ण लाल सेठ जी श्रीमती अनुपमा शर्मा जी श्रीमती सुषमा बूटी जी और श्रीमती उषा सेठ जी प्रतियोगिता के निर्णायक थे। तत्पश्चात् आर्यसमाज के पुरोहित प० धर्म प्रकाश शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा कि – स्वामी जी का निर्वाण हमे ईश्वर पर अटल विश्वास की शिक्षा प्रदान करता हैं। मन्त्री श्री महेन्द्र कुमार बूटी जी ने मच सचालन तथा सबका धन्यवाद किया। बाद मे श्री हरीश मदान जी की ओर से ऋषि लगर का आयोजन किया।

बोध कथा

सच्चा ज्ञान ही व्यक्ति का धन

सकरी पगडण्डी पर एक राजा और एक फकीर टकराए। सकरा रास्ता था जब एक झुकता तभी दूसरे को रास्ता मिलता। राजा बोला हटकर मुझे रास्ता दो क्योकि मैं राजा हू। फकीर बोला – मैं मन का राजा हू, तू तन राजा है। इस पर राजा बोला – यदि तुम राजा हो तो तुम्हारे हथियार कहा हैं ? फकीर ने कहा – मेरे विकार मेरे हथियार हैं और उन पर मेरा अधिकार है पर जो हथियार तुम्हारे पास हैं वे तुम्हे मार भी सकते हैं।

राजा ने पूछा – 'तुम्हारी सेना कहा है ? फकीर का उत्तर था – 'मेरी किसी से शत्रुता–दुश्मनी ही नहीं है तो मुझे सेना रखने की जरूरत नहीं। राजा ने हैरान होकर कहा – 'तुम्हारा धन कहा हैं ? फकीर का जवाब था – मेरे पास ऐसा धन है जो दस–बीस पीढिया भी खाए तो खत्म नहीं होगा।

इस पर राजा बोला – 'तुम्हारे नौकर–चाकर कहा हैं ? फकीर का उत्तर था – 'मेरी इन्द्रिया ही मेरी सेवा करती हैं वे ही सच्ची सेविका हैं। यह सब सुनकर राजा ने सोचा यह फकीर साधारण मानव नहीं है वह झुका और उसने फकीर को आगे बढने का रास्ता दे दिया।

– नरेन्द्र

अधिकार शान्ति से अधिक मूल्यवान

– विल्सन

•जब तक तुम्हारे पास कथनीय न हो कुछ न कहो

– कालइिल

जिस प्रकार नदी किनारे के पेड़ बहा ले जाती है, वैसे ही बुढ़ापा और मृत्यु प्राणियों को ले जाती है।

– जातक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सम्पादकीय अग्रलेख

समस्याएं अनेक : आतंकवाद का भी खतरा जन-सहयोग से ही समाधान

संयुक्त ससदीय समिति ने १९ दिसम्बर के दिन प्रकाशित अपनी रिपोर्ट मे कहा है कि शेयर घोटाले मे शेयर दलाल केतन पारीख निजी तथा सहकारी क्षेत्रो के बैंकों और नियामित निकायो के मध्य गहरी साठगाठ थी। ससदीय समिति ने इस साठगाठ और उससे सम्बन्धित सारे तथ्यो का पता लगाने के लिए एक और अन्य समिति गठित करने और केतन पारीख के स्विस बैंक खातों के बारे मे शीघ्र कार्रवाई करने की सिफारिश की है।

श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी की अध्यक्षता मे इस सयुक्त ससदीय समिति ने दो खण्डो मे ६२५ पृष्ठो की रिपोर्ट में पूरे शेयर बाजार घोटाले के लिए स्टाक ब्रोकर केतन पारीख को और यू०टी०आई० की यू०एस० ६४ योजना की विफलता के लिए पूर्व वित्त सचिव को मुख्य रूप से दोषी पाया है।

२००१ मे ससद पर किए आतकवादी हमले के आरोपियों को आतकवादी विरोधी विशेष अदालत ने पोटा कानून के अन्तर्गत पहला फैसला सुना दिया। तीन अभियुक्तो को मृत्युदण्ड घोषित किया गया। विशेष अदालत ने पहली बार इतने कम समय मे अपना निर्णय घोषित कर दिया। इस अदालत द्वारा घोषित दण्ड की उच्चतम न्यायालय से पुष्टि होनी आवश्यक है। भारत देश की एकता एव अखण्डता के विरुद्ध षडयन्त्र रचने वाले अपराधियो को कठोरतम निर्णय देने का फैसला प्रत्येक दृष्टि से उचित है।

भारत में पाकिस्तान द्वारा पोषित एव समर्थित आतकवादी गतिविधियो मे ससद पर आक्रमण का दुस्साहस सम्भावित गणतन्त्र के इतिहास मे सर्वाधिक दुस्साहस पूर्ण कार्यवाही थी। लोकतन्त्र के प्रतीक ससद भवन पर हमला निश्चित रूप से भारतीय गणतन्त्र के आधार को खण्डित करने का दुस्साहस था। इस हमले मे सम्मिलित आतकवादियों ने पाक खुफिया एजेसी ईटल सर्विसेज इटलिजेस के इशारे पर भारत की सार्वभौम सत्ता का खण्डित करने का असफल प्रयास किया। इसमें आतकवादी सगठन जैश मोहम्मद लश्कर ए तैय्यबा भी शामिल थे। निर्णय सुनाते हुए न्यायाधीश महोदय ने स्वीकार किया कि आतकवादियो का लक्ष्य भारतीय ससद के वर्तमान अधिवेशन के मध्य अतिविशिष्ट व्यक्तियो को बन्धन बनाने के साथ भारत के प्रधानमन्त्री उप प्रधानमन्त्री समेत शीघ्र राजनीतिक नेतृत्व का सफाया कर देश मे अराजकता की स्थिति पैदा करना था।

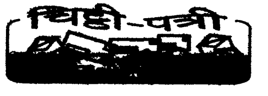
अदालत ने आतकवादियो की कार्रवाई देश के विरुद्ध युद्ध छेडने की कार्यवाही मानी है। किसी भी राष्ट्र की सम्प्रभुता पर प्रहार करने वाले आरोपियों से हमदर्दी का प्रश्न ही नहीं है। कन्दहार काण्ड के अजहर मसूद जैसे अपराधी का छोडना उचित नहीं था। आतकवादियों से निपटने के लिए पोटा सरीखे कानून बनाने की जरूरत इसीलिए समझी गई कि राष्ट्र के विरुद्ध गम्भीरतम अपराध करने वालों से तीव्र गति से कडाई से निपटना उचित समझा गया। यह समझना होगा कि आतकवाद एक सामान्य अपराध नहीं है प्रत्युत उससे निपटना मानवता और राष्ट्र के विरुद्ध उत्पात करने वालो से जूझना है।

पिछले कुछ वर्षों मे देश मे हुई आतकवादी गतिविधियो मे चाहे वे अक्षरधाम मे हुई हो या रघुनाथ मन्दिर – सभी में पाकिस्तानी आतकवादियों के सम्मिलित होने के पुष्ट प्रमाण मिले हैं इसलिए आतकवाद की गगोत्री के विरुद्ध केन्द्र सरकार का निर्णायक फैसला जल्दी या देर मे करना जरूरी था। पाकिस्तानी शासको की दोरगी चालो से भी भारत परेशान हो चुका है इसलिए आतकवाद को समूल नष्ट करने का निर्णायक फैसला करना बहुत जरूरी है।

देश की जनता आतकवाद के विरुद्ध कमजोर नेतृत्व और व्यवहार को अधिक समय तक सहन नहीं करेगी। जम्मू कश्मीर राज्य के माध्यम से आतकवाद का विष अब भारत राष्ट्र की आत्मा पर प्रहार करने का दुस्साहस कर रहा है। ऐसे मे उससे नरमी का व्यवहार राष्ट्रविरोधी होगा।

यह उल्लेखनीय है कि १३ दिसम्बर के दिन भारतीय ससद पर आक्रमण के मामले मे अदालत ने जैश–ए मोहम्मद के आतकवादी मोहम्मद अफजल शौकत हुसैन गुरु तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के निलम्बित प्रवक्ता सैय्यद अब्दुल रोहन जीलानी का मृत्युदण्ड और चौथे अफसान उर्फ नवजोत सन्धु को ५ वर्ष के कारावास का दण्ड दिया। अफसान गुरु को दस हजार रुपये जुर्माने का दण्ड भी दिया गया जिसका भुगतान न करने पर उसे ५ वर्ष बन्दी जीवन बिताना पडेगा। तीन अभियुक्तो को जीवन भर बन्दी रहना होगा और प्रत्येक को दस लाख जुर्माने का दण्ड देना होगा।

मृत्युदण्ड अपीलो की प्रक्रिया से पृथक हाईकोर्ट द्वारा पुष्ट किया जाना चाहिए। यह चिन्ता की बात है कि भारतीय गणतन्त्र अपने अस्तित्व की अर्द्धशताब्दी में इस सहस्राब्दी मे विदेशी राष्ट्र द्वारा आयोजित आतकवाद से निरन्तर जूझ रहा है। आशा है भारतीय जनता के हार्दिक सहयोग से आतकवाद का उन्मूलन करने मे जल्दी ही सफल



वीरप्पन की क्रूरता

[redacted]ख्यात चन्दन तस्कर वीरप्पन का आतक सीमा लाघ चुका है। अचम्भे की बात यह है कि एक आदमी को पकडने में दो–दो राज्य सरकारें लगी हैं करोडो रुपये खर्च हो चुके हैं पर यह बन्दर पकड में नहीं आया। अब उसके जिन्दा या मुर्दा सिर पर दो करोड रुपये का इनाम घोषित कर दिया गया है जो यह प्रमाणित करता है कि सरकार के हाथ–पाव फूले हुए हैं।

– इन्द्रसिंह विमान, किन्जवे कैम्प, दिल्ली

मन्दिर नहीं, स्कूल चाहिए

[redacted]मारे देश की जनता को मन्दिरों से अधिक विद्यालय चाहिए। विद्यालय स्कूल भी ऐसे हों, जिनसे निकले छात्र रोजगार कमा सकें। हमारा राष्ट्र और समाज तभी प्रगति कर सकता है जब हम शिक्षित हो अपने कर्त्तव्य–अधिकार जाने। जनता के स्वार्थ छोडकर राष्ट्र और समाज की प्रगति में मदद दे। हम स्कूल पेड लगाए सबको शिक्षित करें। प्रत्येक शिक्षित कम से कम एक अशिक्षित को शिक्षित करने मे अपने तन–मन–धन का योगदान दें।

– शिवप्रकाश शर्मा, गढ़ रोड, हापुड़

धर्म की भावना

[redacted]र्म ही राष्ट्र की धुरी है। धर्म परिवर्तन ही राष्ट्र परिवर्तन है। भारत में ईसाई मिशनरियो द्वारा धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। बौद्ध धर्म की आड में स्वार्थी तत्वों द्वारा धर्म की राजनीति खेलते हुए कुछ लोगों (हिन्दुओं) का धर्म परिवर्तन पिछले दिनों दिल्ली मे ही कराया गया अब वे हिन्दू से बौद्ध धर्मावलबी हो गए पर उनका कुछ भी भला नहीं हुआ। कोई भी राष्ट्र धर्मपरिवर्तन की अनुमति नहीं देता। धर्म की भावना से प्रेरित होकर ही मानव राष्ट्र के लिए अपने प्राणो की आहुति दे देता है। जिसके मन मे धर्म के प्रति आस्था नहीं हैं वह राष्ट्र के प्रति भी आस्थावान नहीं हो सकता। जब सभी धर्म समान हैं उद्देश्य एक है तो फिर परिवर्तन क्यो ? जो लोग धर्मपरिवर्तन कराने के लिए किसी के साथ धोखा करते हैं। गरीबों के लिए ईसाई मिशनरियो के हृदय में दया या करुणा कहा से जाग्रत हो उठी ? यह सब मात्र एक छलवा है जोर जबर्दस्ती से या किसी प्रकार गुमराह करके धर्मान्तरण की निन्दा की जानी चाहिए और उसको रोका भी जाना चाहिए।

– डॉ० जयप्रकाश आर्य, मगोलपुरी नई दिल्ली

ऋग्वेद से हिरण्योपदेश सप्तकम

हितकर और मनोहर आदेश

– प० मनोहर विद्यालकार

(१) ऋषियो के प्रमुख प्रणेता को अपना दूत बना लो, कभी कष्ट नहीं होगा,

अग्नि वो देवमग्निभि सजोषा यजिष्ठ दूतमध्वरे कृणुध्वम्।
यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्न पावक ।।

ऋ० ७–३–१

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ । अग्नि । त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे मित्रावरुण शिष्य प्रगति कामी साधको ! (अग्निमि सजोषा) आपने अन्य प्रगतिशील साधको का सहयोग लेकर (यजिष्ठ देव अग्निम्) यजमानो मे श्रेष्ठ अपने विभाग प्रमुख को (अध्वरे) प्रत्येक यज्ञकार्य मे (दूत कृणुध्वम्) अपना प्रवक्ता=दूत बनालो तो तुम्हारा अभीष्ट पूरा हो जाएगा क्योकि (य) वह (मर्त्येषुनिध्रुवि) अपनी मरण शील प्रजाओ के हृदय मे सदा विद्यमान है (ऋतावा) ऋतपालन का प्रेरक है (तपुर्मूर्धा) स्वय उत्तम तपस्वी (घृतान्न) रोगविनाशक और ज्ञानवर्धक अन्न (खाद्य) का भोजन करने वाला (पावक) स्वय पवित्र और अपने सम्पर्क मे आने वालो को पवित्र करने वाला है।

निष्कर्ष – जिन साधको का दूत परमेश्वर होगा अथवा जिन प्रजाओ का प्रवक्ता उनमे विचरने वाला नियमो का पालक तपस्वी स्वास्थ्य तथा ज्ञानग्रध क स वक प र्थ भोजी स्वय सदाचारी और अनुयाइयो को भी सदाचारी बनाने वाला होगा उनके अभीष्ट अवश्य पूरे होगें।

अर्थ पोषण – घृतान्न– 'घृक्षरण दीप्त्यों से घृत – रोगक्षरण कृत दीप्ति (ज्ञान) प्रद च अन्न यस्य स – । पावक पूञ पवने पुनीते पवित्रो भवति – काशकृतन

(२) इन्द्र के सखा बनकर गुणगान करो, कभी कोई कष्ट अनुभव नहीं होगा

प्र इन्द्राय मादन हर्यश्वाय गायत। सखाय सोमपान्ने।।

ऋ० ७–३१–१

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ । इन्द्र । गायत्री।

अर्थ – हे (सखाय) साधक मित्रो ! (व) आप लोग (सोम पान्ने) शान्ति और आनन्द का रक्षण और पान कराने वाले (हर्यश्वाय) की चिन्ता न करने वाले मनुष्य जिसके उपासक हैं ऐसे (इन्द्राय) परमेश्वर अथवा राजप्रमुख को (मादन प्रगायत) प्रसन्न करने वाला यथार्थ गायन किया करो।

निष्कर्ष – शान्ति और आनन्द के रक्षक तथा सम्पूर्ण प्रजा को शान्ति व आनन्द प्राप्त करने का प्रयत्न करने वाले ऐश्वर्यशाली व्यक्तियो और शासको का यथार्थ गुणगान अवश्य करे। इससे उन्हे प्रसन्नता होती है।

अर्थ पोषण – हर्यश्वाय – अश्वा – ये श्व परदिन (भविष्य) न चिन्तयन्ति ते अश्वा हरम मनुष्या (नि० २–३) यस्यवशवदा स हर्यश्व तस्मै।

(३) लगन से सेवा करने वालो को हताश मत करो, देवजन दक्षता की प्रशसा करते है

मा स्रेधत सोमिनो दक्षता महे कृणुध्व राय आतुने।
तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवास कवत्नवे।

ऋ० ७–३२–९

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ । इन्द्र । प्रगाथ (बृहती) पक्ति (स्वा० दया०)

अर्थ सब को वसन (वस्त्र) और निवास देने के इच्छुक साधको ! (सोमिन मा स्रेधत) प्रजा मे शान्ति और आनन्द का प्रसार चाहने ओर करने वाले को क्षीण (हतोत्साहित) न करो अपितु (दक्षत) समृद्ध और दक्ष बनाओ। और (आतुजे) शत्रु विनाश के निमित्त (महेराये कृणुध्वम्) प्रचुर धन प्राप्त कराने वाले कार्य करो क्योकि (तरणि) त्वरित कर्म करने वाला पुरुषार्थी व्यक्ति ही (जयति) शत्रुओं को जीतता है (क्षेति) घर मे निर्भय होकर रहता है और (पुष्यति) सन्तान धन और पशुओं से पुष्ट होता है। (देवास) विद्वान मनुष्य और प्राकृतिक शक्तिया (कवत्नवे) कुत्सित व अधूरे मन से काम करने वाले के लिए (न) कभी सहायता नहीं करते है।

अर्थ पोषण – आतुजे तुजिर्हिंसाकर्मा सायण। दक्षत – दक्षवृद्धौ।

निष्कर्ष – प्रत्येक कार्य पूरे मन से और दक्षता के साथ करने से ही सफलता होती है। शान्ति और आनन्द के सच्चे प्रसारक जनो को न कि स्वार्थी मानवाधिकार प्रचारको को धन अवश्य प्राप्त कराना चाहिए।

(४) अपनी कथनी करनी मे एकरूपता लाकर उन्हे दिव्यता प्रदान करो

अभि वो देवीं धिय दधिध्व प्रवो देवत्रा वाच कृणुध्वम्।।

ऋ० ७–३४–९

मैत्रावरुणिर्व सिष्ठ । विश्वेदेवा । द्विपदाविराट।

अर्थ – प्रजा के निवास की व्यवस्था करने की कामना वाले दिव्यजनो (वसिष्ठा विश्वेदेवा) (व) आप सब मिलकर (देवीं धिय) दिव्य=जनहितकर समझ को धारण करो और तदनुरूप कार्ययोजना बनाओ तदनन्तर (व) आप सब (देवत्रा वाच कृणुध्वम्) उस योजना को प्रजा मे वाणी द्वारा प्रकट कर और क्रिया द्वारा कार्य रूप मे परिणत करे।

अर्थ पोषण – धी कर्मनाम नि० २–१ प्रज्ञानाम। नि० ३–९

निष्कर्ष – प्रत्येक नेता और शासक का कर्तव्य है कि उसकी कथनी और करनी समान हो। (यद्वाचावदतितत्कर्मणाकरोति)। इसलिए किसी भी योजना का प्रचार करने से पहले उसे कार्य मे परिणत करने की सम्भावना और उसकी सफलता का अनुमान आवश्यक है इसीलिए ऋ० ७–८४–७ में कहा है कि झूठे वायदे करने वाले हमारे शासक न बने (मानो दु शस ईशत) अर्थात हमे झूठे वायदे करने वालो को अपना प्रतिनिधि नहीं चुनना चाहिए।

(५) झूठा वायदा, विद्वता का दुरुपयोग तथा पर धन का भोग करने वालो को दण्ड देना जरूरी

ताविद् दु शस मर्त्य दुर्विद्वास रक्षस्विनम्।
आभोग हन्मना हतमुदधिं हन्मना हतम्।।

ऋ० ७–९४–१२

मैत्रावरुणिर्व सिष्ठ । इन्द्राग्नी अनुष्टुप्।

अर्थ – हे (इन्द्राग्नी) ऐश्वर्य सम्पन्न और प्रगतिशील होते हुए जितेन्द्रिय शासन प्रमुख और सैन्य प्रमुख (तौ) विशिष्ट दिव्यजनो ! आप दोनो अपनी सुव्यवस्था के द्वारा (दु शसम्) दुष्ट कीर्ति वाले (मर्त्यम) मृत्यु से डरने वाले (दुर्विद्वासम्) विद्वत्ता का दुरुपयोग करने वाले (रक्षस्विनम्) राक्षसी प्रवृत्ति वाले (आभोगम्) जनता के अधिकृत भाग का अपहरण करके भोग करने वाले=रिश्वतखोर दुष्ट परपीडक तथा आतकवादी को (हन्मना) हमन साधन की सहायता से (उदधिम्) जलधारक घडे के समान अनायास (हत इत) अवश्य दण्डित करो फिर भी न माने तो मृत्यु दण्ड तक दे दो।

निष्कर्ष – राज प्रमुख और सैन्य प्रमुख का यह कर्तव्य है कि ऊपर लिखित दुर्गुणों और दुष्ट प्रवृति वाले स्वराष्ट्र के तथा पर राष्ट्र के बाह्य और आन्तर शत्रुओं को अवश्य दण्डित करे और यदि वे अपने अपराध को बार–बार दोहराए तो मृत्यु दण्ड तक दें।

अर्थ पोषण – उदधिम – जल धार कमृद् घट मिव – लुप्तोमेतत।

(६) पशुओ की दुष्प्रवृत्तियो को अपनाकर राक्षस बने मनुष्यों को दण्ड दें

उलूकयातु शुशलूक यातु जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातु दृषदेव प्रमृण रक्ष इन्द्र।।

ऋ० ७–१०४–२२

मैत्रावरुणिर्व सिष्ठ । इन्द्र । त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (इन्द्र) ऐश्वर्यशाली मानव ! (उलूकयातु) उल्लू के समान अन्धकार प्रियवृत्ति वाले (शुशलू कयातुम) शूल की तरह डक मारने वाले बिच्छू ततैय्या आदि क्षुद्र प्राणियों के मार्ग पर चलने वाले (श्व या तुम) कुत्ते की तरह स्वकीयो से झगडा और परायो के आगे दुम हिलाने वाले (कोकयातुम्) चकवा चकवी के समान काम (सेक्स) मे आसक्त रहने वाले (सुपर्ण या तुम) गरुड की तरह अहकारी और दम्भी बने (गृध्रयातुम) गिद्धसदृश लोभी अर्थात् अपने लाभ के लिए दूसरो के विनाश तथा मृत्यु की कामना करने वाले (रक्ष) प्रत्येक नर–पशु या नर–राक्षस को (दृषदा इव प्रमृण) ऐसे मसलकर नाम शेष कर दे जैसे पाषाण द्वारा वस्तुओं को रगड कर पहचानने योग्य नहीं छोड दिया जाता।

– शेष भाग पृष्ठ ६ का

भगवान हमें सन्मार्ग पर ले चलें

अग्ने नय सुपथा राये

– प० भैरवदत्त शुक्ल

यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय का ही ईशोपनिषद् के नाम से भारतीय मुमुक्षु जनो मे प्रचुर श्रद्धा सम्वलित प्रचार है। प्राय उपनिषदों के मर्म तत्त्व–उपेक्षा ही की गई है। जिसका प्रमुख कारण विविध ऐतिहासिक परिवेश प्रसूत सप्रदायो एव निकायो के प्रवर्त्तकों द्वारा खींच तान के साथ औपनिषदिक मन्त्रो का मन माना अर्थ करना और लोगो मे इस अन्ध धारणा का बद्धमूल होना है कि उपनिषदो मे घर बार छोड कर बाबा बनते हुए भिक्षा के सबल पर जीवनयापन करने का ही प्रबल प्रतिपादन किया गया है।

वस्तुतत भारतीय जीवन के लिए श्रुति स्मृति समानुमोदित जिस वर्णाश्रम पथ का अनिवार्य ग्रहण करने का आग्रह किया गया है वह कर्म की अविचल आधारशिला पर विनिर्मित है और उसमे किसी प्रकार का खोखलापन नहीं है। यह तो हमारे विस्मरण एव दिग्भ्रम का ही कुफल है कि हमने शिव तत्त्वों की उपेक्षा करके अविवेकथित मिथ्या प्रगति–प्रक्रिया अपना कर वास्तविकता से मुह मोडते हुए अपनी सत्ता पर प्रश्नचिन्ह लगाने की बुरी लत डाल ली। विश्व का कोई भी राष्ट्र कर्म पराङमुख होकर विकास नहीं कर सकता। भारत में सदियो पूर्व से ही कलह कलुष कुविचार कर्दम और अज्ञान अन्धकार भटकाव में भटकते हुए विनाश विपथगा मे प्रवाहित होने की परम्परा अपनाई गई है। जिसे हटाने वाले समाज सुधारको सिद्धान्त प्रवर्तकों एव राष्ट्र हितैषियो के प्रयासो पर पानी फेरकर आज भी हम उन्मत्त सुरापी वत डगमगाते लडखडाते चल रहे हैं। हम जागृति हुए भी बेहोश हैं बढते हुए भी पीछे खिसक रहे हैं उन्नति करते हुए भी पतन के कगार पर जा पहुचे हैं। यदि इस विनाश वेला में हमारे नेत्र न खुले हमने श्रुति रिक्थ का आश्रय न लिया और कर्मपरक समैक्य के सूत्र जोडने मे न जुटे तो हमें संकटों से टक्कर लेनी होगी।

इसीलिए यह लिखने के लिए विवश होना पडा है कि आधुनिक मत–वादो की बुनियाद पर बने नश्वर सिद्धान्तो की ओर बेतहाशा दौडने की अपेक्षा हमे अपने वेद–विभव का परिचय प्राप्त करने उसे जीवन की ठोस व्यावहारिकता पर प्रतिष्ठित करना वाछित है।

उल्लिखित यजुर्वेद का ही एक मन्त्र है –

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।

युयोध्यस्मज्जुहुराण मेनो भूयिष्ठा ते न म उक्ति विधेम। ४/१६

जिसका सरल तात्पर्य यह है कि हे सब को आगे ले जाने वाले ज्ञान रूप परमेश्वर ! आप कृपा करके हमें विश्व–विभव एव मोक्ष पाने के हितार्थ उत्तम धर्म पूरित आप्त सुधियो द्वारा निर्देशित पथ से चलने के लिए प्रेरित करे। हे समग्र सुखदायक प्रभु ! आप हमारे समस्त आचाते और विचारो से पूर्णरूपेण परिचित हैं अतएव हम से कुटिलता परिपूर्ण पाप दोष या बुराई दूर कर दे। आपके इस असीम कृपा–सम्बलित अनुग्रह के लिए हम आपके प्रति भूयश विनम्र स्तुति समर्पित करते हैं।

१ अग्ने – यहा अग्नि सभी को अग्रसर करने वाला प्रभु है। वह परमात्मा नेता गुरु उपदेशक सेनापति आत्मा सभी के लिए व्यवहृत हुआ है। इस जीवन मे विभिन्न स्थितिया आती हैं। समस्त सृष्टि के कार्य व्यापार आगे ही बढने के लिए हैं। उनमें ज्ञान बल ग्रहण प्रयोग आदि समस्त वृत्तियो का समुच्चय होता है। जिस क्षेत्र के जिस विभाग मे जैसी अग्रसर होने की अपेक्षा है उसके लिए वैसे ही अग्नि का होना अनिवार्य है। बिना अग्नि या अग्रणी के न तो विदृपा का विकास हो सकता है न कृषि कार्य सफलता प्राप्त कर सकते हैं न देश–रक्षा सम्पादित की जा सकती है न लोकहित एव परोपकार का प्रसार सम्भव है और न सास्कृतिक आयोजनो की सुचारुता ही स्थिर रह सकती है। इन्द्रियो के भी विविध कार्यों और विभागो मे सचालन सन्तुलन और स्थायित्व उसी समय तक रहता है जब तक आत्मा रूपी आग्रणी अपने गुरुतम दायित्वो के पालन मे उदमत आत्मा के खिसकते ही श्रोतेन्द्रिणव कुछ भी सुनने से इन्कार कर देती है घ्राणेन्द्रिय सूघना बन्द कर देती है नेत्र खुले के खुले रहकर देखने से रहित हो जाते हैं और मन का मनन एव चित्त का चिन्तन ठप हो जाता है।

हमे इसी प्रकार जीवन के सभी क्षेत्रों में अग्रणी की उपदियता पहचानते हुए सर्वप्रथम उसे प्रतिष्ठित कर उसके सामर्थ्य का सदुपयोग करे। सच तो यह है कि मानव जीवन जितना ही अधिक महत्त्वपूर्ण और गौरवशाली है, उतना ही उसका मार्ग अत्यन्त भयावह न काटो से भरा और विषम है। तनिक भी असावधानी हुई कि पतन के गर्त्त मे लुढकना पडता है। पर्दे–पर्दे अवरोध है और क्षणे–क्षणे पथ–भ्रष्टता विनाश एव अध पतन किन्तु इस भयकरता से त्रस्त होना कायरता है कटको या अवरोधो की कल्पना मात्र से सिहर उठता अपने दायित्व भुलाकर नियति की गोद मे लुढककर दुबकने के समान आत्मघाती कदम है और पतन क भय से रूक जाना ही मृत्यु है। कहा गया है –

[illegible]

हमें घुटनों के बल नहीं चलता है। हमें तो 'शह सवार' बनाना है।

हम पर क्रोध हमला करता है किया करे हमें कौन फुसलाता है फुसलाया करें हमारे मार्ग पर द्वेष खडा हो जाता है खडा होता रहे हम तो बढने का व्रत ले चुके हैं। हमे उनकी क्या चिता ?

यह भी सही है कि हम दीन और दुखी हैं अशक्त और असहाय हैं अज्ञानी अविवेकी है अन्धकार मे भटक रहे हैं पर हमारा पथ सचालक सफल निदेशक अग्नि या अग्रणी तो समृद्धि से पूर्ण है सर्वशक्तिशाली है समस्त ज्ञान एव विवेक का सागर है और सतत ज्योति स्वरूप है।

हम उसकी क्षमता के प्रति आशवस्त हैं। तभी तो ससार रूपी अगम अथाह बहुत बडे सागर मे सन्तरण करने के लिए उत्सुक–अधीर बने हुए हैं। ईर्ष्याया द्वेष रूपिणी मछलिया हमारा क्या कर लेगी ? काम क्रोध लोभ मोह अहकार जैसे नक्र घडियाल हमारा क्या बिगाड लेगे ? चाहे जैसी लील लहरें उठे चाहे जैसे ज्वार–भाटे आए और चाहे जितनी आधिया उमडे हम तो विपत्तियों में पलकर बढने वाले वीर है।

जब उपर्युक्त अनुभूतिया हमारी शिरा–शिरा सास–सास मे बस जाएगी तभी हम अपने अग्रणी को सम्बोधित कर सकेगे। यह सामर्थ्य मानवो के हृदय मे तभी सरचित हो सकता है जबकि वे अपने शरीर को अधम अपवित्र और पीब–विष्ठा का घर न समझे। वह तो एक रथ के समान है। जिसका स्वामी आत्मा है सारथी बुद्धि है और मन घोडो के मुह मे लगी लगाम के समान है।

भगवान ने यह बात नचिकेता से बतलाई :-

आत्मान रथिन विद्धि शरीर रथमेवतु।

बुद्धि तु सारथि विद्धि मन प्रग्रहमेव च।।

कठोपनिषद् ३/ ३५

भलाहमयह क्यो चाहने लगे कि अज्ञानी–अपरिपक्व सारथी की भाति विषय रस लोलुपा बनकर बुद्धि हमारे शरीर रूपी रथ को कुमार्ग पर हपुचाए या ठीक मार्ग से हटा दे इसलिए हममे अपने अग्रणी से यह निवेदन करने का सामर्थ्य होना वाछित है कि वह बुद्धि रूपी सारथी को शिव प्रेरणा प्रदान करके हमारे शरीर–रथ को सुचारू रूप से गन्तव्य लक्ष्य तक पहुच जाने मे सहायक बने।

इसीलिए तो स्पष्ट किया गया है कि –

वयमु त्वा पथस्पते रथ वाज सातये।

धियेे पूजन्न युज्महि।।

ऋ० ६/ ५३/१

हे मार्ग के प्रभु ! पथ–प्रदर्शक ! पूजन ! हम ऐश्वर्य–उपलब्धि के लिए मेधा बुद्धि के लिए सत्वर तीव्रता से ले जाने के लिए आप को स्वकीय पथ–प्रदर्शक नियुक्त करते हैं।

– प्राचार्य, डॉ० भीमराव अम्बेडकर तराई,
किसान महाविद्यालय

पृष्ठ ३ का शेष भाग

हितकर और मनोहर आदेश

निष्कर्ष – (१) मनुष्य मे काम क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्स (ईर्ष्या) जन्म से इन पशुओ की वृति को धारण करके निवास करते हैं, इसलिए अथर्व ११–२–५ मे (तवेमे पञ्च पशवो विभतया गावो अश्वा पुरुषा अज्ञावय) मे मनुष्यो की भी पशुओं मे गणना की है। उन्हें वश मे करके ही मनुष्य मनुष्य बनता है। ये छह की छह राक्षसी प्रवृत्तिया हैं। इन के वश मे होकर मनुष्य भी राक्षस बन जाता है। (२) उल्लू के समान मोहान्धकार में ग्रस्त मनुष्य, बुद्धि का प्रयोग न करके अन्ध श्रद्धा (बे सिर पैर की बातों पर विश्वास) करते हैं और बहकावे मे आकर नरबलि तक चढ़ा देते हैं। यही हाल अन्य पशुवृत्ति अपनाने वाले का होता है। (३) इन छह शत्रुओं को वश में रखने वाले देवता और उनके वश में रहने वाले राक्षस अथवा पशु कहलाते हैं।

७. पुरुष हो या स्त्री, हत्यारे को मृत्युदण्ड या काल कोठरी में रखना आवश्यक

इन्द्र जहि पुमांस यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम्।
ऋ० ७–१०४–२४,

विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम्।।
अथर्व ७–४–२४

मैत्रा वरुणिर्वसिष्ठ । इन्द्र । त्रिष्टुप्।

अर्थ – हे (इन्द्र) ऐश्वर्य का भी राजन् ! (पुमासयातु धानम्) अकारण ही दूसरो की पीडा देने वाले पुरुष जहि) दण्ड देकर नष्ट कर दे। (माया या शाशदामा स्त्रिय उत जहि) छल–कपट द्वारा पर पीडक स्त्री को भी दण्ड देकर नष्ट कर दे। स्त्री होने से उसके साथ कोई रियायत नहीं करे। (मूर देवा विग्रीवास ऋदन्तु) स्वार्थ के लिए दूसरो की हत्या को खेल मानने वाले यातु धान जन गर्दन रहित होकर नष्ट हो जाए। उनकी सब सुख–सुविधाए तथा सम्पति छीन कर उन्हे कारागार मे डाल दे ताकि (ते) वे दुष्ट लोग (सूर्य उच्चरन्त दृशन्) उदित होते हुए सूर्य को न देख सके उन्हे काल-कोठरी मे डालना चाहिए।

अर्थ पोषण – ऋदन्तु नश्यन्तु अर्द हिंसायाम्। शाशदानाम् – शद्लृ शातने (विशरणे)।

निष्कर्ष (१) उदित होते हुए सूर्य का दर्शन अत्यन्त लाभकारी है। अथर्व ६–८(१३)–२२

'स ते शीर्ष्णः कपालानि हृदयस्य च यो विधुः। उद्यन्नादित्य रश्मिभि शीर्ष्णो रोग मनीनशोऽङ्गभेदमशीशम'।। इस का प्रतिपादन हुआ है इसलिए वेद की दृष्टि में उदित होते हुए सूर्य के दर्शन से वचित होना या करना भी एक बडा दण्ड है।

(२) दण्ड विधान मे भी, वेद की दृष्टि में स्त्री–पुरुष में किसी प्रकार भेद या रियायत उचित नहीं मानी गई।

– श्यामसुन्दर राधेश्याम, ५२२ कटरा ईश्वर भवन, दिल्ली-६

आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव स्थगित

आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव जोकि नवम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में अथवा दिसम्बर के प्रथम सप्ताह मे मनाया जाता था, वह इस वर्ष स्थगित कर दिया गया है क्योंकि हम दिल्ली से प्रतिवर्ष जो बसे ले जाते थे, वे अबसी०एन०जी० मे परिवर्तित हो गई हैं। दूसरे हम वहा पर एक भव्य सत्सग हॉल एव छात्रावास का निर्माण कर रहे हैं, यह कार्य हमने मास सितम्बर मे आरम्भ किया था। हमारा विचार था कि नवम्बर के अन्त मे अथवा दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक कार्य सम्पूर्ण हो जाएगा, परन्तु अभी इस कार्य मे शायद दो मास का समय और लग जाएगा, उसके पश्चात् छात्राओ की परीक्षाए आरम्भ होंगी, जिस कारण उक्त उत्सव स्थगित करना पडा है।

हम दाधिया गुरुकुल में जो सत्सग हॉल एव छात्रावास का निर्माण कर रहे हैं उस पर लगभग ७–८ लाख रुपये की राशि व्यय होने का अनुमान है। समस्त आर्यजनो से प्रार्थना है कि इस कार्य हेतु अधिक से अधिक राशि आर्य कन्या गुरुकुल, दाधिया अलवर राजस्थान अथवा आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करे।

गुजरात सौराष्ट्र की महिलाओं में योग के प्रति जागृति

गुजरात प्रात में गिरनार पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित जूनागढ़ नगर की आर्यसमाज गाधीग्राम द्वारा १८ से २४ नवम्बर, २००२ तक भूतनाथ मन्दिर के सत्सग भवन केवल महिलाओं के लिए एक विशाल योग एव आसन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें नगर के सम्भ्रात परिवारों की महिलाओं और युवतियों ने भाग लिया। बडी सख्या में सुपठित डाक्टर शिक्षिका महिलाए थीं।

शिविर में शरीर को स्वस्थ बलवान एव निरोग बनाने हेतु अनेक प्रकार के आसनों एव व्यायामों का प्रशिक्षण के साथ-साथ मानसिक एकाग्रता, शान्ति तथा प्रसन्नता बनाए रखने के लिए प्राणायाम, जप, मन का नियन्त्रण एव ध्यान आदि अनेक आध्यात्मिक विषयों को क्रियात्मक अभ्यास कराया गया।

दिनाक २४–११–२००२ रविवार को समापन समारोह था। जिसमें सांसद एव धारासभ्य और बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के उपप्रमुख मन्त्री सभी पधारे थे। इस शिविर में महिलाओं को बहुत उत्साह तथा प्रेरणा प्राप्त हुई। सभा शिविरार्थियों के नियमित रूप से घरों में आसन एव योगाभ्यास करने का सकल्प लिया।

कार्यक्रम के अन्त शिविरार्थियों को प्रमाणपत्र भी वितरित किए गए। लोगों ने वर्ष में बार-बार इस प्रकार के शिविर लगाने का आग्रह किया। बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के उपप्रमुख ने भी पूरे सौराष्ट्र में इस प्रकार की शिविर लगाने का अनुरोध किया था।

सर्वेक्षण का निष्कर्ष - धूम्रपान करने वाले से विवाह करने से बचें

अमेरिकी हार्ट एसोसिएशन की पत्रिका 'सर्कुलेशन' में प्रकाशित एक अध्ययन–रिपोर्ट के अनुसार धूम्रपान से प्रेम करने वाले और धूम्रपान से परहेज करने वाले प्रेमियों के विवाह का दुखद अन्त हो सकता है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है कि कि यदि किसी धूम्रपान परहेजी की शादी धूम्रपान प्रेमी से हो जाए तो धूम्रपान परहेजी की हृदय रोगों से मृत्यु की आशका २० प्रतिशत बढ जाती है। इस अध्ययन के निष्कर्ष से पहले १४ अध्ययनों को निष्कर्षों की पुष्टि होती है कि सिगरेट के धुए का हृदय रोगो से सम्बद्ध है।

इस रिपोर्ट के लेखक तथा अमेरिकी कैंसर सोसायटी के जनरोग विज्ञान विभाग के उपाध्यक्ष डॉ० क्लार्क हीथ ने कहा – 'इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि सिगरेट पीने वालों को अपने तथा अपने लोगों की खातिर धूम्रपान छोड देना चाहिए।

कुछ समय पहले तम्बाकू उद्योग की ओर से जुटाए गए आकडों में कहा गया था कि धूम्रपान और सिगरेट में धुए का हृदय रोगों से कोई नाता नहीं हैं, परन्तु शोधकर्ताओं का दावा है कि तम्बाकू उद्योग की ओर जुटाए गए आकडे फर्जी थे।

कैंसर सोसायटी की ओर से लगभग चार लाख ८० हजार अविवाहित और विवाहित लोगों का सर्वेक्षण किया गया। उक्त सर्वेक्षण के फलस्वरूप विवाहतय करने से पहले जन्म कुण्डलियों का मिलान करने से यहा अधिक जरूरी इस बात का पता लगाना जरूरी है कि वर-वधू में से कोई धूम्रपान प्रेमी तो नहीं है उसके फलस्वरूप परहेज करने वाला साथी भविष्य मेंअपने प्राण हृदय रोग से गवा सकता है।

आर्यसमाज टैगोर गार्डन का ३६वा वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सोमवार १८ नवम्बर से रविवार २४ नवम्बर २००२ तक समारोहपूर्व मनाया गया। इसमें प्रतिदिन प्रात काल ऋग्वेद यज्ञ भजन प्रवचन हुए सायकाल भक्ति गीत एव वेदकथा हुई। आचार्य रामकिशोर शर्मा सौरो वाले यज्ञ के ब्रह्मा थे और वेदकथा भी आचार्य जी की हुई साथ ही महात्मा चयन मुनि जी वानप्रस्थ के मधुर भजन हुए। शुक्रवार २२ नवम्बर को आर्य महिला सम्मेलन हुआ जिसमे आर्यसमाज की विदुषी महिलाओ ने 'वैदिक सस्कृति की उन्नायिका नारी' विषय पर अपने प्रवचनों से महिलाओ का मार्गदर्शन किया। शनिवार २३ नवम्बर को एक गोष्ठी का आयोजन किया जिसका विषय था। आरक्षण किसके लिए और क्यो इस सम्मेलन का उद्घाटन डॉ० विजयसोनकर शास्त्री अनु० जाति आयोग के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने किया। मुख्य वक्ता प० चिन्तामणि बाल्मीकि थे। रविवार २४ नवम्बर को प्रात काल ऋग्वेद यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तत्पश्चात आर्य सम्मेलन में 'राष्ट्र निर्माण विषय पर आर्य जगत् के ख्यातिप्राप्त विद्वानों ने जिनमे प्रमुखत डॉ० महावीर मीमासक डॉ० शिवकुमार शास्त्री आचार्य रामकिशोर शर्मा श्रीमती शकुन्तला आर्या आदि के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विमल वधावन श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली श्री रामनाथ सहगल महामन्त्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा श्री ओ०पी० बब्बर नेता भाजपा ने राष्ट्र भक्ति के विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री हीरालाल चावला प्रसिद्ध उद्योगपति ने की इस अवसर पर आर्यसमाज के यशस्वी प्रधान श्री जगमोहन लाल नन्दा को उनके द्वारा की गई आर्यसमाज की तन मन धन से सेवा के लिए शाल ओढाकर एव प्रशस्ति पत्र देकर विशेष वैदिक निष्ठावन सम्मान से सम्मानित किया।

सादतपुर विस्तार करावल नगर क्षेत्र दिल्ली ९४ में
नवीन आर्यसमाज की स्थापना

सादत पुर विस्तार (करावल नगर) क्षेत्र मे नवीन आर्यसमाज की स्थापना रविवार दिनाक १५ दिसम्बर २००२ को आचार्य प्रेमपाल जी शास्त्री अध्यक्ष पुरोहित सभा दिल्ली के द्वारा एफ० १/६७ सादतपुर विस्तार गली न० ६ में की गई। इस अवसर पर क्षेत्र के बहुत से गणमान्य व्यक्तियो सहित आर्यसमाज यमुना विहार के प्रधान एव मन्त्री आर्यसमाज बिडला लाइन्स के अधिकारी भी उपस्थित थे सभी ने आर्यसमाज की स्थापना के लिए वहा के कार्यकर्ताओ एव अधिकारियो की प्रशसा की और अपनी ओर से सफलता के लिए शुभकामनाए दी।

कार्य सचालन के लिए निम्न अधिकारियो का निर्वाचन हुआ – श्री योगव्रत मुनि (सरक्षक) श्री चौ० विजय पाल सिह (प्रधान) श्री रमेश चन्द शास्त्री (मन्त्री) श्री मास्टर रामा नन्द जी (उपमन्त्री) श्री जगदीश आर्य (कोषाध्यक्ष) श्री हरीओम आर्य (पुस्तकाध्यक्ष) तथा श्री अभिनय आर्य (आर्य वीर दल अधिष्ठाता)।

दिल्ली में पारम्परिक बलिदान यात्रा ने आर्यों में उत्साह की लहरें उत्पन्न की

स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के वे क्रातिकारी सन्यासी थे जिन्होने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की नींव हिन्दुस्तान मे डाली। स्वामी श्रद्धानन्द अपने काल मे हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल प्रचारक थे। २३ दिसम्बर १९२६ को दिल्ली में उनको गोली मारकर शहीद कर दिया गया और २५ दिसम्बर को उनकी अतिम यात्रा उनके निवास जो कि अब स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान स्मारक है से निकाल कर यमुना के किनारे ले गए थे। हर वर्ष उसी मार्ग से एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया जाता है जिसको इस वर्ष नया बाजार स्थित उनके स्मारक स्थल से लाल किला तक निकाला गया।

इस शोभा यात्रा का नेतृत्व आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान पदमश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा राजसिह भल्ला श्री धर्मपाल आर्य तथा श्री रामनाथ सहगल आदि कर रहे थे। परेड मैदान लाल किला के सामने यह शोभायात्रा एक विशाल जनसभा मे परिवर्तित हो गई जिसमें भारत सरकार के श्रम मत्री डॉ० साहिब सिह वर्मा एव प्रधानमन्त्री कार्यालय मे राज्यमत्री श्री विजय गोयल आदि लोग सम्मिलित थे जिन्होने स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान एव भारतीय गुरुकुल प्रणाली मे उनके योगदान की प्रशसा करते हुए कहा कि आध्यात्मिक सन्यासी तो भारत मे कई हुए हैं लेकिन वीर सन्यासी केवल स्वामी श्रद्धानन्द ही थे।

इस जनसभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक न्याय सभा के प्रधान श्री रामफल बसल ने की।

बलिदान परम्परा के लक्षण – प्रेम, श्रद्धा, त्याग और अनुशासन

देहरादून २२ दिसम्बर। आर्यसमाज की सर्वोच्च सस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान विमल वधावन ने कहा है कि स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन देश धर्म और समाज तीनों के लिए समर्पित था। उन्होने अपना तन मन धन सब कुछ मानवता की सेवा मे अर्पित कर दिया था।

आर्यसमाज धामावाला मे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के ७६वे बलिदान दिवस के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोलते हुए उन्होने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने सामाजिक और राष्ट्रीय एकता के लिए दलितो को गले लगाया। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह सर्वदा कार्य क्षेत्र मे डटे रहे। उनका जीवन एक ऐसे प्रकाश स्तम्भ के समान है जो ऊपर उठने का साहस और सन्देश देता है।

गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति पर प्रकाश डालते हुए विमल वधावन ने कहा कि १९०२ मे स्वामी श्रद्धानन्द ने हरिद्वार मे समान आसन समान वस्त्र समान भोजन और समान शिक्षा के सिद्धान्त पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। जिसके १०० वर्ष पूर्ण होने पर विगत् अप्रेल माह मे विशाल स्तर पर शताब्दी महासम्मेलन भी हरिद्वार में ही आयोजित किया गया था। उन्होने जानकारी दी कि अप्रेल माह में ही भारत सरकार के डाक विभाग द्वारा एक स्मारक डाक–टिकट जारी किया जाना था जो सम्भवतया के कारण नहीं हो सका जिसे अब २४ दिसम्बर को जारी किया जा रहा है।

श्री विमल वधावन ने अपने उद्बोधन का केन्द्र बिन्दु वैदिक धर्म की बलिदान परम्परा को बनाते हुए कहा कि यज्ञ भी उसी बलिदान परम्परा का अग एव लक्षण है। उन्होने कहा कि किसी की छोटी सी मदद हो या राष्ट्र की रक्षा मे पूरे जीवन की आहुति यह सब हमारी सस्कृति की विरासत है। उन्होने कहा कि बलिदान अर्थात् त्याग और समर्पण की भावना से ही परिवार मे भी एक दूसरे के प्रति प्रेम और श्रद्धा की वृद्धि होती है।

इसी मार्ग पर चलते हुए आर्यसमाज जैसे पवित्र उद्देश्यो वाले सगठन मे भी परस्पर आदर और अनुशासन की स्थापना की जा सकती है। अनुशासित सगठन ही सुदृढ और ताकतवर सगठन बन सकता है। अनुशासन से ही ईश्वर मे भी आस्था बढती है।

उन्होने कहा कि इस वर्ष गुरुकुल कागडी शताब्दी सम्मेलन से मुझे सगठनात्मक अनुशासन का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है। लगभग साठ–सत्तर हजार की सख्या मे आर्यजनो का एकत्रित होना और बिना किसी शिकवे शिकायत के सम्मेलन का सफल होना सगठनात्मक अनुशासन को दर्शाता है। इस प्रकार के प्रदर्शन ने ईश्वर के प्रति भी मेरी आस्था को बढाया है।

बलिदान दिवस के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराचल के प्रधान यशपाल आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि आन्दोलन के द्वारा उन लाखों भाईयो को अपने गले लगाया जो किन्हीं कारणो से विधर्मी बन गए थे। उन्होने आज भी ऐसे प्रयास करने का सकल्प लेने को कहा। प्रान्तीय मन्त्री देवराज आर्य ने कहा कि हमे उनके स्वप्नो को पूरा करने के लिए आन्दोलन चलाना चाहिए। इस अवसर पर सुचित नारग स्वामी वनिता आश्रम महिला आश्रम की बालिकाओ ने भजन सुनाए।

इससे पूर्व देवदत्त बाली सुरेन्द्र रस्तोगी खुल्लर आदि ने अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम का सचालन समाज के प्रधान ज्ञानचन्द गुप्ता ने किया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराचल के मन्त्री देवराज आर्य ने आभार व्यक्त किया।

दिल्ली की आर्यसमाजों के नए पदाधिकारी

आर्यसमाज तिलक नगर, नई दिल्ली १८

प्रधान	श्री बलदेवराज आर्य
उप प्रधान	श्री किशोरी लाल मलिक
मन्त्री	श्री रणवीर जी दुआ
उपमन्त्री	श्री अरुण सभरवाल
कोषाध्यक्ष	श्री अमरनाथ गुलयानी

आर्यसमाज कालकाजी

प्रधान	श्री राकेश भटनागर
उप-प्रधान	श्री धर्मपाल सिब्बल
	श्री राम प्रसाद बरेजा
मन्त्री	श्री रमेश गाडी
उपमन्त्री	श्री राकेश पाहूजा
सहमन्त्री	श्री बालकृष्ण चावला
कोषाध्यक्ष	श्री सुधीर मदान
सहकोषाध्यक्ष	श्री ओमप्रकाश महेन्द्रू
पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री अरुण कपूर श्री ऋषिमगू

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 26-27/12/2002 दिनांक २३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर, २००२ Licence to post without prepayment, Licence No ... 139/2

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल– 11024/2002 26 27/12/2002 पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू०

एक करोड रुपयें की लागत से बने 'वैदिक संस्कार केन्द्र' का उद्घाटन २६ से ३० मार्च, २००३ के बीच

भारत की एक अग्रणी आर्यसमाज गाधीधाम (कच्छ–गुजरात) नवयुवको द्वारा सचालित है जो अनेक प्रकार से वेदप्रचार मानव सेवा की प्रवृत्तिया कर रही है। कच्छ मे आए भूकम्प मे आर्यसमाज द्वारा जा राहतकार्य किया गया उसका मुख्य केन्द्र गाधीधाम मे था तथा इस राहत केन्द्र के द्वारा ३२ विदेश स आए कन्टेनर ११२ भारत से आए ट्रक सहित करीब २५ कराड की राहत सामगी बाटी गई। १००० शवो को मलबे से निकालकर उनकी अन्त्येष्टि की गई। भूकम्प म अनाथ हुए बच्चो को आश्रय **जीवन प्रभात** दिया गया।

३६५ दिन एव दिनभर सक्रिय इस सस्था के समर्पित नवयुवको की टीम ने १ करोड की लागत से 'वैदिक सस्कार केन्द्र' का निर्माण फरवरी २००० मे भूकम्प से पूर्व शुरु किया था। भूकम्प तक इस भवन का ढाचा बन चुका था इस ढाचे मे ६० फुट चौडा (बिना पिलर का) एव १०० फुट लबा हॉल भी बन चुका था परन्तु परम पिता की कृपा से एव मजबूत निर्माण के होने के कारण भवन गिरा नहीं। कुल २६००० फुट के निर्माण वाले इस भवन मे तल मजिल पर ४ प्रवृत्तियो के खण्ड है। प्रथम तलपर एक हजार लोग बैठ सके ऐसा बाल्कनी सहित हॉल है एव द्वितीय तल पर ११ आधुनिक कमरे हैं। भवन में लिफ्ट भी लगी है।

इस भवन को भूकम्प के बाद पूरा किया गया। तल मजिल पर (१००गुण८० फुट का भवन)८००० फुट की जगह मे प्रवृत्तियो के जो ४ विभाग बने थे उन्हे कमरो मे परिवर्तन कर भूकम्प मे अनाथ हुए बच्चो के निवास हेतु उपयोग किया जा रहा है। इन बच्चो का स्थायी ६५००० फुट का आधुनिक विशाल सकुल **जीवन प्रभात** ३ कराड रुपये के खर्च से २ एकड परिसर मे निर्माणाधीन है। वैदिक सस्कार केन्द्र जो बनकर तैयार है उसका उद्घाटन एव वेद प्रचार कार्यक्रम २६ से ३० मार्च (बुध से रवि) २००३ तक होगा। आर्यसमाज गाधीधाम का वेदप्रचार कार्यक्रम भी अनूठा होता है। यहा कार्यक्रम की विशालता भव्यता उपदेश सुचारू प्रबन्ध कार्यकर्ताओ का दीवानापन दिल खुश कर देने वाले होते हैं।

सभी महानुभावो से प्रार्थना है कि उनकी निवास व भोजन की नि शुल्क व्यवस्था हम करेगे। आप अभी से दलबल के साथ आने का मन बना लीजिए। आपको महर्षि दयानन्द का स्वप्न पूरा होता दिखेगा। आपकी सारी शिकायतें आर्यसमाज में काम नहीं हो रहा दूर हो जाएगी। आप प्रेरणा लेकर जाएगे अनेक चीजें अनुकरणीय मिलेगी।

प्रधान सम्पादक वेदव्रत शर्मा, सम्पादक नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, वैद्य इन्द्रदेव

वेदव्रत शर्मा द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाउस, दरियागज नई दिल्ली–११०००२ (दूरभाष एव फैक्स ३२७०५०७) में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१ दूरभाष : ३३६ ०१५० के लिए प्रकाशित